हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(१) एक ग्मी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमे सब हिन्दुस्तानी शामिल हों .

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना .

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों में सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना .

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल .

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये .

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,

१४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद .

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दामकी किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

هندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(۱) ایک ایسی هندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب هندستانی شامل هوں .

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا

———

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ، وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق؛ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری—پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تاراچند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی. جی. کھیر، مسٹر ایس. کے. رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندر لال

سکریٹری، هندستانی کلچر سوسائٹی،

۱۳۵، مٹھی گنج، الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا هند" کے جو گاہک ممبر بننا چاهیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر هی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی هوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی هوگی مفت لے سکیں گے ... لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے .

हिन्द के विधान की अंगरेजी हिन्दी शब्दावली

(अंगरेजी नागरी लिखावट में)

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ खास खास अंगरेजी शब्दों के लिये आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवानदीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाए हैं. भारत के विधान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास जरूर रखिये. क़ीमत दो रुपये.

मुस्लिम देश भक्त— लेखक—श्री रतन लाल बंसल.

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को गुलामी की जंजीरों से आजाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

आज के शहीद— सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छिन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी.

उन बहादुरों की कहानियाँ जो फ़िरक़ावाराना दंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गए.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.

सुन्दर जिल्द और चिकने काग़ज़ पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

किसान की पुकार— लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत ज़रूरी है जो खेती बाड़ी से दिलचस्पी रखते हैं, और भारत के अन्न संकट को दूर करने में विश्वास रखते हैं. क़ीमत पाँच आने.

ھند کے ودھان کی انگریزی ھندی شبداولی

(انگریزی ناگری لکھاوٹ میں)

ھند کا جو نیا ودھان پاس ہوا ہے اُسکے لگ بھگ چودہ سو خاص خاص انگریزی شبدوں کے لئے آسان ھندستانی شبد مہاتما بھگوان دین اور دوسرے ودوانوں نے سجھائے ھیں. بھارت کے ودھان کو سمجھنے کے لئے اِس شبداولی کو اپنے پاس ضرور رکھئے. قیمت دو روپئے .

مسلم دیش بھکت—لیکھک—شری رتن لال بنسل .

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ھتھیلی پر رکھکر ھندستان اور ودیشوں میں رھتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی . کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے .

قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے .

آج کے شہید— سمپادک — شری رتن لال بنسل .

اِس کتاب میں اُن ویروں کی کہانیاں ھیں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہیں کی اور اُسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کر دی .

اُن بہادروں کی کہانیاں جو فرقہ وارانہ دنگوں میں لوگوں کو حیوانیت سے روکتے ہوئے شہید ہو گئے .

ہر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب .

سندر جلد اور چکنے کاغذ پر چھپی آٹھ تصویروں کے ساتھ اس کتاب کا دام صرف ڈھائی روپیہ .

کسان کی پکار— لیکھک — شری آر . وینکٹ راؤ .

یہ کتاب کسانوں کے لئے ھی نہیں، اُن لوگوں کےلئے بھی بہت ضروری ہے جو کھیتی باڑی سے دلچسپی رکھتے ھیں' اور بھارت کے اَن سنکٹ کو دور کرنے میں وشواس رکھتے ھیں. قیمت پانچ آنے .

पंडित सुन्दरलाल की और किताबें :—

हिन्दू मुसलिम एकता— इस में वह चार लेक्चर जमा कर दिये गये हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़—साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. जिसने आख़िर में देस पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है— महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़— इस छोटी सी किताब में सन १९४९-५० में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

پنڈت سندرلال کی اور کتابیں:—

ہندو مسلم ایکتا— اس میں وہ چار لیکچر جمع کر دئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے ۔

سو صفحے کی کتاب ۔ قیمت صرف بارہ آنے ۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق— سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج، جس نے آخر میں دیس پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا ۔

قیمت بارہ آنے ۔

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے— مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سن ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک ورنن ۔ اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں ۔ قیمت چار آنے ۔

بنگال اور اُس سے سبق— اس چھوٹی سی کتاب میں ۵۰-۱۹۴۹ میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے ۔ قیمت صرف دو آنے ۔

ملنے کا پتہ—مینیجر 'نیا ہند' ۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد ۔

गीता और क़ुरान

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे दे कर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देस की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़बत, आख़रत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपये.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४८, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

گیتا اور قران

لیکھک—پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے ۔

اُسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اِس دیش کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے ۔

آخر میں قرآن سے پہلے کی عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قران کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے ۔ اس میں قران کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے ۔

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں اُنھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے ۔

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپئے ۔

ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ہند' ۱۴۸، مٹھی گنج، الہ آباد ۔

... नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती हैं.

डाक या रेल खर्च हर हालत में गाहक के जिम्मे होगा.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंजर अली सोख्ता

२९ जनवरी सन १९४८ को महात्मा गांधी ने आल इंडिया कांगरेस कमेटी के सामने एक सुझाव के रूप में 'लोक सेवक संघ' का एक नया विधान तैयार किया था. इस विधान में उन्होंने सलाह दी थी की कांगरेस का सारा सगठन तोड़ दिया जावे और कांगरेस वाले हकूमत से बाहर निकल कर एक 'लोक सेवक संघ' बना कर काम करें.

३० जनवरी को अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा जी ने कांगरेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर वह विधान दिया की वह गांधी जी की तरफ़ से उसे आल इंडिया कांगरेस कमेटी में पेश कर दें. यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आखिरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंजर अली सोख्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देस के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत जरूरी है. २२५ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपये.

मिलने का पता—मैनेजर, 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

نیچے لکھی سب کتابیں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہیں ۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمہ ہوگا ۔

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

۲۹ جنوری سن ۱۹۴۸ کو مہاتما گاندھی نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے ایک سجھاؤ کے روپ میں 'لوک سیوک سنگھ' کا ایک نیا ودھان تیار کیا تھا ۔ اِس ودھان میں اُنہوں نے صلاح دی تھی کہ کانگریس کا سارا سنگٹھن توڑ دیا جاوے اور کانگریس والے حکومت سے باہر نکل کر ایک 'لوک سیوک سنگھ' بنا کر کام کریں ۔

۳۰ جنوری کو اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما جی نے کانگریس کے جنرل سکریٹری کو بلا کر وہ ودھان دیا کہ وہ گاندھی جی کی طرف سے اُسے آل انڈیا کانگریس کمیٹی میں پیش کر دیں ۔ یہ چھوٹا سا ودھان دیس کے نام گاندھی جی کی آخری وصیت ہے اور اِسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیس کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں ۔

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے ۔ ۲۲۵ صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے ۔

ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ہند' ۱۴۵' متھی گنج' الہ آباد ۔

हो सकता है कि कृपलानी जी के साथियों को हमारी यह कड़वी बातें पसंद न आयें. फिर भी उन भाइयों से हम इतना तो जरूर अर्ज करेंगे कि उनमें से जो चोटी के कारकुन हैं वह जान बूझ कर असेम्बली या पार्लियामेन्ट की मेम्बरी से अलग रहें. कम से कम कृपलानी जी और उनके साथ की अज़ीम हस्तियों को तो इस बारे में सतर्क रहना ही चाहिये. उनके लिये यही शोभा देगा कि बाहर रह कर अन्दर वालों की नकेल क़ाबू में रखें और देस में वह स्वाँग न रचने दें जो काँगरेस ने मचा रखा है.

२३-५-'५१ —सुरेश रामभाई

नई किताब

अहिन्सात्मक इनक़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंजर अली सोख़्ता

महात्मा गान्धी के 'लोक सेवक संघ' की तजवीज़ को समाने रखकर श्री मंजरअली सोख़्ता ने इस किताब मे 'लोक सेवा संघ' की एक योजना देस के समाने रक्खी है. आज के हिंसा से भरे वातावरन मे अहिन्सात्मक इनक़लाब के क्या मानी हैं और यह कैसे लाया जा सकता है यह बड़ी ख़ूबसूरती से इस किताब में समझाया गया है. देस की मौजूदा शोचनीय हालत को बदलने की इच्छा रखने वाले सब देशप्रेमियों को चाहिये कि इस किताब को ज़रूर पढ़ें.

किताब नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में मिल सकती है.

क़ीमत सिर्फ़ चार आना. मिलने का पता—

मैनेजर— 'नया हिन्द'

هو سکتا هے که کرپلانی جی کے ساتھیوں کو هماری یه کڑوی باتیں پسند نه آئیں . پھر بھی اُن بھائیوں سے هم اتنا تو ضرور عرض کرینگے که اُن میں سے جو چوٹی کے کارکن هیں وہ جان بوجھ کر اسمبلی یا پارلیامنٹ کی ممبری سے الگ رهیں . کم سے کم کرپلانی جی اور اُن کے ساتھ کی عظیم هستیوں کو تو اِس بارے میں سترک رهنا هی چاهئیے . اُن کے لئے یهی شوبھا دیگا که باهر رہ کر اندر والوں کی نکیل قابو میں رکھیں اور دیس میں وہ سوانگ نه رچنے دیں جو کانگریس نے مچا رکھا هے .

٢٣-٥-'٥١ — سریش رام‌بھائی

نئی کتاب

اهنساتمک انقلاب کا راسته

لیکھک — شری منظر علی سوخته

مهاتما گاندھی کے 'لوک سیوک سنگھ' کی تجویز کو سامنے رکھکر شری منظر علی سوخته نے اِس کتاب میں 'لوک سیوا سنگھ' کی ایک یوجنا دیس کے سامنے رکھی هے . آج کے هنسا سے بھرے واتاورن میں اهنساتمک انقلاب کے کیا معنی هیں اور یه کیسے لایا جا سکتا هے یه بڑی خوبصورتی سے اِس کتاب میں سمجھایا گیا هے . دیس کی موجوده شوچنیه حالت کو بدلنے کی اِچھا رکھنے والے سب دیش پریمیوں کو چاهئے که اِس کتاب کو ضرور پڑھیں .

کتاب ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی هے .

قیمت صرف چار آنه .

ملنے کا پته — منیجر — 'نیا هند'

लाज़मी है—अहिंसा. अगर हम यह पाबन्दी छोड़ दें तब तो हमें यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि कम्यूनिस्ट अव्वल दर्जे के सर्वोदय वाले निकलेंगे. लेकिन अगर हम यह पाबन्दी रखते हैं तो यह साफ़ है कि सोशलिस्ट लोग सर्वोदय के मानने वाले नहीं, कांग्रेस भी नहीं (जैसा कि १९५० की पूना वाली कुल हिन्द कांग्रेस कमेटी की बैठक में साफ़ हो गया था) और हमें अफ़सोस के साथ कहना है कि आचार्य कृपलानी भी नहीं क्योंकि पाकिस्तान के मामले में उन्होंने हथियार और फ़ौज इस्तेमाल करने की सलाह दी थी. सर्वोदय को मानने वाली पार्टी या सरकार की कसौटी अहिंसा है. जिस हद तक हमारे तौर तरीक़ों में हिंसा रहेगी उस हद तक वह सर्वोदय के मुताबिक़ नहीं है.

एक बात और भी है. गाँधी जी मरने के एक दिन पहले काँग्रेस और देस के लिये कुछ वसीयत कर गये थे. मगर १९४८ में बम्बई में कुल हिन्द काँग्रेस कमेटी की बैठक में जो नया कांग्रेस विधान बनाकर इस वसीयत की मिट्टी पलीद की गई है उसमें कृपलानी जी भी शरीक थे. इसके अलावा उत्तर प्रदेश में एक लोक सेवक संघ बना जिसके प्रधान कृपलानी जी हैं. लेकिन जहाँ तक हमारी जानकारी है इस लोक सेवक संघ ने अमली तौर पर कोई क़दम ऐसा नहीं उठाया है जो अपनी वसीयत वाले बयान में गाँधी जी ने बताये हैं.

इसलिये हम कृपलानी जी से अपील करते हैं कि वह महज़ एक पार्टी बनाकर न रह जायें. कांगरेस की तरह पार्टी खड़ी करके वह उसी तरह की पेचीदगियाँ, मुसीबतें और उलझनें पैदा कर देंगे जैसा काँगरेस ने किया और जिनसे निकलना मुशकिल होगा. उन्हें तो जनता की सच्ची सेवा करने के लिये एक संगठन खड़ा करना चाहिये जिसके मेम्बर गाँधी जी के बताये लोक सेवक संघ के प्रोग्राम को सच्चे जी से अपनायें.

لازمی ہے — اہنسا . اگر ہم یہ پابندی چھوڑ دیں تب تو ہمیں یہ کہنے میں کوئی ہچک نہیں ہے کہ کمیونسٹ اوّل درجے کے سرودے والے نکلیں گے . لیکن اگر ہم یہ پابندی رکھتے ہیں تو یہ صاف ہے کہ سوشلسٹ لوگ سرودے کے ماننے والے نہیں ، کانگریس بھی نہیں . (جیسا کہ ۱۹۵۰ کی پونا والی کل ہند کانگریس کمیٹی کی بیٹھک میں صاف ہو گیا تھا) اور ہمیں افسوس کے ساتھ کہنا ہے کہ آچاریہ کرپلانی بھی نہیں کیونکہ پاکستان کے معاملے میں انہوں نے ہتھیار اور فوج استعمال کرنے کی صلاح دی تھی . سرودے کو ماننے والی پارٹی یا سرکار کی کسوٹی اہنسا ہے . جس حد تک ہمارے طور طریقوں میں ہنسا رہے گی اس حد تک وہ سرودے کے مطابق نہیں ہے .

ایک بات اور بھی ہے . گاندھی جی مرنے کے ایک دن پہلے کانگریس اور دیس کے لئے کچھ وصیت کر گئے تھے . مگر ۱۹۴۸ میں بمبئی میں کل ہند کانگریس کمیٹی کی بیٹھک میں جو نیا کانگریس ودھان بنا کر اس وصیت کی مٹی پلید کی گئی ہے اُسمیں کرپلانی جی بھی شریک تھے . اسکے علاوہ اتر پردیش میں ایک لوک سیوک سنگھ بنا جسکے پردھان کرپلانی جی ہیں . لیکن جہاں تک ہماری جانکاری ہے اس لوک سیوک سنگھ نے عملی طور پر کوئی قدم ایسا نہیں اٹھایا ہے جو اپنی وصیت والے بیان میں گاندھی جی نے بتائے ہیں

اِسلئے ہم کرپلانی جی سے اپیل کرتے ہیں کہ وہ محض ایک پارٹی بنا کر نہ رہ جائیں . کانگریس کی طرح پارٹی کھڑی کر کے وہ اُسی طرح کی پیچیدگیاں ، مصیبتیں اور الجھنیں پیدا کر دیں گے جیسا کانگریس نے کیا اور جن سے نکلنا مشکل ہوگا . انہیں تو جنتا کی سچی سیوا کرنے کے لئے ایک سنگٹھن کھڑا کرنا چاہئے جسکے ممبر گاندھی جی کے بتائے لوک سیوک سنگھ کے پروگرام کو سچے جی سے اپنائیں .

दे दिया है. उन्होंने अपने फैसले को अटल कहा है. फैसले की वजह यह बताई है कि कांग्रेस लोकशाही के तरीक़े से अपना काम नहीं कर रही है. उनके अलावा आंध्र के बुज़ुर्ग सेवक श्री टी. प्रकाशम ने भी स्तीफ़ा दे दिया है और आये दिन स्तीफ़े दिये जा रहे हैं. जून के महीने में आचार्य जी पटना में इन सबकी एक बैठक करेंगे और फिर अपनी नई पार्टी बनाकर मुल्क के आगे अपना नया प्रोग्राम पेश करेंगे.

आचार्य कृपलानी ने कांग्रेस का जो रोग बताया है उसे हर कोई जानता है. सदर टंडन जी भी उससे बख़ूबी वाक़िफ़ हैं और जवाहरलाल जी तो उससे परेशान हैं ही. हम इस रोग को लाइलाज हालत पर पहुँचा हुआ पाते हैं और यह समझते हैं कि यह रोग बुढ़िया कांग्रेस को खाकर ही रहेगा. बेहतरी इसी में है—शान भी है—कि हम गन्दी गन्दी दवायें देकर उसके आख़री वक़्त में उसे ज़्यादा तंग न करें और एक शान्ति की मौत मरने दें.

लेकिन बुढ़िया आज मरे या कल उसकी औलाद व ख़ान्दान तो है ही जो हर तरह की सेवा चाहेगा. अब सवाल यह है कि उनकी सेवा किस तरह की जाये कि वह अच्छी परवरिश पायें. इसलिये हमें यह देखना है कि कृपलानी जी किस तरह यह फ़र्ज़ निभाते हैं.

अख़बारों की ख़बर है कि वह सर्वोदय का प्रोग्राम रखेंगे और गांधी जी के बताये रास्ते पर देश को ले चलने की कोशिश करेंगे. अगर यह ख़बर सही है तो हमें बड़े अदब के साथ यह कहना है कि आज सर्वोदय की हर जगह चर्चा है, सोशलिस्ट पार्टी कहती है कि अगर कांग्रेस सर्वोदय प्रोग्राम अपनाये तो वह कांग्रेस में मिल जाये. और कांग्रेस का तो पुराना दावा है कि वह जनम की सर्वोदयवादी है. हम यह तो नहीं कह सकते कि सच्चा सर्वोदय क्या है. उसका असली पैरोकार तो इन गर्मियों में तेलंगाने के इलाक़े में पैदल घूम रहा है. लेकिन हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि सर्वोदय की राह पर चलने के लिये एक चीज़ की पाबन्दी

دے دیا ہے . اُنھوں نے اپنے فیصلے کو اٹل کہا ہے . فیصلے کی وجہ یہ بتائی ہے کہ کانگریس لوک شاہی کے طریقے سے اپنا کام نہیں کر رہی ہے . اُنکے علاوہ آندھر کے بزرگ سیوک شری ٹی. پرکاشم نے بھی استعفیٰ دے دیا ہے اور آئے دن استعفے دئے جا رہے ہیں. جون کے مہینے میں آچاریہ جی پٹنہ میں ان سب کی ایک بیٹھک کرینگے اور پھر اپنی نئی پارٹی بنا کر ملک کے آگے اپنا نیا پروگرام پیش کرینگے .

آچاریہ کرپلانی نے کانگریس کا جو روگ بتایا ہے اسے ہر کوئی جانتا ہے . صدر ٹنڈن جی بھی اُس سے بخوبی واقف ہیں اور جواہرلال جی تو اُس سے پریشان ہیں ہی . ہم اِس روگ کو لاعلاج حالت پر پہونچا ہوا پاتے ہیں اور یہ سمجھتے ہیں کہ یہ روگ بڑھیا کانگریس کو کھا کر ہی رہیگا . بہتری اِسی میں ہے — شان بھی ہے — کہ ہم گندی گندی دوائیں دے کر اُسکے آخری وقت میں اُسے زیادہ تنگ نہیں کریں اور ایک شانتی کی موت مرنے دیں .

لیکن بڑھیا آج مرے یا کل اُسکی اولاد خاندان تو ہے ہی جو ہر طرح کی سیوا چاہیگا . اب سوال یہ ہے کہ اُنکی سیوا کسطرح کی جائے کہ وہ اچھی پرورش پائیں . اس لئے ہمیں یہ دیکھنا ہے کہ کرپلانی جی کسطرح یہ فرض نبھاتے ہیں .

اخباروں کی خبر ہے کہ وہ سروودے کا پروگرام رکھینگے اور گاندھی جی کے بتائے راستے پر دیس کو لے چلنے کی کوشش کرینگے . اگر یہ خبر صحیح ہے تو ہمیں بڑے ادب کے ساتھ یہ کہنا ہے کہ آج سروودے کی ہر جگہ چرچا ہے' سوشلسٹ پارٹی کہتی ہے کہ اگر کانگریس سروودے پروگرام اپنائے تو وہ کانگریس میں مل جائیں . اور کانگریس کا تو پرانا دعویٰ ہے کہ وہ جنم کی سروودے وادی ہے . ہم یہ تو نہیں کہہ سکتے کہ سچا سروودے کیا ہے . اُسکا اصلی پیروکار تو اِن گرمیوں میں تلنگانہ کے علاقے میں پیدل گھوم رہا ہے . لیکن ہم یہ اچھی طرح جانتے ہیں کہ سروودے کی راہ پر چلنے کیلئے ایک چیز کی پابندی

मैदान में अगर दुश्मन का ज़ोर सेर भर का हो तो हमारा सवा सेर का, यानी जितना हो उतना थोड़ा है. इसमें कोई रोक थाम लगाना अपने पैर पर कुल्हाड़ी चलाना है. इसलिये हम समझते हैं कि इस स्तीफ़े से मिस्टर बेवन कटी पतंग की तरह अलग जा गिरेंगे और एक आरज़ी नेकनामी भले उनको मिल जाय कोई उनसे हमदर्दी भी नहीं करेगा.

मिस्टर बेवन ने इसी सिलसिले में हथियार कम करने की बात भी उठाई है और बर्तानिया की कैबिनेट को इस पर अमल करने की सलाह दी है. पर बर्तानिया की कैबिनेट उनकी सलाह मान कर हथियार कम करने की भूल उस वक़्त तक नहीं कर सकती जब तक बर्तानिया बाहर दूसरे मुल्कों में या दूसरे मुल्कों के पड़ोस में पाँव जमाए हुए है. तलवार पर भरोसा रखने वाले देश न तो ऐसा सोचते हैं न सोच सकते हैं और न सोचना चाहिये और बर्तानिया के मिस्टर बेवन भले ही मज़दूर दल के मेम्बर हों हम उनसे यह आशा नहीं कर सकते कि वह कभी अहिंसा को आदर्श मान कर हथियार घटाने की बात सोचेंगे. अगर सचमुच उनमें ऐसी भावना जाग गई है तो उनके लिये यह ज़्यादा बेहतर होगा कि वह बर्तानिया की सरकार को यह सलाह दें कि वह हथियार चाहे जितने बढ़ाए पर सब से पहला क़दम इस तरफ़ उठाए कि बर्तानिया के बाहर जहाँ जहाँ उसने अपने अड्डे जमा रक्खे हैं वहाँ से बिना लड़े भिड़े हँसी ख़ुशी ऐसे ही चलदे जैसे हिन्दुस्तान छोड़ कर चली गई है. अहिंसा की तरफ़ उसका पहला क़दम यही हो सकता है.

२३-५-'५१

—सुरेश रामभाई

आचार्य कृपलानी का स्तीफ़ा——

बड़े उतार चढ़ाव के बाद आचार्य कृपलानी ने कांग्रेस के सदर बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन को एक चिट्ठी भेजकर कांग्रेस से स्तीफ़ा

میدان میں اگر دشمن کا زور سیر بھر کا ہو تو ہمارا سوا سیر کا یا یعنی جتنا ہو اتنا تھوڑا ہے . اس میں کوئی روک تھام لگانا اپنے پیر پر کلہاڑی چلانا ہے . اس لئے ہم سمجھتے ہیں کہ اس استعفے سے مسٹر بیون کٹی پتنگ کی طرح الگ جا گرینگے اور ایک عارضی نیک نامی بھلے اُن کو مل جائے کوئی اُن سے ہمدردی بھی نہیں کریگا .

مسٹر بیون نے اسی سلسلے میں ہتھیار کم کرنے کی بات بھی اُٹھائی ہے اور برطانیہ کی کیبنٹ کو اس پر عمل کرنے کی صلاح دی ہے . پر برطانیہ کی کیبنٹ اُن کی صلاح مان کر ہتھیار کم کرنے کی بھول اُس وقت تک نہیں کر سکتی جب تک برطانیہ باہر دوسرے ملکوں میں یا دوسرے ملکوں کے پڑوس میں پاؤں جمائے ہوئے ہے . تلوار پر بھروسہ رکھنے والے دیس نہ تو ایسا سوچتے ہیں نہ سوچ سکتے ہیں اور نہ سوچنا چاہئے . اور برطانیہ کے مسٹر بیون بھلے ہی مزدور دل کے ممبر ہوں ہم اُن سے یہ آشا نہیں کر سکتے کہ وہ کبھی اہنسا کو آدرش مان کر ہتھیار گھٹانے کی بات سوچیں گے . اگر سچ مچ اُن میں ایسی بھاونا جاگ گئی ہے تو اُن کے لئے یہ زیادہ بہتر ہوگا کہ وہ برطانیہ کی سرکار کو یہ صلاح دیں کہ وہ ہتھیار چاہے جتنے بڑھائے پر سب سے پہلا قدم اس طرف اُٹھائے کہ برطانیہ کے باہر جہاں جہاں اُس نے اپنے اڈے جمع رکھے ہیں وہاں سے بنا لڑے بھڑے ہنسی خوشی ایسے ہی چلدے جیسے ہندستان چھوڑ کر چلی گئی ہے . اہنسا کی طرف اُس کا پہلا قدم یہی ہو سکتا ہے .

۲۳-۵-'۵۱

——سریش رام بھائی

آچاریہ کرپلانی کا استعفیٰ——

بڑے اُتار چڑھاؤ کے بعد آچاریہ کرپلانی نے کانگریس کے صدر بابو پرشوتم داس ٹنڈن کو ایک چٹھی بھیجکر کانگریس سے استعفیٰ

नीति से राजी नहीं है. आज सारा पच्छिमी योरप अमरीका के इशारे पर चलने को मजबूर हो रहा है और अमरीका की फौजी पालिसी की बिना पर अपनी फ़ौजी पालिसी ढालकर उसके मुताबिक़ तैयारी कर रहा है. इसके माने हैं फ़ौजी मामलों में अमरीका का मुँह देखना और उसका मुहताज और ग़ुलाम बनते जाना.

यह भी साफ़ है कि जब ज्यादा ताक़त लड़ाई के सामान बनाने और दूसरी तैयारी में लग जायेगी तो उसके लिये ज्यादा पैसे की दरकार होगी जिसकी वजह से हुकूमत को नए नए टैक्स लगाने पड़ेंगें. साथ ही साथ यह भी है कि फ़ौज की ख़ातिर सामान ख़रीदने से देस में चीजों के दाम बढ़ जायेंगे और महंगाई का बाजार और भी गरम हो जायगा. इसका लाजमी नतीजा यह होगा कि आम जनता की दुशवारियाँ बढ़ेंगी और उसे मामूली चीज़ों या सहूलियतों के लिये तरसना पड़ेगा.

इस रोशनी में देखने पर हमें पता चलता है कि अंगरेज़ी कैबिनेट पहले से ही अमरीका की ताबेदार बनी हुई है. अंतरकौमी हलक़ों में आज इंगलैन्ड की वह शान नहीं है, उसकी वह इज्जत नहीं है जो एक अरसा पहले थी. यूनो की बैठकों में वह अमरीका की हाँ में हाँ मिला रहा है और कोई अलग से उसकी आवाज़ ही नहीं है. इसलिये यह जरूरी हो जाता है कि उसकी सारी फ़ौजी-नीति अमरीका की तरफ़ देख देख कर शकल में आये. यह चीज आज की नई नहीं है. मिस्टर बेवन जैसे जिम्मेदार आदमी इससे नावाक़िफ़ होंगे यह हम नहीं मान सकते. न यहीं हमारी समझ में आता है कि वह यह ख़याल करते हों कि आजकल की लड़ाइयों में ''बस इतनी तैयारी'' ''बस इसी हद तक'' जैसी बातें

نیتی سے راضی نہیں ہے . آج سارا پچھمی یوروپ امریکہ کے اشارے پر چلنے کو مجبور ہو رہا ہے اور امریکہ کی فوجی پالیسی کی بنا پر اپنی فوجی پالیسی ڈھال کر اُس کے مطابق تیاری کر رہا ہے . اِسکے معنے ہیں فوجی معاملوں میں امریکہ کا منھ دیکھنا اور اُس کا محتاج اور غلام بنتے جانا .

یہ بھی صاف ہے کہ جب زیادہ طاقت لڑائی کے سامان بنانے اور دوسری تیاری میں لگ جائیگی تو اُسکے لئے زیادہ پیسے کی درکار ہوگی جسکی وجہ سے حکومت کو نئے نئے ٹیکس لگانا پڑینگے . ساتھ ہی ساتھ یہ بھی ہے کہ فوج کی خاطر سامان خریدنے سے دیس میں چیزوں کے دام بڑھ جائینگے اور مہنگائی کا بازار اور بھی گرم ہوجائیگا . اُس کا لازمی نتیجہ یہ ہوگا کہ عام جنتا کی دشواریاں بڑھینگی اور اُسے معمولی چیزوں یا سہولتوں کے لئے ترسنا پڑیگا .

اس روشنی میں دیکھنے پر ہمیں پتہ چلتا ہے کہ انگریزی کیبنٹ پہلے سے ہی امریکہ کی تابعدار بنی ہوئی ہے . انتر قومی حلقوں میں آج انگلینڈ کی وہ شان نہیں ہے، اُسکی وہ عزت نہیں ہے جو ایک عرصہ پہلے تھی . یو نو کی بیٹھکوں میں وہ امریکہ کی ہاں میں ہاں ملا رہا ہے اور کوئی الگ سے اُسکی آواز ہی نہیں ہے . اِس لئے یہ ضروری ہوجاتا ہے کہ اُسکی ساری فوجی نیتی امریکہ کی طرف دیکھ دیکھکر شکل میں آئے . یہ چیز آج کی نئی نہیں ہے . مسٹر بیون جیسے ذمے دار آدمی اِس سے ناواقف ہونگے یہ ہم نہیں مان سکتے . نہ یہی ہماری سمجھ میں آتا ہے کہ وہ یہ خیال کرتے ہوں کہ آج کل کی لڑائیوں میں " بس اتنی تیاری " " بس اِسی حد تک " جیسی باتیں

कहा जाता है कि मुल्क की आज़ादी हासिल करने के लिये और आज़ादी हसिल करने के बाद उसे बनाए रखने के लिये तीन आदमियों की ज़रूरत होती है. एक कवि यानी शायर, दूसरा जंगजू यानी सिपाही. तीसरा राजनेता यानी स्टेट्समेन. पर हसरत साहब में तो यह तीनों ही समाए हुए थे. फिर हिन्दुस्तान की आज़ादी का सेहरा उनके सिर क्यों नहीं बँधा ? हो सकता है इसकी वजह यह हो कि वह दिल के मामूल से ज़्यादा खरे थे. ऊँची जगह बनाने के लिये जितना काइयाँपन दरकार होता है वह उनमें नहीं था.

हम साफ़दिली के क़ायल हैं और खरेपन के पुजारी हैं. इसलिये हम तो हसरत साहब को अपनी श्रद्धान्जलि देंगे ही, और जवानों से यह कहेंगे कि वह हसरत साहब की ज़िन्दगी को उनके अन्दर की लगन और दिल की सफ़ाई का खयाल रख कर पढ़ें, नहीं तो उनके बारे में कुछ की कुछ राय बना बैठेंगे और बहुत टोटे में रहेंगे.

१६-५-५१

—भगवानदीन

अंगरेज़ी कैबिनेट में तनातनी—

अप्रैल के आख़री हफ़्ते में लन्दन से ख़बर आई कि वहाँ की सरकार के लेबर मिनस्टर, मिस्टर बेवन ने इस्तीफ़ा दे दिया. उनके साथ एक दूसरे मिनिस्टर ने भी दिया मिस्टर बेवन ने इस्तीफ़े की वजह यह पेश की कि इंगलैन्ड के नए बजट में बनावटी दांत और चशमों पर टैक्स बढ़ा दिया गया है जिसकी वजह से उनके दाम बढ़ जायेंगे और इसे वह "जन सेवा के उन कामों की बरबादी की शुरुआत मानते हैं जिन में मज़दूर दल को हमेशा से ख़ास नाज़ रहा है." लेकिन यह तो बहाना भर है. असल बात यह है कि मज़दूर दल का काफ़ी हिस्सा ऐसा है जो इंगलैन्ड की मौजूदा लड़ाई

کہا جاتا ہے کہ ملک کی آزادی حاصل کرنے کے لئے اور آزادی حاصل کرنے کے بعد اُسے بنائے رکھنے کے لئے تین آدمیوں کی ضرورت ہوتی ہے ۔ ایک کوی یعنی شاعر، دوسرا جنگجو یعنی سپاہی، تیسرا راج نیتا یعنی اسٹیٹس مین ۔ پر حسرت صاحب میں تو یہ تینوں ہی سمائے ہوئے تھے ۔ پھر ہندستان کی آزادی کا سہرا اُنکے سر کیوں نہیں بندھا ؟ ہو سکتا ہے اِسکی وجہ یہ ہو کہ وہ دل کے معمول سے زیادہ کھرے تھے ۔ اُونچی جگہ بنانے کے لئے جتنا کائیاں پن درکار ہوتا ہے وہ اُن میں نہیں تھا ۔

ہم صاف دلی کے قائل ہیں اور کھرے پن کے پجاری ہیں ۔ اِس لئےہم تو حسرت صاحب کو اپنی شردھانجلی دینگے ہی، اور جوانوں سے یہ کہیں گے کہ وہ حسرت صاحب کی زندگی کو اُن کے اندر کی لگن اور دل کی صفائی کا خیال رکھکر پڑھیں، نہیں تو ان کے بارے میں کچھ کی کچھ رائے بنا بیٹھیں گے اور بہت ٹوٹے میں رہینگے ۔

۱۶-۵-۵۱ء

—بھگوان دین

انگریزی کیبنٹ میں تنا تنی—

اپریل کے آخری ہفتے میں لندن سے خبر آئی کہ وہاں کی سرکار کے لیبر منسٹر، مسٹر بیون نے استعفیٰ دے دیا ۔ ان کے ساتھ ایک دوسرے منسٹر نے بھی دیا ۔ مسٹر بیون نے استعفے کی وجہ یہ پیش کی کہ انگلینڈ کے نئے بجٹ میں بناوٹی دانت اور چشموں پر ٹیکس بڑھا دیا گیا ہے جسکی وجہ سے اُن کے دام بڑھ جائینگے اور اُسے وہ " جن سیوا کے اُن کاموں کی بربادی کی شروعات مانتے ہیں جن میں مزدور دل کو ہمیشہ سے خاص ناز رہا ہے ." لیکن یہ تو بہانہ بھر ہے ۔ اصل بات یہ ہے کہ مزدور دل کا کافی حصہ ایسا ہے جو انگلینڈ کی موجودہ لڑائی

मुसलमान कह सकते हैं कि उसने इसलाम को धोका दिया क्योंकि कृश्न की शान में उसने गीत गाए. हिन्दू कह सकते हैं कि उसने कृश्न के गीत गाकर ढोंग रचा और हिन्दू धर्म को धोका दिया क्योंकि वह कई बार हज को गया और मुसलिम लीग का मेम्बर हुआ. कांगरेस कह सकती है कि उसने कभी अहरारों में शामिल होकर और कभी लीगियों का साथ देकर कांगरेस को धोका दिया. इसी तरह से लीग और अहरार वाले भी उस पर धोका देने का इलज़ाम लगा सकते हैं. एक तरीक़े से सभी तरफ़ से कोई न कोई धोका-देही के इलज़ाम की फ़ेहरिस्त लाकर पेश कर सकता है. पर हम तो इतना ही कहेंगे कि हसरत साहब ने चाहे दुनिया भर को धोका दिया हो पर उन्होंने अपने ज़मीर यानी अंतरात्मा को कभी धोका नहीं दिया. वह उसके और अपने अंदर बैठे अल्लाह के सामने हमेशा सच्चे रहे. वह हर मिल्लत में शामिल होते थे सिर्फ़ इसलिये कि उनके अन्दर लगी हुई आग कहाँ और भडकती है और अगर उन्हें वहाँ पहुँच कर वह आग बुझती दिखाई देती थी तो उसे छोड़ चल देते थे. अगर वह फिर भी किसी को उसी मिल्लत से चिपटे मालूम होते थे तो यह उनका कमाल था. वह उस मिल्लत को अपने रंग में रंग कर और अपनी शायरी में लाकर अपना जी ख़ुश करते रहते थे. वह तो 'नेति नेति' यानी 'यह भी नहीं' 'यह भी नहीं' कहने वाले रिशी की तरह असलियत की खोज में लगे और आख़री दम तक लगे रहे.

हम जवान की दो ख़ासियत मानते हैं—एक हिम्मत के साथ 'नहीं' कहने की क़ाबलियत रखना, दूसरे ज़रूरत देखकर उस जगह पहुँचना जहाँ किसी ने बुलाया न हो. यह दोनों ख़ासियतें हसरत साहब में थीं. इसलिये वह ७२ बरस की उमर में भी जवान थे.

مسلمان کہہ سکتے ہیں کہ اُس نے اِسلام کو دھوکہ دیا کیونکہ کرشن کی شان میں اُس نے گیت گائے . ہندو کہہ سکتے ہیں کہ اُسنے کرشن کے گیت گا کر ڈھونگ رچا اور ہندو دھرم کو دھوکا دیا کیونکہ وہ کئی بار حج کو گیا اور مسلم لیگ کا ممبر ہوا . کانگریس کہہ سکتی ہے کہ اُسنے کبھی احراروں میں شامل ہوکر اور کبھی لیگیوں کا ساتھ دے کر کانگریس کو دھوکا دیا . اسی طرح سے لیگ اور احرار والے بھی اُس پر دھوکا دینے کا الزام لگا سکتے ہیں . ایک طریقے سے سبھی طرف سے کوئی نہ کوئی دھوکا دہی کے الزام کی فہرست لاکر پیش کر سکتا ہے . پر ہم تو اِتنا ہی کہیں گے کہ حسرت صاحب نے چاہے دنیا بھر کو دھوکا دیا ہو پر اُنہوں نے اپنے ضمیر یعنی انترآتما کو کبھی دھوکا نہیں دیا . وہ اُسکے اور اپنے اندر بیٹھے اللہ کے سامنے ہمیشہ سچے رہے . وہ ہر ملت میں شامل ہوتے تھے صرف اس لئے کہ اُنکے اندر لگی ہوئی آگ کہاں اور بھڑکتی ہے اور اگر اُنہیں وہاں پہنچکر وہ آگ بجھتی دکھائی دیتی تھی تو اُسے چھوڑ چل دیتے تھے . اگر وہ پھر بھی کسی کو اُسی ملت سے چپٹے معلوم ہوتے تھے تو یہ اُن کا کمال تھا . وہ اُس ملت کو اپنے رنگ میں رنگ کر اور اپنی شاعری میں لاکر اپنا جی خوش کرتے رہتے تھے . وہ تو 'نیتی نیتی' یعنی 'یہ بھی نہیں' 'یہ بھی نہیں' کہنے والے رشی کی طرح اصلیت کی کھوج میں لگے اور آخری دم تک لگے رہے .

ہم جوان کی دو خاصیت مانتے ہیں - - ایک ہمت کے ساتھ 'نہیں' کہنے کی قابلیت رکھنا' دوسرے ضرورت دیکھکر اُس جگہ پہنچنا جہاں کسی نے بلایا نہ ہو . یہ دونوں خاصیتیں حسرت صاحب میں تھیں . اس لئے وہ ۷۲ برس کی عمر میں بھی جوان تھے .

اور برادری کے لوگ بھی برادری کے باہر والوں پر پابندی کے لئے برادری کی بات پر پورا پورا دھیان کیوں دینگے ۔

۱۹-۵-۵۱　　— سریش رام بھائی

مولانا حسرت موہانی —

یہ ٹھیک ہے کہ ۷۲ برس کی عمر میں ۱۳ مئی کی دوپہر کو موت کے فرشتے نے حسرت موہانی صاحب کی روح قبض کر لی ۔ پر جتنا ہم حسرت صاحب کو جانتے ہیں اس سے ہم یہ ماننے کے لئے تیار نہیں کہ موت کے فرشتے سے انہوں نے گھنٹے دو گھنٹے بحث نہ کی ہو اور اگر موت کے فرشتے کو دنیاداروں سے بولنے کا اختیار ہو تو وہ یہی کہے گا کہ اللہ اس طرح کے ایماندار آدمی سے کبھی پالا نہ ڈالے !

حسرت صاحب میں جو صفتیں تھیں وہ تھیں تو پیدائشی پر انکو جلا دینے میں بیگم موہانی کا کم ہاتھ نہیں تھا اور ان بیگم موہانی صاحبہ کی جنکی کانپور کانگریس میں سن ۱۹۲۵ میں اس وقت کی تصویر ہماری آنکھوں کے سامنے ہے جب فرض شناسی میں پکی دو مورتیں ایک دم آمنے سامنے آ ڈٹی تھیں ۔ ایک طرف تھیں بیگم موہانی اور دوسری طرف تھے کانگریس والنٹیر کور کے کپتان جوگ ۔ جیسے ہی جوگ نے بیگم موہانی کو اندر جانے سے روکا ویسے ہی اس پھٹکار کے ساتھ کہ آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے ممبر کو تمہیں روکنے کا کیا حق، ایک چپت جوگ کے گال پر پڑی ۔ کپتان جوگ کے دونوں ہاتھ ایک دم نیچے ہو گئے اور وہ بولا — اچھا آپ جا سکتی ہیں ۔ یہ تھیں حسرت موہانی کی بیگم ۔ پھر حسرت صاحب کی پیدائشی صفتوں کو چار چاند کیوں نہ لگتے ۔

और बिरादरी के लोग भी बिरादरी के बाहर वालों पर पाबन्दी के लिये बिरादरी की बात पर पूरा पूरा ध्यान क्यों देंगे.

१९. ५. ५१　　—सुरेश रामभाई

मौलाना हसरत मोहानी—

यह ठीक है कि ७२ बरस की उमर में १३ मई की दोपहर को मौत के फरिश्ते ने हसरत मोहानी साहब की रूह कब्ज़ करली. पर जितना हम हसरत साहब को जानते हैं उससे हम यह मानने के लिये तैयार नहीं कि मौत की फरिश्ते से उन्होंने घंटे दो घंटे बहस न की हो और अगर मौत के फरिश्ते को दुनियादारों से बोलने का अख्तियार हो तो वह यही कहेगा कि अल्लाह इस तरह के ईमानदार आदमी से कभी पाला न डाले!

हसरत साहब में जो सिफ़तें थीं वह थीं तो पैदाइशी पर उनको जला देने में बेगम मोहानी का कम हाथ नहीं था और उन बेगम मोहानी साहबा का जिन की कानपुर कांगरेस में सन् १९२५ में इस वक्त की तसवीर हमारी आँखों के सामने है जब फ़र्ज़ शनासी में पक्की दो मूरतें एक दम आमने सामने आ डटी थी. एक तरफ थीं बेगम मोहानी और दूसरी तरफ थे कांगरेस वालंटियर कोर के कप्तान जोग. जैसे ही जोग ने बेगम मोहानी को अन्दर जाने से रोका वैसे ही इस फटकार के साथ कि आल इंडिया कांगरेस कमेटी के मेम्बर को तुम्हें रोकने का क्या हक़ एक चपत जोग के गाल पर पड़ी. कप्तान जोग के दोनों हाथ एक दम नीचे होगए और वह बोला—अच्छा आप जा सकती हैं. यह थीं हसरत मोहानी की बेगम. फिर हसरत साहब की पैदाइशी सिफ़तों को चार चाँद क्यों न लगते.

सद गए जब हुक्का पानी बंद करके आप किसी को घुला घुला कर मार डालें. अमरीका जानते हुए भी यह भूल जाता है कि यूनो में उसका ज़ोर भले हो लेकिन दुनिया की काफ़ी बड़ी बड़ी ताक़तें और बड़ी भारी आबादी वाली हकूमतें उसकी दुशमन हैं और कहीं ज़्यादा बड़ी आबादी की हमदर्दी उसके ख़िलाफ़ नहीं तो उसके साथ भी नहीं है. इसलिये वह कितना ही हाथ पैर मारे दुनिया के मुल्कों की बड़ीयत ही उसके साथ रह सकती है न कि दुनिया की आबादी की. दुनिया की ज़्यादा आबादी चीन के साथ हमदर्दी रखती है और दुनिया की कम आबादी में समाए ज़्यादा मुल्क किसी वजह से अमरीका के साथ हैं.

मगर हमें डर है कि चीनकी नाकाबन्दी से नुकसान दूसरे मुल्कों को ही होगा जिनका दोस्त होने का दावा अमरीका करता है. यह नुक़सान बरतानिया को होगा, हालैन्ड को होगा, फ्रांस को होगा. आस्ट्रेलिया को होगा. और इन्डोनीशिया, हिन्द और पाकिस्तान को जो होगा सो अलग. फिर जो चोट इससे जापान को पहुंचेगी उसका तो कहना ही क्या. गए थे नमाज़ बख़्शवाने उलटे रोज़े गले पड़े—वाली मसल होने वाली है.

उसके अलावा बुनियादी तौर पर भी हम इस नाकाबन्दी को नामुनासिब समझते हैं. इटली की तरह हम चीन को न साम्राजवादी समझते हैं न किसी तरह का गुनहगार. बर्तानिया के प्रतिनिधि को हम मुबारकबाद देते हैं कि उसने खरी बात तो कह दी. अमरीका को हम यह सलाह देते हैं कि वह यूनो की मदद से चीन की नाका-बन्दी कराकर कोरिया के मामले में इतना आगे नहीं बढ़ सकता जितना यूनो को यह सलाह देकर कि वह लाल चीन को अपने में शामिल करले. क्योंकि लाल चीन जब तक बिरादरी में शामिल ही

لد گئے جب حقہ پانی بند کر کے آپ کسی کو گھلا گھلا کر مار ڈالیں. امریکہ جانتے ہوئے بھی یہ بھول جاتا ہے کہ یونو میں اُس کا زور بھلے ہو لیکن دنیا کی کافی بڑی بڑی طاقتیں اور بڑی بھاری آبادی والی حکومتیں اُسکی دشمن ہیں اور کہیں زیادہ بڑی آبادی کی ہمدردی اُسکے خلاف نہیں تو اُسکے ساتھ بھی نہیں ہے. اِس لئے وہ کتنا ہی ہاتھ پیر مارے دنیا کے ملکوں کی بڑیہت ہی اُس کے ساتھ رہ سکتی ہے نہ کہ دنیا کی آبادی کی. دنیا کی زیادہ آبادی چین کے ساتھ ہمدردی رکھتی ہے اور دنیا کی کم آبادی میں سمائے زیادہ ملک کسی وجہ سے امریکہ کے ساتھ ہیں.

مگر ہمیں ڈر ہے کہ چین کی ناکابندی سے نقصان دوسرے ملکوں کو ہی ہوگا جن کا دوست ہونے کا دعویٰ امریکہ کرتا ہے. یہ نقصان برطانیہ کو ہوگا ہالینڈ کو ہوگا فرانس کو ہوگا آسٹریلیا کو ہوگا. اور انڈونیشیا، ہند اور پاکستان کو جو ہوگا سو الگ. پھر جو چوٹ اِس سے جاپان کو پہونچے گی اُسکا تو کہنا ہی کیا. گئے تھے نماز بخشوانے اُلٹے روزے گلے پڑے — والی مثل ہونے والی ہے.

اِسکے علاوہ بنیادی طور پر بھی ہم اِس ناکابندی کو نامناسب سمجھتے ہیں. اٹلی کی طرح ہم چین کو نہ سامراج وادی سمجھتے ہیں نہ کسی طرح کا گنہگار. برطانیہ کے پرتیندھی کو ہم مبارکباد دیتے ہیں کہ اُس نے کھری بات تو کہہ دی — امریکہ کو ہم یہ صلاح دیتے ہیں کہ وہ یونو کی مدد سے چین کی ناکابندی کرا کر کوریا کے معاملے میں اتنا آگے نہیں بڑھ سکتا جتنا یونو کو یہ صلاح دے کر کہ وہ لال چین کو اپنے میں شامل کر لے. کیونکہ لال چین جب تک برادری میں شامل ہی نہیں ہے

یہ سخت شکایت ہےکہ برطانیہ جیسا دیس لال چین کو ربر بھیجتا ہے جسے وہ فوجی سامان تیار کرنےمیں استعمال کرتا ہے' اور لال چین کے پڑوس کے دیس اُس سے قسم قسم کا بیوپار کر کے اُسے ہرا بھرا رکھنا چاہتے ہیں . اس لئے امریکہ یعنی یونو کا خیال ہے کہ لال چین بس میں نہیں لایا جا سکتا اور کمیونزم زوروں سے ترقی کرتا جائیگا اور دنیا میں امن چین نہ رہ پائیگا . امریکہ کے کچھ حلقوں میں اِس بات کی بھی بڑی گرم چرچا ہے کہ برٹین والے اپنے ہانگ کانگ کے منہ میں آکر دن دھاڑے یہ زیادتی کر رہے ہیں . کہنے کی ضرورت نہیں کہ اِس شورغل میں امریکہ کے نکالے ہوئے جنرل میک آرتھر صاحب کا بہت بڑا ہاتھ رہا ہے

لیکن ہم پہلے یہ بتا دیں کہ چین کے ساتھ کیول انگریزی اثر والے دیسوں نے ہی بیوپار نہیں بڑھایا بلکہ جاپان نے بھی بڑھایا جسکو جنرل میک آرتھر نے پاؤں تلے دبا کر رکھا تھا . ظاہر ہے کہ چین جاپان کے بیوپار کی بڑھواری میں جنرل صاحب کا پورا ہاتھ تھا . ہمیں یقین ہے کہ یہ بات اُنھوں نے جاپان کے بھلے کی خاطر کی ہوگی لیکن اُس میں چین کا بھی بھلا ہو جانا ناممکن نہیں تھا . اِسلئے کیول برطانیہ کو چین کے بڑھے چڑھے بیوپار کا ذمہ دار ٹھہرانا آنکھوں میں دھول جھونکنے جیسا ہے

مگر آجکل تو جسکی لاٹھی اُسکی بھینس . یو .نو کی کمیٹی میں جب چین کے خلاف اِس ٹھہراؤ پر بحث ہو رہی تھی تب انگریزی نمائندے سر شا کراس نے کہا کہ ہمیں پریشان نہ کیا جائے — ہم ایک حد تک ہی جا سکتے ہیں' زیادہ کی ہماری اوقات ہی نہیں ہے .

ابھی یہ ٹھہراؤ سیکیورٹی کونسل میں جائیگا اور تب اُسپر عمل ہو سکیگا . لیکن ہم یہ بتادیں کہ وہ زمانے

यह सख़्त शिकायत है कि ब्रतानिया जैसा देस लाल चीन को रबड़ भेजता है जिसे वह फ़ौजी सामान तैयार करने में इस्तेमाल करता है, और लाल चीन के पड़ोस के देस उससे क़िस्म क़िस्म का ब्योपार करके उसे हरा भरा रखना चाहते हैं. इसलिये अमरीका यानी यूनो का ख़याल है कि लाल चीन बस में नहीं लाया जा सकता और कम्यूनिज़म ज़ोरों से तरक़्क़ी करता जाएगा और दुनिया में अमन चैन न रह पाएगा. अमरीका के कुछ हलक़ों में इस बात की भी बड़ी गरम चर्चा है कि ब्रिटेन वाले अपने हांगकांग के मुंह में आकर दिन दहाड़े यह ज़्यादती कर रहे हैं. कहने की ज़रूरत नहीं कि इस शोर गुल में अमरीका के निकाले हुए जनरल मैकआर्थर साहब का बहुत बड़ा हाथ रहा है.

लेकिन हम पहले यह बता दें कि चीन के साथ केवल अंगरेज़ी असर वाले देसों ने ही ब्योपार नहीं बढ़ाया बल्कि जापान ने भी बढ़ाया जिस को जनरल मैकआर्थर ने पांव तले दबा कर रखा था. ज़ाहिर है कि चीन जापान के ब्योपार की बढ़वारी में जनरल साहब का पूरा हाथ था. हमें यक़ीन है कि यह बात उन्होंने जापान के भले की ख़ातिर की होगी लेकिन उसमें चीन का भी भला होजाना नामुमकिन नहीं था. इसलिये केवल ब्रतानिया को चीन के बढ़े चढ़े ब्योपार का ज़िम्मेदार ठहराना आंखों में धूल झोंकने जैसा है.

मगर आजकल तो जिसकी लाठी उसकी भैंस. यूनो की कमेटी में जब चीन के ख़िलाफ़ इस ठहराव पर बहस हो रही थी तब अंगरेज़ी नुमायन्दे सर शाक्रास ने कहा कि हमें परेशान न किया जाए—हम एक हद तक ही जासकते हैं, ज़्यादा की हमारी औक़ात ही नहीं है.

अभी यह ठहराव सिक्योरिटी कौन्सिल में जाएगा और तब इस पर अमल हो सकेगा. लेकिन हम यह बता दें कि वह ज़माने

फ़ौजी घेरा डालने की बात सोची तो फिर दुनिया यह समझले कि तीसरी बड़ी लड़ाई यहीं से शुरू हो जायगी. यह धमकी दी तो ईरान ने है मगर हम यह कहेंगे कि ईरान को ऐसी धमकी देने के लिये मजबूर किया है बर्तानिया ने और अमरीका ने. अगर ईरान के तेल के मामले को लेकर तीसरी लड़ाई छिड़ गई तो हमारी नज़रों में इसका ज़िम्मेदार सबसे पहले अमरीका और बाद को बर्तानिया होगा क्योंकि बर्तानिया आज इतना मज़बूत नहीं है कि वह अमरीका की शह पाए बग़ैर मैदान में कूदने की सोचे.

१७. ५. ५१. —भगवानदीन

चीन की नाकेबन्दी—

बिरादरी से अलग कर देना या हुक्का पानी बंद कर देना हमेशा से हर समाज के हाथ में एक ऐसा साधन रहा है जिसके ज़रिये वह बदमाशों और गुमराहों को ठिकाने पर ले आए. यह साधन अच्छा है पर आजकल इस से बहुत कम ठीक काम लिया जाता है. इसमें काम लिया जाता है अच्छों को सताने का और इसलिये इसको पूरी कामयाबी नहीं मिलती.

इसी बिना पर अंतरकोमी दायरे में कोई पंद्रह साल पहले इटली के ख़िलाफ़ क़दम उठाया गया क्योंकि उसने अबीसीनिया जैसे मासूम मेमने को झपट कर निगल जाने की कोशिश की. लेकिन स्वार्थ ऐसे ज़बरदस्त थे कि किसी ने उस पर अमल किया किसी ने नहीं किया और वह पाबन्दी लगी न लगी बराबर होगई.

इसी तरह लाल चीन की नाकाबन्दी करने का ठहराव हाल ही में यनो की जनरल एसेम्बली ने पास किया है. अमरीका को

فوجی گھیرا ڈالنے کی بات سوچی تو پھر دنیا یہ سمجھ لے کہ تیسری بڑی لڑائی یہیں سے شروع ھو جائیگی. یہ دھمکی دی تو ایران نے ھے مگر ھم یہ کہینگے کہ ایران کو ایسی دھمکی دینے کے لئے مجبور کیا ھے برطانیہ نے اور امریکہ نے . اگر ایران کے تیل کے معاملے کو لیکر تیسری لڑائی چھڑ گئی تو ھماری نظروں میں اِس کا ذمہ دار سب سے پہلے امریکہ اور بعد کو برطانیہ ھوگا کیونکہ برطانیہ آج اتنا مضبوط نہیں ھے کہ وہ امریکہ کی شہہ پائے بغیر میدان میں کودنے کی سوچے .

۱۷-۵-'۵۱ —بھگوان دین

چین کی ناکہ بندی—

برادری سے الگ کر دینا یا حقہ پانی بند کر دینا ھمیشہ سے ھر سماج کے ھاتھ میں ایک ایسا سادھن رھا ھے جس کے ذریعہ وہ بدمعاشوں اور گمراھوں کو ٹھکانے پر لے آئے یہ سادھن اچھا ھے پر آج کل اِس سے بہت کم ٹھیک کام لیا جاتا ھے . اِس سے کام لیا جاتا ھے اچھوں کو ستانے کا اور اِس لئے اِس کو پوری کامیابی نہیں ملتی .

اِسی بنا پر انتر قومی دائرے میں کوئی پندرہ سال پہلے اٹلی کے خلاف قدم اٹھایا گیا کیونکہ اُس نے ابیسینیا جیسے معصوم میمنے کو جھپٹ کر نگل جانے کی کوشش کی لیکن سوارتھ ایسے زبردست تھے کہ کسی نے اُس پر عمل کیا کسی نے نہیں کیا اور وہ پابندی لگی نہ لگی برابر ھو گئی .

اسی طرح لال چین کی ناکہ بندی کرنے کا ٹھہراؤ حال ھی میں یونو کی جنرل اسمبلی نے پاس کیا ھے . امریکہ کو

ईरान के तेल का मामला इतना साफ़ है और इतनी आसानी से समझा जा सकता है जितना खुले दिन में हाथ पर रक्खा हुआ आँवला. पर अमरीका न जाने क्यों उसमें तरह तरह की उलझनें डालता रहता है.

ईरान के क़ौमियाने तेल के बारे में अमरीका वालों का रूस पर यह इलज़ाम लगाना कि वह ईरानी सरकार को भड़का रहा है बिलकुल थोथा मालूम होता है. हम थोड़ी देर के लिये यह मान लेते हैं कि रूस ने ही ईरानी सरकार को यह सलाह दी कि वह अपने तेल को क़ौमियाले और इसकी जगह कि कोई दूसरा मुल्क उससे फ़ायदा उठाए ईरानी सरकार ख़ुद फ़ायदा उठाए. एक आदमी को अपने चीज़ के मालिक बनने की सलाह देना भड़काना कैसे हो सकता है. भड़काना और बहकाना होता है यह कि जापानी पार्लिमेन्ट में यह तजवीज़ आ रही है कि जनरल मैकआर्थर को जापान का हमेशगी मेहमान मान लिया जाय. भड़काना होता है यह कि एशिया के कम्यूनिज़्म को फैलने से रोकने के लिये फ़ारमूसा का घेरा डाल लिया जाय और प्रशान्त सागर में इसी तरह के और फ़ौजी अड्डे बना लिये जायं.

योरप वाले एशिया पर मुद्दत से छाए रहे. पर भारत के आज़ाद हो जाने के बाद से एशिया के सारे मुल्क जाग गए हैं और अब जहाँ पर भी योरप वालों का क़ब्ज़ा है, फिर चाहे वह क़ब्ज़ा राजकाजी हो, आर्थिक हो या ब्योपारी हो, वहाँ के लोग उस क़ब्ज़े को चालाकी से भरा और अपने देस के लिये बेहद टोटे का समझते हैं. उन्हें उस वक़्त तक कभी तसल्ली नहीं होगी जब तक कि योरप और अमरीका वाले एशिया को एक दम ख़ाली न करदें.

ईरान ने यह धमकी दी है कि बर्तानिया जल्दी से जल्दी उसके तेल के कुएँ उसके हवाले करदे और अगर उसने ऐसा न करके

ایران کے تیل کا معاملہ اِتنا صاف ھے اور اتنی آسانی سے سمجھا جا سکتا ھے جتنا کھلے دن میں ھاتھ پر رکھا ھوا آنولہ. پر امریکہ نہ جانے کیوں اُس میں طرح طرح کی اُلجھنیں ڈالتا رھتا ھے .

ایران کے تیل قومیانے کے بارے میں امریکہ والوں کا روس پر یہ الزام لگانا کہ وہ ایرانی سرکار کو بھڑکا رھا ھے بالکل تھوتھا معلوم ھوتا ھے . ھم تھوڑی دیر کے لئے یہ مانے لیتے ھیں کہ روس نے ھی ایرانی سرکار کو یہ صلاح دی کہ وہ اپنے تیل کو قومیا لے اور اس کی جگہ کہ کوئی دوسرا ملک اُس سے فائدہ اُٹھائے ایرانی سرکار خود ھی فائدہ اُٹھائے ایک آدمی کو اپنی چیز کے مالک بننے کی صلاح دینا بھڑکانا کیسے ھو سکتا ھے . بھڑکنا اور بہکانا ھوتا ھے یہ کہ جاپانی پارلیمنٹ میں یہ تجویز آرھی ھے کہ جنرل میک آرتھر کو جاپان کا ھمیشگی مہمان مان لیا جائے . بھڑکانا ھوتا ھے یہ کہ ایشیا میں کمیونزم کو پھیلنے سے روکنے کے لئے فارموسا کا گھیرا ڈال لیا جائے اور پرشانت ساگر میں اِسی طرح کے اور فوجی اڈے بنا لئے جائیں .

یورپ والے ایشیا پر مدت سے چھائے رھے پر بھارت کے آزاد ھو جانے کے بعد سے ایشیا کے سارے ملک جاگ گئے ھیں اور اب جہاں پر بھی یورپ والوں کا قبضہ ھے ، پھر چاھے وہ قبضہ راج کاجی ھو، آرتھک ھو یا بیوپاری ھو، وھاں کے لوگ اُس قبضے کو چالاکی سے بھرا اور اپنے دیس کے لئے بیحد ٹوٹے کا سمجھتے ھیں . انھیں اس وقت تک کبھی تسلی نہیں ھوگی جبتک کہ یورپ اور امریکہ والے ایشیا کو ایکدم خالی نہ کردیں .

ایران نے یہ دھمکی دی ھے کہ برطانیہ جلدی سے جلدی اُسکے تیل کے کنوئیں اُسکے حوالے کردے اور اگر اُسنے ایسا نہ کرکے

कर सारे ईरान को उनका मालिक बनाना चाहती है. इस सीधी बात के समझने में किसी को दिक़्क़त नहीं होनी चाहिये और न शायद है.

अब लीजिये १६ मई की लंदन की एक ख़बर. वह यह कि यह समझा जाता है कि अमरीका ने बरतानिया और ईरान दोनों को लिखा है कि वह जहाँ तक हो सके सुलह की कोशिश करें और तेल के क़ौमियाने के झगड़े को आपस में तय करलें. लेकिन साथ ही साथ उस ख़बर में यह भी कहा गया है कि अमरीका बर्तानिया का यह हक़ भी मानता है कि बर्तानिया, बर्तानिया के उस जान माल की हिफ़ाज़त कर सकता है जिसको वह ख़तरे में समझे.

है तो यह कोरी ख़बर. हमें इसको मार्के की बात नहीं समझना चाहिये. पर अगर यह एक सच्चाई है तो इसे चालाकी से भरी राजनीत का नमूना मान लीजिये.

एक मिसाल लीजिये. कोई एक आदमी मेरे घर में आ बैठता है और वह मेरे एक बकस को दबा कर बैठ जाता है. अब किसी का यह कहना कि बकस तो आपही का है लेकिन अगर आप उसे हासिल करने के लिये इस आदमी को चोट पहुंचायेंगे या चोट पहुंचाने की कोशिश करेंगे तो उसके रिश्तेदारों को हक़ है कि वह अपने उस रिश्तेदार की जान बचाने के लिये, जो आपके बकस को दबाये बैठा है, आपके घर पर चढ़ आयें.

अब अगर ईरान में बर्तानिया के जान माल का ख़तरा है तो बर्तानिया को चाहिये कि वह जल्दी से जल्दी या ईरानी सरकार से कुछ वक़्त लेकर अपना माल वहाँ से हटाले और अपने जानदारों को वहाँ से वापस बुला ले. बस इस तरह सोचने से राजनीत की गुत्थी आसानी से सुलझ जाती है. पर जब दो मुल्कों को लड़ना ही मंजूर होता है तो वह चालाक राजनीत के ज़रिये ऐसी गुत्थियाँ सुलझाने की जगह जान बूझ कर और उलझा लेते हैं.

کر سارے ایران کو اُن کا مالک بنانا چاھتی ھے . اِس سیدھی بات کے سمجھنے میں کسی کو دقت نہیں ھونی چاھئے اور نہ شاید ھے .

اب لیجئے ١٦ مئی کی لندن کی ایک خبر . وہ یہ کہ یہ سمجھاجاتا ھےکہ امریکہ نے برطانیہ اور ایران دونوں کو لکھا ھے کہ وہ جہاں تک ھو سکے صلح کی کوشش کریں اور تیل کے قومیانے کے جھگڑے کو آپس میں طے کر لیں . لیکن ساتھ ھی ساتھ اُس خبر میں یہ بھی کہا گیا ھے کہ امریکہ برطانیہ کا یہ حق بھی مانتا ھے کہ برطانیہ، برطانیہ کے اُس جان مال کی حفاظت کر سکتا ھے جسکو وہ خطرے میں سمجھے .

ھے تو یہ کوری خبر . ھمیں اِسکو معرکےکی بات نہیں سمجھنا چاھئے . پر اگر یہ ایک سچائی ھے تو اِسے چالاکی سے بھری راج نیت کا نمونہ مان لیجئے .

ایک مثال لیجئے . کوئی ایک آدمی میرے گھر میں آبیٹھتا ھے اور وہ میرے ایک بکس کو دبا کر بیٹھ جاتا ھے . اب کسی کا یہ کہنا کہ بکس تو آپ ھی کا ھے لیکن اگر آپ اُسے حاصل کرنے کے لئے اِس آدمی کو چوٹ پہنچائیں گے یا چوٹ پہنچانے کی کوشش کرینگے تو اُسکے رشتہ داروں کو حق ھے کہ وہ اپنے اُس رشتہ دار کی جان بچانے کے لئے، جو آپکے بکس کو دبائے بیٹھا ھے آپ کے گھر پر چڑھ آئیں .

اب اگر ایران میں برطانیہ کے جان مال کا خطرہ ھے تو برطانیہ کو چاھئےکہ وہ جلدي سے جلدي یا ایرانی سرکار سے کچھ وقت لیکر اپنا مال وھاں سے ھٹا لے اور اپنے جانداروں کو وھاں سے واپس بلا لے . بس اِس طرح سوچنے سے راج نیت کی گتھی آسانی سے سلجھ جاتی ھے . پر جب دو ملکوں کو لڑنا ھی منظور ھوتا ھےتو وہ چالاک راج نیت کے ذریعے ایسی گتھیاں سلجھانے کی جگہ جان بوجھ کر اور اُلجھا لیتے ھیں .

लेने के वक़्त जो वादे किये जाते हैं उनका कोई मतलब नहीं होता. अब वोट देने वाले यह समझ कर वोट ही नहीं देते कि जो उनसे कहा जा रहा है उस पर अमल होगा. अब तो वह यह समझ कर वोट देते हैं कि किसको वोट देने से उन्हें काले बाज़ार में आसानी रहेगी या और इसी तरह की आसानियाँ रहेंगी. यह बात हम अपने ख़याल से नहीं लिख रहे. हमारी तो शायद नज़र भी इस तक न पहुँचती. यह तो हम उस चर्चा के आधार पर लिख रहे है जो आए दिन रेल के डिब्बे में हमको सुनने को मिलती हैं.

सुनते हैं पटना में उन लोगों का जमाव जमने वाला है जो काँगरेस से बिगड़ हुए हैं. सुनते हैं कि उस जमाव में आचार्य कृपलानी और उनके साथी भी शरीक होंगे और शायद उस जमाव के बाद ही जनता वह ठीक ठीकसमझ सकेगी कि डेमोक्रेटिक फ्रन्ट काँगरेस के सागर में नमक की डली की तरह रह रहा है या पत्थर की गोली की तरह.

१५–५–'५१

—भगवानदीन

ईरान और तेल का क़ौमियाना—

सच्ची राजनीत इतनी सीधी होती है और इतनी साफ़ होती है जितनी सरकारी सड़क. उसे नौ बरस के बच्चे को भी समझने में दिक़्क़त नहीं हो सकती. पर चालाकी से भरी राजनीत इतनी टेढ़ी और चक्करदार होती है जितनी भूल भुलैयाँ और उसको कभी कभी बड़े बड़े राजनेता भी नहीं समझ पाते और कोई दो राजनेता एक राय नहीं हो पाते.

ईरान के मुल्क में तेल के कुएँ हैं. अब तक अंगरेज़ी कम्पनी के हाथ में उनका ठेका था. अब ईरान की सरकार उन कुओं को क़ौमिया

لینے کے وقت جو وعدے کئے جاتے ہیں اُن کا کوئی مطلب نہیں ہوتا ۔ اب ووٹ دینے والے یہ سمجھکر ووٹ ہی نہیں دیتے کہ جو اُن سے کہا جارہا ہے اُس پر عمل ہوگا ۔ اب تو وہ یہ سمجھکر ووٹ دیتے ہیں کہ کس کو ووٹ دینے سے انہیں کالے بازار میں آسانی رہیگی یا اور اسی طرح کی آسانیاں رہیں گی ۔ یہ بات ہم اپنے خیال سے نہیں لکھ رہے ۔ ہماری تو شاید نظر بھی اس تک نہ پہنچتی ۔ یہ تو ہم اُس چرچا کے آدھار پر لکھ رہے ہیں جو آئے دن ریل کے ڈبے میں ہم کو سننے کو ملتی ہیں ۔

سنتے ہیں پٹنہ میں اُن لوگوں کا جماؤ جمنے والا ہے جو کانگریس سے بگڑے ہوئے ہیں ۔ سنتے ہیں کہ اُس جماؤ میں آچاریہ کرپلانی اور اُنکے ساتھی بھی شریک ہونگے اور شاید اُس جماؤ کے بعد ہی جنتا یہ ٹھیک ٹھیک سمجھ سکے گی کہ ڈیموکریٹک فرنٹ کانگریس کے ساگر میں نمک کی ڈلی کی طرح رہ رہا ہے یا پتھر کی گولی کی طرح ۔

۱۵-۵-۵۱

—بھگوان دین

ایران اور تیل کا قومیانا—

سچی راج نیت اِتنی سیدھی ہوتی ہے اور اتنی صاف ہوتی ہے جتنی سرکاری سڑک ۔ اُسے نو برس کے بچے کو بھی سمجھنے میں دقت نہیں ہو سکتی ۔ پر چالاکی سے بھری راج نیت اِتنی ٹیڑھی اور چکردار ہوتی ہے جتنی بھول بھلیاں اور اسکو کبھی کبھی بڑے بڑے راج نیتا بھی نہیں سمجھ پاتے اور کوئی دو راج نیتا ایک رائے نہیں ہو پاتے ۔

ایران کے ملک میں تیل کے کنوئیں ہیں ۔ ابتک انگریزی کمپنی کے ہاتھ میں اُن کا ٹھیکہ تھا ۔ اب ایران کی سرکار اُن کنوؤں کو قومیا

पर ही छोड़ते हैं कि वही यह बताएं कि फिर कांगरेसी सरकार में इतने जोर की आपाधापी क्यों फैली हुई है कि बच्चे बच्चे की जबान पर और हर घड़ी यही रहता है कि कांगरेस के राज में किसी तरह का भी सुख न मिला.

१५. ५. ५१ —भगवानदीन

डेमोक्रेटिक फ्रन्ट—

आचार्य कृपलानी ने अपना लोकशाही मोरचा तोड़ कर बड़ी समझदारी का काम किया. पर कांगरेस में, ज़िम्मेदारी का कोई ओहदा न लेकर लोगों के दिल में पहली जैसी इज्ज़त बनाए रखने में उन्होंने और भी ज्यादा समझदारी की. अब जिसके जी में आए वह यह कह सकता है कि कांगरेस में अब पूरा एका है और जिसका जी चाहे वह यह कह सकता है कि कांगरेस की फूट की रजिस्ट्री होगई. आचार्य कृपलानी ने अपने आप को और अपने साथियों को रोज़ की कांगरेस से निकाले जाने की धमकी से हमेशा के लिये आज़ाद कर दिया. अब वह नया दल बनाने या नए दल में शामिल होने के लिये आज़ाद हैं पर हम यह ज़रा भी विश्वास के साथ नहीं कह सकते कि अगर कोई नया दल खोला गया और और अगर वह भी कांगरेस वालों को काँगरेस के लिये खतरनाक मालूम हुआ तो काँगरेस फिर कोई नई धमकी की बात नहीं सोचेगी. हो सकता है इसके लिये भी कोई पेशबन्दी करली गई हो.

कांगरेस एक हो. काँगरेस में फूट पड़े. कांगरेस नए दल तैयार करे या पुराने दल नए नाम रक्खें या अलग अलग लोग चुनाव के लिये खड़े हों, पर सब को यह याद रखना चाहिये कि जनता

پر هی چهوڑتے هیں که وهی یه بتائیں که پهر کانگریسی سرکار میں اِتنے زور کی آپا دهاپی کیوں پهیلی هوئی هے کی بچے بچے کی زبان پر اور هر گهڑی یهی رهتا هے که کانگریس کے راج میں کسی طرح کا بهی سکه نه ملا ۔

۱۵-۵-۵۱ ——بهگوان دین

ڈیموکریٹک فرنٹ——

آچاریه کرپلانی نے اپنا لوک شاهی مورچه توڑ کر بڑی سمجهداری کا کام کیا ۔ پر کانگریس میں ذمه داری کا کوئی عهده نه لے کر لوگوں کے دل میں پهلی جیسی عزت بنائے رکهنے میں انهوں نے اور بهی زیاده سمجهداری کی ۔ اب جس کے جی میں آئے وه یه کهه سکتا هے که کانگریس میں اب پورا ایکا هے اور جس کا جی چاهے وه یه کهه سکتا هے که کانگریس کی پهوٹ کی رجسٹری هو گئی ۔ آچاریه کرپلانی نے اپنے آپ کو اور اپنے ساتهیوں کو روز کی کانگریس سے نکالے جانے کی دهمکی سے همیشه کے لیے آزاد کر دیا ۔ اب وه نیا دل بنانے یا نئے دل میں شامل هونے کے لئے آزاد هیں ۔ پر هم یه ذرا بهی وشواس کے ساتھ نهیں کهه سکتے که اگر کوئی نیا دل کهولا گیا اور اگر وه بهی کانگریس والوں کو کانگریس کے لئے خطرناک معلوم هوا تو کانگریس پهر کوئی نئی دهمکی کی بات نهیں سوچے گی ۔ هوسکتا هے اِسکے لئے بهی کوئی پیش بندی کر لی گئی هو ۔

کانگریس ایک هو ۔ کانگریس میں پهوٹ پڑے ۔ کانگریس نئے دل تیار کرے یا پرانے دل نئے نام رکهیں ۔ الگ الگ لوگ چناؤ کے لئے کهڑے هوں ، پر سب کو یه یاد رکهنا چاهئے که جنتا عام

पुलिस के ओहदे तक उस वक़्त पहुँचे जब हिन्दुस्तानियों के नसीब में ब्रह्मा जी इतना बड़ा ओहदा लिख ही नहीं सकते थे. उनसे उनकी कामयाबी का हाल जानने के लिये एक दिन उनके मकान पर कलकत्ते में हम सवाल उठा बैठे. उन्होंने हमारे सामने जी खोल कर रख दिया.

वह बोले, इसमें शक नहीं कि मैंने अपनी उमर में कभी रिशवत नहीं ली और अगर रिशवत लेता तो शायद इतने नफ़े में न रहता जितना मैं अब हूँ. पर मैं यह बताए देता हूँ कि मेरे रिशवत न लेने से मेरे नीचे काम करने वालों में रिशवत घटी नहीं और ज़्यादा बढ़ी. और अगर मैं उनको रिशवत लेने से रोकता या रोकने की कोशिश करता तो मैं डिप्टी सुपरिनटेनडेन्ट पुलिस से सुपरिनटेनडेन्ट पुलिस तो क्या हो जाता उल्टा बरख़ास्त कर दिया गया होता, या किसी जेलख़ाने में पत्थर फोड़ रहा होता.

मैंने पूछा—ऐसा क्यों ?

उन्होंने जवाब दिया—अपने मातहतों को ठीक रखने के लिये रिशवत न लेना भर काफ़ी नहीं होता. उसके लिये यह भी ज़रूरी होता है कि आदमी हर तरह से ईमानदार हो, और अपनी जगह से हट जाने के लिये हर वक़्त तैयार रहे. मातहतों पर असर सिर्फ़ उसी वक़्त होता है जब उनका अफ़सर आपसी और घरेलू छोटी से छोटी बेईमानी से बचने की कोशिश करता हो.

आख़ीर में वह आँसू भर कर यह बोले कि मैं लोगों की नज़रों में रिशवत न लेने की वजह से कितना ही ईमानदार क्यों न जँचता होऊँ, मेरा दिल काला था और है. अगर ऐसा न होता तो मेरे मातहत कभी बेईमानी की हिम्मत नहीं कर सकते थे.

इन शब्दों के साथ हम वज़ीरों को दी जाने वाली श्री टंडन जी की सनद पर अपने दसख़त किये देते हैं और अब हम यह वज़ीरों

پولیس کے عہدے تک اُس وقت پہنچے جب ہندستانیوں کے نصیب میں برہما جی اِتنا بڑا عہدہ لکھ ہی نہیں سکتے تھے. اُن سے اُنکی کامیابی کا حال جاننے کے لئے ایک دن اُنکے مکان پر کلکتے میں ہم سوال اُٹھا بیٹھے. اُنھوں نے ہمارے سامنے جی کھول کر رکھدیا.

وہ بولے' اِس میں شک نہیں کہ میں نے اپنی عمر میں کبھی رشوت نہیں لی اور اگر رشوت لیتا تو شاید اِتنے نفع میں نہ رہتا جتنا میں اب ہوں. پر میں یہ بتائے دیتا ہوں کہ میرے رشوت نہ لینے سے میرے نیچے کام کرنے والوں میں رشوت گھٹی نہیں اور زیادہ بڑھی. اور اگر میں اُنکو رشوت لینے سے روکتا یا روکنے کی کوشش کرتا تو میں ڈپٹی سپرنٹنڈنٹ پولیس سے سپرنٹنڈنٹ پولیس تو کیا ہوجاتا اُلٹا برخاست کر دیا گیا ہوتا' یا کسی جیل خانے میں پتھر پھوڑ رہا ہوتا.

میں نے پوچھا - ایسا کیوں ؟

اُنھوں نے جواب دیا — اپنے ماتحتوں کو ٹھیک رکھنے کے لئے رشوت نہ لینا بھر کافی نہیں ہوتا. اُسکے لئے یہ بھی ضروری ہوتا ہے کہ آدمی ہر طرح سے ایماندار ہو' اور اپنی جگہ سے ہٹ جانے کے لئے ہر وقت تیار رہے. ماتحتوں پر اثر صرف اسی وقت ہوتا ہے جب اُن کا افسر آپسی اور گھریلو چھوٹی سی چھوٹی بے ایمانی سے بچنے کی کوشش کرتا ہو.

آخر میں وہ آنسو بھر کر یہ بولے کہ میں لوگوں کی نظروں میں رشوت نہ لینے کی وجہ سے کتنا ہی ایماندار کیوں نہ جنچتا ہوؤں' میرا دل کالا تھا اور ہے. اگر ایسا نہ ہوتا تو میرے ماتحت کبھی بے ایمانی کی ہمت نہیں کر سکتے تھے.

اِن شبدوں کے ساتھ ہم وزیروں کو دی جانے والی شری ٹنڈن جی کی سند پر اپنے دستخط کئے دیتے ہیں اور اب ہم یہ وزیروں

खुले दिल अनाज भेज ही रहा है. हो सकता है मनचले अमरीकी चीन और रूस के अनाज बिक्री में कोई राजकाजी चाल की गंध पाते हों, तो यह चाल तो अमरीकी खुद भी चल सकते थे. पर वह तो चाल चल कर भी हिन्दुस्तान का पेट भरना नहीं चाहते.

अमरीका से अभी अनाज रवाना होने की बात तय नहीं हुई. जब रवाना होने की बात तय होगी तब मुमकिन है कि हिन्दुस्तान यह कह दे कि अब उसे अमरीका का अनाज किसी भाव भी नहीं चाहिये.

अमरीका इस धोके में न रहे कि वह जिस मुल्क को चाहे भूका मार सकता है और हिन्दुस्तान को चाहिये कि वह उस मुल्क से अनाज की उम्मीद न रक्खे जो अनाज का भाव चढ़ाने के लिये अनाज के खलियानों में आग लगा देता है और इस तरह ईश्वर को सोने के मोल खरीदने की बात करता है.

१६. ५. ५१ --भगवानदीन

कांगरेसी वज़ीरों को सनद_

बुलंदशहर की एक आम सभा में २८ अप्रैल को बोलते हुए कांगरेस के सभापति श्री टंडन जी ने कांगरेसी वज़ीरों को यह सनद दे दी कि वह हर तरह से पाक हैं और जो इलज़ाम उनके खिलाफ़ जनता और कांगरेसियों ने लगाए हैं उनसे वह बरी हैं. हमें कोई हक़ नहीं कि हम यह कह सकें कि टंडन जी जो कुछ कह रहे हैं वह सच नहीं है. पर इस सिलसिले में हम अपने एक मित्र की सच्ची बात लिख देना चाहते हैं.

वह बिहार के रहने वाले थे और सरकारी नौकरी में डिप्टी सुपरिंटेन्डेन्ट की हैसियत से भरती हुए और इन्सपेक्टर जनरल

کھلے دل اناج بھیج ہی رہا ہے ۔ ہو سکتا ہے منچلے امریکی چین اور روس کے اناج بکری میں کوئی راج کاجی چال کی گندھ پاتے ہوں، تو یہ چال تو امریکی خود بھی چل سکتے تھے ۔ پر وہ تو چال چلکر بھی ہندستان کا پیٹ بھرنا نہیں چاہتے ۔

امریکہ سے ابھی اناج روانہ ہونے کی بات طے نہیں ہوئی ۔ جب روانہ ہونے کی بات طے ہوگی تب ممکن ہے کہ ہندستان یہ کہدے کہ اب اُسے امریکہ کا اناج کسی بھاؤ بھی نہیں چاہئے ۔

امریکہ اِس دھوکے میں نہ رہے کہ وہ جس ملک کو چاہے بھوکا مار سکتا ہے اور ہندستان کو چاہئے کہ وہ اُس ملک سے اناج کی اُمید نہ رکھے جو اناج کا بھاؤ چڑھانے کے لئے اناج کے کھلیانوں میں آگ لگا دیتا ہے اور اِس طرح ایشور کو سونے کے مول خریدنے کی بات کرتا ہے ۔

۱۶-۵-'۵۱ ---بھگوان دین

کانگریسی وزیروں کو سند---

بلند شہر کی ایک عام سبھا میں ۲۸ اپریل کو بولتے ہوئے کانگریس کے سبھا پتی شری ٹنڈن جی نے کانگریسی وزیروں کو یہ سند دے دی کہ وہ ہر طرح سے پاک ہیں اور جو الزام اُنکے خلاف جنتا اور کانگریسیوں نے لگائے ہیں اُن سے وہ بری ہیں ۔ ہمیں کوئی حق نہیں کہ ہم یہ کہہ سکیں کہ ٹنڈن جی جو کچھ کہہ رہے ہیں وہ سچ نہیں ہے ۔ پر اِس سلسلے میں ہم اپنے ایک مترا کی سچی بات لکھ دینا چاہتے ہیں ۔

وہ بہار کے رہنے والے تھے اور سرکاری نوکری میں ڈپٹی ... انسپکٹر جنرل

کرنے کی کوشش کرتا رہا کہ اُس میں بیحد ...الدار ہوئے ...
کا مادہ باقی ھے. اِس کوشش میں وہ فیل ہو گیا. ...
مفت دینے کی بات کہی' کبھی آدھا مفت ...
کی بات کہی اور کبھی کسی منچلے نے ھندستانیوں پر طرح طرح
کے الزام لگا کر یہ بھی ثابت کرنے کی کوشش کی کہ ھندستانی ...
بھی رحم کے حقدار نہیں ۔ گائے کو لے کر ...
گیا. اگر کہیں گائے والی بات اخبار والے جنتا ...
دیتے تو وہ امریکہ سے آئے اناج پر تھوکنے ... اور ...
روادار نہ ہوتی. کچھ بھی سہی' آخر امریکہ ...
جذبے کو پھینک بیوپاری جذبے پر آگیا ہے ...
اناج بھیجنے کے لئے تیار ھے. وہ وقت دور نہیں ...
پانچ چھ مہینے اور نکل جائیں اور ...
میں کوئی فوجی اڈے یا فوجی مال کی بات ...
سونے کی مانگ کرے. ھمارے پردھان منتری شری جواہر لال ...
ایسی تکلیف کے موقعہ پر بھی امریکہ سے یہ لفظ کہکر کہ ...
آبرو کے خلاف شرطوں پر کسی بھی ملک سے کسی طرح دان میں
اناج لینا منظور نہیں' ایسا کام کیا جو گاندھی کے دیس کی شان
کے شایاں تھا. انسانیت کے معاملے میں امریکہ اب بھی ...
چین اور روس سے سبق لے سکتا ھے جسے وہ بےدھرمی اور دھرم سے
گرا ہوا سمجھتا ھے. جو چین امریکہ کے ہاتھ میں کھلونا بنے ہوئے
چانگ کائی شیک کے زمانے میں اناج کو ترستا تھا وہ آج لال ہوکر
دوسرے ملکوں کو اناج بھیج رہا ھے اور وقت پر بھیج رہا ھے. ہو
سکتا ھے چین نے یہ چاول اپنا پیٹ کاٹ کر بھیجا ہو. پر اِس سے تو
یہی ثابت ہوگا کہ غریب لال چین میں سونے کے نشے میں چور امریکہ
سے کہیں زیادہ انسانیت ھے. دھرم کے معاملے میں بدنام روس بھی

... इनसानियत का माद्दा बाकी है. इस कोशिश में वह फेल हो
गया. कभी उसने अनाज मुफ्त देने की बात कही कभी आधा
मुफ्त और आधा उधार देने की बात कही और कभी किसी मनचले
ने हिन्दुस्तानियों पर तरह तरह के इलज़ाम लगा कर यह भी साबित
करने की कोशिश की कि हिन्दुस्तानी किसी तरह भी रहम के हकदार
नहीं. गाय को लेकर तो न जाने क्या क्या लिख मारा गया. अगर
कहीं गाय वाली बात अखबार वाले जनता के कानों तक पहुंचा देते
तो वह अमरीका से आए अनाज पर थूकने को और कुछ करने
की भी रवादार न होती. कुछ भी सही. आखिर अमरीका अपने
इनसानियत के जज़बे को फेंक व्योपारी जज़बे पर आ गया है और
अब वह सिर्फ उधार अनाज भेजने के लिये तैयार है. वह वक़्त दूर
नहीं है कि इस तैयारी में पांच छै महीने और निकल जाएं और
वह या तो अनाज के बदले में कोई फौजी अड्डा या फौजी माल की बात
खड़ी करे या चमकते हुए सोने की मांग करे. हमारे प्रधान मंत्री श्री
जवाहरलाल जी ने ऐसी तकलीफ़ के मौक़े पर भी अमरीका से
यह लफ्ज़ कह कर कि अपनी आबरू के खिलाफ़ शर्तों पर किसी भी
मुल्क से किसी तरह दान में अनाज लेना मंज़ूर नहीं ऐसा काम
किया जो गांधी के देस की शान के शायां था. इनसानियत के
मामले में अमरीका अब भी उस चीन और रूस से सबक़ ले सकता
है जिसे वह बेधर्मी और धर्म से गिरा हुआ समझता है. जो चीन
अमरीका के हाथ में खिलौना बने हुए चांगकाई शेक के ज़माने में
अनाज को तरसता था वह आज लाल होकर दूसरे मुल्कों को
अनाज भेज रहा है और वक़्त पर भेज रहा है. हो सकता है चीन
ने यह चावल अपना पेट काट कर भेजा हो. पर इस से तो यही
साबित होगा कि ग़रीब लाल चीन में सोने के नशे में चूर अमरीका
से कहीं ज्यादा इनसानियत है. धर्म के मामले में बदनाम रूस भी

अमरीका धोके में न रहे !

हिन्दुस्तान गांधी का देस है. हिन्दुस्तान का आत्मा यह मानता है कि आदमी कुछ इस तरह का बना है कि वह भूका उठता तो है पर भूका सोता नहीं. इसी तरह हिन्दुस्तान को यह भी विश्वास है कि ईश्वर है और वह सबकी सुध लेता है. कोई यह न समझे कि इस विश्वास ने हिन्दुस्तान को आलसी बनाया हो. इसने तो उलटा उसे चुस्त बनाया है. क्योंकि वह यह भी तो समझता है कि जो ईश्वर सुध लेता है उसी ने दौड़ धूप के लिये दो पाँव और काम करने के लिये दो हाथ दे रक्खे हैं. अमरीका के नाज के भरोसे पर वह कब था और कब है? अमरीका का उससे अपनापा हुए हुए हैं कितने दिन! वह तो बरसों से अनाज की कमी का मुक़ाबला करता रहा है, किसी तरह पूरा डालता रहा है और दूसरे मुल्कों को आड़े वक़्त पर अनाज भेजता रहा है. आज के अकाल के मौके पर अमरीका ने हिन्दुस्तान को अपनी समझ से भूका मार डालने की ज़रूरत से ज़्यादा चालें चलीं. वह आज अनाज भेजे, कल अनाज भेजे की दाल मटोल में लगे रह कर बेमतलब यह साबित

امریکہ دھوکے میں نہ رہے !

ہندستان گاندھی کا دیس ہے ۔ ہندستان کا آتما یہ مانتا ہے کہ آدمی کچھ اِس طرح کا بنا ہے کہ وہ بھوکا اٹھتا تو ہے پر بھوکا سوتا نہیں ۔ اِسی طرح ہندستان کو یہ بھی وشواس ہے کہ ایشور ہے اور وہ سب کی سدھ لیتا ہے ۔ کوئی یہ نہ سمجھے کہ اس وشواس نے ہندستان کو آلسی بنایا ہو ۔ اِسنے تو اُلٹا اُسے چست بنایا ہے ۔ کیونکہ وہ یہ بھی تو سمجھتا ہے کہ جو ایشور سدھ لیتا ہے اسی نے دوڑ دھوپ کے لئے دو پاؤں اور کام کرنے کے لئے دو ہاتھ دے رکھے ہیں ۔ امریکہ کے ناج کے بھروسے پر وہ کب تھا اور کب ہے ؟ امریکہ کا اُس سے اپنا پا ہوئے ہوئے ہی کتنے دن ! وہ تو برسوں سے اناج کی کمی کا مقابلہ کرتا رہا ہے ، کسی طرح پورا ڈالتا رہا ہے اور دوسرے ملکوں کو آڑے وقت پر اناج بھیجتا رہا ہے ۔ آج کے اکال کے موقع پر امریکہ نے ہندستان کو اپنی سمجھ سے بھوکا مار ڈالنے کی ضرورت سے زیادہ چالیں چلیں ۔ وہ آج اناج بھیجے کل اناج بھیجے کی دال مٹول میں لگے رہ کر بے مطلب یہ ثابت

अपनी एक बच्ची को कैसा उम्दा सबक़ सिखा रहा है. वह भी क्या दृश्य था जब सुई तागा ले कर बापू सिलाई कर रहे थे!

उस समय यह सिर्फ़ मेरे लिये ही सबक़ था मगर आज हम सब के लिये सबक़ है. जब इतने बड़े महापुरुश भी अपने हाथ से सी कर कपड़ा इस्तेमाल करते थे तब आज जब कि आधे से ज्यादा देस बासियों को फटा कपड़ा भी नहीं मिलता है, हमें क्या अधिकार है कि ज़रा सा फटा हुआ कपड़ा सीने के बजाय दूसरा नया लें? कपड़े सी कर पहनने में हमें बिलकुल शरम न होनी चाहिये. बल्कि हमें गर्व होना चाहिये कि हम ऐसा करके देस को फ़ायदा पहुंचा रहे हैं देस की सेवा कर रहे हैं.

आज भी वह शाल मेरे पास प्रसाद या पाठ के रूप में मौजूद है.

चुटकुले

बर्फ़ वाला—बाबू जी! बर्फ़ लेजाइये. सस्ता है.

गाहक—क्या भाव है?

बर्फ़ वाला—सिर्फ़ दो पैसे सेर.

गाहक—तब तो जरूर बासी होगा, कई दिन का बना होगा.

× × × ×

दो लड़के स्कूल जा रहे थे. दोनों बड़े गप्पी थे. एक ने कहना शुरू किया—"कल जब मैं जल्दी जल्दी पैडिल मारता हुआ स्कूल पहुँचा तो रामू ने कहा—'तुम्हारी साइकिल का चेन पीछे गिर पड़ा है.' इस पर मैं झट पट साइकिल पर चढ़ कर वापस दौड़ा और भाग्य से राह में मुझे चेन मिल गई. मैं उसे जेब में रखकर और साइकिल पर चढ़ कर झट पट स्कूल चला आया."

اپنی ایک بچی کو کیسا عمدہ سبق سکھا رہا ہے . وہ بھی کیا درشیہ تھا جب سوئی تاگا لے کر باپو سلائی کر رہے تھے !

اس سمے یہ صرف میرے لئے ہی سبق تھا مگر آج ہم سب کے لئے سبق ہے . جب اتنے بڑے مہا پرش بھی اپنے ہاتھ سے سی کر کپڑا استعمال کرتے تھے تب آج جب کہ آدھے سے زیادہ دیس باسیوں کو پھٹا کپڑا بھی نہیں ملتا ہے ، ہمیں کیا ادھیکار ہے کہ ذرا سا پھٹا ہوا کپڑا سینے کے بجائے دوسرا نیا لیں ؟ کپڑے سی کر پہننے میں ہمیں بالکل شرم نہ ہونی چاہئے ، بلکہ ہمیں گرو ہونا چاہئے کہ ہم ایسا کر کے دیس کو فائدہ پہنچا رہے ہیں دیس کی سیوا کر رہے ہیں .

آج بھی وہ شال میرے پاس پرساد یا پاٹھ کے روپ میں موجود ہے .

چٹکلے

برف والا — بابو جی ! برف لے جائیے سستا ہے !

گاہک — کیا بھاؤ ہے ؟

برف والا — صرف دو پیسے سیر

گاہک — تب تو ضرور باسی ہوگا کئی دن کا بنا ہوگا .

× × ×

دو لڑکے اسکول جا رہے تھے . دونوں بڑے گپی تھے . ایک نے کہنا شروع کیا — "کل جب میں جلدی جلدی پیڈل مارتا ہوا اسکول پہنچا تو رامو نے کہا — تمہاری سائکل کی چین پیچھے گر پڑی ہے . اس پر میں جھٹ پٹ سائکل پر چڑھکر واپس دوڑا اور بھاگیہ سے راہ میں مجھے چین مل گئی . میں اسے جیب میں رکھکر اور سائکل پر چڑھکر جھٹ پٹ اسکول چلا آیا ."

मालिश की. फिर पुराने शाल के बदले में जो नया शाल मेरे पास था, सिर पर डाल दिया. मगर दूसरा शाल सिर पर पड़ते ही बापू ने चौंक कर उसको हाथ लगाया. वह बोले—"यह क्यों? आज नया कपड़ा कहाँ से आया?"

मैंने कहा—"मेरा शाल है. वह शाल तो अब पुराना होने से फट गया है. मेरे पास यह नया शाल बेकार है. आप अब इसे ही इस्तेमाल कीजिये."

मगर बापू कब मानने वाले थे. उन्होंने कहा—"हाँ, तुम्हारे लिये तो यही होगा. क्योंकि तुम्हारे पिता जी तुम्हें देते हैं न? मगर मेरे पिता जी कहाँ हैं जो इस तरह नया शाल देंगे? अगर तुम कमा कर यह शाल मुझे देती तब तो मैं ले लेता. मगर आज न तुम एक कौड़ी कमाती हो, न मैं कमाता हूँ. मैं तो हूँ ग़रीब आदमी. मेरा पुराना शाल मेरे पास लाओ. मैं उसे सी कर नया कर लूंगा."

मैंने कहा—"आप क्यों सियें? आप यह काम मुझे करने दीजिये. मैं उसे सी दूँगी."

मगर बापू न माने. उन्होंने अपने हाथ से सुई तागा ले कर उस शाल में पैवन्द लगा दिया. इस तरह उन्होंने उसे बिलकुल नया सा शाल बना दिया.

जब वह शाल को सी कर उठे तब रात के ग्यारह बज गए थे. आध घंटा उनको सीने में लगा. फिर दिसम्बर की ठंड भी शुरू हो गई थी जब सीने का काम ख़तम कर लिया. तब बापू आनंद से बोले—"देखो, मैं होशियार दर्ज़ी हूँ न?"

मैं शर्म से यह दृश्य (नज़ारा) देख रही थी कि मेरे क़सूर के कारन यह ७७ साल का बूढ़ा जो दुनिया का महापुरुश है रात को

پر آئے ۔ میں نے اُن کو اوڑھایا ۔ پھر پھر دباکر سر پر تیل کی مالش کی ۔ پھر پرانے شال کے بدلے میں جو نیا شال میرے پاس تھا سر پر ڈال دیا ۔ مگر دوسرا شال سر پر پڑتے ہی باپو نے چونک کر اُسکو ہاتھ لگایا ۔ وہ بولے — "یہ کیوں ؟ آج نیا کپڑا کہاں سے آیا ؟"

میں نے کہا — "میرا شال ہے ۔ وہ شال تو اب پرانا ہونے سے پھٹ گیا ہے ۔ میرے پاس یہ نیا شال بے کار ہے ۔ آپ اب اِسے ہی اِستعمال کیجئے ۔"

مگر باپو کب ماننے والے تھے ۔ اُنھوں نے کہا — "ہاں تمہارے لئے تو یہی ہوگا کیونکہ تمہارے پتا جی تمہیں دیتے ہیں نہ ؟ مگر میرے پتا جی کہاں ہیں جو اس طرح نیا شال دینگے ؟ اگر تم کما کر یہ شال مجھے دیتیں تب تو میں لے لیتا ۔ مگر آج نہ تم ایک کوڑی کماتی ہو نہ میں کماتا ہوں ۔ میں تو ہوں غریب آدمی ۔ میرا پرانا شال میرے پاس لاؤ ۔ میں اسے سی کر نیا کر لوں گا ۔"

میں نے کہا — "آپ کیوں سئیں ؟ آپ یہ کام مجھے کرنے دیجئے ۔ میں اُسے سی دونگی ۔"

مگر باپو نہ مانے ۔ اُنھوں نے اپنے ہاتھ سے سوئی تاگا لے کر اس شال میں پیوند لگا دیا ۔ اس طرح اُنھوں نے اسے بالکل نیا سا شال بنا دیا ۔

جب وہ شال کو سی کر اُٹھے تب رات کے گیارہ بج گئے تھے ۔ آدھ گھنٹہ اُنکو سینے میں لگا ۔ پھر دسمبر کی ٹھنڈ بھی شروع ہوگئی تھی ۔ جب سینے کا کام ختم کر لیا تب باپو آنند سے بولے — "دیکھو میں ہوشیار درزی ہوں نہ ؟"

میں شرم سے یہ درشیہ (نظارہ) دیکھ رہی تھی کہ میرے قصور کے کارن یہ ۷۷ سال کا بوڑھا جو دنیا کا مہاپرش ہے رات کو

बापू ने दरज़ी का काम किया

(कुमारी मनु बहन गान्धी)

यह घटना नोआखाली की है.

नोआखाली में अभी बापू की यात्रा शुरू नहीं हुई थी. यह यात्रा किसी देव-मंदिर के दर्शन के लिये नहीं थी. वहाँ भाई भाई आपस में झगड़ते थे, मार काट करते थे. वहाँ बच्चे, बूढ़े, बहनें सभी परेशान थे.

बापू तो सभी के पिता थे. उनके लिये सभी भाई बहन एक से थे. यह सब हाल सुन कर वह दिल्ली से नोआखाली को दौड़ गए. वह श्रीरामपुर नाम के एक गाँव में ठहरे. वह उस गाँव में एक झोपड़ी में रहते थे. फिर उन्होंने सोचा कि मासूम बेगुनाह औरतों बच्चों पर ज़ुल्म हुआ है. इसलिये मुझे वहीं जाना चाहिये और जहाँ यह सब हुआ है उसी जगह पहुँचना दरिद्र नारायन भगवान की यात्रा के बराबर है. इसलिये बापू ने 'यात्रा' शब्द इस्तेमाल किया.

बापू के लिये भगवान या देवता कौन थे. यह हम अब समझ गए. अब मैं फिर दरज़ी वाली बात पर आती हूँ. अभी बापू श्रीरामपुर में थे. यह २५ दिसम्बर सन १९४६ की बात है.

बापू के पास पशमीने का एक क़ीमती गरम शाल था. बापू कभी उस शाल से सिर ढकते थे. कभी दोनों पैरों को ठंड से बचाते थे.

वह शाल पुराना होने के कारन फट गया था. मैंने सोचा, अब इस शाल की जगह दूसरा शाल बापू को दूँ. इसलिये मैंने दूसरा शाल रख दिया. रात के दस बज चुके थे. बापू सोने को खाट पर आए. मैंने उनको ओढ़ाया, फिर पैर दबा कर सिर पर तेल की

باپو نے درزی کا کام کیا

(کماری منو بہن گاندھی)

یہ گھٹنا نواکھالی کی ہے .

نواکھالی میں ابھی باپو کی یاترا شروع نہیں ہوئی تھی . یہ یاترا کسی دیو مندر کے درشن کے لئے نہیں تھی . وہاں بھائی بھائی آپس میں جھگڑتے تھے ، مار کاٹ کرتے تھے . وہاں بچے ، بوڑھے ، بہنیں سبھی پریشان تھے .

باپو تو سبھی کے پتا تھے . اُنکے لئے سبھی بھائی بہن ایک سے تھے . یہ سب حال سن کر وہ دلی سے نواکھالی کو دوڑے گئے . وہ شری رام پور نام کے ایک گاؤں میں ٹھہرے . وہ اُس گاؤں میں ایک جھونپڑی میں رہتے تھے . پھر اُنھوں نے سوچا کہ معصوم بے گناہ عورتوں بچوں پر ظلم ہوا ہے . اس لئے مجھے وہیں جانا چاہئے اور جہاں یہ سب ہوا ہے اُسی جگہ پہنچنا دردر نارائن بھگوان کی یاترا کے برابر ہے . اِس لئے باپو نے 'یاترا' شبد استعمال کیا .

باپو کے لئے بھگوان یا دیوتا کون تھے یہ ہم اب سمجھ گئے . اب میں پھر درزی والی بات پر آتی ہوں . ابھی باپو شری رام پور میں تھے . یہ ۲۵ دسمبر سن ۱۹۴۶ کی بات ہے .

باپو کے پاس پشمینے کا ایک قیمتی گرم شال تھا . باپو کبھی اُس شال سے سر ڈھکتے تھے ، کبھی دونوں پیروں کو ٹھنڈ سے بچاتے تھے .

وہ شال پرانا ہونے کے کارن پھٹ گیا تھا . میں نے سوچا اب اِس شال کی جگہ دوسرا شال باپو کو دوں . اِس لئے میں نے دوسرا شال رکھ دیا . رات کے دس بج چکے تھے . باپو سونے کو کھاٹ

एडीटर—प्रेम भाई

ایڈیٹر—پریم بھائی

आओ घूमें

(भाई शिक्षार्थी, सम्पादक 'लल्ला')

फुदक फुदक कर चिड़िया चहकी
कली कली खिल कर के महकी
दुनिया है कुछ और सुबह की.

आओ घूमें.

हवा चली है हलके हलके
लहरें उठीं, सरोवर छलके
थिरके फूल, ओस कन ढलके

हम भी झूमें.

तारे सोए सूरज जागा
टूटा अंधियारे का तागा
हो न पाठशाला में नाग़ा

पोथी चूमें.

آؤ گھومیں

(بھائی شکشارتھی' سمپادک 'للا')

پھدک پھدک کر چڑیا چہکی
کلی کلی کھل کر کے مہکی
دنیا ہے کچھ اور صبح کی

آؤ گھومیں .

ہوا چلی ہے ہلکے ہلکے
لہریں اُٹھیں' سرور چھلکے
تھرکے پھول' اوس کن ڈھلکے

ہم بھی جھومیں

تارے سوئے سورج جاگا
ٹوٹا اندھیارے کا تاگا
ہو نہ پاٹھ شالا میں ناغا

پوتھی چومیں .

आदिम जातियों के बारे में अंगरेज़ी में किताबें मिलती हैं पर वह इस निगाह से लिखी गई हैं कि उनको किस तरह से क़ाबू मे रक्खा जाय. हिन्दी में जो दो चार किताबें मिलती हैं वह या तो अंगरेज़ी किताबों की नक़ल हैं या आदिम जातियों के रस्मोरिवाज की कहानियाँ. पर केला जी की यह किताब कुछ और ही ढंग से लिखी गई है. इसमें आदिम जातियों का मामूली हाल बताया गया है. उनकी सभ्यता, उनके गीत, उनकी कथाएं, उनके त्योहार भी बताये गये हैं. साथ ही साथ यह भी बताया गया है कि भारत को स्वाधीन करने में इन जातियों का भी और जातियों से कम हाथ नहीं है.

केला जी ने यह दिखला कर फिर यह बतलाने की कोशिश की है कि भारत के सूबे, भारत की सरकार और भारत की दूसरी संस्थाएं उनके बारे में क्या क्या कर रही हैं. वह इतना ही कह कर नहीं रह गए. उन्होंने यह भी सुझाया है कि क्या और कोशिशें करनी चाहियें जिससे यह जातियाँ जल्दी ही हमारे कंधे से कंधा मिलाकर हम जैसे ही काम कर सकें.

किताब त्यागमूर्ति ठक्कर बापा को समर्पित की गई है और यह ठीक ही किया गया है.

जो सचमुच जी से लोकशाही के भक्त हैं उनको यह किताब पढ़नी ही चाहिये.

— म.

آدم جاتیوں کے بارے میں انگریزی میں کتابیں ملتی ہیں پر وہ اِس نگاہ سے لکھی گئی ہیں کہ اُن کو کس طرح سے قابو میں رکھا جائے ۔ ہندی میں جو دو چار کتابیں ملتی ہیں وہ یا تو انگریزی کتابوں کی نقل ہیں یا آدم جاتیوں کے رسم رواج کی کہانیاں ۔ پر کیلا جی کی یہ کتاب کچھ اور ہی ڈھنگ سے لکھی گئی ہے ۔ اِس میں آدم جاتیوں کا معمولی حال بتایا گیا ہے ۔ اُن کی سبھیتا، اُن کے گیت، اُن کی کتھائیں، اُن کے تیوہار بھی بتائے گئے ہیں ۔ ساتھ ہی ساتھ یہ بھی بتایا گیا ہے کہ بھارت کو سوادھین کرنے میں اِن جاتیوں کا بھی اور جاتیوں سے کم ہاتھ نہیں ہے ۔

کیلا جی نے یہ دکھلا کر پھر یہ بتلانے کی کوشش کی ہے کہ بھارت کے صوبے، بھارت کی سرکار اور بھارت کی دوسری سنستھائیں اُن کے بارے میں کیا کیا کر رہی ہیں ۔ وہ اِتنا ہی کہکر نہیں رہ گئے ۔ اُنھوں نے یہ بھی سجھایا ہے کہ کیا اور کوششیں کرنی چاہئیں جس سے یہ جاتیاں جلدی ہی ہمارے کندھے سے کندھا ملا کر ہم جیسے ہی کام کر سکیں ۔

کتاب تیاگ مورتی ٹھکر باپا کو سمرپت کی گئی ہے اور یہ ٹھیک ہی کیا گیا ہے ۔

جو سچ مچ جی سے لوک شاہی کے بھگت ہیں اُن کو یہ کتاب پڑھنی ہی چاہئے ۔

م. —

इस नावेल के तीन भाग हैं. पहले भाग में आज़ाद हिन्द फ़ौज के एक सिपाही नरेन का जीवन है. दूसरे भाग में सन' ४२ में शहीद होने वाले अलीम नाम के एक गाँव निवासी की भोली भाली नौजवान बीवी सकीना पर साम्राजवाद और इस गन्दे समाज के ज़रिये किये गए अत्याचारों की तसवीर है. तीसरे भाग में मज़दूर एकता, उन में भाई चारा और उनकी शक्ति का बर्नन है. कानपुर के गोली कांड से शायद सभी परिचित हैं. उसी समय की हड़ताल, बेरहम गोली और लाठी बर्शा और मिल मालकों की साज़िश की तस्वीर इस भाग में खींची गई है पहले दोनों भाग अलग अलग भी पूरे हैं और एक लम्बी कहानी मालूम देते हैं. फिर भी तीनों भाग मिल कर एक नावेल बनाते हैं.

लेखक ने मज़दूरों के शान्तिमय आन्दोलन की ताक़त का अनुभव इस नावेल में कराया है. इस ताक़त की आत्मा है मज़दूरों की एकता. इस नावेल में जगह जगह "संयुक्त मोरचा" के महत्व पर रोशनी डाली गई है. नए समाज को पैदा करने के लिये मिला जुला मोरचा ही एक मशाल है. आज इस मशाल की सख़्त ज़रूरत है.

भाशा सरल, सुन्दर और बड़ी जान्दार है. हाँ, तकनीक में काफ़ी गड़बड़ी है. अगर साट को दूसरी तकनीक में दिखाया जाता तो चित्रन में जो अस्वाभाविकपन आगया है वह न आता.

—मुजीब रिज़वी

हमारी आदिम जातियाँ—

लिखने वाले, श्री भगवान दास केला और श्री अखिल विनय.

निकालने वाले—भारतीय ग्रंथ माला. दारागंज. इलाहाबाद.

लिखावट नागरी, सफ़े २५६. दाम साढ़े तीन रुपए.

اِس ناول کے تین بھاگ ھیں. پہلے بھاگ میں آزاد ھند فوج کے ایک سپاھی نرین کا جیون ھے. دوسرے بھاگ میں سن ۴۲ میں شہید ھونے والے علیم نام کے ایک گاؤں نواسی کی بھولی بھالی نوجوان بیوی سکینہ پر سامراج واد اور اِس گندے سماج کے ذریعے کئے گئے اتیاچاروں کی تصویر ھے. تیسرے بھاگ میں مزدور ایکتا، اُن میں بھائی چارا اور اُن کی شکتی کا ورنن ھے. کانپور کے گولی کانڈ سے شاید سبھی پریچت ھیں. اُسی سمے کی ھڑتال، بے رحم گولی اور لاٹھی ورشا اور مل مالکوں کی سازش کی تصویر اِس بھاگ میں کھینچی گئی ھے. پہلے دونوں بھاگ الگ الگ بھی پورے ھیں اور ایک لمبی کہانی معلوم دیتے ھیں پھر بھی تینوں بھاگ مل کر ایک ناول بناتے ھیں.

لیکھک نے مزدوروں کے شانتی مے آندولن کی طاقت کا انوبھو اِس ناول میں کرایا ھے. اِس طاقت کی آتما ھے مزدوروں کی ایکتا. اِس ناول میں جگہ جگہ "سنکیت مورچہ" کے مہتو پر روشنی ڈالی گئی ھے. نئے سماج کو پیدا کرنے کے لئے ملا جلا مورچہ ھی ایک مشعل ھے آج اِس مشعل کی سخت ضرورت ھے.

بھاشا سرل، سندر اور بڑی جاندار ھے. ھاں، تکنیک میں کافی گڑبڑی ھے اگر پلاٹ کو دوسری تکنیک میں دکھایا جاتا تو چترن میں جو اسوابھاوک پن آگیا ھے وہ نہ آتا.

—مجیب رضوی

ھماری آدم جاتیاں—

لکھنے والے—شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے.

نکالنے والے - بھارتیہ گرنتھ مالا. دارا گنج. الہ آباد.

[illegible]

कुछ किताबें — کچھ کتابیں

मशाल

लिखने वाले—श्री भैरव प्रसाद गुप्त.

निकालने वाले—धारा प्रकाशन, ९ स्टैनली रोड, इलाहाबाद.

लिखावट नागरी, सफ़ा २४०, क़ीमत साढ़े तीन रुपए.

'शोले' के बाद 'मशाल' भैरव प्रसाद गुप्त का दूसरा नावेल है. इस में तिकोना प्रेम नहीं है, जिन्सी भूक नहीं है. इसमें ज़िन्दगी है. वह ज़िन्दगी जो पैदा हो रही है, जो उभर रही है. इस नावेल में उसी ज़िन्दगी का संदेश है, एक नए समाज की तरफ़ संकेत है. इस समाज में न कोई शोशक होगा न शोशित. न कोई ज़ालिम होगा और न कोई मज़लूम. क्लास की दीवारें, धर्म की दीवारें, जात की दीवारें, जिन्स की दीवारें सब ढै जायँगी. एक नया मानव पैदा होगा. उस में मानवता होगी, भाई चारा होगा, हमदर्दी होगी. इसी पैदा होने वाले समाज के लिये एक संघर्श का चित्रन मशाल में किया गया है. 'ऐसा भी हो सकता है' का चित्रन इस नावेल में नहीं है बल्कि 'ऐसा हुआ है' इस किताब के पन्नों पर अंकित किया गया है. यही इसकी विशेशता है.

مشعل

لکھنے والے — شری بھیرو پرساد گپت

نکالنے والے — دھارا پرکاشن، ۹ اسٹینلی روڈ، الہ آباد۔

لکھاوٹ ناگری، صفحے ۲۴۰، قیمت ساڑھے تین روپے۔

' شعلے ' کے بعد ' مشعل ' بھیرو پرساد گپت کا دوسرا ناول ہے۔ اِس میں تکونا پریم نہیں ہے، جنسی بھوک نہیں ہے۔ اِس میں زندگی ہے۔ وہ زندگی جو پیدا ہو رہی ہے، جو اُبھر رہی ہے۔ اِس ناول میں اُسی زندگی کا سندیش ہے، ایک نئے سماج کی طرف سنکیت ہے۔ اِس سماج میں نہ کوئی شوشک ہوگا، نہ شوشت، نہ کوئی ظالم ہوگا اور نہ کوئی مظلوم۔ کلاس کی دیواریں، دھرم کی دیواریں، جات کی دیواریں، جنس کی دیواریں سب ڈھے جائیں گی۔ ایک نیا مانو پیدا ہوگا۔ اُس میں مانوتا ہوگی، بھائی چارہ ہوگا، ہمدردی ہوگی۔ اِسی پیدا ہونے والے سماج کے لئے ایک سنگھرش کا چترن مشعل میں کیا گیا ہے۔ 'ایسا بھی ہوسکتا ہے' کا چترن اِس ناول میں نہیں ہے بلکہ 'ایسا ہوا ہے' اِس کتاب کے پنوں پر انکت کیا گیا ہے۔ یہی اِسکی وشیشتا ہے۔

अनुशासन भंग की कारवाई की जायगी ! क्या इस से भी बड़ी कोई आत्म-निन्दा कांगरेस की और कांगरेसी सरकारों की हो सकती है ? क्या इससे भी साफ़ इशारा बिहार के शराबबन्दी की हिमायत करने वालों को कांगरेस छोड़ देने का किया जा सकता है ? अब सिर्फ़ यही बाक़ी रह गया है कि कोई उद्योगपति 'उत्तम शराब की फ़ैक्टरी' भारत में क़ायम करे और किसी वज़ीर से उसका उद्घाटन (इफ़तिताह) कराये ! यह घटना किसी भी समय घट सकती है.

वर्धा, २८-३-५१ —कि. घ. मशरूवाला

सर्वोदय समाज का सन्देश

इस छोटी सी जिन्दगी में हम कसौटी पर हैं. इस संसार में जो कुछ थोड़े दिन हमें रहना है उन में सब की सेवा और सबका प्रेम हासिल करने की कोशिश करनी चाहिये.

जिन्हों ने इस दुनिया में आकर पैसा कमाया लेकिन प्रेम गँवाया उन्होंने कुछ भी नहीं कमाया; जिन्हों ने ज्ञान हासिल किया कर लिया मगर सब का प्रेम हासिल नहीं किया, उन्हों ने कुछ भी हासिल नहीं किया; जिन्हों ने शक्ति जमा की पर सब का प्रेम जमा नहीं किया. उन्होंने कुछ भी जमा नहीं किया.

इसलिये, भाइयो, सब से प्रेम करो और सब का प्रेम हासिल करो. यही सर्वोदय समाज का सन्देश है.

—विनोबा

انوشاسن بھنگ کی کاروائی کی جائے گی ! کیا اِس سے بھی بڑی کوئی آتم نندا کانگریس کی اور کانگریسی سرکاروں کی ہو سکتی ہے ؟ کیا اِس سے بھی صاف اشارہ بہار کے شراب بندی کی حمایت کرنے والوں کو کانگریس چھوڑ دینے کا کیا جا سکتا ہے ؟ اب صرف یہی باقی رہ گیا ہے کہ کوئی اُدیوگ پتی 'اُتم شراب کی فیکٹری' بھارت میں قائم کرے اور کسی وزیر سے اُس کا اُدگھاٹن (افتتاح) کرائے ! یہ گھٹنا کسی بھی سمے گھٹ سکتی ہے .

وردھا، ١٨-٣-٥١ —ک . گھ . مشرو والا

سرودے سماج کا سندیش

اِس چھوٹی سی زندگی میں ہم کسوٹی پر ہیں . اِس سنسار میں جو کچھ تھوڑے دن ہمیں رہنا ہے اُن میں سب کی سیوا اور سب کا پریم حاصل کرنے کی کوشش کرنی چاہئے .

جنھوں نے اِس دنیا میں آکر پیسہ کمایا لیکن پریم گنوایا اُنھوں نے کچھ بھی نہیں کمایا : جنھوں نے گیان حاصل کیا مگر سب کا پریم حاصل نہیں کیا، اُنھوں نے کچھ بھی حاصل نہیں کیا، جنھوں نے شکتی جمع کی پر سب کا پریم جمع نہیں کیا، اُنھوں نے کچھ بھی جمع نہیں کیا .

اِس لئے، بھائیو، سب سے پریم کرو اور سب کا پریم حاصل کرو . یہی سرودے سماج کا سندیش ہے .

—ونوبا

'हरिजन सेवक' मे

देस के लिये शराब पियो !

अभी तक हमारे नेताओं ने राष्ट्री संकट के समय जनता से इन्हीं शब्दों में अपील की है: 'देस के लिये करो' या 'देस के लिये मरो' गांधी जी का अन्तिम आदेश था 'करो या मरो.' और जब राष्ट्र पर सब से बड़ा संकट आया, तब उन्होंने राष्ट्र के लिये कर या मर कर हमें दिखा दिया.

इस में कोई शक नहीं कि आज हम भयानक आर्थिक संकट में फँसे हुए हैं लेकिन आमदनी हासिल करने की पागलपन भरी कोशिश में नया नारा 'देस के लिये शराब पियो' बन गया मालूम होता है! मध्य प्रदेश के बाद उत्तर प्रदेश ने भी शराबबन्दी जांच कमेटी नियुक्त की है. उड़ीसा के प्रधान मंत्री ने शराबबन्दी की तरफ़ आगे न बढ़ने के लिये क्षमा मांगी है. बिहार उसी का अनुकरन कर रहा है. और बिहार प्रान्ती कांगरेस कमेटी ने इस मतलब का एक हुकुम निकाल कर अपने राज को आभारी बनाया है कि कोई भी कांगरेसी प्रान्ती कांगरेस कमेटी से इजाज़त लिये बिना शराबबन्दी आन्दोलन में हिस्सा न ले! कांगरेस विधान के अनुसार किसी भी कांगरेसी को शराब वग़ैरा नहीं पीना चाहिये. लेकिन अगर उसने अपने बड़ों की इजाज़त लिये बिना दूसरों को भी नशेबाज़ी से बचाने की कोशिश की तो उसके ख़िलाफ़

'ہریجن سیوک' سے

دیس کے لئے شراب پیو!

ابھی تک ہمارے نیتاؤں نے راشٹری سنکٹ کے سمے جنتا سے انہیں شبدوں میں اپیل کی ہے: 'دیس کے لئے کرو' یا 'دیس کے لئے مرو'۔ گاندھی جی کا انتم آدیش تھا 'کرو یا مرو'۔ اور جب راشٹر پر سب سے بڑا سنکٹ آیا، تب انہوں نے راشٹر کے لئے کر یا مر کر ہمیں دکھا دیا۔

اِس میں کوئی شک نہیں کہ آج ہم بھیانک آرتھک سنکٹ میں پھنسے ہوئے ہیں۔ لیکن آمدنی حاصل کرنے کی پاگل پن بھری کوشش میں نیا نعرہ 'دیس کے لئے شراب پیو' بن گیا معلوم ہوتا ہے! مدھیہ پردیش کے بعد اُتر پردیش نے بھی شراب بندی جانچ کمیٹی نیکت کی ہے۔ اُڑیسہ کے پردھان منتری نے شراب بندی کی طرف آگے نہ بڑھنے کے لئے چھما مانگی ہے۔ بہار اُسی کا انوکرن کر رہا ہے۔ اور بہار پرانتی کانگریس کمیٹی نے اِس مطلب کا ایک حکم نکالکر اپنے راج کو آبھاری بنایا ہے کہ کوئی بھی کانگریسی پرانتی کانگریس کمیٹی سے اجازت لئے بنا شراب بندی آندولن میں حصہ نہ لے! کانگریس ودھان کے انوسار کسی بھی کانگریسی کو شراب وغیرہ نہیں پینا چاہئے، لیکن اگر اُسنے اپنے بڑوں کی اجازت لئے بنا دوسروں کو بھی نشے بازی سے بچانے کی کوشش کی تو اُسکے خلاف

चीन में एक कहानी मशहूर है जिस में यह कहा गया है कि गौतम बुद्ध के गुरू दीपान्कर बुद्ध एक चीनी थे. दीपान्कर बुद्ध का चीनी नाम जान तेंग था. दीपान्कर बुद्ध ताओ धर्म के मानने वाले थे और गौतम बुद्ध उनसे शिक्षा लेने चीन गए थे.

यह कहानी सच हो या न हो. अगर इस बात को ध्यान में रक्खा जाय कि भारत और चीन का तिजारती सम्बन्ध ईसा से सैकड़ों साल पहले आसाम और बरमा के रास्ते क़ायम हो चुका था तो यह मानना पड़ता है कि इसी रास्ते भारत और चीन में कलचर विचारों और धर्म का लेन देन भी ज़रूर होता रहा होगा.

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सच्चाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है. अब आप को उरदू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आप के दिल को जोश से भर देगी.

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. किताब १५ जुलाई तक छप जायगी और दाम ढाई रुपया होगा.

नोट—३० जून तक जो भाई आर्डर के साथ चार आने के टिकट भेज देंगे उन से डाक ख़र्च न लिया जायगा.

मिलने का पता:— — मैनेजर 'नया हिन्द'

१४५. मुट्ठीगंज, इलाहाबाद,

چین میں ایک کہانی مشہور ہے جس میں یہ کہا گیا ہے کہ گوتم بدھ کے گرو دیپانکر بدھ ایک چینی تھے۔ دیپانکر بدھ کا چینی نام جان تینگ تھا۔ دیپانکر بدھ تاؤ دھرم کے ماننے والے تھے اور گوتم بدھ اُن سے شکشا لینے چین گئے تھے۔

یہ کہانی سچ ہو یا نہ ہو، اگر اِس بات کو دھیان میں رکھا جائے کہ بھارت اور چین کا تجارتی سمبندھ عیسیٰ سے سیکڑوں سال پہلے آسام اور برما کے راستے قائم ہوچکا تھا تو یہ ماننا پڑتا ہے کہ اِسی راستے بھارت اور چین میں کلچر وچاروں اور دھرم کا لین دین بھی ضرور ہوتا رہا ہوگا۔

جھنکار

سمپادک — شری رگھوپتی سہائے 'فراق'

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اُردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اُردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے۔ آج کی اُردو شاعری گُل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے۔ اب آپ کو اُردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی۔ غلامی، انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کو جوش سے بھر دیگی۔

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اُردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا۔ کتاب ۱۵ جولائی تک چھپ جائیگی اور دام ڈھائی روپیہ ہوگا۔

نوٹ — ۳۰ جون تک جو بھائی آرڈر کےساتھ چار آنے کےٹکٹ بھیج دیں گے اُن سے ڈاک خرچ نہ لیا جائیگا۔

ملنے کا پتہ :— —مینیجر 'نیا ہند'

۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد۔

इतिहासकार आर्थर वेले लिखते हैं—

"सब विद्वान इस बात को मानते हैं कि (चीन का) ईसा से तीसरी सदी पहले का तमाम साहित्य भारत की पौरानिक और भूगोली कहानियों से भरा पड़ा है. मुझे इस में शक की कोई वजह नहीं मिलती कि लिएज़ु ने जिन पहाड़ी आदमियों का ज़िक्र किया है वह सब भारती रिशी हैं. और जब हम चुआंगज़ू की किताबों में पढ़ते हैं कि ताओ मज़हब के मानने वाले हिन्दू योगियों की तरह आसन किया करते थे तो यह बात बहुत मुमकिन मालूम होती है कि भारती रिशियों की योगी क्रियाएँ चीन तक पहुँच गई थीं." (प्राचीन चीन के तीन धर्म)

श्री राधा कृश्नन लिखते हैं—

"यह बहुत मुमकिन है कि ईसा से पहले छटी सदी से चौथी सदी तक जब कि ताओ धर्म शकल ले रहा था. उपनिशद् का फ़लसफ़ा और योग की क्रियाएँ भारती और चीनी सौदागर भारत से चीन ले गए................ज़ाहिर है कि ताओ धर्म की शुरू की अवस्था में उस पर भारत का असर ज़ोरों से पड़ा." (भारत और चीन)

कुछ विद्वान इतिहासकारों की यह भी राय है कि चूंकि उस बहुत पुराने ज़माने में भारत और चीन के बीच आने जाने की कोई घटनाएं नहीं मिलतीं इसलिये हो सकता है कि इस तरह के मिलते जुलते विचार दोनों देसों में अपने अपने आज़ाद ढँग से अलग अलग पैदा हुए हों. पर चीनी साहित्य में हमें इस से ज़्यादा साफ़ भी कुछ बातें मिलती हैं.

चीन की एक मशहूर किताब "वाई लू" में लिखा है कि चूँकि लाओत्से अपने धर्म का प्रचार करने के लिये भारत गए थे इसलिये उनका फ़लसफ़ा भारती फ़लसफ़े से बहुत कुछ मिलता जुलता है.

اِتہاس کار آرتھر ویلے لکھتے ھیں —

'' سب ودوان اِس بات کو مانتے ھیں کہ (چین کا) عیسیٰ سے تیسری صدی پہلے کا تمام ساھتیہ بھارت کی پورانک اور بھوگولی کہانیوں سے بھرا پڑا ھے . مجھے اِس میں شک کی کوئی وجہ نہیں ملتی کہ لئیےزو نے جن پہاڑی آدمیوں کا ذکر کیا ھے وہ سب بھارتی رشی ھیں . اور جب ھم چوآنگ زو کی کتابوں میں پڑھتے ھیں کہ تاؤ مذھب کے ماننے والے ھندو یوگیوں کی طرح آسن کیا کرتے تھے تو یہ بات بہت ممکن معلوم ھوتی ھے کہ بھارتی رشیوں کی یوگی کریائیں چین تک پہنچ گئی تھیں .'' (پرا چین چین کے تین دھرم)

شری رادھا کرشنن لکھتے ھیں —

'' یہ بہت ممکن ھے کہ عیسیٰ سے پہلے چھٹی صدی سے چوتھی صدی تک جبکہ تاؤ دھرم شکل لے رھا تھا' اُپنشد کا فلسفہ اور یوگ کی کریائیں بھارتی اور چینی سوداگر بھارت سے چین لے گئے......ظاھر ھے کہ تاؤ دھرم کی شروع کی اوستھا میں اُس پر بھارت کا اثر زوروں سے پڑا .'' (بھارت اور چین)

کچھ ودوان اِتہاس کاروں کی یہ بھی رائے ھے کہ چونکہ اُس بہت پرانے زمانے میں بھارت اور چین کے بیچ آنے جانے کی کوئی گھٹنائیں نہیں ملتیں اس لئے ھو سکتا ھے کہ اِس طرح کے ملتے جلتے وچار دونوں دیسوں میں اپنے اپنے آزاد ڈھنگ سے الگ الگ پیدا ھوں . پر چینی ساھتیہ میں ھمیں اِس سے زیادہ صاف بھی کچھ باتیں ملتی ھیں .

چین کی ایک مشہور کتاب '' وائی لو '' میں لکھا ھے کہ چونکہ لاؤتزے اپنے دھرم کا پرچار کرنے کے لئے بھارت گئے تھے اِس لئے اُن کا فلسفہ بھارتی فلسفے سے بہت کچھ ملتا جلتا ھے .

भी काम करता है, वह इनसानों में अक़्लमंद है. वह योगी और उसने अपना काम पूरा कर लिया है."

इन मिसालों से यह मालूम होता है कि गीता, उपनिशद और ताओ के विचारों में गहरी समानता है.

ताओ धर्म और बौद्ध धर्म के नैतिक विचारों में भी काफ़ी समानता है. इसकी दो मिसालें नीचे द ेजातीं .

(१) ताओ-ते-चिंग में लिखा है—"जो दूसरों पर क़ाबू पा सकता है, वह ताक़तवर है, पर जो अपने को क़ाबू में कर सकता है वह कहीं अधिक शक्तिशाली है और ताक़तवर है."

बौद्ध धर्म की किताब धम्मपद में लिखा है—"अगर एक आदमी एक हज़ार बार एक हज़ार आदमियों को लड़ाई में हरा कर जीत जाय और दूसरा आदमी सिर्फ़ अपने को जीत ले तो दूसरा आदमी सभी जीतने वालों में सब से ऊँचा है."

(२) ताओ-ते-चिंग में लिखा है—"इससे बढ़ कर कोई पाप नहीं कि आदमी किसी ऐसी चीज़ पर नज़र डाले जो उस में मोह पैदा कर दे; असंतोश से बढ़ कर कोई दूसरी बुराई नहीं: लालच से बढ़ कर कोई दूसरी तबाही नहीं."

धम्मपद में लिखा है—"मोह से बढ़ कर कोई दूसरी जलाने वाली चीज़ नहीं, नफ़रत से बढ़ कर कोई दूसरी चिनगारी नहीं, माया से बढ़ कर कोई दूसरी फँसाऊ चीज़ नहीं, और लालच से बढ़ कर कोई और ख़तर नाक बाढ़ नहीं."

बौद्ध धर्म और ताओ धर्म में इसी तरह की बहुत सी मिलती जुलती बातें हैं.

बौद्ध धर्म, उपनिशद, गीता और ताओ धर्म की इन तमाम समानताओं से मालूम होता है कि भारती फ़लसफ़ा ईसा से पाँच या छै सौ साल पहले ही भारत से चीन जा चुका था.

بھی کام کرتا ہے، وہ انسانوں میں عقلمند ہے . وہ یوگی ہے اور اُس نے اپنا کام پورا کر لیا ہے ."

اِن مثالوں سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ گیتا، اُپنشد اور تاؤ کے وچاروں میں گہری سمانتا ہے .

تاؤ دھرم اور بودھ دھرم کے نیتک وچاروں میں بھی کافی سمانتا ہے . اِس کی دو مثالیں نیچے دی جاتی ہیں .

(۱) تاؤتے چنگ میں لکھا ہے— "جو دوسروں پر قابو پا سکتا ہے وہ طاقتور ہے پر جو اپنے کو قابو میں کر سکتا ہے وہ کہیں ادھک شکتی شالی اور طاقتور ہے ."

بودھ دھرم کی کتاب دھمپد میں لکھا ہے— "اگر ایک آدمی ایک ہزار بار ایک ہزار آدمیوں کو لڑائی میں ہرا کر جیت جائے اور دوسرا آدمی صرف اپنے کو جیت لے تو دوسرا آدمی سبھی جیتنے والوں میں سب سے اُونچا ہے ."

(۲) تاؤتے چنگ میں لکھا ہے— "اِس سے بڑھکر کوئی پاپ نہیں کہ آدمی کسی ایسی چیز پر نظر ڈالے جو اُس میں موہ پیدا کردے؛ اسنتوش سے بڑھکر کوئی دوسری برائی نہیں لالچ سے بڑھکر کوئی دوسری تباہی نہیں ."

دھمپد میں لکھا ہے— "موہ سے بڑھکر کوئی دوسری جلانے والی چیز نہیں، نفرت سے بڑھکر کوئی دوسری چنگاری نہیں، مایا سے بڑھکر کوئی دوسری پھنساؤ چیز نہیں اور لالچ سے بڑھکر کوئی اور خطرناک باڑھ نہیں ."

بودھ دھرم اور تاؤ دھرم میں اسی طرح کی بہت سی ملتی جلتی باتیں ہیں .

بودھ دھرم، اُپنشد، گیتا اور تاؤ دھرم کی اِن تمام سمانتاؤں سے معلوم ہوتا ہے کہ بھارتی فلسفہ عیسیٰ سے پانچ یا چھ سو سال پہلے ہی بھارت سے چین جاچکا تھا .

घिरंड संहिता में लिखा है—

"अगर साधक को जलती हुई आग में फेंक दिया जाय तो भी वह अपनी इस मुद्रा (आग्नेय मुद्रा) के कारन ज़िन्दा ही रहेगा, मरेगा नहीं."

जैसा ऊपर बताया गया है, इस योग का मक़सद ताओ तक पहुँचना है. ताओ तक पहुंचने के मानी है, मोह से छुटकारा और ख़ुदी का ख़ात्मा. जो आदमी योग के ज़रिये ताओ तक पहुंच जाता है उस के बारे में 'ताओ-ते- चिंग' में लिखा है—

"वह काम नहीं करता फिर भी वह काम कर रहा है. जिस चीज़ में स्वाद नहीं है उस में भी वह स्वाद पाता है.

छोटों को वह बड़ा बना सकता है और थोड़ी सी चीज़ को ज़्यादा कर सकता है.

बिना किसी मेहनत के घाव अच्छा करता है,

कमज़ोर होते हुए भी मुश्किल चीज़ों का सामना करता है,

ख़ुद छोटा रहते हुए बड़ों से मुक़ाबला करता है."

गीता का स्थितप्रज्ञ आदर्श कुछ इसी तरह का है. गीता में लिखा है—

"ऐ अर्जुन ! जिसने अपने मन के अन्दर पैदा होने वाली तमाम ख़्वाहिशों को जीत लिया. जो न दुख से डरता है और न सुख की इच्छा करता है, जिसे न किसी से राग, लगाव या मोह है. न किसी से डर और न किसी पर क्रोध. जिस की इन्द्रियाँ (हवास) उसके क़ाबू में हैं, उसी को 'स्थितप्रज्ञ' (टिकी हुई या सलीम अक़्लवाला) समझना चाहिये"

फिर लिखा है—

"वह जो काम करके भी काम नहीं करता और काम न करके

گھرنڈ سنھتا میں لکھا ھے—

''اگر سادھک کو جلتی ہوئی آگ میں پھینک دیا جائے تو بھی وہ اپنی اس مدرا (آگنئے مدرا) کے کارن زندہ ھی رھے گا، مرے گا نہیں۔''

جیسا اوپر بتایا گیا ھے، اِس یوگ کا مقصد تاؤ تک پہنچنا ھے۔ تاؤ تک پہنچنے کے معنی ھیں، موہ سے چھٹکارا اور خودی کا خاتمہ۔ جو آدمی یوگ کے ذریعے تاؤ تک پہنچ جاتا ھے اُسکے بارے میں 'تاؤتے چنگ' میں لکھا ھے—

''وہ کام نہیں کرتا پھر بھی وہ کام کر رھا ھے۔ جس چیز میں سواد نہیں ھے اُس میں بھی وہ سواد پاتا ھے۔

چھوٹوں کو وہ بڑا بنا سکتا ھے اور تھوڑی سی چیز کو زیادہ کر سکتا ھے۔

بنا کسی محنت کے گھاؤ اچھا کرتا ھے،

کمزور ہوتے ہوئے بھی مشکل چیزوں کا سامنا کرتا ھے،

خود چھوٹا ہوتے ہوئے بڑوں سے مقابلہ کرتا ھے۔''

گیتا کا ستھت پرگیہ آدرش کچھ اسی طرح کا ھے۔ گیتا میں لکھا ھے—

''اے ارجن! جسنے اپنے من کے اندر پیدا ہونیوالی تمام خواہشوں کو جیت لیا۔ جو نہ دکھ سے ڈرتا ھے اور نہ سکھ کی اِچھا کرتا ھے، جسے نہ کسی سے راگ، لگاؤ یا موہ ھے، نہ کسی سے ڈر اور نہ کسی پر کرودھ، جسکی اندریاں (حواس) اُس کے قابو میں ھیں، اُسی کو 'ستھت پرگیہ' (ٹکی ہوئی یا سلیم عقل والا) سمجھنا چاھئیے۔''

پھر لکھا ھے—

''وہ جو کام کرکے بھی کام نہیں کرتا اور کام نہ کرکے

आप पड़े हुए थे. ऐसा जान पड़ता था कि बाहरी दुनिया का पता आप को बिलकुल है ही नहीं. मालूम होता है आप ख़ुद अपने में खो गए थे."

लाआत्ज़े ने जवाब दिया—"आप ठीक कहते हैं. मैं इस दुनिया की पैदाइश के बारे में सोच रहा था."

योग के फ़लसफ़े पर भारत के रिशियों ने बहुत कुछ कहा है. योग शास्त्र पर पूरा एक दर्शन है. गीता में भी योग का ज़िक्र कई जगह आया है.

लिखा है—

"इस तरह का आदमी (योगी) किसी साफ़ सुथरी जगह में चुपचाप, निडर और अकेला बैठ कर, अपने मन को रोक कर, अपने दिल से सब तरह की ख़्वाहिशों और सब चीज़ों के मोह को निकाल कर, आत्मा एक तरफ़ लगा कर..... सिर, गर्दन और जिस्म को बिलकुल सीधा और इन्द्रियों को अडोल रखते हुए, अपनी नाक के सिरे को एकटक देखता हुआ, इधर उधर निगाह न डालता हुआ.......अपनी आत्मा को शान्त रखते हुए, आत्मा की शुद्धि के लिये परमात्मा में ध्यान जमाए, तो धीरे धीरे उसे परम शान्ति और वह सब से बढ़कर हालत हासिल होगी जिस से फिर बड़े से बड़ा सुख दुख भी उसे नहीं डिगा सकता. उसी हालत का नाम मुक्ति यानी निजात है."

योग से जो रूहानी ताक़त पैदा होती है उस का ज्ञान भी ताओ के जानकारों को था. लिएहज़ू कहता है—

"सब से ज़्यादा ताक़तवर आदमी यानी योगी आग पर चलेगा तो भी उस के पाँव जलेंगे नहीं. वह इस दुनिया की चोटी पर चलेगा तो भी उसके पाँव काँपेंगे नहीं."

آپ پڑے ہوئے تھے ۔ ایسا جان پڑتا تھا کہ باہری دنیا کا پتہ آپ کو بالکل ہے ہی نہیں ۔ معلوم ہوتا ہے آپ خود اپنے میں کھو گئے تھے ۔''

لاؤتزے نے جواب دیا — '' آپ ٹھیک کہتے ہیں ۔ میں اس دنیا کی پیدائش کے بارے میں سوچ رہا تھا ۔''

یوگ کے فلسفے پر بھارت کے رشیوں نے بہت کچھ کہا ہے ۔ یوگ شاستر پر پورا ایک درشن ہے ۔ گیتا میں بھی یوگ کا ذکر کئی جگہ آیا ہے ۔

لکھا ہے —

'' اِس طرح کا آدمی (یوگی) کسی صاف ستھری جگہ میں چپ چاپ' نڈر اور اکیلا بیٹھکر' اپنے من کو روک کر' اپنے دل سے سب طرح کی خواہشوں اور سب چیزوں کے موہ کو نکالکر' آتما ایک طرف لگا کر..................سر' گردن اور جسم کو بالکل سیدھا اور اندر یوں کواڈول رکھتے ہوئے اپنی ناک کے سرے کو ایک ٹک دیکھتا ہوا' اِدھر اُدھر نگاہ نہ ڈالتا ہوا.........اپنی آتما کو شانت رکھتے ہوئے' آتما کی شدھی کے لئے پرماتما میں دھیان جمائے' تو دھیرے دھیرے اُسے پرم شانتی اور وہ سب سے بڑھکر حالت حاصل ہوگی جس سے پھر بڑے سے بڑا سکھ دکھ بھی اُسے نہیں ڈگا سکتا ۔ اُسی حالت کا نام مکتی یعنی نجات ہے ۔''

یوگ سے جو روحانی طاقت پیدا ہوتی ہے اُس کا گیان بھی تاؤ کے جانکاروں کو تھا ۔ لئیہ زو کہتا ہے —

''سب سے زیادہ طاقتور آدمی یعنی یوگی آگ پر چلیگا تو بھی اُسکے پاؤں جلیں گے نہیں ۔ وہ اِس دنیا کی چوٹی پر چلے گا تو بھی اُسکے پاؤں کانپیں گے نہیں ۔''

तैत्रेय उपनिशद् में "ब्रह्म" के बारे में कहा गया है—

"ब्रह्म ही से सारी दुनिया पैदा होती है. वह सारी दुनिया को संभाले रहता है और आख़ीर में उसी में सारी दुनिया समा जाती है."

जैसे ताओ का फ़लसफ़ा उपनिशद् और गीता के फ़लसफ़े से मिलता है, उसी तरह ताओ तक पहुँचने का तरीक़ा योग के तरीक़े से मिलता है.

ताओ तक पहुँचने के लिये चुआंगज़ू ने योग करने की सलाह दी है. दुनिया की तमाम ऊपरी चीज़ों से ध्यान हटाकर ताओ पर ध्यान जमाने के लिये उसने आसन और प्रानायाम का उपदेश दिया है.

वह कहता है—

"हर आदमी को चाहिये कि वह किसी नदी के तट पर या किसी एकान्त जगह चला जाय, और अगर वह क़ुदरत से प्रेम करता है और फ़ुरसत का समय ख़ुशी से बिताना चाहता है तो वह नपे तुले ढंग से साँस अंदर ले, फिर उसे बाहर निकाले और फिर ताज़ा हवा अन्दर ले." (चुआँगज़ू—२).

कहा जाता है एक बार कंगफ़ूत्ज़े लाओत्ज़े से मिलने गए. उन्होंने देखा कि लाओत्ज़े मुर्दे की तरह बेहरकत पड़े हैं. कंगफ़ूत्ज़े थोड़ी देर यह तमाशा देखते रहे. जब लाओत्ज़े होश में आए तब कंगफ़ूत्ज़े से न रहा गया और उन्होंने लाओत्ज़े से कहा—

"क्या मेरी आँखें मुझे धोका दे रही थीं या जो कुछ मैंने देखा वह सच था? अभी अभी आप ऐसे दिखाई पड़ रहे थे मानो आप कोई बेजान चीज़ हों. यों कहिये कि एक लकड़ी के लट्ठे की तरह

تیترے اُپنشد میں " برہم " کے بارے میں کہا گیا ہے —

" برہم ہی سے ساری دنیا پیدا ہوتی ہے . وہ ساری دنیا کو سنبھالے رہتا ہے اور آخیر میں اُسی میں ساری دنیا سما جاتی ہے ."

جیسے تاؤ کا فلسفہ اُپنشد اور گیتا کے فلسفے سے ملتا ہے اُسی طرح تاؤ تک پہنچنے کا طریقہ یوگ کے طریقے سے ملتا ہے .

تاؤ تک پہنچنے کے لئے چوآنگ زونے یوگ کرنے کی صلاح دی ہے . دنیا کی تمام اُوپری چیزوں سے دھیان ہٹا کر تاؤ پر دھیان جمانے کے لئے ، اُس نے آسن اور پرانا یام کا اُپدیش دیا ہے .

وہ کہتا ہے —

" ہر آدمی کو چاہئے کہ وہ کسی ندی کے تٹ پر یا کسی ایکانت جگہ چلا جائے ، اور اگر وہ قدرت سے پریم کرتا ہے اور فرصت کا سمے خوشی سے بتانا چاہتا ہے تو وہ نپے تلے ڈھنگ سے سانس اندر لے ، پھر اُسے باہر نکالے اور پھر تازہ ہوا اندر لے ." (چوآنگ زو — ۲)

کہا جاتا ہے ایک بار کنگ فوتزے لاؤتزے سے ملنے گئے . اُنہوں نے دیکھا کہ لاؤتزے مردے کی طرح بے حرکت پڑے ہیں . کنگ فوتزے تھوڑی دیر یہ تماشہ دیکھتے رہے . جب لاؤتزے ہوش میں آئے تب کنگ فوتزے سے نہ رہا گیا اور اُنہوں نے لاؤتزے سے کہا —

" کیا میری آنکھیں مجھے دھوکا دے رہی تھیں یا جو کچھ میں نے دیکھا وہ سچ تھا ؟ ابھی ابھی آپ ایسے دکھائی پڑ رہے تھے مانو آپ کوئی بےجان چیز ہوں . یوں کہئے کہ ایک لکڑی کے لٹھے کی طرح

"वह दूसरों को पैदा करता है, उसे किसी ने पैदा नहीं किया. उसकी वजह से दूसरी सभी चीज़ें ज़हूर में आती हैं, उसे किसी ने ज़ाहिर नहीं किया. वह ख़ुद ही पैदा हुआ और ख़ुद ही ज़ाहिर हुआ.'' (लाओत्से के बचन).

गीता में लिखा है—

"वह कभी पैदा नहीं हुआ, उसका कोई शुरू नहीं है, वह सब दुनियाओं का मालिक है. सब देवता और महर्शि उसी से पैदा हुए हैं. इनसानी क़ौम के सब पुरखे, जिनकी नसलों से दुनिया के तमाम लोग पैदा हुए हैं, उस एक परमेश्वर के ही मानस पुत्र हैं यानी उसी के ख़याल से पैदा हुए हैं. लोगों के दिलों में जितनी तरंगें उठती हैं, सब उसी से पैदा होती हैं. वही सारी दुनिया का पैदा करनेवाला है.''

"ईश्वर ही सारी दुनिया का पैदा करने वाला और उसे ख़तम करने वाला है. उसके अन्दर वह सब दुनिया इस तरह पिरोई हुई है जिस तरह एक डोरे के अन्दर माला के दाने. वह ईश्वर ही पानी के अन्दर रस, चाँद सूरज के अन्दर रोशनी, वेदों में ओम, आकाश में आवाज़, आदमियों में मरदानगी, मिट्टी में ख़ुशबू, आग में दमक. तपस्वियों का तप और सब जानदारों की जान है. वही सबका असली बीज है......वह नित्य है और सबसे अलग है.''

कंगफ़ूत्ज़े ने 'ताओ' को 'रास्ता' कहा है. "पर ताओ रास्ता ही नहीं कुछ और भी है. वह रास्ता भी है और राही भी है. वह एक अनंत रास्ता है. इस रास्ते पर सभी जानदार और बेजान चीज़ें चलती हैं. किसी जानदार ने उसे बनाया नहीं है क्योंकि वह ख़ुद अपनी ही जान है. वह हर चीज़ है और कुछ भी नहीं है. और हर चीज़ का कारन भी है और नतीजा भी. दुनिया की हर चीज़ ताओ से पैदा होती है और ताओ के ही रास्ते चलती है और अन्त में ताओ में [illegible] है.'' (राधा कृष्णन : चीन और भारत)

''وہ دوسروں کو پیدا کرتا ہے' اُسے کسی نے پیدا نہیں کیا. اُس کی وجہ سے دوسری سبھی چیزیں ظہور میں آتی ہیں. اُسے کسی نے ظاہر نہیں کیا. وہ خود ہی پیدا ہوا اور خود ہی ظاہر ہوا.'' (لاؤتزے کے بچن)

گیتا میں لکھا ہے—

''وہ کبھی پیدا نہیں ہوا' اُسکا کوئی شروع نہیں ہے' وہ سب دنیاؤں کا مالک ہے. سب دیوتا اور مہرشی اُسی سے پیدا ہوئے ہیں. انسانی قوم کے سب پرکھے' جنکی نسلوں سے دنیا کے تمام لوگ پیدا ہوئے ہیں' اُس ایک پرمیشور کے ہی مانس پتر ہیں یعنی اُسی کے خیال سے پیدا ہوئے ہیں. لوگوں کے دلوں میں جتنی ترنگیں اُٹھتی ہیں' سب اُسی سے پیدا ہوتی ہیں. وہی ساری دنیا کا پیدا کرنے والا ہے.''

''ایشور ہی ساری دنیا کا پیدا کرنے والا اور اُسے ختم کرنے والا ہے. اُسکے اندر یہ سب دنیا اِس طرح پروئی ہوئی ہے جسطرح ایک ڈورے کے اندر مالا کے دانے. وہ ایشور ہی پانی کے اندر رس' چاند سورج کے اندر روشنی' ویدوں میں اوم' آکاش میں آواز' آدمیوں میں مردانگی' مٹی میں خوشبو' آگ میں دمک' تپسویوں کا تپ اور سب جانداروں کی جان ہے. وہی سب کا اصلی بیج ہے......وہ نتیہ ہے اور سب سے الگ ہے.''

کنگ فوتزے نے 'تاؤ' کو 'راستہ' کہا ہے. ''پر تاؤ راستہ ہی نہیں کچھ اور بھی ہے. وہ راستہ بھی ہے اور راہی بھی ہے. وہ ایک اننت راستہ ہے. اِس راستے پر سبھی جاندار اور بے جان چیزیں چلتی ہیں. کسی جاندار نے اُسے بنایا نہیں ہے کیونکہ وہ خود اپنی ہی جان ہے. وہ ہر چیز ہے اور کچھ بھی نہیں ہے. اور ہر چیز کا کارن بھی ہے اور نتیجہ بھی. دنیا کی ہر چیز تاؤ سے پیدا ہوتی ہے اور تاؤ کے ہی راستے چلتی ہے اور انت میں تاؤ میں

लाओत्ज़े ईसा से ६०४ साल पहले पैदा हुए थे और चुआंगज़ू और लिएत्सू ईसा से क़रीब चार सौ साल पहले. लाओत्ज़े की सब से मशहूर धार्मिक किताब "ताओ-ते-चिंग" है.

ताओ-ते-चिंग और उपनिशदों के बुनियादी विचार बहुत कुछ मिलते जुलते हैं. इतिहासकार इलियट लिखता है—

"जो कोई भी उपनिशद के फ़लसफ़े से वाक़िफ़ है, वह ताओ-ते-चिंग को पढ़ कर यह महसूस किये बग़ैर नहीं रह सकता कि अगर 'ताओ' की जगह 'ब्रम्ह' शब्द रख दिया जाए तो हर हिन्दू ताओ धर्म को अपना ही धर्म समझ बैठेगा." (हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म)

ताओ-ते-चिंग और उपनिशद दोनों में यह बताया गया है कि यह दुनिया नाशवान (फ़ानी) है और सच्चाई सिर्फ़ एक है और वही सब कुछ है. दुनिया में जो कुछ अदल बदल हम देखते हैं उस सब के पीछे एक बहुत बड़ी ताक़त है जिसे जानना नामुमकिन है और जिस तक पहुँचना कठिन है.

"ताओ तक पहुँचना कितना कठिन है ! ऐसा मालूम होता है कि दुनिया का सिरजनहार वही है. ताओ कितना पाक और कितना साफ़ है ! ऐसा मालूम होता है कि वह नित्य है." (लाओत्ज़े के बचन)

"महान ताओ सारी दुनिया पर छाया हुआ है. वह हमारा दायाँ हाथ है और वही हमारा बायाँ हाथ भी है. दुनिया उसी के सहारे चल रही है और वह दुनिया को सँभाले हुए है. दुनिया में जो कुछ होता है वह उसी का किया हुआ है, फिर भी वह नाम नहीं चाहता. वह दुनिया से प्रेम करता है पर अपना बड़प्पन नहीं जताता. वह इच्छा से आज़ाद है. हम उसे छोटा भी कह सकते हैं और बड़ा भी. दुनिया की सभी चीज़ें लौट कर उसी में चली जाती हैं. फिर भी [illegible] नहीं कहलाना चाहता." (लाओत्ज़े के बचन)

لاؤتزے عیسیٰ سے ۶۰۴ سال پہلے پیدا ہوئے تھے اور چوآنگ زو اور لئیتسو عیسیٰ سے قریب چار سو سال پہلے. لاؤ تزے کی سب سے مشہور دھارمک کتاب " تاؤ تے چنگ " ہے .

تاؤتے چنگ اور اُپنشدوں کے بنیادی وچار بہت کچھ ملتے جلتے ہیں . اِتہاس کار ایلیٹ لکھتا ہے —

" جو کوئی بھی اُپنشد کے فلسفے سے واقف ہے ، وہ تاؤتے چنگ کو پڑھکر یہ محسوس کئے بغیر نہیں رہ سکتا کہ اگر 'تاؤ' کی جگہ 'برہم' شبد رکھدیا جائے تو ہر ہندو تاؤ دھرم کو اپنا ہی دھرم سمجھ بیٹھے گا ." (ہندو دھرم اور بودھ دھرم)

تاؤتے چنگ اور اُپنشد دونوں میں یہ بتایا گیا ہے کہ یہ دنیا ناش وان (فانی) ہے اور سچائی صرف ایک ہے اور وہی سب کچھ ہے . دنیا میں جو کچھ ادل بدل ہم دیکھتے ہیں اُس سب کے پیچھے ایک بہت بڑی طاقت ہے جسے جاننا ناممکن ہے اور جس تک پہنچنا کٹھن ہے .

" تاؤ تک پہنچنا کتنا کٹھن ہے ! ایسا معلوم ہوتا ہے کہ دنیا کا سرجن ہار وہی ہے . تاؤ کتنا پاک اور کتنا صاف ہے ! ایسا معلوم ہوتا ہے کہ وہ نتیہ ہے ." (لاؤتزے کے بچن)

" مہان تاؤ ساری دنیا پر چھایا ہوا ہے . وہ ہمارا دایاں ہاتھ ہے اور وہی ہمارا بایاں ہاتھ بھی ہے . دنیا اُسی کے سہارے چل رہی ہے اور وہ دنیا کو سنبھالے ہوئے ہے . دنیا میں جو کچھ ہوتا ہے وہ اُسی کا کیا ہوا ہے ، پھر بھی وہ نام نہیں چاہتا . وہ دنیا سے پریم کرتا ہے پر اپنا بڑپن نہیں جتاتا . وہ اِچھا سے آزاد ہے . ہم اُسے چھوٹا بھی کہہ سکتے ہیں اور بڑا بھی . دنیا کی سبھی چیزیں لوٹ کر اُسی میں چلی جاتی ہیں . پھر بھی وہ مالک نہیں کہلانا چاہتا ." (لاؤتزے کے بچن)

आने से चीन के लिये एक नई दुनिया का दरवाज़ा खुल गया. जिस समय चांगकिएन बखतियार में था, उसे यह देख कर अचरज हुआ कि चीन के दक्खिनी सूबों से पटसन और बाँस की बनी हुई चीज़ें बखतियार के बाज़ारों में बिक रही थीं. पता लगाने पर उसे मालूम हुआ कि यह माल भारत के सौदागर चीन से भारत और अफ़ग़ानिस्तान के रास्ते बखतियार लाते थे.

चांगकिएन ने चीन लौट कर जो रिपोर्ट अपने बादशाह को दी उसमें उसने इन बातों का ज़िक्र किया और बीच एशिया होकर भारत से चीन तक एक रास्ता खोलने की तजवीज़ पेश की.

यहाँ यह बता देना ज़रूरी है कि भारत और चीन के बीच इससे पहले दो तिजारती रास्ते खुले हुए थे. इनमें एक रास्ता आसाम बरमा होकर चीन पहुँचता था और दूसरा समन्दरी रास्ता बंगाल की खाड़ी से होकर चीन के बन्दरगाह तोनकिन तक था. चांगकिएन को जिस रास्ते का पता लगा वह तीसरा रास्ता था. चांगकिएन की रिपोर्ट मिलने पर हान सम्राट ने हुणों और दूसरी बीच की क़ौमों को जीत कर ईसा की पहली सदी तक चीन की पच्छिमी सरहद पर भारत और चीन के बीच के इस तीसरे रास्ते को महफ़ूज़ कर दिया. अब बीच एशिया होकर चीन और भारत का रास्ता मज़हबी प्रचारकों, मुसाफ़िरों और सौदागरों सब के लिये खुल गया. इस तरह ईसा की पहली सदी में भारत और चीन के बीच बौद्ध यात्रियों का आना जाना शुरू हुआ. यह भी पता चलता है कि ईसा से पाँच छै सौ साल पहले भी भारत और चीन के बीच काफ़ी कलचरी लेन देन था. उपनिशदों, गीता और बौद्ध धर्म की बहुत सी बातें चीन के ताओ धर्म से इतनी मिलती जुलती हैं कि मालूम होता है कि ताओ धर्म के जन्मदाता लाओत्से और ख़ास प्रचारक लिएत्सू और चुआंगज़ू पर उनका यानी उपनिशदों, गीता और बौद्ध धर्म का काफ़ी असर पड़ा होगा.

آنے سے چین کے لئے ایک نئی دنیا کا دروازہ کھل گیا جس سمے چانگ کئین بختیار میں تھا، اُسے یہ دیکھکر اچرج ہوا کہ چین کے دکھنی صوبوں سے پٹ سن اور بانس کی بنی ہوئی چیزیں بختیار کے بازاروں میں بک رہی تھیں. پتہ لگانے پر اُسے معلوم ہوا کہ یہ مال بھارت کے سوداگر چین سے بھارت اور افغانستان کے راستے بختیار لاتے تھے.

چانگ کیئن نے چین لوٹ کر جو رپورٹ اپنے بادشاہ کو دی اُس میں اُس نے اِن باتوں کا ذکر کیا اور بیچ ایشیا ہو کر بھارت سے چین تک ایک راستہ کھولنے کی تجویز پیش کی.

یہاں یہ بتا دینا ضروری ہے کہ بھارت اور چین کے بیچ اِس سے پہلے دو تجارتی راستے کھلے ہوئے تھے. اِن میں ایک راستہ آسام برما ہو کر چین پہنچتا تھا اور دوسرا سمندری راستہ بنگال کی کھاڑی سے ہو کر چین کے بندرگاہ تون کن تک تھا. چانگ کئین کو جس راستے کا پتہ لگا وہ تیسرا راستہ تھا. چانگ کئین کی رپورٹ ملنے پر ہان سمراٹ نے ہونوں اور دوسری بیچ کی قوموں کو جیت کر عیسیٰ کی پہلی صدی تک چین کی پچھمی سرحد پر بھارت اور چین کے بیچ کے اِس تیسرے راستے کو محفوظ کر دیا. اب بیچ ایشیا ہو کر چین اور بھارت کا راستہ مذہبی پرچارکوں، مسافروں اور سوداگروں سب کے لئے کھل گیا. اِس طرح عیسیٰ کی پہلی صدی میں بھارت اور چین کے بیچ بودھ یاتریوں کا آنا جانا شروع ہوا. یہ بھی پتہ چلتا ہے کہ عیسیٰ سے پانچ چھ سو سال پہلے بھی بھارت اور چین کے بیچ کافی کلچری لین دین تھا. 'اپنشدوں' گیتا اور بودھ دھرم کی بہت سی باتیں چین کے تاؤ دھرم سے اتنی ملتی جلتی ہیں کہ معلوم ہوتا ہے کہ تاؤ دھرم کے جنم داتا لاؤ تزے اور خاص پرچارک لئیھتسو اور چوآنگ زو پر اُن کا یعنی اُپنشدوں، گیتا اور بودھ دھرم کا کافی اثر پڑا ہوگا.

मौर्य राज के पतन के बाद हिन्दुस्तान कई टुकड़ों में बट गया. उसी समय बख़तियार के यूनानियों ने भारत पर चढ़ाई की और देखते देखते पंजाब पर क़ब्ज़ा कर लिया. इन यूनानियों ने भारती कलचर को अपना लिया और भारती सभ्यता, भारती फ़लसफ़े और भारती कला की कहानी बीच ऐशिया के क़बीलों को जाकर सुनाई. कुछ दिनों बाद यूनान का भी पतन हुआ और शक लोग बीच एशिया से आकर पंजाब में बस गए. बीच एशिया के अन्दर आकसस नदी की घाटी में यूचि जात ने अपना राज क़ायम किया. उन्हीं की एक जात कुशान के नाम से मशहूर है. ईसा से एक सदी पहले इसी कुशान जाति ने आकसस से लेकर बंगाल तक एक महान साम्राज क़ायम किया था.

बीच ऐशियाई देसों से भारत के ताल्लुक़ात दिन पर दिन बढ़ते जा रहे थे. दूसरी तरफ़ जैसे भारत में मौर्य सम्राटों ने सारे देस को अपने अधीन करके पूरे भारत को एक कर लिया था उसी तरह चीन में सिन ख़ानदान ने वहाँ के सब राज्यों को मिला कर सारे चीन पर एक हकूमत क़ायम की और एक विशाल चीनी क़ौम की नींव डाली.

ईसा से क़रीब २०० साल पहले सिन राजघराने की जगह हान राजघराने ने ली. हान बादशाह चीन की सुरक्षा के लिये परेशान थे. उनको सबसे ज़्यादा ख़तरा हुण जाति से था. हुण क़बीले चीन की पच्छिमी सरहद पर रहते थे. हुणों के मुक़ाबले के लिये हान बादशाह ने भारत की उत्तर पच्छिमी सरहद पर रहने वाले यूचि जाति के राजा से मदद लेना तय किया. इस मतलब से उसने चांगकिएन नाम के अपने एक दूत को आकसस की घाटी भेजा.

चांगकिएन अपने मिशन में कामयाब नहीं हुआ. लेकिन उसके

موریہ راج کے پتن کے بعد هندستان کئی ٹکڑوں میں بٹ گیا. اُسی سمے بختیار کے یونانیوں نے بھارت پر چڑھائی کی اور دیکھتے دیکھتے پنجاب پر قبضہ کر لیا. اِن یونانیوں نے بھارتی کلچر کو اپنا لیا اور بھارتی سبھیتا' بھارتی فلسفے اور بھارتی کلا کی کہانی بیچ ایشیا کے قبیلوں کو جاکر سنائی. کچھ دنوں بعد یونان کا بھی پتن ہوا اور شک لوگ بیچ ایشیا سے آکر پنجاب میں بس گئے. بیچ ایشیا کے اندر آکسس ندی کی گھاٹی میں یوچی جات نے اپنا راج قائم کیا. اُنھیں کی ایک جات کشان کے نام سے مشہور ہے. عیسیٰ سے ایک صدی پہلے اِسی کشان جاتی نے آکسس سے لے کر بنگال تک ایک مہان سامراج قائم کیا تھا.

بیچ ایشیائی دیسوں سے بھارت کے تعلقات دن پر دن بڑھتے جا رہے تھے. دوسری طرف جیسے بھارت میں موریہ سمراٹوں نے سارے دیس کو اپنے ادھین کر کے پورے بھارت کو ایک کر لیا تھا اُسی طرح چین میں سن خاندان نے وہاں کے سب راجوں کو ملا کر سارے چین پر ایک حکومت قائم کی اور ایک وشال چینی قوم کی نیو ڈالی.

عیسیٰ سے قریب ۲۰۰ سال پہلے سن راج گھرانے کی جگہ ہان راج گھرانے نے لی. ہان بادشاہ چین کی سورکشا کے لئے پریشان تھے. اُن کو سب سے زیادہ خطرہ ہون جاتی سے تھا. ہون قبیلے چین کی پچھمی سرحد پر رہتے تھے. ہون کے مقابلے کے لئے ہان بادشاہ نے بھارت کی اُتر پچھمی سرحد پر رہنے والے یوچی جاتی کے راجہ سے مدد لینا طے کیا. اِس مطلب سے اُس نے چانگ کئین نام کے اپنے ایک دوت کو آکسس کی گھاٹی بھیجا.

چانگ کئین اپنے مشن میں کامیاب نہیں ہوا. لیکن اُسکے

चीन गए, उस समय वहाँ ताओ धर्म और कंगफ़ूत्ज़े का मजहब फैल चुका था. चीनी कलचर और सभ्यता काफ़ी तरक़्क़ी कर चुकी थी

चीन और भारत के बीच भारत के बौद्ध भिक्षुओं ने जो कलचरी नाता जोड़ा वह आज तक क़ायम है. उनकी जिन्दगी, उनके त्याग और उनकी क़ुरबानी ने उन्नीस सौ साल पहले भारत और चीन की एकता की जो नींव डाली. उस पर आज एक शानदार इमारत खड़ी है. क़ुदरत की आफ़तें और राजकाज के तूफ़ान उस इमारत को नहीं गिरा सके. वह हमें अब भी आपस के प्राचीन कलचरी सम्बन्ध की याद दिलाती रहती है.

भारत और चीन के बीच बौद्ध मुसाफिरों का आना जाना किस तरह शुरू हुआ, इसको समझने के लिये एशिया के उस समय के अंतरक़ौमी सम्बन्ध पर एक नजर डालनी होगी.

सिकंदर के हमले के बाद समूचे एशिया में भारती सभ्यता का आदर होने लगा था और एशिया की दूसरी क़ौमों पर भारती सभ्यता का असर पड़ना शुरू हो गया था.

सम्राट अशोक के जमाने में ईसा से ढाई सौ साल पहले भारत का कलचरी सम्बन्ध एशिया के दूर दूर देसों से हुआ. सम्राट अशोक बौद्ध मजहब के मानने वाले थे. उन्होंने बौद्ध भिक्षुओं को बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिये भारत की सरहद पर के सब देसों मे भेजा था. उनके दूत मिस्र, सीरिया (शाम) और मक़दूनिया तक गए थे. पूरब में बहुत से बौद्ध भिक्षु जावा और सुमात्रा तक गए. बरमा में बौद्ध धर्म का प्रचार इन्हीं भिक्षुओं ने किया. लंका में भी अशोक के मजहबी दूतों ने गौतम बुद्ध का संदेश पहुंचाया. इस तरह अशोक के राज काल में एशिया में भारत का अन्तर-क़ौमी सम्बन्ध काफ़ी गहरा हो गया था.

چین گئے اُس سمے وہاں تاؤ دھرم اور کنگفوتزے کا مذہب پھیل چکا تھا . چینی کلچر اور سبھیتا کافی ترقی کر چکی تھی .

چین اور بھارت کے بیچ بھارت کے بودھ بھکشوؤں نے جو کلچری ناتا جوڑا وہ آج تک قائم ہے . اُن کی زندگی ' اُنکے تیاگ اور اُنکی قربانی نے اُنیس سو سال پہلے بھارت اور چین کی ایکتا کی جو نیو ڈالی . اُس پر آج ایک شاندار عمارت کھڑی ہے . قدرت کی آفتیں اور راج کاج کے طوفان اُس عمارت کو نہیں گرا سکے وہ ہمیں اب بھی آپس کے پراچین کلچری سمبندھ کی یاد دلاتی رہتی ہے .

بھارت اور چین کے بیچ بودھ مسافروں کا آنا جانا کس طرح شروع ہوا ' اِسکو سمجھنے کے لئے ایشیا کے اُس سمے کے انتر قومی سمبندھ پر ایک نظر ڈالنی ہوگی .

سکندر کے حملے کے بعد سموچے ایشیا میں بھارتی سبھیتا کا آدر ہونے لگا تھا اور ایشیا کی دوسری قوموں پر بھارتی سبھیتا کا اثر پڑنا شروع ہو گیا تھا .

سمراٹ اشوک کے زمانے میں عیسیٰ سے ڈھائی سو سال پہلے بھارت کا کلچری سمبندھ ایشیا کے دور دور دیسوں سے ہوا . سمراٹ اشوک بودھ مذہب کے ماننے والے تھے . اُنھوں نے بودھ بھکشوؤں کو بودھ دھرم کا پرچار کرنے کے لئے بھارت کی سرحد پر کے سب دیسوں میں بھیجا تھا . اُنکے دوت مصر ' سوریا (شام) اور مقدونیہ تک گئے تھے . پورب میں بہت سے بودھ بھکشو جاوا اور سماترا تک گئے . برما میں بودھ دھرم کا پرچار اِنہیں بھکشوؤں نے کیا . لنکا میں بھی اشوک کے مذہبی دوتوں نے گوتم بدھ کا سندیش پہنچایا . اِس طرح اشوک کے راج کال میں ایشیا میں بھارت کا انتر قومی سمبندھ کافی گہرا ہو گیا تھا .

भारत और चीन का कलचरी मेल

(भाई भानचन्द्र वर्मा)

सन् ६५ ईसवी में एक चीनी सम्राट की दावत पर गौतम बुद्ध का संदेस लेकर पहला बौद्ध भिक्षु चीन पहुँचा. उस समय से इन दोनों देसों में कलचरी सम्बन्ध तेज़ी के साथ बढ़ने लगा और ग्यारह सौ साल तक भारत और चीन के बीच बौद्ध यात्रियों का ताँता बँधा रहा. इन्हीं ग्यारह सौ बरस में चीन की धरती पर बौद्ध मज़हब और बौद्ध कला दोनों छा गए. इस अरसे में भारत और चीन के बीच जो कलचरी लेन देन हुआ उसके निशान आज भी चीनी और भारती ज़िन्दगी में मौजूद हैं.

बौद्ध मज़हब ने चीन को जिस तरह सर किया, वह दुनिया के धर्मों के इतिहास में बेमिसाल है. बौद्ध धर्म की इस जीत को रूहानी जीत ही कहा जा सकता है. इतिहासकार विलहेल्म लिखता है—

"बौद्ध मज़हब ने चीन पर पूरी रूहानी फ़तह हासिल की. न सिर्फ़ चीनी शिल्पकारी (बुतसाज़ी) पर या एक मानी में चीनी नक़्क़ाशी पर ही उसका असर पड़ा बल्कि चीन की समूची दिमाग़ी ज़िन्दगी पर बौद्ध धर्म छा गया." (चीनी सभ्यता का संक्षिप्त इतिहास—सफ़ा २४५)

जबकि योरप के धार्मिक प्रचारकों ने राजनैतिक मदद से और ज़्यादातर राजनैतिक मतलबों के लिये पूरब के दूर दूर देसों में ईसाई मत का प्रचार किया, भारत के बौद्ध प्रचारकों ने बग़ैर किसी सियासी मदद के या सियासी मतलब के चीन जाकर बौद्ध धर्म का संदेसा चीनी जनता तक पहुँचाया. जिस समय भारत से बौद्ध भिक्षु

بھارت اور چین کا کلچری میل

(بھائی بھان چندر ورما)

سن ۶۵ عیسوی میں ایک چینی سمراٹ کی دعوت پر گوتم بدھ کا سندیش لے کر پہلا بودھ بھکشو چین پہنچا ۔ اُس سمے سے اِن دونوں دیسوں میں کلچری سمبندھ تیزی کے ساتھ بڑھنے لگا اور گیارہ سو سال تک بھارت اور چین کے بیچ بودھ یاتریوں کا تانتا بندھا رہا۔ اِنھیں گیارہ سو برس میں چین کی دھرتی پر بودھ مذھب اور بودھ کلا دونوں چھا گئے. اِس عرصے میں بھارت اور چین کے بیچ جو کلچری لین دین ہوا اُس کے نشان آج بھی چینی اور بھارتی زندگی میں موجود ھیں ۔

بودھ مذھب نے چین کو جس طرح سر کیا، وہ دنیا کے دھرموں کے اِتہاس میں بےمثال ھے ۔ بودھ دھرم کی اِس جیت کو روحانی جیت ھی کہا جا سکتا ھے ۔ اِتہاس کار ویلھیلم لکھتا ہے—

"بودھ مذھب نے چین پر پوری روحانی فتح حاصل کی ۔ نہ صرف چینی شلپ کاری (بت سازی) پر یا ایک معنی میں چینی نقاشی پر ھی اسکا اثر پڑا بلکہ چین کی سموچی دماغی زندگی پر بودھ دھرم چھا گیا ." (چینی سبھیتا کا سنچھپت اِتہاس—صفحہ ۲۴۵)

جبکہ یورپ کے دھارمک پرچارکوں نے راج نیتک مدد سے اور زیادہ تر راج نیتک مطلبوں کے لئے پورب کے دور دور دیسوں میں عیسائی مت کا پرچار کیا، بھارت کے بودھ پرچارکوں نے بغیر کسی سیاسی مدد کے یا سیاسی مطلب کے چین جاکر بودھ دھرم کا سندیش چینی جنتا تک پہنچایا ۔ جس سمے بھارت سے بودھ بھکشو

है कि माह में कम से कम २४ घंटे हम में से हर भाई खेती के काम में दे ही.

'सर्वोदय का झोंका हमारे सर पर टूट पड़ने' की क़िस्मत पर खुश होते हुए सम्मेलन के इन्तज़ामकार ने सबका शुक्रिया अदा किया और अपनी खामियों की माफ़ी चाही. इसके बाद प्रार्थना हुई.

प्रार्थना खतम होने पर अपने भाशन में विनोबा जी ने कहा कि सरकार में जो दोश है वह साये की शकल में जनता का ही दोश है. हमारा काम है जनता को तालीम दें. लेकिन भगवान से यह प्रार्थना हमेशा बनी रहे कि हे भगवान ! मेरी इच्छा सिर्फ़ मुझ पर ही चले और उस इच्छा का बोझ किसी पर लादा नहीं जाए. अगर वह इच्छा किसी को पसंद हो तो अपने तरीक़े से यह उस पर चले. यह विचार कि फ़लाँ चीज तो हो ही जानी चाहिये—इस में हिंसा भरी है. इसमें महायुद्ध के बीज हैं. किसी तरह के दबाव में हमारा यक़ीन नहीं होना चाहिये, तभी सदा बनी रहने वाली शक्ति हमारे अन्दर पैदा हो सकती है. पहले दिन के पाँचों सुझावों को उन्होंने एक लाइन में रख दिया—

अन्तः शुद्धिः, बहिः शुद्धिः, श्रमः, शान्तिः, समर्पणम्.

यानी १. शुद्ध ब्योहार आन्दोलन २. भंगी काम और ग्राम सफ़ाई ३. खेती व श्रम निश्ठा, ४. शान्ति सेना और ५. मूत गूंडी दान—के पंचपहलू प्रोग्राम को अमल में लाएँ.

विनोबा जी का भाशन पूरा होने पर सर्वोदय समाज सम्मेलन की कारवाई खतम हो गई. सम्मेलन के चार हज़ार मेम्बरों में से (जिनमें सवा सौ विदेस के हैं) क़रीब आठ सौ शिवरामपल्ली आए थे. सब को खुशी थी कि विनोबा जी की बानी सुनने को मिली. अब यह तो आगे चलकर ही पता चलेगा कि सेवक लोगों ने जो सबक़ सीखा उसे वह कहाँ तक अपनी जिन्दगी का हिस्सा बना सके और देस को उनकी जात से सचमुच कितना फ़ायदा हुआ.

ہے کہ ماہ میں کم سے کم ۲۴ گھنٹے ہم میں سے ہر بھائی کھیتی کے کام میں دے ہی۔

' سرودے کا جھونکا ہمارے سر پر ٹوٹ پڑنے' کی قسمت پر خوش ہوتے ہوئے سمیلن کے انتظام کار نے سب کا شکریہ ادا کیا اور اپنی خامیوں کی معافی چاہی۔ اسکے بعد پرارتھنا ہوئی۔

پرارتھنا ختم ہونے پر اپنے بھاشن میں ونوبا جی نے کہا کہ سرکار میں جو دوش ہے وہ سائے کی شکل میں جنتا کا ہی دوش ہے۔ ہمارا کام ہے جنتا کو تعلیم دیں۔ لیکن بھگوان سے یہ پرارتھنا ہمیشہ بنی رہے کہ ہے بھگوان! میری اچھا صرف مجھ پر ہی چلے اور اس اچھا کا بوجھ کسی پر لادا نہیں جائے۔ اگر وہ اچھا کسی کو پسند ہو تو اپنے طریقے سے وہ اس پر چلے یہ وچار کہ فلاں چیز تو ہو ہی جانی چاہئے — اس میں ہنسا بھری ہے۔ اس میں مہایدھ کے بیج ہیں۔ کسی طرح کے دباؤ میں ہمارا یقین نہیں ہونا چاہئے' تبھی سدا بنی رہنے والی شکتی ہمارے اندر پیدا ہو سکتی ہے۔ پہلے دن کے پانچوں سجھاؤوں کو انہوں نے ایک لائن میں رکھدیا—

انتہ شدھی' بہی شدھی' شرمہ شانتی سمرپنم۔

یعنی ۱۔ شدھ بیوہار آندولن' ۲۔ بھنگی کام اور گرام صفائی' ۳۔ کھیتی و شرم نشٹھا' ۴۔ شانتی سینا اور ۵۔ سوت گنڈی دان — کے پانچ پہلو پروگرام کو عمل میں لائیں۔

ونوبا جی کا بھاشن پورا ہونے پر سرودے سماج سمیلن کی کاروائی ختم ہوگئی۔ سمیلن کے چار ہزار ممبروں میں سے (جن میں سوا سو بدیس کے ہیں) قریب آٹھ سو شیورام پلی آئے تھے۔ سب کو خوشی تھی کہ ونوبا جی کی بانی سننے کو ملی۔ اب یہ تو آگے چلکر ہی پتہ چلیگا کہ سیوک لوگوں نے جو سبق سیکھا اسے وہ کہاں تک اپنی زندگی کا حصہ بنا سکے اور دیس کو انکی ذات سے سچ مچ کتنا فائدہ ہوا۔

विवेकयुक्त (समझदार) समता का विकास चाहिये. मेरे जैसे को भी लगता है कि समता के दायरे में मुझे भी करने को काफ़ी है. हम मान रखें कि एक एक गुन के विकास में समाज के सैकड़ों हज़ारों साल लग जाते हैं. अगर समता के विकास में विवेक न रहने का दोश रह गया तो फिर विवेक गुन का विकास करने के लिये इनसानियत के सैकड़ों हज़ारों साल फ़ज़ूल जाएँगे. सूरज को देखिये, उसमें कितनी गर्मी है ? तभी तो हम सबकी गर्मी ९८ डिग्री रह पाती है. इस समता के लिये हम सबको बहुत कुछ करना है. इस गुन का विकास एक दो दिन में नहीं होने वाला है. चौथे दिन का दोपहर तक का वक़्त तो राजनीति वाली चर्चा में निकल गया. दूसरे वक़्त थोड़ी-थोड़ी चर्चा कई चीज़ों पर हुई. शरीर श्रम (जिस्मानी मेहनत) से संस्थाएं चलाना, सत्याग्रह का स्थान, हरिजन सेवा का स्वरूप, और शान्ति सेना.

बहसें ख़तम होने पर जाजू जी ने सभापति की हैसियत से आख़िरी भाशन दिया. उन्होंने कहा कि स्वराज के बाद हमारा और सरकार का मक़सद एकसा हो जाता लेकिन काम करने के तरीक़े की वजह से सरकार हमारे ख़िलाफ़ दिखाई देती है. जितना होना चाहिये उतना सहयोग होना मुमकिन नहीं दिखाई देता. आगे उन्होंने बताया कि सर्वोदय समाज का नाम लेकर किसी को काम नहीं करना है. बहुत से भाइयों की ऐसी इच्छा मालूम होती है कि सर्व सेवा संघ सब काम उठाले. शिकायत होती है कि मार्ग दर्शन या रोशनी नहीं मिलती. लेकिन असल चीज़—काम—पर किसी का ध्यान नहीं जाता. 'लीड' चाहने वाले भी अपनी इच्छा के मुताबिक़ काम करने की 'लीड' चाहते हैं, यह कैसे मुमकिन हो ? 'सर्वोदय' और 'हरिजन' पत्र निकलते हैं. अपने काम की सूचना उनमें भेजिये, दूसरों का इससे फ़ायदा होगा. करने को काम तो बेहद पड़ा है. कताई मंडल का काम, समग्र सेवा के सारे काम, शरीर-श्रम वग़ैरा. मेरा सुझाव

ویویک یکت (سمجھدار) سمتا کا وکاس چاہئے . میرے جیسے کو بھی لگتا ہے کہ سمتا کے دائرے میں مجھے بھی کرنے کو کافی ہے . ہم مان رکھیں کہ ایک ایک گن کے وکاس میں سماج کے سیکڑوں ہزاروں سال لگ جاتے ہیں . اگر سمتا کے وکاس میں ویویک نہ رہنے کا دوش رہ گیا تو پھر ویویک گن کا وکاس کرنے کیلئے انسانیت کے سیکڑوں ہزاروں سال فضول جائینگے . سورج کو دیکھئے . اُس میں کتنی گرمی ہے ؟ تبھی تو ہم سب کی گرمی ۹۸ ڈگری رہ پاتی ہے . اِس سمتا کے لئے ہم سب کو بہت کچھ کرنا ہے . اِس گن کا وکاس ایک دو دن میں نہیں ہونے والا ہے . چوتھے دن کا دوپہر تک کا وقت تو راج نیتی والی چرچا میں نکل گیا . دوسرے وقت تھوڑی تھوڑی چرچا کئی چیزوں پر ہوئی . شریر شرم (جسمانی محنت) سے سنستھائیں چلانا' ستیاگرہ کا استھان' ہریجن سیوا کا سروپ اور شانتی سینا .

بحثیں ختم ہونے پر جاجوجی نے سبھا پتی کی حیثیت سے آخری بھاشن دیا . اُنہوں نے کہا کہ سوراج کے بعد ہمارا اور سرکار کا مقصد ایک سا ہوجاتا لیکن کام کرنے کے طریقے کی وجہ سے سرکار ہمارے خلاف دکھائی دیتی ہے . جتنا ہونا چاہئے اُتنا سہیوگ ہونا ممکن نہیں دکھائی دیتا . آگے اُنہوں نے بتایا کہ سرودے سماج کا نام لے کر کسی کو کام نہیں کرنا ہے . بہت سے بھائیوں کی ایسی اِچھا معلوم ہوتی ہے کہ سرو سیوا سنگھ سب کام اُٹھالے . شکایت ہوتی ہے کہ مارگ درشن یا روشنی نہیں ملتی . لیکن اصل چیز — کام — پر کسی کا دھیان نہیں جاتا . ' لیڈ ' چاہنے والے بھی اپنی اِچھا کے مطابق کام کرنے کی ' لیڈ ' چاہتے ہیں' یہ کیسے ممکن ہو ؟ ' سرودے ' اور ' ہریجن ' پتر نکلتے ہیں . اپنے کام کی سوچنا اُن میں بھیجئے' دوسروں کا اِس سے فائدہ ہوگا . کرنے کو کام تو بے حد پڑا ہے . کتائی منڈل کا کام' سمگر سیوا کے سارے کام' شریر شرم وغیرہ . میرا سجھاو

महेशदत्त मिश्र (इलाहाबाद) शरीक हुए. इसी बीच काका साहब के बजाय (जिनको बाहर जाना था) सभापति की जगह भाई श्री कृष्ण दास जाजू ने ली. माली बराबरी के बाद नई तालीम का विशय भाई आर्यनायकम ने छेड़ा जिस में भाई जाक़र हसन (हैदराबाद), करन भाई (बनारस) वग़ैरा शरीक हुए. इसके बाद भाई धीरेन्द्र मजूमदार ने एक गरम चीज़ पर चर्चा शुरू की— राजनीति की तरफ़ रुख़. उन्होंने कहा कि हम देहाती जनता का संगठन कर उसे तैयार करें ताकि ग्रामराज क़ायम किया जा सके. भाई शंकरराव देव ने ज़ोरदार लफ़्ज़ों में कहा कि 'चलो दिल्ली' की जगह हमारा नारा होना चाहिये 'चलो देहात'. हम वोटरों को तालीम दें. एक वक़्त आएगा कि आप के सम्मेलनों में प्रधान मंत्री का संदेसा न आकर वह ख़ुद आएँगे. इस विशय की चर्चा सम्मेलन के चौथे और आख़री रोज़ भी रही जिस में भाई लक्ष्मी बाबू (बिहार), भाई बैद्यनाथ चौधरी (बिहार), बाबा राघवदास जी, भाई श्री धर धत्ते (वर्धा), भाई वेंकट राव (गोरखपूर) और दादा धर्माधिकारी (नागपुर) वग़ैरा ने हिस्सा लिया.

तीसरे दिन की प्रार्थना में विनोबा जी ने एक बहुत ही असरदार भाशन दिया जिसमें माली बराबरी के मसले को लिया. उन्होंने कहा कि हज़ारों लाखों बरस से हम यह सीखते चले आ रहे हैं कि दया धर्म का मूल है. हमारे यहाँ दया धर्म यानी कर्त्तव्य (फ़र्ज़) है और समत्व (बराबरी) ब्रह्म लक्ष्य (मक़सद) है. इधर सौ पचास बरस से समता की बात चल रही है. लेकिन दया का विरोध करके समता नहीं क़ायम करनी है. अब हम यह महसूस करने लग गए कि समता क़ायम करना सच्ची दया है. हमारे यहाँ ब्रह्म निर्वान अर्थात् पूर्न समता (पूरी बराबरी) की प्राप्ति के व्यक्तिगत ध्येय (ज़ाती मक़सद) को माना गया था. लेकिन समाजी रूप से इस तरफ़ [illegible] हमें सोच समझ कर करना है. इसलिये

مہیش دت مشر (الہ آباد) شریک ہوئے . اِسی بیچ کاکا صاحب کے بجائے (جنکو باہر جانا تھا) سبھا پتی کی جگہ بھائی شری کرشن داس جاجو نے لی . مالی برابری کے بعد نئی تعلیم کا وشے بھائی آریہ نائکم نے چھیڑا' جس میں بھائی جعفر حسن (حیدرآباد)' کرن بھائی (بنارس) وغیرہ شریک ہوئے . اسکے بعد بھائی دھیریندر مجومدار نے ایک گرم چیز پر چرچا شروع کی—راج نیتی کی طرف رخ . اُنہوں نے کہا کہ ہم دیہاتی جنتا کا سنگٹھن کر اُسے تیار کریں تاکہ گرام راج قائم کیا جا سکے . بھائی شنکر راؤ دیو نے زور دار لفظوں میں کہا کہ 'چلو دلی' کی جگہ ہمارا نعرہ ہونا چاہئے' چلو دیہات'. ہم ووٹروں کو تعلیم دیں . ایک وقت آئیگا کہ آپ کے سمیلنوں میں پردھان منتری کا سندیسہ نہ آکر وہ خود آئینگے . اِس وشے کی چرچا سمیلن کے چوتھے اور آخری روز بھی رہی جس میں بھائی لکشمی بابو (بہار)' بھائی بید ناتھ چودھری (بہار)' بابا راگھو داس جی' بھائی شری دھر تھتے (وردھا)' بھائی وینکٹ راؤ (گورکھپور) اور دادا دھرما دھیکاری (ناگپور) وغیرہ نے حصہ لیا .

تیسرے دن کی پرارتھنا میں ونوبا جی نے ایک بہت ہی اثردار بھاشن دیا جس میں مالی برابری کے مسلئے کو لیا . اُنہوں نے کہا کہ ہزاروں لاکھوں برس سے ہم یہ سیکھتے چلے آرہے ہیں کہ دیا دھرم کا مول ہے . ہمارے یہاں دیا دھرم یعنی کرتویہ (فرض) ہے اور سمتو (برابری) برہم لکشیہ (مقصد) ہے . اِدھر سو پچاس برس سے سمتا کی بات چل رہی ہے . لیکن دیا کا وِرودھ کر کے سمتا نہیں قائم کرنی ہے . اب ہم یہ محسوس کرنے لگ گئے کہ سمتا قائم کرنا سچی دیا ہے . ہمارے یہاں برہم نروان ارتھات پورن سمتا (پوری برابری) کی پراپتی کے ویکتی گت دھیئے (ذاتی مقصد) کو مانا گیا تھا لیکن سماجی روپ سے اِس [illegible]

दूसरे दिन प्रार्थना के बाद अपने भाशन में विनोबा जी ने काजकर्त्ताओं का ध्यान तीन खतरों की तरफ़ खींचा जिनसे खादी के काम में रुकावट पड़ रही है. एक तो है खेती के लिये ग़लत मोह. हम खेती करें; जिसमानी मेहनत में भरोसा रखें लेकिन खादी को नहीं भूलें. क्योंकि बग़ावत की निशानी खेती नहीं हो सकती, चरखा ही हो सकता है. दूसरी चीज़ है समग्र सेवा की तरफ़ झुकाव. यह भी ठीक है. लेकिन हमें यह हर दम ध्यान में रखना चाहिये कि हमारी समग्र सेवा चर्खे को केन्द्र मानकर चलनी चाहिये और तभी वह कामयाबी से चलेगी. तीसरा खतरा है खादी के लिये नये औज़ारों की खोज. इसके पीछे हारी हुई तबियत सी मालूम होती है. हम साधन या औज़ार ज़रूर ढूँढें लेकिन यह ख़याल रहे कि हमारा आधार चर्खा ही है. विनोबा जी ने विनती के साथ कहा कि आप सब उसे ध्यान पूर्वक पढ़ें जो महात्मा जी ने खादी के बारे में लिखा और कहा है. खादी उनकी महिमा है. अहिंसा के लिये तो वह निमित्त (ज़रिया) मात्र थे लेकिन खादी के बारे में ऐसा नहीं. अगर उन्हें खादी की बात नहीं सूझी होती तो दूसरे किसी को सहज ही यह बात सूझने वाली नहीं थी.

सम्मेलन में चर्चा का सबसे खास विशय 'आर्थिक समानता' (माली बराबरी) था. सदर काका साहब ने सुझाव रखा कि समानता की जगह हमें न्याय (इनसाफ़) लफ्ज़ इस्तेमाल करना चाहिये और यही बात भाई हरिभाऊ उपाध्याय ने कही जिन्होंने इस चर्चा को शुरू किया. उन्होंने इस सिलसिले में किशोर लाल भाई का एक लेख पढ़ कर सुनाया और माली इनसाफ़ के लिये शरीर श्रम ज़रूरी बताया. इस विशय की बहस में डाक्टर ओम प्रकाश गुप्त (वर्धा), भाई राम चन्द्र राव (नास्तिककेन्द्र, बैज़वाड़ा, आंध्र), प्रोफ़ेसर ठाकुर दास बंग (वर्धा), भाई हृदय नारायन चौधरी (बिहार), बहन गौरा देवी (पंजाब) और प्रोफ़ेसर

دوسرے دن پرارتھنا کے بعد اپنے بھاشن میں ونوبا جی نے کاج کرتاؤں کا دھیان تین خطروں کی طرف کھینچا جن سے کھادی کے کام میں رکاوٹ پڑ رہی ہے . ایک تو ہے کھیتی کے لئے غلط موہ . ہم کھیتی کریں ؛ جسمانی محنت میں بھروسہ رکھیں لیکن کھادی کو نہیں بھولیں کیونکہ بغاوت کی نشانی کھیتی نہیں ہو سکتی ' چرخہ ہی ہو سکتا ہے . دوسری چیز ہے سمگر سیوا کی طرف جھکاؤ . یہ بھی ٹھیک ہے . لیکن ہمیں یہ ہردم دھیان میں رکھنا چاہئے کہ ہماری سمگر سیوا چرخے کو کیندر مان کر چلنی چاہئے اور تبھی وہ کامیابی سے چلے گی . تیسرا خطرہ ہے کھادی کے لئے نئے اوزاروں کی کھوج . اسکے پیچھے ہاری ہوئی طبیعت سی معلوم ہوتی ہے . ہم سادھن یا اوزار ضرور ڈھونڈیں لیکن یہ خیال رہے کہ ہمارا آدھار چرخہ ہی ہے . ونوبا جی نے ونتی کے ساتھ کہا کہ آپ سب اُسے دھیان پوروک پڑھیں جو مہاتما جی نے کھادی کے بارے میں لکھا اور کہا ہے . کھادی اُن کی مہما ہے . اہنسا کے لئے تو وہ نمت (ذریعہ) ماتر تھے لیکن کھادی کے بارے میں ایسا نہیں . اگر اُنہیں کھادی کی بات نہیں سوجھی ہوتی تو دوسرے کسی کو سہج ہی یہ بات سوجھنے والی نہیں تھی .

سمیلن میں چرچا کا سب سے خاص وشے آرتھک سمانتا (مالی برابری) تھا . صدر کاکا صاحب نے سجھاؤ رکھا کہ سمانتا کی جگہ ہمیں نیائے (انصاف) لفظ استعمال کرنا چاہئے اور یہی بات بھائی ہری بھاؤ اُپادھیائے نے کہی جنھوں نے اِس چرچا کو شروع کیا . اُنھوں نے اِس سلسلے میں کشورلال بھائی کا ایک لیکھ پڑھکر سنایا اور مالی انصاف کے لئے شریر شرم ضروری بتایا . اِس وشے کی ڈاکٹر اوم پرکاش گپت (وردھا)' بھائی رام چندر راؤ (ناستک کیندر' بیجواڑہ' آندھر)' پروفیسر ٹھاکر داس بنگ وردھا)' بھائی ہردے نراین چودھری (بہار)' بہن گورا دیوی (پنجاب) اور پروفیسر

इस बहस में भी भाई सिद्ध राज ढड्ढा (राजस्थान), भाई मगन लाल शाह (बीजापुर), भाई सेठ कमल नयन बजाज (बम्बई), भाई लक्ष्मी नारायन (बिहार). भाई श्री मन नारायन अग्रवाल (वर्धा) और भाई महावीर प्रसाद पोद्दार (गोरखपुर) ने शिरकत की. उनके बाद विनोबा जी ने इस सवाल पर अपने विचार पेश किये. उन्हों ने कहा कि इस सिलसिले में मुझे सिर्फ़ तीन सुझाव रखना हैं जो मैं अकसर इससे पहले भी बता चुका हूँ—(१) खेती में सालदारों और रोज़ीना मज़दूर को मज़दूरी अनाज की शकल में दी जाये, (२) सरकार को चाहिये कि लगान नक़द न वसूल कर के अनाज के रूप में ले, (३) सरकार को खादी काम अपने हाथ में उठा लेना चाहिये क्योंकि हमारे देस की मिलें कुल मिलाकर फ़ी आदमी ग्यारह गज़ से ज़्यादा कपड़ा नहीं तैयार कर पाती हैं, लेकिन ज़रूरत कम से कम १६ गज़ की है.

अनाज के बाद शुद्ध ब्योहार आन्दोलन का विशय लिया गया जिस की शुरुआत श्री श्रीकृश्न दास जी जाजू ने की. शुद्ध ब्योहार आन्दोलन का ख़याल श्री किशोर लाल मशरूवाला ने 'हरिजन' में पेश किया है और पिछले महीने के 'नया हिन्द' में उनका वह लेख छप चुका है. जाजूजी ने बताया कि इस आन्दोलन के मुताबिक़ हम लोग छोटे छोटे इलाक़ों में काम शुरू कर दें. वर्धा में कुछ शुरुआत कर भी दी गई है. इस चर्चा में भाई फ़तह चन्द 'हरिजन' (पंजाब), भाई कमल नयन बजाज (बम्बई), भाई रिशभदास रांका (वर्धा) बहन मृदुला सारा भाई (दिल्ली), भाई मनमोहन चौधरी (उड़ीसा), भाई भीमराव देशमुख (नागपुर), भाई हरिशचन्द्र वैद्य (देहरादून) ने हिस्सा लिया. यह चर्चा तीसरे दिन भी चली. इसके बाद मुक़ामी ख़ुद पुराई (प्रादेशिक स्वयं पूर्नता) के लिये दक्खिन भारत हिन्दी प्रचार सभा के सेक्रेट्री भाई मोटूरी सत्यनरायन ने अपील की.

اس بحث میں بھی بھائی سدھراج ڈھڈھا (راجستھان)' بھائی مگن لال شاہ (بیجا پور)' بھائی سیٹھ کمل نین بجاج (بمبئی)' بھائی لکشمی نارائن (بہار)' بھائی شری من نارائن اگروال (وردھا) اور بھائی مہابیر پرساد پودار (گورکھپور) نے شرکت کی. اُن کے بعد ونوبا جی نے اِس سوال پر اپنے وچار پیش کئے. اُنہوں نے کہا کہ اِس سلسلے میں مجھے صرف تین سجھاؤ رکھنا ہیں جو میں اکثر اس سے پہلے بھی بتا چکا ہوں :— (۱) کھیتی میں سال داروں اور روزینہ مزدور کو مزدوری اناج کی شکل میں دی جائے' (۲) سرکار کو چاہئے کہ لگان نقد نہ وصول کرکے اناج کے روپ میں لے' (۳) سرکار کو کھادی کام اپنے ہاتھ میں اُٹھا لینا چاہئے کیونکہ ہمارے دیس کی ملیں کل ملاکر فی آدمی گیارہ گز سے زیادہ کپڑا نہیں تیار کر پاتی ہیں' لیکن ضرورت کم سے کم ۱۶ گز کی ہے.

اناج کے بعد شدھ بیوہار آندولن کا وشے لیا گیا جسکی شروعات شری شریکرشن داس جی جاجو نے کی شدھ بیوہار آندولن کا خیال شری کشور لال مشروالا نے 'ہریجن' میں پیش کیا ہے اور پچھلے مہینے کے 'نیا ہند' میں اُن کا وہ لیکھ چھپ چکا ہے. جاجو جی نے بتایا کہ اِس آندولن کے مطابق ہم لوگ چھوٹے چھوٹے علاقوں میں کام شروع کر دیں. وردھا میں کچھ شروعات کر بھی دی گئی ہے. اِس چرچا میں بھائی فتح چند ہریجن (پنجاب)' بھائی کمل نین بجاج (بمبئی)' بھائی رشبھ داس رانکا (وردھا)' بہن مردلا سارا بھائی (دلی)' بھائی من موہن چودھری (اُڑیسہ)' بھائی بھیم راؤ دیش مکھ (ناگپور) اور بھائی ہریشچندر وید (دہرادون) نے حصہ لیا. یہ چرچا تیسرے دن بھی چلی. اسکے بعد مقامی خود پورائی (پرادیشک سویم پورنتا) کے لئے دکچھن بھارت ہندی پرچار سبھا کے سکریٹری بھائی موٹوری ستیہ نارائن نے .

मेल मिलाप से खेती के काम करने का विचार कर रहा हूँ. जो इस में काम करने को तैयार हों वह मेरे साथ आएँ या जो अपने तजरबे के बल पर मुनासिब सलाह मशविरा दे सकते हैं दें.

ऊपर हमने लिखा है कि हर रोज शाम की प्रार्थना खतम होने पर विनोबा जी का भाशन होता था. पहले दिन उन्होंने कहा कि हम लोग अपने काम ज्यादातर प्रार्थना से शुरू और खतम करते हैं. इस मे जीवन और मन पर क़ाबू पाने में मदद मिलती है. लेकिन प्रार्थना महज सदाचार नहीं है, भक्ति और उपासना या पूजा है. अहं भाव (ख़ुदी) से मुक्ति पाना, यह शक्ति किसी भी सदाचार में न होकर प्रार्थना में है. प्राथना माने ख़ुदी को चूर करदेना. इसी कारन भक्ति मार्ग को दूसरे मार्गों के मुक़ाबले में अच्छा समझा गया है. इसके लिये कोई साधन नहीं चाहिये, सिर्फ़ अपने अन्दर परमेश्वर का प्रेम चाहिये. हमारी प्रार्थनायें व्योहार के तौर पर हैं, भक्ति नहीं. इस तरफ़ हमें तवज्जेह देनी चाहिये. मैंने तो परमेश्वर से यह मांगा कि मुझसे और कुछ बने या न बने पर तेरे में मेरा भाव बना रहे.

दूसरे दिन बहस अनाज के सवाल पर हुई जिस की शुरुआत प्लानिंग कमीशन के मेम्बर भाई रामकृष्न पाटिल ने की. उन्होंने कहा कि सरकारी आंकड़ों को एक दम सच्चा नहीं कहा जासकता. फिर भी इनसे हम यह तो अंदाज सकते हैं कि इस वक़्त अनाज की कमी हमारे देस में सचमुच है. इसलिये हमें गुज़र औक़ाती खेती से साइन्सी खेती पर आजाना चाहिये (it was necessary to change from subsistence agriculture to scientific agriculture). उन्होंने यह भी बताया कि बुनियादी सवाल अनाज के तक़सीम करने या कंट्रोल का नहीं है बलिक अनाज की पैदावार बढ़ाने का है और सर्वोदय सेवकों से अपील की मदद से यह चीज़ तरक़्क़ी पकड़ सकती है.

میل ملاپ سے کھیتی کا کام کرنے کا وچار کر رہا ھوں . جو اس میں کام کرنے کو تیار ھوں وہ میرے ساتھ آئیں یا جو اپنے تجربے کے بل پر مناسب صلاح مشورہ دے سکتے ھیں دیں .

اُوپر هم نے لکھاھے کہ هر روز شام کی پرارتھنا ختم ھونے پر ونوبا جی کا بھاشن ھوتا تھا . پہلے دن اُنھوں نے کہا کہ هم لوگ اپنے کام زیادہ تر پرارتھنا سے شروع اور ختم کرتے ھیں . اِس سے جیون اور من پر قابو پانے میں مدد ملتی ھے . لیکن پرارتھنا محض سداچار نہیں ھے . بھکتی اور اُپاسنا یا پوجا ھے . اھم بھاو (خودی) سے مکتی پانا . یہ شکتی کسی بھی سداچار میں نہ ھو کر پرارتھنا میں ھے . پرارتھنا یعنی خودي کو چور کر دینا . اِسی کارن بھکتی مارگ کو دوسرے مارگوں کے مقابلے میں اچھا سمجھا گیا ھے . اِسکے لئے کوئی سادھن نہیں چاھئے ، صرف اپنے اندر پرمیشور کا پریم چاھئے . ھماری پرارتھنائیں بیوھار کے طور پر ھیں ، بھکتی نہیں . اِس طرف ھمیں توجہ دینی چاھئے . میں نے تو پرمیشور سے یہ مانگا کہ مجھسے اور کچھ بنے یا نہ بنے پر تیرے میں میرا بھاو بنا رھے .

دوسرے دن بحث اناج کے سوال پر ھوئی جس کی شروعات پلاننگ کمیشن کے ممبر بھائی رام کرشن پاٹل نے کی . اُنھوں نے کہا کہ سرکاری آنکڑوں کو ایک دم سچا نہیں کہا جا سکتا . پھر بھی اُن سے هم یہ تو انداز سکتے ھیں کہ اِس وقت اناج کی کمی ھمارے دیس میں سچ مچ ھے . اِس لئے ھمیں گزر اوقاتی کھیتی سے سائنسی کھیتی پر آجانا چاھئے (it was necessary to change from subsistence agriculture to scientific agriculture). اُنھوں نے یہ بھی بتایا کہ بنیادی سوال اناج کے تقسیم کرنے یا کنٹرول کا نہیں ھے بلکہ اناج کی پیداوار بڑھانے کا ھے اور سروودے سیوکوں سے اپیل کی کہ آپ کی مدد سے یہ چیز ترقی پکڑ سکتی ھے .

जीवन को बाज़ार से मुक्त किया जावे, यानी अनाज, कपड़ा, मकान और कुछ औज़ारों की ज़रूरतें वहीं की वहीं पूरी हो सकें. काजकर्त्ताओं में नए जोश की ज़रूरत है. संस्थायें पैसे से मुक्त होनी चाहियें. हम अपनी बुनियादें ऊपरिग्रह पर खड़ी करें. समझदारी (विवेक), अभ्यास और कोशिश की ज़रूरत है, तभी सर्वोदय विचार फैलेगा, अहिंसा फैलेगी. विरासत में मिली हुई चीज़ को बढ़ाने में जिस्म गिर जावे इससे बेहतर क्या हो सकता है ? इसके आगे उन्होंने बताया कि देस भर में शान्ति सेना का काम होना चाहिये जिसको आज़ादी के साथ बढ़ाया जावे. विनोबा जी ने तीसरी चीज़ जो पेश की वह थी हर साल गाँधी जी की बरसी पर अपने हाथ के काते सूत की गुंडी देने का प्रोग्राम. इस ख़याल में बहुत शक्ति भरी है हमारी समाजी शक्ति का इससे पता चल जावेगा. इसके बाद उन्होंने कहा कि भंगी बनने की योजना अमल में आनी चाहिये. भंगी को मिटा दीजिये, उसके काम का ख़ूबसूरत बन्दोबस्त कीजिये. जो मैला हो उसकी खाद बनाकर खेती में इस्तेमाल कीजिये और कराइये. पाँचवीं बात उन्होंने कही अन्दर की शुद्धि की यानी श्री किशोरलाल मशरूवाला का सुझाया हुआ शुद्ध व्योहार आन्दोलन चलाना. इससे हवा बदलने में मदद मिलेगी.

श्रीकुमारप्पा जी ने भी अपने भाशन में खेती पर ज़ोर दिया. उन्होंने कहा कि लोकशाही यानी डिमाक्रेसी दो तरह की होती है—एक ख़ुद मस्ती की और दूसरी ख़ुद पाबन्दी की, इन दोनों में कोई मेल नहीं है. ख़ुद मस्ती वाली लोकशाही पैसे के बल पर खड़ी है. इसीलिये उसमें शोशन बहुत शिद्दत से होता है और इसी का नतीजा है कि एख़लाक़ी चीज़ की क़द्र बहुत घट गई है. हमें ख़ुद पाबन्दी वाली लोकशाही को बनाना और फैलाना है. पुराने ख़याल को आजकल के समाज में अमली रूप देना है. इसीलिये मैं एक

جیون کو بازار سے مکت کیا جاوے' یعنی اناج' کپڑا' مکان اور کچھ اوزاروں کی ضرورتیں وہیں کی وہیں پوری ہو سکیں ۔ کاج کرتاؤں میں نئے جوش کی ضرورت ہے ۔ سنستھائیں پیسے سے مکت ہونی چاہئیں ۔ ہم اپنی بنیادیں اپریگرہ پر کھڑی کریں ۔ سمجھداری (ویوک)' ابھیاس اور کوشش کی ضرورت ہے' تبھی سروودے وچار پھیلے گا' اہنسا پھیلے گی ۔ وراثت میں ملی ہوئی چیز کو بڑھانے میں جسم گر جاوے' اس سے بہتر کیا ہو سکتا ہے ؟ اسکے آگے انہوں نے بتایا کہ دیس بھر میں شانتی سینا کا کام ہونا چاہئے جسکو آزادی کے ساتھ بڑھایا جاوے ۔ ونوبا جی نے تیسری چیز جو پیش کی وہ تھی ہر سال گاندھی جی کی برسی پر اپنے ہاتھ کے کاتے سوت کی گنڈی دینے کا پروگرام ۔ اس خیال میں بہت شکتی بھری ہے ۔ ہماری سماجی شکتی کا اس سے پتہ چل جاوے گا ۔ اسکے بعد انہوں نے کہا کہ بھنگی بننے کی یوجنا عمل میں آنی چاہئے ۔ بھنگی کو مٹا دیجئے' اسکے کام کا خوبصورت بندوبست کیجئے ۔ جو میلا ہو اسکی کھاد بناکر کھیتی میں استعمال کیجئے اور کرائیے ۔ پانچویں بات انہوں نے کہی اندر کی شدھی کی یعنی شری کشور لال مشرو والا کا سجھایا ہوا شدھ بیوہار آندولن چلانا ۔ اس سے ہوا بدلنے میں مدد ملے گی ۔

شری کماریپا جی نے بھی اپنے بھاشن میں کھیتی پر زور دیا ۔ انہوں نے کہا کہ لوک شاہی یعنی ڈیما کریسی دو طرح کی ہوتی ہے — ایک خود مستی کی اور دوسری خود پابندی کی ۔ ان دونوں میں کوئی میل نہیں ہے ۔ خود مستی والی لوک شاہی پیسے کے بل پر کھڑی ہے ۔ اسی لئے اس میں شوشن بہت شدت سے ہوتا ہے اور اسی کا نتیجہ ہے کہ اخلاقی چیز کی قدر بہت گھٹ گئی ہے ۔ ہمیں خود پابندی والی لوک شاہی کو بنانا اور پھیلانا ہے ۔ پرانے خیال کو آج کل کے سماج میں عملی روپ دینا ہے ۔ اسی لئے

इस तरह चार दिन ऐसे बीते मानो एक कैम्प में आये हों और किसी चीज़ की ट्रेनिंग ले रहे हों. कोई वक़्त बरबाद नहीं जाता था और दिमाग़ी शरीरी सभी तरह की मेहनत हो जाती थी.

सम्मेलन की चर्चा शुरू हुई ८ तारीख़ को साढ़े नौ बजे. सबसे पहले 'समाज' के मंत्री श्री गोपबन्धु चौधरी ने पिछले सम्मेलन और अब के बीच रमनमहर्शि, श्री अरविन्द, सरदार पटेल और ठक्कर बापा जैसी हस्तियों के उठ जाने पर अफ़सोस ज़ाहिर किया. इसके बाद उन्होंने यह बताया कि इन चार दिन चर्चा के क्या विशय रहेंगे और काका कालेलकर से प्रार्थना की कि वह इस बैठक के सदर रहें.

काका साहब ने सेवकों को धन्यवाद देकर कारवाई शुरू कर दी. पहला दिन इस बात के लिये रखा गया कि सेवक लोग अपने अनुभव और विचार पेश करें. लेकिन बोलने के लिये तीन मिनट फ़ी आदमी दिये गये. क़रीब तीस बत्तीस सेवक बोले. इस चर्चा में तरह तरह के विशयों पर सेवकों ने अपने विचार रखे—जैसे ज़मीन का बटवारा, आरथिक समस्या, शान्ति सेना संगठन, मन्दिरों में पशु-बध, हरिजनों के लिये पानी की समस्या, देस की राजकाजी हालत और हमारी नाकामी, गायों के रोग, अनाज स्वावलम्बन, मानसिक तंगनज़री, रचनात्मक संस्थाओं में काजकर्त्ताओं का वेतन (तनख़ाह) और उनकी पस्तदिली, अनाज पर कन्ट्रोल का सवाल, जनता और सरकार में मेल की कमी, रचनात्मक काम की नई शकल, शरनार्थियों का सवाल, कोका कोला से ख़तरा, कुम्हार काम, भंगी काम, सत्याग्रह की ज़रूरत, देहात को जगाकर संगठन करना, सूत भेंट करना वग़ैरा. ज़्यादा मारके के दो भाशन थे जो श्री विनोबा जी और श्री कुमारप्पा जी ने दिये.

विनोबा जी ने कहा कि अब रचनात्मक काम नई दिशा में चलाना चाहिये. मेरे पास इस के लिये अमली योजना यह है कि गाँव के

اِس طرح چار دن ایسے بیتے مانو ایک کیمپ میں آئے ہوں اور کسی چیز کی ٹریننگ لے رہے ہوں. کوئی وقت برباد نہیں جاتا تھا اور دماغی شریری سبھی طرح کی محنت ہوجاتی تھی.

سمیلن کی چرچا شروع ہوئی ۸ تاریخ کو ساڑھے نو بجے. سب سے پہلے 'سماج' کے منتری شری گوپ بندھو چودھری نے پچھلے سمیلن اور اب کے بیچ — رمن مہرشی، شری اربند، سردار پٹیل اور ٹھکر باپا جیسی ہستیوں کے اُٹھ جانے پر افسوس ظاہر کیا. اِسکے بعد انہوں نے یہ بتایا کہ اِن چار دن چرچا کے کیا وشے رہینگے اور کاکا کالیلکر سے پرارتھنا کی کہ وہ اِس بیٹھک کے صدر رہیں.

کاکا صاحب نے سیوکوں کو دھنیہ واد دیکر کاروائی شروع کر دی. پہلا دن اِس بات کے لئے رکھا گیا کہ سیوک لوگ اپنے انوبھو اور وچار پیش کریں. لیکن بولنے کے لئے تین منٹ فی آدمی دیئے گئے. قریب تیس بتیس سیوک بولے. اِس چرچا میں طرح طرح کے وشیوں پر سیوکوں نے اپنے وچار رکھے — جیسے زمین کا بٹوارہ، آرتھک سمسیا، شانتی سینا سنگٹھن، مندروں میں پشو بدھ، ہریجنوں کیلئے پانی کی سمسیا، دیس کی راج کاجی حالت اور ہماری ناکامی، گایوں کے روگ، اناج سواولمبن، مانسک تنگ نظری، رچناتمک سنستھاؤں میں کاج کرتاؤں کا ویتن (تنخواہ) اور اُن کی پست دلی، اناج پر کنٹرول کا سوال، جنتا اور سرکار میں میل کی کمی، رچناتمک کام کی نئی شکل، شرنارتھیوں کا سوال، کوکا کولا سے خطرہ، کمہار کام بھنگی کام، ستیاگرہ کی ضرورت، دیہات کو جگاکر سنگٹھن کرنا، سوت بھینٹ کرنا وغیرہ. زیادہ معرکے کے دو بھاشن تھے جو شری ونوبا جی اور شری کمارپا جی نے دیئے.

ونوبا جی نے کہا کہ اب رچناتمک کام نئی دشا میں چلانا چاہئے. میرے پاس اِسکے لئے عملی یوجنا یہ ہے کہ گاؤں کے

हो. लेकिन आदमी आदमी है और उस पर पड़ोस व हवा का असर पड़ता ही है. इसलिये जब अनुगुल वाले सम्मेलन में विनोबा जी नहीं गए तो वहाँ का माजरा ही बदल गया और उसमें शरीक होने वाले अकसर भाई बहनों की तबियत घबरा उठी और ख़ासतौर से, नौजवान लोग तो तोबा-सी बोल गए. इस बार भी विनोबा जी नहीं जाने की सोच रहे थे. इस पर कुछ लोगों को आप से आप डर हुआ कि अगर विनोबा जी ने यही रुख़ रखा तो फिर इस 'समाज' की जान को ही ख़तरा है, और ज़ोरदार लफ़्ज़ों में उनसे अपील की कि वह ज़रूर हिस्सा लें. विनोबा जी मान गये और हैदराबाद के लिये पैदल ही अपने परंधाम आश्रम, पौनार (वर्धा) से निकल पड़े. ८ मार्च को चल कर ६ अप्रैल को हैदराबाद पहुँचे, दूसरे दिन सात तारीख़ की सुबह शिवरामपल्ली. विनोबा जी के इस क़दम से क्या उन इलाक़ों के लोगों पर जिनमें होकर वह गए, क्या सर्वोदय सेवकों पर और क्या दूसरों पर—सब पर अच्छा ही असर पड़ा और शिवरामपल्ली सर्वोदय सम्मेलन में जान आगई.

यह सम्मेलन दूसरी सभाओं, कान्फ़रेन्सों से अलग तरह का था. एक तो इसकी ज़ात ही अपनी अनोखी है, दूसरे इसका प्रोग्राम चौबीसों घंटों का रहता था. सेवक लोग सुबह सवा चार बजे उठकर टट्टी कुल्ले से निपट कर पाँच बजे प्रार्थना के लिये जमा होते थे. इसके बाद छै बजे नाश्ता किया और सात बजे से साढ़े आठ तक शरीर-श्रम के काम में लग जाते थे. फिर नहाए धोए और साढ़े नौ पर सम्मेलन मंडल में आकर चर्चा शुरू कर दी. डेढ़ घंटे बाद ग्यारह बजे खाने की घंटी उसके बाद आराम. फिर दो बजे से सूत यज्ञ यानी आध घंटे तक मौन कताई और इसके बाद चर्चा, तीन घंटे तक यह काम चलता. फिर छै बजे प्रार्थना जिसके आख़ीर में विनोबा जी का भाशन. इसके बाद खाना होता और फिर अपने अपने ठिकानों में जगह जगह सेवक लोग मिलते जुलते, सलाह करते और फिर सो जाते.

ھو . لیکن آدمی آدمی ھے اور اُسپر پڑوس و ھوا کا اثر پڑتا ھی ھے . اِسلئے جب انوگول والے سمیلن میں ونوباجی نہیں گئے تو وھاں کا ماجرا ھی بدل گیا اور اس میں شریک ھونے والے اکثر بھائی بہنوں کی طبیعت گھبرا اُٹھی اور خاص طور سے' نوجوان لوگ تو توبہ سی بول گئے . اِس بار بھی ونوبا جی نہیں جانے کی سوچ رھے تھے . اِس پر کچھ لوگوں کو آپ سے آپ ڈر ھوا کہ اگر ونوبا جی نے یہی رخ رکھا تو پھر اِس 'سماج' کی جان کو ھی خطرہ ھے اور زور دار لفظوں میں اُن سے اپیل کی کہ وہ ضرور حصہ لیں . ونوبا جی مان گئے اور حیدرآباد کے لئے پیدل ھی اپنے پرندھام آشرم' پونار (وردھا) سے نکل پڑے . ۸ مارچ کو چل کر ۶ اپریل کو حیدرآباد پہنچے' دوسرے دن سات تاریخ کی صبح شیو رام پلی . ونوبا جی کے اِس قدم سے کیا اُن علاقوں کے لوگوں پر جن میں ھو کر وہ گئے' کیا سروودے سیوکوں پر اور دوسروں پر — سب پر اچھا ھی اثر پڑا اور شیو رام پلی سروودے سمیلن میں جان آگئی .

یہ سمیلن دوسری سبھاؤں' کانفرنسوں سے الگ طرح کا تھا . ایک تو اِسکی ذات ھی اپنی انوکھی ھے' دوسرے اِس کا پروگرام چوبیسوں گھنٹوں کا رھتا تھا . سیوک لوگ صبح سوا چار بجے اُٹھکر ٹٹی کلّے سے نپٹ کر پانچ بجے پرارتھنا کے لئے جمع ھوتے تھے . اِسکے بعد چھ بجے ناشتہ کیا اور سات بجے سے ساڑھے آٹھ بجے تک شریر شرم کے کام میں لگ جاتے تھے . پھر نہائے دھوئے اور ساڑھے نو پر سمیلن منڈپ میں آکر چرچا شروع کر دی . ڈیوڑھ گھنٹے بعد گیارہ بجے کھانے کی گھنٹی . اُسکے بعد آرام . پھر دو بجے سے سوت یگیہ یعنی آدھ گھنٹے تک مون کتائی اور اُسکے بعد چرچا . تین گھنٹے تک یہ کام چلتا . پھر چھ بجے پرارتھنا جسکے آخیر میں ونوبا جی کا بھاشن . اِسکے بعد کھانا ھوتا اور پھر اپنے اپنے ٹھکانوں میں جگہ جگہ سیوک لوگ ملتے جلتے' صلاح کرتے اور پھر سوجاتے .

जाने को तैयार हैं. लेकिन इसके अलावा भी कुछ माई के लाल बचते हैं जिनको यह तमन्ना नहीं है (अगर पेट के अन्दर छिपी हो तो राम जाने) और जो गांधी जी के बताये-बनाये रास्ते पर अपनी ज़िन्दगी बिताते हुए दुनिया की सेवा करना चाहते हैं. सर्वोदय समाज इन जैसों का ही एक समूह है.

वैसे तो हर आदमी—जो दूसरे की बेहतरी में अपनी बेहतरी मानता हो, जो सब की भलाई चाहता हो—सर्वोदय समाज का सदस्य या सेवक बन सकता है. लेकिन हर तरह के आदमी अब इस से बचते ही जा रहे हैं और वह उन गिने चुनों की मंडली बनती जा रही है जिनकी तारीफ़ हमने अभी की है. इन भाई-बहनों, सर्वोदय सेवकों का मेला साल में एक बार लगा करता है. पहला मेला सन १९४९ में राऊ (इन्दौर) में लगा. दूसरा अनुगुल (उड़ीसा) में और अब तीसरा शिवरामपल्ली में जो हैदराबाद नाम के नगर से पाँच मील के फ़ासले पर है. यह मेला या सम्मेलन ८-९-१०-११ अप्रैल को हुआ.

आगे कुछ भी चर्चा करने के पहले हम यह बता दें—जो बात अकसर लोग तो जानते भी हैं—कि यह 'सर्वोदय समाज' का ख़याल गाँधी जी के गुज़र जाने के बाद १९४८ के मार्च में एक बड़ी सभा में श्री आचार्य विनोबा भावे ने पेश किया था और यह सुझाव रखा था कि हम काम करने वाले न कोई पार्टी बनायें न संगठन और न संस्था ही, बल्कि एक ढीला ढाला समाज हो जिसकी तरफ़ से कोई पाबन्दी किसी पर नहीं हो. इसलिये सर्वोदय सम्मेलन दुनिया की एक अजीब ग़रीब चीज़ है जिसमें न तो कोई ठहराव पास होते हैं और न कोई क़ानून या नियम बनाये जाते हैं और जिसका हर मेम्बर पूरी तरह ख़ुदमुख़्तार है. ज़ाहिर है कि ऐसी इमारत की बुनियादें

جانے کو تیار ہیں لیکن اِسکے علاوہ بھی کچھ مائی کے لال بچتے ہیں جنکو یہ تمنا نہیں ہے (اگر پیٹ کے اندر چھپی ہو تو رام جانے) اور جو گاندھی جی کے بتائے بنائے راستے پر اپنی زندگی بتاتے ہوئے دنیا کی سیوا کرنا چاہتے ہیں. سرودے سماج اِن جیسوں کا ہی ایک سموہ ہے.

ویسے تو ہر آدمی—جو دوسرے کی بہتری میں اپنی بہتری مانتا ہو، جو سب کی بھلائی چاہتا ہو—سرودے سماج کا سدسیہ یا سیوک بن سکتا ہے. لیکن ہر طرح کے آدمی اب اس سے بچتے ہی جا رہے ہیں اور وہ اُن گنے چنوں کی منڈلی بنتی جا رہی ہے جنکی تعریف ہم نے ابھی کی ہے. اِن بھائی بہنوں، سرودے سیوکوں کا میلہ سال میں ایک بار لگا کرتا ہے پہلا میلہ سن ۱۹۴۹ میں راؤ (اندور) میں لگا، دوسرا انوگول (اُڑیسہ) میں اور اب تیسرا شیورام پلی میں جو حیدرآباد نام کے نگر سے پانچ میل کے فاصلے پر ہے. یہ میلہ یا سمیلن ۸، ۹، ۱۰، ۱۱ اپریل کو ہوا.

آگے کچھ بھی چرچا کرنے کے پہلے ہم یہ بتا دیں— جو بات اکثر لوگ تو جانتے بھی ہیں—کہ یہ 'سرودے سماج' کا خیال گاندھی جی کے گزر جانے کے بعد ۱۹۴۸ کے مارچ میں ایک بڑی سبھا میں شری آچاریہ ونوبا بھاوے نے پیش کیا تھا اور یہ سجھاؤ رکھا تھا کہ ہم کام کرنے والے نہ کوئی پارٹی بنائیں نہ سنگٹھن اور نہ سنستھا ہی، بلکہ ایک ڈھیلا ڈھالا سماج ہو جسکی طرف سے کوئی پابندی کسی پر نہیں ہو. اس لئے سرودے سمیلن دنیا کی ایک عجیب غریب چیز ہے جس میں نہ تو کوئی ٹھہراؤ پاس ہوتے ہیں اور نہ کوئی قانون یا نیم بنائے جاتے ہیں اور جس کا ہر ممبر پوری طرح خود مختار ہے. ظاہر ہے کہ ایسی عمارت کی

शिवरामपल्ली सर्वोदय सम्मेलन

(भाई सुरेश रामभाई)

सच है मालिक की मरज़ी जानी नहीं जाती. साढ़े तीन बरस पहले जिस देस में गांधी जैसी हस्ती का सूरज चमक रहा हो आज उसका यह हाल है कि वहां के लोग दाने दाने को तरसते हैं, कपड़े के लिये मोहताज हैं और जो यही मनाते हैं कि इस जीने से तो मौत बेहतर है. दिल का दर्द यह देखकर और भी बढ़ जाता है कि अपना ही राज है और अपने ही लोग जो ऊंची से ऊंची कुर्सियों पर बैठे हैं दिन रात अपीलें करते हैं कि हिन्द के रहने वालो! अनाज ज्यादा से ज्यादा पैदा करो, कपड़ा खूब सारा बनाते रहो. मगर हालत संभलने के बजाय दिन दूनी रात चौगुनी रफ़्तार से बिगड़ती ही जारही है. इसका नतीजा है कि लोगों की हिम्मत पस्त-सी हो गई है और कल किसी तरह से भी ठीक नहीं बैठती.

मगर मज़ा यह है कि जिसे देखिये वही जनता का ख़िदमतगार अपने को कहता है. सरकारी पार्टी कांगरेस के अलावा दूसरी पार्टियाँ देस में हैं. लेकिन उनके काम करने के तरीक़े ऐसे निराले व डरावने हैं कि यह नहीं कहा जासकता कि सचमुच वह देस की सेवा करना चाहती हैं या अपनी पार्टी के हाथ मे सारी ताक़त व हकूमत का सारा ज़ोर बटोर लेना चाहती हैं. रह जाती है एक तादाद कुछ उन काम करने वालों की जो गांधी जी के सामने से ही उनके बताये रचनात्मक प्रोग्राम को अमल में लाने में लगे हैं. लेकिन उनमें से काफ़ी अच्छे अच्छे काजकर्ता असेम्बलियों और पार्लियामेन्ट में घुसकर हुकूमत की मशीन के पुर्ज़े [illegible]

شیورام پلی سرووݙے سمیلن

(بھائی سریش رام بھائی)

سچ ہے مالک کی مرضی جانی نہیں جاتی . ساڑھے تین برس پہلے جس دیس میں گاندھی جیسی ہستی کا سورج چمک رہا ہو آج اُس کا یہ حال ہے کہ لوگ دانے دانے کو ترستے ہیں ' کپڑے کیلئے محتاج ہیں اور جو یہی مناتے ہیں کہ اِس جینے سے تو موت بہتر ہے . دل کا درد یہ دیکھکر اور بھی بڑھ جاتا ہے کہ اپنا ہی راج ہے اور اپنے ہی لوگ جو اونچی سے اونچی کرسیوں پر بیٹھے ہیں دن رات اپیلیں کرتے ہیں کہ ھند کے رہنے والو ! اناج زیادہ سے زیادہ پیدا کرو ' کپڑا خوب سارا بناتے رہو مگر حالت سنبھلنے کے بجائے دن دونی رات چوگنی رفتار سے بگڑتی ہی جا رہی ہے . اِسکا نتیجہ ہے کہ لوگوں کی ہمت پست سی ہو گئی ہے اور کل کسی طرح سے بھی ٹھیک نہیں بیٹھتی .

مگر مزہ یہ ہے کہ جسے دیکھئے وہی جنتا کا خدمتگار اپنے کو کہتا ہے . سرکاری پارٹی کانگریس کے علاوہ دوسری پارٹیاں دیس میں ہیں . لیکن اُنکے کام کرنے کے طریقے ایسے نرالے و ڈراونے ہیں کہ یہ نہیں کہا جا سکتا کہ سچ مچ وہ دیس کی سیوا کرنا چاہتی ہیں یا اپنی پارٹی کے ہاتھ میں ساری طاقت اور حکومت کا سارا زور بٹور لینا چاہتی ہیں . رہ جاتی ہے ایک تعداد کچھ اُن کام کرنے والوں کی جو گاندھی جی کے سامنے سے ہی اُنکے بتائے رچناتمک پروگرام کو عمل میں لانے میں لگے ہیں . لیکن اُن میں سے کافی اچھے اچھے کام کرتا اسمبلیوں اور پارلیامنٹ میں گھس کر حکومت

शादी ब्याह, रहन सहन, खाना पीना, बनाव सिंगार, रीत रिवाज, लेन देन, हिसाब किताब, बही खाते, दान पुन्य, राज करने के तौर तरीक़े, सोसाइटी के नियम क़ायदे, आचार विचार, विरासत और उत्तराधिकार के क़ानून, गाँव पचायत के असूल, मकान बनाना, शायरी, चित्रकारी, संगीत, कला घरेलू दस्तकारियाँ और जीवन की अनगिनत चीज़ों में जहाँ मुसलमानों ने बहुत कुछ हिन्दुओं से सीखा है वहाँ हिन्दुओं ने भी बहुत कुछ मुसलमानों से लिया है. क्या कुछ हिन्दुओं ने मुसलमानों से लिया है और क्या कुछ मुसलमानों ने हिन्दुओं से लिया है इसको बयान करने के लिये या तो मोटी किताब चाहिये पर भारत की गलियों और गाँवों में घूमने वाला कोई भी आदमी उन्हें क़दम क़दम पर देख सकता है और अनुभव कर सकता है कि जड़मूल में यहाँ के रहने वाले हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई वग़ैरा सब एक ही क़ौम हैं.

شادی بیاہ، رہن سہن، کھانا پینا، بناؤ سنگار، ریت رواج، لین دین، حساب کتاب، بہی کھاتے، دان پن، راج کرنے کے طور طریقے، سوسائٹی کے نیم قاعدے، آچار وچار، وراثت اور ترادھیکار کے قانون، گاؤں پنچایت کے اصول، مکان بنانا، شاعری، چترکاری، سنگیت، کلا، گھریلو دستکاریاں اور جیون کی ان گنت چیزوں میں جہاں مسلمانوں نے بہت کچھ ہندوؤں سے سیکھا ہے وہاں ہندوؤں نے بھی بہت کچھ مسلمانوں سے لیا ہے. کیا کچھ ہندوؤں نے مسلمانوں سے لیا ہے اور کیا کچھ مسلمانوں نے ہندوؤں سے لیا ہے اس کو بیان کرنے کے لئے یوں تو موٹی کتاب چاہئے پر بھارت کی گلیوں اور گاؤں میں گھومنے والا کوئی بھی آدمی انہیں قدم قدم پر دیکھ سکتا ہے اور انوبھو کر سکتا ہے کہ جڑمول میں یہاں کے رہنے والے ہندو، مسلمان، سکھ، عیسائی وغیرہ سب ایک ہی قوم ہیں.

बल्कि ईरान की खाड़ी और पूरबी और दक्खिनी अरब के तमाम किनारे के शहरों में घूम आइये, आप देखेंगे कि उन तमाम देसों में वहाँ की अपनी भाशा के साथ साथ बहुत से लोग एक दूसरे को समझने और समझाने के लिये एक मिली जुली भाशा बोलते हैं. यह वही भाशा है जो भारत में हिन्दू मुसलमानों, सिक्ख ईसाइयों और भारत के तमाम बासियों के सदियों के मेल जोल से बनी और सारे भारत और भारत के इर्द गिर्द दूसरे मुल्कों में भी फैल गई. इस भाशा का नाम हिन्दी उरदू भी और हिन्दुस्तानी भी, जिस को जो नाम अधिक सुन्दर लगे वह उसी नाम से पुकारे. इस में झगड़े की कोई बात नहीं.

फ़रक़ और झगड़े की बात केवल इसी में है कि सीधे सादे शब्द जो अधिक समझे और बोले जाते हैं उनकी जगह कठिन शब्द भाशा में ठूँसे जाएं तो इस से जनता को कोई लाभ नहीं होगा और न भाशा ही सुन्दर होगी, चाहे अधिक अरबी फ़ारसी के शब्द ठूँसे जाएं या प्राकृत और संस्कृत के.

इसी तरह अरबी या संस्कृत के जितने भी सुन्दर शब्द हिन्दी या उर्दू में आम तौर पर समझे और बोले जाते हैं उन शब्दों को उरदू या हिन्दी भाशा से निकाल देने की कोशिश करना सख्त भूल है. किसी भी देस के लोग ऐसा नहीं करते ऐसा करना खुद अपनी प्यारी भाशा के साथ अन्याय करना और उसे बिगाड़ना होगा.

यहाँ केवल इतना बताना है कि भाशा के कारन भारत बासियों में कोई ऐसा बुनियादी फ़रक़ नहीं है जो भारत बासियों को एक क़ौम की जगह दो क़ौम की तरफ़ ले जाय. बल्कि भारत की तमाम भाशाओं में मेल जोल की वह तमाम बातें मौजूद हैं जो एक क़ौम होने के लिये ज़रूरी हैं.

इसी तरह भाशा या बोली ठोली की तरह जीवन की दूसरी शाखों में भी हिन्दू मुसलमानों ने एक दूसरे से बहुत सी चीज़ें ली हैं.

بلکہ ایران کی کھاڑی اور پوربی اور دکھنی عرب کے تمام کنارے کے شہروں میں گھوم آئیے، آپ دیکھینگے کہ اُن تمام دیسوں میں وہاں کی اپنی بھاشا کے ساتھ ساتھ بہت سے لوگ ایک دوسرے کو سمجھنے اور سمجھانے کے لئے ایک ملی جلی بھاشا بولتے ہیں. یہ وہی بھاشا ہے جو بھارت میں ہندو مسلمانوں، سکھ عیسائیوں اور بھارت کے تمام باسیوں کے صدیوں کے میل جول سے بنی اور سارے بھارت اور بھارت کے اردگرد دوسرے ملکوں میں بھی پھیل گئی. اس بھاشا کا نام ہندی اُردو بھی اور ہندستانی بھی جس کو جو نام ادھک سندر لگے وہ اُسی نام سے پکارے. اس میں جھگڑے کی کوئی بات نہیں.

فرق اور جھگڑے کی بات کیول اِسی میں ہے کہ سیدھے سادے شبد جو ادھک سمجھے اور بولے جاتے ہیں انکی جگہ کٹھن شبد بھاشا میں ٹھونسے جائیں تو اس سے جنتا کو کوئی لابھ نہیں ہوگا اور نہ بھاشا ہی سندر ہوگی، چاہے ادھک عربی فارسی کے شبد ٹھونسے جائیں یا پرکرت اور سنسکرت کے. اسی طرح عربی یا سنسکرت کے جتنے بھی سندر شبد ہندی یا اُردو میں عام طور پر سمجھے اور بولے جاتے ہیں ان شبدوں کو اردو یا ہندی بھاشا سے نکال دینے کی کوشش کرنا سخت بھول ہے. کسی بھی دیس کے لوگ ایسا نہیں کرتے. ایسا کرنا خود اپنی پیاری بھاشا کے ساتھ انیائے کرنا اور اُسے بگاڑنا ہوگا.

یہاں کیول اِتنا بتانا ہے کہ بھاشا کے کارن بھارت باسیوں میں کوئی ایسا بنیادی فرق نہیں ہے جو بھارت باسیوں کو ایک قوم کی جگہ دو قوم کی طرف لے جائے. بلکہ بھارت کی تمام بھاشاؤں میں میل جول کی وہ تمام باتیں موجود ہیں جو ایک قوم ہونے کے لئے ضروری ہیں.

اسی طرح بھاشا یا بولی ٹھولی کی طرح جیون کی دوسری شاخوں میں بھی ہندو مسلمانوں نے ایک دوسرے سے بہت سی چیزیں لی ہیں.

इसी तरह ज़बान का मसला है. भारत की बड़ी भाशाओं में हिन्दुस्तानी, बंगला, गुजराती, मराठी, तामिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम पंजाबी को अधिक लोग जानते समझते, पढ़ते लिखते और बोलते हैं. जहाँ जहाँ भी यह बोलिया बोली जाती हैं हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई और पारसी सब बोलते हैं. इन बोलियों में कोई भी झगड़ा नहीं है. भारत के जिस हिस्से में गुजराती पढ़ी लिखी और बोली जाती है उस हिस्से के हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी सब ही उसी भाशा में पढ़ते लिखते और बोलते हैं और जिस जिस हिस्से में तामिल, तेलगू, कन्नड़ वग़ैरा लिखी पढ़ी और बोली जाती हैं उस उस हिस्से के हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सब ही उसमें पढ़ते लिखते और बोलते हैं.

झगड़ा या फ़रक़ जो कुछ भी है वह हिन्दी, उरदू और हिन्दुस्तानी का है जो सारे भारत बासियों को एक मिली जुली भाशा के रिशते में जोड़ने और एक दूसरे को समझने और समझाने के लिये है.

इस सिलसिले में देखने की बात यह है कि जो भाशा भारत के अधिकतर हिस्सों में ज़्यादा से ज़्यादा समझी और बोली जाती है वह तो वही भाशा है जो हिन्दू मुसलमानों के मेल जोल की उपज है. आप इस भाशा को चाहे हिन्दी कहें, चाहे उरदू चाहे हिन्दुस्तानी. समझने की केवल इतनी बात है कि जो भाशा हिन्दू मुसलमान, सिक्ख ईसाई, अमीर ग़रीब, राजा प्रजा, मज़दूर किसान सब के सदियों के मेल जोल से बनी है वही भाशा भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक ज़्यादा से ज़्यादा बोली और समझी जाती है. उस भाशा में न तो अरबी फ़ारसी के मुशकिल लफ़ज़ हैं न प्राकृत और संस्कृत के कठिन बोल. आप उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, पंजाब, बम्बई, कलकत्ता, मदरास, सीलौन और बरमा तक हो आइये

اِسیطرح زبان کا مسئلہ ھے . بھارت کی بڑی بھاشاؤں میں ھندستانی، بنگلہ، گجراتی، مراٹھی، تامل، تلگو، کنڑ، ملیالم پنجابی کو ادھک لوگ جانتے سمجھتے، پڑھتے لکھتے اور بولتے ھیں . جہاں جہاں بھی یہ بولیاں بولی جاتی ھیں ھندو، مسلمان، سکھ، عیسائی اور پارسی سب بولتے ھیں . ان بولیوں میں کوئی بھی جھگڑا نہیں ھے . بھارت کے جس حصے میں گجراتی پڑھی لکھی اور بولی جاتی ھے اس حصے کے ھندو، مسلمان، عیسائی، پارسی سب ھی اُسی بھاشا میں پڑھتے لکھتے اور بولتے ھیں اور جس جس حصے میں تامل، تلگو، کنڑ وغیرہ لکھی پڑھی اور بولی جاتی ھیں اُس اُس حصے کے ھندو، مسلمان، سکھ، عیسائی سب ھی اس میں پڑھتے لکھتے اور بولتے ھیں .

جھگڑا یا فرق جو کچھ بھی ھے وہ ھندی، اُردو اور ھندستانی کا ھے جو سارے بھارت باسیوں کو ایک ملی جلی بھاشا کے رشتے میں جوڑنے اور ایک دوسرے کو سمجھنے اور سمجھانے کے لئے ھے .

اس سلسلے میں دیکھنے کی بات یہ ھے کہ جو بھاشا بھارت کے ادھک تر حصوں میں زیادہ سے زیادہ سمجھی اور بولی جاتی ھے وہ تو وھی بھاشا ھے جو ھندو مسلمانوں کے میل جول کی اُپج ھے . آپ اِس بھاشا کو چاھے ھندی کہیں، چاھے اُردو، چاھے ھندستانی. سمجھنے کی کیول اتنی بات ھے کہ جو بھاشا ھندو مسلمان، سکھ عیسائی، امیر غریب، راجہ پرجا، مزدور کسان سب کے صدیوں کے میل جول سے بنی ھے وھی بھاشا بھارت کے ایک سرے سے دوسرے سرے تک زیادہ سے زیادہ بولی اور سمجھی جاتی ھے . اُس بھاشا میں نہ تو عربی فارسی کے مشکل لفظ ھیں نہ پراکرت اور سنسکرت کے کٹھن بول . آپ اُتر پردیش، مدھیہ پردیش، بہار، پنجاب، بمبئی، کلکتہ، مدراس، سیلون اور برما تک ہو آئیے

अरब के समन्दर से भी अरब की आँधियाँ साल में कितनी बार अपने कधों पर गंगा जल लाती हैं, इसको कौन रोक सकता है.

भारत के अछूत मुसलमान छूत छात की दलदल से तो निकल चुके पर अब भी ऊँची जात के मुसलमान और नीची जात के मुसलमानों के बीच चौड़ी खाई मौजूद है. ऊँची जात का मुसलमान अब भी न अपनी लड़की किसी नीची जात के मुसलमान को देता है और न किसी नीची जात के मुसलमान की लड़की लेता है. यही हाल शेख़, सैयद, मुग़ल और पठानों का है और अछूत मुसलमानों का भी. यानी यह लोग भी अधिकतर शादी ब्याह अपनी अपनी ही जात बिरादरी में करते हैं और न्योता वग़ैरा भी अपनी ही बिरादरी वालों को देते हैं. यह अलग बात है कि कुछ मुसलमान दूसरी जात बिरादरी से भी शादी ब्याह का नाता जोड़ लेते हैं. ऐसे ही अब हिन्दुओं में भी बहुत लोग मिलेंगे जो जात बिरादरी के बन्धनों को तोड़ कर दूसरी जात बिरादरी मे रिशता नाता जोड़ने को बुरा नहीं समझते.

इन सब कारनों से भारत के मुसलमानों को हम एक अलग क़ौम नहीं कह सकते, न भारत के हिन्दुओं को ऐसा कह सकते हैं, न सिक्खों को, न ईसाइयों, पारसियों या बौद्धों को. बल्कि भारती होने की वजह से हम सब को एक क़ौम यानी एक नेशन कहते हैं और ठीक कहते हैं. इसी कारन काँग्रेस भारत के सब बासियों को दो नहीं एक क़ौम मानती है और उसका ऐसा मानना जानना बिलकुल ठीक है. यह माना कि भारत में इस समय बहुत से हिन्दू और मुसलमान ऐसे हैं जो हिन्दुओं को केवल हिन्दू और मुसलमानों को केवल मुसलमान होने की वजह से एक क़ौम नहीं दो क़ौमें समझना चाहते हैं. और उनकी यही चाह फ़िरक़ावाराना फ़साद की जड़ है. यह छूत छात की ही एक दूसरी शकल है.

عرب کے سمندر سے بھی عرب کی آندھیاں سال میں کتنی بار اپنے کندھوں پر گنگا جل لاتی ھیں' اس کو کون روک سکتا ھے ۔

بھارت کے اچھوت مسلمان چھوت چھات کی دلدل سے تو نکل چکے پر اب بھی اونچی جات کے مسلمان اور نیچی جات کے مسلمانوں کے بیچ چوڑی کھائی موجود ھے ۔ اونچی جات کا مسلمان اب بھی نہ اپنی لڑکی کسی نیچی جات کے مسلمان کو دیتا ھے اور نہ کسی نیچی جات کے مسلمان کی لڑکی لیتا ھے ۔ یہی حال شیخ' سید' مغل اور پٹھانوں کا ھے اور اچھوت مسلمانوں کا بھی ۔ یعنی یہ لوگ بھی ادھک تر شادی بیاہ اپنی اپنی ھی جات برادری میں کرتے ھیں اور نیوتا وغیرہ بھی اپنی ھی برادری والوں کو دیتے ھیں ۔ یہ الگ بات ھے کہ کچھ مسلمان دوسری جات برادری سے بھی شادی بیاہ کا ناتا جوڑ لیتے ھیں ۔ ایسے ھی اب ھندوؤں میں بھی بہت لوگ ملینگے جو جات برادری کے بندھنوں کو توڑ کر دوسری جات برادری سے رشتہ ناتا جوڑنے کو برا نہیں سمجھتے ۔

ان سب کارنوں سے بھارت کے مسلمانوں کو ھم ایک الگ قوم نہیں کہہ سکتے' نہ بھارت کے ھندوؤں کو ایسا کہہ سکتے ھیں' نہ سکھوں کو' نہ عیسائیوں' پارسیوں یا بودھوں کو. بلکہ بھارتی ھونے کی وجہ سے ھم سب کو ایک قوم یعنی ایک نیشن کہتے ھیں اور ٹھیک کہتے ھیں ۔ اسی کارن کانگریس بھارت کے سب باسیوں کو دو نہیں ایک قوم مانتی ھے اور اس کا ایسا ماننا جاننا بالکل ٹھیک ھے ۔ یہ مانا کہ بھارت میں اس سمے بہت سے ھندو اور مسلمان ایسے ھیں جو ھندوؤں کو کیول ھندو اور مسلمانوں کو کیول مسلمان ھونے کی وجہ سے ایک قوم نہیں دو قومیں سمجھنا چاھتے ھیں' اور انکی یہی چاہ فرقہ وارانہ فساد کی جڑ ھے ۔ یہ چھوت چھات کی ھی ایک دوسری شکل ھے ۔

वह मुसलमान भी जो इन ही पुराने लोगों में से मुसलमान हुए असल भारती हैं और ऐसे मुसलमानों की गिनती बहुत है. इनके बाद ब्राह्मन, राजपूत, छत्री और वैश्य मुसलमान हैं. उनकी गिनती भी कम नहीं. उनके बाद शेख़, सैयद, मुग़ल और पठान हैं. उनकी गिनती ऊपर के दोनों तरह के मुसलमानों से बहुत कम है, फिर उनमें भी असल शेख़, सैयद, मुग़ल और पठानों की गिनती और भी कम.

इस तरह आप देखेंगे कि बाहर से आए मुसलमान तो बहुत थोड़े हैं और बाहर से आए हिन्दू बहुत ज़्यादा. यह अलग बात है कि ज़ात पात वाला हिन्दू भारत में बहुत पहले आया और शेख़, सैयद, मुग़ल और पठान बहुत बाद में. पर ज़ात पात वाला मुसलमान यानी ब्राह्मन, राजपूत, छत्री और वैश्य मुसलमान तो ज़ात पात वाले हिन्दुओं की ही औलाद हैं और उनकी गिनती ज़्यादा है. फिर नीची जातों के मुसलमान तो असल भारतवासी हैं और उनकी गिनती दूसरे मुसलमानों से बहुत अधिक है. इस तरह के मुसलमान ज़्यादातर ऊँची ज़ात के हिन्दुओं से तंग आकर अपनी अनगिनत कठिनाइयों और मुसीबतों से लाचार होकर मुसलमान हुए. उन ग़रीबों को जब वेदों, उपनिशदों और शास्त्रों का अमृत रस नहीं मिला तो उन्होंने इसलाम के आबे-हयात (अमृत रस) से अपनी प्यास बुझाई. आख़िर जल थल सारे संसार का एक ही ईश्वर के स्रोत से तो निकला है. किसी ने गंगा से अपनी प्यास बुझाई तो किसी ने ज़मज़म के पानी से या दजला फ़रात से. यहाँ ज़रा ध्यान में रखने की यह बात भी है कि जब गंगा के किनारे, उसके आगे पीछे और चारों तरफ़ छूत छात की भयानक दीवार खड़ी कर दी जाय तो एक बेकल हरिजन क्या करे. धर्म तो रूहानी ज़रखे़ज़ी (आत्मिक उपजाऊपन) के लिये सदा बरसने वाली बरखा है कोई प्यासा कैसे मुँह फेर सकता है. भारत में बादल कहाँ कहाँ से नहीं आते हैं ?

وہ مسلمان بھی جو ان ھی پرانے لوگوں میں سے مسلمان ھوئے اصل بھارتی ھیں اور ایسے مسلمانوں کی گنتی بہت ھے . ان کے بعد برھمن، راج پوت، چھتری اور ویش مسلمان ھیں، ان کی گنتی بھی کم نہیں . ان کے بعد شیخ، سید، مغل اور پٹھان ھیں . ان کی گنتی اوپر کے دونوں طرح کے مسلمانوں سے بہت کم ھے، پھر ان میں بھی اصل شیخ، سید، مغل اور پٹھانوں کی گنتی اور بھی کم .

اس طرح آپ دیکھینگے کہ باھر سے آئے مسلمان تو بہت تھوڑے ھیں اور باھر سے آئے ھندو بہت زیادہ . یہ الگ بات ھے کہ جات پات والا ھندو بھارت میں بہت پہلے آیا اور شیخ، سید، مغل اور پٹھان بہت بعد میں . پر جات پات والا مسلمان یعنی برھمن، راجپوت، چھتری اور ویش مسلمان تو جات والے ھندوؤں کی ھی اولاد ھے اور انکی گنتی زیادہ ھے . پھر نیچی جاتوں کے مسلمان تو اصل بھارت باسی ھیں اور انکی گنتی دوسرے مسلمانوں سے بہت ادھک ھے . اسطرح کے مسلمان زیادہ تر اونچی جات کے ھندوؤں سے تنگ آکر اپنی ان گنت کٹھنائیوں اور مصیبتوں سے لاچار ھوکر مسلمان ھوئے . ان غریبوں کو جب ویدوں، اپنشدوں اور شاستروں کا امرت رس نہیں ملا تو انہوں نے اسلام کے آب حیات (امرت رس) سے اپنی پیاس بجھائی . آخر جل تھل سارے سنسار کا ایک ھی ایشور کے سوت سے تو نکلا ھے . کسی نے گنگا سے اپنی پیاس بجھائی تو کسی نے زمزم کے پانی سے یا دجلہ فرات سے . یہاں ذرا دھیان میں رکھنے کی یہ بات بھی ھے کہ جب گنگا کے کنارے اسکے آگے پیچھے اور چاروں طرف چھوت چھات کی بھیانک دیوار کھڑی کر دی جائے تو ایک بے کل ھریجن کیا کرے . دھرم تو روحانی زرخیزی (آتمک اپ جاؤ پن) کے لئے سدا برسنے والی برکھا ھے . کوئی پیاسا کیسے منہ پھیر سکتا ھے . بھارت میں بادل کہاں کہاں سے نہیں آتے ھیں؟

कारन अपने रंग रूप. चाल ढाल, शकल सूरत, बनाव सिंगार, बोल चाल और किरदार यानी चरित्र में इतना बदला कि उसका असल से पहिचानना भी कठिन होगया, इतना कठिन होगया कि वह लोग जो बीच एशिया के पुराने इतिहास का कुछ भी ज्ञान रखते हैं और इसलाम के पुराने इतिहास को कुछ पढ़ चुके हैं वह अच्छी तरह समझ सकते हैं कि आजकल का इसलाम वह नहीं है जो किसी ज़माने में अरब में था भारत के मुसलमानों का अधिकतर लिट्रेचर भारत ही की पैदावार है. यह ठीक है कि इसलामी लिट्रेचर में जगह जगह बीच एशिया के पुराने लिट्रेचर की झलक पाई जाती है. पर ज़रा गहराई से देखा जाय तो उसका पूरा ढाँचा भारत ही का दिखाई देगा. भारत के एक कट्टर मौलवी की बूबास अरब के एक शैख़ से कहीं ज़्यादा एक कट्टर पंडित से मिलती जुलती है. इसी तरह एक मुसलमान मज़दूर और किसान की बूबास, स्वभाव और ज़ेहनियत एक बद्दू अरब या एक ईरानी मज़दूर किसान से कहीं ज़्यादा एक हिन्दू जाट हिन्दू, मज़दूर और किसान से मिलती जुलती है. इस मेल जोल का एक नहीं हज़ारों मिसालें एक मौलवी एक पँडित, एक हिन्दू मज़दूर किसान और एक मुसलमान मज़दूर किसान की बाहरी और भीतरी बूबास, आदतों, तौर तरीक़ों, रहन सहन और भावों और विचारों में पाई जाती हैं जो किसी भी जानने वाले से छिपी नहीं हैं.

इसी उजाले में भारत के पुराने इतिहास को ज़रा गहराई से देखिये. भारत का असल रहने वाला न तो पंडित है न मौलवी. ख़ास कर वह मौलवी जो अपने को शेख़, सैयद, मुग़ल या पठान बताता है, अगर वह सचमुच शेख़, सैयद, मुग़ल या पठान है. इसी तरह ब्राह्मन, राजपूत, छत्री और वैश्य वग़ैरा भी सब के सब बाहर से ही आने वालों में से हैं. इसलिये कि असल भारत बासी तो कुछ पुराने बाशिन्दे जैसे गोंड, भील, संथाल वग़ैरा और कुछ हरिजन हैं. हाँ,

کارن اپنے رنگ روپ' چال ڈھال' شکل صورت' بناؤ سنگار' بول چال اور کردار یعنی چرتر میں اتنا بدلا کہ اس کا اصل سے پہچاننا بھی کٹھن ہو گیا' اتنا کٹھن ہو گیا کہ وہ لوگ جو بیچ ایشیا کے پرانے اتہاس کا کچھ بھی گیان رکھتے ہیں اور اسلام کے پرانے اتہاس کو کچھ پڑھ چکے ہیں وہ اچھی طرح سمجھ سکتے ہیں کہ آجکل کا اسلام وہ نہیں ہے جو کسی زمانہ میں عرب میں تھا . بھارت کے مسلمانوں کا ادھک تر لٹریچر بھارت ہی کی پیداوار ہے . یہ ٹھیک ہے کہ اسلامی لٹریچر میں جگہ جگہ بیچ ایشیا کے پرانے لٹریچر کی جھلک پائی جاتی ہے . پر ذرا گہرائی سے دیکھا جائے تو اس کا پورا ڈھانچہ بھارت ہی کا دکھائی دیگا . بھارت کے ایک کٹر مولوی کی بوباس عرب کے ایک شیخ سے کہیں زیادہ ایک کٹر پنڈت سے ملتی جلتی ہے . اسی طرح ایک مسلمان مزدور اور کسان کی بوباس' سوبھاؤ اور ذہنیت ایک بدو عرب یا ایک ایرانی مزدور کسان سے کہیں زیادہ ایک ہندو' جاٹ ہندو مزدور اور ہندو کسان سے ملتی جلتی ہے . اس میل جول کی ایک نہیں ہزاروں مثالیں ایک مولوی ایک پنڈت' ایک ہندو مزدور کسان اور ایک مسلمان مزدور کسان کی باہری اور بھیتری بوباس' عادتوں' طور طریقوں' رہن سہن اور بھاوؤں اور بچاروں میں پائی جاتی ہیں جو کسی بھی جاننے والے سے چھپی نہیں ہیں .

اسی اُجالے میں بھارت کے پرانے اتہاس کو ذرا گہرائی سے دیکھئے . بھارت کا اصل رہنے والا نہ تو پنڈت ہے نہ مولوی . خاص کر وہ مولوی جو اپنے کو شیخ' سید' مغل یا پٹھان بتاتا ہے' اگر وہ سچ مچ شیخ' سید' مغل یا پٹھان ہے . اسی طرح برہمن' راج پوت' چھتری اور ویش وغیرہ بھی سب کے سب باہر سے ہی آنے والوں میں سے ہیں . اس لئے کہ اصل بھارت باسی تو کچھ پرانے باشندے جیسے گونڈ' بھیل' سنتھال وغیرہ اور کچھ ہریجن ہیں . ہاں'

इस कारन हम बुनियादी तौर पर यह हुकुम नहीं लगा सकते कि भारत में हिन्दुओं की संस्कृति यह है, मुसलमानों की यह, ईसाइयों, सिक्खों या पारसियों की यह. न हम ऐसी कोई ठीक ठीक तारीफ़ कर सकते हैं और न हम उनकी विशेशनाओं (ख़सूसियतों) में से किसी भी विशेशना को कोई ख़ास रंग दे सकते हैं. क्योंकि कोई भी रंग हम देना चाहें तो वह बिलकुल अलग नहीं होगा बल्कि सब में थोड़ा बहुत मिला जुला दिखाई देगा.

इसी उजाले में अगर हम एक निगाह भारत के पुराने इतिहास पर डालें तो वह सब गुत्थियाँ आसानी से सुलझ जाती हैं जो भारत के मुसलमानों को समझने में एक मुद्दत से पड़ी हुई हैं.

भारत के पुराने इतिहास के देखने से इस का सबूत मिलता है कि भारत के असली रहने वाले न तो हिन्दू थे न मुसलमान. हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों बाहर से आए और बाहर से आने वाले ही इन दोनों धर्मों को अपने साथ लाए. फ़र्क़ इतना ही है कि हिन्दू धर्म हज़ारों बरस पहले भारत में आया और इसलाम हज़ारों बरस बाद.

इसमें शक नहीं कि हिन्दू धर्म भारत में आकर गंगा जमना की तरह सदियों ज़माने की गर्दिशों से टकराता, बल खाता, करवटें बदलता. करोड़ों इनसानों के जीवन को सींचता. दिलों में प्रेम व मुहब्बत का रस भरता हुआ अब तक जीता और जागता है. यही नहीं बल्कि उसका अनमोल लिट्रेचर भी भारत की धरती से उगा, फूला फला और पूरे संसार के ज्ञानियों को अपनी तरफ़ खींचता रहा.

ठीक इसी तरह इसलाम भी भारत में पहुँचकर बहुत सी शकल और सूरतों से निकलता हुआ यहाँ के हवा पानी, मौसमी अदल बदल, रीत रिवाज, एहसास और जज़बात (भावों और भावनाओं) और रंग बिरंगी ख़सूसियतों से माला माल हो कर हज़ारों भारत [illegible]

اس کارن ہم بنیادی طور پر یہ حکم نہیں لگا سکتے کہ بھارت میں ھندؤوں کی سنسکرتی یہ ہے، مسلمانوں کی یہ، عیسائیوں، سکھوں یا پارسیوں کی یہ۔ نہ ہم ایسی کوئی ٹھیک ٹھیک تعریف کر سکتے ھیں اور نہ ہم ان کی وشیشتاؤں (خصوصیتوں) میں سے کسی بھی وشیشتا کو کوئی خاص رنگ دے سکتے ھیں کیونکہ کوئی بھی رنگ ہم دینا چاھیں تو وہ بالکل الگ نہیں ھوگا بلکہ سب میں تھوڑا بہت ملا جلا دکھائی دیگا۔

اسی اُجالے میں اگر ہم ایک نظر بھارت کے پرانے اتہاس پر ڈالیں تو وہ سب گتھیاں آسانی سے سلجھ جاتی ھیں جو بھارت کے مسلمانوں کو سمجھنے میں ایک مدت سے پڑی ھوئی ھیں۔

بھارت کے پرانے اتہاس کے دیکھنے سے اس کا ثبوت ملتا ھے کہ بھارت کے اصلی رھنے والے نہ تو ھندو تھے نہ مسلمان۔ ھندو دھرم اور اسلام دونوں باھر سے آئے اور باھر سے آنے والے ھی ان دونوں دھرموں کو اپنے ساتھ لائے۔ فرق اتنا ھی ہے کہ ھندو دھرم ھزاروں برس پہلے بھارت میں آیا اور اسلام ھزاروں برس بعد۔

اس میں شک نہیں کہ ھندو دھرم بھارت میں آکر گنگا جمنا کی طرح صدیوں زمانہ کی گردشوں سے ٹکراتا، بل کھاتا کروٹیں بدلتا، کروڑوں انسانوں کے جیون کو سینچتا، دلوں میں پریم و محبت کا رس بھرتا ھوا ابتک جیتا اور جاگتا ھے یہی نہیں بلکہ اس کا انمول لٹریچر بھی بھارت کی دھرتی سے اُگا، پھولا پھلا اور پورے سنسار کے گیانیوں کو اپنی طرف کھینچتا رہا۔

ٹھیک اسی طرح اسلام بھی بھارت میں پہونچکر بہت سی شکلوں اور صورتوں سے نکلتا ھوا یہاں کے ھو پانی، موسمی ادل بدل، ریت رواج، احساس اور جذبات (بھاوؤں اور بھاوناؤں) اور رنگ رنگی خصوصیتوں سے مالا مال ھوکر ھزاروں بھارت باسیوں

मिसाल के तौर पर हम किसी देस को ठंडा कहते हैं, किसी को बहुत ज़्यादा ठंडा, किसी को गरम, किसी को बहुत ज़्यादा गरम और किसी को मातदिल यानी न ज़्यादा गरम न ज़्यादा ठंडा, ख़ुशगवार या निहायत ख़ुशगवार. पर हम भारत के हवा पानी के बारे में यह नहीं कह सकते. यानी न तो हम भारत को बिलकुल ठंडा ही कह सकते हैं न बिलकुल गरम. न पूरे भारत को हम मातदिल ही कह सकते हैं क्योंकि संसार के एक एक कोने में हवा पानी और मौसमों के जितने भी नमूने हैं वह सब के सब भारत में जमा हैं यानी भारत का एक हिस्सा अगर गरम है तो दूसरा ठंडा. एक बहुत ज़्यादा गरम तो दूसरा बहुत ज़्यादा ठंडा, एक बहुत गीला और नम तो दूसरा बहुत ज़्यादा सूखा और सख़्त, एक बिलकुल पानी पानी तो दूसरा पत्थर ही पत्थर और तीसरा रेगिस्तान ही रेगिस्तान, बालू और लंबा चट मैदान.

एक और मिसाल लीजिए. संसार के किसी टुकड़े के बसने वालों को हम काला कहते हैं किसी को गोरा चिट्टा सफ़ेद, किसी को लाल. किसी को पीला किसी को मिला जुला. किसी को गन्दुमी किसी को साँवला. पर भारत के सब बासियों को न तो काला कह सकते हैं न गोरा न लाल पीला न गन्दुमी न साँवला. क्योंकि भारत के बासियों में हर रंग रूप के लोग मौजूद हैं. काले से काले भी, गोरे से गोरे भी, मिले जुले गन्दुमी और साँवले भी, यानी धरती पर जगह जगह जितने भी रंग रूप के लोग पाए जाते हैं वह सब के सब कम या ज़्यादा भारत में मौजूद हैं.

यही हाल दूसरी चीज़ों का है जिन में क़ौमी रवायतें, मज़हबी झुकाव, कलचरी और मानसिक हालतें सब शामिल हैं और सब की सब भारत बासियों में मिली जुली पाई जाती हैं. हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी सब में. पच्छिमी, पूरबी, उत्तरी, दक्खिनी सब में.

مثال کے طور پر ہم کسی دیس کو ٹھنڈا کہتے ہیں، کسی کو بہت زیادہ ٹھنڈا، کسی کو گرم، کسی کو بہت زیادہ گرم اور کسی کو معتدل یعنی نہ زیادہ گرم نہ زیادہ ٹھنڈا، خوش گوار یا نہایت خوش گوار۔ پر ہم بھارت کے ہوا پانی کے بارے میں یہ نہیں کہہ سکتے۔ یعنی نہ تو ہم بھارت کو بالکل ٹھنڈا ہی کہہ سکتے ہیں نہ بالکل گرم۔ نہ پورے بھارت کو ہم معتدل ہی کہہ سکتے ہیں کیونکہ سنسار کے ایک ایک کونے میں ہوا، پانی اور موسموں کے جتنے بھی نمونے ہیں وہ سب کے سب بھارت میں جمع ہیں۔ یعنی بھارت کا ایک حصہ اگر گرم ہے تو دوسرا ٹھنڈا، ایک بہت زیادہ گرم تو دوسرا بہت زیادہ ٹھنڈا، ایک بہت گیلا اور نرم تو دوسرا بہت زیادہ سوکھا اور سخت، ایک بالکل پانی پانی تو دوسرا پتھر ہی پتھر اور تیسرا ریگستان ہی ریگستان، بالو اور صفاچٹ میدان۔

ایک اور مثال لیجئے۔ سنسار کے کسی ٹکڑے کے بسنے والوں کو ہم کالا کہتے ہیں کسی کو گورا چٹا سفید، کسی کو لال کسی کو پیلا، کسی کو ملا جلا، کسی کو گندمی کسی کو سانولا۔ پر بھارت کے سب باسیوں کو نہ تو ہم کالا کہہ سکتے ہیں نہ گورا نہ لال پیلا نہ گندمی نہ سانولا، کیونکہ بھارت کے باسیوں میں ہر رنگ روپ کے لوگ موجود ہیں۔ کالے سے کالے بھی، گورے سے گورے بھی، ملے جلے گندمی اور سانولے بھی، یعنی دھرتی پر جگہ جگہ جتنے بھی رنگ روپ کے لوگ پائے جاتے ہیں وہ سب کے سب کم یا زیادہ بھارت میں موجود ہیں۔

یہی حال دوسری چیزوں کا ہے جن میں قومی روایتیں، مذہبی جھکاؤ، کلچری اور مانسک حالتیں سب شامل ہیں اور سب کی سب بھارت باسیوں میں ملی جلی پائی جاتی ہیں۔ ہندو، مسلمان، سکھ، عیسائی، پارسی سب میں، پچھمی، پوربی، اُتری، دکھنی سب میں۔

भारत के मुसलमान

(मौलाना अब्दुल्लाह मिस्री)

[यह लेख अरबी ज़बान में पच्छिमी एशिया के अख़बारों में निकला है। भाई अब्दुल्लाह मिस्री ने ख़ुद इसे अरबी से हिन्दुस्तानी करके 'नया हिन्द' के लिये भेजा है. इसके लिये हम उनके मशकूर हैं. इस सिलसिले के और लेख भी आगे 'नया हिन्द' में छपने की आशा है. —एडीटर]

भारत के मुसलमानों की राजकाजी, समाजी, आर्थिक, मज़हबी, कलचरी और नफ़्सियाती यानी मानसिक हालत को समझने के लिये भारत की पुरानी रवायतों (परम्पराएं), पुरानी तहज़ीब, पुराने इतिहास, लिट्रेचर और विदेसी लोगों से मेलजोल का भी एक हलका सा नक़्शा ज़ेहन में रखना ज़रूरी है.

भारत अपनी रंग बिरंगी सीनरी, हृदय को मोह लेने वाले नज़्ज़ारे, चंचल हवाएं, निर्मल जल थल, भांत भांत के आदमी, सुन्दर नर नारियों और उनके रंग बिरंगे रूप, तरह तरह की पैदावार, अनोखे त्योहार, मेले ठेले और व्योहार के एतबार से पूरे संसार का निचोड़, ख़ुलासा और जौहर है. इसी लिये भारत की किसी भी ख़सूसियत (विशेशता) को "चाहे वह पैदावार और मौसम से लगाव रखती हो, चाहे जल थल और हवाओं से, चाहे रंग रूप, कुल कुटुम्ब और क़ौमियत से, चाहे भाशाओं, विचारों, धर्मों और कलचरों से, चाहे सोच विचार के तरीक़ों से" एक असूल, एक क़ायदे या एक बंधन से नहीं बाँधा जा सकता चाहे वह असूल वह क़ायदा और बंधन किसी भी देस और क़ौम के

بھارت کے مسلمان

(مولانا عبداللہ مصری)

[یہ لیکھ عربی زبان میں پچھمی ایشیا کے اخباروں میں نکلا ہے ۔ بھائی عبداللہ مصری نے خود اسے عربی سے ھندستانی کرکے 'نیا ھند' کے لئے بھیجا ہے ۔ اسکے لئے ہم انکے مشکور ھیں ۔ اس سلسلے کے اور لیکھ بھی آگے 'نیا ھند' میں چھپنے کی آشا ہے ۔ —ایڈیٹر]

بھارت کے مسلمانوں کی راج کاجی، سماجی، آرتھک، مذھبی، کلچری اور نفسیاتی یعنی مانسک حالت کو سمجھنے کے لئے بھارت کی پرانی روائتوں (پرمپراؤں)، پرانی تہذیب، پرانے اتیہاس، لٹریچر اور بدیسی لوگوں سے میل جول کا بھی ایک ھلکا سا نقشہ ذھن میں رکھنا ضروری ہے ۔

بھارت اپنی رنگ برنگی سینری، ھردے کو موہ لینے والے نظارے، چنچل ھوائیں، نرمل جل تھل، بھانت بھانت کے آدمی، سندر نر ناریاں اور اُن کے رنگ برنگے روپ، طرح طرح کی پیداوار، انوکھے تیوہار، میلے ٹھیلے اور بیوھار کے اعتبار سے پورے سنسار کا نچوڑ، خلاصہ اور جوھر ہے ۔ اسلئے بھارت کی کسی بھی خصوصیت (وشیشتا) کو " چاھے وہ پیداوار اور موسم سے لگاؤ رکھتی ھو، چاھے جل تھل اور ھواؤں سے، چاھے رنگ روپ کل کٹمب اور قومیت سے، چاھے بھاشاؤں، وچاروں، دھرموں اور کلچروں سے، چاھے سوچ بچار کے طریقوں سے " ایک اصول، ایک قاعدے یا ایک بندھن سے نہیں باندھا جا سکتا چاھے وہ اصول، وہ قاعدہ اور بندھن کسی بھی

“नहीं बाबा जी यह नहीं. चाची मूँग की पिट्ठी फेंटने की देर को न देर मानती हैं और न दिक़्क़त समझती हैं. वह काम उनके हाथ चढ़ गया है और यह काम अम्माँ के.”

“यह लड़की उम्र के लिहाज़ से बहुत होशियार है.”

“होशियार तो क्या. बातूनी है.”

“यह गोल गोल, क्या साबित आलू तले हैं, अरे यह तो बेहद हलके हैं, क्या पोले हैं ?”

“हा हा, हा हा, हा!”

“देखा बाबा जी. यह मूंग के मँगोड़ों को आलू कहते हैं. अब देखी आपने चाची की करामात ?”

“यह एक दम गोल किस तरह बन गए ?”

“यही तो फेंटने की मेहनत का तमाशा है.”

“शीला, यह क्या ? बीच में खाते खाते नहीं उठना चाहिये. यह दावत के क़ायदों के ख़िलाफ़ है.”

“बाबू जी कोने में कोई चमकती चीज़ है. उसे देखती हूँ क्या है...अरे ! यह तो वही दुअन्नी है जो अम्माँ ने लल्लू को दी थी.”

शीला उस दुअन्नी को लेकर अन्दर दौड़ गई हमारे हाथ वहीं रुक गए. मेरे मित्र की नज़र अपने बेटे मानिक पर थी और मैं उन दोनों को देख रहा था और सिर्फ़ यह बता रहा था कि मैं हाज़िर हूँ. यह सीन आधे मिनट या इस से भी कम रहा. मानिक का बाँया हाथ उठा और बाएँ कान तक गया और एक आँसू टपक कर थाली में आगिरा.

—भगवानदीन

" نہیں بابا جی یہ بات نہیں ۔ چاچی مونگ کی پٹھی پھینٹنے کی دیر کو نہ دیر مانتی ہیں اور نہ دقت سمجھتی ہیں ۔ وہ کام اُنکے ہاتھ چڑھ گیا اور یہ کام اماں کے ۔"

" یہ لڑکی عمر کے لحاظ سے بہت ہوشیار ہے "

" ہوشیار تو کیا باتونی ہے ۔"

" یہ گول گول، کیا ثابت آلو تلے ہیں، ارے یہ تو بے حد ہلکے ہیں، کیا پولے ہیں ؟"

" ہاہا، ہاہا، ہا ! "

" دیکھا بابا جی، یہ مونگ کے منگوڑوں کو آلو کہتے ہیں، اب دیکھی آپ نے چاچی کی کرامات ؟"

" یہ ایک دم گول کسطرح بن گئے ؟"

" یہی تو پھینٹنے کی محنت کا تماشہ ہے "

" شیلا، یہ کیا ؟ بیچ میں کھاتے کھاتے نہیں اُٹھنا چاہئیے، یہ دعوت کے قاعدوں کے خلاف ہے ۔"

" بابو جی کونے میں کوئی چمکتی چیز ہے ۔ سے دیکھتی ہوں کیا ہے .... ارے ! یہ تو وہی دوانی ہے جو اماں نے للو کو دی تھی ۔"

شیلا اُس دوانی کو لے کر اندر دوڑ گئی ۔ ہمارے ہاتھ وہیں رک گئے میرے مترکی نظر اپنے بیٹے مانک پر تھی اور میں ان دونوں کو دیکھ رہا تھا اور صرف یہ بتا رہا تھا کہ میں حاضر ہوں یہ سین آدھے منٹ یا اس سے بھی کم رہا ۔ مانک کا بایاں ہاتھ اُٹھا اور بائیں کان تک گیا اور ایک آنسو ٹپک کر تھالی میں آگرا ۔

— بھگوان دین

शीला की आँखें डबडबाई हुई थीं, बाप की सख़्ती से वह चलीं और वह और कुछ कहे बिना फाटक की तरफ़ झम्मन को देखने चल दी.

अपने मित्र के साथ मैं भी जल्दी जल्दी वहाँ पहुँचा जहाँ झम्मन ख़ून से लथ-पथ बेहोश पड़ा था और जहाँ लोगों की भीड़ अपने अपने तरीक़े और अपने अपने ख़याल से झम्मन के लिये ट्रक वाले से लड़ झगड़ रही थी. मालिक भी तुरन्त इतने में आ मिला और हमारे पहुँचने पर बहुत जल्दी यह फ़ैसला होगया कि इसी ट्रक से झम्मन अस्पताल भेजा जाय और ज़ख़मी झम्मन फ़ौरन ही हमारी आँखों से ओझल होगया. मालिक, मेरे मित्र और मैं अब चुप थे. कोई किसी से कुछ कहने की हिम्मत न करता था. हाँ. शीला के आँसू जारी थे और वह अब सिसकियों के साथ झटके खा-खा कर गिर रहे थे.

(३)

"हमारी बड़ी बहू तो पूरियाँ कमाल की बनती है."

"भई दुर्गा शंकर, सचमुच यह मुँह में जाकर इस तरह घुल जाती है जैसे झाग."

"पिता जी, असल में यह सब आटा गूँधने की वजह से होता है."

"वह तो ठीक है. पर ऐसा और बहुएँ क्यों नहीं करतीं ?"

"वह जानती न होंगी."

"नहीं जानतीं तो सीख लें."

"बाबा जी, अम्माँ ने चाची को सिखाया था और इनको आता भी है. पर वह कहती हैं इस में देर लगती है और थोड़ी दिक़्क़त भी होती है."

"क्या यह बात है ?"

شیلا کی آنکھیں ڈبڈبائی ہوئی تھیں' باپ کی سختی سے بہہ چلیں اور وہ اور کچھ کہے بنا پھاٹک کی طرف جھمن کو دیکھنے چل دی ۔

اپنے مترکے ساتھ میں بھی جلدی جلدی وہاں پہنچا جہاں جھمن خون سے لتھ پتھ بیہوش پڑا تھا اور جہاں لوگوں کی بھیڑ اپنے اپنے طریقے اور اپنے اپنے خیال سے جھمن کے لئے ٹرک والے سے لڑ جھگڑ رہی تھی ۔ مالک بھی ترنت اس میں آملا اور ہمارے پہنچنے پر بہت جلدی یہ فیصلہ ہوگیا کہ اسی ٹرک سے جھمن ہسپتال بھیجا جائے اور زخمی جھمن فوراً ہی ہماری آنکھوں سے اوجھل ہوگیا ۔ مالک' میرے متر اور میں اب چپ تھے ۔ کوئی کسی سے کچھ کہنے کی ہمت نہ کرتا تھا ۔ ہاں' شیلا کے آنسو جاری تھے اور وہ اب سسکیوں کے ساتھ جھٹکے کھا کھا کر گر رہے تھے ۔

(۳)

" ہماری بڑی بہو تو پوریاں کمال کی بناتی ہے ۔"

" بھئی درگا شنکر' سچ مچ یہ منہ میں جاکر اس طرح گھل جاتی ہیں جیسے جھاگ ۔"

" پتا جی' اصل میں یہ سب آٹا گوندھنے کی وجہ سے ہوتا ہے ۔"

" یہ تو ٹھیک ہے ۔ پر ایسا اور بہوئیں کیوں نہیں کرتیں ؟"

" وہ جانتی نہ ہونگی ۔"

" نہیں جانتیں تو سیکھ لیں ۔"

" بابا جی' اماں نے چاچی کو سکھایا تھا اور ان کو آتا بھی ہے ۔ پر وہ کہتی ہیں اس میں دیر لگتی ہے اور تھوڑی دقت بھی ہوتی ہے ۔"

" کیا یہ بات ہے ؟"

"देखिये भाई साहब, झुकते और कुछ उठाते तो शायद इसे आपने भी देखा था ?"

मैं बोला कुछ नहीं पर मेरी इनकार भरी खामोशी सबको 'हाँ' कहती मालूम हुई और मेरी यह चुप डिप्टी कलकटर के ग़ुस्से के ज्वालामुखी को भड़काने के लिये काफ़ी से ज़्यादा साबित हुई.

मानिक ने अब किसी का लिहाज़ किये बग़ैर झम्मन का हाथ पकड़ा और घसीटता हुआ अन्दर ले गया. मेरे मित्र और मैंने बेतों के पड़ने की आवाज़, झम्मन की तरह तरह की प्रार्थनाएँ और मानिक की मार का फटकारें और गालियाँ सुनीं.

× × ×

"पिता जी, यह लीजिये दुअन्नी. साले ने अपने बक्स में छिपा कर रख छोड़ी थी. था पक्का चोर, ग्यारह बेत सह गया तब क़बूला और चट दुअन्नी निकाल कर लाई."

इसको इतना वक्त कैसे मिल गया. इसने तो बिजली को भी मात कर दिया फ़ौरन ही तो दुअन्नी की पूछ ताछ शुरू हो गई थी—मैं सोचने लगा

वह दुअन्नी घिसी, नई क़िस्म की चौकोर थी इस तरफ़ किसी का ध्यान नहीं गया. मैं क्या कहता. मन मसोस कर रह गया.

(२)

"बाबू जी ! झम्मन तो ट्रक से पिच गया" शीला ने आकर ख़बर दी.

"कहाँ ?"

"अपने फाटक के सामने."

"सड़क पर ?"

"हाँ."

साले को भगवान ने भी सज़ा दी. नमक हराम, जिस हाँडी में खाए इसी में छेद करे. जिस शाख़ पर बैठे उसी को काटे. मरेगा नहीं तो क्या होगा ?"

'' دیکھئے بھائی صاحب' جھکتے اور کچھ اُٹھاتے تو شاید اِسے آپ نے بھی دیکھا تھا ؟''

میں بولا کچھ نہیں پر میری انکار بھری خاموشی سبکو ' ھاں ' کہتی معلوم ہوئی اور میری یہ چپ ڈپٹی کلکٹر کے غصے کے جوالا مکھی کو بھڑکانے کے لئے کافی سے زیادہ ثابت ہوئی .

مانک نے اب کسی کا لحاظ کئے بغیر جھمن کا ھاتھ پکڑا اور گھسیٹتا ہوا اندر لے گیا . میرے متر اور میں نے بیتوں کے پڑنے کی آواز جھمن کی طرح طرح کی پرارتھنائیں اور مانک کی مار کی پھٹکاریں اور گالیاں سنیں .

× × ×

'' پتا جی ' یہ لیجئے دوآنی ' سالے نے اپنے بکس میں چھپا کر رکھ چھوڑی تھی . تھا پکا چور' گیارہ بیت سہہ گیا تب قبولا اور چٹ دوآنی نکال کر لائی .''

اِس کو اتنا وقت کیسے مل گیا اِس نے تو بجلی کو بھی مات کر دیا . فوراً ہی تو دوآنی کی پوچھ تاچھ شروع ہوگئی تھی — میں سوچنے لگا .

وہ دوآنی گھسی ' نئی قسم کی چوکور تھی اس طرف کسی کا دھیان نہیں گیا . میں کیا کہتا . من مسوس کر رہ گیا .

(۲)

'' بابو جی ' جھمن تو ٹرک سے پچ گیا '' شیلا نے آکر خبر دی .

'' کہاں ؟ ''

'' اپنے پھاٹک کے سامنے .''

'' سڑک پر ؟''

'' ھاں .''

'' سالے کو بھگوان نے بھی سزا دی ' نمک حرام ' جس ھنڈیا میں کھائے اُسی میں چھید کرے . جس شاخ پر بیٹھے اُسی کو کاٹے . مریگا نہیں تو کیا ہوگا ؟''

"हाथ से गिराय सकत हैं. पर हजूर हम ने गिरन की आवाज नाहीं सुनी."

"अच्छा, जब तुम लल्लू को अन्दर ले गए तब दुअन्नी उसके हाथ में थी ?"

"लेजात बखत हम ध्यान नाहीं दिये रहे हजूर."

"अब शुरू हुई चालाकी." बीच में मानिक बोल उठा."

"जब दुअन्नी तुम्हारे सामने ही गिरी थी तब तुमको लल्लू को अन्दर लेजाते वक़्त उसपर निगाह रखनी थी."

"एही तो हजूर हम से भूल होय गई. तबै तो हम दौड़ दौड़ देखन आए रहे पर ऊ मिली नाहीं. एही भूल हमरी होय गई तबै तो भइया डाँटत हैं."

"डाँटत क्या. अभी तो हम तुम्हारी खाल उधेड़ेंगे और तभी दुअन्नी तुम्हारे हलक से निकलेगी. हम रोज़ चोरों के मुक़दमे करते हैं, हम झूट सच को खूब परखना जानते हैं." मानिक फिर गुस्से में भर कर बोल उठा.

"झम्मन तुम हमारे पुराने नौकर हो, ठीक ठीक बताओ. तुमने झाड़ू देते देते झुक कर कुछ उठाया था या नहीं ?"

"हाँ, हजूर हम झुके जरूर रहे पर उठाया कुछ नहीं. फरस पर कुछ चपका रहा और झाड़ू से हटत नहीं रहा, ओ को हाथ से छुटात रहे. ऊ आलू के छिलका रहा."

"इस चालाकी का कुछ ठिकाना है. अव्वल दर्जे का चोर है." दाँत पीस कर मानिक फिर चिल्ला उठा.

"तो तुमने दुअन्नी नहीं उठाई ?"

"नहीं हजूर बिलकुल नहीं."

यह जवाब सुनकर मेरे मित्र ने इस तरह मुझे देखा मानो यह कह रहे हों कि नौकर कितना चालाक है. आपको और मुझे भी धोका देना चाहता है.

''هاتھ سے گرائے سکت هے . پر حجور هم نے گرن کی آواج ناهیں سنی .''

''اچھا' جب تم للو کو اندر لے گئے تب دوآنی اس کے هاتھ میں تھی ؟''

''لے جات بکھت هم دهیان ناهیں دئے رهے حجور .''

''اب شروع هوئی چالاکی .'' بیچ میں مانک بول اٹھا

''جب دوآنی تمهارے سامنے هی گری تھی تب تمکو للو کو اندر لے جاتے وقت اسپر نگاہ رکھنا تھی ''

''ایهی تو هم سے حجور بهول هوئے گئی . تبے تو هم دوڑے دوڑے دیکھن آئے رهے پر او ملی ناهیں . ایهی بهول همری هوئے گئی تبھی تو بهیا ڈانٹت هیں .''

''ڈانٹت کیا ابھی تو هم تمهاری کھال ادھیڑیں گے اور تبھی دوانی تمهارے حلق سے نکلے گی . هم روز چوروں کے مقدمے کرتے هیں' هم جھوٹ سچ کو خوب پرکھنا جانتے هیں '' مانک پھر غصے میں بھر کر بول اٹھا .

''جھمن تم همارے پرانے نوکر هو' ٹھیک ٹھیک بتاؤ . تم نے جھاڑو دیتے دیتے کچھ اٹھایا تھا یا نهیں ؟''

''هاں' حجور هم جھکے جرور رهے' پر اٹھایا کچھ نهیں' پھرس پر کچھ چپکا رها اور جھاڑو سے هٹت نهیں رهے' اوکو هاتھ سے چھٹات رهے . او آلو کے چھلکا رها .''

''اس چالاکی کا کچھ ٹھکانا هے . اول درجے کا چور هے .'' دانت پیس کر مانک پھر چلا اٹھا

''تو تم نے دوآنی نهیں اٹھائی ؟''

''نهیں حجور بالکل نهیں ''

یه جواب سنکر میرے متر نے اس طرح مجھے دیکھا مانو یه کهه رهے هیں که نوکر کتنا چالاک هے . آپ کو اور مجھے بھی دھوکا دینا چاهتا هے .

लल्लू के हाथ में दी, बस इसने आपका कमरा साफ़ किया है और फ़ौरन ही यह लल्लू को लेकर अन्दर पहुँचा है और दुअन्नी गायब है. दुअन्नी की बात जब इससे पूछी गई तो यह दौड़ा दौड़ा यहाँ आया और कहता है कमरे में नहीं मिली. अब जब दुअन्नी कमरे में नहीं मिली तो क्या कमरा खा गया या भूत ले गया. इसने नहीं ली तो किसने ली ?"

दुर्गा शंकर जी यह सब सुनकर थोड़ी देर चुप रहे और बोले—

"झम्मन, जब तुमने लल्लू को गोद में लिया तब लल्लू के हाथ में दुअन्नी थी ?"

"हाँ हजूर, मेरे सामने बहू जी ने चाँदी की चमकती हुई दुअन्नी लल्लू के हाथ में दी.'

"ठीक, तुम लल्लू को हमारे कमरे में लाए तब भी उसके हाथ में दुअन्नी थी ?"

"जरूर थी."

"तुमने अपनी आँखों देखी ?"

"देखा ही नहीं हजूर, जब वह लल्लू के हाथ से गिरन लगी तब हम ने उनको ठीक से थमाय दई."

"ठीक अच्छा जब तुमने लल्लू को कालीन पर बिठाया तब भी उसके हाथ में थी ?"

'जरूर थी.'

"लल्लू ने मुँह में तो नहीं रक्खी थी ?"

"हजूर, लल्लू खाने की चीज छोड़ कर, ऐसा रुपया मुँह में कबहूँ नहीं देत."

"देखो सोच समझ कर जवाब दो."

"हजूर लल्लू तो दुअन्नी से खेलत रहे, मुँह की तरफ़ हाथ लेजात नहीं देखा, कबहूँ मुँह में ऐसन चीज नहीं देत.'

"हाथ से भी नहीं गिराई ?"

للو کے ہاتھ میں دی ۔ بس اِس نے آپ کا کمرہ صاف کیا ہے اور فوراً ہی یہ للو کو لیکر اندر پہنچا ہے اور دوآنی غائب ہے ۔ دوآنی کی بات جب اِس سے پوچھی گئی تو یہ دوڑا دوڑا یہاں آیا اور کہتا ہے کمرے میں نہیں ملی ۔ اب جب دوآنی کمرے میں نہیں ملی تو کیا کمرہ کھا گیا یا بھوت لے گیا ۔ اِس نے نہیں لی تو کس نے لی ؟"

درگا شنکر جی یہ سب سن کر تھوڑی دیر چپ رہے اور بولے—

"جھمن، جب تم نے للو کو گود میں لیا تب للو کے ہاتھ میں دوآنی تھی ؟"

"ہاں حضور، میرے سامنے بہو جی نے چاندی کی چمکتی ہوئی دوآنی للو کے ہاتھ میں دی ۔"

"ٹھیک، تم للو کو ہمارے کمرے میں لائے تب بھی اُسکے ہاتھ میں دوآنی تھی ؟"

"ضرور تھی ۔"

"تم نے اپنی آنکھوں دیکھی ؟"

"دیکھی ہی نہیں حضور جب وہ للو کے ہاتھ سے گرنے لگی تب ہم نے اُن کو ٹھیک سے تھمائی دی ۔"

"ٹھیک، اچھا جب تم نے للو کو قالین پر بٹھایا تب بھی اُس کے ہاتھ میں تھی ؟"

"ضرور تھی ۔"

"للو نے منہ میں تو نہیں رکھی تھی ؟"

"حضور، للو کھانے کی چیز چھوڑ کر، ایسا روپیہ منہ میں کبھوں نہیں دیت ۔"

"دیکھو سوچ سمجھکر جواب دو ۔"

"حضور، للو تو دوآنی سے کھیلت رہے، منہ کی طرف ہاتھ لے جات ہم نہیں دیکھا و کبھوں منہ میں ایسن چیز نہیں دیت ۔"

"ہاتھ سے بھی نہیں گرائی ؟"

ख़ूनी दुअन्नी

"निकालो दुअन्नी, नहीं अभी तुम्हारी खाल उधेड़ दी जायगी."

मैं बात करते करते चौंक पड़ा, फ़ौरन मेरी आँख ने अपने आप सवाल का रूप लिया और जैसे ही मेरी नज़र अपने दोस्त पर पड़ी वह बोल उठे—"मानिक, क्या बात है ?"

"देखिये न पिता जी, इस नौकर का कुछ ठिकाना है, मुझ डिप्टी कलक्टर की आँख में धूल झोंकना चाहता है."

"निकालो दुअन्नी, निकालो !"

"भइया जी, मैंने दुअन्नी नहीं ली, चाहे जैसी कसम लेलो."

नौकर पुराना था, मालिक को गोद खिलाया था, 'भइया जी' कहकर बोलता था.

"तो क्या कमरा खा गया ?"

दुर्गा शंकर, मेरे मित्र, मेरी आँख का इशारा पाकर बोले—"मैं कुछ समझूँ तो, मामला क्या है ?"

"जाओ झम्मन, पिता जी के सामने अपनी चोरी क़बूल करो और दुअन्नी निकालकर दो !"

झम्मन अब दुर्गा शंकर जी के पास आगया. अबतक वह मेरे कानों की पहुंच के अन्दर था, अब आँखों के सामने भी आगया. वह कुछ कहे कहे कि मेरे मित्र दुर्गा शंकर की पोती यानी डिप्टी कलक्टर मानिक की लड़की, शीला आ पहुँची.

"देखिये बाबा जी, बात यह है कि झम्मन बदमाश अभी लल्लू को गोद में लेकर यहीं आपके कमरे में आया है. इसी के सामने अम्माँ ने लल्लू को मनाने के लिये चाँदी की नई दुअन्नी

خونی دوآني

''نکالو دوآنی' نہیں ابھی تمہاری کھال اُدھیڑ دی جائیگی.''

میں بات کرتے کرتے چونک پڑا' فوراً میری آنکھ نے اپنے آپ سوال کا روپ لیا اور جیسے ہی میری نظر اپنے دوست پر پڑی وہ بول اُٹھے—''مانک کیا بات ہے ؟''

''دیکھئے نہ پتا جی' اِس نوکر کا کچھ ٹھکانہ ہے' مجھ ڈپٹی کلکٹر کی آنکھ میں دھول جھونکنا چاھتا ہے .''

''نکالو دوآنی' نکالو !''

''بھیا جی' میں نے دوآنی نہیں لی' چاہے جیسی کسم لے لو .''

نوکر پرانا تھا' مالک کو گود کھلایا تھا' 'بھیا جی' کہکر بولتا تھا .

''تو کیا کمرہ کھا گیا ؟''

درگا شنکر' میرے متر' میری آنکھ کا اشارہ پاکر بولے—''میں کچھ سمجھوں تو' معاملہ کیا ہے ؟''

''جاؤ جھمن' پتا جی کے سامنے اپنی چوری قبول کرو اور دوانی نکالکر دو !''

جھمن اب درگا شنکر جی کے پاس آگیا . اب تک وہ میرے کانوں کی پہنچ کے اندر تھا' اب آنکھوں کے سامنے بھی آگیا . وہ کچھ کہے کہے کہ میرے متر درگا شنکر کی پوتی یعنی ڈپٹی کلکٹر مانک کی لڑکی شیلا آپہنچی .

''دیکھئے بابا جی' بات یہ ہے کہ جھمن بدمعاش ابھی للو کو گود میں لیکر یہیں آپ کے کمرے میں آیا ہے . اِسی کے سامنے اماں نے للو کو منانے کے لئے چاندی کی نئی دوانی

३. हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, ४. हरिजन सेवक संघ, ५. गो सेवा संघ.

धन

अपने मक़सद को पूरा करने के लिये संघ गाँव वालों से और दूसरे ग़रीब लोगों से धन जमा करेगा जिसमें ख़ास ज़ोर इस पर रहेगा कि ग़रीब लोगों से पैसा पैसा जमा किया जाए.

नई दिल्ली-२९. १. '४८.   —मो० क० गांधी

'नया हिन्द' के फ़ुटकर पुराने परचे

कम क़ीमत पर ख़रीदिये

		हर परचे की क़ीमत
सन १९५० के फ़ुटकर परचे	...	सिर्फ़ आठ आना
सन १९४९ के फ़ुटकर परचे	...	सिर्फ़ छै आना
सन १९४८ के फ़ुटकर परचे	...	सिर्फ़ छै आना
सन १९४७ के फ़ुटकर परचे	...	सिर्फ़ छै आना
जुलाई सन १९४६ से दिसम्बर सन १९४६ के फ़ुटकर परचे	...	सिर्फ़ छै आना

नोट—शुरू से आज तक के कुल परचे ख़रीदने पर डाक ख़र्च माफ़.

—मैनेजर 'नया हिन्द'

१४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

۳ . هندستانی تعلیمی سنگھ' ۴. هریجن سیوک سنگھ' ٥. گو سیوا سنگھ .

دهن

اپنے مقصد کو پورا کرنے کے لئے سنگھ گاؤں والوں سے اور دوسرے غریب لوگوں سے دهن جمع کرے گا جسمیں خاص زور اِس پر رهیگا کہ غریب لوگوں سے پیسہ پیسہ جمع کیا جائے .

نئی دلی—۲۹-۱-'۴۸   — م . ک. گاندهی .

'نیا هند' کے پھٹکر پرانے پرچے

کم قیمت پر خریدئے

		هر پرچے کی قیمت
سن ۱۹۵۰ کے پھٹکر پرچے	..	صرف آٹھ آنے
سن ۱۹۴۹ کے پھٹکر پرچے	..	صرف چھہ آنہ
سن ۱۹۴۸ کے پھٹکر پرچے	..	صرف چھہ آنہ
سن ۱۹۴۷ کے پھٹکر پرچے	..	صرف چھہ آنہ
جولائی سن ۱۹۴۶ سے دسمبر سن ۱۹۴۶ کے پھٹکر پرچے	..	صرف چھے آنہ

نوٹ—شروع سے آج تک کے کل پرچے خریدنے پر ڈاک خرچ معاف .

—مینیجر 'نیا هند'

۱۴۵' مٹھی گنج' الہآباد .

(३) वह गाँव वालों में से काम करने वाले भरती करेगा, उन्हें काम करना सिखायगा और उन सबका रजिस्टर रक्खेगा.

(४) वह अपने रोज़ रोज़ के काम का रोज़नामचा लिख कर रक्खेगा.

(५) वह गाँव का इस तरह से संगठन करेगा कि हर गाँव अपनी खेती और दस्तकारी के ज़रिये अपने पैरों पर ख़ुद खड़ा हो सके और अपना काम अपने आप चला सके.

(६) वह गाँव के लोगों को सफ़ाई रखने और तन्दुरुस्त रहने की तालीम देगा और गाँव वालों में तन्दुरुस्ती के बिगड़ने और बीमारी पैदा होने को रोकने के लिये सब तदबीरें करेगा.

(७) वह हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की तय की हुई नीति के अनुसार "नई तालीम" के ढंग पर जन्म से लेकर मौत तक गाँव वालों की तालीम का इन्तज़ाम करेगा.

(८) वह इस बात को देखेगा कि जिन लोगों के नाम क़ानूनी वोटरों के रजिस्टर में दर्ज होने से रह गए हैं वह उस रजिस्टर में ठीक ठीक दर्ज कर लिये जावें.

(९) जिन लोगों में अभी तक वोटर बनने की क़ानूनी योग्यता नहीं है उन्हें वह इस बात के लिये बढ़ावा देगा कि वह उस योग्यता को हासिल करें ताकि उन्हें वोट का अधिकार मिल जावे.

(१०) ऊपर के कामों के लिये और दूसरे ऐसे कामों के लिये जो समय समय पर उनमें बढ़ा दिये जायं, संघ के बनाए हुए क़ायदों के मुताबिक़ वह अपना फ़र्ज़ ठीक ठीक अदा करने के लिये अपने को ख़ुद साधेगा और योग्य बनाएगा.

संघ नीचे लिखी स्वाधीन संस्थाओं को अपने साथ मिलाएगा. १. आल इंडिया चर्खा संघ, २. आल इंडिया ग्रामोद्योग संघ,

٣. وہ گاؤں والوں میں سے کام کرنے والے بھرتی کریگا، اُنھیں کام کرنا سکھائیگا اور اُن سب کا رجسٹر رکھے گا .

۴. وہ اپنے روز روز کے کام کا روزنامچہ لکھکر رکھے گا .

٥. وہ گاؤں کا اِس طرح سے سنگٹھن کرے گا کہ ہر گاؤں اپنی کھیتی اور دستکاری کے ذریعے اپنے پیروں پر خود کھڑا ہو سکے اور اپنا کام اپنے آپ چلا سکے .

٦. وہ گاؤں کے لوگوں کو صفائی رکھنے اور تندرست رہنے کی تعلیم دیگا اور گاؤں والوں میں تندرستی کے بگڑنے اور بیماری پیدا ہونے کو روکنے کے لئے سب تدبیریں کریگا .

٧. وہ هندستانی تعلیمی سنگھ کی طے کی ہوئی نیت کے انوسار "نئی تعلیم" کے ڈھنگ پر جنم سے لیکر موت تک گاؤں والوں کی تعلیم کا انتظام کریگا .

٨. وہ اِس بات کو دیکھے گا کہ جن لوگوں کے نام قانونی ووٹروں کے رجسٹر میں درج ہونے سے رہ گئے ہیں وہ اُس رجسٹر میں ٹھیک ٹھیک درج کر لئے جاویں .

٩. جن لوگوں میں ابھی تک ووٹر بننے کی قانونی یوگیتا نہیں ہے اُنھیں وہ اِس بات کے لئے بڑھاوا دیگا کہ وہ اُس یوگیتا کو حاصل کریں تاکہ اُنھیں ووٹ کا ادھیکار مل جاوے .

١٠. اوپر کے کاموں کے لئے اور دوسرے ایسے کاموں کے لئے جو سمے سمے پر اُن میں بڑھا دئے جائیں، سنگھ کے بنائے ہوئے قاعدوں کے مطابق وہ اپنا فرض ٹھیک ٹھیک ادا کرنے کیلئے اپنے کو خود سادھے گا اور یوگیہ بنائیگا .

سنگھ نیچے لکھی سوادھین سنستھاؤں کو اپنے ساتھ ملائیگا . ١. آل انڈیا چرخہ سنگھ، ٢. آل انڈیا گرامو دیوگ سنگھ،

के सब नेता मिल कर सारे हिन्दुस्तान के लिये सेवा करेंगे और अलग अलग अपने इलाक़ों के लिये सेवा करेंगे. दूसरे दरजे के नेता जब कभी जरूरत समझेंगे अपने में से एक को सरदार चुन सकेंगे जो जब तक चाहेगा सब गिरोहों की क़ायदे बन्दी करेगा और उनकी अगुवाई करेगा.

(चूँकि सूबे या जिले अभी आख़िरी तौर पर नहीं बने हैं और अभी अदल बदल रहे हैं, इसलिये सेवकों के इस गिरोह को सूबा या जिला कौन्सिलों में बांटने की कोशिश नहीं की गई. और सारे हिन्दुस्तान के ऊपर अधिकार इस गिरोह या उन गिरोहों को दिया गया है जो इस समय तक बन चुके हों. यह बात ध्यान में आ जानी चाहिये कि सेवकों के इस दल को जो कुछ अधिकार या ताक़त मिलेगी वह उस सेवा से मिलेगी जो वह ख़ुशी और समझदारी के साथ अपने मालिक की करेंगे. उनका मालिक सारा हिन्दुस्तान है.)

(१) हर काम करने वाले को अपने हाथ के कते सूत की या आल इंडिया चर्खा संघ की तसदीक़ की हुई खादी पहनने की आदत होनी चाहिये. यह जरूरी है कि वह नशे की चीज़ों से बिलकुल परहेज़ करता हो. अगर वह हिन्दू है तो यह जरूरी होगा कि उसने अपनी निजी जिन्दगी में या अपने कुटुम्ब में हर सूरत और हर शकल में छुआ छूत को छोड़ दिया हो. यह भी जरूरी होगा कि उसे साम्प्रदायिक एकता (फ़िरक़ेवाराना इत्तहाद) के आदर्श में विश्वास हो, सब धर्मों के लिये उसमें बराबर का आदर और मान हो और नस्ल, धर्म या मर्द औरत के फ़रक़ का ख़्याल न करते हुए उनको बराबर के मौक़े मिलने और सबका बराबर का दर्जा समझे जाने में भी उसे विश्वास हो.

(२) वह अपने अधिकार के अन्दर के हर गाँव वाले से मिले जुलेगा.

کے سب نیتا مل کر سارے هندستان کے لئے سیوا کرینگے اور الگ الگ اپنے علاقوں کے لئے سیوا کرینگے . دوسرے درجے کے نیتا جب کبھی ضرورت سمجھیں کے اپنے میں سے ایک کو سردار چن سکیں گے جو جب تک چاہے گا سب گروہوں کی قاعدہ بندی کرے گا اور اُنکی اگوائی کرے گا .

(چونکہ صوبے یا ضلعے ابھی آخری طور پر نہیں بنے هیں اور ابھی ادل بدل رهے هیں ، اِس لئے سیوکوں کے اِس گروہ کو صوبہ یا ضلع کونسلوں میں بانٹنے کی کوشش نہیں کی گئی . اور سارے هندستان کے اوپر ادهیکار اِس گروہ یا اُن گروهوں کو دیا گیا هے جو اِس سمے تک بن چکے هوں . یہ بات دهیان میں آجانی چاهئے کہ سیوکوں کے اِس دل کو جو کچھ ادهیکار یا طاقت ملے گی وہ اُس سیوا سے ملے گی جو وہ خوشی اور سمجھداری کے ساتھ اپنے مالک کی کرینگے . اُن کا مالک سارا هندستان هے .)

١. هر کام کرنے والے کو اپنے هاتھ کے کتے سوت کی یا آل انڈیا چرخہ سنگھ کی تصدیق کی هوئی کھادی پہننے کی عادت هونی چاهئے . یہ ضروری هے کہ وہ نشے کی چیزوں سے بالکل پرهیز کرتا هو . اگر وہ هندو هے تو یہ ضروری هوگا کہ اُس نے اپنی نجی زندگی میں یا اپنے کٹمب میں هر صورت اور هر شکل میں چھوا چھوت کو چھوڑ دیا هو ، یہ بھی ضروری هوگا کہ اُسے سامپردایک ایکتا (فرقہ وارانہ اتحاد) کے آدرش میں وشواس هو ، سب دهرموں کے لئے اُس میں برابر کا آدر اور مان هو اور نسل ، دهرم یا مرد عورت کے فرق کا خیال نہ کرتے هوئے اُنکو برابر کے موقعے ملنے اور سب کا برابر کا درجہ سمجھے جانے میں بھی اُسے وشواس هو .

٢. وہ اپنے ادهیکار کے اندر کے هر گاؤں والے سے ملے جلے گا .

मशीन बन गई है, अब कोई काम नहीं रह गया है. हिन्दुस्तान को अब शहरों और क़स्बों का ख़याल हटा कर सात लाख गाँव के लिये समाजी (सोशल), सदाचारी (मारल) और माली (इकोनामिक) आज़ादी हासिल करनी है. हिन्दुस्तान जैसे जैसे अपने इस जनराज के मक़सद की तरफ़ बढ़ेगा वैसे वैसे सिविल यानी शहरी ताक़त फ़ौजी ताक़त के ऊपर क़ाबू पाने के लिये ज़रूर पूरी टक्कर लेगी. राजकाजी पार्टियों और फ़िरक़ेवाराना संस्थाओं की लाग डाँट हिन्दुस्तान को तन्दुरुस्त नहीं रहने दे सकती. इनसे देस को बचा कर रखना ही होगा. इन कारनों से और इसी तरह के दूसरे कारनों से आल इंडिया कॉंगरेस कमेटी मौजूदा कॉंगरेस संगठन को तोड़ देने और नीचे लिखे क़ायदों के अनुसार 'लोक सेवक सघं' का सुन्दर रूप लेने का फ़ैसला करती है. मौक़े की ज़रूरत के मुताबिक़ इन नियमों मे अदल बदल किया जा सकेगा.

हर ऐसे पाँच बालिग़ मरदों या औरतों की एक पंचायत, जो या तो गाँव के होंगे या जिनके मन में गाँव की लगन होगी, एक इकाई मानी जायगी.

इस तरह की दो पास पास की पंचायतें मिल कर अपने में से ही चुने हुए एक नेता के अधीन एक काम करने वाला जत्था बनाएँगी.

जब इस तरह की सौ पंचायतें हो जायँगी तो उनके पचास पहले दरजे के नेता अपने में से एक को दूसरे दरजे का नेता चुनेंगे. इसी तरह होता रहेगा, इस बीच पहले दरजे के नेता दूसरे दरजे के नेता के अधीन काम करेंगे. दो दो सौ पंचायतों के पास पास काम करने वाले गिरोह बनते रहेंगे, जबतक कि यह सारे हिन्दुस्तान में न फैल जाएँ. बाद की पंचायतों का हर गिरोह पहले गिरोह की तरह अपने में से दूसरे दरजे का एक नेता चुन लेगा. दूसरे दरजे

مشین بن گئی ہے' اب کوئی کام نہیں رہ گیا ہے. ہندستان کو اب شہروں اور قصبوں کا خیال ہٹا کر سات لاکھ گاؤں کے لئے سماجی (سوشل)' سداچاری (مارل) اور مالی (اکنامک) آزادی حاصل کرنی ہے. ہندستان جیسے جیسے اپنے اس جنراج کے مقصد کی طرف بڑھے گا ویسے ویسے سول یعنی شہری طاقت فوجی طاقت کے اوپر قابو پانے کے لئے ضرور پوری ٹکر لیگی. راجکاجی پارٹیوں اور فرقہ‌وارانہ سنستھاؤں کی لاگ ڈانٹ ہندستان کو تندرست نہیں رہنے دے سکتی.

ان سے دیس کو بچا کر رکھنا ہی ہوگا. ان کارنوں سے اور اسی طرح کے دوسرے کارنوں سے آل انڈیا کانگریس کمیٹی موجودہ کانگریس سنگٹھن کو توڑ دینے اور نیچے لکھے قاعدوں کے انوسار 'لوک سیوک سنگھ' کا سندر روپ لینے کا فیصلہ کرتی ہے. موقع کی ضرورت کے مطابق ان نیموں میں ادل بدل کیا جا سکیگا.

ہر ایسے پانچ بالغ مردوں یا عورتوں کی ایک پنچایت' جو یا تو گاؤں کے ہونگے یا جنکے من میں گاؤں کی لگن ہوگی' ایک اکائی مانی جائیگی.

اس طرح کی دو پاس پاس کی پنچائتیں مل کر اپنے میں سے ہی چنے ہوئے ایک نیتا کے ادھین ایک کام کرنے والا جتھا بنائینگی.

جب اس طرح کی سو پنچائتیں ہو جائینگی تو اُنکے پچاس پہلے درجے کے نیتا اپنے میں سے ایک کو دوسرے درجے کا نیتا چنینگے. اسیطرح ہوتا رہیگا' اس بیچ پہلے درجے کے نیتا دوسرے درجے کے نیتا کے ادھین کام کرینگے. دو دو سو پنچائتوں کے پاس پاس کام کرنے والے گروہ بنتے رہینگے' جب تک کہ یہ سارے ہندستان میں نہ پھیل جائیں. بعد کی پنچایتوں کا ہر گروہ پہلے گروہ کی طرح اپنے میں سے دوسرے درجے کا ایک نیتا چن لیگا. دوسرے درجے

के सामने रख दूँ. जहाँ मुमकिन हो सके इसके आधार पर पंचायतें बनवाऊँ. ख़ास कोशिश यह रहेगी कि हर ज़िले में कम से कम गांधी स्मारक के रूप में एक आश्रम ऐसा क़ायम हो जाये जो ज़िले के लिये इस आन्दोलन का मरकज़ बन जावे और जिसमें अपनी शक्ति और साधनों के अनुसार ज़िले के उन काजकर्ताओं को जो इस आन्दोलन में हिस्सा लेना चाहें समग्र सेवा की तालीम दी जा सके.

मेरा यह भी इरादा था कि सूबे के रचनात्मक काजकर्ताओं की एक कानफ़रेन्स करके इस प्रोग्राम को उनके सामने रक्खूँ और उनसे इस आन्दोलन के फैलाने के लिये सलाह और मदद लूँ. पर मुझे मालूम हुआ है कि शायद रचनात्मक काजकर्ताओं की एक कानफ़रेन्स देस के सवालों पर ग़ौर करने और उनका हल निकालने के लिये हो रही है. मैंने यह मुनासिब समझा कि सूबे में कानफ़रेन्स करने के पहले उस कानफ़रेन्स के फ़ैसलों को देख लूँ. शायद उनसे मुझे इस संघ के मक़सदों के पूरा करने में मदद मिल सके.

मेरी अपने मित्रों, सूबे के रचनात्मक काजकर्ताओं और बापू के प्रेमियों से, जो इस प्रोग्राम में दिलचस्पी रखते हों, यह प्रार्थना है कि अगर वह ठीक समझें तो मुझे इस आन्दोलन के फैलाने में मदद दें.

लोक सेवक संघ के विधान का मसौदा

(जो बापू के मरने के बाद 'हरिजन' में छपा था)

हिन्दुस्तान के दो टुकड़े तो हो गए, फिर भी इंडियन नेशनल काँगरेस ने राजकाजी आज़ादी हासिल करने के जो साधन निकाले थे उन साधनों से हिन्दुस्तान ने राजकाजी आज़ादी हासिल कर ली है, इसलिये काँगरेस की आजकल की शकल सूरत का यानी इस सूरत का जिसमें वह प्रचार का एक ज़रिया और पार्लीमेन्टरी

کے سامنے رکھ دوں. جہاں ممکن ہو سکے اِس کے آدھار پر پنچائتیں بنواؤں. خاص کوشش یہ رہے گی کہ ہر ضلع میں کم سے کم گاندھی سمارک کے روپ میں ایک آشرم ایسا قائم ہوجائے جو ضلع کے لئے اِس آندولن کا مرکز بن جاوے اور جسمیں اپنی شکتی اور سادھنوں کے انوسار ضلع کے اُن کاج کرتاؤں کو جو اِس آندولن میں حصہ لینا چاہیں سمگر سیوا کی تعلیم دی جا سکے.

میرا یہ بھی اِرادہ تھا کہ صوبے کے رچناتمک کاج کرتاؤں کی ایک کانفرنس کرکے اِس پروگرام کو اُنکے سامنے رکھوں اور اُن سے اِس آندولن کے پھیلانے کے لئے صلاح اور مدد لوں. پر مجھے معلوم ہوا ہے کہ شاید رچناتمک کاج کرتاؤں کی ایک کانفرنس دیس کے سوالوں پر غور کرنے اور اُن کا حل نکالنے کے لئے ہو رہی ہے. میں نے یہ مناسب سمجھا کہ صوبے میں کانفرنس کرنے کے پہلے اُس کانفرنس کے فیصلوں کو دیکھ لوں. شاید اُن سے مجھے اِس سنگھ کے مقصدوں کے پورا کرنے میں مدد مل سکے.

میری اپنے متروں، صوبے کے رچناتمک کاج کرتاؤں اور باپو کے پریمیوں سے، جو اِس پروگرام میں دلچسپی رکھتے ہوں، یہ پرارتھنا ہے کہ اگر وہ ٹھیک سمجھیں تو مجھے اِس آندولن کے پھیلانے میں مدد دیں.

لوک سیوک سنگھ کے ودھان کا مسودہ

(جو باپو کے مرنے کے بعد 'ہریجن' میں چھپا تھا)

ہندستان کے دو ٹکڑے تو ہو گئے، پھر بھی انڈین نیشنل کانگریس نے راجکاجی آزادی حاصل کرنے کے جو سادھن نکالے تھے اُن سادھنوں سے ہندستان نے راجکاجی آزادی حاصل کرلی ہے، اِس لئے کانگریس کی آجکل کی شکل صورت کا یعنی اِس صورت کا جسمیں وہ پرچار کا ایک ذریعہ اور پارلیمنٹری

इस विधान में बापू ने सारे देश को फ़र्ज़ी हलकों में बांट दिया है और हर हलक़े के ऐसे लोगों को, जो इस विधान के सेवक की शर्तें को पूरा करते हों, यह अधिकार दे दिया है कि वह अपने हलक़े में अगर चाहें तो पंचायत का रूप ले लें और इस विधान के अनुसार काम करने लगें. इसके लिये उन्हें किसी बाहरी इजाज़त या बढ़ावे की जरूरत नहीं है.

लेकिन आज की हालत में यह मुमकिन नहीं है कि देश के यह काजकर्ता जो इस विधान की शरतों के अनुसार सेवक बन सकते हैं, बिना किसी मरकज़ी बढ़ावे या आन्दोलन के इस विधान के असली रूप और मक़सद को समझ सकें और इससे पूरा फ़ायदा उठा सकें. जैसा कि मैंने कहा है कि इस रास्ते की सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि बापू इसके सम्बन्ध में वह लेख नहीं लिख सके जिनका इरादा उन्होंने ज़ाहिर किया था. जब तक यह कठिनाई दूर नहीं होती, इस विधान का जनता तक पहुँच सकना नामुमकिन रहेगा. इसके दूर करने के लिये बहुत प्रचार की ज़रूरत है.

मेरे लोक सेवा संघ बनाने का असली मतलब इसी कठिनाई को दूर करना है. इसके लिये मैंने सेवा कुंज आश्रम, गंगाघाट, उन्नाव में इस संघ का दफ़्तर खोल दिया है. मैं इस आश्रम में इस काम के लिये एक प्रकाशन विभाग खोल देने की कोशिश कर रहा हूँ. इस प्रकाशन विभाग से मैं एक "अहिन्सात्मक इनक़लाब पुस्तक माला" निकालना चाहता हूं जिसमें बापू के मिशन और इस आन्दोलन के सम्बन्ध में बुलेटिनें और पुस्तकें निकाली जायंगी. अपनी दूसरी बुलेटिन में हम उन शंकाओं को दूर करने की कोशिश करेंगे जो इस संघ के बुनियादी असूल और प्रोग्राम के सम्बन्ध में कुछ मित्रों ने ज़ाहिर की हैं.

मेरा इरादा है कि ज़िले ज़िले में जाकर इसके प्रोग्राम को लोगों

اِس ودھان میں باپو نے سارے دیس کو فرضی حلقوں میں بانٹ دیا ھے اور ھر حلقے کے ایسے لوگوں کو، جو اِس ودھان کے سیوک کی شرطوں کو پورا کرتے ھوں، یہ ادھیکار دے دیا ھے کہ وہ اپنے حلقے میں اگر چاھیں تو پنچایت کا روپ لے لیں اور اِس ودھان کے انوسار کام کرنے لگیں. اِسکے لئے انہیں کسی باہری اجازت یا بڑھاوے کی ضرورت نہیں ھے.

لیکن آجکی حالت میں یہ ممکن نہیں ھے کہ دیس کے وہ کاج کرتا جو اِس ودھان کی شرطوں کے انوسار سیوک بن سکتے ھیں، بنا کسی مرکزی بڑھاوے یا آندولن کے اِس ودھان کے اصلی روپ اور مقصد کو سمجھ سکیں اور اِس سے پورا فائدہ اٹھا سکیں. جیسا کہ میں نے کہا ھے کہ اِس راستے کی سب سے بڑی کٹھنائی یہ ھے کہ باپو اِسکے سمبندھ میں وہ لیکھ نہیں لکھ سکے جن کا اِرادہ انہوں نے ظاھر کیا تھا. جب تک یہ کٹھنائی دور نہیں ھوتی، اِس ودھان کا جنتا تک پہنچ سکنا نا ممکن رہے گا. اِسکے دور کرنے کے لئے بہت پرچار کی ضرورت ھے.

میرے لوک سیوا سنگھ بنانے کا اصلی مطلب اِسی کٹھنائی کو دور کرنا ھے. اِسکے لئے میں نے سیوا کنج آشرم، گنگا گھاٹ، اناؤ میں اِس سنگھ کا دفتر کھول دیا ھے. میں اِس آشرم میں اِس کام کے لئے ایک پرکاشن وبھاگ کھول دینے کی کوشش کر رہا ھوں. اِس پرکاشن وبھاگ سے میں ایک "اھنساتمک انقلاب پستک مالا" نکالنا چاھتا ھوں جسمیں باپو کے مشن اور اِس آندولن کے سمبندھ میں بلیٹنیں اور پستکیں نکالی جائینگی. اپنی دوسری بلیٹن میں ھم اُن شنکاؤں کو دور کرنے کی کوشش کرینگے جو اِس سنگھ کے بنیادی اصول اور پروگرام کے سمبندھ میں کچھ متروں نے ظاھر کی ھیں.

میرا اِرادہ ھے کہ ضلع ضلع میں جاکر اِس کے پروگرام کو لوگوں

चलने का सवाल पैदा नहीं होता. इस रास्ते पर जो चलेगा वह यह पहले ही जान लेगा कि उसका काम रास्ता दिखाना है. कामयाबी और नाकामयाबी का सवाल उसके अख़्तियार से बाहर है. अहिन्सा के रास्तों पर चलने वालों का असली सहारा ईश्वर होता है और ग़ैबी (दैवी) शक्तियाँ सदा उनका साथ देती रहती हैं. इन्हीं पर उनकी कामयाबी नाकामयाबी का सारा दारमदार होता है.

अब सवाल यह है कि इस प्रोग्राम को पूरा करने के लिये 'लोक सेवा संघ' का क्या रूप हो. मेरे ख़याल में इसके लिये कोई नया विधान बनाना ग़ैर ज़रूरी है. 'लोक सेवक संघ' का विधान ही इसके विधान का काम दे सकता है. मैं बापू के विधान का पूरा मसौदा जो 'हरिजन' में बापू के मरने के बाद 'बापू की आख़री वसीयत' के नाम से छपा था इस मज़मून के आख़ीर में देता हूँ. यह मसौदा बहुत छोटा सा है. इसे काँगरेस के सेक्रेटरी साहब को देते समय बापू ने कहा था कि वह पाँच छै लेख लिखकर इसके अलग अलग पहलुओं पर रोशनी डालेंगे. बापू यह नहीं कर सके. मैंने इसका असली रूप दर्शाने के लिये 'महात्मा गाँधी की वसीयत' के नाम से एक पुस्तक लिखी है जिसे हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी ने छाप दिया है. जो लोग इस बारे में मेरे विचारों को जानना चाहें वह उसे पढ़ सकते हैं

इस मसौदे को अगर आल इंडिया काँगरेस कमेटी ने मान लिया होता तो आल इंडिया काँगरेस कमेटी के वह मेम्बर जो बापू के विधान की शर्तों पर चलते होते और जिन्हें बापू के नए आन्दोलन में हिस्सा लेना मंज़ूर होता, आप से आप इसकी काजकारी कमेटी का रूप ले लेते. इस तरह इसकी एक मरकज़ी काजकारी कमेटी बन जाती. पर यह नहीं हुआ. फिर भी यह विधान बापू ने कुछ इस तरह बनाया है कि बिना किसी मरकज़ी काजकारी कमेटी की मदद के इसका काम आप से आप चल सकता है.

چلنے کا سوال پیدا نہیں ہوتا . اِس راستے پر جو چلے گا وہ یہ پہلے ہی جان لے گا کہ اُس کا کام راستہ دکھانا ہے . کامیابی اور ناکامیابی کا سوال اُس کے اختیار سے باہر ہے . اہنسا کے راستوں پر چلنے والوں کا اصلی سہارا ایشور ہوتا ہے اور غیبی (دیوی) شکتیاں سدا اُن کا ساتھ دیتی رہتی ہیں . انھیں پر انکی کامیابی نا کامیابی کا سارا دارومدار ہوتا ہے .

اب سوال یہ ہے کہ اِس پروگرام کو پورا کرنے کے لئے ' لوک سیوا سنگھ ' کا کیا روپ ہو . میرے خیال میں اِس کے لئے کوئی نیا ودھان بنانا غیر ضروری ہے . ' لوک سیوک سنگھ ' کا ودھان ہی اِس کے ودھان کا کام دے سکتا ہے . میں باپو کے ودھان کا پورا مسودہ جو ' ہریجن ' میں باپو کے مرنے کے بعد 'باپو کی آخری وصیت' کے نام سے چھپا تھا اس مضمون کے آخیر میں دیتا ہوں . یہ مسودہ بہت چھوٹا سا ہے . اِسے کانگریس کے سکریٹری صاحب کو دیتے سمے باپو نے کہا تھا کہ وہ پانچ چھ لیکھ لکھکر اِسکے الگ الگ پہلوؤں پر روشنی ڈالیں گے . باپو یہ نہیں کر سکے . میں نے اِس کا اصلی روپ درشانے کے لئے 'مہاتما گاندھی کی وصیت' کے نام سے ایک پستک لکھی ہے جسے ہندستانی کلچر سوسائیٹی نے چھاپ دیا ہے . جو لوگ اِس بارے میں میرے وچاروں کو جاننا چاہیں وہ اسے پڑھ سکتے ہیں .

اِس مسودے کو اگر آل انڈیا کانگریس کمیٹی نے مان لیا ہوتا تو آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے وہ ممبر جو باپو کے ودھان کی شرطوں پر چلتے ہوتے اور جنھیں باپو کے نئے آندولن میں حصہ لینا منظور ہوتا، آپ سے آپ اِس کی کاج کاری کمیٹی کا روپ لے لیتے . اس طرح اس کی ایک مرکزی کاج کاری کمیٹی بن جاتی . پر یہ نہیں ہوا . پھر بھی یہ ودھان باپو نے کچھ اِس طرح بنایا ہے کہ بنا کسی مرکزی کاج کاری کمیٹی کی مدد کے اِس کا کام آپ سے آپ چل سکتا ہے .

मज़बूत संगठन पैदा नहीं किया जा सकता जो हुकूमत के ज़बरदस्त संगठन का मुक़ाबला कामयाबी के साथ कर सके. बापू ने रचनात्मक सेवाओं के प्रोग्राम देस के सामने रक्खे हैं. वह ऐसा लगाव पैदा करने के लिये लासानी तरीक़े हैं. लेकिन अगर उनके साथ साथ राजकाजी चेतना पैदा नहीं होती, जनता में वह निडरता पैदा नहीं की जाती जो सत्याग्रह से ही पैदा की जा सकती है, तो इसमें हुकूमत के नाजायज़ दबाव और बुरी चालों का मुक़ाबला करने की ताक़त पैदा नहीं होती और इसके लिये क़ुरबानी करने का हौसला नहीं बढ़ता. इस तरह वह सारा लगाव जो रचनात्मक योजनाएँ पैदा करती हैं बेजान और बेमानी है. वह सेवायें राजकाजी टक्कर से अलग रह कर जनता को जगा नहीं सकतीं, उसे सुला देने का काम कर सकती हैं, उसमें आत्मबल पैदा नहीं कर सकतीं, उसे आज से ज़्यादा पराधीन बना सकती हैं. इसलिये हमें खूब समझ लेना चाहिये कि राजकाजी चेतना और आत्मबल के बिना बापू की रचनात्मक योजनाएँ न राम-राज ला सकती हैं न किसी तरह का भी अहिन्सात्मक इनक़लाब पैदा कर सकती हैं. लेकिन अगर हम इन योजनाओं को सत्याग्रह और आत्मबल के साधनों के साथ जोड़ दें तो यह रचनात्मक काजकर्ताओं के हर दल को फिर से ज़िन्दा कर देंगी. इसीलिये मैंने अपने सुझाव में पार्लिमेन्टरी और ग़ैर-पार्लिमेन्टरी काम को एक दूसरे का पूरक और मददगार कहा है. इसी के साथ साथ अहिन्सात्मक होने के नाते वह प्रोग्राम ऐसा है जिससे हुकूमत, काँग्रेस, राजकाजी पार्टियाँ, या रचनात्मक काजकर्ता किसी को भी कोई नुक़सान नहीं पहुँचता. अगर पहुँचेगा तो फ़ायदा ही पहुँचेगा.

अब सवाल सिर्फ़ यह रह जाता है कि देस की मौजूदा हालत में काँग्रेस और हुकूमत से अलग रह कर राजकाजी मैदान में काम करने के लिये कौन तैयार होगा. यह एक बड़ी ज़बरदस्त कठिनाई है. मैं इसे महसूस करता हूँ. यह रास्ता ऐसा है कि इस पर अकेले दुकेले

مضبوط سنگٹھن پیدا نہیں کیا جا سکتا جو حکومت کے زبردست سنگٹھن کا مقابلہ کامیابی کے ساتھ کر سکے. باپو نے رچناتمک سیواؤں کے پروگرام دیس کے سامنے رکھے ہیں. وہ ایسا لگاو پیدا کرنے کے لئے لاثانی طریقے ہیں. لیکن اگر اِنکے ساتھ ساتھ راجکاجی چیتنا پیدا نہیں ہوتی، جنتا میں وہ نڈرتا پیدا نہیں کی جاتی جو ستیاگرہ سے ہی پیدا کی جا سکتی ہے، تو اِس میں حکومت کے ناجائز دباو اور بری چالوں کا مقابلہ کرنے کی طاقت پیدا نہیں ہوتی اور اِسکے لئے قربانی کرنے کا حوصلہ نہیں بڑھتا. اِسطرح وہ سارا لگاو جو رچناتمک یوجنائیں پیدا کرتی ہیں بے جان اور بے معنی ہے. وہ سیوائیں راجکاجی ٹکر سے الگ رہ کر جنتا کو جگا نہیں سکتیں، اُسے سلا دینے کا کام کر سکتی ہیں، اس میں آتم بل پیدا نہیں کر سکتیں، اُسے آج سے زیادہ پرادھین بنا سکتی ہیں. اِس لئے ہمیں خوب سمجھ لینا چاہئے کہ راجکاجی چیتنا اور آتم بل کے بنا باپو کی رچناتمک یوجنائیں نہ رام راج لا سکتی ہیں نہ کسی طرح کا بھی اہنساتمک انقلاب پیدا کر سکتی ہیں. لیکن اگر ہم اِن یوجناؤں کو ستیاگرہ اور آتم بل کے سادھنوں کے ساتھ جوڑ دیں تو یہ رچناتمک کاجکرتاؤں کے ہر دل کو پھر سے زندہ کر دینگی. اِسی لئے میں نے اپنے سجھاو میں پارلیمنٹری اور غیر پارلیمنٹری کام کو ایک دوسرے کا پورک اور مددگار کہا ہے. اِسی کے ساتھ ساتھ 'اہنساتمک ہونے کے ناتے یہ پروگرام ایسا ہے جس سے حکومت، کانگریس، راجکاجی پارٹیاں یا رچناتمک کاج کرتا کسی کو بھی کوئی نقصان نہیں پہنچتا. اگر پہنچیگا تو فائدہ ہی پہنچیگا.

اب سوال صرف یہ رہ جاتا ہے کہ دیس کی موجودہ حالت میں کانگریس اور حکومت سے الگ رہ کر راجکاجی میدان میں کام کرنے کے لئے کون تیار ہوگا. یہ ایک بڑی زبردست کٹھنائی ہے. میں اِسے محسوس کرتا ہوں. مگر یہ راستہ ایسا ہے کہ اِس پر اکیلے دکیلے

जा बापू के राम राज की कल्पना को असली रूप में पेश कर देंगी, यह बिलकुल बेबुनियाद ख़याल है. हकूमत की नीतियाँ बिना सत्याग्रह की मदद के बदली नहीं जा सकतीं. हमारे रचनात्मक प्रोग्रामों में जब तक सत्याग्रह का अंश शामिल नहीं होता, हम हरगिज़ हकूमत की नीतियों को बदल नहीं सकते न हकूमत को जनता का सच्चा सेवक बना सकते हैं. पहले दल की तरह दूसरा दल भी इस रास्ते से बहुत दूर है. वह इस ख़याल में डूबा हुआ है कि हकूमत के अन्दर रहकर और उसकी दौलत और ताक़त की मदद लेकर ही राम-राज लाया जा सकता है. यह लोग काँगरेस को सीढ़ी बनाकर देस की धारा सभाओं में पहुँच जाना अपने इस मक़सद को हासिल कर लेने की आख़री मंज़िल समझते हैं. यह दोनों रास्ते अच्छे हों या बुरे लेकिन बापू के देस सुधार के रास्ते नहीं हैं.

अगर हम मान लें कि यह दोनों रास्ते बापू के ही रास्ते हैं, क्योंकि ऐसी बातों में बड़े से बड़े मतभेद हो सकते हैं, फिर भी तीसरा रास्ता जो बापू ने अपने लोक सेवक संघ में दिखाया है उनके प्रेमियों के लिये ख़ाली रह जाता है. मैं इसी रास्ते को अख़्तियार करना चाहता हूँ. और जो लोग इसे पसन्द करते हों वह लोक सेवा संघ में शामिल होकर, मिल कर और संगठित रूप में इस पर चल सकते हैं. मुझे यक़ीन है कि इस रास्ते पर चलने से यह तीसरा दल पहले दोनों दलों में एक नई जान और शक्ति पैदा कर देगा. और देस की वह सारी शक्तियाँ जिन्हें अहिन्सात्मक इनक़लाब के लिये बापू ने पैदा कर दिया है, जमा होकर ज़ोर शोर के साथ अपना काम करने लगेंगी.

राजकाजी दायरों में बापू के आदर्शों व योजनाओं के आधार पर काम करने के लिये जनता से लगाव पैदा करना पहला क़दम है. क्योंकि बिना जनता से गहरा लगाव पैदा किये उसमें वह बड़ा और

جو باپو کے رام راج کی کلپنا کو اصلی روپ میں پیش کرینگی' یہ بالکل بے بنیاد خیال ھے . حکومت کی نیتیاں بنا ستیاگرہ کی مدد کے بدلی نہیں جاسکتیں . ہمارے رچناتمک پروگراموں میں جبتک ستیاگرہ کا انش شامل نہیں ہوتا' ہم ہرگز حکومت کی نیتیوں کو بدل نہیں سکتے نہ حکومت کو جنتا کا سچا سیوک بنا سکتے ہیں . پہلے دل کی طرح دوسرا دل بھی اِس راستے سے بہت دور ھے . وہ اِس خیال میں ڈوبا ہوا ھے کہ حکومت کے اندر رہ کر اور اُس کی دولت اور طاقت کی مدد لے کر ہی رام راج لایا جا سکتا ھے . یہ لوگ کانگریس کو سیڑھی بنا کر دیس کی دھارا سبھاؤں میں پہنچ جانا اپنے اِس مقصد کو حاصل کر لینے کی آخری منزل سمجھتے ہیں . یہ دونوں راستے اچھے ہوں یا برے لیکن باپو کے دیس سدھار کے راستے نہیں ہیں .

اگر ہم مان لیں کہ یہ دونوں راستے باپو کے ہی راستے ہیں' کیونکہ ایسی باتوں میں بڑے سے بڑے مت بھید ہو سکتے ہیں' پھر بھی تیسرا راستہ جو باپو نے اپنے لوک سیوک سنگھ میں دکھایا ھے اُنکے پریمیوں کے لئے خالی رہ جاتا ھے . میں اِسی راستے کو اختیار کرنا چاہتا ہوں . اور جو لوگ اِسے پسند کرتے ہوں وہ لوک سیوا سنگھ میں شامل ہوکر' ملکر اور سنگٹھت روپ میں اِس پر چل سکتے ہیں . مجھے یقین ھے کہ اِس راستے پر چلنے سے یہ تیسرا دل پہلے دونوں دلوں میں ایک نئی جان اور شکتی پیدا کر دے گا . اور دیس کی وہ ساری شکتیاں جنھیں اہنساتمک انقلاب کے لئے باپو نے پیدا کر دیا ھے' جمع ہوکر زور شور کے ساتھ اپنا کام کرنے لگیں گی .

راج کاجی دائروں میں باپو کے آدرشوں و یوجناؤں کے آدھار پر کام کرنے کے لئے جنتا سے لگاو پیدا کرنا پہلا قدم ھے . کیونکہ بنا جنتا سے گہرا لگاو پیدا کئے اُس میں وہ بڑا اور

देस की सभ्यता और संस्कृति को फिर से जिला नहीं सकते, और न जो कुछ भी उसका बाक़ी रह गया है उसे क़ायम रख सकते हैं. इसलिये अपनी कामयाबी के लिये यह लाज़मी है कि हम हकूमत की सारी समाज बनाने की शक्ति को अपने आदर्शों और योजनाओं के अधीन करलें. यह तभी हो सकता है जब या तो हम इस शक्ति को हकूमत से छीन लें या हकूमत हमारे आदर्शों और असूलों को ठीक मानकर उन पर चलने लगे.

तजरबा बताता है कि हकूमतें बिना हिंसात्मक या अहिंसात्मक दबाव के अपने आदर्श और नीतियाँ नहीं बदलतीं. बापू ने मानव जाति को जो सब से बड़ा ज्ञान दिया है वह यह है कि उन्होंने उसे जीने मरने का वह रास्ता दिखा दिया है जिस पर चलकर वह बड़ी से बड़ी हकूमतों पर अहिंसात्मक दबाव डाल कर उन्हें अपनी मरज़ी पर चलने के लिये मजबूर कर सकती है. अगर हम बापू के इस सबक़ को दुहराते रहें और इसे अपने सारे प्रोग्राम का आधार बनालें तो हम बापू के जीवन से ख़ास फ़ायदा उठा सकते हैं और उनके मिशन को उसके असली रूप में पूरा कर सकते हैं.

इन्हीं विचारों को सामने रखकर लोक सेवा संघ बनाया गया है. मुझे ऐसा महसूस होता था कि देस के रचनात्मक काम करने वालों का एक दल तो रचनात्मक काम को राजनीत से अलग रख रहा है और दूसरा राजनीत में ऐसा डूबा हुआ है कि रचनात्मक काम से उसका कोई वास्तविक सम्बन्ध नहीं रहता. पहला तो यह समझता है कि शुद्ध रचनात्मक योजनाओं को पूरा करना जैसे कपड़ा स्वावलम्बन का आन्दोलन चलाना, स्वावलम्बी गाँव बनाना, नई तालीम के विद्यापीठ खोलना, हकूमत को यह याद दिलाना कि नमक का टैक्स उठा देना, शराब बन्द करना गवरमेन्ट का

دیس کی سبھیتا اور سنسکرتی کو پھر سے جلا نہیں سکتے' اور نہ جو کچھ بھی اُس کا باقی رہ گیا ہے اُسے قائم رکھ سکتے ہیں ۔ اس لئے اپنی کامیابی کے لئے یہ لازمی ہے کہ ہم حکومت کی ساری سماج بنانے کی شکتی کو اپنے آدرشوں اور یوجناؤں کے آدھین کر لیں ۔ یہ تبھی ہوسکتا ہے جب یا تو ہم اِس شکتی کو حکومت سے چھین لیں یا حکومت ہمارے آدرشوں اور اصولوں کو ٹھیک مان کر اُن پر چلنے لگے ۔

تجربہ بتاتا ہے کہ حکومتیں بنا ھنساتمک یا اھنساتمک دباو کے اپنے آدرش اور نیتیاں نہیں بدلتیں ۔ باپو نے مانو جاتی کو جو سب میں بڑا گیان دیا ہے وہ یہ ہے کہ اُنھوں نے اُسے جینے مرنے کا وہ راستہ دکھا دیا ہے جس پر چلکر وہ بڑی سے بڑی حکومتوں پر اھنساتمک دباو ڈالکر اُنھیں اپنی مرضی پر چالنے کے لئے مجبور کر سکتی ہے ۔ اگر ہم باپو کے اِس سبق کو دہراتے رہیں اور اِسے اپنے سارے پروگرام کا آدھار بنا لیں تو ہم باپو کے جیون سے خاص فائدہ اُٹھا سکتے ہیں اور اُنکے مشن کو اُس کے اصلی روپ میں پورا کر سکتے ہیں ۔

اِنھیں وچاروں کو سامنے رکھکر لوک سیوا سنگھ بنایا گیا ہے ۔ مجھے ایسا محسوس ہوتا تھا نہ دیس کے رچناتمک کام کرنے والوں کا اِیک دل تو رچناتمک کام کو راج نیت سے الگ رکھ رہا ہے اور دوسرا راج نیت میں ایسا ڈوبا ہوا ہے کہ رچناتمک کام سے اُس کا کوئی واستوک سمبندھ نہیں رہتا ۔ پہلا تو یہ سمجھتا ہے کہ شدھ رچناتمک یوجناؤں کو پورا کرنا جیسے کپڑا سواولمبن کا آندولن چلانا' سواولمبی گاؤں بنانا' نئی تعلیم کے ودیا پیٹھ کھولنا' حکومت کو یہ یاد دلانا کہ نمک کا ٹیکس اُٹھا دینا' شراب بند کرنا گورنمنٹ کا

लेकिन बापू यह नहीं समझते थे कि हमारा आज़ादी का प्रोग्राम पूरा होगया. उन्होंने लोक सेवक संघ के विधान में साफ़ शब्दों में कहा है कि गो कि हमें राजकाजी आज़ादी मिल गई लेकिन अभी हमें अपनी आरथिक, सामाजिक और नैतिक आज़ादी हासिल करना बाक़ी है. यह आज़ादी कौन छीन रहा है ? और किसके ख़िलाफ़ लड़ कर हम इसे हासिल कर सकते हैं ? साफ़ ज़ाहिर है पच्छिमी सभ्यता और संस्कृति अभी तक हमें अपना ग़ुलाम बनाये हुए हैं और इस ग़ुलामी को हम उन संस्थाओं और शक्तियों का मुक़ाबला करके ही मिटा सकते हैं जो पच्छिमी सभ्यता का साम्राज हमारे देस पर क़ायम रखने और बढ़ाने में सहायक हो रही हैं. इन शक्तियों में सब से बड़ी शक्ति ख़ुद हमारी देसी हकूमत है. जब तक हम इसके पच्छिमी ढाँचे, आदर्शों, योजनाओं और नीतियों को शान्ति के साधनों से नहीं बदलते, देस पच्छिमी ग़ुलामी से हरग़िज़ आज़ाद नहीं हो सकता. इसलिये अगर हम बापू का स्वराज अपने देस में क़ायम करना चाहते हैं तो हमें अपनी देसी हकूमत का वैसे ही मुक़ाबला करना होगा जैसे हमने अंगरेज़ी हुकूमत का किया.

बापू कहते थे कि मैं राजनेता नहीं हूँ. न राजनीत में मेरी ज़रा भी दिलचस्पी है. मैं केवल एक मामूली समाज सुधारक हूँ. लेकिन दुनिया की हालत ने राजकाजी मैदान को मेरे जीवन का मैदान बना दिया है. हक़ीक़त में कोई भी, समाज सुधारक हो, जो मौजूदा हालत में बापू के आदर्शों, योजनाओं और असूलों को उनके शुद्ध रूप में अपने सामने रक्खेगा, यह हालतें बापू की तरह राजकाजी मैदान को उसके जीवन का मैदान बना देंगी. इसमें दो राय होना नामुमकिन है. समाज को बनाने की सारी शक्ति इस समय हुकूमत के हाथ में है. जब तक यह शक्ति पच्छिमी आदर्शों और योजनाओं को पूरा करने में लगी रहेगी तब तक हम अपने

لیکن باپو یہ نہیں سمجھتے تھے کہ ھمارا آزادی کا پروگرام پورا ھوگیا . انہوں نے لوک سیوک سنگھ کے ودھان میں صاف شبدوں میں کہا ھے کہ گوکہ ھمیں راج کاجی آزادی مل گئی لیکن ابھی ھمیں اپنی آرتھک، ساماجک اور نیتک آزادی حاصل کرنا باقی ھے . یہ آزادی کون چھین رھا ھے ؟ اور کس کے خلاف لڑ کر ھم اِسے حاصل کر سکتے ھیں ؟ صاف ظاھر ھے پچھمی سبھیتا اور سنسکرتی ابھی تک ھمیں اپنا غلام بنائے ھوئے ھیں اور اِس غلامی کو ھم اُن سنستھاؤں اور شکتیوں کا مقابلہ کرکے ھی مٹا سکتے ھیں جو پچھمی سبھیتا کا سامراج ھمارے دیس پر قائم رکھنے اور بڑھانے میں سہایک ھو رھی ھیں . اِن شکتیوں میں سب سے بڑی شکتی خود ھماری دیسی حکومت ھے . جب تک ھم اِسکے پچھمی ڈھانچے، آدرشوں، یوجناؤں اور نیتیوں کو شانتی کے سادھنوں سے نہیں بدلتے، دیس پچھمی غلامی سے ھرگز آزاد نہیں ھو سکتا. اِسلئے اگر ھم باپو کا سوراج اپنے دیس میں قائم کرنا چاھتے ھیں تو ھمیں اپنی دیسی حکومت کا ویسے ھی مقابلہ کرنا ھوگا جیسے ھم نے انگریزی حکومت کا کیا .

باپو کہتے تھے کہ میں راج نیتا نہیں ھوں، نہ راج نیت میں میری ذرا بھی دلچسپی ھے . میں کیول ایک معمولی سماج سدھارک ھوں . لیکن دنیا کی حالت نے راج کاجی میدان کو میرے جیون کا میدان بنا دیا ھے . حقیقت میں کوئی بھی، سماج سدھارک ھو جو موجودہ حالت میں باپو کے آدرشوں، یوجناؤں اور اصولوں کو انکے شدھ روپ میں اپنے سامنے رکھے گا، یہ حالتیں باپو کی طرح راج کاجی میدان کو اُسکے جیون کا میدان بنا دینگی . اِس میں دو رائے ھونا ناممکن ھے . سماج کو بنانے کی ساری شکتی اِس سمے حکومت کے ھاتھ میں ھے . جب تک یہ شکتی پچھمی آدرشوں اور یوجناؤں کو پورا کرنے میں لگی، رھے گی تب تک ھم اپنے .

दूसरे समाज से भ्रष्टाचार, बेइमानी, रिशवत वग़ैरा दूर कर देने को जनता हुकूमत की जगह पर ख़ुद अपना काम और ज़िम्मेदारी समझले. अगर यह दो शक्तियाँ जनता में पैदा हो जावें तो संसार की कोई हुकूमत, चाहे वह देसी हो या बिदेसी, जनता को अपना ग़ुलाम या प्रजा नहीं बना सकती. बापू ने जो सिद्धान्त और साधन हमें सिखाये हैं उनकी मदद से हम जनता में इस तरह की जागृति और संगठन पैदा कर सकते हैं.

यह साफ़ ज़ाहिर है कि जो प्रोग्राम जनता में जागृति, शक्ति और संगठन पैदा करने का हमने ऊपर अपने लोक सेवा संघ के सामने रक्खा है वह शुद्ध राजकाजी प्रोग्राम है. कहा जा सकता है कि जहाँ तक बापू के लोक सेवक संघ का ताल्लुक़ है उसमें तो इस तरह के प्रोग्राम का साया भी दिखाई नहीं देता. वह तो शुद्ध रचनात्मक कामों तक में महदूद मालूम होता है. हमारा यह ख़याल नहीं है. हमारे ख़याल में जो सबसे बड़ी कठिनाई इस समय रचनात्मक काम करने वालों के रास्ते में है वह यही है कि वह बापू के रचनात्मक प्रोग्राम को राजकाजी पहलुओं से अलग करके देखते हैं. बापू के सारे आदर्श, असूल और उनके जीवन की एक एक घटना इस घातक भेद को ग़लत बताती है. बापू ने अपनी सारी ज़िन्दगी में कभी राजनीत से अलग होकर और किसी एक गाँव में बैठकर अपनी राजनीतिक योजनाएं नहीं चलाईं. वह कहते थे कि मेरा एक एक पल देस की आज़ादी की लड़ाई लड़ने या उसकी तैयारी में ख़र्च होता है. यह हम सब जानते हैं कि उनका आध घंटा या घंटा भर चर्ख़ा चलाने और बाक़ी सारा समय देस की आज़ादी का आन्दोलन बढ़ाने में ख़र्च होता था. कहा जा सकता है कि अंगरेज़ों के चले जाने के साथ साथ वह लड़ाई ख़त्म हो गई इसलिये अब हमारे सामने सिर्फ़ रचनात्मक काम रह गया है और अहिंसात्मक इनक़लाब पैदा करने के लिये हमें अपनी सारी ताक़त उसी काम में लगानी चाहिये.

دوسرے سماج سے بهرشٹا چار' بے ایمانی' رشوت وغیرہ دور کردینے کو جنتا حکومت کی جگہ پر خود اپنا کام اور ذمہ داری سمجھ لے. اگر یہ دو شکتیاں جنتا میں پیدا هوجاویں تو سنسار کی کوئی حکومت' چاهے وہ دیسی هو یا بدیسی' جنتا کو اپنا غلام یا پرجا نہیں بنا سکتی. باپو نے جو سدهانت اور سادهن همیں سکھائے هیں اُنکی مدد سے هم جنتا میں اِسطرح کی جاگرتی اور سنگٹھن پیدا کرسکتے هیں.

یہ صاف ظاهر هے کہ جو پروگرام جنتا میں جاگرتی' شکتی اور سنگٹھن پیدا کرنے کا هم نے اوپر اپنے لوک سیوا سنگھ کے سامنے رکھا هے وہ شدھ راج کاجی پروگرام هے. کہا جاتا هے کہ جہاں تک باپو کے لوک سیوک سنگھ کا تعلق هے اُس میں تو اِس طرح کے پروگرام کا سایہ بھی دکھائی نہیں دیتا. وہ تو شدھ رچناتمک کاموں تک میں محدود معلوم هوتا هے. همارا یہ خیال نہیں هے. همارے خیال میں جو سب سے بڑی کٹھنائی اِس سمے رچناتمک کام کرنے والوں کے راستے میں هے وہ یہی هے کہ وہ باپو کے رچناتمک پروگرام کو راج کاجی پہلوؤں سے الگ کر کے دیکھتے هیں. باپو کے سارے آدرش' اصول اور اُنکے جیون کی ایک ایک گھٹنا اِس گھاتک بهید کو غلط بتاتی هے. باپو نے اپنی ساری زندگی میں کبھی راج نیت سے الگ هوکر اور کسی ایک گاؤں میں بیٹھکر اپنی راج نیتک یوجنائیں نہیں چلائیں. وہ کہتے تھے کہ میرا ایک ایک پل دیس کی آزادی کی لڑائی لڑنے یا اُس کی تیاری میں خرچ هوتا هے. یہ هم سب جانتے هیں کہ اُن کا آدھ گھنٹہ یا گھنٹہ بھر چرخہ چلانے اور باقی سارا سمے دیس کی آزادی کا آندولن بڑھانے میں خرچ هوتا تھا. کہا جا سکتا هے کہ انگریزوں کے چلے جانے کے ساتھ ساتھ یہ لڑائی ختم هوگئی اس لئے اب همارے سامنے صرف رچناتمک کام رهگیا هے اور اهنساتمک انقلاب پیدا کرنے کے لئے همیں اپنی ساری طاقت اُسی کام میں لگانی چاهیئے.

देस की राजकाजी-पार्टियाँ एक दूसरे के साथ मिलकर देस की तरक़्क़ी का काम कर सकें. इस संघ का यह अटल विश्वास है कि अगर यह सब बापू के बताये हुए रास्ते पर चलें तो बिना उस घातक खेंचातानी और बरबादी के जिसे यह तरक़्क़ी के रास्ते का लाज़मी अंश समझती हैं, यह अपने देस सेवा के आदर्शों को बड़े से बड़े पैमाने पर पूरा कर सकती हैं. जहाँ तक इस संघ का ताल्लुक़ है यह ऊपर दिये हुए प्रोग्राम को सामने रखते हुए अपनी सारी ताक़त जनता को जगाने और संगठित करने में लगायगा.

बापू अपने आपको सच्चा डेमोक्रेट कहा करते थे. यह डेमोक्रेसी का युग है और डेमोक्रेसी के मानी जनता राज के हैं. आज संसार के हर देस ने जनता को अपना क़ानूनी और असली राजा मान लिया है. मगर असल में पुरानी राजसत्ता अभी मिटी नहीं है, सिर्फ़ उसका रूप बदल गया है. सबसे दुख की घटना यह है कि पार्लिमेन्टरी हुकूमत, जो आज जनता-राज का रूपक है, पुरानी राजसत्ताओं से कहीं ज़्यादा घातक और भयंकर दोशों से भरी हुई है.

बापू ने इंगलिस्तान की पार्लिमेन्ट को दूसरी पार्लिमेन्टों की जननी यानी माँ कहा है और अपनी किताब "हिन्द स्वराज" में यह डर ज़ाहिर किया है कि कहीं इस तरह की हुकूमत हमारे देस में क़ायम न हो जाय और उन्होंने कहा था कि अगर यह क़ायम हो गई तो देस का सर्वनाश हो जायगा. अपनी सारी राजकाजी कोशिशों में इस संघ का एक यही मक़सद होगा कि वह जनता को नाम का राजा होने की जगह देस का सच्चा राजा बना दे. जनता देस की असली राजा उसी वक़्त बन सकती है जब उसमें इतनी जागृति, इतना आत्मबल और इस तरह का संगठन हो जावे कि एक तो देस

دیس کی راج‌کاجی پارٹیاں ایک دوسرے کے ساتھ ملکر دیس کی ترقی کا کام کر سکیں . اِس سنگھ کا یہ اٹل وشواس ہے کہ اگر یہ سب باپو کے بتائے ہوئے راستے پر چلیں تو بنا اُس گھاتک کھینچاتانی اور بربادی کے جسے یہ ترقی کے راستے کا لازمی انش سمجھتی ہیں یہ اپنے دیس سیوا کے آدرشوں کو بڑے سے بڑے پیمانے پر پورا کر سکتی ہیں . جہاں تک اس سنگھ کا تعلق ہے یہ اوپر دیئے ہوئے پروگرام کو سامنے رکھتے ہوئے اپنی ساری طاقت جنتا کو جگانے اور سنگٹھت کرنے میں لگائے گا .

باپو اپنے آپ کو سچا ڈیموکریٹ کہا کرتے تھے . یہ ڈیموکریسی کا یگ ہے اور ڈیموکریسی کے معنی جنتا راج کے ہیں . آج سنسار کے ہر دیس نے جنتا کو اپنا قانونی اور اصلی راجہ مان لیا ہے' مگر اصل میں پرانی راج ستا ابھی مٹی نہیں ہے صرف اُس کا روپ بدل گیا ہے . سب سے دکھ کی گھٹنا یہ ہے کہ پارلیمنٹری حکومت' جو آج جنتا راج کا روپک ہے' پرانی راج ستاؤں سے کہیں زیادہ گھاتک اور بھینکر دوشوں سے بھری ہوئی ہے .

باپو نے انگلستان کی پارلیمنٹ کو دوسری پارلیمنٹوں کی جننی یعنی ماں کہا ہے اور اپنی کتاب " ہند سوراج " میں یہ ڈر ظاہر کیا ہے کہ کہیں اِس طرح کی حکومت ہمارے دیس میں قائم نہ ہوجائے اور اُنھوں نے کہا تھا اگر یہ قائم ہوگئی تو دیس کا سروناش ہوجائے گا . اپنی ساری راج کاجی کوششوں میں اس سنگھ کا ایک یہی مقصد ہوگا کہ وہ جنتا کو نام کا راجہ ہونے کی جگہ دیس کا سچا راجہ بنا دے . جنتا دیس کی اصلی راجہ اُسی وقت بن سکتی ہے جب اُس میں اتنی جاگرتی' اِتنا آتم بل اور اِس طرح کا سنگٹھن ہوجاوے کہ ایک تو دیس میں

को लाना, देस की शक्ति और दौलत को सब में फैला देने की जगह केन्द्रित करना वग़ैरा हो, चाहे यह हालतें किसी भी कारन से पैदा हो रही हों और चाहे इसके क़ायम रखने व बढ़ाने की कोशिश किसी ओर से भी हो रही हो.

यह संघ जनता को यह समझाने की कोशिश करेगा कि वह देस की असली राजा है. इसलिये देस में अमन क़ायम रखना, रिशवत, भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार और हट धर्मी को रोकने और मिटा देने की ज़िम्मेदारी एकमात्र जनता ही पर है. कोई दूसरा इसे पूरा नहीं कर सकता. इसकी यह ज़िम्मेदारी सिर्फ़ एक ही तरह कामयाबी के साथ पूरी हो सकती है कि वह महात्मा गाँधी के बताए हुए रास्ते पर शान्ति सेना क़ायम करे. सच्चे सेवक का नक़्शा महात्मा गांधी ने अपनी ज़िन्दगी और मौत दोनों में देस और संसार के सामने रख दिया है.

नैतिक निगाह से यह संघ त्याग, सदाचार और निस्वार्थ सेवा का ध्येय अपने सामने रक्खेगा. इस शैतानी असूल को कि प्रेम और युद्ध में सब कुछ जायज़ है, यह संघ झूटा और बेबुनियाद बताने में कोई कोशिश उठा न रक्खेगा. यह उस खोखली व्यवहारिकता की अन्धी पूजा को, जिसे वास्तविकता (रियलिज़्म) का सुनहरा नाम दिया जाता है, घोर अनैतिक, बदी और दुराचार मानता है, क्योंकि इसका अटल विश्वास है कि जब व्यवहारिकता (हिकमत अमली) को नैतिक असूलों की जगह दे दी जाती है तब यह शुद्ध अवसरवाद (इब्नुलवक़्ती यानी अपरचुनिज़्म) का रूप ले लेती है.

ऊपर का प्रोग्राम देखने से यह ज़ाहिर होगा कि लोक सेवा संघ, जिसका यह प्रोग्राम है, देस की मौजूदा हालत और उसकी राजकाजी समस्याओं को नैतिक और रचनात्मक निगाहों से देखता है और ऐसा वातावरण पैदा करना चाहता है जिसमें कॉंग्रेसी हुकूमत और

کو لانا، دیس کی شکتی اور دولت کو سب میں پھیلا دینے کی جگہ کیندرت کرنا وغیرہ ہو' چاہے یہ حالتیں کسی بھی کارن سے پیدا ہو رہی ہوں اور چاہے اسکے قائم رکھنے و بڑھانے کی کوشش کسی اور سے بھی ہو رہی ہو.

یہ سنگھ جنتا کو یہ سمجھانے کی کوشش کرے گا کہ وہ دیس کی اصلی راجہ ہے . اِس لئے دیس میں امن قائم رکھنا' رشوت' بھرشٹاچار' انیائے' اتیاچار اور ہٹ دھرمی کو روکنے اور مٹا دینے کی ذمہ داری ایک ماتر جنتا ہی پر ہے . کوئی دوسرا اِسے پورا نہیں کر سکتا . اِسکی یہ ذمہ داری صرف ایک ہی طرح کامیابی کے ساتھ پوری ہوسکتی ہے کہ وہ مہاتما گاندھی کے بتائے ہوئے راستے پر شانتی سینا قائم کرے . سچے سیوک کا نقشہ مہاتما گاندھی نے اپنی زندگی اور موت دونوں میں دیس اور سنسار کے سامنے رکھ دیا ہے .

نیتک نگاہ سے یہ سنگھ تیاگ' سداچار اور نسوارتھ سیوا کا دھیے اپنے سامنے رکھے گا . اِس شیطانی اصول کو کہ پریم اور یدھ میں سب کچھ جائز ہے' یہ سنگھ جھوٹا اور بے بنیاد بتانے میں کوئی کوشش اُٹھا نہ رکھے گا . یہ اُس کھوکھلی بیوہارکتا کی اندھی پوجا کو' جسے واستوکتا (ریلزم) کا سنہرا نام دیا جاتا ہے' گھور انیتک' بدی اور دراچار مانتا ہے' کیونکہ اِس کا اٹل وشواس ہے کہ جب بیوہارکتا (حکمت عملی) کو نیتک اصولوں کی جگہ دے دی جاتی ہے تب یہ شدھ اَوسرواد (ابن الوقتی یعنی اپرچونزم) کا روپ لے لیتی ہے .

اوپر کا پروگرام دیکھنے سے یہ ظاہر ہوگا کہ لوک سیوا سنگھ' جسکا یہ پروگرام ہے' دیس کی موجودہ حالت اور اُسکی راج کاجی سمسیاؤں کو نیتک اور رچناتمک نگاہوں سے دیکھتا ہے اور ایسا واتاورن پیدا کرنا چاہتا ہے جس میں کانگریسی حکومت اور

राजनीत के मैदान में इसकी एक मात्र कोशिश यह होगी कि वह उस में इनसानियत पैदा कर दे और उसे नैतिक रास्तों पर चलने के लिये मजबूर कर दे. इस का ध्येय यह होगा कि यह हुकूमत की मौजूदा शकल को मौलिक रूप में बदल दे, उसे एक सच्ची सेवा समिति बना दे और उसके सारे अधिकारियों और मुलाज़िमों को जनता का सच्चा सेवक बना दे.

हुकूमत की तरफ़ से, चाहे वह काँगरेसी, सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट, राश्ट्री स्वयंसेवक संघी कोई भी हो, इस संघ की नीत वही रहेगी जो ऊपर दी गई है. इस संघ का पक्का विश्वास है कि यह देस में इनसानियत फैलावे. राजनीत को नैतिक बन्धनों से जकड़ देने की योजनाओं और उसकी कोशिशों का असर दूसरी हुकूमतों से ज़्यादा काँगरेसी हुकूमत पर पड़ सकेगा क्योंकि काँगरेस के पीछे अनन्त त्याग और निस्वार्थ देस सेवा का एक लम्बा इतिहास है जिसमें दूसरी पार्टियों ने बहुत कम हिस्सा लिया है, इसलिये यह संघ अपनी शक्ति भर यह जतन करेगा कि यह काँगरेसी हुकूमत को दूसरी पार्टियों के मुक़ाबले में क़ायम रक्खे.

अगर गवरमेन्ट बदल गई तो कोई भी गवरमेन्ट हो, संघ का उसे इनसानी और नैतिक बना देने का प्रयत्न बराबर वैसा ही जारी रहेगा.

देस के आरथिक मैदान में इस संघ की एक मात्र कोशिश यह रहेगी कि यह देस को उस शोशन और ग़ुलामी से मुक्त कर दे जिसमें पच्छिम की राजनीत ने देस को जकड़ रक्खा है. इसी के साथ साथ यह हर ऐसी हालत को बापू के बताये हुए अहिंसात्मक हथियारों और साधनों से मिटाने का जतन करेगा जिसका उद्देश देस में फ़ौजी ताक़त बढ़ाना, घरेलू दस्तकारियों की जगह मशीन राज क़ायम करना, गाँव की संस्कृति की जगह शहरी ज़िन्दगी के दोशों

راج نیت کے میدان میں اِس کی ایک ماتر کوشش یہ ہوگی کہ وہ اُس میں انسانیت پیدا کردے اور اُسے نیتک راستوں پر چلنے کے لئے مجبور کردے. اِس کا دھیے یہ ہوگا کہ یہ حکومت کی موجودہ شکل کو مولک روپ میں بدل دے' اُسے ایک سچی سیوا سمیتی بنا دے اور اُس کے سارے ادھیکاریوں اور ملازموں کو جنتا کا سچا سیوک بنادے .

حکومت کی طرف سے' چاہے وہ کانگریسی' سوشلسٹ' کمیونسٹ' راشٹری سویم سیوک سنگھی کوئی بھی ہو' اِس سنگھ کی نیت وہی رہیگی جو اوپر دی گئی ہے . اِس سنگھ کا پکا وشواس ہے کہ یہ دیس میں انسانیت پھیلاوے . راج نیت کو نیتک بندھنوں سے جکڑ دینے کی یوجناؤں اور اُسکی کوششوں کا اثر دوسری حکومتوں سے زیادہ کانگریسی حکومت پر پڑ سکیگا کیونکہ کانگریس کے پیچھے اننت تیاگ اور نسوارتھ دیس سیوا کا ایک لمبا اِتہاس ہے جس میں دوسری پارٹیوں نے بہت کم حصہ لیا ہے' اِس لئے یہ سنگھ اپنی شکتی بھر یہ جتن کریگا کہ یہ کانگریسی حکومت کو دوسری پارٹیوں کے مقابلے میں قائم رکھے .

اگر گورنمنٹ بدل گئی تو کوئی بھی گورنمنٹ ہو' سنگھ کا اُسے انسانی اور نیتک بنا دینے کا پریتن برابر ویسا ہی جاری رہیگا .

دیس کے آرتھک میدان میں اس سنگھ کی ایک ماتر کوشش یہ رہیگی کہ یہ دیس کو اُس شوشن اور غلامی سے مکت کر دے جس میں پچھم کی راج نیت نے دیس کو جکڑ رکھا ہے . اِسی کے ساتھ ساتھ یہ ہر ایسی حالت کو باپو کے بتائے ہوئے اہنساتمک ہتھیاروں اور سادھنوں سے مٹانے کا جتن کریگا جسکا اُدیش دیس میں فوجی طاقت بڑھانا' گھریلو دستکاریوں کی جگہ مشین راج قائم کرنا' گاؤں کی سنسکرتی کی جگہ شہری زندگی کے دوشوں

(४)

आचार्य कृपलानी ने मुझसे कहा था कि मैं उनकी काजकारी कमेटी के सामने वह प्रोग्राम भी रख दूँ जो मैं इस नये संघ के सामने रखना चाहता हूँ. इसलिये मैंने अपने सुझाव में 'लोक सेवा संघ' के बुनियादी असूल व कार्यक्रम भी मुख्तसर रूप में दे दिये थे. वह यह हैं—

लोकसेवा संघ का संक्षिप्त (मुख्तसर) प्रोग्राम

यह संघ हर सवाल पर रचनात्मक दृष्टिकोन से नज़र डालेगा और शक्ति भर कोशिश करेगा कि इस का कोई मेम्बर किसी तरह की पार्टीबन्दी या पालटिक्स में न पड़े.

यह संघ पार्टियों के आपसी चुनाव से बिलकुल अलग रहेगा और इसकी कोशिश यह होगी कि यह उन सब बातों से बचा रहे जो आपस में संघर्श, ईर्शा, द्वेश और नफ़रत पैदा करती हैं.

यह संघ एक तरफ़ तो कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, राश्ट्री स्वयं सेवक संघ और हिन्दू महासभा के ज़िम्मेदार लोगों से और दूसरी तरफ़ हकूमत के लीडरों से यह सविनय प्रार्थना करेगा कि वह गांधी चैम्सफोर्ड पैक्ट के आधार पर आपस में यह तय करलें कि न तो यह पार्टियाँ गवरमेन्ट के खिलाफ़ अपने आन्दोलन चलाने में कोई हिंसात्मक तरीक़े अपनाएँगीं और न गवरमेन्ट ही, अगर इन पार्टियों की तरफ़ से शान्तिमय तरीक़ों से काम हो तो, कोई हिंसात्मक तरीक़ा उनके खिलाफ़ बरतेगी.

इसके साथ ही साथ यह संघ उस अनन्त विनाशकारी संघर्श को रोकने में अपनी सारी ताक़त लगायेगा जो देस की राजनैतिक पार्टियाँ हकूमत की दौलत और ताक़त पर क़ब्ज़ा पाने के लिये करती हैं, जिस के संघर्श से जनता दुखी और पीड़ित रहती है और जो जनता की सम्पत्ति का नाश करता है और उसके खून की नदियाँ बहाता है.

(۴)

آچاریہ کرپلانی نے مجھ سےکہا تھا کہ میں اُنکی کاجکاری کمیٹی کے سامنے وہ پروگرام بھی رکھ دوں جو میں اِس نئے سنگھ کے سامنے رکھنا چاھتا ھوں . اِس لئے میں نے اپنے سجھاؤ میں 'لوک سیوا سنگھ' کے بنیادی اُصول و کاریہ کرم بھی مختصر روپ میں دیدئے تھے . وہ یہ ھیں —

لوک سیوا سنگھ کا سنچھپت (مختصر) پروگرام

یہ سنگھ ھر سوال پر رچناتمک درشٹی کون سے نظر ڈالے گا اور شکتی بھر کوشش کریگا کہ اِس کا کوئی ممبر کسی طرح کی پارٹی بندی یا پالٹکس میں نہ پڑے .

یہ سنگھ پارٹیوں کے آپسی چناؤ سے بالکل الگ رہے گا اور اِس کی کوشش یہ ھوگی کہ یہ اُن سب باتوں سے بچا رہے جو آپس میں سنگھرش' ایرشا دویش اور نفرت پیدا کرتی ھیں .

یہ سنگھ ایک طرف تو کمیونسٹ' سوشلسٹ' راشٹری سویم سیوک سنگھ اور ہندو مہاسبھا کے ذمہدار لوگوں سے اور دوسری طرف حکومت کے لیڈروں سے یہ سوینیہ پرارتھنا کریگا کہ وہ گاندھی چیمسفورڈ پیکٹ کے آدھار پر آپس میں یہ طے کرلیں کہ نہ تو یہ پارٹیاں گورنمنٹ کے خلاف اپنے آندولن چلانے میں کوئی ھنساتمک طریقے اپنائینگی اور نہ گورنمنٹ ھی' اگر اِن پارٹیوں کی طرف سے شانتی مے طریقوں سے کام ھو تو' کوئی ھنساتمک طریقہ اُنکے خلاف برتے گی .

اِس کے ساتھ ھی ساتھ یہ سنگھ اُس اننت وناش کاری سنگھرش کو روکنے میں اپنی ساری طاقت لگائے گا جو دیس کی راج نیتک پارٹیاں حکومت کی دولت اور طاقت پر قبضہ پانے کے لئے کرتی ھیں' جس سنگھرش سےجنتا دکھی اور پیڑت رھتی ھےاور جو جنتا کی سمپتی کا ناش کرتا ھے اور اُس کے خون کی ندیاں بہاتا ھے .

उस सुझाव पर ग़ौर करने के बाद काजकारी कमेटी ने नीचे लिखा ठहराव पास किया—

"इस कमेटी ने श्री सोख्ता जी के नीचे दिये ठहराव पर ग़ौर किया × × ×

(ठहराव ऊपर दिया जा चुका है)

वह कमेटी इस ठहराव के असूल को नहीं मानती.

लेकिन अगर श्री सोख्ता जी अपने इस ठहराव के आधार पर संघ बनालें तो इस कमेटी को ख़ुशी होगी और जब वह बन जायगा तब यह कमेटी निश्चय करेगी कि उस संघ के साथ उसका क्या सम्बन्ध होगा."

मुझे अफ़सोस है कि काजकारी कमेटी ने मेरे सुझाव को मंजूर नहीं किया मगर मैं उसका दिल से आभारी हूँ कि उसने मुझे एक नया संघ बना लेने की इजाज़त दे दी. इससे भी ज्यादा संतोश-जनक बात यह हुई कि उसके सेक्रेटरी साहब ने मुझे यह इतमीनान दिला दिया कि उनके संघ का जो मेम्बर चाहे वह बिना उस संघ से अलग हुए इस नये संघ में शामिल हो सकता है और ऐसी हालत में वह ख़ुशी से इस संघ के नियमों का पालन कर सकता है. इसके अलावा उन्होंने यह भी मुझे इतमीनान दिला दिया कि उनके संघ के सब मेम्बर नए संघ की योजनाओं में मुझे पूरा सहयोग दे सकेंगे. इस सबके बाद किसी तरह की पार्टीबन्दी का कोई सवाल ही नहीं रह जाता.

मेरी ख़ाहिश थी कि बापू की आख़री वसीयत को पूरा करने के लिये जो संघ उनके संघ के आधार पर बने उसका नाम 'लोक सेवक संघ' हो. लेकिन एक प्रान्त में दो संघ एक ही नाम के होना मुनासिब नहीं. इसलिये मैंने इस नये संघ का नाम उसी से मिलता जुलता 'लोक सेवा संघ' रक्खा है

اُس سجھاؤ پر غور کرنے کے بعد کاجکاری کمیٹی نے نیچے لکھا ٹھہراؤ پاس کیا —

'' اِس کمیٹی نے شری سوختہ جی کے نیچے دئے ٹھہراؤ پر غور کیا × × ×

(ٹھہراؤ اوپر دیا جا چکا ہے)

یہ کمیٹی اِس ٹھہراؤ کے اُصول کو نہیں مانتی .

لیکن اگر شری سوختہ جی اپنے اس ٹھہراؤ کے آدھار پر سنگھ بنا لیں تو اِس کمیٹی کو خوشی ہوگی اور جب وہ بن جائے گا تب یہ کمیٹی نشچے کریگی کہ اُس سنگھ کے ساتھ اُسکا کیا سمبندھ ہوگا . ''

مجھے افسوس ہے کہ کاجکاری کمیٹی نے میرے سجھاؤ کو منظور نہیں کیا مگر میں اُس کا دل سے آبھاری ہوں کہ اُسنے مجھے ایک نیا سنگھ بنا لینے کی اجازت دے دی. اس سے بھی زیادہ سنتوش جنک بات یہ ہوئی کہ اُسکے سکریٹری صاحب نے مجھے یہ اطمینان دلا دیا کہ اُنکے سنگھ کا جو ممبر چاہے وہ بنا اُس سنگھ سے الگ ہوئے اس نئے سنگھ میں شامل ہو سکتا ہے اور ایسی حالت میں وہ خوشی سے اِس سنگھ کے نیموں کا پالن کر سکتا ہے . اِسکے علاوہ اُنھوں نے یہ بھی مجھے اطمینان دلا دیا کہ اُنکے سنگھ کے سب ممبر نئے سنگھ کی یوجناؤں میں مجھے پورا سہیوگ دے سکیں گے . اِس سب کے بعد کسی طرح کی پارٹی بندی کا کوئی سوال ہی نہیں رہ جاتا .

میری خواہش تھی کہ باپو کی آخری وصیت کو پورا کرنے کے لئے جو سنگھ اُنکے سنگھ کے آدھار پر بنے اُس کا نام 'لوک سیوک سنگھ' ہو . لیکن ایک پرانت میں دو سنگھ ایک ہی نام کے ہونا مناسب نہیں . اِسلئے میں نے اِس نئے سنگھ کا نام اُسی سے ملتا

दोनों तरीक़ों में से अपनी रुचि और सिद्धान्त के अनुसार जो तरीक़ा मुनासिब समझे बनाले.

सेवापुरी आश्रम और इस संघ के पास जितना सामान और सम्पत्ति है वह पार्लीमेन्टरी विभाग की सम्पत्ति रहेगी और पार्लीमेन्टरी विभाग के मेम्बर अपनी ज़रूरतों के लिये रुपये ख़ुद जमा करेंगे.

ग़ैर-पार्लिमेन्टरी विभाग वाले काँगरेस की किसी पदवी या ओहदे के लिये खड़े न होंगे, न किसी तरह से भी किसी पार्टी या चुनाव में हिस्सा लेंगे.

इसी तरह पार्लिमेन्टरी विभाग के मेम्बर ग़ैर-पार्लिमेन्टरी विभाग की काजकारी कमेटी के मेम्बर नहीं बनेंगे पर सहायक या सलाहकारों के रूप में इनके साथ सदा मिल जुल कर काम करेंगे.

चूँकि इन दोनों विभागों का उद्देश एक है, यानी महात्मा गांधी के सिद्धान्तों और योजनाओं को उनके पूरे सामाजिक, आरथिक और राजनैतिक रूप में पूरा करना, इसलिये इन दोनों विभागों में से किसी में ऐसे लोग नहीं शामिल किये जायेंगे जो मशीनराज, फ़ौजी केन्द्रीकरन, प्रतिस्पर्धा या ख़ुद अपने या दूसरे देसों का हैवानी शोशन करने को ठीक समझते हों.

साथ साथ इन दोनों विभागों के मेम्बर अपने सामाजिक, राजनैतिक या आरथिक उद्देशों को पूरा करने के जतन में सदा महात्मा गांधी के बताए हुए रास्तों पर चलेंगे.

इस कमेटी को पूरी उम्मीद है कि उसने अपने इस ठहराव में जिस तरह अपने मेम्बरों में काम बांटा है उससे उनकी मिलजुल कर काम करने की ताक़त बढ़ेगी, और हमारे समाज में इनसानियत

دونوں طریقوں میں سے اپنی رچی اور سدھانت کے انوسار جو طریقہ مناسب سمجھے بنالے .

سیوا پوری آشرم اور اِس سنگھ کے پاس جتنا سامان اور سمپتی ہے وہ پارلیمنٹری وبھاگ کی سمپتی رہیگی اور پارلیمنٹری وبھاگ کے ممبر اپنی ضرورتوں کے لئے روپیہ خود جمع کرینگے .

غیر پارلیمنٹری وبھاگ والے کانگریس کی کسی پدوی یا عہدے کے لئے کھڑے نہ ہوں گے' نہ کسی طرح سے بھی کسی پارٹی یا چناؤ میں حصہ لینگے .

اِسی طرح پارلیمنٹری وبھاگ کے ممبر غیر پارلیمنٹری وبھاگ کی کاج کاری کمیٹی کے ممبر نہیں بنینگے پر سہایک یا صلح کاروں کے روپ میں اِنکے ساتھ سدا مل جلکر کام کرینگے .

چونکہ اِن دونوں وبھاگوں کا اُدیش ایک ہے' یعنی مہاتما گاندھی کے سدھانتوں اور یوجناؤں کو اُنکے پورے ساماجک' آرتھک اور راج نیتک روپ میں پورا کرنا' اِس لئے اِن دونوں وبھاگوں میں سے کسی میں ایسے لوگ نہیں شامل کئے جائینگے جو مشین راج' فوجی کیندری کرن' پرتسپردھا یا خود اپنے یا دوسرے دیسوں کا حیوانی شوشن کرنے کو ٹھیک سمجھتے ہوں .

ساتھ ساتھ اِن دونوں وبھاگوں کے ممبر اپنے ساماجک' راج نیتک یا آرتھک اُدیشوں کو پورا کرنے کے جتن میں سدا مہاتما گاندھی کے بتائے ہوئے راستوں پر چلینگے .

اس کمیٹی کو پوری اُمید ہے کہ اُسنے اپنے اِس ٹھہراؤ میں جسطرح اپنے ممبروں میں کام بانٹا ہے اُس سے اُنکی مل جل کر کام کرنے کی طاقت بڑھے گی اور ہمارے سماج میں انسانیت اور راج

इस काजकारी कमेटी की बैठक में भी मैंने यह चाहा कि बापू के विधान का बुनियादी ख़याल सामने रक्खा जाय और उस संघ की काजकारी कमेटी के मेम्बर केवल वह लोग बनाए जायँ जो हकूमत और काँगरेस से बाहर रहकर काम करना पसन्द करते हों. लेकिन इस कोशिश में भी मुझे कामयाबी न हुई.

अलग संगठन बना लेना कोई मुशकिल बात न थी. मगर इसमें पार्टीबन्दी के दोशों के पैदा हो जाने का डर था. बेहतर यह था कि कोई समझौते की सूरत निकल आए. आख़िरकार बहुत कोशिशों के बाद एक सूरत नजर आई जिसे मैंने एक ठहराव के रूप में लोक सेवक संघ की काजकारी कमेटी के सामने रक्खा. वह नीचे देता हूँ.

मेरा ठहराव

महात्मा गांधी के रचनात्मक प्रोग्राम को ज़्यादा अच्छी तरह चलाने के लिये यह मुनासिब मालूम होता है कि इस संघ के मेम्बरों में काम इस तरह बाँट दिया जाय कि वह इसे अपनी रुचि व सिद्धान्तों के मुताबिक़ ख़ूबी से चला सकें.

इसलिये यह कमेटी यह फ़ैसला करती है कि रचनात्मक योजनाओं का सारा क्षेत्र दो हिस्सों में बाँट दिया जाय. एक पार्लीमेन्टरी और दूसरा ग़ैर-पार्लीमेन्टरी. पार्लीमेन्टरी काम उन मेम्बरों के सुपुर्द कर दिया जाय जो हकूमत और काँगरेस के अन्दर रहकर काम करना चाहते हैं.

इन में से दोनों विभाग एक दूसरे के पूरक व सहायक रहेंगे और अपने अपने सिद्धान्तों के अन्दर रहते हुए जहाँ तक हो सकेगा मिल जुलकर काम करेंगे.

यह कमेटी अपने संघ को पूरी आज़ादी देती है कि वह इन

اِس کاج کاری کمیٹی کی بیٹھک میں بھی میں نے یہ چاہا کہ باپو کے ودھان کا بنیادی خیال سامنے رکھا جائے اور اُس سنگھ کی کاج کاری کمیٹی کے ممبر کیول وہ لوگ بنائے جائیں جو حکومت اور کانگریس سے باہر رہ کر کام کرنا پسند کرتے ہوں ۔ لیکن اِس کوشش میں بھی مجھے کامیابی نہ ہوئی ۔

الگ سنگٹھن بنا لینا کوئی مشکل بات نہ تھی ۔ مگر اِس میں پارٹی بندی کے دوشوں کے پیدا ہو جانے کا ڈر تھا ۔ بہتر یہ تھا کہ کوئی سمجھوتے کی صورت نکل آئے ۔ آخرکاربہت کوششوں کے بعد ایک صورت نظر آئی جسے میں نے ایک ٹھہراو کے روپ میں لوک سیوک سنگھ کی کاج کاری کمیٹی کے سامنے رکھا ۔ وہ نیچے دیتا ہوں —

میرا ٹھہراو

مہاتما گاندھی کے رچناتمک پروگرام کو زیادہ اچھی طرح چلانے کے لئے یہ مناسب معلوم ہوتا ہے کہ اِس سنگھ کے ممبروں میں کام اِسطرح بانٹ دیا جائے کہ وہ اِسے اپنی رچی و سدھانتوں کے مطابق خوبی سے چلا سکیں ۔

اسلئے یہ کمیٹی یہ فیصلہ کرتی ہے کہ رچناتمک یوجناؤں کا سارا چھیتر دو حصوں میں بانٹ دیا جائے ۔ ایک پارلیمنٹری اور دوسرا غیر پارلیمنٹری ۔ پارلیمنٹری کام اُن ممبروں کے سپرد کر دیا جائے جو حکومت اور کانگریس کے اندر رہ کر کام کرنا چاہتے ہیں ۔

اِن میں سے دونوں وبھاگ ایک دوسرے کے پورک و سہایک رہینگے اور اپنے اپنے سدھانتوں کے اندر رہتے ہوئے جہاں تک ہو سکے گا مل جلکر کام کرینگے ۔

یہ کمیٹی اپنے سنگھ کو پوری آزادی دیتی ہے کہ وہ اِن

अगर यह कमेटी उसके बुनियादी असूल को न भी मानती मगर उसकी गहराइयों पर नज़र डालती तो वह इससे अपने संगठन और देस को बहुत फ़ायदा पहुँचा सकती थी. मगर उसकी कठिनाई यह थी कि वह बापू के अहिन्सात्मक रास्ते को और उनके स्वराज के सपने को एक अनहोनी और गई दुनिया की बात समझती थी. इसलिये उससे कोई ऐसी उम्मीद करना बेकार था.

वर्धा की रचनात्मक कानफ़रेन्स के सामने यह दिक़्क़त न थी. इसलिये मेरा ख़याल था कि वह इस योजना का स्वागत करेगी और इससे पूरा फ़ायदा उठायगी. इसीलिये मैं इस कानफ़रेन्स में गया और इस विशय का एक छोटा सा मज़मून छपवा कर साथ ले गया था कि उसे वहाँ बटवा कर लोगों का ध्यान इस तरफ़ ख़ास तौर से दिला दूंगा. मगर यह सब बेकार हुआ. वहाँ जाकर देखा कि कानफ़रेन्स की बागें हकूमत और काँगरेस के नेताओं के हाथ में हैं, और उन्होंने ऐसी हवा पैदा कर दी है कि जिससे 'लोक सेवक संघ' जैसी योजना की तरफ़ किसी का ध्यान भी न जा सकता था. मुझे अपना मज़मून लेकर लौट आना पड़ा क्योंकि इसके वहाँ बटवाने से सिवा बेलुत्फ़ी पैदा होने के और कोई फ़ायदा नहीं हो सकता था.

जब इस सूबे में 'लोक सेवक संघ' बनाने के लिये कानपुर में कानफ़रेन्स हुई तो उसमें भी हकूमत और काँगरेस का पूरा हाथ था और वह यह चाहते थे कि बापू के विधान के बुनियादी असूल उनके नए संघ का आधार न बनें. मैंने बहुत कोशिश करके उस कानफ़रेन्स के प्रस्ताव में यह शामिल करा दिया कि जो विधान इस संघ के लिये बने वह जहाँ तक हो सके बापू के लोक सेवक संघ के आधार पर बने. इस कानफ़रेन्स ने कोई विधान तैयार नहीं किया बल्कि अपनी काजकारी कमेटी को यह अधिकार दे दिया कि वह इस संघ का विधान बनाले.

اگر یه کمیٹی اُس کے بنیادی اُصول کو نه بھی مانتی مگر اُسکی گہرائیوں پر نظر ڈالتی تو وہ اس سے اپنے سنگٹھن اور دیس کو بہت فائدہ پہنچا سکتی تھی . مگر اُسکی کٹھنائی یه تھی که وہ باپو کے اہنساتمک راستے کو اور اُنکے سوراج کے سپنے کو ایک انہونی اور گئی دنیا کی بات سمجھتی تھی . اسلئے اُس سے کوئی ایسی اُمیدکرنا بیکار تھا .

وردھا کی رچناتمک کانفرنس کے سامنے یه دقت نه تھی . اِسلئے میرا خیال تھا که وہ اس یوجنا کا سواگت کریگی اور اِس سے پورا فائدہ اُٹھائیگی اِسلئے میں اِس کانفرنس میں گیا اور اِس وشے کا ایک چھوٹا سا مضمون چھپوا کر ساتھ لے گیا تھا که اُسے وہاں بٹوا کر لوگوں کا دھیان اِسطرف خاص طور سے دلا دونگا' مگر یه سب بیکار ہوا . وہاں جاکر دیکھا که کانفرنس کی باگیں حکومت اور کانگریس کے نیتاؤں کے ہاتھ میں ہیں' اور اُنہوں نے ایسی ہوا پیدا کر دی ہے که جس سے 'لوک سیوک سنگھ' جیسی یوجنا کی طرف کسی کا دھیان بھی نه جا سکتا تھا . مجھے اپنا مضمون لیکر لوٹ آنا پڑا کیونکه اِسکے وہاں بٹوانے سے سوائے بےلطفی پیدا ہونے کے اور کوئی فائدہ نہیں ہو سکتا تھا .

جب اس صوبے میں 'لوک سیوک سنگھ' بنانے کے لئے کانپور میں کانفرنس ہوئی تو اُس میں بھی حکومت اور کانگریس کا پورا ہاتھ تھا' اور وہ یه چاہتے تھے که باپو کے ودھان کے بنیادی اُصول اُن کے نئے سنگھ کا آدھار نه بنیں . میں نے بہت کوشش کر کے اُس کانفرنس کے پرستاؤ میں یه شامل کرادیا که جو ودھان اِس سنگھ کے لئے بنے وہ جہاں تک ہوسکے باپو کے لوک سیوک سنگھ کے آدھار پر بنے . اِس کانفرنس نے کوئی ودھان تیار نہیں کیا بلکه اپنی کاج کاری کمیٹی کو یه ادھیکار دے دیا که وہ اس سنگھ کا ودھان بنا لے .

ने ध्यान नही दिया और अगर दिया भी तो इतना अदल बदल कर दिया कि जिस से उनके असूल व योजना का बापू के असूल व योजना से कोई सम्बन्ध ही न रह गया.

इन्हीं सब बातों ने देस की ऐसी संकट की अवस्था में बापू के मिशन को, जो देस के दुखों व मुसीबतों का लासानो इलाज है, देस की आँखों से ओझल कर दिया है. इस वास्ते इसे कामयाब बनाने के लिये ख़ास ज़रूरत इस बात की है कि कोई आदमी या दल यह प्रन करले कि वह काँगरेस की पार्टी बन्दियों से और हकूमत की दौलत व ताक़त के मोह जाल से बाहर रहेगा. या कोई ऐसा तरीक़ा निकले कि ये सब दल एक संगठन में आकर और एक उद्देश को सामने रखकर अपने अपने मैदान में उसे पूरा करने का प्रोग्राम बनालें और अपने अपने असूलों के अन्दर रहते हुए एक दूसरे को सहयोग दें और सहायता करें.

मेरे दिल में शुरू से ही यह ख़याल है कि देस में कोई ऐसा संगठन बन जाय जो बापू के बताए हुए रास्ते पर चल कर जनता को जाग्रत व संगठित कर सके. राजकाजी पारटियों के लिये, जिनके दिलों में हकूमत क दौलत व ताक़त का मोह होता है, मिलकर काम कर सकना बहुत मुशकिल हो जाता है. लेकिन बापू के उन प्रेमियों के लिये जिन्हें यह मोह नहीं, आपस में मिल कर ऐसा प्रोग्राम बना लेना मुशकिल नहीं होना चाहिये कि वह अपने अपने असूलों के अन्दर रहते हुए भी एक दूसरे को दिल से सहयोग दे सकें. बापू का जीवन तो इस तरह के सहयोग की एक ज़िन्दा तसवीर है. अगर उनकी मिसाल हम अपने सामने रक्खेंगे तो हम अपने इस प्रयत्न को आसानी से सफल बना सकते हैं.

आल इन्डिया काँगरेस कमेटी ने जब बापू के इस प्रस्ताव का तोड़ मरोड़ कर ख़ातमा कर दिया तो मुझे बहुत दुख हुआ था.

نے دھیان نہیں دیا اور اگر دیا بھی تو اتنا آدل بدل کر دیا کہ جس سے اُنکے اصول و یوجنا کا باپو کے اصول و یوجنا سے کوئی سمبندھ ھی نہ رہ گیا .

اِنھیں سب باتوں نے دیس کی ایسی سنکٹ کی اوستھا میں باپو کے مشن کو، جو دیس کے دکھوں ومصیبتوں کا لاثانی علاج ہے، دیس کی آنکھوں سے اوجھل کر دیا ھے . اس واسطے اِسے کامیاب بنانے کے لئے خاص ضرورت اِس بات کي ھے کہ کوئی آدمی یا دل یہ پرن کرلے کہ وہ کانگریس کی پارٹی بندیوں سے اور حکومت کی دولت و طاقت کے موہ جال سے باھر رھیگا . یا کوئی ایسا طریقہ نکلے کہ یہ سب دل ایک سنگھٹن میں آکر اور ایک اُدیش کو سامنے رکھکر اپنے اپنے میدان میں اُسے پورا کرنے کا پروگرام بنالیں اور اپنے اپنے اصولوں کے اندر رھتے ھوئے ایک دوسرے کو سہیوگ دیں اور سہایتا کریں .

میرے دل میں شروع سے ھی یہ خیال ھے کہ دیس میں کوئی ایسا سنگٹھن بن جائے جو باپو کے بتائے ھوئے راستے پر چل کر جنتا کو جاگرت و سنگٹھت کر سکے . راجکاجی پارٹیوں کے لئے، جنکے دلوں میں حکومت کی دولت و طاقت کا موہ ھوتا ھے، ملکر کام کر سکنا بہت مشکل ھو جاتا ھے . لیکن باپو کے اُن پریمیوں کے لئے جنھیں یہ موہ نہیں، آپس میں ملکر ایسا پروگرام بنا لینا مشکل نہیں ھونا چاھئے کہ وہ اپنے اپنے اصولوں کے اندر رھتے ھوئے بھی ایک دوسرے کو دل سے سہیوگ دے سکیں . باپو کا جیون تو اس طرح کے سہیوگ کی ایک زندہ تصویر ھے . اگر اُنکی مثال ھم اپنے سامنے رکھینگے تو ھم اپنے اِس پریتن کو آسانی سے سپھل بنا سکتے ھیں .

آل انڈیا کانگریس کمیٹی نے جب باپو کے اس پرستاؤ کا توڑ مروڑ کر خاتمہ کردیا تو مجھے بہت دکھ ھوا تھا .

अहिन्सात्मक इनक़लाब का रास्ता

(भाई मंज़र अली सोख़्ता)

(३)

इस सम्बन्ध में एक बड़ा सवाल यह उठता है कि अहिन्सात्मक इनक़लाब पैदा करने के लिये बापू ने जो अपने जीवन का सबसे बड़ा क़दम उठाया उसकी तरफ़ देस के किसी भी दल या संस्था का ध्यान क्यों न गया. हमारे ख़याल में उसकी वजह यह नहीं है कि देस की राजकाजी पारटियाँ बापू के विधान के महत्व को समझ नहीं सकीं. बल्कि वजह यह है कि बापू के स्वराज, उनके आदर्शों व असूलों में इन पारटियों का विश्वास नहीं है और वह अपने देस में पच्छिमी आदर्शों व असूलों का साम्राज जमाना चाहती हैं. इसलिये यह गिरोह 'लोक सेवक संघ' को असली रूप में नहीं अपना सकता. इनके बाद वह लोग हैं जो बापू के आदर्शों व असूलों में विश्वास तो रखते हैं लेकिन वह इस ख़याल में डूबे हुए हैं कि काँगरेस संगठन और हकूमत के अन्दर रहकर ही बापू के मिशन को ज़्यादा कामयाबी के साथ पूरा किया जा सकता है. तीसरा गिरोह उन रचनात्मक काजकर्ताओं का है जिन्हें काँगरेस व हकूमत की दौलत या ताक़त का कोई ख़ास मोह नहीं है और वह काँगरेस व हकूमत के दायरे से बाहर रहकर काम करना ठीक समझते हैं, लेकिन यह ज़्यादातर वह लोग हैं जिन्होंने राजनीत से बाहर रहकर काम किया है. इसलिये इनमें कोई ऐसा आदमी नहीं है जो इन्हें अपने पीछे चला सके और न इन्हें राजकाजी मैदान में काम करने का पुराना अनुभव है जो इस गाढ़े वक़्त में इनके आड़े आसके. यही कारन है कि बापू के 'लोक सेवक संघ' पर अब तक किसी

اهنساتمک انقلاب کا راستہ

(بھائی منظر علی سوختہ)

(٣)

اِس سمبندھ میں ایک بڑا سوال یہ اُٹھتا ہے کہ اھنساتمک انقلاب پیدا کرنے کے لئے باپو نے جو اپنے جیون کا سب سے بڑا قدم اُٹھایا اُسکی طرف دیس کے کسی بھی دل یا سنستھا کا دھیان کیوں نہ گیا. ھمارے خیال میں اُسکی وجہ یہ نہیں ہے کہ دیس کی راج کاجی پارٹیاں باپو کے ودھان کے مہتو کو سمجھ نہیں سکیں. بلکہ وجہہ یہ ہے کہ باپو کے سوراج، اُنکے آدرشوں و اصولوں میں اِن پارٹیوں کا وشواس نہیں ہے اور وہ اپنے دیس میں پچھمی آدرشوں و اصولوں کا سامراج جمانا چاھتی ھیں. اِسلئے یہ گروہ 'لوک سیوک سنگھ' کو اصلی روپ میں نہیں اپنا سکتا. اِنکے بعد وہ لوگ ھیں جو باپو کے آدرشوں و اصولوں میں وشواس تو رکھتے ھیں لیکن وہ اس خیال میں ڈوبے ہوئے ھیں کہ کانگریس سنگٹھن اور حکومت کے اندر رہ کر ھی باپو کے مشن کو زیادہ کامیابی کے ساتھ پورا کیا جا سکتا ہے. تیسرا گروہ اُن رچناتمک کاج کرتاؤں کا ہے جنہیں کانگریس و حکومت کی دولت یا طاقت کا کوئی خاص موہ نہیں ہے اور وہ کانگریس و حکومت کے دائرے سے باھر رہ کر کام کرنا ٹھیک سمجھتے ھیں، لیکن یہ زیادہ تر وہ لوگ ھیں جنھوں نے راج نیت سے باھر رہ کر کام کیا ہے. اِسلئے اِن میں کوئی آدمی ایسا نہیں ہے جو اِنھیں اپنے پیچھے چلا سکے اور نہ اِنھیں راج کاجی میدان میں کام کرنے کا پرانا انوبھو ہے جو اِس گاڑھے وقت میں اِنکے آڑے آسکے. یہی کارن ہے کہ باپو کے 'لوک سیوک سنگھ' پر اب تک کسی

वरदान साबित न हुई तो फिर जनता भी अमृत के बदले उसके लिये बिश साबित होगी या फिर मौत का सन्देश !

दुनिया की कोई हकूमत या सियासत जनता का पेट काट कर या जिन्दा इनसानों पर खाक डाल कर जिन्दा नहीं रह सकती— चाहे राजदार या राजनीतकार इस भेद को न समझें, इस सचाई को न जानें मगर इनक़लाब इसीलिये आते हैं और हकूमतों की काया पलट में फ़ितरत (प्रकृति) का यही मंशा काम करता है.

सोसाइटी की नई किताब

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृश्न दास

देश पिता महात्मा गांधी ने राजकाज के मैदान में क़दम रखते ही फ़िरक़ाबन्दी के ज़हरीले नतीजों और भीशन नुक़सानों का अन्दाज़ा कर लिया था. यही कारन था कि उन्हों ने अपने जीवन की आख़िरी साँस तक फ़िरक़ाबन्दी के ख़िलाफ़ लड़ाई जारी रक्खी.

इस पुस्तक में सन १९२१ से सन १९४८ तक गांधी जी ने साम्प्रदायिकता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब एक जगह जमा कर दिया गया है.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर से अपने दिल और दिमाग़ को साफ़ करे.

यह किताब हर हिन्दुस्तानी को ज़रूर पढ़नी चाहिये.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दो रुपया

मिलने का पता:— —मैनेजर 'नया हिन्द'

१४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद,

وردان ثابت نہ ہوئی تو پھر جنتا بھی امرت کے بدلے اُسکے لئے وِش ثابت ہوگی یا پھر موت کا سندیش !

دنیا کی کوئی حکومت یا سیاست جنتا کا پیٹ کاٹ کر یا زندہ اِنسانوں پر خاک ڈالکر زندہ نہیں رہ سکتی — چاہے راجدار یا راجنیت کار اِس بھید کو نہ سمجھیں، اس سچائی کو نہ جانیں مگر انقلاب اِسی لئے آتے ہیں اور حکومتوں کی کایا پلٹ میں فطرت (پرکرتی) کا یہی منشا کام کرتا ہے ۔

سوسائٹی کی نئی کتاب

فرقہ بندی پر باپو

سمپادک — شری شریکرشن داس

دیش پِتا مہاتما گاندھی نے راج کاج کے میدان میں قدم رکھتے ہی فرقہ بندی کے زہریلے نتیجوں اور بھیشن نقصانوں کا اندازہ کر لیا تھا ۔ یہی کارن تھا کہ اُنھوں نے اپنے جیون کی آخری سانس تک فرقہ بندی کے خلاف لڑائی جاری رکھی ۔

اِس پستک میں سن ۱۹۲۱ سے سن ۱۹۴۸ تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب ایک جگہ جمع کر دیا گیا ہے ۔

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصانوں کو سمجھے اور اِس زہر سے اپنے دل اور دماغ کو صف کر لے ۔

یہ کتاب ہر هندستانی کو ضرور پڑھنی چاهئے ۔

سندر جلد ۔ اچھا کاغد ۔ دو سو صفحے ۔ قیمت دو روپیہ ۔

ملنے کا پتہ :— —مینیجر 'نیا هند'

۱۴۵' مٹھی گنج' الہ آباد ۔

उसका धन दौलत लूट खसोट के और उसका तिक्का बोटी नोच नोच के अगर उस के साथ खेला गया तो यह प्रजा-परवरी नहीं, यह प्रजा के ऊपर ज़ुल्म है. यह समाज दोस्ती नहीं, यह समाज के साथ दुशमनी है.

हकूमत, जनता ही के टैक्स और चुंगी से मालदार बनती है, और जनता ही के ख़ून पसीने से जानदार बनती है. हकूमत का जीवन और भंडार, दोनों की आसूदगी जनता के धन मन से है.

फिर वह जनता को सुख क्यों नहीं पहुंचाती और ख़ुश क्यों नहीं रखती ?

जनता को ख़ुशहाल और ताक़तवर बनाना हकूमत का फ़र्ज़ है.

अगर किसी हकूमत की जनता ख़ुशहाल और ताक़तवर है यानी उसकी ख़ुशहाली और ताक़तवरी—अर्थ और जीवन के आनन्द के लिहाज़ से है तो उस हकूमत को यह हक़ है कि वह अपना सर बुलन्द करे यानी अपने ऊपर घमंड करे.

अगर किसी हकूमत की जनता बेकार, बदहाल, भूकी, नंगी और परेशान है तो उस हकूमत के लिये यह शर्म वाली बात है.

जनता को नंगा भूका रखकर अगर दुनिया को दिखलाया गया तो ऐसी जनता भी दुनिया की निगाह में ज़लील होगी और उसके साथ हकूमत भी !

क्या इस तरह की लूट मार और अत्याचार से कोई हकूमत अपना नाम या अपने लिये ऊँचा मुक़ाम हासिल कर सकती है.

मुहज़्ज़ब, मेहरबान और प्रजा पालक हकूमत जनता के लिये वरदान साबित हो सकती है—जिसके जवाब में उसकी वफ़ादार और जाँनिसार जनता हकूमत के जीवन के लिये अमृत साबित होगी. लेकिन अगर हकूमत अपनी जनता के हक़ में बरकत या

اُس کا دھن دولت لوٹ کھسوٹ کے اور اُس کا تکا بوٹی نوچ نوچ کے اگر اُس کے ساتھ کھیلا گیا تو یہ پرجا پروری نہیں' یہ پرجا کے اوپر ظلم ہے . یہ سماج دوستی نہیں' یہ سماج کے ساتھ دشمنی ہے .

حکومت' جنتا ہی کے ٹیکس اور چنگی سے مالدار بنتی ہے' اور جنتا ہی کے خون پسینے سے جاندار بنتی ہے . حکومت کا جیون اور بھنڈار' دونوں کی آسودگی جنتا کے دھن من سے ہے .

پھر وہ جنتا کو سکھ کیوں نہیں پہونچاتی اور خوش کیوں نہیں رکھتی ؟

جنتا کو خوشحال اور طاقتور بنانا حکومت کا فرض ہے .

اگر کسی حکومت کی جنتا خوشحال اور طاقتور ہے یعنی اُسکی خوشحالی اور طاقتوری — آرتھ اور جیون کے آنند کے لحاظ سے ہے تو اُس حکومت کو یہ حق ہے کہ وہ اپنا سر بلند کرے یعنی اپنے اوپر گھمنڈ کرے .

اگر کسی حکومت کی جنتا بے کار' بدحال' بھوکی' ننگی اور پریشان ہے تو اُس حکومت کے لئے یہ شرم والی بات ہے .

جنتا کو ننگا بھوکا رکھکر اگر دنیا کو دکھلایا گیا تو ایسی جنتا بھی دنیا کی نگاہ میں ذلیل ہوگی اور اُسکے ساتھ حکومت بھی !

کیا اِس طرح کی لوٹ مار اور اتیاچار سے کوئی حکومت اپنا نام یا اپنے لئے اُونچا مقام حاصل کر سکتی ہے .

مہذب' مہربان اور پرجا پالک حکومت جنتا کے لئے وردان ثابت ہوسکتی ہے — جسکے جواب میں اُسکی وفادار اور جاں نثار جنتا حکومت کے جیون کے لئے امرت ثابت ہوگی . لیکن اگر حکومت اپنی جنتا کے حق میں برکت یا

जानना चाहिये कि जनता की जान का नुक़सान, हकूमत का अपना नुक़सान है. इसलिये यह कहना सही है कि कोई भी हकूमत जनता की जान या उसके माल का नुक़सान करके असल में अपना ही नुक़सान करती है. जो हकूमत जनता पर ज़ुल्म ज़्यादती करती है वह अपने साथ दुशमनी करती और अपने पाँव में कुल्हाड़ी मारती है.

हकूमत के लिये नेक सलाह यह है कि वह जनता की अधिक से अधिक रक्षा और सेवा करके अच्छे से अच्छा उसका पालन करे और अच्छे से अच्छा उस को खिला पिला कर अधिक से अधिक उस को शक्ति पहुँचाए, ख़ुशहाल बनाए और आदर्श उसका ऊँचा उठाए—अच्छी उसकी ख़बरदारी रक्खे, अच्छा उस के साथ सदाचार बरते और व्योहार बढ़ाए.

यही वह सुन्दर साधन हैं जो जनता को वफ़ादार और शुभ-चिन्तक बनाने में मददगार साबित होते हैं. जनता की वफ़ादारी और भक्ति से ही हकूमत को तरक़्क़ी, ख़ुशहाली और जीत नसीब होती है. और इसी की हिम्मत और बहुमत पर हकूमत अपने लक्ष को पहुंचती है.

लेकिन वह बहुमत की बरकत कब हासिल होती है ?

जब सबकी आवाज़ एक होती है.

आवाज़ सबकी एक तब ही होती है जब सबको एकसा आराम और आनन्द मिलता है, सामान और राशन मिलता है.

अगर जनता को ताक़त और शक्ति पहुंचाने की जगह दिन ब दिन कमज़ोर किया जाय, उसको ऊँचा उठाने के बदले नीचा दिखाया जाय तो यह कमज़ोरी और यह गिरावट जनता की नहीं ख़ुद हकूमत की है, क्योंकि हकूमत ही का दूसरा नाम "जनराज" है, या "जनराज" को दूसरे शब्दों में हकूमत कहते हैं.

جاننا چاھئے کہ جنتا کی جان کا نقصان، حکومت کا اپنا نقصان ھے . اِس لئے یہ کہنا صحیح ھے کہ کوئی بھی حکومت جنتا کی جان یا اُس کے مال کا نقصان کر کے اصل میں اپنا ھی نقصان کرتی ھے . جو حکومت جنتا پر ظلم زیادتی کرتی ھے وہ اپنے ساتھ دشمنی کرتی اور اپنے پاؤں میں کلہاڑی مارتی ھے .

حکومت کے لئے نیک صلاح یہ ھے کہ وہ جنتا کی ادھک سے ادھک رکشا اور سیوا کر کے اچھے سے اچھا اُس کا پالن کرے اور اچھے سے اچھا اُس کو کھلا پلا کر ادھک سے ادھک اسکو شکتی پہونچائے، خوش حال بنائے اور آدرش اُس کا اُونچا اُٹھائے—اچھی اس کی خبرداری رکھے، اچھا اُس کے ساتھ سداچار برتے اور ویوھار بڑھائے .

یہی وہ سندر سادھن ھیں جو جنتا کو وفادار اور شبھہ چنتک بنانے میں مددگار ثابت ھوتے ھیں . جنتا کی وفاداری اور بھکتی سے ھی حکومت کو ترقی، خوشحالی اور جیت نصیب ھوتی ھے . اور اِسی کی ھمت اور بہومت پر حکومت اپنے لکش کو پہونچتی ھے .

لیکن وہ بہومت کی برکت کب حاصل ھوتی ھے ؟

جب سب کی آواز ایک ھوتی ھے .

آواز سب کی ایک تب ھی ھوتی ھے جب سبکو ایکسا آرام اور آنند ملتا ھے، سامان اور راشن ملتا ھے .

اگر جنتا کو طاقت اور شکتی پہونچانے کی جگہ دن بدن کمزور کیا جائے، اُسکو اُونچا اُٹھانے کے بدلے نیچا دکھایا جائے تو یہ کمزوری اور یہ گراوٹ جنتا کی نہیں، خود حکومت کی ھے، کیونکہ حکومت ھی کا دوسرا نام " جن راج " ھے، یا " جن راج " کو دوسرے شبدوں میں حکومت کہتے ھیں .

केवल भाशन ही भशान से जनता न पलती है, न वह ऊँची ही उठ सकती है.

केवल बातों ही बातों से न उसका पेट भरता है. न वह ताक़त ही पा सकती है और न ख़याली घोड़ों से वह अपनी मंज़िल पार कर सकती है.

बल्कि कार्य रूप में हकूमत को,

जनता के पालन पोशन का शुभ प्रबंध करना पड़ेगा और उसके रहन सहन का अच्छा इन्तज़ाम,

उसकी तन्दुरुस्ती का अधिक ख़याल रखना पड़ेगा और उसकी ज़िन्दगी की ख़ासी देख भाल,

उसकी जिस्मानी और दिमाग़ी शक्तियों को उभारना और चमकाना—यह सब हकूमत ही के काम हैं—लेकिन

यह न सिर्फ़ ऐसे काम हैं जिन पर हकूमत सरसरी तौर पर तवज्जह दे बल्कि उसके ज़िम्मे फ़र्ज़ हैं. और ऐसे फ़र्ज़ जिन पर ग़फ़लत बरतने से या जिनको पूरा न करने से उसके ऊपर ग़ैर-ज़िम्मेदारी का दोश आता है और उससे पूछ ताछ की जा सकती है. यह उसकी पोज़ीशन के लिहाज़ से हलकी सी बात है. इसलिये अच्छा यह है कि वह ऐसा मौक़ा न आने दे.

जनता जितनी तन्दुरुस्त, मज़बूत, ख़ुशहाल और ताक़तवर होगी—उतनी ही तन्दुरुस्त, मज़बूत, ख़ुशहाल और ताक़तवर हकूमत होगी वरना दुबली पतली, काली पीली और भूकी जनता से हकूमत का नाम क्या रोशन हो सकता है? और क्या वह उसके काम आ सकती है?

उसकी मिसाल तो बिलकुल ऐसी है जैसे फ़ालिज पड़ा हुआ अधमरे शरीर का एक इनसानी ढेर, जो किसी काम का नहीं, दूसरों के लिये भी एक मुसीबत और बोझ.

کیول بھاشن ہی بھاشن سے جنتا نہ پلتی ہے، نہ وہ اونچی ہی اُٹھ سکتی ہے۔

کیول باتوں ہی باتوں سے نہ اُس کا پیٹ بھرتا ہے، نہ وہ طاقت ہی پا سکتی ہے اور نہ خیالی گھوڑوں سے وہ اپنی منزل پار کر سکتی ہے۔

بلکہ کاریہ روپ میں حکومت کو،

جنتا کے پالن پوشن کا شبھ پربندھ کرنا پڑیگا اور اُسکے رہن سہن کا اچھا انتظام،

اُسکی تندرستی کا ادھک خیال رکھنا پڑیگا اور اُسکی زندگی کی خاصی دیکھ بھال،

اُسکی جسمانی اور دماغی شکتیوں کو اُبھارنا اور چمکانا— یہ سب حکومت ہی کے کام ھیں—لیکن

یہ نہ صرف ایسے کام ھیں جن پر حکومت سرسری طور پر توجہ دے بلکہ اُس کے ذمے فرض ھیں۔ اور ایسے فرض جن پر غفلت برتنے سے یا جن کو پورا نہ کرنے سے اُس کے اُوپر غیر ذمےداری کا دوش آتا ہے اور اُس سے پوچھ تاچھ کی جا سکتی ہے۔ یہ اُس کے پوزیشن کے لحاظ سے ھلکی سی بات ہے۔ اسلئے اچھا یہ ہے کہ وہ ایسا موقع نہ آنے دے۔

جنتا جتنی تندرست، مضبوط، خوشحال اور طاقتور ھوگی— اُتنی ہی تندرست، مضبوط، خوشحال اور طاقتور حکومت ھوگی، ورنہ دبلی پتلی، کالی پیلی اور بھوکی جنتا سے حکومت کا نام کیا روشن ہو سکتا ہے؟ اور کیا وہ اُس کے کام آسکتی ہے؟

اُس کی مثال تو بالکل ایسی ہے جیسے فالج پڑا ہوا ادھ مرے شریر کا ایک انسانی ڈھیر، جو کسی کام کا نہیں، دوسروں کے لئےبھی ایک مصیبت اور بوجھ،

हकूमत की ज़िन्दगी जनता से

(भाई अब्दुल हलीम अन्सारी)

इस चीज़ को कभी न भूलना चाहिये कि जनता हकूमत की जान और शक्ति होती है. अगर जनता ज़िन्दा और बाक़ी है तो हकूमत ज़िन्दा और बाक़ी है—अगर जनता ज़िन्दा और बाक़ी नहीं तो हकूमत कब ज़िन्दा और बाक़ी रह सकती है ?

हकूमत को अपनी ज़िन्दगी बाक़ी रखने के लिये अपनी शान क़ायम और अपना निशान ऊँचा रखने के लिये जनता को ज़िन्दा और बाक़ी रखना पड़ेगा. क्योंकि उसी से हकूमत की शान है और वही हकूमत की अलमबरदार (निशानची) है—अगर कमज़ोरी के कारन उस में खड़े रहने की ताब और ताक़त न हो या उसके बाज़ुओं में जान और शक्ति न हो तो वह गिर पड़ेगी. जब वह गिर पड़ेगी तो हकूमत का झंडा कब खड़ा रह सकेगा—झंडा तो जनता के हाथ में है.

हकूमत की शान भी बाक़ी न रह सकेगी—अगर जनता को मज़बूत, तन्दुरुस्त और ख़ुशहाल न रक्खा गया—और,

उसके कैरेक्टर को मज़बूत न किया गया.

उसके सदाचार को ख़ूबसूरत न बनाया गया.

उसके आदर्श को ऊँचा न उठाया गया.

यह तमाम काम हकूमत के ज़िम्मे हैं और जनता के गुनगान से ही हकूमत की शान है लेकिन वही अगर इनसानी और अख़लाक़ी गुनों से कोरी है तो ऐसी दशा में हकूमत के लिये अपनी शान और महानता की कल्पना केवल एक सपना !

حکومت کی زندگی جنتا سے

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

اِس چیز کو کبھی نہ بھولنا چاھئے کہ جنتا حکومت کی جان اور شکتی ھوتی ھے . اگر جنتا زندہ اور باقی ھے تو حکومت زندہ اور باقی ھے—اگر جنتا زندہ اور باقی نہیں تو حکومت کب زندہ اور باقی رہ سکتی ھے ؟

حکومت کو اپنی زندگی باقی رکھنے کے لئے اپنی شان قایم اور اپنا نشان اُونچا رکھنے کے لئے جنتا کو زندہ اور باقی رکھنا پڑے گا . کیونکہ اُسی سے حکومت کی شان ھے اور وھی حکومت کی علمبردار (نشانچی) ھے—اگر کمزوری کے کارن اُس میں کھڑے رھنے کی تاب اور طاقت نہ ھو یا اُسکے بازؤوں میں جان اور شکتی نہو تو وہ گر پڑیگی . جب وہ گر پڑیگی تو حکومت کا جھنڈا کب کھڑا رہ سکے گا—جھنڈا تو جنتا کے ھاتھ میں ھے .

حکومت کی شان بھی باقی نہ رہ سکے گی—اگر جنتا کو مضبوط، تندرست اور خوشحال نہ رکھا گیا—اور،

اُسکے کیریکٹر کو مضبوط نہ کیا گیا .

اُسکے سداچار کو خوبصورت نہ بنایا گیا .

اُسکے آدرش کو اُونچا نہ اُٹھایا گیا .

یہ تمام کام حکومت کے ذمے ھیں اور جنتا کے گن گان سے ھی حکومت کی شان ھے لیکن وھی اگر انسانی اور اخلاقی گنوں سے کوری ھے تو ایسی دشا میں حکومت کے لئے اپنی شان اور مہانتا کی کلپنا کیول ایک سپنا !

जंग में नहीं अमन में, हिंसा में नहीं अहिंसा में दिखाई देता है. चरखा, खद्दर और गाँव के उद्योग धंदों के हम ज़बरदस्त हामी हैं. साइन्सी कल कारखानों और घरेलू दस्तकारियों में हम एक टिकाऊ समतोल चाहते हैं. आजकल का मशीन राज हमारी निगाह में करोड़ों जनता के माली और इखलाक़ी जीवन के लिये एक श्राप है. हम दुनिया से फ़ौजों को भी खतम हुआ देखना चाहते हैं. राजनीत और अर्थशास्त्र दोनों को फिर से हम सदाचार की नींवों पर क़ायम करना चाहते हैं. यह है थोड़े से शब्दों में 'नया हिन्द' की क़ौमी और अंतरक़ौमी नीत. इस तरह देस की बदलती हुइ हालतों में 'नया-हिन्द' धर्म, समाज और राजकाज तीनों में निडर और बेलाग होकर अपना फ़र्ज़ अदा करने का इरादा रखता है.

उर्दू, हिन्दी या हिन्दुस्तानी के जो लेखक या कवि 'नया हिन्द' के मिशन से इत्तफ़ाक़ रखते हों उनसे हमारी प्रार्थना है कि वह हमारा हाथ बटावें, बिना माँगे अपने क़लम से 'नया हिन्द' की मदद करें और उसे जनता की तालीम का एक अधिक उपयोगी साधन बनाएं

'नया हिन्द' के सब प्रेमियों से हमारी माँग है कि वह जहाँ भी हों 'नया हिन्द' के प्रचार के बढ़ाने में हमें दिल खोलकर मदद दें. 'नया हिन्द' इस समय हर महीने लगभग डेढ़ हज़ार छप रहा है. सालाना घाटा बीस हज़ार रुपए के क़रीब है. हमें विश्वास है कि अगर 'नया हिन्द' के गाहक और उसके प्रेमी नए गाहक बढ़ाने में भरसक मदद दें और हर गाहक या हर प्रेमी यह इरादा करले कि वह हर महीने कम से कम एक नया गाहक 'नया हिन्द' को दे देगा तो हमारा यह घाटा एक साल के अन्दर आसानी से पूरा हो सकता है और 'नया हिन्द' अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है.

१-५-५१ —सुन्दरलाल

جنگ میں نہیں امن میں' ھنسا میں نہیں اھنسا میں دکھائی دیتا ھے ۔ چرخہ' کھدر اور گاؤں کے اُدیوگ دھندوں کے ھم زبردست حامی ھیں ۔ سائنسی کل کارخانوں اور گھریلو دستکاریوں میں ھم ایک ٹکاؤ سمتول چاھتے ھیں ۔ آجکل کا مشین راج ھماری نگاہ میں کروڑوں جنتا کے مالی اور اخلاقی جیون کے لئے ایک شراپ ھے ۔ ھم دنیا سے فوجوں کو بھی ختم ھوا دیکھنا چاھتے ھیں ۔ راج نیت اور ارتھ شاستر دونوں کو پھر سے ھم سدا چار کی نیوں پر قائم کرنا چاھتے ھیں ۔ یہ ھے تھوڑے سے شبدوں میں ' نیا ھند ' کی قومی اور انتر قومی نیت ۔ اِس طرح دیس کی بدلتی ھوئی حالتوں میں ' نیا ھند ' دھرم' سماج اور راج کاجی تینوں میں نڈر اور بے لاگ ھوکر اپنا فرض ادا کرنے کا ارادہ رکھتا ھے ۔

اُردو' ھندی یا ھندستانی کے جو لیکھک یا کوی ' نیا ھند ' کے مشن سے اتفاق رکھتے ھوں اُن سے ھماری پرارتھنا ھے کہ وہ ھمارا ھاتھ بٹاویں' بنا مانگے اپنے قلم سے ' نیا ھند ' کی مدد کریں اور اسے جنتا کی تعلیم کا ایک ادھک اُپیوگی سادھن بنائیں ۔

' نیا ھند ' کے سب پریمیوں سے ھماری مانگ ھے کہ وہ جہاں بھی ھوں ' نیا ھند ' کے پرچار کے بڑھانے میں ھمیں دل کھولکر مدد دیں ۔ ' نیا ھند ' اس سمے ھر مہینے لگ بھگ ڈیڑھ ھزار چھپ رھا ھے ۔ سالانہ گھاٹا بیس ھزار روپے کے قریب ھے ۔ ھمیں وشواس ھے کہ اگر ' نیا ھند ' کے گاھک اور اُسکے پریمی نئے گاھک بڑھانے میں بھرسک مدد دیں اور ھر گاھک یا پریمی یہ ارادہ کرلے کہ وہ ھر مہینے کم سے کم ایک نیا گاھک ' نیا ھند ' کو دے دے گا تو ھمارا یہ گھاٹا ایک سال کے اندر آسانی سے پورا ھوسکتا ھے اور ' نیا ھند ' اپنے پیروں پر کھڑا ھوسکتا ھے ۔

۱-۵-۵۱ —سندر لال

के ज़रिये हिन्दी लिखना और पढ़ना सीखा है और अब भी बहुत से सीख रहे हैं.

अब रही 'नया हिन्द' के लेखों और मज़मूनों की बात. हम स्वीकार करते हैं कि इस बारे में हम अपना फ़र्ज़ पूरा नहीं कर पाए. 'नया हिन्द' के एडीटरों को दूसरे छोटे बड़े कामों की भी भीड़ रही है. इधर कुछ महीनों से हम 'नया हिन्द' को इस निगाह से भी अधिक उपयोगी बनाने की कोशिश कर रहे हैं. 'नया हिन्द' के हर पन्ने पर लाइनों की गिनती बढ़ा दी गई है जिस से हम पाठकों को अधिक सामग्री दे सकें.

कुछ भाइयों का एतराज़ है कि 'नया हिन्द' पत्रे की तरह आड़ा खुलता है दूसरी पत्रिकाओं की तरह सीधा नहीं खुलता. अगले जुलाई महीने से हम इस शिकायत को भी दूर कर देना चाहते हैं.

आजकल की राजकाजी हवा में जब कि क़ौमों की क़िस्मतें तेज़ी के साथ पलटा खा रही हैं हम अपनी सरकार की, काँग्रेस की, देस की और देस के किसी भी दल की इस तरह की ग़लतियों को भी कड़ी और खरी खरी आलोचना करना चाहते हैं जिन से हमारी राय में देस की एकता, उसकी उन्नति और उसकी ख़ुशहाली को खतरा हो. देस की सरकार किसी भी दल की क्यों न हो उसके हाथों में कम से कम शक्ति होनी चाहिये. जनता का जीवन, रहन सहन, खाना पीना जितना भी सरकारी कंट्रोल से आज़ाद हो उतना ही देस अधिक ख़ुशहाल होगा और फूले फलेगा. अमरीका और यू. एन. ओ. का जो रुख इस समय कमज़ोर एशियाई देसों के हर छोटे बड़े झगड़ों में दख़ल देने का दिखाई दे रहा है उसे भी हम दुनिया के अमन के लिये अच्छा लच्छन नहीं समझते. अपने पड़ोसी देसों के साथ और उसके बाद सारी दुनिया के साथ हम प्रेम और मेल मिलाप से रहना चाहते हैं. दुनिया के दुखों का असली इलाज हमें

کے ذریعے ھندی لکھنا اور پڑھنا سیکھا ہے اور اب بھی بہت سے سیکھ رہے ھیں .

اب رھی 'نیا ھند' کے لیکھوں اور مضمونوں کی بات. ھم سویکار کرتے ھیں کہ اِس بارے میں ھم اپنا فرض پورا نہیں کر پائے . 'نیا ھند' کے ایڈیٹروں کو دوسرے چھوٹے بڑے کاموں کی بھی بھیڑ رھی ہے . ادھر کچھ مہینوں سے ھم 'نیا ھند' کو اِس نگاہ سے بھی ادھک اُپیوگی بنانے کی کوشش کر رہے ھیں . 'نیا ھند' کے ہر پنے پر لائنوں کی گنتی بڑھا دی گئی ہے جس سے ھم پاٹھکوں کو ادھک سامگری دے سکیں .

کچھ بھائیوں کا اعتراض ہے کہ 'نیا ھند' پترے کی طرح آڑا کھلتا ہے دوسری پتریکاؤں کی طرح سیدھا نہیں کھلتا . اگلے جولائی مہینے سے ھم اس شکایت کو بھی دور کر دینا چاھتے ھیں .

آجکل کی راج کاجی ھوا میں جب کہ قوموں کی قسمتیں تیزی کے ساتھ پلٹا کھا رھی ھیں ھم اپنی سرکار کی' کانگریس کی' دیس کی اور دیس کے کسی بھی دل کی اِسطرح کی غلطیوں کی بھی کڑی اور کھری کھری آلوچنا کرنا چاھتے ھیں جن سے ھماری رائے میں دیس کی ایکتا' اُس کی اُنتی اور اسکی خوشحالی کو خطرہ ھو . دیس کی سرکار کسی بھی دل کی کیوں نہ ھو اسکے ھاتھوں میں کم سے کم شکتی ھونی چاھئے . جنتا کا جیون' رھن سھن' کھانا پینا جتنا بھی سرکاری کنٹرول سے آزاد ھو اُتنا ھی دیس ادھک خوشحال ھوگا اور پھولے پھلے گا . امریکہ اور یو . این . او . کا جو رخ اِس سمے کمزور ایشیائی دیسوں کے ہر چھوٹے بڑے جھگڑوں میں دخل دینے کا دکھائی دے رھا ہے اُسے بھی ھم دنیا کے آمن کے لئے اچھا لچھن نہیں سمجھتے . اپنے پڑوسی دیسوں کے ساتھ اور اُسکے بعد ساری دنیا کے ساتھ ھم پریم اور میل ملاپ سے رھنا چاھتے ھیں . دنیا کی دکھوں کا اصلی علاج ھمیں

'नया हिन्द' उर्दू लिखावट को अपने देस की लिखावटों में से एक मानता है. आज कल की उर्दू लिखावट में कई अक्षर हैं जो फ़ारसी या अरबी लिखावटों में नहीं हैं. हिन्दुस्तानी भाशा का बहुत सा अच्छे से अच्छा और बामहावरा साहित्य उर्दू लिखावट में है, जिस से राश्ट्र भाशा को रूप देने, तरक़्क़ी देने और चमकाने में हमें बहुत बड़ी मदद मिल सकती है. 'नया हिन्द' हिन्दी और उर्दू दोनों को हिन्दुस्तानी की दो शैलियाँ मानता है और उन्हें एक दूसरे की सौतें नहीं, दो सगी बहनें मान कर दोनों का आदर करता है. हमारे राश्ट्र के जीवन के हर पहलू की बुनियाद प्रेम और मिलाप पर होनी चाहिये, नफ़रत और अलगाव पर नहीं.

नवम्बर १९४७ के लगभग 'नया हिन्द' के कुछ प्रेमियों ने हमें यह सुझाया था कि 'नया हिन्द' को दोनों लिखावटों में उसी तरह अलग अलग निकाला जावे जिस तरह नागरी 'हरिजन सेवक' और उर्दू 'हरिजन सेवक' निकलते थे. इस से गाहकों के बढ़ने और 'नया हिन्द' के घाटे के कम होने की आशा की जा सकती थी. हमने यह सुझाव देहली में गाँधी जी के सामने रखा और उन से राय माँगी. उन्होंने इस नए सुझाव को नापसन्द किया और हमें सलाह दी कि "नया हिन्द को जब तक निकालो इसी रूप में निकालो." हमने अपने घाटे की बात कही. उन की राय न बदली और हमें जवाब मिला—"कहीं से लाकर घाटा पूरा करो, न कर सको बन्द कर दो, पर जब तक निकालो इसी रूप में निकालो". गाँधी जी की सलाह हमारे लिये आज्ञा थी और है. हमारे हाथों 'नया हिन्द' जब तक निकलेगा इसी रूप में निकलेगा.

'नया हिन्द' मिलाप की चीज़ है अलगाव की नहीं. हमें मालूम है कि 'नया हिन्द' से जिस तरह कुछ हिन्दी वालों को उर्दू सीखने [illegible] मिलती है उसी तरह बहुत से उर्दू वालों ने 'नया हिन्द' ही [illegible] अगर 'नया हिन्द' [illegible] मददगार मदद दें और हर गाहक या हर [illegible] वह हर महीने कम से कम एक नया गाहक 'नया हिन्द' को दे देगा तो हमारा यह घाटा एक साल के अन्दर आसानी से पूरा हो सकता

'نیا ھند' اُردو لکھاوٹ کو اپنے دیس کی لکھاوٹوں میں سے ایک مانتا ھے . آجکل کی اُردو لکھاوٹ میں کئی اکشر ھیں جو فارسی یا عربی لکھاوٹوں میں نہیں ھیں . ھندستانی بھاشا کا بہت سا اچھے سے اچھا اور بامحاورہ ساھتیہ اُردو لکھاوٹ میں ھے، جس سے راشٹر بھاشا کو روپ دینے، ترقی دینے اور چمکانے میں ھمیں بہت بڑی مدد مل سکتی ھے . 'نیا ھند' ھندی اور اُردو دونوں کو ھندستانی کی دو شیلیاں مانتا ھے اور اُنھیں ایک دوسرے کی سوتیں نہیں، دو سگی بہنیں مان کر دونوں کا آدر کرتا ھے . ھمارے راشٹر کے جیون کے ھر پہلو کی بنیاد پریم اور ملاپ پر ھونی چاھئے، نفرت اور الگاؤ پر نہیں .

نومبر ۱۹۴۷ کے لگ بھگ 'نیا ھند' کے کچھ پریمیوں نے ھمیں یہ سجھایا تھا کہ 'نیا ھند' کو دونوں لکھاوٹوں میں اُسی طرح الگ الگ نکالا جاوے جسطرح ناگری 'ھریجن سیوک' اور اُردو 'ھریجن سیوک' نکلتے تھے . اِس سے گاھکوں کے بڑھنے اور 'نیا ھند' کے گھاٹے کے کم ھونے کی آشا کی جا سکتی تھی . ھم نے یہ سجھاؤ دھلی میں گاندھی جی کے سامنے رکھا اور اُن سے رائے مانگی . انھوں نے اِس نئے سجھاؤ کو ناپسند کیا اور ھمیں صلاح دی کہ "نیا ھند کو جب تک نکالو اِسی روپ میں نکالو ." ھم نے اپنے گھاٹے کی بات کہی . اُن کی رائے نہ بدلی اور ھمیں جواب ملا—"کہیں سے لاکر گھاٹا پورا کرو، نہ کر سکو بند کردو، پر جب تک نکالو اِسی روپ میں نکالو ." گاندھی جی کی صلاح ھمارے لئے آگیا تھی اور ھے . ھمارے ھاتھوں 'نیا ھند' جب تک نکلے گا اسی روپ میں نکلے گا .

'نیا ھند' ملاپ کی چیز ھے الگاؤ کی نہیں . ھمیں معلوم ھے کہ 'نیا ھند' سے جسطرح کچھ ھندی والوں کو اُردو سیکھنے میں مدد ملتی ھے اُسی طرح بہت سے اُردو والوں نے 'نیا ھند' سے [illegible] تو وہ دے گا [illegible] ایک سال کے اندر آسانی سے پورا ھوسکتا ھے اور

कहते हैं कि विधान जैसी चीजों को समझना आम लोगों का काम नहीं, इसका अधिकार बिरले विद्वानों ही को है.

'नया हिन्द' इस तरह की सब शक्तियों और रुजहानों के खिलाफ़ एक चुनौती है. उसे विश्वास है कि जनता की बोल चाल की भाशा में राजब की ताक़त है. नई परिभाषाओं के गढ़ने में भी हमें उससे बेहद मदद मिल सकती है. राज भाशा हो या राश्ट्र भाशा उसे रूप देने और उस के शब्द भंडार को भरने में हमें देस की सब भाशाओं और जहाँ जरूरत हो बाहर की भाशाओं से भी उदारता और खुले दिल से काम लेना चाहिये. भाशा को बढ़ाने, सजाने और उससे जनता को ऊपर उठाने का यही एक जरिया है.

दूसरा सवाल लिखावट का है. जैसे भाशाएँ बनती और बदलती रहती हैं वैसे ही लिखावटें भी बनती और बदलती रहती हैं. 'नया हिन्द' जिस तरह किसी भाशा की पवित्रता में विश्वास नहीं करता उसी तरह किसी लिपि को भी पवित्र या ईश्वरी नहीं मानता. यह भी जाहिर है कि आखिर में एक राश्ट्र भाशा की एक ही लिखावट रहने में आसानी रहती है. महात्मा गांधी उस समय दोनों लिखावटें दो कारनों से चाहते थे. एक यह कि हमारे फ़ैसले में द्वेश की गन्ध न आवे और दूसरे इसलिये कि जो हजारों भाई उरदू लिपि के आदी हो गए हैं उन्हें एक लिखावट से दूसरी लिखावट तक जाने के लिये समय मिल जावे और सुभीता हो. हमारी राय है कि अगर देस का काम दुनिया की किसी दूसरी लिपी से ज्यादा अच्छी तरह चल सके और मानव समाज के एक करने में हमें उससे मदद मिल सके तो हमें इसमें भी कोई एतराज नहीं होना चाहिये. भाशा की तरह लिखावट भी हमारे लिये केवल एक साधन है, मकसद नहीं.

کہتے هیں کہ ودهان جیسی چیزوں کو سمجهنا عام لوگوں کا کام نہیں' اسکا ادهیکار برلے ودوانوں هی کو هے .

'نیا هند' اس طرح کی سب شکتیوں اور رجحانوں کے خلاف ایک چنوتی هے . اسے وشواس هے کہ جنتا کی بول چال کی بهاشا میں غضب کی طاقت هے . نئی پریبهاشاؤں کے گوهنے میں بهی همیں اس سے بیحد مدد مل سکتی هے . راج بهاشا هو یا راشٹر بهاشا اسے روپ دینے اور اسکے شبد بهنڈار کو بهرنے میں همیں دیس کی سب بهاشاؤں اور جہاں ضرورت هو باهر کی بهاشاؤں سے بهی اُدارتا اور کهلے دل سے کام لینا چاهئے . بهاشا کو بڑهانے' سجانے اور اس سے جنتا کو اوپر اٹهانے کا یہی ایک ذریعہ هے .

دوسرا سوال لکهاوٹ کا هے . جیسے بهاشائیں بنتی اور بدلتی رهتی هیں ویسے هی لکهاوٹیں بهی بنتی اور بدلتی رهتی هیں . 'نیا هند' جسطرح کسی بهاشا کی پوترتا میں وشواس نہیں کرتا اسی طرح کسی لپی کو بهی پوتر یا ایشوری نہیں مانتا . یہ بهی ظاهر هے کہ آخر میں ایک راشٹر بهاشا کی ایک هی لکهاوٹ رهنے میں آسانی رهتی هے . مہاتما گاندهی اس سمے دونوں لکهاوٹیں دو کارنوں سے چاهتے تهے . ایک یہ کہ همارے فیصلے میں دویش کی گندھ نہ آوے اور دوسرے اس لئے کہ جو هزاروں بهائی اُردو لپی کے عادی هو گئے هیں انہیں ایک لکهاوٹ سے دوسری لکهاوٹ تک جانے کے لئے سمے مل جاوے اور سوبهیتا هو . هماری رائے هے کہ اگر دیس کا کام دنیا کی کسی دوسری لپی سے زیادہ اچهی طرح چل سکے اور مانو سماج کے ایک کرنے میں همیں اس سے مدد مل سکے تو همیں اس میں بهی کوئی اعتراض نہیں هونا چاهئے . بهاشا کی طرح لکهاوٹ بهی همارے لئے کیول ایک سادهن هے' مقصد

आज कल की नई हिन्दी में जो आसान चालू शब्दों को इस बिना पर निकाल कर कि उनका निकास सीधे संस्कृत से न होकर किसी दूसरी भाषा से है उन की जगह संस्कृत के मोटे मोटे नए शब्द ठूंसने के रुजहान को 'नया हिन्द' हिन्दी की उन्नति और उसके विकास के लिये घातक मानता है. यह रोग हमारे देस का एक नया रोग है. नागरी प्रचारिनी सभा काशी के हिन्दी शब्द सागर में हजारों ऐसे शब्द मौजूद हैं जिन के इस्तेमाल पर आजकल की हिन्दी परीक्षाओं में विद्यार्थियों के नम्बर काट लिये जाते हैं, यह कह कर कि वह शब्द उरदू हैं हिन्दी नहीं! इसी नागरी प्रचारिनी सभा के मशहूर विद्वान बाबू श्याम सुन्दर दास ने अपने शब्द कोश में फारसी अरबी के सैकड़ों चालू शब्द अपनाए हैं, अंग्रेजी शब्द arrears के लिये अपने कोश में उन्हों ने दो ही शब्द दिए हैं बाकी और बकाया. आज हमारे हिन्दी प्रेमियों के दिमाग उलटी तरफ को चल रहे हैं. वह चालू शब्दों की जगह नए नए और कठिन शब्द गढ़ कर उलटी गंगा बहाने की कोशिश में हैं. कानून को विधि, मोटर को वहित्राण, सेब को उत्कोन. कुली को भारवाहक. दफ्तर या चौकी को कार्यालय, वटिंग रूम का प्रतीक्षालय, रेलवे को अयोमार्ग और ट्रेमवे को रथ्यायाम बोलने और लिखने की कोशिश को 'नया हिन्द' एक गंदी बीमारी मानता है जिस की जड़ें नफरत और अन्धविश्वास में हैं. यह नई बीमारी छुआछूत और जातपात के हमारे पुराने रोग के भाषा के मैदान में उभर आने का नतीजा है. इस तरह की भाषा का गढ़ना देस की जनता और थोड़े से पढ़े लिखों के बीच एक गहरी खाई खोद देना है और करोड़ों जनता के साथ दुशमनी करना है. इस जन राज के जमाने में होना यह चाहिये कि हमारी जनता के अधिक से अधिक लोग यहाँ तक कि बेपढ़े भी हमारे कानूनों, हमारे विधान और राज काज की नई नई बातों को समझ सकें. पर इस नई हिन्दी के पन्डित अभिमान के साथ

آجکل کی نئی ہندی میں جو آسان چالو شبدوں کو اِس بنا پر نکالکر کہ اُن کا نکاس سیدھے سنسکرت سے نہ ہو کر کسی دوسری بھاشا سے ہے اُن کی جگہ سنسکرت کے موٹے موٹے نئے شبد ٹھونسنے کے رجحان کو 'نیا ہند' ہندی کی اُنتی اور اس کے وکاس کے لئے گھاتک مانتا ہے . یہ روگ ہمارے دیس کا ایک نیا روگ ہے . ناگری پرچارنی سبھا کاشی کے ہندی شبد ساگر میں ہزاروں ایسے شبد موجود ہیں جنکے استعمال پر آجکل کی ہندی پریکشاؤں میں ودیارتھیوں کے نمبر کاٹ لئے جاتے ہیں' یہ کہہ کر کہ وہ شبد اُردو ہیں ہندی نہیں ! اسی ناگری پرچارنی سبھا کے مشہور ودوان بابو شیام سندر داس نے اپنے شبدکوش میں فارسی عربی کے سیکڑوں چالو شبد اپنائے ہیں انگریزی شبد arrears کے لئے اپنے کوش میں اُنہوں نے دو ہی شبد دئے ہیں - باقی اور بقایا . آج ہمارے ہندی پریمیوں کے دماغ اُلٹی طرف کو چل رہے ہیں . وہ چالو شبدوں کی جگہ نئے نئے اور کٹھن شبد گھڑکر اُلٹی گنگا بہانے کی کوشش میں ہیں . قانون کو ودھی' موٹر کو وہتران' سیب کو اُتکون' قلی کو بھارواہک' دفتر یا چوکی کو کاریالیہ' ویٹنگ روم کو پرتیکشالیہ' ریلوے کو ایو مارگ اور ٹریموے کو رتھیایام بولنے اور لکھنے کی کوشش کو 'نیا ہند' ایک گندی بیماری مانتا ہے جسکی جڑیں نفرت اور اندھ وشواس میں ہیں . یہ نئی بیماری چھوا چھوت اور جات پات کے ہمارے پرانے روگ کے بھاشا کے میدان میں اُبھر آنے کا نتیجہ ہے . اِس طرح کی بھاشا کا گھڑنا دیس کی جنتا اور تھوڑے سے پڑھے لکھوں کے بیچ ایک گہری کھائی کھود دینا ہے اور کروڑوں جنتا کے ساتھ دشمنی کرنا ہے . اِس جن راج کے زمانے میں ہونا یہ چاہئیے کہ ہماری جنتا کے ادھک سے ادھک لوگ یہاں تک کہ بے پڑھے بھی ہمارے قانونوں' ہمارے ودھان اور راج کاج کی نئی نئی باتوں کو سمجھ سکیں . پر اِس نئی ہندی کے پنڈت ابھیمان کے ساتھ

और न सत्य की दृष्टि से कोई भाषा दूसरी भाषा से ज्यादा पाक है. न संस्कृत अरबी से ज्यादा पाक है और न अरबी संस्कृत से, और न इन दोनों में से कोई पंजाबी, मराठी, चीनी, जापानी या दुनिया की किसी भी और भाषा से. भाषा हमारा लक्ष्य या इष्ट (माबूद) नहीं है. भाषा केवल एक साधन है जिससे आदमी आदमी को समझ सके, आदमी आदमी से प्यार कर सके और आदमी आदमी के काम आसके.

जहाँ तक भारत के विधान के अनुसार देस की सरकारी भाषा का सवाल है, 'नया हिन्द' कई बार अपनी राय जाहिर कर चुका है. २२ जुलाई १९४७ को महात्मा गांधी ने श्रमती पैरिन बहन कैप्टेन को एक पत्र में लिखा था—"भगवान जाने हमारे भाग्य में क्या बदा है. पुराने तरीक़े बदलते हैं. नए उनकी जगह लेते हैं. कोई बात तय नहीं है. विधान सभा चाहे कुछ भी फ़ैसला करे, तुम्हारे और मेरे लिये दोनों लिपियों के साथ हिन्दुस्तानी ही रहेगी. मेरे लिये राष्ट्र भाषा का मतलब है हिन्दी + उरदू = हिन्दुस्तानी." फिर भी हमें नाम की हट नहीं और न गांधी जी को हो सकती थी हमें हिन्दी नाम प्यारा है, बशर्ते कि हिन्दी को हिन्दी रहने दिया जाय. 'नया हिन्द' की भाषा वही है जिसे विधान में भी हिन्दुस्तानी कह कर बताया गया है और जिस की बाबत विधान ने साफ़ शब्दों में तय किया है कि—"जो रूप, जो शैलियां और जो मुहावरे हिन्दुस्तानी में.........काम में आते हैं उन्हें हिन्दी में अपनाकर उसे माला माल किया जाय." अगर विधान की उन दफ़ों पर जिन का हिन्दी के साथ सम्बन्ध है सचाई से अमल किया जाय तो 'नया हिन्द' की भाषा ही विधान की हिन्दी को रूप देने में सब से अधिक मददगार हो सकती है. उस सूरत में विधान की हिन्दी और 'नया हिन्द' की हिन्दुस्तानी में अन्तर भी नहीं रह

اور نہ ستیہ کی درشٹی سے کوئی بھاشا دوسری بھاشا سے زیادہ پاک ہے . نہ سنسکرت عربی سے زیادہ پاک ہے اور نہ عربی سنسکرت سے، اور نہ اِن دونوں میں سے کوئی پنجابی، مراٹھی، چینی، جاپانی یا دنیا کی کسی بھی اور بھاشا سے . بھاشا ہمارا لکش یا اِشٹ (معبود) نہیں ہے . بھاشا کیول ایک سادھن ہے جس سے آدمی آدمی کو سمجھ سکے، آدمی آدمی سے پیار کرسکے اور آدمی آدمی کے کام آسکے .

جہاں تک بھارت کے ودھان کے انوسار دیس کی سرکاری بھاشا کا سوال ہے، 'نیا ھند' کئی بار اپنی رائے ظاہر کر چکا ہے . ۲۲ جولائی ۱۹۴۷ کو مہاتما گاندھی نے شریمتی پیرن بہن کیپٹن کو ایک پتر میں لکھا تھا— "بھگوان جانے ہمارے بھاگیہ میں کیا بدا ہے . پرانے طریقے بدلتے ہیں، نئے اُنکی جگہ لیتے ہیں . کوئی بات طے نہیں ہے . ودھان سبھا چاہے جیسا بھی فیصلہ کرے، تمہارے اور میرے لئے دونوں لپیوں کے ساتھ ہندستانی ہی رہے گی . میرے لئے راشٹر بھاشا کا مطلب ہے ہندی + اردو = ہندستانی." پھر بھی ہمیں نام کی ہٹ نہیں اور نہ گاندھی جی کو ہوسکتی تھی . ہمیں ہندی نام پیارا ہے، بشرطیکہ ہندی کو ہندی رہنے دیا جائے . 'نیا ھند' کی بھاشا وہی ہے جسے ودھان میں بھی ہندستانی کہکر بتایا گیا ہے اور جسکی بابت ودھان نے صاف شبدوں میں طے کیا ہے کہ "—جو روپ، جو شیلیاں اور جو محاورے ہندستانی میں...... کام میں آتے ہیں اُنہیں ہندی میں اپناکر اسے مالا مال کیا جائے." اگر ودھان کی اُن دفعوں پر جن کا ہندی کے ساتھ سمبندھ ہے سچائی سے عمل کیا جائے تو 'نیا ھند' کی بھاشا ہی ودھان کی ہندی کو روپ دینے میں سب سے ادھک مددگار ہو سکتی ہے . اُس صورت میں ودھان کی ہندی اور 'نیا ھند' کی ہندستانی

पर ज़्यादा बहस की जरूरत नहीं है. 'नया हिन्द' खुले और साफ़ तौर पर दूसरे दल के साथ है. ऐसी हालत में जब तक इन दोनों शक्तियों के बीच टक्कर जारी है तब तक 'नया हिन्द' की ज़रूरत भी जाहिर है.

यह तो हुई जरूरत की बात. अब रहा 'नया हिन्द' की उपयोगिता को बढ़ाने का सवाल.

इस में पहली चीज़ 'नया हिन्द' का कलेवर यानी उसकी भाशा और लिखावट है.

'नया हिन्द' इस बात का क़ायल है कि किसी भी देस या प्रान्त के अन्दर धर्म या मज़हब की बिना पर वहाँ के रहने वालों की दो अलग अलग बोलियाँ नहीं हो सकतीं. संस्कृत भरी हिन्दी या फ़ारसी भरी उर्दू कुछ दिनों के लिये कुछ पँडितों और मौलवियों को ख़ुश भले ही करलें पर यह दो अलग अलग धारें बहुत दिनों अलग अलग नहीं रह सकतीं. इन दोनों की बुनियाद जनता की बोल चाल की हिन्दुस्तानी है और इस एक बुनियाद के ऊपर दो अलग अलग इमारतें खड़ी नहीं रह सकतीं. उनमें से कोई कभी जनता की भाशा या राश्ट्र भाशा भी नहीं बन सकती.

राश्ट्र भाशा के रूप को तय करने में 'शुद्धता' का सवाल लाना भी ग़लत और धोके की चीज़ है. दुनिया की सब भाशाएँ एक दूसरे से शब्द और मुहावरे लेकर अपने को माला माल करती रही हैं और करती रहेंगी. किसी भी देस में राश्ट्र भाशा वही होगी जिस का ढाँचा जनता की भाशा हो और जिसके दरवाज़े दुनिया की सारी भाशाओं से लेने देने के लिये सदा खुले हों.

एक बात और. जो तंगनज़रियां मानव समाज के एक होने में सब से बड़ी रुकावटें हैं उन में एक ख़ास तंगनज़री किसी एक भाशा की पवित्रता का झूठा विचार है. भगवान की कोई भाशा नहीं

پر زیادہ بحث کی ضرورت نہیں ھے . 'نیا ھند' کھلے اور صاف طور پر دوسرے دل کے ساتھ ھے . ایسی حالت میں جب تک اِن دونوں شکتیوں کے بیچ ٹکر جاری ھے تب تک 'نیا ھند' کی ضرورت بھی ظاھر ھے .

یہ تو ھوئی ضرورت کی بات . اب رھا ' نیا ھند ' کی اُپیوگتا کو بڑھانے کا سوال .

اِس میں پہلی چیز ' نیا ھند ' کا کلیور یعنی اُس کی بھاشا اور لکھاوٹ ھے .

' نیا ھند ' اِس بات کا قائل ھے کہ کسی بھی دیس یا پرانت کے اندر دھرم یا مذھب کی بِنا پر وھاں کے رھنے والوں کی دو الگ الگ بولیاں نہیں ھوسکتیں . سنسکرت بھری ھندی یا فارسی بھری اُردو کچھ دنوں کے لئے کچھ پنڈتوں اور مولویوں کو خوش بھلے ھی کر لیں پر یہ دو الگ الگ دھاریں بہت دنوں الگ الگ نہیں رہ سکتیں . اِن دونوں کی بنیاد جنتا کی بول چال کی ھندستانی ھے اور اِس ایک بنیاد کے اُوپر دو الگ الگ عمارتیں کھڑی نہیں رہ سکتیں . اِن میں سے کوئی کبھی جنتا کی بھاشا یا راشٹر بھاشا بھی نہیں بن سکتی .

راشٹر بھاشا کے روپ کو طے کرنے میں 'شدھتا' کا سوال لانا بھی غلط اور دھوکے کی چیز ھے . دنیا کی سب بھاشائیں ایک دوسرے سے شبد اور محاورے لے کر اپنے کو مالا مال کرتی رھی ھیں اور کرتی رھینگی . کسی بھی دیس میں راشٹر بھاشا وھی ھوگی جسکا ڈھانچا جنتا کی بھاشا ھو اور جسکے دروازے دنیا کی ساری بھاشاؤں سے لینے دینے کے لئے سدا کھلے ھوں .

ایک بات اور . جو تنگ نظریاں مانو سماج کے ایک ھونے میں سب سے بڑی رکاوٹیں ھیں اُن میں ایک خاص تنگ نظری کسی ایک بھاشا کی پوترتا کا جھوٹا وچار ھے . بھگوان کی کوئی بھاشا نہیں

घटना है. पर इस राजकाजी आज़ादी के साथ साथ देस की बाक़ी मुसीबतों का ख़ात्मा नहीं हुआ. हमारे उस समय के बिदेसी शासक चलते चलते हमारे अन्दर की उन पुरानी कमज़ोरियों को, जिन के सहारे उन्होंने १७५७ से १८४७ तक अपने लिये ज़मीन तैयार की थी और जिन को भड़काए रखकर ही उन्हों ने इतने दिनों राज किया, जितना बढ़ावा दे सके दे गए.

आज़ादी के साथ साथ साम्प्रदायिक नफ़रतों का पारा और ऊँचा चढ़ा. मुल्क के टुकड़े हुए. दो अलग अलग हकूमतें क़ायम हुईं. आशा की जाती थी कि इतनी बड़ी क़ीमत देकर भी किसी तरह देस में अमन क़ायम होगा और नफ़रतों और अविश्वास की जगह प्रेम और विश्वास बढ़ेगा. पर हुआ इस का उलटा. हम यहाँ कारनों में जाना नहीं चाहते. बँटवारे के साथ साथ दोनों तरफ़ साम्प्रदायिक शक्तियों ने और अधिक ज़ोर पकड़ा. बँटवारा नतीजा था एक दरजे तक हमारी सदियों की कमज़ोरी और तंगनज़री का, और इसी बँटवारे ने उन कमज़ोरियों और तंगनज़रियों को और अधिक भड़काया. एक समय डर था कि यह आग सारे देस को अपने चंगुल में लपेट कर देस और उसकी नई आज़ादी को हमेशा के लिये ख़तम कर देगी. इस की पेशीनगोई भी की जा चुकी थी. महात्मा गांधी ने अपने अनोखे हथियारों से उस आग का सामना किया और अन्त में उसे ठंडा करते करते उसी में अपने जीवन की आहुति दे डाली.

पर अभी तक देस में दो तरह के विचार एक दूसरे से टकरा रहे हैं. एक तरफ़ 'हिन्दू हिन्दू एक' और 'हिन्दू राज' के नारे हैं, और हर जायज़ और नाजायज़ तरीक़ों से अपने लक्ष्य तक पहुँचने के मनसूबे. दूसरी तरफ़ एक मिले जुले राष्ट्र और सब धर्मों और सम्प्रदायों को एक निगाह से देखने वाली एक ग़ैर जानिबदार सेकुलर यानी व्योहारी राज को मज़बूत करने की कोशिशें. यहाँ इन दोनों दलों के असलों

گھٹنا ہے . پر اِس راج کاجی آزادی کے ساتھ ساتھ دیس کی باقی مصیبتوں کا خاتمہ نہیں ہوا . ھمارے اُس سمے کے بدیسی شاسک چلتے چلتے ھمارے اندر کی اُن پُرانی کمزوریوں کو، جنکے سہارے اُنھوں نے ۱۷۵۷ سے ۱۸۵۷ تک اپنے لئے زمین تیار کی تھی اور جن کو بھڑکائے رکھ کر ھی اُنھوں نے اِتنے دنوں راج کیا، جتنا بڑھاوا دے سکے دے گئے .

آزادی کے ساتھ ساتھ سامپردایک نفرتوں کا پارہ اور اُونچا چڑھا . ملک کے ٹکڑے ہوئے . دو الگ الگ حکومتیں قایم ہوئیں . آشا کی جاتی تھی کہ اتنی بڑی قیمت دیکر بھی کسیطرح دیس میں امن قایم ہوگا اور نفرتوں اور اَوشواس کی جگہ پریم اور وشواس بڑھیگا . پر ہوا اسکا اُلٹا . ہم یہاں کارنوں میں جانا نہیں چاہتے . بٹوارے کے ساتھ ساتھ دونوں طرف سامپردایک شکتیوں نے اور ادھک زور پکڑا . بٹوارہ نتیجہ تھا ایک درجے تک ھماری صدیوں کی کمزوری اور تنگ نظری کا، اور اسی بٹوارے نے اُن کمزوریوں اور تنگ نظریوں کو اور ادھک بھڑکایا . ایک سمے ڈر تھا کہ یہ آگ سارے دیس کو اپنے چنگل میں لپیٹ کر دیس اور اُس کی نئی آزادی کو ھمیشہ کے لئے ختم کر دیگی . اِس کی پیشینگوئی بھی کی جا چکی تھی . مہاتما گاندھی نے اپنے انوکھے ھتھیاروں سے اُس آگ کا سامنا کیا اور انت میں اُسے ٹھنڈا کرتے کرتے اُسی میں اپنے جیون کی آھوتی دے ڈالی .

پر ابھی تک دیس میں دو طرح کے وِچار ایک دوسرے سے ٹکرا رہے ہیں . ایک طرف 'ھندو ھندو ایک' کے اور 'ھندو راج' کے نعرے ہیں اور ھر جائز اور ناجائز طریقوں سے اپنے لکش تک پہونچنے کے منصوبے . دوسری طرف ایک ملے جلے راشٹر اور سب دھرموں اور سمپردایوں کو ایک نگاہ سے دیکھنے والی ایک غیر جانبدار سیکولر یعنی بیوھاری راج کو مضبوط [illegible]

'नया हिन्द' की ज़रूरत–एक अपील

'नया हिन्द' ने जुलाई १९४६ में जन्म लिया था. जुलाई सन् १९५१ में उस के जीवन का छटा साल शुरू होगा. इस अवसर पर हम अपने पाठकों और प्रेमियों के साथ मिलकर इस बात पर विचार करना चाहते हैं कि 'नया हिन्द' को जारी रखने की क्या ज़रूरत है? उसे कैसे अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है और हमें इसके लिये क्या करना चाहिये?

'नया हिन्द' जिस मिशन को लेकर पैदा हुआ था वह थोड़े से शब्दों में यह है :—अलग अलग धर्मों, फ़िरक़ों, सम्प्रदायों, जात पात और छुआ छूत की दीवारों को तोड़ कर इस देस में एक क़ौम, एक राष्ट्र और एक मानवधर्म की बुनियादों को मज़बूत करना और नफ़रतों और ग़लत फ़हमियों को मिटाकर देसवासियों के दिलों में एक दूसरे से प्रेम पैदा करना. 'नया हिन्द' हर तरह की फ़िरक़ापरस्ती और तंगनज़री को देस के आगे के जीवन के लिये हानिकर मानता है और सारे देस को अलग अलग मज़हबी या सूबाई कलचरों की जगह एक मिली जुली ज़िन्दगी और मिली जुली कलचर की तरफ़ ले जाना चाहता है. यही 'नया हिन्द' का मक़सद है और यही उसके जीवन का लक्ष्य.

पिछले पाँच बरस के अन्दर देस के जीवन में गहरा इनक़लाब हुआ है. सन् '५७ की कोशिश के असफल होने के बाद मलका विक्टोरिया के एलान के ज़रिये देहली की बादशाहत खतम होकर अंगरेज़ी राज इस देस में क़ायम हुआ था. ठीक अठासी बरस के बाद वह राज किसी तरह खतम हुआ. देस ने फिर से आज़ादी की साँस ली. सन् '४७ की यह घटना देस के इतिहास में बहुत बड़ी

'نیا ھند' کی ضرورت - ایک اپیل

'نیا ھند' نے جولائی ۱۹۴۶ میں جنم لیا تھا. جولائی سن 1951 میں اس کے جیون کا چھٹا سال شروع ھوگا. اس اوسر پر ھم اپنے پاٹھکوں اور پریمیوں کے ساتھ ملکر اس بات پر وچار کرنا چاھتے ھیں کہ 'نیا ھند' کو جاری رکھنے کی کیا ضرورت ھے؟ اُسے کیسے ادھک اُپیوگی بنایا جا سکتا ھے اور ھمیں اِس کے لئے کیا کرنا چاھیئے؟

'نیا ھند' جس مشن کو لیکر پیدا ھوا تھا وہ تھوڑے سے شبدوں میں یہ ھے :— الگ الگ دھرموں' فرقوں' سمپرداؤں' جات پات اور چھوا چھوت کی دیواروں کو توڑ کر اِس دیس میں ایک قوم' ایک راشٹر اور ایک مانو دھرم کی بنیادوں کو مضبوط کرنا اور نفرتوں اور غلط فھمیوں کو مٹا کر دیس باسیوں کے دلوں میں ایک دوسرے سے پریم پیدا کرنا . 'نیا ھند' ھر طرح کی فرقہ‌پرستی اور تنگ نظری کو دیس کے آگے کے جیون کے لئے ھانیکر مانتا ھے اور سارے دیس کو الگ الگ مذھبی یا صوبائی کلچروں کی جگہ ایک ملی جلی زندگی اور ملی جلی کلچر کی طرف لےجانا چاھتا ھے . یہی 'نیا ھند' کا مقصد ھے اور یہی اُسکے جیون کا لکش .

پچھلے پانچ برسوں کے اندر دیس کے جیون میں گہرا انقلاب ھو ھے . سن '۵۷ کی کوشش کے اسپھل ھونے کے بعد ملکہ وکٹوریا کے اعلان کے ذریعے دھلی کی بادشاھت ختم ھو کر انگریزی راج اِس دیس میں قایم ھوا تھا . ٹھیک اٹھاسی برس کے بعد وہ راج کسی طرح ختم ھوا . دیس نے پھر سے آزادی کی سانس لی . سن '۴۷ کی یہ گھٹنا دیس کے اِتہاس میں بہت بڑی

मुल्ला अपनी ओर पुकारे, पंडित रोके मंज़िल तेरी
अपने अपने दाँव लगाकर, खोटी करदी मंज़िल तेरी
क्रोध कपट के दो-राहे में, तेरा मुसाफ़िर ! काम भी बिगड़ा
मसजिद मन्दिर के झगड़ों में, ईश्वर अल्ला नाम भी बिगड़ा
दुनिया सारी संग हो तेरे, चाहे लाख सहारे हों
मंज़िल तेरी तभी मिलेगी, पाँव जो तेरे सारे हों
सामने जिनके मंज़िल हो, और वह मूरख जी हारे हों
सम्मुख जग मग दीप जरें, और दिये तरे आंधियारे हों
कहाँ यह सुन्दर सपने टूटे, कहाँ पे टूटी आस की डोर ?
कहाँ मुसाफ़िर डगमग हाला, कहाँ पे होगए पाँव भी चोर ?
दीप की जगमग जोत सी है क्या ? दीप की अग्नी जलकर देख
जीवन सागर थाह कहाँ है ? मंझधारों में पल कर देख
मंज़िल तक जो चलना हो, तो काँटों पर भी चल कर देख
पाँव से अपने चल भी मुसाफ़िर ! आँख से अपनी चलकर देख
फूटे भाग्य सुहाग मिले ना, फूटे नयन न दर्शन होय
'स्वामी' झलकी मिले नहीं, जब मैला मन का दर्पन होय
भीशन आँधी रोक भी दे, मंझधारों के रुख मोड़ भी दे
जीवट ! अपनी मौत से पहले, मौत की गरदन तोड़ भी दे
मंज़िल को मत छोड़ मुसाफ़िर ! भूल भुलैयाँ छोड़ भी दे
तेज़ नुकीले काँटों से, इस पाँव के छाले फोड़ भी दे
लीक से बाहर पाँव न हो, याँ घात में बैठी मौत भी है
अपने हाथ के दाँव जो चूका, मौत से पहले मौत भी है

ملا اپنی اور پکارے، پنڈت روکے منزل تیری
اپنے اپنے داؤں لگا کر کھوٹی کر دی منزل تیری
کرودھ کپٹ کے دو راہے میں، تیرا مسافر! کام بھی بگڑا
مسجد مندر کے جھگڑوں میں، ایشور اللہ نام بھی بگڑا
دنیا ساری سنگ ہو تیرے، چاہے لاکھ سہارے ہوں
منزل تیری تبھی ملے گی، پاؤں جو تیرے سارے ہوں
سامنے جن کے منزل ہو، اور وہ مورکھ جی ہارے ہوں
سمکھ جگ مگ دیپ جریں، اور دیئے ترے اندھیارے ہوں
کہاں یہ سندر سپنے ٹوٹے، کہاں پہ ٹوٹی آس کی ڈور؟
کہاں مسافر ڈگ مگ ہالا، کہاں پہ ہوگئے پاؤں بھی چور؟
دیپ کی جگ مگ جیوت سی ہے کیا؟ دیپ کی اگنی جلکر دیکھ
جیون ساگر تھاہ کہاں ہے؟ منجدھاروں میں پل کر دیکھ
منزل تک جو چلنا ہو، تو کانٹوں پر بھی چلکر دیکھ
پاؤں سے اپنے چل بھی مسافر! آنکھ سے اپنی چلکر دیکھ
پھوٹے بھاگیہ سہاگ ملے نا، پھوٹے نین نہ درشن ہوئے
'سوامی' جھلکی ملے نہیں، جب میلا من کا درپن ہوئے
بھیشن آندھی روک بھی دے، منجدھاروں کے رخ موڑ بھی دے
جیوٹ! اپنی موت سے پہلے، موت کی گردن توڑ بھی دے
منزل کو مت چھوڑ مسافر! بھول بھلیاں چھوڑ بھی دے
تیز نکیلے کانٹوں سے، اس پاؤں کے چھالے پھوڑ بھی دے
لیک سے باہر پاؤں نہ ہو، یاں گھات میں بیٹھی موت بھی ہے
اپنے ہاتھ کے داؤں جو چوکا، موت سے پہلے موت بھی ہے

नया हिन्द

नया ہند

जिल्द १० जून. सन् '५१ नम्बर ६

جلد ۱۰ جون سن ۵۱ء نمبر ۶

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

दिये तरे अंधियारे

(भाई स्वामी मारहरवी)

चलने से मत हार मुसाफ़िर! चलते रहना काम है तेरा
क्षण भर में यह आलस कैसी? दूर अभी तो गाम है तेरा
दरिया के मत खोज किनारे, तूफ़ानों में राम है तेरा
आप मुसाफ़िर, आप ही मंजिल, मंजिल दूजा नाम है तेरा
रस्तों के तू छोड़ दे झगड़े, इन रस्तों आराम नहीं है
तुझ में साँचे राम हैं प्यारे, तुझ बिन कोई राम नहीं है
राह भी तेरी, पाँव भी तेरे, पाँव तले है मंज़िल तेरी
मन के दुविधे आज जो हारा, फिर न मिलेगी मंज़िल तेरी

دیئے ترے اندھیارے

(بھائی سوامی مارھروی)

چلنے سے مت ہار مسافر! چلتے رہنا کام ہے تیرا
آدھ بھر میں یہ آلس کیسی؟ دور ابھی تو گام ہے تیرا
دریا کے مت کھوج کنارے، طوفانوں میں رام ہے تیرا
آپ مسافر، آپ ہی منزل، منزل دوجا نام ہے تیرا
رستوں کے تو چھوڑ دے جھگڑے، ان رستوں آرام نہیں ہے
تجھ میں سانچے رام ہیں پیارے، تجھ بن کوئی رام نہیں ہے
راہ بھی تیری، پاؤں بھی تیرے، پاؤں تلے ہے منزل تیری
من کے دبدھے آج جو ہارا، پھر نہ ملے گی منزل تیری

[illegible] राज इस देस में क़ायम हुआ था. ठीक अठासी बरस के [illegible] राज किसी तरह ख़तम हुआ. देस ने फिर से आज़ादी की [illegible] यह घटना देस के इतिहास में बहुत बड़ी

[illegible] اس دیس میں قایم ہوا تھا۔ ٹھیک اٹھاسی برس کے بعد وہ راج کسی طرح ختم ہوا۔ دیس نے پھر سے آزادی کی سانس لی۔ [illegible] دیس کے اتہاس میں بہت بڑی

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुजफ्फर हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

जून १९५१

क्या किस से	सफ़ा

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल

एक ... आने ... मेंहगे

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائیٹی کا پرچا

ایڈیٹر—

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

جون ۱۹۵۱

کیا کس سے	صفحہ

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال

ایک پرچہ دس آنے۔ مہنگے

नया हिन्द

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख

اس نمبر کے خاص لیکھ

जून सन् १९५१

क़ीमत दस आना

جون ۱۹۵۱

قیمت دس آنہ

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद

ہندستانی کلچر سوسائٹی ' الہ آباد

Registered No. A—210.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो २६ जनवरी सन् १६५० से सारे भारत में लागू हुआ

'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझ ले.

यदि आप आने वाले आम चुनाव में, जिस पर भारत का सारा भविष्य निर्भर है, समझ कर हिस्सा लेना चाहते हैं और आज़ाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो ज़रूरी है कि आप इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लें.

आसानी के लिये किताब के आख़ीर में हिन्दी से अंगरेज़ी और अंगरेज़ी से हिन्दी साठ पन्ने की शब्दमाला दे दी गई है.

भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

मिलने का पता :— मैनेजर 'नया हिन्द'
१४५. मुट्ठी गंज.
इलाहाबाद.

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو ۲۶ جنوری سن ۱۹۵۰ سے سارے بھارت میں لاگو ہوا .

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندر لال دوارا مول انگریزی سے انووادت .

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اِس سمے چل رہا ہے اُسے اچھی طرح سمجھ لے .

یدی آپ آنے والے عام چناؤ میں، جس پر بھارت کا سارا بھوشیہ نربھر ہے، سمجھ کر حصہ لینا چاہتے ہیں اور آزاد بھارت میں اپنے ادھیکار سمجھنا چاہتے ہیں تو ضروری ہے کہ آپ اس پستک کو دھیان سے پڑھ لیں .

آسانی کے لئے کتاب کے آخر میں ہندی سے انگریزی اور انگریزی سے ہندی ساٹھ پنّے کی شبد مالا دے دی گئی ہے .

بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے .

آسان بامحاورہ بھاشا . رایل اٹھ پیجی بڑا سائز . لگ بھگ چار سو پنّے . کپڑے کی سندر جلد . قیمت کیول ساڑھے سات روپئے

ملنے کا پتہ :— مینیجر 'نیا ہند'
۱۴۵ مٹھی گنج
الہ آباد .

Printed and Published by Purushottam Prasad, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

(१) एक एसा हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, ...
प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये.

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,
१४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली ... किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे ... एक बार एक रुपया ...

جس میں سب ہندستانی شامل ہوں .

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق؛ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری—پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی . جی . کھیر، مسٹر ایس . کے . رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال .

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے —

سندر لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،
۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ... کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے ...

هندستانی کلچر سوسائٹی، الہ آباد

हिन्द के विधान की अंगरेज़ी हिन्दी शब्दावली

(अंगरेज़ी नागरी लिखावट में)

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ ख़ास ख़ास अंगरेज़ी शब्दों के लिये आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवानदीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाए हैं. भारत के विधान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास ज़रूर रखिये. क़ीमत दो रुपये.

मुस्लिम देश भक्त— लेखक—श्री रतन लाल बंसल.

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की जंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

आज के शहीद— सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छिन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी.

उन बहादुरों की कहानियाँ जो फ़िरक़ावाराना दंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गए.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.

सुन्दर जिल्द और चिकने काग़ज़ पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

किसान की पुकार— लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत ज़रूरी है जो खेती बाड़ी से दिलचस्पी रखते हैं. और भारत के अन्न संकट को दूर करने में विश्वास रखते हैं. क़ीमत पाँच आने.

ہند کے ودھان کی انگریزی ہندی شبداولی

(انگریزی ناگری لکھاوٹ میں)

ہند کا جو نیا ودھان پاس ہوا ہے اُسکے لگ بھگ چودہ سو خاص خاص انگریزی شبدوں کے لئے آسان ہندستانی شبد مہاتما بھگوان دین اور دوسرے ودوانوں نے سجھائے ہیں. بھارت کے ودھان کو سمجھنے کے لئے اِس شبداولی کو اپنے پاس ضرور رکھئے. قیمت دو روپئے .

مسلم دیش بھکت—لیکھک—شری رتن لال بنسل .

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی . کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے .
قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے .

آج کے شہید— سمپادک — شری رتن لال بنسل .

اِس کتاب میں اُن ویروں کی کہانیاں ہیں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہیں کی اور اُسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کر دی .

اُن بہادروں کی کہانیاں جو فرقہ وارانہ دنگوں میں لوگوں کو حیوانیت سے روکتے ہوئے شہید ہو گئے .

ہر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب .

سندر جلد اور چکنے کاغذ پر چھپی آٹھ تصویروں کے ساتھ اس کتاب کا دام صرف ڈھائی روپیہ .

کسان کی پکار— لیکھک — شری آر . وینکٹ راؤ .

یہ کتاب کسانوں کے لئے ہی نہیں٬ اُن لوگوں کےلئے بھی بہت ضروری ہے جو کھیتی باڑی سے دلچسپی رکھتے ہیں٬ اور بھارت کے اَن سنکٹ کو دور کرنے میں وشواس رکھتے ہیں. قیمت پانچ آنے .

पंडित सुन्दरलाल की और किताबें :—

हिन्दू मुसलिम एकता— इस में वह चार लेक्चर जमा कर दिये गये हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़—साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है— महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् १६४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़— इस छोटी सी किताब में सन १६४६-५० में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

پنڈت سندرلال کی اور کتابیں:—

ھندو مسلم ایکتا— اس میں وہ چار لیکچر جمع کر دئے گئے ھیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق— سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذھبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج، جس نے آخر میں دیس پتا مہاتما گاندھی تک کو ھمارے بیچ میں نہ رھنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے— مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سن ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وھاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک ورنن . اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ھیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق— اس چھوٹی سی کتاب میں ۱۹۴۹-۵۰ میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ھے اور ایسے جھگڑوں کو ھمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ھے . قیمت صرف ۲

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४४ मुट्ठीगंज —

गीता और क़ुरान

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे दे कर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देस की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़बत, आख़रत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपये.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

گیتا اور قران

لیکھک—پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے ۔

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے ۔

آخر میں قرآن سے پہلے کی عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قران کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے ۔ اس میں قران کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے ۔

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے ۔

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ ۔

ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ہند' ۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد ۔

नीचे लिखी सब किताबें नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती हैं.

डाक या रेल खर्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

२९ जनवरी सन १९४८ को महात्मा गांधी ने आल इंडिया कांगरेस कमेटी के सामने एक सुझाव के रूप में 'लोक सेवक संघ' का एक नया विधान तैयार किया था. इस विधान में उन्होंने सलाह दी थी की कांगरेस का सारा संगठन तोड़ दिया जावे और कांगरेस वाले हकूमत से बाहर निकल कर एक 'लोक सेवक संघ' बना कर काम करें.

३० जनवरी को अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा जी ने कांगरेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर वह विधान दिया की वह गांधी जी की तरफ़ से उसे आल इंडिया कांगरेस कमेटी में पेश कर दें. यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देस के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. २२५ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपये

نیچے لکھی سب کتابیں ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہیں ۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمہ ہوگا ۔

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک — شری منظر علی سوختہ

۲۹ جنوری سن ۱۹۴۸ کو مہاتما گاندھی نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے ایک سجھاؤ کے روپ میں 'لوک سیوک سنگھ' کا ایک نیا ودھان تیار کیا تھا ۔ اِس ودھان میں اُنہوں نے صلاح دی تھی کہ کانگریس کا سارا سنگٹھن توڑ دیا جاوے اور کانگریس والے حکومت سے باہر نکل کر ایک 'لوک سیوک سنگھ' بنا کر کام کریں ۔

۳۰ جنوری کو اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما جی نے کانگریس کے جنرل سکریٹری کو بلا کر وہ ودھان دیا کہ وہ گاندھی جی کی طرف سے اُسے آل انڈیا کانگریس کمیٹی میں پیش کر دیں ۔ یہ چھوٹا سا ودھان دیس کے نام گاندھی جی کی آخری وصیت ہے اور اِسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیس کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں ۔

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے ۔ ۲۲۵ صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے ۔

(५) आरमीनिया का (ग्रेगोरियन) चर्च : बड़े धर्म-पिता और सब आरमीनियनों के कैथोलीको इसके सदर हैं.

(६) ईवेंजलीकल क्रिश्चियन बैपटिस्ट चर्च : इसमें ईवेंजलीकल क्रिश्चियनों, बैपटिस्टों और पेंटेकोस्टल चर्च के मानने वालों की पहले की स्वतन्त्र संस्थाएं शामिल हैं.

(७) लूथर के मानने वालों का चर्च : ख़ासकर लाटविया और एस्तोनिया की सोशलिस्ट रिपब्लिक में है.

(८) बौद्ध धर्म के मानने वाले.

(९) यहूदी धर्म : इसका कोई संगठित मरकज़ नहीं है.

सोवियत संघ के वज़ीर मंडल के नीचे रूसी आर्थोडाक्स चर्च और दूसरे धार्मिक पंथों के मंडल क़ायम हैं. इन मंडलों को धार्मिक संस्थाओं और सरकारी अधिकारियों और संस्थाओं के बीच सम्बन्ध क़ायम करने के लिये बनाया गया है. इसके अलावा यह मंडल इस बात की भी देख भाल रखते हैं कि धार्मिक पूजा बन्दगी और रीत-रिवाज की आज़ादी के क़ानून पर ठीक तरह से अमल किया जा रहा है या नहीं. धार्मिक संस्थाओं के पेश किये हुए सवालों के बारे में क़ानूनों और क़ायदों का मसौदा तैयार करने का काम भी इन मंडलों के ज़िम्मे है.

धार्मिक आज़ादी की रक्षा करने के साथ साथ सोवियत संघ का विधान सब नागरिकों के धर्म के ख़िलाफ़ प्रचार करने के अधिकार को भी मानता है. धर्म के ख़िलाफ़ प्रचार का मतलब लोगों में दुनिया को साइन्सी निगाह से देखने की आदत का प्रचार करना है. धर्म के ख़िलाफ़ प्रचार के दौरान में धर्म को मानने वाले लोगों की भावनाओं, जज़बों को चोट पहुंचाना सोवियत विधान में मना है.

———

(۵) آرمینیا کا (گریگورین) چرچ : بڑے دھرم پتا اور سب آرمینینوں کے کیتھو لیکو اِس کے صدر ھیں ۔

(۶) ایوینجلیکل کرشچین بپٹسٹ چرچ : اِس میں ایوینجلیکل کرشچینوں، بپٹسٹوں اور پینٹے کوسٹل چرچ کے ماننے والوں کی پہلے کی سوتنتر سنستھائیں شامل ھیں ۔

(۷) لوتھر کے ماننے والوں کا چرچ : خاص کر لاٹویا اور ایستونیا کی سوشلسٹ ریپبلک میں ھیں ۔

(۸) بودھ دھرم کے ماننے والے ۔

(۹) یہودی دھرم : اِس کا کوئی سنگٹھت مرکز نہیں ھے ۔

سوویت سنگھ کے وزیر منڈل کے نیچے روسی آرتھوڈاکس چرچ اور دوسرے دھارمک پنتھوں کے منڈل قائم ھیں ۔ اِن منڈلوں کو دھارمک سنستھاؤں اور سرکاری ادھیکاریوں اور سنستھاؤں کے بیچ سمبندھ قائم کرنے کے لئے بنایا گیا ھے ۔ اِسکے علاوہ یہ منڈل اِس بات کی بھی دیکھ بھال رکھتے ھیں کہ دھارمک پوجا بندگی اور ریت رواج کی آزادی کے قانون پر ٹھیک طرح سے عمل کیا جا رھا ھے یا نہیں ۔ دھارمک سنستھاؤں کے پیش کئے ھوئے سوالوں کے بارے میں قانونوں اور قاعدوں کا مسودا تیار کرنے کا کام بھی اِن منڈلوں کے ذمے ھے ۔

دھارمک آزادی کی رکشا کرنے کے ساتھ ساتھ سوویت سنگھ کا ودھان سب ناگرکوں کے دھرم کے خلاف پرچار کرنے کے ادھیکار کو بھی مانتا ھے ۔ دھرم کے خلاف پرچار کا مطلب لوگوں میں دنیا کو سائنسی نگاہ سے دیکھنے کی عادت کا پرچار کرنا ھے ۔ دھرم کے خلاف پرچار کے دوران میں دھرم کو ماننے والے لوگوں کی بھاوناؤں، جذبوں کو چوٹ پہونچانا سوویت ودھان میں منع ھے ۔

———

रीत रिवाजों को पालने के अधिकार की रक्षा करता है. सोवियत राज धार्मिक सभा सोसाइटियों के लिये प्रार्थना घरों (गिरजों, सिनेगागों, मसजिदों वग़ैरा) के मुफ़्त इस्तेमाल और अपने धर्म के नाम का बोर्ड लगाने की सुविधा देता है. धार्मिक संस्थाएं ख़ुद अपने पूजाघर बना सकती हैं. धार्मिक स्कूलों के लिये मरकज़ी और मुक़ामी सरकारी अधिकारी जगहों का प्रबन्ध करते हैं और धार्मिक किताबों और अख़बारों के निकालने के लिये काग़ज़ और छापाख़ानों की सुविधा देते हैं.

आजकल सोवियत रूस में नीचे लिखी धार्मिक जमातें मौजूद हैं—

(१) रूमी आर्थोडाक्स चर्च : मास्को और सारे रूस के सत्तर बरस के बूढ़े धर्मपिता अलेक्सी इसके सद्र हैं. १९०२ में आपने दीक्षा ली थी. एक सलाहकार मंडल—पवित्र सिनोद—के साथ आप काम करते हैं. इस चर्च के मानने वालों की गिनती सबसे ज़्यादा है.

(२) मुसलमानों का धर्म. इसलाम : मुसलमानों के अपने मज़हबी मामले उनके चार सूबाई धार्मिक मरकज़ों से चलते हैं. सोवियत संघ के अधिकतर मुसलमान सुन्नी हैं. मुसलमानों की यही बड़ी जमात है. शिया मुसलमानों की तादाद काफ़ी कम है. वह ख़ासकर काकेशिया-पार के इलाक़े में रहते हैं.

(३) रोमन कैथोलिक चर्च : यह तीन पंथों में बटा है जो एक दूसरे से अलग रहते हैं. एक कहलाता है बेलोक्रीनितज़की पंथ. दूसरा पंथ वह जो पादरियों को नहीं मानता, तीसरा वह जो रूसी आर्थोडाक्स चर्च के पहले के पादरियों को रखता और मानता है.

(४) ज्यारजियों का आर्थोडाक्स चर्च : धर्म-पिता कैथोलिक्रोस इसके सद्र हैं.

ریت رواجوں کو پالن کے ادھیکار کی رکشا کرتا ہے. سوویت راج دھارمک سبھا سوسائٹیوں کے لئے پراتھنا گھروں (گرجوں سنیگاگوں' مسجدوں وغیرہ) کے مفت استعمال اور اپنے دھرم کے نام کا بورڈ لگانے کی سودھا دیتا ہے. دھارمک سنستھائیں خود اپنے پوجا گھر بنا سکتی ہیں. دھارمک اسکولوں کے لئے مرکزی اور مقامی سرکاری ادھیکاری جگہوں کا پربندھ کرتے ہیں اور دھارمک کتابوں اور اخباروں کے نکالنے کے لئے کاغذ اور چھاپا خانوں کی سودھا دیتے ہیں.

آجکل سوویت روس میں نیچے لکھی دھارمک جماعتیں موجود ہیں—

(۱) روسی آرتھوڈاکس چرچ : ماسکو اور سارے روس کے ستر برس کے بوڑھے دھرم پتا الیکسی اِس کے صدر ہیں. ۱۹۰۲ میں آپ نے دیکشا لی تھی. ایک صلاحکار منڈل—پوتر سنود—کے ساتھ آپ کام کرتے ہیں. اِس چرچ کے ماننے والوں کی گنتی سب سے زیادہ ہے.

(۲) مسلمانوں کا دھرم' اسلام : مسلمانوں کے اپنے مذہبی معاملے اُن کے چار صوبائی دھارمک مرکزوں سے چلتے ہیں. سوویت سنگھ کے ادھک تر مسلمان سنی ہیں. مسلمانوں کی یہی بڑی جماعت ہے. شیعہ مسلمانوں کی تعداد کافی کم ہے. وہ خاص کر کاکیشیا پار کے علاقے میں رہتے ہیں.

(۳) رومن کیتھولک چرچ : یہ تین پنتھوں میں بٹا ہے جو ایک دوسرے سے الگ رہتے ہیں. ایک کہلاتا ہے بیلو کری نتجکی پنتھ' دوسرا پنتھ وہ جو پادریوں کو نہیں مانتا' تیسرا وہ جو روسی آرتھوڈاکس چرچ کے پہلے کے پادریوں کو رکھتا اور مانتا ہے.

(۴) جیار جیوں کا آرتھوڈاکس چرچ : دھرم پتا کیتھولیکوس

किसी भी चर्च को राज की तरफ़ से माली सहायता नहीं दी जाती. राज की नजर में सब चर्च बराबर हैं—किसी भी चर्च या पंथ को सरकार से ख़ास रिआयतें हासिल नहीं हैं. धर्म के आधार पर राज किसी नागरिक के साथ भेदभाव नहीं करता. सरकारी दस्तावेज़ों में (पासपोर्ट, विवाह के लाइसेंस, पैदायश के सर्टीफ़िकेट वग़ैरा में) नागरिक का धर्म दर्ज नहीं किया जाता.

आम तालीम को राज ने चर्च के हाथों से पूरी तरह ले लिया है और स्कूलों को चर्च से अलग कर दिया है. सोवियत सरकारी स्कूलों में किसी भी तरह की किसी धर्म की तालीम नहीं दी जाती.

चर्च को राज से अलग करने का यह मतलब नहीं है कि पादरियों और चर्च को मानने वालों को नागरिक अधिकारों से अलग कर दिया जाता है. सब चर्चों और धार्मिक मत मतान्तरों के पादरियों को दूसरे सब नागरिकों के बराबर चुनाव सम्बन्धी और दूसरे अधिकार हासिल हैं.

सोवियत विधान सब नागरिकों के, चाहे वह जिस धर्म को भी मानते हों, धार्मिक सभा सोसाइटियों और संस्थाओं के रूप में संगठित होने और इन संस्थाओं की मरकज़ी इन्तज़ामी संस्थाएं बनाने तक के अधिकार की गारंटी करता है. इस तरह की मरकज़ी संस्थाएं अपने धर्म वालों की कानफ़रेन्सों और पादरियों की कॉंगरेसों का इन्तज़ाम करती हैं, अपने अख़बार और किताबें निकालती हैं, धार्मिक स्कूलों को चलाती हैं. हर चर्च की संस्थाओं का ख़र्च उस धर्म के मानने वाले लोगों की अपनी मरज़ी से दिए दान से चलता है.

सोवियत क़ानून हर धर्म के मानने वाले लोगों को आज़ादी के साथ मिलकर खुले उपासना या पूजा बन्दगी का इन्तज़ाम करने, बच्चों

کسی بھی چرچ کو راج کی طرف سے مالی سہایتا نہیں دی جاتی ۔ راج کی نظر میں سب چرچ برابر ہیں—کسی بھی چرچ یا پنتھ کو سرکار سے خاص رعائتیں حاصل نہیں ہیں ۔ دھرم کے آدھار پر راج کسی ناگرک کے ساتھ بھید بھاؤ نہیں کرتا ۔ سرکاری دستاویزوں میں (پاسپورٹ، وواہ کے لائسنس، پیدائش کے سرٹیفکیٹ وغیرہ میں) ناگرک کا دھرم درج نہیں کیا جاتا ۔

عام تعلیم کو راج نے چرچ کے ہاتھوں سے پوری طرح لے لیا ہے اور اسکولوں کو چرچ سے الگ کر دیا ہے ۔ سوویت سرکاری اسکولوں میں کسی بھی طرح کی کسی دھرم کی تعلیم نہیں دی جاتی ۔

چرچ کو راج سے الگ کرنے کا یہ مطلب نہیں ہے کہ پادریوں اور چرچ کو ماننے والوں کو ناگرک ادھیکاروں سے الگ کر دیا جاتا ہے ۔ سب چرچوں اور دھارمک مت متانتروں کے پادریوں کو دوسرے سب ناگرکوں کے برابر چناؤ سمبندھی اور دوسرے ادھیکار حاصل ہیں ۔

سوویت ودھان سب ناگرکوں کے، چاہے وہ جس دھرم کو بھی مانتے ہوں، دھارمک سبھا سوسائٹیوں اور سنستھاؤں کے روپ میں سنگٹھت ہونے اور ان سنستھاؤں کی مرکزی انتظامی سنستھائیں بنانے تک کے ادھیکار کی گارنٹی کرتا ہے ۔ اس طرح کی مرکزی سنستھائیں اپنے دھرم والوں کی کانفرنسوں اور پادریوں کی کانگریسوں کا انتظام کرتی ہیں، اپنے اخبار اور کتابیں نکالتی ہیں، دھارمک اسکولوں کو چلاتی ہیں ۔ ہر چرچ کی سنستھاؤں کا خرچ اس دھرم کے ماننے والے لوگوں کی اپنی مرضی سے دیئے دان سے چلتا ہے ۔

سوویت قانون ہر دھرم کے ماننے والے لوگوں کو آزادی کے ساتھ ملکر کھلے اپاسنا یا پوجا بندگی کا انتظام کرنے، بچوں اور

खड़ी करके काँगरेस को भी उसके मुँह में ठूँस कर इतनी समझदारी का काम किस लिये किया !

अधिक समझदार दुनिया नहीं बदला करते, वह अपने को बदलते हैं. यह कम समझ ही होते हैं जो दुनिया को बदल जाते हैं. पर वह लादी हुई शिस्त को नहीं मानते. गाँधी जी अगर अंगरेज़ी राज की शिस्त को अधिक समझदार बन कर अपने कंधे पर लाद लेते तो न हिन्दुस्तान आज़ाद होता और न काँगरेसी सरकार दिखाई देती. और न काँगरेस की वरकिंग कमेटी दूसरों पर शिस्त लादने के लिये इतनी उतावली पाई जाती.

१५. ४. ५१.

—भगवानदीन

सोवियत रूस में धर्म की आज़ादी—

रूस की धर्म सम्बन्धी बातों को लेकर दुनिया भर में तरह तरह की ग़लतफ़हमियाँ प्रचलित हैं. हम यहाँ 'सोवियत यूनियन के विचार और समाचार' नाम के दिल्ली से निकलने वाले एक हफ़्तेवार अख़बार से एक मज़मून दे रहे हैं जिससे इस विशय पर ख़ासी रोशनी पड़ती है— एडीटर.

सोवियत रूस का विधान सब नागरिकों के लिये धार्मिक रीत-रिवाज की आज़ादी का ऐलान करता है.

सोवियत संघ के हर नागरिक को किसी भी धर्म के मानने या न मानने की आज़ादी है. यह मामला उसके अपने विश्वास और उसकी इच्छा से सम्बन्ध रखता है.

सोवियत संघ में चर्च (संगठित धर्म) को हकूमत से अलग कर दिया गया है. राज के राजकाजी कामों में दख़ल देने का चर्च को

کھڑی کرکے کانگریس کو بھی اُسکے منه میں ٹھونس کر اتنی سمجھداری کا کام کس لئے کیا !

ادھک سمجھدار دنیا نہیں بدلا کرتے، وہ اپنے کو بدلتے ہیں. یہ کم سمجھ ہی ہوتے ہیں جو دنیا کو بدل جاتے ہیں پر وہ لادی ہوئی شست کو نہیں مانتے . گاندھی جی اگر انگریزی راج کی شست کو ادھک سمجھدار بن کر اپنے کندھے پر لاد لیتے تو نہ هندستان آزاد ہوتا اور نہ کانگریسی سرکار دکھائی دیتی . اور نہ کانگریس کی ورکنگ کمیٹی دوسروں پر شست لادنے کے لئے اتنی اُتاولی پائی جاتی.

۱۵-۴-۵۱

—بھگوان دین

سوویت روس میں دھرم کی آزادی—

روس کی دھرم سمبندھی باتوں کو لے کر دنیا بھر میں طرح طرح کی غلط فہمیاں پر چلت ہیں . ہم یہاں ' سوویت یونین کے وچار اور سماچار ' نام کے دلی سے نکلنے والے ایک ہفتہ وار خبار سے ایک مضمون دے رہے ہیں جس سے اس وشے پر خاصی روشنی پڑتی ہے—اڈیٹر

سوویت روس کا ودھان سب ناگرکوں کے لئے دھارمک ریت رواج کی آزادی کا اعلان کرتا ہے .

سوویت سنگھ کے ہر ناگرک کو کسی بھی دھرم کے ماننے یا نہ ماننے کی آزادی ہے . یہ معاملہ اسکے اپنے وشواس اور اُسکی اِچھا سے سمبندھ رکھتا ہے .

سوویت سنگھ میں چرچ (سنگٹھت دھرم) کو حکومت سے الگ

भी थूकने या इसी तरह के और कोई काम करने की हिम्मत नहीं कर सकता. पर वही आदमी डिसिप्लिन का बोझा कंधे पर लादकर रेल के डिब्बे में थूकने से कभी नहीं हिचकता. अगर हम भूलते नहीं हैं तो काँगरेस में शिस्त पर न चलने की सज़ा दिये जाने का रिवाज गाँधी जी ने शुरू किया. और शायद बोस बाबू या और किसी ऐसे ही नेता के सज़ा देने पर किसी मनचले ने गाँधी जी से सवाल पूछा था कि फिर काँगरेस में और नाज़ी और बोलशेविक पार्टी में क्या फ़रक़ रह गया. तब गाँधी जी ने जवाब में यह कहा था कि नाज़ी और बोलशेविक पार्टी तो शिस्त न मानने पर सर उड़ा देती हैं, काँगरेस तो सिर्फ़ काँगरेस से बाहर ही करती है. उस वक़्त हम अपने मन में यह कह कर ही रह गए थे कि अगर काँगरेस में सर उड़ाने की ताक़त होती तो शायद वह भी सर उड़ाने से बाज़ न आती. और क्या आज अहिंसक काँगरेस की सरकार डंडे नहीं चलाती और गोली नहीं चलाती ?

हमारी राय में वरकिंग कमेटी शिस्त यानी डिसिप्लिन को इस नए सुझाव के ज़रिये यहाँ तक खींच ले गई है कि उसने अपने एक एक प्रस्ताव को रद्दी ही नहीं किया है बल्कि एक एक की कमर ही तोड़दी है.

शिस्त खिंच कर 'लोकशाही' नहीं रह जाती. 'शिस्त शाही' बन जाती है. राशन की दूकान पर घंटों ठंडी हवा, लू या बरसात में खड़े रहने में शिस्त भले ही हो लोकशाही नहीं. राशन ही की दूकान से सड़ा या कूड़ा मिला नाज लेने में शिस्त भले ही हो पर लोकशाही नहीं है. हम मिसालें बढ़ाना नहीं चाहते क्योंकि हम लोकशाही पर लेख नहीं लिख रहे. पर हम कहना यह चाहते हैं कि इस तरह की सैकड़ों शिस्त पहले से ही लोकशाही को खाए जा रही थीं फिर वरकिंग कमेटी ने एक नई शिस्त की बाघिन

بھی تھوکنے یا اِسی طرح کے اور کوئی کام کرنے کی ہمت نہیں کر سکتا . پر وہی آدمی ڈسپلن کا بوجھا کندھے پر لاد کر ریل کے ڈبے میں تھوکنے سے کبھی نہیں ہچکتا . اگر ہم بھولتے نہیں ہیں تو کانگریس میں شست پر نہ چلنے کی سزا دئے جانے کا رواج گاندھی جی نے شروع کیا . اور شاید بوس بابو یا اور کسی ایسے ہی نیتا کے سزا دینے پر کسی منچلے نے گاندھی جی سے سوال پوچھا تھا کہ پھر کانگریس میں اور نازی اور بولشیوک پارٹی میں کیا فرق رہ گیا . تب گاندھی جی نے جواب میں یہ کہا تھا کہ نازی اور بولشیوک پارٹی تو شست نہ ماننے پر سر اُڑا دیتی ہیں، کانگریس تو صرف کانگریس سے باہر ہی کرتی ہے . اُس وقت ہم اپنے من میں یہ کہکر ہی رہ گئے تھے کہ اگر کانگریس میں سر اُڑانے کی طاقت ہوتی تو شاید وہ بھی سر اُڑانے سے باز نہ آتی . اور کیا آج اہنسک کانگریس کی سرکار ڈنڈے نہیں چلاتی اور گولی نہیں چلاتی ؟

ہماری رائے میں ورکنگ کمیٹی شست یعنی ڈسپلن کو اس نئے سجھاؤ کے ذریعے یہاں تک کھینچ لے گئی ہے کہ اُس نے اپنے ایک ایک پرستاؤ کو ردی ہی نہیں کیا ہے بلکہ ایک ایک کی کمر ہی توڑ دی ہے .

شست کھینچ کر 'لوک شاہی' نہیں رہ جاتی' 'شست شاہی' بن جاتی ہے . راشن کی دوکان پر گھنٹوں ٹھنڈی ہوا، لو یا برسات میں کھڑے رہنے میں شست بھلے ہی ہو لوک شاہی نہیں . راشن ہی کی دوکان سے سڑا یا کوڑا ملا ناج لینے میں شست بھلے ہی ہو پر لوک شاہی نہیں ہے . ہم مثالیں بڑھانا نہیں چاہتے کیونکہ ہم لوک شاہی پر لیکھ نہیں لکھ رہے . پر ہم کہنا یہ چاہتے ہیں کہ اِسطرح کی سیکڑوں شست پہلے سے ہی لوک شاہی کو کھائے جا رہی تھیں پھر ورکنگ کمیٹی نے ایک نئی شست کی باگھن

शिस्त बनाम लोकशाही —

कॉंगरेस की वरकिंग कमेटी ने हाल में कॉंगरेसवालों के अन्दर शिस्त यानी डिसिप्लिन की कमी पर दुख प्रकट करते हुए एक ठहराव पास किया है जिसका निचोड़ यह है कि कोई कॉंगरेस वाला कॉंगरेस की या किसी कॉंगरेस सरकार की किसी पालिसी को सिवा अपनी पार्टी की मीटिंग में या कॉंगरेस कमेटी की मीटिंग में और कहीं न बुरा कहे और न उस पर नुकताचीनी करे. पार्लीमेन्ट के और सूबाई एसेम्बलियों के कॉंगरेसी मेम्बरों को भी आगाह कर दिया गया है कि वह अगर इसके ख़िलाफ़ अमल करेंगे तो उन्हें सज़ा दी जा सकेगी, जिसका मतलब यह है कि पार्लीमेंट या एसेम्बलियों के अन्दर भी कॉंगरेसी मेम्बरों को यह आज़ादी नहीं रही.

शिस्त यानी डिसिप्लिन के नाम पर अब तक दुनिया में क्या क्या ज़ुल्म हुए हैं उनकी तरफ़ शायद ही किसी का ध्यान गया हो. हमारी राय में सच्ची लोकशाही जैसी चीज़ किसी मुल्क में नहीं है और हिन्दुस्तान में तो अभी वह क़दम रखने क्या, झाँकने की भी कोशिश नहीं कर सकती. कॉंगरेस की वरकिंग कमेटी ने डिसिप्लिन के नाम पर जो अंधाधुन्द आज़ादी ली है वह इस बात का सबूत नहीं है कि कॉंगरेस एक बड़ी ताक़तवर संस्था है. ताक़तवर संस्था तो वही कहलाती है और वही होती है जिस पर शिस्त लादी नहीं जाती. शिस्त जब किसी संस्था के मेम्बरों पर सवार होती है तो वह कमर तोड़ देती है और मेम्बरों को नामर्द बना देती है. लेकिन शिस्त पर सवार संस्था उतनी ही मज़बूत होती है जितनी शेर पर सवार काली. शिस्त इसे कहते हैं कि कोई बुरे से बुरा आदमी किसी जंगल में खड़े मन्दिर में अकेले रहते हुए

شست بنام لوک شاہی—

کانگریس کی ورکنگ کمیٹی نے حال میں کانگریس والوں کے اندر شست یعنی ڈسپلن کی کمی پر دکھ پرکٹ کرتے ہوئے ایک ٹھہراؤ پاس کیا ہے جسکا نچوڑ یہ ہے کہ کوئی کانگریس والا کانگریس کی یا کسی کانگریس سرکار کی کسی پالیسی کو سوا اپنی پارٹی کی میٹنگ میں یا کانگریس کمیٹی کی میٹنگ میں اور کہیں نہ برا کہے اور نہ اُس پر نکتہ چینی کرے. پارلیمنٹ کے اور صوبائی اسمبلیوں کے کانگریسی ممبروں کو بھی آگاہ کر دیا گیا ہے کہ وہ اگر اِسکے خلاف عمل کرینگے تو اُنہیں سزا دی جا سکیگی، جس کا مطلب یہ ہے کہ پارلیمنٹ یا اسمبلیوں کے اندر بھی کانگریسی ممبروں کو یہ آزادی نہیں رہی.

شست یعنی ڈسپلن کے نام پر اب تک دنیا میں کیا کیا ظلم ہوئے ہیں اُن کی طرف شاید ہی کسی کا دھیان گیا ہو. ہماری رائے میں سچی لوک شاہی جیسی چیز کسی ملک میں نہیں ہے اور ہندستان میں تو ابھی وہ قدم رکھنے کیا، جھانکنے کی بھی کوشش نہیں کر سکتی. کانگریس کی ورکنگ کمیٹی نے ڈسپلن کے نام پر جو اندھا دھند آزادی لی ہے وہ اس بات کا ثبوت نہیں ہے کہ کانگریس ایک بڑی طاقتور سنستھا ہے. طاقتور سنستھا تو وہی کہلاتی ہے اور وہی ہوتی ہے جس پر شست لادی نہیں جاتی. شست جب کسی سنستھا کے ممبروں پر سوار ہوتی ہے تو وہ کمر توڑ دیتی ہے اور ممبروں کو نامرد بنا دیتی ہے. لیکن شست پر سوار سنستھا اُتنی ہی مضبوط ہوتی ہے جتنی شیر پر سوار کالی. شست اِسے کہتے ہیں کہ کوئی برے سے برا آدمی کسی جنگل میں کھڑے مندر میں اکیلے رہتے ہوئے

सुरक्षा कौंसिल के हाथ से होना चाहिये था न कि ट्रूमैन साहब के. पर हम एक से ज्यादा बार लिख चुके हैं कि आजकल ट्रूमैन साहब मानी यू. एन. ओ. और यू. एन. ओ. मानी ट्रूमैन साहब. फिर हम नहीं समझते कि जनरल मैकआर्थर की अलहदगी को क्यों इतना तूल दिया जा रहा है.

अगर हम अन्दाजा लगाने में भूल नहीं करते तो ईरान में छिड़ा तेल का झगड़ा जनरल मैकआर्थर की अलहदगी का कहीं बड़ा कारन है बनिस्बत इसके कि जनरल साहब यू. एन. ओ. की हिदायतों पर पूरा पूरा अमल नहीं करते थे. अगर हम झूटे भविश्य वक्ता (पेशीनगो) नहीं हैं तो बहुत जल्दी ही जनरल मैकआर्थर फिर कहीं इस से ज्यादा मार्के की कमान्ड सँभालते हुए दिखलाई पड़ेंगे.

कोरिया की लड़ाई के सिलसिले में यह एक नई चाल चली गई है. यह दूसरी बात है कि उसे रूस किसी और निगाह से देखेगा, बरतानिया और हिन्दुस्तान किसी और निगाह से और अमरीका के रहनेवाले किसी और निगाह से.

क्या इस अलहदगी का यह मतलब समझा जाय कि अब चीन और रूस खड़े खड़े तमाशा देखेंगे क्योंकि शायद अब मंचूरिया या रूस की हद में बम नहीं गिराए जायेंगे और कोरिया को नई नई फ़ौजें भेज कर बिलकुल पीस डाला जायगा. क्या अमरीका की डिक्शनरी में आजादी के यही मानी बताए गए हैं? क्या यू. एन. ओ. और सुरक्षा समिति एक मुल्क की बरबादी को ही आजादी का नाम देती हैं? अगर उनकी डिक्शनरी सचमुच ऐसे मानों से भरी है तो वह दिन दूर नहीं जब मिट्टी के तेल की वजह से ईरान अपने आप को भड़के हुए ज्वाला मुखी के मुँह पर पाएगा.

यह चाल नहीं तो और क्या है?

१५. ४. ५१. —भगवानदीन

سورکشا کونسل کے ہاتھ سے ہونا چاہیئے تھا نہ کہ ٹرومین صاحب کے. پر ہم ایک سے زیادہ بار لکھ چکے ہیں کہ آجکل ٹرومین صاحب معنی یو. این. او. اور یو. این. او. معنی ٹرومین صاحب. پھر ہم نہیں سمجھتے کہ جنرل میک آرتھر کی علیحدگی کو کیوں اتنا طول دیا جا رہا ہے.

اگر ہم اندازہ لگانے میں بھول نہیں کرتے تو ایران میں چھڑا تیل کا جھگڑا جنرل میک آرتھر کی علیحدگی کا کہیں بڑا کارن ہے بہ نسبت اِسکے کہ جنرل صاحب یو. این. او. کی ہدایتوں پر پورا پورا عمل نہیں کرتے تھے. اگر ہم جھوٹے بھوشیہ وکتا (پیشین گو) نہیں ہیں تو بہت جلدی ہی جنرل میک آرتھر پھر کہیں اِس سے زیادہ معرکے کی کمانڈ سنبھالتے ہوئے دکھلائی پڑیں گے.

کوریا کی لڑائی کے سلسلے میں یہ ایک نئی چال چلی گئی ہے. یہ دوسری بات ہے کہ اُسے روس کسی اور نگاہ سے دیکھیگا برطانیہ اور ہندستان کسی اور نگاہ سے اور امریکہ کے رہنے والے کسی اور نگاہ سے.

کیا اس علیحدگی کا یہ مطلب سمجھا جائے کہ اب چین اور روس کھڑے کھڑے تماشہ دیکھینگے کیونکہ شاید اب منچوریا یا روس کی حد میں بم نہیں گرائے جائینگے اور کوریا کو نئی نئی فوجیں بھیجکر بالکل پیس ڈالا جائیگا. کیا امریکہ کی ڈکشنری میں آزادی کے یہی معنی بتائے گئے ہیں؟ کیا یو. این. او. اور سورکشا سمیتی ایک ملک کی بربادی کو ہی آزادی کا نام دیتی ہیں؟ اگر اُنکی ڈکشنری سچ مچ ایسے معنوں سے بھری ہے تو وہ دن دور نہیں جب مٹی کے تیل کی وجہ سے ایران اپنے آپ کو بھڑکے ہوئے جوالا مکھی کے منہ پر پائیگا.

یہ چال نہیں تو اور کیا ہے؟

۱۵-۴-۵۱ —بھگوان دین

यह तो हम नहीं मानते कि ट्रूमैन साहब को इस बात का पता न हो कि जनरल मैकआर्थर के अलहदा करने का अमरीका के रहने वालों पर क्या असर पड़ेगा और यह भी हम नहीं मानते कि वह यह पहले से नहीं जानते थे कि रिपबलिकन पार्टी इस बरखास्तगी को कैसा समझेगी. फिर यह समझना कि ट्रूमैन साहब ने कोई ऐसा मार्के का काम किया है जिसके लिये उन्हें बड़ा बहादुर या भलामानस माना जाय हमें तो निरा भोलापन मालूम होता है. सवाल यह नहीं है कि कौन गया और कौन आया. सवाल तो यह है कि जनरल मैकआर्थर की अलहदगी से अमरीका की दूर पूरब की नीत में क्या फ़रक़ आया. अमरीका तो पहले की तरह से उन ही तीन बातों पर अड़ा हुआ है और ट्रूमैन साहब उन ही तीन बातों को बार बार दोहराते हैं और नए जनरल रिजवे उन हीं की हाँ में हाँ मिलाते हैं. वह तीन बातें यही तो हैं—(१) यह कि लड़ाई रुकना चाहिये (२) यह कि जंग फिर न होने पाए (३) यह कि एग्रेशन ख़त्म होजाय. पर सवाल यह है कि लड़ाई कौन रोके और कैसे रुके और जंग फिर क्यों न हो और कौन न करे और एग्रेशन किसका माना जाय ?

अफ़्रीक़ा के एक अख़बार ने जनरल मैकआर्थर को बहुत ख़तरनाक आदमी बतलाया था. पर ट्रूमैन साहब तो उसे अलहदा करते वक़्त "बड़े से बड़े सेनापतियों में से एक" होने की सनद देते हैं.

जनरल मैकआर्थर की अलहदगी में एक और भूल होगई है. जनरल मैकआर्थर यू. एन. ओ. के जनरल थे न कि अमरीका के. अमरीका उन्हें अपनी सेना के सेनापति के पद से हटाने तक का अख़्तियार नहीं रखता क्योंकि अमरीका की तमाम सेनाएँ जो कोरिया में लड़ रही हैं वह क़ायदे से यू. एन. ओ. के मातहत लड़रही हैं न कि अमरीका के. इसलिये जनरल मैकआर्थर की अलहदगी का काम

یہ تو ہم نہیں مانتے کہ ترومین صاحب کو اس بات کا پتہ نہ ہو کہ جنرل میک آرتھر کے علیحدہ کرنے کا امریکہ کے رہنے والوں پر کیا اثر پڑیگا اور یہ بھی ہم نہیں مانتے کہ وہ یہ پہلے سے نہیں جانتے تھے کہ ری پبلکن پارٹی اِس برخاستگی کو کیسا سمجھے گی. پھر یہ سمجھنا کہ ترومین صاحب نے کوئی ایسا معرکے کا کام کیا ہے جسکے لئے اُنھیں بڑا بہادر یا بھلا مانس مانا جائے ہمیں تو نرا بھولاپن معلوم ہوتا ہے . سوال یہ نہیں ہے کہ کون گیا اور کون آیا . سوال تو یہ ہے کہ جنرل میک آرتھر کی علیحدگی سے امریکہ کی دور پورب کی نیت میں کیا فرق آیا . امریکہ تو پہلے کی طرح سے اُن ہی تین باتوں پر اَڑا ہوا ہے اور ترومین صاحب اُن ہی تین باتوں کو بار بار دہراتے ہیں اور نئے جنرل رجوے اُن ہی کی ہاں میں ہاں ملاتے ہیں وہ تین باتیں یہی تو ہیں — (۱) یہ کہ لڑائی رکنا چاہئیے (۲) یہ کہ جنگ پھر نہ ہونے پاوے . (۳) یہ کہ اگریشن ختم ہوجائے . پر سوال یہ ہے کہ لڑائی کون روکے اور کیسے رکے اور جنگ پھر کیوں نہ ہو اور کون نہ کرے اور اگریشن کس کا مانا جائے ؟

افریقہ کے ایک اخبار نے جنرل میک آرتھر کو بہت خطرناک آدمی بتایا تھا . پر ترومین صاحب تو اُسے علیحدہ کرتے وقت " بڑے سے بڑے سینا پتیوں میں سے ایک " ہونے کی سند دیتے ہیں .

جنرل میک آتھر کی علیحدگی میں ایک اور بھول ہو گئی ہے . جنرل میک آرتھر یو . این . او . کے جنرل تھے نہ کہ امریکہ کے . امریکہ اُنھیں اپنی سینا کے سینا پتی کے پد سے ہٹانے تک کا اختیار نہیں رکھتا کیونکہ امریکہ کی تمام سینائیں جو کوریا میں لڑ رہی ہیں وہ قاعدے سے یو . این . او . کے ماتحت لڑ رہی ہیں نہ کہ امریکہ کے . اس لئے جنرل میک آرتھر کی علیحدگی کا کام

मजबूर करती हैं कि जनरल मैकआर्थर की अलहदगी में कोई नेकनियती या भलाई है इस बात को मानने से हम इनकार करदें.

रिपबलिकन पार्टी तो यहाँ तक बढ़ गई है कि अगर वह यह नहीं चाहती कि ट्रूमैन साहब पर कोई इलज़ाम लगाया जाय तो खुले खुले यह तो कह ही रही है कि ट्रूमैन साहब को स्तीफ़ा दे देना चाहिये और उन लोगों को भी स्तीफ़ा दे देना चाहिये जो जनरल मैकआर्थर को अलग करने में ट्रूमैन साहब के साथ थे यानी एचेसन और मार्शल साहब. यह मार्शल साहब वही हैं जिन्होंने सन् १९४७ में चीन छोड़ देने की आवाज़ उठाई थी. अमरीकी सरकार की जो दूर पूरब की नीत थी उससे रिपबलिकन पार्टी हमेशा एक राय रही है. तभी तो इस पार्टी के एक नेता जान फ़ास्टर डल, विदेश मंत्री एचेसन के आज तक सलाहकार हैं. उन ही की मदद से जापानी सुलहनामा तैयार किया गया है और अभी खबर मिली थी कि वह बहुत जल्दी टोकियो पहुंच रहे हैं.

रिपबलिकन पार्टी की भी यही नीत है कि दूर पूरब में लड़ाई ज़ोरों के साथ चलाई जाय और यही काम जनरल मैकआर्थर कर रहे थे. रिपबलिकन पार्टी की तरफ़ से कहा तो यह जाता है कि जनरल मैकआर्थर ने कभी ऐसा नहीं किया कि यू. एन. ओ. की हिदायतें न मानी हों लेकिन इनकी खुली बातों से यह पता चलता है कि कोरिया की लड़ाई हमारी यानी अमरीकियों की है. इसे यू. एन. ओ. से क्या मतलब ? और अगर यू. एन. ओ. कुछ करना चाहती है तो इस तरह करे जिससे अमरीका का उल्लू सीधा हो.

इनमें से कुछ लोग तो ट्रूमैन पर यह भी इलज़ाम लगाते हैं कि वह अब कोरिया के बारे में अपनी समझ से काम नहीं लेते, जो कुछ करते हैं अंगरेज़ों की सलाह से या और मुल्कों की सलाह से करते हैं. कुछ अमरीकी तो यहाँ तक बढ़ गए हैं कि क्या अब उन जनरैलों को अपनी मर्ज़ी से लड़ने की छूट नहीं है जो कोरिया में काम कर रहे हैं

مجبور کرتی ھیں کہ جنرل میک آرتھر کی علیحدگی میں کوئی نیک نیتی یا بھلائی ھے اس بات کو ماننے سے ھم انکار کر دیں ۔

ری پبلکن پارٹی تو یہاں تک بڑھ گئی ھے کہ اگر وہ یہ نہیں چاھتی کہ ٹرومین صاحب پر کوئی الزام لگایا جائے تو کھلے کھلے یہ تو کہہ ھی رھی ھے کہ ٹرومین صاحب کو استعفیٰ دے دینا چاھیئے اور اُن لوگوں کو بھی استعفیٰ دے دینا چاھیئے جو جنرل میک آرتھر کو الگ کرنے میں ٹرومین صاحب کے ساتھ تھے یعنی ایچےسن اور مارشل صاحب ۔ یہ مارشل صاحب وھی ھیں جنھوں نے سن ١٩٣٥ میں چین چھوڑ دینے کی آواز اُٹھائی تھی ۔ امریکی سرکار کی جو دور پورب کی نیتی تھی اُس سے ری پبلکن پارٹی ھمیشہ ایک رائے رھی ھے ۔ تبھی تو اِس پارٹی کے ایک نیتا جان فاسٹرڈل، ودیش منتری ایچےسن کے آج تک صلاحکار ھیں اُن ھی کی مدد سے جاپانی صلحنامہ تیار کیا گیا ھے اور ابھی خبر ملی تھی کہ وہ بہت جلدی ٹوکیو پہونچ رھے ھیں ۔

ری پبلکن پارٹی کی بھی یہی نیتی ھے کہ دور پورب میں لڑائی زوروں کے ساتھ چلائی جائے اور یہی کام جنرل میک آرتھر کر رھے تھے ۔ ری پبلکن پارٹی کی طرف سے کہا تو یہ جاتا ھے کہ جنرل میک آرتھر نے کبھی ایسا نہیں کیا کہ یو ۔ این ۔ او ۔ کی ھدائتیں نہ مانی ھوں لیکن اِنکی کھلی باتوں سے یہ پتہ چلتا ھے کہ کوریا کی لڑائی ھماری یعنی امریکیوں کی ھے ۔ اسے یو ۔ این ۔ او ۔ سے کیا مطلب ؟ اور اگر یو ۔ این ۔ او ۔ کچھ کرنا چاھتی ھے تو اِس طرح کرے جس سے امریکہ کا الو سیدھا ھو ۔

اِن میں سے کچھ لوگ تو ٹرومین پر یہ بھی الزام لگاتے ھیں کہ وہ اب کوریا کے بارے میں اپنی سمجھ سے کام نہیں لیتے، جو کچھ کرتے ھیں انگریزوں کی صلاح سے یا اور ملکوں کی صلاح سے کرتے ھیں ۔ کچھ امریکی تو یہاں تک بڑھ گئے ھیں کہ کیا اب اُن جنریلوں

अन्तरक़ौमी एकता हासिल करने की बात सोचेंगे. अमरीका की नेशन को नाराज़ करके या उसमें फूट डाल कर वह यूनाइटेड नेशन्स की एकता की बात कभी नहीं सोच सकते.

कोरिया की लड़ाई जिस वक़्त शुरू हुई थी तब रूसी राजनेताओं का यह कहना था कि यह लड़ाई अमरीका ने अपना मतलब पूरा करने के लिये उठाई है और जनरल मैकआर्थर की उस वक़्त की जल्दबाज़ी इस बात का सबूत भी है. यह किसी से छिपा हुआ नहीं है कि यू. एन. ओ. की इजाज़त मिलने से पहले ही जनरल मैकआर्थर उत्तर कोरिया की फ़ौजों का सामना करने के लिये चल पड़े थे. उस वक़्त किसी तरह से अमरीका ने यू. एन. ओ. की मदद से कोरिया को एग्रेसर साबित करके अपनी सब बेजा कारवाइयों को जा यानी ठीक साबित करा लिया था और कुछ को छिपा दिया था. पर भूत वह जो सर पर चढ़ कर बोले. आज वह रिपबलिकन पार्टी जो जनरल मैकआर्थर को देवता मानती है खुल्लम खुल्ला चिल्ला कर कह रही है कि "क्या जनरल मैकआर्थर को बरख़ास्त करके ट्रूमैन साहब कोई नया और बड़ा 'म्यूनिच' खड़ा करना चाहते हैं? (म्यूनिच उसी जगह का नाम है जहाँ अंगरेज़ों ने हिटलर से सुलह करके हिटलर की ताक़त बढ़ा दी थी). क्या अब अमरीका को फ़ारमूसा से अपना घेरा हटाना पड़ेगा? क्या अब लाल चीन को यूनाइटेड नेशन्स में जगह देनी पड़ेगी और क्या जापान के साथ सुलहनामे में लाल चीन भी हमारे साथ बैठेगा? और क्या अब जापान को लाल घेरे में शामिल होने के लिये छोड़ दिया जायगा?

रिपबलिकन पार्टी के लोगों की यह बातें साफ़ साबित करती हैं कि अमरीका ने जान बूझ कर कोरिया की लड़ाई छेड़ी थी और इस नाते उसने फ़ारमूसा का घेरा डाल दिया था और जापान में अपने फ़ौजी अड्डे बनाने की स्कीम तैयार करली थी. यह सब बातें इसे

انتر قومی ایکتا حاصل کرنے کی بات سوچینگے . امریکہ کی نیشن کو ناراض کرکے یا اُس میں پھوٹ ڈال کر وہ یونائیٹڈ نیشنس کی ایکتا کی بات کبھی نہیں سوچ سکتے

کوریا کی لڑائی جسوقت شروع ہوئی تھی تب روسی راج نیتاؤں کا یہ کہنا تھا کہ یہ لڑائی امریکہ نے اپنا مطلب پورا کرنے کے لئے اُٹھائی ہے اور جنرل میک آرتھر کی اُسوقت کی جلدبازی اس بات کا ثبوت بھی ہے . یہ کسی سے چھپا ہوا نہیں ہے کہ یو . این . او . کی اجازت ملنے سے پہلے ھی جنرل میک آرتھر اُتر کوریا کی فوجوں کا سامنا کرنے کے لئے چل پڑے تھے . اُسوقت کسی طرح سے امریکہ نے یو . این . او . کی مدد سے کوریا کو ایگریسر ثابت کرکے اپنی سب بیجا کاروائیوں کو جا یعنی ٹھیک ثابت کرا لیا تھا اور کچھ کو چھپا دیا تھا . پر بھوت وہ جو سر چڑھ کر بولے . آج وہ ری پبلکن پارٹی جو جنرل میک آرتھر کو دیوتا مانتی ہے کھلم کھلا چلا کر کہہ رھی ہے کہ "کیا جنرل میک آرتھر کو برخاست کر کے ٹرومین صاحب کوئی نیا اور بڑا 'میونچ' کھڑا کرنا چاھتے ھیں ؟ (میونچ اُسی جگہ کا نام ہے جہاں انگریزوں نے ہٹلر سے صلح کر کے ہٹلر کی طاقت بڑھا دی تھی) کیا اب امریکہ کو فارموسا سے اپنا گھیرا ھٹانا پڑیگا ؟ کیا اب لال چین کو یونائیٹڈ نیشنس میں جگہ دینی پڑیگی اور کیا اب جاپان کے ساتھ صلحنامہ میں لال چین بھی ھمارے ساتھ بیٹھیگا ؟ اور کیا اب جاپان کو لال گھیرے میں شامل ہونے کے لئے چھوڑ دیا جائیگا ؟"

ری پبلکن پارٹی کے لوگوں کی یہ باتیں صاف ثابت کرتی ھیں کہ امریکہ نے جان بوجھ کر کوریا کی لڑائی چھیڑی تھی اور اِس ناتے اُس نے فارموسا کا گھیرا ڈال دیا تھا اور جاپان میں اپنے

कोरिया में नई चाल—

जब से हवा पर यह ख़बर बखेरी गई है कि जनरल मैकआर्थर यू. एन. ओ. के सेनापति की हैसियत से अलग कर दिये गए तब से तरह तरह के विचार, तरह तरह के लोगों में, तरह तरह से तरंगें मार रहे हैं. हमें यह ख़बर सुनकर ज़रा भी ऐसा न मालूम हुआ कि कोरिया की लड़ाई के मामले में कोई अनोखी या मार्के की बात हो रही है. जनरल मैकआर्थर सेनापति रहते या न रहते. अगर यू. एन. ओ. की फ़ौजों को अड़तीस पड़ी रेखा के उत्तर से वापिस बुला लिया गया होता तो हम यह समझते कि ज़रूर अमरीका की नियत बदली और वह सचमुच कोरिया और एशिया का भला चाहता है.

जनरल मैकआर्थर की बरख़ास्तगी के बारे में कम से कम हम यह समझ लें कि मैकआर्थर साहब असल में हैं क्या. लड़ाई में जापान से घुटने टिकवादेने के बाद से जनरल मैकआर्थर अमरीका की रिपबलिकन पार्टी के देवता बन गए हैं और उस देवता की इज़्ज़त को किसी तरह का बट्टा लगे ऐसा काम इस वक़्त अमरीका में कोई भी करने की हिम्मत नहीं कर सकता. टू्मैन साहब ने उन्हें अलहदा करते वक़्त जो यह बात कही है कि जनरल मैकआर्थर उस नीत से एक राय नहीं थे जो अमरीका की है और उन हिदायतों पर अमल नहीं करते थे जो उन्हें दी जाती थीं, हमें इस में कुछ सार दिखाई नहीं देता. अमरीका की नीत से एक राय न होने की जो बात टू्मैन साहब कह रहे हैं वह जनरल मैकआर्थर की बरख़ास्तगी के बाद की उन हालतों से मेल नहीं खाती जो अमरीका में हो रही हैं. अगर एक राय न होने में कोई सच्चाई होती तो अमरीका में आज साफ़ दो दल न देख पड़ते. टू्मैन जैसे समझदार आदमी से यह उम्मीद हरगिज़ नहीं की जा सकती कि वह क़ौमी एकता के बदले में

کوریا میں نئی چال—

جب سے ہوا پر یہ خبر بکھیری گئی ہے کہ جنرل میک آرتھر یو . این . او . کے سینا پتی کی حیثیت سے الگ کر دئے گئے تب سے طرح طرح کے وچار، طرح طرح کے لوگوں میں، طرح طرح سے ترنگیں مار رہے ہیں . ہمیں یہ خبر سنکر ذرا بھی ایسا نہ معلوم ہوا کہ کوریا کی لڑائی کے معاملے میں کوئی انوکھی یا معرکے کی بات ہو رہی ہے . جنرل میک آرتھر سینا پتی رہتے یا نہ رہتے، اگر یو . این . او . کی فوجوں کو اڑتیس پڑی ریکھا کے اُتر سے واپس بلا لیا گیا ہوتا تو ہم یہ سمجھتے کہ ضرور امریکہ کی نیت بدلی اور وہ سچ مچ کوریا اور ایشیا کا بھلا چاہتا ہے .

جنرل میک آرتھر کی برخاستگی کے بارے میں کم سے کم ہم یہ سمجھ لیں کہ میک آرتھر صاحب اصل میں ہیں کیا . لڑائی میں جاپان سے گھٹنے ٹکوا دینے کے بعد سے جنرل میک آرتھر امریکہ کی ری پبلکن پارٹی کے دیوتا بن گئے ہیں اور اُس دیوتا کی عزت کو کسی طرح کا بٹہ لگے ایسا کام اسوقت امریکہ میں کوئی بھی کرنے کی ہمت نہیں کر سکتا . ٹرومین صاحب نے اُنہیں علیحدہ کرتے وقت جو یہ بات کہی ہے کہ جنرل میک آرتھر اُس نیتی سے ایک رائے نہیں تھے جو امریکہ کی ہے اور اُن ہدایتوں پر عمل نہیں کرتے تھے جو اُنہیں دی جاتی تھیں، ہمیں اِس میں کچھ سار دکھائی نہیں دیتا . امریکہ کی نیتی سے ایک رائے نہ ہونے کی جو بات ٹرومین صاحب کہہ رہے ہیں وہ جنرل میک آرتھر کی برخاستگی کے بعد کی اُن حالتوں سے میل نہیں کھاتی جو امریکہ میں ہو رہی ہیں . اگر ایک رائے نہ ہونے میں کوئی سچائی ہوتی تو امریکہ میں آج صاف دو دل نہ دیکھ پڑتے . ٹرومین جیسے سمجھدار آدمی سے یہ اُمید ہرگز نہیں کی جا سکتی کہ وہ قومی ایکتا کے بدلے میں

ही दे, उनका ऐसा करना न हकूमत के सेकुलरपने को मजबूत करता है और न उनकी सच्ची शान को बढ़ाता है. भारत की ब्योहारी सरकार के एक शहरी की हैसियत से हमें शर्म आती है कि हमारे राज के ज़िम्मेदार पदाधिकारी इस तरह के कामों में हिस्सा लेने के लिये अपने को आज़ाद समझते हैं. सोमनाथ के इस उद्धार के और भी इस तरह के पहलू हैं. जैसे विदेशों में हमारे सरकारी नौकरों का उसे एक क़ौमी आन्दोलन का रूप देना जिन्हें हम किसी तरह भी एक सेकुलर राज के लिये जायज़ नहीं ठहरा सकते.

(३) हमने इस सम्बन्ध के 'हरिजन सेवक' (११ जनवरी १९४८) के अपने लेखों में विद्वान महाराष्ट्र इतिहासकार चिन्तामनि विनायक वैद्य की इस राय को नक़ल किया है कि सोमनाथ के सम्बन्ध में या सोमनाथ और महमूद ग़ज़नवी के हमले के सम्बन्ध में जितने क़िस्से इतिहास में मिलते हैं उनमें से बहुत से फ़रज़ी और मनगढ़न्त हैं. यह तो रही लिखे हुए इतिहास की बात. अब हमने सुना है कि सोमनाथ में जो जो चीज़ें हो रही हैं और फैलाई जारही हैं वह श्री के. एम. मुँशी के लिखे हुए एक निहायत दिलचस्प गुजराती नावेल "जय सोमनाथ" के आधार पर हो रही हैं.

यही सारी घटना भारत को दुनिया की नज़रों में गिरानेवाली घटना है, ऊँचा करनेवाली नहीं. धर्म बड़ी ऊँची चीज़ है पर राजकाजियों के हाथ में खेलनेवाला धर्म, धर्म नहीं. धर्म का उपहास है. इलाज केवल एक है और वह है जनता का अपने सदियों के अन्धविश्वासों, कुरीतियों, तंगनज़रियों और मानसिक जंजालों से बाहर निकल कर एक मानव धर्म को साक्षात करना अपने सच्चे नफ़ा नुक़सान को समझना और इस नए ज्ञान और नई मानसिक आज़ादी की रोशनी में राज और समाज दोनों की बागें अपने हाथ में लेना.

१५. ४. ५१.

ہی دے، اُن کا ایساکرنا نہ حکومت کے سیکولرپنے کو مضبوط کرتا ہے اور نہ اُنکی سچی شان کو بڑھاتا ہے۔ بھارت کی بیوہاری سرکار کے ایک شہری کی حیثیت سے ہمیں شرم آتی ہے کہ ہمارے راج کے ذمہ دار پدادھیکاری اسطرح کے کاموں میں حصہ لینے کے لئے اپنے کو آزاد سمجھتے ہیں۔ سومناتھ کے اس اُددھار کے اور بھی اسطرح کے پہلو ہیں، جیسے ودیشوں میں ہمارے سرکاری نوکروں کا اسے ایک قومی آندولن کا روپ دینا جنھیں ہم کسی طرح بھی ایک سیکولر راج کے لئے جائز نہیں ٹھہرا سکتے۔

(۳) ہم نے اس سمبندھ کے 'ہریجن سیوک' (۱۱ جنوری ۱۹۴۸) کے اپنے لیکھوں میں ودوان مہا راشٹر اتہاس کار چنتامنی ونائک وید کی اس رائے کو نقل کیا ہے کہ سومناتھ کے سمبندھ میں یا سومناتھ اور محمودغزنوی کے حملے کے سمبندھ میں جتنے قصے اِتہاس میں ملتے ہیں اُن میں سے بہت سے فرضی اور من گھڑنت ہیں۔ یہ تو رہی لکھے ہوئے اِتہاس کی بات۔ اب ہم نے سنا ہے کہ سومناتھ میں جو جو چیزیں ہو رہی ہیں اور پھیلائی جا رہی ہیں وہ شری کے۔ ایم۔ منشی کے لکھے ہوئے ایک نہایت دلچسپ گجراتی ناول ''جے سومناتھ'' کے آدھار پر ہورہی ہیں۔

یہ ساری گھٹنا بھارت کو دنیا کی نظروں میں گرانے والی گھٹنا ہے، اُونچا کرنے والی نہیں۔ دھرم بڑی اُونچی چیز ہے پر راج کاجیوں کے ہاتھ میں کھیلنے والا دھرم دھرم نہیں، دھرم کا اُپہاس ہے۔ علاج کیول ایک ہے اور وہ ہے جنتا کا اپنے صدیوں کے اندھ وشواسوں، کریتیوں، تنگ نظریوں اور مانسک جنجالوں سے باہر نکلکر ایک مانو دھرم کو ساکشات کرنا، اپنے سچے نفع نقصان کو سمجھنا اور اس نئے گیان اور نئی مانسک آزادی کی روشنی میں راج اور سماج دونوں کی باگیں اپنے ہاتھ میں لینا۔

बात आम सदाचार के खिलाफ़ न हो. भारत हो या पाकिस्तान, रूस हो या जापान, किसी भी देस में किसी भी मूर्ति पूजक को अपने देवी देवता को अपने ढंग से पूजने की पूरी आज़ादी होनी चाहिये. सोमनाथ के इस मामले के सम्बन्ध में हमें केवल तीन बातें कहनी हैं—

(१) यह कि जो लोग इस आन्दोलन के कर्ताधर्ता बने हुए हैं उनमें से कई की बाबत हम दावे के साथ अपनी जानकारी की बिना पर यह कह सकते हैं कि वह ख़ुद मूर्ति पूजा में विश्वासी नहीं हैं. हिन्दुओं और मुसलमानों, महासभा और लीग, दोनों में हम यह लज्जाजनक तमाशा देख चुके हैं और देख रहे हैं कि जो पढ़े लिखे लोग इन धर्मों के मामूली असूलों में भी विश्वास नहीं रखते वह अपना राजकाजी मक़सद पूरा करने के लिये हिन्दू और मुसलिम जनता को उन ही बातों के नाम पर भड़काते और उनसे अपनी ग़रज़ पूरी करते हैं. ईस्ट इंडिया कम्पनी के ज़माने से लेकर आज तक हमारे देस की राजकाजी हालत का यह एक बड़ा शर्मनाक पहलू रहा है और है. भोली जनता को इस तरह भड़का कर उसकी गाढ़ी कमाई के करोड़ों रुपए इन तमाशों में ख़र्च करवाना और करना हमें देस और मानवता दोनों के साथ अन्याय दिखाई देता है. बड़े दर्द के साथ हमारे अन्दर से यह सवाल उठ रहा है कि आख़िर यह तमाशे कबतक होते रहेंगे ?

(२) यह कि भारत की सरकार सेकुलर यानी ग़ैर जानिबदार व्योहारी सरकार मानी जाती है और हम मानते हैं कि एक बड़े दर्जे तक है. एक ऐसी व्योहारी सरकार के वज़ीरों और उसके सदर का इस तरह की चीज़ों में खुल्ले आम हिस्सा लेना थोड़ी देर के लिये भोली धार्मिक जनता से या साम्प्रदायिकता के ज़हर में डूबे हुए पढ़े लिखे लोगों से उन्हें वाह-वाही लूटने का मौक़ा भले

بات عام سداچار کے خلاف نہ ہو . بھارت ہو یا پاکستان' روس ہو یا جاپان' کسی بھی دیس میں کسی بھی مورتی پوجک کو اپنے دیوی دیوتا کو اپنے ڈھنگ سے پوجنے کی پوری آزادی ہونی چاہیئے . سومناتھ کے اس معاملے کے سمبندھ میں ہمیں کیول تین باتیں کہنی ہیں —

(۱) یہ کہ جو لوگ اس آندولن کے کرتا دھرتا بنے ہوئے ہیں اُن میں سے کئی کی بابت ہم دعوے کے ساتھ اپنی جان کاری کی بنا پر یہ کہہ سکتے ہیں کہ وہ خود مورتی پوجا میں وشواسی نہیں ہیں . ہندوؤں اور مسلمانوں' مہا سبھا اور لیگ' دونوں میں ہم یہ لجا جنک تماشہ دیکھ چکے ہیں اور دیکھ رہے ہیں کہ جو پڑھے لکھے لوگ اِن دھرموں کے معمولی اصولوں میں بھی وشواس نہیں رکھتے وہ اپنا راج کاجی مقصد پورا کرنے کے لئے ہندو اور مسلم جنتا کو اُن ہی باتوں کے نام پر بھڑکاتے اور اُن سے اپنی غرض پوری کرتے ہیں . ایسٹ انڈیا کمپنی کے زمانے سے لے کر آج تک ہمارے دیس کی راج کاجی حالت کا یہ ایک بڑا شرمناک پہلو رہا ہے اور ہے . بھولی جنتا کو اِسطرح بھڑکا کر اُسکی گاڑھی کمائی کے کروڑوں روپے اِن تماشوں میں خرچ کروانا اور کرنا ہمیں دیس اور مانوتا دونوں کے ساتھ انیائے دکھائی دیتا ہے . بڑے درد کے ساتھ ہمارے اندر سے یہ سوال اُٹھ رہا ہے کہ آخر یہ تماشے کب تک ہوتے رہینگے ؟

(۲) یہ کہ بھارت کی سرکار سیکولر یعنی غیر جانب دار بیوہاری سرکار مانی جاتی ہے اور ہم مانتے ہیں کہ ایک بڑے درجے تک ہے . ایک ایسی بیوہاری سرکار کے وزیروں اور اُسکے صدر کا اِس طرح کی چیزوں میں کھلے عام حصہ لینا تھوڑی دیر کے لئے بھولی دھارمک جنتا سے یا سامپردایکتا کے زہر میں ڈوبے ہوئے پڑھے لکھے لوگوں سے اُنہیں واہ واہی لوٹنے کا موقعہ بھلے

पहली अफ़ग़ान जंग के बाद गवरनर जनरल लार्ड एलनब्रू के हुकुम से वह ग़ज़नी से हिन्दुस्तान लाए गये, अब फिर से सोमनाथ के मन्दिर में ले जाकर लगाए जाएँगे. गाँधी जी के हुकुम से इन किवाड़ों की बाबत हमने एक छोटा सा लेख लिखकर गाँधी जी को दिया, जिसमें यह बताया गया है कि यह किवाड़ों की सारी कहानी झूटी और जाली है और जो किवाड़ आगरे में रक्खे हुए हैं वह सोमनाथ के किवाड़ न होकर लार्ड एलनब्रू के हुकुम से जलालाबाद में बनवाए गए थे, और यह सारा क़िस्सा उस कूटनीति का एक नमूना है जिसके ज़रिये हिन्दू और मुसलमानों को अंगरेज़ एक दूसर के ख़िलाफ़ भड़काते रहते थे. हमारा वह लेख 'हरिजन सेवक' (२८ दिसम्बर १९४७) में छप चुका है और गाँधी जी ने अपने एक ख़ास नोट में चन्द सतरों के अन्दर 'हरिजन' (२८ दिसम्बर १९४७) के पाठकों का ध्यान उस लेख की तरफ़ दिलाया है घटनाओं और दलीलों में हम यहाँ जाना नहीं चाहते.

किसी तरह राम राम करके इन जाली किवाड़ों को फिर से ले जाकर लगाने का पागलपन तो ख़त्म हुआ लेकिन सोमनाथ के नए उद्धार का क़िस्सा बराबर चलता रहा और अब कमाल को पहुँच रहा है.

यह भी कहा जाता है कि सोमनाथ का इस तरह का फिर से उद्धार पिछले एक हज़ार बरस में आठ बार हो चुका है.

हम मूर्ति पूजक नहीं हैं. हम एक निराकार ईश्वर अल्लाह के मानने वाले हैं. पर जो लोग मूर्ति पूजा में विश्वास रखते हैं उनके इस विश्वास का हमारे दिल में आदर है. हम इस असूल के मानने वाले हैं कि हर सभ्य देस में और हर सभ्य राज में हर आदमी को अपने ढंग से अपने इश्ट देव की पूजा करने की पूरी आज़ादी होनी चाहिये जब तक कि उसकी यह आज़ादी किसी दूसरे

پہلی افغان جنگ کے بعد گورنر جنرل لارڈ ایلن برو کے حکم سے وہ غزنی سے هندستان لائے گئے' اب پھر سے سومناتھ کے مندر میں لے جاکر لگائے جائینگے. گاندھی جی کے حکم سے ان کواڑوں کی بابت هم نے ایک چھوٹا سا لیکھ لکھکر گاندھی جی کو دیا' جسمیں یہ بتایا گیا هے کہ یہ کواڑوں کی ساري کہانی جھوٹی اور جعلی هے اور جو کواڑ آگرہ میں رکھے هوئے هیں وہ سومناتھ کے کواڑ نہ هوکر لارڈ ایلن برو کے حکم سے جلالاباد میں بنوائے گئے تھے' اور یہ سارا قصہ اُس کوٹ نیت کا ایک نمونہ هے جسکے ذریعے هندو اور مسلمانوں کو انگریز ایک دوسرے کے خلاف بھڑکاتے رهتے تھے. همارا وہ لیکھ 'هریجن سیوک' (٢٨ دسمبر ١٩٤٧) میں چھپ چکا هے اور گاندھی جی نے اپنے ایک خاص نوٹ میں چند سطروں کے اندر 'هریجن' ٢٨ دسمبر ١٩٤٧). کے پاٹھکوں کا دھیان اُس لیکھ کی طرف دلایا هے. گھٹناؤں اور دلیلوں میں هم یہاں جانا نہیں چاهتے.

کسی طرح رام رام کرکے اُن جعلی کواڑوں کو پھر سے لے جا کر لگانے کا پاگل‌پن تو ختم هوا. لیکن سومناتھ کے نئے اُددھار کا قصہ برابر چلتا رها اور اب کمال کو پہونچ رها هے.

یہ بھی کہا جاتا هے کہ سومناتھ کا اس طرح کا پھر سے اُددھار پچھلے ایک هزار برس میں آٹھ بار هو چکا هے.

هم مورتی پوجک نہیں هیں. هم ایک نراکار ایشور الله کے ماننے والے هیں. پر جو لوگ مورتی پوجا میں وشواس رکھتے هیں اُنکے اس وشواس کا همارے دل میں آدر هے. هم اس اُصول کے ماننے والے هیں کہ هر سبھیہ دیس میں اور هر سبھیہ راج میں هر آدمی کو اپنے ڈھنگ سے اپنے اِشٹ دیو کی پوجا کرنے کی پوری

सोमनाथ का फिर से उद्धार–

खबर है कि ११ मई सन '५१ को सोमनाथ के मशहूर मन्दिर में शिव लिंग की फिर से स्थापना की जा रही है जिसके सिलसिले में वहाँ एक बहुत बड़ा जशन और मेला होगा.

बम्बई के बड़े बड़े ज्योतिशियों ने सुबह के नौ बजकर ठीक सैंतालीस मिनट पर इस काम के लिये महूरत तय किया है.

सारे मेले के लिये एक असरदार कमेटी बनी है जिसके सदर हिन्द सरकार के मंत्री श्री के. एम. मुँशी हैं.

पूजा पाठ नौ मई से शुरू होकर पाँच दिन तक जारी रहेगा. इनमें एक महारुद्र का पाठ भी होगा.

अखबारों से मालूम होता है कि बहुत से भारत भर के धर्माचारियों, राजप्रमुखों, मिनिस्टरों और पंडितों के अलावा हमारे जन-राज के सदर डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद भी इन जशनों और पूजा पाठ मे भारत के राष्ट्रपति की हैसियत से हिस्सा लेंगे.

कहा जाता है कि श्री के. एम मुँशी ने नए मन्दिर की योजना तैयार की है जिसमें समन्दर के किनारे तीन हज़ार एकड़ ज़मीन के अन्दर छप्पन खम्बों पर जिनमें जवाहिरात जड़े होंगे, तेरह मंज़िल का यह नया मन्दिर जिसके ऊपर चौदह सोने के कलश वाले मीनार होंगे और जिसमें सोने की जंजीरों से बजनेवाले बड़े बड़े घंटे घड़ियाल लगेंगे एक करोड़ रुपये की लागत से तैयार होगा.

महात्मा गाँधी की ज़िन्दगी में भारत के आज़ाद होते ही सोमनाथ के इस नए उद्धार की आवाज़ उठी थी. उस समय यह भी कहा गया था कि सोमनाथ के वह चन्दन के किवाड़, जो आगरा के क़िले में रखे हुए हैं और जिनकी बाबत कहा जाता है कि महमूद [illegible] सोमनाथ से उखड़वाकर ग़ज़नी लेगया था और

سومناتھ کا پھر سے اُددھار–

خبر ہے کہ ۱۱ مئی سن ۵۱ کو سومناتھ کے مشہور مندر میں شولنگ کی پھر سے استھاپنا کی جا رہی ہے جسکے سلسلے میں وہاں ایک بہت بڑا جشن اور میلہ ہوگا۔

بمبئی کے بڑے بڑے جیوتشیوں نے صبح کے نو بجکر ٹھیک سینتالیس منٹ پر اس کام کے لئے مہورت طے کیا ہے۔

سارے میلے کے لئے ایک اثردار کمیٹی بنی ہے جسکے صدر ہند سرکار کے منتری شری کے۔ ایم۔ منشی ہیں۔

پوجا پاٹھ نو مئی سے شروع ہو کر پانچ دن تک جاری رہیگا۔ اِن میں ایک مہارودر کا پاٹھ بھی ہوگا۔

اخباروں سے معلوم ہوتا ہے کہ بہت سے بھارت بھر کے دھرما چاریوں، راج پرمکھوں، منسٹروں اور پنڈتوں کے علاوہ ہمارے جن راج کے صدر ڈاکٹر راجندر پرساد بھی اِن جشنوں اور پوجا پاٹھ میں بھارت کے راشٹر پتی کی حیثیت سے حصہ لینگے۔

کہا جاتا ہے کہ شری کے۔ ایم۔ منشی نے نئے مندر کی یوجنا تیار کی ہے جس میں سمندر کے کنارے تین ہزار ایکڑ زمین کے اندر چھپن کھمبوں پر، جن میں جواہرات جڑے ہوں گے، تیرہ منزل کا یہ نیا مندر جسکے اوپر چودہ سونے کے کلش والے مینار ہوں گے اور جس میں سونے کی زنجیروں سے بجنے والے بڑے بڑے گھنٹے گھڑیال لگینگے ایک کروڑ روپئے کی لاگت سے تیار ہوگا۔

مہاتما گاندھی کی زندگی میں بھارت کے آزاد ہوتے ہی سومناتھ کے اِس نئے اُددھار کی آواز اُٹھی تھی۔ اُس سمے یہ بھی کہا گیا تھا کہ سومناتھ کے وہ چندن کے کواڑ جو آگرہ کے قلعے میں رکھے ہوئے ہیں اور جن کی بابت کہا جاتا ہے کہ محمود غزنوی انہیں سومناتھ سے اُکھڑواکر غزنی لے گیا تھا اور

हमारे ऊपर के फ़िक़रों से यह ग़लत अन्दाज़ा न लिया जाए कि हम अपने देस की तरफ़ से निराश हैं. हम अपने अन्दर देख भाल कर कह रहे हैं कि हमारा दिल आशा से लबरेज़ है. हमें इसमें ज़रा भी शक नहीं कि दो चार दस बरस के अन्दर ही—और दस बरस क़ौमों की ज़िन्दगी में कोई अधिक नहीं होते—यह मुल्क अपनी आजकल की सारी मुसीबतों को हल कर लेगा. हमें इसमें भी शक नहीं कि वह हल आख़ीर में गाँधी जी के बताए हुए रास्ते से ही निकलेगा. तीसरी जंग के डरावने बादल हमारी नज़रों में अगर कोई क़ीमत रखते हैं तो वह यही कि एक निहायत कड़ुवे तजरबे के बाद दुनिया के ऊपर हिन्सा की निरर्थकता अच्छी तरह साबित हो जावे. हमें यक़ीन है कि बेचैन और घबराई हुई दुनिया बहुत जल्दी इस सचाई को समझ लेगी कि जो चीज़ तलवार या हिन्सा से हासिल की जाती है वह हिन्सा से ही छिन जाती है. यह सच है कि गाँधी जी अब हमारे बीच में नहीं हैं. पर देस की वह मिट्टी जिसने गाँधी जी को पैदा किया था अपनी शक्ति खो नहीं बैठी. नए राह दिखाने वाले जनता की उस पाक और साफ़ मिट्टी में से निकलेंगे जो अभी तक अछूती पड़ी हुई है. वह दिन दूर नहीं है जब हमारी कमज़ोरियों, नासमझियों और मुसीबतों के सारे बादल छट चुके होंगे, इस देस की जनता आसपास के दूसरे देसों की जनता के साथ मिलकर और उनसे कंधे से कंधा मिलाए हुए अपने देस को और दुनिया को ऊँचा उठावेगी. उस दिन के आने के आसार बाहर हवा में और भीतर हमारे दिलों में दिखाई दे रहे हैं. तभी नई ज़मीन होगी, नया आसमान और नया हिन्दुस्तान !

१६. ४. ५१.

—सुन्दरलाल

ہمارے اوپر کے فقروں سے یہ غلط اندازہ نہ لیا جائے کہ ہم اپنے دیس کی طرف سے نراش ہیں ۔ ہم اپنے اندر دیکھ بھال کر کہہ رہے ہیں کہ ہمارا دل آشا سے لبریز ہے ۔ ہمیں اسمیں ذرا بھی شک نہیں کہ دو چار دس برس کے اندر ہی — اور دس برس قوموں کی زندگی میں کوئی ادھک نہیں ہوتے — یہ ملک اپنی آجکل کی ساری مصیبتوں کو حل کر لیگا ہمیں اسمیں بھی شک نہیں کہ وہ حل آخیر میں گاندھی جی کے بتائے ہوئے راستے سے ہی نکلے گا ۔ تیسری جنگ کے ڈراونے بادل ہماری نظروں میں اگر کوئی قیمت رکھتے ہیں تو وہ یہی کہ ایک نہایت کڑوے تجربے کے بعد دنیا کے اوپر هنسا کی نررتھکتا اچھی طرح ثابت ہوجاوے—ہمیں یقین ہے کہ بے چین اور گھبرائی ہوئی دنیا بہت جلدي اس سچائی کو سمجھ لے گی کہ جو چیز تلوار یا هنسا سے حاصل کی جاتی ہے وہ هنسا سے ہی چھن جاتی ہے ۔ یہ سچ ہے کہ گاندھی جی اب ہمارے بیچ میں نہیں ہیں ۔ پر دیس کی وہ مٹی جس نے گاندھی جی کو پیدا کیا تھا اپنی شکتی کھو نہیں بیٹھي ۔ نئے راہ دکھانے والے جنتا کی اُس پاک اور صاف مٹی میں سے نکلیں گے جو ابھی تک اچھوتي پڑی ہوئی ہے ۔ وہ دن دور نہیں ہے جب ہماری کمزوریوں، ناسمجھیوں اور مصیبتوں کے سارے بادل چھٹ چکے ہوں گے، اِس دیس کی جنتا آس پاس کے دوسرے دیسوں کي جنتا کے ساتھ ملکر اور اُن سے کندھے سے کندھا ملائے ہوئے اپنے دیس کو اور دنیا کو اونچا اُٹھاوے گی ۔ اُس دن کے آنے کے آثار باہر ہوا میں اور بھیتر ہمارے دلوں میں دکھائی دے رہے ہیں ۔ تب ہی نئی زمین ہوگی، نیا آسمان اور نیا هندستان !

—سندر لال

۱۶-۴-۵۱

इस तरह की ग़लतफ़हमियों को दूर करने के लिये काफ़ी हैं. अमली तौर पर भी कोई अपना माल बेचने वाला या ख़रीदने वाला इस योजना के ज़रिये कैसे हर मौक़े पर ऐसा आदमी पा सकेगा जिसके हाथ, शुद्ध रहते हुए, वह अपना माल बेच या ख़रीद सके. यह हमारी समझ से बाहर की चीज़ है. हमारी छोटी समझ से तो यह भी बाहर की चीज़ है कि इन मामलों में कौन सा ब्योहार शुद्ध है और कौन सा अशुद्ध. हम मानते हैं कि आमतौर पर इसका तय करना इतना कठिन नहीं होता लेकिन बाज़ वक़्त लगभग नामुमकिन भी हो जाता है. कभी कभी हमें यह भी शक होने लगता है कि जिस कन्ट्रोल की दुकान के तौर तरीक़ों से और वहाँ के सरकारी मुलाज़िमों के कारनामों से जनता अच्छी तरह वाक़िफ़ है वहाँ उस दुकान से ख़रीदा हुआ अनाज ज़्यादा शुद्ध समझा जाय या पास की किसी ऐसी दुकान से ख़रीदा हुआ जिसे चोर बाज़ार की दुकान समझा जाता है. हल केवल एक रह जाता है और वह है भगवान की दी हुई रोशनी में अपने को साफ़ और अपने दिल को शुद्ध रखते हुए अपनी आत्मा की आवाज़ पर चले चलना. देस को हल सुझाने में अक्सर हमारी अपनी कमज़ोरियाँ हमारे रास्ते में रुकावटें बन कर आने लगती हैं. हमें कोई अमली क़दम नहीं सूझता या अमली क़दम उठाने की हिम्मत नहीं होती तो हम दूसरों को रूखे सदाचार के उपदेश देकर या अपने ऊपर निजी तौर पर कश्ट झेल कर, अपने हाथ झुलाकर, पेट काट कर या पैर थका कर अपनी आत्मा को तसल्ली दे लेते हैं. गवरमेन्ट और गवरमेन्ट के अन्दर अपने साथियों के मोह को भी हम नहीं जीत पा रहे हैं. चाहते हुए भी हम राज-काज की भूल भुलैयाँ से बाहर नहीं हो पा रहे हैं. हमारे यह फ़िक़रे कड़ुवे हो सकते हैं और हैं. लेकिन हम ख़ुद अपनी हालत को देख कर लिख रहे हैं. गाँधी जी के बाद किसी एक दो अपवादों को छोड़कर हम सब लँगड़ी बत्तख़ हैं. आगे का हल हमारे बूते से बाहर मालूम होता है.

اِسطرح کی غلط فہمیوں کو دور کرنے کے لئے کافی ہیں. عملی طور پر بھی کوئی اپنا مال بیچنے والا یا خریدنے والا اِس یوجنا کے ذریعے کیسے ہر موقعے پر ایسا آدمی پاسکے گا جسکے ہاتھ شدھ رہتے ہوئے' وہ اپنا مال بیچ یا خرید سکے. یہ ہماری سمجھ سے باہر کی چیز ہے. ہماری چھوٹی سمجھ سے تو یہ بھی باہر کی چیز ہے کہ اِن معاملوں میں کون سا بیوہار شدھ ہے اور کونسا اشدھ. ہم مانتے ہیں کہ عام طور پر اس کا طے کرنا اتنا کٹھن نہیں ہوتا لیکن بعض وقت لگ بھگ ناممکن بھی ہوجاتا ہے. کبھی کبھی ہمیں یہ بھی شک ہونے لگتا ہے کہ جس کنٹرول کی دوکان کے طور طریقوں سے اور وہاں کے سرکاری ملازموں کے کارناموں سے جنتا اچھی طرح واقف ہے وہاں اُس دوکاں سے خریدا ہوا ناج زیادہ شدھ سمجھا جائے یا پاس کی کسی ایسی دوکان سے خریدا ہوا جسے چور بازار کی دوکان سمجھا جاتا ہے حل کیول ایک رہ جاتا ہے اور وہ ہے بھگوان کی دی ہوئی روشنی میں اپنے کو صاف اور اپنے دل کو شدھ رکھتے ہوئے اپنی آتما کی آواز پر چلے چلنا. دیس کو حل سجھانے میں اکثر ہماری اپنی کمزوریاں ہمارے راستے میں رکاوٹیں بنکر آنے لگتی ہیں. ہمیں کوئی عملی قدم نہیں سوجھتا یا عملی قدم اُٹھانے کی ہمت نہیں ہوتی تو ہم دوسروں کو روکھے سدچار کے اُپدیش دے کر یا اپنے اوپر نجی طور پر کشٹ جھیل کر' اپنے ہاتھ سکھا کر' پیٹ کاٹ کر یا پیر تھکا کر اپنی آتما کو تسلی دے لیتے ہیں. گورنمنٹ اور گورنمنٹ کے اندر اپنے ساتھیوں کے موہ کو بھی ہم نہیں جیت پا رہے ہیں. چاہتے ہوئے بھی ہم راج کاج کی بھول بھلیاں سے باہر نہیں ہو پا رہے ہیں. ہمارے یہ فقرے کڑوے ہوسکتے ہیں اور ہیں لیکن ہم خود اپنی حالت کو دیکھکر لکھ رہے ہیں. گاندھی جی کے بعد کسی ایک دو اپوادوں کو چھوڑ کر ہم سب لنگڑی بطخیں ہیں. آگے کا حل ہمارے بوتے سے باہر معلوم ہوتا ہے.

थोड़े से शब्दों में हमें नीचे से अपने चरित्र और अपने व्योहार को ऊँचा और शुद्ध करना होगा. इस निगाह से हम वर्धा की इस योजना का स्वागत करते हैं.

पर दूसरी तरफ़ हमें इस योजना से कोई बड़ी उम्मीद भी दिखाई नहीं देती. हमें यह योजना एक बड़े दरजे तक फीकी और बेजान योजना दिखाई देती है. हम यह फ़िक़रे बड़े दर्द के साथ लिख रहे हैं. हमारी अपनी कमज़ोरी इस समय भूत बन कर हमारे सामने नाच रही है और हमें धिक्कार रही है. हम गाँधी जी का नाम लेते हैं, अपने को उनके चेले या उनके वारिस मानते हैं. पर हममें न वह सूझ है और न वह दिल.

इस योजना में सत्याग्रह की भी बात कही गई है. ज़ाहिर है कि सत्याग्रह के चरचे इस समय हवा में हैं. हमें इसमें भी शक नहीं कि हर जनता को यह पैदाइशी हक़ है कि अगर उसकी कठिनाइयाँ और मुसीबतें कहने सुनने और अरज़ मारूज़ से दूर न हो सकें तो वह अपनी सरकार के ख़िलाफ़ चाहे वह देसी हो या विदेशी या जिस किसी को वह अपनी मुसीबतों के लिये ज़िम्मेवार समझती हो उसके ख़िलाफ़ अहिन्सात्मक रह कर सत्याग्रह से काम ले. यह भी ठीक है कि कोई सत्याग्रही जिस बात के लिये सत्याग्रह करे उस बात के लिये उसका दिल व दिमाग़ साफ़ और उसकी आत्मा शुद्ध होनी चाहिये. पर वर्धा के बयान में जो सत्याग्रह का बीज है वह हमें ऐसा बीज दिखाई नहीं देता जिसमें से कभी अकुआ फूट सके. यह ठीक है कि सत्याग्रह के लिये हर सत्याग्रही चरित्र की शुद्धता के एक माप तक पहुँचता हो. पर यह ठीक नहीं है कि हर मामले में सत्याग्रह करने के लिये सत्याग्रही को हर पहलू से आदर्श चरित्र ही होना चाहिये. और फिर आदर्श चरित्र है भी क्या चीज़ ? गांधी जी ने अपनी ज़िन्दगी भर जितने सत्याग्रह किये और कराए वह सब हमारी

تھوڑے سے شبدوں میں همیں نیچے سے اپنے چرتر اور اپنے بیوهار کو اونچا اور شدھ کرنا هوگا . اس نگاہ سے هم وردها کی اس یوجنا کا سواگت کرتے هیں .

پر دوسری طرف همیں اِس یوجنا سے کوئی بڑی اُمید بھی دکھائی نہیں دیتی . همیں یہ یوجنا ایک بڑے درجے تک پھیکی اور بے جان یوجنا دکھائی دیتي هے . هم یہ فقرے بڑے درد کے ساتھ لکھ رهے هیں . هماری اپنی کمزوري اِس سمے بھوت بنکر همارے سامنے ناچ رهی هے اور همیں دهکار رهي هے . هم گاندهی جي کا نام لیتے هیں، اپنے کو اُن کے چیلے یا اُنکے وارث مانتے هیں . پر هم میں نہ وُہ سوجھ هے اور نہ وہ دل .

اِس یوجنا میں ستیاگرہ کی بھي بات کہی گئی هے . ظاهر هے کہ ستیاگرہ کے چرچے اِس سمے هوا میں هیں . همیں اِسمیں بھی شک نہیں کہ هر جنتا کو یہ پیدائشی حق هے کہ اگر اُسکی کٹھنائیاں اور مصیبتیں کہنے سننے اور عرض معروض سے دور نہ هوسکیں تو وہ اپنی سرکار کے خلاف چاهے وہ دیسی هو یا ودیشی یا جس کسی کو وہ اپنی مصیبتوں کے لئے ذمہ وار سمجھتی هو اُسکے خلاف اهنساتمک رہ کر ستیاگرہ سے کام لے . یہ بھی ٹھیک هے کہ کوئيستیاگرهی جس بات کے لئے ستیاگرہ کرے اُس بات کے لئے اُسکا دل و دماغ صاف اور اُسکی آتما شدھ هونی چاهئے . پر وردها کے بیان میں جو ستیاگرہ کا بیج هے وہ همیں ایسا بیج دکھائی نہیں دیتا جسمیں سے کبھی اکوا پھوٹ سکے . یہ ٹھیک هے کہ ستیاگرہ کے لئے هر ستیاگرهی چرتر کی شدھتا کے ایک ماپ تک پہنچتا هو . پر یہ ٹھیک نہیں هے کہ هر معاملے میں ستیاگرہ کرنے کے لئے ستیاگرهی کو هر پہلو سے آدرش چرتر هی هونا چاهئے . اور پھر آدرش چرتر هے بھی کیا چیز ؟ گاندهی جی نے اپنی زندگی بھر جتنے ستیاگرہ کئے اور کرائے وہ سب هماری

जवाहरलाल जी ने इस तूफ़ान के अन्दर देस की नैया को सँभाले रक्खा है उस लगन, उस होशियारी और उस योग्यता का दूसरा आदमी देस में दिखाई नहीं देता. यह दूसरी बात है कि हम उनके सब कामों और उनकी सब रायों को ठीक नहीं मानते. पर उनकी कमजोरी देस की कमज़ोरी है. काँगरेस की भी गिरावट बच्चे बच्चे की आँखों के सामने है. पर काँगरेस के मुक़ाबले की कोई दूसरी संस्था या पार्टी भी अभी मुल्क में नजर नहीं आती जिससे थोड़ी बहुत भी यह आशा की जा सके कि वह इससे ज्यादा अच्छी तरह और ज्यादा कामयाबी के साथ मुल्क की बाग को सँभाल सकेगी. काँगरेस की कमजोरियाँ भी मुल्क की कमजोरियाँ हैं और काँगरेस की गिरावट मुल्क की गिरावट है. एक बात यह भी हमें ध्यान में रखनी चाहिये कि मुल्क का जो तबक़ा या जो गिरोह जितना ज्यादा अँगरेजों, अँगरेजी तालीम और अँगरेजी राज के असर में रहा उतना ही वह चरित्र, इनसानियत और नेकी से ज्यादा गिरा हुआ निकला. ऐसा भी होना हमारी राय में क़ुदरती बात थी.

ऐसी हालत में हमें धीरज नहीं खोना चाहिये. क़ौमें या मुल्क एक दिन में नहीं बनते. हमें इन आज़माइशों में से निकलना ही होगा. जरूरत है जनता को जगाने की, उसमें बल पैदा करने की, उसे संगठित करने की, उसके चरित्र को ऊँचा ले जाने की. बल्कि हमें कहना चाहिये था जरूरत है जनता के जागने की, उसे अपने अन्दर बल संचार करने की, उसे संगठित होने की और उसे अपने चरित्र को ऊँचा और मज़बूत करने की. अंगरेज चले गए पर हमारी सदियों की बीमारियाँ, हमारी ख़ुदग़र्ज़ियाँ, हमारी फूट, हमारे अंधविश्वास और हमारी तंगनज़रियाँ जिन्हें वह जगा गए थे और जिनके सहारे ही वह नब्बे बरस तक राज करते रहे अभी पूरे जोरों के साथ चमक रही हैं. हमें इन सबको पहचानना और जीतना होगा.

جواھر لال جی نے اس طوفان کے اندر دیس کی نیا کو سنبھالے رکھا ھے اُس لگن، اُس ھوشیاری اور اُس یوگیتا کا دوسرا آدمی دیس میں دکھائی نہیں دیتا . یہ دوسری بات ھے کہ ھم اُنکے سب کاموں اور اُنکی سب رایوں کو ٹھیک نہیں مانتے پر اُنکی کمزوری دیس کی کمزوری ھے . کانگریس کی بھی گراوٹ بچے بچے کی آنکھوں کے سامنے ھے . پر کانگریس کے مقابلے کی کوئی دوسری سنستھا یا پارٹی بھی ابھی ملک میں نظر نہیں آتی جس سے تھوڑی بہت بھی یہ آشا کی جا سکے کہ وہ اس سے زیادہ اچھی طرح اور زیادہ کامیابی کے ساتھ ملک کی باگ کو سنبھال سکے گی . کانگریس کی کمزوریاں بھی ملک کی کمزوریاں ھیں اور کانگریس کی گراوٹ ملک کی گراوٹ ھے . ایک بات یہ بھی ھمیں دھیان میں رکھنی چاھیئے کہ ملک کا جو طبقہ یا جو گروہ جتنا زیادہ انگریزوں، انگریزی تعلیم اور انگریزی راج کے اثر میں رھا اُتنا ھی وہ چرتر، انسانیت اور نیکی سے زیادہ گرا ھوا نکلا . ایسا بھی ھونا ھماری رائے میں قدرتی بات تھی .

ایسی حالت میں ھمیں دھیرج نہیں کھونا چاھئے . قومیں یا ملک ایک دن میں نہیں بنتے . ھمیں ان آزمائشوں میں سے نکلنا ھی ھوگا . ضرورت ھے جنتا کو جگانے کی، اُسمیں بل پیدا کرنے کی، اُسے سنگٹھت کرنے کی، اُسکے چرتر کو اُونچا لے جانے کی . بلکہ ھمیں کہنا چاھئے تھا ضرورت ھے جنتا کے جاگنے کی، اُسے اپنے اندر بل سنچار کرنے کی، اُسے سنگٹھت ھونے کی اور اُسے اپنے چرتر کو اُونچا اور مضبوط کرنے کی . انگریز چلے گئے پر ھماری صدیوں کی بیماریاں، ھماری خود غرضیاں، ھماری پھوٹ، ھمارے اندھ وشواس اور ھماری تنگ نظریاں جنھیں وہ جگا گئے تھے اور جن کے سہارے ھی وہ نوے برس تک راج کرتے رھے ابھی پورے زوروں کے ساتھ چمک رھی ھیں . ھمیں اِن سب کو پہچاننا اور جیتنا ھوگا .

बहुत मुशकिल है. सच यह है कि एन संकट के समय हम तौले गए और हलके उतरे. कमजोरी हमारी सबकी कमजोरी है. गाँधी जी जानते थे कि जो उन्होंने चाहा था वह न हुआ और न हो सकेगा. इसीलिये उन्होंने मरने से पहले सलाह दी थी कि काँगरेस संगठन तोड़ दिया जावे, काँगरेस वाले सब हकूमत से बाहर निकल आवें और पुरानी काँगरेस की जगह मुल्क के सच्चे खादिमों का एक नया 'लोक सेवक संघ' बनाया जावे, जो गाँव गाँव जाकर जनता की निस्वार्थ सेवा करने और उसे ऊपर उठाने में लग जावे. गाँधी जी की इस तजवीज़ की चरचा 'नया हिन्द' में हो चुकी है. यह भी होना न था और न हो सका.

हम कई बार कह चुके हैं कि देस में इस समय जनता का राज नहीं है. सच यह है कि जनता में अभी तक वह समझ, वह कैरेक्टर, वह बल, वह संगठन और वह योग्यता भी नहीं है कि जिसके बिरते पर जनता हकूमत की बाग अपने हाथों में ले सके. राज है उन पढ़े लिखे लोगों का जो आज़ादी की कोशिशों में सबसे आगे रहे हैं और जो अब जहाँ तक उनकी समझ, उनकी योग्यता और उनके चरित्र की कमजोरियाँ इजाज़त देती हैं वहाँ तक जनता का भला और उसकी सेवा करने की कोशिश करते हैं.

काँगरेस अब जनता नहीं है. जनता में और उसमें अलगाव भी दिनों दिन बढ़ता जा रहा है. पर इसमें शक नहीं कि इस गिरी हुई हालत में भी जो अच्छे से अच्छे आदमी काँगरेस में मौजूद हैं उससे अच्छे देस के किसी दूसरे दल, पार्टी या संस्था में आसानी से नहीं मिल सकते. हम नाम लेना नहीं चाहते थे पर इस समय यह कहे बिना नहीं रह सकते और यह बहुत दरजे तक मुल्क के और लोगों की आवाज़ है कि जिन मुशकिलों और खतरों का सामना करते हुए जिस लगन, जिस मेहनत और जिस होशियारी के साथ

بہت مشکل ھے . سچ یہ ھے کہ ھیں سنکٹ کے سمے ھم تولے گئے اور ھلکے اُترے . کمزوری ھماری سب کی کمزوری ھے. گاندھی جی جانتے تھے کہ جو اُنھوں نے چاھا تھا وہ نہ ھوا اور نہ ھو سکیگا . اسی لئے انھوں نے مرنے سے پہلے صلاح دی تھی کہ کانگریس سنگٹھن توڑ دیا جاوے' کانگریس والے سب حکومت سے باھر نکل آویں اور پرانی کانگریس کی جگہ ملک کے سچے خادموں کا ایک نیا 'لوک سیوک سنگھ' بنایا جاوے' جو گاؤں گاؤں جاکر جنتا کی نسوارتھ سیوا کرنے اور اُسے اوپر اُٹھانے میں لگ جاوے . گاندھی جی کی اس تجویز کی چرچا 'نیا ھند' میں ھو چکی ھے . یہ بھی ھونا نہ تھا اور نہ ھو سکا .

ھم کئی بار کہہ چکے ھیں کہ دیس میں اِس سمے جنتا کا راج نہیں ھے . سچ یہ ھے کہ جنتا میں ابھی تک وہ سمجھ' وہ کیریکٹر' وہ بل' وہ سنگٹھن اور وہ یوگیتا بھی نہیں ھے کہ جس کے برتے پر جنتا حکومت کی باگ اپنے ھاتھوں میں لے سکے . راج ھے اُن پڑھے لکھے لوگوں کا جو ازادی کی کوششوں میں سب سے آگے رھے ھیں اور جو اب جہاں تک اُن کی سمجھ' اُن کی یوگیتا اور اُن کے چرتر کی کمزوریاں اجازت دیتی ھیں وھاں تک جنتا کا بھلا اور اُس کی سیوا کرنے کی کوشش کرتے ھیں .

کانگریس اب جنتا نہیں ھے . جنتا میں اور اُس میں الگاؤ بھی دنوں دن بڑھتا جا رھا ھے . پر اِس میں شک نہیں کہ اِس گری ھوئی حالت میں بھی جو اچھے سے اچھے آدمی کانگریس میں موجود ھیں اُس سے اچھے دیس کے کسی دوسرے دل' پارٹی یا سنستھا میں آسانی سے نہیں مل سکتے. ھم نام لینا نہیں چاھتے تھے پر اس سمے یہ کہے بنا نہیں رہ سکتے اور یہ بہت درجے تک ملک کے عام لوگوں کی آواز ھے کہ جن مشکلوں اور خطروں کا سامنا کرتے ھوئے جس لگن' جس محنت اور جس ھوشیاری کے ساتھ

गाँधी जी ने ख़लीफ़ा उमर की जीवनी पढ़ी थी. इसीलिये उन्होंने ख़लीफ़ा उमर का आदर्श काँगरेसी वज़ीरों के सामने रक्खा था.

साम्प्रदायिक मामले में भी ख़लीफ़ा उमर का आदर्श इस मुल्क के नेताओं के लिये 'रोशनी घर' का काम दे सकता था. उसके ज़माने में अरब फ़ौजें जहाँ जाती थीं पहले सबके लिये पूरी मज़हबी आज़ादी का ऐलान होता था और फिर दूसरी कोई बात. और यह उन मुल्कों में जहाँ उस ज़माने के रोम और ईरान के शहंशाहों के मातहत मज़हबी आज़ादी नाम को भी न रह गई थी. येरूज़ेलम के बड़े गिरजाघर की सीढ़ियों पर पैट्रियार्क के प्रार्थना करने पर भी ख़लीफ़ा उमर ने इसलिये नमाज़ पढ़ने से इनकार कर दिया था कि कहीं उनके बाद इसे मिसाल बना कर मुसलमान दूसरे के पूजाघर पर क़ब्ज़ा न जमा बैठें. यह सब इतिहास की जानी बूझी चीज़ें हैं.

पर ख़लीफ़ा उमर की मिसाल तो दूर रही हमारे काँगरेसी वज़ीरों ने अगर गाँधी जी की इस छोटी सी बात पर भी अमल और सच्चाई के साथ अमल कर लिया होता कि कोई वज़ीर अपने और अपने घर वालों के गुज़ारे के लिये पाँच सौ रुपए से ज़्यादा माहवारी तनख़ा न ले तो हमें यक़ीन है कि आज काँगरेस और देस का रंग बिल्कुल दूसरा ही होता. ऊपर वालों का असर नीचे वालों पर और सरकारी लोगों का असर ग़ैर-सरकारी लोगों पर पड़ना एक क़ुदरती चीज़ थी.

पर यह न हुआ या न हो सका. जो कुछ हुआ उसके होते हुए हम छोटे छोटे सरकारी नौकरों को या रिआया के मामूली लोगों को बुरा किस मुँह से कह सकते हैं. वह किसकी तरफ़ देखें ? किसे देख कर ऊपर उठें ? किस की मिसाल उनमें त्याग की हिम्मत पैदा करे ? इस लोभ मोह की दुनिया में गिरना आसान और उठना

گاندھی جی نے خلیفہ عمر کی جیونی پڑھی تھی . اِسی لئے اُنھوں نے خلیفہ عمر کا آدرش کانگریسی وزیروں کے سامنے رکھا تھا .

سامپردایک معاملے میں بھی خلیفہ عمر کا آدرش اِس ملک کے نیتاؤں کے لئے 'روشنی گھر' کا کام دے سکتا تھا . اُسکے زمانے میں عرب فوجیں جہاں جاتی تھیں پہلے سب کے لئے پوری مذھبی آزادی کا اعلان ھوتا تھا اور پھر دوسری کوئی بات . اور یہ اُن ملکوں میں جہاں اُس زمانے کے روم اور ایران کے شہنشاھوں کے ماتحت مذھبی آزادی نام کو بھی نہ رہ گئی تھی . یروزلم کے بڑے گرجا گھر کی سیڑھیوں پر پیٹری آرک کے پرارتھنا کرنے پر بھی خلیفہ عمر نے اس لئے نماز پڑھنے سے انکار کر دیا تھا کہ کہیں اُنکے بعد اِسے مثال بنا کر مسلمان دوسرے کے پوجا گھر پر قبضہ نہ جما بیٹھیں . یہ سب اِتہاس کی جانی بوجھی چیزیں ھیں .

پر خلیفہ عمر کی مثال تو دور رھی ھمارے کانگریسی وزیروں نے اگر گاندھی جی کی اِس چھوٹی سی بات پر بھی عمل اور سچائی کے ساتھ عمل کر لیا ھوتا کہ کوئی وزیر اپنے اور اپنے گھر والوں کے گذارے کے لئے پانچ سو روپئے سے زیادہ ماھواری تنخواہ نہ لے تو ھمیں یقین ھے کہ آج کانگریس اور دیس کا رنگ بالکل دوسرا ھی ھوتا . اوپر والوں کا اثر نیچے والوں پر اور سرکاری لوگوں کا اثر غیر سرکاری لوگوں پر پڑنا ایک قدرتی چیز تھی .

پر یہ نہ ھوا یا نہ ھو سکا . جو کچھ ھوا اُسکے ھوتے ھوئے ھم چھوٹے چھوٹے سرکاری نوکروں کو یا رعایا کے معمولی لوگوں کو برا کس منہ سے کہہ سکتے ھیں . وہ کس کی طرف دیکھیں ؟ کسے دیکھکر اُوپر اُٹھیں ؟ کس کی مثال ان میں تیاگ کی ھمت پیدا کرے ؟ اِس لوبھ موہ کی دنیا میں گرنا آسان اور اُٹھنا

इतिहास में कोई नई या अनहोनी बात नहीं है. तप से राज और राज से नरक जैसी कहावतें सब मुल्कों और सब जबानों के अन्दर मिल सकती हैं. काँगरेस और काँगरेस वालों की गिरावट का बाकी मुल्क के ऊपर और सरकारी और ग़ैर-सरकारी लोगों पर असर पड़ना भी उतना ही क़ुदरती था. यथा राजा तथा प्रजा की कहावत भी एक पुरानी कहावत है.

हो सकता है कि अगर काँगरेस महात्मा गांधी के असूलों को ज्यादा सच्चाई से मानती होती या उन पर जरा कड़ाई के साथ अमल करती तो हम देस को इस गिरावट और इन मुसीबतों से बचा ले जाते. गाँधी जी ने एक समय काँगरेसी वज़ीरों के सामने उस ख़लीफ़ा उमर का आदर्श रक्खा था जो अपने समय में उस समय के सबसे बड़े राज का मालिक होते हुए भी अपने हाथ से अपना कुरता और अपनी तहमद धोता था. रोज़ सुबह मशक कंधे पर डाल कर मदीना की अनेक बेवाओं के घरों मे पानी भर आता था, लम्बे रेगिस्तानी सफ़रों में आधी दूर ख़ुद ऊँट के ऊपर बैठ कर ऊँट वाले को ऊँट की नकेल पकड़ कर पैदल चलने देता था, और बाक़ी आधे रास्ते ऊँट वाले को ऊपर बैठाकर ख़ुद नकेल पकड़ कर पैदल चलता था, रात को किसी नए आने वाले से बात करते वक़्त यह जानकर कि बातचीत किसी निजी मामले की बाबत है सरकारी मामले की बाबत नहीं, अपने हाथ से दिया बुझा देता था—इसलिये क्योंकि सरकारी तेल जिसमें बेवाओं का पैसा लगा है निजी कामों में ख़र्च नहीं किया जा सकता और जो अरबों के येरूजेलम फ़तेह करने के बाद वहाँ के ईसाई पैट्रियार्क के आग्रह करने पर भी अपना पुराना पेवन्द लगा हुआ कुरता फेंककर नया सिला कुरता पहनने के लिये राज़ी नहीं हुआ—यह कह कर कि ऐसा करना ग़रीब जनता के पैसे का ग़लत इस्तेमाल होगा. हम

اِتہاس میں کوئی نئی یا ان ہونی بات نہیں ہے ۔ تپ سے راج اور راج سے نرک جیسی کہاوتیں سب ملکوں اور سب زبانوں کے اندر مل سکتی ہیں ۔ کانگریس اور کانگریس والوں کی گراوٹ کا باقی ملک کے اُوپر اور سرکاری اور غیر سرکاری لوگوں پر اثر پڑنا بھی اُتنا ہی قدرتی تھا ۔ یتھا راجا تتھا پرجا کی کہاوت بھی ایک پرانی کہاوت ہے ۔

ہو سکتا ہے کہ اگر کانگریس مہاتما گاندھی کے اُصولوں کو زیادہ سچائی سے مانتی ہوتی یا اُن پر ذرا کڑائی کے ساتھ عمل کرتی تو ہم دیس کو اِس گراوٹ اور اِن مصیبتوں سے بچا لے جاتے ۔ گاندھی جی نے ایک سمے کانگریسی وزیروں کے سامنے اُس خلیفہ عمر کا آدرش رکھا تھا جو اپنے سمے میں اُس سمے کے سب سے بڑے راج کا مالک ہوتے ہوئے بھی اپنے ہاتھ سے اپنا کرتا اور اپنی تہمد دھوتا تھا' روز صبح مشک کندھے پر ڈال کر مدینہ کی انیک بیواؤں کے گھروں میں پانی بھر آتا تھا' لمبے ریگستانی سفروں میں آدھی دور خود اُونٹ کے اوپر بیٹھکر اونٹ والےکو اونٹ کی نکیل پکڑ کر پیدل چلنے دیتا تھا اور باقی آدھے راستے اُونٹ والےکو اُوپر بیٹھاکر خود نکیل پکڑکر پیدل چلتا تھا' رات کو کسی نئے آنیوالے سے بات کرتے وقت یہ جان کرکہ بات چیت کسی نجی معاملےکی بابت ہے سرکاری معاملے کی بابت نہیں' اپنے ہاتھ سے دیا بجھا دیتا تھا—اس لئے کیونکہ سرکاری تیل جس میں بیواؤں کا پیسہ لگا ہے نجی کاموں میں خرچ نہیں کیا جا سکتا اور جو عربوں کے یروزلم فتح کرنے کے بعد وہاں کے عیسائی پیٹری آرک کے آگرہ کرنے پر بھی اپنا پرانا پیوند لگا ہوا کرتہ پھینک کر نیا سلا کرتہ پہننے کے لئے راضی نہیں ہوا یہ کہکر کہ ایسا کرنا غریب جنتا کے پیسے کا غلط استعمال ہوگا۔

वर्धा का नया आन्दोलन—

'नया हिन्द' के इसी नम्बर में हम "शुद्ध ब्योहार आन्दोलन" की एक योजना छाप रहे हैं जो वर्धा में तैयार हुई है और जो भाई किशोरलाल मशरूवाला के दसख़त से ३१ मार्च सन् '५१ के 'हरिजन' में निकली है. यह योजना कई समझदार और नेकनियत भाइयों के काफ़ी सोच विचार का नतीजा है. इस योजना की मोटी मोटी बातों और उसके आम असूलों से, हम समझते हैं, बहुत कम लोगों को मतभेद होगा. हम चाहते हैं कि 'नया हिन्द' के पढ़ने वाले इसे ध्यान से पढ़ें, उस पर विचार करें और उससे लाभ उठाने और उसके ज़रिये देस को लाभ पहुँचाने की कोशिश करें.

देस की गिरावट और उसकी मुसीबतों का जो बयान इस योजना में किया गया है वह हरगिज़ बढ़ा चढ़ा कर नहीं किया गया. यहाँ हम थोड़े से शब्दों में इस गिरावट के कारनों पर नज़र डालना चाहते हैं. आज़ादी मिलते ही देस की बाग क़ुदरती तौर पर काँगरेस वालों के हाथों में आई. किसी भी इस तरह के लोगों का हकूमत पाकर कम या ज़्यादा अपने पहले के आदर्शों से गिरना दुनिया के

وردھا کا نیا آندولن—

'نیا ہند' کے اِسی نمبر میں ہم "شدھ بیوہار آندولن" کی ایک یوجنا چھاپ رہے ہیں جو وردھا میں تیار ہوئی ہے اور جو بھائی کشورلال مشروالا کے دستخط سے ۳۱ مارچ سن ۵۱ کے 'ہریجن' میں نکلی ہے . یہ یوجنا کئی سمجھدار اور نیک نیت بھائیوں کے کافی سوچ بچار کا نتیجہ ہے . اِس یوجنا کی موٹی موٹی باتوں اور اُس کے عام اُصولوں سے ہم سمجھتے ہیں بہت کم لوگوں کو مت بھید ہوگا. ہم چاہتے ہیں کہ 'نیا ہند' کے پڑھنے والے اُسے دھیان سے پڑھیں. اُس پر بچار کریں اور اُس سے لابھ اُٹھانے اور اُسکے ذریعے دیس کو لابھ پہونچانے کی کوشش کریں .

دیس کی گراوٹ اور اُس کی مصیبتوں کا جو بیان اُس یوجنا میں کیا گیا ہے وہ ہرگز بڑھا چڑھا کر نہیں کیا گیا . یہاں ہم تھوڑے سے شبدوں میں اِس گراوٹ کے کارنوں پر نظر ڈالنا چاہتے ہیں . آزادی ملتے ہی دیس کی باگ قدرتی طور پر کانگریس والوں کے ہاتھوں میں آئی . کسی بھی اِسطرح کے لوگوں کا حکومت پاکر کم یا زیادہ اپنے پہلے کے آدرشوں سے گرنا دنیا کے

में कृश्न चन्दर ने एक छोटी सी लारी में अपने समाज की लगभग सारी 'ग़लाज़त' को इकट्ठा कर दिया है और अपना संदेश बहुत कटीले शब्दों में लोगों तक पहुँचाया है. वह लिखते हैं—"लेकिन अब आदमी आदमी न था, एक भैंस भी न था बलिक एक बैरा. एक साहब बहादुर, एक क़ैदी, एक सारजेन्ट. नतीजा यह कि ज़िन्दगी की लारी भागी जारही है और हम सब लोग अपनी अपनी जगह पर बेचैन और ग़ैर मुतमइन हैं." सातवीं कहानी "मुक़द्दस" है. एक क्लर्क इस कहानी में जिन्सी ख़ाहिशों को रोक नहीं पाता और बीवी के प्यार की क़सम हर क़दम पर खाता हुआ दूसरी औरतों की गोद में बेफ़ायदा चैन ढूंढता है. आठवीं कहानी "उड़ान" में एक ग़रीब लड़के को ज़िन्दगी की उड़ान भरते दिखाया गया है जो भिक्षा की रोटी खाकर और सेठों का ऐश देखकर अपनी उड़ान भूल जाता है. इसी कहानी में कशमीर की ग़रीबी और उस से दबी हुई ग़रीब औरतों का शाहों के हाथ छोटी मोटी खाने पीने की चीज़ें हासिल करने के लिये अपनी इज़्ज़त बेचने का भी चित्रन किया गया है. नवीं कहानी "एक सुरइली तसवीर" है. इसमें ग़रीबी, नाज़ियों के ज़ुल्म, अमीरों की बेपरवाही और मानवता का चित्र लेखक ने अपने ख़ास ढंग से खींचा है. दसवीं कहानी "आता है याद मुझको" में बचपन के करतूत दुहराए गए हैं. विशय मनोविज्ञानिक है और इसी निगाह से पढ़ने में मज़ा आता है.

कृश्न चन्दर अपनी कहानियों में उपदेशक नहीं बनते. वह बात इस ढंग से कहते हैं कि दिल में जाकर बैठ जाय. चुटकियाँ लेना उनका ख़ास हिस्सा है. कभी कभी ऐसी चुटकियाँ लेते हैं कि समाज तिलमिला उठता है. आज के कृश्न चन्दर को समझने के लिये यह कहानियाँ अच्छा साधन हैं.

—मजीब रिज़वी

میں کرشن چندر نے ایک چھوٹی سی لاری میں اپنے سماج کی لگ بھگ ساری 'غلاظت' کو اکٹھا کر دیا ہے اور اپنا سندیش بہت کٹیلے شبدوں میں لوگوں تک پہونچایا ہے ۔ وہ لکھتے ہیں — "لیکن اب آدمی آدمی نہ تھا، ایک بھینس بھی نہ تھا بلکہ ایک بیرہ، ایک صاحب بہادر، ایک قیدی، ایک سارجنٹ. نتیجہ یہ کہ زندگی کی لاری بھاگی جارہی ہے اور ہم سب لوگ اپنی اپنی جگہ پر بےچین اور غیر مطمئن ہیں ۔" ساتویں کہانی "مقدس" ہے ۔ ایک کلرک اس کہانی میں جنسی خواہشوں کو روک نہیں پاتا اور بیوی کے پیار کی قسم ہر قدم پر کھاتا ہوا دوسری عورتوں کی گود میں بے فائدہ چین ڈھونڈھتا ہے ۔ آٹھویں کہانی "اُڑان" میں ایک غریب لڑکے کو زندگی کی اُڑان بھرتے دکھایا گیا ہے جو بھکشا کی روٹی کھا کر اور سیٹھوں کا عیش دیکھکر اپنی اُڑان بھول جاتا ہے ۔ اسی کہانی میں کشمیر کی غریبی اور اُس سے دبی ہوئی غریب عورتوں کا شاہوں کے ہاتھ چھوٹی موٹی کھانے پینے کی چیزیں حاصل کرنے کے لئے اپنی عزت بیچنے کا بھی چترن کیا گیا ہے ۔ نویں کہانی "ایک سورئیلی تصویر" ہے ۔ اسمیں غریبی، نازیوں کے ظلم، امیروں کی بے پرواہی اور مانوتا کا چتر لیکھک نے اپنے خاص ڈھنگ سے کھینچا ہے ۔ دسویں کہانی "آتا ہے یاد مجھکو" میں بچپن کے کرتوت دھرائے گئے ہیں ۔ وشے منووگیانک ہے اور اسی نگاہ سے پڑھنے میں مزا آتا ہے ۔

کرشن چندر اپنی کہانیوں میں اُپدیشک نہیں بنتے ۔ وہ بات اس ڈھنگ سے کہتے ہیں کہ دل میں جاکر بیٹھ جائے ۔ چٹکیاں لینا اُن کا خاص حصہ ہے ۔ کبھی کبھی ایسی چٹکیاں لیتے ہیں کہ سماج تلملا اُٹھتا ہے ۔ آج کے کرشن چندر کو سمجھنے کے لئے یہ کہانیاں اچھا سادھن ہیں ۔

उड़ान भरी थी और अब कहाँ तक वह पहुंचा है, इन सब बातों को जानने के लिये कृश्न चन्दर की पिछली रचनाओं का सामने आते रहना ज़रूरी है. इसलिये कृश्न चन्दर की शुरू की कहानियों के संग्रह का यह दूसरा एडीशन बहुत महत्व का है. इस संग्रह में दस कहानियाँ हैं. पहली कहानी "पुराने ख़ुदा" है. इस में लेखक ने मथुरा की आर्थिक, समाजी, और नेचरी हालतों का चित्र खींचा है. कृश्न चन्दर ने इस कहानी में यू. पी. में पंजाबियों के ख़िलाफ़ लड़कियाँ भगाने के आरोप को धोते हुए लोगों का ध्यान उस समस्या की तरफ़ दिलाया है जो कभी कभी पंजाबियों को उनके ख़याल में यह हरकत करने पर मजबूर करती है. कृश्न चन्दर पत्थर के भगवान या आसमान के राजा को 'पुराना ख़ुदा' नहीं कहते. इस कहानी में उन्होंने बताया है कि धर्म, समाज, राज सभी पर शुरू से पूंजी का असर रहा है और पूंजीपति ही 'पुराने ख़ुदा' हैं. दूसरी कहानी "चिड़िया का ग़ुलाम" अनोखी टेकनीक में है. लेखक ने मज़ाक़ ही मज़ाक़ में यह बताया है कि दुनिया में सारे झगड़े महज़ बेमतलब शुरू होते हैं और कभी कभी भयानक रूप अख़तियार कर लेते हैं. तीसरी कहानी "मुसबित मनफ़ी" है. इसमें कहानी की टेकनीक और सुन्दर शब्द चित्रों के ज़रिए तरह तरह की मिसालें देकर लेखक ने बताया है कि किसी चीज़ का कहीं अधिक होना बताता है कि वह चीज़ कहीं नापैद है. चौथी कहानी "झील से पहले, झील के बाद" है. कृश्न चन्दर मानते हैं कि ज़मीन का हर कोना उसके असली मालिक मेहनतकश समाज को मिल जाय. लेकिन न जाने क्यों इस कहानी में झिल्ला कर कह गए हैं कि अगर इस सुन्दर घाटी का कोई सुख मेहनत मज़दूरी करने वालों के हिस्से में नहीं है तो वह फिर जल ही जल होजाय. पाँचवी कहानी "हादसे" में कृश्न चन्दर जिन्सी भूक की बुराइयों पर उतर आए हैं और ज़बरदस्त सबक़ देते हैं. अपनी छटी कहानी "ग़लाज़त"

اُڑان بھری تھی اور اب کہاں تک وہ پہونچا ھے' اِن سب باتوں کو جاننے کےلئے کرشن چندر کی پچھلی رچناؤں کا سامنے آتے رھنا ضروری ھے . اِسلئے کرشن چندر کی شروع کی کہانیوں کے سنگرہ کا یہ دوسرا ایڈیشن بہت مہتو کا ھے . اس سنگرہ میں دس کہانیاں ھیں . پہلی کہانی " پرانے خدا " ھے . اِسمیں لیکھک نے متھرا کی آرتھک' سماجی اور نیچری حالتوں کا چتر کھینچا ھے . کرشن چندر نے اِس کہانی میں یوپی میں پنجابیوں کے خلاف لڑکیاں بھگانے کے آروپ کو دھوتے ھوئے لوگوں کا دھیان اُس سمسیا کی طرف دلایا ھے جو کبھی کبھی پنجابیوں کو اُنکے خیال میں یہ حرکت کرنے پر مجبور کرتی ھے . کرشن چندر پتھر کے بھگوان یا آسمان کے راجہ کو ' پرانا خدا ' نہیں کہتے . اِس کہانی میں اُنھوں نے بتایا ھے کہ دھرم' سماج' راج سبھی پر شروع سے پونجی کا اثر رھا ھے اور پونجی پتی ھی ' پرانے خدا ' ھیں . دوسری کہانی " چڑیا کا غلام " انوکھی تکنیک میں ھے . لیکھک نے مذاق ھی مذاق میں یہ بتایا ھے کہ دنیا میں سارے جھگڑے محض بے مطلب شروع ھوتے ھیں اور کبھی کبھی بھیانک روپ اختیار کر لیتے ھیں . تیسری کہانی " مثبت منفی " ھے . اِس میں کہانی کی تکنیک اور شبد چتروں کے ذریعے طرح طرح کی مثالیں دے کر لیکھک نے بتایا ھے کہ کسی چیز کا کہیں ادھک ھونا بتاتا ھے کہ وہ چیز کہیں ناپید ھے . چوتھی کہانی " جھیل سے پہلے' جھیل کے بعد " ھے . کرشن چندر مانتے ھیں کہ زمین کا ھر کونا اُسکے اصلی مالک محنت کش سماج کو مل جائے . لیکن نہ جانے کیوں اس کہانی میں جھلا کر کہہ گئے ھیں کہ اگر اِس سندر گھاٹی کا کوئی سکھ محنت مزدوری کرنے والوں کے حصے میں نہیں ھے تو یہ پھر جل ھی جل ھوجائے . پانچویں کہانی " حادثے " میں کرشن چندر جنسی بھوک کی برائیوں پر اُتر آئے ھیں اور زبردست سبق دیتے ھیں . اپنی چھٹی کہانی " غلاظت "

के लिये इस बिशय पर क़लम उठाते हैं. अपने मतलब को पूरा करने में कहीं कहीं नंगा चित्रन करना भी पड़ जाय तो वह मुँह नहीं मोड़ते. नौकरों के साथ हम लोग किस तरह ब्योहार करते हैं और किस तरह नफ़रत और मुहब्बत के भाव एक ही वक़्त में हमारे दिमाग़ में हथौड़े चलाया करते हैं, इसका चित्रन "वहशी" कहानी में लेखक ने बहुत सुन्दर किया है. 'हिमालय की चोटी' में महेन्द्र नाथ ने देस में पढ़े लिखे लोगों को नौकरी न मिलने की समस्या का कटीले ढंग से मज़ाक़ उड़ाया है. "शादी के बाद" तो हिन्दुस्तान के दो चार साल पुराने ब्याहे लगभग हर जोड़े की कहानी है. "दीवार" का भी बिशय मनोविज्ञानिक है. "मेरी आवाज़" में भी बीच के तबक़े की आर्थिक और मानसिक समस्या का चित्रन किया गया है. इस संग्रह की आख़िरी कहानी "काश वह बेवक़ूफ़ होता" है. मेरे ख़याल में सब से अच्छी कहानी यही है. इसमें समाज में फैले तरह तरह के विचारों और तरह तरह के लोगों से परिचय लेखक ने कराया है.

—मुजीब रिज़वी

पुराने ख़ुदा

लिखने वाले—कृशनचन्द्र

निकालने वाले—मक़तबा जामिआ लिमिटेड, जामिआ नगर, देहली

लिखावट उर्दू—सफ़ा दो सौ बारह—क़ीमत ढ़ाई रुपया.

यह कृशन चन्दर की कहानियों का संग्रह है. आज के कृशन चन्दर के अनगिनत पाठक हैं और नए लेखक उसके निशान पर चलने की कोशिश करते हैं. इस संग्रह की सारी कहानियाँ उस

کے لئے اِس وشے پر قلم اُٹھاتے ھیں. اپنے مطلب کو پورا کرنے میں کہیں کہیں ننگا چترن کرنا بھی پڑ جائے تو وہ منہ نہیں موڑتے. نوکروں کے ساتھ ھم لوگ کس طرح بیوھار کرتے ھیں اور کس طرح نفرت اور محبت کے بھاؤ ایک ھی وقت میں ھمارے دماغ میں ھتوڑے چلایا کرتے ھیں. اِس کا چترن 'وحشی' کہانی میں لیکھک نے بہت سندر کیا ھے. 'ھمالیہ کی چوٹی' میں مہندر ناتھ نے دیس میں پڑھے لکھے لوگوں کو نوکری نہ ملنے کی سمسیا کا کٹیلے ڈھنگ سے مذاق اُڑایا ھے. "شادی کے بعد" تو ھندستان کے دو چار سال پرانے بیاھے لگ بھگ ھر جوڑے کی کہانی ھے. "دیوار" کا بھی وشے منووگیانک ھے. "میری آواز" میں بھی بیچ کے طبقے کی آرتھک اور مانسک سمسیا کا چترن کیا گیا ھے. اِس سنگرہ کی آخری کہانی "کاش وہ بیوقوف ھوتا" ھے. میرے خیال میں سب سے اچھی کہانی یہی ھے. اِس میں سماج میں پھیلے طرح طرح کے وچاروں اور طرح طرح کے لوگوں سے پریچے لیکھک نے کرایا ھے.

—مجیب رضوی

پرانے خدا

لکھنے والے—کرشن چندر

نکالنے والے—مکتبہ جامعہ لمیٹیڈ، جامعہ نگر دھلی

لکھاوٹ اُردو—صفحے دو سو بارہ—قیمت ڈھائی روپیہ.

یہ کرشن چندر کی کہانیوں کا سنگرہ ھے. آجکے کرشن چندر کے ان گنت پاٹھک ھیں اور نئے لیکھک اُسکے نشان پر چلنے کی کوشش کرتے ھیں. اِس سنگرہ کی ساری کہانیاں اُس سمے کی ھیں

से पहुँचाते रहते हैं. केवल हिन्दी ही जानने वालों के लिये 'फ्राँस का परिचय' नया साहित्य की अमूल देन है. कृश्न चन्दर और यशपाल की रचनाएं भी इस पत्र में छपती रहती हैं. लगभग सभी अच्छे कलाकारों का सहयोग इस रिसाले को हासिल है क्योंकि यह उन्हीं की चीज़ है. पर न यह अश्लील और बेतुकी कहानियाँ छापता है और न फ़िल्म की नंगी तसवीरों से गेट अप बढ़ाता है. शायद यही कारन है इस की माली हालत अच्छी न होन का. साहित्यकों का फ़र्ज़ है कि नया साहित्य की भरसक सहायता करें और जनता से भी हमारी अपील है कि वह इस को ज़िन्दा रखने के लिये अपना पूरा सहयोग दे.

—मुजीब रिज़वी

नई बीमारी

लिखने वाले—महेन्द्र नाथ

निकालने वाले—मकतबा जामिआ लिमिटेड, जामिआ नगर, देहली

लिखावट उर्दू, सफ़ा १८८. क़ीमत दो रुपया आठ आना

'नई बीमारी' महेन्द्र नाथ की कहानियों के संग्रह का दूसरा एडीशन है. बीमारियाँ तो इस किताब में सारी पुरानी ही हैं लेकिन कहीं कहीं उनकी तरफ़ संकेत अलबत्ता नए ढंग से किया गया है. महेन्द्र नाथ ने बीच के तबक़े की लगभग सभी समस्याओं पर क़लम उठाया है लेकिन जिन्स (सेक्स) के बारे में वह अधिक बदनाम हो गए हैं. इस संग्रह में भी 'नई बीमारी' 'बर्फ़' और 'दहलीज़' कहानियों का विशय जिन्स ही है. पर महेन्द्र नाथ जिन्सी भाव तेज़ करने की जान बूझ कर कोशिश नहीं करते, वह जिन्सी समस्याओं को सुधारने

سے پہونچاتے رہتے ہیں. کیول ہندی ہی جاننے والوں کے لئے 'فرانس کا پریچے' نیاساہتیہ کی امول دین ہے. کرشن چندر اور یشپال کی رچنائیں بھی اس پتر میں چھپتی رہتی ہیں . لگ بھگ سبھی اچھے کلاکاروں کا سہیوگ اِس رسالے کو حاصل ہے کیونکہ یہ اُنہیں کی چیز ہے . پر نہ یہ اشلیل اور بے تکی کہانیاں چھاپتا ہے اور نہ فلم کی ننگی تصویروں سے گیٹ اپ بڑھاتا ہے شاید یہی کارن ہے اسکی مالی حالت اچھی نہ ہونے کا . ساہتکوں کا فرض ہے کہ نیا ساہتیہ کی بھرسک سہائتا کریں اور جنتا سے بھی ہماری اپیل ہے کہ وہ اِس کو زندہ رکھنے کے لئے اپنا پورا سہیوگ دے .

—مجیب رضوی

نئی بیماری

لکھنے والے—مہندر ناتھ

نکالنے والے—مکتبہ جامعہ لمیٹڈ' جامعہ نگر دہلی

لکھاوٹ اُردو' صفحہ ۱۸۸' قیمت ۲ روپیہ آٹھ آنہ

'نئی بیماری' مہندر ناتھ کی کہانیوں کے سنگرہ کا دوسرا ایڈیشن ہے . بیماریاں تو اِس کتاب میں ساری پرانی ہی ہیں لیکن کہیں کہیں اُن کی طرف سنکیت البتہ نئے ڈھنگ سے کیا گیا ہے . مہندر ناتھ نے بیچ کے طبقے کی لگ بھگ سبھی سمسیاؤں پر قلم اُٹھایا ہے لیکن جنس (سکس) کے بارے میں وہ ادھک بدنام ہوگئے ہیں . اِس سنگرہ میں بھی 'نئی بیماری' 'برف' اور 'دہلیز' کہانیوں کا وشے جنس ہی ہے . پر مہندر ناتھ جنسی بھاؤ تیز کرنے کی جان بوجھ کر کوشش نہیں کرتے' وہ جنسی سمسیاؤں کو سدھارنے

कुछ किताबें

کچھ کتابیں
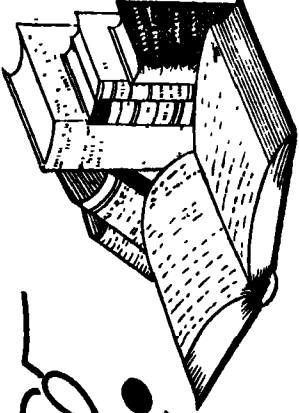
नया साहित्य

महावारी हिन्दी रिसाला

पता—प्रकाशगृह, नया कटरा, इलाहाबाद-२

सफ़ा छियानवे, साइज़ डिमाई अठपेजी, सालाना चन्दा आठ रुपया, छमाही चार रुपया आठ आना, एक कापी का दाम बारह आना.

हिन्दी में इने गिने रिसाले ही हैं जो 'प्रगतिशील लेखक संघ' के मक़सद को पूरा करते हैं. 'नया साहित्य' उन में से एक है और संघ ही का परचा है. हिन्दी के मशहूर आलोचक डाक्टर रामबिलास शर्मा, प्रोफ़ेसर प्रकाश चन्द्र गुप्त और हिन्दी के मशहूर कहानीकार 'पहाड़ी' जी इस के सम्पादक मंडल में हैं. इसमें कहानी भी हैं और कविता भी, आलोचना भी है और अन्तर्राष्ट्री समस्याओं पर सूझी बूझी रायें भी. लेखों में देसी लेखकों के विचार भी इस रिसाले में मिलते हैं और विदेशों के मशहूर प्रगतिशील लेखकों के लेख भी. चीन और रूस ऐसे बड़े देसों की रचनाओं और लेखकों से भी परिचय होता है. नरुदा ऐसे जग के महान कवि की कविताएँ भी नया साहित्य के पन्नों पर दिखाई पड़ती हैं. रामकुमार जी पैरिस में चक्कर काटते हैं

نیا ساهتیه

ماهواری هندی رساله

پته—پرکاش گره' نیا کٹره' الهآباد—۲

صفحے چھیانوے' سائز ڈمائی آٹھ پیجی' سالانه چندہ آٹھ روپیه' چھماهی چار روپیه آٹھ آنه' ایک کاپی کا دام بارہ آنه .

هندی میں اِنے گنے رسالے هی هیں جو 'پرگتی شیل لیکھک سنگھ' کے مقصد کو پورا کرتے هیں . 'نیا ساهتیه' اُن میں سے ایک هے اور سنگھ هی کا پرچه هے . هندی کے مشهور آلوچک ڈاکٹر رام بلاس شرما' پروفیسر پرکاش چندر گپت اور هندی کے مشهور کهانی کار 'پهاڑی' جی اسکے سمپادک منڈل میں هیں . اس میں کهانی بهی هیں اور کویتا بهی' آلوچنا بهی اور انتر راشٹری سمسیاؤں پر سوجهی بوجهی رائیں بهی . لیکهوں میں دیسی لیکهکوں کے وچار بهی اِس رسالے میں ملتے هیں اور ودیسوں کے مشهور پرگتی شیل لیکهکوں کے لیکھ بهی . چین اور روس ایسے بڑے دیسوں کی رچناؤں اور لیکهکوں سے بهی پریچے هوتا هے . نرودا ایسے جگ کے مهان کوی کی کویتائیں بهی نیا ساهتیه کے پنوں پر دکهائی دیتی هیں . رام کمار جی پیرس میں چکر کاٹتے هیں لیکن

मोल जाती थी.

दिन बीतते गए और साइकिल की ईजाद में तरक़्क़ी होती गई. कोई साठ साल की बात है कि पहली ऐसी साइकिल बनाई गई जिसमें हवा भरने के टायर लगे हुए थे. यह साइकिल दुनिया भर में मशहूर होगई. "जे. बी. डनलप" ने यह टायर ईजाद किये. उसके मन में यह विचार पैदा हुआ कि टायर में रबड़ का टुकड़ा देने की जगह हवा भर देनी चाहिये. उसने कई एक तजुरबे भी किये. एक दिन उसने हवा से भरी हुई रबड़ की ट्यूब एक लकड़ी के पहिये में लगादी फिर उसने इस पहिये को घुमाया और देखा की यह बार बार उछलता है. तब उसने अपने लड़के से कहा "बेटे ! फिर तो हम अपने काम में पास होगए और हमारा काम ठीक रहा."

कुछ दिनों बाद उसका लड़का अपने स्कूल में होने वाली साइकिल की दौड़ में हिस्सा लेने वाला था. डनलप ने दो ट्यूब बनाए और बच्चे की साइकिल पर लगा दिये. लोगों ने इस अजीब चीज़ को देखकर मज़ाक़ उड़ाया पर यह साइकिल बहुत तेज़ दौड़ने लगी जिसके कारन लड़का दौड़ में जीत गया. इसके बाद से यह टायर साइकिलों में लगाए जाने लगे और फिर धीरे धीरे उसमें नयापन आने लगा. आज यही साइकिल एक हलकी फुलकी, सुन्दर और सस्ती सवारी है जिस पर बैठ कर तुम स्कूल जाते हो और दुनिया भर में क्या बड़े, क्या बच्चे सभी इसको चलाते हैं.

(अनुवाद किया गया)

۲۰ میل جاتی تھی ۔

دن بیتتے گئے اور سائیکل کی ایجاد میں ترقی ہوتی گئی ۔ کوئی ساٹھ سال کی بات ہے کہ پہلی ایسی سائیکل بنائی گئی جس میں ہوا بھرنے کے ٹائر لگے ہوئے تھے ۔ یہ سائیکل دنیا بھر میں مشہور ہوگئی ۔ '' جے ۔ بی ۔ ڈنلپ '' نے یہ ٹائر ایجاد کئے ۔ اُسکے من میں یہ وچار پیدا ہوا کہ ٹائر میں ربر کا ٹکڑا دینے کی جگہ ہوا بھر دینی چاہئے ۔ اُس نے کئی ایک تجربے بھی کئے ۔ ایک دن اُس نے ہوا سے بھری ہوئی ربر کی ٹیوب ایک لکڑی کے پہئے میں لگا دی ۔ پھر اُس نے اِس پہئے کو گھمایا اور دیکھا کہ یہ بار بار اُچھلتا ہے ۔ تب اُس نے اپنے لڑکے سے کہا '' بیٹے ! پھر تو ہم اپنے کام میں پاس ہوگئے اور ہمارا کام ٹھیک رہا ۔''

کچھ دنوں بعد اُس کا لڑکا اپنے اسکول میں ہونے والی سائیکل کی دوڑ میں حصہ لینے والا تھا ۔ ڈنلپ نے دو ٹیوب بنائے اور بچے کی سائیکل پر لگا دئے ۔ لوگوں نے اِس عجیب چیز کو دیکھکر مذاق اُڑایا ۔ پر یہ سائیکل بہت تیز دوڑنے لگی جس کے کارن لڑکا دوڑ میں جیت گیا ۔ اِسکے بعد سے یہ ٹائر سائیکلوں میں لگائے جانے لگے اور پھر دھیرے دھیرے اُس میں نیا پن آنے لگا ۔ آج یہی سائیکل ایک ہلکی پھلکی ، سندر اور سستی سواری ہے جس پر بیٹھکر تم اِسکول جاتے ہو اور دنیا بھر میں کیا بڑے کیا بچے سبھی اس کو چلاتے ہیں ۔

(انوواد کیا گیا)

सवार बैठ जाता था. अगले पहिये के ऊपर एक तरह का हैंडिल लगा दिया. सवार पाँव को ज़मीन पर टेकता हुआ मशीन को घुमाता था. जब साइकिल चल पड़ती तो सवार अपने पाँव ऊपर उठा लेता. फिर साइकिल को कुछ देर तक ज़ोर से दौड़ाता रहता. इस साइकिल का नाम "बाँका घोड़ा" रखा गया.

सन १८४५ में "मैक मिलन" ने एक ऐसी साइकिल बनाई जिसमें पैडिल लगे हुए थे और छै साल के बाद एक देसवासी ने "लकड़ी का घोड़ा" नाम से एक नए प्रकार की साइकिल की नीव रखी. इसके दो पहिये थे जिनमें पैडिल लगे हुए थे, जो पाँव के बल आगे और पीछे चल पड़ते थे जिसके साथ चक्कर भी घूमने लगते थे.

पैडिल को अगले पहिये के साथ जोड़ने और उन्हें गोलाई में घुमाने का काम कुछ बरस बाद हुआ. इस नई क़िस्म की साइकिल के पहिये लकड़ी के थे जिस पर लोहा चढ़ाया गया था. इसमें इसप्रिंग वग़ैरा नहीं थी और इसका नाम "हड्डी तोड़" पड़ गया. पर इसे लोगों ने बहुत पसन्द किया और बड़े लोग भी इसे चलाने लगे.

अब क्या था जल्दी ही और साइकिलें निकल पड़ीं. जिनमें एक ऐसी साइकिल भी थी जिसका अगला पहिया बहुत बड़ा और पिछला पहिया बहुत छोटा था. इस की गद्दी ज़मीन से कोई पाँच फ़ुट ऊँची थी और चलाने वाला छोटे पहिये के ऊपर से फुदक कर इस पर सवार होता था. इस तरह की साइकिल पर सवारी करने वालों की सभाएँ बन गईं. यह लोग एक ख़ास क़िस्म का लिबास और एक नए ढंग की टोपी पहन कर सवारी को

سوار بیٹھ جاتا تھا . اگلے پہیئے کے اُوپر ایک طرح کا ہینڈل لگا دیا . سوار پاؤں کو زمین پر ٹیکتا ہوا مشین کو گھماتا تھا . جب سائیکل چل پڑتی تو سوار اپنے پاؤں اُوپر اُٹھا لیتا . پھر سائیکل کو کچھ دیر زور سے دوڑاتا رہتا . اس سائیکل کا نام " بانکا گھوڑا " رکھا گیا .

سن ۱۸۴۵ میں " میک ملن " نے ایک ایسی سائیکل بنائی جسمیں پیڈل لگے ہوئے تھے اور چھ سال کے بعد ایک دیس واسی نے " لکڑی کا گھوڑا " نام سے ایک نئے پرکار کی سائیکل کی نیو رکھی . اِسکے دو پہیئے تھے جن میں پیڈل لگے ہوئے تھے' جو پاؤں کے بل آگے اور پیچھے چل پڑتے تھے جسکے ساتھ چکر بھی گھومنے لگتے تھے .

پیڈل کو اگلے پہیئے کے ساتھ جوڑنے اور اُنھیں گولائی میں گھمانے کا کام کچھ برس بعد ہوا . اِس نئی قسم کی سائیکل کے پہیے لکڑی کے تھے جس پر لوہا چڑھایا گیا تھا . اِس میں اسپرنگ وغیرہ نہیں تھا اور اِس کا نام " ہڈی توڑ " پڑ گیا . پر اِسے لوگوں نے بہت پسند کیا اور بڑے لوگ بھی اِسے چلانے لگے .

اب کیا تھا . جلدی ہی اور سائیکلیں نکل پڑیں جن میں ایک ایسی سائیکل بھی تھی جس کا اگلا پہیا بہت بڑا اور پچھلا پہیا بہت چھوٹا تھا . اِسکی گدی زمین سے کوئی پانچ فٹ اونچی تھی . اور چلانے والا چھوٹے پہیئے کے اوپر سے پھدک کر اس پر سوار ہوتا تھا . اِس طرح کی سائیکل پر سواری کرنے والوں کی سبھائیں بن گئیں . یہ لوگ ایک خاص قسم کا لباس اور ایک نئے ڈھنگ

रहा था कि अपने राज की ग़रीब जनता के दुख दूर करने के लिये अब उसे केवल महात्मा गाँधी के बताए रास्तों को अपनाना होगा. उसके मन में यह विश्वास और भी पक्का हो गया कि गाँधी जी का अहिंसा और सत्याग्रह का रास्ता ही ज़ालिमों का मुक़ाबला करने के लिये सब से अच्छा रास्ता है. फिर उसे ऐसा मालूम हुआ मानों दूर 'आकाश में गाँधी जी खड़े हुए उसे हाथ उठा कर आशीर्वाद दे रहे हैं. घर पहुंचते पहुंचते प्रेम लाल ने अपने मन में पक्का निश्चय कर लिया कि वह जल्दी से जल्दी अपने साथियों को लेकर राज के ख़िलाफ़ सत्याग्रह की लड़ाई छेड़ देगा.

साइकिल की कहानी

(भाई विक़ार ख़लील)

साइकिल को बने क़रीब १३५ साल होते हैं. फ़्रान्स और बरतानिया में जब बहुत सी नई सड़कें बन रही थीं और वह लोग जो थोड़े समय में बहुत दूर तक पहुँचना चाहते थे लेकिन ग़रीबी के कारन मोटर, गाड़ी और घोड़ा भी नहीं ख़रीद सकते थे वह एक ऐसी सस्ती सवारी की तलाश करने लगे जिसमें न पेटरोल का ख़र्च हो और न कोचवान रखना पड़े. तभी आदमी के दिमाग़ में साइकिल बनाने का ख़याल पैदा हुआ.

इस काम में सब से ज़्यादा सफलता एक फ़्रान्सीसी "जान ड्रेस" को हुई. पहले पहल इसने लकड़ी के एक टुकड़े पर दो पहियों को आगे पीछे जोड़ा, और लकड़ी पर एक गद्दी लगादी जिस पर

رہا تھا کہ اپنے راج کی غریب جنتا کے دکھ دور کرنے کے لئے اب اسے کیول مہاتما گاندھی کے بتائے راستوں کو اپنانا ہوگا . اسکے من میں یہ وشواس اور بھی پکا ہو گیا کہ گاندھی جی کا اہنسا اور ستیاگرہ کا راستہ ہی ظالموں کا مقابلہ کرنے کے لئے سب سے اچھا راستہ ہے . پھر اسے ایسا معلوم ہوا مانو دور آکاش میں گاندھی جی کھڑے ہوئے اسے ہاتھ اٹھا کر آشیرواد دے رہے ہیں . گھر پہنچتے پہنچتے پریم لال نے اپنے من میں پکا نشچے کر لیا کہ وہ جلدی سے جلدی اپنے ساتھیوں کو لے کر راج کے خلاف ستیاگرہ کی لڑائی چھیڑ دے گا .

سائیکل کی کہانی

(بھائی وقار خلیل)

سائیکل کو بنے قریب ۱۳۵ سال ہوتے ہیں . فرانس اور برطانیہ میں جب بہت سی نئی سڑکیں بن رہی تھیں اور وہ لوگ جو تھوڑے سمے میں بہت دور تک پہنچنا چاہتے تھے لیکن غریبی کے کارن موٹر گاڑی اور گھوڑا بھی نہیں خرید سکتے تھے وہ ایک ایسی سستی سواری کی تلاش کرنے لگے جس میں نہ پٹرول کا خرچ ہو نہ کوچوان رکھنا پڑے . تبھی آدمی کے دماغ میں سائیکل بنانے کا خیال پیدا ہوا .

اِس کام میں سب سے زیادہ سپھلتا ایک فرانسیسی '' جان ڈریس '' کو ہوئی . پہلے پہل اِس نے لکڑی کے ایک ٹکڑے پر دو پہیوں کو آگے پیچھے جوڑا' اور لکڑی پر ایک گدی لگا دی جس پر

प्रेम लाल ने कहा—"अच्छा, मैं इस कुए में छलाँग लगाऊँगा और अँगूठी ले आऊँगा. मेरा विश्वास है कि हिम्मत करने से हर काम हो सकता है. दुनिया में कोई काम नामुमकिन नहीं."

आकृति बोली—"ऐ सुन्दर बालक, अच्छा कूद तो सही. पर एक बात सुन ले, इस कुएँ में भाँति भाँति के डसने वाले जानवर हैं, तेरी जान खतरे में पड़ सकती है."

लेकिन प्रेम लाल डरा नहीं और भगवान का नाम लेकर कुएं मे कूद पड़ा, न तो पानी ही था और न मगर मच्छ, बल्कि वह एक सुन्दर महल में खड़ा इधर उधर देख रहा था कि ऐसे में हँसते हुए आकृति ने उससे कहा—

"शाबाश मेरे बच्चे, तू बड़ा बहादुर है, भगवान तेरी हर इच्छा पूरी करे. एक दिन तू देस का बड़ा आदमी बन कर देस की आन को और बापू के नाम को ऊँचा उठाएगा. सुन, तेरे देस को तुझ सा ही एक वीर बालक मिला था. उसका नाम गाँधी था. वह अपने इरादों पर डटा रहा. उसके रास्ते में बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ आईं पर वह पक्का और निडर बालक आगे बढ़ता ही गया और वह दिन भी आया कि उसका काम पूरा हो गया. सच की जीत और झूट की हार हो गई. फिर उसने आज़ाद भारत वासियों को प्रेम सन्देश सुनाया और " हिन्दू मुसलिम " एकता पर अपने को भेंट चढ़ा दिया. वह मर कर भी अमर है."

प्रेम लाल आकृति की बातें सुनता रहा और फिर एक दम उसने चाहा कि उछल कर कुएँ के बाहर आजाय. पर इतने ही में उसकी आँख खुल गई. वह जंगल में एक पेड़ की टेक लगाकर बैठा था और तभी उसे नींद आगई थी. होश आते ही प्रेम लाल को अपनी गायों की याद आई. उसने सोचा कि गायों को चारा देना है. वह उठ खड़ा हुआ और गाँव की तरफ चल पड़ा. पर जब उसके

پریم لال نے کہا—''اچھا، میں اِس کنوئیں میں چھلانگ لگاؤں گا اور انگوٹھی لے آؤں گا . میرا وشواس ہے کہ همت کرنے سے ہر کام ہو سکتا ہے . دنیا میں کوئی کام ناممکن نہیں .

آکرتی بولی—''اے سندر بالک، اچھا کود تو سہی، پر ایک بات سن لے، اِس کنوئیں میں بھانت بھانت کے ڈسنے والے جانور ہیں، تیری جان خطرے میں پڑ سکتی ہے .''

لیکن پریم لال ڈرا نہیں اور بھگوان کا نام لیکر کنوئیں میں کود پڑا، نہ تو پانی ہی تھا اور نہ مگر مچھ، بلکہ وہ ایک سندر محل میں کھڑا اِدھر اُدھر دیکھ رہا تھا کہ ایسے میں ہنستے ہوئے آکرتی نے اُس سے کہا—

''شاباش میرے بچے، تو بڑا بہادر ہے، بھگوان تیری ہر اِچھا پوری کرے . ایک دن تو دیس کا بڑا آدمی بنکر دیس کی آن کو اور باپو کے نام کو اونچا اُٹھائیگا . سن تیرے دیس کو تجھ سا ہی ایک ویر بالک ملا تھا . اُس کا نام گاندھی تھا . وہ اپنے ارادوں پر ڈٹا رہا . اُسکے راستے میں بڑی بڑی کٹھنائیاں آئیں پر وہ پکا اور نڈر بالک آگے بڑھتا ہی گیا اور وہ دن بھی آیا کہ اُس کا کام پورا ہو گیا . سچ کی جیت اور جھوٹ کی ہار ہو گئی . پھر اُس نے آزاد بھارت واسیوں کو پریم سندیش سنایا اور ''ہندو مسلم'' ایکتا پر اپنے کو بھینٹ چڑھا دیا . وہ مر کر بھی اَمر ہے .

پریم لال آکرتی کی باتیں سنتا رہا اور پھر ایک دم اُسنے چاہا کہ اُچھل کر کنوئیں کے باہر آجائے . پر اتنے ہی میں اس کی آنکھ کھل گئی . وہ جنگل میں ایک پیڑ کی ٹیک لگا کر بیٹھا تھا اور تبھی اُسے نیند آگئی تھی . ہوش آتے ہی پریم لال کو اپنی گایوں کی یاد آئی . اُس نے سوچا کہ گایوں کو چارہ دینا ہے . وہ اُٹھ کھڑا ہوا اور گاؤں کی طرف چل پڑا . پر اب اُسکے

वह धम से ज़मीन पर गिर पड़ा. फिर उसे मरा जान कर सेना आगे बढ़ी और इधर कुछ समय बाद वीर प्रेम लाल उठ बैठा. उसे बहुत घाव लगे थे और खून में सारे कपड़े लथपथ हो गए थे.

इस घटना ने उसके इरादों को और पक्का कर दिया. वह निडरता और वीरता के साथ खुल्लम खुल्ला राज के ख़िलाफ़ हो गया.

प्रेम लाल एक दिन गाँव से दूर जंगल में बैठा विचार कर रहा था कि इतने में बड़े ज़ोर का धड़ाका हुआ और एक भयानक आकृति ने जन्म लिया. प्रेम लाल उसे देख ज़रा भी न घबराया. उस ने पूछा —"तुम कौन हो ?"

भयानक आकृति ने कहा—"मैं तेरी इच्छा पूरन करने आया हूँ, बोल क्या चाहता है ?"

प्रेम लाल बोला—"मेरे पास सब कुछ है. केवल मुझ से राज मंत्री के जनता पर अत्याचार सहे नहीं जाते."

आकृति ने पूछा—"अच्छा, अगर तू यहाँ का मंत्री बन जाए तो क्या करेगा ?"

प्रेम लाल बोला—"मैं मंत्री बन जाऊँ तो ... हर एक को सुख और आनन्द मिलेगा. किसी को दुखी न रहने दूँगा. उनके लिये रोटी कपड़े का बन्दोबस्त करूँगा. उन की सेवा का पारितोषिक इतना दूँगा कि वह खुश हो जाएँ और आनन्द के साथ अपना काम कर सकें. मेरे राज में जिसकी मेहनत उसकी दौलत रहेगी, निकम्मों और निखट्टुओं को काम करना सिखाऊँगा"

आकृति—"अच्छा बच्चा. तेरे बड़े अच्छे विचार हैं, मैं तुझे मंत्री बनाऊँगा. इसके लिये तुझे एक बात माननी पड़ेगी, वह यह कि तुझे इस गहरे कुएँ में छलाँग लगा कर अन्दर से एक अंगूठी लानी होगी जिसे मैं तेरे सामने फेंक दूंगा. फिर तू इस राज का मंत्री बन जायगा."

وہ دھم سے زمین پر گر پڑا ۔ پھر اُسے مرا جان کر سینا آگے بڑھی اور اِدھر کچھ سمے بعد ویر پریم لال اُٹھ بیٹھا ۔ اِسے بہت گھاؤ لگے تھے اور خون میں سارے کپڑے لتھ پتھ ہو گئے تھے ۔

اِس گھٹنا نے اُسکے ارادوں کو اور پکا کر دیا ۔ وہ نڈرتا اور ویرتا کے ساتھ کھلم کھلا راج کے خلاف ہو گیا ۔

پریم لال ایک دن گاؤں سے دور جنگل میں بیٹھا وچار کر رہا تھا کہ اتنے میں بڑے زور کا دھواکا ہوا اور ایک بھیانک آکرتی نے جنم لیا ۔ پریم لال اُسے دیکھ ذرا بھی نہ گھبرایا ۔ اُس نے پوچھا —''تم کون ہو ؟''

بھیانک آکرتی نے کہا—''میں تیری اِچھا پورن کرنے آیا ہوں' بول کیا چاہتا ہے ؟''

پریم لال بولا—''میرے پاس سب کچھ ہے ۔ کیول مجھ سے راج منتری کے جنتا پر اتیاچار سہے نہیں جاتے ۔''

آکرتی نے پوچھا—''اچھا' اگر تو یہاں کا منتری بن جائے تو کیا کریگا ؟''

پریم لال بولا—''میں منتری بن جاؤں تو......ہر ایک کو سکھ اور آنند ملے گا ۔ کسی کو دکھی نہ رہنے دوں گا ۔ اُنکے لئے روٹی کپڑے کا بندوبست کرونگا ۔ اُنکی سیوا کا پارتوشک اتنا دونگا کہ وہ خوش ہو جائیں اور آنند کے ساتھ اپنا کام کر سکیں ۔ میرے راج میں جسکی محنت اُسکی دولت رہیگی' نکموں اور نکھٹوؤں کو کام کرنا سکھاؤنگا ۔''

آکرتی—''اچھا بچہ' تیرے بڑے اچھے وچار ہیں' میں تجھے منتری بناؤں گا ۔ اِسکے لئے تجھے ایک بات ماننی پڑے گی' وہ یہ کہ تجھے اِس گہرے کنوئیں میں چھلانگ لگاکر اندر سے ایک انگوٹھی لانی ہوگی جسے میں تیرے سامنے پھینک دونگا ۔ پھر تو اِس راج

निडरता का रूप

(भाई बी० के० पाठक, नागपूर)

किसी गाँव में एक ग्वाला रहता था. उसका एक बेटा प्रेम लाल सुन्दरता का पुतला था. उसके जैसा तनदुरुस्त, सुन्दर और नेक आदमी गाँव भर में कोई न था. कुछ दिनों बाद प्रेम लाल के पिता का देहान्त हो गया और वह नदी किनारे एक कुटिया में अपनी चार पाँच गायों समेत रहने लगा. गाँव भर में कोई उसकी बिरादरी के लोग न थे. इसी कारन वह अपनी गायों से बहुत प्रेम करता था. सवेरा होते ही उन्हें चराने ले जाता, और सूरज डूबते समय घर लाता. वह गायों के दूध, मक्खन और मलाई पर अपना जीवन बिताता था. गाँव के मनचलों ने इस बात की बहुत कोशिश की कि उसको बहकाया जाय और डरा धमका कर ठीक किया जाय. पर बहादुर प्रेम लाल उनके जाल में न फँसा.

जिस राज में प्रेम लाल रहता था उस राज का मंत्री बड़ा ज़ालिम था. सारे राज पर उसका आतंक छाया हुआ था और दुखी जनता बिलक बिलक कर जान दे रही थी. न उसे कपड़ा मिलता, न खाने को रोटी. राजनगर के इस अंधेर के ख़िलाफ़ अगर कोई कुछ कहता तो तत्काल ही उसका सर कुचला जाता.

प्रेम लाल था तो बालक, पर यह अंधेर नगरी उससे देखी न गई. जनता की तड़प और सरकार की चुप ने उसके मन में खलबली मचा दी और उसने एक ऐसी सभा बनाई जिसमें सरकार के ख़िलाफ़ प्रस्ताव पास किये गए. प्रेम लाल साथियों में बैठा एक प्रस्ताव पर विचार कर रहा था कि ऐसे में कुछ लठबंद घुड़सवार वहाँ आए और हल्ला बोल दिया. सभा में खलबली मच गई और दुखी जनता घबराई हुई, जिस ओर क़दम बढ़े भाग निकली. पर प्रेम लाल ज्यों का

ندرتا کا روپ

(بھائی وی' کے' پاٹھک' ناگپور)

کسی گاؤں میں ایک گوالا رھتا تھا . اسکا ایک بیٹا پریم لال سندرتا کا پتلا تھا . اُسکے جیسا تندرست' سندر اور نیک آدمی گاؤں بھر میں کوئی نہ تھا . کچھ دنوں بعد پریم لال کے پتا کا دیہانت ہو گیا اور وہ ندی کنارے ایک کٹیا میں اپنی چار پانچ گایوں سمیت رھنے لگا . گاؤں بھر میں کوئی اُسکی برادری کے لوگ نہ تھے . اِسی کارن وہ اپنی گایوں سے بہت پریم کرتا تھا . سویرا ہوتے ہی اُنھیں چرانے لے جاتا' اور سورج ڈوبتے سمے گھر لاتا . وہ گایوں کے دودھ' مکھن اور ملائی پر اپنا جیون بتاتا تھا . گاؤں کے منچلوں نے اِس بات کی بہت کوشش کی کہ اُس کو بہکایا جائے اور ڈرا دھمکا کر ٹھیک کیا جائے . پر بہادر پریم لال اُنکے جال میں نہ پھنسا .

جس راج میں پریم لال رھتا تھا اُس راج کا منتری بڑا ظالم تھا' سارے راج پر اُس کا آتنک چھایا ہوا تھا اور دکھی جنتا بلک بلک کر جان دے رھی تھی . نہ اُسے کپڑا ملتا نہ کھانے کو روٹی . راج نگر کے اِس اندھیر کے خلاف اگر کوئی کچھ کہتا تو تتکال ہی اُسکا سر کچلا جاتا .

پریم لال تھا تو بالک' پر یہ اندھیر نگری اُس سے دیکھی نہ گئی . جنتا کی تڑپ اور سرکار کی چپ نے اسکے من میں کھلبلی مچادی اور اُس نے ایک ایسی سبھا بنائی جس میں سرکار کے خلاف پرستاؤ پاس کئے گئے . پریم لال ساتھیوں میں بیٹھا ایک پرستاؤ پر وچار کر رھا تھا کہ ایسے میں کچھ لٹھبند گھوڑ سوار وھاں آئے اور ھلہ بول دیا . سبھا میں کھلبلی مچ گئی اور دکھی جنتا گھبرائی ہوئی' جس اور قدم بڑھے بھاگ نکلی . پر پریم لال

एडीटर—प्रेम भाई

ایڈیٹر—پریم بھائی

بچوں کی دنیا

रामू, राजू, दीन मोहम्मद

(भाई अज़ीज़ "क़ैसी")

तुम कोमल कोमल उजियारे, तुम हो देस की आँख के तारे
झगड़ा, बैर, लड़ाई, टंटा, यह सब बातें धनवानों की
मेल, मिलाप, और भाईचारा, यह पहचान है इनसानों की
इनसाँ इनसाँ भाई भाई, खोट रहे दिल में न ज़रा भी
प्रेम ही सबसे बड़ी है नेकी, इस नेकी को भूल न जाना
केवल जो लड़ना सिखलाएँ, उनके तुम दुशमन बनजाना
उस दुशमन से कभी न डरना, साहस रखना हिम्मत रखना
जो निर्धन को तड़पाता है, भूकों को जो तरसाता है
मेहनत लेकर मज़दूरों से. रुपया पैसा खा जाता है
रामू, राजू, दीन मोहम्मद, आपस में मिल जुल कर खेलो

तुम नन्हे नन्हे सूरज हो
मिलकर धरती पर छा जाओ

("तारे" हैदराबाद से)

راموٗ، راجوٗ، دین محمد

(بھائی عزیز '' قیسی '')

تم کومل کومل اُجیارے، تم ہو دیس کی آنکھ کے تارے
جھگڑا، بیر، لڑائی، ٹنٹا، یہ سب باتیں دھنوانوں کی
میل، ملاپ، اور بھائی چارہ، یہ پہچان ہے انسانوں کی
انساں انساں بھائی بھائی، کھوٹ رہے دل میں نہ ذرا بھی
پریم ہی سب سے بڑی ہے نیکی، اِس نیکی کو بھول نہ جانا
کیول جو لڑنا سکھلائیں، اُنکے تم دشمن بن جانا
اُس دشمن سے کبھی نہ ڈرنا، ساہس رکھنا ہمت رکھنا
جو نردھن کو تڑپاتا ہے، بھوکوں کو جو ترساتا ہے
محنت لیکر مزدوروں سے، روپیہ پیسہ کھاجاتا ہے
راموٗ، راجوٗ، دین محمد، آپس میں مل جل کر کھیلو

تم ننھے ننھے سورج ہو
ملکر دھرتی پر چھا جاؤ

('' تارے '' حیدرآباد سے)

मकान या आसपास के हिस्सों या कपड़े, बरतन जैसी चीज़ों की सफ़ाई ख़ुद करूँगा और ऐसा करते हुए ऐसा सोचूँगा कि इस बाहरी सफ़ाई से मुझे अपने दिल की सफ़ाई में और नेकनियती में आगे बढ़ना है."

नोट — सर्व सेवा समिति, वर्धा ने अपने क्षेत्र में इस काम को फ़ौरन शुरू करना तय किया, श्री श्रीकृश्नदास जाजू उसका रास्ता दिखायेंगे. दूसरी जगह के लोग भी ज़्यादा जानकारी, इत्तला वग़ैरा हासिल करने के लिये इस बारे में फ़िलहाल सारा पत्र व्योहार नीचे के पते पर करें. कृपा करके पत्र पर "शुद्ध व्योहार सम्बन्धी" ऐसा साफ़ लिखें.

पता—

मंत्री, सर्व-सेवा-समिति

मारफ़त—श्री श्रीकृश्नदास जी जाजू

बजाजवाड़ी, वर्धा (म० प्र०)

सबेरे मज़ेदार कलेवा करके बढ़िया भोजन के इन्तज़ार में बैठे हुए हम-जैसे लोगों के लिये ईश्वर के बारे में बातचीत करना आसान है. लेकिन जिन्हें दोनों जून भूखे रहना पड़ता है उनसे मैं ईश्वर की चरचा कैसे करूँ? उनके सामने तो परमात्मा केवल दाल-रोटी के ही रूप में प्रकट हो सकते हैं.

—महात्मा गाँधी

مکان یا آس پاس کے حصوں یا کپڑے برتن جیسی چیزوں کی صفائی خود کروں گا اور ایسا کرتے ہوئے ایسا سوچوں گا کہ اِس باھری صفائی سے مجھے اپنے دلکی صفائی میں اور نیک نیتی میں آگے بڑھنا ھے ."

نوٹ—سرو سیوا سمیتی، وردھا نے اپنے چھیتر میں اِس کام کو فوراً شروع کرنا طے کیا، شری شری کرشن داس جاجو اُس کا راستہ دکھائیں گے . دوسری جگہ کے لوگ بھی زیادہ جان کاری، اطلاع وغیرہ حاصل کرنے کے لئے اِس بارے میں فی الحال سارا پتر بیوھار نیچے کے پتے پر کریں . کرپا کرکے پتر پر "شدھ بیوھار سمبندھی" ایسا صاف لکھیں .

پتہ —

منتری، سرو سیوا سمتی

معرفت—شری شری کرشن داس جی جاجو

بجاج واڑی، وردھا (ایم-پی)

سویرے مزیدار کلیوا کرکے بڑھیا بھوجن کے انتظار میں بیٹھے ہوئے ہم جیسے لوگوں کے لئے ایشور کے بارے میں بات چیت کرنا آسان ھے، لیکن جنھیں دونوں جون بھوکے رھنا پڑتا ھے اُن سے میں ایشور کی چرچا کیسے کروں؟ اُن کے سامنے تو پرماتما کیول دال، روٹی کے ھی روپ میں پرکٹ ھوسکتے ھیں .

—مہاتما گاندھی

नाप तोल में कपट नहीं करूँगा. (घ) कभी आगे अचानक कारनों से भाव बढ़ जायगा, इस इरादे से मैं चीज़ें बेचने से इनकार नहीं करूँगा. पर अगर कोई बेजा लाभ उठाने के ख़याल से मेरा माल ख़रीदना चाहेंगे तो मैं उन्हें माल नहीं दूँगा. इस हालत में मेरे ज़रिये ख़रीदारों को फ़ुटकर बिकरी से और एक बँधी मिक़दार में ही माल बेचने का अधिकार मैं रक्खूँगा. (च) मैं अपने माल की बिकरी-क़ीमत सही सही खुले आम बताऊँगा. (छ) मैं अपने माल में किसी तरह की मिलावट नहीं करूँगा और जानकारी होने पर ऐसी चीज़ अपनी दुकान पर नहीं रक्खूँगा.

"(२) ख़रीदार के नाते (क) जिस चीज़ की बाज़ार में कमी हो, उसे ज़रूरत से ज़्यादा नहीं ख़रीदूँगा और बनावटी कमी पैदा करने वाले कामों में मदद नहीं दूँगा. (ख) जिन चीज़ों के भाव कन्ट्रोल किये गए हों, उन्हें कन्ट्रोल भाव से ही ख़रीदने की मेरी कोशिश रहेगी. पर वह ऐसे न मिलें तो मैं, जहाँ तक हो सकेगा, उनके बिना ही निभाने की कोशिश करूँगा. (ग) सुभीते, आराम या समाजी कामों के लिये क़ानून को टाल कर या चुपचाप चीज़ें नहीं ख़रीदूँगा. (घ) मैं किसी को रिश्वत नहीं दूँगा और दूसरों के बजाय ख़ुद के लिये बेजा फ़ायदा उठाने के इरादे से न किसी से सिफ़ारिश-पत्र ही लूँगा.

"(३) सरकारी कर्मचारी या सार्वजनिक काजकर्ता के नाते मैं किसी से रिश्वत या बख़्शिश नहीं लूँगा और न अधिकारी या बड़े आदमियों के असर में आकर अपना फ़र्ज़ अदा करने में कोई कमी करूँगा.

"मैं ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को शुद्ध ब्योहारी बनाने की कोशिश करूँगा.

"अपनी इस सच्ची ख़ाहिश के निशान के तौर पर बीमारी या दूसरे न टलने वाले कारनों की हालत को छोड़कर, मैं रोज़ाना अपने

ناپ تول میں کپٹ نہیں کرونگا . (د) کبھی آگے اچانک کارنوں سے بھاؤ بڑھ جائے گا' اِس اِرادے سے میں چیزیں بیچنے سے اِنکار نہیں کرونگا . پر اگر کوئی بیجا لابھ اُٹھانے کے خیال سے میرا مال خریدنا چاهیں گے تو میں اُنہیں مال نہیں دونگا . اِس حالت میں میرے ذریعے خریداروں کو پھٹکر بکری سے اور ایک بندھی مقدار میں هی مال بیچنے کا ادھیکار میں رکھوں گا . (۶) میں اپنے مال کی بکری-قیمت صحیح صحیح کھلے عام بتاؤں گا . (و) میں اپنے مال میں کسی طرح کی ملاوٹ نہیں کروں گا اور جان کاری هونے پر ایسی چیز اپنی دوکان پر نہیں رکھونگا .

" (۲) خریدار کے ناتے (الف) جس چیز کی بازار میں کمی هو' اُسے ضرورت سے زیادہ نہیں خریدوں گا اور بناوٹی کمی پیدا کرنے والے کاموں میں مدد نہیں دوں گا . (ب) جن چیزوں کے بھاؤ کنٹرول کئے گئے هوں' اُنہیں کنٹرول بھاو سے هی خریدنے کی میری کوشش رہے گی . پر وہ ایسے نہ ملیں تو میں جہاں تک هوسکے گا اُن کے بنا هی نبھانے کی کوشش کروں گا . (ج) سبھوتے' آرام یا سماجی کاموں کے لئے قانون کو ٹال کر یا چپ چاپ چیزیں نہیں خریدوں گا . (د) میں کسی کو رشوت نہیں دونگا اور دوسروں کے بجائے خود کے لئے بیجا فائدہ اُٹھانے کے ارادے سے نہ کسی سے سفارش پتر هی لوں گا .

" (۳ سرکاری کرمچاری یا سارووجنک کاج کرتا کے ناتے میں کسی سے رشوت یا بخشش نہیں لوں گا اور نہ ادھیکاری یا بڑے آدمیوں کے اثر میں آکر اپنا فرض ادا کرنے میں کوئی کمی کرونگا .

"میں زیادہ سے زیادہ لوگوں کو شدھ بیوهاری بنانے کی کوشش کروں گا .

"اپنی اِس سچی خواهش کے نشان کے طور پر بیماری یا دوسرے نہ ٹلنے والے کارنوں کی حالت کو چھوڑ کر میں روزانہ اپنے

या जीवन की दूसरी बातों में मुनाफ़ाखोरी, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, काला बाजार, संग्रहखोरी (छिपा चोरी) जैसे काम नहीं करना चाहता. लेकिन कई दफ़ा ऐसे पेंच में पड़ जाता हूँ कि ऐसे काम नहीं टाल सकता. मैं समाज के सब वर्गों में से ऐसी इच्छा रखने वाले आदमियों का साथ और सहयोग चाहता हूँ. अगर ऐसे बेचने वाले, गाहक, सरकारी और दूसरे कर्मचारी वग़ैरा मिलें तो उनका जिन जिन चीज़ों से सम्बन्ध आता है, उन्हें लेने देने में मैं उनसे ही सम्बन्ध रखूँगा."

ऐसे दस शुद्ध व्योहारी मिलने पर अगर नई संस्था बनाने की जरूरत हो तो उनका एक मुक़ामी मंडल बनाना चाहिये. उस मंडल को अधिकार रहेगा कि वह अपने लिये क़ायदे बनावे और ऐसी नीत तय करे कि जिससे मंडल के मेम्बरों की आपस की मदद से उनकी अड़चने दूर हो सकें, समाज का नैतिक स्तर (इख़लाक़ी तह) ऊँचा उठे, बेईमानी और बुराइयों का मुक़ाबला हो सके और एक दूसरे को मदद पहुंचा कर व्योहार शुद्धि हो सके.

मंडल बनने पर, मंडल के हर एक मेम्बर को अपनी अपनी हालत के मुताबिक़ एक प्रतिज्ञा (अहद) लेनी चाहिये, और उसके अनुसार चलने में पक्का इरादा होना चाहिये. मंडल के मेम्बर सोच विचार कर अपने मंडल के लिये मुनासिब प्रतिज्ञापत्र (अहदनामा) का मसौदा बनावेंगे.

मैं यहाँ ऐसे एक प्रतिज्ञापत्र का नमूना देता हूँ. :

"मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि—(१) व्यापारी के नाते मैं (क) माल की संग्रहखोरी नहीं करूँगा, जिससे बाज़ार में उसकी बनावटी कमी पैदा हो जाय. (ख) बाजार में बनावटी माँग बढ़ने के कारन बेजा मुनाफ़ा करने के लिये अपने माल के भाव नहीं बढ़ाऊँगा. (ग) किसी की अजानकारी या जरूरत का लाभ उठाने के लिये ज्यादा क़ीमत नहीं मागूँगा या

یا چیزوں کی دوسری باتوں میں منافع خوری' رشوت خوری' بھرشٹاچار' کالا بازار' سنگرہ خوری (چھپا چوری) جیسے کام نہیں کرنا چاہتا لیکن کئی دفعہ ایسے پیچ میں پڑ جاتا ہوں کہ ایسے کام نہیں ٹال سکتا . میں سماج کے سب ورگوں میں سے ایسی اِچھا رکھنے والے آدمیوں کا ساتھ اور سہیوگ چاہتا ہوں . اگر ایسے بیچنے والے گاہک' سرکاری اور دوسرے کرمچاری وغیرہ ملے تو اُن کا جن جن چیزوں سے سمبندھ آتا ہے' اُنھیں لینے دینے میں میں اُن سے ہی سمبندھ رکھوں گا ."

ایسے دس شدھ بیوہاری ملنے پر اگر نئی سنستھا بنانے کی ضرورت ہو تو اُن کا ایک مقامی منڈل بنانا چاہیئے . اُس منڈل کو ادھیکار رہے گا کہ وہ اپنے لئے قاعدے بناوے اور ایسی نیت طے کرے کہ جس سے منڈل کے ممبروں کی آپس کی مدد سے اُنکی اڑچنیں دور ہو سکیں' سماج کا نیتک ستر (اخلاقی تہہ) اُونچا اُٹھے' بےایمانی اور برائیوں کا مقابلہ ہوسکے اور ایک دوسرے کو مدد پہنچاکر بیوہار شدھی ہوسکے .

منڈل بننے پر' منڈل کے ہر ایک ممبر کو اپنی اپنی حالت کے مطابق ایک پرتگیا (عہد) لینی چاہئے اور اُسکے انوسار چلنے میں پکا ارادہ ہونا چاہئے . منڈل کے ممبر سوچ بچار کر اپنے منڈل کیلئے مناسب پرتگیا پتر (عہد نامہ) کا مسودہ بنا وینگے .

میں یہاں ایسے ایک پرتگیا پتر کا نمونہ دیتا ہوں :

"میں پرتگیا کرتا ہوں کہ—(۱) بیوپاری کے ناتے میں (الف) مال کی سنگرہ خوری نہیں کروں گا' جس سے بازار میں اُسکی بناوٹی کمی پیدا ہوجائے . (ب) بازار میں بناوٹی مانگ بڑھنے کے کارن بیجا منافع کرنے کیلئے اپنے مال کے بھاؤ نہیں بڑھاؤں گا . (ج) کسی کی اجانکاری یا ضرورت کا لابھ اُٹھانے کیلئے زیادہ قیمت نہیں مانگوں گا' یا

कुछ समय से बम्बई में श्री केदारनाथ जी शुद्ध ब्योहार आन्दोलन चला रहे हैं. मेरा यह सुझाव वैसे ही काम को आगे बढ़ाने का है. यह काम ज़्यादा जोश से किया जाना चाहिये, पर साथ ही बड़ी सावधानी से, ताकि कोई अपने स्वार्थ के लिये उसका बेजा इस्तेमाल न कर सके.

अब सवाल यह है कि यह काम शुरू कैसे किया जाय. यह तो साफ़ ही है कि वैसा आन्दोलन मुक़ामी प्रेरना से और मुक़ामी लोगों के बल पर चलाया जाना चाहिये. कोई एक आदमी या संस्था, जिसका मुक़ामी लोगों से सम्बन्ध है और जिसे यह काम करने की बेहद इच्छा है, वह बाहर के किसी नेता की राह न देखते हुए अपने यहाँ जल्दी से जल्दी काम शुरू कर दे. उनको इस काम में ऐसे ही लोगों को दाख़िल होने को कहना चाहिये और शामिल करना चाहिये. जिनपर उनका पूरा विश्वास हो कि वह अपने वचन का पालन करेंगे. अगर कोई बनी बनाई मुनासिब मुक़ामी संस्था न हो, तो इस योजना में शामिल होने वाले करीब १० आदमी मिलने पर नई संस्था बनानी पड़ेगी. यह संस्था बनाने के पहले कौन भाई बहन इस काम में शामिल होना चाहते हैं, इसकी जानकारी पाने के लिये शुरू में नीचे लिखी जैसी एक अरज़ी दे दें. जहाँ कोई मुक़ामी आदमी या संस्था यह काम उठाने को तैयार न हो, वहाँ भी जो ब्योहार शुद्धि में शामिल होना चाहते हैं, वह इसके आख़ीर में लिखे पते पर अपनी मंशा इसी तरह लिख भेजें. अगर यह पाया जाय कि किसी इलाक़े में इस काम में शामिल होने लायक़ कुछ आदमी मिल सकते हैं, तो उनको एक दूसरे की जानकारी नीचे लिखे दफ़्तर से दी जायगी.

शुरू की अरज़ी

"मैं शुद्ध ब्योहारी होना चाहता हूँ. मैं अपनी ख़रीद-बिकरी में

کچھ سمے سے بمبئی میں شری کیدار ناتھ جی شدھ بیوھار آندولن چلا رہے ھیں . میرا یہ سجھاؤ ویسے ھی کام کو آگے بڑھانے کا ھے . یہ کام زیادہ جوش سے کیا جانا چاھئے، پر ساتھ ھی بڑی ساودھانی سے، تاکہ کوئی اپنے سوارتھ کے لئے اُس کا بیجا استعمال نہ کر سکے .

اب سوال یہ ھے کہ یہ کام شروع کیسے کیا جائے . یہ تو صاف ھی ھے کہ ویسا آندولن مقامی پریرنا سے اور مقامی لوگوں کے بل پر چلایا جانا چاھئے . کوئی ایک آدمی یا سنستھا، جس کا مقامی لوگوں سے سمبندھ ھے اور جسے یہ کام کرنے کی بے حد اچھا ھے، وہ باھر کے کسی نیتا کی راہ نہ دیکھتے ھوئے اپنے یہاں جلدی سے جلدی کام شروع کر دے . اُنکو اِس کام میں ایسے ھی لوگوں کو داخل ھونے کو کہنا چاھئے اور شامل کرنا چاھئے جن پر اُن کا پورا وشواس ھو کہ وہ اپنے وچن کا پالن کرینگے . اگر کوئی بنی بنائی مناسب مقامی سنستھا نہ ھو تو اِس یوجنا میں شامل ھونے والے قریب دس آدمی ملنے پر نئی سنستھا بنانی پڑیگی . یہ سنستھا بنانے کے پہلے کون بھائی بہن اِس کام میں شامل ھونا چاھتے ھیں، اِسکی جانکاری پانے کے لئے شروع میں نیچے لکھی جیسی ایک عرضی دیدیں . جہاں کوئی مقامی آدمی یا سنستھا یہ کام اُٹھانے کو تیار نہ ھو وہاں بھی جو بیوھار شدھی میں شامل ھونا چاھتے ھیں وہ اسکے آخر میں لکھے پتے پر اپنی منشا اِسی طرح لکھ بھیجیں . اگر یہ پایا جائے کہ کسی علاقے میں اِس کام میں شامل ھونے لائق کچھ آدمی مل سکتے ھیں تو اُنکو ایک دوسرے کی جان کاری نیچے لکھے دفتر سے دی جائے گی .

شروع کی عرضی

"میں شدھ بیوھاری ھونا چاھتا ھوں . میں اپنی خرید بکری میں

भ्रष्टाचार का मुक़ाबला करने के साधन सोचने चाहियें. उनको यह जानना चाहिये कि सरकार और समाज के नियम और रीत सुधारने के लिये उन पर दबाव लाने के लिये सबसे पहले यह ज़रूरी है कि वह व्योहार शुद्धि में और ईमानदारी में अपने ख़ुद की ऊँचे दरजे की मिसाल पेश करके अपनी इज़्ज़त जमावें. किसी भी अधिकारी या समाज के लिये भले और ईमानदार लोगों की माँग को टालना मुमकिन नहीं होता, ख़ासकर जब कि वह मिलकर काम करते हैं.

हवा में कुछ न कुछ सत्याग्रह करने की बात सुनाई देती है. सत्याग्रह अपने सच्चे मानी में सत्य और अहिंसा के व्योहार का लगातार अभ्यास ही है. जान माल को नुक़सान न पहुंचाते हुए सिर्फ़ जेल जाने की तैयारी रखने से ही क़ानून तोड़ने का कोई आन्दोलन सत्याग्रह नहीं बनता. रोकथाम हथियार के रूप में बेईमानी और भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ सत्याग्रह वह ही कर सकते हैं जो ख़ुद अपने साथियों सहित शुद्ध व्योहार में लगे हैं और पक्की प्रतिज्ञा किये हुए हैं. इसलिये सत्याग्रह की किसी तरह की कल्पना करने के पहले शुद्ध व्योहार का आन्दोलन होना चाहिये.

आज की गिरी हुई हालत और भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा कारन जीवन मे पैसे को दी हुई बेहद अहमियत है. अगर हम ईमानदारी से जीने का पक्का इरादा करलें, तो ऐसे उपाय सूझ जायँगे जिनसे हमारी मामूली ख़रीद-बिक्री मे पैसे का बहुत सा इस्तेमाल हम ख़ारिज कर सकेंगे या कम कर सकेंगे. जैसे कि ख़ास ख़ास मुनासिब चीज़ों के ज़रिये से या मेहनत के साधनों से चीज़ों का अदल बदल करना. इस तरह पैसे को बेहद अहमियत देने के कारन जो काला बाज़ार, मुनाफ़ाख़ोरी, भ्रष्टाचार वग़ैरा रुकावटें खड़ी होती हैं उन्हें हम पार कर सकेंगे.

بھرشٹا چار کا مقابلہ کرنے کے سادھن سوچنے چاهئیں . اُن کو یہ جاننا چاهیئے کہ سرکار اور سماج کے نیم اور ریت سدھارنے کے لئے اُن پر دباؤ لانے کے لئے سب سے پہلے یہ ضروری ہے کہ وہ بیوهار شدھی میں اور ایمانداری میں اپنے خود کی اونچے درجے کی مثال پیش کر کے اپنی عزت جماویں . کسی بھی ادھیکاری یا سماج کے لئے بھلے اور ایماندار لوگوں کی مانگ کو ٹالنا ممکن نہیں ہوتا' خاص کر جبکہ وہ مل کر کام کرتے هیں .

هوا میں کچھ نہ کچھ ستیاگرہ کرنے کی بات سنائی دیتی هے . ستیاگرہ اپنے سچے معنی میں ستیہ اور اهنسا کے بیوهار کا لگاتار ابھیاس هی هے . جان مال کو نقصان نہ پہنچاتے هوئے صرف جیل جانے کی تیاری رکھنے سے هی قانون توڑنے کا کوئی آندولن ستیاگرہ نہیں بنتا . روک تھامی هتھیار کے روپ میں بےایمانی اور بھرشٹا-چار کے خلاف ستیاگرہ وہ هی کر سکتے هیں' جو خود اپنے ساتھیوں سمیت شدھ بیوهار میں لگے هیں اور پکی پرتگیا کئے هوئے هیں . اس لئے ستیاگرہ کی کسی طرح کی کلپنا کرنے کے پہلے شدھ بیوهار کا آندولن هونا چاهئے .

آج کی گری هوئی حالت اور بھرشٹاچار کا سب سے بڑا کارن جیون میں پیسے کو دی هوئی بیحد اهمیت هے . اگر هم ایمانداری سے جینے کا پکا ارادہ کر لیں تو ایسے اُپائے سوجھ جائینگے جن سے هماری معمولی خرید بکری میں پیسے کا بہت سا استعمال هم خارج کر سکینگے یا کم کر سکینگے . جیسے کہ خاص خاص مناسب چیزوں کے ذریعے سے یا محنت سے سادھنوں کے چیزوں کا ادل بدل کرنا . جس طرح پیسے کو بیحد اهمیت دینے کے کارن جو کالا بازار' منافع خوری' بھرشٹاچار وغیرہ رکاوٹیں کھڑی هوتی هیں' اُنہیں هم پار کر سکینگے .

फँसे हुए पाते हैं. अगर वह अपनी खेती की फ़सल और माल वग़ैरा न छिपाएं, बिना कुछ बख्शिश पाए कोई काम न करने वाले रेलवे और दूसरे सरकारी अधिकारियों को (जिनका फ़र्ज़ है कि अपना अपना काम बराबर करें) रिश्वत न दें, कन्ट्रोल दर से माल बेचने के लिये और ख़रीदने के लिये अगर वह डटे रहें और बँटवारे के अपने हिस्से से ज़्यादा लेने की कोशिश न करें और अपने नीचे या ऊपर के कर्मचारियों के ज़रिये की हुई बेईमानी या गड़बड़ी में साथ न दें, तो वह पाते हैं कि उनका निभना नामुमकिन है. ऐसे कई लोग हैं जिन्होंने पिछले कुछ बरसों में एक पीछे एक अपने कई धन्दे इसलिये छोड़ दिये कि कन्ट्रोल नीत के कारन उन्हें ईमानदारी और मुनाफ़े से चलाना नामुमकिन होगया. मुनाफ़े से मतलब यहाँ इतना ही है कि जो उनको गुज़र के लिये वाजिब बचत दे सके.

वह ईमानदार रहना चाहते हैं, लेकिन इसकी ज़रूरत महसूस करते हैं कि उनकी कोशिश में उनको कोई मदद दे और किसी के सहयोग का बल मिले ताकि एक दूसरे की मदद से काम निभ सके.

इसलिये हमें ऐसा कोई उपाय करना चाहिये जिससे ऐसे लोग नज़दीक आएँ और एक दूसरे को जानें. उसके बाद वह आपस में व्योहार का सम्बन्ध क़ायम कर सकेंगे. यानी वह आपस में माल बेचेंगे और ख़रीदेंगे और अधिकारियों के ज़रिये होने वाली बुराई को मिटाने में एक दूसरे की मदद करेंगे ताकि भ्रश्टाचार और टालमटोल को स्थान न मिले. कन्ट्रोल वाली चीज़ों के बारे में उन्हें पहले तो सरकारी कन्ट्रोल के भावों के अनुसार ही लेन देन करने की भरसक कोशिश करनी चाहिये. लेकिन जब वह देखें कि ऐसा करना नामुमकिन है, तो उनको इकट्ठे मिल कर विचार करके इसके कारनों की जाँच करनी चाहिये और दोशों को सुधारने के और

پھنسے ہوئے پاتے هیں . اگر وہ اپنی کھیتی کی فصل اور مال وغیرہ نہ چھپائیں، بنا کچھ بخشش پائے کوئی کام نہ کرنے والے ریلوے اور دوسرے سرکاری ادھیکاریوں کو (جنکا فرض ھے کہ اپنا اپنا کام برابر کریں) رشوت نہ دیں، کنٹرول در سے مال بیچنے کے لئے اور خریدنے کے لئے اگر وہ ڈٹے رهیں اور بٹوارے کے اپنے حصے سے زیادہ لینے کی کوشش نہ کریں اور اپنے نیچے یا اوپر کے کرمچاریوں کے ذریعے کی ہوئی بے ایمانی یا گڑبڑی میں ساتھ نہ دیں، تو وہ پاتے هیں کہ اُن کا نبھنا ناممکن ھے . ایسے کئی لوگ هیں جنھوں نے پچھلے کچھ برسوں میں ایک پیچھے ایک اپنے کئی دھندے اِس لئے چھوڑ دئے کہ کنٹرول نیتی کے کارن اُنھیں ایمانداری اور منافع سے چلانا ناممکن ہو گیا منافع سے مطلب یہاں اتنا هی ھے کہ جو اُنکو گزر کے لئے واجب بچت دے سکے .

وہ ایماندار رهنا چاهتے هیں، لیکن اس کی ضرورت محسوس کرتے هیں کہ اُن کی کوشش میں اُن کو کوئی مدد دے اور کسی کے سہیوگ کا بل ملے تاکہ ایک دوسرے کی مدد سے کام نبھ سکے .

اِس لئے همیں ایسا کوئی اُپائے کرنا چاهئے جس سے ایسے لوگ نزدیک آئیں اور ایک دوسرے کو جانیں . اُسکے بعد وہ آپس میں بیوهار کا سمبندھ قائم کر سکیں گے . یعنی وہ آپس میں مال بیچیں گے اور خریدیں گے اور ادھیکاریوں کے ذریعے ہونے والی برائی کو مٹانے میں ایک دوسرے کی مدد کرینگے تاکہ بھرشٹاچار اور ٹال مٹول کو استھان نہ ملے . کنٹرول والی چیزوں کے بارے میں اُنہیں پہلے تو سرکاری کنٹرول کے بھاؤں کے انوسار هی لین دین کرنے کی بھرسک کوشش کرنی چاهئے . لیکن جب وہ دیکھیں کہ ایسا کرنا ناممکن ھے، تو اُنکو اکٹھے مل کر وچار کر کے اِسکے کارنوں کی جانچ کرنی چاهئے اور دوشوں کو سدھارنے کے اور

शुद्ध व्योहार आन्दोलन *

(भाई किशोर लाल मशरूवाला)

जीवन के हर क्षेत्र में और सार्वजनिक संस्थाओं में भी बेईमानी घुस गई है. मुनाफ़ाख़ोरी, कालाबाज़ार, मिलावट, भ्रष्टाचार, सार्वजनिक और ट्रस्ट के पैसों की गड़बड़ी (ग़बन), जालसाज़ी वग़ैरा ख़ूब बढ़ गए हैं. मानना चाहिये कि ग़रीब लोगों को या आम जनता को बेहद तकलीफ़ न हो, इस इरादे से सरकारों ने हमेशा काम में आने वाली कुछ ख़ास चीज़ों के दाम कन्ट्रोल का और बँधी मिक़दार में बँटवारे का तरीक़ा चालू किया है; लेकिन आम तौर से जनता का मत यह है कि कन्ट्रोल की विचारधारा और उसे लागू करने और अमल में लाने के ढंग का आर्थिक और बदनियती फैलने का नतीजा उससे कम बुरा नहीं हुआ है, जितना कि कन्ट्रोल और बँधी मिक़दार से बँटवारा न रहने से होता. हम इतने नीचे गिर गए हैं जितना इसके पहले कभी न गिरे थे.

फिर भी देस में जहाँ तहाँ ईमानदार लोग पाए जाते हैं और वह अपना जीवन ईमानदारी से बिताना चाहते हैं, पर आज की आर्थिक व्यवस्था में और हालत में ऐसा करना उनके लिये बहुत मुशकिल हो जाती है. ऐसे लोग समाज के हर वर्ग में—किसानों, माल पैदा करने वालों, बेचने वालों, माल का उपयोग करने वालों, सरकारी नौकरों वग़ैरा सब में हैं. वह अपने को एक जंजाल में

* भाषा कहीं कहीं आसान करदी गई है—एडीटर.

شدھ بیوھار آندولن *

(بھائی کشور لال مشرو والا)

جیون کے ہر چھیتر میں اور سارو جنک سنستھاؤں میں بھی بےایمانی گھس گئی ہے ۔ منافع خوری' کالا بازار' ملاوٹ' بھرشٹاچار' سارو جنک اور ٹرسٹ کے پیسوں کی گڑبڑی (غبن) جعل سازی وغیرہ خوب بڑھ گئے ہیں ۔ ماننا چاہئے کہ غریب لوگوں کو یا عام جنتا کو بیحد تکلیف نہ ہو' اس ارادے سے سرکاروں نے ہمیشہ کام میں آنے والی کچھ خاص چیزوں کے دام کنٹرول کا اور بندھی مقدار میں بٹوارے کا طریقہ چالو کیا ہے؛ لیکن عام طور سے جنتا کا مت یہ ہے کہ کنٹرول کی وچار دھارا اور اسے لاگو کرنے اور عمل میں لانے کے ڈھنگ کا آرتھک اور بدنیتی پھیلنے کا نتیجہ اس سے کم برا نہیں ہوا ہے' جتنا کہ کنٹرول اور بندھی مقدار سے بٹوارہ نہ رہنے سے ہوتا ۔ ہم اتنے نیچے گر گئے ہیں جتنا اس کے پہلے کبھی نہ گرے تھے ۔

پھر بھی دیس میں جہاں تہاں ایماندار لوگ پائے جاتے ہیں اور وہ اپنا جیون ایمانداری سے بتانا چاہتے ہیں' پر آج کی آرتھک ویوستھا میں اور حالت میں ایسا کرنا انکے لئے بہت مشکل ہو جاتا ہے ۔ ایسے لوگ سماج کے ہر ورگ میں—کسانوں' مال پیدا کرنے والوں' بیچنے والوں' مال کا اُپیوگ کرنے والوں' سرکاری نوکروں وغیرہ سب میں ہیں ۔ وہ اپنے کو ایک جنجال میں

* بھاشا کہیں کہیں آسان کر دی گئی ہے — اڈیٹر

है कि यह स्कूल पूरबी पंजाब में बुनियादी तालीम के तरीक़े को फ़ैलाने का एक अच्छा केन्द्र बन जायगा.

मई १९४९ से अब तक जो खादी काम हुआ है वह बहुत उत्साह बढ़ाने वाला है. कुल ६० बहनें बाक़ायदा रोज चर्खा चलाती हैं. कताई की मजदूरी खादी और नक़द के रूप में दी जाती है. मिशन की तरफ़ से कत्तिनों को चरखे दिये गए हैं. अब तक के कामों का ब्योरा नीचे दिया जाता है—

रूई दी गई—१० मन, ९ सेर

सूत ख़रीदा गया—१२ मन, १९ सेर ५$\frac{३}{४}$ छटाँक

खादी बनवाई गई—१८३ गज

गांधी राष्ट्री स्कूल के लड़कों ने सूत काता—१० सेर ७$\frac{३}{१०}$ छटाँक

ہے کہ یہ اسکول پوربی پنجاب میں بنیادی تعلیم کے طریقے کو پھیلانے کا ایک اچھا کیندر بن جائیگا .

مئی ۱۹۴۹ سے اب تک جو کھادی کام ہوا ہے وہ بہت اُتساہ بڑھانے والا ہے . کل ۶۰ بہنیں باقائدہ روز چرخا چلاتی ہیں . کتائی کی مزدوری کھادی اور نقد کے روپ میں دی جاتی ہے . مشن کی طرف سے کتنوں کو چرخے دئے گئے ہیں . ابتک کے کاموں کا بیورا نیچے دیا جاتا ہے .

روئی دی گئی—۱۰ من، ۹ سیر

سوت خریدا گیا—۱۲ من، ۱۹ سیر ۵ $\frac{۳}{۴}$ چھٹانک

کھادی بنوائی گئی—۱۸۳ گز

گاندھی راشٹری اسکول کے لڑکوں نے سوت کاتا—۱۰ سیر ۷ $\frac{۳}{۱۰}$ چھٹانک

मुसलमानों की हालत अपनी आँखों देखी, कानों सुनी और नायब तहसीलदार 'भारत रतन' को मुकर्रर किया जिन्होंने बड़ी ईमानदारी और मेहनत से काम किया. अम्बाला जिले के और जगाधरी के सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियो ने बड़ी मेहनत के साथ उजड़े हुए और बेदखल मुसलमानों को उनके घर, जमीन और बाग़ बगीचों को दिलवाया. सद्भावना मिशन के कार्यकर्ताओं ने सरकारी कर्मचारियों की मदद से जगाधरी तहसील के गाँवों में मुसलमानों के लिये इतना अच्छा वातावरन पैदा कर दिया कि अब हिन्दू मुसलमान और सिक्ख पिछली कटुता को भुला कर प्रेम के साथ रहने लगे. इन गाँवों में जिला गुजरात और गुजरानवाला और जिला सरगोधा के रहने वाले हिन्दू और मुसलमान शरनार्थियों को जमीन और मकान दिये गए हैं. मुसलमानों की हर एक मसजिद, ईदगाह और कब्रिस्तान और मजार वापस दे दिये गए हैं और वह बेखटके मसजिदों में अज़ान देते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं. वह अपनी खेती बाड़ी कर रहे हैं. उन्हें पंजाब सरकार बैल, बीज और घर के लिये तक़ावी दे रही है. लगभग १२५ उजड़े मुसलमानों को फिर से बसाया गया है.

तालीम और खादी-काम

गाँव में जो तीन बुनियादी स्कूल और खादी केन्द्र चालू किये गए थे वह अब बंद हो चुके हैं, पर बुड़िया के गाँधी राष्ट्री स्कूल और खादी-केन्द्र अभी तक चालू हैं. इस स्कूल में २८ लड़कियाँ और ४८ लड़के हैं. बुनियादी तरीक़े के अनुसार वह तालीम पा रहे हैं. इन बच्चों को हिन्दी भाषा, प्रार्थना, सफ़ाई और सूत कातने और हिसाब, भूगोल और समाज सेवा की तालीम मुफ़्त दी जाती है. बच्चों को जलपान भी दिया जाता है. हर एक त्योहार को राष्ट्री ढँग पर मनाया जाता है. स्कूल के लिये जमीन तलाश की जा रही है. आशा

مسلمانوں کی حالت اپنی انکھوں دیکھی' کانوں سنی اور نائب تحصیلدار 'بھارت رتن' کو مقرر کیا جنھوں نے بڑی ایمانداری اور محنت سے کام کیا ۔ امبالہ ضلع کے اور جگا دھری کے سرکاری ادھکاریوں اور کرمچاریوں نے بڑی محنت کے ساتھ اجڑے ہوئے اور بے دخل مسلمانوں کو انکے گھر' زمین اور باغ بغیچوں کو دلوایا ۔ سدبھاونا مشن کے کاج کرتاؤں نے سرکاری کرمچاریوں کی مدد سے جگا دھری تحصیل کے گاوں میں مسلمانوں کیلئے اتنا اچھا واتاورن پیدا کر دیا کہ اب ھندو مسلمان اور سکھ پچھلی کٹوتا کو بھلا کر پریم کے ساتھ رھنے لگے ۔ ان گاؤں میں ضلع گجرات اور گجرانوالہ اور ضلع سرگودھا کے رھنے والے ھندو اور مسلمان شرنارتھیوں کو زمین اور مکان دیئے گئے ھیں. مسلمانوں کی ھر ایک مسجد' عیدگاہ اور قبرستان اور مزار واپس دے دیئے گئے ھیں اور وہ بے کھٹکے مسجدوں میں اذان دیتے ھیں اور نماز پڑھتے ھیں. وے اپنی کھیتی باڑی کر رھے ھیں ۔ انھیں پنجاب سرکار بیل' بیج اور گھر کیلئے تقاوی دے رھی ھے ۔ لگ بھگ ۱۲٥ اجڑے مسلمانوں کو پھر سے بسایا گیا ھے ۔

تعلیم اور کھادی-کام

گاوں میں جو تین بنیادی اسکول اور کھادی کیندر چالو کئے گئے تھے وہ اب بند ھو چکے ھیں' پر بڑیا کے گاندھی راشٹری اسکول اور کھادی کیندر ابھی تک چالو ھیں ۔ اس اسکول میں ۲۸ لڑکیاں اور ۴۸ لڑکے ھیں ۔ بنیادی طریقے کے انوسار وہ تعلیم پا رھے ھیں ۔ ان بچوں کو ھندی بھاشا' پرارتھنا' صفائی اور سوت کاتنے اور حساب بھوگول اور سماج سیوا کی تعلیم مفت دی جاتی ھے ۔ بچوں کو جل پان بھی دیا جاتا ھے ۔ ھر ایک تیوھار کو راشٹری ڈھنگ پر منایا جاتا ھے ۔ اسکول کے لئے زمین تلاش کی جا رھی ھے ۔ آشا

को उनके गाँवों में पहुँचाया गया और वह इधर उधर के खंडहरों में और झोपड़ियों में बड़ी मुसीबत के साथ अपने दिन काटने लगे.

रचनात्मक काम

पं० सुन्दरलाल की प्रेरना से मैं भी बुड़िया के सद्‌भावना मिशन में शामिल हुआ और समय समय पर मिशन के काजकर्ताओं के साथ गाँवों में दौरा करके नजदीक से और असली रूप में हालत को देखा. सन १९४९ के शुरू में गाँव-सेवा की योजना माननीय पं० जवाहरलाल नेहरू के सामने रक्खी गई. उस योजना के मुताबिक़ गाँवों में खादीकाम. सफाई और बच्चों को बुनियादी तालीम देने का काम रक्खा गया था. नेहरू जी ने बड़े प्रेम के साथ इन कामों के लिये खास सहायता प्रधान-मंत्री-कोश से दिलवाई. आजमगढ़, जिला उत्तर प्रदेश के सात ट्रेनिंग पाए हुए नौजवान काजकर्ताओं को सद्‌भावना मिशन में शामिल करके गाँवों में रचनात्मक काम शुरू किया गया. ये नौजवान खादी काजकर्ता की ट्रेनिंग ले चुके थे और सभी होनहार और साहसी थे. उन्होंने १९४९ की गर्मियों में चार राष्ट्री स्कूलों को अलग अलग केन्द्रों में चालू किया, जिससे शरनार्थियों के साथ उनका गहरा नाता हो गया. कताई का काम भी चालू किया गया. कुल भारत चरखा संघ की पंजाब शाखा ने भी खादी काम में सहायता दी.

फिर पुराने सुखी दिन

श्रीमती मृदुला बहन की देख रेख में धीरे धीरे बुड़िया का सेवा-काम अपना असर जमाने लगा. १९५० के अप्रैल में नेहरू-लियाक़त-अली समझौता हुआ, जिसका असर हिन्दू मुसलमानों और प्रादेशिक सरकारों पर पड़ा. पूरबी पंजाब में उस समय एक मजबूत मंत्री मंडल माननीय डा० गोपीचंद भार्गव ने बना लिया था. उनकी प्रेरना से कमिश्नर महाशय ने तहसील का दौरा किया और उखड़े

کو اُنکے گاؤں میں پہنچایا گیا اور وہ اِدھر اُدھر کے کھنڈھروں میں اور جھونپڑیوں میں بڑی مصیبت کے ساتھ اپنے دن کاٹنے لگے۔

رچناتمک کام

پنڈت سندر لال کی پریرنا سے میں بھی بڑیا کے سدبھاونا مشن میں شامل ہوا اور سمے سمے پر مشن کے کاج کرتاؤں کے ساتھ گاؤں میں دورہ کرکے نزدیک سے اور اصلی روپ میں حالت کو دیکھا۔ سن ۱۹۴۹ کے شروع میں گاؤں سیوا کی یوجنا مانیہ پنڈت جواہر لال نہرو کے سامنے رکھی گئی۔ اس یوجنا کے مطابق گاؤں میں کھادی کام، صفائی اور بچوں کو بنیادی تعلیم دینے کا کام رکھا گیا تھا۔ نہرو جی نے بڑے پریم کے ساتھ اِن کاموں کیلئے خاص سہایتا پردھان منتری کوش سے دلوائی۔ اعظم گڈھ، ضلع اُتر پردیش کے سات ٹریننگ پائے ہوئے نوجوان کاج کرتاؤں کو سدبھاونا مشن میں شامل کر کے گاؤں میں رچناتمک کام شروع کیا گیا۔ یہ نوجوان کھادی کاج کرتا کی ٹریننگ لے چکے تھے اور سبھی ہونہار اور ساہسی تھے۔ اُنہوں نے ۱۹۴۹ کی گرمیوں میں چار راشٹری اسکولوں کو الگ الگ کیندروں میں چالو کیا، جس سے شرنارتھیوں کے ساتھ اُن کا گہرا ناتہ ہوگیا۔ کتائی کا کام بھی چالو کیا گیا۔ کل بھارت چرخہ سنگھ کی پنجاب شاکھا نے بھی کھادی کام میں سہایتا دی۔

پھر پرانے سکھی دن

شری متی مردولا بہن کی دیکھ ریکھ میں دھیرے دھیرے بڑیا کا سیوا۔ کام اپنا اثر جمانے لگا۔ ۱۹۵۰ کے اپریل میں نہرو-لیاقت علی سمجھوتہ ہوا، جس کا اثر ہندو مسلمانوں اور پرادیشک سرکاروں پر پڑا۔ پوربی پنجاب میں اس سمے ایک مضبوط منتری منڈل مانیہ ڈاکٹر گوپی چند بھارگو نے بنا لیا تھا۔ اُن کی پریرنا سے کمشنر مہاشے نے تحصیل کا دورہ کیا اور اُکھڑے

मुसलमानों को राहत पहुँचाने और फिर से बसाने के लिये एक सद्भावना (गुड विल) मिशन क़ायम किया गया. इस मिशन में पंजाब प्रान्त के कुछ ऐसे हिन्दू और सिक्ख कॉंगरेस काजकर्ता शामिल हुए, जिन पर फ़िरक़ापरस्ती और साम्प्रदायिकता का प्रभाव बिलकुल नहीं पड़ा था. इन कॉंगरेस सेवकों में श्री मुँशीराम मल्लिक, हरिवंश सिंह 'बाग़ी' और सरदार दयाल सिंह ख़ास थे. इस सद्भावना मिशन का सदर दफ़्तर जगाधरी तहसील के पास बुड़िया नाम के इतिहासी क़स्बे में रक्खा गया. बुड़िया के रहने वाले रईस सरदार रतन अनमोल सिंह के पूरे परिवार ने सद्भावना मिशन के कामों में दिल से सहायता पहुँचाई और काजकर्ताओं को हर तरह से सहयोग दिया. घोर उथल पुथल के दिनों में भी इस सिक्ख कुटुम्ब ने मुसलमानों की हिफ़ाज़त के लिये बहादुरी के साथ काफ़ी कोशिश की थी. घबराए हुए मुसलमानों के डर को छुड़ाने के लिये भारती सेना की एक टुकड़ी भी रखी गई. गाँवों में दौरा कर के पच्छिमी पंजाब से आए हुए मुसलमान-हिन्दू शरनार्थियों को भारत सरकार की नीत बताई गई और आपस में मिलजुल कर रहने और डर छोड़ देने की बात अच्छी तरह समझा दी गई. बाद में मुसलमान शरनार्थियों को ख़ास तरह से राहत देने के लिये बुड़िया में पूरबी पंजाब की सरकार ने एक कैम्प चलाया, जिसमें लगभग तीन हज़ार मुसलमान औरत, मर्द और बच्चे दाख़िल हुए. यह कैम्प जनवरी १९४९ से जनवरी '५० तक चालू रहा. कैम्प में शरनार्थियों के रहने के लिये जगह दी गई थी और सभी को खाना और जलपान रोज़ मिलता था. मुसलमान शरनार्थी अपने घरों को वापस जाने के लिये काफ़ी परेशान और बेचैन थे. इसलिये सद्भावना मिशन के काजकर्ताओं को सरकारी कर्मचारियों की सहायता से गाँव में मुसलमानों को फिर से बसाने के लिये मकान देने का इन्तज़ाम किया गया. धीरे धीरे मुसलमानों

مسلمانوں کو راحت پہنچانے اور پھر سے بسانے کے لئے ایک سدبھاؤنا (گڈ ول) مشن قائم کیا گیا . اِس مشن میں پنجاب پرانت کے کچھ ایسے ھندو اور سکھ کانگریس کاج کرتا شامل ہوئے' جن پر فرقہ پرستی اور سامپردایکتا کا پربھاؤ بالکل نہیں پڑا تھا . اِن کانگریس سیوکوں میں شری منشی رام ملک' ہرونش سنگھ 'باغی' اور سردار دیال سنگھ خاص تھے . اِس سدبھاؤنا مشن کا صدر دفتر جگادھری تحصیل کے پاس بڑیا نام کے اِتہاسی قصبے میں رکھا گیا . بڑیا کے رہنے والے رئیس سردار رتن انمول سنگھ کے پورے پریوار نے سدبھاؤنا مشن کے کاموں میں دل سے سہایتا پہنچائی اور کاج کرتاؤں کو ہر طرح سے سہیوگ دیا . گھور اُتھل پتھل کے دنوں میں بھی اس سکھ کٹمب نے مسلمانوں کی حفاظت کے لئے بہادری کے ساتھ کافی کوشش کی تھی . گھبرائے ہوئے مسلمانوں کے ڈر کو چھڑانے کے لئے بھارتی سینا کی ایک ٹکڑی بھی رکھی گئی . گاؤں میں دورہ کر کے پچھمی پنجاب سے آئے ہوئے مسلمان ھندو شرنارتھیوں کو بھارت سرکار کی نیت بتائی گئی اور آپس میں مل جلکر رہنے اور ڈر چھوڑ دینے کی بات اچھی طرح سمجھا دی گئی . بعد میں مسلمان شرنارتھیوں کو خاص طرح سے راحت دینے کے لئے بڑیا میں پوربی پنجاب کی سرکار نے ایک کیمپ چلایا جس میں لگ بھگ تین ہزار مسلمان عورت' مرد اور بچے داخل ہوئے . یہ کیمپ جنوری ۱۹۴۹ سے جنوری ۵۰' تک چالو رہا . کیمپ میں شرنارتھیوں کے رہنے کے لئے جگہ دی گئی تھی اور سبھی کو کھانا اور جلپان روز ملتا تھا . مسلمان شرنارتھی اپنے گھروں کو واپس جانے کے لئے کافی پریشان اور بےچین تھے . اِسلئے سدبھاؤنا مشن کے کاج کرتاؤں کو سرکاری کرمچاریوں کی سہایتا سے گاؤں میں مسلمانوں کو پھر سے بسانے کے لئے مکان دینے کا انتظام کیا گیا . دھیرے دھیرے مسلمانوں

अत्याचार हुए जैसे रावलपिन्डी और मुलतान की मुसलिम-बहुमत-कमिश्नरियों में हिन्दुओं पर हुए थे. सहारनपूर ज़िले (उत्तर प्रदेश) की सीमा पर जगाधरी तहसील है. बीच में केवल जमना नदी पड़ती है. इसलिये बुरी तरह भगदड़ के समय बहुत से मुसलमान अपने घरों को छोड़ कर उत्तर प्रदेश में आ गए थे. पच्छिमी पंजाब से आए हुए हिन्दुओं ने उनके घरों पर अधिकार कर लिया. बड़ी बड़ी आलीशान मसजिदें या तो सूनी पड़ गईं या उनमें हिन्दू शरनार्थी टिक गए.

फिर-बनाव का काम

शरनार्थियों और उखड़े हुए लोगों को फिर से बसाने और सहायता देने के लिये भारत सरकार ने 'संयुक्त सहायता और कल्यानकारी कौन्सिल' क़ायम की, जिसकी तरफ़ से जगह जगह पर कैम्प क़ायम किये गए और शरनार्थियों को उनमें ठहराया गया. बाद में भारत सरकार ने असाम्प्रदायिक प्रजातंत्र राज का ऐलान करके हर तरह से दुखी हिन्दू, मुसलमान और सिक्खों को एकसी हमदर्दी और इनसाफ़ करने का विश्वास दिलाया. जगाधरी तहसील के लगभग बीस हज़ार मुसलमान उत्तर प्रदेश के पच्छिमी ज़िलों में पनाह ले रहे थे. भारत सरकार के ऊपर बताए ऐलान को सुन कर उनकी जान में जान आ गई और वह अपने घरों को वापस जाने के लिये बेचैन होने लगे. लेकिन डर और आतंक से वातावरन इतना ज़हरीला हो चुका था कि मुसलमान का रेलों में सफ़र करना या किसी जगह में चले जाना उन दिनों ख़तरे से ख़ाली नहीं था.

इनसानियत सो नहीं गई थी

ज़बरदस्ती भगाई गई औरतों के उद्धार के लिये श्रीमती मृदुला बहन साराभाई संयुक्त सहायता समिति की तरफ़ से काम कर रही थीं. उन्ही की प्रेरना से जगाधरी तहसील के उजड़े ए

اتیاچار ہوئے جیسے راولپنڈی اور ملتان کی مسلم بہومت کمشنریوں میں ہندؤوں پر ہوئے تھے ۔ سہارن پور ضلع (اُتر پردیش) کی سیما پر جگادھری تحصیل ہے ۔ بیچ میں کیول جمنا ندی پڑتی ہے ۔ اِس لئے بری طرح بھگدڑ کے سمے بہت سے مسلمان اپنے گھروں کو چھوڑ کر اُتر پردیش میں آگئے تھے ۔ پچھمی پنجاب سے آئے ہوئے ہندؤوں نے اُنکے گھروں پر ادھیکار کر لیا ۔ بڑی بڑی عالیشان مسجدیں یا تو سونی پڑ گئیں یا اُن میں ہندو شرنارتھی ٹک گئے ۔

پھر-بناؤ کا کام

شرنارتھیوں اور اُکھڑے ہوئے لوگوں کو پھر سے بسانے اور سہایتا دینے کے لئے بھارت سرکار نے 'سنیکت سہایتا اور کلیان‌کاری کونسل' قائم کی' جسکی طرف سے جگہ جگہ پر کیمپ قائم کئے گئے اور شرنارتھیوں کو اُن میں ٹھہرایا گیا ۔ بعد میں بھارت سرکار نے اسامپردایک پرجا تنتر راج کا اعلان کر کے ہر طرح سے دکھی ہندو مسلمان اور سکھوں کو ایک سی ہمدردی اور انصاف کرنے کا وشواس دلایا ۔ جگادھری تحصیل کے لگ بھگ بیس ہزار مسلمان اُتر پردیش کے پچھمی ضلعوں میں پناہ لے رہے تھے ۔ بھارت سرکار کے اُوپر بتائے اعلان کو سن کر اُن کی جان میں جان آگئی اور وہ اپنے گھروں کو واپس جانے کے لئے بیچین ہونے لگے ۔ لیکن ڈر اور آتنک سے واتاورن اِتنا زہریلا ہو چکا تھا کہ مسلمان کا ریلوں میں سفر کرنا یا کسی جگہ میں چلے جانا اُن دنوں خطرے سے خالی نہیں تھا ۔

انسانیت سو نہیں گئی تھی

زبردستی بھگائی گئی عورتوں کے اُددھار کے لئے شریمتی مردلا بہن سارا بھائی سنیکت سہایتا سمیتی کی طرف سے کام کر رہی تھیں ۔ اُنھیں کی پریرنا سے جگادھری تحصیل کے اُجڑے ہوئے

उन्होंने अपना काम बहुत ही मिठास और ईमानदारी के साथ किया और जब उन्हें सिगरेट या चाय का एक प्याला पेश किया गया तो उन्होंने लेने से साफ़ इनकार कर दिया. जहाज़ के अफ़सरों ने मुझसे कहा कि इससे पहले किसी जहाज़ के चीनी बन्दरगाह मे पहुंचते ही चीनी सरकारी अफ़सर टिड्डी दल की तरह जहाज़ पर चढ़ आते थे और खुले मुफ़्त का खाना और मुफ़्त की शराबें मांगते थे जब तक कि जहाज़ वहां से चल न दे. हमारे जहाज़ के सब अफ़सर और आदमी एक जगह बुलाए गए जहाँ पर किसी ने नए चीन के ऊपर उन्हें बड़े जोश के साथ लेकचर दिया."

यू० एन० ओ० में उन दिनों इस बात पर बहस चल रही थी कि चीन को हमलावर (एग्रेसर) ठहराया जाए या न ठहराया जाए. जो खबरें चीन पहुँचती थीं उनसे वहाँ के लोगों में भी आशा और निराशा की लहरें दौड़ती रहती थीं. जब चीन की सरकार ने अपनी तरफ़ से लड़ाई बन्द कर देने का इरादा ज़ाहिर किया तो चीन में एक उम्मीद की लहर दौड़ गई. यह वादा इस शर्त पर था कि सात बड़ी बड़ी हुकूमतों की कॉनफ़रेंस कर के उनके सामने सारा मामला रक्खा जायगा. पर जब आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, फ़्रान्स, कनैडा और इंगलैंड तक ने यह मान लिया कि कोरिया में चीन हमलावर है तो फिर चीनियों में निराशा छा गई.

वह लिखते हैं—"नए चीन के नेताओं की ईमानदारी और सचाई पर कोई उंगली नहीं उठा सकता. उन्होंने बरसों कभी छिप छिप कर और कभी खुले मैदान में आकर अपने देस के शत्रुओं के साथ जंग की है और अन्त में ग़ज़ब की सफलता हासिल की है. वह इस बात को पूरी तरह समझते हैं कि देस की असली रचना का इतना बड़ा काम अभी उन्हें पूरा करना है. वह समझते हैं कि अभी उन्हें दूसरी पार्टियों को साथ लेकर सरकारें बनानी होंगी और अभी बहुत दिनों तक लोगों को अलग अलग निजी धंदों और निजी सम्पत्ति रखने

اُنھوں نے اپنا کام بہت ھی مٹھاس اور ایمانداری کے ساتھ کیا اور جب اُنھیں سگریٹ یا چائے کا ایک پیالہ پیش کیا گیا تو اُنھوں نے لینے سے صاف انکار کر دیا ۔ جہاز کے افسروں نے مجھ سے کہا کہ اِس سے پہلے کسی جہاز کے چینی بندرگاہ میں پہونچتے ھی چینی سرکاری افسر ٹڈی دل کی طرح جہاز پر چڑھ آتے تھے اور کھلے مفت کا کھانا اور مفت کی شرابیں مانگتے تھے ۔ جب تک کہ جہاز وھاں سے چل نہ دے ۔ ھمارے جہاز کے سب افسر اور آدمی ایک جگہ بلائے گئے جہاں پر کسی نے نئے چین کے اوپر اُنھیں بڑے جوش کے ساتھ لکچر دیا ۔"

یو ۔ این ۔ او ۔ میں اُن دنوں اِس بات پر بحث چل رھی تھی کہ چین کو حملہ‌ور (ایگریسر) ٹھہرایا جائے یا نہ ٹھہرایا جائے ۔ جو خبریں چین پہونچتی تھیں اُن سے وھاں کے لوگوں میں بھی آشا اور نراشا کی لہریں دوڑتی رھتی تھیں ۔ جب چین کی سرکار نے اپنی طرف سے لڑائی بند کر دینے کا اِرادہ ظاھر کیا تو چین میں ایک اُمید کی لہر دوڑ گئی ۔ یہ وعدہ اِس شرط پر تھا کہ سات بڑی بڑی حکومتوں کی کانفرنس کر کے اُنکے سامنے سارا معاملہ رکھا جائیگا پر جب آسٹریلیا' نیوزیلینڈ' فرانس' کنیڈا اور انگلینڈ تک نے یہ مان لیا کہ کوریا میں چین حملہ‌ور ھے تو پھر چینیوں میں نراشا چھا گئی ۔

وہ لکھتے ھیں—"نئے چین کے نیتاؤں کی ایمانداری اور سچائی پر کوئی انگلی نہیں اُٹھا سکتا ۔ اُنھوں نے برسوں کبھی چھپ چھپ کر اور کبھی کھلے میدان میں آکر اپنے دیس کے شترووں کے ساتھ جنگ کی ھے اور انت میں غضب کی سپھلتا حاصل کی ھے ۔ وہ اِس بات کو پوری طرح سمجھتے ھیں کہ دیس کی اصلی رچنا کا اِتنا بڑا کام ابھی اُنھیں پورا کرنا ھے ۔ وہ سمجھتے ھیں کہ ابھی اُنھیں دوسری پارٹیوں کو ساتھ لیکر سرکاریں بنانی ھوں گی اور ابھی بہت دنوں تک لوگوں کو الگ الگ نجی دھندھوں اور نجی سمپتی رکھنے

उन्होंने लिखा है कि चीनियों का बरताव उनके साथ बहुत ही प्रेम और ख़ातिरदारी का था. रेल से सफ़र करते हुए उन्होंने देखा कि उस रेल पर सब अफ़सर और पुलिस वाले औरतें थीं. रेलों में उधर से इधर तक सिर्फ़ एक ही दरजा था. भारत की तरह अलग अलग दरजे नहीं थे. रेलों में लाउड इस्पीकर लगे हुए थे जो बारी बारी कभी गाना सुनाते रहते थे और कभी राजकाजी और दूसरी तरह के लेकचर. इन लेकचरों में इस तरह की बातें बताई जाती थीं कि आदमी को अपने पड़ोसियों के साथ कैसा बरताव करना चाहिये, रेलों में कैसे बैठना चाहिये, अपनी और दूसरों की तन्दुरुस्ती का कैसे ख़याल रखना चाहिये वग़ैरा.

वह लिखते हैं कि चीनी सब बाहर वालों के साथ और एक दूसरे के साथ बहुत ही मिठास और प्रेम का बरताव करते हैं.

वहाँ उन्हें बहुत सी फ़्राँसीसी, रूसी और दूसरी विदेशी औरतें और विदेशी मर्द मिले जो सब चीनियों के बरताव से बहुत ख़ुश थे. लिखते हैं कि—"मुझे एक भी ग़ैर चीनी ऐसा नहीं मिला जिसने ज़ोरों के साथ यह न कहा हो कि इससे पहले की कोमिंटाँग सरकार के मुक़ाबले में या किसी भी सरकार के मुक़ाबले में जो लोगों को याद है आजकल का जनराज इतना बढ़कर है कि दोनों में कोई मुक़ाबला ही नहीं किया जा सकता."

पिछले तीस या अधिक बरसों में पहली बार चीज़ों की क़ीमतें ढंग पर आकर टिकी हैं, मँहगाई रुकी है और काग़ज़ी सिक्कों की तादाद कम हुई है. इन बातों से सारी जनता बहुत ख़ुश है. चीन में पहली बार फ़ौज के सिपाही यह बात जान गए हैं कि वह जनता के रक्षक और सेवक हैं मालिक नहीं.

सर आर्थर लिखते हैं—"जब मेरा जहाज़ टीनसिन पहुंचा तो केवल वह सरकारी अफ़सर जहाज़ पर आए जिन्हें कुछ काम था.

اُنہوں نے لکھا ہے کہ چینیوں کا برتاؤ اُنکے ساتھ بہت ہی پریم اور خاطرداری کا تھا . ریل سے سفر کرتے ہوئے اُنہوں نے دیکھا کہ اُس ریل پر سب افسر اور پولس والے عورتیں تھیں . ریلوں میں اُدھر سے اِدھر تک صرف ایک ہی درجہ تھا . بھارت کی طرح الگ الگ درجے نہیں تھے . ریلوں میں لاؤڈ اسپیکر لگے ہوئے تھے جو باری باری کبھی گانا سناتے رہتے تھے اور کبھی راجکاجی اور دوسری طرح کے لیکچر . اِن لیکچروں میں اِسطرح کی باتیں بتائی جاتی تھیں کہ آدمی کو اپنے پڑوسیوں کے ساتھ کیسا برتاؤ کرنا چاہیئے' ریلوں میں کیسے بیٹھنا چاہیئے' اپنی اور دوسروں کی تندرستی کا کیسے خیال رکھنا چاہیئے وغیرہ .

وہ لکھتے ہیں کہ چینی سب باہر والوں کے ساتھ اور ایک دوسرے کے ساتھ بہت ہی مٹھاس اور پریم کا برتاؤ کرتے ہیں

وہاں اُنہیں بہت سی فرانسیسی' روسی اور دوسری بدیشی عورتیں اور بدیشی مرد ملے جو سب چینیوں کے برتاؤ سے بہت خوش تھے . لکھتے ہیں کہ— 'مجھے ایک بھی غیر چینی ایسا نہیں ملا جس نے زوروں کے ساتھ یہ نہ کہا ہو کہ اس سے پہلے کی کومنتانگ سرکار کے مقابلے میں یا کسی بھی سرکار کے مقابلے میں جو لوگوں کو یاد ہے آج کل کا جن راج اِتنا بڑھکر ہے کہ دونوں میں کوئی مقابلہ ہی نہیں کیا جا سکتا . '

پچھلے تیس یا ادھک برسوں میں پہلی بار چیزوں کی قیمتیں ڈھنگ پر آکر ٹکی ہیں' مہنگائی رکی ہے اور کاغذی سکوں کی تعداد کم ہوئی ہے . اِن باتوں سے ساری جنتا بہت خوش ہے . چین میں پہلی بار فوج کے سپاہی یہ بات جان گئے ہیں کہ وہ جنتا کے رکشک اور سیوک ہیں مالک نہیں .

سر آرتھر لکھتے ہیں—"جب میرا جہاز تینسن پہونچا تو کیول وہ سرکاری افسر جہاز پر آئے جنہیں کچھ کام تھا .

लाल चीन

[मशहूर अंगरेज़ी पत्रकार सर आर्थर मूर जो स्टेटसमैन, के एडीटर रह चुके हैं. हाल में चीन गए थे. वहाँ का जो आँखों देखा हाल उन्होंने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में बयान किया है उसकी कुछ बातें हम नीचे देते हैं. —एडीटर]

सर आर्थर जहाज़ में बैठे फ़ारमूसा के पास चीन की तरफ़ बढ़ रहे थे कि समन्दर में ही बहुत सवेरे और फिर दोबारा शाम को कुछ अमरीकी हवाई जहाज़ इनके पानी के जहाज़ की तरफ़ उतरे. अमरीकी जहाज़ों ने इनके जहाज़ का चक्कर लगाया और इनके जहाज़ के बिलकुल बराबर में आकर जब यह तसल्ली करली कि यह जहाज़ इंगलिस्तान का जहाज़ है किसी ग़ैर का नहीं तो फिर हवा में ऊपर उड़ गए.

सर आर्थर पूरा एक महीना चीन में रहे. वह कोरिया और जापान भी हो आए.

चीन के नए जनराज (रिपबलिक) के काम और मंसूबों को वह ठोस और अमली बताते हैं और लिखते हैं कि उनमें रूखा समाजवाद (सोशलिज़्म) या साम्यावाद (कम्युनिज़्म) नहीं है.

फ़ारमूसा की बाबत वह लिखते हैं कि अमरीका, इंगलैन्ड और दूसरी मित्र शक्तियाँ हाल में इस पर अपनी रज़ामंदी ज़ाहिर कर चुकी हैं कि फ़ारमूसा चीन को वापिस देदिया जाए चाहे चीन में कैसी भी हुकूमत क्यों न हो. इसलिये सर आर्थर की राय है कि फ़ारमूसा चीन ही को मिलना चाहिये.

لال چین

[مشہور انگریزی پترکار سر آرتھر مور جو اسٹیٹسمین' کے ایڈیٹر رہ چکے ہیں' حال میں چین گئے تھے وہاں کا جو آنکھوں دیکھا حال اُنھوں نے ' ہندستان ٹائمس ' میں بیان کیا ہے اُسکی کچھ باتیں ہم نیچے دیتے ہیں . —ایڈیٹر]

سر آرتھر جہاز میں بیٹھے فارموسا کے پاس سے چین کی طرف بڑھ رہے تھے کہ سمندر میں ہی بہت سویرے اور پھر دوبارہ شام کو کچھ امریکی ہوائی جہاز اِنکے پانی کے جہاز کی طرف اُترے امریکی جہازوں نے اُنکے جہاز کا چکر لگایا اور اِنکے جہاز کے بالکل برابر میں آکر جب یہ تسلی کرلی کہ یہ جہاز انگلستان کا جہاز ہے کسی غیر کا نہیں تو پھر ہوا میں اُوپر اُڑ گئے .

سر آرتھر پورا ایک مہینہ چین میں رہے . وہ کوریا اور جاپان بھی ہو آئے .

چین کے نئے جن راج (ریپبلک) کے کام اور منصوبوں کو وہ ٹھوس اور عملی بتاتے ہیں اور لکھتے ہیں کہ اُن میں روکھا سماج واد (سوشلزم) یا سامیہ واد (کمیونزم) نہیں ہے .

فارموسا کی بابت وہ لکھتے ہیں کہ امریکہ' انگلینڈ اور دوسری متر شکتیاں حال میں اِس پر اپنی رضامندی ظاہر کر چکی ہیں کہ فارموسا چین کو واپس دے دیا جائے چاہے چین میں کیسی بھی حکومت کیوں نہ ہو . اِسلئے سر آرتھر کی راے ہے کہ فارموسا چین ہی کو ملنا چاہیئے .

सब चीजें एहतियात के साथ बाँध कर हटाई जा रही थीं. मुझे ख़याल हो आया कि ठीक इसी तरह काँगरेस के संगठन को ही क्यों न बाँध लिया जाये. बहुत शान के साथ काँगरेस ने अपना मक़सद पूरा किया है. सारा आलम इसके कारनामों से रौशन है. लेकिन हर चीज जो आती है, जाती भी है. यह क़ुदरत का क़ानून है. ख़ूबी इसी में है कि जैसे सूरज ख़ुद ही किरनें समेट लेता है, काँगरेस भी अपने को समेट ले और दूसर रोज ताज़ी शक्ल में—लोक सेवक संघ का फूल बन कर—फूले फले. मगर जो जमात या आदमी ऐसा नहीं करते उनका ख़ात्मा जबरदस्ती हो जाता है और ऐसी घड़ी पर उनकी मत भी मारी जाती है

मुझे लगा कि काँगरेस की वह घड़ी आ गई. अहमदाबाद की बैठक से काँगरेस का पतन और अन्त शुरू हो गया. अनाथों का यह झुंड अब अपने को शायद ही सँभाल सके. लेकिन अभी वक़्त है. श्री जवाहरलाल नेहरू ख़ुद ऊपर के अपने एक जुमले पर ग़ौर करें, काँगरेस से उस पर ग़ौर करायें. उसको अमल में लायें. तभी हम सब कह सकेंगे—

"कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी."

किसी भी अख़बार का पहला काम है लोगों के भावों को समझकर प्रकट करना; दूसरा काम है लोगों में जिन भावनाओं की ज़रूरत हो उन्हें जगाना; और तीसरा काम है लोगों में अगर कोई ऐब हो तो उन्हें किसी भी मुसीबत की परवाह न कर बेधड़क सब के सामने रख देना.

—महात्मा गाँधी

سب چیزیں احتیاط کےساتھ باندھکر هٹائی جارهی تھیں مجھےخیال هوآیا که ٹھیک اِسی طرح کانگریس کے سنگٹھن کو هی کیوں نه باندھ لیا جائے . بہت شان کے ساتھ کانگریس نے اپنا مقصد پورا کیا هے . سارا عالم اُسکے کارناموں سے روشن هے . لیکن هر چیز جو آتی هے' جاتی بھی هے یه قدرت کا قانون هے . خوبی اِسی میں هے که جیسے سورج خود هی کرنیں سمیٹ لیتا هے' کانگریس بھی اپنے کو سمیٹ لے اور دوسرے روز تازی شکل میں—لوک سیوک سنگھ کا پھول بنکر—پھولے پھلے . مگر جو جماعت یا آدمی ایسا نہیں کرتے اُن کا خاتمه زبردستی هو جاتا هے اور ایسی گھڑی پر اُنکی مت بھی ماری جاتی هے .

مجھے لگا که کانگریس کی وه گھڑی آگئی . احمدآباد کی بیٹھک سے کانگریس کا پتن اور انت شروع هوگیا . اناتھوں کا یه جھنڈ اب اپنے کو شاید هی سنبھال سکے . لیکن ابھی وقت هے . شری جواهر لال نهرو خود اوپر کے اپنے ایک جملے پر غور کریں' کانگریس سے اُسپر غور کرائیں' اُسکو عمل میں لائیں . تبھی هم سب کهه سکیں گے—

'' کچھ بات هے که هستی مٹتی نهیں همارے ''

کسی بھی اخبار کا پهلا کام هے لوگوں کے بھاؤں کو سمجھ کر پرکٹ کرنا؛ دوسرا کام هے لوگوں میں جن بھاوناؤں کی ضرورت هو اُنھیں جگانا؛ اور تیسرا کام هے لوگوں میں اگر کوئی عیب هو تو اُنھیں کسی بھی مصیبت کی پرواه نه کر بے دھڑک سب کے سامنے رکھ دینا .

—مهاتما گاندھی

बिक्री पर वह पाबन्दी लगादे क्योंकि इस से जनता का नैतिक पतन होता है और तन्दुरुस्ती को भी नुक़सान पहुँचता है.

"बनसपती की वजह से असली ख़ालिस घी अब बाज़ार में क़तई मिलता ही नहीं और इसका नतीजा यह है कि हमारे देस के पशुधन का नुक़सान हो रहा है."

यह ठीक ही हुआ कि करोड़ों इनसानों की ज़िन्दगी से सम्बन्ध रखने वाला ऐसा बड़ा ठहराव. वापिस नहीं लिया गया. इस पर रायें ली गईं, हाथ उठे, १११ पक्ष में और ५६ ख़िलाफ़. इन छप्पन में ही थे हमारे केन्द्री प्रधान मंत्री. कारबारी कमेटी के एक मेम्बर ने भी ठहराव के माफ़िक़ वोट नहीं दिया. ख़िलाफ़ तो कई एक रहे. इससे पता चलता है कि देस में हवा कैसी बह रही है. हुकूमत को चाहिये कि काँगरेस के इस फ़ैसले पर अमल करे. नहीं तो, फिर भगवान ही मालिक है.

यह बैठक अचानक ही ख़त्म हो पड़ी. कारन यह हुआ कि मौलाना साहब ने अपील की कि केन्द्री चुनाव बोर्ड के मेम्बरों का चुनाव आज न करके फिर किया जाए. इस पर एक मेम्बर ने कहा कि ग़ैर सरकारी ठहराव भी फिर लिये जायें. इस पर सदर साहब ने हाउस की राय टटोल कर कहा कि अब यह ठहराव न लिये जायें और क्योंकि एजेन्डा पर दूसरी कोई चीज़ है नहीं इसलिये कारवाई ख़त्म. इस तरह एक बजे यह बैठक उठ गई. उठने के पहले गुजरात काँगरेस के सदर ने एक लाख रुपये का चेक काँगरेस सदर टंडन जी को काँगरेस के ख़र्च की ख़ातिर दिया इस रक़म का सरदार बल्लभ भाई पटेल ने कारबारी कमेटी से वादा भी किया था.

इकतीस की रात और पहली तारीख़ को मेम्बर लोग अपने घर वापिस चल दिये. २ फ़रवरी को सभी रवाना हो चुके थे और स्वागत कमेटी ने डेरे वग़ैरा बहुत सफ़ाई के साथ उखाड़ लिये थे.

بکری پر وہ پابندی لگا دے کیونکہ اِس سے جنتا کا نیتک پتن ہوتا ہے اور تندرستی کو بھی نقصان پہنچتا ہے

،، بنسپتی کی وجہ سے اصلی خالص گھی اب بازار میں قطعی ملتا ھی نہیں اور اِس کا نتیجہ یہ ہے کہ ھمارے دیس کے پشودھن کا نقصان ہو رہا ہے ،،

یہ ٹھیک ھی ھوا کہ کروڑوں انسانوں کی زندگی سے سمبندھ رکھنے والا ایسا بڑا ٹھہراؤ واپس نہیں لیا گیا . اس پر رائیں لی گئیں، ہاتھ اُٹھے . ۱۱۱ پکش میں اور ۵۶ خلاف اِن ۵۶ میں ھی تھے ھمارے کیندری پردھان منتری . کاروباری کمیٹی کے ایک ممبر نے بھی ٹھہراؤ کے موافق ووٹ نہیں دیا، خلاف تو کئی ایک رھے . اس سے پتہ چلتا ہے کہ دیس میں ھوا کیسی بہہ رہی ہے . حکومت کو چاہئے کہ کانگریس کے اس فیصلے پر عمل کرے . نہیں تو، پھر بھگوان ھی مالک ہے .

یہ بیٹھک اچانک ھی ختم ھو پڑی . کارن یہ ھوا کہ مولانا صاحب نے اپیل کی کہ کیندری چناؤ بورڈ کے ممبروں کا چناؤ آج نہ کر کے پھر کیا جائے . اِس پر ایک ممبر نے کہا کہ غیر سرکاری ٹھہراؤ بھی پھر لئے جائیں . اِس پر صدر صاحب نے ہاؤس کی رائے ٹٹول کر کہا کہ اب یہ ٹھہراؤ نہ لئے جائیں اور کیونکہ ایجنڈا پر دوسری کوئی چیز ہے نہیں اِس لئے کاروائی ختم . اِس طرح ایک بجے یہ بیٹھک اُٹھ گئی . اُٹھنے کے پہلے گجرات کانگریس کے صدر نے ایک لاکھ روپے کا چیک کانگریس صدر ٹنڈن جی کو کانگریس کے خرچ کی خاطر دیا . اِس رقم کا سردار ولبھ بھائی پٹیل نے کاروباری کمیٹی سے وعدہ بھی کیا تھا .

اکتیس کی رات اور پہلی تاریخ کو ممبر لوگ اپنے گھر واپس چل دیئے . ۲ فروری کو سبھی روانہ ہوچکے تھے اور سواگت کمیٹی نے ڈیرے وغیرہ بہت صفائی کے ساتھ اُکھاڑ لئے تھے .

'हम से अपील की जाती है कि आपसी मतभेद और गुटबंदियाँ दूर करो. मैं बड़े अदब से (मंच पर बैठे लोगों) आप से अर्ज़ करना चाहता हूँ कि आप अपने फ़रक़ दूर कर लीजिये, हमारे भेद भी एक दम काफ़ूर हो जाएँगे.'

'आज जनता की सुनवाई कहाँ है ? अगर हुकूमत सिर्फ़ इतना भर कर दे कि हर शिकायत पर एक माह के अन्दर अमल हो जायेगा तो आपके और जनता के बीच की खाई सहज ही दूर होजायेगी.'

इसी दौरान में आचार्य जीवतराम भगवानदास कृपलानी का भाशन हुआ. यह तो एक चुनौती थी जो रह रह कर पूछती थी कि इस तरह कब तक काम चलेगा ? आप ने कहा— "मैं सिपाही हूँ, जान देने के लिये हमेशा तैयार. अपने प्रधान मंत्री के लिये जान दे सकता हूँ. मगर वह क्या चीज़ है, कहाँ है, जिसकी ख़ातिर मैं ऐसा करूँ ?............आप एकता चाहते हैं लेकिन किस तरह की एकता ? क्या पाकिस्तान में है वैसी ? क्या हिटलर के जरमनी की जैसी ? क्या क़बरिस्तान जैसी ?"

इन सवालों का जवाब कहीं नहीं था. मगर मेम्बरों को लगा कि उनका जवाब ख़ुद आचार्य जी के पास भी क्या था—वह क्या चाहते थे कि जिस पर देस चले. सवाल सबका एक है—मगर जवाब नदारद.

अब हम ग़ैर सरकारी ठहरावों को लें. कोई बीस की पेशी थी. मगर बारह के क़रीब पेश हो सके. श्री जवाहरलाल जी या मौलाना साहब के कहने पर सिवा एक के सब ही वापस ले लिये गये. यह एक था दरभंगा (बिहार) के श्री हृदय नरायन चौधरी का ठहराव जो नीचे दिया जाता है—

"कुल हिन्द काँग्रेस कमेटी का यह जलसा केन्द्री सरकार से बिनती करता है कि बनसपती व जमाए हुए तेल की पैदावार और

' هم سے اپیل کی جاتی هے که آپسی مت بهید اور گٹ بندیاں دور کرو . میں بڑے ادب سے (منچ پر بیٹھے لوگوں) آپ سے عرض کرنا چاهتا هوں که آپ اپنے فرق دور کر لیجئے همارے بهید بهی ایک دم کافور هوجائینگے . '

' آج جنتا کی سنوائی کہاں هے ؟ اگر حکومت صرف اتنا بهر کر دے که هر شکایت پر ایک ماه کے اندر عمل هوجائیگا تو آپکے اور جنتا کے بیچ کی کهائی سہج هی دور هوجائے گی . '

اِسی دوران میں آچاریه جیوت رام بهگوان داس کرپلانی کا بهاشن هوا . یه تو ایک چنوتی تهی جو ره رهکر پوچهتی تهی که اِسطرح کب تک کام چلے گا ؟ آپ نے کہا—" میں سپاهی هوں ' جان دینے کے لئے همیشه تیار . اپنے پردهان منتری کے لئے جان دے سکتا هوں . مگر وه کیا چیز هے ' کہاں هے ' جسکی خاطر میں ایسا کروں ؟ . .... آپ ایکتا چاهتے هیں لیکن کسطرح کی ایکتا ؟ کیا پاکستان میں هے ویسی ؟ کیا هٹلر کے جرمنی کی جیسی ؟ کیا قبرستان جیسی ؟"

اِن سوالوں کا جواب کہیں نہیں تها . مگر ممبروں کو لگا که اُن کا جواب خود آچاریه جی کے پاس بهی کیا تها . وه کیا چاهتے تهے که جس پر دیس چلے . سوال سب کا ایک هے—مگر جواب ندارد .

اب هم غیر سرکاری ٹهہراؤں کو لیں . کوئی بیس کی پیشی تهی مگر باره کے قریب پیش هو سکے . شری جواهر لال جی یا مولانا صاحب کے کہنے پر سوا ایک کے سب هی واپس لے لئے گئے . یه ایک تها دربهنگه (بہار) کے شری هردے نرائن چودهری کا ٹهہراو جو نیچے دیا جاتا هے—

" کل هند کانگریس کمیٹی کا یه جلسه کیندری سرکار سے ونتی کرتا هے که بنسپتی و جمائے هوئے تیل کی پیداوار اور

खतम करदे —यह वह सलाह है जिसे अब तक तो हमने ठुकराया ही है.'' मेरा अपना ख़याल है कि इस जुमले के अन्दर कॉंगरेस के पिछले तीन बरसों का इतिहास छिपा है.

मौलाना साहब नासिक कॉंगरेस के मौक़े पर एक दम ख़ामोश रहे थे. इसलिये अहमदाबाद में जब वह माइक पर आए तो लोगों ने एक ताज़गी महसूस की. उनकी तक़रीर की तारीफ़ करना सूरज को रोशनी दिखाना है. उन्होंने बताया कि यह ठहराव कारबारी कमेटी की तरफ़ से आख़िरी कोशिश है कॉंगरेस को एक ठोस जानदार जमात बनाने की. लेकिन इसकी सच्चाई तो आने वाले वक़्त की गोद में छिपी है.

इस ठहराव पर जो तक़रीरें मेम्बरों ने कीं वह मानो कॉंगरेस का आईना हैं. उन्होंने अपना दिल ही चीर कर रख दिया. एक भाई ने कहा—''अगर खुलकर बातें करनी हैं तो फिर ज़रा इतमीनान से हमें बैठना होगा. प्रेस को हटाकर एक बंद बैठक हम करें और तब अपनी दास्तान कहें.'' कुछ मेम्बरों के कुछ जुमले हम नीचे देते हैं—

'आप कहते हैं कि कॉंगरेस वरकर कुछ नहीं करता. मैं पूछता हूँ, वह क्या करे ? क्या कोई प्रोग्राम, कोई मक़सद आपने उसके आगे रखा है जिसकी उसे पाबन्दी करनी हो. और फिर आप उसका इतमीनान या यक़ीन कितना करते हैं ?'

'यह कहा जाता है कि हम अपनी क़ुरबानी की क़ीमत वसूल कर रहे हैं. मैं पूछता हूँ क्यों चाहिये राजेन्द्र बाबू के लिये वह वाइसरीगल लाज ? क्यों चाहिये पंडित जी को इतनी बड़ी तनख़ा ? अगर आप को पाँच हज़ार की ज़रूरत है तो सौ-पचास की ज़रूरत हमें भी है.'

ختم کر دے—یہ وہ صلاح ہے جسے اب تک تو ہم نے ٹھکرایا ہی ہے.'' میرا اپنا خیال ہے کہ اِس جملے کے اندر کانگریس کے پچھلے تین برسوں کا اِتہاس چھپا ہے .

مولانا صاحب ناسک کانگریس کے موقعہ پر ایک دم خاموش رہے تھے . اِس لئے احمدآباد میں جب وہ مائک پر آئے تو لوگوں نے ایک تازگی محسوس کی . اُن کی تقریر کی تعریف کرنا سورج کو روشنی دکھانا ہے . اُنھوں نے بتایا کہ یہ ٹھہراؤ کاروباری کمیٹی کی طرف سے آخری کوشش ہے کانگریس کو ایک ٹھوس جاندار جماعت بنانے کی . لیکن اسکی سچائی تو آنے والے وقت کی گود میں چھپی ہے .

اِس ٹھہراؤ پر جو تقریریں ممبروں نے کیں وہ مانو کانگریس کا آئینہ ہیں . اُنھوں نے اپنا دل ہی چیر کر رکھدیا . ایک بھائی نے کہا—''اگر کھلکر باتیں کرنی ہیں تو پھر ذرا اطمینان سے ہمیں بیٹھنا ہوگا . پریس کو ہٹا کر ایک بند بیٹھک ہم کریں اور تب اپنی داستان کہیں .'' کچھ ممبروں کے کچھ جملے ہم نیچے دیتے ہیں—

' آپ کہتے ہیں کہ کانگریس ورکر کچھ نہیں کرتا . میں پوچھتا ہوں وہ کیا کرے ؟ کیا کوئی پروگرام' کوئی مقصد آپنے اُسکے آگے رکھا ہے جسکی اُسے پابندی کرنی ہو . اور پھر آپ اُسکا اطمینان یا یقین کتنا کرتے ہیں ؟'

' یہ کہا جاتا ہے کہ ہم اپنی قربانی کی قیمت وصول کر رہے ہیں میں پوچھتا ہوں کیوں چاہئے راجندر بابو کے لئے وہ وائسریگل لاج؟ کیوں چاہئے پنڈت جی کو اِتنی بڑی تنخواہ ؟ اگر آپ کو پانچ ہزار

बाल की खाल निकालना. हमें दुख है कि नासिक काँगरेस का सदर बनने के बाद टंडन जी ने जो वादा किया था कि वह काँगरेस की परम्परा (ट्रैडिशन) की पाबन्दी करेंगे, उसे वह नजरअन्दाज़ कर गए.

धाराओं पर बहुतेरी तरमीमें मेम्बरों ने पेश कीं. एक आध को छोड़ कर सभी कारबारी कमेटी को मंज़ूर नहीं थीं और उन सब का बुरा हाल ही हुआ. उन में से कुछ तो ग़ौर तलब और अच्छी थीं मगर अपनी शान में डूबी कारबारी कमेटी उन्हें कैसे मान लेती ? हम यह भी जानते हैं कि काँगरेस वाले सभी अपनेपन में इतने मस्त थे कि उनको इस में कोई दिलचस्पी नहीं थी कि विधान कैसा बनता है. उन्हें तो आप उनकी "सीट" दे दीजिये फिर जो कहिये उन्हें मंज़ूर.

कहने की ज़रूरत नहीं कि अहमदाबाद बेठक के एकता ठहराव की बड़ी धूम है. इसे पेश किया श्री जवाहरलाल नेहरू ने और इसका समर्थन किया मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने. इस सलसिले में भी श्री जवाहरलाल नेहरू ने एक बहुत गरजती हुई तक़रीर की और काँगरेस के लोगों की अक़ल को ठिकाने पर लाने की कोशिश की. मगर बड़े अदब के साथ हम कहना चाहते हैं कि महज़ बातों से काम नहीं चल सकता. यह तो साफ़ था कि कोई चीज़ ऐसी ग़ायब है जिस ने सारी काँगरेस को बेहाल कर दिया है लेकिन उसे कोई खोज नहीं पाता है. मैं श्री जवाहरलाल जी के एक जुमले की तरफ़ पढ़ने वालों का ध्यान दिलाना चाहता हूँ जिसे आम तौर से अखबारों ने नहीं छापा है. वह यह है—"अगर काँगरेस की हालत आज की जैसी बनी रही तो मैं सोचता हूँ कि हमें गांधी जी की उस सलाह पर अमल करना होगा जिस में उन्हों ने कहा था कि काँगरेस अपनी सियासी और प्रोपेगेन्डा की कारवाइयों को

بال کی کھال نکالنا . همیں دکھ هے که ناسک کانگریس کا صدر بننے کے بعد ٹنڈن جی نے جو وعدہ کیا تھا که وہ کانگریس کی پرمپرا (ٹریڈیشن) کی پابندی کرینگے' اُسے وہ نظر انداز کر گئے .

دھاراؤں پر بہتیری ترمیمیں ممبروں نے پیش کیں . ایک آدھ کو چھوڑ کر سبھی کاروباری کمیٹی کو منظور نہیں تھیں اور اُن سب کا برا حال هی هوا . اُن میں سے کچھ تو غور طلب اور اچھی تھیں مگر اپنی شان میں ڈوبی کاروباری کمیٹی اُنھیں کیسے مان لیتی ؟ هم یہ بھی جانتے هیں که کانگریس والے سبھی اپنے پن میں اتنے مست تھے که اُن کو اس میں کوئی دلچسپی نہیں تھی که ودھان کیسا بنتا هے . اُنھیں تو آپ اُنکی سیٹ دے دیجئے' پھر جو کہئے اُنھیں منظور .

کہنے کی ضرورت نہیں که احمد آباد بیٹھک کے ایکتا ٹھہراؤ کی بڑی دھوم هے . اِسے پیش کیا شری جواھر لال نہرو نے اور اِسکا سمرتھن کیا مولانا ابوالکلام آزاد نے . اِس سلسلے میں بھی شری جواھر لال نہرو نے ایک بہت گرجتی ھوئی تقریر کی اور کانگریس کے لوگوں کی عقل کو ٹھکانے پر لانے کی کوشش کی . مگر بڑے ادب کے ساتھ هم کہنا چاھتے ھیں که محض باتوں سے کام نہیں چل سکتا . یہ تو صاف تھا که کوئی چیز ایسی غائب هے جس نے ساری کانگریس کو بے حال کر دیا هے لیکن اُسے کوئی کھوج نہیں پاتا هے . میں شری جواھر لال جی کے ایک جملے کی طرف پڑھنے والوں کا دھیان دلانا چاھتا ھوں جسے عام طور سے اخباروں نے نہیں چھاپا هے . وہ یہ هے— "اگر کانگریس کی حالت آج کی جیسی بنی رهی تو میں سوچتا ھوں که همیں گاندھی جی کی اِس صلاح پر عمل کرنا ھوگا جسمیں اُنھوں نے کہا تھا که کانگریس اپنی سیاسی اور پروپیگنڈا کی کاروائیوں کو

उन्होंने काँगरेस को यह चेतावनी दी कि यह कोई सब्ज़ी मंडी नहीं है जहाँ चवन्नी अठन्नी की चख़ चख़ चल रही है. इसी स्पीच का नतीजा हुआ कि रुपए का झंडा बुलन्द रहा क्योंकि अठन्नी या चवन्नी पर वोट दे कर मेम्बर श्री जवाहर लाल की नाराज़ी नहीं मोल लेना चाहते थे. लेकिन मेम्बरों को यह ख़बर ही नहीं थी कि उन लाखों करोड़ों के दिलों पर क्या बीत रही है जिनकी बदौलत उन्हें यह रुतबा मिला है.

जो रुपया दे वह मेम्बर. लेकिन जो "सक्रिय" (एक्टिव) मेम्बर हो उसे कई शर्तें पूरी करनी होंगी. वह छूआछूत न मानता हो, नशा न लेता हो, खादी पहनता हो, वग़ैरा. बड़े दुख की बात यह है कि पहले जहाँ यह लाज़मी था कि "प्रमानित" (सरटीफ़ाइड) खादी हो, अब महज़ खादी शब्द रखा गया है. मुबारक हो गादी वालों को. उन्हें मनमानी चीज़ मिल गई. आज़ादी के पहले जहाँ काँगरेसी वर्दी खादी थी, आज़ादी के बाद गादी उसकी वर्दी होगी !

छोटी मोटी धाराओं के बाद हम उस धारा पर आते हैं जिसमें कहा गया है कि काँगरेस की अलग अलग कमेटियाँ दो साल तक काम करेंगी, मगर सालाना जलसा हर साल होगा. इसका मतलब यह हुआ कि काँगरेस का एक ही सदर दो बरस लगातार गद्दी पर जमा रहेगा. ज़ाहिर है कि यह मौजूदा दस्तूर के ख़िलाफ़ है. नया साल नया ख़ून वाले 'ख़याल का ख़ून करके काँगरेस अपना दिवालियापन ज़ाहिर कर रही है.

अहमदाबाद बैठक की एक चीज़ ऐसी अजीब है जिसे सुनकर हर कोई दाँतों तले उंगली दबा लेगा. वह यह कि सदर साहब का यह हुक्म करना कि काँगरेस के "केन्द्री चुनाव बोर्ड" में ग़ैर

اُنھوں نے کانگریس کو یہ چیتاونی دی کہ یہ کوئی سبزی منڈی نہیں ہے جہاں چونی اٹھنی کی چخ چخ چل رہی ہے ۔ اِسی اسپیچ کا نتیجہ ہوا کہ روپے کا جھنڈا بلند رہا کیونکہ اٹھنی یا چونی پر ووٹ دیکر ممبر شری جواہر لال کی ناراضی نہیں مول لینا چاہتے تھے ۔ لیکن ممبروں کو یہ خبر ہی نہیں تھی کہ اُن لاکھوں کروڑوں کے دلوں پر کیا بیت رہی ہے جنکی بدولت اُنھیں یہ رتبہ ملا ہے ۔

جو روپیہ دے وہ ممبر ۔ لیکن جو ''سکریہ'' (ایکٹو) ممبر ہو اُسے کئی شرطیں پوری کرنی ہونگی ۔ وہ چھوا چھوت نہ مانتا ہو، نشہ نہ لیتا ہو، کھادی پہنتا ہو، وغیرہ ۔ بڑے دکھ کی بات یہ ہے کہ پہلے جہاں یہ لازمی تھا کہ ''پرماست'' (سرتی فائڈ) کھادی ہو، اب محض کھادی شبد رکھا گیا ہے ۔ مبارک ہو گادی والوں کو اُنھیں من مانی چیز مل گئی ۔ آزادی کے پہلے جہاں کانگریسی وردی کھادی تھی، آزادی کے بعد گادی اُس کی وردی ہوگی !

چھوٹی موٹی دھاراؤں کے بعد ہم اُس دھارا پر آتے ہیں جس میں کہا گیا ہے کہ کانگریس کی الگ الگ کمیٹیاں دو سال تک کام کرینگی، مگر سالانہ جلسہ ہر سال ہوگا ۔ اِسکا مطلب یہ ہوا کہ کانگریس کا ایک ہی صدر دو برس لگاتار گدی پر جما رہے گا ۔ ظاہر ہے کہ یہ موجودہ دستور کے خلاف ہے ۔ نیا سال نیا خون والے خیال کا خون کر کے کانگریس اپنا دیوالیہ‌پن ظاہر کر رہی ہے ۔

احمدآباد بیٹھک کی ایک چیز ایسی عجیب ہے جسے سنکر ہر کوئی دانتوں تلے اُنگلی دبا لے گا ۔ وہ یہ کہ صدر صاحب کا یہ حکم کرنا کہ کانگریس کے ''کیندریہ چناؤ بورڈ'' میں غیر

अब हम बैठक की कारवाई पर आयें. काँगरेस के विधान पर तफ़सील के साथ कुछ कहना इस लेख की हद के बाहर की बात है. हम तो सिर्फ़ कुछ ख़ास बातों पर रोशनी डालकर सब्र करेंगे.

पहले हम विधान को लेंगे. शुरू की चीज़ है काँगरेस का उद्देश्य या मक़सद जो अब यह रखा गया है—एक "सहकारी कामनवैल्थ'' को पाना (अटेनमेन्ट आफ़ ए कोआपरेटिव कामनवेल्थ) क्या चुन चुन कर लफ़्ज़ों को रखा है जिनके माने चुनने वालों को भले मालूम हों लेकिन और तो किसी को नहीं. जहाँ तक जनता का सवाल है वह तो इन लफ़्ज़ों से रत्ती भर भी कुछ नहीं समझ सकती. हमें डर है कि आगे का इतिहास लिखने वाला यही कहेगा कि सन् १९५१ में जन काँगरेस के पास पूरी ताक़त थी तो उसे यही नहीं पता था कि अब उसके ज़िन्दा रहने का कोई मक़सद भी है या नहीं.

काँगरेस के नये विधान की सबसे ख़ास चीज़ है इस वक़्त बिना पैसे की मेम्बरी की जगह एक रुपये की मेम्बरी फ़ीस रखना. एक ज़माना था जब चार आने फ़ीस थी. फिर उसे बिलकुल हटा दिया गया और अप्रैल १९४८ में बम्बई की बैठक में बड़े जोश ख़रोश के साथ काँगरेस का दरवाज़ा सबके लिये खोल दिया गया. मगर अंगूर खट्टे निकले और मेम्बरी फ़ीस के बिना काँगरेस के ज़िन्दा रहने में भी अब शुबा हो गया. इसलिये यह एक रुपया! हम यहाँ यह बता दें कि कारबारी कमेटी में इस मसले पर ज़बर-दस्त बहस हुई कि फ़ीस अठन्नी हो या रुपया. वोट लिये गये और सिर्फ़ एक वोट से अठन्नी को हटाकर रुपया जीता. काँगरेस बैठक में भी इस सवाल पर करारी बहसें हुईं. चवन्नी का झंडा उठाया गया, अठन्नी का भी, रुपये का भी. रुपये की हिमायत में श्री जवाहर लाल नेहरू को ख़ुद उठना पड़ा और बड़े तैश के साथ

اب هم بیٹھک کی کاروائی پر آئیں ۔ کانگریس کے ودھان پر تفصیل کے ساتھ کچھ کہنا اِس لیکھ کی حد کے باهر کی بات هے ۔ هم تو صرف کچھ خاص باتوں پر روشنی ڈال کر صبر کرینگے ۔

پہلے هم ودھان کو لینگے ۔ شروع کی چیز هے کانگریس کا اُدیش یا مقصد جو اب یہ رکھا گیا هے—ایک ''سہکاری کامن ویلتھ'' کو پانا ۔ (اٹینمنٹ آف اے کوآپریٹو کامن ویلتھ) ۔ کیا چن چن کر لفظوں کو رکھا هے جنکے معنے چننے والوں کو بھلے معلوم هوں لیکن اور تو کسی کو نہیں ۔ جہاں تک جنتا کا سوال هے وہ تو ان لفظوں سے رتی بھر بھی کچھ نہیں سمجھ سکتی ۔ همیں ڈر هے کہ آگے کا اِتہاس لکھنے والا یہی کہیگا کہ سن ۱۹۵۱ میں جب کانگریس کے پاس پوری طاقت تھی تو اُسے یہی نہیں پتہ تھا کہ اب اُسکے زندہ رهنے کا کوئی مقصد بھی هے یا نہیں ۔

کانگریس کے نئے ودھان کی سب سے خاص چیز هے اِس وقت بنا پیسے کی ممبری کی جگہ ایک روپے کی ممبری فیس رکھنا ۔ ایک زمانہ تھا جب چار آنے فیس تھی ۔ پھر اُسے بالکل هٹا دیا گیا اور اپریل ۱۹۴۸ میں بمبئی کی بیٹھک میں بڑے جوش خروش کے ساتھ کانگریس کا دروازہ سب کے لئے کھول دیا گیا ۔ مگر انگور کھٹے نکلے اور ممبری فیس کے بنا کانگریس کے زندہ رهنے میں بھی اب شبہہ هو گیا ۔ اِس لئے یہ ایک روپیہ ! هم یہاں یہ بتادیں کہ کاربای کمیٹی میں اِس مسئلے پر زبردست بحث هوئی کہ فیس اٹھنی هو یا روپیہ ۔ ووٹ لئے گئے اور صرف ایک ووٹ سے اٹھنی کو هٹا کر روپیہ جیتا ۔ کانگریس بیٹھک میں بھی اِس سوال پر کراری بحثیں هوئیں ۔ چونی کا جھنڈا اُٹھایا گیا، اٹھنی کا بھی، روپے کا بھی ۔ روپے کی حمایت میں شری جواهرلال نہرو کو خود اُٹھنا پڑا اور بڑے طیش کے ساتھ

उन्होंने काँगरेस को यह चेतावनी दी कि यह कोई सब्ज़ी मंडी नहीं है जहाँ चवन्नी अठन्नी की चख़ चख़ चल रही है. इसी स्पीच का नतीजा हुआ कि रुपए का झंडा बुलन्द रहा क्योंकि अठन्नी या चवन्नी पर वोट दे कर मेम्बर श्री जवाहर लाल की नाराज़ी नहीं मोल लेना चाहते थे. लेकिन मेम्बरों को यह ख़बर ही नहीं थी कि उन लाखों करोड़ों के दिलों पर क्या बीत रही है जिनकी बदौलत उन्हें यह रुतबा मिला है.

जो रुपया दे वह मेम्बर. लेकिन जो "सक्रिय" (एक्टिव) मेम्बर हो उसे कई शर्तें पूरी करनी होंगी. वह छूआछूत न मानता हो, नशा न लेता हो, खादी पहनता हो, वग़ैरा. बड़े दुख की बात यह है कि पहले जहाँ यह लाज़मी था कि "प्रमानित" (सरटीफ़ाइड) खादी हो, अब महज़ खादी शब्द रखा गया है. मुबारक हो गादी वालों को. उन्हें मनमानी चीज़ मिल गई. आज़ादी के पहले जहाँ काँगरेसी वर्दी खादी थी, आज़ादी के बाद गादी उसकी वर्दी होगी !

छोटी मोटी धाराओं के बाद हम उस धारा पर आते हैं जिसमें कहा गया है कि काँगरेस की अलग अलग कमेटियाँ दो साल तक काम करेंगी, मगर सालाना जलसा हर साल होगा. इसका मतलब यह हुआ कि काँगरेस का एक ही सदर दो बरस लगातार गद्दी पर जमा रहेगा. ज़ाहिर है कि यह मौजूदा दस्तूर के ख़िलाफ़ है. नया साल नया ख़ून वाले 'ख़याल का ख़ून करके काँगरेस अपना दिवालियापन ज़ाहिर कर रही है.

अहमदाबाद बैठक की एक चीज़ ऐसी अजीब है जिसे सुनकर हर कोई दाँतों तले उंगली दबा लेगा. वह यह कि सदर साहब का यह हुक्म करना कि काँगरेस के "केन्द्री चुनाव बोर्ड" में ग़ैर

اُنھوں نے کانگریس کو یہ چیتاونی دی کہ یہ کوئی سبزی منڈی نہیں ہےجہاں چونی اٹھنی کی چخ چخ چل رہی ہے ۔ اِسی اسپیچ کا نتیجہ ہوا کہ روپے کا جھنڈا بلند رہا کیونکہ اٹھنی یا چونی پر ووٹ دیکر ممبر شری جواہر لال کی ناراضی نہیں مول لینا چاہتے تھے ۔ لیکن ممبروں کو یہ خبر ہی نہیں تھی کہ اُن لاکھوں کروڑوں کے دلوں پر کیا بیت رہی ہے جنکی بدولت اُنھیں یہ رتبہ ملا ہے ۔

جو روپیہ دے وہ ممبر ۔ لیکن جو "سکریہ" (ایکٹو) ممبر ہو اُسے کئی شرطیں پوری کرنی ہونگی ۔ وہ چھوا چھوت نہ مانتا ہو، نشہ نہ لیتا ہو، کھادی پہنتا ہو، وغیرہ ۔ بڑے دکھ کی بات یہ ہے کہ پہلے جہاں یہ لازمی تھا کہ "پرمانت" (سرٹی فائڈ) کھادی ہو، اب محض کھادی شبد رکھا گیا ہے ۔ مبارک ہو گادی والوں کو اُنھیں من مانی چیز مل گئی ۔ آزادی کے پہلے جہاں کانگریسی وردی کھادی تھی، آزادی کے بعد گدی اُس کی وردی ہوگی !

چھوٹی موٹی دھاراؤں کے بعد ہم اُس دھارا پر آتے ہیں جس میں کہا گیا ہے کہ کانگریس کی الگ الگ کمیٹیاں دو سال تک کام کرینگی، مگر سالانہ جلسہ ہر سال ہوگا ۔ اِسکا مطلب یہ ہوا کہ کانگریس کا ایک ہی صدر دو برس لگاتار گدی پر جما رہے گا ۔ ظاہر ہے کہ یہ موجودہ دستور کے خلاف ہے ۔ نیا سال نیا خون والے خیال کا خون کر کے کانگریس اپنا دیوالیہ‌پن ظاہر کر رہی ہے ۔

احمدآباد بیٹھک کی ایک چیز ایسی عجیب ہے جسے سنکر ہر کوئی دانتوں تلے اُنگلی دبا لے گا ۔ وہ یہ کہ صدر صاحب کا یہ حکم کرنا کہ کانگریس کے "کیندریہ چناؤ بورڈ" میں غیر

अब हम बैठक की कारवाई पर आयें. काँगरेस के विधान पर तफ़सील के साथ कुछ कहना इस लेख की हद के बाहर की बात है. हम तो सिर्फ़ कुछ खास बातों पर रोशनी डालकर सब्र करेंगे.

पहले हम विधान को लेंगे. शुरू की चीज़ है काँगरेस का उद्देश्य या मक़सद जो अब यह रखा गया है—एक "सहकारी कामनवेल्थ'' को पाना (अटेनमेन्ट आफ़ ए कोआपरेटिव कामनवेल्थ) क्या चुन चुन कर लफ़्ज़ों को रखा है जिनके माने चुनने वालों को भले मालूम हों लेकिन और तो किसी को नहीं. जहाँ तक जनता का सवाल है वह तो इन लफ़्ज़ों से रत्ती भर भी कुछ नहीं समझ सकती. हमें डर है कि आगे का इतिहास लिखने वाला यही कहेगा कि सन् १९५१ में जब काँगरेस के पास पूरी ताक़त थी तो उसे यही नहीं पता था कि अब उसके जिन्दा रहने का कोई मक़सद भी है या नहीं.

काँगरेस के नये विधान की सबसे खास चीज़ है इस वक़्त बिना पैसे की मेम्बरी की जगह एक रुपये की मेम्बरी फ़ीस रखना. एक ज़माना था जब चार आने फ़ीस थी. फिर उसे बिलकुल हटा दिया गया और अप्रैल १९४८ में बम्बई की बैठक में बड़े जोश खरोश के साथ काँगरेस का दरवाज़ा सबके लिये खोल दिया गया. मगर अंगूर खट्टे निकले और मेम्बरी फ़ीस के बिना काँगरेस के जिन्दा रहने में भी अब शुबा हो गया. इसलिये यह एक रुपया! हम यहाँ यह बता दें कि कारबारी कमेटी में इस मसले पर ज़बरदस्त बहस हुई कि फ़ीस अठन्नी हो या रुपया. वोट लिये गये और सिर्फ़ एक वोट से अठन्नी को हटाकर रुपया जीता. काँगरेस बैठक में भी इस सवाल पर करारी बहसें हुईं. चवन्नी का झंडा उठाया गया, अठन्नी का भी, रुपये का भी. रुपये की हिमायत में श्री जवाहर लाल नेहरू को खुद उठना पड़ा और बड़े तैश के साथ

اب ہم بیٹھک کی کاروائی پر آئیں ۔ کانگریس کے ودھان پر تفصیل کے ساتھ کچھ کہنا اِس لیکھ کی حد کے باہر کی بات ہے ۔ ہم تو صرف کچھ خاص باتوں پر روشنی ڈال کر صبر کرینگے ۔

پہلے ہم ودھان کو لینگے ۔ شروع کی چیز ہے کانگریس کا اُدیش یا مقصد جو اب یہ رکھا گیا ہے—ایک ''سہکاری کامن ویلتھ'' کو پانا ۔ (اٹینمنٹ آف اے کوآپریٹو کامن ویلتھ) ۔ کیا چن چن کر لفظوں کو رکھا ہے جنکے معنے چننے والوں کو بھلے معلوم ہوں لیکن اور تو کسی کو نہیں ۔ جہاں تک جنتا کا سوال ہے وہ تو ان لفظوں سے رتی بھر بھی کچھ نہیں سمجھ سکتی ۔ ہمیں ڈر ہے کہ آگے کا اِتہاس لکھنے والا یہی کہیگا کہ سن ۱۹۵۱ میں جب کانگریس کے پاس پوری طاقت تھی تو اُسے یہی نہیں پتہ تھا کہ اب اُسکے زندہ رہنے کا کوئی مقصد بھی ہے یا نہیں ۔

کانگریس کے نئے ودھان کی سب سے خاص چیز ہے اِس وقت بنا پیسے کی ممبری کی جگہ ایک روپے کی ممبری فیس رکھنا ۔ ایک زمانہ تھا جب چار آنے فیس تھی ۔ پھر اُسے بالکل ہٹا دیا گیا اور اپریل ۱۹۴۸ میں بمبئی کی بیٹھک میں بڑے جوش خروش کے ساتھ کانگریس کا دروازہ سب کے لئے کھول دیا گیا ۔ مگر انگور کھٹے نکلے اور ممبری فیس کے بنا کانگریس کے زندہ رہنے میں بھی اب شبہہ ہو گیا ۔ اِس لئے یہ ایک روپیہ ! ہم یہاں یہ بتادیں کہ کاربای کمیٹی میں اِس مسئلے پر زبردست بحث ہوئی کہ فیس اٹھنی ہو یا روپیہ ۔ ووٹ لئے گئے اور صرف ایک ووٹ سے اٹھنی کو ہٹا کر روپیہ جیتا ۔ کانگریس بیٹھک میں بھی اِس سوال پر کراری بحثیں ہوئیں ۔ چونی کا جھنڈا اُٹھایا گیا، اٹھنی کا بھی، روپے کا بھی ۔ روپے کی حمایت میں شری جواہرلال نہرو کو خود اُٹھنا پڑا اور بڑے طیش کے ساتھ

कॉंगरेस के एक ठहराव के मुताबिक़ एक सब-कमेटी ने बनाया था ताकि कॉंगरेस का कारोबार ज़ोर शोर के साथ चल सके. दूसरा मक़सद था एक ठहराव को, जिसे एकता ठहराव कहा जाता है, पास कराकर कॉंगरेस के ढहते हुए क़िले को बनाये रखने की कोशिश करना. इसके अलावा चार घंटों का वक़्त ग़ैर सरकारी ठहरावों के लिये था, यानी उन ठहरावों के लिये जो मेम्बर अपनी तरफ़ से पेश करना चाहते थे और जिन्हें कारबारी (वर्किंग) कमेटी अपनी तरफ़ से नहीं रखना चाहती थी.

आगे कुछ भी कहने के पहले हम एक चीज़ बहुत ही एहसान के साथ क़बूल करना चाहते हैं. वह है मेहमानों की ख़ातिर. गुजरात सूबा कॉंगरेस कमेटी का मन पसन्द, घर जैसा और लाजवाब इन्तज़ाम. कॉंगरेस कमेटी के मेम्बरों की क्या. प्रेस वालों की क्या. हर आने वाले की ऐसी ख़ातिर की गई. उसकी सहूलियत और आराम का इतना ख़याल रखा गया है कि वहाँ जाने वाले लोग हमेशा याद रक्खेंगे. उड़ीसा के नामवर नेता श्री बिश्वनाथ दास जी ने कहा कि पिछले बीस बरस से तो उन्होंने ऐसा बेहतरीन इन्तज़ाम कहीं नहीं पाया. मेरा निजी ख़याल तो यह है कि गुजरात कॉंगरेस के सद्र श्री कन्हैया लाल देसाई हर चीज़ पर इतने ग़ौर और ध्यान से निगाह डालते थे मानो उनकी बेटी का ब्याह हो. स्वयं सेवक सच्चे मानों में स्वयं-सेवक थे. काम इस तरह करते थे जैसे आपके मुलाज़िम हों.

कमेटी का इजलास 'नवजीवन' इमारत के हाते में हुआ. मेम्बर लोग गुजरात विद्यापीठ की हद के अन्दर आरज़ी सायों में ठहराए गए थे. कुछ ख़ास लोग विद्यापीठ के कमरों में थे और कुछ बहुत बड़े बड़े लोग अपने दोस्तों के साथ अहमदाबाद की बस्ती में ठहरे थे. नवजीवन की यह इमारत दस लाख के ख़र्चे से अभी हाल में ही बनकर तैयार हुई है जिसको सरदार बल्लभभाई पटेल ने दो माह पहले ही खोला था. इसी नवजीवन में 'हरिजन' अख़बार छपता है.

کے ایک ٹھہراؤ کے مطابق ایک سب کمیٹی نے بنایا تھا تاکہ کانگریس کا کاروبار زور شور کے ساتھ چل سکے . دوسرا مقصد تھا ایک ٹھہراو کو، جسے ایکتا ٹھہراو کہا جاتا ھے، پاس کرا کر کانگریس کے ڈھتے ہوئے قلعے کو بنائے رکھنے کی کوشش کرنا . اِسکے علاوہ چار گھنٹوں کا وقت غیر سرکاری ٹھہراؤں کے لئے تھا، یعنی اُن ٹھہراؤں کے لئے جو ممبر اپنی طرف سے پیش کرنا چاهتے تھے اور جنھیں کاربار (ورکنگ) کمیٹی اپنی طرف سے نہیں رکھنا چاهتی تھی .

آگے کچھ بھی کہنے کے پہلے هم ایک چیز بہت هی احسان کے ساتھ قبول کرنا چاهتے هیں . وہ ھے مہمانوں کی خاطر . گجرات صوبہ کانگریس کمیٹی کا من پسند، گھر جیسا اور لاجواب انتظام . کانگریس کمیٹی کے ممبروں کی کیا، پریس والوں کی کیا، ہر آنے والے کی ایسی خاطر کی گئی، اُسکی سہولیت اور آرام کا اتنا خیال رکھا گیا کہ وهاں جانے والے لوگ ہمیشہ یاد رکھیں گے . اُڑیسہ کے نامور نیتا شری وشوناتھ داس جی نے کہا کہ پچھلے بیس برس سے تو اُنھوں نے ایسا بہترین انتظام کہیں نہیں پایا . میرا نجی خیال تو یہ ھے کہ گجرات کانگریس کے صدر شری کنھیا لال دیسائی ہر چیز پر اتنے غور اور دھیان سے نگاہ ڈالتے تھے مانو اُن کی بیٹی کا بیاہ هو . سویم سیوک سچے معنوں میں سویم سیوک تھے . ہر کام اِس طرح کرتے تھے جیسے آپ کے ملازم ہوں .

کمیٹی کا اجلاس 'نوجیون' عمارت کے احاطے میں ہوا . ممبر لوگ گجرات ودیاپیٹھ کی حد کے اندر عارضی سایوں میں ٹھہرائے گئے تھے . کچھ خاص لوگ ودیاپیٹھ کے کمروں میں تھے اور کچھ بہت بڑے بڑے لوگ اپنے دوستوں کے ساتھ احمدآباد کی بستی میں ٹھہرے تھے . نوجیون کی یہ عمارت دس لاکھ کے خرچے سے ابھی حال میں ھی بن کر تیار ہوئی ھے جسکو سردار ولبھ بھائی پٹیل نے دو ماہ پہلے ھی کھولا تھا . اسی نوجیون میں 'ھریجن' اخبار چھپتا ھے .

अहमदाबाद की कॉंगरेस बैठक

(भाई सुरेश राम भाई)

सन् १९२३ की बात है. महात्मा गांधी जेल में थे. सर्दी का मौसम था. सेठ जमनालाल जी के कालबा देवी रोड, बम्बई वाले बंगले पर कुछ लोग जमा थे. सिकुड़ सिकुड़ा कर, चादर ओढ़े बैठे हुए थे और बहुत ही संगीन चरचा चल रही थी. इत्तफ़ाक़ से एक अजनबी आदमी आ पहुँचा. उसकी हैरत का कोई ठिकाना नहीं था. पूछना चाहता था कि कौन हैं यह सब और क्या कर रहे हैं मगर हिम्मत नहीं होती थी. उसकी तक़दीर से हिन्दुस्तान की कोयल उसके पास से गुज़रीं. अजनबी ने उनसे धीरे से एक सवाल किया—"यह सब कौन हैं ?" झट से सरोजिनी देवी ने जवाब दिया—"महात्मा गांधी की राँडें !" और बड़े ज़ोर से क़हक़हा लगाया. फिर क्या था, सभी खिलखिला कर हँस पड़े.

अहमदाबाद में हँसने की कोई बात नहीं थी. लेकिन २९-३०-३१ जनवरी को कुल-हिन्द कॉंगरेस कमेटी की बैठक का इजलास जो वहाँ हुआ उसको देखकर यह अच्छी तरह महसूस होता था कि हम सब के सब यतीम या अनाथ हो गए हैं और हमें ऐसी मुसीबतों ने आ घेरा है जिनसे निकलना नामुमकिन है. फिर भी ईमान और हिम्मत के साथ कोई भी मौक़े का मुक़ाबला करने को तैयार नहीं था. सभी जैसे डाक्टर थे जिनके पास हिन्दुस्तान के रोग की दवा थी लेकिन ख़ुद पीने से इनकार, दूसरों को ही पिलाना चाहते थे. धरती सब के पाँव तले से खसकी जा रही थी.

कॉंगरेस की यह बैठक बुलाने के मक़सद दो थे—पहला था कॉंगरेस का नया विधान मंज़ूर कराना. यह नया विधान नासिक

احمدآباد کي کانگریس بیٹھک

(بھائی سریش رام بھائي)

سن ۱۹۲۳ کی بات ہے . مہاتما گاندھی جیل میں تھے . سردی کا موسم تھا . سیٹھ جمنا لال جی کے کالبا دیوی روڈ' بمبئی والے بنگلے پر کچھ لوگ جمع تھے . سکڑ سکڑا کر' چادر اوڑھے بیٹھے ہوئے تھے اور بہت ہی سنگین چرچا چل رہی تھی اتفاق سے ایک اجنبی آدمي آپہنچا . اُس کی حیرت کا کوئی ٹھکانہ نہیں تھا . پوچھنا چاہتا تھا کہ کون ہیں یہ سب اور کیا کر رہے ہیں مگر ہمت نہیں ہوتی تھی . اُس کی تقدیر سے ہندستان کی کوئل اُسکے پاس سے گزریں . اجنبی نے اُن سے دھیرے سے ایک سوال کیا—''یہ سب کون ہیں ؟'' جھٹ سے سروجنی دیوی نے جواب دیا—''مہاتما گاندھی کی رانڈیں !'' اور بڑے زور سے قہقہہ لگایا . پھر کیا تھا' سبھی کھل کھلا کر ہنس پڑے .

احمدآباد میں ہنسنے کی کوئي بات نہیں تھی . لیکن ۲۹–۳۰–۳۱ جنوري کو کل ہند کانگریس کمیٹی کی بیٹھک کا 'جلاس جو وہاں ہوا اُسکو دیکھکر یہ اچھی طرح محسوس ہوتا تھا کہ ہم سب کے سب یتیم یا اناتھ ہو گئے ہیں اور ہمیں ایسی مصیبتوں نے آ گھیرا ہے جن سے نکلنا ناممکن ہے پھر بھی ایمان اور ہمت کے ساتھ کوئی بھی موقعہ کا مقابلہ کرنے کو تیار نہیں تھا سبھی جیسے ڈاکٹر تھے جن کے پاس ہندستان کے روگ کی دوا تھی لیکن خود پینے سے انکار' دوسروں کو ہی پلانا چاہتے تھے . دھرتی سب کے پاؤں تلے سے کھسکی جا رہي تھي .

کانگریس کی یہ بیٹھک بلانے کے مقصد دو تھے—پہلا تھا کانگریس کا نیا ودھان منظور کرانا . یہ نیا ودھان ناسک کانگرس

जन-जागरन के इस युग में जनता सचेत हो गई है और वह शासक जमात के ऊपर अपने फ़ैसले लादने की शक्ति रखती है. इसीलिये हर शहरी का फ़र्ज़ है कि वह जंग और शान्ति के सवाल पर गहराई से सोचे और जन आन्दोलन के ज़रिए जंग को रोके.

लड़ाई के लिये दो की ज़रूरत होती है. ताली दो हाथ से बजती है, मगर दोस्ती एक तरफ़ से भी हो सकती है : दोस्ती सौदा नहीं है. यह दोस्ती जिसका दूसरा नाम अहिंसा या मुहब्बत है, बुज़दिलों का काम नहीं, बल्कि बहादुरों और दूरन्देश लोगों का काम है.

—महात्मा गांधी

'नया हिन्द' की छमाही बँधी हुई बढ़िया जिल्दें

जुलाई सन १९४६ से दिसम्बर सन १९५० तक की .

क़ीमत हर जिल्द की सिर्फ़ छै रुपया .

नोट—शुरू से आज तक की कुल जिल्दें ख़रीदने पर डाक ख़र्च माफ़ .

—मैनेजर 'नया हिन्द'
१४५, मुट्ठीगंज,
इलाहाबाद.

جن جاگرن کے اس یگ میں جنتا سچیت ہوگئی ہے اور وہ شاسک جماعت کے اوپر اپنے فیصلے لادنے کی شکتی رکھتی ہے۔ اسی لئے ہر شہری کا فرض ہے کہ وہ جنگ اور شانتی کے سوال پر گہرائی سے سوچے اور جن آندولن کے ذریعے جنگ کو روکے۔

لڑائی کے لئے دو کی ضرورت ہوتی ہے' تالی دو ہاتھ سے بجتی ہے' مگر دوستی ایک طرف سے بھی ہوسکتی ہے۔ دوستی سودا نہیں ہے۔ یہ دوستی جسکا دوسرا نام اہنسا یا محبت ہے' بزدلوں کا کام نہیں' بلکہ بہادروں اور دوراندیش لوگوں کا کام ہے۔

—مہاتما گاندھی

'نیا هند' کی چھماہی بندھی ہوئی بڑھیا جلدیں

جولائی سن ۱۹۴۶ سے دسمبر سن ۱۹۵۰ تک کی۔

قیمت ہر جلد کی صرف چھ روپیہ۔

نوٹ—شروع سے آج تک کی کل جلدیں خریدنے پر ڈاک خرچ معاف۔

—مینیجر 'نیا هند'
۱۴۵' مٹھی گنج'
الہ آباد۔

से देसों में लड़ाई के बावजूद भी बेकारी रह सकती है. आजकल की लड़ाई में लाखों आदमियों को फ़ौज में भरती करना पड़ता है, लाखों और करोड़ों घर बरबाद और तबाह हो जाते हैं, बच्चे अनाथ और स्त्रियाँ विधवा हो जाती हैं. देस की पैदावार लड़ाई में काम आती है, अधिकतर दौलत गोला बारूद बनाने में ख़र्च हो जाती है जिसके फल रूप जनता के लिये खाने पीने और कपड़ों की कमी हो जाती है. चीज़ों का दाम बढ़ जाता है. पर जंग से साम्राजवादियों और मुनाफ़ाख़ोरों को बड़ा लाभ होता है. मलाया की जंग से बर्तानिया की जनता को करोड़ों रुपए की हानि हो रही है. उसको टैक्स देना पड़ता है. लेकिन मलाया के टीन और रबर के मालिक और हथियार बेचने वाले ब्रिटिश पूँजीपतियों को लाभ होता है. हिन्दचीन की जंग के कारन हर फ़्राँसीसी शहरी को लगभग दो सौ रुपया हर साल टैक्स देना पड़ता है. लेकिन हिन्दचीन के चावल, कच्चे माल और धातों से फ़्राँसीसी ब्योपारी और फ़्राँस के गोला बारूद बनाने वाले पूँजीपति करोड़ों का लाभ उठाते हैं. अमरीका ७५ अरब रुपया हर साल जंग के लिये ख़र्च करता है और १५० अरब रुपया ख़र्च करना चाहता है. इसके लिये हर अमरीकी को (चाहे वह बच्चा, बूढ़ा, नाबालिग़ या स्त्री क्यों न हो) एक हज़ार रुपया हर साल टैक्स देना होगा. अगर इस रुपए को बचाया जा सके तो देस की ग़रीबी और बेकारी दूर हो सकती है. लेकिन यह रुपया जनता की जेब से निकल कर हवाई जहाज़, जहाज़ी बेड़ा, बम वग़ैरा बनाने वालों की जेबों में चला जाता है.

जंग का ब्योपार बड़ा भयानक ब्योपार है. इस ब्योपार को बन्द करने की भरसक कोशिश करनी चाहिये. अभी तक संसार में देसों और जातियों के भाग्य का निपटारा करने वाले इने गिने व्यक्ति होते थे. सब देसों में एक शासक जमात होती थी. लोकशाही और

سے دیسوں میں لڑائی کے باوجود بھی بیکاری رہ سکتی ہے. آج کل کی لڑائی میں لاکھوں آدمیوں کو فوج میں بھرتی کرنا پڑتا ہے' لاکھوں اور کروڑوں گھر برباد اور تباہ ہوجاتے ہیں' بچے اناتھ اور استریاں ودھوا ہوجاتی ہیں. دیس کی پیداوار لڑائی میں کام آتی ہے. ادھک تر دولت گولہ بارود بنانے میں خرچ ہوجاتی ہے جسکے پھل روپ جنتا کیلئے کھانے پینے اور کپڑوں کی کمی ہوجاتی ہے. چیزوں کا دام بڑھ جاتا ہے. پر جنگ سے سامراج وادیوں اور منافع خوروں کو بڑا لابھ ہوتا ہے. ملایا کی جنگ سے برطانیہ کی جنتا کو کروڑوں روپے کی ہانی ہو رہی ہے. اُسکو ٹیکس دینا پڑتا ہے لیکن ملایا کے ٹین اور ربر کے مالک اور ہتھیار بیچنے والے برٹش پونجی پتیوں کو لابھ ہوتا ہے. ہند چین کی جنگ کے کارن ہر فرانسیسی شہری کو لگ بھگ دو سو روپے ہر سال ٹیکس دینا پڑتا ہے لیکن ہند چین کے چاول کچے مال اور دھاتوں سے فرانسیسی بیوپاری اور فرانس کے گولہ بارود بنانے والے پونجی پتی کروڑوں کا لابھ اُٹھاتے ہیں. امریکہ ۷۵ ارب روپے ہر سال جنگ کیلئے خرچ کرتا ہے اور ۱۵۰ ارب روپے خرچ کرنا چاہتا ہے. اِس کیلئے ہر امریکی کو چاہے وہ بچہ' بوڑھا' نابالغ یا استری کیوں نہ ہو) ایک ہزار روپے ہر سال ٹیکس دینا ہوگا. اگر اِس روپے کو بچایا جا سکے تو دیس کی غریبی اور بیکاری دور ہو سکتی ہے. لیکن یہ روپیہ جنتا کی جیب سے نکلکر ہوائی جہاز' جہازی بیڑہ' بم وغیرہ بنانے والوں کی جیبوں میں چلا جاتا ہے.

جنگ کا بیوپار بڑا بھیانک بیوپار ہے. اس بیوپار کو بند کرنے کی بھرسک کوشش کرنی چاہئے. ابھی تک سنسار میں دیسوں اور جاتیوں کے بھاگیہ کا نپٹارا کرنے والے اِنے گنے ویکتی ہوتے تھے. سب دیسوں میں ایک شاسک جماعت ہوتی تھی. لوک شاہی اور

में ईरान की सरहद् पर डाल देता है. इसी तरह अमरीका दुनिया भर में पाँच सौ फ़ौजी अड्डे हासिल कर चुका है. पर यह ऐसी प्यास है कि बुझ नहीं सकती.

श्री नेहरू जब पिछली बार अमरीका गए थे, तब उन्हों ने कुछ ऐसी बातें भी कही थीं. अमरीकियों को यह बातें अच्छी नहीं लगीं. अच्छी लगती भी क्यों? उन्होंने कहा था कि काले गोरे में फ़रक़ करना, साम्राजवाद और पिछड़े देसों की गिरी हुई माली हालत जंग को दावत देती है. इस कहने में सच्चाई है. योरपी जातियाँ एशिया और अफ़रीक़ा के देसों पर सैकड़ों बरस से राज कर रही हैं. पर उन देसों की समाजी, आर्थिक, राजकाजी और कलचरी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ, उल्टे बिगाड़ हुआ है. पर आज भी गोरे मालिकों की समझ नहीं आई. उनके सामने एशिया के सुधार का सवाल नहीं. सवाल है क़ौमी आज़ादी की शक्तियों को कुचलने, उनको दबाने का. नहीं तो अमरीका, ब्रेज़ील, आस्ट्रेलिया जैसे देसों में गेहूँ और आलू बरबाद न किये जाते. वह सस्ते दामों पर या बिना मोल एशिया की भूखी जनता को दिये जासकते थे. पर दिया क्या जाता है? अपने एजेन्टों, च्यांग, बाओदाई और सिंघमरी को अपने देसबासियों से लड़ने के लिये हथियार. जनता की भूक को गोली से शान्त किया जाता है. इन देसों के उद्योगों या कल कारख़ानों को कोई सहायता नहीं दी जाती. कोशिश यह है कि इन देसों के उद्योग धन्दे, कल कारख़ाने, बैंक-व्यवसाय, खेतीबारी, ख़ुद उनके हाथ लग जाए.

जंग से किसको लाभ होता है? कहा जाता है जंग से जनता भी फ़ायदा उठाती है. और कुछ नहीं तो बेकारी दूर हो जाती है, नौकरी मिल जाती है. इस समाज की अजीब हालत है. काम भी मिलता है तो मरने के लिये. बिना लड़ाई के काम नहीं. लेकिन बहुत

میں ایران کی سرحد پر ڈال دیتا ہے . اسی طرح امریکہ دنیا بھر میں پانچ سو فوجی اڈے حاصل کر چکا ہے . پر یہ ایسی پیاس ہے کہ بجھ نہیں سکتی .

شری نہرو جب پچھلی بار امریکہ گئے تھے تب اُنہوں نے کچھ ایسی باتیں بھی کہی تھیں . امریکیوں کو یہ باتیں اچھی نہیں لگیں . اچھی لگتیں بھی کیوں ؟ اُنہوں نے کہا تھا کہ کالے گوروں میں فرق کرنا، سامراج واد اور پچھڑے دیسوں کی گری ہوئی مالی حالت جنگ کو دعوت دیتی ہے . اِس کہنے میں سچائی ہے . یورپی جاتیاں ایشیا اور افریقہ کے دیسوں پر سیکڑوں برس سے راج کر رہی ہیں . پر اُن دیسوں کی سماجی، آرتھک، راج کاجی اور کلچری حالت میں کوئی سدھار نہیں ہوا، اُلٹے بگاڑ ہوا ہے . پر آج بھی گورے مالکوں کو سمجھ نہیں آئی . اُن کے سامنے ایشیا کے سدھار کا سوال نہیں . سوال ہے قومی آزادی کی شکتیوں کو کچلنے اُن کو دبانے کا نہیں تو امریکہ، برازیل، آسٹریلیا جیسے دیسوں میں گیہوں اور آلو برباد نہ کئے جاتے . وہ سستے داموں پر یا بنا مول ایشیا کی بھوکی جنتا کو دیئے جاسکتے تھے . پر دیا کیا جاتا ہے ؟ اپنے ایجنٹوں چیانگ، باؤدائی اور سنگھمن ری کو اپنے دیس باسیوں سے لڑنے کے لئے ہتھیار . جنتا کی بھوک کو گولی سے شانت کیا جاتا ہے . اِن دیسوں کے اُدیوگوں یا کل کارخانوں کو کوئی سہایتا نہیں دی جاتی . کوشش یہ ہے کہ اِن دیسوں کے اُدیوگ دھندے، کل کارخانے، بنک ویوسائے، کھیتی باڑی خود اُنکے ہاتھ لگ جائے .

جنگ سے کس کو لابھ ہوتا ہے ؟ کہا جاتا ہے جنگ سے جنتا بھی فائدہ اُٹھاتی ہے . اور کچھ نہیں تو بیکاری دور ہوجاتی ہے، نوکری مل جاتی ہے . اِس سماج کی عجیب حالت ہے . کام بھی ملتا ہے تو مرنے کے لئے . بنا لڑائی کے کام نہیں . لیکن بہت

हैं. जंग की तैयारियों के साथ ही जंग की भावनाएँ और दुशमन के ख़िलाफ़ चेतना जाग जाती है और इस चेतना के बढ़ने के साथ किसी भी समय जंग अचानक ही छिड़ जाती है. जंग से देस को लाभ नहीं होता. किसी को लाभ नहीं होता. पर सुरक्षा और आज़ादी के लिये जंग छिड़ जाती है. उनका कहना है कि अगर अन्तरक़ौमी पैमाने पर सुरक्षा का प्रबन्ध हो जाए तो जंग नामुमकिन हो जाएगी. पर जंग को केवल मनोविज्ञानी कारनों से जोड़ना असलियत से मुँह मोड़ना है. १९३१ में चीन से जापान को क्या डर हो सकता था ? सन् १९१४ में ब्रिटेन को जर्मनी से डर था. लेकिन इसलिये कि वह मंडियों की मांग कर रहा था.

आज भी मलाया, वीयतनाम, मिस्र और ईरान में आज़ादी या लोकशाही की रक्षा या कम्युनिस्टों के दमन का सवाल नहीं है. सवाल है इन देसों में साम्राजवादी हितों की रक्षा का. अंगरेज़ राजनेता कहते हैं कि मलाया की रबर, टीन, लकड़ी वग़ैरा से डालर कमाए जाते हैं. इसलिये इस इलाक़े को छोड़ने का सवाल नहीं उठता. अगर ईरान के तेल के कारख़ाने वहाँ की सरकार को मिल जाएँ तो वहाँ हर आदमी को लगभग दो टन मिट्टी का तेल हर साल मिल सकता है और उनका खाने का काम चल सकता है. लेकिन साथ ही ब्रिटिश सेठों का दिवाला भी निकल जाएगा. मिस्र को छोड़ने के साथ ही ब्रिटिश साम्राज का प्रभाव बीच-एशिया के मुस्लिम देसों से मिट जाएगा और उसका एशिया का रास्ता बन्द हो जाएगा जिसके फल रूप उसको हिन्द महासागर और दक्खिन पूरबी एशिया से भी हाथ धोना पड़ेगा. अपनी मंडियों और अपनी पूँजी की रक्षा के लिये साम्राजवाद दूसरे देसों पर राजकाजी दबाव रखना ज़रूरी समझता है और राजकाजी दबाव बिना फ़ौजी अड्डों के नामुमकिन है. इसीलिये ब्रिटेन मिस्र में जमा रहना चाहता है और अगर ईरान से मजबूर होकर फ़ौजें हटाता है तो उनको इराक़

ہیں . جنگ کی تیاریوں کے ساتھ ہی جنگ کی بھاونائیں اور دشمن کے خلاف چیتنا جاگ جاتی ہے اور اس چیتنا کے بڑھنے کے ساتھ کسی بھی سمے جنگ اچانک ہی چھڑ جاتی ہے . جنگ سے دیس کو لابھ نہیں ہوتا' کسی کو لابھ نہیں ہوتا . پر سورکشا اور آزادی کے لئے جنگ چھڑ جاتی ہے . اُن کا کہنا ہے کہ اگر انتر قومی پیمانے پر سورکشا کا پربندھ ہو جائے تو جنگ ناممکن ہو جائے گی . پر جنگ کو کیول منووگیانی کارنوں سے جوڑنا اصلیت سے منہ موڑنا ہے . ۱۹۳۱ میں چین سے جاپان کو کیا ڈر ہو سکتا تھا ؟ سن ۱۹۱۴ میں برٹین کو جرمنی سے ڈر تھا . لیکن اِس لئے کہ وہ منڈیوں کی مانگ کر رہا تھا .

آج بھی ملایا' ویت نام' مصر اور ایران میں آزادی یا لوک شاہی کی رکشا یا کمیونسٹوں کے دمن کا سوال نہیں ہے . سوال ہے اِن دیسوں میں سامراج وادی ہتوں کی رکشا کا . انگریز راج نیتا کہتے ہیں کہ ملایا کی ربر' ٹین' لکڑی وغیرہ سے ڈالر کمائے جاتے ہیں . اِس لئے اس علاقے کو چھوڑنے کا سوال نہیں اُٹھتا . اگر ایران کے تیل کے کارخانے وہاں کی سرکار کو مل جائیں تو وہاں ہر آدمی کو لگ بھگ دو ٹن مٹی کا تیل ہر سال مل سکتا ہے اور اُن کا کھانے کا کام چل سکتا ہے . لیکن ساتھ ہی برٹش سیٹھوں کا دیوالہ بھی نکل جائیگا . مصر کو چھوڑنے کے ساتھ ہی برٹش سامراج کا پربھاؤ بیچ ایشیا کے مسلم دیسوں سے مٹ جائیگا اور اُسکا ایشیا کا راستہ بند ہو جائیگا جسکے پھل روپ اُسکو ہند مہاساگر اور دکھن پوربی ایشیا سے بھی ہاتھ دھونا پڑیگا . اپنی منڈیوں اور اپنی پونجی کی رکشا کے لئے سامراج واد دوسرے دیسوں پر راج کاجی دباؤ رکھنا ضروری سمجھتا ہے اور راج کاجی دباؤ بنا فوجی اڈوں کے ناممکن ہے . اس لئے برٹین مصر میں جما رہنا چاہتا ہے اور اگر ایران سے مجبور ہو کر فوجیں ہٹاتا ہے تو اُن کو عراق

ब्रिटेन और अमरीका जैसे देसों ने इसको न माना ! अबकी बार भी अफ़रीक़ावासी भारती जनता की बराबरी की मांग के सबसे बड़े विरोधी अमरीका, ब्रिटेन आस्ट्रेलिया जैसे गोरी चमड़ी वाले देस हैं.

जंग छेड़ने के लिये साम्राजवादियों ने अकसर आर्थिक कठिनाइयों का बहाना लिया है. पहली जंग में हारने के बाद जरमनी ने सन १९२७ से कच्चे माल के बटवारे और मंडियों का सवाल उठाया था. इंगलैन्ड में कई राजनेता ऐसे थे जो जरमनी की इस मांग से हमदर्दी रखते थे, और इसी आधार पर उन्होंने जरमनी को आस्ट्रिया और चैकोस्लोवेकिया हड़पने या बलक़ान रियासतों में पढ़ने से नहीं रोका. जापान का कहना था कि उसके लिये मन्चूरिया के सोयाबीन और लोहा, चीन की कपास और कोयला, न्यूगिनी वग़ैरा का मिट्टी का तेल ज़रूरी है. उनका यह भी कहना था कि हमारी बढ़ती हुई जन-गिनती के लिये रहने की जगह भी चाहिये. इस समय भी ऐसी दलीलें दी जाती हैं. कहा जाता है कि बीच-एशिया का मिट्टी का तेल और दक्खिन पूरबी एशिया की धातें इंगलैन्ड और अमरीका के लिये ज़रूरी हैं और इसलिये इनके ऊपर असर रखना या इनको अपने साथ रखना ज़रूरी है. अमरीका जैसे देसों में यह भी भावना है कि बढ़ती हुई जन-गिनती के लिये इलाक़ों की ज़रूरत है. यह दलीलें भी लचर हैं. नारवे, स्वीडन स्विटज़रलैन्ड वग़ैरा कई देस हैं जो बिना उपनिवेशों (नई आबादियों) के कच्चा माल हासिल कर लेते हैं और ज़िन्दा हैं. और अगर जन गिनती बढ़ी है तो चीन, भारत, जावा जैसे एशियाई देसों की बढ़ी है जहाँ योरपी और अमरीकी साम्राजवादी अपने लोगों को बसाना चाहते हैं.

कहा जाता है कि मनोविज्ञानी (नफ़सियाती) कारनों से भी जंग हो जाती है. डर के कारन देस जंग की तैयारियाँ करने लगते

برٹین اور امریکہ جیسے دیسوں نے اِس کو نہ مانا ! اب کی بار بھی افریقہ واسی بھارتی جنتا کی برابری کی مانگ کے سب سے بڑے وِرودھی امریکہ، برٹین، آسٹریلیا جیسے گوری چمڑی والے دیس ہیں .

جنگ چھیڑنے کے لئے سامراج وادیوں نے اکثر آرتھک کٹھنائیوں کا بہانہ لیا ہے . پہلی جنگ میں ہارنے کے بعد جرمنی نے سن ۱۹۲۷ سے کچے مال کے بٹوارے اور منڈیوں کا سوال اُٹھایا تھا . انگلینڈ میں کئی راج نیتا ایسے تھے جو جرمنی کی اس مانگ سے ہمدردی رکھتے تھے اور اِسی آدھار پر اُنھوں نے جرمنی کو آسٹریا اور چیکوسلویکیہ ہڑپنے یا بلقان ریاستوں میں بڑھنے سے نہیں روکا . جاپان کا کہنا تھا کہ اسکے لئے منچوریا کے سویا بین اور لوہا، چین کی کپاس اور کوئلہ، نیوگنی وغیرہ کا مٹی کا تیل ضروری ہے . اُن کا یہ بھی کہنا تھا کہ ہماری بڑھتی ہوئی جن گنتی کے لئے رہنے کی جگہ بھی چاہئے . اس سمے بھی ایسی دلیلیں دی جاتی ہیں کہا جاتا ہے کہ بیچ ایشیا کا مٹی کا تیل اور دکھن پوربی ایشیا کی دھاتیں انگلینڈ اور امریکہ کے لئے ضروری ہیں اور اِس لئے اِنکے اوپر اثر رکھنا یا اِنکو اپنے ساتھ رکھنا ضروری ہے . امریکہ جیسے دیسوں میں یہ بھی بھاونا ہے کہ بڑھتی ہوئی جن گنتی کے لئے علاقوں کی ضرورت ہے . یہ دلیلیں بھی لچر ہیں . ناروے، سوئڈن، سوئٹزرلینڈ وغیرہ کئی دیس ہیں جو بنا اُپ نویشوں (نئی آبادیوں) کے کچا مال حاصل کر لیتے ہیں اور زندہ ہیں . اور اگر جن گنتی بڑھی ہے تو چین، بھارت، جاوا جیسے ایشیائی دیسوں کی بڑھی ہے جہاں یورپ اور امریکی سامراج وادی اپنے لوگوں کو بسانا چاہتے ہیں .

کہا جاتا ہے کہ منووگیانی (نفسیاتی) کارنوں سے بھی جنگ ہو جاتی ہے . ڈر کے کارن دیس جنگ کی تیاریاں کرنے لگتے

दलीलें देते हैं. हम हिन्दुस्तानी इस दलील के शिकार रह चुके हैं और आज़ादी का आन्दोलन खड़ा कर के इस का जवाब दे चुके हैं.

काले गोरे की दलील इसी से मिलती जुलती है. हमारे अफ़रीक़ी भाई इसी दलील के शिकार हैं. लगभग तीन लाख भारती जनता को दक्खिन अफ़रीका के गोरे मालिक क़ुली कहकर पुकारते हैं. उनके रास्ते में तरह तरह की माली बाधाएँ खड़ी करते हैं. जमीन या दूसरी तरह की जायदाद रखने के अधिकार बहुत कम कर दिए गए हैं. भारती जनता को दक्खिन अफ़रीका में राजकाजी अधिकार जैसे असेम्बली वग़ैरा में अपने प्रतिनिधि भेजने के अधिकार नहीं. अफ़रीक़ी जनता के साथ योरपी मालिकों का बरताव और भी बुरा है. अमरीका में लगभग सौ पीछे दस जनता हब्शी है. इनको तरह तरह की माली, समाजी और राजकाजी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है. आर्थिक संकट के समय इनको सबसे पहिले काम से अलग कर के बेकार बना दिया जाता है इनको सबसे कठिन काम दिया जाता है. यह सफ़ेद चमड़ी वाले विद्यार्थियों के साथ बैठकर तालीम नहीं पा सकते, पर इनकी अपनी तालीम का कोई ख़ास प्रबन्ध नहीं. वोट का अधिकार कहने भर को है. अगर कोई हब्शी वोट देने का जतन करे तो दक्खिन की अफ़रीकी रियासतों में मार भी दिया जाता है. वह दुकान से जूता ख़रीद सकता है पर पैर में डालकर नहीं देख सकता. भला उसके पैर से छुआ जूता गोरी चमड़ी वाला किस तरह छू सकता है! एक बार हब्शियों के वोट से एक हब्शी अमरीकी काँगरेस का मेम्बर हो गया. परन्तु वह दूसरे गोरे मेम्बरों के साथ रेल में कैसे जा सकता था? उसके लिये अलग से गाड़ी के डिब्बे का इन्तज़ाम किया गया.

पहली जंग के बाद जापानी मेम्बर ने सुझाव रक्खा था कि रंग की यानी काले गोरे की बराबरी के असूल को मान लिया जाए, पर

دلیلیں دیتے ھیں . ھم ھندستانی اِس دلیل کے شکار رہ چکے ھیں اور آزادی کا آندولن کھڑا کر کے اِس کا جواب دے چکے ھیں .

کالے گورے کی دلیل اسی سے ملتی جلتی ھے . ھمارے افریقی بھائی اسی دلیل کے شکار ھیں . لگ بھگ تین لاکھ بھارتی جنتا کو دکھن افریقہ کے گورے مالک قلی کہکر پکارتے ھیں . اُن کے راستے میں طرح طرح کی مالی بادھائیں کھڑی کرتے ھیں . زمین یا دوسری طرح کی جائداد رکھنے کے ادھیکار بہت کم کر دئے گئے ھیں . بھارتی جنتا کو دکھن افریقہ میں راج کاجی ادھیکار جیسے اسمبلی وغیرہ میں اپنے پرتیندھی بھیجنے کے ادھیکار نہیں . افریقی جنتا کے ساتھ یوروپی مالکوں کا برتاؤ اور بھی برا ھے . امریکہ میں لگ بھگ سو پیچھے دس جنتا حبشی ھے . اِنکو طرح طرح کی مالی، سماجی اور راج کاجی کٹھنائیوں کا سامنا کرنا پڑتا ھے . آرتھک سنکٹ کے سمے اِن کو سب سے پہلے کام سے الگ کر کے بیکار بنا دیا جاتا ھے . اِنکو سب سے کٹھن کام دیا جاتا ھے . یہ سفید چمڑی والے ودیارتھیوں کے ساتھ بیٹھکر تعلیم نہیں پاسکتے، پر ان کی اپنی تعلیم کا کوئی خاص پربندھ نہیں . ووٹ کا ادھیکار کہنے بھر کو ھے . اگر کوئی حبشی ووٹ دینے کا جتن کرے تو دکھن کی امریکی ریاستوں میں مار بھی دیا جاتا ھے . وہ دوکان سے جوتا خرید سکتا ھے پر پیر میں ڈال کر نہیں دیکھ سکتا . بھلا اُسکے پیر سے چھوا جوتا گوری چمڑی والا کس طرح چھو سکتا ھے ! ایک بار حبشیوں کے ووٹ سے ایک حبشی امریکی کانگریس کا ممبر ھو گیا پر وہ دوسرے گورے ممبروں کے ساتھ ریل میں کیسے جا سکتا تھا ؟ اسکے لئے الگ سے گاڑی کے ڈبے کا انتظام کیا گیا .

پہلی جنگ کے بعد جاپانی ممبر نے سجھاؤ رکھا تھا کہ رنگ کی یعنی کالے گورے کی برابری کے اصول کو مان لیا جائے . پر

के खुद ही शिकार हो गए. संसार साम्राजवादियों की ग़ुलामी करने को तैयार न था.

इसी तरह के असूलों को लेकर योरपी जातियों ने पिछड़े हुए देसों—एशिया, अफ़रीक़ा, बीच और दक्खिन अमरीका में क़दम रक्खा था. उनका कहना था कि गोरी जातियाँ अधिक सभ्य हैं. दूसरी जातियाँ असभ्य हैं. इन देसों में सभ्यता फैलाना, ईसाई धर्म और उसके असूलों का प्रचार करना हमारा धर्म है. वह योरपी सभ्यता का बोझ अपनी पीठ पर लादे हुए अफ़रीक़ा, एशिया जैसे देसों में आए. पर इसके पीछे असलियत क्या थी? योरपी जातियों ने अफ़रीक़ा के हबशी, अमरीका के रेड इन्डियन, आस्ट्रेलिया के आदिम बासियों को मिटाना और उनका देस छीनना शुरू किया. दुनिया के कई हिस्सों में उनको सफलता भी मिली. एशिया के अनेक देसों को ग़ुलाम बना लिया गया और वहाँ जोंकपन (शोशन) शुरू हो गया. तीन सौ बरस तक अफ़रीक़ा के हबशियों को ग़ुलाम बनाकर अमरीका में बेचा गया, बरसों तक हिन्दुस्तानी, चीनी और दूसरी एशियाई जातियों को लगभग ग़ुलाम बनाकर अफ़रीक़ा और अमरीका के खेतों पर काम करने के लिये रक्खा गया. सभ्यता के प्रचारक गोरे साम्राजवादियों ने चीन में अफ़ीम का प्रचार किया और जब चीनी सरकार ने चूंचरा की तो डंडे के ज़ोर से उसको अफ़ीम ख़रीदने पर मजबूर किया. पन्द्रहवीं सदी से आज तक बहुत सी लड़ाइयाँ सभ्यता के प्रचार के नाम पर लड़ी गई हैं. और आज भी पच्छिमी रहन सहन की रच्छा का सवाल उठाया जाता है. पुर्तगाल और फ़्रांस भारत के कुछ इलाक़ों पर जमे हुए हैं. उनका कहना है कि इन इलाक़ों में उन्होंने अपनी सभ्यता का प्रचार किया है और इस से वहाँ पर उनके कुछ अधिकार हो गए हैं. पुराने साम्राजवादी क़ौमी आज़ादी के आन्दोलनों के ख़िलाफ़ ऐसी ही

کے خود ہی شکار ہو گئے . سنسار سامراج وادیوں کی غلامی کرنے کو تیار نہ تھا .

اسی طرح کے اصولوں کو لیکر یورپی جاتیوں نے پچھڑے ہوئے دیشوں — ایشیا، افریقہ بیچ اور دکھن امریکہ میں قدم رکھا تھا . اُن کا کہنا تھا کہ گوری جاتیاں ادھک سبھیہ ہیں. دوسری جاتیاں اسبھیہ ہیں . اِن دیسوں میں سبھیتا پھیلانا، عیسائی دھرم اور اُس کے اصولوں کا پرچار کرنا ہمارا دھرم ہے . وہ یورپی سبھیتا کا بوجھ اپنی پیٹھ پر لادے ہوئے افریقہ، ایشیا جیسے دیسوں میں آئے . پر اس کے پیچھے اصلیت کیا تھی؟ یورپی جاتیوں نے افریقہ کے حبشی، امریکہ کے ریڈ انڈین، آسٹریلیا کے آدم واسیوں کو مٹانا اور اُن کا دیس چھیننا شروع کیا . دنیا کے کئی حصوں میں اُنکو سپھلتا بھی ملی . ایشیا کے انیک دیسوں کو غلام بنا لیا گیا اور وہاں جونک پن شوشن شروع ہو گیا. تین سو برس تک افریقہ کے حبشیوں کو غلام بنا کر امریکہ میں بیچا گیا، برسوں تک ہندستانی، چینی اور دوسری ایشیائی جاتیوں کو لگ بھگ غلام بناکر افریقہ اور امریکہ کے کھیتوں پر کام کرنے کے لئے رکھا گیا . سبھیتا کے پرچارک گورے سامراج وادیوں نے چین میں افیم کا پرچار کیا، اور جب چینی سرکار نے چوں چرا کی تو ڈنڈے کے زور سے اُسکو افیم خریدنے پر مجبور کیا . پندرھویں صدی سے آج تک بہت سی جنگ سبھیتا کے پرچار کے نام پر لڑی گئی ہیں اور آج بھی پچھمی رہن سہن کی رکشا کا سوال اُٹھایا جاتا ہے . پرتگال اور فرانس بھارت کے کچھ علاقوں پر جمے ہوئے ہیں . اُن کا کہنا ہے کہ اِن علاقوں میں اُنہوں نے اپنی سبھیتا کا پرچار کیا ہے اور اس سے وہاں پر اُن کے کچھ ادھیکار ہو گئے ہیں . پرانے سامراج وادی قومی آزادی کے آندولنوں کے خلاف ایسی ہی

जंग की जड़ें

(भाई आशाराम)

पत्र पत्रिकाओं में आए दिन जंग की चरचा रहती है. छोट मोटी लड़ाइयाँ बहुत जगह चल भी रही हैं. मलाया, वियतनाम, बरमा, कोरिया वग़ैरा की लड़ाई शान्त नहीं हुई और निकट भविश्य में शान्त होते दिखाई भी नहीं देती. डर है कि लड़ाई फैल न जाए और अन्तरक़ौमी रूप न लेले. संसार के हर शहरी का फ़र्ज़ है कि वह अपनी शक्ति भर जंग को रोके. पर जंग को रोकने के पहले उसे जंग के रूप, उसके कारनों और रोकने के उपायों को समझ लेना चाहिये.

कुछ विचारक जंग को ज़रूरी समझते हैं. उन का कहना है कि आदमी जंगजू यानी युद्ध प्रेमी प्रानी है. हथियार न होने पर भी वह इंट पत्थर से सर फोड़ लेता है. एक सज्जन ने 'हथियार छोड़ो कानफ़रेन्स' में यही बात कही थी.

लेकिन अगर आदमी ऐसा ही ख़ूँख़ार जानवर है तो मानव जाति आपस में लड़कर ख़तम क्यों नहीं हो गई ? सच यह है कि जन-गिनती बढ़ती जाती है. आदमी समाजप्रेमी प्रानी है. वह समाज और सहयोग के बिना ज़िन्दा नहीं रह सकता.

फ़ासिस्ट विचारक भी जंग को ज़रूरी समझते हैं. उनका कहना है कि राज भी व्यक्ति की तरह आगे बढ़ते और पीछे हटते हैं. इसलिये जरमनी और इटली ने जंग करके अपने साम्राज और नीव डालनी चाही. पर संसार की जनता ने इस घातक असूल को नहीं अपनाया और जरमनी, जापान, और इटली अपने असूलों

جنگ کی جڑیں

(بھائی آشا رام)

پتر پتریکاؤں میں آئے دن جنگ کی چرچا رہتی ہے ۔ چھوٹی موٹی لڑائیاں بہت جگہ چل بھی رہی ہیں ۔ ملایا' ویت نام' برما' کوریا وغیرہ کی لڑائي شانت نہیں ہوئی اور نکٹ بھوشیہ میں شانت ہوتے دکھائی بھی نہیں دیتی ۔ ڈر ہے کہ لڑائی پھیل نہ جائے اور انتر قومی روپ نہ لے لے ۔ سنسار کے ہر شہری کا فرض ہے کہ وہ اپنی شکتی بھر جنگ کو روکے ۔ پر جنگ کو روکنے کے پہلے اُسے جنگ کے روپ اُس کے کارنوں اور روکنے کے اُپایوں کو سمجھ لینا چاہئے ۔

کچھ وچارک جنگ کو ضروری سمجھتے ہیں ۔ اُن کا کہنا ہے کہ آدمی جنگجو یعنی یدھ پریمی پرانی ہے ۔ ہتھیار نہ ہونے پر بھي وہ اینٹ پتھر سے سر پھوڑ لیتا ہے ۔ ایک سجن نے 'ہتھیار چھوڑو کانفرنس' میں یہي بات کہی تھی ۔

لیکن اگر آدمی ایسا ہي خونخوار جانور ہے تو مانوجاتی آپس میں لڑکر ختم کیوں نہیں ہو گئی ؟ سچ یہ ہے کہ جن گنتی بڑھتی جاتی ہے ۔ آدمی سماج پریمی پرانی ہے ۔ وہ سماج اور سہیوگ کے بنا زندہ نہیں رہ سکتا ۔

فاسسٹ وچارک بھی جنگ کو ضروری سمجھتے ہیں ۔ اُن کا کہنا ہے کہ راج بھی ویکتی کی طرح آگے بڑھتے اور پیچھے ہٹتے ہیں ۔ اِس لئے جرمنی اور اِٹلی نے جنگ کر کے اپنے سامراج کی نیو ڈالنی چاہي ۔ پر سنسار کی جنتا نے اِس گھاتک اصول کو نہیں اپنایا اور جرمنی' جاپان اور اٹلی اپنے اصولوں

भी ग़ुलामी की बेड़ियाँ तोड़ गया. क्या भारत के जवान-दिल जवान धर्म और जात के बंधनों से ऊँचे नहीं उठ सकते ? और इन भीतर की बेड़ियों को तोड़ कर क्या दुनिया को यह नहीं बता सकते कि वह दुनिया पर शान्ति का राज क़ायम करने में किसी से पीछे नहीं रहेंगे ? और उनके रहते क्या यह न हो सकेगा कि एक मुल्क दूसरे पर न छाया रहे, न छा सके या एक महाद्वीप दूसरे महाद्वीप को धमकी न दे सके ?

जवानो ! हम चाहते हैं कि तुम आज़ादी के दीवाने हो जाओ. कोरे दीवाने नहीं, समझदार दीवाने. समझदारी से भरा तुम्हारा दीवानापन रंग लाए बग़ैर न रहेगा. अन्दर की आज़ादी बड़ी चीज़ होती है. वह करोड़ों बिजली के बल्ब से भी कहीं ज्यादा तेज़ रोशनी फेंकती है. और उस रोशनी में यह हो ही नहीं सकता कि तुम्हारे आसपास के लोग और तुम्हारे पड़ौसी मुल्क सच्ची आज़ादी के दर्शन न कर लें और उस पर फ़रेफ़्ता होकर वह सच्चे मानी में आज़ाद न हो जायँ और औरों को आज़ाद देखकर ख़ुश न हों. आज़ादी की ऐसी ख़ुशी ही सारी दुनिया की शान्ति की गारंटी हो सकती है.

—भगवानदीन

"जिस तरह हिन्सा की लड़ाई में कुछ क़ानून क़ायदे होते हैं उसी तरह अहिन्सा की लड़ाई में भी होते हैं. दुनिया आज केवल हिन्सा की लड़ाई के क़ायदों को जानती है. हिन्सा बुराई करने वाले को सज़ा देती है, अहिन्सा बुराई करने वाले को, शराबी और चोर को प्रेम से समझा कर सुधारती है."

بھی غلامی کی بیڑیاں توڑ گیا . کیا بھارت کے جوان-دل جوان دھرم اور ذات کے بندھنوں سے اونچے نہیں اُٹھ سکتے ؟ اور ان بھیتر کی بیڑیوں کو توڑ کر کیا دنیا کو یہ نہیں بتا سکتے کہ وہ دنیا پر شانتی کا راج قائم کرنے میں کسی سے پیچھے نہیں رہیں گے ؟ اور اُنکے رہتے کیا یہ نہ ہو سکے گا کہ ایک ملک دوسرے پر نہ چھایا رہے، نہ چھا سکے یا ایک مہادیپ دوسرے مہا دیپ کو دھمکی نہ دے سکے ؟

جوانو ! ہم چاہتے ہیں کہ تم آزادی کے دیوانے ہو جاؤ . کورے دیوانے نہیں، سمجھدار دیوانے . سمجھداری سے بھرا تمہارا دیوانہ‌پن رنگ لائے بغیر نہ رہیگا . اندر کی آزادی بڑی چیز ہوتی ہے . وہ کروڑوں بجلی کے بلب سے بھی کہیں زیادہ تیز روشنی پھینکتی ہے . اور اُس روشنی میں یہ ہو ہی نہیں سکتا کہ تمہارے آس پاس کے لوگ اور تمہارے پڑوسی ملک سچی آزادی کے درشن نہ کر لیں اور اُس پر فریفتہ ہو کر وہ سچے معنوں میں آزاد نہ ہو جائیں اور اوروں کو آزاد دیکھکر خوش نہ ہوں . آزادی کی ایسی خوشی ہی ساری دنیا کی شانتی کی گارنٹی ہو سکتی ہے .

—بھگوان دین

" جسطرح ہنسا کی لڑائی میں کچھ قانون قائدے ہوتے ہیں اُسی طرح اہنسا کی لڑائی میں بھی ہوتے ہیں . دنیا آج کیول ہنسا کی لڑائی کے قاعدوں کو جانتی ہے . ہنسا برائی کرنے والے کو سزا دیتی ہے، اہنسا برائی کرنے والے کو، شرابی اور چور کو پریم سے سمجھا کر سدھارتی ہے . "

में उमंगें उठती हैं. हिन्दुस्तान में आज़ादी हज़म मेदे वाले जवानों के रहते क्या कभी मुमकिन था कि रिशवतख़ोरी और चोर बाज़ारी यहाँ जड़ पकड़ पाती ? और क्या यह मुमकिन था कि उनके रहते बच्चों को दूध के लिये और माओं को नमक के लिये और बीमारों को दवा के लिये और बूढ़े-दिल जवानों को आटे दाल के लिये तरसना पड़ता और बेचने वाले और ख़रीदारों के बीच आए दिन हर चीज़ के लिये लुका छिपी का खेल हुआ करता. आज़ाद जवानों के रहते क्या यह मुमकिन था कि भारत के मुसलमान पाकिस्तान भागने की सोचते और पाकिस्तान के हिन्दू भारत आने के लिये हर दम रकाब में पाँव डाले हुए दिखाई देते. आज़ाद जवानों के रहते क्या यह मुमकिन था कि अँगरेज़ी ही नहीं अँगरेज़ियत हम सबके सिरों पर सवार रहती. आज़ाद जवानों के रहते भारत का क्या का क्या होगया होता इसका अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता. जापान से हम बड़े हैं तो चीन से हम छोटे हैं. छोटे जापान और बड़े चीन के जवान जब इतनी जल्दी अपने न-कुछ मुल्क को सब कुछ बना सकते हैं तो भारत के जवान ही ऐसे कठबघे क्यों ? सिर्फ़ इस वजह से कि वह धर्म और जात के रस्म रिवाजों से इतने जकड़े हुए हैं कि आज़ाद होते हुए भी ग़ुलाम से बदतर हैं. बाहरी आज़ादी से कब क्या हुआ है ? जो कुछ हुआ है भीतरी आज़ादी से. जो जवान सोचने के लिये आज़ाद नहीं वह करने के लिये कैसे आज़ाद हो सकता है. और बग़ैर कुछ किये तो भारत ऊँचा उठता नहीं. और जब तक भारत ऊँचा न उठे आम आदमी को आज़ादी का पता लगता नहीं. और आम आदमी को आज़ादी का मज़ा आए बिना भारत की आज़ादी सुरक्षित नहीं. और अरक्षित आज़ादी ग़ुलामी से कहीं ज़्यादा ख़तरनाक. क्योंकि वह फूट की जड़ है. और मुल्क के लिये फूट तो दूसरे मुल्क को अपने ऊपर हकूमत करने के लिये न्योता देना है. तो क्या भारत के जवान यह सब बैठे बैठे देखते रहेंगे ? जवान-दिल गांधी बूढ़ा रहते

میں اُمنگیں اُٹھتی ھیں . هندستان میں آزادی هضم مهدے والے جوانوں کے رهتے کہاں کبھی ممکن تھا کہ رشوت خوری اور چور بازاری یہاں جڑ پکڑ پاتی ؟ اور کیا یہ ممکن تھا کہ اُنکے رهتے بچوں کو دودھ کے لئے اور ماؤں کو نمک کے لئے اور بیماروں کو دوا کے لئے اور بوڑھے-دل جوانوں کو آٹے دال کے لئے ترسنا پڑتا اور بیچنے والے اور خریداروں کے بیچ آئے دن هر چیز کے لئے لوکاچھپی کا کھیل هوا کرتا . آزاد جوانوں کے رهتے کیا یہ ممکن تھا کہ بھارت کے مسلمان پاکستان بھاگنے کی سوچتے اور پاکستان کے هندو بھارت آنے کے لئے هر دم رکاب میں پاؤں ڈالے هوئے دکھائی دیتے . آزاد جوانوں کے رهتے کیا یہ ممکن تھا کہ انگریزی هی نہیں انگریزیت هم سب کے سروں پر سوار رهتی . آزاد جوانوں کے رهتے بھارت کا کیا کا کیا هو گیا هوتا اُس کا اندازہ نہیں لگایا جا سکتا . جاپان سے هم بڑے هیں تو چین سے هم چھوٹے هیں . چھوٹے جاپان اور بڑے چین کے جوان جب اتنی جلدی اپنے نہ کچھ ملک کو سب کچھ بنا سکتے هیں تو بھارت کے جوان هی ایسے کٹھ بگھے کیوں ؟ صرف اس وجہ سے کہ وہ دھرم اور جات کے رسم و رواجوں سے اتنے جکڑے هوئے هیں کہ آزاد هوتے هوئے بھی غلام سے بدتر هیں . باهری آزادی سے کب کیا هوا هے ؟ جو کچھ هوا هے بھیتری آزادی سے . جو جوان سوچنے کے لئے آزاد نہیں وہ کرنے کے لئے کیسے آزاد هو سکتا هے . اور بغیر کچھ کئے تو بھارت اُونچا اُٹھتا نہیں . اور جب تک بھارت اُونچا نہ اُٹھے عام آدمی کو آزادی کا پتہ لگتا نہیں . اور عام آدمی کو آزادی کا مزہ آئے بنا بھارت کی آزادی سورکشت نہیں . اور اَرکشت آزادی غلامی سے کہیں زیادہ خطرناک . کیونکہ وہ پھوٹ کی جڑ هے . اور ملک کے لئے پھوٹ تو دوسرے ملک کو اپنے اُوپر حکومت کرنے کے لئے نیوتہ دینا هے . تو کیا بھارت کے جوان یہ سب بیٹھے بیٹھے دیکھتے رهیں گے ؟ جوان-دل گاندھی بوڑھا رهتے

भिड़ जाता है तो शेर को ही हार मानकर पीछे क़दम हटाना पड़ता है. पर सुअर कहाँ मन बहलाव के लिये या पेट की ख़ातिर जानवरों को मारता फिरता हैं. जानवर जानवर होता है, इसलिये अपने बचाव की ख़ातिर सुअर दूसरे की जान ले लेता है, पर जान ही लेता है. मुर्दार को मुर्दार ही समझता है. आज़ाद जवानी को और फिर आदमी की आज़ाद जवानी को हमें न अहिंसा का सबक़ पढ़ाना पड़ेगा, न इख़लाक़ का पाठ. हम तो समझते हैं कि हमें उसको अदब आदाब की तालीम भी नहीं देना होगी. फलदार दरख़्तों को झुकना कौन सिखाता है? आज़ादी के फलों से लदे हुए जवान को क्या हम अदब आदाब का पाठ पढ़ायेंगे? उससे तो हम सबक़ सीखेंगे. आज़ाद जवान बेअदबी की सोच ही नहीं सकता. बेअदबी ख़ुद कमज़ोरी की निशानी है. बेअदबी बूढ़ों को खुजलाती और बच्चों को गुदगुदाती रहती है. बूढ़े बेअदबी से चिढ़ते भी हैं जैसे कोई खुजली की खुजलाहट से. बूढ़े बेअदबी में आनन्द भी मानते हैं. और वह आनन्द ऐसा ही होता है जैसा खुजली की खुजलाहट. दूसरों के सलाम न करने पर खीज बैठना और दूसरों को सलाम न करके यह समझना कि कुछ बड़ा काम किया बूढ़ों का काम है, न कि जवानों का.

किसी जवान लड़के या लड़की के बारे में ही कभी कभी यह सुनने को मिल जाता है कि उसने अपने बाप को रिशवत लेने से रोक दिया या अपने बड़े भाई और चचा को चोर बाज़ारी न करने दी. असल में आज़ादी ऐसी चीज़ नहीं जिसे बूढ़े हज़म कर सकें. इसके हज़म करने के लिये जवान मेदा ही चाहिये. और यह कि कोई आज़ादी को हज़म कर गया कैसे पहचाना जाय? आज़ादी हज़म कर जाने वाला आदमी दूसरों की आज़ादी में रुकावट नहीं डालता. दूसरों को आज़ाद करके ख़ुश होता है. दूसरों को आज़ाद होते हुए देखकर आनन्द मानता है. आज़ाद होने की बातें सुनकर उसके मन

بھڑ جاتا ہے تو شیر کو ہی ہار مان کر پیچھے قدم ہٹانا پڑتا ہے۔ پر سور کہاں من بہلاؤ کے لئے یا پیٹ کی خاطر جانوروں کو مارتا پھرتا ہے۔ جانور جانور ہوتا ہے، اس لئے اپنے بچاؤ کی خاطر سور دوسرے کی جان لے لیتا ہے: پر جان ہی لیتا ہے۔ مردار کو مردار ہی سمجھتا ہے۔ آزاد جوانی کو اور پھر آدمی کی آزاد جوانی کو ہمیں نہ اہنسا کا سبق پڑھانا پڑیگا، نہ اخلاق کا پاٹھ۔ ہم تو سمجھتے ہیں کہ ہمیں اُسکو ادب آداب کی تعلیم بھی نہیں دینا ہوگی۔ پھلدار درختوں کو جھکنا کون سکھاتا ہے؟ آزادی کے پھلوں سے لدے ہوئے جوان کو کیا ہم ادب آداب کا پاٹھ پڑھائینگے؟ اُس سے تو ہم سبق سیکھینگے۔ آزاد جوان بے ادبی کی سوچ ہی نہیں سکتا۔ بے ادبی خود کمزوری کی نشانی ہے۔ بے ادبی بوڑھوں کو کھجلاتی اور بچوں کو گدگداتی رہتی ہے۔ بوڑھے بے ادبی سے چڑھتے بھی ہیں جیسے کوئی کھجلی کی کھجلاہٹ سے۔ بوڑھے بے ادبی میں آنند بھی مانتے ہیں۔ اور وہ آنند ایسا ہی ہوتا ہے جیسا کھجلی کی کھجلاہٹ۔ دوسروں کے سلام نہ کرنے پر کھیج بیٹھنا اور دوسروں کو سلام نہ کر کے یہ سمجھنا کہ کچھ بڑا کام کیا بوڑھوں کا کام ہے، نہ کہ جوانوں کا۔

کسی جوان لڑکے یا لڑکی کے بارے میں ہی کبھی کبھی یہ سننے کو مل جاتا ہے کہ اُس نے اپنے باپ کو رشوت لینے سے روک دیا یا اپنے بڑے بھائی اور چچا کو چور بازاری نہ کرنے دی۔ اصل میں آزادی ایسی چیز نہیں جسے بوڑھے ہضم کر سکیں۔ اس کے ہضم کرنے کے لئے جوان معدہ ہی چاہئے۔ اور یہ کہ کوئی آزادی کو ہضم کر گیا کیسے پہچانا جائے؟ آزادی ہضم کر جانے والا آدمی دوسروں کی آزادی میں رکاوٹ نہیں ڈالتا۔ دوسروں کو آزاد کر کے خوش ہوتا ہے۔ دوسروں کو آزاد ہوتے ہوئے دیکھکر آنند مانتا ہے۔ آزاد ہونے کی باتیں سنکر اُس کے من

आज़ादी की धुन में उन्हें यह पता ही न था कि उनका सरदार उनसे क्या काम ले रहा है. किसी की जान बचाने के लिये भागने वाला जवान यह जान ही नहीं पाता कि उसके पाँव से कितने कीड़े मर गए हैं और उसकी भाग दौड़ की झपेट में आकर कौन बच्चा नदी में जा पड़ा. और उन अरविंद के साथी हिंसक जवानों की सचाई और त्याग का इससे ज्यादा क्या सबूत हो सकता है कि जैसे ही गाँधी मैदान में आया वह क़रीब क़रीब सब के सब उसके साथ हो लिये और उनमें से कुछ तो ऐसे अहिंसावादी बने कि जैनों और वैश्नवों को भी बहुत पीछे छोड़ दिया. जवान कभी भटकता ही नहीं. जिन जवानों ने अरविंद के साथ बम फेंके थे वे भटके हुए जवान नहीं थे, बिदेसी हकूमत के पत्थर के नीचे दबे हुए जवान थे. वे आज़ाद कहाँ थे ? हकूमत के पत्थर को चूर चूर किये बिना वह उठ भी कैसे सकते थे. और हकूमत का पत्थर उनके लिये था बिदेसी सरकार का अंगरेज़ी अमला. इसलिये उसी पर टूट पड़े. ग़ुलामी के बोझ से दबा जवान कमर झुके बूढ़े से भी कमज़ोर हो जाता है. 'कमज़ोर ग़ुस्सा ज़्यादा' यह कहावत कौन नहीं जानता. ग़ुस्सा और हिंसा माँ जाए हैं. यों दोनों कमज़ोर के साथ रहते हैं. कमज़ोरी और जवान का क्या साथ ?

जवानो ! शेर नक़ल करने की चीज़ नहीं. जंगल में पत्तों की खड़खड़ाहट उसको चौकन्ना करने के लिये काफ़ी है. बन्दूक़ की आवाज़ तो भागने के लिये उसमें पंख लगा देती है. वह तो बहुत भूक में या राह न मिलने पर ढीट बन कर मुक़ाबला कर जाता है. इस ढीटता को न जाने क्यों आदमी ने बहादुरी का नाम दे दिया है. हमारा अपनी उमर में तीन बार जंगलों में शेर से सामना हो चुका है. हमारा तजरबा हमें यह बताता है कि शेर आदमी से ज्यादा बहादुर नहीं होते. वह आदमी को बहादुरी का सबक़ नहीं दे सकते. हाँ, सुअर सचमुच 'सूर' होता है और जब वह शेर से

آزادی کی دھن میں اُنھیں یہ پتہ ھی نہ تھا کہ اُن کا سردار اُن سے کیا کام لے رہا ھے . کسی کی جان بچانے کے لئے بھاگنے والا جوان یہ جان ھی نہیں پاتا کہ اسکے پاؤں سے کتنے کیڑے مر گئے ھیں اور اس کی بھاگ دوڑ کی جھپیٹ میں آکر کون بچہ ندی میں جا پڑا . اُن اور اروند کے ساتھی ھنسک جوانوں کی سچائی اور تیاگ کا اس سے زیادہ کیا ثبوت ھو سکتا ھے کہ جیسے ھی گاندھی میدان میں آیا وہ قریب قریب سب کے سب اُس کے ساتھ ھولئے اور اُن میں سے کچھ تو ایسے اھنسا وادی بنے کہ جینوں اور ویشنووں کو بھی بہت پیچھے چھوڑ دیا . جوان کبھی بھٹکتا ھی نہیں . جن جوانوں نے اروند کے ساتھ بم پھینکے تھے وہ بھٹکے ھوئے جوان نہیں تھے، بدیسی حکومت کے پتھر کے نیچے دبے ھوئے جوان تھے . وہ آزاد کہاں تھے؟ حکومت کے پتھر کو چور چور کئے بنا وہ اُٹھ بھی کیسے سکتے تھے. اور حکومت کا پتھر اُنکے لئے تھا بدیسی سرکار کا انگریزی عملہ . اِس لئے اُسی پر ٹوٹ پڑے . غلامی کے بوجھ سے دبا جوان کمر جھکے بوڑھے سے بھی کمزور ھو جاتا ھے . 'کمزور غصہ زیادہ' یہ کہاوت کون نہیں جانتا . غصہ اور ھنسا ماں جائے ھیں . یوں دونوں کمزور کے ساتھ رھتے ھیں . کمزوری اور جوان کا کیا ساتھ ؟

جوانو ! شیر نقل کرنے کی چیز نہیں . جنگل میں پتوں کی کھڑکھڑاھٹ اس کو چوکنا کرنے کے لئے کافی ھے . بندوق کی آواز تو بھاگنے کے لئے اس میں پنکھ لگا دیتی ھے . وہ تو بہت بھوک میں یا راہ نہ ملنے پر ڈھیٹ بنکر مقابلہ کر جاتا ھے . اِس ڈھیٹتا کو نہ جانے کیوں آدمی نے بہادری کا نام دے دیا ھے . ھمارا اپنی عمر میں تین بار جنگلوں میں شیر سے سامنا ھو چکا ھے . ھمارا تجربہ ھمیں یہ بتاتا ھے کہ شیر آدمی سے زیادہ بہادر نہیں ھوتے . وہ آدمی کو بہادری کا سبق نہیں دے سکتے . ھاں، سور سچ مچ 'سور' ھوتا ھے اور جب وہ شیر سے

बेतुके रस्म रिवाज, गवरमेन्ट के कड़े कानून और माँ बाप की मामूली से ज़्यादा अपने ठीक ना ठीक सभी हुक्मों की पाबंदी की ख़ाहिश.

जवानो! तुम जवान हो. सौ हाथी की ताक़त रखने वाली काम वासना को तुम्ही रोकते आए हो, तुम्ही रोक सकते हो और तुम्हीं उसको अगर चाहो तो बच्चे पैदा करने की जगह अपने जिस्म को चमकाने के काम में लगा सकते हो और उससे सोचने की ताक़त बढ़ाकर दुनिया की तकलीफ़ों का हल निकालने के काम में उसे जोत सकते हो. यह काम न अधेड़ हाथ में ले सकते हैं न बूढ़े. और तुम उनके हाथ में यह काम सौंपना अपनी शान के खिलाफ़ समझोगे. जवानो! गुस्से जैसे ताक़तवर भाव को तुम्हारे सिवा कौन क़ाबू में रख सकता है. क्या बूढ़ा बुद्ध राजपाट को लात मार सकता था? क्या बूढ़ा बुद्ध जवान औरत और पहले बच्चे को छोड़ने की हिम्मत कर सकता था? बुद्ध का बाप सचमुच बूढ़ा था और राम का बाप तो इतना बूढ़ा था कि बेटे की अलहदगी भी न सह सका. क्या बूढ़ा राम तिलक के वक़्त राज छोड़ने की बात सोच सकता था? क्या बूढ़े राम को जंगल में सीता को रखने की बात सूझ सकती थी? त्याग बूढ़ों का काम नहीं, जवान ही कर सकता है. गाँधी ने जिनके बल पर हिन्दुस्तान को आज़ाद किया उन में ३० बरस से ऊपर के बहुत ही कम थे. और अगर कुछ बूढ़े थे तो उनमें से बहुत से ऐसे थे जो अपने बेटे बेटियों के मोह के कारन गाँधी के साथ लग लिये थे. अगर उनके बेटे बेटी गाँधी के असर में न आते तो क्या वह कभी हिन्दुस्तान की आज़ादी की बात सोचते? जवान अरविंद ही, बूढ़ा अरविंद नहीं, जवानों को हथेली पर सिर रखना सिखा सका. उसके साथी जवान हिंसा के क़ायल होते हुए भी हिंसक नहीं थे, न हिंसा उनका पेशा था, न मन बहलाव, न कुछ और. उनकी लगन थी हिन्दुस्तान की आज़ादी. उस

بےتکے رسم رواج، گورنمنٹ کے کڑے قانون اور ماں باپ کی معمولی سے زیادہ اپنے ٹھیک، ناٹھیک سبھی حکموں کی پابندی کی خواہش۔

جوانو! تم جوان ہو۔ سو ہاتھی کی طاقت رکھنے والی کام واسنا کو تمہیں روکتے آئے ہو، تمہیں روک سکتے ہو اور تمہیں اس کو اگر چاہو تو بچے پیدا کرنے کی جگہ اپنے جسم کو چمکانے کے کام میں لگا سکتے ہو اور اس سے سوچنے کی طاقت بڑھا کر دنیا کی تکلیفوں کا حل نکالنے کے کام میں اسے جوت سکتے ہو۔ یہ کام نہ ادھیڑ ہاتھ میں لے سکتے ہیں نہ بوڑھے۔ اور تم ان کے ہاتھ میں یہ کام سونپنا اپنی شان کے خلاف سمجھوگے۔ جوانو! غصے جیسے طاقتور بھاؤ کو تمہارے سوا کون قابو میں رکھ سکتا ہے۔ کیا بوڑھا بدھ راج پاٹ کو لات مار سکتا تھا؟ کیا بوڑھا بدھ جوان عورت اور پہلے بچے کو چھوڑنے کی ہمت کر سکتا تھا؟ بدھ کا باپ سچ مچ بوڑھا تھا اور رام کا باپ تو اتنا بوڑھا تھا کہ بیٹے کی علیحدگی بھی نہ سہ سکا۔ کیا بوڑھا رام تلک کے وقت راج چھوڑنے کی بات سوچ سکتا تھا؟ کیا بوڑھے رام کو جنگل میں سیتا کو رکھنے کی بات سوجھ سکتی تھی؟ تیاگ بوڑھوں کا کام نہیں، جوان ہی کر سکتا ہے۔ گاندھی نے جن کے بل پر ہندستان کو آزاد کیا ان میں ۳۰ برس سے اوپر کے بہت ہی کم تھے۔ اور اگر کچھ بوڑھے تھے تو ان میں سے بہت سے ایسے تھے جو اپنے بیٹے بیٹیوں کے موہ کے کارن گاندھی کے ساتھ لگ لئے تھے۔ اگر انکے بیٹے بیٹی گاندھی کے اثر میں نہ آتے تو کیا وہ کبھی ہندستان کی آزادی کی بات سوچتے؟ جوان اروند ہی، بوڑھا اروند نہیں، جوانوں کو ہتھیلی پر سر رکھنا سکھا سکا۔ اسکے ساتھی جوان ہنسا کے قائل ہوتے ہوئے بھی ہنسک نہیں تھے، نہ ہنسا ان کا پیشہ تھا، نہ من بہلاؤ، نہ کچھ اور۔ انکی لگن تھی ہندستان کی آزادی۔ اس

है तो जिन माँ बाप ने शुरू शुरू में बहुत शोर मचाया होता है वही उस शादी शुदा जवान को कितने शौक़ से अपने घर में जगह देते हैं और किस तरह अपना सारा प्यार उस नई बहू पर उंडेल देते हैं. कहीं कहीं हमारी इस बात के ख़िलाफ़ ब्योहार भी सुनने और देखने को मिल सकता है. पर ज़रा गहरे जाने पर उस बुरे ब्योहार की तह में बेटे की समाज ब्योहार के लिहाज़ से अटपटी शादी कारन न मिलेगी. वहाँ कारन मिलेगा उनका इस तरह का स्वभाव. वह तो अगर बेटे ने बिलकुल रिवाजों के माफ़िक़ और माँ बाप की मर्ज़ी के मुताबिक़ भी शादी की होती तो उस बहू को भी वही फटकार और दुतकार मिलती जो दूसरी ज़ात या धर्म की बहू को मिल रही है. जवान को इतना गहरा जाने की ज़रूरत नहीं. उसका काम तो ऊँचा जाना है. जवान का ग्यान जवान के लिये बोझा नहीं होना चाहिये. और अगर वह बोझा है तो समझना चाहिये कि वह जवान बूढ़ा होगया. ग्यान आज़ादी पर सवार है. और आज़ादी पंखों वाली है, इसलिये आज़ादी और ग्यान मिलकर जवान को न बेजा ठोकर खाने देते हैं और न ऊँचा उठने से रोकते हैं. न जाने क्यों जवानों के बारे में यह कह बैठने का आम रिवाज हो गया है कि जवान जल्दी भटक जाता है और बुरे रास्ते पर लग जाता है. यह बात इतनी ही सच्चाई से दूर है जितनी यह बात कि आग की लौ ऊपर न जा कर नीचे की तरफ़ जाती है. हाँ, आग की लौ सुनार की फुँकनी से नीचे भी जाती हुई देखी जा सकती है. उसी तरह से जवान भी समाज सुनार की रिवाज फुँकनी के ज़रिये भटकते और खोटी राह पर चलते हुए मिल सकते हैं. पुलिस से तंग आकर जवानों के डकैत बनने की बात किसे नहीं मालूम. और समाज से तंग आकर जवान लड़कियों के वेश्या बन जाने की बात किससे छिपी हुई है. यह जवानी नहीं है जो बुराई की तरफ़ ढकेलती है. जवान को बुराई की तरफ़ ढकेलते हैं समाज के

ہے تو جن ماں باپ نے شروع شروع میں بہت شور مچایا ہوتا ہے وہی اُس شادی شدہ جوان کو کتنے شوق سے اپنے گھر میں جگہ دیتے ہیں اور کس طرح اپنا سارا پیار اُس نئی بہو پر اُنڈیل دیتے ہیں کہیں کہیں ہماری اِس بات کے خلاف بیوہار بھی سننے اور دیکھنے کو مل سکتا ہے . پر ذرا گہرے جانے پر اُس برے بیوہار کی تہہ میں بیٹے کی سماج بیوہار کے لحاظ سے اٹپٹی شادی کارن نہ ملیگی . وہاں کارن ملیگا اُن کا اس طرح کا سوبھاؤ . وہ تو اگر بیٹے نے بالکل رواجوں کے موافق اور ماں باپ کی مرضی کے مطابق بھی شادی کی ہوتی تو اُس بہو کو بھی وہی پھٹکار اور دتکار ملتی جو دوسری جات یا دھرم کی بہو کو مل رہی ہے . جوان کو اتنا گہرا جانے کی ضرورت نہیں . اس کا کام تو اونچا جانا ہے . جوان کا گیان جوان کے لئے بوجھا نہیں ہونا چاہئے . اور اگر وہ بوجھا ہے تو سمجھنا چاہئے کہ وہ جوان بوڑھا ہوگیا . گیان آزادی پر سوار ہے . اور آزادی پنکھوں والی ہے' اسلئے آزادی اور گیان مل کر جوان کو نہ بیجا ٹھوکر کھانے دیتے ہیں اور نہ اُونچا اُٹھنے سے روکتے ہیں. نہ جانے کیوں جوانوں کے بارے میں یہ کہہ بیٹھنے کا عام رواج ہو گیا ہے کہ جوان جلدی بھٹک جاتا ہے اور برے راستے پر لگ جاتا ہے . یہ بات اِتنی ہی سچائی سے دور ہے جتنی یہ بات کہ آگ کی لو اوپر نہ جا کر نیچے کی طرف جاتی ہے . ہاں' آگ کی لو سنار کی پھکنی سے نیچے بھی جاتی ہوئی دیکھی جا سکتی ہے . اُسی طرح سے جوان بھی سماج سنار کی رواج پھکنی کے ذریعے بھٹکتے اور کھوٹی راہ پر چلتے ہوئے مل سکتے ہیں . پولس سے تنگ آکر جوانوں کے ڈکیت بننے کی بات کسے نہیں معلوم . اور سماج سے تنگ آکر جوان لڑکیوں کے ویشیا بن جانے کی بات کس سے چھپی ہوئی ہے . یہ جوانی نہیں ہے جو برائی کی طرف ڈھکیلتی ہے . جوان کوبرائی کی طرف ڈھکیلتے ہیں سماج کے

पिछले नम्बर से आगे

जवानो !

वह जवान बूढ़ा होगया जो सिर्फ़ 'हाँ' करना जानता है. और जिसने 'ना' करने को ऐसा भुला दिया है मानो उसके पास अक़्ल ही नहीं. फ़ौज में छाँट छाँट कर जवान लिये जाते हैं मगर तुम्हें यह मालूम है कि वह किस लिये ? सिर्फ़ बूढ़ा बनाने के लिये. गाँव का किसान जवान है. रँगरूट हुआ और जवानी का दम घुटा. सिपाही बना और जवानी ने आख़िरी साँस ली. सिपाही मशीन बन जाता है. 'ना' करने से उसे सरोकार ही नहीं और मशीन कितनी ही नई क्यों न हो उसे जवान नहीं कहा जा सकता. जवान लफ़्ज़ तो वक़्त, जगह, काम और भाव की तबदीली का दूसरा नाम है. वह जवान जवान नहीं है जिसके लिये हर एक बात उसका धर्म ग्रन्थ. उसका गुरू, उसका अफ़सर या उसका मालिक उसके लिये सोच दे. वह जवान जवान नहीं है जिसके बीमार होने का फ़ैसला डाक्टरी की किताबें, डाक्टर या और कोई करे. वह जवान जवान नहीं है जिसका फ़ैसला समाज करे कि उसको किस ब्योपार में लगना चाहिये. वह जवान जवान नहीं है जो अपनी संगिनी छाँटने के मामले में अपने को उन बूढ़े माँ बाप के सपुर्द कर देता है जो किसी समाज के जाल में फँस कर रस्म रिवाज से इतने दबे हुए होते हैं कि वह बहुत समझदार होते हुए भी ठीक ठीक फ़ैसला कर सकने के क़ाबिल होने पर भी किसी मजबूरी की वजह से न ठीक फ़ैसला दे सकते हैं, न मन चाही बात कह सकते हैं. किस जवान लड़के या लड़की को यह तजरबा नहीं है कि जब वह अपनी ज़ात, प्रान्त, धर्म या मुल्क के बाहर से किसी से शादी कर बैठता

پچھلے نمبر سے آگے

جوانو !

وہ جوان بوڑھا ہو گیا جو صرف 'ہاں' کرنا جانتا ہے ۔ اور جس نے 'نا' کرنے کو ایسا بھلا دیا ہے مانو اسکے پاس عقل ہی نہیں ۔ فوج میں چھانٹ چھانٹ کر جوان لئے جاتے ہیں مگر تمہیں یہ معلوم ہے کہ وہ کس لئے ؟ صرف بوڑھا بنانے کے لئے ۔ گاؤں کا کسان جوان ہے ۔ رنگروٹ ہوا اور جوانی کا دم گھٹا ۔ سپاہی بنا اور جوانی نے آخری سانس لی ۔ سپاہی مشین بن جاتا ہے ۔ 'نا' کرنے سے اُسے سروکار ہی نہیں ۔ اور مشین کتنی ہی نئی کیوں نہ ہو اُسے جوان نہیں کہا جا سکتا ۔ جوان لفظ تو وقت' جگہ' کام اور بھاؤ کی تبدیلی کا دوسرا نام ہے ۔ وہ جوان جوان نہیں ہے جسکے لئے ہر ایک بات اُسکا دھرم گرنتھ' اُسکا گرو' اس کا افسر یا اس کا مالک اس کے لئے سوچ دے ۔ وہ جوان جوان نہیں ہے جسکے بیمار ہونے کا فیصلہ ڈاکٹری کی کتابیں' ڈاکٹر یا اور کوئی کرے ۔ وہ جوان جوان نہیں ہے جسکا فیصلہ سماج کرے کہ اُسکو کس بیوپار میں لگنا چاہئے ۔ وہ جوان جوان نہیں ہے جو اپنی سنگنی چھانٹنے کے معاملے میں اپنے آپکو اُن بوڑھے ماں باپ کے سپرد کر دیتا ہے جو کسی سماج کے جال میں پھنس کر رسم و رواج سے اتنے دبے ہوئے ہوتے ہیں کہ وہ بہت سمجھدار ہوتے ہوئے بھی اور ٹھیک ٹھیک فیصلے کر سکنے کے قابل ہونے پر بھی کسی مجبوری کی وجہ سے نہ ٹھیک فیصلہ دے سکتے ہیں' نہ من چاہی بات کہہ سکتے ہیں ۔ کسی جوان لڑکے یا لڑکی کو یہ تجربہ نہیں ہے کہ جب وہ اپنی ذات' پرانت' دھرم یا ملک کے باہر سے کسی سے شادی کر بیٹھتا

को पसन्द नहीं था. इसीलिये नियमावली में जो संशोधन (सुधार) हुआ उसका रूप ऐसा नहीं हुआ कि कांगरेस 'लोक सेवक संघ' बन जाय. पर उनकी मृत्यु के कारन इस विशय पर और ज़्यादा ज़ोर देने वाला भी अब कोई नहीं रह गया.''

(बाक़ी अगले नम्बर में)

''सुधारकों को विरोधियों के ग़ुस्से की आग में प्रानों की आहुती देनी पड़ेगी.''

—गांधी जी

کو پسند نہیں تھا . اِسی لئے نیماولی میں جو سنشودھن (سدھار) ہوا اسکا روپ ایسا نہیں ہوا کہ کانگریس 'لوک سیوک سنگھ' بن جائے . پر اُن کی مرتیو کے کارن اِس وشے پر اور زیادہ زور دینے والا بھی اب کوئی نہیں رہ گیا .''

(باقی اگلے نمبر میں)

'' سدھارکوں کو ورودھیوں کے غصے کی آگ میں پرانوں کی آہوتی دینی پڑے گی .''

—گاندھی جی

से बाहर रहते हुए उसे नैतिक बन्धनों में जकड़ सके, जो जनता को राजनीत के आतंक और शोशन से बचा कर रख सके और जो देस की सामाजिक, नैतिक और आरथिक हालत को पच्छिम की ग़ुलामी से आज़ाद रख सके. बापू का अटल विश्वास यह था कि काँगरेस और हुकूमत के दायरों के अन्दर रह कर यह मक़सद हासिल नहीं किया जा सकता. इसीलिये बरसों के गंम्भीर विचार के बाद बापू ने अपने नये संघ की बुनियाद डाली. हमारे सूबे का संघ, ज़ाहिर है, उनकी इस मंशा को पूरा नहीं करता बापू का यह नया तजरबा पूरा करने के लिये यह ज़रूरी है कि उसे शुद्ध रूप में और उनके आदर्शों और असूलों को सामने रखकर काम किया जाय. तभी देस को इससे पूरे फ़ायदे की उम्मीद हो सकती है

कुछ लोगों का ख़याल है कि बापू काँगरेस का मौजूदा संगठन तोड़ देना और हुकूमत से बाहर आजाना नहीं चाहते थे. यह ख़याल ठीक नहीं है. ऐसे लोगों को यक़ीन दिलाने के लिये हम बताते हैं कि श्री जवाहरलाल नेहरू ने वर्धा कानफ़रेन्स में रचनात्मक काजकर्ताओं के सामने कहा था कि—"बापू यह चाहते थे कि हम हुकूमत छोड़ दें और काँगरेस के मौजूदा संगठन को तोड़ दें. पर हमारी समझ में यह नहीं आता था कि हम अपनी ज़िम्मेदारी किस पर छोड़ दें." डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी नई पुस्तक "बापू के क़दमों में" में नीचे दी हुई सतरें लिखी हैं—

"उन्होंने (बापू ने) अपनी हत्या के कुछ ही घंटे पहले अपने विचारों को लेख-बद्ध कर दिया था. उनका ख़याल था कि काँगरेस राजनीत के काम से, जिसमें वह प्रत्यक्ष (सीधे) भाग लेती रही थी और अपने मंत्रिमंडल द्वारा काम करा रही थी, अलग होकर 'लोक सेवक संघ' का काम करे. 'लोक सेवक संघ' द्वारा ही वह गवरमेन्ट पर जो कुछ असर डाल सकती है डाले. पर वह काँगरेस के प्रमुख लोगों

سے باہر رہتے ہوئے اُسے نیتک بندھنوں میں جکڑ سکے، جو جنتا کو راج نیت کے آتنک اور شوشن سے بچا کر رکھ سکے اور جو دیس کی ساماجک نیتک، اور آرتھک حالت کو پچھم کی غلامی سے آزاد رکھ سکے ۔ باپو کا اٹل وشواس یہ تھا کہ کانگریس اور حکومت کے دائروں کے اندر رہ کر یہ مقصد حاصل نہیں کیا جاسکتا ۔ اِسی لئے برسوں کے گمبھیر وچار کے بعد باپو نے اپنے نئے سنگھ کی بنیاد ڈالی ۔ ہمارے صوبے کا 'سنگھ ظاہر ہے' اُن کی اِس منشا کو پورا نہیں کرتا ۔ باپو کا یہ نیا تجربہ پورا کرنے کیلئے یہ ضروری ہے کہ اُسے شدھ روپ میں اور اُن کے آدرشوں اور اصولوں کو سامنے رکھکر کام کیا جائے ۔ تبھی دیس کو اس سے پورے فائدے کی اُمید ہو سکتی ہے ۔

کچھ لوگوں کا خیال ہے کہ باپو کانگریس کا موجودہ سنگٹھن توڑ دینا اور حکومت سے باہر آجانا نہیں چاہتے تھے ۔ یہ خیال ٹھیک نہیں ہے ۔ ایسے لوگوں کو یقین دلانے کیلئے ہم بتاتے ہیں کہ شری جواہر لال نہرو نے وردھا کانفرنس میں رچناتمک کاج کرتاؤں کے سامنے کہا تھا کہ—"باپو یہ چاہتے تھے کہ ہم حکومت چھوڑ دیں اور کانگریس کے موجودہ سنگٹھن کو توڑ دیں ۔ پر ہماری سمجھ میں یہ نہیں آتا تھا کہ ہم اپنی یہ ذمہ داری کس پر چھوڑ دیں ۔" ڈاکٹر راجندر پرساد نے اپنی نئی پستک "باپو کے قدموں میں" میں نیچے دی ہوئی سطریں لکھی ہیں—

"اُنھوں نے (باپو نے) اپنی ہتیا کے کچھ ہی گھنٹے پہلے اپنے وچاروں کو لیکھ بدھ کر دیا تھا ۔ اُن کا خیال تھا کہ کانگریس راج نیت کے کام سے، جسمیں وہ پرتیکش (سیدھے) بھاگ لیتی رہی تھی اور اپنے منتری منڈل دوارا کام کرا رہی تھی، الگ ہو کر 'لوک سیوک سنگھ' کا کام کرے ۔ 'لوک سیوک سنگھ' دوارا ہی وہ گورنمنٹ پر جو کچھ اثر ڈال سکتی ہے ڈالے ۔ پر یہ کانگریس کے پرمکھ لوگوں

जा सकता था. इस कानफ़रेन्स में 'लोक सेवक संघ' का नाम जरूर आया. हमने ऊपर कहा है कि बापू रचनात्मक संस्थाओं के अलग अलग संगठनों को तोड़ कर उन सबको एक कर देना चाहते थे. इस कानफ़रेन्स की सबजेक्ट कमेटी में इस सवाल पर ग़ौर हुआ लेकिन कोई संस्था अपना संगठन तोड़ने पर राज़ी न हुई. आखिर में कानफ़रेन्स ने इस सवाल पर ग़ौर करने के लिये एक कमेटी बना दी जिसने कुछ महीने बाद इन संस्थाओं के संगठनों को अलग अलग रखते हुए एक मिली जुली काजकारी कमेटी बना दी और उसका नाम 'लोक सेवक संघ' रख दिया.

'लोक सेवक संघ' बनाने की दूसरी कोशिश यू. पी. प्रान्त में हुई. यहाँ सूबे की रचनात्मक कमेटी ने अपनी एक बैठक में, जिसमें श्री पंत जी, श्री टंडन जी और प्रान्त के दूसरे कई मिनिस्टर मौजूद थे, प्रान्तीय 'लोक सेवक संघ' बनाने के लिये एक कानफ़रेन्स बुलाना तय किया. यह कानफ़रेन्स कानपुर में हुई. इस कानफ़रेन्स ने 'लोक सेवक संघ' का विधान बनाने का काम एक काजकारी कमेटी बना कर उसके सुपुर्द कर दिया. इस कमेटी ने 'लोक सेवक संघ' का एक विधान बना लिया और यह कमेटी उसके मुताबिक़ प्रान्त में काम कर रही है.

इस 'लोक सेवक संघ' में और बापू के संघ में ऐसा बुनियादी फ़रक़ है जिससे वह मक़सद पूरा नहीं हो सकता जिसे सामने रखकर बापू ने अपना नया संघ बनाने की तजवीज़ की थी. बापू अपने संघ को काँगरेस और हुकूमत दोनों के दायरों से बाहर रखना चाहते थे. हमारे सूबे के संघ की काजकारी कमेटी में, जिसके आचार्य कृपलानी सदर हैं, तीन चौथाई से ज्यादा मेम्बर एसेम्बली के मेम्बर हैं. यहाँ हम इस बात के अच्छे या बुरे, उचित या अनुचित होने की बहस में जाना नहीं चाहते. हम सिर्फ़ यह कहना चाहते हैं कि बापू काँगरेस और हुकूमत के बाहर एक ऐसा संगठन बनाना चाहते थे जो राजनीत

جاسکتا تھا. اِس کانفرنس میں 'لوک سیوک سنگھ' کا نام ضرور آیا. ہم نے اُوپر کہا ہے کہ باپو رچناتمک سنستھاؤں کے الگ الگ سنگٹھنوں کو توڑ کر اُن سب کو ایک کر دینا چاہتے تھے. اِس کانفرنس کی سبجیکٹ کمیٹی میں اس سوال پر غور ہوا لیکن کوئی سنستھا اپنا سنگٹھن توڑنے پر راضی نہ ہوئی. آخر میں کانفرنس نے اِس سوال پر غور کرنے کیلئے ایک کمیٹی بنا دی جسنے کچھ مہینے بعد ان سنستھاؤں کے سنگٹھنوں کو الگ الگ رکھتے ہوئے ایک ملی جلی کاج کاری کمیٹی بنا دی اور اُسکا نام 'لوک سیوک سنگھ' رکھ دیا.

'لوک سیوک سنگھ' بنانے کی دوسری کوشش یو. پی. پرانت میں ہوئی. یہاں صوبے کی رچناتمک کمیٹی نے اپنی ایک بیٹھک میں، جسمیں شری پنت جی، شری ٹنڈن جی اور پرانت کے دوسرے کئی منسٹر موجود تھے، پرانتیہ 'لوک سیوک سنگھ' بنانے کیلئے ایک کانفرنس بلانا طے کیا. یہ کانفرنس کانپور میں ہوئی. اِس کانفرنس نے 'لوک سیوک سنگھ' کا ودھان بنانے کا کام ایک کاج کاری کمیٹی بنا کر اُسکے سپرد کر دیا. اِس کمیٹی نے 'لوک سیوک سنگھ' کا ایک ودھان بنا لیا اور یہ کمیٹی اُسکے مطابق پرانت میں کام کر رہی ہے.

اس 'لوک سیوک سنگھ' میں اور باپو کے سنگھ میں ایسا بنیادی فرق ہے جس سے وہ مقصد پورا نہیں ہوسکتا جسے سامنے رکھکر باپو نے اپنا نیا سنگھ بنانے کی تجویز کی تھی. باپو اپنے سنگھ کو کانگریس اور حکومت دونوں کے دائروں سے باہر رکھنا چاہتے تھے. ہمارے صوبے کے سنگھ کی کاج کاری کمیٹی میں، جسکے آچاریہ کرپلانی صدر ہیں، تین چوتھائی سے زیادہ ممبر اسمبلی کے ممبر ہیں. یہاں ہم اسبات کے اچھے یا برے، اچت یا انوچت ہونے کی بحث میں جانا نہیں چاہتے. ہم صرف یہ کہنا چاہتے ہیں کہ باپو کانگریس اور حکومت کے باہر ایک ایسا سنگٹھن بنانا چاہتے تھے جو راج نیت

कांगरेस कमेटी ने भी इस पर ग़ौर किया. पर इसकी तरफ़ देस में किसी का खास ध्यान न गया. बात यह है कि रचनात्मक काज-कर्ताओं ने इसे बापू के जीवन का एक ऐसा राजकाजी क़दम समझा जिसका उनसे कोई खास सम्बन्ध दिखाई नहीं देता था. इधर आल इंडिया कांगरेस कमेटी के लिये इस प्रस्ताव को मान कर अपने हाथों आत्म हत्या कर लेना बिलकुल नामुमकिन था. इसलिये उसने बापू की जिन्दगी के सब से बड़े और सब से इनक़लाबी क़दम की तरफ़ कोई खास ध्यान नहीं दिया.

बापू खूब जानते थे कि आल इंडिया काँगरेस कमेटी हरगिज़ उनके प्रस्ताव को मंज़ूर न करेगी. यह प्रस्ताव उसके सामने रखकर बापू ने उसकी तरफ़ अपना फ़र्ज़ अदा किया और साथ ही साथ उसे यह चेतावनी दे दी कि अब वह अपने मिशन को पूरा करने के लिये देस में एक नया दल क़ायम करेंगे. अगर बापू जिन्दा रहते तो इस प्रस्ताव का आल इंडिया काँगरेस कमेटी पर काफ़ी दबाव पड़ता और देस के सामने एक बड़ी गंभीर हालत पैदा हो जाती. बापू की मौत ने आल इंडिया काँगरेस कमेटी का रास्ता साफ़ कर दिया और उसे उस प्रस्ताव की तरफ़ कोई खास ध्यान देने की जरूरत ही न रही.

'लोक सेवक संघ' की योजना बापू ने उस कानफ़रेन्स के सामने पेश करने के लिये बनाई थी जिसे वह वर्धा में बुलाना चाहते थे. उनके मरने के बाद वह कानफ़रेन्स तो हुई लेकिन उस पर काँगरेस और हुकूमत के लीडरों का इतना असर रहा कि उसका ध्यान भी इस योजना की तरफ़ न गया. देस के सारे रचनात्मक काजकर्ता ३० बरस तक राजनीत में हमेशा काँगरेस के पीछे पीछे चलते रहे. जो ज़बर-दस्त इनक़लाबी क़दम बापू ने अपने 'लोक सेवक संघ' के रूप में उठाया था उसकी इन काजकर्ताओं को न बापू से आशा ही थी और न उसकी राजकाजी अहमियत की तरफ़ इन काजकर्ताओं का ध्यान ही

کانگریس کمیٹی نے بھی اسپر غور کیا. پر اسکی طرف دیس میں کسی کا خاص دھیان نہ گیا . بات یہ ہے کہ رچناتمک کاج کرتاؤں نے اِسے باپو کے جیون کا ایک ایسا راج کاجی قدم سمجھا جسکا اُن سے کوئی خاص سمبندھ دکھائی نہیں دیتا تھا . ادھر آل اِنڈیا کانگریس کمیٹی کیلئے اِس پرستاؤ کو مان کر اپنے ہاتھوں آتم ھتیا کر لینا بالکل ناممکن تھا . اسلئے اُسنے باپو کی زندگی کے سب سے بڑے اور سب سے اِنقلابی قدم کی طرف کوئی خاص دھیان نہیں دیا .

باپو خوب جانتے تھے کہ آل اِنڈیا کانگریس کمیٹی ھرگز اُنکے پرستاؤ کو منظور نہ کرے گی. یہ پرستاؤ اُسکے سامنے رکھکر باپو نے اُسکی طرف اپنا فرض ادا کیا اور ساتھ ھی ساتھ اُسے یہ چیتاوني دے دی کہ اب وہ اپنے مشن کو پورا کرنے کیلئے دیس میں ایک نیا دل قائم کرینگے . اگر باپو زندہ رھتے تو اس پرستاؤ کا آل اِنڈیا کانگریس کمیٹی پر کافی دباؤ پڑتا اور دیس کے سامنے ایک بڑی گمبھیر حالت پیدا ھوجاتی . باپو کی موت نے آل اِنڈیا کانگریس کمیٹی کا راستہ صاف کر دیا اور اُسے اُس پرستاؤ کی طرف کوئی خاص دھیان دینے کی ضرورت ھی نہ رھی .

' لوک سیوک سنگھ ' کی یوجنا باپو نے اُس کانفرنس کے سامنے پیش کرنے کیلئے بنائی تھی جسے وہ وردھا میں بلانا چاھتے تھے . اُنکے مرنے کے بعد وہ کانفرنس تو ھوئی لیکن اُسپر کانگریس اور حکومت کے لیڈروں کا اتنا اثر رھا کہ اُسکا دھیان بھی اِس یوجنا کی طرف نہ گیا . دیس کے سارے رچناتمک کاج کرتا ۳۰ برس تک راج نیت میں ھمیشہ کانگریس کے پیچھے پیچھے چلتے رھے . جو زبردست اِنقلابی قدم باپو نے اپنے 'لوک سیوک سنگھ' کے روپ میں اُٹھایا تھا اُسکی اِن کاج کرتاؤں کو نہ باپو سے آشا ھی تھی اور نہ اُسکی راج کاجی اھمیت کی طرف اِن کاج کرتاؤں کا دھیان ھی

धीरे धीरे अपने नये प्रोग्राम की रूप रेखा तैयार कर लेने के बाद उन्होंने वर्धा में रचनात्मक काजकर्ताओं की एक कानफ़रेन्स बुलवाने की चरचा करनी शुरू की. पर यह कानफ़रेन्स उनकी ज़िन्दगी में नहीं हो सकी. उनके मरने के बाद यह कानफ़रेन्स उस समय हुई जब देस की हालत बिलकुल बदल चुकी थी.

जिस तरह अपने रचनात्मक काजकर्ताओं और साथियों के सामने बापू अपने विचार रख रहे थे उसी तरह कांगरेस और हुकूमत के ख़ास लोगों से वह अपनी विचारधारा पर बहसें कर रहे थे. हुकूमत को छोड़ देने और कांगरेस संगठन को तोड़ देने का ख़याल उनके सामने था और अपनी ज़िन्दगी में पहिली बार कांगरेस के अधिकारियों और अपने पुराने राजकाजी चेलों को बापू यह बता रहे थे कि अगर कांगरेस अब भी उनकी बातों को न मानेगी और अहिंसात्मक इनक़लाब यानी अहिंसात्मक क्रान्ति के रास्ते को नहीं अपनायगी तो बापू देस में अपना आन्दोलन चलाने के लिये एक नया दल तैयार करेंगे. कांगरेस और उसकी हुकूमत के लिये इससे ज़्यादा ख़तरनाक बात दूसरी नहीं हो सकती थी. इसलिये बड़े से बड़े राजकाजी लीडरों ने बापू को समझाने और उनके इस इरादे को बदलवाने के लिये बेहद कोशिश की मगर कामयाब न हुए. आख़िरकार बापू ने अपने सारे विचारों को 'लोक सेवक संघ' का रूप देकर इंडियन नेशनल कांगरेस के मंत्री को इसके विधान का मसविदा इस हिदायत के साथ दे दिया कि यह इसे बापू की तरफ़ से प्रस्ताव के रूप में आल इंडिया कांगरेस कमेटी के सामने पेश करें. इस के तीन चार घंटे के बाद ही बापू के संसारी जीवन का अंत हो गया.

(२)

लोक सेवक संघ का मसौदा बापू के मरने के बाद, बापू की [illegible] के नाम से 'हरिजन' में छपा था. आल इंडिया

دھیرے دھیرے اپنے نئے پروگرام کی روپ ریکھا تیار کر لینے کے بعد اُنہوں نے وردھا میں رچناتمک کاج کرتاؤں کی ایک کانفرنس بلوانے کی چرچا کرنی شروع کی. پر یہ کانفرنس اُن کی زندگی میں نہیں ہوسکی. اُنکے مرنے کے بعد یہ کانفرنس اُس سمے ہوئی جب دیس کی حالت بالکل بدل چکی تھی.

جسطرح اپنے رچناتمک کاج کرتاؤں اور ساتھیوں کے سامنے باپو اپنے وچار رکھ رہے تھے اسی طرح کانگریس اور حکومت کے خاص لوگوں سے وہ اپنی وچار دھارا پر بحثیں کر رہے تھے. حکومت کو چھوڑ دینے اور کانگریس سنگٹھن کو توڑ دینے کا خیال اُنکے سامنے تھا اور اپنی زندگی میں پہلی بار کانگریس کے ادھیکاریوں اور اپنے پرانے راج کاجی چیلوں کو باپو یہ بتا رہے تھے کہ اگر کانگریس اب بھی اُن کی باتوں کو نہ مانے گی اور اہنساتمک انقلاب یعنی اہنساتمک کرانتی کے راستے کو نہیں اپنائے گی تو باپو دیس میں اپنا آندولن چلانے کیلئے ایک نیا دل تیار کرینگے. کانگریس اور اسکی حکومت کیلئے اس سے زیادہ خطرناک بات دوسری نہیں ہوسکتی تھی. اسلئے بڑے سے بڑے راج کاجی لیڈروں نے باپو کو سمجھانے اور اُنکے اِس اِرادے کو بدلوانے کیلئے بے حد کوشش کی مگر کامیاب نہ ہوئے آخرکار باپو نے اپنے سارے وچاروں کو 'لوک سیوک سنگھ' کا روپ دے کر اِنڈین نیشنل کانگریس کے منتری کو اِسکے ودھان کا مسودہ اس ہدایت کے ساتھ دے دیا کہ وہ اِسے باپو کی طرف سے پرستاؤ کے روپ میں آل اِنڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے پیش کریں. اِسکے تین چار گھنٹے کے بعد ھی باپو کے سنساری جیون کا انت ہوگیا.

(۲)

'لوک سیوک سنگھ' کا مسودہ باپو کے مرنے کے بعد' باپو کی آخری وصیت کے نام سے ' ہریجن ' میں چھپا تھا. آل اِنڈیا

अपनी सभ्यता और संस्कृति को मिटा कर हमेशा के लि सामाजिक, आरथिक और नैतिक जीवन में आज कल के पच्छिम का ग़ुलाम बन जाय. बापू के लिये इस से ज़्यादा दुखकी घटना और क्या हो सकती थी कि उनका सत्य और अहिंसा के हथियारों से संसार में अहिंसात्मक इनक़लाब पैदा कर देने का सपना पूरा होने के नज़दीक पहुँच कर इस तरह एकबारगी भंग होजाय. उस सपने का भंग होजाना जो उनके जीवन का मिशन था और जिस के पूरा करने की कोशिश में उन्होंने अपने जीवन के ५० साल खपाये थे और अपना तन मन धन सब कुछ निछावर किया था. एक तरह से गांधी युग के पहिले दौर का ख़तम हो जाना है. ख़ुद बापू पर इसका यही असर पड़ा. इसका सब से बड़ा सबूत बापू का 'लोक सेवक संघ' बनाना है जो असल में उनके जीवन के दूसरे दौर का बुनियादी पत्थर था.

बापू के ख़ास ख़ास साथी यह देख रहे थे कि अपनी मौत के साल डेढ़ साल पहिले बापू अहिंसात्मक इनक़लाब के इतिहास में एक नया युग शुरू करने के ख़याल में डूबे रहते हैं, और अपनी पुरानी योजनाओं में बुनियादी तबदीलियाँ कर रहे हैं. बापू के आस पास के लोगों को उनकी बातों से यह साफ़ पता चलता था कि वह कोई इनक़लाबी क़दम उठाने की तैयारी कर रहे हैं. बापू ने अपनी खादी की योजना को बिलकुल बदल दिया, उस में से केवल खादी पैदा करने के बदले 'वस्त्र स्वावलंबन' यानी अपने कपड़ों के लिये ख़ुद सूत कात कर उसी के कपड़े पहनना, खादी योजना का ख़ास मक़सद बना दिया. बापू ने अपनी रचनात्मक संस्थाओं के सामने यह योजना पेश की कि सब संस्थाएँ अपने अलग अलग संगठनों को तोड़ डालें और एक संघ का रूप ले लें. इसी के साथ साथ उन्होंने अपनी सारी पुरानी रचनात्मक योजनाओं को मिला कर उसे 'समग्र सेवा' (सब तरह की सेवा) का नाम दिया. इस तरह

پرانی سبھیتا اور سنسکرتی کو مٹا کر ہمیشہ کیلئے ساماجک' آرتھک اور نیتک جیون میں آجکل کے پچھم کا غلام بن جائے . باپو کیلئے اس سے زیادہ دکھ کی گھٹنا اور کیا ہو سکتی تھی کہ اُن کا ستیہ اور اہنسا کے ہتھیاروں سے سنسار میں اہنساتمک اِنقلاب پیدا کردینے کا سپنا پورا ہونے کے نزدیک پہونچ کر اِسطرح ایکبارگی بھنگ ہو جائے . اُس سپنے کا بھنگ ہوجانا' جو اُنکے جیون کا مشن تھا اور جسکے پورا کرنے کی کوشش میں اُنھوں نے اپنے جیون کے پچاس سال کھپائے تھے اور اپنا تن من دھن سب کچھ نچھاور کیا تھا' ایک طرح سے گاندھی یگ کے پہلے دور کا ختم ہوجانا ہے . خود باپو پر اِسکا یہی اثر پڑا . اِسکا سب سے بڑا ثبوت باپو کا 'لوک سیوک سنگھ' بنانا ہے جو اصل میں اُنکے جیون کے دوسرے دور کا بنیادی پتھر تھا .

باپو کے خاص خاص ساتھی یہ دیکھ رہے تھے کہ اپنی موت کے سال ڈیڑھ سال پہلے باپو اہنساتمک انقلاب کے اِتہاس میں ایک نیا یگ شروع کرنے کے خیال میں ڈوبے رہتے ہیں' اور اپنی پرانی یوجناؤں میں بنیادی تبدیلیاں کر رہے ہیں . باپو کے آس پاس کے لوگوں کو اُن کی باتوں سے یہ صاف پتہ چلتا تھا کہ وہ کوئی انقلابی قدم اُٹھانے کی تیاری کر رہے ہیں . باپو نے اپنی کھادی کی یوجنا کو بالکل بدل دیا' اُس میں سے کیول کھادی پیدا کرنے کے بدلے 'وستر سواولمبن' یعنی اپنے کپڑوں کیلئے خود سوت کات کر اُسی کے کپڑے پہننا' کھادی یوجنا کا خاص مقصد بنا دیا . باپو نے اپنی رچنا تمک سنستھاؤں کے سامنے یہ یوجنا پیش کی کہ سب سنستھائیں اپنے الگ الگ سنگٹھنوں کو توڑ ڈالیں اور ایک سنگھ کا روپ لے لیں . اسی کے ساتھ ساتھ اُنھوں نے اپنی ساری پرانی رچناتمک یوجناؤں کو ملا کر اُسے 'سمگر سیوا' (سب طرح کی سیوا) کا نام دیا . اسطرح

कोई बात हो ही नहीं सकती. मगर हालत बिलकुल इसके उल्टी थी. हालत यहाँ तक पहुँच गई थी कि आख़िर दिनों में अपने चेलों की बातों और बहसों की सख़्ती और कुटता को बापू बरदाश्त न कर सकते थे और ख़ामोश होकर आँसू बहाने लगते थे. बापू काँगरेस में दो दल किये बग़ैर न तो नया संगठन बना सकते थे, न जनता की मदद से काँगरेस के नेताओं को अपनी पालिसी बदलने पर मजबूर कर सकते थे. ज्यों ज्यों आज़ादी का समय क़रीब आता गया बापू की बेबसी बराबर बढ़ती गई. आख़िर नौबत यहाँ तक पहुंची कि बापू की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ और बिना उनकी सलाह के देस के दो टुकड़े कर दिये गये. इस ग़लत क़दम से जो नतीजे पैदा हुए उनसे देस को बचाने की कोशिश में बापू को अपनी जान देनी पड़ी. देस के टुकड़े हो जाना बापू के जीवन के लिये बहुत दुख की बात थी. जीवन में इतना बड़ा धक्का बापू को कभी न पहुँचा था. फिर भी इतनी उदारता के साथ उन्होंने अपने चेलों की इस ग़लती को निबाहा और इतनी हिम्मत और ताक़त के साथ इस ग़लती से पैदा होने वाले तूफ़ान का मुक़ाबला किया कि यह बापू की ज़िन्दगी की सबके बड़ी यादगार है.

काँगरेस के तरीक़ों और पालसियों पर इस बलिदान का ज़रा भी असर न पड़ा. काँगरेस ने हुकूमत पाते ही जो तरीक़े अख़्तियार किये उनसे यह साफ़ ज़ाहिर हो गया कि काँगरेस को अब बापू के आदर्शों और साधनों की कोई ज़रूरत बाक़ी नहीं रही. जिस ग़रज़ के लिये काँगरेस बापू का इस्तेमाल करती थी वह पूरी होगई. अब वह पच्छिमी सभ्यता को देस में फैलायगी और पच्छिमी राजनीत के रास्तों पर चलेगी. काँगरेस के जीवन में इतनी बड़ी तबदीली का होजाना बापू और देस दोनों के लिये एक बड़ी घटना थी. देस का इस से बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता था कि उसे राजकाजी आज़ादी इसलिये मिले कि वह

کوئی بات ہو ہی نہیں سکتی. مگر حالت بالکل اِسکے اُلٹی تھی. حالت یہاں تک پہونچ گئی تھی کہ آخر دنوں میں اپنے چیلوں کی باتوں اور بحثوں کی سختی اور کٹوتا کو باپو برداشت نہ کر سکتے تھے اور خاموش ہوکر آنسو بہانے لگتے تھے. باپو کانگریس میں دو دل کئے بغیر نہ تو نیا سنگٹھن بنا سکتے تھے' نہ جنتا کی مدد سے کانگریس کے نیتاؤں کو اپنی پالیسی بدلنے پر مجبور کر سکتے تھے. جیوں جیوں آزادی کا سمے قریب آتا گیا باپو کی بے بسی برابر بڑھتی گئی. آخر نوبت یہاں تک پہونچی کہ باپو کی مرضی کے خلاف اور بنا اُن کی صلاح کے دیس کے دو ٹکڑے کر دئے گئے. اِس غلط قدم سے جو نتیجے پیدا ہوئے اُن سے دیسکو بچانے کی کوشش میں باپو کو اپنی جان دینی پڑی. دیس کے ٹکڑے ہوجانا باپو کے جیون کیلئے بہت دکھ کی بات تھی. جیون میں اِتنا بڑا دھکا باپو کو کبھی نہ پہونچا تھا. پھر بھی اِتنی اُدارتا کے ساتھ اُنھوں نے اپنے چیلوں کی اِس غلطی کو نباھا اور اتنی ہمت اور طاقت کے ساتھ اِس غلطی سے پیدا ہونے والے طوفان کا مقابلہ کیا کہ یہ باپو کی زندگی کی سب سے بڑی یادگار ہے.

کانگریس کے طریقوں اور پالیسیوں پر اس بلیدان کا ذرا بھی اثر نہ پڑا. کانگریس نے حکومت پاتے ہی جو طریقے اختیار کئے اُن سے یہ صاف ظاہر ہوگیا کہ کانگریس کو اب باپو کے آدرشوں اور سادھنوں کی کوئی ضرورت باقی نہیں رہی. جس غرض کیلئے کانگریس باپو کا استعمال کرتی تھی وہ پوری ہوگئی. اب وہ پچھمی سبھیتا کو دیس میں پھیلائے گی اور پچھمی راج نیت کے راستوں پر چلیگی. کانگریس کے جیون میں اِتنی بڑی تبدیلی کا ہوجانا باپو اور دیس دونوں کیلئے ایک بڑی گھٹنا تھی. دیس کا اِس سے بڑا دربھاگیہ اور کیا ہوسکتا تھا کہ اُسے راجکاجی آزادی اسلئے ملے کہ وہ اپنے

को नहीं माना और काँगरेस के मक़सद को वैसा ही रहने दिया. आख़िर इसी बिना बापू को काँगरेस की चार आने वाली मेम्बरी तक से इस्तीफ़ा देना पड़ा. काँगरेस के मेम्बर न होते हुए भी बापू बराबर काँगरेस की रहनुमाई करते रहे. उन्होंने कोई दूसरा दल नहीं बनाया और न अपने रचनात्मक काजकर्ताओं को काँगरेस संगठन से अलग किया. कारन यह था कि अगर रचनात्मक काजकर्ता काँगरेस से अलग हो जाते तो काँगरेस फिर से हिंसात्मक रास्तों को अख़्तियार करने पर लाचार हो जाती. दूसरे बापू का एक नया दल बना लेना देस की मिलीजुली शक्ति के टुकड़े कर देता. इससे काँगरेस कमज़ोर पड़ जाती और बिदेसी हुकूमत की देस को नुक़सान पहुंचाने की और देस पर अपना क़ब्ज़ा क़ायम रखने की ताक़त बहुत बढ़ जाती. इस सबसे बापू के अहिंसात्मक इनक़लाब पैदा करने के मिशन को बहुत बड़ा नुक़सान पहुँच सकता था. इसलिये उन्होंने आख़िर दम तक कोई दल अपना अलग नहीं बनाया और गहरे से गहरे मतभेद होते हुए भी बिदेसी हुकूमत के ख़िलाफ़ काँगरेस का साथ देते रहे.

काँगरेस ने इससे पूरा फ़ायदा उठाया. काँगरेस के वह नेता जो बापू के आदर्शों, साधनों और योजनाओं को कोरा आदर्शवाद और अव्योहारिक समझते थे, यानी यह मानते थे कि यह केवल कहने की बातें हैं करने धरने की नहीं, जनता के सामने बापू की और उनके साधनों, व योजनाओं की इतनी तारीफ़ें करते थे कि जनता को यह शुबह ही नहीं हो सकता था कि इनमें और बापू में कितना गहरा मतभेद है और यह अपनी सारी ताक़त देस को उन रास्तों की तरफ़ ले जाने में लगा रहे हैं जो बापू को नापसन्द हैं और जिन्हें बापू देस के लिये घातक समझते हैं. जनता बापू की शक्ति को अपार मानती थी और समझती थी कि उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़

کو نہیں مانا اور کانگریس کے مقصد کو ویسا ھی رھنے دیا . آخر اِسی بنا پر باپو کو کانگریس کی چار آنے والی ممبری تک سے استعفا دینا پڑا. کانگریس کے ممبر نہ ھوتے ھوئے بھی باپو برابر کانگریس کی رہنمائی کرتے رھے . اُنھوں نے کوئی دوسرا دل نہیں بنایا اور نہ اپنے رچنا تمک کاج کرتاؤں کو کانگریس سنگٹھن سے الگ کیا . کارن یہ تھا کہ اگر رچناتمک کاج کرتا کانگریس سے الگ ھوجاتے تو کانگریس پھر سے ھنساتمک راستوں کو اختیار کرنے پر لاچار ھوجاتی . دوسرے باپو کا ایک نیا دال بنا لینا دیس کی ملی جلی شکتی کے ٹکڑے کر دیتا . اس سے کانگریس کمزور پڑجاتی اور بدیسی حکومت کی دیس کو نقصان پہونچانے کی اور دیس پر اپنا قبضہ قائم رکھنے کی طاقت بہت بڑھ جاتی . اِس سب سے باپو کے اھنسا تمک اِنقلاب پیدا کرنے کے مشن کو بہت بڑا نقصان پہونچ سکتا تھا . اِسلئے اُنھوں نے آخر دم تک کوئی دل اپنا الگ نہیں بنایا اور گہرے سے گہرے مت بھید ھوتے ھوئے بھی بدیسی حکومت کے خلاف کانگریس کا ساتھ دیتے رھے .

کانگریس نے اِس سے پورا فائدہ اُٹھایا . کانگریس کے وہ نیتا جو باپو کے آدرشوں، سادھنوں اور یوجناؤں کو کورا آدرشواد اور ابیوھارک سمجھتے تھے، یعنی یہ مانتے تھے کہ یہ کیول کہنے کی باتیں ھیں کرنے دھرنے کی نہیں، جنتا کے سامنے باپو کی اور اُنکے سادھنوں و یوجناؤں کی اتنی تعریفیں کرتے تھے کہ جنتا کو یہ شبہ ھی نہیں ھوسکتا تھا کہ اِن میں اور باپو میں کتنا گہرا مت بھید ھے اور یہ اپنی ساری طاقت دیس کو اُن راستوں کی طرف لے جانے میں لگا رھے ھیں جو باپو کو ناپسند ھیں اور جنھیں باپو دیس کیلئے گھاتک سمجھتے ھیں . جنتا باپو کی شکتی کو اَپار مانتی تھی، اور سمجھتی تھی کہ اُن کی مرضی کے خلاف

तैयार करने पड़े. इन काजकर्ताओं से वह हमेशा काँगरेस की पार्टीबन्दियों और राजकाजी दायरों की गंदी खींचातानी से बाहर रख कर काम लेना चाहते थे. काँगरेस की हालत को देखकर उन्हें यह यक़ीन हो गया था कि आख़ीर में काँगरेस के ज़रिये अहिंसात्मक इनक़लाब पैदा नहीं किया जा सकेगा और अपने इस मिशन को पूरा करने के लिये उन्हें अपनी इसी रिज़र्व सेना से काम लेना होगा. बापू का यह ख़याल बराबर मज़बूत होता गया इस तरह बापू के और काँगरेस के बीच की खाई बराबर गहरी और चौड़ी होती गई. बापू का असर काँगरेस पर बराबर घटता गया यहाँ तक कि एक दिन वह आया कि बापू का काँगरेस के अन्दर रहना भी मुमकिन न रह गया.

बापू काँगरेस में इस शर्त पर शामिल हुए थे कि काँगरेस "जायज़ और शान्तिमय साधनों" का इस्तेमाल करना अपना मक़सद बना लेगी. उनके कहने से इस मक़सद को काँगरेस ने अपने विधान में शामिल कर लिया था. सन ३० और ३२ के आन्दोलनों में काँगरेस ने बहुत सी बातें ऐसी कीं जिन्हें बापू नाजायज़ और हिंसा समझते थे. इस पर बापू में और काँगरेस के लीडरों में गहरा मतभेद हो गया. इन लीडरों का यह कहना था कि लूटमार, क़त्ल और ख़ून को छोड़ कर और जितनी बातें और कोशिशें देस हित के लिये की जाँय वह सब 'जायज़' शब्द में आती हैं चाहे बापू इनके मानी कुछ भी समझें. बापू कहते थे कि काँगरेस विधान में जायज़ (लेजिटिमेट) और शान्तिमय (पीसफ़ुल) यह दोनों शब्द मैंने ही सत्य और अहिंसा के मानी में जुड़वाए हैं कि जिसमें आम लोग इसे समझ सकें. अब साफ़ ज़ाहिर हो गया है कि इन शब्दों से भ्रम पैदा हो सकता है. इसीलिये इन शब्दों का यह मतलब साफ़ कर देना चाहिये. आख़िर को यह बात बम्बई में आल इंडिया काँगरेस कमेटी के सामने आई. कमेटी ने बापू की बात

تیار کرنے پڑے . اِن کاج کرتاؤں سے وہ ھمیشہ کانگریس کی پارٹی بندیوں اور راج کاجی دائروں کی گندی کھینچا تانی سے باہر رکھکر کام لینا، چاھتے تھے . کانگریس کی حالت کو دیکھکر اُنھیں یہ یقین ھوگیا تھا کہ آخیر میں کانگریس کے ذریعے اھنساتمک انقلاب پیدا نہیں کیا جاسکیگا اور اپنے اس مشن کو پورا کرنے کیلئے اُنھیں اپنی اِسی رزرو سینا سے کام لینا ھوگا . باپو کا یہ خیال برابر مضبوط ھوتا گیا . اسطرح باپو کے اور کانگریس کے بیچ کی کھائی برابر گہری اور چوڑی ھوتی گئی. باپو کا اثر کانگریس پر برابر گھٹتا گیا یہاں تک کہ ایک دن وہ آیا کہ باپو کا کانگریس کے اندر رھنا بھی ممکن نہ رہ گیا .

باپو کانگریس میں اِس شرط پر شامل ھوئے تھے کہ کانگریس ” جائز اور شانتی مے سادھنوں “ کا استعمال کرنا اپنا مقصد بنالے گی . اُنکے کہنے سے اِس مقصد کو کانگریس نے اپنے ودھان میں شامل کر لیا تھا . سن ۳۰ اور ۳۲ کے آندولنوں میں کانگریس نے بہت سی باتیں ایسی کیں جنھیں باپو ناجائز اور ھنسا سمجھتے تھے . اس پر باپو میں اور کانگریس کے لیڈروں میں گہرا مت بھید ھوگیا . اِن لیڈروں کا یہ کہنا تھا کہ لوٹ مار، قتل اور خون کو چھوڑ کر اور جتنی باتیں اور کوششیں دیس ھت کیلئے کی جائیں وہ سب ' جائز ' شبد میں آتی ھیں چاھے باپو اِسکے معنی کچھ بھی سمجھیں. باپو کہتے تھے کہ کانگریس ودھان میں جائز (لے جیٹیمیٹ) اور شانتی مے (پیس فل) یہ دونوں شبد میں نے ھی ستیہ اور اھنسا کے معنی میں جڑ وائے ھیں کہ جس میں عام لوگ اِسے سمجھ سکیں . اَب صاف ظاھر ھوگیا ھے کہ اِن شبدوں سے بھرم پیدا ھوسکتا ھے . اِسلئے اِن شبدوں کا یہ مطلب صاف کردینا چاھئے . آخر کو یہ بات بمبئی میں آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے آئی . کمیٹی نے باپو کی بات

आधार पर हुई है. यह देख लेने के बाद बापू की शख़्सियत को छोड़ कर वह उनके सिद्धान्तों की सच्चे दिल से पैरवी करने लगेगी. वह काँगरेस की अगुवाई इसी उम्मीद पर कर रहे थे और यही उम्मीद उनके मरने के कुछ पहले तक बनी रही. पर उनकी यह उम्मीद पूरी न हुई. काँगरेस हमेशा बेदिली और मजबूरी से ही उनके सिद्धान्तों और प्रोग्रामों को पूरा करती रही. आख़िर बापू को मजबूर होकर काँगरेस को तोड़ देने या उसका मुक़ाबला करने के लिये 'लोक सेवक संघ' का विधान बनाना पड़ा.

बापू काँगरेस को समय समय पर राह दिखाते रहे फिर भी उनके मरते दम तक उनके और काँगरेस के बीच बराबर एक ज़बरदस्त खाई बनी रही. सबसे दुख की घटना यह है कि जैसे जैसे बापू को कामयाबी होती गई वैसे वैसे यह खाई और चौड़ी और गहरी होती चली गई. यह कामयाबियाँ जैसे जैसे काँगरेस को हुकूमत की ताक़त और दौलत पर अधिकार पाने के क़रीब पहुंचाती जाती थीं वैसे वैसे ही काँगरेस बापू के परमार्थी आदर्शों और सेवा, त्याग और तप के मार्ग से दूर होती जाती थी. यहाँ तक कि तख़्तनशीनी के बाद काँगरेस के जीवन में इन सब बातों का निशान तक बाक़ी न रहा.

बापू ने जितने प्रोग्राम देस के सामने रक्खे उनका मक़सद या तो किसी ख़ास मामले में गवरमेन्ट पर अहिंसात्मक दबाव डालकर उसे मजबूर करना या देस की किन्हीं बुराइयों और कमियों को दूर करके देस में जागृति, आत्मबल और संगठन पैदा करना होता था. काँगरेस इनमें से पहली तरह के प्रोग्रामों को तो कुछ तोड़ फोड़कर चलाती थी, लेकिन दूसरी तरह के प्रोग्रामों की तरफ़ वह कोई ध्यान ही न देती थी. इसीलिये अपने रचनात्मक प्रोग्रामों को चलाने के लिये बापू को अलग संगठन बनाने और नये कार्यकर्ता

آدھار پر ہوئی ہے . یہ دیکھ لینے کے بعد باپو کی شخصیت کو چھوڑ کر وہ اُنکے سدھانتوں کی سچے دل سے پیروی کرنے لگیگی . وہ کانگریس کی اگوائی اِسی اُمید پر کر رہے تھے اور یہی اُمید اُنکے مرنے کے کچھ پہلے تک بنی رہی. پر اُن کی یہ اُمید پوری نہ ہوئی . کانگریس ہمیشہ بیدلی اور مجبوری سے ہی اُنکے سدھانتوں اور پروگراموں کو پورا کرتی رہی آخر باپو کو مجبور ہوکر کانگریس کو توڑ دینے یا اُسکا مقابلہ کرنے کیلئے 'لوک سیوک سنگھ' کا ودھان بنانا پڑا .

باپو کانگریس کو سمے سمے پر راہ دکھاتے رہے پھر بھی اُنکے مرتے دم تک اُنکے اور کانگریس کے بیچ برابر ایک زبردست کھائی بنی رہی . سب سے دکھ کی گھٹنا یہ ہے کہ جیسے جیسے باپو کو کامیابی ہوتی گئی ویسے ویسے یہ کھائی اور چوڑی اور گہری ہوتی چلی گئی. یہ کامیابیاں جیسے جیسے کانگریس کو حکومت کی طاقت اور دولت پر ادھیکار پانے کے قریب پہونچاتی جاتی تھیں ویسے ویسے ہی کانگریس باپو کے پرمارتھی آدرشوں اور سیوا' تیاگ اور تپ کے مارگ سے دور ہوتی جاتی تھی . یہاں تک کہ تخت نشینی کے بعد کانگریس کے جیون میں ان سب باتوں کا نشان تک باقی نہ رہا .

باپو نے جتنے پروگرام دیس کے سامنے رکھے اُن کا مقصد یا تو کسی خاص معاملے میں گورنمنٹ پر اہنسا تمک دباؤ ڈالکر اسے مجبور کرنا یا دیس کی کنھیں برائیوں اور کمیوں کو دور کرکے دیس میں جاگرتی' آتم‌بل اور سنگٹھن پیدا کرنا ہوتا تھا . کانگریس اِن میں سے پہلی طرح کے پروگراموں کو تو کچھ توڑ پھوڑ کر چلاتی تھی' لیکن دوسری طرح کے پروگراموں کی طرف وہ کوئی دھیان ھی نہ دیتی تھی . اِسی لئے اپنے رچنا تمک پروگراموں کو چلانے کیلئے باپو کو الگ سنگٹھن بنانے اور نئے کاریہ کرتا

मुक़ाबले का एलान उन्होंने अपनी मशहूर हड़ताल, व्रत और प्रार्थना के रूप में किया था. इस एलान का जो देस पर असर हुआ था उससे बापू को यह यक़ीन हो गया था कि देस की ज़मीन उनके मिशन को पूरा करने के लिये तैयार है. इस असर को काँगरेस ने भी देखा और उस दिन से वह बापू की क़ायल होगई और उनके कहने पर चलने लगी.

हक़ीक़त में यह ताबेदारी बापू के आदर्शों, योजनाओं और तरीक़ों की नहीं थी बलिक उनके व्यक्तित्व और उनकी शख़्सियत की थी जिसने देस की जनता पर एकबारगी इतना ज़बरदस्त असर डाल दिया था. चूँकि काँगरेस जनता पर ख़ुद अपना असर जमाना चाहती थी इसलिये बापू की शख़्सियत से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाने की कोशिश करना काँगरेस ने अपना मक़सद बना लिया. इस मक़सद के हासिल करने के लिये बापू के सिद्धान्तों और योजनाओं को, उनमें विश्वास न होते हुए भी वह बराबर सराहती और ऊपरी दिल से मानती रही. राजनीत के मैदान में उसका यह तरीक़ा कोई अनोखी बात न थी क्योंकि आजकल की पच्छिमी राजनीत में अपना मतलब निकालने के लिये दो-रुख़ी चाल चलाना जायज़ माना जाता है.

बापू काँगरेस के दो-रुख़े पन को ख़ूब देखते थे. वह जानते थे कि काँगरेस उनके व्यक्तित्व से फ़ायदा उठाना चाहती है. पर चूँकि उनका अपने सिद्धान्तों की उपयोगिता में अटल विश्वास था इसलिये वह समझते थे कि अगर कुछ और नहीं तो उनकी अहिंसा की योजनाओं की कामयाबियाँ काँगरेस के दिल में सत्य और अहिंसा का और उनके हथियारों व साधनों के अचूक होने का विश्वास दिला देंगी. वह यह देख लेगी कि इन अहिंसा के आदर्शों, सिद्धान्तों और साधनों का इतना गहरा असर देस पर इसीलिये पड़ता है कि इतिहास के शुरू से यहाँ की सभ्यता और संस्कृति की रचना इन्हीं असूलों के

مقابلے کا اعلان اُنہوں اپنی مشہور ہڑتال' برت اور پراتھنا کے روپ میں کیا تھا . اس اعلان کا جو دیس پر اثر ہوا تھا اُس سے باپو کو یہ یقین ہوگیا تھا کہ دیس کی زمین اُنکے مشن کو پورا کرنے کیلئے تیار ہے . اس اثر کو کانگریس نے بھی دیکھا اور اُسدن سے وہ باپو کی قائل ہوگئی اور کے کہنے پر چلنے لگی .

حقیقت میں یہ تابعداری باپو کے آدرشوں' یوجناؤں اور طریقوں کی نہیں تھی بلکہ اُنکے ویکتتو اور اُن کی شخصیت کی تھی جسنے دیس کی جنتا پر ایک بارگی اتنا زبردست اثر ڈالدیا تھا . چونکہ کانگریس جنتا پر خود اپنا اثر جمانا چاھتی تھی اِسلئے باپو کی شخصیت سے زیادہ سے زیادہ فائدہ اُٹھانے کی کوشش کرنا کانگریس نے اپنا مقصد بنا لیا . اِس مقصد کے حاصل کرنے کیلئے باپو کے سدھانتوں اور یوجناؤں کو' اُن میں وشواش نہ ھوتے ھوئے بھی وہ برابر سراھتی اور اوپری دل سے مانتی رھی . راج نیت کے میدان میں اُسکا یہ طریقہ کوئی انوکھی بات نہ تھی کیونکہ آجکل کی پچھمی راج نیت میں اپنا مطلب نکالنے کیلئے دو رخی چال چلنا جائز مانا جاتا ھے .

باپو کانگریس کے دو رخے پن کو خوب دیکھتے تھے . وہ جانتے تھے کہ کانگریس اُنکے ویکتتو سے فائدہ اُٹھانا چاھتی ھے . پر چونکہ اُن کا اپنے سدھانتوں کی اُپیوگتا میں اٹل وشواس تھا اسلئے وہ سمجھتے تھے کہ اگر کچھ اور نہیں تو اُن کی اھنسا کی یوجناؤں کی کامیابیاں کانگریس کے دل میں ستیہ اور ھنسا کا اور اُنکے ھتھیاروں و سادھنوں کے اَچوک ھونے کا وشواس دلا دینگی . وہ یہ دیکھ لے گی کہ اِن اھنسا کے آدرشوں' سدھانتوں اور سادھنوں کا اِتنا گہرا اثر دیس پر اِسی لئے پڑتا ھے کہ اِتہاس کے شروع سے یہاں کی سبھیتا اور سنسکرتی کی رچنا اِنھیں اصولوں کے

हिन्दुस्तान आ गए. लेकिन हमें यह सब समझ लेना चाहिये कि देस हित का जो आदर्श, देस पूजा का जो मक़सद इस युग के लोगों के सामने था, बापू उसे अपने सामने रख कर हिन्दुस्तान को आजाद कराना नहीं चाहते थे. वह उस अन्याय और अत्याचार को संसार से मिटाना चाहते थे जो पच्छिमी हुकूमतें हिन्दुस्तान में और दुनिया के दूसरे देसों में कर रही थीं.

हिन्दुस्तान में इंडियन नेशनल काँगरेस अंगरेज़ी राज का मुक़ाबला बापू के आने के लगभग ३० साल पहले से कर रही थी. उसके सामने आजकल के पच्छिमी आदर्श थे, पच्छिमी देस हित का रूप था, पच्छिमी तरीक़े की पार्लीमेन्टरी हुकूमत क़ायम करने को उसने अपना मक़सद बनाया था और इस मक़सद को हासिल करने में वह बिलकुल पच्छिमी तरीक़े अख्तियार कर रही थी जिनका अहिंसा या सदाचार से किसी तरह का कोई वास्ता नहीं था.

तीन साल राजनीत से अलग रह कर बापू ने देस की हालत को समझने की कोशिश की और आख़ीर में इस नतीजे पर पहुँचे कि उन्हें विदेसी सरकार से लड़ने में काँगरेस का साथ देना चाहिये. वह देखते थे कि काँगरेस गहरे से गहरे पच्छिमी रंगों में डूबी हुई है और जो असूल या तरीक़े उन्होंने दक्खिनी अफ़रीक़ा में इस्तेमाल किये थे उनसे इसका ज़रा भी सम्बन्ध नहीं है और न शायद वह कभी उन्हें अपनाने को तैयार हो.

रौलट एक्ट के आन्दोलन के ज़माने में जब बापू ने राजनीत में हिस्सा लेने का फ़ैसला किया तो उन्होंने यह कोशिश की थी कि वह कोई तीन हज़ार ऐसे लोगों की फ़ेहरिस्त तैयार करवालें कि जो चाहे काँगरेस उनका साथ दे या न दे, हर हालत में उनके आन्दोलन में हिस्सा लेने को तैयार हों. उनका ख़याल था कि इतने साथी मिल जावें तो वह ब्रिटिश हुकूमत का कामयाबी के साथ मुक़ाबला कर सकेंगे.

ھندستان آگئے . لیکن ھمیں یہ خوب سمجھ لینا چاھئے کہ دیس ھت کا جو آدرش' دیس پوجا کا جو مقصد اِس یگ کے لوگوں کے سامنے تھا' باپو اُسے اپنے سامنے رکھکر ھندستان کو آزاد کرانا نہیں چاھتے تھے . وہ اُس انیائے اور اَتیاچار کو سنسار سے مٹانا چاھتے تھے جو پچھمی حکومتیں ھندستان میں اور دنیا کے دوسرے دیسوں میں کر رھی تھیں .

ھندستان میں انڈین نیشنل کانگریس انگریزی راج کا مقابلہ باپو کے آنے کے لگ بھگ ۳۰ سال پہلے سے کر رھی تھی. اُسکے سامنے آجکل کے پچھمی آدرش تھے' پچھمی دیس ھت کا روپ تھا' پچھمی طریقے کی پارلیمنٹری حکومت قائم کرنے کو اُس نے اپنا مقصد بنایا تھا اور اِس مقصد کو حاصل کرنے میں وہ بالکل پچھمی طریقے اختیار کر رھی تھی جنکا اھنسا یا سداچار سے کسی طرح کا کوئی واسطہ نہیں تھا

تین سال راج نیت سے الگ رہ کر باپو نے دیس کی حالت کو سمجھنے کی کوشش کی اور آخیر میں اس نتیجے پر پہونچے کہ اُنھیں بدیسی سرکار سے لڑنے میں کانگریس کا ساتھ دینا چاھئے . وہ دیکھتے تھے کہ کانگریس گہرے سے گہرے پچھمی رنگوں میں ڈوبی ھوئی ھے اور جو اصول یا طریقے اُنھوں نے دکھنی افریقہ میں استعمال کئے تھے اُن سے اِس کا ذرا بھی سمبندھ نہیں ھے اور نہ شاید وہ کبھی اُنھیں اَپنانے کو تیار ھو .

رولٹ ایکٹ کے آندولن کے زمانے میں جب باپو نے راج نیت میں حصہ لینے کا فیصلہ کیا تو اُنھوں نے یہ کوشش کی تھی کہ وہ تھائی تین ھزار ایسے لوگوں کی فہرست تیار کروا لیں کہ جو چاھے کانگریس اُن کا ساتھ دے یا نہ دے' ھر حالت میں اُنکے اندولن میں حصہ لینے کو تیار ھوں . اُن کا خیال تھا کہ اتنے ساتھی مل جائیں تو وہ برٹش حکومت کا کامیابی کے ساتھ مقابلہ کر سکینگے .

चुका था. हमारी नैतिक (इख़लाक़ी) और आरथिक ज़िन्दगी को उसने बिलकुल अपने क़ब्ज़े में कर लिया था. ईश्वर, मज़हब, नेकी, बदी, ईमान, धर्म सबकी जगह अपने अपने देस हित के आदर्शों और योजनाओं ने ले ली थी. इस ख़याल का कि सारी दुनिया के इनसान एक कुटुम्ब हैं और एक दूसरे के सगे भाई हैं, बिलकुल ख़ातमा हो चुका था. जिन धर्मों और मज़हबों का जन्म इन ऊँचे आदर्शों और मक़सदों के पूरा करने के लिये हुआ था वह अपना पुराना रूप रंग और तेज खो चुके थे और बजाय सब इनसानों को एक कुटुम्ब बनाने के उन्हें एक दूसरे से अलग रखने में लोहे की दीवारों का काम कर रहे थे. इसलिये बापू को अपना मिशन पूरा करने में इनमें से किसी से भी कोई ख़ास मदद नहीं मिल सकती थी. इसीलिये उन्होंने इनकी ज़ाहरी और बाहरी बातों की तरफ़ ज़रा भी ध्यान न देकर इनके असली मक़सद और सिद्धान्तों को अपने सामने रक्खा और उन्हीं पर अपने सारे मिशन की बुनियाद डाली.

दक्खिन अफ़रीक़ा की अंगरेज़ी सरकार हिन्दुस्तानियों के साथ क़रीब क़रीब वैसा ही बुरा बरताव कर रही थी जैसा हम अपने से नीची और अछूत जातियों के साथ करते हैं. बापू से यह सहा न गया. उन्होंने वहाँ की सरकार पर अपने अहिंसा के तरीक़ों और योजनाओं से गहरा असर डालकर कुछ सुधार भी हासिल किये. लेकिन इससे उन्हें सन्तोश नहीं हुआ. उन्होंने यह देख लिया कि बिना राजकाजी दबाव के वह अपने देस भाइयों की रक्षा वहाँ की सरकार के अन्यायों और ज़ुल्मों से नहीं कर सकते. एक बार यह यक़ीन हो जाने के बाद उनके लिये दक्खिनी अफ़रीक़ा में आन्दोलन चलाना बेकार हो गया. जब तक हिन्दुस्तानी अपने देस में ख़ुद ग़ुलाम रहेंगे दूसरे देसों का उनके साथ आज़ाद आदमियों का सा बरताव करना नामुमकिन रहेगा. इसलिये हिन्दुस्तान को आज़ाद करने का सवाल बापू के सामने आया और इसी मक़सद को अपना मिशन बना कर वह

چکا تھا ۔ ہماری نیتک (اِخلاقی) اور آرتھک زندگی کو اُس نے بالکل اپنے قبضے میں کر لیا تھا ۔ ایشور، مذہب، نیکی، بدی، ایمان، دھرم سب کی جگہ اپنے اپنے دیس ہت کے آدرشوں اور یوجناؤں نے لے لی تھی ۔ اِس خیال کا کہ ساری دنیا کے اِنسان ایک کٹمب ہیں اور ایک دوسرے کے سگے بھائی ہیں، بالکل خاتمہ ہوچکا تھا ۔ جن دھرموں اور مذہبوں کا جنم اِن اُنچے آدرشوں اور مقصدوں کے پورا کرنے کے لئے ہوا تھا وہ اپنا پرانا روپ رنگ اور تیج کھو چکے تھے اور بجائے سب انسانوں کو ایک کٹمب بنانے کے اُنھیں ایک دوسرے سے الگ رکھنے میں لوہے کی دیواروں کا کام کر رہے تھے ۔ اسلئے باپو کو اپنا مشن پورا کرنے میں اِن میں سے کسی سے بھی کوئی خاص مدد نہیں مل سکتی تھی ۔ اِسی لئے اُنھوں نے اِن کی ظاہری اور باہری باتوں کی طرف ذرا بھی دھیان نہ دے کر اُنکے اصلی مقصد اور سدھانتوں کو اپنے سامنے رکھا اور اُنھیں پر اپنے سارے مشن کی بنیاد ڈالی ۔

دکھن افریقہ کی انگریزی سرکار ہندستانیوں کے ساتھ قریب قریب ویسا ہی برا برتاؤ کر رہی تھی جیسا ہم اپنے سے نیچی اور اچھوت جاتیوں کے ساتھ کرتے ہیں ۔ باپو سے یہ سہا نہ گیا ۔ اُنھوں نے وہاں کی سرکار پر اپنے اہنسا کے طریقوں اور یوجناؤں سے گہرا اثر ڈالکر کچھ سدھار بھی حاصل کئے لیکن اس سے اُنھیں سنتوش نہیں ہوا ۔ اُنھوں نے یہ دیکھ لیا کہ بنا راج کاجی دباو کے وہ اپنے دیس بھائیوں کی رکشا وہاں کی سرکار کے انیایوں اور ظلموں سے نہیں کر سکتے ۔ ایک بار یہ یقین ہوجانے کے بعد اُنکے لئے دکھنی افریقہ میں آندولن چلانا بیکار ہوگیا ۔ جب تک ہندستانی اپنے دیس میں خود غلام رہینگے دوسرے دیسوں کا اُنکے ساتھ آزاد آدمیوں کا سا برتاؤ کرنا ناممکن رہیگا ۔ اس لئے ہندستان کو آزاد کرنے کا سوال باپو کے سامنے آیا اور اِسی مقصد کو اپنا مشن بنا کر وہ

अहिंसात्मक इनक़लाब का रास्ता

(एक)

(भाई मंज़र अली सोख़्ता)

[महात्मा गांधी की 'लोक सेवक संघ' की तजवीज़ को सामने रखकर श्री मंज़र अली सोख़्ता ने 'लोक सेवा संघ' की एक योजना देस के सामने रक्खी है. इस पर उन्होंने एक लेख 'नया हिन्द' में छपने के लिये भेजा है. उस लेख का यह पहला हिस्सा है. दूसरा हिस्सा अगले नम्बर में निकलेगा. 'नया हिन्द' के पढ़ने वालों से हमारी प्रार्थना है कि वह इन लेखों को ध्यान से पढ़ें, इन पर विचार करें और अधिक जानकारी के लिये श्री मंज़र अली सोख़्ता, सेवा कुँज आश्रम, पोस्ट गंगाघाट, उन्नाव, यू. पी. (Unnao, U. P.) से लिखा पढ़ी करें—सुन्दरलाल]

(१)

बापू के जीवन का मिशन मानव समाज में अहिंसा के साधनों और तरीकों की मदद से एक अहिंसात्मक इनक़लाब पैदा कर देना था. वह यह जानते थे कि टिकाऊ शान्ति और उन्नति हमारे समाज में सिर्फ़ एक ही तरह से हो सकती है कि हम अपने आपस के राज-काजी और आर्थिक व्योहार को सदाचार के उन असूलों पर क़ायम करलें जिन्हें हर इनसान ठीक, अच्छा और ऊँचा मानता है. हज़ारों साल के तजरबे ने इन असूलों के इस पहलू को ठीक साबित कर दिया है.

बापू के रास्ते की सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि जिस युग में वह पैदा हुए उसमें राजकाजी जीवन समाज में ख़ास जगह ले

اهنساتمک انقلاب کا راستہ

(ایک)

(بهائی منظر علی سوخته)

[مہاتما گاندھی کی 'لوک سیوک سنگھ' کی تجویز کو سامنے رکھکر شری منظر علی سوخته نے ' لوک سیوا سنگھ ' کی ایک یوجنا دیس کے سامنے رکھی ھے . اس پر اُنھوں نے ایک لیکھ 'نیا ھند' میں چھپنے کے لئے بھیجا ھے. اُس لیکھ کا یہ پہلا حصہ ھے . دوسرا حصہ اگلے نمبر میں نکلیگا ' نیا ھند ' کے پڑھنے والوں سے ھماری پرارتھنا ھے کہ وہ اِن لیکھوں کو دھیان سے پڑھیں' اِن پر وچار کریں اور ادھک جان کاری کے لئے شری منظر علی سوخته' سیوا کنج آشرم' پوسٹ گنگا گھاٹ' اناؤ. یو . پی . (Unnao U. P.) سے لکھا پڑھی کریں—سندر لال]

(۱)

باپو کے جیون کا مشن مانو سماج میں اهنسا کے سادھنوں اور طریقوں کی مدد سے ایک اهنساتمک انقلاب پیدا کر دینا تھا . وہ یہ جانتے تھے کہ ٹکاؤ شانتی اور اُنتی ھمارے سماج میں صرف ایک ھی طرح سے ھو سکتی ھے کہ ھم اپنے آپس کے راج کاجی اور آرتھک بیوھار کو سدا چار کے اُن اصولوں پر قائم کر لیں جنھیں ھر انسان ٹھیک' اچھا اور اُونچا مانتا ھے ھزاروں سال کے تجربے نے اِن اصولوں کے اِس پہلو کو ٹھیک ثابت کر دیا ھے .

باپو کے راستے کی سب سے بڑی کٹھنائی یہ تھی کہ جس یگ میں وہ پیدا ھوئے اُسمیں راج کاجی جیون سماج میں خاص جگہ لے

ईरान के लोग जो दिल से यह चाहते हैं कि शान्ति की बुनियादों को मज़बूती से क़ायम हुई देखें और जो अपने हिन्दुस्तानी भाइयों की ख़ुशहाली और भलाई चाहते हैं, इनसानी क़ौम के इस तरह के शुभ चिन्तकों का मान और उनकी इज़्ज़त करते हैं. वह चाहते हैं कि जो लोग सर तेज के आदर्शों को मानते हैं और हिन्दुस्तान के बड़े नेताओं की बताई राह पर चल कर आगे बढ़ना चाहते हैं उन्हें चाहिये कि सर तेज बहादुर के उन उसूलों पर चलें और उन पर सच्चाई से अमल करें ताकि उनका मुल्क ख़ुशहाल हो और तरक़्क़ी करे.

आज सर तेज का जिस्म हमारे साथ नहीं है लेकिन सचमुच आज़ाद हिन्दुस्तान में उनके आदर्शों की इस सराहना को देखने के लिये इस दोस्ताना जलसे में उनकी नूरानी आत्मा ज़रूर मौजूद होगी. मुझे इजाज़त दीजिये कि अपनी बात ख़तम करते हुए सात सौ बरस पहले के अपने यहाँ के एक महाकवि का एक शैर आप को याद दिलाऊँ. उन्होंने हमें यह तालीम दी थी कि सारी इनसानी क़ौम मिल कर एक जिस्म है जिसमें सब अलग अलग इनसान उस जिस्म के हाथ पैर और उंगलियों की तरह हैं.

हमारे एक और शायर ने कहा है कि जो आदमी नेक नाम जीता है वह हमेशा ज़िन्दा रहता है क्योंकि उसके बाद भी उसकी शुभ चरचा उसके नाम को ज़िन्दा रखती है.

ایران کے لوگ جو دل سے یہ چاھتے ھیں کہ شانتی کی بنیادوں کو مضبوطی سے قائم ھوئی دیکھیں اور جو اپنے ھندستانی بھائیوں کی خوشحالی اور بھلائی چاھتے ھیں، انسانی قوم کے اِس طرح کے شبھ چنتکوں کا مان اور اُن کی عزت کرتے ھیں ۔ وہ چاھتے ھیں کہ جو لوگ سرتیج کے آدرشوں کو مانتے ھیں اور ھندستان کے بڑے نیتاؤں کی بتائی راہ پر چلکر آگے بڑھنا چاھتے ھیں اُنھیں چاھئے کہ سرتیج بہادر کے اُن اصولوں پر چلیں اور اُن پر سچائی سے عمل کریں تاکہ اِن کا ملک خوش حال ھو اور ترقی کرے ۔

آج سرتیج کا جسم ھمارے ساتھ نہیں ھے لیکن سچ مچ آزاد ھندستان میں اُن کے آدرشوں کی اِس سراھنا کو دیکھنے کے لئے اِس دوستانہ جلسے میں اُنکی نورانی آتما ضرور موجود ھوگی ۔ مجھے اجازت دیجئے کہ اپنی بات ختم کرتے ھوئے سات سو برس پہلے کے اپنے یہاں کے ایک مہا کوی کا ایک شعر آپکو یاد دلاؤں ۔ اُنھوں نے ھمیں یہ تعلیم دی تھی کہ ساری انسانی قوم ملکر ایک جسم ھے جس میں سب الگ الگ انسان اُس جسم کے ھاتھ پیر اور انگلیوں کی طرح ھیں ۔

ھمارے ایک اور شاعر نے کہا ھے کہ جو آدمی نیک نام جیتا ھے وہ ھمیشہ زندہ رھتا ھے کیونکہ اُس کے بعد بھی اُس کی شبھ چرچا اُس کے نام کو زندہ رکھتی ھے ۔

कोशिश कर सकते. वह इस बात को जानते थे कि उनके मुल्क की आगे को ख़ुशहाली केवल इस बात पर निर्भर है कि लोग महात्मा गांधी के महान उपदेशों पर अमल करें और आपस के झगड़ों और ना-इत्तफ़ाक़ियों से बचें. मेरे दोस्त मिस्टर अली असग़र हिकमत की रहनुमाई में ईरान का कलचरी मिशन जब हिन्दुस्तान आया था तो इस मुल्क के मुख़्तलिफ़ कलचरी मरकज़ों का दौरा करते हुए उसे इस बात का मौक़ा मिला था कि इलाहाबाद में मरहूम सर तेज बहादुर सपरू की विद्वता और विशेशताओं का कुछ परिचय प्राप्त करे. उनकी यह विशेशताएँ सिर्फ़ इल्मी मैदान में ही नहीं बल्कि जीवन के सब मैदानों में थीं. कोई ताज्जुब नहीं कि उस मिशन को जब सर तेज बहादुर के बड़प्पन और उनकी इख़लाक़ी ऊँचाई की आमने सामने जानकारी हुई तो उसने तेहरान लौट कर वहाँ की कलचरी और इल्मी संस्थाओं से इसकी चरचा की.

ईरान की संस्था फ़रहंगिस्तान, ईरान और हिन्दुस्तान के बीच पुराने रिश्तों को ज़्यादा मज़बूत करने और दोनों मुल्कों में कलचरी सम्बन्ध बढ़ाने और इस दोस्त क़ौम के बड़े बड़े विद्वानों का मान करने के लिये हमेशा उत्सुक रहती है. फ़रहंगिस्तान ने सर तेज बहादुर को अपने एसोशियेट मेम्बरों में शामिल करके यह दिखलाया कि प्रेम और भाईचारे के सन्देश को फैलाने की जो कोशिशें सर तेज बहादुर ने की थीं उनकी फ़रहंगिस्तान कितनी क़दर करती है.

मरहूम सर तेज बहादुर सपरू हिन्दुस्तान के उन ग्यारह विद्वानों में से एक थे जो उस संस्था के एसोशियेट मेम्बर बनाए गए. उस मशहूर हस्ती के उठ जाने पर ईरान के तमाम कलचरी दायरों ने बहुत शोक मनाया. हमारे कलचरी कौंसिलर मिस्टर मोहिद उस शोक के वक़्त वहाँ मौजूद थे. वह आप से उसकी चरचा करेंगे.

کوشش کرسکتے . وہ اِس بات کو جانتے تھے کہ اُنکے ملک کی آگے کی خوش حالی کیول اِس بات پر نربھر ھے کہ لوگ مہاتما گاندھی کے مہان اُپدیشوں پر عمل کریں اور آپس کے جھگڑوں اور نااتفاقیوں سے بچیں . میرے دوست مسٹر علی اصغر حکمت کی رھنمائی میں ایران کا کلچری مشن جب ھندستان آیا تھا تو اِس ملک کے مختلف کلچری مرکزوں کا دورہ کرتے ہوئے اُسے اِسبات کا موقع ملا تھا کہ الہ آباد میں مرحوم سرتیج بہادر سپرو کی ودوتا اور وشیشتاؤں کا کچھ پریچے پراپت کرے . اُن کی یہ وشیشتائیں صرف علمی میدان میں ھی نہیں بلکہ جیون کے سب میدانوں میں تھیں . کوئی تعجب نہیں کہ اُس مشن کو جب سرتیج بہادر کے بڑپن اور ان کی اخلاقی اونچائی کی آمنے سامنے جانکاری ہوئی تو اُسنے طہران لوٹ کر وھاں کی کلچری اور علمی سنستھاؤں سے اِسکی چرچا کی .

ایران کی سنستھا فرھنگستان، ایران اور ھندستان کے بیچ پرانے رشتوں کو زیادہ مضبوط کرنے اور دونوں ملکوں میں کلچری سمبندھ بڑھانے اور اِس دوست قوم کے بڑے بڑے ودوانوں کا مان کرنے کے لئے ھمیشہ اُتسک رھتی ھے . فرھنگستان نے سرتیج بہادر کو اپنے ایسوشی ایٹ ممبروں میں شامل کرکے یہ دکھلایا کہ پریم اور بھائی چارے کے سندیش کو پھیلانے کی جو کوششیں سرتیج بہادر نے کی تھیں اُن کی فرھنگستان کتنی قدر کرتی ھے .

مرحوم سرتیج بہادر سپرو ھندستان کے اُن گیارہ ودوانوں میں سے ایک تھے جو اُس سنستھا کے ایسوشی ایٹ ممبر بنائے گئے . اُس مشہور ھستی کے اُٹھ جانے پر ایران کے تمام کلچری دائروں نے بہت شوک منایا . ھمارے کلچری کاؤنسلر مسٹر موحد اُس شوک کے وقت وھاں موجود تھے . وہ آپ سے اُس کی چرچا کریں گے .

सर तेज बहादुर सपरू

(भाई नूरी असफ़न्दयारी)

[नई दिल्ली में ईरान के राजदूत जनाब नूरी असफ़न्दयारी ने २० जनवरी सन '५१ को सर तेज बहादुर सपरू के जीवन पर एक तक़रीर की थी. 'नया हिन्द' के पढ़ने वालों के लिये उनका वह भाशन हम यहाँ छाप रहे हैं. —एडीटर]

सर तेज बहादुर सपरू ईरान की संस्था फ़रहंगिस्तान के एक एसोशियेट मेम्बर थे. उनकी याद में यह जलसा किया गया है. वह हिन्दुस्तान के सब से बुद्धिमान और सब से ऊँचे आदमियों में से एक थे. उनकी कीर्ति और उनकी शोहरत केवल इस उप-महाद्वीप की सीमाओं के अन्दर ही महदूद नहीं थी बल्कि इस मुल्क की जुग़राफ़ियाई सीमाओं से बाहर के कलचरी दायरों में भी उन्होंने बहुत बड़ी इज्ज़त और बहुत बड़ा मान पाया था. उनकी यह इज्ज़त और उनका यह मान उनके विशेश गुनों के कारन, उनके बहुत बड़े तजरबे के कारन और ख़ास कर उनके उस असर के कारन था जिस से दिलों को मिलाने में बड़ी मदद मिलती थी.

भेद भावों के मिटाने में, अलग अलग तरह के लोगों में मेल-मिलाप पैदा करने में और क़ौमी एकता की मिली जुली टिकाऊ बुनियादें डालने में उन्होंने बड़ी क़ीमती सेवाएँ कीं जिन से अपने मुल्क के लोगों में भी उनकी बड़ी इज्ज़त और क़दर हुई.

अफ़सोस आज वह ज़िन्दा नहीं हैं कि अपने मुल्क को आज़ाद देख सकते और महज़ नेक नियती और इनसानी प्रेम के बल पर अपने साथी देश भक्तों को एक दूसरे के ज़्यादा नज़दीक लाने की

سر تیج بہادر سپرو

(بھائی نوری اسفندیاری)

[نئی دلی میں ایران کے راج دوت جناب نوری اسفندیاری نے ۲۰ جنوری سن ۵۱ کو سرتیج بہادر سپرو کے جیون پر ایک تقریر کی تھی ' نیا ھند ' کے پڑھنے والوں کیلئے اُن کا وہ بھاشن ہم یہاں چھاپ رہے ھیں—اڈیٹر]

سرتیج بہادر سپرو ایران کی سنستھا فرھنگستان کے ایک ایسوشی ایٹ ممبر تھے . اُن کی یاد میں یہ جلسہ کیا گیا ھے . وہ ھندستان کے سب سے بدھی مان اور سب سے اُونچے آدمیوں میں سے ایک تھے . اُن کی کیرتی اور ان کی شہرت کیول اِس اُپ مہادیپ کی سیماؤں کے اندر ھی محدود نہیں تھی بلکہ اِس ملک کی جغرافیائی سیماؤں سے باھر کے کلچری دائروں میں بھی اُنھوں نے بہت بڑی عزت اور بہت بڑا مان پایا تھا . اُن کی یہ عزت اور اُن کا یہ مان اُنکے وشیش گُنوں کے کارن' اُنکے بہت بڑے تجربہ کے کارن اور خاصکر اُنکے اُس اثر کے کارن تھا جس سے دلوں کو ملانے میں بڑی مدد ملتی تھی .

بھید بھاؤں کے مٹانے میں' الگ الگ طرح کے لوگوں میں میل ملاپ پیدا کرنے میں اور قومی ایکتا کی ملی جلی ٹکاؤ بنیادیں ڈالنے میں اُنھوں نے بڑی قیمتی سیوائیں کیں جس سے اپنے ملک کے لوگوں میں بھی اُن کی بڑی عزت اور قدر ھوئی .

افسوس آج وہ زندہ نہیں ھیں کہ اپنے ملک کو آزاد دیکھ سکتے اور محض نیک نیتی اور انسانی پریم کے بل پر اپنے ساتھی دیش بھگتوں کو ایک دوسرے کے زیادہ نزدیک لانے کی

मरुथल पर भी सावन होगा,
सुखमय सबका जीवन होगा,
मरुथल भी अब मधुबन होगा.

बादल की बजती है नौबत, प्लावन लेता है अंगड़ाई
सोई उमंगें जाग उठी हैं, आँखें मलती है तरुनाई
राई उठ कर परबत होगी, परबत बन जाएगा राई

पैरों के डगमग में साथी,
दुखती हुई रग रग में साथी,
मानव के हर डग में साथी,

यौबन जादू फूँक रहा है,
जीवन चाबी कूक रहा है,
नाड़ी में बल हूक रहा है.

धरती का उलटेगा आँचल, स्वर्ग का परदा हट जाएगा
जीवन जोत से दमकेगा कन, जुग का अँधेरा छट जाएगा
जुग जुग का संताप ऐ साथी, धीरे धीरे कट जाएगा

धरती के आँचल की ममता,
मानव को देती है समता,
क्या राजा, क्या जोगी रमता,

एक कोख से सब जन्मे हैं,
हम सब इस धरती ही के हैं,
कौन है बैरी ? सभी सगे हैं.

مروتھل پر بھی ساون ہوگا،
سکھ مے سب کا جیون ہوگا،
مرو تھل بھی اب مدھو بن ہوگا۔

بادل کی بجتی ہے نوبت، پلاون لیتا ہے انگڑائی
سوئی اُمنگیں جاگ اُٹھی ہیں، آنکھیں ملتی ہے ترونائی
رائی اُٹھکر پربت ہوگی، پربت بن جائے گا رائی

پیروں کے ڈگمگ میں ساتھی
دکھتی ہوئی رگ رگ میں ساتھی،
مانو کے ہر ڈگ میں ساتھی،

یوون جادو پھونک رہا ہے،
جیون چابی کوک رہا ہے،
ناڑی میں بل ہوک رہا ہے۔

دھرتی کا اُلٹے گا آنچل، سورگ کا پردہ ہٹ جائے گا
جیون جوت سے دمکے گا کن، جگ کا اندھیرا چھٹ جائیگا
جگ جگ کا سنتاپ اے ساتھی، دھیرے دھیرے کٹ جائیگا۔

دھرتی کے آنچل کی ممتا،
مانو کو دیتی ہے سمتا،
کیا راجہ، کیا جوگی رمتا،

ایک کوکھ سے سب جنمے ہیں،
ہم سب اِس دھرتی ہی کے ہیں،
کون ہے بیری؟ سبھی سگے ہیں۔

लौ दे उट्ठेंगे ऐ साथी, दामन पर आँसू धब्बे
कर्म की ऐसी जोत जगेगी, जाग उठेंगे जुग के सपने
धरती ऐसी समतल होगी, मिट जाएँगे ऊँचे नीचे

छतें महल की नीची होंगी,
झोंपड़ियाँ कुछ ऊँची होंगी,
ऊँची नीची एक सी होंगी,

छोटे बड़े बराबर होंगे,
छत्री शूद्र बराबर होंगे,
सभी समान उजागर होंगे.

देवों की भाषा के ऊपर, मानो बानी छा जाएगी
गिट पिट सिट पिट सुनकर जनता, कबतक आख़िर भरमाएगी
'ऐन' 'ग़ैन' 'फ़े' 'क़ाफ़' के डर से, कबतक जनता भय खाएगी

खोली की भाषा में साथी,
खेतों की गाथा में साथी,
दलितों की चरचा में साथी,

फिर से वेद रचे जाएँगे,
फिर जिबरील सँदेसे देंगे,
हल, कुदाल के मन्त्र कहेंगे.

तक़दीरें अँगड़ाई लेंगी, मेरी कविता के सरगम से
नव युग का निर्मान करूँगा, अपने आँसू के ऐटम से
सुख का इक संसार रचूँगा, दुख की लय से अपने ग़म से

... का पहला जीना,

لودے اُٹھیں گے اے ساتھی، دامن پر آنسو کے دھبے
کرم کی ایسی جوت جگے گی، جاگ اُٹھینگے جگ کے سپنے
دھرتی ایسی سم تل ہوگی، مٹ جائینگے اونچے نیچے

چھتیں محل کی نیچی ہونگی،
جھونپڑیاں کچھ اونچی ہونگی،
اونچی نیچی ایک سی ہونگی،

چھوٹے بڑے برابر ہوں گے،
چھتری، شودر برابر ہوں گے،
سبھی سمان اُجاگر ہوں گے.

دیوں کی بھاشا کے اوپر، مانو بانی چھا جائے گی
گٹ پٹ سٹ پٹ سنکر جنتا، کب تک آخر بھرمائے گی
ع، غ، ف، ق، کے ڈر سے، کب تک جنتا بھے کھائیگی

کھولی کی بھاشا میں ساتھی،
کھیتوں کی گاتھا میں ساتھی،
دلتوں کی چرچا میں ساتھی،

پھر سے وید رچے جائیں گے،
پھر جبریل سندیسے دیں گے،
ہل، کدال کے منتر کہیں گے.

تقدیریں انگڑائی لیں گی، میری کویتا کے سرگم سے
نو یگ کا نرمان کروں گا، اپنے آنسو کے ایٹم سے
سکھ کا اک سنسار رچوں گا، دکھ کی لے سے اپنے غم سے

دکھ ہے سکھ کا پہلا زینہ

जिल्द १० मई, सन् '५१ नम्बर ५

نمبر ٥ مئی سن ۵۱' جلد ۱۰

जात आदमी. प्रेम धर्म है. हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ھندستانی بولی'
'نیا ھند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

जब आएगा नया ज़माना

(भाई चरन सरन 'नाज़')

हिमगिरि की दहलेगी छाती, गंगा की पलटेगी धारा
खोली में सर्वोदय होगा, महलों का डूबेगा तारा
नवजीवन का स्रोत बहेगा, दुख का होगा वारा न्यारा

काली काली रात से साथी,
इस रजनी के गात से साथी,
जीत से साथी मात से साथी,

भोर की किरनें फूट रही हैं,
शतरंजी चालें टूट रही हैं,
जुल्म की नब्ज़ें छूट रही हैं.

جب آئیگا نیا زمانہ

(بھائی چرن سرن 'ناز')

ہمگر کی دھلےگی چھاتی' گنگا کی پلٹےگی دھارا
کھولی میں سرودے ہوگا' محلوں کا ڈوبے گا تارا
نوجیون کا سروت بہے گا' دکھ کا ہوگا وارا نیارا

کالی کالی رات سے ساتھی'
اِس رجنی کے گات سے ساتھی'
جیت سے ساتھی مات سے ساتھی'

بھور کی کرنیں پھوٹ رہی ہیں'
شطرنجی چالیں ٹوٹ رہی ہیں'
ظلم کی نبضیں چھوٹ رہی ہیں.

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

मई १९५१

क्या किस से

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने . मैनेजर

१४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

" نیا ہند "

ہندستانی کلچر سوسایٹی کا پرچا

ایڈیٹر —

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

مئی ۱۹۵۱

کیا کس سے

قیمت — ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے ۔ مینیجر

इस नम्बर के ख़ास लेख

सर तेज बहादुर सपरू—नूरी असफ़न्दयारी

अहिन्सात्मक इनक़लाब का रास्ता—मंज़र अली सोख़्ता

जवानो!—भगवानदीन

जंग की जड़ें—आशाराम

हमारी राय :—

वर्धा का नया आन्दोलन—सुन्दरलाल

सोमनाथ का फिर से उद्धार—सुन्दरलाल

कोरिया में नई चाल—भगवानदीन

शिस्त बनाम लोकशाही—भगवानदीन

मई सन् १९५१

क़ीमत दस आना

اس نمبر کے خاص لیکھ

سرتیج بہادر سپرو—نوری اسفندیاری

اہنساتمک انقلاب کا راستہ—منظر علی سوختہ

جوانو!—بھگوان دین

جنگ کی جڑیں—آشا رام

ہماری رائے :—

وردھا کا نیا آندولن—سندر لال

سومناتھ کا پھر سے ادھار—سندر لال

کوریا میں نئی چال—بھگوان دین

شست بنام لوک شاہی—بھگوان دین

مئی سن 1951

قیمت دس آنہ

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद

ہندستانی کلچر سوسائٹی، الہ آباد

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो २६ जनवरी सन् १९५० से सारे भारत में लागू हुआ

'भारत में अंगरेजी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेजी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फर्ज है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझ ले.

यदि आप आने वाले आम चुनाव में, जिस पर भारत का सारा भविष्य निर्भर है, समझ कर हिस्सा लेना चाहते हैं और आजाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो जरूरी है कि आप इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लें.

आसानी के लिये किताब के आखीर में हिन्दी से अंगरेजी और अंगरेजी से हिन्दी साठ पन्ने की शब्दमाला दे दी गई है.

भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना जरूरी है.

आसान बामुहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. कीमत केवल साढ़े सात रुपए.

मिलने का पता :—

मैनेजर 'नया हिन्द'
१४५, मुट्ठी गंज,
इलाहाबाद.

بھارت کا ودھان

پورا ھندی انوواد

جو ۲۶ جنوری سن ۱۹۵۰ سے سارے بھارت میں لاگو ہوا.

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندر لال دوارا مول انگریزی سے انوادت.

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اسے اچھی طرح سمجھ لے.

یدی آپ آنے والے عام چناؤ میں جس پر بھارت کا سارا بھوشیہ نربھر ہے سمجھ کر حصہ لینا چاہتے ہیں اور آزاد بھارت میں اپنے ادھیکار سمجھنا چاہتے ہیں تو ضروری ہے کہ آپ اس پستک کو دھیان سے پڑھ لیں.

آسانی کے لئے کتاب کے آخر میں ہندی سے انگریزی اور انگریزی سے ہندی ساٹھ پنّے کی شبد مالا دے دی گئی ہے

بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے

آسان بامحاورہ بھاشا. رائل اٹھ پیجی بڑا سائز. لگ بھگ چار سو پنّے کپڑے کی سندر جلد. قیمت کیول ساڑھے سات روپئے

ملنے کا پتہ :—

مینیجر 'نیا ہند'
۱۴۵ مٹھی گنج
الٰہ آباد.

Printed and Published by Purushottam Prasad, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

... छापना . ... के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना .

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल. गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल. मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये .

सुन्दरलाल
सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,
१४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ... दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

... ہندستانی کلچر کا بڑھانا ...

(۱) ایک ایسی ہندستانی ... جس میں سب ہندستانی شامل ہوں .

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق؛ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری—پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی . جی . کھیر، مسٹر ایس . کے . رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال .

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے —

سندر لال
سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،
۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی نے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا ... دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکیں گے .

क़ीमत दस आना

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी इलाहाबाद

हिन्द के विधान की अंगरेज़ी हिन्दी शब्दावली

(अंगरेज़ी नागरी लिखावट में)

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ ख़ास ख़ास अंगरेज़ी शब्दों के लिये आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवानदीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाए हैं. भारत के विधान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास ज़रूर रखिये. क़ीमत दो रुपये.

मुस्लिम देश भक्त— लेखक—श्री रतन लाल बंसल.

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की जंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

आज के शहीद— सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छिन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी.

उन बहादुरों की कहानियाँ जो फ़िरक़ावाराना दंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गए.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.

सुन्दर जिल्द और चिकने काग़ज़ पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

किसान की पुकार— लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत ज़रूरी है जो खेती बाड़ी से दिलचस्पी रखते हैं. और भारत के अन्न संकट को दूर करने में विश्वास रखते हैं. क़ीमत पाँच आने.

ھند کے ودھان کی انگریزی ھندی شبداولی

(انگریزی ناگری لکھاوٹ میں)

ھند کا جو نیا ودھان پاس ھوا ھے اُسکے لگ بھگ چودہ سو خاص خاص انگریزی شبدوں کے لئے آسان ھندستانی شبد مہاتما بھگوان دین اور دوسرے ودوانوں نے سجھائے ھیں. بھارت کے ودھان کو سمجھنے کے لئے اِس شبداولی کو اپنے پاس ضرور رکھئے. قیمت دو روپئے.

مسلم دیش بھکت— لیکھک—شری رتن لال بنسل.

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ھتھیلی پر رکھکر ھندستان اور ودیشوں میں رھتے ھوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ھے.

قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے.

آج کے شہید— سمپادک — شری رتن لال بنسل.

اِس کتاب میں اُن ویروں کی کہانیاں ھیں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ھوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہیں کی اور اُسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کر دی.

اُن بہادروں کی کہانیاں جو فرقہ وارانہ دنگوں میں لوگوں کو حیوانیت سے روکتے ھوئے شہید ھو گئے.

ھر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب.

سندر جلد اور چکنے کاغذ پر چھپی آٹھ تصویروں کے ساتھ اس کتاب کا دام صرف ڈھائی روپیہ.

کسان کی پکار— لیکھک — شری آر. وینکٹ راؤ.

یہ کتاب کسانوں کے لئے ھی نہیں، اُن لوگوں کے لئے بھی بہت ضروری ھے جو کھیتی باڑی سے دلچسپی رکھتے ھیں، اور بھارت کے اَنن سنکٹ کو دور کرنے میں وشواس رکھتے ھیں. قیمت پانچ آنے.

पंडित सुन्दरलाल की और किताबें :–

हिन्दू मुसलिम एकता— इस में वह चार लेक्चर जमा कर दिये गये हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़—साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देस पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है— महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़— इस छोटी सी किताब में सन १९४९-५० में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

پنڈت سندرلال کی اور کتابیں:—

ھندو مسلم ایکتا— اس میں وہ چار لیکچر جمع کر دئے گئے ھیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے۔

سو صفحے کی کتاب ۔ قیمت صرف بارہ آنے ۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق— سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذھبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج، جس نے آخر میں دیس پتا مہاتما گاندھی تک کو ھمارے بیچ میں نہ رھنے دیا ۔

قیمت بارہ آنے ۔

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے— مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سن ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وھاں کی بھیانکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک ورنن ۔ اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ھیں ۔ قیمت چار آنے ۔

بنگال اور اُس سے سبق— اس چھوٹی سی کتاب میں ۵۰-۱۹۴۹ میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہوارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ھے اور ایسے جھگڑوں کو ھمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ھے ۔ قیمت صرف دو آنے ۔

नीचे लिखी सब किताबें नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती हैं.

डाक या रेल खर्च हर हालत में गाहक के जिम्मे होगा.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

२६ जनवरी सन १६४८ को महात्मा गांधी ने आल इंडिया कांगरेस कमेटी के सामने एक सुझाव के रूप में 'लोक सेवक संघ' का एक नया विधान तैयार किया था. इस विधान में उन्होंने सलाह दी थी की कांगरेस का सारा संगठन तोड़ दिया जावे और कांगरेस वाले हकूमत से बाहर निकल कर एक 'लोक सेवक संघ' बना कर काम करें.

३० जनवरी को अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा जी ने कांगरेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर वह विधान दिया की वह गांधी जी की तरफ़से उसे आल इंडिया कांगरेस कमेटी में पेश कर दें. यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देस के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत जरूरी है. २२५ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपये.

یہچے لکھی سب کتابیں ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہیں .

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمہ ہوگا .

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

۲۹ جنوری سن ۱۹۴۸ کو مہاتما گاندھی نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے ایک سجھاؤ کے روپ میں 'لوک سیوک سنگھ' کا ایک نیا ودھان تیار کیا تھا . اِس ودھان میں اُنہوں نے صلاح دی تھی کہ کانگریس کا سارا سنگٹھن توڑ دیا جاوے اور کانگریس والے حکومت سے باہر نکل کر ایک 'لوک سیوک سنگھ' بنا کر کام کریں .

۳۰ جنوری کو اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما جی نے کانگریس کے جنرل سکریٹری کو بلا کر وہ ودھان دیا کہ وہ گاندھی جی کی طرف سے اُسے آل انڈیا کانگریس کمیٹی میں پیش کر دیں . یہ چھوٹا سا ودھان دیس کے نام گاندھی جی کی آخری وصیت ہے اور اِسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیس کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں .

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے . ۲۲۵ صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے .

उस धर्म पर अमल करने वाले की तरफ़ न खिंच सकें और अपना पूरा पूरा प्यार उसे न दे सकें. फिर यह तो हो ही नहीं सकता कि उस धर्मात्मा के सखा या सहेली रूठ बैठें या वह मिलकर भजन पूजन न कर सकें या धर्म चरचा न कर सकें. शीरीं बहन जब जी से ईसाई धर्म को अपना लेगी तब वह मिसेज़ जोन्स की सौत सी न रहकर सहेली बन जायँगी. कृष्न की गोपियों में सौतिया डाह न था, फिर ईसा की गोपियों में क्यों रहने लगा ?

सच्चे ईसाई बनने से हमारा क्या मतलब है, इसे हम ज़रा साफ़ कर दें. हज़रत ईसा के बाप ईसाई नहीं थे. और हज़रत ईसा न ईसाई पैदा हुए और न ईसाई मरे. वे उस धर्म के धर्मात्मा थे जिस धर्म का धर्म के सिवा और कोई नाम नहीं हो सकता. सच्चे धर्मात्मा होने के नाते वह सभी को प्यारे थे. और क्रूस पर चढ़ाये जाने का हुकम देने वाले जज को और क्रूस पर चढ़ाने वाले को भी वह बेहद प्यारे थे. तभी तो वह क्रूस पर चढ़ कर भी मरे नहीं. हज़रत ईसा सच्चे धर्मात्मा थे इसलिये लोगों ने उन्हीं के नाम पर धर्म का नाम ईसाई धर्म रख दिया जिसका सीधा सादा मतलब यह है कि धर्म पर अमल इस तरह करो जैसे ईसा ने किया. बस. अब हम शीरीं बहन को यही सलाह देते हैं कि वह ईसाई धर्म को इस तरह अपनाएँ कि ईसाई न रह कर सिर्फ़ शीरीं रह जायँ और हमें विश्वास है कि फिर उन्हें मिसेज़ जोन्स से कोई शिकायत न रह जायगी.

२८. ३. ५१ —भगवानदीन

اُس دھرم پر عمل کرنے والے کی طرف نہ کھنچ سکیں اور اپنا پورا پورا پیار اُسے نہ دے سکیں . پھر یہ تو ھو ھی نہیں سکتا کہ اُس دھرماتما کے سکھا یا سھیلی روٹھ بیٹھویں یا وہ ملکر بھجن پوجن نہ کرسکیں یا دھرم چرچا نہ کرسکیں . شیریں بہن جب جی سے عیسائی دھرم کو اپنا لینگی تب وہ مسز جونس کی سوت سی نہ رہ کر سہیلی بن جائیں گی . 'کرشن کی گوپیوں میں سوتیاڈاہ نہ تھا ' پھر عیسیٰ کی گوپیوں میں کیوں رھنے لگا ؟

سچے عیسائی بننے سے ھمارا کیا مطلب ھے . اِسے ھم ذرا صاف کردیں . حضرت عیسیٰ کے باپ عیسائی نہیں تھے . اور حضرت عیسیٰ نہ عیسائی پیدا ھوئے اور نہ عیسائی مرے . وہ اُس دھرم کے دھرماتما تھے جس دھرم کا دھرم کے سوا اور کوئی نام نہیں ھوسکتا . سچے دھرماتما ھونے کے ناتے وہ سبھی کو پیارے تھے . اور کروس پر چڑھائے جانے کا حکم دینے والے جج کو اور کروس پر چڑھانے والے کو بھی وہ بے حد پیارے تھے تبھی تو وہ کروس پر چڑھکر بھی مرے نہیں . حضرت عیسیٰ سچے دھرماتما تھے اِسلئے لوگوں نے اُنھیں کے نام پر دھرم کا نام عیسائی دھرم رکھ دیا جس کا سیدھا سادھا مطلب یہ ھے کہ دھرم پر عمل اس طرح کرو جیسے عیسیٰ نے کیا . بس . اب ھم شیریں بہن کو یہی صلاح دیتے ھیں کہ وہ عیسائی دھرم کو اس طرح اپنائیں کہ عیسائی نہ رہ کر صرف شیریں رہ جائیں اور ھمیں وشواس ھے کہ پھر اُنھیں مسز جونس سے کوئی شکایت نہ رہ جائے گی .

—بھگوان دین

۵۱-۳-۲۸

अपने गुज़ारे के लिये कुछ काम करने लगती हैं. अकेलेपन से बचने के लिये अपनी एक सहेली मिसेज़ जोन्स के साथ रहने लगती हैं. मिसेज़ जोन्स ईसाई हैं. मिसेज़ जोन्स भी विधवा हैं. दोनों में ख़ूब प्रेम है. यह प्रेम ११ बरस चलता है. अब शीरीं बहन बाक़ायदा ईसाई धर्म का बपतिस्मा तो नहीं लेतीं पर चाल ढाल, रंग रूप, रस्मरिवाज, पूजा पाठ सभी में ईसाई बन जाती हैं. दोनों कई बार साथ साथ गिरजा जा चुकी हैं. पर एक दिन अचानक मिसेज़ जोन्स शीरीं को डपट कर अपनी मोटर गाड़ी से यह कह कर उतार देती हैं कि वह पारसी हैं इसलिये गिरजा नहीं जा सकतीं. शीरीं बहन उतर जाती हैं. पर बेहद दुख मानती हैं यहाँ तक कि न खाना खाती हैं, न सो पाती हैं, न आँसू रोक पाती हैं और न किसी और तरह चैन पाती हैं. उसके बाद से दोनों की जो एक ही धर्म पर मिल बैठ कर चरचा होती थी बन्द हो जाती है. अब तीन साल होने आते हैं, न भजन होता है न सतसंग, न धर्म सम्बन्धी और कुछ बात. दोनों में प्यार ख़ूब बना हुआ है, अलग होना कोई नहीं चाहता. पर धर्म के मामले में दोनों ऐसे रहती हैं मानो एक दूसरे की सौत हैं.

रैहाना बहन शीरीं बहन की तरफ़ से यह सवाल पूछती हैं कि शीरीं बहन अब क्या करें.

हमारा जवाब—

हर धर्म में यह ताक़त है कि अगर उस पर सच्चे जी से
... ... ही कम प्रानी ऐसे मिलेंगे जो

اپنے گزارے کیلئے کچھ کام کرنے لگتی هیں . اکیلے پن سے بچنے کیلئے اپنی ایک سہیلی مسز جونس کے ساتھ رہنے لگتی هیں . مسز جونس عیسائی هیں . مسز جونس بھی ودھوا هیں . دونوں میں خوب پریم هے . یہ پریم ۱۱ برس چلتا هے . اب شیریں بہن باقائدہ عیسائی دھرم کا بپتسما تو نہیں لیتیں پر چال ڈھال، رنگ روپ، رسم رواج، پوجا پاٹھ سبھی میں عیسائی بن جاتی هیں. دونوں کئی بار ساتھ ساتھ گرجا جا چکی هیں . پر ایک دن اچانک مسزجونس شیریں کو ڈپٹ کر اپنی موٹر گاڑی سے یہ کہکر اُتار دیتی هیں کہ وہ پارسی هیں اِسلئے گرجا نہیں جا سکتیں. شیریں بہن اُتر جاتی هیں . پر بے حد دکھ مانتی هیں یہاں تک کہ نہ کھانا کھاتی هیں، نہ سو پاتی هیں، نہ آنسو روک پاتی هیں اور نہ کسی اور طرح چین پاتی هیں . اُسکے بعد سے دونوں کی جو ایک هی دھرم پر مل بیٹھ کر چرچا ہوتی تھی بند هوجاتی هے . اب تین سال هونے آتے هیں، نہ بھجن هوتا هے نہ ست سنگ، نہ دھرم سمبندھی اور کچھ بات . دونوں میں پیار خوب بنا هوا هے، الگ هونا کوئی نہیں چاهتا . پر دھرم کے معاملے میں دونوں ایسے رهتی هیں مانو ایک دوسرے کی سوت هیں .

ریحانہ بہن شیریں بہن کی طرف سے یہ سوال پوچھتی هیں کہ شیریں بہن اب کیا کریں .

همارا جواب—

هر دھرم میں یہ طاقت هے کہ اگر اُس پر سچے جی سے عمل کیا جائے تو پھر بہت هی کم پرانی ایسے ملینگے جو

विनोबा जी की पैदल यात्रा वहाँ के रहने वालों के लिये नसीहत भरी साबित होगी. साथ ही साथ इससे, कुछ सबक़ हमारे रचनात्मक कार्यकर्ता भी सीखेंगे जो रेल के डिब्बे को ही अपना तजुरबा घर बनाए हुए हैं, जो काँगरेस वालों की तरह अपने अपने घरोंदों में गद्दी बना बनाकर जम गये हैं. जिनकी लत स्मारक निधियों के सहारे या सरकारी ग्रान्टों के बल पर संस्थायें चलाने की पड़ गई है, जो ख़ुद कोई जिस्मानी मेहनत नहीं करते जिसकी वजह से एक तरफ़ से तो जनता से सम्पर्क खो बैठे हैं और दूसरी तरफ़ एक दीवार अपने और अपने नीचे काम करने वालों के बीच खड़ी कर ली है. हमें उम्मीद है कि शिवरामपल्ली में जमा होकर वह ज़रा गहराई के साथ ग़ौर करेंगे और विनोबा जी की सरपरस्ती में जनता के ज़्यादा निकट लाने वाले रास्ते पर चलना शुरू कर देंगे.

२४-३-१९५१. —सुरेश राम भाई

एक समस्या

मार्च महीने के 'मंगल प्रभात' में सफ़ा ५१ पर रैहाना तैयबजी की तरफ़ से एक समस्या छपी है. रैहाना बहन से हम बड़ौदा में उनके पिता जी के जीते जी मिले हैं, यों उनके स्वभाव से थोड़ी जानकारी है. बस इसी नाते हम समस्या को मार्के को समझते हैं और अपने तजरबे के बल पर उसका जवाब नीचे दर्ज करते हैं.

समस्या का ख़ुलासा यह है—

एक शीरीं बहन हैं जो पारसी हैं वह विधवा हो चुकी हैं और

ونوباجی کی پیدل یاترا وھاں کے رھنے والوں کیلئے نصیحت بھری ثابت ھوگی . ساتھ ھی ساتھ اِس سے کچھ سبق ھمارے رچناتمک کاریہ کرتا بھی سیکھینگے جو ریل کے ڈبے کو ھی اپنا تجربہ گھر بنائے ھوئےھیں' جو کانگریس والوں کی طرح اپنے اپنے گھروندوں میں گدی بنا بنا کر جم گئے ھیں' جنکی لت اسمارک ندھیوں کے سہارے یا سرکاری گرانٹوں کے بل پر سنستھائیں چلانے کی پڑ گئی ھے' جو خود کوئی جسمانی محنت نہیں کرتے جسکی وجہ سے ایک طرف سے تو جنتا سے سمپرک کھو بیٹھے ھیں اور دوسری طرف ایک دیوار اپنے اور اپنے نیچے کام کرنے والوں کے بیچ کھڑی کر لی ھے . ھمیں اُمید ھے کہ شورام پلی میں جمع ھوکر وہ ذرا گہرائی کے ساتھ غور کرینگے اور ونوبا جی کی سرپرستی میں جنتا کے زیادہ نکٹ لانے والے راستے پر چلنا شروع کر دینگے .

۲۴-۳-۵۱ —سریش رام بھائی

ایک سمسیا

مارچ مہینے کے ' منگل پربھات ' میں صفحہ ۵۱ پر ریحانہ طیب جی کی طرف سے ایک سمسیا چھپی ھے . ریحانہ بہن سے ھم بڑودہ میں اُنکے پتا جی کے جیتے جی ملے ھیں' یوں اُنکے سبھاو سے تھوڑی جانکاری ھے . بس اِسی ناتے ھم سمسیا کو مارکے کی سمجھتے ھیں اور اپنے تجربے کے بل پر اُس کا جواب نیچے درج کرتے ھیں .

سمسیا کا خلاصہ یہ ھے—

नहीं, अपनी ग़रज़ के लिये ही हर कोई दीवाना दिखलाई पड़ता है. सारा ज़माना उलट गया है. कोई सूरत नज़र नहीं आती, कोई उम्मीद बर नहीं आती.

ऐसा लगता है मानों सब डूब गया हो यानी सर्वास्त हो गया हो. इस अंधेरे-तारीकी में कब तक ज़िन्दा रहा जा सकेगा. ज़रूरत है सर्वोदय के सूरज के निकलने की. बापू ने इसका मंत्र दिया. उनके जाने के बाद उनके बहुत से पैरोकारों ने सेवाग्राम में जमा होकर, विनोबा जी के बताने पर, सर्वोदय समाज क़ायम किया. इस समाज का सालाना सम्मेलन राष्ट्रीय अठवारे में—६ और १३ अप्रैल के बीच—हुआ करता है. सेवाग्राम के बाद यह जलसा राऊ (इन्दौर) में हुआ, फिर अनुगुल (उड़ीसा) में. इस साल यह हैदराबाद (दकन) से चार-पाँच मील दूर शिवरामपल्ली में हो रहा है. ता० ८ मार्च को अपने परमधाम आश्रम से विनोबा जी शिवरामपल्ली के लिये पैदल निकले हैं. शिवरामपल्ली परमधाम से ३०० मील पर है. पैदल जाने का फ़ैसला उन्होंने इस वजह से किया ताकि अपना सर्वोदय संदेश जगह जगह पर आम जनता तक ख़ुद पहुँचा सकें और उससे अपील कर सकें कि गांधी जी की बरसी के मौक़े पर हर आदमी अपने काते सूत की एक गुन्डी लेकर मेले की जगह पर जमा किया करे. यह गुन्डी एक निशानी है श्रम (मेहनत) यज्ञ की यानी मेहनत की क़द्रदानी की, बापू में अपनी श्रद्धा ज़ाहिर करने की, सर्वोदय की ख़ातिर एक अदना कोशिश करने की.

نہیں۔ اپنی غرض کیلئے ہی ہر کوئی دیوانہ دکھلائی پڑتا ہے۔ سارا زمانہ اُلٹ گیا ہے۔ کوئی صورت نظر نہیں آتی۔ کوئی اُمید بر نہیں آتی۔

ایسا لگتا ہے مانو سب ڈوب گیا ہو یعنی سرواست ہوگیا ہو۔ اِس اندھیرے-تاریکی میں کب تک زندہ رہا جاسکیگا۔ ضرورت ہے سرودے کے سورج کے نکلنے کی بابو نے اِسکا منتر دیا۔ اُنکے جانے کے بعد اُنکے بہت سے پیروکاروں نے سیواگرام میں جمع ہوکر۔ ونوبا جی کے بتانے پر۔ سرودے سماج قائم کیا۔ اس سماج کا سالانہ سمیلن راشٹریہ اٹھوارے میں—۶ اور ۱۳ اپریل کے بیچ—ہوا کرتا ہے۔ سیواگرام کے بعد یہ جلسہ راؤ (اندور) میں ہوا۔ پھر انوگل (اڑیسہ) میں۔ اس سال یہ حیدرآباد (دکن) سے چار پانچ میل دور شورام پلی میں ہو رہا ہے۔ تاریخ ۸ مارچ کو اپنے پرم دھام آشرم سے ونوبا جی شورام پلی کیلئے پیدل نکلے ہیں۔ شورام پلی پرم دھام سے ۳۰۰ میل پر ہے۔ پیدل جانے کا فیصلہ اُنہوں نے اس وجہ سے کیا تاکہ اپنا سرودے سندیس جگہ جگہ پر عام جنتا تک خود پہنچا سکیں اور اُس سے اپیل کر سکیں کہ گاندھی جی کی برسی کے موقع پر ہر آدمی اپنے کاتے سوت کی ایک گنڈی لیکر میلے کی جگہ پر جمع کیا کرے۔ یہ گنڈی ایک نشانی ہے شرم (محنت) یگیہ کی یعنی محنت کی قدر دانی کی۔ بابو میں اپنی شردھا ظاہر کرنے کی۔ سرودے کی خاطر ایک ادنیٰ کوشش کرنے کی۔

साफ़ साफ़ लिखा था कि इस देस के यह पूंजीपति बिदेसी पूँजीपतियों के साथ मिल कर और हिस्सा बटा कर इस देस को बेचने और यहाँ की करोड़ों जनता को और अधिक चूसने और बरबाद करने की फ़िक्र में हैं. यह आना जाना और चक्कर बराबर जारी है. हमें अधिक दुख इस बात का है कि हमारी राष्ट्रीय सरकारों के कुछ लोग भी जाने या अनजाने इसी चक्कर में लिपटे हुए हैं.

२०-३-५१. —सुन्दरलाल

विनोबा जी की सर्वोदय—यात्रा

बापू के जाने के बाद से हिन्दुस्तान में मानों अँधेरा छा गया है. प्रजा की बे हाली और तकलीफ़ों का कोई ठिकाना नहीं है, हुकूमत से हुकूमत करते नहीं बन रहा है और कम हुक्काम ऐसे बचे हैं जिनका दामन चिट्टा और साफ़ हो. बापू की राह पर चलने वाले भी—रचनात्मक काम करना जिनकी ज़िन्दगी का मक़सद था—भटके से मालूम हो रहे हैं. क्या चर्ख़ा, क्या ग्रामोद्योग, क्या नई तालीम, क्या नशाबन्दी, क्या हिन्दुस्तानी, क्या कोई दूसरा प्रोग्राम —सभी पिछड़े और उखड़े हुए दिखलाई पड़ते हैं. हर किसी पर पैसे का रोब ग़ालिब है और ऐसे ग़ज़ब का उसका असर है, ऐसे कमाल का उसका निज़ाम है कि उसके चंगुल से निकलना नामुम-

صاف صاف لکھا تھا کہ اس دیس کے یہ پونجی پتی بدیسی پونجی پتیوں کے ساتھ ملکر اور حصہ بٹا کر اس دیس کو بیچنے اور یہاں کی کروڑوں جنتا کو اور ادھک چوسنے اور برباد کرنے کی فکر میں ھیں . یہ آنا جانا اور چکر برابر جاری ہے . ھمیں ادھک دکھ اس بات کا ہے کہ ھماری راشٹریہ سرکاروں کے کچھ لوگ بھی جانے یا انجانے اسی چکر میں لپٹے ھوئے ھیں .

۵۱-۳-۲۰ — سندر لال

ونوبا جی کی سروودے یاترا

باپو کے جانے کے بعد سے ھندستان میں مانو اندھیرا چھا گیا ہے . پرجا کی بے حالی اور تکلیفوں کا کوئی ٹھکانا نہیں ہے ' حکومت سے حکومت کرتے نہیں بن رھا ہے اور کم حکام ایسے بچے ھیں جن کا دامن چٹا اور صاف ھو . باپو کی راہ پر چلنے والے بھی— رچناتمک کام کرنا جنکی زندگی کا مقصد تھا—بھٹکے سے معلوم ھورھے ھیں . کیا چرخہ ' کیا گرامودیوگ ' کیا نئی تعلیم ' کیا نشہ بندی ' کیا ھندستانی ' کیا کوئی دوسرا پروگرام—سبھی پچھڑے اور اکھڑے ھوئے دکھلائی پڑتے ھیں . ھر کسی پر پیسے کا رعب غالب ہے اور ایسے غضب کا اسکا اثر ہے ' ایسے کمال کا اسکا نظام ہے کہ اسکے چنگل سے نکلنا ناممکن سا لگتا ہے

इंगलिस्तान की बनी मशीनों और कैमीकल के सहारे चलते हैं. कोल्हू और ख़ासकर लकड़ी के कोल्हू अधिकतर गाँव में ही तैयार हो जाते हैं. फिर भी श्री के० एम० मुनशी को इस होड़ में एक "राष्ट्रीय ख़तरा" दिखाई देता है—क्योंकि उनका "राष्ट्र" अमीरों और शहर वालों का ही राष्ट्र है. गाँव और गाँव वाले केवल शहरों और शहर वालों को ज़िन्दा रखने और उनके ऐश आराम को बनाए रखने के साधन हैं!

पिछले दिनों कोल्हुओं पर कुछ रोक थाम लगाई गई थी. कुछ समझदार लोगों के शोर मचाने पर वह रोक थाम हटी या कुछ कम हुई. अब फिर नई नई तजवीज़ें की जा रही हैं. श्री के० एम० मुनशी के बयान से ज़ाहिर है कि अगर सरकार ख़ास तौर पर एक फ़रीक़ को मदद न दे और गाँव और शहरों के बीच की इस "होड़" को क़ुदरती तौर पर अपना निपटारा कर लेने दे तो बड़े से बड़े कारख़ानों की भाप और बिजली और बड़े से बड़े पूँजीपतियों की थैलियाँ हमारे कोल्हुओं और गुड़ के धन्दे को मिटा नहीं सकतीं. पर बात साफ़ दिखाई दे रही है. देस के पूँजीपति और कुछ सरकारी लोग मिल कर—और ज़ाहिर है. बिदेसों के उन पूँजीपतियों का भी इसमें हाथ है जिन की बनाई मशीनों और जिन के कैमीकल्स से यह चीनी के कारख़ाने चलते हैं—गुड़, कोल्हू और हमारे देहातों की रही सही ज़िन्दगी को ख़तम करने के चक्कर में हैं.

१६४७ में एक बार जब भारत के कुछ पूंजीपति अमरीका और इंगलिस्तान डेपूटेशन ले कर गए थे तो गांधी जी ने 'हरिजन' में बहुत

انگلستان کی بنی مشینوں اور کیمیکل کے سہارے چلتے ھیں. کولھو اور خاصکر لکڑی کے کولھو ادھکتر گانوں میں ھی تیار ھوجاتے ھیں. پھر بھی شری کے. ایم. منشی کو اس ھوڑ میں ایک "راشٹریہ خطرہ" دکھائی دیتا ھے—کیونکہ اُن کا "راشٹر" امیروں اور شہر والوں کا ھی راشٹر ھے. گانوں اور گانوں والے کیول شہروں اور شہر والوں کو زندہ رکھنے اور اُنکے عیش آرام کو بنائے رکھنے کے سادھن ھیں!

پچھلے دنوں کولھوؤں پر کچھ روک تھام لگائی گئی تھی. کچھ سمجھدار لوگوں کے شور مچانے پر وہ روک تھام ھٹی یا کچھ کم ھوئی. اب پھر نئی نئی تجویزیں کی جارھی ھیں. شری کے. ایم. منشی کے بیان سے ظاھر ھے کہ اگر سرکار خاص طور پر ایک فریق کو مدد نہ دے اور گانوں اور شہروں کے بیچ کی اُس "ھوڑ" کو قدرتی طور پر اپنا نپٹارا کر لینے دے تو بڑے سے بڑے کارخانوں کی بھاپ اور بجلی اور بڑے سے بڑے پونجی پتیوں کی تھیلیاں ھمارے کولھوؤں اور گڑ کے دھندے کو مٹا نہیں سکتیں. پر بات صاف دکھائی دے رھی ھے. دیس کے پونجی پتی اور کچھ سرکاری لوگ ملکر—اور ظاھر ھے، بدیسوں کے اُن پونجی پتیوں کا بھی اس میں ھاتھ ھے جنکی بنائی مشینوں اور جنکے کیمیکلس سے یہ چینی کے کارخانے چلتے ھیں—گڑ، کولھو اور ھمارے دیہاتوں کی رھی سہی زندگی کو ختم کرنے کے چکر میں ھیں.

۱۹۴۷ میں ایکبار جب بھارت کے کچھ پونجی پتی امریکہ اور انگلستان ڈیپوٹیشن لیکر گئے تھے تو گاندھی جی نے 'ھریجن' میں بہت

राजकाजी चालों से उस समय हमारे वह धन्दे ख़तम किये गए उन की तफ़सील में यहाँ जाने की ज़रूरत नहीं. उस सारे दुख भरे इतिहास का निचोड़ बयान करते हुए इतिहास लेखक विलसन लिखता है कि—"बिदेसी कारख़ाने वालों ने अपने मुक़ाबले के एक ऐसे कारीगर को दबाकर रखने और आख़िर में उसका गला घोट देने के लिये, जिस के साथ वह बराबरी की शर्तों पर मुक़ाबला न कर सकते थे. राजकाजी अन्याय के हथियार से काम लिया......अगर यह न किया गया होता तो पेजली और मैनचेस्टर के पुतली घर खुलते ही बन्द हो गए होते और फिर भाप की ताक़त से भी दोबारा न चलाये जा सकते."

हमारे हाथ के कपड़े के धन्दे की बरबादी ने हमारे गाँवों और उन में रहने वाली अस्सी फ़ी सदी जनता की तीन चौथाई जान निकाल ली. उसी से मिलती जुलती आफ़त अब हमारे गन्ने की खेती और गुड़ के धन्दे पर आ रही है. श्री के० एम० मुनशी के अनुसार गाँव के गुड़ बनाने वाले कोल्हुओं और चीनी के बड़े बड़े धुवाँ उगलने वाले कारख़ानों में एक होड़ है जिसमें श्री के० एम० मुनशी को एक "राष्ट्रीय ख़तरा" दिखाई पड़ता है. कोल्हू ग़रीब देहातियों के हैं और कारख़ाने बड़े बड़े पूँजीपतियों के. कोल्हू अधिकतर रस और गुड़ पैदा करते हैं जो ग़रीबों का सहारा और सुख देता है. मिल की सफ़ैद चीनी अधिकतर शहर वालों और पैसे वालों के काम आती है. चीनी के कारख़ानों की अधिकतर आमदनी बड़े बड़े पूँजीपतियों की जेबों में जाती है. गुड़ के धन्दे की सारी आमदनी ग़रीब गाँव वालों [illegible] बड़े कारख़ाने अमरीका और

راج کاجی چالوں سے اُس سمے ہمارے وہ دھندے ختم کئے گئے اُن کی تفصیل میں یہاں جانے کی ضرورت نہیں. اُس سارے دکھ بھرے اتہاس کا نچوڑ بیان کرتے ہوئے اتہاس لیکھک ولسن لکھتا ہے کہ —"بدیسی کارخانے والوں نے اپنے مقابلے کے ایک ایسے کاریگر کو دبا کر رکھنے اور آخر میں اس کا گلا گھوٹ دینے کیلئے، جسکے ساتھ وہ برابری کی شرطوں پر مقابلہ نہ کر سکتے تھے، راج کاجی انیائے کے ہتھیار سے کام لیا..... اگر یہ نہ کیا گیا ہوتا تو پیزلی اور مینچسٹر کے پتلی گھر کھلتے ہی بند ہوگئے ہوتے اور پھر بھاپ کی طاقت سے بھی دوبارہ نہ چلائے جاسکتے."

ہمارے ہاتھ کے کپڑے کے دھندے کی بربادی نے ہمارے گاؤں اور ان میں رہنے والی اسی فیصدی جنتا کی تین چوتھائی جان نکال لی. اُسی سے ملتی جلتی آفت اب ہمارے گنے کی کھیتی اور گڑ کے دھندے پر آرہی ہے. شری کے. ایم. منشی کے انوسار گاؤں کے گڑ بنانے والے کولہوؤں اور چینی کے بڑے بڑے دھواں اگلنے والے کارخانوں میں ایک ہوڑ ہے جسمیں شری کے. ایم. منشی کو ایک "راشٹریہ خطرہ" دکھائی پڑتا ہے. کولہو غریب دیہاتیوں کے ہیں اور کارخانے بڑے بڑے پونجی پتیوں کے. کولہو ادھک تر رس اور گڑ پیدا کرتے ہیں جو غریبوں کو سہارا اور سکھ دیتا ہے. مل کی سفید چینی، ادھک تر شہر والوں اور پیسے والوں کے کام آتی ہے. چینی کے کارخانوں کی ادھک تر آمدنی بڑے بڑے پونجی پتیوں کی جیبوں میں جاتی ہے. گڑ کے دھندے کی ساری آمدنی غریب گاؤں والوں کے کام آتی ہے. چینی کے بڑے بڑے کارخانے امریکہ اور

दिल्ली सरकार से मिलने पहुँचे हैं इसलिये हमें उम्मीद है कि बुनकरों की शिकायत दूर होने में बहुत देर न लगेगी.

२०. ३. ५१ —भगवानदीन

एक नया राष्ट्रीय ख़तरा?

२७ फ़रवरी को दिल्ली में इन्डियन सेन्ट्रल शुगरकेन कमेटी के सामने ख़ूराक और खेती विभाग के वज़ीर श्री के. एम. मुनशी ने बताया कि—"उत्तर प्रदेश और बिहार के चीनी के कारख़ाने इस समय ख़तरनाक हालत में हैं........चीनी और गुड़ के बीच होड़ (rivalry) लगभग इतनी अधिक बढ़ गई है कि यह एक राष्ट्रीय ख़तरा होगया है. शहरों और गावों के हित एक दूसरे से टकरा रहे हैं.......अगर हमने इसका जल्दी कुछ इलाज न किया तो वह वक़्त आजायगा जब क़ुदरती तौर पर इन इलाक़ों के चीनी के कारख़ानों को दक्खिन की तरफ़ उठा लेजाना पड़ेगा जिससे यह इलाक़े बरबाद हो जाएँगे..........."

चीनी के कारख़ानों को इस ख़तरे से बचाने के लिये कमेटियाँ और सब-कमेटियाँ बन रही हैं और ज़ोरदार तजवीज़ें हो रही हैं.

इस देस के चरख़ों, करघों और कपड़े की कारीगरी की बरबादी की बाबत आम तौर पर यह कहा जाता है और समझा जाता है कि हाथ के धन्दे मिलों के सामने नहीं ठहर सकते और उन की

دلی سرکار سے ملنے پہونچے هیں اس لئے همیں اُمید ہے کہ بنکروں کی شکایت دور ہونے میں بہت دیر نہ لگے گی ۔

٢٠-٣-٥١ —بھگوان دین

ایک نیا راشٹریہ خطرہ

٢٧ فروری کو دلی میں انڈین سنٹرل شوگر کین کمیٹی کے سامنے خوراک اور کھیتی وبھاگ کے وزیر شری کے . ایم . منشی نے بتایا کہ—"اُتر پردیش اور بہار کے چینی کے کارخانے اس سمے خطرناک حالت میں ھیں...... چینی اور گڑ کے بیچ ہوڑ (rivalry) لگ بھگ اتنی آدھک بڑھ گئی ہے کہ یہ ایک راشٹریہ خطرہ ہوگیا ہے ۔ شہروں اور گانوں کے ھت ایک دوسرے سے ٹکرا رہے ھیں ......اگر ہم نے اِسکا جلدی کچھ علاج نہ کیا تو وہ وقت آجاویگا جب قدرتی طور پر اِن علاقوں کے چینی کے کارخانوں کو دکھن کی طرف اُٹھا لیجانا پڑیگا جس سے یہ علاقے برباد ہوجائینگے..."

چینی کے کارخانوں کو اس خطرہ سے بچانے کے لئے کمیٹیاں اور سب کمیٹیاں بن رہی ھیں اور زوردار تجویزیں ہو رہی ھیں ۔

اس دیس کے چرخوں' کرگھوں اور کپڑے کی کاریگری کی بربادی کی بابت عام طور پر یہ کہا جاتا ہے اور سمجھا جاتا ہے کہ ہاتھ کے دھندے ملوں کے سامنے نہیں ٹھہر سکتے اور اُن کی

ऐब के घेरे से भी अभी हम नहीं निकल पाए हैं. और इसे छोड़िये इस वक़्त तो हम यही चाहते हैं कि काँगरेस इससे सबक़ ले और आगे वह ऐसे मौक़ों के लिये तैयार रहा करे, और ख़ुद बीच में कूद कर भड़की हुई सरकार की भड़क को उस हद तक हरगिज़ न पहुँचने दे जिस हद तक अंगरेज़ी सरकार कुछ देर भी सोचे बिना पहुँच जाया करती थी.

नागपुर के सत्याग्रह से सरकार और सरकारों को यह सबक़ ज़रूर लेना चाहिये कि वह सूत कातने वाली मिलें किस तरह ज़रा सी भूल से या अगर चाहें तो जान बूझकर बुनकरों में बेकारी पैदा करके सरकार के ख़िलाफ़ एक नई आफ़त खड़ी कर सकती हैं. हम तो यही कहेंगे कि मध्यप्रान्त सरकार को बहुत जल्द अपने जेलख़ानों और अपने स्कूलों को सूत कातने के कारख़ानों में बदल देना चाहिये और सूत के मामले में दिल्ली सरकार की उँगली पकड़कर चलना छोड़ देना चाहिये.

श्री रुईकर जी की कही हुई बात से हमें ऐसी गंध आती है कि सत्याग्रह की जड़ में सच्चाई के साथ साथ चुनाव की चालाकी भी है. तब तो हम यही सलाह देंगे कि उस चुनाव चालाकी को वहाँ से बिल्कुल दूर कर देने से ही सब का भला होगा.

हम नागपुर रहे हैं और वहाँ के १४ बरस के तजुरबे के बलपर यह कह सकते हैं कि नागपुर के बुनकर ख़ास तौर से और और लोग आम तौर से ठीक ठीक सत्याग्रह करना जानते हैं. और उनसे ऐसी भूल बहुत कम ही होती है जो सरकार में भड़क पैदा कर सके, इसलिये हम मध्यप्रान्त की सरकार से चाहेंगे कि वह बेमतलब की शान को फेंककर उनकी शिकायत को सुन ले और जल्दी से जल्दी उस शिकायत को दूर करने की कोशिश करे.

हमें यह भी पता चला है कि कुछ लोग इसी सिलसिले में

عیب کے گھیرے سے بھی ابھی ہم نہیں نکل پائے ہیں. اور اسے چھوڑئیے اِسوقت تو ہم یہی چاہتے ہیں کہ کانگریس اس سے سبق لے اور آگے وہ ایسے موقعوں کے لئے تیار رہا کرے، اور خود بیچ میں کود کر بھڑکی ہوئی سرکار کی بھڑک کو اُس حد تک ہرگز نہ پہونچنے دے جس حد تک انگریزی سرکار کچھ دیر بھی سوچے بنا پہنچ جایا کرتی تھی.

ناگپور کے ستیاگرہ سے سرکار اور سرکاروں کو یہ سبق ضرور لینا چاہئے کہ وہ سوت کاتنے والی ملیں کسطرح ذرا سی بھول سے یا اگر چاہیں تو جان بوجھ کر بنکروں میں بیکاری پیدا کرکے سرکار کے خلاف ایک نئی آفت کھڑی کر سکتی ہیں. ہم تو یہی کہینگے کہ مدھ پرانت سرکار کو بہت جلد اپنے جیل‌خانوں اور اپنے اسکولوں کو سوت کاتنے کے کارخانوں میں بدل دینا چاہئیے اور سوت کے معاملے میں دلی سرکار کی انگلی پکڑ کر چلنا چھوڑ دینا چاہئے.

شری روئیکر جی کی کہی ہوئی بات سے ہمیں ایسی گندھ آتی ہے کہ ستیاگرہ کی جڑ میں سچائی کے ساتھ ساتھ چناؤ کی چالاکی بھی ہے. تب تو ہم یہی صلاح دینگے کہ اُس چناؤ چالاکی کو وہاں سے بالکل دور کر دینے سے ہی سب کا بھلا ہوگا.

ہم ناگپور رہے ہیں اور وہاں کے ۱۴ برس کے تجربے کے بل پر یہ کہہ سکتے ہیں کہ ناگپور کے بنکر خاص طور سے اور اور لوگ عام طور سے ٹھیک ٹھیک ستیاگرہ کرنا جانتے ہیں. اور ان سے ایسی بھول بہت کم ہی ہوتی ہے جو سرکار میں بھڑک پیدا کر سکے، اسلئے ہم مدھ پرانت کی سرکار سے چاہینگے کہ وہ بےمطلب کی شان کو پھینک کر اُنکی شکایت کو سن لے اور جلدی سے جلدی اُس شکایت کو دور کرنے کی کوشش کرے.

ہمیں یہ بھی پتہ چلا ہے کہ کچھ لوگ اسی سلسلے میں

एक धारा सभा के मेम्बर के साथ पहुँचे और ऐसा करके एक तरीक़े से उन्होंने मिनिस्टरों की उस बेजा शान को धक्का पहुँचने से रोक दिया जो उनको अँगरेज़ों से विरासत में मिली है. हम यह समझ ही नहीं पाते कि किसी ज़िम्मेदार मिनिस्टर का दफ़्तर से बाहर निकल कर श्री कुम्भारे जी से मिलकर क्या बिगड़ता और क्यों शान को बट्टा लगता. आख़िर तो वह अपने साथ काम करने वाले से मिल रहे थे. अगर यू० पी० के प्रधान मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ जी हर मौक़े पर आम आदमियों से मिल लेते हैं तो मध्यप्रान्त के मिनिस्टरों को इतनी झिझक क्यों ? हमारा ख़याल है कि अगर ज़रा भी होशियारी और हमदर्दी से काम लिया गया होता तो यह सत्याग्रह को तरफ़ उठाया हुआ क़दम वहीं का वहीं रुक जाता. किसी भी कानूनी धारा के नाम पर किसी को जेल भेजने का तमाशा सन '२३ के नागपुर के झंडा सत्याग्रह में हम ख़ूब देख चुके हैं और हमें यह भी मालूम है कि नागपुर के उस समय के डिप्टी कमिश्नर के धारा के इस तरह इस्तेमाल करने पर राजाजी ने, जो आजकल दिल्ली में होम मिनिस्टर हैं; ख़ूब मज़ाक उड़ाया था.

इस वक़्त सरकार और सरकारों के ख़िलाफ़ इतनी बुरी हवा फैली हुई है कि श्री कुम्भारे जी ने नागपुर में सत्याग्रह उठाकर, श्री अतुलचन्द्र घोश ने मानभूम ज़िले में सत्याग्रह उठा कर सरकार के हक़ में बहुत बड़ी भलाई की है. इन सत्याग्रहों में लोगों का जोश निकल कर उस बड़ी क्रांति को रोक लेगा जो बहुत दिनों दबे रहकर उसको जन्म दे बैठता. हमारी राय में वह लोग सरकार का भला नहीं कर रहे हैं जो इस वक़्त न तो सत्याग्रह में भाग लेते हैं और न इतना भी कहते हैं कि यह सत्याग्रह सच्चाई पर हैं और ठीक वक़्त से शुरू हुए हैं.

सत्याग्रहियों के प्यासे रखने और प्यासे रहने देने की बात

ایک دھارا سبھا کے میمبر کے ساتھ پھونچے اور ایسا کرکے ایک طریقے سے اُنھوں نے منسٹروں کی اُس بیجا شان کو دھکا پھونچنے سے روک دیا جو اُنکو انگریزوں سے وراثت میں ملی ھے ھم یہ سمجھ ھی نہیں پاتے کہ کسی ذمہ دار منسٹر کا دفتر سے باھر نکل کر شری کمبھارے جی سے مل کر کیا بگڑتا اور کیوں شان کو بٹا لگتا . آخر تو وہ اپنے ساتھ کام کرنے والے سے مل رھے تھے . اگر یو . پی . کے پردھان منتری شری گووند ولبھ جی ھر موقع پر عام آدمیوں سے مل لیتے ھیں تو مدھ پرانت کے منسٹروں کو اتنی جھجھک کیوں ؟ ھمارا خیال ھے کہ اگر ذرا بھی ھوشیاری اور ھمدردی سے کام لیا گیا ھوتا تو یہ ستیا گرہ کی طرف اُٹھایا ھوا قدم وھیں کا وھیں رک جاتا. کسی بھی قانونی دھارا کے نام پر کسی کو جیل بھیجنے کا تماشا سن ۲۳' کے ناگپور کے جھنڈا ستیا گرہ میں ھم خوب دیکھ چکے ھیں اور ھمیں یہ بھی معلوم ھے کہ ناگپور کے اُس سمے کے ڈپٹی کمشنر کے دھارا کے اسطرح استعمال کرنے پر راجا جی نے' جو آجکل دلی میں ھوم منسٹر ھیں' خوب مذاق اُڑایا تھا .

اسوقت سرکار اور سرکاروں کے خلاف اتنی بری ھوا پھیلی ھوئی ھے کہ شری کمبھارے جی نے ناگپور میں ستیا گرہ اٹھا کر' شری اتول چندر گھوش نے مان بھوم ضلع میں ستیا گرہ اٹھا کر سرکار کے حق میں بہت بڑی بھلائی کی ھے . اُن ستیا گرھوں میں لوگوں کا جوش نکل کر اُس بڑی کرانتی کو روک لے گا جو بہت دنوں دبے رہ کر اسکو جنم دے بیٹھتا . ھماری رائے میں وہ لوگ سرکار کا بھلا نہیں کر رھے ھیں جو اسوقت نہ تو ستیا گرہ میں بھاگ لیتے ھیں اور نہ اتنا بھی کہتے ھیں کہ یہ ستیا گرہ سچائی پر ھیں اور ٹھیک وقت سے شروع ھوئے ھیں .

ستیاگرھیوں کے پیاسے رکھنے اور پیاسے رھنے دینے کی بات

लेकर जो सत्याग्रह के मैदान में कूद पड़े हैं, वहाँ हमें न जल्दबाज़ी मालूम होती है, न जोश दिखाई देता है और न नासमझी मिलती है. भोजन सत्याग्रह बहुत दुखी होकर ही उठाया गया है और वह सत्याग्रह की कसौटी पर ठीक भी उतरता मालूम होता है. हमारी राय में जो गाँव अनाज पैदा करता है वह सचाई पर है अगर वह अपनी उस पैदावार को बाहर जाने से रोकता है जिसके बाहर चले जाने से उस गाँव वालों को भूका मरने की नौबत आ जाना मुमकिन है. आज तक के मानभूम सत्याग्रह में सरकार की ओर से कोई रुकावट डालने की बात नहीं सुनी गई. इसलिये हम इस पर इससे ज्यादा और क्या कह सकते हैं कि जो आदमी इस सत्याग्रह के काम में लगे हुए हैं वह सचमुच जी से यही चाहते हैं कि न उनके गाँव वाले भूके मरें और न उनके प्रांत वाले. उन पर प्रान्तपने का भी कोई इलजाम नहीं लगाया जा सकता जब तक वह सिर्फ़ यह चाहते हैं कि सरकार अपनी कन्ट्रोल नीत में ऐसा सुधार करे जिससे उनके प्रान्त का कोई आदमी भूका न मर पाये.

नागपुर सत्याग्रह

नागपुर सत्याग्रह अपने क़िस्म का अलग है. वह अभी सत्याग्रह ही नहीं है, वह तो सिर्फ़ सत्याग्रह के लिये उठाया हुआ एक क़दम है. वहाँ के बुनकर इस वजह से बेकार हो गए हैं कि उन्हें सूत कातने वाली मिलें सूत नहीं दे रहीं हैं और वह सिर्फ़ यही शिकायत लेकर उन आदमियों के पास पहुँचे थे जिन्हें उन्होंने क़ानून बनाने और सरकार चलाने के काम के लिये चुना था. यह दूसरी बात है कि वह खुद पहुँचे थे या पहुँचाये गये थे. ठीक तो यही होता कि वह खुद पहुंचते पर इस लिहाज़ से कि आजकल की सरकारें ठीक ठीक न समझती हैं और न समझना चाहती हैं कि उनके और जनता के बीच में क्या रिश्ता है, यही ज्यादा ठीक हुआ कि वह

لیکر جو ستیا گرہ کے میدان میں کود پڑے ہیں ' وہاں ہمیں نہ جلد بازی معلوم ہوتی ہے ' نہ جوش دکھائی دیتا ہے اور نہ ناسمجھی ملتی ہے ۔ بھوجن ستیا گرہ بہت دکھی ہو کر ہی اُٹھایا گیا ہے اور وہ ستیا گرہ کی کسوٹی پر ٹھیک بھی اُترتا معلوم ہوتا ہے ۔ ہماری رائے میں جو گاؤں اناج پیدا کرتا ہے وہ سچائی پر ہے اگر وہ اپنی اس پیداوار کو باہر جانے سے روکتا ہے جسکے باہر چلے جانے سے اُس گاؤں والوں کو بھوکا مرنے کی نوبت آجانا ممکن ہے ۔ آج تک کے مان بھوم ستیا گرہ میں سرکار کی اور سے کوئی رکاوٹ ڈالنے کی بات نہیں سنی گئی ۔ اسلئے ہم اِسپر اس سے زیادہ اور کیا کہہ سکتے ہیں کہ جو آدمی اس ستیا گرہ کے کام میں لگے ہوئے ہیں وہ سچ مچ جی سے یہی چاہتے ہیں کہ نہ اُنکے گاؤں والے بھوکے مریں نہ اُنکے پرانت والے ۔ اُن پر پرانت پنے کا بھی کوئی الزام نہیں لگایا جا سکتا جب تک وہ صرف یہ چاہتے ہیں کہ سرکار اپنی کنٹرول نیت میں ایسا سدھار کرے جس سے انکے پرانت کا کوئی آدمی بھوکا نہ مر پائے ۔

ناگپور ستیا گرہ

ناگپور ستیا گرہ اپنے قسم کا الگ ہے ۔ وہ ابھی ستیہ گرہ ہی نہیں ہے ' وہ تو صرف ستیا گرہ کے لئے اُٹھایا ہوا ایک قدم ہے ۔ وہاں کے بنکر اس وجہ سے بیکار ہو گئے ہیں کہ اُنہیں سوت کاتنے والی ملیں سوت نہیں دے رہے ہیں اور وہ صرف یہی شکایت لیکر اُن آدمیوں کے پاس پہونچے تھے جنھیں انھوں نے قانون بنانے اور سرکار چلانے کے کام کے لئے چنا تھا ۔ یہ دوسری بات ہے کہ وہ خود پہونچے تھے یا پہنچائے گئے تھے ۔ ٹھیک تو یہی ہوتا کہ وہ خود پہونچتے پر اس لحاظ سے کہ آجکل کی سرکاریں ٹھیک ٹھیک نہ سمجھتی ہیں اور نہ سمجھنا چاہتی ہیں کہ اُنکے اور جنتا کے بیچ میں کیا رشتہ ہے ' یہی زیادہ ٹھیک ہوا کہ وہ

या २५० मन बतलाकर सरकार से छुटकारा हासिल करेगा और बाक़ी माल को बाजार में ३ सेर के भाव बेचकर फ़ायदा उठायेगा और उस फ़ायदे से जो रिशवत दी है उसको पूरा करेगा और बाक़ी को अपने लिये बचा लेगा. इस तरह पैदावार का आँकड़ा ५०० मन के बजाय ३०० या २५० मन रह जायगा और अब जहाँ ५०० मन की जरूरत थी वहाँ २५० मन का आँकड़ा देखकर इंतज़ाम करने वालों में खलबली मचेगी, वह इस कमी का शोर मचायेंगे, बाहर से अनाज मंगाने की कोशिश करेंगे और इस सब का नतीजा बाज़ार भाव पर पड़ेगा. भाव चढ़ जायगा. भाव चढ़ने से दूकानदार छिपाना शुरू कर देंगे और चोर बाजारी शुरू हो जायगी.

इस तरह के चक्कर से बचने का एक ही तरीक़ा था. कन्ट्रोल का ख़त्म कर देना और राशन की दुकानों का या तो बिल्कुल न होना या कम से कम उनसे ख़रीदना जरूरी न होना. एक बार नागपुर में हम यह अपनी आँखों देख चुके हैं. वहाँ राशन की दूकानें भी थीं और बाजार में राशन की चीजों की निजी दूकानें भी थीं. राशन की दूकान से बँधे दर पर माल मिलता था और निजी दूकानों से अपने अपने सुभीते के मुताबिक़ कम ज्यादा दर पर चीजें मिल जाती थीं. अब इस तरह का रिवाज है या नहीं हमें नहीं मालूम. हाँ, कहीं कहीं अपने ढंग का एक नया बेतुकापन ज़रूर देखने में आया, जैसे कहीं कहीं गेहूँ पर कन्ट्रोल है मगर डबल रोटी चाहे जितनी ख़रीदिये. बिस्कुट जो गेहूँ के ही बनते हैं उन पर तो कहीं हमने न कन्ट्रोल देखा न कूपन जारी होते सुना.

इस तरह के और कितने ही बेतुकेपन गिनाये जा सकते हैं. पर इस वक़्त तो हम सीधे सत्याग्रह पर बात करेंगे.

मानभूम सत्याग्रह

یا ۲۵۰ من بتلا کر سرکار سے چھٹکارا حاصل کرے گا اور باقی مال کو بازار میں ۳ سیر کے بھاؤ بیچ کر فائدہ اُٹھائے گا اور اُس فائدے سے جو رشوت دی ہے اسکو پورا کرے گا اور باقی کو اپنے لئے بچا لے گا ۔ اسطرح پیداوار کا آنکڑا ۵۰۰ من کے بجائے ۳۰۰ یا ۲۵۰ من رہ جائیگا اور اب جہاں ۵۰۰ من کی ضرورت تھی وہاں ۲۵۰ من کا آنکڑا دیکھکر انتظام کرنے والوں میں کھلبلی مچے گی' وہ اس کمی کا شور مچائینگے' باہر سے اناج منگانے کی کوشش کرینگے اور اس سب کا نتیجہ بازار بھاؤ پر پڑیگا ۔ بھاؤ چڑھ جائیگا ۔ بھاؤ چڑھنے سے دوکاندار چھپانا شروع کر دینگے اور چور بازاری شروع ہو جائیگی ۔

اسطرح کے چکر سے بچنے کا ایک ہی طریقہ تھا ۔ کنٹرول کا ختم کر دینا اور راشن کی دوکانوں کا یا تو بالکل نہ ہونا یا کم سے کم اُن سے خریدنا ضروری نہ ہونا ۔ ایک بار ناگپور میں ہم یہ اپنی آنکھوں دیکھ چکے ہیں ۔ وہاں راشن کی دوکانیں بھی تھیں اور بازار میں راشن کی چیزوں کی نجی دوکانیں بھی تھیں ۔ راشن کی دوکان سے بندھے در پر مال ملتا تھا اور نجی دوکانوں سے اپنے اپنے سبھیتے کے مطابق کم زیادہ در پر چیزیں مل جاتی تھیں ۔ اب اسطرح کا رواج ہے یا نہیں ہمیں نہیں معلوم ۔ ہاں کہیں کہیں اپنے ڈھنگ کا ایک نیا بے تکا پن ضرور دیکھنے میں آیا' جیسے کہیں کہیں گیہوں پر کنٹرول ہے مگر ڈبل روٹی چاہے جتنی خریدیئے ۔ بسکٹ جو گیہوں کے ہی بنتے ہیں اُن پر تو کہیں ہم نے نہ کنٹرول دیکھا نہ کوپن جاری ہوتے سنا ۔

اسطرح کے اور کتنے ہی بے تکے پن گنائے جا سکتے ہیں ۔ پر اسوقت تو ہم سیدھے ستیاگرہ پر بات کرینگے ۔

مان بھوم ستیا گرہ

है अमरीका और उसके साथियों की दुनिया भर के कच्चे माल की प्यास से और दूसरे देसों के सर अपने यहाँ के बने माल जबरदस्ती मढ़ने की लालसा से. यह प्यास और यह लालसा ही सारे साम्राजबाद, युद्धों और दुनिया की मुसीबतों की जड़ है.

२०-३-५१ —सुन्दरलाल

सत्याग्रह की गूंज—

खाना और कपड़ा आदमी की दो सबसे बड़ी जरूरतें हैं और इसमें शक नहीं कि इन दोनों की हिन्दुस्तानी जनता को बेहद तकलीफ़ है. खाने के लिये बिहार के जिले मानभूम में और सूत के लिये नागपूर में अगर सरकार के खिलाफ़ सत्याग्रह उठ खड़ा हुआ तो अचरज नहीं. अचरज हमें यह है कि इन दो तकलीफ़ों को जनता अब तक किस तरह बरदाश्त करती रही.

हमारी पूछ ताछ और हमारी खोज बीन हमें इस नतीजे पर पहुँचाती है कि खाने के सामान की हिन्दुस्तान में इतनी कमी नहीं है जितना उस कमी के बारे में सरकार की तरफ़ से शोर मचाया जाता है. काले बाज़ार और रिशवत ने एक ऐसी हवा पैदा कर दी है कि सरकार को अपने अहलकारों से जो आँकड़े मिलते हैं वह ठीक नहीं होते. इतना ही नहीं वह बहुत हद तक बनावटी और फ़रज़ी होते हैं. और सरकार खाने पीने की चीज़ों के मामले में उन्हीं आँकड़ों पर काम करती और इंतज़ाम की बात सोचती है. इसी बात को हम यों साफ़ कर देना चाहते हैं कि जिस वक़्त बाज़ार में गेहूं का भाव तीन सेर है और सरकार साढ़े तीन सेर का कंट्रोल भाव निकाल कर किसान से ३॥ सेर के भाव ख़रीदना चाहेगी तब किसान क्यों न अहलकारों को रिशवत देकर अपने यहाँ अनाज के पैदा होने की कमी दिखाएगा. यानी ५०० मन पैदावार को ३००

ھے امریکہ اور اُسکے ساتھیوں کی دنیا بھر کے کچے مال کی پیاس سے اور دوسرے دیسوں کے سر اپنے یہاں کے بنے مال زبردستی موھنے کی لالسا سے . یہ پیاس اور یہ لالسا ھی سارے سامراجواد' یدھوں اور اور دنیا کی مصیبتوں کی جڑ ھے .

٥١-٣-٢٠ ——سندرلال

ستیہ گرہ کی گونج——

کھانا اور کپڑا آدمی کی دو سب سے بڑی ضرورتیں ھیں اور اس میں شک نہیں کہ اِن دونوں کی ھندستانی جنتا کو بیحد تکلیف ھے . کھانے کے لئے بہار کے ضلعے مان بھوم میں اور سوت کے لئے ناگپور میں اگر سرکار کے خلاف ستیا گرہ اُٹھ کھڑا ھوا تو اچرج نہیں . اچرج ھمیں یہ ھے کہ اِن دو تکلیفوں کو جنتا اب تک کس طرح برداشت کرتی رھی .

ھماری پوچھ تاچھ اور ھماری کھوج بین ھمیں اس نتیجے پر پہونچاتی ھے کہ کھانے کے سامان کی ھندستان میں اتنی کمی نہیں ھے جتنا اُس کمی کے بارے میں سرکار کی طرف سے شور مچایا جاتا ھے . کالے بازار اور رشوت نے ایک ایسی ھوا پیدا کر دی ھے کہ سرکار کو اپنے اھلکاروں سے جو آنکڑے ملتے ھیں وہ ٹھیک نہیں ھوتے . اتنا ھی نہیں وہ بہت حد تک بناوٹی اور فرضی ھوتے ھیں . اور سرکار کھانے پینے کی چیزوں کے معاملے میں انہیں آنکڑوں پر کام کرتی اور انتظام کی بات سوچتی ھے . اسی بات کو ھم یوں صاف کر دینا چاھتے ھیں کہ جسوقت بازار میں گیہوں کا بھاؤ تین سیر ھے اور سرکار ساڑھے تین سیر کا کنٹرول بھاؤ نکال کر کسان سے ساڑھے تین سیر کے بھاؤ خریدنا چاھے گی تب کسان کیوں نہ اھلکاروں کو رشوت دے کر اپنے یہاں اناج کے پیدا ھونے کی کمی دکھائے گا . یعنی ٥٠٠ من پیداوار کو ٣٠٠

"इसी लिये यह लोग अमन की तहरीक से भी डरते हैं.

"इसी लिये यह लोग सोवियट सरकार की इस तरह की सब तजवीज़ों को, जैसे यह कि अमन क़ायम रखने का अहदनामा कर लिया जावे, हथियार कम कर दिये जावें, और एटम बम ऐसी चीज़ों पर रोक लगा दी जावे, ठुकराते रहे हैं.

"अमन पसन्द शक्तियों और इन हमला करने वाली शक्तियों के बीच की इस खींचा तानी का क्या नतीजा होगा कौन जाने."

नतीजा

हम पूरी शक्ति भर अपने देस को इन अलग अलग दलों की खींचातानी से अलग रखना चाहते हैं. हम अमरीका और इंगलिस्तान, रूस और चीन सबका भला चाहते हैं और सबके साथ मित्रता से रहना चाहते हैं. हमें यह भी विश्वास है कि भारत की जनता और भारत सरकार दोनों के इस विशय में एक से और लगभग यही विचार हैं. हमने यह सब केवल यह दिखाने के लिये लिखा है कि हमारी राय में भारत सरकार का दिल्ली पीस कानफ़रेन्स पर इस तरह की रोक थाम लगाना राजकाजी पालिसी या हिकमते अमली की निगाह से चाहे कुछ भी क़ीमत रखता हो पर हक़ीक़त की निगाह से और देस की जनता के भावों के निगाह से ग़लत है.

असली ख़तरा

भारत की और दुनिया की सरकारों को यह बात भी अच्छी तरह जान लेना चाहिये कि दुनिया की जनता की निगाहों में 'कम्यूनिस्ट ख़तरा' या 'लाल ख़तरा' नाम का इस समय कोई ख़तरा नहीं है. ख़तरा है उन लोगों से जो 'कम्यूनिस्ट ख़तरा' जैसी आवाज़ें उठा कर दुनिया में व्यर्थ का द्वेश बढ़ाते हैं और ख़तरा

"اِسی لئے یہ لوگ امن کی تحریک سے بھی ڈرتے ھیں.

"اِسی لئے یہ لوگ سوویت سرکار کی اسطرح کی سب تجویزوں کو، جیسے یہ کہ امن قائم رکھنے کا عہدنامہ کر لیا جاوے، ھتھیار کم کر دئے جاویں، اور ایٹم بم ایسی چیزوں پر روک لگا دی جاوے، ٹھکراتے رھے ھیں

"امن پسند شکتیوں اور اِن حملہ کرنے والی شکتیوں کے بیچ کی اس کھینچا تانی کا کیا نتیجہ ھوگا کون جانے؟"

نتیجہ

ھم پوری شکتی بھر اپنے دیس کو ان الگ الگ دلوں کی کھینچاتانی سے الگ رکھنا چاھتے ھیں. ھم امریکہ اور انگلستان، روس اور چین سب کا بھلا چاھتے ھیں اور سب کے ساتھ متر‌تا سے رھنا چاھتے ھیں. ھمیں یہ بھی وشواس ھے کہ بھارت کی جنتا اور بھارت سرکار دونوں کے اس وشے میں ایک سے اور لگ بھگ یہی وچار ھیں. ھم نے یہ سب کیول یہ دکھانے کے لئے لکھا ھے کہ ھماری رائے میں بھارت سرکار کا دلی پیس کانفرنس پر اس طرح کی روک تھام لگانا راجکاجی پالیسی یا حکمت عملی کی نگاہ سے چاھے کچھ بھی قیمت رکھتا ھو پر حقیقت کی نگاہ سے اور دیس کی جنتا کے بھاؤں کی نگاہ سے غلط ھے.

اصلی خطرہ

بھارت کی اور دنیا کی سرکاروں کو یہ بات بھی اچھی طرح جان لینا چاھئے کہ دنیا کی جنتا کی نگاھوں میں 'کمیونسٹ خطرہ' یا 'لال خطرہ' نام کا اس سمے کوئی خطرہ نہیں ھے. خطرہ ھے اُن لوگوں سے جو 'کمیونسٹ خطرہ' جیسی آوازیں اُٹھا کر دنیا میں ویرتھ کا دویش بڑھاتے ھیں اور خطرہ

"यू. एन. ओ. में ज़ोर इन दस देसों का है जो उत्तर एटलांटिक समझौते में हिस्सेदार हैं, यानी अमरीका, बरतानिया, फ्रांस, कनैडा, बेलजियम, हालैंड, लक्सेमबर्ग, डेनमार्क, नारवे और आइसलैंड. लैटिन अमरीका के अन्दर के बीस छोटे छोटे देस इनके साथ हैं. यह सब देस मिल कर दुनिया के अमन या जंग का फ़ैसला करते हैं. इन्हीं ने मिल कर चीन की लोकशाही हुकूमत को एग्रेसर क़रार दे दिया.

"आजकल के यू. एन. ओ. में यह एक अजीब बात है कि अमरीका का एक छोटा सा देस डोमीनीकन रिपब्लिक जिस की आबादी बीस लाख भी नहीं है यू. एन. ओ. में उतना ही वज़न रखता है जितना भारत. और चीन की लोकशाही सरकार की तो वहाँ कोई जगह है ही नहीं.

"इन सब देसों के बड़े बड़े व्योपारी पूँजीपति योरप में या एशिया में कहीं भी नई जंग चाह रहे हैं ताकि जंग के दिनों में वह लड़ने वाले देसों को तरह तरह का माल बेच सकें और इस ख़ून ख़राबे से करोड़ों और अरबों रुपए कमा सकें.

"यू. एन. ओ. की भी, ज़ाहिर है, वही दुर्गत होने वाली है जो लीग आफ़ नेशन्स की हो चुकी है.

"मैं अब भी यह नहीं मानता कि जंग रोकी नहीं जा सकती लेकिन अमरीका, बरतानिया और फ्रांस के अन्दर इस तरह की ताक़तें काम कर रही हैं जो लड़ाई की प्यासी हैं. यही ताक़तें वहाँ की सरकारों को कठपुतली की तरह नचा रही हैं. पर वह सरकारें अपने अपने यहाँ की जनता से डरती हैं. जनता कहीं भी नया युद्ध नहीं चाहती. वह सब जगह अमन चाहती है.

'इसी लिये यह लोग झूटी बातें उड़ाकर अपने अपने यहाँ की जनता को फँसाना चाहते हैं, अमन पसन्द देसों की अमन पसन्दी को ज़्यादती बताते हैं और अपने को दुनिया का रक्षक.

''یو . این . او . میں زور اِن دس دیسوں کا ہے جو اُتر اٹلانٹک سمجھوتے میں حصےدار ہیں ، یعنی امریکہ، برطانیہ، فرانس، کنیڈا، بلجیم، ہالینڈ، لکسیمبرگ، ڈنمارک، ناروے اور آئس لینڈ. لیٹن امریکہ کے اندر کے بیس چھوٹے چھوٹے دیس ان کے ساتھ ہیں. یہ سب دیس ملکر دنیا کے امن یا جنگ کا فیصلہ کرتےہیں. انہیں نے ملکر چین کی لوک شاہی حکومت کو ایگریسر قرار دیدیا .

''آجکل کے یو . این . او . میں یہ ایک عجیب بات ہے کہ امریکہ کا ایک چھوٹا سا دیس ڈومینیکن ریپبلک جسکی آبادی بیس لاکھ بھی نہیں ہے یو . این . او . میں اُتنا ہی وزن رکھتا ہے جتنا بھارت . اور چین کی لوک شاہی سرکار کی تو وہاں کوئی جگہ ہے ہی نہیں .

''ان سب دیسوں کے بڑے بڑے بیوپاری پونجی پتی یورپ میں یا ایشیا میں کہیں بھی نئی جنگ چاہ رہے ہیں تاکہ جنگ کے دنوں میں وہ لڑنے والے دیسوں کو طرح طرح کا مال بیچ سکیں اور اس خون خرابے سے کروڑوں اور اربوں روپئے کما سکیں .

''یو . این . او . کی بھی، ظاہر ہے، وہی درگت ہونے والی ہے جو لیگ آف نیشنس کی ہو چکی ہے .

''میں اب بھی یہ نہیں مانتا کہ جنگ روکی نہیں جا سکتی لیکن امریکہ، برطانیہ اور فرانس کے اندر اسطرح کی طاقتیں کام کر رہی ہیں جو لڑائی کی پیاسی ہیں . یہی طاقتیں وہاں کی سرکاروں کو کٹھ پتلی کی طرح نچا رہی ہیں. پر وہ سرکاریں اپنے اپنے یہاں کی جنتا سے ڈرتی ہیں . جنتا کہیں بھی نیا یدھ نہیں چاہتی . وہ سب جگہ امن چاہتی ہے .''

اسی لئے یہ لوگ جھوٹی باتیں اُڑا کر اپنے اپنے یہاں کی جنتا کو پھنسانا چاہتے ہیں، امن پسند دیسوں کی امن پسندی کو زیادتی بتاتے ہیں اور اپنے کو دنیا کا رکشک .

एक यह अहदनामा होजावे कि वह अमन क़ायम रखेंगे तो मिस्टर एटली ने उस तजवीज़ को क्यों ठुकरा दिया था ?

"अगर वह सचमुच अमन की तरफ़ हैं तो उन्होंने सोवियट यूनियन की इन तजवीज़ों को क्यों नामंज़ूर किया था कि सब देस तुरन्त एक साथ अपने अपने हथियार कम करना शुरू करदें और ऐटम बम और दूसरे ऐटमी हथियारों के इस्तेमाल की तुरन्त मनाही कर दी जावे ?

"मिस्टर ऐटली अपने यहाँ अमन तहरीक चलाने वालों को क्यों सता रहे हैं ? उन्होंने इंगलिस्तान में होने वाली अमन कांगरेस को क्यों रोक दिया ?

"ज़ाहिर है कि प्रधान वज़ीर ऐटली अमन क़ायम करने के पक्ष में नहीं हैं. वह ज़बरदस्ती एक नये संसार व्यापी युद्ध को छेड़ने की फ़िक्र में हैं.

"जहाँ तक सोवियट यूनियन का सम्बन्ध है वह हमेशा अमन क़ायम रखने और युद्ध को रोकने की अपनी नीत पर क़ायम रहेगी.

"अमरीका और इंगलिस्तान के सिपाहियों को भी उन कोरिया वालों से युद्ध करने का विचार, जो अपने देस की रक्षा कर रहे हैं, बहुत नापसन्द है. सिपाहियों को यह विश्वास दिलाना सचमुच कठिन है कि चीन ने ज़्यादती की है, चीन एग्रेसर है और अमरीका और बरतानिया जो फ़ारमूसा को हड़पे हुए हैं और कोरिया में घुसे हुए हैं अमन के रक्षक हैं.

"उन के लिये यह समझना बहुत कठिन है कि कोरिया और चीन को अपने देस की रक्षा करने का हक़ नहीं है. यही कारन है कि जब सिपाही केवल अनमने दिल से हुक्म की पाबन्दी करने के लिये लड़ रहे हों तो अच्छे से अच्छे जरनैल और अफ़सर भी लड़ाई हार जाते हैं.

ایک یہ عہدنامہ ہو جاوے کہ وہ امن قائم رکھینگے تو مسٹر ایٹلی نے اُس تجویز کو کیوں ٹھکرا دیا تھا ؟

"اگر وہ سچ مچ امن کی طرف ہیں تو اُنھوں نے سویت یونین کی اِن تجویزوں کو کیوں نامنظور کیا تھا کہ سب دیس ترنت ایک ساتھ اپنے اپنے ھتھیار کم کرنا شروع کر دیں اور ایٹم بم اور دوسرے ایٹمی ھتیاروں کے استعمال کی ترنت مناھی کر دی جاوے ۔

"مسٹر ایٹلی اپنے یہاں امن تحریک چلانے والوں کو کیوں ستا رہے ہیں ؟ اُنھوں نے انگلستان میں ہونے والی امن کانگریس کو کیوں روک دیا ؟

"ظاہر ہے کہ پردھان وزیر ایٹلی امن قائم کرنے کے پکش میں نہیں ہیں ۔ وہ زبردستی ایک نئے سنسار ویاپی یدھ کو چھیڑنے کی فکر میں ہیں ۔

"جہاں تک سوویت یونین کا سمبندھ ہے وہ ہمیشہ امن قائم رکھنے اور یدھ کو روکنے کی اپنی نیت پر قائم رہیگی ۔

"امریکہ اور انگلستان کے سپاھیوں کو بھی اُن کوریا والوں سے یدھ کرنے کا وچار، جو اپنے دیس کی رکشا کر رہے ہیں، بہت ناپسند ہے ۔ سپاھیوں کو یہ وشواس دلانا سچ مچ کٹھن ہے کہ چین نے زیادتی کی ہے، چین ایگریسر ہے اور امریکہ اور برطانیہ جو فارموسا کو ہڑپے ہوئے ہیں اور کوریا میں گھسے ہوئے ہیں امن کے رکشک ہیں ۔

"اُنکے لئے یہ سمجھنا بہت کٹھن ہے کہ کوریا اور چین کو اپنے دیس کی رکشا کرنے کا حق نہیں ہے ۔ یہی کارن ہے کہ جب سپاہی کیول اَن‌منے دل سے حکم کی پابندی کرنے کے لئے لڑ رہے ہوں تو اچھے سے اچھے جرنیل اور افسر بھی لڑائی ہار جاتے ہیں ۔

साथी हालैंड है जिसके न्यू गाइना पर ज़बरदस्ती क़ब्ज़े और इंडोनीशिया के ख़िलाफ़ साज़िशों की चरचा बराबर आती रहती है.

यह हैं अमरीका और उसके साथियों के वह कारनामे जिन्हें दुनिया हैरानी के साथ देख रही है.

स्टालिन की बयान

आजकल की अन्तरक़ौमी हालत के जो चित्र समय समय पर अलग अलग देसों के नेताओं की तरफ़ से दुनिया के सामने रखे जारहे हैं उनमें दुनिया के अधिकतर अमन पसन्द, ग़ैर जानिबदार लोगों को स्टालिन के उस बयान में बहुत कुछ सच्चाई दिखाई देती है जो पिछली १६ फ़रवरी को मास्को रेडियो से ब्राडकास्ट हुआ था. इंगलिस्तान के प्रधान वज़ीर एटली ने रूस के ख़िलाफ़ कई तरह की ग़लत बयानियाँ की थीं. उनका तफ़सील के साथ जवाब देने के बाद स्टालिन ने कहा कि:—

"यू.एन. ओ. जो शुरू में अमन बनाए रखने के एक साधन के तौर पर क़ायम हुई थी अब एक नई बड़ी जंग के शुरू कर देने का साधन बनती जारही है.

"यू. एन. ओ. अमरीकी दल के असर में है. अब वह दुनिया की चीज़ नहीं रह गई है बल्कि एक अमरीकी संस्था है जो अमरीका के लिये काम करती है.

"प्रधान वज़ीर एटली अपने को अमन का तरफ़दार कहते हैं. अगर वह सचमुच अमन चाहते हैं तो जिस वक़्त सोवियट यूनियन ने यू. एन. ओ. के सामने यह तजवीज़ रखी थी कि सोवियट यूनियन, बरतानिया, अमरीका, चीन, और फ़्रान्स के बीच तुरन्त

ساتھی هالینڈ هے جس کے نیوگائنا پر زبردستی قبضے اور انڈونیشیا کے خلاف سازشوں کی چرچا برابر آتی رهتی هے .

یه هیں امریکه اور اُسکے ساتھیوں کے وہ کارنامے جنهیں دنیا حیرانی کے ساتھ دیکھ رهی هے .

استالن کا بیان

آج کل کی انتر قومی حالت کے جو چتر سمے سمے پر الگ الگ دیسوں کے نیتاؤں کی طرف سے دنیا کے سامنے رکھے جا رهے هیں ان میں دنیا کے ادهک تر امن پسند، غیر جانب‌دار لوگوں کو استالن کے اُس بیان میں بہت کچھ سچائی دکھائی دیتی هے جو پچھلی ۱۶ فروری کو ماسکو ریڈیو سے براڈ کاسٹ هوا تھا . انگلستان کے پردهان وزیر ایٹلی نے روس کے خلاف کئی طرح کی غلط بیانیاں کی تھیں . اُن کا تفصیل کے ساتھ جواب دینے کے بعد استالن نے کہا که :—

یو . این . او . جو شروع میں امن بنائے رکھنے کے ایک سادهن کے طور پر قائم هوئی تھی اب ایک نئی بڑی جنگ کے شروع کردینے کا سادهن بنتی جا رهی هے .

یو . این . او . امریکی دل کے اثر میں هے . اب وہ دنیا کی چیز نهیں رہ گئی بلکه ایک امریکی سنستھا هے جو امریکه کے لئے کام کرتی هے .

"پردهان وزیر ایٹلی اپنے کو امن کا طرف‌دار کہتے هیں . اگر وہ سچ مچ امن چاهتے هیں تو جس وقت سوویت یونین نے یو . این . او . کے سامنے یه تجویز رکھی تھی که سوویت یونین، برطانیه، امریکه، چین اور فرانس کے بیچ ترنت

क़त्ल किया जा चुका है और इस समय चालीस हज़ार देशभक्त जेलों में पड़े सड़ रहे हैं. उत्तर अफ़रीक़ा की आज़ादी के इस सवाल के ऊपर मिस्र और सारी अरब दुनिया में गहरा असंतोश है. इस्तक़लाल पार्टी के नेता बार बार एलान कर रहे हैं कि इस आन्दोलन का मज़हब से कोई सम्बन्ध नहीं.

यही ज़ुल्म ज़्यादतियाँ आजकल की फ़्रान्त की सरकार इन्डो-चाइना में कर रही है.

इंगलिस्तान

इंगलिस्तान की फ़ौज सारी मिस्री क़ौम की इच्छा के विरुद्ध मिस्र में अड्डा बनाए बैठी है और अभी हाल में अंगरेज़ फ़ील्ड मारशल वाइकाउन्ट मान्टगुमरी जो पिछले युद्ध में उत्तर अफ़रीक़ा के अन्दर बड़े बड़े कारनामे दिखा चुके हैं और जो एटम बम फेंकने के लिये तैयार बैठे हुए जनरल ईसेनहावर के दाहिने हाथ गिने जाते हैं, ज़बरदस्ती मिस्र पहुँच कर उस देस को अंगरेज़ी फ़ौजी अड्डा बनाकर जम गए है. दूसरी तरफ़ नैपाल के गोरखों को इंगलिस्तान की फ़ौज में बनाए रखने, उनकी तादाद बढ़ाने और मलाया जैसे देसों में एशियाई क़ौमों की आज़ादी को कुचलने में उनका उपयोग करने की तजवीज़ें लन्दन से खुले तौर पर एलान की जा रही हैं.

ईरान और इराक़ में वहाँ के तेल के कुओं पर क़ब्ज़ा जमाए रखने की अमरीका और इंगलिस्तान की साज़िशें, वहाँ के लोगों की मर्ज़ी के ख़िलाफ़, ज़ोरों से जारी हैं और इस सिलसिले में भी इन क़ीमती कुओं के रूस के हाथ में पड़ जाने का डर बराबर दुनिया को दिखाया जा रहा है.

हालैंड

अमरीका, फ़्रान्स और इंगलिस्तान का एक और छुटभइया

قتل کیا جا چکا ہے اور اس سمے چالیس ہزار دیش بھکت جیلوں میں پڑے سڑ رہے ہیں ۔ اتر افریقہ کی آزادی کے اس سوال کے اوپر مصر اور ساری عرب دنیا میں گہرا اسنتوش ہے ۔ 'استقلال پارٹی کے نیتا بار بار اعلان کر رہے ہیں کہ اس آندولن کا مذہب سے کوئی سمبندھ نہیں ۔

یہی ظلم زیادتیاں آج کل کی فرانس کی سرکار انڈو چائنا میں کر رہی ہے ۔

انگلستان

انگلستان کی فوج ساری مصری قوم کی اِچھا کے وِرودھ مصر میں اڈا بنائے بیٹھی ہے اور ابھی حال میں انگریز فیلڈ مارشل وائی کاونٹ مانٹ گمری جو پچھلے یدھ میں اتر افریقہ کے اندر بڑے بڑے کارنامے دکھا چکے ہیں اور جو ایٹم بم پھینکنے کے لئے تیار بیٹھے ہوئے جنرل ایسن ہوور کے داہنے ہاتھ گنے جاتے ہیں، زبردستی مصر پہونچ کر اس دیس کو انگریزی فوجی اڈا بنا کر جم گئے ہیں ۔ دوسری طرف نیپال کے گورکھوں کو انگلستان کی فوج میں بنائے رکھنے، اُن کی تعداد بڑھانے اور ملایا جیسے دیسوں میں ایشیائی قوموں کی آزادی کو کچلنے میں ان کا اُپیوگ کرنے کی تجویزیں لندن سے کھلے طور پر اعلان کی جا رہی ہیں ۔

ایران اور اعراق میں وہاں کے تیل کے کنوؤں پر قبضہ جمائے رکھنے کی امریکہ اور انگلستان کی سازشیں، وہاں کے لوگوں کی مرضی کے خلاف زوروں سے جاری ہیں اور اِس سلسلے میں بھی ان قیمتی کنوؤں کے روس کے ہاتھ میں پڑ جانے کا ڈر برابر دنیا کو دکھایا جا رہا ہے ۔

ہالینڈ

امریکہ فرانس اور انگلستان کا ایک اور چھوٹ بھیا

अमरीका के साथी—फ्रान्स

अब अगर हम अमरीकी दल के दूसरे देसों की तरफ़ निगाह डालें तो हालत और भी भयंकर दिखाई देने लगती है.

उत्तर अफ़रीक़ा का एक बड़ा हिस्सा फ्रान्स के क़ब्ज़े में है. सन १९१२ में उस समय के मोरक्को (मराकश) के सुलतान और फ्रान्सीसी सरकार के बीच एक संधि हुई जिस के अनुसार उत्तर अफ़रीक़ा के बहुत बड़े हिस्से की रक्षा का भार फ्रान्स ने अपने ऊपर ले लिया, थोड़ा सा हिस्सा स्पेन के क़ब्ज़े में है और कुछ अंतरक़ौमी इलाक़ समझा जाता है. आज से एक पीढ़ी पहले मोरक्को में एक दल खड़ा होगया जो इस्तक़लाल पार्टी कहलाता है. यह दल सन १९१२ की संधि को रद्द कराकर मोरक्को और सारे उत्तर अफ़रीक़ा को बिदेसी ताक़तों के पंजे से आज़ाद करना चाहता है. पिछली बड़ी जंग में मित्र राष्ट्रों ने मोरक्को के लोगों को आज़ाद कर देने का बार बार वादा किया. अमरीका के प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट ख़ुद मोरक्को पहुँचे और उन्होंने अपनी निजी ज़िम्मेवारी पर सुलतान से वादा किया कि जंग के बाद मोरक्को को आज़ाद कर दिया जावेगा. पर वादा आज तक पूरा नहीं हुआ. मौजूदा सुलतान जो नाम मात्र का सुलतान है फ्रान्सीसी रेज़ीडेन्ट जनरल के हाथ में केवल एक कठपुतली है. फ्रान्स और अमरीका की दोस्ती मोरक्को में पूरी तरह चमक रही है. अगली जंग की तैयारी के लिये पाँच बड़े बड़े हवाई जंगी अड्डे अमरीका को दे दिये गए हैं. कहा जाता है कि यहीं से सारे यौरप को कम्यूनिस्टों से बचाने की सबसे अच्छी कोशिशें की जाने वाली हैं. मालूम होता है अमरीका और उसके साथियों का अब दुनिया में एक ही काम रह गया है और वह है दुनिया को कम्यूनिज़्म से बचाना ! मोरक्को निवासियों में आज़ादी की कोशिशें जारी हैं. कहा जाता है पिछली

امریکہ کے ساتھی—فرانس

اب اگر هم امریکی دل کے دوسرے دیسوں کی طرف نگاہ ڈالیں تو حالت اور بھی بھیانکر دکھائی دینے لگتی ہے ۔

اُتر افریقہ کا ایک بڑا حصہ فرانس کے قبضے میں ہے ۔ سن ۱۹۱۲ میں اُس سمے کے مورکو (مراقش) کے سلطان اور فرانسیسی سرکار کے بیچ ایک سندھی ہوئی جسکے انوسار اُتر افریقہ کے بہت بڑے حصے کی رکشا کا بھار فرانس نے اپنے اوپر لے لیا' تھوڑا سا حصہ اسپین کے قبضے میں ہے ۔ اور کچھ انتر قومی علاقہ سمجھا جاتا ہے آج سے ایک پیڑھی پہلے مورکو میں ایک دل کھڑا ہوگیا جو استقلال پارٹی کہلاتا ہے ۔ یہ دل سن ۱۹۱۲ کی سندھی کو رد کرا کر مورکو اور سارے اُتر افریقہ کو بدیسی طاقتوں کے پنجے سے آزاد کرانا چاہتا ہے ۔ پچھلی بڑی جنگ میں متر راشٹروں نے مورکو کے لوگوں کو آزاد کر دینے کا بار بار وعدہ کیا ۔ امریکہ کے پریسڈنٹ روزولٹ خود مورکو پہونچے اور اُنہوں نے اپنی نجی ذمہواری پر سلطان سے وعدہ کیا کہ جنگ کے بعد مورکو کو آزاد کر دیا جاویگا ۔ پر وعدہ آج تک پورا نہیں ہوا ۔ موجودہ سلطان جو نام ماتر کا سلطان ہے فرانسیسی ریزیڈنٹ جنرل کے ہاتھ میں کیول ایک کٹھپتلی ہے فرانس اور امریکہ کی دوستی مورکو میں پوری طرح چمک رہی ہے ۔ اگلی جنگ کی تیاری کیلئے پانچ بڑے بڑے ہوائی جنگی اڈے امریکہ کو دے دیئے گئے ہیں ۔ کہا جاتا ہے کہ یہیں سے سارے یورپ کو کمیونسٹوں سے بچانے کی سب سے اچھی کوششیں کی جانیوالی ہیں ۔ معلوم ہوتا ہے امریکہ اور اسکے ساتھیوں کا اب دنیا میں ایک ہی کام رہ گیا ہے اور وہ ہے دنیا کو کمیونزم سے بچانا ! مورکو نواسیوں میں آزادی کی کوششیں جاری ہیں ۔ کہا جاتا ہے پچھلی

इसी कारन चीन की सारी जनता और वहाँ की सरकार दोनों की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ अमरीकी फ़ौज ताइवान (फ़ारमूसा) में डटे रहने और देसघातक चाँगकाई शेक को बढ़ावा देने का वह राजनैतिक बलात्कार कर रही है जिसे कोई एशियावासी बल्कि कोई न्याय प्रेमी इनसान नज़रअन्दाज़ नहीं कर सकता.

इसी कारन अमरीका कोरिया के अन्दर किसी भी तरह फ़तेह हासिल करने के लिये बेचैन है. जिस कमेटी में मि० टामस ड्यूई ने अमरीका के उद्योग धन्दों की बाबत अपना वह बयान दिया था जिसका ज़िकर हम ऊपर कर आए हैं उसी में एटलान्टिक पैक्ट आर्मी के सबसे बड़े कमान्डर जनरल ईसेनहोवर ने खुले शब्दों में कहा कि लड़ाई में हमें अगर ज़रूरत पड़ गई और अगर हमें यह यक़ीन हुआ कि उससे दुशमन के काफ़ी लोग मर जायँगे तो हम "फ़ौरन" एटम बम इस्तेमाल करेंगे. जनरल ईसेनहोवर ने यह भी कहा कि सदाचार की निगाह से हमारा ऐसा करना बिल्कुल ठीक होगा. इस पर श्री जवाहरलाल नेहरू ने दिल्ली में बिल्कुल ठीक कहा कि इससे किसी का कोई भला नहीं हो सकता. श्री जवाहरलाल नेहरू अनेक बार एटम बम के इस्तेमाल के ख़िलाफ़ अपने विचार प्रकट कर चुके हैं. उन्होंने यह भी बताया कि अगर जंग हुई और उसमें एटम बम खुले इस्तेमाल किये गए तो कम से कम दुनिया की आधी आबादी यानी लगभग एक अरब आदमी मरेंगे या ज़ख़्मी होंगे. और किसी का भी कोई भला नहीं हो सकता, कोई मक़सद पूरा नहीं हो सकता, दुनिया के सदाचार का तो ख़ात्मा हो ही जायगा. हम ही नहीं सारा एशिया जवाहरलाल जी के इन विचारों से सहमत है. हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि दुनिया इस आफ़त से बची रहे. पर हमें डर है कि अमरीकी नेता इस मामले में अपने ग़लत आर्थिक संगठन और अपने देस की हालत से लाचार और अंधे हो रहे हैं.

اِسی کارن چین کی ساری جنتا اور وہاں کی سرکار دونوں کی مرضی کے خلاف امریکی فوج تائی وان (فارموسا) میں ڈٹے رہنے اور دیس گھاتک چانگ کائی شیک بڑھاوا کو دینے کا وہ راج‌نیتک بلاتکار کر رہی ہے جسے کوئی ایشیا واسی بلکہ کوئی نیائے پریمی انسان نظر انداز نہیں کرسکتا

اسی کارن امریکہ کوریا کے اندر کسی بھی طرح فتح حاصل کرنے کے لئے بےچین ہے . جس کمیٹی میں مسٹر ٹامس ڈیوئی نے امریکہ کے اُدیوگ دھندوں کی بابت اپنا وہ بیان دیا تھا جس کا ذکر ہم اوپر کر آئے ہیں اُسی میں اٹلانٹک پیکٹ آرمی کے سب سے بڑے کمانڈر جنرل ایسن ہوور نے کھلے شبدوں میں کہا کہ لڑائی میں ہمیں اگر ضرورت پڑ گئی اور اگر ہمیں یہ یقین ہوا کہ اُس سے دشمن کے کافی لوگ مرجائینگے تو ''ہم فوراً'' ایٹم بم استعمال کرینگے . جنرل ایسن ہوور نے یہ بھی کہا کہ سداچار کی نگاہ سے ہمارا ایسا کرنا بالکل ٹھیک ہوگا . اس پر شری جواہر لال نہرو نے دلی میں بالکل ٹھیک کہا کہ اِس سے کسی کا کوئی بھلا نہیں ہوسکتا . شری جواہر لال نہرو انیک بار ایٹم بم کے استعمال کے خلاف اپنے وچار پرکٹ کر چکے ہیں . اُنھوں نے یہ بھی بتایا کہ اگر جنگ ہوئی اور اس میں ایٹم بم کھلے استعمال کئے گئے تو کم سے کم دنیا کی آدھی آبادی یعنی لگ بھگ ایک ارب آدمی مرینگے یا زخمی ہونگے اور کسی کا بھی کوئی بھلا نہیں ہوسکتا' کوئی مقصد پورا نہیں ہو سکتا' دنیا کے سداچار کا تو خاتمہ ہو ہی جائیگا . ہم ہی نہیں سارا ایشیا جواہر لال جی کے ان وچاروں سے سہمت ہے . ہماری ایشور سے پرارتھنا ہے کہ دنیا اِس آفت سے بچی رہے . پر ہمیں ڈر ہے کہ امریکی نیتا اس معاملے میں اپنے غلط آرتھک سنگٹھن اور اپنے دیس کی حالت سے لاچار اور اندھے ہو رہے ہیں .

अमरीकी नीत की जड़ें

जब कि रूस में दस्तकारियाँ और उद्योग धन्दे दिनों दिन बढ़ते जा रहे हैं और अपने कारख़ानों की ज़रूरत के लिये लगभग सारा कच्चा माल रूस ख़ुद पैदा कर लेता है, दूसरी तरफ़ अमरीका की न्यूयार्क रियासत के गवरनर टामस डयूई ने हाल में वहाँ की कांगरेस की एक कमेटी में कहा था कि अमरीका को अगर हिन्दुस्तान और दुनिया के दूसरे देसों से ज़रूरी कच्चा माल न मिला तो अमरीका के उद्योग धंदे और कल कारख़ाने ठप होजायँगे. उन्होंने बताया कि जंग के लिये अमरीका को जिस जिस कच्चे माल की ज़रूरत है उनमें इकहत्तर चीज़ें, जिनमें वह यूरेनियम भी शामिल है जिससे एटम बम बनता है, अमरीका को दूसरे देसों से ही लेनी होंगी.

कोरिया, चीन, हिन्दुस्तान, ईरान और दूसरे देसों में, जो फ़ौजी निगाह से कमज़ोर दिखाई देते हैं, अमरीका की बिदेसी नीत की जड़ें ऊपर साफ़ दिखाई दे रही हैं. यही कारन है कि अमरीका की सेनेट के मुताबिक़ पिछले आठ महीने में कोरिया की लड़ाई में अमरीका के चौदह अरब डालर यानी लगभग पचहत्तर अरब रुपए ख़र्च हो चुके हैं.

अमरीका में बोलने की आज़ादी की यह हालत है कि हाल ही में जब ग्राम उद्योग संघ. वर्धा के सद्र श्री जे० सी० कुमारप्पा के भाई डा० भारतन कुमारप्पा ने, जो कट्टर गांधीवादी हैं, अमरीका पहुँचने पर अपने देसबासियों के विचार साफ़ साफ़ प्रकट करने शुरू किये तो डेन्टन शहर के अधिकारियों ने उनके लेक्चर के लिये, उनके विचारों की बिना पर, टाउनहाल देने तक से इनकार कर दिया और यहाँ तक कहा गया है कि डा० भारतन कुमारप्पा के इन आज़ाद विचारों के कारन ही उस गेहूँ के भारत आने में भी रुकावटें पड़ रही हैं जो अमरीका से भारत आने वाला है.

امریکی نیت کی جڑیں

جب کہ روس میں دستکاریاں اور اُدیوگ دھندے دنوں دن بڑھتے جا رہے ہیں اور اپنے کارخانوں کی ضرورت کے لئے لگ بھگ سارا کچا مال روس خود پیدا کر لیتا ہے' دوسری طرف امریکہ کی نیویارک ریاست کے گورنر ٹامس ڈیوی نے حال میں وہاں کی کانگریس کی ایک کمیٹی میں کہا تھا کہ امریکہ کو اگر ہندستان اور دنیا کے دوسرے دیسوں سے ضروری کچا مال نہ ملا تو امریکہ کے اُدیوگ دھندے اور کل کارخانے ٹھپ ہوجائینگے. اُنھوں نے بتایا کہ جنگ کے لئے امریکہ کو جس جس کچے مال کی ضرورت ہے اُن میں اکہتر چیزیں' جن میں وہ یورینیم بھی شامل ہے' جس سے ایٹم بم بنتا ہے' امریکہ کو دوسرے دیسوں سے ہی لینی ہونگی۔

کوریا' چین' ہندستان' ایران اور دوسرے دیسوں میں' جو فوجی نگاہ سے کمزور دکھائی دیتے ہیں' امریکہ کی بدیسی نیت کی جڑیں اوپر صاف دکھائی دے رہی ہیں. یہی کارن ہے کہ امریکہ کی سینٹ کے مطابق پچھلے آٹھ مہینے میں کوریا کی لڑائی میں امریکہ کے چودہ ارب ڈالر یعنی لگ بھگ پچھتر ارب روپے خرچ ہوچکے ہیں۔

امریکہ میں بولنے کی آزادی کی یہ حالت ہے کہ حال ہی میں جب گرام اُدیوگ سنگھ' وردھا کے صدر شری جے-سی-کمارپا کے بھائی ڈاکٹر بھارتن کمارپا نے' جو کٹر گاندھی وادی ہیں' امریکہ پہونچنے پر اپنے دیس باسیوں کے وچار صاف صاف پرکٹ کرنے شروع کئے تو ڈینٹن شہر کے ادھیکاریوں نے اُن کے لیکچر کے لئے' اُن کے وچاروں کی بنا پر' ٹاؤن ہال دینے تک سے انکار کر دیا اور یہاں تک کہا گیا ہے کہ ڈاکٹر بھارتن کمارپا کے اِن آزاد وچاروں کے کارن ہی اُس گیہوں کے بھارت آنے میں بھی رکاوٹیں پڑ رہی ہیں جو امریکہ سے بھارت آنے والا ہے۔

काम ऐसा न करें जिससे तिब्बतियों के किसी धार्मिक नियम पर चोट लगती हो. फिर भी यह ग़लत ख़बर दुनिया भर में उड़ाई जाती है कि कम्यूनिस्ट देसों में लोगों को मज़हबी आज़ादी नहीं है.

अमरीकी जापान

हम चाहते हैं कि अमरीका और अमरीकी फलें फूलें. पर हमें इस सच्चाई को भी आँख से ओझल नहीं करना चाहिये कि उस जापान के अन्दर जो आजकल अमरीकी फ़ौजों के क़ब्ज़े में है. इसी मार्च की लन्दन की एक ख़बर के अनुसार लगभग ग्यारह हज़ार रुपए में एक मन चावल बिक रहा है, जापानी माँ-बाप अपना पेट भरने के लिये अपने बच्चों को बेच रहे हैं और कहा जाता है कि टोकियो की इम्पीरियल यूनीवरसिटी में लगभग पाँच सौ विद्यार्थी ऐसे हैं जिन्हें अपना ख़र्च चलाने के लिये हर महीने अपना ख़ून बेचना पड़ता है जापान के छोटे छोटे उद्योग धन्दे बन्द होते जा रहे हैं, बेकारी बढ़ रही है और अमरीका का बना हुआ माल और अमरीकी मशीनें बाज़ारों में भरी पड़ी हैं. यह भी बताया जाता है कि लाखों जापानी औरतें पेट पालने के लिये बुरा पेशा करने पर मजबूर हो गई हैं. अकेले टोकियों में इस समय इस तरह की तीन लाख औरतें हैं.

रूस में खाने की चीज़ें

इस के मुक़ाबले में इसी महीने की ख़बर है कि रूस में खाने पीने की सब चीज़ें दिन दिन सस्ती होती जा रही हैं. आटा. रोटी, पनीर, चर्बी, गोश्त और साबुन के भाव हाल में पच्चीस फ़ी सदी कम होगए हैं. यही हाल दूसरी बरतने की चीज़ों का है. रूस के किसान अपने यहाँ के साइन्स वालों की मदद से उन सब देसों की जनता को भूक से बचाने के लिये, जिन तक रूस की पहुँच है, साल में पाँच

کام ایسا نہ کریں جس سے تبتیوں کے کسی دھارمک نیم پر چوٹ لگتی ھو ۔ پھر بھی یہ غلط خبر دنیا بھر میں اڑائی جاتی ھے کہ کمیونسٹ دیسوں میں لوگوں کو مذھبی آزادی نہیں ھے ۔

امریکی جاپان

ھم چاھتے ھیں کہ امریکہ اور امریکی پھلیں پھولیں ۔ پر ھمیں اس سچائی کو بھی آنکھ سے اوجھل نہیں کرنا چاھئے کہ اس جاپان کے اندر جو آج کل امریکی فوجوں کے قبضے میں ھے اسی مارچ کی للدن کی ایک خبر کے انوسار لگ بھگ گیارہ ھزار روپے میں ایک من چاول بک رھا ھے' جاپانی ماں-باپ اپنا پیٹ بھرنے کے لئے اپنے بچوں کو بیچ رھے ھیں اور کہا جاتا ھے کہ توکیو کی امپیریل یونیورسٹی میں لگ بھگ پانچ سو ودیارتھی ایسے ھیں جنھیں اپنا خرچ چلانے کے لئے ھر مہینے اپنا خون بیچنا پڑتا ھے ۔ جاپان کے چھوٹے چھوٹے ادیوگ دھندے بند ھوتے جارھے ھیں' بیکاری بڑھ رھی ھے اور امریکہ کا بنا ھوا مال اور امریکی مشینیں بازاروں میں بھری پڑی ھیں ۔ یہ بھی بتایا جاتا ھے کہ لاکھوں جاپانی عورتیں پیٹ پالنے کے لئے برا پیشہ کرنے پر مجبور ھوگئی ھیں ۔ اکیلے توکیو میں اس سمے اس طرح کی تین لاکھ عورتیں ھیں ۔

روس میں کھانے کی چیزیں

اس کے مقابلے میں اسی مہینے کی خبر ھے کہ روس میں کھانے پینے کی سب چیزیں دن دن سستی ھوتی جارھی ھیں ۔ آٹا' روٹی' پنیر' چربی' گوشت اور صابن کے بھاو حال میں پچیس فیصدی کم ھوگئے ھیں ۔ یہی حال دوسری برتنے کی چیزوں کا ھے ۔ روس کے کسان اپنے یہاں کے سائنس والوں کی مدد سے ان سب دیسوں کی جنتا کو بھوک سے بچانے کے لئے' جن تک روس کی

अंकुर दिखाई देते हैं तो उन्हें भी हम प्रेम, शान्ति और समझौते से ही हल कर लेना चाहते हैं. रूस और चीन के साथ भी हमारा गहरा नाता है और खासकर चीन के साथ हमारा सम्बन्ध हज़ारों बरस का पुराना है. हमें दुख है कि रूस, चीन और कम्यूनिज्म के खिलाफ़ कई तरह की आवाजें इस देस में कई कोनों से उठती रहती हैं. हमारा कम्यूनिज्म के सिद्धान्तों से कई बातों में असहमत होना एक अलग बात है. धर्म और इनसाफ़ यह है कि जिसके साथ हम सहमत न हों उसके भी सच्चे गुनों की क़दर करें. कम्यूनिज्म के खिलाफ़ एक बहुत बड़ा इलजाम यह लगाया जाता है कि वह धर्म या मज़हब के खिलाफ़ है. कहा जाता है कम्यूनिस्ट देसों में मजहब की आज़ादी नहीं. हाल में सोवियत रूस के एक मुसलमान नेता मि० नमशीना ने लाहौर में कहा था कि रूस में मुसलमानों के ऊपर ज्यादतियों की जितनी खबरें उड़ाई जा रही हैं वह "बे बुनियाद हैं और जान बूझ कर शरारतन फैलाई जाती हैं." उनसे कहा गया कि रूस में मुसलिम औरतों को बुरक़ा नहीं पहनने दिया जाता. उन्होंने जवाब में कहा कि "रूस के उनसब हिस्सों में जहाँ मुसलमान रहते हैं, आपको जगह जगह बुरका ओढ़े मुसलमान औरतें दिखाई देंगी." पिछली फ़रवरी में अंगरेज़ पादरी रेवेरेन्ड टामस स्काट ने जो उत्तर चीन में ईसाई धर्म प्रचार का काम करते रहे हैं लन्दन में कहा था कि चीन में जब से जनता की नई सरकार क़ायम हुई है तब से ईसाई धर्म के प्रचार का काम पहले से बहुत आसान होगया है. चीनी ईसाई धर्म प्रचारकों को अपने धर्म के प्रचार की पूरी पूरी और खुली आज़ादी है. कम्यूनिज्म ने उनके इस काम को किसी तरह भी नहीं रोका जिसका नतीजा यह है कि तमाम चीनी ईसाई नई सरकार के जोशीले समर्थक हैं. लाल चीन की सेना जब तिब्बत आई थी तो सिपाहियों को खास तौर पर यह हुकुम दिये गए थे कि किसी मठ या मन्दिर में बिना वहाँ के पुरोहित की इजाज़त के न जावें और कोई

انکر دکھائی دیتے ہیں تو اُنہیں بھی ہم پریم' شانتی اور سمجھوتے سے ہی حل کر لینا چاہتے ہیں ۔ روس اور چین کے ساتھ بھی ہمارا گہرا ناتا ہے اور خاصکر چین کے ساتھ ہمارا سمبندھ ہزاروں برس کا پرانا ہے ۔ ہمیں دکھ ہے کہ روس' چین اور کمیونیزم کے خلاف کئی طرح کی آوازیں اس دیس میں کئی کونوں سے اُٹھتی رہتی ہیں ۔ ہمارا کمیونزم کے سدھانتوں سے کئی باتوں میں اسہمت ہونا ایک الگ بات ہے ۔ دھرم اور انصاف یہ ہے کہ جس کے ساتھ ہم سہمت نہ ہوں اس کے بھی سچے گنوں کی قدر کریں ۔ کمیونزم کے خلاف ایک بہت بڑا الزام یہ لگایا جاتا ہے کہ وہ دھرم یا مذہب کے خلاف ہے ۔ کہا جاتا ہے کمیونسٹ دیسوں میں مذہب کی آزادی نہیں ۔ حال میں سوویت روس کے ایک مسلمان نیتا مسٹر نم شینا نے لاہور میں کہا تھا کہ روس میں مسلمانوں کے اوپر زیادتیوں کی جتنی خبریں اُڑائی جارہی ہیں وہ "بے بنیاد ہیں اور جان بوجھکر شرارتاً پھیلائی جاتی ہیں ۔" اُن سے کہا گیا کہ روس میں مسلم عورتوں کو برقعہ نہیں پہننے دیا جاتا ۔ اُنہوں نے جواب میں کہا کہ "روس کے اُن سب حصوں میں جہاں مسلمان رہتے ہیں' آپ کو جگہ جگہ برقعہ اوڑھے مسلمان عورتیں دکھائی دینگی ۔" پچھلی فروری میں انگریز پادری ریورنڈ ٹامس اسکاٹ نے جو اُتر چین میں عیسائی دھرم پرچار کا کام کرتے رہے ہیں لندن میں کہا تھا کہ چین میں جب سے جنتا کی نئی سرکار قائم ہوئی ہے تب سے عیسائی دھرم کے پرچار کا کام پہلے سے بہت آسان ہوگیا ہے ۔ چینی عیسائی دھرم پرچارکوں کو اپنے دھرم کے پرچار کی پوری پوری اور کھلی آزادی ہے ۔ کمیونزم نے اُن کے اِس کام کو کسی طرح بھی نہیں روکا جس کا نتیجہ یہ ہے کہ تمام چینی عیسائی نئی سرکار کے جوشیلے سمرتھک ہیں ۔ لال چین کی سینا جب تبت آئی تھی تو سپاہیوں کو خاص طور پر یہ حکم دیئے گئے تھے کہ کسی مٹھ یا مندر میں بنا وہاں کے پروہت کی اجازت کے نہ جاویں اور کوئی

है उसमें कई ऐसे व्यक्तियों और ऐसी संस्थाओं के प्रतिनिधियों के नाम मौजूद हैं जो असूली तौर पर कम्यूनिज्म के खुले विरोधी हैं. नाम गिनाने की ज़रूरत नहीं. इस कॉंगरेस के सेक्रेटरी ने एक प्रेस कानफ़रेन्स में यह साफ़ बताया कि इस कानफ़रेन्स का मक़सद देस को कम्यूनिज्म के ख़तरे से बचाना है और यहॉं तक कह दिया—"अगर इस देस की हकूमत पर कम्यूनिज्म ने क़ब्ज़ा कर लिया तो आज़ादी नष्ट हो जायगी." इसी मार्च महीने में यह भी ख़बरें आती रही हैं कि अमरीका के यात्री सैकड़ों की तादाद में भारत आ चुके हैं. आ रहे हैं और देस भर के दौरे कर रहे हैं. रूस, चीन और कम्यूनिज्म की तरफ़ अमरीका की सरकार और वहॉं के बहुत से लोगों का रुख़ किसी से छिपा नहीं है. हमारी सरकार की तरफ़ से आख़िर यह भेद भाव क्यों? ऐसी सूरत में लोगों को यह शक करने का मौक़ा मिलता है कि सरकार के इस रुख़ के पीछे किसी ऐसी बिदेसी शक्ति या शक्तियों को संतुष्ट रखने की ख़ाहिश काम कर रही है जिससे कम से कम इस समय हमें अपना अधिक निकट का सम्बन्ध दिखाई दे रहा है. अगर ऐसा है तो हमें खेद है कि इस चीज़ पर हम अपनी सरकार को या देस को बधाई नहीं दे सकते

[इस नोट के छपते छपते हमें ख़बर मिली कि यह 'इन्डियन कांगरेस आफ़ कलचरल फ़्रीडम' भी किसी कारन दिल्ली से हटकर बम्बई में हो रही है, पर कई बिदेसी प्रतिनिधि इसमें शरीक हैं.

—सुन्दरलाल]

कम्यूनिस्ट देस और मज़हब

हम अमरीका और इंगलिस्तान दोनों के साथ दोस्ती क़ायम रखना चाहते हैं. संसार के सब देसों के साथ हम सुलह से रहना चाहते हैं. सब को हम अपना दोस्त समझते हैं. और अगर कहीं हमें विरोध के

ہے اُس میں کئی ایسے ویکتیوں اور ایسی سنستھاؤں کے پرتیندھیوں کے نام موجود ہیں جو اصولی طور پر کمیونزم کے کھلے ورودھی ہیں۔ نام گنانے کی ضرورت نہیں۔ اِس کانگریس کے سکریٹری نے ایک پریس کانفرنس میں یہ صاف بتایا کہ اس کانفرنس کا مقصد دیس کو کمیونزم کے خطرے سے بچانا ہے اور یہاں تک کہدیا—"اگر اس دیس کی حکومت پر کمیونزم نے قبضہ کر لیا تو آزادی نشٹ ہو جائیگی۔" اسی مارچ مہینے میں یہ بھی خبریں آتی رہی ہیں کہ امریکہ کے یاتری سیکڑوں کی تعداد میں بھارت آچکے ہیں' آرہے ہیں اور دیس بھر کے دورے کر رہے ہیں۔ روس' چین اور کمیونزم کی طرف امریکہ کی سرکار اور وہاں کے بہت سے لوگوں کا رخ کسی سے چھپا نہیں ہے۔ ہماری سرکار کی طرف سے آخر یہ بھید بھاؤ کیوں؟ ایسی صورت میں لوگوں کو یہ شک کرنے کا موقع ملتا ہے کہ سرکار کے اس رخ کے پیچھے کسی ایسی بدیسی شکتی یا شکتیوں کو سنتشٹ رکھنے کی خواہش کام کر رہی ہے جس سے کم سے کم اس سمے ہمیں اپنا ادھک نکٹ کا سمبندھ دکھائی دے رہا ہے اگر ایسا ہے تو ہمیں کھید ہے کہ اس چیز پر ہم اپنی سرکار کو یا دیس کو بدھائی نہیں دے سکتے۔

[اس نوٹ کے چھپتے چھپتے ہمیں خبر ملی کہ یہ 'ایڈین کانگریس آف کلچر فریڈم' بھی کسی کارن دلی سے ہٹکر بمبئی میں ہو رہی ہے' پر کئی بدیسی پرتی ندھی اِسمیں شریک ہیں۔

—سندرلال]

کمیونسٹ دیس اور مذہب

ہم امریکہ اور انگلستان دونوں کے ساتھ دوستی قائم رکھنا چاہتے ہیں۔ سنسار کے سب دیسوں کے ساتھ ہم صلح سے رہنا چاہتے ہیں۔ سب کو ہم اپنا دوست سمجھتے ہیں۔ اور اگر کہیں ہمیں ورودھ کے

روس کے کسان اپنے یہاں کے سائنس ...

है. दिल्ली सरकार ने जो कुछ फ़ैसला किया उसका उसे क़ानूनी अधिकार है. पर हमें विश्वास नहीं होता कि जो शब्द ज़िम्मेदार सरकारी लोगों के कहे हुए इस ख़बर में बताए गए हैं वह सचमुच उनके मुँह से निकले हैं. यह भी ज़ाहिर है कि इस समय आने वाली जंग और एटम बम के इस्तेमाल के ख़िलाफ़ जितनी ज़्यादा आवाज़ रूस, चीन और एशिया के कम्यूनिस्ट और ग़ैर-कम्यूनिस्ट मुल्कों से उठ रही है उतनी अमरीका इंगलिस्तान और उनके साथियों से नहीं. यह है भी एक क़ुदरती बात. पर इससे अमन की आवाज़ उठाने, जंग का विरोध करने या एटम बम के उपयोग को बुरा कहने की क़ीमत कम नहीं हो जाती. भारत की कम्यूनिस्ट पार्टी के कई कामों से हम सहमत नहीं हैं पर हज़ारों चोर बाज़ार वालों और रिश्वत ख़ोरों के खद्दर पहनने से खद्दर बुरा नहीं हो जाता न ऐसे लोगों को खद्दर पहनने, बेचने या ख़रीदने से रोका जाता है. हम बड़े अदब के साथ कहना चाहते हैं कि किसी भी तहरीक के मक़सद को ठीक ठीक समझने की शक्ति जैसी सरकार के अन्दर के लोगों को हो सकती है वैसी ही सरकार के बाहर के लोगों को भी हो सकती है और कभी कभी सरकार के बाहर के लोगों में यह शक्ति अधिक होती है, कम से कम वह अधिक सचाई और सफ़ाई के साथ अपने दिल की बात कह सकते हैं. किसी सरकार को यह कहना भी शोभा नहीं देता कि उसे अपने काम में और ख़ास कर जंग के ख़िलाफ़ लोगों की राय बनाने जैसे काम में किसी की मदद की ज़रूरत नहीं.

जहाँ तक बाहर के देसों के साथ उलझनें पैदा होने का सवाल है वहाँ तक भी हम अपनी सरकार के इस फ़ैसले की क़दर कर सकने के नाक़ाबिल हैं. इसी मार्च के आख़ीर में एक 'इन्डियन काँगरेस आफ़ कलचरल फ़्रीडम' दिल्ली में हो रही है जिसमें अमरीका, योरप और दक्खिन पूरब एशिया के अनेक प्रतिनिधि आकर हिस्सा लेंगे. इस काँगरेस के बुलाने वालों की जो फ़ेहरिस्त अख़बारों में निकली

هے . دلی سرکار نے جو کچھ فیصلہ کیا اسکا اسے قانونی ادھیکار هے . پر همیں وشواس نہیں هوتا کہ جو شبد ذمہ‌دار سرکاری لوگوں کے کہے هوئے اس خبر میں بتائے گئے هیں وہ سچ مچ ان کے منہ سے نکلے هیں . یہ بھی ظاهر هے کہ اس سمے آنے والی جنگ اور ایٹم بم کے استعمال کے خلاف جتنی زیادہ آواز روس، چین اور ایشیا کے کمیونسٹ اور غیر کمیونسٹ ملکوں سے اُٹھ رهی هے اُتنی امریکہ، انگلستان اور اُن کے ساتھیوں سے نہیں . یہ هے بھی ایک قدرتی بات پر اس سے امن کی آواز اُٹھانے، جنگ کا وروده کرنے یا ایٹم بم کے اُپیوگ کو برا کہنے کی قیمت کم نہیں هو جاتی . بھارت کی کمیونسٹ پارٹی کے کئی کاموں سے هم سهمت نہیں هیں پر هزاروں چور بازار والوں اور رشوت خوروں کے کھدر پہننے سے کھدر برا نہیں هو جاتا نہ ایسے لوگوں کو کھدر پہننے، بیچنے یا خریدنے سے روکا جاتا هے . هم بڑے ادب کے ساتھ کہنا چاهتے هیں کہ کسی بھی تحریک کے مقصد کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے کی شکتی جیسی سرکار کے اندر کے لوگوں کو هو سکتی هے ویسی هی سرکار کے باهر کے لوگوں کو بھی هو سکتی هے اور کبھی کبھی سرکار کے باهر کے لوگوں میں یہ شکتی ادھک هوتی هے، کم سے کم وہ ادھک سچائی اور صفائی کے ساتھ اپنے دل کی بات کہہ سکتے هیں . کسی سرکار کو یہ کہنا بھی شوبھا نہیں دیتا کہ اُسے اپنے کام میں اور خاص کر جنگ کے خلاف لوگوں کی رائے بنانے جیسے کام میں کسی کی مدد کی ضرورت نہیں .

جہاں تک باهر کے دیسوں کے ساتھ اُلجھنیں پیدا هونے کا سوال هے وهاں تک بھی هم اپنی سرکار کے اس فیصلے کی قدر کر سکنے کے ناقابل هیں . اِسی مارچ کے آخیر میں ایک 'انڈین کانگریس آف کلچرل فریڈم' دلی میں هو رهی هے جسمیں امریکہ، یورپ اور دکھن پورب ایشیا کے انیک پرتیندهی آکر حصہ لینگے . اِس کانگریس کے بلانے والوں کی جو فہرست اخباروں میں نکلی

थी. वहाँ हमारी सरकार ने कानफ़रेन्स को नहीं रोका था पर दूसरे देसों के प्रतिनिधियों को वहाँ भी नहीं आने दिया गया था.

हम मानते हैं कि लगभग सब ही अमन चाहते हैं. जंग को भी बुरा लगभग सब ही कहते हैं. भारत सरकार और ख़ासकर भारत के प्रधान वज़ीर जिस सच्चाई और लगन के साथ दुनिया को जंग से बचाने और अमन क़ायम रखने की कोशिशें करते रहे हैं और कर रहे हैं, उससे दुनिया अच्छी तरह परिचित है. भारत सरकार के इस काम को जितना सराहा जाय थोड़ा है. इस पर भी हमें दुख है कि कानफ़रेन्स पर भारत सरकार की इस रोक थाम को हम नहीं समझ सके.

जहाँ तक हमने पढ़ा है या हम समझ सके कानफ़रेन्स पर बल्कि इस सारी अमन तहरीक पर सबसे बड़ा एतराज़ यह किया जाता है कि इसके पीछे भारत के कम्यूनिस्ट हैं. इस पर दिल्ली कानफ़रेन्स की स्वागत कमेटी के कुछ लोग प्रधान वज़ीर श्री नेहरू और घर वज़ीर श्री राजागोपालाचारी से मिले. उन्होंने इन दोनों वज़ीरों को बताया कि अमन कानफ़रेन्स में हिस्सा लेने वाले बहुत लोग ऐसे हैं जो कम्यूनिस्ट नहीं हैं. और कानफ़रेन्स का मतलब सरकार की अमन की कोशिशों में केवल उसके हाथ मज़बूत करना ही है. कहा जाता है इसके जवाब में सरकार की तरफ़ से कहा गया कि जो ग़ैर-कम्यूनिस्ट नेता उस अमन कानफ़रेन्स में शामिल हो रहे हैं उन्होंने कानफ़रेन्स के पीछे काम करने वाले असली [मक़सद को ठीक नहीं समझा. यह भी कहा गया कि भारत सरकार को अपनी अमन की कोशिशों में इतनी काफ़ी मदद चारों तरफ़ से मिल रही है कि उन्हें ऐसी किसी कानफ़रेन्स की मदद की ज़रूरत नहीं न देस से बाहर के अमन पसन्दों की ज़रूरत है. इसलिये सरकार अपने इस फ़ैसले पर क़ायम है कि यह कानफ़रेन्स दिल्ली में न हो.

ऊपर की ख़बर हमने १७ मार्च के 'अमृत बाज़ार पत्रिका' से ली

تھی . وھاں ھماری سرکار نے کانفرنس کو نہیں روکا تھا پر دوسرے دیسوں کے پرتی‌ندھیوں کو وھاں بھی نہیں آنے دیا گیا تھا .

ھم مانتے ھیں کہ لگ بھگ سب ھی امن چاھتے ھیں . جنگ کو بھی برا لگ بھگ سب ھی کہتے ھیں . بھارت سرکار اور خاص کر بھارت کے پردھان وزیر جس سچائی اور لگن کے ساتھ دنیا کو جنگ سے بچانے اور امن قائم رکھنے کی کوششیں کرتے رھے ھیں اور کر رھے ھیں، اُس سے دنیا اچھی طرح پریچت ھے . بھارت سرکار کے اِس کام کو جتنا سراھا جائے تھوڑا ھے . اس پر بھی ھمیں دکھ ھے کہ کانفرنس پر بھارت سرکار کی اس روک تھام کو ھم نہیں سمجھ سکے .

جہاں تک ھم نے پڑھا ھے یا ھم سمجھ سکے کانفرنس پر بلکہ اس ساری امن تحریک پر سب سے بڑا اعتراض یہ کیا جاتا ھے کہ اسکے پیچھے بھارت کے کمیونسٹ ھیں . اس پر دلی کانفرنس کی سواگت کمیٹی کے کچھ لوگ پردھان وزیر شری نہرو اور گھر وزیر شری راجہ گوپالا چاری سے ملے . اُنھوں نے اِن دونوں وزیروں کو بتایا کہ امن کانفرنس میں حصہ لینے والے بہت لوگ ایسے ھیں جو کمیونسٹ نہیں ھیں . اور کانفرنس کا مطلب سرکار کی امن کی کوششوں میں کیول اُس کے ھاتھ مضبوط کرنا ھی ھے . کہا جاتا ھے اس کے جواب میں سرکار کی طرف سے کہا گیا کہ جو غیر کمیونسٹ نیتا اُس امن کانفرنس میں شامل ھو رھے ھیں انھوں نے کانفرنس کے پیچھے کام کرنے والے اصلی مقصد کو ٹھیک ٹھیک نہیں سمجھا . یہ بھی کہا گیا کہ بھارت سرکار کو اپنی امن کی کوشش میں اتنی کافی مدد چاروں طرف سے مل رھی ھے کہ انھیں ایسی کسی کانفرنس کی مدد کی ضرورت نہیں نہ دیس سے باھر کے امن پسندوں کی ضرورت ھے . اس لئے سرکار اپنے اس فیصلے پر قائم ھے کہ یہ کانفرنس دلی میں نہ ھو .

اوپر کی خبر ھم نے ۱۷ مارچ کے 'امرت بازار پتریکا' سے لی

हम मानते हैं कि जो सरकार किसी भी दूसरे देस के ख़िलाफ़ एटम हथियार का पहले इस्तेमाल करेगी वह मानव जाति के ख़िलाफ़ जुर्म करेगी और उसे युद्ध अपराधी माना जायगा."

दुनिया के बहुत से देसों में करोड़ों आदमी जिनके दिल आने वाली जंग और उसमें एटम बम के उपयोग की कल्पना करके काँप उठते हैं इस अपील पर दसख़त कर चुके हैं. हमने भी इस पर दसख़त किये हैं हैं. इस देस के लाखों दसख़त करने वालों में दो ख़ास नाम यह साबित करने के लिये काफ़ी हैं कि इस तहरीक के साथ किस तरह के लोगों की हमदर्दी है, एक बनारस के मशहूर सूफ़ी विद्वान डा० भगवानदास और दूसरे हरिजन, हरिजन सेवक और हरिजनबन्धु के सम्पादक भाई किशोरलाल मशरूवाला.

इसी तरह की एक पीस कानफ़रेन्स पिछले जनवरी महीने में इलाहाबाद यूनीवरसिटी में बड़ी धूम धाम के साथ हुई थी जिसे यूनीवरसिटी के वाइस चान्सलर ने खोला था. इसी तहरीक की एक और बड़ी कानफ़रेन्स अप्रैल के महीने में दिल्ली में होने वाली थी. इस कानफ़रेन्स में भारत के अलग अलग सूबों के अलावा बिदेसों से भी कुछ जंग विरोधी प्रतिनिधि आने वाले थे. अचानक ख़बर मिली कि भारत सरकार ने कानफ़रेन्स को दिल्ली में होने से रोक दिया और यह बात भी एलान कर दी कि वह भारत से बाहर के किसी प्रतिनिधि को इस काम के लिये भारत आने की इजाज़त न दी जायगी यह भी कहा गया कि यह अमन कानफ़रेन्स अगर दिल्ली प्रान्त से बाहर की जाय तो सरकार को कोई एतराज़ न होगा क्योंकि दिल्ली में सब देसों के राजदूत रहते हैं और वहाँ ऐसी कानफ़रेन्स से अंतर देसी उलझनें पैदा होने का डर है. पर कानफ़रेन्स कहीं भी की जाय दूसरे देसों के प्रतिनिधि उसमें नहीं आने दिये जायँगे.

दो साल पहले इसी तरह की एक कानफ़रेन्स कलकत्ते में हुई

ہم مانتے ہیں کہ جو سرکار کسی بھی دوسرے دیس کے خلاف ایٹم ہتھیار کا پہلے استعمال کریگی وہ مانو جاتی کے خلاف جرم کریگی اور اُسے یدھ اپرادھی مانا جائیگا ."

دنیا کے بہت سے دیسوں میں کروڑوں آدمی جن کے دل آنے والی جنگ اور اُس میں ایٹم بم کے اُپیوگ کی کلپنا کرکے کانپ اُٹھتے ہیں اِس اپیل پر دستخط کر چکے ہیں . ہم نے بھی اس پر دستخط کئے ہیں. اس دیس کے لاکھوں دستخط کرنے والوں میں دو خاص نام یہ ثابت کرنے کے لئے کافی ہیں کہ اس تحریک کے ساتھ کس طرح کے لوگوں کی ہمدردی ہے. ایک بنارس کے مشہور صوفی ودوان ڈاکٹر بھگوان داس اور دوسرے ہریجن' ہریجن سیوک اور ہریجن بندھو کے سمپادک بھائی کشور لال مشروالا .

اسی طرح کی ایک پیس کانفرنس پچھلے جنوری مہینے میں الٰہ آباد یونیورسٹی میں بڑی دھوم دھام کے ساتھ ہوئی تھی جسے یونیورسٹی کے وائس چانسلر نے کھولا تھا . اِسی تحریک کی ایک اور بڑی کانفرنس اپریل کے مہینے میں دلی میں ہونے والی تھی. اس کانفرنس میں بھارت کے الگ الگ صوبوں کے علاوہ بدیسوں سے بھی کچھ جنگ ورودھی پرتی ندھی آنے والے تھے. اچانک خبر ملی کہ بھارت سرکار نے کانفرنس کو دلی میں ہونے سے روک دیا . اور یہ بات بھی اعلان کر دی کہ بھارت سے باہر کے کسی پرتی ندھی کو اس کام کے لئے بھارت آنے کی اجازت نہ دی جائیگی . یہ بھی کہا گیا کہ یہ امن کانفرنس اگر دلی پرانت سے باہر کی جائے تو سرکار کو کوئی اعتراض نہ ہوگا کیونکہ دلی میں سب دیسوں کے راج دوت رہتے ہیں اور وہاں ایسی کانفرنس سے انتر دیسی الجھنیں پیدا ہونے کا ڈر ہے . پر کانفرنس کہیں بھی کی جائے دوسرے دیسوں کے پرتی ندھی اُس میں نہیں آنے دئے جائینگے .

دو سال پہلے اسی طرح کی ایک کانفرنس کلکتہ میں ہوئی

दिल्ली पीस कानफ़रेन्स पर रोक—

दुनिया के बहुत से देसों में कुछ दिनों से एक तहरीक चल रही है जिसे पीस मूवमेन्ट या अमन तहरीक कहा जाता है. इस में दो बातों पर जोर दिया जाता है. एक जंग के ख़िलाफ़ जनता में राय पैदा करना और दूसरे किसी भी लड़ाई में एटम बम के इस्तेमाल को नाजायज़ ठहराना. हम यह अपने निजी तजुरबे की बिना पर कह रहे हैं. हमने इस तहरीक के कई जलसों में हिस्सा लिया है और इस का कुछ साहित्य भी पढ़ा है. इस सम्बन्ध में एटम बम के इस्तेमाल के ख़िलाफ़ एक अपील निकल चुकी है जो स्टाकहाम अपील के नाम से मशहूर है. इस तहरीक का एक ख़ास काम उस अपील पर लोगों के दसख़त कराना भी है. अपील 'नया हिन्द' में छप चुकी है. हम उसे फिर नीचे दोहराते हैं—

"हमारी माँग है कि एटम हथियार पर, जो जनता को डराने और मिटाने का हथियार है, बिना शर्त रोक लगाई जाय.

हमारी माँग है कि इस फ़ैसले को लागू करने के लिये एक कड़ा अन्तरक़ौमी कंट्रोल क़ायम किया जावे.

دلي پیس کانفرنس پر روک—

دنیا کے بہت سے دیسوں میں کچھ دنوں سے ایک تحریک چل رہی ہے جسے پیس موومنٹ یا امن تحریک کہا جاتا ہے۔ اس میں دو باتوں پر زور دیا جاتا ہے۔ ایک جنگ کے خلاف جنتا میں رائے پیدا کرنا اور دوسرے کسی بھی لڑائی میں ایٹم بم کے استعمال کو ناجائز ٹھہرانا۔ ہم یہ اپنے نجی تجربے کی بنا پر کہہ رہے ہیں۔ ہم نے اس تحریک کے کئی جلسوں میں حصہ لیا ہے اور اس کا کچھ ساہتیہ بھی پڑھا ہے اس سمبندھ میں ایٹم بم کے استعمال کے خلاف ایک اپیل نکل چکی ہے جو اسٹاک ہام اپیل کے نام سے مشہور ہے اس تحریک کا ایک خاص کام اُس اپیل پر لوگوں کے دستخط کرانا بھی ہے۔ اپیل 'نیا ہند' میں چھپ چکی ہے۔ ہم اُسے پھر نیچے دوہراتے ہیں—

"ہماری مانگ ہے کہ ایٹم ہتھیار پر، جو جنتا کو ڈرانے اور مٹانے کا ہتھیار ہے، بنا شرط روک لگائی جائے۔

ہماری مانگ ہے کہ اس فیصلے کو لاگو کرنے کے لئے ایک کڑا انتر قومی کنٹرول قائم کیا جاوے۔

तीसरा. रेखा चित्र, भी इन किताब में दिए गये हैं, उनके आधार है :—

अजन्ता गुफा, बाग गुफा, और सिगोरिया (लंका) के भीत चित्र, कोर्नाक मन्दिर और बंगाल की मूर्तियाँ, और काश्मीरी और राजपूत के क़लम के चित्र .

इस कला पुस्तक की यह ख़ूबी है कि इसमें जितने रेखा चित्र हैं उनमें शिल्पछद दर्शाने की कोशिश की गई है. आदमियों के ज्यों के त्यों चित्र खींचना मुश्किल भी हो सकते हैं और आसान भी पर उस तरह की मुश्किल और आसानी से चित्रकार के अन्दर का चित्रकार जाग नहीं पाता और वह शिल्प में छंद को नहीं दर्शा सकता. शिल्प छंद के जरिये रूप और टेढ़ी मेढ़ी लकीरें मिलकर एक ऐसी मनोहर दुनिया खड़ी कर देते हैं कि जिसकी तरफ़ मन को खिंचते ही बनता है और वह रोके नहीं रुकता. इस किताब के ज़रिये जो लोग चित्रकारी सीखना चाहेंगे उनमें उनके भीतर के चित्रकार को जागने के लिये मजबूर होना पड़ेगा और उसमें छंद दर्शाने की क़ाबिलियत आपो आप जोर मारेगी. नई सूझ और नया सिरजन जिसको आज कल की फ़ोटोग्राफ़ी खा गई है और खाती जारही है उनमें इन किताबों की क़द्र करने से और काम में लाने से जान पड़ जायगी. और जल्दी ही फिर हरे भरे हो जाने की सम्भावना है.

छपाई, सफ़ाई, ख़ूब सुथरी है.

—भगवानदीन

———

تیسرا . ریکھا چتر بھی اِن کتابوں میں دئے گئے ہیں' انکے آدھار ہیں :—

اجنتا گپھا' باگ گپھا اور سگوریا (لنکا) کے بھیت چتر' کوناک مندر اور بنگال کی مورتیاں' اور کاشمیری اور راجپوت قلم کے چتر .

اس کلا پستک کی یہ خوبی ہے کہ اس میں جتنے ریکھا چتر ہیں ان میں شلپ چھند درشانے کی کوشش کی گئی ہے . آدمیوں کے جیوں کے تیوں چتر کھینچنا مشکل بھی ہوسکتے ہیں اور آسان بھی پر اُس طرح کی مشکل اور آسانی سے چترکار کے اندر کا چترکار جاگ نہیں پاتا اور وہ شلپ میں چھند کو نہیں درشا سکتا . شلپ چھند کے ذریعے روپ اور تیڑھی میڑھی لکیریں ملکر ایک ایسی منوہر دنیا کھڑی کر دیتے ہیں کہ جسکی طرف من کو کھنچتے ہی بنتا ہے اور وہ روکے نہیں رکتا . اس کتاب کے ذریعے جو لوگ چترکاری سیکھنا چاہینگے ان میں انکے بھیتر کے چترکار کو جاگنے کیلئے مجبور ہونا پڑیگا اور اس میں چھند درشانے کی قابلیت آپو آپ زور ماریگی . نئی سوجھ اور نیا سرجن جسکو آجکل کی فوٹو گرافی کھا گئی ہے اور کھاتی جارہی ہے ان میں ان کتابوں کی قدر کرنے سے اور کام میں لانے سے جان پڑجائیگی اور جلدی ہی پھر ہرے بھرے ہوجانے کی سمبھاونا ہے

چھپائی' صفائی خوب ستھری ہے .

—بھگوان دین

———

ही अहम घटना की तरफ़ से आँखें बन्द कर लेना है. हम मानते हैं कि आज़ादी मिलने के बाद देस की हालत सुधरी नहीं, ग़रीबों को और बीच के तबक़े को आज़ादी का कोई सुख नहीं मिला मगर इसके लिये अंगरेज़ों को कोसने की जगह उन कठिनाइयों पर भी नज़र रखनी होगी जो अंगरेज़ हमारे देस के लिये पैदा कर गए. हमें उन कठिनाइयों का मुक़ाबला करना होगा, उन्हें दूर करने का जतन करना होगा—लेकिन इस नज़्म में ऐसा कोई हल नहीं बताया गया. यह नज़्म एक ऐसे बेबस और निराश आदमी की फ़रियाद मालूम होती है जो ख़ुद कुछ करने की हिम्मत नहीं रखता. हालाँकि इसके बाद ही की नज़्म ''इन्डोनेशिया'' ज़िन्दगी से भरपूर है और दूसरों के दिलों में भी एक उमंग पैदा करती है. हमें इस संग्रह की ''जेल में किसी का ख़त पाकर'' और ''दिवाली'' नज़्में बहुत पसन्द आईं. बाक़ी नज़्मों में रोमानी नज़्मों का पल्ला राजकाजी नज़्मों से भारी नज़र आता है. लिखाई छपाई और गेटअप बहुत सुन्दर है.

—'माह'

रूपावली—

लेखक—श्रीनन्दलाल वसु

मिलने का पता—विश्वभारती ग्रन्थालय, २ बंकिम चटरजी स्ट्रीट, कलकत्ता.

चित्रकारी की इस किताब के तीन भाग हैं—पहला, दूसरा,

ھي اھم گھٹنا کی طرف سے آنکھیں بند کر لینا ہے ھم مانتے ھیں کہ آزادی ملنے کے بعد دیس کی حالت سدھري نہیں' غریبوں کو اور بیچ کے طبقے کو آزادی کا کوئی سکھ نہیں ملا مگر اس کے لئے انگریزوں کو کوسنے کی جگہ اُن کٹھنائیوں پر بھی نظر رکھنی ھوگی جو انگریز ھمارے دیس کے لئے پیدا کر گئے . ھمیں اُن کٹھنائیوں کا مقابلہ کرنا ھوگا' انہیں دور کرنے کا جتن کرنا ھوگا—لیکن اِس نظم میں ایسا کوئی حل نہیں بتایا گیا . یہ نظم ایک ایسے بے بس اور نراش آدمی کی فریاد معلوم ھوتی ہے جو خود کچھ کرنے کی ھمت نہیں رکھتا' حالانکہ اس کے بعد ھي کی نظم '' انڈونیشیا '' زندگی سے بھرپور ہے اور دوسروں کے دلوں میں بھی ایک امنگ پیدا کرتي ہے . ھمیں اس سنگرہ کی ''جیل میں کسی کا خط پاکر'' اور ''دیوالی'' نظمیں بہت پسند آئیں . باقی نظموں میں رومانی نظموں کا پلہ راج کاجي نظموں سے بھاری نظر آتا ہے . لکھائی چھپائی اور گیٹ اَپ بہت سندر ہے .

—' ماہ '

روپا ولی—

لیکھک—شری نند لال بسو

ملنے کا پتہ—وشو بھارتی گرنتھالیہ' ۲ بنکم چٹرجی اسٹریٹ' کلکتہ .

چترکاري کی اس کتاب کے تین بھاگ ھیں—پہلا' دوسرا'

मुशायरों का यह ढंग भी पुराना है. 'ताबाँ' कहते हैं—

> जो चाहूँ तरह पर भी शेर कह सकता हूं मैं लेकिन
> मुझे नफ़रत सी है कुछ सनअते अशआर साज़ी से

जब तक दिल में शेर कहने के लिये कोई ख़ास जज़बा न पैदा हो, 'ताबाँ' के ख़याल में, सच्चा शेर नहीं हो सकता. केवल सुनाने के लिये शेर कहने को वह शायरी नहीं कारीगरी कहते हैं.

पुरानेपन से बग़ावत का यह जज़बा कहीं कहीं बेहद तेज़ हो गया है.

फ़तेहपूर सीकरी की पुरानी शाही इमारतें भी 'ताबाँ' को अच्छी नहीं लगतीं क्योंकि वह पुराने 'मुग़ल साम्राज्य' की यादगार हैं. ताबाँ उन पुराने निशानों की जगह 'इनसान की आज़ादी के महल' खड़े देखना चाहते हैं. कहीं कहीं 'नएपन' के प्रेम और पुरानेपन से नफ़रत ने उनके ख़यालों को उलझा भी दिया है और पढ़ने वाला यह सोचने लगता है कि क्या शायर जिस ज़माने को लाना चाहता है उसमें हर पुरानी चीज़ मिटा डाली जायगी. क्या फ़तेहपूर सीकरी या उसी तरह की दूसरी इमारतें गिराए बग़ैर उन को सुधार कर उन से जनता की भलाई का दूसरा काम नहीं लिया जा सकता? या "१५ अगस्त सन् १९४७ ई०" वाली नज़्म में जब वह हिन्दुस्तान की आज़ादी के एलान पर कहते हैं—

> जिस्म पहले से क़ैद था लेकिन
> रूह पर उस ने दाम फेंक दिया

तो भी यह समझ में नहीं आता कि उन्होंने इस आज़ादी को किस निगाह से देखा है. अगर वह यह कहते कि जिस्म को क़ैद से आज़ाद करके रूह को ग़ुलाम बनालिया तब तो बात कुछ साफ़ समझ में आसकती थी. मगर यह कहना कि पहले जिस्म क़ैद था

مشاعروں کا یہ ڈھنگ بھی پرانا ہے . 'تاباں' کہتے ھیں—

> جو چاھوں طرح پر بھی شعر کہہ سکتا ھوں میں لیکن
> مجھے نفرت سی ہے کچھ صنعت اشعار سازی سے

جب تک دل میں شعر کہنے کے لئے کوئی خاص جذبہ نہ پیدا ہو، تاباں کے خیال میں، سچا شعر نہیں ہو سکتا . کیول سنانے کے لئے شعر کہنے کو وہ شاعری نہیں کاریگری کہتے ھیں .

پرانے پن سے بغاوت کا یہ جذبہ کہیں کہیں بیحد تیز ہوگیا ہے .
فتح پور سیکری کی پرانی شاھی عمارتیں بھی 'تاباں' کو اچھی نہیں لگتیں کیونکہ وہ پرانے 'مغل سامراج' کی یادگار ھیں . 'تاباں' ان پرانے نشانوں کی جگہ 'انسان کی آزادی کے محل' کھڑے دیکھنا چاھتے ھیں . کہیں کہیں 'نئے پن' کے پریم اور پرانے پن سے نفرت نے اُنکے خیالوں کو اُلجھا بھی دیا ہے اور پڑھنے والا یہ سوچنے لگتا ہے کہ کیا شاعر جس زمانے کو لانا چاھتا ہے اُس میں ہر پرانی چیز مٹا ڈالی جائیگی . کیا فتح پور سیکری یا اسی طرح کی دوسری عمارتیں گرائے بغیر اُن کو سدھار کر اُن سے جنتا کی بھلائی کا دوسرا کام نہیں لیا جا سکتا ؟ یا "۱۵ اگست سن ۱۹۴۷" والی نظم میں جب وہ ھندستان کی آزادی کے اعلان پر کہتے ھیں—

> جسم پہلے سے قید تھا لیکن
> روح پر اس نے دام پھینک دیا

تو بھی یہ سمجھ میں نہیں آتا کہ اُنھوں نے اِس آزادی کو کس نگاہ سے دیکھا ہے . اگر وہ یہ کہتے کہ جسم کو قید سے آزاد کر کے روح کو غلام بنا لیا تب تو بات کچھ صاف سمجھ میں آسکتی تھی . مگر یہ کہنا کہ پہلے جسم قید تھا اب روح پر

'साज़े लरज़ाँ' को देखने से मालूम होता है कि उन्होंने जान बूझ कर और सोच समझकर अपना संग्रह छपवाने में धीरज से काम लिया है. इस संग्रह में उनकी जो नज़में हैं उनको देख कर भी यही मालूम होता है कि छपवाने के लिये नज़मों का बड़ी सख़्ती से चुनाव किया गया है और किताब के सफ़े बढ़ाने के लालच में किसी भरती की नज़्म को इस संग्रह में जगह नहीं दी गई.

'साज़े लरज़ाँ' में 'ताबाँ' की रूमानी नज़में भी हैं समाजी भी और सियासी भी. हर तरह की नज़मों में 'ताबाँ' का एक ख़ास रंग है जिसे हम सही तरक़्क़ी पसन्द रंग कह सकते हैं रोमानी नज़मों में 'ताबाँ' का प्रेम इसी दुनिया का प्रेम मालूम होता है और वह ख़याली दुनिया की बातें नहीं करते. इसी तरह जब वह राजकाज की बातें करते हैं और इनक़लाब का नारा लगाते हैं तो भी यह नहीं मालूम होता कि वह हवाई क़िले बना रहे हैं.

'ताबाँ' पुराने रस्म रिवाज, पुराने समाज, पुराने साम्राजवादी और पूँजीवाद निज़ाम और पुरानी शायरी सभी के ख़िलाफ़ हैं उन्हें नए समाज से प्रेम है, नए निज़ाम से प्रेम है, नई दुनिया से प्रेम है और नई शायरी से प्रेम है. वह हर पुरानी चीज़ की जगह नई चीज़ लाना चाहते हैं. पुरानेपन से बग़ावत 'ताबाँ' की सारी शायरी में भरी है. वह पुराने उर्दू शायरों की तरह, जिनके पीछे आज भी उर्दू के ज़्यादतर शायर चलते हैं, माशूक़ को मर्द के रूप में नहीं देखते बल्कि औरत के रूप में देखते हैं और साफ़ कहते हैं—

जब कभी भूले से दिल में याद आएगी मेरी
गर्म पेशानी में तुम कुछ कुछ नमी सी पाओगी

उन्हें उर्दू के ऐसे मुशायरे भी पसन्द नहीं जहाँ एक ही तरह में सब शायर ग़ज़लें लिखकर सुनाने के लिये इकट्ठा होते हैं क्योंकि

'ساز لرزاں' کو دیکھنے سے معلوم ہوتا ھے کہ اُنھوں نے جان بوجھکر اور سوچ سمجھکر اپنا سنگرہ چھپوانے میں دھیرج سے کام لیا ھے . اس سنگرہ میں اُنکی جو نظمیں ھیں اُنکو دیکھکر بھی یہی معلوم ہوتا ھے کہ چھپوانے کے لئے نظموں کا بڑی سختی سے چناؤ کیا گیا ھے اور کتاب کے صفحے بڑھانے کے لالچ میں کسی بھرتی کی نظم کو اِس سنگرہ میں جگہ نہیں دی گئی .

'ساز لرزاں' میں 'تاباں' کی رومانی نظمیں بھی ھیں' سماجی بھی اور سیاسی بھی . ھر طرح کی نظموں میں 'تاباں' کا ایک خاص رنگ ھے جسے ھم صحیح ترقی پسند رنگ کہہ سکتے ھیں . رومانی نظموں میں 'تاباں' کا پریم اِسی دنیا کا پریم معلوم ہوتا ھے اور وہ خیالی دنیا کی باتیں نہیں کرتے اِسی طرح جب وہ راج کاج کی باتیں کرتے ھیں اور انقلاب کا نعرہ لگاتے ھیں تو بھی یہ نہیں معلوم ہوتا کہ وہ ھوائی قلعے بنا رہے ھیں .

'تاباں' پرانے رسم رواج' پرانے سماج' پرانے سامراج‌وادی اور پونجی وادی نظام اور پرانی شاعری سبھی کے خلاف ھیں. اُنھیں نئے سماج سے پریم ھے' نئے نظام سے پریم ھے' نئی دنیا سے پریم ھے اور نئی شاعری سے پریم ھے . وہ ھر پرانی چیز کی جگہ نئی چیز لانا چاھتے ھیں . پرانے پن سے بغاوت 'تاباں' کی ساری شاعری میں بھری ھے . وہ پرانے اُردو شاعروں کی طرح' جنکے پیچھے آج بھی اُردو کے زیادہ تر شاعر چلتے ھیں' معشوق کو مرد کے روپ میں نہیں دیکھتے بلکہ عورت کے روپ میں دیکھتے ھیں اور صاف کہتے ھیں —

جب کبھی بھولے سے دل میں یاد آئے گی مری
گرم پیشانی میں تم کچھ کچھ نمی سی پاؤ گی

اُنھیں اُردو کے ایسے مشاعرے بھی پسند نہیں جہاں ایک ھی طرح میں سب شاعر غزلیں لکھکر سنانے کے لئے اکٹھا ہوتے ھیں کیونکہ

ने बड़ी मेहनत के साथ ऐसी ऐसी चीज़ें दी हैं जो ज्यादातर रामायनों में मुशकिल से मिलती हैं. जैसे एक पूरा खंड 'चित्रावली' के नाम से है जिसमें सैकड़ों तस्वीरें रामायन की उन कहानियों की हैं जिनसे रामायन बनती है. यह बच्चों में रामायन के लिये प्रेम पैदा करने में बहुत काम की चीज़ होगी. इसके अलावा भी जगह जगह और भी बहुत से चित्र दिये गए हैं. रामायन पढ़ने वालों के लिये रामशलका, तुलसीदास जी का जीवन चरित्र, पारायन विधि, अनुश्ठान प्रयोग जैसी चीज़ें सभी इस पुस्तक में हैं. आख़ीर में रामायन की महानता पर कुछ ख़ास लोगों की राएँ भी दी गई हैं जैसे, महात्मा गांधी, पं० मदन मोहन मालवीय, डा० राजेन्द्र प्रसाद, सर सी० वाई० चिन्तामनि वग़ैरा. हमें उम्मीद है कि यह पुस्तक पढ़ने वाले ख़ूब पसन्द करेंगे. दाम वाजिबी जान पड़ते हैं.

२३-२-५१   —सुन्दरलाल

साज़े लरज़ां

लेखक—ग़ुलाम रब्बानी 'ताबाँ', निकालने वाली— इन्डियन, लिट्रेचर सुसाइटी, जामेया नगर, देहली. सफ़ा १४०–रायल साइज़ क़ीमत दो रुपए आठ आने.

यह किताब उरदू के मशहूर शायर ग़ुलाम रब्बानी 'ताबाँ' की ५९ नज़्मों ग़ज़लों का मजमूआ यानी संग्रह है. 'ताबाँ' का कलाम बहुत पहले से उरदू के अच्छे रिसालों में छपता रहा है. इस अरसे

نے بڑی محنت کے ساتھ ایسی ایسی چیزیں دی ہیں جو زیادہ تر رامائنوں میں مشکل سے ملتی ہیں ۔ جیسے ایک پورا کھنڈ 'چترَاولی' کے نام سے ہے جسمیں سیکڑوں تصویریں رامائن کی اُن کہانیوں کی ہیں جن سے رامائن بنتی ہے ۔ یہ بچوں میں رامائن کے لئے پریم پیدا کرنے میں بہت کام کی چیز ہوگی اس کے علاوہ بھی جگہ جگہ اور بھی بہت سے چتر دئے گئے ہیں ۔ رامائن پڑھنے والوں کے لئے رام شلاکا' تلسی داس جی کا جیون چرتر' پارائن ودھی' انوشٹھان پریوگ' جیسی چیزیں سبھی اس پستک میں ہیں ۔ آخیر میں رامائن کی مہانتا پر کچھ خاص لوگوں کی رائیں بھی دی گئی ہیں ۔ جیسے' مہاتما گاندھی' پنڈت مدن موہن مالوی' ڈاکٹر راجیندر پرساد' سر ۔ سی ۔ وائی ۔ چنتامنی وغیرہ ۔ ہمیں اُمید ہے کہ یہ پستک پڑھنے والے خوب پسند کرینگے ۔ دام واجبی جان پڑتے ہیں ۔

٢٣-٢-٥١   —سندرلال

ساز لرزاں

لیکھک — غلام ربانی 'تاباں' نکالنے—والی انڈین لٹریچر سوسائٹی' جامعہ نگر' دھلی ۔ صفحہ ١٤٠ رائل سائز قیمت دو روپئے آٹھ آنے ۔

یہ کتاب اُردو کے مشہور شاعر غلام ربانی 'تاباں' کی ٥٩ نظموں غزلوں کا مجموعہ یعنی سنگرہ ہے ۔ 'تاباں' کا کلام بہت پہلے سے اُردو کے اچھے رسالوں میں چھپتا رہا ہے ۔ اس عرصے

श्री रामचरित मानस

सम्पादक—मुन्शी कन्हैयालाल एम० ए०, एल–एल० बी० ऐडवोकेट, छपवाने वाले—पंचक्रोशी सिन्डिकेट. "कृश्न कुंज" पंचक्रोशी समिति रोड, इलाहाबाद. सफ़े ५७६, क़ीमत तीन रुपए बारह आने.

गोस्वामी तुलसीदास जी की रामायन हिन्दी साहित्य में एक बहुत ऊँचा स्थान रखती है. सच यह है कि यह पुस्तक संसार भर के साहित्य में ऊँची से ऊँची पुस्तकों में गिने जाने के योग्य है. इसमें हर तरह के पढ़ने वाले, धर्म प्रेमी हों या साहित्य प्रेमी. बूढ़े हों या बच्चे, पुरुष हों या स्त्री, सब के लिये अपनी अपनी रुचि की उपयोगी सामग्री मिलती है. हिन्दी की यह पुस्तक लाखों घरों में जरूर है. ऐसी हरदिल अज़ीज़ किताब का एक नया एडीशन यों तो कोई ख़ास बात नहीं पैदा करता मगर यह संस्करन जो हमारे सामने है अपनी विशेशताओं के कारन तुलसीदास जी की रामायनों में एक विशेश स्थान प्राप्त करेगा. इसमें मुन्शी कन्हैयालाल

شری رام چرت مانس

سمپادک—منشی کنھیا لال ایم-اے-' ایل ایل-بی-ایڈوکیٹ' چھپوانے والے—پنچ کروشی سنڈیکیٹ' '' کرشن کنج '' پنچ کروشی سمتی روڈ' الہ آباد . صفحے ٥٧٦' قیمت تین روپے بارہ آنے .

گوسوامی تلسی داس جی کی راماین ہندی ساہتیہ میں ایک بہت اونچا استھان رکھتی ہے . سچ یہ ہے کہ یہ پستک سنسار بھر کے ساہتیہ میں اُونچی سے اُونچی پستکوں میں گنے جانے کے یوگیہ ہے.. اِسمیں ہر طرح کے پڑھنے والے' دھرم پریمی ہوں یا ساہتیہ پریمی' بوڑھے ہوں یا بچے' پرش ہوں یا استری' سب کے لئے اپنی اپنی رچی کی اُپیوگی سامگری ملتی ہے . ہندی کی یہ پستک لاکھوں گھروں میں ضرور ہے . ایسی ہردلعزیز کتاب کا ایک نیا ایڈیشن' یوں تو کوئی خاص بات نہیں پیدا کرتا مگر یہ سنسکرن جو ہمارے سامنے ہے اپنی وشیشتاؤں کے کارن تلسی داس جی کی راماینوں میں ایک وشیش استھان پراپت کریگا . اس میں منشی کنھیا لال

ख़याल छोड़ कर एकदम हँस पड़ते हैं. और हम सोचने लगते हैं कि हो न हो उस ने भी कभी आँख-मिचोली खेली है. जभी तो नाक की यह दुरगत बनी है. और हम अपनी नाक पर हाथ फेर कर तोबा करते हैं कि अब कभी भी आँख-मिचोली न खेलेंगे, क्योंकि अब आँख मिचोली हमारे लिये नाक मिचोली बन गई है.

मैं तो "बच्चों की दुनिया" पढ़ने वालों से भी कहूँगी कि आप भी लगे हाथों अपनी नाकों को देख लीजिये. अगर वह लम्बी है और मुड़ी है तो फिर आपने भी नाक मिचोली खेली है. है ना यह बात ठीक........... !!

चुटकुला

राजेश—भाई साहब, आप बहुत परेशान दिखाई पड़ते हैं.

सुरेश—हाँ, मेरी ऐनक खो गई है. और मुशकिल यह है कि बिना ऐनक लगाए मैं उसे ढूँढ भी नहीं सकता.

हमें इस पते पर अपने लेख "बच्चों की दुनिया" में छपने को भेजो—प्रेम भाई, एडीटर "बच्चों की दुनिया"

१३५, मुग़ल पुरा, हैदराबाद दक्खिन (भारत)

خیال چھوڑ کر ایک دم ھنس پڑتے ھیں . اور سوچنے لگتے ھیں کہ ھو نہ ھو اس نے بھی کبھی آنکھ مچولی کھیلی ھے . جبھی تو ناک کی یہ درگت بنی ھے . اور ھم اپنی ناک پر ھاتھ پھیر کر توبہ کرتے ھیں کہ اب کبھی بھی آنکھ مچولی نہ کھیلینگے' کیونکہ اب آنکھ مچولی ھمارے لئے ناک مچولی بن گئی ھے .

میں تو " بچوں کی دنیا " پڑھنے والوں سے بھی کہونگی کہ آپ بھی لگے ھاتھوں اپنی ناکوں کو دیکھ لیجئے . اگر وہ لمبی ھے اور مڑی ھے تو پھر آپ نے بھی ناک مچولی کھیلی ھے . ھے نا یہ بات ٹھیک......... !!

چٹکلہ

راجیش—بھائی صاحب' آپ بہت پریشان دکھائی پڑتے ھیں .

سریش—ھاں' میری عینک کھو گئی ھے . اور مشکل یہ ھے کہ بنا عینک لگائے میں اُسے ڈھونڈھ بھی نہیں سکتا .

ھمیں اِس پتے پر اپنے لیکھ ''بچوں کی دنیا'' میں چھپنے کو بھیجو—پریم بھائی' اڈیٹر ''بچوں کی دنیا''

۱۳۵' مغل پورہ' حیدرآباد دکھن (بھارت)

[illegible] मुन्नी को सम्भाले
[illegible] मुन्नी दूसरी जगह भाग खड़ी हुई,
[illegible] दीवार से टकराई. वह गिर पड़ी, फिर
[illegible] में मेरा क्या होगा...... नाक के इलाज
[illegible] बुलाए गए. [illegible] तो अब कम हो गया है, पर
[illegible] बहुत छोटी थी अब और भी छोटी हो गई.
[illegible] कोई रास्ता पूछता है तो हम उसे मज़ाक़ में यह कह
[illegible] मुन्नी की नाक की सीध चले जाओ, वहीं पहुँच जाओगे.
[illegible] की नाक क्या टूटी हमारी आँख मिचोली बन्द हो गई.

[illegible] रात को चाची के घर गई हुई थीं और मुन्नी भी
[illegible] थी. फिर क्या था, हमारा राज हुआ और आँख मिचोली
[illegible] गई. हम चोर बन गए और सब छुप गए. रोशनी बुझा दी
[illegible]. चारों ओर घुप टोप अँधेरा देख कर मेरा मन धक
[illegible] लगा और डर कर "आना, आना" कहती मैं चल पड़ी.
[illegible] कोने में रज़ाई रखी हुई थी और जो पलंग बिछा था
[illegible] बड़ा सा छेद था, मैं जो रज़ाई पर से गिरी तो सर नीचे
[illegible] ऊपर. मैं और घबराई. फिर ऐसा लगा कि
[illegible] हुआ [illegible] रहा है. मैं इतनी डर गई कि मेरे मुँह से
[illegible] निकल गई और मेरी चीख से मुन्ना जो क़रीब ही पालने
[illegible] रहा था, जाग पड़ा और डर कर नीचे जो कूदा तो
[illegible] और टाँगें ऊपर. और फिर वह नाक पकड़ कर
[illegible] और सब घरवालों का दिल धक से हो गया. पर

[illegible] اور منی کو پکڑنے چلی تھی
[illegible] منی دوسری جگہ بھاگ کھڑی ہوئی، اور اندھیرے
[illegible] دیوار سے ٹکرا گئی۔ وہ گر پڑی، پھر ناک چپک گئی۔
[illegible] کیا ہوگا......ناک کے علاج کے لئے ڈاکٹر وغیرہ بلائے
[illegible]۔ [illegible] تو اب کم ہو گیا ہے، پر ناک جو پہلے سے بہت چھوٹی
[illegible] اب اور چھوٹی ہو گئی۔

ہم سے جب کوئی راستہ پوچھتا ہے تو ہم اسے مذاق میں یہ کہہ
دیتے ہیں کہ منی کی ناک کے سیدھے چلے جاؤ، وہیں پہنچ جاؤگے۔
منی کی ناک کیا ٹوٹی ہماری آنکھ مچولی بند ہو گئی۔

ایک دن امی رات کو چچی کے گھر گئی ہوئی تھیں اور منی
بھی اُنکے ساتھ تھی۔ پھر کیا تھا، ہمارا راج ہوا اور آنکھ مچولی
شروع ہو گئی۔ ہم چور بن گئے اور سب چھپ گئے۔ روشنی بجھا
دی گئی۔ گھر میں چاروں اور گھپ ٹوپ اندھیرا دیکھکر میرا من
دھک دھک کرنے لگا اور ڈر کر "آنا، آنا" کہتی میں چل پڑی۔
ایک جگہ کونے میں رضائی رکھی ہوئی تھی اور جو پلنگ بچھا
تھا اُس میں ایک بڑا سا چھید تھا، میں جو رضائی پر سے گری
تو سر نیچے ہو گیا اور ٹانگیں اوپر۔ میں اور گھبرائی۔ پھر ایسا
لگا کہ صندوق کھڑا ہوا چل پھر رہا ہے۔ میں اتنی ڈر گئی کہ میرے
منہ سے ایک چیخ نکل گئی اور میری چیخ سے منا جو قریب
ہی پالنے میں پڑا سو رہا تھا، جاگ پڑا اور ڈر کر نیچے جو کودا تو
اُس کا بھی سر نیچے اور ٹانگیں اوپر اور پھر وہ ناک پکڑ کر رونے
لگا۔ میرا اور سب گھروالوں کا دل دھک سے ہو گیا۔ پر

[illegible] मर गईं...... पर मैं कहती हूँ कि वह अमर हैं. और [illegible] मैं [illegible] से चरखा कातना भी सीख रही हूं......" यह [illegible] सईदा दूसरे कमरे में भाग खड़ी हुई.

इतने में आठ बज गए, मुझे घर जाना था, रात बड़ी जो हो [illegible] थी. और फिर हमारे कपड़े भी सूख गए. चलते समय मैंने [illegible] भाई और सईदा बहन से कहा—"कल तुम दोनों मेरे घर [illegible] आना, मैं भी तुम्हें गरम गरम दोसे और पकौड़ियां खिलाऊँगा, [illegible] और सलोने." और मैं घर चला आया, इस तरह हमारी [illegible] का दिन [illegible] गुज़रा.

नाक मिचोली

(बहन [illegible])

[illegible]—"[illegible], आज तो हम आँख मिचोली खेलेंगे, [illegible] ना ?" [illegible] ने गुस्सा भरी नज़रों से घूर [illegible] की ओर इशारा करके कहा— [illegible] कभी न दूंगी. [illegible] नाक भी तोड़ने का

تھا کہ وہ مر گئے...... پر میں کہتی ہوں کہ وہ امر ہیں . اور بھیا میں پرسوں سے چرخہ کاتنا بھی سیکھ رہی ہوں.........." یہ کہتے کہتے سعیدہ دوسرے کمرے میں بھاگ کھڑی ہوئی .

اتنے میں آٹھ بج گئے' مجھے گھر جانا تھا' رات بڑی جو ہو رہی تھی' اور پھر ہمارے کپڑے بھی سوکھ گئے . چلتے سمے میں نے فرید بھائی اور سعیدہ بہن سے کہا—"کل تم دونوں میرے گھر ضرور آنا' میں بھی تمہیں گرم گرم دوشے اور پکوڑیاں کھلاؤں گا' چٹ پٹے اور سلونے ." اور میں گھر چلا آیا' اِس طرح ہماری چھٹی کا دن مزے سے گزرا .

ناک مچولی

(بہن دردانہ انصاری)

میں نے کہا—"امی جان' آج تو ہم آنکھ مچولی کھیلیں گے' [illegible] نا ؟" امی جان نے غصہ بھری نظروں سے گھور کر دیکھا' اور میں کی [illegible] ناک کی اور اشارہ کر کے کہا—"نا [illegible] ؟ میں تو اس کھیل کے کھیلنے کی اجازت کبھی نہ دوں [illegible] ناک کو دیکھو' اب کیا اپنی ناک بھی توڑنے کا .

... जाओ. फरीद ने कहा—"भागो." मैंने भी कहा—"हाँ तेज भागो". हमारा घर दूर था, फरीद का घर पास था. ... फरीद अपने घर में घुस गए और मैं भी उन के साथ ... दोनों के कपड़े भीग गए थे. दोनों ने कपड़े उतारे, ... इतने में फरीद की बहन गरम गरम कचौरियाँ ... पहुँची और कहने लगी—"चलो शीतल भाई, आओ गरम गरम कचौरियाँ खाएँगे. आप दोनों के जिस्म में गरमी आ जाएगी."

और हम दोनों मेज पर बैठ गए और कचौरियां खाने लगे. बड़े मज़े की थीं. फिर हम बैठे कहानियों की किताबें पढ़ने लगे. फरीद की बहन सईदा दौड़ती हुई अपने बाबा के कमरे में गई, और एक किताब लेकर मेरी कुरसी के क़रीब खड़ी होकर कहने लगी—"देखो शीतल भाई, यह किताब कितनी अच्छी है," फिर मैंने कहा—"अच्छा तो यह बताओ तुमने यह जाना कैसे कि यह किताब अच्छी है ..... बताओ भई, मुँह क्यों तकने लगी हो?"

सईदा ने किताब के पन्ने उलटते हुए कहा—"तुम समझते हो कि मुझे पढ़ना नहीं आता, अब ही तो पूछ रहे हो ना?" और सईदा ने मुझे घूरते हुए कहा—"सुनो इसका नाम है महात्मा गांधी की जीवनी." फिर मैंने पूछा—"अच्छा सईदा, तुम बापू जी के बारे में क्या जानती हो?"

"हाँ, बापू जी के बारे में .... वह बापू जी थे, हमारे तुम्हारे और सारे भारत के, बापू ने ही तो हमें आज़ादी दिलाई है ना. बापू प्रेम की मूरत थे. बाबा से मैंने सुना

... فرید نے کہا—"بھاگو" میں نے بھی کہا—"تیز بھاگو." ہمارا گھر دور تھا' فرید کا گھر پاس تھا. دونوں بھاگے. فرید اپنے گھر میں گھس گئے اور میں بھی اُن کے ساتھ گھر میں پہنچ گیا. دونوں کے کپڑے بھیگ گئے تھے. دونوں نے کپڑے اُتارے' دوسرے پہن لئے. اتنے میں فرید کی بہن گرم گرم کچوریاں لئے آپہنچی اور کہنے لگی "—چلو شیتل بھائی' آؤ گرم گرم کچوریاں کھائیںگے. آپ دونوں کے جسم میں گرمی آجائے گی."

اور ہم دونوں میز پر بیٹھ گئے اور کچوریاں کھانے لگے. بڑے مزے کی تھیں. پھر ہم بیٹھے کہانیوں کی کتابیں پڑھنے لگے. فرید کی بہن سعیدہ دوڑتی ہوئی اپنے بابا کے کمرے میں گئی' اور ایک کتاب لے کر میری کرسی کے قریب کھڑی ہوکر کہنے لگی— "دیکھو شیتل بھائی' یہ کتاب کتنی اچھی ہے." پھر میں نے کہا—"اچھا تو یہ بتاؤ تم نے یہ جانا کیسے کہ یہ کتاب اچھی ہے........بتاؤ بھئی' منہ کیوں تکنے لگی ہو؟"

سعیدہ نے کتاب کے پنے اُلٹتے ہوئے کہا—"تم سمجھتے ہو کہ مجھے پڑھنا نہیں آتا' جب ہی تو پوچھ رہے ہو نا؟" اور سعیدہ نے مجھے گھورتے ہوئے کہا—"سنو اِس کا نام ہے "مہاتما گاندھی کی جیونی". پھر میں نے پوچھا—"اچھا سعیدہ' تم باپو جی کے بارے میں کیا جانتی ہو؟"

"ہاں' باپو جی کے بارے میں.....وہ باپو جی تھے' ہمارے تمہارے اور سارے بھارت کے' باپو نے ہی تو ہمیں آزادی دلائی ہے نا؟ باپو پریم کی مورت تھے. بابا سے میں نے سنا

छुट्टी का दिन

(भाई शीतल सिंह, चौल पेठ)

बाग़ में आम के, जामुन के, नारंगी के, संतरे के पेड़ थे. जामुन के पेड़ चारों ओर बाग़ के कोनों पर लगे हुए थे. आम के कुँज अलग, नारंगी के झाड़ अलग, संतरे के झाड़ अलग और एक तरफ़ सुन्दर फूलों की क्यारियाँ थीं. गुलाब के फूल की क्यारी, गुलाबी पत्तों का गुलाब, हरे पत्तों का गुलाब, चमेली की बेलें दरख़्तों पर लपटी हुई थीं. फूल तारों की तरह जगमग जगमग कर रहे थे. नन्हे नन्हे और सुन्दरता के सुन्दर रूप ! बाग़ में ऐसी बहार थी कि मन चाहता था घूमते फिरते ही रहें, इसी तरह सुबह से शाम हो जाए. मैं और फ़रीद दोनों फिर रहे थे. फ़रीद ने कहा—"देखो तो, यह बाग़ कितना सुन्दर है."

मैंने कहा—"हाँ भई फ़रीद, यह बाग़ तो बड़ा ही सुन्दर है. मन चाहता है कि घर न जायें, यहीं घूमते रहें और जब रात हो तब किसी पेड़ के सहारे सो रहें......"

"हाँ, हाँ, ठंडी और ख़ुशबूभरी हवा से तो ऐसी नींद आएगी कि हमारा दिमाग़ मस्त हो जाएगा." फ़रीद ने सर के बालों को ठीक करते हुए कहा.

इतने में बादल आ गए. ठंडी हवा साँय साँय करती चलने लगी. ख़ुशबू की लपटें आने लगीं और पंछी चहचहाने लगे. कोयल बोली, मोर बोला, पपीहा गाया, बगुले उड़ने लगे. बादलों के काले

چھٹی کا دن

(بھائی شیتل سنگھ، دھول پیٹھ)

باغ میں آم کے، جامن کے، نارنگی کے، سنترے کے پیڑ تھے. جامن کے پیڑ چاروں اور باغ کے کونوں پر لگے ہوئے تھے. آم کے کنج الگ، نارنگی کے جھاڑ الگ، سنترے کے جھاڑ الگ اور ایک طرف سندر پھولوں کی کیاریاں تھیں. گلاب کے پھول کی کیاری، گلابی پتوں کا گلاب، ہرے پتوں کا گلاب، چمیلی کی بیلیں درختوں پر لپٹی ہوئی تھیں. پھول تاروں کی طرح جگ مگ جگ مگ کر رہے تھے. ننھے ننھے اور سندرتا کے سندر روپ! باغ میں ایسی بہار تھی کہ من چاہتا تھا گھومتے پھرتے ہی رہیں، اسی طرح صبح سے شام ہوجائے. میں اور فرید دونوں پھر رہے تھے. فرید نے کہا— "دیکھو تو یہ باغ کتنا سندر ہے."

میں نے کہا— "ہاں بھئی فرید، یہ باغ تو بڑا ہی سندر ہے. من چاہتا ہے کہ گھر نہ جائیں، یہیں گھومتے رہیں اور جب رات ہو تب کسی پیڑ کے سہارے سو رہیں......"

"ہاں، ہاں، ٹھنڈی اور خوشبو بھری ہوا سے تو ایسی نیند آئے گی کہ ہمارا دماغ مست ہوجائے گا." فرید نے سر کے بالوں کو ٹھیک کرتے ہوئے کہا.

اتنے میں بادل آگئے. ٹھنڈی ہوا سائیں سائیں کرتی چلنے لگی. خوشبو کی لپٹیں آنے لگیں اور پنچھی چہچہانے لگے. کوئل بولی، مور بولا، پپیہا گایا، بگلے اڑنے لگے. بادلوں کے کالے کالے جھونڈوں میں اجلے اجلے بگلے بڑے بھلے لگ رہے تھے.

بچوں کی دنیا

एडीटर—प्रेम भाई ایڈیٹر—پریم بھائی

शांति के गीत

(भाई इफ़तिखार अहमद 'इक़बाल')

आओ आओ जग में आज ख़ुशी के दीप जलाएँ
दुनिया में सुख नाच उठे हम ऐसे गीत सुनाएँ
सब हैं भाई भाई आओ सब को गले लगाएँ
गाएं ख़ुशी के गीत आओ, आओ हम सब मीत

जग है चार दिनों का मेला, जीवन सुखी बिताएँ
मन में खोट न रख कर, सबकी सेवा में लग जाएँ
पढ़ें, लिखें, आकाश पे जाएँ, आगे क़दम बढ़ाएँ
गाएं ख़ुशी के गीत आओ, आओ हम सब मीत

देस हमारा सब से प्यारा करेंगे इसकी सेवा
गंगा, जमना, कृशना* बहतीं, ऊँचा खड़ा हिमाला
देस को अपने ऊँचा करना अब है काम हमारा
गाएं ख़ुशी के गीत आओ, आओ हम सब मीत

شانتی کے گیت

(بھائی افتخار احمد 'اقبال')

آؤ آؤ جگ میں آج خوشی کے دیپ جلائیں
دنیا میں سکھ ناچ اُٹھے ہم ایسے گیت سنائیں
سب ہیں بھائی بھائی آؤ سب کو گلے لگائیں
گائیں خوشی کے گیت آؤ' آؤ ہم سب میت

جگ ہے چار دنوں کا میلہ' جیون سکھی بتائیں
من میں کھوٹ نہ رکھکر' سب کی سیوا میں لگ جائیں
پڑھیں' لکھیں' آکاش پہ جائیں' آگے قدم بڑھائیں
گائیں خوشی کے گیت آؤ' آؤ ہم سب میت

دیس ہمارا سب سے پیارا کرینگے اس کی سیوا
گنگا' جمنا' کرشنا* بہتیں' اونچا کھڑا ہمالا
دیس کو اپنے اونچا کرنا اب ہے کام ہمارا
گائیں خوشی کے گیت آؤ' آؤ ہم سب میت

---

* कृशना नदी'

* کرشنا ندی'

'ईश्वर अल्लाह तेरे नाम' तो नोआखाली में सहज ही सूझा था. उस में सब धर्मों ने और सब पंथों ने मान्य किये हुए भगवान के सब नाम छिपे माने हैं, लेकिन अगर दूसरे नाम भी इस में जोड़ दें तो कोई दोश नहीं होगा. ईश्वर अल्लाह, गाड गोविन्द, मज़्द महादेव, जनारदन जहूवा, यह सब मिलकर एक नाम बना सकते हो या किसी भी एक नाम में यह सारे समझ सकते हो.

अब 'ईसू अल्लाह तेरे नाम' की बात अगरचे यह एक क्रिश्चन भाई का सुझाव है. मुझे डर है कि परमेश्वर की जगह ईसू का नाम शायद क्रिश्चन लोग पसन्द नहीं करेंगे. यह मैं ठीक ठीक नहीं जानता. लेकिन ईश्वर की जगह अगर ईश्वर मोहम्मद हम बोलते तो मुसलमान उसे पसन्द न करते यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ. भक्ति भाव के नशे में गुरु को ईश्वर की पदवी देना वैदिक, वेदान्ती और हिन्दू कल्पना है जो शायद ईसाइयों को पसन्द न आए. लेकिन अगर उन्हें वह पसन्द आए तो मुझे इस में कोई उज्र नहीं. मैं एक भावार्थी मनुष्य हूँ और ईश्वरतत्व के विचार में दलील को कोई मूल्य नहीं देता. मैं ईसू और मोहम्मद को तो क्या, अपने पिता और माता को भी सम्पूर्न परमेश्वर मान सकता हूँ, जबकि वह शरीर से मुक्त हो चुके हैं. देह मुक्त महापुरुश को जब हम परमेश्वर का रूप देते हैं तब हम उसके व्यक्तित्व को मिटा देते हैं. इतना ध्यान में रखना चाहिये. अगर यह खतरा मंजूर है तो खुशी से ईसू अल्लाह कह सकते हैं.

२०-१-५१. —परंधाम, पवनार

' ایشور اللہ تیرے نام ' تو نواکھالی میں سہج ہی سوجھا تھا . اُس میں سب دھرموں نے اور سب پنتھوں نے مانیہ کئے ہوئے بھگوان کے سب نام چھپے مانے ہیں. لیکن اگر دوسرے نام بھی اس میں جوڑ دیں تو کوئی دوش نہیں ہوگا . ایشور اللہ، گاڈ گووند، مزد مہادیو، جنار دن جہووا، یہ سب ملکر ایک نام بنا سکتے ہو یا کسی بھی ایک نام میں یہ سارے سمجھ سکتے ہو

اب 'یسوع اللہ تیرے نام' کی بات . اگرچہ یہ ایک کرشچن بھائی کا سجھاؤ ہے، مجھے ڈر ہے کہ پرمیشور کی جگہ یسوع کا نام شاید کرشچن لوگ پسند نہیں کرینگے . یہ میں ٹھیک ٹھیک نہیں جانتا . لیکن ایشور کی جگہ اگر ایشور محمد ہم بولتے تو مسلمان اسے پسند نہ کرتے یہ میں اچھی طرح جانتا ہوں . بھکتی بھاؤ کے نشے میں گرو کو ایشور کی پدوی دینا ویدک، ویدانتی اور ھندو کلپنا ہے جو شائد عیسائیوں کو پسند نہ آئے . لیکن اگر انہیں وہ پسند آئے تو مجھے اس میں کوئی عذر نہیں . میں ایک بھاوارتھی منش ہوں اور ایشور تتو کے وچار میں دلیل کو کوئی مولیہ نہیں دیتا . میں یسوع اور محمد کو تو کیا، اپنے پتا اور ماتا کو بھی سمپورن پرمیشور مان سکتا ہوں، جبکہ وہ شریر سے مکت ہو چکے ہیں . دیہہ مکت مہاپرش کو جب ہم پرمیشور کا روپ دیتے ہیں تب ہم اُس کے ویکتتو کو مٹا دیتے ہیں . اِتنا دھیان میں رکھنا چاہئے . اگر یہ خطرہ منظور ہے تو خوشی سے یسوع اللہ کہہ سکتے ہیں .

۲۰-۱-۵۱ —پرندھام، پونار

काम सर्वोदय समाज क़ायम करना है जो हिन्दुस्तान में तो चरखा ही कर सकता है.

जवाब २—आश्रम प्रार्थना में अलग अलग धर्मों की प्रार्थनायें किस तरह दाखिल हुईं, इसका ज़िक्र गांधीजी ने बहुत बार किया है इसलिये उसे मैं दुहराना नहीं चाहूँगा. इतना ही कहूँगा कि उनका एक भक्त हृदय था और जो चीज़ सहज भाव में जैसी मिल गई वैसी उन्होंने ले ली. मैंने देखा कि पारसियों का जो मंत्र आश्रम प्रार्थना में बोला जाता है, वह उस धर्म की निगाह से सबसे अच्छा चुनाव भी नहीं है. वह अच्छा तो है, लेकिन पारसियों का ख़ास मंत्र, जिसे हम पारसियों की गायत्री कह सकते हैं, वह है 'अहुनवैर्य' मैंने यह मंत्र परंधाम की प्रार्थना में मराठी पद्य में तरजुमा करके दाखिल कर लिया है. लेकिन बापू ने तो एक दिन डाक्टर गिल्डर सहज ही जो मंत्र बोल गये उसी को चलाया.

क्रिश्चन भाइयों के साथ एक रूप होने के ख़याल से 'लीड काइन्डली लाइट' का गुजराती तरजुमा आश्रम की प्रार्थना में इतवार के दिन बोलने का बापू का रिवाज था. तालीमी संघ की प्रार्थना में ईसाई प्रार्थना रोज़ बोली जाती है और जहाँ ईसाई समाज विशेश है वहाँ ऐसा ही करना चाहिये इतना ही नहीं, बल्कि हम नये सिरे से जहाँ सब मिलकर प्रार्थना का आयोजन करेंगे, वहाँ सब धर्मों के कुछ हिस्से उस प्रार्थना में रहने चाहियें, ऐसा मैं मानता हूँ और परंधाम में मैंने वैसा किया भी है.

کام سرودے سماج قائم کرنا ہے' جو ہندستان میں تو چرخہ ہی کر سکتا ہے .

جواب ۲—آشرم پرارتھنا میں الگ الگ دھرموں کی پرارتھنائیں کس طرح داخل ہوئیں' اسکا ذکر گاندھی جی نے بہت بار کہا ہے إسلئے اُسے میں دہرانا نہیں چاہوں گا . اتنا ہی کہوں گا کہ اُن کا ایک بھکت ہردے تھا اور جو چیز سہج بھاؤ میں جیسی مل گئی ویسی اُنہوں نے لے لی . میں نے دیکھا کہ پارسیوں کا جو منتر آشرم پرارتھنا میں بولا جاتا ہے' وہ اُس دھرم کی نگاہ سے سب سے اچھا چناؤ بھی نہیں ہے . وہ اچھا تو ہے' لیکن پارسیوں کا خاص منتر' جسے ہم پارسیوں کی گایتری کہہ سکتے ہیں' وہ ہے 'اھون ویریہ' میں نے یہ منتر پرندھام کی پرارتھنا میں مراٹھی پدیہ میں ترجمہ کرکے داخل کر لیا ہے . لیکن باپو نے تو ایک دن ڈاکٹر گلڈر سہج ہی جو منتر بول گئے اُسی کو چلایا .

کرشچین بھائیوں کے ساتھ ایک روپ ہونے کے خیال سے 'لیڈ کائنڈلی لائٹ' کا گجراتی ترجمہ آشرم کی پرارتھنا میں اتوار کے دن بولنے کا باپو کا رواج تھا . تعلیمی سنگھ کی پرارتھنا میں عیسائی پرارتھنا روز بولی جاتی ہے اور جہاں عیسائی سماج وشیش ہے وہاں ایسا ہی کرنا چاہئے . اتنا ہی نہیں' بلکہ ہم نئے سرے سے جہاں سب ملکر پرارتھنا کا آیوجن کرینگے' وہاں سب دھرموں کے کچھ حصے اُس پرارتھنا میں رہنے چاہئیں' ایسا میں مانتا ہوں اور پرندھام میں میں نے ویسا کیا بھی ہے .

हिदायत भी सब सेवकों को सर्व सेवा संघ दे चुका है. लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि चरखे को छोड़ कर हम खेती में लग जाँय. जहाँ हम भूक को मिटाना चाहते हैं वहाँ हम नंगे रहने को भी पसंद नहीं करेंगे. खेती किसी न किसी मात्रा में लोग करते ही आए हैं, और उसके खिलाफ़ कोई झगड़ा खड़ा नहीं है. चरखे का उद्योग टूट चुका था. उसको खड़ा करने की कोशिश अगर हम नहीं करते हैं तो और कोई करने वाला नहीं है. इतना ही नहीं, उस के विरोध में मिलों का पुरस्कार करने वाला यन्त्रवाद खड़ा है. उस यन्त्रवाद के खिलाफ़ हमारी जो बग़ावत है, उसकी निशानी चरखा बन जाता है.

परंधाम में हम लोग दिन का ख़ास हिस्सा खेती करने में और कुआँ खोदने में लगाते हैं. उसकी तारीफ़करते हुए एक अख़बार ने लिखा था कि विनोबा ने आज कल चरखा यग्य की जगह खेती यग्य शुरू कर दिया है. हमें उसका प्रतिवाद करना पड़ा. हम अपना दिन का काम चरखे से ही शुरू करते और ख़तम करते हैं. चरखे को हमने कम नहीं किया बल्कि उसे बढ़ाया है क्योंकि कपास से लेकर कपड़ा बुनने तक का सारा काम हर एक घर में घरेलू काम के तौर पर होना चाहिये. ऐसा हमने माना है. और रोज़ क़रीब दो घंटे हम उस में लगाते हैं. चरखे को हमने प्रार्थना में जगह दी है और हमारी उपासना वही है. हाँ, यह ज़रूर है कि हम व्योपारी खादी को अब महत्व नहीं देते. इसका मतलब यह भी नहीं कि बेकारी दूर करने का जो काम चरखे से होता है, उसकी हम क़दर नहीं करते. लेकिन चरखे का वह ख़ास काम नहीं है. उसका ख़ास

ھدایت بھی سب سیوکوں کو سرو سیوا سنگھ دےچکا ھے . لیکن اسکا مطلب یہ نہیں کہ چرخے کو چھوڑ کر ھم کھیتی میں لگ جائیں . جہاں ھم بھوک کو مٹانا چاھتے ھیں وھاں ھم ننگے رھنے کو بھی پسند نہیں کرینگے . کھیتی کسی نہ کسی ماترا میں لوگ کرتے ھی آئے ھیں' اور اُسکے خلاف کوئی جھگڑا کھڑا نہیں ھے . چرخے کا اُدیوگ ٹوٹ چکا تھا . اُسکو کھڑا کرنے کی کوشش اگر ھم نہیں کرتے ھیں تو اور کوئی کرنے والا نہیں ھے . اِتنا ھی نہیں' اُسکے وِرودھ میں ملوں کا پرسکار کرنے والا یلتر واد کھڑا ھے . اُس یلتر واد کے خلاف ھماری جو بغاوت ھے' اُسکی نشانی چرخہ بن جاتا ھے .

پرندھام میں ھم لوگ دن کا خاص حصہ کھیتی کرنے میں اور کنواں کھودنے میں لگاتے ھیں . اُسکی تعریف کرتے ھوئے ایک اخبار نے لکھا تھا کہ ونوبا نے آج کل چرخہ یگیہ کی جگہ کھیتی یگیہ شروع کر دیا ھے . ھمیں اُسکا پرتی واد کرنا پڑا . ھم اپنا دن کا کام چرخے سے ھی شروع کرتے اور ختم کرتے ھیں . چرخے کو ھم نے کم نہیں کیا بلکہ اُسے بڑھایا ھے کیونکہ کپاس سے لیکر کپڑا بننے تک کا سارا کام ھر ایک گھر میں گھریلو کام کے طور پر ھونا چاھئے ایسا ھم نے مانا ھے . اور روز قریب دو گھنٹے ھم اُس میں لگاتے ھیں . چرخے کو ھم نے پرارتھنا میں جگہ دیھے اور ھماری اُپاسنا وھیھے . ھاں' یہ ضرور ھے کہ ھم بیوپاری کھادی کو اب مہتو نہیں دیتے. اِسکا مطلب یہ نہیں کہ بیکاریدور کرنے کا جو کام چرخے سے ھوتاھے' اُسکی ھم قدر نہیں کرتے . لیکن چرخے کا وہ خاص‌کام نہیں ھے. اُسکا خاص

चरखा बनाम खेती व सर्व धर्मी प्रार्थना

(आचार्य विनोबा भावे)

कताई मंडल प्रसारकों ने दो सवाल पूछे हैं. मंगलूर के क्रिश्चन लोगों की तरफ़ से यह सवाल आए हुए हैं.

सवाल १—आज सब लोग कहते हैं कि हमारे देम के लिये प्रधान धंदा खेती का है. तो फिर आप लोग वही क्यों नहीं हाथ में लेते ? चरखा क्यों ?

सवाल २—आश्रम प्रार्थना में मुसलमानों को अपनी तरफ खींचने के लिये क़ुरान शरीफ़ की आयतें ली गई हैं. कुछ बौद्ध और पारसी मन्त्र भी लिये हैं. क्रिश्चन क्यों नहीं ? 'ईश्वर अल्लाह तेरे नाम' की जगह 'यसू अल्लाह तेरे नाम' ऐसा कहना भी आप लोगों को उचित नहीं मालूम होता ?

जवाब १—हिन्दुस्तान की आज की हालत में सर्वोदय सेवकों को खेती की तरफ़ जरूर ध्यान देना चाहिये. इसमें कोई शक नहीं है. मैं तो इन दिनों पूरा किसान बन गया हूँ, यह मेरे मित्र जानते हैं. 'सर्वोदय' में मेरे इन प्रयोगों की कुछ तफ़सील भी दी जाती है. ग्राम सेवा के काम की बुनियाद खेती पर खड़ी की जाय इस तरह की एक

چرخہ بنام کھیتی و سرو دھرمی پرارتھنا

(آچاریہ ونوبا بھاوے)

کتائی منڈل پر سارکوں نے دو سوال پوچھے ھیں . منگلور کے کرشچین لوگوں کی طرف سے یہ سوال آئے ھوئے ھیں .

سوال ۱—آج سب لوگ کہتے ھیں کہ ھمارے دیس کے لئے پردھان دھندا کھیتی کا ھے . تو پھر آپ لوگ وھی کیوں نہیں ھاتھ میں لیتے ؟ چرخہ کیوں ؟

سوال ۲—آشرم پرارتھنا میں مسلمانوں کو اپنی طرف کھینچنے کے لئے قرآن شریف کی آئتیں لی گئی ھیں . کچھ بودھ اور پارسی منتر بھی لئے گئے ھیں . کرشچین کیوں نہیں ؟ 'ایشور اللہ تیرے نام' کی جگہ 'یسوع اللہ تیرے نام' ایسا کہنا بھی آپ لوگوں کو اُچت نہیں معلوم ھوتا ؟

جواب ۱—ھندستان کی آج کی حالت میں سرودیے سیوکوں کو کھیتی کی طرف ضرور دھیان دینا چاھئے . اس میں کوئی شک نہیں ھے . میں تو ان دنوں پورا کسان بن گیا ھوں ' یہ میرے متر جانتے ھیں . 'سرودیے' میں میرے ان پریوگوں کی کچھ تفصیل بھی دی جاتی ھے . گرام سیوا کے کام کی بنیاد کھیتی پر کھڑی کی جائے' اس طرح کی ایک

हमारी भाषा का सही स्वरूप हिन्दुस्तानी है. मुझे संस्कृत से कोई परहेज़ नहीं. मुझे इस में कोई रुकावट नहीं कि नए शब्द संस्कृत से आएँ. लेकिन वह शब्द नक़ली रूप से न आने चाहियें. आजकल हिन्दी ही के प्रेमी हिन्दी को हानि पहुँचा रहे हैं. वह ऐसी हिन्दी बनाना चाहते हैं जिसे चन्द लोग समझ सकें.

हिन्दुस्तानी प्रचार का काम सब तरह से बहुत ज़रूरी है. क्योंकि वह राष्ट्र की माँग है. राष्ट्र भाषा हमारे राष्ट्र को बाँधती है.उसे मज़बूत करती है. हमें राष्ट्र भाषा को तमाम लोगों की भाषा बनाना है, इस लिये उस में नये शब्द लेने वाले भाषा की सेवा करते हैं. आप लोग यहाँ जो काम कर रहे हैं उस से मुझे ख़ुशी है. राष्ट्र भाषा के प्रचार का काम एक ज़रूरी काम है. मैं चाहता हूँ कि आप को इसमें सफलता हासिल हो.

ھماری بھاشا کا صحیح سوروپ ھندستانی ھے . مجھے سنسکرت سے کوئی پرھیز نہیں. مجھے اِس میں کوئی رکاوٹ نہیں کہ نئے شبد سنسکرت سے آئیں . لیکن وہ شبد نقلی روپ سے نہ آنے چاھئیں . آج کل ھندی ھی کے پریمی ھندی کو ھانی پہنچا رھے ھیں . وہ ایسی ھندی بنانا چاھتے ھیں جسے چند لوگ سمجھ سکیں .

ھندستانی پرچار کا کام سب طرح سے بہت ضروری ھے' کیونکہ وہ راشٹر کی مانگ ھے . راشٹر بھاشا ھمارے راشٹر کو باندھتی ھے' اُسے مضبوط کرتی ھے . ھمیں راشٹر بھاشا کو تمام لوگوں کی بھاشا بنانا ھے' اِس لئے اُس میں نئے شبد لینے والے بھاشا کی سیوا کرتے ھیں . آپ لوگ یہاں جو کام کر رھے ھیں اُس سے مجھے خوشی ھے . راشٹر بھاشا کے پرچار کا کام ایک ضروری کام ھے میں چاھتا ھوں کہ آپکو اس میں سپھلتا حاصل ھو .

होने लगी है, जो आसानी से मेरी समझ में भी नहीं आती. वहाँ अब शुद्ध हिन्दी भाशा बोलने का प्रयत्न हो रहा है. कई लोग यह समझते हैं कि हिन्दी ऐसी होनी चाहिये जिस में बाहर के शब्द न आएँ. यह ग़लत तरीक़ा है. अंगरेज़ी भाशा दुनिया की बड़ी भाशाओं में एक है. वह ताक़तवर भाशा है. आपको जान कर अचरज होगा कि हर साल उस में थोड़े नहीं, कई हज़ार नए शब्द बढ़ जाते हैं. मैं अहमदनगर के क़िले में था. उस वक़्त मेरे पास काफ़ी समय था. एक दफ़ा मैं अंगरेज़ी डिक्शनरी लेकर बैठ गया और अपने देस के लफ़्ज़ों की फ़ेहरिस्त बनाने लगा. पचास साठ सफ़े ही देखे थे कि सैकड़ों की फ़ेहरिस्त हो गई. हमारे बहुत से शब्दों को लेकर उन्होंने अपने कपड़े पहना दिये हैं. वह भाशा कमज़ोर हो जाती है, जो नये शब्द नहीं लेती. जो भाशा नये शब्द लेकर उन्हें अपने कपड़े पहनाती है. वह भाशा ज़िन्दा रहती है लेकिन नये शब्द भी ज़िन्दा और जीवित रहने चाहियें. भाशा के दरवाज़े हमेशा खुले रहने चाहियें. हाल ही में दिल्ली के पेशावर लोगों के पेशों के शब्दों की जाँच कराई गई, तो मालूम हुआ कि उन्होंने अपने काम के ख़याल से जो शब्द बनाए हैं, वह बहुत उचित और अर्थपूर्ण हैं.

हम अंगरेज़ी भाशा के शब्द क्यों न लें. रेलवे या स्टेशन के लिये महाराष्ट्र में लम्बे लम्बे शब्द निकाले गए हैं. यह बात भाशा को मारने की है. क्या भाशा कोई तमाशा है ? रूसी, चीनी, अरबी फ़ारसी कोई भी भाशा हो, जिस से हम नये शब्द ले सकें, लेने चाहियें. नये शब्द लेने से भाशा की दौलत बढ़ती है.

ہونے لگی ہے، جو آسانی سے میری سمجھ میں بھی نہیں آتی۔ وہاں اب شدھ ہندی بھاشا بولنے کا پریتن ہو رہا ہے ۔ کئی لوگ یہ سمجھتے ہیں کہ ہندی ایسی ہونی چاہئے جس میں باہر کے شبد نہ آئیں ۔ یہ غلط طریقہ ہے ۔ انگریزی بھاشا دنیا کی بڑی بھاشاؤں میں ایک ہے ۔ وہ طاقتور بھاشا ہے ۔ آپ کو جان کر اچرج ہوگا کہ ہر سال اُس میں تھوڑے نہیں، کئی ہزار نئے شبد بڑھ جاتے ہیں ۔ میں احمد نگر کے قلعے میں تھا، اُس وقت میرے پاس کافی سمے تھا ۔ ایک دفعہ میں انگریزی ڈکشنری لے کر بیٹھ گیا اور اپنے دیس کے لفظوں کی فہرست بنانے لگا ۔ پچاس ساٹھ صفحے ہی دیکھے تھے کہ سیکڑوں کی فہرست ہوگئی ۔ ہمارے بہت سے شبدوں کو لے کر اُنھوں نے اپنے کپڑے پہنا دیئے ہیں ۔ وہ بھاشا کمزور ہوجاتی ہے، جو نئے شبد نہیں لیتی ۔ جو بھاشا نئے شبد لے کر اُنھیں اپنے کپڑے پہناتی ہے، وہ بھاشا زندہ رہتی ہے ۔ لیکن نئے شبد بھی زندہ اور جیوت رہنے چاہئیں بھاشا کے دروازے ہمیشہ کھلے رہنے چاہئیں ۔ حال ہی میں دلی کے پیشہ ور لوگوں کے پیشوں کے شبدوں کی جانچ کرائی گئی، تو معلوم ہوا کہ اُنہوں نے اپنے کام کے خیال سے جو شبد بنائے ہیں وہ بہت اُچت اور ارتھ پورن ہیں ۔

ہم انگریزی بھاشا کے شبد کیوں نہ لیں ۔ ریلوے یا اسٹیشن کے لئے مہاراشٹر میں لمبے لمبے شبد نکالے گئے ہیں ۔ یہ بات بھاشا کو مارنے کی ہے ۔ کیا بھاشا کوئی تماشا ہے ؟ روسی، چینی، عربی، فارسی کوئی بھی بھاشا ہو، جس سے ہم نئے شبد لے سکیں، لینے چاہئیں ۔ نئے شبد لینے سے بھاشا کی دولت بڑھتی ہے ۔

में ही लिखी न्दी अभी तक एक देहाती भाषा समझी जाती है. मगर अब ऐसा समझने से काम नहीं चलेगा. देस के सब लोग अंगरेज़ी नहीं सीख सकते. संस्कृत, फ़ारसी और अंगरेज़ी के होते हुए भी हिन्दी हिन्दुस्तानी तो रही ही और तमाम लोगों का काम इसी भाषा से चलता रहा है.

हमारे देस में आज नौ दस बढ़ती हुई भाषाएं हैं जैसे गुजराती, मराठी, बंगाली, तामिल वग़ैरा. गुजराती भी एक अच्छी भाषा है. उस में बढ़िया साहित्य भी है. आपकी शिक्षा गुजराती के ज़रिये ही होगी. लेकिन फिर भी यह ज़रूरी है कि सारे देस की एक भाषा हो. वह सिर्फ़ हिन्दी हिन्दुस्तानी ही हो सकती है. चाहे हम उसे हिन्दी कहें या हिन्दुस्तानी कहें.

महात्मा जी ने देस के कितने ही सवाल हाथ में लिये. जिस सवाल को वह ज़रूरी समझते थे उसके पीछे जुट जाते थे. बापू ने बहुत से कामों में ध्यान दिया और काम करने वालों को आगे बढ़ाया. एक बार मैंने इन कामों की फ़हरिस्त बनाई. बहुत लम्बी फ़हरिस्त बनी.

बापू ने हिन्दी हिन्दुस्तानी का सवाल भी उठाया, देस की शक्ति बढ़ाने के लिये, जनता में जाग्रति लाने के लिये. वह कहते थे कि हमें ऐसी भाषा बनानी है जो पढ़े लिखे लोगों की न हो मगर आम लोगों की हो.

मैं उत्तरप्रदेश में जाता हूँ और वहाँ जो कुछ कहता हूँ, उसे लोग आसानी से समझ लेते हैं. यही सच्ची भाषा है. लेकिन अब वहाँ ख़ासकर लैजिस्लेचर में और पढ़े लिखे लोगों की ऐसी बोली

میں ھی لکھیں . ھندی ابھی تک ایک دیہاتی بھاشا سمجھی جاتی ھے . مگر اب ایسا سمجھنے سے کام نہیں چلے گا . دیس کے سب لوگ انگریزی نہیں سیکھ سکتے . سنسکرت' فارسی اور انگریزی کے ھوتے ھوئے بھی ھندی ھندستانی تو رھی ھی اور تمام لوگوں کا کام اسی بھاشا سے چلتا رھا ھے .

ھمارے دیس میں آج نو دس بڑھتی ھوئی بھاشائیں ھیں جیسے گجراتی' مراٹھی' بنگالی' تامل وغیرہ . گجراتی بھی ایک اچھی بھاشا ھے . اس میں بڑھیا ساھتیہ بھی ھے . آپ کی شکشا گجراتی کے ذریعے ھی ھوگی . لیکن پھر بھی یہ ضروری ھے کہ سارے دیس کی ایک بھاشا ھو . وہ صرف ھندی ھندستانی ھی ھوسکتی ھے . چاھے ھم اُسے ھندی کہیں یا ھندستانی کہیں .

مہاتما جی نے دیس کے کتنے ھی سوال ھاتھ میں لئے . جس سوال کو وہ ضروری سمجھتے تھے اُسکے پیچھے جٹ جاتے تھے . باپو نے بہت سے کاموں میں دھیان دیا اور کام کرنے والوں کو آگے بڑھایا . ایک بار میں نے اِن کاموں کی فہرست بنائی . بہت لمبی فہرست بنی .

باپو نے ھندی ھندستانی کا سوال بھی اُٹھایا' دیس کی شکتی بڑھانے کے لئے' جنتا میں جاگرتی لانے کے لئے وہ کہتے تھے کہ ھمیں ایسی بھاشا بنانی ھے جو پڑھے لکھے لوگوں کی نہ ھو مگر عام لوگوں کی ھو .

میں اُتر پردیش میں جاتا ھوں اور وھاں جو کچھ کہتا ھوں' اُسے لوگ آسانی سے سمجھ لیتے ھیں . یہی سچی بھاشا ھے . لیکن اب وھاں خاصکر لیجسلیچر میں اور پڑھے لکھے لوگوں کی ایسی بولی

उत्तर प्रदेश हिन्दी का वतन है. इसलिये वहां ऐसी भाषा बनाई जाय जो आम लोगों की भाषा हो यह बात ठीक है कि उत्तर प्रदेश में हिन्दी और उर्दू दोनों भाषायें हैं. दोनों भाषाओं के आसान लफ़्ज़ों से हिन्दुस्तानी भाषा बनी है.

आज लोग कहते हैं कि उर्दू पाकिस्तान की भाषा है. वह मुसलमानों की ज़बान है. मगर यह उनकी ग़लतफ़हमी है. उर्दू तो हमारे ही देस की भाषा है. उत्तर प्रदेश में वह बढ़ी और ख़ासकर यू. पी., बिहार, पंजाब और राजस्थान में पली. उत्तर प्रदेश के लोग सही उर्दू बोलते हैं. पाकिस्तान वाले सही उर्दू बोल भी नहीं सकते. हां, वहां जो लोग उत्तर प्रदेश से अब गये हैं वह ज़रूर सही उर्दू बोलते हैं. हमें अपने दिल से यह ख़याल निकाल देना चाहिये कि उर्दू परदेसी भाषा है. दिल्ली और लखनऊ उर्दू ज़बान के मरकज़ हैं. हां, यह बात सही है कि मुगलराज के ज़माने में उर्दू में फ़ारसी के शब्द अधिक आ गए.

भाषा कैसे बनती है? वह ऊपर से ज़बरदस्ती नहीं लादी जा सकती, न वह क़ानून के ज़रिये बनाई जा सकती है हाँ. पढ़ाई से हम उस पर कुछ असर डाल सकते हैं लेकिन आख़िर में तो जनता जो भाषा बोलती है और लिखती है, उसी से भाषा बनती है. पढ़े [illegible] आदमी भाषा पर कुछ असर डालते हैं. तुलसीदास के पहले [illegible] में लिखते थे. मुग़ल राज के ज़माने में संस्कृत छूटने [illegible]. हमारे ज़माने में लोग अब अंगरेज़ी में [illegible]

اُتر پردیش ھندی کا وطن ھے۔ اِسلئے وھاں ایسی بھاشا بنائی جائے جو عام لوگوں کی بھاشا ھو۔ یہ بات ٹھیک ھے کہ اُتر پردیش میں ھندی اور اُردو دونوں بھاشائیں ھیں۔ دونوں بھاشاؤں کے آسان لفظوں سے ھندستانی بھاشا بنی ھے

آج لوگ کہتے ھیں کہ اُردو پاکستان کی بھاشا ھے۔ وہ مسلمانوں کی زبان ھے۔ مگر یہ اُنکی غلط فہمی ھے۔ اُردو تو ھمارے ھی دیس کی بھاشا ھے۔ اُتر پردیش میں وہ بڑھی اور خاص کر یو پی، بہار، پنجاب اور راجستھان میں پلی۔ اُتر پردیش کے لوگ صحیح اُردو بولتے ھیں۔ پاکستان والے صحیح اُردو بول بھی نہیں سکتے۔ ھاں، وھاں جو لوگ اُتر پردیش سے اب گئے ھیں وہ ضرور صحیح اُردو بولتے ھیں۔ ھمیں اپنے دل سے یہ خیال نکال دینا چاھئے کہ اُردو پردیسی بھاشا ھے۔ دلی اور لکھنؤ اُردو زبان کے مرکز ھیں۔ ھاں، یہ بات صحیح ھے کہ مغل راج کے زمانے میں اُردو میں فارسی کے شبد ادھک آئے۔

بھاشا کیسے بنتی ھے؟ وہ اوپر سے زبردستی نہیں لادی جا سکتی، نہ وہ قانون کے ذریعے بنائی جاسکتی ھے۔ ھاں، پڑھائی سے ھم اُس پر کچھ اثر ڈال سکتے ھیں لیکن آخر میں تو جنتا جو بھاشا بولتی ھے اور لکھتی ھے، اُسی سے بھاشا بنتی ھے۔ پڑھے لکھے آدمی بھاشا پر کچھ اثر ڈالتے ھیں۔ تلسی داس کے پہلے لوگ سنسکرت میں لکھتے تھے۔ مغل راج کے زمانے میں سنسکرت چھوٹنے لگی اور فارسی شروع ھوئی۔ ھمارے زمانے میں لوگ اب انگریزی میں لکھتے ھیں۔ میں نے یہ تو [illegible]

एक शैली है, काफ़ी मदद लेनी है. इस बात को हमें न भूलना चाहिये. हम चाहते हैं कि 'उर्दू' में जो विशाल उपयोगी साहित्य पड़ा है, उसको नागरी लिपि में लाया जाय. विद्यापीठ यह काम शुरू करना चाहती है.

एक बात और है. जो हम महसूस करते हैं. वह यह है कि दिल्ली और उत्तर प्रदेश वग़ैरा हिन्दी और उर्दू के वतन हैं. वहां के लोग अगर एक मिली जुली शैली पैदा करें, जो आसान हो और जिसे जनता समझ सके तो यह देश पर बड़ा ही एहसान होगा. प्रजातंत्र तब ही चल सकता है, जब देस की समस्यायें ऐसी भाशा में समझाई जाएँ, जिसे लोग समझ सकें. अब हिन्दी प्रचार का काम सब सूबों में होगा और वह भी हिन्दी के विकास में हाथ बटाएँगे. अगर उत्तर मे एक सरल शैली पैदा की गई तो ग़ैर हिन्दी प्रान्तों में हिन्दी प्रचार करने में बड़ी सहायता होगी.

माननीय पंडित जी, इन चंद शब्दों में हमने अपने काम की रूपरेखा आपको बताई. इसके लिये आपका समय लिया, इसकी आपसे माफ़ी चाहता हूं. आप कृपा करके इस बड़े अहम काम में हमें रास्ता बताएं और फ़रमाएं कि किस ढंग से इस काम को आगे बढ़ाया जाय.

श्री जवाहरलाल जी का भाशन

हिन्दुस्तानी प्रचार के सिलसिले में कई बातें उठती हैं. हिन्दुस्तानी क्या है ? इसका स्वरूप क्या है ? और उसका प्रचार कैसे हो ? इन बातों में आज काफ़ी बहस उठती है. आपने कहा है कि चूँकि

ایک شیلی ھے کافی مدد لینی ھے اِس بات کو ھمیں نہ بھولنا چاھئے. ھم چاھتے ھیں کہ 'اردو' میں جو وشال اُپیوگی ساھتیہ پڑا ھے، اُس کو ناگری لپی میں لایا جائے. ودیا پیٹھ یہ کام شروع کرنا چاھتی ھے.

ایک بات اور ھے. جو ھم محسوس کرتے ھیں. وہ یہ ھے کہ دلی اور اُتر پردیش وغیرہ ھندی اور اردو کے وطن ھیں. وھاں کے لوگ اگر ایک ملی جلی شیلی پیدا کریں جو آسان ھو اور جسے جنتا سمجھ سکے تو یہ دیس پر بڑا ھی احسان ھوگا. پرجا تنتر تب ھی چل سکتا ھے. جب دیس کی سمسیائیں ایسی بھاشا میں سمجھائی جائیں. جسے لوگ سمجھ سکیں. اب ھندی پرچار کا کام سب صوبوں میں ھوگا اور وہ بھی ھندی کے وکاس میں ھاتھ بٹائیں گے اگر اُتر میں ایک سرل شیلی پیدا کی گئی تو غیر ھندی پرانتوں میں ھندی پرچار کرنے میں بڑی سہایتا ھوگی.

مانیہ پنڈت جی. اِن چند شبدوں میں ھم نے اپنے کام کی روپ ریکھا آپ کو بتائی. اِسکے لئے آپ کا سمے لیا. اسکی آپ سے معافی چاھتا ھوں. آپ کرپا کر کے اِس بڑے اھم کام میں ھمیں راستہ بتائیں اور فرمائیں کہ کس ڈھنگ سے اِس کام کو آگے بڑھایا جائے.

شری جواھر لال جی کا بھاشن

ھندستانی پرچار کے سلسلے میں کئی باتیں اُٹھتی ھیں. ھندستانی کیا ھے؟ اُسکا سوروپ کیا ھے؟ اور اُسکا پرچار کیسے ھو؟ اِن باتوں میں آج کافی بحث اُٹھتی ھے. آپ نے کہا ھے کہ چونکہ

दिया. मगर जब 'हिन्दी' का अर्थ संकुचित हो गया. तो उन्हों ने राष्ट्र भाषा का नाम हिन्दी से बदल कर हिन्दुस्तानी कर दिया. पर इस काम की बुनियाद, भूमिका और सिद्धांत में किसी तरह का फेर न हुआ.

गुजरात में यह काम उन्होंने गुजरात विद्यापीठ कायम करके शुरू किया. तब से आज तक हम यह काम अपनी शक्ति के अनुसार करते आए हैं. इसकी तफ़सील में जाकर यहाँ सभा का समय लेना ठीक नहीं.

हमारी विधान सभा ने राजभाषा के बारे में ठहराव पास करके इस सवाल को हल करने में अच्छी मदद पहुँचाई.

हमें इस बात की खुशी है कि बापू ने राष्ट्र भाषा के जो बुनियादी उसूल बनाए थे. उनको ही विधान सभा ने मंज़ूर किया और सेक्शन ३५ में 'हिन्दुस्तानी' शब्द का ज़िक्र करके उसको राज भाषा के लिये अपनाया लेकिन नाम 'हिन्दी' रखने से काफ़ी ग़लत-फ़हमी और बुद्धि भेद पैदा किया जा रहा है. और ऐसी संकुचित हिन्दी का प्रचार किया जा रहा है. जो सेक्शन ३५ में बताई हुई 'हिन्दी' के अनुसार नहीं है यह एक बड़ा खतरा है. बापू ने और आपने हमें ठीक ही कहा है कि अंत में राष्ट्रभाषा राष्ट्र के लोग ही बनाएँगे. लेकिन फिर भी पढ़े लिखों के भावों का और प्रचार का असर लोगों पर पड़ता ही है.

राजभाषा के (हिन्दी) के विकास में दूसरी प्रान्ती भाषाओं की सहायता के अलावा उर्दू से, जो वास्तव में विशाल हिन्दी की

دیا . مگر جب 'ہندی' کا ارتھ سنکچت ہو گیا تو اُنھوں نے راشٹر بھاشا کا نام ہندی سے بدل کر ہندستانی کر دیا . پر اِس کام کی بنیاد، بھومیکا اور سدھانت میں کسی طرح کا پھیر نہ ہوا .

گجرات میں یہ کام اُنھوں نے گجرات ودیا پیٹھ قائم کر کے شروع کیا . تب سے آج تک ہم یہ کام اپنی شکتی کے انوسار کرتے آئے ہیں . اِس کی تفصیل میں جا کر یہاں سبھا کا سمے لینا ٹھیک نہیں .

ہماری ودھان سبھا نے راج بھاشا کے بارے میں ٹھہراؤ پاس کر کے اِس سوال کو حل کرنے میں اچھی مدد پہنچائی . ہمیں اس بات کی خوشی ہے کہ باپو نے راشٹر بھاشا کے جو بنیادی اُصول بنائے تھے اُنکو ہی ودھان سبھا نے منظور کیا اور سکشن ۳۵ میں 'ہندستانی' شبد کا ذکر کر کے اُسکو راج بھاشا کے لئے اپنایا . لیکن نام 'ہندی' رکھنے سے کافی غلط فہمی اور بدھی بھید پیدا کیا جا رہا ہے . اور ایسی سنکچت ہندی کا پرچار کیا جا رہا ہے جو سکشن ۳۵ میں بتائی ہوئی 'ہندی' کے انوسار نہیں ہے یہ ایک بڑا خطرہ ہے . باپو نے اور آپ نے ہمیں ٹھیک ہی کہا ہے کہ انت میں راشٹر بھاشا راشٹر کے لوگ ہی بنائینگے لیکن پھر بھی پڑھے لکھوں کے بھاوں کا اور پرچار کا اثر لوگوں پر پڑتا ہی ہے .

راج بھاشا کے (ہندی کے) وکاس میں دوسری پرانتی بھاشاؤں کی سہایتا کے علاوہ اُردو سے، جو واستو میں وشال ہندی کی

राष्ट्र भाषा हिन्दी का स्वरूप

श्री मगन भाई देसाई ने गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद की तरफ से श्री जवाहरलाल जी से प्रार्थना की थी कि जब वह कुल हिन्द कांग्रेस कमेटी की बैठक में अहमदाबाद आएं, तब राष्ट्र भाषा हिन्दी के काम करने वालों और उसके प्रचार में दिलचस्पी लेने वालों को मिलने का मौका दें और उनको राह दिखाएं.

३१ जनवरी सन ५१ को शाम के सात बजे यह सभा हुई श्री जवाहरलाल जी का स्वागत करते हुए श्री मगन भाई ने कहा—

माननीय जवाहर लाल जी,

आपका हम पर बहुत ही अनुग्रह है कि आपके सिर पर बड़े कामों का इतना बोझ होते हुए भी आपने हमारी प्रार्थना स्वीकार कर ली और समय निकाल कर यहाँ पधारे. इस से पता चलता है कि आपको इस काम से कितना प्रेम है और इसको आप कितना अहम और जरूरी समझते हैं. बापू ने राष्ट्र भाषा के बारे में अपने विचार 'हिन्द स्वराज्य' में प्रकट किये और दक्खिन अफ्रीका से वापस आते ही उन्होंने राष्ट्र भाषा के प्रचार का काम हमारे यहाँ शुरू कर दिया और अपने आखिर समय तक करते रहे [illegible] ने हिन्दी नाम

راشٹر بھاشا ھندی کا سوروپ

شری مگن بھائی دیسائی نے گجرات ودیا پیٹھ احمدآباد کی طرف سے شری جواھر لال جی سے پرارتھنا کی تھی کہ جب وہ کل ھند کانگریس کمیٹی کی بیٹھک میں احمدآباد آئیں، تب راشٹر بھاشا ھندی کے کام کرنے والوں اور اسکے پرچار میں دلچسپی لینے والوں کو ملنے کا موقع دیں اور اُن کو راہ دکھائیں

۳۱ جنوری سن ۵۱ کو شام کے ۷ بجے یہ سبھا ہوئی ۔ شری جواھر لال جی کا سواگت کرتے ہوئے شری مگن بھائی نے کہا—

مانئیہ جواھر لال جی،

آپ کا ھم پر بہت ھی انوگرہ ہے کہ آپ کے سر پر بڑے کاموں کا اتنا بوجھ ہوتے ہوئے بھی آپ نے ھماری پرارتھنا سویکار کرلی اور سمے نکالکر یہاں پدھارے ۔ اِس سے پتہ چلتا ھے کہ آپکو اِس کام سے کتنا پریم ھے اور اِسکو آپ کتنا اھم اور ضروری سمجھتے ھیں ۔ باپو نے راشٹر بھاشا کے بارے میں اپنے وچار 'ھند سوراج' میں پرکٹ کئے اور دکھن افریقا سے واپس آتے ھی اُنھوں نے راشٹر بھاشا کے پرچار کا کام ھمارے یہاں شروع کر دیا اور اپنے آخر سمے تک کرتے رھے ۔ باپو نے شروع میں راشٹر بھاشا کو ھندی نام

हम लोग अन्दर नहीं थे. लेकिन अब हम क्या करें ? मरम्मत करना असम्भव है. बिलडिंग की कोई नींव ही बाक़ी नहीं है. और एक दूसरा स्कूल खड़ा करना बड़ा काम है !!

—अनुवादक, मुजीब रिज़वी

ھم لوگ اندر نہیں تھے لیکن اب ھم کیا کریں ؟ مرمت کرنا اسمبھو ھے' بلڈنگ کی کوئی نیو ھی باقی نہیں ھے اور ایک دوسرا اسکول کھڑا کرنا بڑا کام ھے !!

انوادک منجیب رضوی

छै दलिया खाकर आए थे. और सोलह को तेल चुपड़ी रोटी मिली थी. दो लड़कों की माएँ बाहर थीं इसलिये वह भूके ही स्कूल आ गए और बाक़ी ने नमक प्याज़ से पेट भरा था.

अप्रैल आते आते गोदाम खाली होने लगता है. आटा तक ख़तम हो जाता है. लोग बाग दोनों वक़्त मिठाई और दलिया खाते हैं. अप्रैल की पहली तारीख़ को बारह लड़कों ने कुछ भी नहीं खाया था, ग्यारह सूखी रोटी खा कर आए थे और सात को दलिया मिला था. रात को घुँघनी के अलावा किसी को कुछ न मिल सका. जब मैं "दलिया" कहता हूँ तो यह न समझिये कि यह कोई अच्छी और शक्ति देने वाली चीज़ है. जो चीज़ यहाँ दलिया कहलाता है वह सूखी घास को पीस कर बनाया जाता है.

स्कूल का भी अन्त हो गया

पाँच साल पहले स्कूल बना था. लड़कों के घरौंदे और इस स्कूल की बिलडिंग में ज़रा सा ही अन्तर था. बारिश मिट्टी की दीवार को बहा ले गई और दरवाज़े और खिड़कियाँ ज़मीन पर आ रहीं. बड़ी कठिनाई से हम इस घरौंदे में पढ़ाई कर रहे थे.

एक सनीचर को मेरी माँ बीमार हो गई और मैं दो रोज़ के लिये अपने गाँव चला गया. लौट कर देखा कि स्कूल खंडहर हो गया है. किसानों ने मुझे बताया कि पानी ने इसको गिरा दिया. मैंने एक टूटी ईंट उठाई पर हाथ में वह इस तरह घुल गई जैसे कि आटे का ख़मीर. ख़ुशी इस बात की थी कि स्कूल गिरते समय

چھ دلیا کھا کر آئے تھے اور سولہ کو تیل چپڑی روٹی ملی تھی . دو لڑکوں کی مائیں باہر تھیں اس لئے وہ بھوکے ہی اسکول آگئے اور باقی نے نمک پیاز سے پیٹ بھرا تھا .

اپریل آتے آتے گودام خالی ہونے لگتا ہے آٹا تک ختم ہو جاتا ہے . لوگ باگ دونوں وقت مٹھائی اور دلیا کھاتے ہیں اپریل کی پہلی تاریخ کو بارہ لڑکوں نے کچھ بھی نہیں کھایا تھا، گیارہ سوکھی روٹی کھا کر آئے تھے اور سات کو دلیا ملا تھا . رات کو گھنگھنی کے علاوہ کسی کو کچھ نہ مل سکا . جب میں "دلیا" کہتا ہوں تو یہ نہ سمجھئے کہ یہ کوئی اچھی اور شکتی دینے والی چیز ہے . جو چیز یہاں دلیا کہلاتا ہے وہ سوکھی گھاس کو پیس کر بنایا جاتا ہے .

اسکول کا بھی انت ہو گیا

پانچ سال پہلے اسکول بنا تھا . لڑکوں کے گھروندے اور اس اسکول کی بلڈنگ میں ذرا سا ہی انتر تھا بارش مٹی کی دیوار کو بہا لے گئی اور دروازے اور کھڑکیاں زمین پر آ رہیں بڑی کٹھنائی سے ہم اس گھروندے میں پڑھائی کر رہے تھے .

ایک سنیچر کو میری ماں بیمار ہو گئی اور میں دو روز کے لئے اپنے گاؤں چلا گیا . لوٹ کر دیکھا کہ اسکول کھنڈر ہو گیا ہے . کسانوں نے مجھے بتایا کہ پانی نے اسکو گرا دیا . میں نے ایک ٹوٹی اینٹ اٹھائی پر ہاتھ میں وہ اسطرح گھل گئی جیسے کہ آٹے کا خمیر . خوشی اس بات کی تھی کہ اسکول گرتے سمے

मैंने हिसाब लगाया है कि गरमी में जो ९० फ़ी सदी लड़के मरते हैं उसकी वजह पेचिश होती है. जैसे ही किसी बच्चे को यह रोग लिपटा फिर बचने की उम्मेद नहीं होती. कुछ भी हो इस सब का बुनियादी कारन भुकमरी और ग़रीबी है.

बच्चों का खाना

बच्चों की आँखों से जीवन ग़ायब होता है और मुखड़ा पीला. वह दुबले पतले और दुखी होते हैं. बच्चों को मोटा ताज़ा सुर्ख़ और तन्दुरुस्त होना चाहिये. ऐसे बच्चे कहाँ मिल सकते हैं? यह बच्चे तो अभी दस साल के भी नहीं हैं और दुखी हैं.

अपने चेलों को घर पर मिलने वाले खाने के बारे में मैंने पूछ ताछ की. मेरी जाँच के यह नतीजे हैं—दूसरे दरजे में मेरे तीस विद्यार्थी हैं और मैंने उनके खाने के बारे में तीन बार जाँच की— अक्तूबर, जनवरी और अप्रैल. इस तरह मुझे पता चला कि वह सितम्बर, अक्तूबर, जाड़े और मार्च अप्रैल में क्या खाते हैं. अक्तूबर की ९ तारीख़ को सनीचर के दिन पढ़ाना ख़तम करके मैंने एक के बाद दूसरे बच्चे से सवाल किया. उस दिन बीस भूके थे. किसी तरह का भी खाना खाए बिना स्कूल आए थे. दस ने केवल सूखी रोटी खाई थी. हाँ, ११ अक्तूबर को सारे लड़के रोटी खाकर आए थे और ऊपर से उन्होंने तरबूज़ भी खाया था

मैंने दूसरी जाँच २० जनवरी को जुमेरात के दिन रात के खाने के बाद की. चार लड़के बिना माँस का शोरबा पी कर आए थे.

میں نے حساب لگایا ہے کہ گرمی میں جو ۹۰ فیصدی لڑکے مرتے ہیں اُس کی وجہ پیچش ہوتی ہے ۔ جیسے ہی کسی بچے کو یہ روگ لپٹا پھر بچنے کی اُمید نہیں ہوتی ۔ کچھ بھی ہو اس سب کا بنیادی کارن بھکمری اور غریبی ہے ۔

بچوں کا کھانا

بچوں کی آنکھوں سے جیون غائب ہوتا ہے اور مکھڑا پیلا ۔ وہ دبلے پتلے اور دکھی ہوتے ہیں ۔ بچوں کو موٹا تازہ سرخ اور تندرست ہونا چاہئیے ایسے بچے کہاں مل سکتے ہیں ؟ یہ بچے تو ابھی دس سال کے بھی نہیں ہیں اور دکھی ہیں ۔

اپنے چیلوں کو گھر پر ملنے والے کھانے کے بارے میں میں نے پوچھ تاچھ کی ۔ میری جانچ کے یہ نتیجے ہیں—دوسرے درجے میں میرے تیس ودیارتھی ہیں اور میں نے اُن کے کھانے کے بارے میں تین بار جانچ کی—اکتوبر، جنوری اور اپریل ۔ اس طرح مجھے پتہ چلا کہ وہ ستمبر اکتوبر جاڑے اور مارچ اپریل میں کیا کھاتے ہیں ۔ اکتوبر کی ۹ تاریخ کو سنیچر کے دن پڑھانا ختم کر کے میں نے ایک کے بعد دوسرے بچے سے سوال کیا ۔ اُس دن بیس بھوکے تھے ۔ کسی طرح کا بھی کھانا کھائے بنا اسکول آئے تھے ۔ دس نے کیول سوکھی روٹی کھائی تھی ۔ ہاں ۱۱ اکتوبر کو سارے لڑکے روٹی کھا کر آئے تھے اور اوپر سے اُنہوں نے تربوز بھی کھایا تھا ۔

میں نے دوسری جانچ ۲۰ جنوری کو جمعرات کے دن رات کے کھانے کے بعد کی ۔ چار لڑکے بنا ماس کا شوربا پی کر آئے تھے ۔

जन्म और मरन

अपने तजरबे और उन खबरों से जो गाँव के बड़े बूढ़ों से मैं इकट्ठा कर सका, मैंने जन्म और मरन का एक ब्योरा तैयार किया. (न) गाँव का भी जहाँ मैं पढ़ाता हूँ और (द) गाँव का भी जहाँ मैं पैदा हुआ. मेरी लिस्ट में हर घर के बड़े बूढ़े का नाम भी लिखा है. पर नाम जाहिर करने में कोई तुक नहीं है.

(द) गाव में ३५० घर हैं. २२६ बच्चे चार साल में पैदा हुए और इसी बीच में १३४ मर गए. इस तरह गाँव की आबादी चार साल में ९२ फ़ी सदी बढ़ गई. ज्यादातर बच्चे एक साल की उमर पूरी करते करते मर गए, बहुत से सोहर में ही चल बसे बाक़ी जन्म के पहले महीने में ही खतम हो गए सारी मौतों का कारन था बच्चों की ठीक से देख भाल न होना.

(न) गाँव में १३५ घर और ७०८ बासी हैं. चार साल में ९१ घरों में १६३ बच्चे पैदा हुए और उनमें से ६७ मर गये. इस के अलावा इसी बीच ४० नौजवान भी मर गए. दूसरे शब्दों में इस गाँव में १६७ पैदा हुए और १०७ मर गए. इस तरह ५६ फ़ी सदी आबादी इस गाँव की बढ़ गई. तुरकी के गाँव में पैदा होने की गिनती बहुत तेज है. अगर महामारी न फैले तो बुरी से बुरी हालत में भी कुछ न कुछ आबादी बढ़ती ही है.

गाँव के लोग बच्चों की देख भाल के बारे में ज़रा भी नहीं जानते. इस बारे में अगर वह कुछ जानकारी रखते भी हैं तो कठिन जीवन उन्हें समय नहीं देता कि उस जानकारी का अच्छा उपयोग कर सकें.

جنم اور مرن

اپنے تجربے اور ان خبروں سے جو گاؤں کے بڑے بوڑھوں سے میں اکٹھا کر سکا، میں نے جنم اور مرن کا ایک بیورا تیار کیا۔ (ن) گاؤں کا بھی جہاں میں پڑھاتا ہوں اور (د) گاؤں کا بھی جہاں میں پیدا ہوا۔ میری لسٹ میں ہر گھر کے بڑے بوڑھے کا نام بھی لکھا ہے پر نام ظاہر کرنے میں کوئی تک نہیں ہے۔

(د) گاؤں میں ۳۵۰ گھر ہیں۔ ۲۲۶ بچے چار سال میں پیدا ہوئے اور اسی بیچ میں ۱۳۴ مر گئے۔ اس طرح گاؤں کی آبادی چار سال میں ۹۲ فیصدی بڑھ گئی۔ زیادہ تر بچے ایک سال کی عمر پوری کرتے کرتے مر گئے، بہت سے سوہر میں ہی چل بسے باقی جنم کے پہلے مہینے میں ہی ختم ہو گئے۔ ساری موتوں کا کارن تھا بچوں کی ٹھیک سے دیکھ بھال نہ ہونا۔

(ن) گاؤں میں ۱۳۵ گھر اور ۷۰۸ واسی ہیں۔ چار سال میں ۹۱ گھروں میں ۱۶۳ بچے پیدا ہوئے اور ان میں سے ۶۷ مر گئے۔ اس کے علاوہ اسی بیچ ۴۰ نوجوان بھی مر گئے۔ دوسرے شبدوں میں اس گاؤں میں ۱۶۷ پیدا ہوئے اور ۱۰۷ مر گئے۔ اس طرح ۵۶ فیصدی آبادی اس گاؤں کی بڑھ گئی۔ ترکی کے گاؤں میں پیدا ہونے کی گنتی بہت تیز ہے۔ اگر مہا ماری نہ پھیلے تو بری سے بری حالت میں بھی کچھ نہ کچھ آبادی بڑھتی ہی ہے۔

گاؤں کے لوگ بچوں کی دیکھ بھال کے بارے میں ذرا بھی نہیں جانتے۔ اس بارے میں اگر وہ کچھ جانکاری رکھتے بھی ہیں تو کٹھن جیون انہیں سمے نہیں دیتا کہ اس جانکاری کا اچھا اپیوگ کر سکیں۔

गाँव में ऐसा रिवाज है कि औरतें सात साल से ऊपर के मर्द के लिये हमेशा रास्ता छोड़ देती हैं. अगर मर्द सड़क पर जा रहा है तो औरतें पटरी पर रुक जाती हैं और उसको गुज़र जाने देती हैं. हर मर्द यह देखता रहता है कि कोई औरत उससे आगे निकलने की कोशिश न करे. कभी कभार अगर भूल चूक से कोई औरत आगे निकल जाती है तो उसकी कनपटी पर एक मुक्का पड़ता है यही वजह है कि औरतें मर्दों के पीछे पीछे दासियों की तरह चलती हैं. यहाँ तक कि अगर कोई औरत भारी बोझ लिये जा रही हो और उससे कह दिया जाय कि इन्तज़ार न करो, आगे बढ़ जाओ तो भी वह ऐसा करने को हिम्मत नहीं करेगी.

एक बार मेरा चचा हुसैन और उसकी पत्नी आयशा करीब के नगर में डाक्टर के पास गए, डाक्टर ने चची से पूछा– "तकलीफ़ कहाँ है, कहाँ दर्द हो रहा है?" पर सिवाय सर हिलाने के चची डाक्टर को कोई जवाब न दे सकी तब चचा ने डाक्टर को बीमारी बतलाई. वहाँ से निकलने के बाद मेरे चचा ने सोचा--चालीस साल में पहली बार शहर आए हैं. कुछ न कुछ हलुवा ज़रूर पत्नी के लिये ख़रीदना चाहिये. और वह दोनों एक दूकान पर गए. चचा आगे थे और उनके पीछे पीछे चची. थोड़ी देर बाद चचा पीछे मुड़े और देखा कि चची पीछे आड़ में खड़ी है. उसका मुँह ढंका है और वह डर से काँप रही है. चचा ने पूछा कि पीछे क्यों रह गई उस ने जवाब दिया—"मैं मर्दों के आगे कैसे जा सकती हूँ यहाँ तो सब मर्द इधर उधर चलते रहते हैं."

گاؤں میں ایسا رواج ہے کہ عورتیں سات سال سے اوپر کے مرد کے لئے ہمیشہ راستہ چھوڑ دیتی ہیں. اگر مرد سڑک پر جا رہا ہے تو عورتیں پٹری پر رک جاتی ہیں اور اُس کو گزر جانے دیتی ہیں. ہر مرد یہ دیکھتا رہتا ہے کہ کوئی عورت اُس سے آگے نکلنے کی کوشش نہ کرے. کبھی کبھار اگر بھول چوک سے کوئی عورت آگے نکل جاتی ہے تو اُس کی کنپٹی پر ایک مکہ پڑتا ہے یہی وجہ ہے کہ عورتیں مردوں کے پیچھے پیچھے داسیوں کی طرح چلتی ہیں. یہاں تک کہ اگر کوئی عورت بھاری بوجھ لئے جا رہی ہو اور اُس سے کہدیا جائے کہ انتظار نہ کرو، آگے بڑھ جاؤ تو بھی وہ ایسا کرنے کی ہمت نہیں کریگی.

ایک بار میرا چچا حسین اور اُسکی پتنی عائشہ قریب کے نگر میں ڈاکٹر کے پاس گئے. ڈاکٹر نے چچی سے پوچھا— "تکلیف کہاں ہے کہاں درد ہو رہا ہے؟" پر سوائے سر ہلانے کے چچی ڈاکٹر کو کوئی جواب نہ دے سکی تب چچا نے ڈاکٹر کو بیماری بتلائی. وہاں سے نکلنے کے بعد میرے چچا نے سوچا—چالیس سال میں پہلی بار شہر آئے ہیں، کچھ نہ کچھ حلوا ضرور پتنی کے لئے خریدنا چاہئے اور وہ دونوں ایک دوکان پر گئے. چچا آگے تھے اور اُن کے پیچھے پیچھے چچی. تھوڑی دیر بعد چچا پیچھے مڑے اور دیکھا کہ چچی پیچھے آڑ میں کھڑی ہے اُس کا منہ ڈھکا ہے اور وہ ڈر سے کانپ رہی ہے. چچا نے پوچھا کہ پیچھے کیوں رہ گئی اُس نے جواب دیا— "میں مردوں کے آگے کیسے جا سکتی ہوں اور یہاں تو سب مرد اِدھر اُدھر چلتے رہتے ہیں."

औरतों की दुर्दशा

बच्चे अपने मां बाप का आदर करते हैं पर औरतें उनसे कहीं अधिक अपने पति का आदर करती हैं और उससे डरती हैं. ऐसा भी होता है कि शादी के थोड़े दिनों तक पति पत्नी से प्रेम जताता है. पर उसके बाद औरत पति की दासी बन जाती है. उसे वह सब कुछ करना पड़ता है जो पति कहता है. मर्द पेट के बल लेटा रहता है और हुक्म चलाता है—'यह ला, वह कर.' औरत को जवाब में एक शब्द भी कहने का अधिकार नहीं है. हर औरत उतनी ही पाक और गुनवती मानी जाती है जितनी कि वह अपने पति से डरती और उसका आदर करती है. पति पत्नी को गाली दे सकता है, तिरस्कार कर सकता है, मार पीट सकता है, उसको आंसू में नहला सकता है, पर पत्नी बदले में मुंह भी नहीं खोल सकती .. जैसे जैसे दिन बीतते जाते हैं औरत बूढ़ी होती जाती है और तब उसको इनसान कहलाने का भी अधिकार नहीं रह जाता. औरतों को बिना मुंह ढके इधर उधर जाने की मनाही है. वह अपने घूंघट का एक कोना दांत से दबाए रहती है और केवल खाते समय मुंह खोल सकती हैं. खाना औरतें मर्दों के संग नहीं खातीं और न बात ही करती है एक नौजवान लड़की और खासकर नई नवेली दुल्हन को अधिकार नहीं है कि वह किसी मर्द से इशारे में भी बात कर सके चाहे वह मर्द लड़की के बड़े बूढ़े या नातेदार ही क्यों न हों. अगर यह कहावत सच है कि इस लोक में कहे शब्दों का हिसाब हमें परलोक में देना पड़ेगा तो तुरकी की किसान स्त्री बहुत भाग्यवान है!

عورتوں کی دردشا

بچے اپنے ماں باپ کا آدر کرتے ہیں پر عورتیں ان سے کہیں ادھک اپنے پتی کا آدر کرتی ہیں اور اس سے ڈرتی ہیں. ایسا بھی ہوتا ہے کہ شادی کے تھوڑے دنوں تک پتی پتنی سے پریم جتاتا ہے. پر اس کے بعد عورت پتی کی داسی بن جاتی ہے. اسے وہ سب کچھ کرنا ہوتا ہے جو پتی کہتا ہے. مرد پیٹ کے بل لیٹا رہتا ہے اور حکم چلاتا ہے—"یہ لا، وہ کر." عورت کو جواب میں ایک شبد بھی کہنے کا ادھیکار نہیں ہے. ہر عورت اتنی ہی پاک اور گنونتی مانی جاتی ہے جتنا کہ وہ اپنے پتی سے ڈرتی اور اس کا آدر کرتی ہے. پتی پتنی کو گالی دے سکتا ہے، تسکار کر سکتا ہے، مار پیٹ سکتا ہے، اس کو آنسو میں نہلا سکتا ہے، پر پتنی بدلے میں منہ بھی نہیں کھول سکتی. جیسے جیسے دن بیتتے جاتے ہیں عورت بوڑھی ہوتی جاتی ہے اور تب اس کو انسان کہلانے کا بھی ادھیکار نہیں رہ جاتا. عورتوں کو بنا منہ ڈھکے ادھر ادھر جانے کی مناہی ہے. وہ اپنے گھونگھٹ کا ایک کونہ دانت سے دبائے رہتی ہیں اور کیول کھاتے سمے منہ کھول سکتی ہیں. کھانا عورتیں مردوں کے سنگ نہیں کھاتیں اور نہ بات ہی کرتی ہیں. ایک نوجوان لڑکی اور خاص کر نئی نویلی دلہن کو ادھیکار نہیں ہے کہ وہ کسی مرد سے اشارے سے بھی بات کر سکے چاہے وہ مرد لڑکی کے بڑے بوڑھے یا ناتے دار ہی کیوں نہ ہوں. اگر یہ کہاوت سچ ہے کہ اس لوک میں کہے شبدوں کا حساب ہمیں پرلوک میں دینا پڑیگا تو ترکی کی کسان استری بہت بھاگوان ہے!

काम करती रहती है. मैंने एक किसान से पूछा—"तुम एक दिन में कितना जोत सकते हो ?"

"कभी कभी दस पंद्रह कदम" उसने जवाब दिया. यह हाल कछुए की है. यहाँ की ज़मीन पथरीली है. इसको जोतना बहुत ही कठिन है.

मेरी मां

रोज़े के दिन आ गए. मेरी मां रोज़े भी रखती है और हम सब के साथ काम भी करती है. बहुत दिनों तक बिना खाना पानी गुज़र करते करते वह बहुत दुबली हो गई. मुझे उसको देख देख कर दुगना दुख होता था.

हालाँ कि ज्यादातर किसानों ने अब की रोज़े रक्खे थे फिर भी इस साल थोड़ा सा ही नुकसान हुआ केवल एक नौजवान उपवास से मर गया. बच्चों की बात दूसरी है. जब कि माता पिता रोज़े काट रहे थे तो मौत इधर बच्चों को काट रही थी. हर रोज़ कोई न कोई एक साल से कम उमर का बच्चा गांव में मरता था. पहले दो हफ्ते में बाईस मर गए. जब मैंने अपनी मां से कुछ भी पूछा तो उसने जवाब दिया—

"मुझ में एक शब्द कहने की भी शक्ति नहीं है." वह दिन भर भगवान के नाम का जाप करती है. मैं जब उससे पूछता हूँ—"यह सब तो ठीक है माँ, पर तुम दिन भर जाप करते करते थकती नहीं हो ?" वह जवाब देती है—"अगर मैं प्रार्थना न करूँगी तो इस दुख को झेल न सकूँगी."

کام کرتی رہتی ہے. میں نے ایک کسان سے پوچھا—"تم ایک دن میں کتنا جوت سکتے ہو؟"

"کبھی کبھی دس پندرہ قدم" اسنے جواب دیا. یہ حال کچھوے کی ہے. یہاں کی زمین پتھریلی ہے. اس کو جوتنا بہت ہی کٹھن ہے.

میری ماں

روزے کے دن آ گئے. میری ماں روزے بھی رکھتی ہے اور ہم سب کے ساتھ کام بھی کرتی ہے. بہت دنوں تک بنا کھانا پانی گزر کرتے کرتے وہ بہت دبلی ہو گئی. مجھے اس کو دیکھ دیکھ کر دگنا دکھ ہوتا تھا.

حالانکہ زیادہ تر کسانوں نے اب کی روزے رکھے تھے پھر بھی اس سال تھوڑا سا ہی نقصان ہوا. صرف ایک نوجوان اپواس سے مر گیا. بچوں کی بات دوسری ہے. جب کہ ماتا پتا روزے کاٹ رہے تھے تو موت ادھر بچوں کو کاٹ رہی تھی. ہر روز کوئی نہ کوئی ایک سال سے کم عمر کا بچہ گاؤں میں مرتا تھا. پہلے دو ہفتے میں بائیس مر گئے. جب میں نے اپنی ماں سے کچھ بھی پوچھا تو اسنے جواب دیا—

"مجھ میں ایک شبد کہنے کی بھی شکتی نہیں ہے." وہ دن بھر بھگوان کے نام کا جاپ کرتی ہے. میں جب اس سے پوچھتا ہوں—"یہ سب تو ٹھیک ہے ماں، پر تم دن بھر جاپ کرتے کرتے تھکتی نہیں ہو؟" وہ جواب دیتی ہے—"اگر میں پرارتھنا نہ کروں گی تو اس دکھ کو جھیل نہ سکوں گی."

रोटी पकाते समय काला धुआं औरतों की आंखों से आंसू की नदी बहाता है. सारा घर धुएं में भर जाता है. मुझ से अगर कोई पूछे कि दुनिया में सब से अधिक दुख देने वाली चीज़ जो मैं सोच सकता हूँ, क्या हो सकती है तो मैं जवाब दूंगा 'हमारे गांव में रोटी पकाना.'

औज़ारों की कमी

सरदी के खतम होते ही बसन्त गरमी लेकर आ जाता है. हम लोग कांपना बन्द कर देते हैं. आस्मान जब साफ़ रहता है तो पढ़ाई लिखाई बाहर घास पर होती है. हमारे चारों तरफ़ किसान जुताई करते रहते हैं. कुछ किसान बैल से जोतते हैं कुछ हलचर से, और अधिक तर फावड़े से ही ज़मीन उलटते पलटते हैं. हमारे क्लास के पास ही एक किसान जोत रहा है और उसकी बहन ढेले फोड़ती जाती है. इस लड़की के हाथ सख्त और मुंह पीला है.

मेरे एक विद्यार्थी ने बताया कि लड़की को उसके भाई ने नंगे पैर कांटे रौंदने पर मजबूर किया था. उसके पैर घायल हो गए और बहुत दिनों तक तकलीफ़ देते रहे. पर अब घाव भर गए हैं. पड़ोसी हंसते हैं और कहते हैं कि इसके पैर पत्थर के हो गए. अब जूते की ज़रूरत नहीं है. चेहरा मोहरा इसका रोगियों सा हो गया है. मुंह इसका सूखा सूखा है और हर समय आंसुओं की एक धारा गालों पर बहती है. पर वास्तव में वह अब पैर के नीचे कंकर पत्थर या कांटे की परवाह नहीं करती. बैल कभी कभी सुस्ताने के लिये रुक जाते हैं पर यह लड़की सदा

روٹی پکاتے سمے کالا دھواں عورتوں کی آنکھوں سے آنسو کی ندی بہاتا ہے۔ سارا گھر دھوئیں سے بھر جاتا ہے۔ مجھ سے اگر کوئی پوچھے کہ دنیا میں سب سے ادھک دکھ دینے والی چیز جو میں سوچ سکتا ہوں کیا ہو سکتی ہے تو میں جواب دوںگا "ہمارے گاؤں میں روٹی پکانا۔"

اوزاروں کی کمی

سردی کے ختم ہوتے ہی بسنت [illegible] لے کر آ جاتا ہے۔ ہم لوگ کانپنا بند کر دیتے ہیں۔ آسمان جب صاف رہتا ہے تو پڑھائی لکھائی باہر گھاس پر ہوتی ہے۔ ہمارے چاروں طرف کسان جوتائی کرتے رہتے ہیں۔ کچھ کسان بیل سے جوتتے ہیں کچھ خچر سے، اور ادھک تر پھاوڑے سے زمین الٹتے پلٹتے ہیں۔ ہمارے کلاس کے پاس ہی ایک کسان جوت رہا ہے اور اس کی بہن ڈھیلے پھوڑتی جاتی ہے۔ اس لڑکی کے ہاتھ سخت اور منہ پیلا ہے۔

میرے ایک ودیارتھی نے بتایا کہ لڑکی کو اس کے بھائی نے ننگے پیر کانٹے روندنے پر مجبور کیا تھا۔ اس کے پیر گھائل ہو گئے اور بہت دنوں تک تکلیف دیتے رہے۔ پر اب گھاؤ بھر گئے ہیں۔ پڑوسی ہنستے ہیں اور کہتے ہیں کہ اسکے پیر پتھر کے ہو گئے۔ اب جوتے کی ضرورت نہیں ہے۔ چہرہ مہرہ اسکا روگیوں سا ہو گیا ہے۔ منہ اسکا سوکھا ساکھا ہے اور ہر سمے آنسوؤں کی ایک دھارا گالوں پر بہتی ہے۔ پر واستو میں وہ اب پیر کے نیچے کنکر پتھر یا کانٹے کی پرواہ نہیں کرتی۔ بیل کبھی کبھی سستانے کے لئے رک جاتے ہیں پر یہ لڑکی سدا

था. और दूसरों को अनुमान तक न था कि शहद क्या होता है. उस लड़के ने भी किसी पास के गाँव में देखा था.

तरकारियाँ हमारे गाँव में उगाई जाती है. मई में बोई जाती है और अगस्त में इकट्ठा की जाती है. आम तौर से किसान लौकी और चुकन्दर उगाते हैं. कई कई महीने वह लौकी और चुकन्दर ही खाते हैं क्योंकि और कोई दूसरी चीज़ खाने को नहीं होती. जाड़े में घुँघनी खाते हैं. बहुत से घरों में कुछ भी नहीं होता और तीन चार महीने नई फ़सल खड़ी होने तक वह लगभग बिना खाए ही गुज़ारा करते हैं. औरतें और लड़कियां घास इकट्ठा करके उबाल उबाल कर खाती हैं. लगभग हर घर में एक पतीली उबला करती है. लेकिन खाने की जगह उसमें दुख दर्द होता है. यही वह रस है जो लोगों को दुबला और पीला करता रहता है. यह सच है कि कुछ लोग आलू और फलियाँ भी खाते है. पर ऐसे इने गिने हैं. पूरे गाँव में शायद पाँच या ज़्यादा से ज़्यादा दस. मेरे पड़ोसी के दो लड़के है. मार्च अप्रैल में वह घास खाते हैं और जाड़े में सूखी रोटी. इस पड़ोसी की पूरी गृहस्थी एक पुराना बोरा, एक पुरानी चटाई और कुछ भेड़ की खालें हैं. जाड़ा हो या गरमी, मां और बच्चे एक चटाई पर लेट जाते हैं फिर ऊपर से अपने को भेड़ की खालों से ढक लेते हैं. ख़ुदा इन की मदद करे और सब्र दे.

ज़मीन की समस्या

कुछ दिन पहले मैं एक गाँव के नम्बरदार के घर गया. वहाँ एक अनोखा नाटक खेला जा रहा था. एक के बाद दूसरा किसान

تھا اور دوسروں کو انومان تک نہ تھا کہ شہد کیا ہوتا ہے . اس لڑکے نے بھی کسی پاس کے گاؤں میں دیکھا تھا .

ترکاریاں ہمارے گاؤں میں اُگائی جاتی ہیں مئی میں بوئی جاتی ہیں اور اگست میں اکٹھا کی جاتی ہیں . عام طور سے کسان لوکی اور چقندر اُگاتے ہیں . کئی کئی مہینے وہ لوکی اور چقندر ہی کھاتے ہیں کیونکہ اور کوئی دوسری چیز کھانے کو نہیں ہوتی . جاڑے میں گھنگھنی کھاتے ہیں . بہت سے گھروں میں کچھ بھی نہیں ہوتا اور تین چار مہینے نئی فصل کھڑی ہونے تک وہ لگ بھگ بنا کھائے ہی گزارا کرتے ہیں . عورتیں اور لڑکیاں گھاس اکٹھا کر کے اُبال اُبال کر کھاتی ہیں . لگ بھگ ہر گھر میں ایک پتیلی اُبلا کرتی ہے . لیکن کھانے کی جگہ اس میں دکھ درد ہوتا ہے یہی وہ رس ہے جو لوگوں کو دبلا اور پیلا کرتا رہتا ہے . یہ سچ ہے کہ کچھ لوگ آلو اور پھلیاں بھی کھاتے ہیں پر ایسے اِنے گنے ہیں . پورے گاؤں میں شاید پانچ یا زیادہ سے زیادہ دس . میرے پڑوسی کے دو لڑکے ہیں مارچ اپریل میں وہ گھاس کھاتے ہیں اور جاڑے میں سوکھی روٹی . اس پڑوسی کی پوری گرہستی ایک پرانا بورا، ایک پرانی چٹائی اور کچھ بھیڑ کی کھالیں ہیں . جاڑا ہو یا گرمی، ماں اور بچے ایک چٹائی پر لیٹ جاتے ہیں پھر اوپر سے اپنے کو بھیڑ کی کھالوں سے ڈھک لیتے ہیں . خدا ان کی مدد کرے اور صبر دے .

زمین کی سمسیا

کچھ دن پہلے میں ایک گاؤں کے نمبردار کے گھر گیا . وہاں ایک انوکھا ناٹک کھیلا جا رہا تھا ایک کے بعد دوسرا کسان

फ़रवरी में बचा खुचा हमारा ईंधन ख़तम हो जाता है और हालत और भी बद्तर हो जाती है. मुझे मालूम हुआ कि दो विद्यार्थियों के घर पर सूखे उपले हैं. पर वह दोनों मक्खीचूस मुटवार किसानों के लड़के थे. मेरी हिम्मत नहीं पड़ी कि उन से कुछ ईंधन स्कूल लाने के लिये कहूँ. दिन में किसी तरह काम करना था पर जैसे ही रात आती मैं काँपने लगता और किसी काम के जोग न रह जाता......

हमने किताब और कापियाँ फाड़ फाड़ कर जलाईं ताकि किसी सूरत से अप्रैल तक ठेल सकें. नौजवानों के लिये सरदी झेलना मुशकिल होता है और बच्चे तो मर ही जाते हैं. एक साल से कम उमर का कोई बच्चा गाँव में बाक़ी नहीं बचा. सब के सब मर गए. सरदी और महामारी इन छोटे चूहों को हड़प कर गई.

खाना

हमारे घरों में चिट्ठा मिट्ठा की खोज न कीजिये. दूकानों में न हम ख़रीदते हैं और न ताज़ा रोटी पकाते हैं. जो कुछ भी हम सितम्बर अक्तूबर में इकट्ठा करते हैं वही जाड़े भर खाते हैं. जिस तरह हमारा जीवन निकम्मा है उसी तरह हमारी उड़ान बहुत कम और साधन भी बहुत थोड़े हैं. यहाँ तक कि चाय और चावल हमारे लिये भोग विलास की चीज़ें हैं. एक ऐसी घटना है जिसे मैं कभी न भूल सकूँगा—

दरजे की किताबों में हम यह वाक्य पढ़ते हैं—"पिता जी, मुझे कुछ शहद ख़रीद दीजिये." मैंने अपने विद्यार्थियों से पूछा कि शहद क्या होता है? छप्पन लड़कों में से केवल एक ने कभी शहद देखा

فروری میں بچا کھچا ہمارا ایندھن ختم ہوجاتا ہے اور حالت اور بھی بدتر ہوجاتی ہے. مجھے معلوم ہوا کہ دو ودیارتھیوں کے گھر پر سوکھے اُپلے ہیں پر وہ دونوں مکھی چوس متوار کسانوں کے لڑکے تھے. میری ہمت نہیں پڑی کہ اُن سے کچھ ایندھن اسکول لانے کے لئے کہوں. دن میں کسی طرح کام کرنا تھا پر جیسے ہی رات آتی میں کانپنے لگتا اور کسی کام کے جوگ نہ رہ جاتا..........

ہم نے کتاب اور کاپیاں پھاڑ پھاڑ کر جلائیں تاکہ کسی صورت سے اپریل تک ٹھیل سکیں. نوجوانوں کے لئے سردی جھیلنا مشکل ہوتا ہے اور بچے تو مر ہی جاتے ہیں ایک سال سے کم عمر کا کوئی بچہ گاؤں میں باقی نہیں بچا سب کے سب مر گئے. سردی اور مہا ماری اِن چھوٹے چوہوں کو ہڑپ کر گئی.

کھانا

ہمارے گھروں میں چٹھا مٹھا کی کھوج نہ کیجئے دوکانوں سے نہ ہم خریدتے ہیں اور نہ تازہ روٹی پکاتے ہیں جو کچھ بھی ہم ستمبر اکتوبر میں اکٹھا کرتے ہیں وہی جاڑے بھر کھاتے ہیں. جس طرح ہمارا جیون نکما ہے اسی طرح ہماری اڑان بہت کم اور سادھن بھی بہت تھوڑے ہیں. یہاں تک کہ چائے اور چاول ہمارے لئے بھوگ ولاس کی چیزیں ہیں. ایک ایسی گھٹنا ہے جسے میں کبھی نہ بھول سکونگا

درجے کی کتابوں میں ہم یہ واکیہ پڑھتے ہیں— پتا جی. مجھے کچھ شہد خرید دیجئے. میں نے اپنے ودیارتھیوں سے پوچھا کہ شہد کیا ہوتا ہے؟ چھپن لڑکوں میں سے کیول ایک نے کبھی شہد دیکھا

कुछ खरीदती भी है तो पाँच दस साल में एक बार और वह भी बहुत घटिया क़िस्म का कपड़ा. यहाँ के लोग पूरी आस्तीन के कपड़े नहीं पहनते केवल गंजी और पाजामे से काम चलाते हैं. खड़ाऊ से पैर की रक्षा करते हैं. कम ऐसे होंगे जिनके पास चमड़े के जूते हैं. अधिकतर लोग जाड़े में खड़ाऊ और गरमी में भेड़ की खाल की खलतरी पहनते हैं. मोजा तो एक नेमत है' लोग मुश्किल से ही जाड़े में बाहर निकलते हैं बाहर जाने के लिये जगह ही कौनसी है. इसलिये वह खड़ाऊँ पहनकर चलते फिरते हैं.

औरतों के पास और भी कपड़े की कमी है वह मर्दों से अधिक सरदी खाती हैं. उनको जाड़े में और अधिक काम करना पड़ता है. वह खड़ी खेती की देख भाल करती हैं, पानी भरती हैं और क़रीब क़रीब सारे ही कामों की ज़िम्मेदारी उनके कंधों पर होती है. आदमी घर में कपड़े में लिपटे काँपा करते हैं. कहा जाता है कि गोबर जलाना बेवक़ूफ़ी है क्योंकि गोबर की ज़रूरत खेतों में खाद के लिये होती है. बहुत से अखबार भी इस बारे में लिखते रहते हैं. पर ऐसे उपदेशकों को यह नहीं मालूम कि गोबर भी हमारे पास बहुत कम है. किसान अगर गोबर न जलाए तो वह अपने को गरम कैसे रक्खे ? क्या अपने पापों का कूड़ा सुलगा कर ? कितने किसान ऐसे हैं जिन्होंने लकड़ी का चैला या कोयला देखा भी है ? ईंधन की कमी किसान के वास्ते एक मुसीबत है !

मेरे स्कूल में पचास साठ विद्यार्थी हैं. किसी तरह फ़रवरी के

کچھ خریدتی بھی ہے تو پانچ دس سال میں ایک بار اور وہ بھی بہت گھٹیا قسم کا کپڑا۔ یہاں کے لوگ پوری آستین کے کپڑے نہیں پہنتے کیول گنجی اور پاجامے سے کام چلاتے ہیں۔ کھڑاؤں سے پیر کی رکشا کرتے ہیں۔ کم ایسے ہونگے جن کے پاس چمڑے کے جوتے ہیں۔ ادھک تر لوگ جاڑے میں کھڑاؤں اور گرمی میں بھیڑ کی کھال کی کھلتری پہنتے ہیں۔ موزا تو ایک نعمت ہے' لوگ مشکل سے ہی جاڑے میں باہر نکلتے ہیں۔ باہر جانے کے لئے جگہ ہی کون سی ہے۔ اس لئے وہ کھڑاؤں پہن کر چلتے پھرتے ہیں۔

عورتوں کے پاس اور بھی کپڑے کی کمی ہے۔ وہ مردوں سے ادھک سردی کھاتی ہیں۔ اُن کو جاڑے میں اور ادھک کام کرنا پڑتا ہے وہ کھڑی کھیتی کی دیکھ بھال کرتی ہیں' پانی بھرتی ہیں اور قریب قریب سارے ہی کاموں کی ذمہ داری اُن کے کندھوں پر ہوتی ہے۔ آدمی گھر میں کپڑے میں لپٹے کانپا کرتے ہیں کہا جاتا ہے کہ گوبر جلانا بیوقوفی ہے کیونکہ گوبر کی ضرورت کھیتوں میں کھاد کے لئے ہوتی ہے۔ بہت سے اخبار بھی اس بارے میں لکھتے رہتے ہیں۔ پر ایسے اُپدیشکوں کو یہ نہیں معلوم کہ گوبر بھی ہمارے پاس بہت کم ہے۔ کسان اگر گوبر نہ جلائے تو وہ اپنے کو گرم کیسے رکھے ؟ کیا اپنے پاپوں کا کوڑا سلگا کر ؟ کتنے کسان ایسے ہیں جنھوں نے لکڑی کا چیلا یا کوئلہ دیکھا بھی ہے ؟ ایندھن کی کمی کسان کے واسطے ایک مصیبت ہے !

میرے اسکول میں پچاس ساٹھ ودیارتھی ہیں۔ کسی طرح فروری

तुरकी के गाँव की एक झलक

(भाई महमूद मकल)

[महमूद मकल बीच अनातोलिया के एक गाँव में मास्टर है. बीस बरस की उमर में ही आस पास की ग़रीबी ने उसके दिल पर असर किया. क़लम ने उसके भावों को किताब का रूप दे दिया. किताब का नाम है "मेरा गाँव". किताब के छपते ही महमूद दुनिया में मशहूर होगया. सरकार को डर पैदा हुआ और बेचारा अदालत के कटहरे में ला खड़ा किया गया लेकिन अदालत ने महमूद को निर्दोश ठहरा कर छोड़ दिया. सरकार ने उसको शहर में मास्टर बनाने का लालच दिया उसने स्वीकार नहीं किया और अभी तक गाँव में मास्टर है. दूसरी किताब जो महमूद लिखने में लगा हुआ है उसका नाम "तुम्हारे नगर" है

—अनुवादक]

लोग कहते हैं कि पूरबी अनातोलिया की हालत बहुत ख़राब है. पर हम तो बीच अनातोलिया में रहते हैं. अपनी आँखों से मैं यहाँ की मुसीबतों को देखता हूँ और सोच कर काँप उठता हूँ क्या पूरबी अनातोलिया वालों का जीवन सचमुच हम से भी बदतर है? जाड़े से बचने के लिये हमारे पास न घर है और न कपड़ा. भूक की आग बुझाने को खाना नहीं, ईंधन की भी कमी है ऐसी सूरत में सरदी का कौन मुक़ाबला कर सकता है? यहाँ की जनता पहनने को

ترکی کے گاؤں کی ایک جھلک

(بھائی محمود مکل)

[محمود مکل بیچ اناطولیہ کے ایک گاؤں میں ماسٹر ہے. بیس برس کی عمر میں ہی آس پاس کی غریبی نے اُس کے دل پر اثر کیا. قلم نے اُسکے بھاؤں کو کتاب کا روپ دے دیا. کتاب کا نام ہے "میرا گاؤں". کتاب کے چھپتے ہی محمود دنیا میں مشہور ہوگیا. سرکار کو ڈر پیدا ہوا اور بیچارا عدالت کے کٹہرے میں لا کھڑا کیا گیا. لیکن عدالت نے محمود کو نردوش ٹھہرا کر چھوڑ دیا. سرکار نے اُس کو شہر میں ماسٹر بنانے کا لالچ دیا اُس نے سویکار نہیں کیا اور ابھی تک گاؤں میں ماسٹر ہے. دوسری کتاب جو محمود لکھنے میں لگا ہوا ہے اُس کا نام "تمہارے نگر" ہے

—انوادک]

لوگ کہتے ہیں کہ پوربی اناطولیہ کی حالت بہت خراب ہے. پر ہم تو بیچ اناطولیہ میں رہتے ہیں. اپنی آنکھوں سے میں یہاں کی مصیبتوں کو دیکھتا ہوں اور سوچ کر کانپ اٹھتا ہوں. کیا پوربی اناطولیہ والوں کا جیون سچ مچ ہم سے بھی بدتر ہے؟ جاڑے سے بچنے کے لئے ہمارے پاس نہ گھر ہے اور نہ کپڑا. بھوک کی آگ بجھانے کو کھانا نہیں. ایندھن کی بھی کمی ہے. ایسی صورت میں سردی کا کون مقابلہ کر سکتا ہے؟ یہاں کی جنتا پہننے کو

वह अल्ला एक सभी का है, पर नाम हैं उसके जुदा जुदा
भगवान कहीं यज़दान कहीं. वह एक ही पालनहारा है.

जो हिन्द का रहने वाला है. वह मुस्लिम हो या ईसाई
वह हिन्दू है और हिन्दी है, यह जग ने सदा पुकारा है.

इनसान हो तुम इनसान बनो, और एका से भारत मे रहो
इस दुई का परदा चाक करो, फिर जीवन में उजियारा है.

وہ اللہ ایک سبھی کا ھے' پر نام ھیں اُس کے جدا جدا
بھگوان کہیں یزدان کہیں' وہ ایک ھی پالن ھارا ھے.

جو ھند کا رھنے والا ھے وہ مسلم ھو یا عیسائی
وہ ھندو ھے اور ھندی ھے یہ جگ نے سدا پکارا ھے.

انسان ھو تم اِنسان بنو' اور ایکا سے بھارت میں رہو
اِس دوئی کا پردا چاک کرو' پھر جیون میں اُجیارا ھے.

"एकता का नारा"

(भाई हाफ़िज़ अताउल्ला 'एकता')

हम हिन्द के रहने वाले हैं, जयहिन्द हमारा नारा है
हम नाव के अपने खेवैया हैं. यह देश हमारा सारा है.

गर हिन्दू मुस्लिम जाति को, तुम एक न समझे क्या समझे
समझो ! न अगर तुम समझोगे, तो पस्त तुम्हारा तारा है.

भारत के सदा ग़मख़्वार रहो, भारत में जियो भारत पे मरो
करना क्या है जग से तुम को. यह भारत देस तुम्हारा है.

बापू ने गोली खाई क्यों, निज जान की भेंट चढ़ाई क्यों
अब तक भी न समझा ए हिन्दी. क्या सच्चा धर्म हमारा है.

इस्लाम. अहिंसा की शिक्षा, है एक ही मतलब दोनों का
पर शब्द के गोरखधन्दे ने, फैलाया यह अंधियारा है.

ऊँच नीच के छोड़ो चर्चे, छूत अछूत के बोल हैं कच्चे
सब ही धर्म हैं मूल में सच्चे शेश आडम्बर सारा है.

मन्दिर हो कलीसा या मस्जिद, या सिक्खों का गुरुद्वारा हो
इन सब को समझो हर का घर. हर धर्म का यह ही नारा है.

यह हिन्दू है वह मुस्लिम है, यह सिख है और वह ईसाई
यह नाम की हेरा फेरी है. इक सिरजनहार हमारा है.

" ایکتا کا نعرہ "

(بھائي حافظ عطا أللہ 'یکتا')

ھم ھند کے رھنے والے ھیں' جے ھند ھمارا نعرہ ھے
ھم ناؤ کے اپنے کھویا ھوں نہ دیس ھمارا سارا ھے .

گر ھندو مسلم جاتی کو تم ایک نہ سمجھے کیا سمجھے
سمجھو ! نہ اگر تم سمجھوگے' تو پست تمہارا تارا ھے

بھارت کے سدا غمخوار رھو بھارت میں جیو بھارت پہ مرو
کرنا کیا ھے جگ سے تم کو' یہ بھارت دیس تمہارا ھے

باپو نے گولی کھائی کیوں' نج جان کي بھینٹ چڑھائی کیوں
اب تک بھی نہ سمجھا اے ھندي کیا سچا دھرم ھمارا ھے .

اِسلام' اھنسا کی شکشا' ھے ایک ھی مطلب دونوں کا
پر شبد کے گورکھ دھندے نے' پھیلایا یہ اندھیارا ھے .

اُونچ نیچ کے چھوڑو چرچے' چھوت اچھوت کے بول ھیں کچے
سب ھی دھرم ھیں مول میں سچے' شیش آڈمبر سارا ھے .

مندر ھو کلیسا یا مسجد' یا سکھوں کا گردوارا ھو
اِن سب کو سمجھو ھر کا گھر' ھر دھرم کا یہ ھی نعرہ ھے .

یہ ھندو ھے وہ مسلم ھے' یہ سکھ ھے اور وہ عیسائی
یہ نام کی ھیرا پھیری ھے اِک سرجن ھار ھمارا ھے

करने में तुमने ज़रा भी आनाकानी की तो फ़ौरन तुम्हारी जवानी बुढ़ापे में तबदील हो जायगी.

धर्म को ले लो. जब तुम पैदा हुए थे. तुम अपने साथ कोई धर्म नहीं लाए थे. किसी धर्म के निशान के साथ तुम पैदा भी नहीं हुए. धर्म तुम्हारा वह है जो तुम में उस वक़्त फूंका गया है जब कि तुम यह समझते ही न थे कि धर्म है क्या चीज़. रहा इनसानी धर्म जिसे तुम साथ लेकर जनमे हो और जिससे तुममें नकली धर्म फूंक कर बचपन से ही दूर रक्खा गया है वह तुममें से कहीं गया नहीं है. वह सोया हुआ है. वह तुममें कभी कभी जागता है. और जब वह जागता है तब तुम्हारा मन और मस्तक उमंग भरता है. यही उमंगें तो जवानी की निशानी है. यह जिस दिन पूरा जागेगा तब तुम पर थोपा हुआ धर्म तुममें सुई की तरह से चुभने लगेगा. उस धर्म के जामे को फेंक देने के सिवाय तुम्हारे पास कोई चारा नहीं रह जायगा. फिर तुम क्या यह समझते हो कि अधर्मी हो जाओगे ? हरगिज़ नहीं. अधर्मी तो तुम अब हो जब उस धर्म की हद बांध बैठे हो जो हद को नहीं मानता और जो हदों में फंस कर अपना दम घोंट बैठता है.

(बाक़ी फिर)

—भगवानदीन

کونے میں تم نے ذرا بھی آنا کانی کی تو فوراً تمہاری جوانی بڑھاپے میں تبدیل ہو جائیگی ۔

دھرم کو لے لو جب تم پیدا ہوئے تھے تم اپنے ساتھ کوئی دھرم نہیں لائے تھے کسی دھرم کے نشان کے ساتھ تم پیدا بھی نہیں ہوئے ۔ دھرم تمہارا وہ ہے جو تم میں اس وقت پھونکا گیا ہے جبکہ تم یہ سمجھتے ہی نہ تھے کہ دھرم ہے کیا چیز ۔ رہا انسانی دھرم جسے تم ساتھ لیکر جنمے ہو اور جس سے تم میں نقلی دھرم پھونک کر بچپن سے ہی دور رکھا گیا ہے وہ تم میں سے کہیں گیا نہیں ہے ۔ وہ سویا ہوا ہے وہ تم میں کبھی کبھی جاگتا ہے اور جب وہ جاگتا ہے تب تمہارا من اور مستک امنگیں بھرتا ہے یہی امنگیں تو جوانی کی نشانی ہیں ۔ یہ جس دن پورا جاگیگا تب تم پر تھوپا ہوا دھرم تم میں سوئی کی طرح سے چبھنے لگیگا ۔ اس دھرم کے جامے کو پھینک دینے کے سوائے تمہارے پاس کوئی چارا نہیں رہ جائیگا ۔ پھر تم کیا یہ سمجھتے ہو کہ ادھرمی ہو جاؤ گے ؟ ہرگز نہیں ۔ ادھرمی تو تم اب ہو جب اس دھرم کی حد باندھے بیٹھے ہو جو حد کو نہیں مانتا اور جو حدوں میں پھنس کر اپنا دم گھونٹ بیٹھتا ہے

(باقی پھر)

—بھگوان دین

यह भी बहुत कम. सरदी, गरमी, बरसात हमसे हमारी जगह बदलवा कर ही रहती है. हाँ, काम पर हममें से हर एक का पूरा पूरा अधिकार नहीं है. काम बदलने में हम वक़्त और जगह के लिहाज़ से भले ही ज्यादा खुदमुख़्तार हों पर पूरे पूरे खुदमुख़्तार नहीं हैं. पर जितनी खुदमुख़्तारी हमें मिली हुई है वह कम नहीं है. उसके बल बूते पर हम बहुत जल्दी काम बदलने में पूरे पूरे खुदमुख़्तार हो सकते हैं. काम बदलने की खुदमुख़्तारी का नाम ही जवानी है और यही आज़ादी है. जवानो, अगर तुम ऐसे काम में लगे हुए हो जो तुम्हारे ऊपर थोपा गया है और जिसको तुम अपनी तबियत मार कर कर रहे हो और जिसके बदलने में तुम्हें सैकड़ों तरह की ऊँच नीच सोचना पड़ता है तो तुम समझ लो कि तुम बूढ़े हो गए. वक़्त और जगह के बदलने से कोई बूढ़ा नहीं होता. काम के बदलने की क़ाबलियत कम हो जाना बुढ़ापा है और बिलकुल न रहना मौत. आगे बढ़ने के लिये हर जवान को काम बदलना होगा और रस्मोरिवाज काम हैं. इनको बदलना ही होगा. रहन सहन, खान पान, ओढ़ना बिछाना हकूमत करना और हकूमत में रहना सब काम हैं. सब तबदीली चाहते हैं. तबदीली ही इनकी जान है. और इन कामों में तबदीली की जान फूंकने के तुम ईश्वर हो. अगर यह नहीं कर सकते तो न तुम जवान हो, न बूढ़े हो और न इनसानों में गिने जाने लायक हो.

अब रह गया भाव का बदलाव यानी विचारों की तबदीली. . ____ हो अगर इसमें तबदीली

وہ بھی بہت کم ۔ سردی، گرمی، برسات ہم سے ہماری جگہ بدلوا کر ہی رہتی ہے ۔ ہاں، کام پر ہم میں سے ہر ایک کا پورا پورا ادھیکار نہیں ہے ۔ کام بدلنے میں ہم وقت اور جگہ کے لحاظ سے بھلے ہی زیادہ خود مختار ہوں پر پورے پورے خود مختار نہیں ہیں ۔ پر جتنی خود مختاری ہمیں ملی ہوئی ہے وہ کم نہیں ہے ۔ اسکے بل بوتے پر ہم بہت جلدی کام بدلنے میں پورے پورے خود مختار ہوسکتے ہیں ۔ کام بدلنے کی خود مختاری کا نام ہی جوانی ہے اور یہی آزادی ہے ۔ جوانو، اگر تم ایسے کام میں لگے ہوئے ہو جو تمہارے اوپر تھوپا گیا ہے اور جسکو تم اپنی طبیعت مار کر کر رہے ہو اور جس کے بدلنے میں تمہیں سیکڑوں طرح کی اونچ نیچ سوچنا پڑتی ہے تو تم سمجھ لو کہ تم بوڑھے ہو گئے ۔ وقت اور جگہ کے بدلنے سے کوئی بوڑھا نہیں ہوتا ۔ کام کے بدلنے کی قابلیت کم ہو جانا بڑھاپا ہے اور بالکل نہ رہنا موت ۔ آگے بڑھنے کے لئے ہر جوان کو کام بدلنا ہوگا ۔ رسم و رواج کام ہیں ان کو بدلنا ہی ہوگا ۔ رہن سہن کھانا پینا ، اوڑھنا بچھونا، حکومت کرنا اور حکومت میں رہنا سب کام ہیں سب تبدیلی چاہتے ہیں ۔ تبدیلی ہی ان کی جان ہے ۔ اور ان کاموں میں تبدیلی کی جان پھونکنے کے تم ایشور ہو ۔ اگر یہ نہیں کرسکتے تو نہ تم جوان ہو نہ بوڑھے ہو اور نہ انسانوں میں گنے جانے لائق ہو ۔

اب رہ گیا بھاؤ کا بدلاؤ یعنی وچاروں کی تبدیلی ۔ اس کام میں تم پورے مختار ہو ۔ اگر اس میں تبدیلی

जाता है. आगे बढ़ना जवानी का काम ज़रूर है जवानी की शान नहीं है. जवानी की शान तो पीछे न हटना है फिर चाहे कितने ही ज़ोर के धक्के क्यों न आएं. जो पीछे नहीं हटता उसका क़दम आगे बढ़ता ही है. और जो एक क़दम बढ़ गया वह बढ़ गया. यही एक क़दम बढ़ना तो शान है. जवान लम्बी डगें भी रखता है और मौक़ा पाकर सरपट भी दौड़ता है पर इस डग भरने और सरपट दौड़ने मे उसका पीछे का तजरबा अपने आप उसे ढकेलता हुआ मालूम होता है. तभी तो वह पीछे मुड़कर नहीं देखता. वह 'था' का यानी जो पीछे बीत चुका उसका तो बना हुआ पुतला ही है. उधर नज़र डालने की उसे ज़रूरत भी क्यों ? उसका 'है' तो इतना बारीक होता है कि वह उस पर नज़र डाले डाले जब तक उसका क़दम 'गा' में जा टिकता है. यही वजह है कि जो आदमी सच्चे मानों मे जवान है वह हमेशा आगे बढ़ता रहता है.

आगे बढ़ना बदलने के सिवाय और कुछ नहीं. बढ़ने में वक़्त बदलता है, जगह बदलती है. काम बदलता है. भाव बदलते हैं. वक़्त पर तो किसी का अख़्तियार नहीं. इसके बदलने में किसी का हाथ नहीं. वक़्त तो हम सबको बदलने वाला ईश्वर है. और वह ऐसा ईश्वर है कि ज़रा देर के लिये भी ठाली नहीं बैठता. आप काम करें या न करें. वह आप को बच्चे से जवान बना देगा, जवान से बूढ़ा बना देगा. आप किसी चीज़ को कितनी ही होशियारी से कितने ही तालों के अन्दर कितने ही मज़बूत सेफ़ में क्यों न रखदें वक़्त का ईश्वर वहाँ पहुँच कर भी उसको पुराना और कमज़ोर किये [illegible] न मानेगा. जगह के बदलने में हमारा थोड़ा हाथ रहता है पर

جاتا ہے۔ آگے بڑھنا جوانی کا کام ضرور ہے جوانی کی شان نہیں ہے۔ جوانی کی شان تو پیچھے نہ ہٹنا ہے پھر چاہے کتنے ہی زور کے دھکے کیوں نہ آئیں۔ جو پیچھے نہیں ہٹتا اُس کا قدم آگے بڑھتا ہی ہے، اور جو ایک قدم بڑھ گیا وہ بڑھ گیا۔ یہی ایک قدم بڑھنا تو شان ہے۔ جوان لمبی ڈگیں بھی رکھتا ہے اور موقعہ پاکر سرپٹ بھی دوڑتا ہے پر اِس ڈگ بھرنے اور سرپٹ دوڑنے میں اُس کا پیچھے کا تجربہ اپنے آپ اُسے ڈھکیلتا ہوا معلوم ہوتا ہے۔ تبھی تو وہ پیچھے مڑ کر نہیں دیکھتا وہ 'تھا' کا یعنی جو پیچھے بیت چکا اُس کا تو بنا ہوا پتلا ہی ہے۔ اُدھر نظر ڈالنے کی اُسے ضرورت بھی کیوں؟ اُس کا 'ہے' تو اتنا باریک ہوتا ہے کہ وہ اُس پر نظر ڈالے ڈالے جب تک اُس کا قدم 'گا' میں جا ٹکتا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ جو آدمی سچے معنوں میں جوان ہے وہ ہمیشہ آگے بڑھتا رہتا ہے۔

آگے بڑھنا بدلنے کے سوائے اور کچھ نہیں۔ بڑھنے میں وقت بدلتا ہے، جگہ بدلتی ہے، کام بدلتا ہے، بھاؤ بدلتے ہیں۔ وقت پر تو کسی کا اختیار نہیں۔ اِس کے بدلنے میں کسی کا ہاتھ نہیں۔ وقت تو ہم سب کو بدلنے والا ایشور ہے۔ اور وہ ایسا ایشور ہے کہ ذرا دیر کے لئے بھی ٹھالی نہیں بیٹھتا۔ آپ کام کریں یا نہ کریں۔ وہ آپ کو بچے سے جوان بنا دے گا، جوان سے بوڑھا بنا دے گا۔ آپ کسی چیز کو کتنی ہی ہوشیاری سے کتنے ہی تالوں کے اندر کتنے ہی مضبوط سیف میں کیوں نہ رکھدیں وقت کا ایشور وہاں پہونچ کر بھی اُسکو پرانا کمزور کئے بغیر نہ مانیگا۔ جگہ کے بدلنے میں ہمارا تھوڑا ہاتھ رہتا ہے پر

पर चढ़ा ·ा था और जिसका यह तमाशा देख कर जब एक
ही जनरल नियोगी पर हँस दिया था और उस हँसी से बिगड़
जनरल नियोगी ने जब उससे हँसने की वजह पूछी थी और
उस सिपाही ने जवाब में यह लफ्ज़ कहे थे कि जिस आदमी
घोड़े पर चढ़ाने के लिये दो आदमी चाहियें उसका फौज में
ने का क्या काम और इस खरे जवाब को सुनकर जिस जनरल
ोगी ने यह जवाब दिया था कि हाँ, मुझे घोड़े पर चढ़ाने के
लिये दो आदमी चाहियें पर हज़ारों ही चाहियें जो मुझे घोड़े से
ार सकें. जनरल नियोगी कभी बूढ़ा हुआ ही नहीं. यह अस्सी
सौ साल की लम्बाई नहीं है जो किसी को बूढ़ा करती है. यह
ल की कमज़ोरी है जो बदलने और बदलते रहने से इनकार
रती है. पीछे नज़र डालना बुरा नहीं. यों तो जवान को उसकी
ी ज़रूरत नहीं. पर पीछे मुड़ने की सोचना जवानी की बेकदरी
रना है. और जिस जवानी की जब कदर ही न रही वह जवान के
ाथ रह कर क्या करेगी. पीछे है क्या. बचपन है. फिर चाहे वह
समाज का हो. संतों का हो. महंतों का हो. धर्मों का हो. राजाओं
का हो, राजनेताओं का हो, राजकाजियों का हो, कलाकारों का हो,
साहित्यकारों का हो या किसी का भी हो. अपने बचपन का
या अपने बचपन के भले कामों का कोई जवान अभिमान
तो कर सकता है पर उन पर उसी तरह अमल करने की नहीं सोच
सकता. जो ऐसा सोचेगा, जवानी उसका साथ छोड़ कर चल देगी.
जवान पीछे बहुत कम देखता है. इसका यह मतलब कोई हरगिज़
[illegible]

گھوڑے پر چڑھایا تھا اور جس کا یہ تماشہ دیکھکر جب ایک
سپاہی جنرل نیوگی پر ہنس دیا تھا اور اُس ہنسی سے بگڑ
کر جنرل نیوگی نے جب اُس سے ہنسنے کی وجہ پوچھی تھی اور
جب اُس سپاہی نے جواب میں یہ لفظ کہے تھے کہ جس آدمی
کو گھوڑے پر چڑھانے کے لئے دو آدمی چاہئیں اُس کا فوج میں آنے
کا کیا کام اور اِس کھرے جواب کو سنکر جس جنرل نیوگی نے یہ
جواب دیا تھا کہ ہاں، مجھے گھوڑے پر چڑھانے کے لئے دو آدمی
چاہئیں پر ہزاروں ہی چاہئیں جو مجھے گھوڑے سے اُتار سکیں .
جنرل نیوگی کبھی بوڑھا ہوا ہی نہیں . یہ اسی یا سو سال کی
لمبائی نہیں ہے جو کسی کو بوڑھا کرتی ہے یہ دل کی کمزوری ہے
جو بدلنے اور بدلتے رہنے سے انکار کرتی ہے . پیچھے نظر ڈالنا برا
نہیں، یوں تو جوان کو اُسکی بھی ضرورت نہیں . پر پیچھے مڑنے
کی سوچنا جوانی کی بے قدری کرنا ہے . اور جس جوانی کی جب
قدر ہی نہ رہی وہ جوان کے ساتھ رہ کر کیا کریگی . پیچھے ہے کیا .
بچپن ہے . پھر چاہے وہ سماج کا ہو، سنتوں کا ہو، مہنتوں کا ہو
دھرموں کا ہو، راجاؤں کا ہو، راج نیتاؤں کا ہو راج کاجیوں کا ہو،
کلا کاروں کا ہو، ساہتیہ کاروں کا ہو یا کسی کا بھی ہو اپنے بچپن
کا یا اپنے بچپن کے بھلے کاموں کا کوئی جوان ابھیمان تو کر سکتا
ہے پر اُن پر اُسی طرح عمل کرنے کی نہیں سوچ سکتا . جو
ایسا سوچے گا، جوانی اُس کا ساتھ چھوڑ کر چل دے گی . جوان
پیچھے بہت کم دیکھتا ہے . اس کا یہ مطلب کوئی ہرگز نہ
سمجھے کہ وہ اندھا دھند بلا سوچے سمجھے آگے ہی بڑھتا چلا

जवानो

जवानी न जाने के लिये आती है और न कभी जाती है वह तो खो दी जाती है या खदेड़ दी जाती है. बालों का सफ़ेद हो जाना या दांतों का गिर जाना बुढ़ापा नहीं है. चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ जाना भी बुढ़ापा नहीं है. अगर यह तीनों तबदीलियां बुढ़ापे की निशानी होतीं तो गांधी जी हिन्दुस्तानियों को दूभर न होते और एक बूढ़े दिल जवान को उनकी जान लेने की बात न सूझती. आदमी की जान लेने की बात डरपोक और कायर ही सोच सकते हैं. डर और कायरता यानी बुज़दिली जवान के पास नहीं फटकती अगर किसी जवान को उनसे बेजा लगाव है तो फिर वह या तो बच्चा है या बूढ़े का नाटक कर रहा है या बुढ़ापे की ओर दौड़ लगा रहा है. जिसमें डर नहीं और जिसका कायरता से कुछ मेल जोल नहीं उसे अगर कोई बूढ़ा कह बैठे और सिर्फ़ इस वजह से बूढ़ा कह बैठे कि उसके बाल सफ़ेद हैं, उसके दांत ग़ायब हैं और उसके चेहरे पर न तनाव है न चिकनाहट तो यही समझना चाहिये कि अगर वह ख़ुद बूढ़ा नहीं है तो उसका दिल ज़रूर बूढ़ा हो गया है, भले हो फिर उसके बाल काजल काले हों और बत्तीसी इतनी मज़बूत हो कि उनके बीच में आई सुपारी पलक मारते चूर हो जाती हो. जापान के उस अस्सी बरस के जनरल नियोगी को, कहो तो जवानो, तुम कैसे बूढ़ा कह दोगे जिसको जब दो सिपाहियों ने हाथ लगाकर

جوانو

جوانی نہ جانے کے لئے آتی ہے اور نہ کبھی جاتی ہے۔ وہ تو کھو دی جاتی ہے یا کھدیڑ دی جاتی ہے۔ بالوں کا سفید ہوجانا یا دانتوں کا گرجانا بڑھاپا نہیں ہے۔ چہرے پہ جھریاں پڑجانا بھی بڑھاپا نہیں ہے۔ اگر یہ تینوں تبدیلیاں بڑھاپے کی نشانی ہوتیں تو گاندھی جی ہندوستانیوں کو دوبھر نہ ہوتے اور ایک بوڑھے دل جوان کو ان کی جان لینے کی بات نہ سوجھتی۔ آدمی کی جان لینے کی بات ڈرپوک اور کائر ہی سوچ سکتے ہیں۔ ڈر اور کائرتا یعنی بزدلی جوان کے پاس نہیں پھٹکتی۔ اگر کسی جوان کو ان سے بیجا لگاؤ ہے تو پھر وہ یا تو بچہ ہے یا بوڑھے کا ناٹک کر رہا ہے یا بڑھاپے کی اور دوڑ لگا رہا ہے۔ جس میں ڈر نہیں اور جسے کائرتا سے کچھ میل جول نہیں اسے اگر کوئی بوڑھا کہہ بیٹھے اور صرف اس وجہ سے بوڑھا کہہ بیٹھے کہ اسکے بال سفید ہیں، اسکے دانت غائب ہیں اور اسکے چہرے پر نہ تناؤ ہے نہ چکناہٹ تو یہی سمجھنا چاہئے کہ اگر وہ خود بوڑھا نہیں ہے تو اس کا دل ضرور بوڑھا ہوگیا ہے، بھلے ہی پھر اسکے بال کاجل کالے ہوں اور بتیسی اتنی مضبوط ہو کہ ان کے بیچ میں آئی سپاری پلک مارتے چور ہو جاتی ہو۔ جاپان کے اس اسی برس کے جنرل نیوگی کو، کہو تو ... جسکو جب دو سپاہیوں نے ہاتھ لگا کر

एक दिन दुनिया को उसने अपने सामने साकार देखा. वह उससे बातें कर रही थी. उसने अपना हाल कलाकार को बताया. विन्सेंट ने आइने में झलकती शक्ल की तरह दुनिया को देखा. समझा और परखा. जैसे दुनिया के कभी न मिटने वाले दर्द को उसने अपने सामने देख लिया. दुनिया भर के दुख दर्द से जैसे उसका महा मिलन हुआ. विन्सेन्ट ने अपनी छाती में गोली मारली. डाक्टर दौड़ते हुए आए. विन्सेन्ट बोला—"मैंने शिकार किया है." सचमुच दुनिया की सारी बुराई उसकी नज़रों में आगई थी. उसने उसी को मारना चाहा था. पर खुद को गोली मार बैठा और अन्त में ३७ बरस की उमर में अपने पुराने पाइप से आख़िरी कश खींचते हुए उसने एक लम्बी और आखरी साँस ली.

उसे उसी खेत में दफ़नाया गया जहाँ एकान्त में उसने अपनी मौसी की बेटी को पहली और आखिरी बार प्यार किया था. जिस खेत को 'ब्ल्यू कार्न' (नीला दाना) नामकी जीती जागती तस्वीर में उसने ज्यों का त्यों उतारा था, जो खेत उसको सबसे अज़ीज़ और सब से प्यारा था.

इस तरह धरती का यह बेचैन बेटा लहलाती धरती की गोद में सदा के लिये चैन से सो गया !

ایک دن دنیا کو اُسنے اپنے سامنے ساکار دیکھا . وہ اُس سے باتیں کر رہی تھی . اُسنے اپنا حال کلاکار کو بتایا . ونسنٹ نے آئینے میں جھلکتی شکل کی طرح دنیا کو دیکھا' سمجھا اور پرکھا . جیسے دنیا کے کبھی نہ مٹنے والے درد کو اُس نے اپنے سامنے دیکھ لیا . دنیا بھر کے دکھ درد سے جیسے اُسکا مہا ملن ہوا . ونسنٹ نے اپنی چھاتی میں گولی ماری . ڈاکٹر دوڑتے ہوئے آئے . ونسنٹ بولا—"میں نے شکار کیا ہے ." سچ مچ دنیا کی ساری برائی اُس کی نظروں میں آگئی تھی . اُس نے اُسی کو مارنا چاہتا تھا پر خود کو گولی مار بیٹھا اور انت میں ۳۷ برس کی عمر میں اپنے پائپ سے آخری کش کھینچتے ہوئے اُس نے ایک لمبی اور آخری سانس لی .

اُسے اُسی کھیت میں دفنایا گیا جہاں ایکانت میں اُسنے اپنی موسی کی بیٹی کو پہلی اور آخری بار پیار کیا تھا . جس کھیت کو 'بلیوکارن' (نیلا دانا) نام کی جیتی جاگتی تصویر میں اُس نے جیوں کا تیوں اُتارا تھا' جو کھیت اُسکو سب سے عزیز اور سب سے پیارا تھا .

اِس طرح دھرتی کا یہ بےچین بیٹا لہلہاتی دھرتی کی گود میں سدا کے لئے چین سے سو گیا .

बेरोजगारों, वेश्याओं और शोशितों, अनपढ़ों और कुचले हुए लोगो की तस्वीरें बनाईं. लेकिन हमारी बदक़िस्मती से वह तस्वीरे भी अमीरों और सरकारों ने खरीद खरीद कर (विन्सेन्ट से नहीं खरीदीं) अपनी इमारतों और कमरों में लगा लीं. लेकि आज जब कभी भी वह बाहर की हवा और रोशनी देखती हैं तो अपने लोगों को पहचान कर फिर से हँसने लग जाती हैं और उस महान पुरुश का संदेसा दुहराती हैं जिन्हें सुनकर गिरे हुए इनसानों के झुके हुए सर गर्व से ऊँचे हो जाते हैं. वह नई ज़िन्दगी की रोशनी को अपने क़रीब महसूस करते है, और मुस्कराते हैं.

कान काट कर भेंट कर देने के बाद विन्सेन्ट का जीवन और दूभर हो गया. मुहल्ले के आवारा लड़के रात दिन उसे चिढ़ाते. उसके चित्र फाड़ डालते और समझदार कहलाने वाले लोग भी उसमें हिस्सा लेते. इसी तरह कई दिन निकल गए. दिन पर दिन उसके लिये भारी होता जाता था. फिर थियो आया और उसका इलाज कराया पर कुछ न हुआ.

कला का यह पुजारी उन्ही दिनों आवर्स के पागल खाने में भेज दिया गया. लेकिन वहाँ के डाक्टर उसकी क्या दवा करते. उस को दवा अपने ही पास थी. वह तो खुद दुनिया का मसीहा बन कर आया था. उसकी संगत पाकर डाक्टर उसे समझ कर हैरान रह गए. यहाँ पागलों को देखकर विन्सेंट को जीवन को और समझने का मौक़ा मिला. वह पागलों की सेवा में लग गया. वह आस पास के चित्र भी खींचता. डाक्टरों ने यह देख कर उसे अस्पताल ही में आज़ाद कर दिया.

بےروزگاروں، ویشیاؤں اور او شوشتوں، ان پڑھوں اور کچلے ہوئے لوگوں کی تصویریں بنائیں ۔ لیکن ہماری بدقسمتی سے وہ تصویریں بھی امیروں اور سرکاروں نے خرید خرید کر (ونسنٹ سے نہیں خریدیں) اپنی عمارتوں اور کمروں میں لگا لیں ۔ لیکن آج جب کبھی بھی وہ باہر کی ہوا اور روشنی دیکھتی ہیں تو اپنے لوگوں کو پہچان کر پھر سے ہنسنے لگ جاتی ہیں اور اُس مہان پرش کا سندیسہ دہراتی ہیں جنہیں سن کر گرے ہوئے انسانوں کے جھکے ہوئے سر گرو سے اُونچے ہوجاتے ہیں وہ نئی زندگی کی روشنی کو اپنے قریب محسوس کرتے ہیں اور مسکراتے ہیں ۔

کان کاٹ کر بھینٹ کر دینے کے بعد ونسنٹ کا جیون اور دوبھر ہوگیا ۔ محلے کے آوارہ لڑکے رات دن اُسے چڑھاتے۔ اُس کے چتر پھاڑ ڈالتے اور سمجھدار کہلانے والے لوگ بھی اُسمیں حصہ لیتے اسی طرح کئی دن نکل گئے ۔ دن پر دن اُسکے لئے بھاری ہوتا جاتا تھا ۔ پھر تھیو آیا اور اس کا علاج کرایا پر کچھ نہ ہوا ۔

کلا کا یہ پجاری اُنہیں دنوں آورس کے پاگل خانے میں بھیج دیا گیا ۔ لیکن وہاں کے ڈاکٹر اُسکی کیا دوا کرتے ۔ اُسکی دوا اپنے ہی پاس تھی ۔ وہ تو خود دنیا کا مسیحا بن کر آیا تھا ۔ اُسکی سنگت پاکر ڈاکٹر اُسے سمجھکر حیران رہ گئے ۔ یہاں پاگلوں کو دیکھکر ونسنٹ کو جیون کو اور سمجھنے کا موقع ملا ۔ وہ پاگلوں کی سیوا میں لگ گیا ۔ وہ آس پاس کے چتر بھی کھینچتا ۔ ڈاکٹروں نے یہ دیکھکر اُسے اسپتال ہی میں آزاد کر دیا ۔

चित्र बनाना मुझे ज़्यदा पसंद है. लम्बे कपड़े पहने बच्चों को मैं अपना देवता मानता हूँ." वह बूढ़ियों और कुंआरियों के चित्र खींचने में बहुत होशियार था, जिनके लिये उसने कहा था—"बूढ़ियों के चेहरे धूल भरी घास की तरह नुकीले हैं और जवान लड़कियाँ, जो खेतों की तरह ताज़ा हैं और जिनकी हर एक रेखा अछूती और कुँआरी है."

वान गोक के यह चित्र साधारन नहीं हैं. बल्कि बहुत ही ऊँचे दरजे के चित्र हैं, जिन में जान है. इन तस्वीरों की 'धरती' अपनी कहानी कहती है. इनका 'फूल' डाली पर लहराता मालूम होता है. 'खेत का धान' जीवन की अमरता का संदेस देता है. आँधी पानी के चित्रों में, 'बिजलियाँ' कुछ कहती हैं. उनमें अजीब जादू और विचित्र मोहिनी है. उसने इनसानी शकल सूरत की ऊपरी रेखाएं खींच कर रंग रोग़न नहीं भर दिया. बल्कि उसके दिल, दिमाग़ और कलेजे भी काग़ज़ पर उतार दिये. उसने यह भी बता दिया कि उसके चित्र का माडल क्या सोच रहा है, क्या कर रहा है, क्या कहना चाहता है और क्या माँग रहा है.

टाल्स्टाय और डिकेन्स की तरह विन्सेन्ट का विश्वास था कि कला का कुछ मक़सद होना चाहिये. उसका कोई निश्चित संदेस होना चाहिये. कला सिर्फ़ नैतिक उपदेशों का ढाँचा या उनसे भरा बोझ नहीं है. उसने उस सच्चे धर्म और पाक मज़हब पर विश्वास किया जो दुनिया में, सम्पूर्न मानवता में रोशन है. उसने साम्यवादी संसार का सपना ही नहीं देखा, अपने जीवन में उसके बुनियादी उसूलों पर अमल करके भी दिखा दिया. उसने बेकारों और

چتر بنانا مجھے زیادہ پسند ہے. لمبے کپڑے پہنے بچوں کو میں اپنے دیوتا مانتا ہوں." وہ بوڑھیوں اور کنواریوں کے چتر کھینچنے میں بہت ہوشیار تھا، جنکے لئے اُسنے کہا تھا—"بوڑھیوں کے چہرے دھول بھری گھاس کی طرح نوکیلے ہیں اور جوان لڑکیاں، جو کھیتوں کی طرح تازہ ہیں اور جنکی ہر ایک ریکھا اچھوتی اور کنواری ہے"

وان گوک کے یہ چتر سادھارن نہیں ہیں، بلکہ بہت ہی اونچے درجے کے چتر ہیں، جن میں جان ہے. ان تصویروں کی 'دھرتی' اپنی کہانی کہتی ہے. ان کا 'پھول' ڈالی پر لہراتا معلوم ہوتا ہے. 'کھیت کا دھان' جیون کی امرتا کا سندیس دیتا ہے. آندھی پانی کے چتروں میں 'بجلیاں' کچھ کہتی ہیں. اُن میں عجیب جادو اور وچتر موہنی ہے. اُسنے انسانی شکل صورت کی اوپری ریکھائیں کھینچ کر رنگ روغن نہیں بھر دیا بلکہ اُسکے دل، دماغ اور کلیجے بھی کاغذ پر اتار دیئے. اُس نے یہ بھی بتا دیا کہ اُس کے چتر کا ماڈل کیا سوچ رہا ہے، کیا کر رہا ہے، کیا کہنا چاہتا ہے اور کیا مانگ رہا ہے

تالستائے اور ڈیکنس کی طرح ونسنٹ کا وشواس تھا کہ کلا کا کچھ مقصد ہونا چاہئے. اُسکا کوئی نشچت سندیس ہونا چاہئے. کلا صرف نیتک اُپدیشوں کا ڈھانچہ یا اُن سے بھرا بوجھ نہیں ہے. اُس نے اُس سچے دھرم اور پاک مذہب پر وشواس کیا جو دنیا میں سمپورن مانوتا میں روشن ہے. اُس نے سامیہ وادی سنسار کا سپنا ہی نہیں دیکھا، اپنے جیون میں اُسکے بنیادی اصولوں پر عمل کرکے بھی دکھا دیا. اُسنے بیکاروں اور

मूरत बसाली. वेश्याओं के घर जाने वाला विन्सेन्ट गागिन की तरह खुश रहने नहीं जा रहा था. वह बड़ा गंभीर था. जिन्दगी की तहें उसके सामने खुलती जा रही थीं और उसके सामने खड़ी होकर अपना सही रूप दिखाते हुए अपना बयान देती जा रही थीं.

ऐसे समय, बड़े दिन का त्योहार आ गया. लड़की हमेशा विन्सेन्ट के दाहिने कान की तारीफ़ किया करती थी, बोली कि बड़े दिन के उपहार में यह कान मुझे दे देना.

विन्सेन्ट सच्चा प्रेमी था. उसके जीवन में कहीं छल कपट को जगह ही नहीं थी. बड़े दिन की सुबह को ही वह अपने हाथों में कटा कान लिये हुए प्रेमिका के घर जा पहुंचा. वह देखकर एक दम पीछे हट गई, चीख उठी. उसने एक मामूली आदमी से नहीं एक महात्मा से मज़ाक़ किया था

आर्लेस में वान गोक ने जो कई चित्र बनाए उनमें से एक दाढ़ी वाले डाकिये रूलिन का चित्र मशहूर है. रूलिन. विन्सेन्ट का बड़ा मददगार था. वह हर माह उसके मनीआर्डर लाता, उसकी सेवा करता और उसे बचाता. लाइट हाउस की बूढ़ी मालकिन को भी उसने चित्रों में संजीवनी बूटी खिलाई है. आर्लेस में ही चाँदनी रातों में घूम घूम कर उसने "चाँदनी में साइप्रस" के ऊँचे पेड़ों वाले चित्र खींचे. इन चित्रों में 'सूरजमुखी,' 'जूतों का जोड़ा' 'लहराते खेत जिनपर कौए उड़ रहे हैं' 'क्रूसीफ़िकेशन' वग़ैरा बहुत मशहूर हुए हैं. वह कहता था—"मैं, अपने घर में पालना झुलाती माओं और लहरों में नाव . . . और कुचले हुए लोगों के

مورت بسالي. ویشیاؤں کے گھر جانے والا ونسنٹ گگن کی طرح خوش رہنے نہیں جا رہا تھا . وہ بڑا گمبھیر تھا زندگی کی تہیں اُسکے سامنے کھلتی جا رہی تھیں اور اُسکے سامنے کھڑي ہو کر اپنا صحیح روپ دکھاتے ہوئے اپنا بیان دیتی جا رہی تھیں .

ایسے سمے' بڑے دن کا تہوھار آگیا . لڑکی ھمیشہ ونسنٹ کے داھنے کان کی تعریف کیا کرتی تھی' بولي کہ بڑے دن کے اُپہار میں یہ کان مجھے دیدینا .

ونسنٹ سچا پریمي تھا . اُسکے جیون میں کہیں چھل کپٹ کو جگہ ھی نہیں تھی . بڑے دن کی صبح کو ھی وہ اپنے ھاتھوں میں کٹا کان لئے ہوئے پریمیکا کے گھر جا پہنچا . وہ دیکھکر ایک دم پیچھے ھٹ گئی' چیخ اُٹھی . اُسنے ایک معمولی آدمی سے نہیں ایک مہاتما سے مذاق کیا تھا .

آرلس میں وان گوک نے جو کئی چتر بنائے اُن میں سے ایک داڑھی والے ڈاکئے رولن کا چتر مشہور ہے . رولن ونسنٹ کا بڑا مددگار تھا ' وہ ہر ماہ اُسکے منی آرڈر لاتا' اُسکی سیوا کرتا اور اُسے بچاتا . لائٹ ھاؤس کی بوڑھی مالکن کو بھی اُسنے چتروں میں سنجیونی بوٹي کھلائی ھے . آرلس میں ھی چاندنی راتوں میں گھوم گھوم کر اُسنے ''چاندنی میں سائپرس'' کے اونچے پیڑوں والے چتر کھینچے . اُن چتروں میں 'سورج مکھی' 'جوتوں کا جوڑا' 'لہراتے کھیت جن پر کوے اُڑ رہے ھیں' 'کروسیفکیشن' وغیرہ بہت مشہور ہوئے ھیں . وہ کہتا تھا—''میں' اپنے گھر میں پالنا جھلاتی ماؤں اور لہروں میں ناؤ کھیتے مانجھیوں کے چتر بناؤں گا . پچھڑے ہوئے اور کچلے ہوئے لوگوں کے

़ रात दिन तस्वीरें बनाने लगा. उसका मन प्रसन्न था. एक के बाद
ठ सैकड़ों तस्वीरें उसने बनाईं. कड़ी धूप और भूके पेट भी उसने
पना ब्रुश नहीं रोका. रेखाएँ कागज़ पर इनसान और पौदों की
क्लें बनाती रहीं और रंग पाकर बोलने लगीं. अब उसका सपना
ाग़ज़ और कैनवस पर सही सही उतर रहा थ. अब उसकी तस्वीर
 पात्र ठीक वैसे ही थे जैसे चलते फिरते आदमी. उसके बनाए
ान के खेत, आलू, फूल और चिड़ियाँ बिलकुल कुदरती मालूम
ाती थीं. दोनों में रंग था दोनों में उड़ान थी और एक हमेशा गूँजने
ाली ज़िन्दगी की जीत की आवाज़ थी.

आर्लेस में विन्सेन्ट ने अपने एक दोस्त गागिन को बुला लिया.
ागिन भी एक मशहूर चित्रकार था लेकिन वह पूरा पागल था.
सके असर ने विन्सेन्ट को बड़ी हानि पहुँचाई दोनों चित्रकार
. साथ ही रहते और तस्वीरें बनाते. खाते पीते और उठते, बैठते
ाड़ते झगड़ते और हँसते ! गागिन के जीवन का वेश्याओं से गहरा
म्बन्ध था. पेरिस की सैकड़ों वेश्याएँ उसे जानती थीं. जब विन्सेन्ट
ससे पहली बार मिला तो गागिन के कमरे में इतनी लड़कियाँ
ीं कि विन्सेन्ट अचरज से बुत बना खड़ा रह गया कुछ भी हो,
ागिन पहुँचा हुआ आदमी था. उसने वेश्या जीवन के जो चित्र
ींचे, वह तड़पा देने वाले हैं.

आर्लेस की एक वेश्या से गागिन के ज़रिये विन्सेन्ट का परिचय
हुआ यह गुड़िया जैसी हँसमुख लड़की विन्सेन्ट के दुखी मन में
... और विन्सेन्ट ने फिर से अपने टूटे मन मन्दिर में एक

وہ رات دن تصویریں بنانے لگا ۔ اُسکا من پرسن تھا ۔ ایک کے بعد ایک
سیکڑوں تصویریں اُسنے بنائیں. کڑی دھوپ اور بھوکے پیٹ بھی اُسنے
اپنا برش نہیں روکا ۔ ریکھائیں کاغذ پر انسان اور پودوں کی شکلیں بناتی
رہیں اور رنگ پاکر بولنے لگیں ۔ اب اُس کا سپنا کاغذ اور کینوس
پر صحیح صحیح اُتر رہا تھا ۔ اب اُسکی تصویر کے پاتر ٹھیک ویسے
ہی تھے جیسے چلتے پھرتے آدمی ۔ اُسکے بنائے دھان کے کھیت، آلو،
پھول اور چڑیاں بالکل قدرتی معلوم ہوتی تھیں ۔ دونوں میں
رنگ تھا، دونوں میں اُڑان تھی اور ایک ہمیشہ گونجنے والی
زندگی کی جیت کی آواز تھی ۔

آرلس میں ونسنٹ نے اپنے ایک دوست گاگن کو بلایا لیا ۔ گاگن
بھی ایک مشہور چترکار تھا لیکن وہ پورا پاگل تھا ۔ اُسکے اثر نے
ونسنٹ کو بڑی ہانی پہنچائی ۔ دونوں چترکار تھے ۔ ساتھ ہی
رہتے اور تصویریں بناتے ۔ کھاتے پیتے اور اُٹھتے بیٹھتے لڑتے جھگڑتے
اور ہنستے ! گاگن کے جیون کا ویشیاؤں سے گہرا سمبندھ تھا پیرس
کی سیکڑوں ویشیائیں اُسے جانتی تھیں جب ونسنٹ اُس سے
پہلی بار ملا تو گاگن کے کمرے میں اتنی لڑکیاں تھیں کہ ونسنٹ
اچرج سے بت بنا کھڑا رہ گیا کچھ بھی ہو، گاگن پہنچا ہوا آدمی
تھا ۔ اُسنے ویشیا جیون کے جو چتر کھینچے، وہ تڑپا دینے والے
ہیں ۔

آرلس کی ایک ویشیا سے گاگن کے ذریعے ونسنٹ کا پریچے ہوا ۔
یہ گڑیا جیسی ہنس مکھ لڑکی ونسنٹ کے دکھی من میں گھر کر
گئی اور ونسنٹ نے پھر سے اپنے ٹوٹے من مندر میں ایک

थियो बाजार गया. अच्छे कपड़े और खाना लाया. उसे नहला कर कपड़े पहनाए. गरम खाना खिलाया और सोने जाने का हुक्म दिया. विन्सेन्ट को कुछ राहत मिली.

थियो उसे पेरिस ले आया और उसे अपने ही पास रखा ताकि उसकी अच्छी तरह देख भाल कर सके. पेरिस में थियो विन्सेन्ट को लोगों से मिलाता. जिनमें बड़े बड़े कलाकर—पिसारो, लावत्रेक, स्युरेत और कहानी कार एमली ज़ोला और उसके चेले मोपासाँ थे. यह वही आज़ाद और मस्त नौजवान थे जिन्होंने अपनी कहानियों में उन पात्रों को जगह दी थी जिन्हें दुनिया में कहीं ठिकाना न था. अपने समय के पेरिस ने उन्हें ठुकराया और उनका मज़ाक़ उड़ाया लेकिन कुछ ही बरस के बाद सारी दुनिया उन्हें खोजती हुई आई और उनका नाम लेकर अपने को धन्य समझने लगी. सचाई पसन्दों का यह सारा गिरोह भूकों मरता था. पागल और सनकी समझा जाता था. लेकिन यह सब कुछ समझने वालों को क्या मालूम था कि आने वाले समय के महान कलाकर यही लोग माने जाएंगे.

इन दिनों विन्सेन्ट के उत्साह का ठिकाना नहीं था, उसे हिम्मत बंधी. मन की झिझक दूर हो गई. बरसों की तपस्या अब बरदान पाने वाली थी. उसे अपनी कला का मोल देने वालों की नहीं. मोल आँकने वालों की ज़रूरत थी. नए आत्म विश्वास ने विन्सेन्ट में नई जान फूँक दी. थियो की मदद से उसने पेरिस के शोर गुल से दूर. आर्लेस में नया मकान लिया. 'लाइट हाउस' (रोशनी का घर) उसका नाम रखा. उसको सजा संवार कर उसे अपना स्टुडियो बनाया, "मुझे अब फिर से सब काम शुरू करना चाहिये." और

تھیو بازار گیا . اچھے کپڑے اور کھانا لایا . اُسے نہلا کر کپڑے پہنائے . گرم کھانا کھلایا اور سونے جانے کا حکم دیا . ونسنٹ کو کچھ راحت ملی .

تھیو اُسے پیرس لے آیا اور اُسے اپنے ہی پاس رکھا تاکہ اُسکی اچھی طرح دیکھ بھال کر سکے . پیرس میں تھیو ونسنٹ کو لوگوں سے ملاتا . جن میں بڑے بڑے کلاکار—پسارو، لوتریک سوریت اور کہانی کار ایملی زولا اور اُسکے چیلے موپاساں تھے . یہ وہی آزاد اور مست نوجوان تھے جنھوں نے اپنی کہانیوں میں اُن پاتروں کو جگہ دی تھی جنھیں دنیا میں کہیں ٹھکانا نہ تھا . اپنے سمے کے پیرس نے اُنھیں ٹھکرایا اور ان کا مذاق اُڑایا . لیکن کچھ ہی برس کے بعد ساری دنیا اُنھیں کھوجتی ہوئی آئی اور اُن کا نام لے کر اپنے کو دھنیہ سمجھنے لگی . سچائی پسندوں کا یہ سارا گروہ بھوکوں مرتا تھا . پاگل اور سنکی سمجھا جاتا تھا . لیکن یہ سب کچھ سمجھنے والوں کو کیا معلوم تھا کہ آنے والے سمے کے مہان کلاکار یہی لوگ مانے جائینگے .

ان دنوں ونسنٹ کے اُتساہ کا ٹھکانہ نہیں تھا . اُسے ہمت بندھی . من کی جھجھک دور ہو گئی . برسوں کی تپسیا اب بردان پانے والی تھی . اُسے اپنی کلا کا مول دینے والوں کی نہیں . مول آنکنے والوں کی ضرورت تھی . نئے آتم وشواس نے ونسنٹ میں نئی جان پھونک دی . تھیو کی مدد سے اُسنے پیرس کے شورغل سے دور . آرلس میں نیا مکان لیا . 'لائٹ ہاؤس' (روشنی کا گھر) اُسکا نام رکھا . اُسکو سجا سنوار کر اُسے اپنا اسٹوڈیو بنایا ' "مجھے اب پھر سے سب کام شروع کرنا چاہئے ." اور

कर अपने को भूल गया. दोनों एक हो गए. उसे भी जैसे ईश्वर ने इसी के लिये भेजा था. बाद में विन्सेन्ट ने उसे अपने स्टुडियो में रख लिया. अस्पताल में उसके बच्चा पैदा हुआ.

इस औरत ने हालाँकि वान गोक की बड़ी सेवा की और हालाँकि वान गोक ने उसकी बहुत पूजा की, पर इस औरत का स्वभाव बहुत सख़्त था, और अब भी वह अपने आवारापन से बाज़ न आती थी. अब भी गाली गलौज और वेश्या पन को उसने तलाक़ नहीं दिया था. विन्सेन्ट कई तरह की परेशानियों में पड़ गया. वह बीमार हो गया और उसका भाई आकर उसे ले गया.

इस औरत को अपनी तस्वीर "वेदना" में उसने अमर कर दिया है और तस्वीर के नीचे लिखा है—"क्या कारन है कि एक औरत इस तरह अकेली और ठुकराई हुई है ?"

और विन्सेन्ट ने बताया—"मेरा जीवन बेकार है. लेकिन मैं सबमें इनसानियत को महसूस कर रहा हूँ."

और थियो जब एन्टवर्प आया और विन्सेन्ट के स्टुडियो में दाख़िल हुआ तो उसके अचरज की सीमा न रही कि पेरिस में रहने वाले इस मशहूर डायरेक्टर और गुपिल्स के हिस्सेदार का भाई किस बुरे हाल में जी रहा है. विन्सेन्ट का चेहरा सूख गया है. आँखें गढ़ों में धँस चुकी हैं घर में खाने को कुछ नहीं है. बदन पर कपड़े चिथड़े हो कर लटक रहे हैं. और वह फिर भी नई दुनिया और उसके नए इनसान का सपना देख रहा है. उसकी तस्वीरें खींच —— ३ ।

کر اپنے کو بھول گیا ۔ دونوں ایک ھوگئے ۔ اُسے بھی جیسے ایشور نے اِسی کے لئے بھیجا تھا ۔ بعد میں ونسنٹ نے اُسے اپنے اسٹوڈیو میں رکھ لیا ۔ اسپتال میں اُس کے بچہ پیدا ھوا ۔

اِس عورت نے حالانکہ وان گوک کی بڑی سیوا کی اور حالانکہ وان گوک نے اُسکی بہت پوجا کی، پر اس عورت کا سوبھاؤ بہت سخت تھا، اور اب بھی وہ اپنے آوارہ پن سے باز نہ آتی تھی ۔ اب بھی گالی گلوچ اور ویشیاپن کو اُسنے طلاق نہیں دیا تھا ۔ ونسنٹ کئی طرح کی پریشانیوں میں پڑ گیا ۔ وہ بیمار ھو گیا اور اُسکا بھائی آکر اُسے لے گیا ۔

اس عورت کو اپنی تصویر ''ویدنا'' میں اُسنے امر کردیا ھے اور تصویر کے نیچے لکھا ھے— ''کیا کارن ھے کہ ایک عورت اِس طرح اکیلی اور ٹھکرائی ھوئی ھے ؟''

اور ونسنٹ نے بتایا— ''میرا جیون بیکار ھے ۔ لیکن میں سب میں انسانیت کو محسوس کر رھا ھوں ''

اور تھیو جب اینٹ ورپ آیا اور ونسنٹ کے اسٹوڈیو میں داخل ھوا تو اُسکے اچرج کی سیما نہ رھی کہ پیرس میں رھنے والے اِس مشہور ڈائریکٹر اور گوپلس کے حصے دار کا بھائی کس برے حال میں جی رھا ھے ۔ ونسنٹ کا چہرہ سوکھ گیا ھے ۔ آنکھیں گڑھوں میں دھنس چکی ھیں ۔ گھر میں کھانے کو کچھ نہیں ھے ۔ بدن پر کپڑے چیتھڑے ھوکر لٹک رھے ھیں اور وہ پھر بھی نئی دنیا اور اُسکے نئے انسان کا سپنا دیکھ رھا ھے اُس کی تصویریں کھینچ رھا ھے !

भर उसके खिलाफ थी. उसके चित्रों का लोग मज़ाक़ उड़ाते. उसे पागल और सनकी कहकर मारते पीटते. बच्चे पत्थर और ढेले फेंकते. लोग उसे ठगते. फिर भी भूक का यह कारीगर अपनी तपस्या में लगा रहा. वह इनसान की ज़िन्दगी को समझने की कोशिश कर रहा था. वह वर्ग भेद और भूक के खिलाफ लड़ रहा था. अपनी तस्वीरों को गिरे हुओं की आवाज़ बना रहा था. पर उस आवाज़ को कौन सुनता? पत्थर को पिघला देने वाले उसके चित्र अभी संगदिल इनसान को पिघला देने वाले नहीं बने थे. और जिनके दिल पिघले थे वह चन्द ही थे.

विन्सेन्ट एन्टवर्प चला आया. आधी रोटी खाकर, भाई के भेजे हुए पैसों में से कुछ बचाकर अपनी तस्वीरों के माडल के लिये लोगों को कुछ दे कर सामने बिठाता. उनके चित्र खींचता. इस तरह वह चित्रकला की साधना करता रहा.

एन्टवर्प में ५ बच्चों वाली. चेचक भरे मुँह की एक वेश्या से विन्सेन्ट की दोस्ती हो गई. इस समय उसके पेट में बच्चा था. वह आवारा, शराबी और बदचलन होते हुए भी नेक और सीधी थी. उसके जीवन में कहीं छल कपट और धोका नहीं था. वह वेश्या इसलिये थी कि उसके ५ बच्चे थे. कुटुम्ब था, मां और भाई थे. विन्सेन्ट का हृदय सागर इस औरत की दशा देखकर महीनों तक ज्वार उठाता रहा. वह पागल हो गया, परेशान हो गया. उसी में उसे दुनिया की सताई हुई, ठुकराई हुई और सदियों से कुचली हुई औरत के दर्शन हुए. विन्सेन्ट ने उसे अन्नपूर्णा माना और उसकी सेवा में लग

بھر اُس کے خلاف تھی ۔ اُسکے چتروں کا لوگ مذاق اُڑاتے ۔ اُسے پاگل اور سنکی کہکر مارتے پیٹتے ۔ بچے پتھر اور ڈھیلے پھینکتے ۔ لوگ اُسے ٹھگتے ۔ پھر بھی بھوک کا یہ کاریگر اپنی تپسیا میں لگا رہا ۔ وہ انسان کی زندگی کو سمجھنے کی کوشش کر رہا تھا ۔ وہ ورگ بھید اور بھوک کے خلاف لڑ رہا تھا ۔ اپنی تصویروں کو گرے ہوؤں کی آواز بنا رہا تھا ۔ پر اُس آواز کو کون سنتا ؟ پتھر کو پگھلا دینے والے اُس کے چتر ابھی سنگدل انسان کو پگھلا دینے والے نہیں بنے تھے ۔ اور جنکے دل پگھلے تھے وہ چند ہی تھے ۔

ونسنٹ اینٹ ورپ چلا آیا ۔ آدھی روٹی کھاکر، بھائی کے بھیجے ہوئے پیسوں میں سے کچھ بچا کر اپنی تصویروں کے ماڈل کے لئے لوگوں کو کچھ دے کر سامنے بٹھاتا ۔ اُن کے چتر کھینچتا ۔ اِس طرح وہ چتر کلا کی سادھنا کرتا رہا ۔

اینٹ ورپ میں ۵ بچوں والی، چیچک بھرے منہ کی ایک ویشیا سے ونسنٹ کی دوستی ہوگئی ۔ اس سمے اُسکے پیٹ میں بچہ تھا ۔ وہ آوارہ، شرابی اور بدچلن ہوتے ہوئے بھی نیک اور سیدھی تھی ۔ اُسکے جیون میں کہیں چھل کپٹ اور دھوکا نہیں تھا ۔ وہ ویشیا اِس لئے تھی کہ اُسکے ۵ بچے تھے، کٹمب تھا، ماں اور بھائی تھے ۔ ونسنٹ کا ہردے ساگر اس عورت کی دشا دیکھکر مہینوں تک جوار اُٹھاتا رہا ۔ وہ پاگل ہوگیا، پریشان ہوگیا ۔ اُسی میں اُسے دنیا کی ستائی ہوئی، ٹھکرائی ہوئی اور صدیوں سے کچلی ہوئی عورت کے درشن ہوئے ۔ ونسنٹ نے اُسے اَن پورنا مانا اور اُسکی سیوا میں لگ

न आई कि उससे क्या ग़लती हुई है ? उसे तो अब भी विश्वास था कि लड़की उससे मुहब्बत करती है.

लड़की अपने पिता के घर लौट गई. विन्सेन्ट भी पहुँच गया. वहाँ उसके मौसा ने अपनी लड़की से न मिलने देने की निगरानी रक्खी. जब विन्सेन्ट को यह मालूम हुआ तो वह आग बबूला हो गया. विन्सेन्ट ने लड़की के बाप से मिल कर शादी की बात की. मगर उसे जवाब मिला कि तू भिकमंगा हो कर इतने बड़े पादरी की बेटी से ब्याह कैसे कर सकता है ? वह बहुत बड़े ज़मींदार के घर जा रही है. पागल हो कर विन्सेन्ट लौट आया लेकिन उसने कुछ सोच कर फिर मौसा का दरवाज़ा खटखटाया. वहाँ नौकरानी ने घर में घुसने से मना किया. विन्सेन्ट उसे ढकेल कर अन्दर चला गया और देखा कि काली पोशाक वाली एक छाया एक तरफ़ छिप गई है. लड़की के बाप ने विन्सेन्ट को बहुत बुरा भला कहा लेकिन विन्सेन्ट अपनी ज़िद पर अड़ा रहा और बोला कि मुझे एक बार उस से मिल लेने दो. बाप ने पिस्तौल निकाल लिया और विन्सेन्ट ने क़मीज़ के बटन खोल कर सीना तान दिया मगर उसी समय उसकी मौसी बीच में आ गई. विन्सेन्ट बोला—"कहो कि नहीं मिलने देंगे." और उसने अपना हाथ जलते हुए बड़े लैम्प पर धर दिया. चमड़ा जला, मांस जला, हड्डी जलने लगी मगर न तो मौसा पिघला और न विन्सेन्ट ही पीछे हटा. आख़िर मौसी ने लैम्प को ढकेल दिया और नौकरों ने विन्सेन्ट को सड़क पर फेंक दिया.

विन्सेन्ट का दिल दो बार टूट चुका था. शरीर को सर्दी, बरसात

نہ آئی کہ اُس سے کیا غلطی ہوئی ہے ؟ اُسے تو اب بھی وشواس تھا کہ لڑکی اُس سے محبت کرتی ہے .

لڑکی اپنے پتا کے گھر لوٹ گئی . ونسنٹ بھی پہنچ گیا وہاں اُسکے موسا نے اپنی لڑکی سے نہ ملنے دینے کی نگرانی رکھی . جب ونسنٹ کو یہ معلوم ہوا تو وہ آگ بگولا ہو گیا ونسنٹ نے لڑکی کے باپ سے ملکر شادی کی بات کی مگر اُسے جواب ملا کہ تو بھک منگا ہو کر اتنے بڑے پادری کی بیٹی سے بیاہ کیسے کر سکتا ہے ؟ وہ بہت بڑے زمیندار کے گھر جا رہی ہے پاگل ہوکر ونسنٹ لوٹ آیا لیکن اُس نے کچھ سوچ کر موسا کا دروازہ کھٹکھٹایا . وہاں نوکرانی نے گھر میں گھسنے سے منع کیا . ونسنٹ اُسے ڈھکیل کر اندر چلا گیا اور دیکھا کہ کالی پوشاک والی ایک چھایا ایک طرف چھپ گئی ہے . لڑکی کے باپ نے ونسنٹ کو بہت برا بھلا کہا لیکن ونسنٹ اپنی ضد پر اڑا رہا اور بولا کہ مجھے ایک بار اُس سے مل لینے دو باپ نے پستول نکال لیا اور ونسنٹ نے قمیض کے بٹن کھول کر سینہ تان دیا مگر اُسی سمے اُسکی موسی بیچ میں آگئی . ونسنٹ بولا — "کہو کہ نہیں ملنے دینگے " اور اُسنے اپنا ہاتھ جلتے ہوئے لیمپ پر دھر دیا . چمڑا جلا ماس جلا ہڈی جلنے لگی مگر نہ تو موسا پگھلا اور نہ ونسنٹ ہی پیچھے ہٹا . آخر موسی نے لیمپ کو ڈھکیل دیا اور نوکروں نے ونسنٹ کو سڑک پر پھینک دیا .

ونسنٹ کا دل دو بار ٹوٹ چکا تھا . شریر کو سردی، برسات اور

डर, भूक और अन्याय न हो. उसने भाई को लिखा—"मैं इनसानों के बीच रह रहा हूँ, उन्हीं के लिये जी रहा हूँ. महान कलाकार मसीह ने भी तो यही किया था.'' इस तरह उसे भरोसा था कि उसके चित्र चाहे बहुत सुहावने और लुभावने न हों. चाहे वह मामूली दर्जे के हों पर उनमें एक ऐसी आवाज़ ज़रूर होगी जिसे सुनने के लिये दुनिया एक दिन मजबूर हो जायगी.

विन्सेन्ट बेल्जियम में बहुत बीमार हो गया. घर वाले अपने साथ उसे ले गए. पर वहाँ अकेले उसका जी बेचैन रहने लगा. वह दिन भर बाहर भटकता, खेतों की मेड़ों पर बैठ कर धान के चित्र बनाता. किसानों को देखता, उनके जीवन को और उनकी कठिनाइयों को देखता, उनकी मदद करता और उन्हीं का सा जीवन बिताता. उसने जैसा देखा, हूबहू तस्वीर में उतार दिया.

उन्हीं दिनों उसकी मौसी की एक लड़की विधवा होकर अपने बच्चे को लिये उसके यहाँ आ गई थी. दोनों दुखियों का मन मिल गया. दोनों साथ साथ घूमते. वह दिन भर उसे जंगलों में चित्र बनाते देखती. लड़की कलाकार के मन में बस गई. कलाकार ने एक दिन उसे बाजुओं में कस कर गले से लगा लिया. वह लड़की अपने बच्चे को छाती से चिमटाए. भरे खेतों में से पागलों की तरह दौड़ती अपने घर आई और बंद कमरे में घन्टों रोती रही. मां बाप ने अपनी लड़की के अपमान पर विन्सेन्ट को बहुत बुरा भला कहा. विन्सेन्ट को भी दुख हुआ, पछतावा हुआ, मगर उसकी समझ में यह बात

دنیا مانگ رهی هیں . اسے ایسا سنسار چاهئے جس میں لوٹ گھسوٹ، ڈر، بھوک اور انیائے نہ هو . اس نے بھائی کو لکھا—"میں انسانوں کے بیچ رہ رها هوں، انھیں کے لئے جی رها هوں . مہان کلاکار مسیح نے بھی تو یہی کیا تھا ." اِس طرح اُسے بھروسہ تھا کہ اس کے چتر چاهے بہت سہاونے اور لبھاونے نہ هوں، چاهے وہ معمولی درجے کے هوں پر ان میں ایک ایسی آواز ضرور هوگی جسے سننے کے لئے دنیا ایک دن مجبور هو جائیگی .

ونسنٹ بلجیم میں بہت بیمار هوگیا . گھر والے اپنے ساتھ اسے لے گئے . پر وهاں اکیلے اس کا جی بے چین رهنے لگا . وہ دن بھر باهر بھٹکتا، کھیتوں کی میڈوں پر بیٹھکر دھان کے چتر بناتا . کسانوں کو دیکھتا، ان کے جیون کو اور ان کی کٹھنائیوں کو دیکھتا، ان کی مدد کرتا اور انھیں کا سا جیون بتاتا . اسنے جیسا دیکھا، هو بہو وهی تصویر میں اتار دیا .

انھیں دنوں اسکی موسی کی ایک لڑکی ودھوا هوکر اپنے بچے کو لئے اس کے یہاں آگئی تھی . دونوں دکھیوں کا من مل گیا . دونوں ساتھ ساتھ گھومتے . وہ دن بھر اسے جنگلوں میں چتر بناتے دیکھتی . لڑکی کلاکار کے من میں بس گئی . کلاکار نے ایک دن اسے بازوؤں میں کس کر گلے سے لگا لیا . وہ لڑکی اپنے بچے کو چھاتی سے چمٹائے، بھرے کھیتوں میں سے پاگلوں کی طرح دوڑتی اپنے گھر آئی اور بند کمرے میں گھنٹوں روتی رهی . ماں باپ نے لڑکی کے اپمان پر ونسنٹ کو بہت برا بھلا کہا . ونسنٹ کو بھی دکھ هوا، پچھتاوا هوا مگر اسکی سمجھ میں یہ بات

रोगियों की दवा करता, बूढ़ों को तसल्ली देता और नंगों को अपने कपड़े उतार कर पहना देता. उसने उन्हें भूक से तड़पते देखा, ठंड में ठिठुरते देखा और बरखा में बे सहारे भीगते देखा. उसे उन्हीं में थरथराता ईसू नज़र आया. वह उन्हीं की तस्वीरें बनाने लगा. अब उसने अपने पास पड़ोस की सच्ची तस्वीरें बनाईं. और जब उसके भाई थियो ने उन्हें देखा तो वह धक से रह गया. थियो कला का बड़ा जानकार और परखैया था. सारे पेरिस में उसकी बड़ी इज़्ज़त थी. थियो को विश्वास हो गया कि उसका यह पागल भाई एक न एक दिन दुनिया का महान चित्रकार बनेगा. इसलिये वह निराशा में डूबे विन्सेन्ट को हिम्मत दिलाता रहता. उसके लिये नई नई किताबें, रंग और कपड़े भेजता, रुपया पैसा भेजता और उसे सलाह देता. उसके काम की आलोचना भी करता. पागल कलाकार की ऐसी सहायता करने से घर और बाहर वाले, जान पहचान वाले सब थियो से नाराज़ हो गए. पर थियो तो भविष्य की एक बड़ी से बड़ी हस्ती की सेवा कर रहा था, उसने लोगों की बातों पर ज़रा भी ध्यान न दिया. अगर भाई हो तो लछमन के बाद थियो जैसा हो !

भोर के चक्कर में विन्सेन्ट वान गोक अपनी रोटी मज़दूरों में बाँट आता, पैसा दे आता और ख़ुद भूका ही काम में लग जाता. उसकी इस भलाई ने, भूक और सर्दी ने उसका बदन तोड़ दिया. वह अकसर बीमार और बेहोश रहने लगा. लेकिन उसके मन में अटल विश्वास था कि वह मसीह के सच्चे रास्ते पर चल रहा है. उसका क़लम, ब्रुश, रंग और लकीरें नया इनसान और नई

روگیوں کی دوا کرتا' بوڑھوں کو تسلی دیتا اور ننگوں کو اپنے کپڑے اُتار کر پہنا دیتا . اُس نے اُنھیں بھوک سے تڑپتے دیکھا ' ٹھنڈ میں ٹھٹھرتے دیکھا اور برکھا میں بے سہارے بھیگتے دیکھا . اُسے انھیں میں تھرتھراتا یسوع نظر آیا . وہ اُنھیں کی تصویریں بنانے لگا . اب اُس نے اپنے پاس پڑوس کی سچی تصویریں بنائیں' اور جب اُسکے بھائی تھیو نے اُنھیں دیکھا تو وہ دھک سے رہ گیا . تھیو کلا کا بڑا جانکار اور پرکھیا تھا . سارے پیرس میں اُسکی بڑی عزت تھی . تھیو کو وشواس ہوگیا کہ اُسکا یہ پاگل بھائی ایک نہ ایک دن دنیا کا مہان چترکار بنے گا اِسلئے وہ نراشا میں ڈوبے ونسنٹ کو ہمت دلاتا رہتا . اُسکے لئے نئی نئی کتابیں' رنگ اور کپڑے بھیجتا' روپیہ پیسہ بھیجتا اور اُسے صلاح دیتا . اُسکے کام کی آلوچنا بھی کرتا . پاگل کلاکار کی ایسی سہایتا کرنے سے گھر اور باہر والے' جان پہچان والے سب تھیو سے ناراض ہو گئے . پر تھیو تو بھوشیہ کی ایک بڑی سے بڑی ہستی کی سیوا کر رہا تھا . اُس نے لوگوں کی باتوں پر ذرا بھی دھیان نہ دیا . اگر بھائی ہو تو لچھمن کے بعد تھیو جیسا ہو !

بھور کے چکر میں ونسنٹ وان گوک اپنی روٹی مزدوروں میں بانٹ آتا' پیسے دے آتا اور خود بھوکا ہی کام میں لگ جاتا . اُس کی اِس بھلائی نے' بھوک اور سردی نے اُس کا بدن توڑ دیا . وہ اکثر بیمار اور بیہوش رہنے لگا لیکن اُسکے من میں اٹل وشواس تھا کہ وہ مسیح کے سچے راستے پر چل رہا ہے . اُس کا قلم' برش' رنگ اور لکیریں نیا انسان اور نئی

वह दूर लन्दन चल देता, अपनी प्रेमिका की एक झलक पा जाने के लिये. एक बार जो पहुंचा तो उर्सुला नई पोशाक में एक नौजवान की बाँह थामे गाड़ी में बैठ रही थी. बाजे बज रहे थे. आज उर्सुला का ब्याह हो गया था. आज वह पराई होगयी थ'.

अपनी प्रेमिका की आखिरी झलक देखकर निराश, हताश और भूका प्यासा विन्सेन्ट अपने डेरे की तरफ़ लौट पड़ा. रास्ते में बरफ़ के तूफ़ान ने उसे सड़क पर सुला दिया. लन्दन ने उसका दिल तोड़ दिया था. वह लन्दन से बेल्जियम आ गया वहाँ के गिरजे में बदली करा ली और दिल में मुहब्बत का दर्द लिये हुए विन्सेन्ट ने ब्रुश सँभाला और मुसव्विर बनने का इरादा किया. अब वह उर्सुला के बजाय कला का पुजारी बन गया. मगर उस वक्त उसकी तस्वीरें टेढ़ी मेढ़ी भद्दी लकीरों के सिवा और कुछ न होती थीं. कई बरस तक वह निराशा और नाउम्मीदी की हालत में जीता रहा. भूक और बेचैनी की मंज़िलों से गुज़रता रहा.

बेल्जियम में जिस जगह वह रहता था वह कोयले की खानों के क़रीब थी. खान के कामगारों में वह धर्म प्रचार करने जाया करता था. उनकी हालत देखकर वह काँप गया. उसकी नस नस तप उठी. दर्द से दिल भर गया. वह उन्हीं के चित्र बनाने में लग गया. फिर महीनों सोचता रहा और एक दिन उसने बाइबिल फेंक दी. कपड़े बाँट दिये. गिरजा की इमारत को आखिरी सलाम किया और पाव रोटी बनाने वाले एक ग़रीब मजदूर के घर रहने लगा वहाँ रहकर वह मजदूरों की सेवा करता. उनके बच्चों को पढ़ाता,

وہ دور لندن چل دیتا اپنی پریمیکا کی ایک جھلک پاجانے کے لئے ۔ ایک بار جو پہنچا تو اُرسلا نئی پوشاک میں ایک نوجوان کی بانہہ تھامے گاڑی میں بیٹھ رہی تھی ۔ باجے بج رہے تھے ۔ آج اُرسلا کا بیاہ ہو گیا تھا آج وہ پرائی ہو گئی تھی ۔

اپنی پریمیکا کی آخری جھلک دیکھکر نراش، ہتاش اور بھوکا پیاسا ونسنٹ اپنے ڈیرے کی طرف لوٹ پڑا ۔ راستے میں برف کے طوفان نے اُسے سڑک پر سلا دیا ۔ لندن نے اسکا دل توڑ دیا تھا ۔ وہ لندن سے بلجیم آگیا وہاں کے گرجے میں بدلی کرا لی اور دل میں محبت کا درد لئے ہوئے ونسنٹ نے برش سنبھالا اور مصور بننے کا ارادہ کیا اب وہ اُرسلا کے بجائے کلا کا پجاری بن گیا ۔ مگر اُس وقت اسکی تصویریں ٹیڑھی میڑھی بھدی لکیروں کے سوا اور کچھ نہ ہوتی تھیں کئی برس تک وہ نراشا اور ناامیدی کی حالت میں جیتا رہا بھوک اور بیچینی کی منزلوں سے گزرتا رہا ۔

بلجیم میں جس جگہ وہ رہتا تھا وہ کوئلے کی کانوں کے قریب تھی ۔ کھان کے کامگاروں میں وہ دھرم پرچار کرنے جایا کرتا تھا ۔ اُن کی حالت دیکھکر وہ کانپ گیا ۔ اُسکی نس نس تپ اُٹھی ۔ درد سے دل بھر گیا ۔ وہ اُنہیں کے چتر بنانے میں لگ گیا ۔ پھر مہینوں سوچتا رہا اور ایک دن اُس نے بائبل پھینک دی' کپڑے بانٹ دئیے گرجا کی عمارت کو آخری سلام کیا اور پاؤ روٹی بنانے والے ایک غریب مزدور کے گھر رہنے لگا یہاں رہکر وہ مزدوروں کی سیوا کرتا اُنکے بچوں کو پڑھاتا'

साधारन था और उस में कई दिनों तक कोई परिवर्तन नहीं आया. लेकिन वह ठहरा भावुक और सनकी. लन्दन में अपनी मालकिन की लड़की उर्सुला के प्रेम में पड़ गया. यह लड़की जितनी खूबसूरत और शानदार थी उतनी ही बेरहम और संगदिल थी. उसने वान गोक की मुहब्बत को ठुकरा दिया और उसका बड़ी हंसी उड़ाई. अमरीका के सबसे बड़े लेखक इर्विंग स्टोन ने अपनी किताब 'लस्ट फार लाइफ' में इस प्रेम का बड़ा दर्दनाक और सही चित्र खींचा है विन्सेन्ट उर्सुला के पीछे पागल था जहां उसके पैर पड़ते वह उसी जगह को अपना काबा समझने लगता जहां वह रहती, वहीं जगह उसके लिये काशी बन जाती. यही नहीं, उसका घर छोड़ देने पर तो वान गोक लन्दन की कड़कड़ाती सर्दी और बर्फ में ठिठुरता, फटे जूतों बीस बीस मील पैदल चलकर उर्सुला की एक झलक देख लेने के लिये, उसके घर के बाहर चक्कर काटता. और यह होता सनीचर से, क्यों कि सोमवार की सुबह उसे वापस स्कूल में पहुंचना होता जहां वह मुलाज़िम था.

इस प्रेम ने उसे पागल बना दिया. मां बाप ने बेटे को घर बुला लिया. लेकिन उसका जी न लगा और वह वापस लन्दन भाग आया. ग़रीबों के मुहल्लों में रह कर पादरी बना और बाइबिल का सही संदेसा सुनाया. उसका भाशन सुन कर लोग भौंचक्के रह जाते. उसकी बेढंगी शक्ल में उन्हें ईसू मसीह के दर्शन होते. पर वह अब भी उर्सुला का सपना देखता था, उसे अब भी नहीं भूला था. अपनी बाइबिल और अपनी उर्सुला—दुनिया में यही दो उसके सहारे थे. गिरजा में भाशन पूरा करते ही बाइबिल को अपनी जगह रख,

سادھارن تھا اور اُس میں کئی دنوں تک کوئی پریورتن نہیں آیا. لیکن وہ ٹھہرا بھاوک اور سنکی. لندن میں اپنی مالکن کی لڑکی اُرسلا کے پریم میں پڑ گیا. یہ لڑکی جتنی خوبصورت اور شاندار تھی اُتنی ہی بے رحم اور سنگدل تھی. اُس نے وان گوک کی محبت کو ٹھکرا دیا اور اُسکی بڑی ھنسی اُڑائی. امریکہ کے سب سے بڑے لیکھک اِرونگ اسٹون نے اپنی کتاب 'لسٹ فار لائف' میں اُس پریم کا بڑا دردناک اور صحیح چتر کھینچا ھے. ونسنٹ اُرسلا کے پیچھے پاگل تھا. جہاں اُسکے پیر پڑتے وہ اُسی جگہ کو اپنا کعبہ سمجھنے لگتا. جہاں وہ رھتی، وھی جگہ اُسکے لئے کاشی بن جاتی. یہی نہیں اُس کا گھر چھوڑ دینے پر تو وان گوک لندن کی کڑکڑاتی سردی اور برف میں ٹھٹھرتا، پھٹے جوتوں بیس بیس میل پیدل چلکر اُرسلا کی ایک جھلک دیکھ لینے کے لئے، اُسکے گھر کے باھر چکر کاٹتا. اور یہ ھوتا سنیچر سے، کیونکہ سوموار کی صبح اُسے واپس اسکول میں پہنچنا ھوتا جہاں وہ ملازم تھا.

اِس پریم نے اُسے پاگل بنا دیا. ماں باپ نے بیٹے کو گھر بلا لیا. لیکن اُسکا جی نہ لگا اور وہ واپس لندن بھاگ آیا. غریبوں کے محلوں میں رھکر پادری بنا اور بائبل کا صحیح سندیسہ سنایا. اُسکا بھاشن سنکر لوگ بھونچکے رہ جاتے. اُسکی بے ڈھنگی شکل میں اُنہیں یسوع مسیح کے درشن ھوتے. پر وہ اب بھی اُرسلا کا سپنا دیکھتا تھا، اُسے اب بھی نہیں بھولا تھا. اپنی بائبل اور اپنی اُرسلا—دنیا میں یہی دو اُسکے سہارے تھے. گرجا میں بھاشن پورا کرتے ھی بائبل کو اپنی جگہ رکھ،

और अपने काम में उसे इन तस्वीरों पर पाँच पचीस रुपए से अधिक न मिले. और जब पहली बार बड़ी क़ीमत में उसकी तस्वीर बिकी तो उसे बड़ा अचरज हुआ ! ख़रीदार मज़ाक़ तो नहीं कर रहा है ? लेकिन भूके वान गोक को क्या पता था कि ५० साल बाद उसका कौड़ी न कमा सकने वाला चित्र दस दस लाख डालर में बिकेगा. और जब अमरीका या इंग्लैंड में इनकी नुमाइश होगी तो इस तरह भीड़ होगी कि पुलिस को डंडे चलाने पड़ेंगे ! लेकिन कितने कलाकारों का ख़ून पी कर, कितनों के घर उजाड़ कर संसार में कलाएँ फूली फलीं, यह शायद कभी किसी ने नहीं सोचा है !

पादरी के बेटे विन्सेन्ट वान गोक का जन्म हालैंड में सन १८५३ में हुआ था. अगर वह चाहता तो पादरी का पेशा अपना कर काफ़ी शान से रह सकता था. या अपने एक चाचा का, जो फ़ौज में आला अफ़सर था, उसका वारिस बन सकता था. लेकिन वान गोक वारिस बनने के लिये पैदा नहीं हुआ था वह तो ख़यालों की दुनिया में रहने वालों, उन्हीं में जीने वालों को नया रास्ता दिखाने और नया संदेसा देने आया था !

१६ बरस की उम्र में वान गोक के बाप ने उसे 'गुपिलस' की पेरिस वाली दुकान पर भेज दिया. गुपिलस लन्दन और पेरिस की मशहूर तस्वीरें बेचनेवाली संस्था है. वान गोक का भाई थियो पेरिस वाली गुपिलस शाख़ का डायरेक्टर था.

पेरिस में उसने इतनी मेहनत और ईमानदारी से काम किया कि लन्दन भेज दिया गया. लन्दन में विन्सेन्ट का जीवन बहुत

اور اپنے کام میں اُسے اِن تصویروں پر پانچ پچیس روپے سے ادھک نہ ملے ۔ اور جب پہلی بار بڑی قیمت میں اُسکی تصویر بکی تو اُسے بڑا اچرج ھوا ۔ خریدار مذاق تو نہیں کر رہا ھے ؟ لیکن بھوکے وان گوک کو کیا پتہ تھا کہ ۵۰ سال بعد اُسکا کوڑی نہ کما سکنے والا چتر دس دس لاکھ ڈالر میں بکے گا ۔ اور جب امریکہ یا انگلینڈ میں ان کی نمائش ھوگی تو اس طرح بھیڑ ھوگی کہ پولیس کو ڈنڈے چلانے پڑینگے ۔ لیکن کتنے کلاکاروں کا خون پی کر، کتنوں کے گھر اُجاڑ کر سنسار میں کلائیں پھولی پھلیں، یہ شاید کبھی کسی نے نہیں سوچا ھے !

پادری کے بیٹے ونسنٹ وان گوک کا جنم ھالینڈ میں سن ۱۸۵۳ میں ھوا تھا ۔ اگر وہ چاھتا تو پادری کا پیشہ اپنا کر کافی شان سے رہ سکتا تھا ۔ یا اپنے ایک چاچا کا جو فوج میں اعلیٰ افسر تھا، اُسکا وارث بن سکتا تھا ۔ لیکن وان گوک وارث بننے کے لئے پیدا نہیں ھوا تھا ۔ وہ تو خیالوں کی دنیا میں رہنے والوں، اُنھیں میں جینے والوں کو نیا راستہ دکھانے اور نیا سندیسہ دینے آیا تھا !

۱۶ برس کی عمر میں وان گوک کے باپ نے اُسے 'گوپلس' کی پیرس والی دوکان پر بھیج دیا ۔ گوپلس لندن اور پیرس کی مشھور تصویریں بیچنے والی سنستھا ھے ۔ وان گوک کا بھائی تھیو پیرس والی گوپلس شاخ کا ڈائرکٹر تھا ۔

پیرس میں اُس نے اتنی محنت اور ایمانداری سے کام کیا کہ لندن بھیج دیا گیا ۔ لندن میں ونسنٹ کا جیون بہت

ख़याली तस्वीरों की जगह सचाई ज़ाहिर करने वाले चित्रों का सिक्का जमाया.

और यह चित्र बनाते समय वह अच्छी इमारतों या रेशमी गद्देदार कुर्सियों और मेज़ों पर नहीं था. न उसके पास उनके हासिल होने का कोई ज़रिया ही था. हाँ. अगर वह चाहता तो बड़ी शान से रह सकता था. पर अपने आसपास की, लन्दन, पेरिस और हेग की जनता और अवाम की दुर्दशा देखकर उसे अमीरी के विलासी जीवन से नफ़रत होगई थी और वह लूट खसोट का कट्टर विरोधी हो गया था

उसने अपने चित्र झोपड़ियों में. खेतों में बैठ कर बनाए. बरसती बरसात में वह बाहर घूमता. चिलचिलाती धूप उसे नहीं रोक पाती थी. गिरते बरफ़ में वह मैदानों में कहीं पड़ा मिलता. वान गोक केवल काफ़ी पी कर रह जाता. कभी काली रोटी खा कर रह जाता. कभी चाय और काफ़ी के पैसे न होने पर सिर्फ़ गरम पानी ही पी कर रह जाता. एक दो दिन नहीं महीनों तक वह केवल पानी पी पी कर गुज़र कर लेता था. या तो भोजन मिलता ही नहीं था या उसे खाने की सुध न रहती. वह अपना क़लम और ब्रुश बराबर चलाए जाता ' उसके इस तप की तुलना महात्मा गांधी के उपवास से ही हो सकती है. अपने फ़ाक़ों के दिनों में भी अगर कोई आ जाता तो हमेशा वह सब कुछ उसे दे देता. और यह बात इतनी बढ़ गई कि उसके पास कभी कुछ न रहा बल्कि अगर यह कहें कि वह जन्म भर भूकों मरा तो भी कुछ ग़लत न होगा.

خیالی تصویروں کی جگہ سچائی ظاہر کرنے والے چتروں کا سکہ جمایا .

اور یہ چتر بناتے سمے وہ اچھی عمارتوں یا ریشمی گدے دار کرسیوں اور میزوں پر نہیں تھا نہ اُسکے پاس اُنکے حاصل ہونے کا کوئی ذریعہ ہی تھا . ہاں اگر وہ چاہتا تو بڑی شان سے رہ سکتا تھا' پر اپنے آس پاس کی' لندن' پیرس اور ہیگ کی جنتا اور عوام کی دردشا دیکھکر اُسے امیری کے بلاسی جیون سے نفرت ہو گئی تھی اور وہ لوٹ کھسوٹ کا کٹر ورودھی ہو گیا تھا .

اُس نے اپنے چتر جھونپڑیوں میں' کھیتوں میں بیٹھکر بنائے . برستی برسات میں وہ باہر گھومتا چلچلاتی دھوپ اُسے نہیں روک پاتی تھی . گرتے برف میں وہ میدانوں میں کہیں پڑا ملتا . وان گوک کیول کافی پی کر رہ جاتا . کبھی کالی روٹی کھاکر رہ جاتا . کبھی چائے اور کافی کے پیسے نہ ہونے پر صرف گرم پانی ہی پی کر رہ جاتا . ایک دو دن نہیں مہینوں تک وہ کیول پانی پی پی کر گزر کر لیتا تھا . یا تو بھوجن ملتا ہی نہیں تھا یا اُسے کھانے کی سدھ نہ رہتی . وہ اپنا قلم اور برش برابر چلائے جاتا ! اُسکے اِس تپ کی تلنا مہاتما گاندھی کے اُپواس سے ہی ہو سکتی ہے . اپنے فاقوں کے دنوں میں بھی اگر کوئی آجاتا تو ہمیشہ وہ سب کچھ اُسے دے دیتا . اور یہ بات اتنی بڑھ گئی کہ اُسکے پاس کبھی کچھ نہ رہا بلکہ اگر یہ کہیں کہ وہ جنم بھر بھوکوں مرا تو بھی کچھ غلط نہ ہوگا .

लोगों, रईसों और शाहज़ादों का चित्रन नहीं किया बल्कि टूटी फूटी झोपड़ियों में भूके पेट रहने वाले मज़दूरों, दुखियारों और पीड़ितों का ऐसा चित्रन किया जिसे देखने पर आज भी हमारी आँखों से आँसू निकल पड़ेंगे. उसके ब्रुश ने ऊंचे ख़ानदान की औरतों की परछाइयाँ नहीं देखीं. बल्कि भयानक सर्दी में कूड़ेख़ानों पर कोयला चुनती ग़रीब स्त्रियों की तसवीरें उसने बनाईं. इन तसवीरों के ज़रिये उसने कठोर से कठोर और संगदिल इनसान के दिल पर भी ऐसे हथौड़े चलाए कि उसकी धमक आज भी गूंज उठती है. जब उसने चित्रकारी शुरू की तो वह यह न समझ सका कि इन बड़े बड़े चित्रकारों के चित्रों की स्त्रियाँ और बच्चे दुनिया में चलने फिरने लोगों से मेल क्यों नहीं खाते ? इनमें कहीं भी ज़मीन की तह में गहरी खानों में डूब कर काम करने वालों का चित्र क्यों नहीं है ? इनमें से किसी के मुँह पर उस भारी भूक की छाप नहीं है जो रात दिन सड़क पर मारे मारे फिरने वाले राहगीरों के चेहरों पर देखी जा सकती है ? बस, बिना उस्ताद की सहायता के ही. यही सब तस्वीरें खींच देने को वह तैयार होगया. बरसों तपस्या करता रहा और एक दिन उसका सपना सच्चा होगया. जब उसके ऐसे चित्रों को लोगों ने देखा तो वह चकित रह गए और औरतें यह भयानक दृश्य देखकर बेहोश हो गईं ! वान गोक ने रंगीन और बनावटी तस्वीरों के बजाय खेतों और फ़सलों की सच्ची तस्वीरें खींचीं. आलू की खेती करने वाले एक परिवार के खाने की मेज़ वाला जो मशहूर चित्र "आलू खाने वाले" उसने बनाया वह हज़ारों बरस तक अमर रहेगा. इस तरह चित्रकला की तारीख़ में विन्सेन्ट वान गोक ने पहली बार

لوگوں، رئیسوں اور شاہزادوں کا چترن نہیں کیا بلکہ ٹوٹی پھوٹی جھونپڑیوں میں بھوکے پیٹ رہنے والے مزدوروں، دکھیاروں اور پیڑتوں کا ایسا چترن کیا جسے دیکھنے پر آج بھی ہماری آنکھوں سے آنسو نکل پڑینگے. اُسکے برش نے اونچے خاندان کی عورتوں کی پرچھائیاں نہیں دیکھیں بلکہ بھیانک سردی میں کوڑے خانوں پر کوئلہ چنتی غریب استریوں کی تصویریں اُسنے بنائیں۔ اِن تصویروں کے ذریعے اُسنے کٹھور سے کٹھور اور سنگدل اِنسان کے دل پر بھی ایسے ہتھوڑے چلائے کہ اُس کی دھمک آج بھی گونج اُٹھتی ہے۔ جب اُس نے چترکاری شروع کی تو وہ یہ نہ سمجھ سکا کہ اِن بڑے بڑے چترکاروں کے چتروں کی استریاں اور بچے دنیا میں چلنے پھرتے لوگوں سے میل کیوں نہیں کھاتے ؟ اِن میں کہیں بھی زمین کی تہ میں گہری کھانوں میں ڈوب کر کام کرنے والوں کا چتر کیوں نہیں ہے ؟ اِن میں سے کسی کے منہ پر اُس بھاری بھوک کی چھاپ نہیں ہے جو رات دن سڑک پر مارے مارے پھرنے والے راہگیروں کے چہروں پر دیکھی جا سکتی ہے ؟ بس، بنا اُستاد کی سہایتا کے ہی، یہی سب تصویریں کھینچ دینے کو وہ تیار ہوگیا۔ برسوں تپسیا کرتا رہا اور ایک دن اُس کا سپنا سچا ہو گیا۔ جب اُسکے ایسے چتروں کو لوگوں نے دیکھا تو وہ چکت رہ گئے اور عورتیں یہ بھیانک درشیہ دیکھکر بیہوش ہو گئیں ! وان گوک نے رنگین اور بناوٹی تصویروں کے بجائے کھیتوں اور فصلوں کی سچی تصویریں کھینچیں آلو کی کھیتی کرنے والے ایک پریوار کے کھانے کی میز والا جو مشہور چتر "آلو کھانے والے" اُسنے بنایا وہ ہزاروں برس تک امر رہے گا۔ اس طرح چترکلا کی تاریخ میں ونسنٹ وان گوک نے پہلی بار

कलाकार वान गोक

(भाई 'परदेशी')

१९ वीं सदी के पिछले बरसों में, सब से मशहूर चित्रकारों में वान गोक का नाम बड़ी इज़्ज़त के साथ लिया जाता है. दर असल वान गोक चित्रकार के रूप में संसार की महान आत्माओं का नमूना था. उसके जीवन की तुलना बड़े से बड़े सन्तों और महात्माओं से ही की जा सकती है.

बाइबिल के इस सत्य का वह आदर्श नमूना था कि 'अपने जीवन की कमी विश्वास से पूरी कर ले!'

और योरप के इस विश्वास का भी वह उदाहरन था कि 'मन भर अक़्लमंदी से रत्ती भर श्रद्धा अधिक भारी है.'

चित्रकार के रूप में उसकी पहुँच और सफलता अचरज में डालने वाली थी. पर सफल चित्रकार बनने के लिये उसे जो जो कठिनाइयाँ और मुसीबतें झेलनी पड़ीं वह बड़े बड़े सूरमाओं ने देखी भी न होंगी. उसका जीवन तपस्या और साधना का जीवन था. उसकी हरेक साँस संघर्षों और तजरबों में पल कर आगे बढ़ी थी. उसने क़दम क़दम पर भेद भाव, ना बराबरी और लूट खसोट के ख़िलाफ़ अपनी कभी न ख़तम होने वाली लड़ाई जारी रखी.

अपनी अचरज भरी तसवीरों में उसने राज महलों, भव्य इमारतों और आलीशान बाग़ीचों में सैर करने वाले ऊँचे तबक़े के

کلاکار وان گوک

(بھائی 'پردیشی')

۱۹ ویں صدی کے پچھلے برسوں میں' سب سے مشہور چتر کاروں میں وان گوک کا نام بڑی عزت کے ساتھ لیا جاتا ہے . در اصل وان گوک چترکار کے روپ میں سنسار کی مہان آتماؤں کا نمونہ تھا . اُسکے جیون کی تلنا بڑے سے بڑے سنتوں اور مہاتماؤں سے ہی کی جا سکتی ہے .

بائبل کے اِس ستیہ ۔ وہ آدرش نمونہ تھا کہ 'اپنے جیون کی کمی وشواس سے پوری کر لے !'

اور یورپ کے اِس وشواس کا بھی وہ اُداھرن تھا کہ ' من بھر عقلمندی سے رتی بھر شردھا ادھک بھاری ہے .

چترکار کے روپ میں اُسکی پہنچ اور سپھلتا اچرج میں ڈالنے والی تھی . پر سپھل چترکار بننے کے لئے اُسے جو جو کٹھنائیاں اور مصیبتیں جھیلنی پڑیں وہ بڑے بڑے سورماؤں نے دیکھی بھی نہ ہونگی . اُس کا جیون تپسیا اور سادھنا کا جیون تھا . اُسکی ہر ایک سانس سنگھرشوں اور تجربوں میں پل کر آگے بڑھی تھی . اُس نے قدم قدم پر بھید بھاؤ' نابرابری اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف اپنی کبھی نہ ختم ہونے والی لڑائی جاری رکھی .

اپنی اچرج بھری تصویروں میں اُسنے راج محلوں' بھویہ عمارتوں اور عالیشان باغیچوں میں سیر کرنے والے اونچے طبقے کے

प्रेम के साथ पढ़ना और उनसे सबक़ हासिल करना होगा. इन धर्मों और किताबों के फ़रक़ सब देस और काल के फ़रक़ हैं हमें इनसे ऊपर उठकर सब धर्मों के सार यानी उस मानव धर्म. उस प्रेम धर्म. उस मज़हबे इश्क़. उस मज़हबे इनसानियत को साक्षात करना होगा, जो आजकल के सब मत मतान्तरों की जगह भावी मानव समाज का एकमात्र धर्म होगा. जिसकी बुनियादें सच्चाई, सदाचार और प्रेम पर होंगी और जो सब के अन्दर एक ईश्वर के दर्शन करते हुए आध्यात्मिक जीवन की उन गहराइयों तक पहुंचने और उन समस्याओं के हल करने की कोशिश करेगा, जिन तक पहुँचना और जिनका हल करना इस पृथ्वी पर मनुश्य के जीवन का अन्तिम और असली लक्ष्य है. यही वह क़ीमती सबक़ है, जो क़ुदरत हमें इस छोटी सी हिन्दू मुसलिम समस्या के ज़रिये सिखाना चाहती है. हमारा देस इस समय इसी सच्चे मानवधर्म को पैदा करने की प्रसववेदना में से होकर निकल रहा है. सारा संसार शुभ दिन की बाट जोह रहा है. ❀

—सुन्दरलाल

❀ 'प्रेमी अभिनन्दन ग्रंथ' से.

پریم کے ساتھ پڑھنا اور اُن سے سبق حاصل کرنا ہوگا . ان دھرموں اور کتابوں کے فرق سب دیس اور کال کے فرق ھیں. ھمیں ان سے اوپر اُٹھکر سب دھرموں کے سار یعنی اُس مانو دھرم، اُس پریم دھرم، اُس مذھب عشق، اُس مذھب انسانیت کو ساکشات کرنا ہوگا. جو آجکل کے سب مت متانتروں کی جگہ بھاوی مانو سماج کا ایک ماتر دھرم ہوگا. جسکی بنیادیں سچائی، سداچار اور پریم پر ہونگی اور جو سب کے اندر ایک ایشور کے درشن کرتے ہوئے آدھیاتمک جیون کی اُن گہرائیوں تک پہونچنے اور اُن سمسیاؤں کے حل کرنے کی کوشش کریگا جن تک پہونچنا اور جن کا حل کرنا اس پرتھوی پر منشیہ کے جیون کا انتم اور اصلی لکش ھے . یہی وہ قیمتی سبق ہے، جو قدرت ھمیں اِس چھوٹی سی ہندو مسلم سمسیا کے ذریعے سکھانا چاھتی ھے . ھمارا دیس اِس سمے اِسی سچے مانو دھرم کو پیدا کرنے کی پرسو ویدنا میں سے ہوکر نکل رھا ہے . سارا سنسار شبھ دن کی بات جوہ رھا ھے .*

— سندر لال

* 'پریمی ابھنندن گرنتھ' سے .

गहरी है. और वहहै इस हिन्दू मुसलिम सवाल का आध्यात्मिक यानी रूहानी पहलू. दुनिया के अलग अलग धर्मों के क़ायम करने वालों ने अगर किसी बात पर सबसे ज्यादा जोर दिया है तो वह यही है कि सब इनसान एक क़ौम हैं, हम सब मिलकर एक छोटा सा कुटुम्ब हैं, सब एक जिस्म के अलग अलग अंगों की तरह हैं. सब का एक ही ईश्वर या अल्लाह है. ईश्वर एक है और सब उसी के बन्दे हैं तो ज़ाहिर है कि सबका धर्म भी एक ही है. फिर यह अलग अलग धर्मों के फ़रक़ क्यों ? इन धर्मों के इतिहास और उनकी पाक किताबों को प्रेम के साथ देखने से साफ़ पता चलता है कि इन सब धर्मों और मत मतान्तरों के मूल तत्व एक हैं. इनमें फ़रक़ सिर्फ़ या तो उन अटकली बातों में है, जिनमें आदमी का दिमाग़ आख़िरी फ़ैसले नहीं कर पाता, जैसे जीव और ब्रह्म का एक होना या दो होना, नरक और स्वर्ग की कल्पनाएं वग़ैरा. और या ऊपरी रीत रिवाजों और कर्मकाण्डों में हैं, जैसे पूरब की तरफ़ मुँह करके पूजा करना या पच्छिम की तरफ़ मुँह करके. संस्कृत में दुआ मांगना या अरबी में. यह सब फ़रक़ गौन यानी फ़रुई हैं. हमें इनसे ऊपर उठकर और इनके भीतर से सब धर्मों की बुनियादी एकता को देखना होगा. इतना ही नहीं हमें यह समझना होगा कि ख़ुदा की नज़रों में दुनिया की कोई भाषा दूसरी भाषा से ज्यादा पवित्र नहीं है. कोई ऊपरी रीत रिवाज दूसरे रीत रिवाज से ज्यादा पाक नहीं है. आदमी आदमी है. हमें सब धर्मों के क़ायम करने वाले महापुरुषों की इज़्ज़त करनी होगी, उन सब को अपनाना और उन्हें मानवसमाज के सच्चे हितचिन्तक और मार्ग प्रदर्शक मानना होगा. सब धर्म पुस्तकों को

گہری ھے . اور وہ ھے اِس ھندو مسلم سوال کا آدھیاتمک یعنی روحانی پہلو . دنیا کے الگ الگ دھرموں کے قائم کرنے والوں نے اگر کسی بات پر سب سے زیادہ زور دیا ھے تو وہ یہی ھے کہ سب انسان ایک قوم ھیں' ھم سب ملکر ایک چھوٹا سا کٹمب ھیں' سب ایک جسم کے الگ الگ انگوں کی طرح ھیں . سب کا ایک ھی ایشور یا اللہ ھے . ایشور ایک ھے اور سب اُسی کے بندے ھیں تو ظاھر ھے کہ سب کا دھرم بھی ایک ھی ھے پھر یہ الگ الگ دھرموں کے فرق کیوں ؟ اِن دھرموں کے اِتہاس اور اُن کی پاک کتابوں کو پریم کے ساتھ دیکھنے سے صاف پتہ چلتا ھے کہ اِن سب دھرموں اور مت متانتروں کے مول تتو ایک ھیں . ان میں فرق صرف یا تو اُن اٹکلی باتوں میں ھے' جن میں آدمی کا دماغ آخری فیصلے نہیں کر پاتا' جیسے جیو اور برھم کا 'ایک ھونا یا دو ھونا' نرک اور سورگ کی کلپنائیں وغیرہ' اور یا اوپری ریت رواجوں اور کرم کانڈوں میں ھیں' جیسے پورب کی طرف منہ کرکے پوجا کرنا یا پچھم کی طرف منہ کرکے' سنسکرت میں دعا مانگنا یا عربی میں . یہ سب فرق گون یعنی فروعی ھیں . ھمیں ان سے اوپر اُٹھ کر اور اِنکے بھیتر سے سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو دیکھنا ھوگا. اتنا ھی نہیں' ھمیں یہ سمجھنا ھوگا کہ خدا کی نظروں میں دنیا کی کوئی بھاشا دوسری بھاشا سے زیادہ پوتر نہیں ھے. کوئی اوپری ریت رواج دوسرے ریت رواج سے زیادہ پاک نہیں ھے آدمی' آدمی ھے . ھمیں سب دھرموں کے قائم کرنے والے مہاپرشوں کی عزت کرنی ھوگی' اُن سب کو اپنانا اور اُنھیں مانو سماج کے سچے ھت چنتک اور مارگ پردرشک ماننا ھوگا' سب دھرم پستکوں کو

और हानिकर रूढ़ि है, जिसका अन्त करना हमारे समाजी जीवन को क़ायम रखने के लिये ज़रूरी है. बुद्ध भगवान के समय से लेकर बीच के ज़माने के सन्तों, कबीर और दादू तक सब हमें यही उपदेश देते चले आए हैं. ऐसे ही बोलचाल में या किताबों और अख़बारों में 'आवश्यकता' की जगह 'ज़रूरत' या 'ज़रूरत' की जगह 'आवश्यकता' पर ज़ोर देना, 'नुमाइश' जैसे आमफ़हम शब्द को बदल कर 'प्रदर्शिनी' करना, 'हवाई जहाज़' को 'वायुयान' या 'तैयारा' कहने की कोशिश करना एक बीमारी है, जो हमारी समाजी ज़िन्दगी को टुकड़े टुकड़े कर रही है और हमारी आत्माओं को तंग बना रही है. एक सीधी सादी, मिली जुली, आमफ़हम बोली की जगह संस्कृत भरी हिन्दी या फ़ारसी अरबी भरी उर्दू की तरफ़ जाने की ख्वाहिश उन चीज़ों में से है, जिन्होंने हिन्दू मुसलिम सवाल को पैदा किया और बढ़ाया हमें हिन्दी और उर्दू दोनों को हिन्दुस्तानी भाशा मानना होगा. दोनों से प्रेम करना होगा और दोनों के सच्चे संगम से एक राश्ट्र भाशा हिन्दुस्तानी को रूप देना. बढ़ाना और मालामाल करना होगा. इसी तरह अपनी राश्ट्रीय संस्थाओं, कांगरेसों, कान्फ़रेंसों, स्कूलों, कालेजों वग़ैरा में हमें मिले जुले तरीक़े और इस तरह के ढंग बरतने होंगे, जो सब धर्मों और मज़हबों के देसबासियों को एक से प्यारे लगें. हम ऊपर लिख चुके हैं कि हम आज से चन्द पीढ़ी तक इसी तरह की एक मिली जुली समाजी ज़िन्दगी और मिली जुली कलचर की तरफ़ बढ़ रहे थे. हमें अपनी उस थोड़े दिन पहले की प्रवृत्ति को फिर से ताज़ा करना होगा.

दूसरी बात, जो हमें समझनी है, वह इससे भी ज़्यादा

اور ہانیکر روڑھی ہے' جس کا انت کرنا ہمارے سماجی جیون کو قائم رکھنے کے لئے ضروری ہے. بدھ بھگوان کے سمے سے لے کر بیچ کے زمانے کے سنتوں' کبیر اور دادو تک سب ہمیں یہی اُپدیش دیتے چلے آئے ہیں. ایسے ہی بول چال میں یا کتابوں اور اخباروں میں 'آوشیکتا' کی جگہ 'ضرورت' یا 'ضرورت' کی جگہ 'آوشیکتا' پر زور دینا' 'نمائش' جیسے عام فہم شبد کو بدل کر 'پردرشنی' کرنا' 'ہوائی جہاز' کو 'وایویان' یا 'طیارہ' کہنے کی کوشش کرنا ایک بیماری ہے' جو ہماری سماجی زندگی کو ٹکڑے ٹکڑے کر رہی ہے اور ہماری آتماؤں کو تنگ بنا رہی ہے. ایک سیدھی سادی' ملی جلی' عام فہم بولی کی جگہ سنسکرت بھری ہندی یا فارسی عربی بھری اُردو کی طرف جانے کی خواہش اُن چیزوں میں سے ہے' جنھوں نے ہندو مسلم سوال کو پیدا کیا اور بڑھایا ہمیں ہندی اور اردو دونوں کو ہندستانی بھاشا ماننا ہوگا. دونوں سے پریم کرنا ہوگا اور دونوں کے سچے سنگم سے ایک راشٹر بھاشا ہندستانی کو روپ دینا' بڑھانا اور مالامال کرنا ہوگا. اِسی طرح اپنی راشٹری سنستھاؤں' کانگریسوں' کانفرنسوں' اسکولوں' کالجوں وغیرہ میں ہمیں ملے جلے طریقے اور اِس طرح کے ڈھنگ برتنے ہونگے' جو سب دھرموں اور مذہبوں کے دیس باسیوں کو ایک سے پیارے لگیں. ہم اوپر لکھ چکے ہیں کہ ہم آج سے چند پیڑھی تک اِسی طرح کی ایک ملی جلی سماجی زندگی اور ملی جلی کلچر کی طرف بڑھ رہے تھے. ہمیں اپنی اُس تھوڑے دن پہلے کی پرورتی کو پھر سے تازہ کرنا ہوگا.

دوسری بات' جو ہمیں سمجھنی ہے' وہ اِس سے بھی زیادہ

और विश्वासों में, अपनी पूजा और इबादत के तरीक़ों में पूरी आजादी हासिल न हो. हमारे देस के अन्दर भी तरह तरह के विचारों का हजारों बरस से एक दूसरे के साथ रहना और आखीर में घुल मिल जाना इस बात को साबित कर रहा है कि हम जिन्दगी के इस सुनहरे उसूल को काफ़ी जानते और समझते रहे हैं. बहुत सी बातों में हिन्दुओं और जैनियों, वैश्नवों और शाक्तों, सनातन-धर्मियों और आर्यसमाजियों, वर्णाश्रमियों और ब्राह्मनों मे जितना उसूली फ़रक़ है, आर्य समाजियों और मुसलमानों या मामूली हिन्दुओं और मुसलमानों में उससे कहीं कम है. बात सिर्फ इतनी है, जैसा हम ऊपर कह चुके हैं, कि हमारे इतिहास का यह आखिरी मेल जोल अभी पूरा नहीं हो पाया था कि बाहरी ताक़तों ने छेड़कर हमारी हालत को थोड़ा सा जटिल कर दिया और कुछ देर के लिये देस में एक संकट पैदा हो गया.

हमें अब सिर्फ दो बातें समझनी हैं. एक यह कि मजहबी रीत रिवाजों या पूजा पाठ के तरीक़ों के अलग अलग होते हुए भी हमें देस में एक मिली जुली समाजी जिन्दगी, मिला जुला रहन सहन, मिली जुली जबान पैदा करनी है, बढ़ानी है और उसे क़ायम रखना है. रीत रिवाज सब ऊपरी चीजें हैं. हर देस में वह बदलते रहे हैं और बदलते रहेंगे. जिस तरह शरीर का बदलना जब तब जरूरी हो जाता है, उसी तरह इन ऊपरी रीत रिवाजों का बदलते रहना भी समाजी जिन्दगी के लिये जरूरी होता है हिन्दुओं की जन्मना जाति, जात पात और छुआछूत, (किसी भी दूसरे के छूने से किसी के भोजन और पानी का नापाक हो जाना, एक ऐसी सड़ी गली

اور وشواسوں میں، اپنی پوجا اور عبادت کے طریقوں میں پوری آزادی حاصل نہ ہو . ھمارے دیس کے اندر بھی طرح طرح کے وچاروں کا ہزاروں برس سے ایک دوسرے کے ساتھ رھنا اور آخیر میں گھل مل جانا اس بات کو ثابت کر رہا ھے کہ ھم زندگی کے اس سنہرے اصول کو کافی جانتے اور سمجھتے رھے ھوں . بہت سی باتوں میں ھندوؤں اور جینیوں، ویشنوؤں اور شاکتوں، سناتن دھرمیوں اور آریہ سماجیوں، ورناشرمیوں اور براھمنوں میں جتنا اصولی فرق ھے، آریہ سماجیوں اور مسلمانوں یا معمولی ھندوؤں اور مسلمانوں میں اس سے کہیں کم ھے . بات صرف اتنی ھے، جیسا ھم اوپر کہہ چکے ھیں، کہ ھمارے اتہاس کا یہ آخری میل جول ابھی پورا نہیں ھو پایا تھا کہ باھری طاقتوں نے چھیڑ کر ھماری حالت کو تھوڑا سا جٹل کر دیا اور کچھ دیر کے لئے دیس میں ایک سنکٹ پیدا ھو گیا .

ھمیں اب صرف دو باتیں سمجھنی ھیں . ایک یہ کہ مذھبی ریت رواجوں یا پوجا پاٹھ کے طریقوں کے الگ الگ ھوتے ھوئے بھی ھمیں دیس میں ایک ملی جلی سماجی زندگی، ملا جلا رھن سہن، ملی جلی زبان پیدا کرنی ھے، بڑھانی ھے اور اسے قائم رکھنا ھے . ریت رواج سب اوپری چیزیں ھیں . ھر دیس میں وہ بدلتے رھے ھیں اور بدلتے رھینگے . جس طرح شریر کا بدلنا جب تب ضروری ھو جاتا ھے اسی طرح ان اوپری ریت رواجوں کا بدلتے رھنا بھی سماجی زندگی کے لئے ضروری ھوتا ھے . ھندوؤں کی جنمنا جاتی، جات پات اور چھوا چھوت، کسی بھی دوسرے کے چھونے سے کسی کے بھوجن اور پانی کا ناپاک ھو جانا، ایک ایسی سڑی گلی

और मुसलिम कलचर खतरे में है', 'हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये हिन्दू संगठन जरूरी है', 'इसलाम की हिफ़ाज़त के लिये मुसलमानों की अलग तंजीम लाज़िमी है', शुद्धि और तबलीग़, बोलने चालने और लिखने पढ़ने की ज़बान को एक तरफ़ संस्कृत के और दूसरी तरफ़ फ़ारसी और अरबी के ज्यादा नज़दीक लाने की कोशिशें. राष्ट्री कान्फ़रेंसों और राष्ट्री संस्थाओं तक में हिन्दू रंग ढंग और हिन्दू तौर तरीक़ों को बरतने और चमकाने की लालसा—यह सब चीज़ें इस बात को साबित कर रही हैं कि हमने अभी तक ऊपरी रीत रिवाजों के फ़रक़ों से उठकर एक मिली जुली क़ौमी ज़िन्दगी बसर करने के उस सबक़ को पूरी तरह नहीं सीखा. जो कुदरत हमें इन दोनों धर्मों को एक जगह लाकर सिखाना चाहती थी.

रोग का इलाज भी साफ़ है. इस सारी भूल भुलइयों में से हम चाहें तो अपना रास्ता साफ़ देख सकते हैं. रास्ता वही है. जो इससे पहले की टक्करों में से निकलने का रास्ता था. जबतक आदमी आदमी है. उसमें तरह तरह के विचारों का पैदा होना. उसके तरह तरह के विश्वास और तरह तरह की मानताएँ होना क़ुदरती है. यह चीज़ वैसी ही क़ुदरती है, जैसी एक विशाल बन या सुन्दर उपवन के अन्दर तरह तरह की बनस्पतियों और रंग बिरंगे फूलों का उगना. हरेक का अपना सौन्दर्य है. हरेक की अपनी उपयोगिता है. जिनके आँखें हैं, उन्हें इस विचित्रता में ही, इस रंग बिरंगे पन में ही, क़ुदरत के बाग़ का असली सौन्दर्य दिखाई देगा. इस विचित्रता में से ही मानव विकास का रास्ता मिलता है. कोई देस उस समय तक सभ्य नहीं कहा जा सकता, जबतक कि उसके रहने वालों को अपने विचारों

اور مسلم کلچر خطرے میں ہے' 'ھندو دھرم کی رکشا کے لئے ھندو سنگٹھن ضروری ہے' 'اسلام کی حفاظت کے لئے مسلمانوں کی الگ تنظیم لازمی ہے' شدھی اور تبلیغ' بولنے چالنے اور لکھنے پڑھنے کی زبان کو ایک طرف سنسکرت کے اور دوسری طرف فارسی اور عربی کے زیادہ نزدیک لانے کی کوششیں' راشٹری کانفرنسوں اور راشٹری سنستھاؤں تک میں ھندو رنگ ڈھنگ اور ھندو طور طریقوں کو برتنے اور چمکانے کی لالسا — یہ سب چیزیں اِس بات کو ثابت کر رھی ھیں کہ ھم نے ابھی تک اوپری ریت رواجوں کے فرقوں سے اوپر اُٹھکر ایک ملی جلی قومی زندگی بسر کرنے کے اُس سبق کو پوری طرح نہیں سیکھا' جو قدرت ھمیں اِن دونوں دھرموں کو ایک جگہ لاکر سکھانا چاھتی تھی.

روگ کا علاج بھی صاف ہے. اِس ساری بھول بھلیوں میں سے ھم چاھیں تو اپنا راستہ صاف دیکھ سکتے ھیں. راستہ وھی ہے' جو اِس سے پہلے کی ٹکروں میں سے نکلنے کا راستہ تھا. جب تک آدمی آدمی ہے' اُس میں طرح طرح کے وچاروں کا پیدا ھونا' اُسکے طرح طرح کے وشواس اور طرح طرح کی مانیتائیں ھونا قدرتی ہے. یہ چیز ویسی ھی قدرتی ہے' جیسی ایک وشال بن یا سندر اُپون کے اندر طرح طرح کی بنسپتیوں اور رنگ برنگے پھولوں کا اُگنا. ھر ایک کا اپنا سوندریہ ہے. ھر ایک کی اپنی اُپیوگتا ہے. جنکے آنکھیں ھیں اُنھیں اِس وچترتا میں ھی' اِس رنگ برنگے پن میں ھی' قدرت کے باغ کا اصلی سوندریہ دکھائی دیگا. اِس وچترتا میں سے ھی مانو وکاس کا راستہ ملتا ہے. کوئی دیس اُس سمے تک سبھیہ نہیں کہا جا سکتا' جبتک کہ اُس کے رھنے والوں کو اپنے وچاروں

नया मिलाजुला और ज़्यादा ऊँचा जीवन पैदा करके दिखला देता, जिस तरह इससे पहले की सब टक्करों के बाद दिखला चुका था, पर उस शुभ दिन के आने से ठीक पहले देस में एक तीसरी ताक़त ने क़दम रक्खा.

इस नई बिदेसी ताक़त को अपना भला इसी में दिखाई दिया कि देस की इन दोनों जमातों को एक दूसरे से मिलने से रोके. इन दोनों को फाड़े रखने में ही उसे अपनी ज़िन्दगी दिखाई दी. सन् १७५७ से तरह तरह की चालों, कूटनीतियों और सियासी तदबीरों के ज़रिये देस के हिन्दू और मुसलमानों को एक दूसरे से अलग रखने के पूरे जतन किये गए. रोग बीज रूप में शरीर के अन्दर मौजूद था ही. उसे सिर्फ़ भड़काने और बढ़ाने की ज़रूरत थी. सरकारी नौकरियों में होड़, म्यूनिसपलटियों और एसेम्बलियों के चुनाव, जुदागाना चुनाव, अलग अलग यूनीवर्सिटियाँ, महासभा और लीग. अखंड भारत और पाकिस्तान. इन सब ने देस की इस कठिन समस्या को उलझाने में हिस्सा लिया है. पर यह राजकाजी हथकंडे हमें सिर्फ़ इसीलिये नुक़सान पहुँचा सके, क्योंकि फूट, अलहदगी और दुई के बीज हमारे अन्दर मौजूद थे. बाहर के कीड़े या जर्म्स उस समय तक रोग पैदा नहीं कर सकते जबतक कि जिस्म के अन्दर का समतोल न बिगड़ा हो. जबतक कि ख़ून के अन्दर कोई न कोई इस तरह की कमज़ोरी, कमी या बेशी पैदा न हो गई हो, जो उन कीड़ों को वहाँ टिकने और पनपने का मौक़ा दे.

हमारी इस तरह की आवाज़ें, इस तरह के विचार जैसे 'हिन्दू [illegible] की ज़रूरत है', 'इसलाम

نیا ملا جلا اور زیادہ اُونچا جیون پیدا کرکے دکھلا دیتا، جس طرح اس سے پہلے کی سب ٹکروں کے بعد دکھلا چکا تھا، پر اُس شبھ دن کے آنے سے ٹھیک پہلے دیس میں ایک تیسری طاقت نے قدم رکھا .

اس نئی بدیسی طاقت کو اپنا بھلا اسی میں دکھائی دیا کہ دیس کی اِن دونوں جماعتوں کو ایک دوسرے سے ملنے سے روکے . ان دونوں کو پھاڑے رکھنے میں ھی اُسے اپنی زندگی دکھائی دی . سن ۱۷۵۷ سے طرح طرح کی چالوں، کوٹ نیتیوں اور سیاسی تدبیروں کے ذریعہ دیس کے ھندو اور مسلمانوں کو ایک دوسرے سے الگ رکھنے کے پورے جتن کئے گئے . روگ بیج روپ میں شریر کے اندر موجود تھا ھی . اُسے صرف بھڑکانے اور بڑھانے کی ضرورت تھی . سرکاری نوکریوں میں ھوڑ، میونسپلٹیوں اور اسمبلیوں کے چناؤ، جداگانہ چناؤ، الگ الگ یونیورسٹیاں، مہا سبھا اور لیگ، اکھنڈ بھارت اور پاکستان، ان سب نے دیس کی اس کٹھن سمسیا کو اُلجھانے میں حصہ لیا ھے. پر یہ راج کاجی ھتھکنڈے ھمیں صرف اسی لئے نقصان پہونچا سکے، کیونکہ پھوٹ، علیحدگی اور دوئی کے بیج ھمارے اندر موجود تھے . باھر کے کیڑے یا جرمس اُس سمے تک روگ پیدا نہیں کر سکتے، جب تک کہ جسم کے اندر کا سمتول نہ بگڑا ھو جب تک کہ خون کے اندر کوئی نہ کوئی اس طرح کی کمزوری، کمی یا بیشی پیدا نہ ھو گئی ھو، جو اُن کیڑوں کو وھاں ٹکنے اور پنپنے کا موقع دے .

ھماری اس طرح کی آوازیں، اس طرح کے وچار جیسے 'ھندو جاتی اور ھندو سنسکرتی کو بچائے رکھنے کی ضرورت ھے'، 'اسلام

तरह के फल, नए फूल, नए नए जानवर, नई तरह के कपड़े इस मुल्क में आए और न जाने कितने नए नए खाने और नई नई मिठाइयाँ जारी हुईं. आजकल के दिल्ली या आगरे या मथुरा के किसी भी हलवाई की दुकान की मिठाइयाँ और ढाका और मुर्शिदाबाद के रेशमी और सूती कपड़ों के नाम हमें अपनी ईजाद के समय की याद दिला रहे हैं.

यह मेल मिलाप की लहर हमारे रूहानी यानी आध्यात्मिक जीवन में भी गहरी चली गई थी. कबीर, दादू, नानक, पलटू, चैतन्य, तुकाराम, बाबा फ़रीद, बुल्लेशाह, मुईनुद्दीन चिश्ती और यारी साहब जैसे सैकड़ों हिन्दू और मुसलमान फ़क़ीर हिन्दू धर्म और इसलाम, दोनों के ऊपरी कर्मकान्डों से ऊपर उठकर हमें प्रेम धर्म का सन्देश सुना रहे थे और देस भर में चारों ओर प्रेम के सोते बहा रहे थे. हिन्दू धर्म ने इसलाम के सम्पर्क से अपने अन्दर अनेक सुधार की लहरें पैदा कीं. अनेक हिन्दू आचार्यों ने जात पात और छुआछूत को तोड़ने और आदमी आदमी के बीच बराबरी क़ायम करने का उपदेश दिया. हिन्दू धर्म के सम्पर्क से इसलाम का ज़रूरत से ज़्यादा नुकीलापन या कटीलापन भी टूटा. मुसलमान फ़क़ीरों और महात्माओं के मज़ारों पर बसन्त के दिन बसन्ती चादरें चढ़ाई जाने लगीं. मुसलमान बादशाहों के दरबारों में होली, दिवाली, रक्षाबन्धन और दशहरा जगह जगह उसी प्रेम, उसी जोश और उसी उमंग से मनाया जाता था, जिस तरह हिन्दू दरबारों में. कोई सन्देह नहीं कि अगर थोड़ा सा और समय मिल गया होता तो यह देस उस ज़माने के हिन्दू धर्म और इसलाम के मेल से अपने अन्दर उसी तरह एक

طرح کے پھل، نئے پھول نئے نئے جانور، نئی طرح کے کپڑے اِس ملک میں آئے اور نہ جانے کتنے نئے نئے کھانے اور نئی نئی متھائیاں جاری ہوئیں۔ آجکل کے دلی یا آگرے یا متھرا کے کسی بھی حلوائی کی دوکان کی متھائیاں اور ڈھاکہ اور مرشدآباد کے ریشمی اور سوتی کپڑوں کے نام ہمیں اپنی ایجاد کے سمے کی یاد دلا رہے ہیں۔

یہ میل ملاپ کی لہر ہمارے روحانی یعنی آدھیاتمک جیون میں بھی گہری چلی گئی تھی۔ کبیر، دادو، نانک، پلٹو، چیتنیہ، تکارام، بابا فرید، بلھے شاہ، معین الدین چشتی اور یاری صاحب جیسے سیکڑوں ہندو اور مسلمان فقیر ہندو دھرم اور اسلام دونوں کے اُوپری کرم کانڈوں سے اُوپر اُٹھکر ہمیں پریم دھرم کا سندیش سنا رہے تھے اور دیس بھر میں چاروں اور پریم کے سوتے بہا رہے تھے۔ ہندو دھرم نے اسلام کے سمپرک سے اپنے اندر انیک سدھار کی لہریں پیدا کیں۔ انیک ہندو آچاریوں نے جات پات اور چھوا چھوت کو توڑنے اور آدمی آدمی کے بیچ برابری قائم کرنے کا اُپدیش دیا۔ ہندو دھرم کے سمپرک سے اسلام کا ضرورت سے زیادہ نکیلاپن یا کٹیلاپن بھی ٹوٹا۔ مسلمان فقیروں اور مہاتماؤں کے مزاروں پر بسنت کے دن بسنتی چادریں چڑھائی جانے لگیں۔ مسلمان بادشاہوں کے درباروں میں ہولی، دیوالی، رکشا بندھن اور دشہرہ جگہ جگہ اُسی پریم، اُسی جوش اور اُسی اُمنگ سے منایا جاتا تھا، جس طرح ہندو درباروں میں۔ کوئی سندیہ نہیں کہ اگر تھوڑا سا اور سمے مل گیا ہوتا تو یہ دیس اُس زمانے کے ہندو دھرم اور اسلام کے میل سے اپنے اندر اُسی طرح ایک

रही थी. आशा होती थी कि देस में समन्वय की पुरानी परम्परा को क़ायम रखते हुए एक दिन यह प्रेम की लहर सारे मैदान को ढक लेगी और देस के अन्दर उस नई संस्कृति, नए समाज और नई धार्मिक कल्पना को जन्म देगी, जो अलग अलग तंग खयालों से बढ़ कर और उनसे ऊँची होगी.

इन तीनों अलग अलग लहरों की हम एक छोटी सी मिसाल ईंट पत्थरों की ठोस शकल में देना चाहते हैं. फ़न्ने तामीर यानी गृह निर्मान कला में अगर हमें एक तरफ़ इसलाम से पहले के पुराने हिन्दू आदर्शों को देखना हो तो दक्खिन के मन्दिर हैं. कुर्सी के ऊपर कुर्सी, कंगूरे के ऊपर कंगूरा, ठोस पत्थर. आसमान से बात करते हुए कलश और मन्दिर के चारों तरफ़ की दीवारों की एक एक इंच जगह मूर्तियों से ढकी, ठीक उसी तरह जिस तरह हिन्दुस्तान के घने जंगल. इन इमारतों का अपना एक गौरव है. दूसरी तरफ़ बाहर से आने वाले इसलामी आदर्श का नमूना—अजमेर और दिल्ली की मसजिदें, साफ़ सफ़ाचट दीवारें, जिनमें सिवाय अल्लाह के कोई चीज़ दिखाई न दे, गोल सफ़ेद गुम्बद और ऊँचे मीनार, अरब के बयाबान रेगिस्तान की याद दिलाने वाले. इनकी भी अपनी एक अलग शान है. तीसरे इन दोनों आदर्शों का मेल, इनकी एक दूसरे पर क़लम, इनका प्रेमालिंगन अगर देखना हो तो आगरे का ताज, जो दुनिया की सबसे सुन्दर इमारतों में गिना जाता है और जो आज भी इस देश के सड़े गले जिस्म पर झूमर की तरह लटक रहा है.

رهی تهی . آشا هوتی تهی که دیس میں سملوے کی پرانی پرمپرا کو قائم رکھتے هوئے ایک دن یه پریم کی لهر سارے میدان کو ڈهک لیگی اور دیس کے اندر اُس نئی سنسکرتی، نئے سماج اور نئی دهارمک کلپنا کو جنم دیگی، جو الگ الگ تنگ خیالوں سے بڑهکر اور اُن سے اُونچی هوگی .

اِن تینوں الگ الگ لهروں کی هم ایک چهوٹی سی مثال اینٹ پتھروں کی ٹهوس شکل میں دینا چاهتے هیں . فن تعمیر یعنی گره نرمان کلا میں اگر همیں ایک طرف اِسلام سے پہلے کے پرانے هندو آدرشوں کو دیکهنا هو تو دکهن کے مندر هیں . کرسی کے اوپر کرسی، کنگورے کے اوپر کنگورا، ٹهوس پتهر، آسمان سے بات کرتے هوئے کلش اور مندر کے چاروں طرف کی دیواروں کی ایک ایک انچ جگه مورتیوں سے ڈهکی، ٹهیک اُسی طرح جس طرح هندستان کے گھنے جنگل . ان عمارتوں کا اپنا ایک گورو هے . دوسری طرف باهر سے آنے والے اسلامی آدرش کا نمونه—اجمیر اور دلی کی مسجدیں، صاف صفاچٹ دیواریں، جن میں سوائے الله کے کوئی چیز دکهائی نه دے، گول سفید گنبد اور اُونچے مینار، عرب کے بیابان ریگستان کی یاد دلانے والے . ان کی بهی اپنی ایک الگ شان هے . تیسرے ان دونوں آدرشوں کا میل، ان کی ایک دوسرے پر قلم، ان کا پریم‌النگن اگر دیکهنا هو تو آگرے کا تاج، جو دنیا کی سب سے سندر عمارتوں میں گنا جاتا هے اور جو آج بهی اِس دیس کے سڑے گلے جسم پر جهومر کی طرح لٹک رها هے . یہی حال همیں اور سب کلاؤں اور ودیاؤں میں دکهائی دیتا هے

बात में एक राय है कि उस ज़माने में दुनिया का कोई देस धन दौलत, सुख चैन, ख़ुशहाली, तिजारत और उद्योग धन्दों में हिन्दुस्तान का मुक़ाबला नहीं कर सकता था. राजाओं राजाओं में लड़ाइयाँ होती थीं. पर जिस तरह कहीं कहीं हिन्दू और मुसलमान लड़े हैं उसी तरह हिन्दू हिन्दू और मुसलमान मुसलमान भी आपस में लड़े हैं. बाहर से हमला करने वाले मुसलमानों के ख़िलाफ़ देस के मुसलमान हुकमरानों का डट कर लड़ना और यहाँ के हिन्दू राजाओं का उनका साथ देना एक मामूली घटना थी. मुसलमान बादशाहों की फ़ौज में हिन्दू सिपाही और हिन्दू सेनापति, और हिन्दू राजाओं की सेना में मुसलमान सिपाही और मुसलमान सेनापति. ऐसे ही हिन्दू राजाओं के मुसलमान प्रधान मन्त्री और मुसलमान बादशाहों के हिन्दू वज़ीरे आज़म सात सौ बरस के भारतीय इतिहास में क़दम क़दम पर देखने को मिलते हैं.

उस सारे ज़माने में हमें मुल्क के जीवन में तीन साफ़ अलग अलग लहरें बहती हुई दिखाई देती हैं. एक इसलाम के आने से पहले की ब्राह्मनों के प्रभुत्व, जात पात और छूआ छूत की तंग हिन्दू लहर. दूसरी फ़िक़ह (कर्मकांड) का कट्टरता से पालन करने वाली तंग इसलामी लहर और तीसरी दोनों के मेल जोल की वह प्रेम की लहर, जो दोनों की तंगख़यालियों से ऊपर उठ कर दोनों के गुनों को अपने अन्दर लिये हुए थी. रहन सहन, खान पान, चित्रकारी, मकानों का बनाना, धर्म और संस्कृति, सब में यह तीनों लहरें साफ़ दिखाई दे रही थीं. इनमें धीरे धीरे तंग ख़याली की दोनों लहरें सूखती जाती थीं और मेल मिलाप की लहर बढ़ती और फैलती जा

اس بات میں ایک رائے ہیں کہ اُس زمانے میں دنیا کا کوئی دیس دھن دولت سکھ چین' خوش حالی' تجارت اور اُدیوگ دھندوں میں ہندستان کا مقابلہ نہیں کر سکتا تھا. راجاؤں راجاؤں میں لڑائیاں ہوتی تھیں' پر جس طرح کہیں کہیں ہندو اور مسلمان لڑے ہیں' اُسی طرح ہندو ہندو اور مسلمان مسلمان بھی آپس میں لڑے ہیں. باہر سے حملہ کرنے والے مسلمانوں کے خلاف دیس کے مسلمان حکمرانوں کا ڈٹ کر لڑنا اور یہاں کے ہندو راجاؤں کا اُن کا ساتھ دینا ایک معمولی گھٹنا تھی. مسلمان بادشاہوں کی فوج میں ہندو سپاہی اور ہندو سینا پتی' اور ہندو راجاؤں کی سینا میں مسلمان سپاہی اور مسلمان سینا پتی' ایسے ہی ہندو راجاؤں کے مسلمان پردھان منتری اور مسلمان بادشاہوں کے ہندو وزیرِاعظم سات سو برس کے بھارتی اتہاس میں قدم قدم پر دیکھنے کو ملتے ہیں.

اُس سارے زمانے میں ہمیں ملک کے جیون میں تین صاف الگ الگ لہریں بہتی ہوئی دکھائی دیتی ہیں. ایک اسلام کے آنے سے پہلے کی براہمنوں کے پربھتو' جات پات اور چھوا چھوت کی تنگ ہندو لہر دوسری فقہ (کرم کانڈ) کا کٹرتا سے پالن کرنے والی تنگ اسلامی لہر اور تیسری دونوں کے میل جول کی وہ پریم کی لہر' جو دونوں کی تنگ خیالیوں سے اُوپر اُٹھ کر دونوں کے گنوں کو اپنے اندر لئے ہوئے تھی. رہن سہن' کھان پان' چترکاری' مکانوں کا بنانا' دھرم اور سنسکرتی' سب میں یہ تینوں لہریں صاف دکھائی دے رہی تھیں. ان میں دھیرے دھیرے تنگ خیالی کی دونوں لہریں سوکھتی جاتی تھیں اور میل ملاپ کی لہر بڑھتی اور پھیلتی جا

इसलाम के आने के साथ देस में नई टक्करों का होना क़ुदरती
था. टक्करें शुरू हुईं. देस के अलग अलग हिस्से में और ज़िन्दगी
के अलग अलग पहलुओं में उन्होंने अलग अलग रूप लिये. फिर
भी सात सौ आठ सौ बरस तक देस के इस सिरे से उस सिरे तक
सैकड़ों शहरों और हज़ारों गाँवों में हिन्दू और मुसलमान प्रेम के
साथ मिलजुल कर रहते रहे. इस सारे समय में बाहर से आकर
देस में बस जाने वाले मुसलमानों की तादाद कुछ हज़ार से ज़्यादा
नहीं थी. बाक़ी सब लाखों और करोड़ों आदमी, जिन्होंने इसलाम
धर्म को अपनाया, यहीं के रहने वाले और यहीं के हिन्दू माता पिता
की औलाद थे. हर गाँव और हर शहर में हिन्दू और मुसलमान एक
ही ज़बान बोलते थे. एक दूसरे के त्योहारों और तक़रीबों, ब्याह
शादियों और रीति रिवाजों में शरीक होते थे. एक दूसरे को 'चाचा'
'ताया' 'मामा' 'भाई' वग़ैरा कह कर पुकारते थे. ज़्यादातर मुसलमान
घरानों में आज तक सैकड़ों हिन्दू रस्में पालन की जाती हैं. जैसे
दसूठन, सालगिरह, कनछेदन, नकछेदन, शादी में दरवाज़े का चार,
तेल चढ़ाना, हल्दी चढ़ाना, कलेवा बाँधना, कँगना बाँधना, मँडवा.
ऐसे ही हिन्दुओं ने काफ़ी रस्में मुसलमानों से लीं. जैसे, घोड़ी
चढ़ना, जामा, सेहरा, शहबाला. दोनों ने मिल कर इस देस की
कारीगरी, चित्रकारी, उद्योग धन्दे, कला कौशल, तिजारत, संगीत
वग़ैरा को अपूर्व उन्नति दी. मुग़लों की सलतनत का ज़माना इन सब
बातों में इस देस का सब से ज़्यादा तरक़्क़ी का ज़माना माना जाता
है. सत्तरहवीं सदी ईसवी के आख़ीर और अठारहवीं सदी के शुरू

اِسلام کے آنے کے ساتھ دیس میں نئی ٹکروں کا ہونا قدرتی تھا۔
ٹکریں شروع ہوئیں. دیس کے الگ الگ حصے میں اور زندگی کے الگ
الگ پہلوؤں میں اُنہوں نے الگ الگ روپ لیئے۔ پھر بھی سات
سو آٹھ سو برس تک دیس کے اس سرے سے اُس سرے تک سیکڑوں
شہروں اور ہزاروں گاؤں میں ہندو اور مسلمان پریم کے ساتھ مل
جل کر رہتے رہے۔ اس سارے سمے میں باہر سے آکر دیس میں
بس جانے والے مسلمانوں کی تعداد کچھ ہزار سے زیادہ نہیں تھی۔
باقی سب لاکھوں اور کروڑوں آدمی' جنھوں نے اسلام دھرم کو اپنایا'
یہیں کے رہنے والے اور یہیں کے ہندو ماتا پتا کی اولاد تھے۔ ہر
گاؤں اور ہر شہر میں ہندو اور مسلمان ایک ہی زبان بولتے تھے۔
ایک دوسرے کے تیوہاروں اور تقریبوں بیاہ شادیوں اور ریت
رواجوں میں شریک ہوتے تھے۔ ایک دوسرے کو 'چاچا' 'تایا' 'ماما'
'بھائی' وغیرہ کہکر پکارتے تھے۔ زیادہ تر مسلمان گھرانوں میں آج
تک سیکڑوں ہندو رسمیں پالن کی جاتی ہیں۔ جیسے دسوٹھن'
سال گرہ' کن چھیدن' نک چھیدن' شادی میں دروازے کا چار'
تیل چڑھانا' ہلدی چڑھانا' کلیوا باندھنا' کنگنا باندھنا' منڈوا۔
ایسے ہی ہندوؤں نے کافی رسمیں مسلمانوں سے لیں۔ جیسے'
گھوڑی چڑھنا' جامہ' سہرا' شہہ بالا۔ دونوں نے مل کر اس دیس
کی کاریگری' چترکاری' اُدیوگ دھندے' کلا کوشل' تجارت' سنگیت
وغیرہ کو اپوروا اُنتی دی۔ مغلوں کی سلطنت کا زمانہ ان سب
باتوں میں اس دیس کا سب سے زیادہ ترقی کا زمانہ مانا جاتا ہے۔
سترھویں صدی عیسوی کے آخیر اور اٹھارھویں صدی کے شروع
کے سب بدیسی یاتری' جو سمے سمے پر اس دیس میں آئے'

और चतुर्भुज विश्नु की पूजा को ही जारी रखना चाहते थे. बहसें हुईं. गिरोह के गिरोह मिटा डाले गए. आख़ीर में कई हज़ार बरस की टक्करों के बाद जब दोनों धाराएँ गंगा और जमुना की तरह एक दूसरे में मिल गईं तो आज यह पता लगाना भी मुश्किल है कि इस मिली जुली जीवन धारा का कौन सा कन आर्य है और कौन सा द्राविड़. मित्र, वरुन और इन्द्र के मन्दिर हिन्दुस्तान भर में आज ढूँढे से भी मिलने मुश्किल हैं, पर द्राविड़ जाति के शिव आज करोड़ों के देव देव महादेव बन कर लगभग हर मन्दिर के अंदर मौजूद हैं. चतुर्भुज विश्नु इतने अपना लिये गए कि हिन्दुओं के सब अवतार विश्नु के अवतार गिने जाते हैं. यह उस महान संगम की सिर्फ़ एक छोटी सी मिसाल है.

जिस तरह की टक्कर आर्यों और द्राविड़ों में रही, उसी तरह की थोड़ी बहुत उसके बाद के ज़माने में हिन्दुओं और जैनियों में और आठवीं सदी ईसवी तक शैवों और शाक्तों में, यहाँ तक कि राम के भक्तों और कृश्न के उपासकों में बराबर होती रही. इन टक्करों में एक दूसरे का बहिश्कार भी हुआ और लाठियाँ और तलवारें भी चलीं. आजतक—'हस्तिना पीड्यमानोऽपि न गच्छेत जैनमन्दिरम्' (हाथी से भी पीछा किये जाने पर न जाय जैन मंदिर में) जैसे फ़िक़रे देस के साहित्य से मिटे नहीं हैं. यह सब टक्करें एक क़ुदरती ढंग से पैदा हुईं और उतने ही क़ुदरती ढंग से मिट गईं. पुराने ज़माने के यह सब सवाल आज इतिहास की एक कहानी रह गए हैं.

اورچتربھج وشنوکی پوجا کو ہی جاری رکھنا چاہتے تھے. بحثیں ہوئیں' گروہ کے گروہ مٹا ڈالے گئے. آخیر میں کئی ہزار برس کی ٹکروں کے بعد جب دونوں دھارائیں گنگا اور جمنا کی طرح ایک دوسرے میں مل گئیں تو آج یہ پتہ لگانا بڑی مشکل ہے کہ اس ملی جلی جیون دھارا کا کون سا کن آریہ ہے اور کون سا دراوڑ. متر' ورون اور اندر کے مندر ہندستان بھر میں آج ڈھونڈھے سے بھی ملنے مشکل ہیں' پر دراوڑ جاتی کے شیو آج کروڑوں کے دیو دیو مہادیو بن کر لگ بھگ ہر مندر کے اندر موجود ہیں. چتربھج وشنو اتنے اپنا لئے گئے کہ ہندوؤں کے سب اوتار وشنو کے اوتار گنے جاتے ہیں یہ اُس مہان سنگم کی صرف ایک چھوٹی سی مثال ہے.

جس طرح کی ٹکر آریوں اور دراوڑوں میں رہی' اُسی طرح کی تھوڑی بہت اُسکے بعد کے زمانے میں ہندوؤں اور جینیوں میں اور آٹھویں صدی عیسوی تک شیووں اور شاکتوں میں' یہاں تک کہ رام کے بھکتوں اور کرشن کے اُپاسکوں میں برابر ہوتی رہی. ان ٹکروں میں ایک دوسرے کا بہشکار بھی ہوا اور لاٹھیاں اور تلواریں بھی چلیں. آج تک--'ہستنا پیڈیہ مانو پی نہ گچھیت جین مندرم (ہاتھی سے بھی پیچھا کیا جانے پر نہ جائے جین مندر میں) جیسے فقرے دیس کے ساہتیہ سے مٹے نہیں ہیں. یہ سب ٹکریں ایک قدرتی ڈھنگ سے پیدا ہوئیں اور اُتنے ہی قدرتی ڈھنگ سے مٹ گئیں. پرانے زمانے کے یہ سب سوال آج اِتہاس کی ایک کہانی رہ گئے ہیں.

से इनकार करने वाले. कोई मांस खाने को अपने धर्म का ज़रूरी हिस्सा माननेवाले और कोई उसे पाप समझने वाले. कोई देवी के सामने हवन में मदिरा चढ़ाने वाले और कोई मदिरा छूने तक को गुनाह समझने वाले वग़ैरा वग़ैरा. लेकिन यह सब लोग किसी तरह एक गिरोह में गिन लिये जाते थे, जिसे हिन्दू कहा जाता था. थोड़े से ईसाई और यहूदी भी देस के किसी किसी कोने में थे, पर देस की आम जिन्दगी पर उनका असर नहीं के बराबर था. ऐसी हालत में एक नया मज़हब इस देस में आया—इसलाम. इस नए धर्म के मानने वाले एक ईश्वर को मानते थे. जात पात और छुआ छूत, जो हिन्दू धर्म का एक खास हिस्सा बन चुकी थी, उनमें बिलकुल न थी. मूर्ति पूजा को वह गुनाह समझते थे. वह एक निराकार के उपासक थे. उनमें मामूली आदमियों और ईश्वर के बीच किसी पुरोहित की ज़रूरत न थी. आदमी आदमी सब बराबर. लेकिन उनके धर्म को जन्म देने वाले महापुरुश हज़रत मुहम्मद अरब में जन्मे थे, हिन्दुस्तान में नहीं. उनकी खास मज़हबी किताब कुरान अरबी में लिखी हुई थी. संस्कृत या किसी हिन्दुस्तानी ज़बान में नहीं.

हिन्दू धर्म के साथ इसलाम की थोड़ी बहुत टक्कर होना कुदरती था. यह टक्कर कोई नई चीज़ नहीं थी. इस देस के इतिहास में इस से पहले पुराने द्राविड़ धर्म और नए आर्य धर्म में कई हज़ार बरस तक टक्कर रह चुकी थी. हजारों बरस तक वेदों के मानने वाले आर्य अपने वैदिक देवताओं जैसे मित्र. वरुन और इन्द्र की पूजा को मुख्य समझते थे यहाँ के असली बाशिन्दे अपने पुराने देवताओं, शिव

سے انکار کرنے والے۔ کوئی مانس کھانے کو اپنے دھرم کا ضروری حصہ ماننے والے اور کوئی اُسے پاپ سمجھنے والے۔ کوئی دیوی کے سامنے ہون میں مدیرا چڑھانے والے اور کوئی مدیرا چھونے تک کو گناہ سمجھنے والے وغیرہ وغیرہ۔ لیکن یہ سب لوگ کسی طرح ایک گروہ میں گن لئے جاتے تھے، جسے ہندو کہا جاتا تھا۔ تھوڑے سے عیسائی اور یہودی بھی دیس کے کسی کسی کونے میں تھے، پر دیس کی عام زندگی پر اُنکا اثر نہیں کے برابر تھا۔ ایسی حالت میں ایک نیا مذہب اِس دیس میں آیا—اسلام۔ اس نئے دھرم کے ماننے والے ایک ایشور کو مانتے تھے۔ جات پات اور چھوا چھوت، جو ہندو دھرم کا ایک خاص حصہ بن چکی تھی، اُن میں بالکل نہ تھی۔ مورتی پوجا کو وہ گناہ سمجھتے تھے۔ وہ ایک نراکار کے اُپاسک تھے۔ اُن میں معمولی آدمیوں اور ایشور کے بیچ کسی پروہت کی ضرورت نہ تھی۔ آدمی آدمی سب برابر۔ لیکن اُن کے دھرم کو جنم دینے والے مہاپرش حضرت محمد عرب میں جنمے تھے، ہندستان میں نہیں۔ اُن کی خاص مذہبی کتاب قرآن عربی میں لکھی ہوئی تھی، سنسکرت یا کسی ہندستانی زبان میں نہیں۔

ہندو دھرم کے ساتھ اسلام کی تھوڑی بہت ٹکر ہونا قدرتی تھا۔ یہ ٹکر کوئی نئی چیز نہیں تھی۔ اس دیس کے اِتہاس میں اس سے پہلے پرانے دراوڑ دھرم اور نئے آریہ دھرم میں کئی ہزار برس تک ٹکر رہ چکی تھی۔ ہزاروں برس تک ویدوں کے ماننے والے آریہ اپنے ویدک دیوتاؤں جیسے مِتر، ورون اور اندر کی پوجا کو مکھیہ سمجھتے تھے۔ یہاں کے اصلی باشندے اپنے پرانے دیوتاؤں، شیو

हिन्दू मुसलिम सवाल का आध्यात्मिक यानी रूहानी पहलू

आदमी की जिन्दगी के हर सवाल को कई तरह से और कई पहलुओं से देखा जा सकता है. जितने अलग अलग पहलू इस जिन्दगी के हैं, या हो सकते हैं, उतने ही तरह के सब सवालों के हो सकते हैं. मोटे तौर पर इनसान की जिन्दगी के तीन पहलू हमें दिखाई देते हैं. एक तारीख़ी या इतिहासी पहलू. दूसरा समाजी. कलचरल यानी आए दिन की जिन्दगी और रहन सहन का पहलू और तीसरा आध्यात्मिक या रूहानी पहलू. जिस सवाल की हम इस लेख में चरचा करेंगे उस का एक और चौथा सियासी यानी राजकाजी पहलू भी एक ख़ास पहलू है. इन सब पहलुओं, ख़ास कर आध्यात्मिक पहलू को, सामने रख कर ही हम आजकल के हिन्दू मुसलिम सवाल पर एक सरसरी निगाह डालना चाहते हैं.

इस सवाल का इतिहासी पहलू एक लम्बी चीज़ है. थोड़े से में उसका निचोड़ यह है. देश में कई अलग अलग मज़हबी ख़यालों के लोग रहते थे. उनकी मानताओं, मज़हबी उसूलों और रहन सहन के तरीक़ों में काफ़ी फ़रक़ था. कोई निराकार के पूजने वाले, कोई साकार के. कोई मूर्ति पूजक, कोई मूर्ति पूजा को पाप समझने वाले. कोई ईश्वर को जगत का करता मानने वाले और कोई किसी भी कर्ता के होने

ھندو مسلم سوال کا آدھیاتمک یعنی روحانی پہلو

آدمی کے زندگی کے ھر سوال کو کئی طرح سے اور کئی پہلوؤں سے دیکھا جا سکتا ھے . جتنے الگ الگ پہلو اس زندگی کے ھیں، یا ھوسکتے ھیں، اُتنے ھی طرح کے سب سوالوں کے ھوسکتے ھیں . موٹے طور پر انسان کی زندگی کے تین پہلو ھمیں دکھائی دیتے ھیں . ایک تاریخی یا اتہاسی پہلو . دوسرا سماجی، کلچرل یعنی آئے دن کی زندگی اور رھن سہن کا پہلو اور تیسرا آدھیاتمک یا روحانی پہلو . جس سوال کی ھم اِس لیکھ میں چرچا کرینگے اُس کا ایک اور چوتھا سیاسی یعنی راج کاجی پہلو بھی ایک خاص پہلو ھے . اِن سب پہلوؤں، خاص کر آدھیاتمک پہلو کو، سامنے رکھ کر ھی ھم آجکل کے ھندو مسلم سوال پر ایک سرسری نگاہ ڈالنا چاھتے ھیں .

اِس سوال کا اِتہاسی پہلو ایک لمبی چیز ھے . تھوڑے سے میں اُسکا نچوڑ یہ ھے — دیس میں کئی الگ الگ مذھبی خیالوں کے لوگ رھتے تھے . اُن کی مانتاؤں، مذھبی اُصولوں اور رھن سہن کے طریقوں میں کافی فرق تھا . کوئی نراکار کے پوجنے والے، کوئی ساکار کے، کوئی مورتی پوجک، کوئی مورتی پوجا کو پاپ سمجھنے والے . کوئی ایشور کو جگت کا کرتا ماننے والے اور کوئی کسی بھی کرتا کے ھونے

भीगी मस्त हवाएँ तुझको गहरी नींद सुलाएँ
भोर भए आज़ाद परिन्दे गाएँ तुझे जगाएँ
उठ जा रे मतवारे, जा रे
बन बन जा बंजारे !

आगे बढ़ना काम है तेरा चलना तेरी रीत
आँधी, रेत बगूले तूफ़ाँ सब ही तेरे मीत
इन से मन बहला रे, जा रे
बन बन जा बंजारे !

पलट पलट कर क्या तकती हैं तेरी थकी निगाहें
दूर खड़ी है मंज़िल तेरी खोले अपनी बाहें
जा रे गले लग जा रे, जा रे
बन बन जा बंजा रे !

अपना आप सहारा लेकर सारे तोड़ सहारे
तेरी नदिया वह नदिया है जिसके नहीं किनारे
बह जा खेवन हारे, जा रे
बन बन जा बंजारे !

بھیگی مست ہوائیں تجھکو گہری نیند سلائیں
بھور بھئے آزاد پرندے گائیں تجھے جگائیں
اُٹھ جا رے متوارے، جا رے
بن بن جا بنجارے !

آگے بڑھنا کام ہے تیرا چلنا تیری ریت
آندھی، ریت، بگولے، طوفاں سب ہی تیرے میت
اِن سے من بہلا رے، جا رے
بن بن جا بنجارے !

پلٹ پلٹ کر کیا تکتی ہیں تیری تھکی نگاہیں
دور کھڑی ہے منزل تیری کھولے اپنی باہیں
جا رے گلے لگ جا رے، جا رے
بن بن جا بنجارے !

اپنا آپ سہارا لے کر سارے توڑ سہارے
تیری ندیا وہ ندیا ہے جس کے نہیں کنارے
بہ جا کھیون ہارے، جا رے
بن بن جا بنجارے !

जिल्द १०　　अप्रैल सन् '५१　　नम्बर ४

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नयाहिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

बंजारा

(भाई तनवीर नक़वी)

बन बन जा बंजारे
नगर नगर है तेरी नगरी　डगर डगर है गाँव
देख देख थक जाएँ आँखें　थकें न तेरे पाँव
अपने को समझा रे, जा रे
बन बन जा, बंजारे !
हर एक आन है तेरे आगे　नई नवेली दुनिया
तू दुनिया का साथी फिर भी　तेरी अकेली दुनिया
दुनिया नई बसा रे, जा रे
बन बन जा बंजारे !

... जगत का कर्ता मानने वाले और कोई किसी भी कर्ता के होने

جلد ۱۰　　اپریل سن ۵۱ء　　نمبر ۴

*جات آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
'نیا ہند' پہونچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

بنجارہ

(بھائی تنویر نقوی)

بن بن جا بنجارے !
نگر نگر ہے تیری نگری　ڈگر ڈگر ہے گاؤں
دیکھ دیکھ تھک جائیں آنکھیں　تھکیں نہ تیرے پاؤں
اپنے کو سمجھا رے' جا رے
بن بن جا بنجارے !
ہر اک آن ہے تیرے آگے　نئی نویلی دنیا
تو دنیا کا ساتھی پھر بھی　تیری اکیلی دنیا
دنیا نئی بسا رے' جا رے
بن بن جا بنجارے !

ساکار کے' کوئی مورتی پوجک' کوئی مورتی پوجا کو پاپ سمجھنے والے .
کوئی ایشور کو جگت کا کرتا ماننے والے اور کوئی کسی بھی کرتا کے ہونے

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

अप्रैल १९५१

क्या किस से — सफ़ा

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल. बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने.

मैनेजर 'नया हिन्द' १९४, मुट्ठीगंज इलाहाबाद

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسایٹی کا پرچا

ایڈیٹر —

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

اپریل 1951

کیا کس سے — صفحہ

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے۔

مینیجر 'نیا ہند'

Registered No. A—210.

Printed and Published by Purushottam Prasad, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमे सब हिन्दुस्तानी शामिल हों .

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों. अखबारों. रिसालों वग़ैरा का छापना .

(३ पढ़ाई घरों. किताब घरों. सभाओं. कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों. बिरादरियों और फ़िक़ों में आपस का मेल बढ़ाना .

—०—

सोसाइटी के प्रसीडेन्ट—सि० अब्दुल मजीद ख्वाजा. वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी. मि० मंज़र अली सोख्ता, श्री बी० जी० खेर. मि० एस० के० रुद्रा. पं० विश्वम्भर नाथ. महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल .

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये .

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,
१४५, मुट्ठी गंज. इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

مقصد

(۱) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا

—————

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — سٹھ عبدالمجید خواجہ۔ وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی جی۔ کھیر، مسٹر ایس۔ کے۔ رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال۔

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے —

سندر لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،
۱۳۵، مٹھی گنج، الٰہ آباد۔

نوٹ — سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے۔

हिन्द के विधान की अंगरेजी हिन्दी शब्दावली

(अंगरेजी नागरी लिखावट में)

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ खास खास अंगरेजी शब्दों के लिये आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवानदीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाये हैं. भारत के विधान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास जरूर रखिये. क़ीमत दो रुपये.

मुस्लिम देश भक्त—लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्हों ने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

आज के शहीद— सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी.

उन वीरों की कहानियाँ जो फ़िरक़ावाराना दंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गये.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.

सुन्दर जिल्द और चिकने काग़ज़ पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

किसान की पुकार—लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत जरूरी है जो खेती वाड़ी में दिल चस्पी रखते हैं, और भारत ... क़ीमत पाँच आने.

ہند کے ودھان کی انگریزی ہندی شبداولی

(انگریزی ناگری لکھاوٹ میں)

ہند کا جو نیا ودھان پاس ہوا ہے اُسکے لگ بھگ چودہ سو خاص خاص انگریزی شبدوں کے لئے آسان ہندستانی شبد مہاتما بھگوان دین اور دوسرے ودوانوں نے سجھائے ہیں. بھارت کے ودھان کو سمجھنے کے لئے اِس شبداولی کو اپنے پاس ضرور رکھئے . قیمت دو روپئے .

مسلم دیش بھکت— لیکھک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی . کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے .
قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے .

آج کے شہید— سمپادک – شری رتن لال بنسل

اِس کتاب میں ان ویروں کی کہانیاں ہیں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہیں کی اور اُسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کر دی .

ان بہادروں کی کہانیاں جو فرقہ وارانہ دنگوں میں لوگوں کو حیوانیت سے روکتے ہوئے شہید ہو گئے .

ہر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب .

سندر جلد اور چکنے کاغذ پر چھپی آٹھ تصویروں کے ساتھ اس کتاب کا دام صرف ڈھائی روپیہ .

کسان کی پکار— لیکھک—شری آر. وینکٹ راؤ .

یہ کتاب کسانوں کے لئے ہی نہیں، اُن لوگوں کے لئے بھی بہت ضروری ہے جو کھیتی باڑی سے دلچسپی رکھتے ہیں اور بھارت کے ان سنکٹ کو دور کرنے میں وشواس رکھتے ہیں قیمت پانچ آنے .

ملنے کا پتہ—مینیجر، نیا ہند ۱۳۵ ...

پنڈت سندر لال کی اور کتابیں :—

ہندو مسلم ایکتا — اس میں وہ چار لکچر جمع کر دیئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق — سامپرد'ایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی ' مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج. جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا

قیمت بارہ آنے .

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے — مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وہاں کی بھیانکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک ورنن . اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق — اس چھوٹی سی کتاب میں ۱۹۴۹-۵۰ میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ‌وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے . قیمت صرف دو آنے .

ملنے کا پتہ—مینیجر 'نیا ہند' ۱۳۵' مٹھی گنج' الہ آباد .

हिन्दू मुस्लिम एकता — इस में वह चार लेक्चर जमा कर दिये गये हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़ — साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया .

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है — महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गये हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़ — इस छोटी सी किताब में सन १९४९-५० में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

नीचे लिखी सब किताबें नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती हैं.

पाँच से ज्यादह किताबें खरीदने वालो और बुकसेलरों को ३३ फीसदी कमीशन दिया जायगा.

डाक या रेल खर्च हर हालत में गाहक के जिम्मे होगा.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

२९ जनवरी सन् १९४८ को महात्मा गांधी ने आल इंडिया कांगरेस कमेटी के सामने एक सुझाव के रूप में 'लोक सेवक संघ' का एक नया विधान तैयार किया था. इस विधान मे उन्होंने सलाह दी थी कि कांगरेस का सारा संगठन तोड़ दिया जावे और कांगरेस वाले हकूमत से बाहर निकल कर एक 'लोक सेवक संघ' बनाकर काम करें.

३० जनवरी को अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा जी ने कांगरेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर वह विधान दिया कि वह गांधी जी की तरफ से उसे आल इंडिया कांगरेस कमेटी में पेश कर दें. यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आखिरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख्ता ने की है जो गांधी वाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधी वाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत जरूरी है. २२५ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपये.

मिलने का पता—मैनेजर, 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद

نیچے لکھی سب کتابیں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہیں۔

پانچ سے زیادہ کتابیں خریدنے والوں اور بکسیلروں کو ۳۳ فیصدی کمیشن دیا جائیگا۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمہ ہوگا۔

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

۲۹ جنوری سن ۱۹۴۸ کو مہاتما گاندھی نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے ایک سجھاؤ کے روپ میں 'لوک سیوک سنگھ' کا ایک نیا ودھان تیار کیا تھا۔ اس ودھان میں انہوں نے صلاح دی تھی کہ کانگریس کا سارا سنگٹھن توڑ دیا جاوے اور کانگریس والے حکومت سے باہر نکل کر ایک 'لوک سیوک سنگھ' بنا کر کام کریں۔

۳۰ جنوری کو اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما جی نے کانگریس کے جنرل سکریٹری کو بلا کر وہ ودھان دیا کہ وہ گاندھی جی کی طرف سے اسے آل انڈیا کانگریس کمیٹی میں پیش کردیں۔ یہ چھوٹا سا ودھان دیش کے نام گاندھی جی کی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں۔

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اسکا پڑھنا بہت ضروری ہے۔ ۲۲۵ صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے۔

ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ہند' ۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد

होती है जो उनके लिये जीने जिलाने को काफी है. एक दिन वह आएगा जब दुनिया भर का इनसानी समाज यह महसूस करेगा कि अगर समाज सेवक हो तो बापा जैसा जिसे अपने तन मन की सुध है न खाने पीने का होश है, जिसे शायद अपनी कुछ भी खबर नहीं है. लेकिन धुन का पक्का है—अपनी राह पर अटल.

मगर कमाल की बात यह है कि बापा खाली समाज सेवक ही नहीं थे. उनके दिल में जहाँ गरीब के लिये दया थी वहां आज़ादी के लिये तड़प भी थी. यही नहीं, हर तरह की रचनात्मक सेवा में उन्हें रस आता था. खादी के सिलसिले में उन्होंने जो काम किया वह भी अपनी मिसाल नहीं रखता. इसके अलावा नारी समाज की बेहतरी और बढ़ोतरी में भी उनको ज़बरदस्त दिलचस्पी थी. गरज़ कि दुखिया समाज का शायद ही कोई ऐसा हिस्सा होगा जिससे नाता जोड़ कर उसके हित में उन्होंने कुछ न कुछ न किया हो.

बापा में ताक़त भी ग़ज़ब की थी. इतने लम्बे लम्बे दौरे करते, इतने अजीब अजीब आदमियों बल्कि वनमानुसों, की सोहबत में रहते, ऐसी वीरान और अनसुनी बस्तियों में घूमते—फिर भी अपना सब काम करते रहते. बदन मानो सिर्फ एक ज़रिया भर रह गया था जिसे बापा नाम की संस्था ढकेले लिये जाती थी, खींचे लिये जाती थी. तिसपर भी, हैरत की बात यह है, कि वह अपने दिन भर के काम की डायरी, रोजाना लिख लिया करते थे. कोई दिन नागा नहीं जाता था. मानो मालिक के सामने अपने किये काम की पेशी देते हों, अपने दिन भर का हिसाब किताब आगे रख देते हों. उस रब को दिल चीर कर अपना दर्द दिखाते हों और कल के लिये आशीश लेते हों.

बापू गए, बापा गए, हिन्दुस्तान के दुखियों और गरीबों का तो मानो खज़ाना ही लुट गया. सिरजनहार ही उनका सहारा है.

—सुरेश रामभाई

هوتی ہے جو اُن کے لئے جینے جلانے کو کافی ہے . ایک دن وہ آئے گا جب دنیا بھر کا اِنسانی سماج یہ محسوس کرے گا کہ اگر سماج سیوک ہو تو باپا جیسا جسے اپنے تن من کی سدھ ہے نہ کھانے پینے کا ہوش ہے، جسے شاید اپنی کچھ بھی خبر نہیں ہے . لیکن دھن کا پکا ہے—اپنی راہ پر اٹل .

مگر کمال کی بات یہ ہے کہ باپا خالی سماج سیوک ہی نہیں تھے . اُن کے دل میں جہاں غریب کے لئے دیا تھی وہاں آزادی کے لئے تڑپ بھی تھی . یہی نہیں ، ہر طرح کی رچناتمک سیوا میں اُنہیں رس آتا تھا . کھادی کے سلسلے میں اُنہوں نے جو کام کیا وہ بھی اپنی مثال نہیں رکھتا . اِس کے علاوہ ناری سماج کی بہتری اور بڑھوتری میں بھی اُنکو زبردست دلچسپی تھی . غرض کہ دکھیا سماج کا شاید ہی کوئی ایسا حصہ ہوگا جس سے ناتا جوڑ کر اس کے ہت میں اُنہوں نے کچھ نہ کچھ نہ کیا ہو .

باپا میں طاقت بھی غضب کی تھی . اتنے لمبے لمبے دورے کرتے ، اتنے عجیب عجیب آدمیوں بلکہ بن مانسوں کی صحبت میں رہتے ، ایسی ویران اور ان سنی بستیوں میں گھومتے—پھر بھی اپنا سب کام کرتے رہتے . بدن مانو صرف ایک ذریعہ بھر رہ گیا تھا جسے باپا نام کی سنستھا ڈھکیلے لئے جاتی تھی کھینچے لئے جاتی تھی . تس پر بھی حیرت کی بات یہ ہے کہ وہ اپنے دن بھر کے کام کی ڈائری روزانہ لکھ لیا کرتے تھے . کوئی دن ناغہ نہیں جاتا تھا . مانو مالک کے سامنے اپنے کئے کام کی پیشی دیتے ہوں ، اپنے دن بھر کا حساب کتاب آگے رکھ دیتے ہوں . اس رب کو دل چیر کر اپنا درد دکھاتے ہوں اور کل کے لئے آشیش لیتے ہوں .

باپو گئے ، باپا گئے ، ہندوستان کے دکھیوں اور غریبوں کا تو مانو خزانہ ہی لٹ گیا . سرجن ہار ہی اُنکا سہارا ہے .

— سریش رام بھائی

उस घड़ी की बलिहारी है जब १९१४ में एक दिन बापा—अमृतलाल विठ्ठलदास ठक्कर—प्रेम की गंगा के किनारे पहुँचे. श्री गोपाल कृश्न गोखले से मिले और उनके भारत सेवक समाज में भर्ती होना चाहा. दिल को दिल पहचानता है. श्री गोखले जी को कुछ भी देर नहीं लगी और भविश्यवानी की कि यह आदमी उनके भारत सेवक समाज का नाम रौशन करेगा. बापा ने भारत सेवक समाज का ही नहीं, हिन्दुस्तान का नाम भी ऊँचा उठाया है. देस को आगे बढ़ाया है.

इंगलिस्तान की श्रीमती फलोरेन्स नाइटिंगेल, फ्रान्स की श्रीमती जां-दे-आर्क की गाथा बहुत गाई जाती है, उनको याद कर उनके देस वाले फूले नहीं समाते हैं. दुनिया की उन अमर हस्तियों में बापा की गिनती की जा सकेगी. बापा जैसा ग़रीब नवाज़ दुनिया के परदे पर शायद ही मिलता है. जिधर से दुखिया की आह सुनते उसी तरफ़ उनके पाँव बढ़ते चले जाते थे. उड़ीसा का अकाल हो या बंगाल का, बीजापुर का या पंचमहाल का, बाढ़ का कोप हो उत्तरप्रदेश में, आसाम में या बिहार में—बापा तुरंत वहाँ मौजूद होते और जबतक वहाँ की हालत संभल न जाय चैन नहीं लेते थे. नीची नाम की जातियों के तो—गुजरात काठियावाड़ के भंगी महार हों, पंचमहाल के भील हों, आसाम में खासी की पहाड़ियों या मध्यप्रदेश में मंडला के जंगलों या उत्तर प्रदेश में देहरादून जौनसर भाभर के झाड़ों में रहने वाले आदिबासी हों—सारे दलित और आदिबासी समाज के वह एक दम अपने प्यारे सगे थे और उन्होंने ही उनको 'बापा'' का प्रेम भरा नाम दिया था. इसी तरह खेड़ा के किसानों और जमशेदपुर के मज़दूरों के भी वह अपने बन गए थे, और हरिजनों के तो—चाहे वह तामिलनाड के त्रिचना पल्ली में हों या गुजरात के पंचमहाल में या उड़ीसा के पुरी में या सरहद के नौशहरा में—वह मानो सब ही कुछ थे. और ऐसा लगता था कि यह सचमुच विठ्ठल (भगवान) का पूत है जो उनकी ही बिरादरी का है, इसके मुँह से अमृत की बरखा

اُس گھڑی کی بلیہاری ہے جب ۱۹۱۴ میں ایک دن باپا— امرت لال وٹھل داس ٹھکر— پریم کی گنگا کے کنارے پہنچے، شری گوپال کرشن گوکھلے سے ملے اور اُن کے بھارت سیوک سماج میں بھرتی ہونا چاہا۔ دل کو دل پہچانتا ہے۔ شری گوکھلے جی کو کچھ بھی دیر نہیں لگی اور بھوشیہ وانی کی کہ یہ آدمی اُن کے بھارت سیوک سماج کا نام روشن کریگا۔ باپا نے بھارت سیوک سماج کا ہی نہیں، ہندستان کا نام بھی اونچا اُٹھایا ہے۔ دیس کو آگے بڑھایا ہے۔

انگلستان کی شریمتی فلورنس نائٹنگل، فرانس کی شریمتی جان دے آرک کی گاتھا بہت گائی جاتی ہے، اُنکی یاد کر اُن کے دیس والے پھولے نہیں سماتے ہیں۔ دنیا کی اُن امر ہستیوں میں باپا کی گنتی کی جا سکیگی۔ باپا جیسا غریب نواز دنیا کے پردے پر شاید ہی ملتا ہے۔ جدھر سے دکھیا کی آہ سنتے اُسی طرف اُن کے پاؤں بڑھتے چلے جاتے تھے۔ اُڑیسہ کا اکال ہو یا بنگال کا، بیجاپور کا یا پنچ محال کا، باڑھ کا کوپ ہو اُتر پردیش میں، آسام میں یا بہار میں— باپا ترنت وہاں موجود ہوتے اور جب تک وہاں کی حالت سنبھل نہ جائے چین نہیں لیتے تھے۔ نیچی نام کی جاتیوں کے تو— گجرات کاٹھیاواڑ کے بھنگی مہار ہوں، پنچ محال کے بھیل ہوں، آسام میں کھاسی کی پہاڑیوں یا مدھیہ پردیش میں منڈلا کے جنگلوں یا اُتر پردیش میں دہرادون جون سر بھابھر کے جھاڑوں کے رہنے والے آدی باسی ہوں— ساری دلت اور آدی باسی سماج کے وہ ایک دم اپنے پیارے سگے تھے اور انہوں نے ہی اُنکو 'باپا' کا پریم بھرا نام دیا تھا۔ اِسی طرح کھیڑا کے کسانوں اور جمشید پور کے مزدوروں کے بھی وہ اپنے بن گئے تھے، اور ہریجنوں کے تو— چاہے وہ تامل ناڈ کے ترچنا پلی میں ہوں یا گجرات کے پنچ محال میں یا اُڑیسہ کے پوری میں یا سرحد کے نوشہرہ میں— وہ مانو سب ہی کچھ تھے۔ اور ایسا لگتا تھا کہ یہ سچ مچ وٹھل (بھگوان) کا پوت ہے جو اُنکی ہی برادری کا ہے۔ اِس کے منہ سے امرت کی برکھا

अमीर की सब जगह सुनवाई है. ग़रीब का हित करने वाला कोई कोई कभी कभी ही मिलता है. बापा ग़रीब की, दुखियों की माँ ही थे. बापू बाप थे. जो भेद बाप और माँ के काम के दायरे में होता है वही भेद बापू और बापा के कामों में था. लेकिन इसी कुछ तंग दायरे की वजह से ही माँ को अपनाहट और प्यार कहीं ज्यादा होता है. और औलाद को माँ का जाना कहीं ज्यादा चुभता है. इसलिये बापा के गुज़रने पर देस के नंगे, भूके, पिछड़े लोग जिनका कोई पुरसान-हाल नहीं है अपने को अनाथ पा रहे हैं.

बापा को हमने माँ कहा है. सचमुच उनका दिल और काम माँ के से ही थे. यही वजह है कि बापू जैसे महात्मा को भी बापा के कामों से अकसर डाह होती थी. बापा के जैसा दिल किसी को मुशकिल से ही नसीब होता है. बल्कि कहना यह चाहिये कि वह सिर से पैर तक दिल ही दिल थे. शायद इसी का नतीजा है कि जो उनके पास आता वह उनसे चिपट कर रह जाता और हमेशा के लिये उनका हो जाता. नहीं तो नामुमकिन था कि बापा नौजवानों में जान फूँक कर ऐसे खरे और चंगे ख़िदमतगार पैदा कर देते जैसे कर्नाटक के भंडारीजी, महाराष्ट्र के वर्वे जी और वालीकर जी, उत्तर प्रदेश के वियोगी हरिजी और श्याम लाल जी, गुजरात के परिच्छित लाल जी और डाह्या भाई जी वग़ैरा, दक्खिन भारत के श्री भाश्मायगर, श्री राघवम्मा, श्री लक्ष्मी नारायन राव, श्रीमती यशोधरा देवी वग़ैरा, और दूसरे कितने ही भाई बहन देस भर में हैं जिनका परिचय न मैं दे सकता हूँ न मैं उन्हें जानता हूँ क्योंकि वह बड़ी ख़ामोशी और बड़ी ख़ूबी के साथ अपना काम कर रहे हैं.

امیر کی سب جگہ سنوائی ھے. غریب کا ھت کرنے والا کوئی کوئی کبھی کبھی ھی ملتا ھے . باپا غریب کی، دکھیوں کی ماں ھی تھے . باپو باپ تھے . جو بھید باپ اور ماں کے کام کے دائروں میں ھوتا ھے وھی بھید باپو اور باپا کے کاموں میں تھا . لیکن اسی کچھ تنگ دائرے کی وجہ سے ھی ماں کی اپناھٹ اور پیار کہیں زیادہ ھوتا ھے، اور اولاد کو ماں کا جانا کہیں زیادہ چبھتا ھے . اس لئے باپا کے گذرنے پر دیس کے ننگے، بھوکے، پچھڑے لوگ جن کا کوئی پرسان حال نہیں ھے اپنے کو اناتھ پا رھے ھیں .

باپا کو ھم نے ماں کہا ھے . سچ مچ ان کا دل اور کام ماں کے سے ھی تھے . یہی وجہ ھے کہ باپو جیسے مہاتما کو بھی باپا کے کاموں سے اکثر ڈاہ ھوتی تھی . باپا کے جیسا دل کسی کو مشکل سے ھی نصیب ھوتا ھے . بلکہ کہنا یہ چاھئے کہ وہ سر سے پیر تک دل ھی دل تھے . شاید اسی کا نتیجہ ھے کہ جو ان کے پاس آتا وہ ان سے چپٹ کر رہ جاتا اور ھمیشہ کے لئے ان کا ھو جاتا . نہیں تو ناممکن تھا کہ باپا نوجوانوں میں جان پھونک کر ایسے کھرے اور چنگے خدمت گار پیدا کر دیتے جیسے کرناٹک کے بھنڈاری جی، مہاراشٹر کے ورو ے جی اور والیکر جی، اتر پردیش کے ویوگی ھری جی اور شیام لال جی، گجرات کے پریچھت لال جی اور ڈاھیا بھائی جی وغیرہ، دکھن بھارت کے شری بھاشمایگر، شری راگھومما، شری لکشمی نارائن راؤ، شریمتی یشودھرا دیوی وغیرہ، اور دوسرے کتنے ھی بھائی بہن دیس بھر میں ھیں جن کا پریچے نہ میں دے سکتا ھوں نہ میں انہیں جانتا ھوں کیونکہ وہ بڑی خاموشی اور بڑی خوبی کے ساتھ اپنا کام کر رھے ھیں .

लिये हर तरह से अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये हो तो वह इस नतीजे पर पहुंच सकती है और उसी तरह की दलीलें और उसी तरह की तरकीबें उसे सूझ सकती है. आजकल की सरकार के सामने तो कांगरेस की बहुत बड़ी मिसाल मौजूद है कि उसने चरखा हाथ में लेकर मानचिस्टर की मिलों को हिला दिया था. पर हमारे कपड़े और अनाज का अकाल उस वक्त तक कभी दूर नहीं होगा जब तक हमारी आँख अमरीका के खलिहानों पर रहेगी और मानचिस्टर, जापान और हिन्द की मिलों पर रहेगी.

हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि जैसे ही सरकार इस तरफ से निगाह हटाएगी इस कपड़े और अनाज के अकाल से बचने की तमाम तरकीबें अपने आप दिमाग़ में आकर घूमने लगेंगी

१९-२-'५१. —भगवानदीन

दुखियों की मां—बापा—

हिन्दुस्तान पर तो मानो तबाही आ गई है. रोटी-पानी की तकलीफ़, कपड़े-लत्ते की तकलीफ़. रहने-सहने की तकलीफ़. हर चीज़ की ही आफ़त है. लेकिन अगर अपने दुख में दुखी होने वाला, सुख में सुखी होने वाला कोई पास मौजूद रहे तो तबियत को इतमिनान रहता है. मगर ऐसे लोग भी जिनके मुँह से दो मीठी बातें सुनकर मन को तसल्ली मिल जाती थी, अब उठते जा रहे हैं. और अपने मन का दुखड़ा कहते नहीं बनता. बापा के जाने से जो धक्का दुखियों को लगा है वह वैसा ही है जैसे माँ के जाने से मासूम बच्चों को होता है.

لئے ہر طرح سے اپنے پیروں پر کھڑا ہونا چاہئے ہی تو وہ اس نتیجے پر پہنچ سکتی ہے اور اسی طرح کی دلیلیں اور اسی طرح کی ترکیبیں اسے سوجھ سکتی ہیں. آج کل کی سرکار کے سامنے تو کانگریس کی بہت بڑی مثال موجود ہے کہ اس نے چرخہ ہاتھ میں لے کر مانچسٹر کی ملوں کو ہلا دیا تھا. پر ہمارے کپڑے اور اناج کا اکال اس وقت تک کبھی دور نہیں ہوگا جبتک ہماری آنکھ امریکہ کے کھلیانوں پر رہے گی اور مانچسٹر، جاپان اور ہند کی ملوں پر رہیگی.

ہم وشواس کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ جیسے ہی سرکار اس طرف سے نگاہ ہٹائیگی اِس کپڑے اور اناج کے اکال سے بچنے کی تمام ترکیبیں اپنے آپ دماغ میں آکر گھومنے لگیں گی.

۱۹-۲-۵۱ —بھگوان دین

دکھیوں کی ماں — باپا—

ہندستان پر تو مانو تباہی آگئی ہے. روٹی پانی کی تکلیف، کپڑے لتے کی تکلیف، رہنے سہنے کی تکلیف، ہر چیز کی ہی آفت ہے. لیکن اگر اپنے دکھ میں دکھی ہونے والا سکھ میں سکھی ہونے والا کوئی پاس موجود رہے تو طبیعت کو اطمینان رہتا ہے. مگر ایسے لوگ بھی جن کے منہ سے دو میٹھی باتیں سن کر من کو تسلی مل جاتی تھی، اب اُٹھتے جا رہے ہیں. اور اپنے من کا دکھڑا کہتے نہیں بنتا. باپا کے جانے سے جو دھکا دکھیوں کو لگا ہے وہ ویسا ہی ہے جیسے ماں کے جانے سے معصوم بچوں کو ہوتا ہے.

जाय कि कपड़ा पहनने वाले कपड़े के मिल मालिकों से भुगत ले अब तो जमींदारी की तरह से इस तरफ़ भी सरकार को नज़र डालने की ज़रूरत है. मिलों को स्टेट मालिकी में ले लेने का काम न आसान है न जलदी से किया जासकता है. पर एक काम तो बहुत आसानी से किया जा सकता है कि जेल करघा अपना लें और प्राइमरी स्कूल चरखा संभाल लें. जो मुल्क लड़ाई के दिनों में खुद कपड़ा पहन लेता था और दूसरे मुल्कों को कपड़ा पहनाता था उसमें अगर आज कपड़े का अकाल हो तब यही समझना चाहिये कि उसकी कपड़े बनाने की ताकत से या तो गलत काम लिया जा रहा है या उसे बेकार छोड़ दिया गया है

अनाज की कमी की बात सुनकर हम इतने अचरज मे नहीं पड़ते जितना यह सुनकर हमें अचरज होता है कि सरकार ने बहुत से अनाज के खेतों को कपास के खेतों में तबदील कर दिया है सिर्फ़ इस वजह से कि कभी यह झगड़ा उठा था कि पाकिस्तान अब हिन्दुस्तान को कपास नहीं देगा और इसलिये हिन्दुस्तान को रुई के मामले में अपने पॉव पर आप खड़ा होना चाहिये और अनाज के मामले में अपने पॉव पर कुल्हाड़ी मार लेनी चाहिये सरकार की यह कुछ ऐसी अजीब बातें है जिनको जब उसके मंत्री पार्लियामेन्ट के सामने रखते हैं तो यह साबित कर देते है कि जो कुछ सरकार ने किया वह बहुत ज़रूरी था. उनकी यह बात किसी हद तक ठीक हो सकती है पर आम तौर से इनसान उसी नतीजे पर पहुँचा करता है जिस नतीजे पर पहुंचना उसने तय कर रक्खा होता है. अगर सरकार अपने सामने इस नतीजे पर पहुंचना तय करले कि उसे अनाज के

حائے کہ کپڑا پہننے والے کپڑے کے مل مالکوں سے بھگت لیں . اب تو زمینداری کی طرح سے اِس طرف بھی سرکار کو نظر ڈالنے کی ضرورت ہے . ملوں کو اسٹیٹ مالکی میں لے لینے کا کام نہ آسان ہے نہ جلدی سے کیا جا سکتا ہے . پر ایک کام تو بہت آسانی سے کیا جا سکتا ہے کہ جیل کرگھا اپنا لیں اور پرائمری اسکول چرخہ سنبھال لیں . جو ملک لڑائی کے دنوں میں خود کپڑا پہن لیتا تھا اور دوسرے ملکوں کو کپڑا پہناتا تھا اُس میں اگر آج کپڑے کا اکال ہو تب یہی سمجھنا چاہئے کہ اُس کی کپڑے بنانے کی طاقت سے یا تو غلط کام لیا جا رہا ہے یا اُسے بیکار چھوڑ دیا گیا ہے

اناج کی کمی کی بات سن کر ہم اتنے اچرج میں نہیں پڑتے جتنا یہ سن کر ہمیں اچرج ہوتا ہے کہ سرکار نے بہت سے اناج کے کھیتوں کو کپاس کے کھیتوں میں تبدیل کر دیا ہے . صرف اِس وجہ سے کہ کبھی یہ جھگڑا اُٹھا تھا کہ پاکستان اب ہندستان کو کپاس نہیں دیگا اور اِس لئے ہندستان کو روئی کے معاملے میں اپنے پاؤں پر آپ کھڑا ہونا چاہئے اور اناج کے معاملے میں اپنے پاؤں پر کلہاڑی مار لینی چاہئے . سرکار کی یہ کچھ ایسی عجیب باتیں ہیں جن کو جب اُس کے منتری پارلیمنٹ کے سامنے رکھتے ہیں تو یہ ثابت کر دیتے ہیں کہ جو کچھ سرکار نے کیا وہ بہت ضروری تھا . اُن کی یہ بات کسی حد تک ٹھیک ہو سکتی ہے پر عام طور سے انسان اُسی نتیجے پر پہنچا کرتا ہے جس نتیجے پر پہنچنا اُس نے طے کر رکھا ہوتا ہے . اگر سرکار اپنے سامنے اس نتیجے پر پہنچنا طے کر لے کہ اُسے اناج کے

कपड़े और अनाज की कमी और सरकार—

सरकार की पालिसी कपड़े और अनाज की पैदावार के बारे में क्या है यह समझना बेहद मुशकिल है. और इसकी सीधी और साफ़ वजह यह है कि सरकार इन दोनों मामलों में कोई पक्की पालिसी बना ही नहीं पाई. जब इन मामलों में सरकार की पालिसी ही उलझी हुई है तो उसमें समझने वालों की समझ उलझकर रह जाय तो इसमें अचरज ही क्या.

कपड़े को ही लीजिये. सन '४९ में बत्तीस करोड़ गज़ कपड़ा की महीने के औसत से तैयार हुआ और सन '५० में वह तीस करोड़ गज़ ही रह गया. मोटा कपड़ा सन '५० में ३७ करोड़ गज़ तैयार हुआ और बीच का कपड़ा १९३ करोड़ गज़. बारीक कपड़ा ९१ करोड़ गज़ और बहुत बारीक कपड़ा २२ करोड़ गज़. बाहर से कुल कपड़ा मँगाया गया ११४ करोड़ गज़. १९५१ के शुरू होते होते हमारे पास सवा दो लाख गाँठें थीं. लेकिन सन '४९ के शुरू में साढ़े पाँच लाख गाँठें थीं और सन '५० के शुरू में तीन लाख. इस हिसाब से ऐसा मालूम होता है कि ८२ हज़ार गाँठ फ़ी महीने से हमारी पैदावार अब ६२ हज़ार गाँठों पर आगई है और इसमें से भी १५ हज़ार गाँठ हर महीने बाहर भेज देते हैं. इस सब का असर उन करघों पर भी पड़ा है जो हाथ से चलाए जाते हैं उनकी पैदावार भी ५० फ़ीसदी कम होगई है. इतना ही नहीं बहुत जल्दी बम्बई की कई मिलें टूट जायँगी और हज़ारों मज़दूर बेकार हो जाँयगे. यह मामला अब इस तरह का नहीं रह गया कि यह कहकर छोड़ दिया

کپڑے اور اناج کی کمی اور سرکار—

سرکار کی پالیسی کپڑے اور اناج کی پیداوار کے بارے میں کیا ہے یہ سمجھنا بےحد مشکل ہے . اور اِسکی سیدھی اور صاف وجہ یہ ہے کہ سرکار اِن دونوں معاملوں میں کوئی پکی پالیسی بنا ہی نہیں پائی . جب اِن معاملوں میں سرکار کی پالیسی ہی اُلجھی ہوئی ہے تو اُس میں سمجھنے والوں کی سمجھ اُلجھ کر رہ جائے تو اِس میں اچرج ہی کیا

کپڑےکو ہی لیجئے . سن '۴۹ میں بتیس کروڑ گز کپڑا فی مہینے کے اوسط سے تیار ہوا اور سن '۵۰ میں وہ تیس کروڑ گز ہی رہگیا . موٹا کپڑا سن '۵۰ میں ۳۷ کروڑ گز تیار ہوا اور بیچ کا کپڑا ۱۹۳ کروڑ گز . باریک کپڑا ۹۱ کروڑ گز اور بہت باریک کپڑا ۲۲ کروڑ گز . باہر سے کل کپڑا منگایا گیا ۱۱۴ کروڑ گز . 1951 کے شروع ہوتے ہوتے ہمارے پاس سوا دو لاکھ گانٹھیں تھیں . لیکن سن '۴۹ کے شروع میں ساڑھے پانچ لاکھ گانٹھیں تھیں اور سن '۵۰ کے شروع میں تین لاکھ . اِس حساب سے ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ۸۲ ہزار گانٹھ فی مہینے سے ہماری پیداوار اب ۶۲ ہزار گانٹھوں پر آگئی ہے اور اِس میں سے بھی ۱۵ ہزار گانٹھ ہر مہینے باہر بھیج دیتے ہیں . اِس سب کا اثر اُن کرگھوں پر بھی پڑا ہے جو ہاتھ سے چلائے جاتے ہیں . اُن کی پیداوار بھی ۵۰ فیصدی کم ہوگئی ہے . اتنا ہی نہیں بہت جلدی بمبئی کی کئی ملیں ٹوٹ جائینگی اور ہزاروں مزدور بیکار ہو جائینگے . یہ معاملہ اب اِس طرح کا نہیں رہ گیا کہ یہ کہکر چھوڑ دیا

और लोगों के दिल में तांगे वाले के लिये जो इज़्ज़त थी वह इनाम देने के बाद एक दम जाती रही. यहाँ हम यह याद दिलाना मुनासिब समझते हैं कि एक बार 'कुल हिन्द चरखा संघ' की किसी दुकान पर एक गाहक दस हज़ार रुपए के नोट भूल गया था. वह नोट दूसरे या तीसरे दिन उसे वापस दे दिये गए या पहुँचा दिये गए. इस बात की खबर गांधी जी को दे दी गई और उनसे चाहा गया कि वह अपने परचे में उस आदमी के नाम का हवाला देकर कुछ लिख दें. उन्होंने अपने परचे में नोट लौटा देने की बात तो लिखी पर किसी नाम का ज़िक्र नहीं किया. और अगर हम भूलते नहीं हैं तो शायद उन लोगों को एक मीठी फटकार भी दी थी. कोई ज़रा अन्दर नज़र डाले तो उसकी समझ में यह बात आ सकती है कि ईमानदारी का इनाम ईमानदारी ही हो सकती है और कोई चीज़ नहीं.

तांगे वाले ने वह पारसल क्यों लौटा दिया इसकी गहराई में हम नहीं जाना चाहते क्योंकि इसकी गहराई में जाकर हम उस भूल से भी बड़ी भूल कर बैठेंगे जो दिल्ली म्युनिसपलटी ने इनाम देकर की है.

गहराई में न जाने की बात हमने यों कह दी है जिससे और पत्र वही काम न कर बैठें जिसे हम करने से बचना चाहते हैं.

ईमानदारी को अपने रास्ते बढ़ने दीजिये वह आपकी मदद से घटेगी ही, बढ़ेगी नहीं.

२०.१.५१. —भगवानदीन

اور لوگوں کے دل میں تانگے والے کے لئے جو عزت تھی وہ انعام دینے کے بعد ایک دم جاتی رہی. یہاں ہم یہ یاد دلانا مناسب سمجھتے ہیں کہ ایک بار 'کل ہند چرخہ سنگھ' کی کسی دوکان پر ایک گاہک دس ہزار روپے کے نوٹ بھول گیا تھا. وہ نوٹ دوسرے یا تیسرے دن اُسے واپس دے دیئے گئے یا پہونچا دیئے گئے. اس بات کی خبر گاندھی جی کو دے دی گئی اور اُن سے چاہا گیا کہ وہ اپنے پرچے میں اُس آدمی کے نام کا حوالہ دے کر کچھ لکھ دیں. اُنھوں نے اپنے پرچے میں نوٹ لوٹا دینے کی بات تو لکھی پر کسی نام کا ذکر نہیں کیا. اور اگر ہم بھولتے نہیں ہیں تو شاید اُن لوگوں کو ایک میٹھی پھٹکار بھی دی تھی. کوئی ذرا اندر نظر ڈالے تو اُسکی سمجھ میں یہ بات آسکتی ہے کہ ایمانداری کا انعام ایمانداری ہی ہوسکتی ہے اور کوئی چیز نہیں.

تانگے والے نے وہ پارسل کیوں لوٹا دیا اسکی گہرائی میں ہم نہیں جانا چاہتے کیونکہ اسکی گہرائی میں جاکر ہم اُس بھول سے بھی بڑی بھول کر بیٹھینگے جو دلی میونسپلٹی نے انعام دے کر کی ہے.

گہرائی میں نہ جانے کی بات ہم نے یوں کہہ دی ہے جس سے اور پتر وہی کام نہ کر بیٹھیں جسے ہم کرنے سے بچنا چاہتے ہیں.

ایمانداری کو اپنے راستے بڑھنے دیجئے. وہ آپکی مدد سے گھٹیگی ہی، بڑھیگی نہیں.

۲۰-۱-۵۱ — بھگوان دین

ईमानदारी का इनाम—

राजधानी से दिल्ली की नगरायत यानी म्युनिसपलटी "राजधानी" नाम का एक परचा निकालती है. उसके सोलह जनवरी के मुखपत्र पर एक तसवीर निकली है जिसमें श्री प्यारे लाल नाम के एक तांगे वाले को पच्चीस रुपए इनाम दिये जा रहे हैं और यह इनाम है इस बात का कि उसके तांगे में कोई सवारी एक पारसल भूल गई थी जिसमें हज़ार रुपए से ऊपर की घड़ियां थीं और वह पारसल उस तांगे वाले ने ज्यों का त्यों मालिक को लौटा दिया था.

हमारी राय में जो धर्म का प्रचार करता है वह धर्म को मिसमार करता है और जो धर्म का व्योहार करता है वह धर्म के बग़ीचे में बहार लाता है. जिस तरह धर्म व्योहार चाहता है प्रचार नहीं वैसे ही ईमानदारी फैलाव चाहती है इनाम नहीं. ईमानदारी की जड़ में त्याग यानी अपनाई हुई ग़रीबी रहती है. इसलिये ईमानदारी में सुख और मिठास से भरे हुए ग़रीबी के फल लगते हैं. इनाम देना तो ईमानदारी की जड़ पर कुठाराघात करना है. म्युनिसपलटी अगर उस तांगे वाले को कुछ इनाम दे सकती थी तो वह यही हो सकता था कि वह तांगे वालों के साथ ईमानदार बनती, न कि उसे रुपए देती. तांगे वाले ने रुपए लेकर अपनी उस सब ख़ुशी को खो दिया जो उसने पारसल लौटा कर हासिल की थी और जिसकी क़ीमत काग़ज़ के नोटों तो क्या चाँदी के रुपयों और सोने की मोहरों में भी नहीं नापी जा सकती. और इनाम देने से पहले म्युनिसपलटी या

ایمان داری کا انعام—

راجدھانی سے دلی کی نگرایت یعنی میونسپلٹی "راجدھانی" نام کا ایک پرچا نکالتی ہے ۔ اس کے سولہ جنوری کے مکھ پتر پر ایک تصویر نکلی ہے جس میں شری پیارے لال نام کے ایک تانگے والے کو پچیس روپے انعام دیئے جارہے ہیں اور یہ انعام ہے اس بات کا کہ اس کے تانگے میں کوئی سواری ایک پارسل بھول گئی تھی جس میں ہزار روپے سے اوپر کی گھڑیاں تھیں اور وہ پارسل اس تانگے والے نے جوں کا تیوں مالک کو لوٹا دیا تھا

ہماری رائے میں جو دھرم کا پرچار کرتا ہے وہ دھرم کو مسمار کرتا ہے اور جو دھرم کا بیوہار کرتا ہے وہ دھرم کے بغیچے میں بہار لاتا ہے ۔ جس طرح دھرم بیوہار چاہتا ہے پرچار نہیں ویسے ہی ایمان داری پھیلاو چاہتی ہے انعام نہیں ۔ ایمان داری کی جڑ میں تیاگ یعنی اپنائی ہوئی غریبی رہتی ہے اس لئے ایمان داری میں سکھ اور مٹھاس سے بھرے ہوئے غریبی کے پھل لگتے ہیں ۔ انعام دینا تو ایمان داری کی جڑ پر کلھاڑا گھات کرنا ہے ۔ میونسپلٹی اگر اس تانگے والے کو کچھ انعام دے سکتی تھی تو وہ یہی ہوسکتا تھا کہ وہ تانگے والوں کے ساتھ ایماندار بنتی ' نہ کہ اسے روپے دیتی ۔ تانگے والے نے روپے لے کر اپنی اس سب خوشی کو کھو دیا جو اس نے پارسل لوٹا کر حاصل کی تھی اور جس کی قیمت کاغذ کے نوٹوں تو کیا چاندی کے روپیوں اور سونے کی مہروں میں بھی نہیں ناپی جا سکتی ۔ اور انعام دینے سے پہلے میونسپلٹی یا

देते हैं जो तनदुरुस्ती के लिये घी खाना जरूरी समझते हैं. पर इस धोके से रोकने की तरफ़ किसी का ध्यान नहीं जाता.

कुछ लोगों ने तो यह साबित कर दिया है कि यह करोड़ों रुपया जो बनस्पति तेल के व्योपार में लगा हुआ है और जितनी ज़मीन इस काम के लिये मूंगफली की खेती के काम में आती है, अगर वही रुपया अनाज की खेती पर और वही ज़मीनें अनाज की खेती के लिये काम में लाई जाएं तो हमको बाहर से अनाज मँगाने की ज़रूरत न रहेगी. पर इस तरफ़ भी ध्यान कौन देता है ?

इलाहाबाद से लगा हुआ रीवा प्रान्त है. वह दिल्ली के मातहत है. उस प्रान्त में अब तक जमा हुआ बनस्पति तेल और कोकोजम नहीं जा सकता था. वह प्रान्त अपने लिये काफ़ी से ज़्यादा घी पैदा कर लेता है. उस प्रान्त में दिल्ली सरकार ने कुछ शरनार्थी भी बसा दिये हैं. उनके बसने के बाद भी वहाँ घी की कमी नहीं हुई. और जगहों से काफ़ी सस्ता भी मिलता है. यह भी मालूम हुआ है कि वहाँ के शरनार्थियों को घी की कमी की कोई शिकायत नहीं है. पर अब यह सुनने में आता है कि कोकोजम और वेजीटेबल घी के व्योपारी बड़ी कोशिश में लगे हुए हैं कि किसी तरह से उनका माल रीवा में खप सके और जो रोक थाम अब तक लगी हुई है वह उठा दी जाय. कम से कम अगर दिल्ली सरकार इस एक रीवा प्रान्त को तजरबे के तौर पर ही दस बरस के लिये छोड़ दे तो यह ठीक ठीक पता लग सके कि बनस्पति तेल और घी में क्या फ़रक़ है. अगर दिल्ली की सरकार ने इतना भी किया तो हम समझेंगे कि काँग्रेस का ठहराव बेकार नहीं गया.

१३. २. ५१. —भगवानदीन

دیتے هیں جو تندرستی کے لئے گھی کھانا ضروری سمجھتے هیں . پر اِس دھوکے سے روکنے کی طرف کسی کا دھیان نہیں جاتا .

کچھ لوگوں نے تو یہ ثابت کر دیا هے که یه کروڑوں روپیه جو بنسپتی تیل کے بیوپار میں لگا هوا هے اور جتنی زمین اس کام کے لئے مونگ پھلی کی کھیتی کے کام میں آتی هے ، اگر وهی روپیه اناج کی کھیتی پر اور وهی زمینیں اناج کی کھیتی کے لئے کام میں لائی جائیں تو هم کو باهر سے اناج منگانے کی ضرورت نه رهے گی پر اِس طرف بھی دھیان کون دیتا هے ؟

الٰهآباد سے لگا هوا ریوا پرانت هے . وه دلی کے ماتحت هے . اُس پرانت میں اب تک جما هوا بنسپتی تیل اور کوکو جم نهیں جا سکتا تھا . وه پرانت اپنے لئے کافی سے زیاده گھی پیدا کر لیتا هے . اُس پرانت میں دلی سرکار نے کچھ شرنارتھی بھی بسا دیئے هیں . اُن کے بسنے کے بعد بھی وهاں گھی کی کمی نهیں هوئی . اور جگهوں سے کافی سستا بھی ملتا هے . یه بھی معلوم هوا هے که وهاں کے شرنارتھیوں کو گھی کی کمی کی کوئی شکایت نهیں هے . پر اب یه سننے میں آتا هے که کوکو جم اور ویجیٹیبل گھی کے بیوپاری بڑی کوشش میں لگے هوئے هیں که کسی طرح سے اُن کا مال ریوا میں کھپ سکے اور جو روک تھام اب تک لگی هوئی هے وه اٹھا دی جائے . کم سے کم اگر دلی سرکار اِس ایک ریوا پرانت کو تجربے کے طور پر هی دس برس کے لئے چھوڑ دے تو یه ٹھیک ٹھیک پته لگ سکے که بنسپتی تیل اور گھی میں کیا فرق هے . اگر دلی کی سرکار نے اِتنا بھی کیا تو هم سمجھیں گے که کانگریس کا ٹھهراو بیکار نهیں گیا .

۱۳-۲-۵۱ — بھگوان دین

हो गया कि जमे हुए बनस्पति तेल पर रोक लगाई जाय. बेशक काँगरेस कमेटी ने यह मार्के का ठहराव पास किया है. पर जो कमीयत इसके खिलाफ़ है वह भारी बहुत है, इसलिये हम इस ठहराव को इस बात की कसौटी मानते हैं कि कांगरेस में और सरकार में किसी पालिसी के मामले में कहां तक एकसा पन है. अगर सरकार ने कांगरेस के इस ठहराव पर कुछ भी ध्यान दिया तब तो हम यह समझेंगे कि कांगरेस कोई जानदार संस्था है और अगर यह ठहराव यों ही पड़ा रहा तब तो फिर हमारी नज़रों में कांगरेस और उसकी यह कुल हिन्द कमेटी सरकार के खेल खेलने और जा बे जा कुछ राग अलापने की संस्था ही बनी रहेगी.

बनस्पती तेल के जीते रहते घी अब तक जिन्दा किस तरह है यही समझने की चीज़ है. हिन्दुस्तान की पांच फ़ीसदी पढ़ी लिखी जनता को छोड़ कर ९५ फ़ीसदी जनता घी की क़ायल है और वह बनस्पति तेल से घी को हज़ार गुना अच्छा समझती है. इसलिये वह उस चीज़ को शौक़ से खा लेती है जो घी बता कर या घी के नाम पर उसे दे दी जाती है. यह जमा हुआ बनस्पति तेल घी का जामा पहन कर जनता को लूट रहा है और कोई उसे इस लूट से बचाने वाला नहीं. हम इसी बसंत पंचमी को इलाहाबाद का माघ मेला देखने गए. वहां खुल्लमखुल्ला खोन्चे वाले आवाज़ लगा रहे थे—'डालडा घी की बनी हुई पकौड़ियां खाइये.' घी के एसेन्स की मदद से बनस्पति तेल और कोकोजम मिल कर घी के नाम से बाज़ार में धड़ाधड़ बिकते हैं और इस तरह उन आदमियों को धोका

هو گیا که جمے هوئے بنسپتی تیل پر روک لگائی جائے . بیشک کانگریس کمیٹی نے یه معرکے کا ٹهہراو پاس کیا هے . پر جو کمیت اسکے خلاف هے وہ بهاری بہت هے . اس لئے هم اس ٹهہراو کو اس بات کی کسوٹی مانتے هیں که کانگریس میں اور سرکار میں کسی پالیسی کے معاملے میں کہاں تک ایک سا پن هے . اگر سرکار نے کانگریس کے اس ٹهہراو پر کچھ بهی دهیان دیا تب تو هم یه سمجهیں گے که کانگریس کوئی جاندار سنستها هے اور اگر یه ٹهہراو یوں هی پڑا رها تب تو پهر هماری نظروں میں کانگریس اور اسکی یه کل هند کمیٹی سرکار کے کهیل کهیلنے اور جا بے جا کچھ راگ الاپنے کی سنستها هی بنی رهے گی .

بنسپتی تیل کے جیتے رهتے گهی اب تک زنده کس طرح هے یهی سمجهنے کی چیز هے . هندستان کی پانچ فیصدی پڑهی لکهی جنتا کو چهوڑ کر ۹۵ فیصدی جنتا گهی کی قائل هے اور وہ بنسپتی تیل سے گهی کو هزار گنا اچها سمجهتی هے . اس لئے وہ اس چیز کو شوق سے کها لیتی هے جو گهی بتا کر یا گهی کے نام پر اسے دے دی جاتی هے . یه جما هوا بنسپتی تیل گهی کا جامه پهن کر جنتا کو لوٹ رها هے اور کوئی اسے اس لوٹ سے بچانے والا نهیں . هم اسی بسنت پنچمی کو الهآباد کا ماگھ میله دیکهنے گئے . وهاں کهلم کهلا خونچے والے آواز لگا رهے تهے—'ڈالڈا گهی کی بنی هوئی پکوڑیاں کهائیے .' گهی کے ایسنس کی مدد سے بنسپتی تیل اور کوکو جم مل کر گهی کے نام سے بازار میں دهڑا دهڑ بکتے هیں اور اس طرح ان آدمیوں کو دهوکا

हिन्दुस्तानी जनता उस बाग़ी या उन बाग़ियों को ख़ुद ही ख़तम कर डालती और अंगरेज़ों को उंगली उठाने की जरूरत ही न होती.

१५ अगस्त सन '४७ के बाद सन '४७ में कभी भी या सन '४८ के शुरू में भी अगर कोई हिन्दुस्तानी सरकार के ख़िलाफ़ मामूली सी बुराई की बात भी सोचता तो उसके रिश्तेदार ख़ुद ही उसकी गरदन दबोच देते. और उसे किसी तरह भी अपनी सोची हुई बात को अमल में न लाने देते. हम यह कह कर सिर्फ़ यह बताना चाहते हैं कि उन दिनों हिन्दुस्तानी सरकार यानी काँगरेसी सरकार जनता को बेहद प्यारी थी और इसी लिये किसी रोकथामी पाबन्दी की जरूरत नहीं थी

हम इस वक़्त सिर्फ़ इतना ही कहना चाहते हैं कि जनता के ख़िलाफ़ सख़्ती से भरे क़ानूनों के लिये पार्लियामेन्ट के सामने बिल पेश कर के काँगरेसी सरकार समझदारों को यह कहती हुई मालूम हो रही है कि अब वह जनता में काफ़ी बदनाम हो गई है और डंडे के सिवा उसके पास जीते रहने का और कोई चारा नहीं रह गया.

क्या सरकार कभी इस तरह सोचती है जिस तरह हम सोचते हैं ? और क्या इस नोट के बाद वह इस तरह सोचने की तकलीफ़ गवारा करेगी ?

१७. २. ५१. —भगवानदीन

बनस्पति पर रोक और सरकार—

हाल ही में अहमदाबाद में कुल हिन्द काँगरेस कमेटी का जलसा हुआ और उसमें यह ठहराव ५६ के ख़िलाफ़ १११ राय से पास

ھندستانی جنتا اُس باغی یا اُن باغیوں کو خود ھی ختم کر ڈالتي اور انگریزوں کو اُنگلی اُٹھانے کی ضرورت ھي نہ ھوتي ۔

١٥ اگست سن '٣٧ کے بعد سن '٣٧ میں کبھی بھی یا سن '٣٨ کے شروع میں بھی اگر کوئی ھندستانی سرکار کے خلاف معمولي سی برائی کی بات بھی سوچتا تو اُس کے رشتے دار خود ھی اُسکی گردن دبوچ دیتے ۔ اور اُسے کسی طرح بھی اپنی سوچی ھوئی بات کو عمل میں نہ لانے دیتے ۔ هم یہ کہکر صرف یہ بتانا چاھتے ھیں کہ اُن دنوں ھندستانی سرکار یعني کانگریسي سرکار جنتا کو بے حد پیاری تھی اور اِسی لئے کسی روک تھامی پابندی کي ضرورت نہیں تھی ۔

ھم اِس وقت صرف اِتنا ھی کہنا چاھتے ھیں کہ جنتا کے خلاف سختی سے بھرے قانونوں کے لئے پارلیامنٹ کے سامنے بل پیش کرکے کانگریسي سرکار سمجھداروں کو یہ کہتی ھوئی معلوم ھو رھی ھے کہ اب وہ جنتا میں کافي بدنام ھوگئی ھے اور ڈنڈے کے سوا اُس کے پاس جیتے رھنے کا اور کوئی چارہ نہیں رہ گیا ۔

کیا سرکار کبھی اِس طرح سوچتی ھے جس طرح ھم سوچتے ھیں ؟ اور کیا اِس نوٹ کے بعد وہ اس طرح سوچنے کی تکلیف گوارہ کرے گی ؟

—بھگوان دین
٥١-٢-١٧

بنسپتی پر روک اور سرکار—

حال ھی میں احمدآباد میں کل ھند کانگریس کمیٹی کا جلسہ ھوا اور اُس میں یہ ٹھہراو ٥٦ کے خلاف ١١١ رائے سے پاس

हिन्दुस्तानी सरकार की बातें जब अंगरेज़ हिन्दुस्तान पर छाए हुए थे.

इस अमरीका जापानी सुलह के बारे में एशियाई मुल्कों का चुप रहना. योरपी मुल्कों की बेपरवाही और यू. एन. ओ. का इसमें हाथ न डालना ऐसा बुरा रंग लायगा जिसकी वजह से सारी दुनिया एक दिन उलट पुलट होकर रहेगी.

१७. २. ५१　　　—भगवानदीन

रोकथामी पाबन्दी बिल—

रोकथामी पाबन्दी बिल यानी प्रिवेन्टिव डिटेन्शन बिल पार्लियामेन्ट के पहरन पर मौजूद है. और जब उसको राजा जी जैसे नजरदाकार समर्थन कर रहे हैं और पार्लियामेन्ट का कॉंगरेसी दल क़रीब क़रीब पूरे का पूरा उसे पास हुआ देखना चाहता है तो उसके पास होने में अब शक ही क्या ? हम यह मुनासिब नहीं समझते कि उसकी धाराओं को लेकर एक एक की बुराई भलाई पर बहस करें. हम तो यही कहना चाहते हैं कि अंगरेज़ी राज ने जिस वक़्त रौलट बिल एसेम्बली के सामने रक्खा था तब उस अंगरेज़ी राज ने यही सबूत दिया था कि अब वह डंडे के ज़ोर से हिन्दुस्तान पर हकूमत करना चाहता है क्योंकि हिन्दुस्तान की जनता अब उस अंगरेज़ी राज के खिलाफ़ बग़ावत करने के लिये आमादा है. ग़लत या सही १९०५ से पहले हिन्दुस्तानी जनता का बहुत बड़ा भाग अंगरेज़ी राज को ऐसा ही मानता था मानो वह ईश्वर का दिया हुआ हो और अगर उन दिनों कोई अंगरेज़ों के खिलाफ़ बग़ावत करने की सोचता तो

هندستانی سرکار کی باتیں جب انگریز هندستان پر چھائے هوئے تھے.

اِس امریکہ جاپانی صلح کے بارے میں ایشیائی ملکوں کا چپ رهنا، یورپی ملکوں کی بے پروائی اور یو. این. او. کا اِس میں هاتھ نہ ڈالنا ایسا برا رنگ لائے گا جس کی وجہ سے ساری دنیا ایک دن اُلٹ پلٹ هو کر رهے گی.

۵۱-۲-۱۷　　　—بھگوان دین

روک تھامی پابندی بل—

روک تھامی پابندی بل یعنی پریوینٹو ڈیٹینشن بل پارلیامنٹ کے پہرن پر موجود هے. اور جب اُس کو راجہ جی جیسے تجربہ کار سمرتھن کر رهے هیں اور پارلیامنٹ کا کانگریسی دل قریب قریب پورے کا پورا اُسے پاس هوا دیکھنا چاهتا هے تو اُس کے پاس هونے میں اب شک هی کیا ؟ هم یہ مناسب نہیں سمجھتے کہ اُسکی دھاراؤں کو لے کر ایک ایک کی برائی بھلائی پر بحث کریں. هم تو یہی کہنا چاهتے هیں کہ انگریزی راج نے جس وقت رولٹ بل اسمبلی کے سامنے رکھا تھا تب اُس انگریزی راج نے یہی ثبوت دیا تھا کہ اب وہ ڈنڈے کے زور سے هندستان پر حکومت کرنا چاهتا هے کیونکہ هندستان کی جنتا اب اُس انگریزی راج کے خلاف بغاوت کرنے کے لئے آمادہ هے. غلط یا صحیح ۱۹۰۵ سے پہلے هندستانی جنتا کا بہت بڑا بھاگ انگریزی راج کو ایسا هی مانتا تھا مانو وہ ایشور کا دیا هوا هو اور اگر اُن دنوں کوئی انگریزوں کے خلاف بغاوت کرنے کی سوچتا تو

इस वक़्त ज़रूरी सवाल यह है कि क्या वह जापान के साथ कोई ऐसी सुलह कर सकता है जिसमें यह शर्त भी हो कि अमरीका की फ़ौजें जापान में जापान की हिफ़ाज़त के लिये अड्डा जमाए रहेंगी. हो सकता है जापान ख़ुद भी अमरीका के साथ सुलहनामे में ऐसी शर्त ज़रूरी समझता हो. पर इस वक़्त जापान की ऐसी गिरी हुई शर्तों की मंज़ूरी की कोई क़ीमत नहीं होनी चाहिये क्योंकि इस वक़्त जो भी शर्तें की जायंगी उनके पीछे अमरीका का दबाव रहना ज़रूरी है. अगर हम यू. एन. ओ. के मेम्बर होते या उसकी सुरक्षा कौन्सिल में होते तो हम इस तरह की शर्त को जापान पर अमरीका का 'एग्रेशन' मानते. अगर यू. एन. ओ. के रहते अमरीका, रूस, बरतानिया, चीन या कोई भी मुल्क किसी भी दूसरे मुल्क पर इस तरह फ़ौजी, हवाई या जहाज़ी अड्डा बनाना चाहता है तो वह उस मुल्क पर ही 'एग्रेशन' नहीं करता जिस पर वह ऐसे अड्डे बनाना चाहता है बल्कि यू. एन. ओ. की शान के ख़िलाफ़ 'एग्रेशन' करता है

अमरीका जापान में अपनी फ़ौजें रखने की बात के साथ सुलह करके तीसरी लड़ाई के बोए हुए बीज को पानी दे रहा है और अगर यू. एन. ओ. की सुरक्षा कौन्सिल और उसके मेम्बर मुल्कों ने इस दुनिया के नाश करने वाले बीज को शुरू में ही न जला दिया तो यू. एन. ओ. और उसकी सुरक्षा कौन्सिल इसके ज़हरीले फल में ख़ुद अपनी जान से हाथ धो बैठेगी.

जापान की तरफ़ से अख़बारों में जो शर्तों की मंज़ूरी की बात आ रही है वह उतनी ही बेजड़ की बात है जितनी उन दिनों की

اس وقت ضروری سوال یہ ہے کہ کیا وہ جاپان کے ساتھ کوئی ایسی صلح کر سکتا ہے جس میں یہ شرط بھی ہو کہ امریکہ کی فوجیں جاپان میں جاپان کی حفاظت کے لئے اڈا جمائے رہیں گی ۔ ہو سکتا ہے جاپان خود بھی امریکہ کے ساتھ صلحنامے میں ایسی شرط ضروری سمجھتا ہو ۔ پر اس وقت جاپان کی ایسی گری ہوئی شرطوں کی منظوری کی کوئی قیمت نہیں ہونی چاہئے کیونکہ اس وقت جو بھی شرطیں کی جائینگی اُن کے پیچھے امریکہ کا دباؤ رہنا ضروری ہے ۔ اگر ہم یو ۔ این ۔ او ۔ کے ممبر ہوتے یا اُسکی سورکشا کونسل میں ہوتے تو ہم اس طرح کی شرط کو جاپان پر امریکہ کا "ایگریشن" مانتے ۔ اگر یو ۔ این ۔ او ۔ کے رہتے امریکہ، روس، برطانیہ، چین یا کوئی بھی ملک کسی بھی دوسرے ملک پر اس طرح فوجی، ہوائی یا جہازی اڈا بنانا چاہتا ہے تو وہ اُس ملک پر ہی "ایگریشن" نہیں کرتا جس پر وہ ایسے اڈے بنانا چاہتا ہے بلکہ یو ۔ این ۔ او ۔ کی شان کے خلاف "ایگریشن" کرتا ہے ۔

امریکہ جاپان میں اپنی فوجیں رکھنے کی بات کے ساتھ صلح کر کے تیسری لڑائی کے بوئے ہوئے بیج کو پانی دے رہا ہے اور اگر یو ۔ این ۔ او ۔ کی سورکشا کونسل اور اس کے ممبر ملکوں نے اس دنیا کے ناش کرنے والے بیج کو شروع میں ہی نہ جلا دیا تو یو ۔ این ۔ او ۔ اور اُسکی سورکشا کونسل اُس کے زہریلے پھل سے خود اپنی جان سے ہاتھ دھو بیٹھیں گی ۔

جاپان کی طرف سے اخباروں میں جو شرطوں کی منظوری کی بات آرہی ہے وہ اُتنی ہی بے جڑ کی بات ہے جتنی اُن دنوں کی

को दबाया गया और तोड़ा फोड़ा गया था उसी तरह पच्छिम में जरमनी के हिस्से बख़रे किये गए थे और इटली का भी बुरा हाल था. आज १९५१ में दुनिया के सब मुल्क काफ़ी समझदार हो गए हैं और उनमें से साठ मुल्कों की एक ऐसी पंचायत भी मौजूद है जो यह नहीं चाहती कि सन '४५ में की हुई धींगा धींगी और छीना झपटी उसी तरह से क़ायम रहे. उस पचायत का नाम यू. एन. ओ. है. इनसाफ़ की रू से उस यू एन. ओ. की मंशा यह है और होनी भी चाहिये कि अब सब मुल्क पूरे पूरे आज़ाद हों और किसी एक मुल्क का क़ब्ज़ा किसी भी शकल मे किसी दूसरे मुल्क पर न रह पाए. क्योंकि ऐसा किये बग़ैर न तो दुनिया भर की शान्ति की गारंटी की जा सकती है और न हथियारों के बनने में रोकथाम की जा सकती है और न एटम बम और हाईड्रोजन बम जैसे सर्वनाशी हथियारों पर कोई पाबन्दी लगाई जा सकती है. और अगर यह काम न हो पाए तो यू. एन. ओ. का जिन्दा रहना मुर्दा रहने से भी बुरा साबित होगा.

यू. एन. ओ. के रहते और इस वजह के होते कि जापान पर दूसरी लड़ाई के बाद क़ब्ज़ा किसी एक मुल्क का नहीं हुआ था बल्कि मित्रों का हुआ था अमरीका को कोई हक़ हासिल नहीं है कि वह जापान से अलग अलग कोई सुलहनामा कर बैठे. अगर वह ऐसा करता है तो वह यू. एन. ओ. की शान को बट्टा लगाता है और दूसरी बड़ी लड़ाई में साथ देने वाले अपने मित्रों रूस, बरतानिया और चीन को नीचा दिखाने का काम करता है. इस सब को तो छोड़िये क्योंकि अमरीका अपने एटम बम के ज़ोम में यह सब कुछ कर सकता है.

کو دبایا گیا اور توڑا پھوڑا گیا تھا اُسی طرح پچھم میں جرمنی کے حصے بخرے کئے گئے تھے اور اِٹلی کا بھی برا حال تھا۔ آج 1951 میں دنیا کے سب ملک کافی سمجھدار ہو گئے ہیں اور اُن میں سے ساٹھ ملکوں کی ایک ایسی پنچایت بھی موجود ہے جو یہ نہیں چاہتی کہ سن ۴۵ میں کی ہوئی دھینگا دھینگی اور چھینا جھپٹی اُسی طرح سے قائم رہے۔ اُس پنچایت کا نام یو۔ این۔ او۔ ہے۔ انصاف کی رو سے اُس یو۔ این۔ او۔ کی منشا یہ ہے اور ہونی بھی چاہئیے کہ اب سب ملک پورے پورے آزاد ہوں اور کسی ایک ملک کا قبضہ کسی بھی شکل میں کسی دوسرے ملک پر نہ رہ پائے۔ کیونکہ ایسا کئے بغیر نہ تو دنیا بھر کی شانتی کی گارنٹی کی جا سکتی ہے اور نہ ہتھیاروں کے بننے میں روک تھام کی جا سکتی ہے اور نہ ایٹم بم اور ہائیڈروجن بم جیسے سروناشی ہتھیاروں پر کوئی پابندی لگائی جا سکتی ہے۔ اور اگر یہ کام نہ ہو پائے تو یو۔ این۔ او۔ کا زندہ رہنا مردہ رہنے سے بھی برا ثابت ہوگا۔

یو۔ این۔ او۔ کے رہتے اور اس وجہ کے ہوتے کہ جاپان پر دوسری لڑائی کے بعد قبضہ کسی ایک ملک کا نہیں ہوا تھا بلکہ مترون کا ہوا تھا امریکہ کو کوئی حق حاصل نہیں ہے کہ وہ جاپان سے الگ الگ کوئی صلحنامہ کر بیٹھے۔ اگر وہ ایسا کرتا ہے تو وہ یو۔ این۔ او۔ کی شان کو بٹہ لگاتا ہے اور دوسری بڑی لڑائی میں ساتھ دینے والے اپنے مترون روس، برطانیہ اور چین کو نیچا دکھانے کا کام کرتا ہے۔ اِس سب کو تو چھوڑئیے کیونکہ امریکہ اپنے ایٹم بم کے زعم میں یہ سب کچھ کر سکتا ہے۔

इस मजमून पर बहुत लिखा जा चुका है. यहाँ दोहराने की ज़रूरत नहीं. यहाँ तो हम सिर्फ़ इसी बात पर जोर देना चाहते हैं कि मध्य प्रदेशी सरकार की शराब बंदी कमेटी ने अपनी सवाल माला में इस तरह का बेमेल सवाल निकाल कर विधान की धारा ४७ की खिलाफ़वर्ज़ी की है. और अब हम देखना चाहते हैं कि मध्य प्रदेश की सरकार और दिल्ली सरकार इस बारे में क्या करती हैं.

१३. २. '५१. —भगवानदीन

अमरीका जापानी सुलहनामा—

दूसरी बड़ी लड़ाई में भले ही अमरीका के एटम बम की मार से जापान ने घुटने टेके हों पर असल में जापान को हराया था मित्रों ने यानी अमरीका, रूस, बरतानिया और चीन ने. यह ठीक है कि जापान पर फ़ौजी घेरा अमरीका का ही रक्खा गया पर साथ ही साथ जापान में रूसी कमांडर भी रहता था और दोनों मिल कर ही जापानी हकूमत का काम संभालते थे. इस तरह की कारवाई उन दिनों की हालत में ठीक थी. उन्हीं दिनों जापान के पड़ोसी कोरिया के भी ३८ पड़ी रेखा पर दो टुकड़े किये गए थे. ऊपर के उत्तरी टुकड़े पर रूसी फ़ौजों का घेरा था और नीचे के दक्खिनी टुकड़े पर अमरीकी फ़ौजों का.

हमारे पढ़ने वालों को यह याद रहे कि उन दिनों यानी १९४५ में दुनिया की हालत डांवाडोल थी और इस वजह से कोई ढंग की [illegible] नहीं हो सकती थी. जिस तरह पूरब में जापान और कोरिया

اس مضمون پر بہت لکھا جا چکا ہے . یہاں دہرانے کی ضرورت نہیں. یہاں تو ہم صرف اِسی بات پر زور دینا چاہتے ہیں کہ مدھیہ پردیشی سرکار کی شراب بندی کمیٹی نے اپنی سوال مالا میں اس طرح کا بے میل سوال نکالکر ودھان کی دھارا ۴۷ کی خلاف ورزی کی ہے . اور اب ہم دیکھنا چاہتے ہیں کہ مدھیہ پردیش کی سرکار اور دلی سرکار اِس بارے میں کیا کرتی ہیں .

۱۳-۲-۵۱ —بھگوان دین

امریکہ جاپانی صلحنامہ—

دوسری بڑی لڑائی میں بھلے ہی امریکہ کے ایٹم بم کی مار سے جاپان نے گھٹنے ٹیکے ہوں پر اصل میں جاپان کو ہرایا تھا متروں نے یعنی امریکہ، روس، برطانیہ اور چین نے . یہ ٹھیک ہے کہ جاپان پر فوجی گھیرا امریکہ کا ہی رکھا گیا پر ساتھ ہی ساتھ جاپان میں روسی کمانڈر بھی رہتا تھا اور دونوں ملکر ہی جاپانی حکومت کا کام سنبھالتے تھے . اِس طرح کی کاروائی اُن دنوں کی حالت میں ٹھیک تھی . اُنھیں دنوں جاپان کے پڑوسی کوریا کے بھی ۳۸ پڑی ریکھا پر دو ٹکڑے کئے گئے تھے . اوپر کے اُتری ٹکڑے پر روسی فوجوں کا گھیرا تھا اور نیچے کے دکھنی ٹکڑے پر امریکی فوجوں کا .

ہمارے پڑھنے والوں کو یہ یاد رہےکہ اُن دنوں یعنی ۱۹۴۵ میں دنیا کی حالت ڈانواڈول تھی اور اِس وجہ سے کوئی ڈھنگ کی کاروائی نہیں ہو سکتی تھی . جس طرح پورب میں جاپان اور کوریا

क्या इस सवाल के ज़रिये मध्य प्रदेशी सरकार विधान की दफ़ा ४७ के बारे में जनता से यह राय लेना चाहती है कि वह दफ़ा ठीक बनी है या नहीं? और क्या उसको यह हक़ हासिल है? और क्या किसी को भी यह हक़ हासिल है? ऐसा करना तो एक तरह से विधान के ख़िलाफ़ बग़ावत का झंडा उठाना है. अफ़सोस तो यह है कि यह बग़ावत का झंडा उठता है उस प्रान्त से जो गांधीजी की जन्म भूमि तो नहीं पर कर्मभूमि तो मानी ही जाती है. और हिन्दुस्तानियों का काबा सेवाग्राम तो उसी प्रान्त में है. यह काबे से ही कुफ़्र का झंडा!

सुभीते के लिये हम ४७ वीं धारा का ज़रूरी हिस्सा नीचे नकल किये देते हैं "—(हर एक राज) ख़ासकर नशीले पानी और तनदुरस्ती बिगाड़ने वाली जड़ी बूटियों की, सिवाय दवा के मतलबों के लिये, खपत बन्द कराने का जतन करेगा."

हम नहीं जानते मध्य प्रदेशी सरकार की बनाई हुई यह कमेटी किस तरह इतनी हिम्मत कर गई? उसमें तो नागपुर हाईकोर्ट के एक रिटायर्ड जज भी शामिल हैं.

अब तक अगर सच्चे जी से प्रान्त की सरकारों और दिल्ली सरकार ने शराब बंदी के लिये कोशिश की होती तो बहुत बड़ी सफलता हो गई होती. पर शायद आमदनी का झूटा लालच ही उनके रास्ते में दीवार बन कर खड़ा हो गया है. उन्हें यह पता नहीं है कि शराब बंद हो जाने से नेशन की आमदनी एक्साइज़ की आमदनी से कई गुना बढ़ जायगी. किस तरह बढ़ जायगी

کیا اِس سوال کے ذریعے مدھیہ پردیشی سرکار ودھان کی دفعہ ۴۷ کے بارے میں جنتا سے یہ رائے لینا چاھتی ہے کہ وہ دفعہ ٹھیک بنی ھے یا نہیں؟ اور کیا اُس کو یہ حق حاصل ہے؟ اور کیا کسی کو بھی یہ حق حاصل ھے؟ ایسا کرنا تو ایک طرح سے ودھان کے خلاف بغاوت کا جھنڈا اٹھانا ہے۔ افسوس تو یہ ہے کہ یہ بغاوت کا جھنڈا اُٹھتا ہے اُس پرانت سے جو گاندھی جی کی جنم بھومی تو نہیں پر کرم بھومی تو مانی ھی جاتی ہے۔ اور ہندستانیوں کا کعبہ سیوا گرام تو اُسی پرانت میں ہے۔ یہ کعبے سے ہی کفر کا جھنڈا!

سبھیتے کے لئے ہم ۴۷ ویں دھارا کا ضروری حصہ نیچے نقل کئے دیتے ھیں "—(ھر ایک راج) خاص کر نشیلے پانی اور تندرستی بگاڑنے والی جڑی بوٹیوں کی، سوائے دوا کے مطلبوں کے لئے، کھپت بند کرانے کا جتن کریگا۔"

ہم نہیں جانتے مدھیہ پردیشی سرکار کی بنائی ھوئی یہ کمیٹی کس طرح اِتنی ھمت کر گئی؟ اُس میں تو ناگپور ھائیکورٹ کے ایک ریٹائرڈ جج بھی شامل ھیں۔

اب تک اگر سچے جی سے پرانت کی سرکاروں اور دلی سرکار نے شراب بندی کے لئے کوشش کی ھوتی تو بہت بڑی سپھلتا ھوگئی ھوتی۔ پر شاید آمدنی کا جھوٹا لالچ ھی اُن کے راستے میں دیوار بن کر کھڑا ھو گیا ھے۔ انہیں یہ پتہ نہیں ھے کہ شراب بند ھوجانے سے نیشن کی آمدنی ایکسائز کی آمدنی سے کئی گنا بڑھ جائیگی۔ کس طرح بڑھ جائے گی

वक़्त अब नहीं रहा. इस वक़्त तो इस बात की सख्त जरूरत है कि हिन्दू राजाशाही, ठाकुरशाही और पुरोहितशाही के बने हुए सब कानूनों पर एक बार हिन्दू लोकशाही की छाप लग जाय. तभी हिन्दुस्तानी नेशन बन सकेगी.

१३. २. ५१ —भगवानदीन

अमानत में ख़यानत—

भारत का विधान, उस जनता ने जो आज हिन्दुस्तान की मालिक है, अपने हाथ से उस सरकार के हाथ में, जिसे उसने अपनी मरज़ी से दूसरे आम चुनाव तक के लिये अपनी सरकार मान लिया है, सौंपा है. यह पास तो उस बोली में होना चाहिये था जो सारे हिन्दुस्तान में समझी जाती है पर किसी वजह से यह समन्दर पार की बोली में पास हुआ. यह हुआ तो कुछ हर्ज नहीं. पर यह तो हर रियासत और हर सरकारी अफसर और हकूमत में हर हिस्सा लेने वाले को समझना ही चाहिये कि यह जनता की देन है. इसके खिलाफ़ कोई काम उस वक्त तक नहीं होना चाहिये जब तक यह विधान विधान की चौकी पर मौजूद है.

मालूम हुआ है मध्य प्रदेश की सरकार ने शराबबंदी के बारे में एक जाँच कमेटी बिठाई है और उसी सिलसिले में एक सवाल-माला निकाली है. उसका पहला सवाल है—"........ क्या आप ऐसा मानते हैं कि शराबबंदी की पालिसी आजकल के जनमन के माफ़िक है ? अगर 'हाँ' तो क्या आप की निगाह अपनी इस राय [illegible] जमात पर है ?"

اب نہیں رھا . اِس وقت تو اِس بات کی سخت ضرورت ھے کہ ھندو راجہ شاھی، ٹھاکر شاھی اور پروھت شاھی کے بنے ھوئے سب قانونوں پر ایک بار ھندو لوک شاھی کی چھاپ لگ جائے . تبھی ھندستانی نیشن بن سکے گی .

۵۱-۲-۱۳ —بھگوان دین

امانت میں خیانت —

بھارت کا ودھان اُس جنتا نے جو آج ھندستان کی مالک ھے، اپنے ھاتھ سے اُس سرکار کے ھاتھ میں جسے اُسنے اپنی مرضی سے دوسرے عام چناؤ تک کے لئے اپنی سرکار مان لیا ھے، سونپا ھے . یہ پاس تو اُس بولی میں ھونا چاھئے تھا جو سارے ھندستان میں سمجھی جاتی ھے پر کسی وجہ سے یہ سمندر پار کی بولی میں پاس ھوا . یہ ھوا تو کچھ ھرج نہیں . پر یہ تو ھر ریاست اور ھر سرکاری افسر اور حکومت میں ھر حصہ لینے والے کو سمجھنا ھی چاھئے کہ یہ جنتا کی دین ھے . اسکے خلاف کوئی کام اُس وقت تک نہیں ھونا چاھئے جب تک یہ ودھان ودھان کی چوکی پر موجود ھے .

معلوم ھوا ھے مدھیہ پردیش کی سرکار نے شراب بندی کے بارے میں ایک جانچ کمیٹی بٹھائی ھے اور اُسی سلسلے میں ایک سوال مالا نکالی ھے . اُسکا پہلا سوال ھے —"...... کیا آپ ایسا مانتے ھیں کہ شراب بندی کی پالیسی آجکل کے جن مت کے موافق ھے ؟ اگر 'ھاں' تو کیا آپ کی نگاہ اپنی اس رائے کے لئے کسی خاص جماعت پر ھے ؟"

आर्य समाज आज भी समर्थन करता हो. उस समाज में तलाक़ का क़ानून बनने पर इतना शोर क्यों? और फिर तलाक़ का यह मतलब तो है ही नहीं कि तलाक़ का क़ानून बनते ही हर हिन्दू औरत अपने पति को तलाक़ दे बैठेगी. और इसे तो हम कह कर करें ही क्या कि हर हिन्दू अपनी औरत को तलाक़ दे बैठेगा क्योंकि आज के हिन्दू क़ानून के मुताबिक़ हिन्दू पति तो हर तरह से आज़ाद ही नहीं अपनी औरत का हर तरह से मालिक है. वह जो चाहे कर सकता है. हाँ, तो अगर थोड़ी देर के लिये यह मान ही लिया जाय कि हिन्दू औरतों की बहुत बड़ी तादाद क़ानून बनते ही तलाक़ की अरज़ी दे बैठेगी तब तो यही समझना चाहिये कि हिन्दू स्त्रियाँ वैसा चाहती थीं. और जब चाहती थीं तो क़ानून ठीक ही बना. बेटी के बाप की जायदाद में हिस्सा पाने के बारे में भी बहुत कुछ लिखा जा चुका है. यहाँ तो हम सिर्फ़ इतना कहना ही काफ़ी समझते हैं कि मुक़दमे बाज़ी का जो डर दिखाया जाता है वह भाई भाइयों में पहले से ही मौजूद है. अब बहन भाइयों में भी हो जाय तो कुछ ज़्यादा नहीं होगा. और जहाँ हिन्दू क़ायदे से बेटी अपने बाप की जायदाद की मालिक होती है वहाँ भी कब वह उस जायदाद को अदालत में जाए बग़ैर पा लेती है. उस हालत में भी उसके ख़िलाफ़ कोई न कोई दावेदार खड़ा हो ही जाता है. मुक़दमेबाज़ी जब हवा में फैली हुई है तब उसे रोक ही कौन सकता है? हर रिवाज में कुछ न कुछ बुराई रहती ही है पर उस बुराई की वजह से उसकी भलाइयों से फ़ायदा न उठाया जाय यह कहाँ की दलील है?

हिन्दू कोड बिल की अच्छाई बुराई पर दलील दिये जाने का

آریہ سماج آج بھی سمرتھن کرتا ہو اُس سماج میں طلاق کا قانون بننے پر اتنا شور کیوں؟ اور پھر طلاق کا یہ مطلب تو ہے ہی نہیں کہ طلاق کا قانون بنتے ہی ہر ہندو عورت اپنے پتی کو طلاق دے بیٹھے گی. اور اسے تو ہم کہہ کر کریں ہی کیا کہ ہر ہندو اپنی عورت کو طلاق دے بیٹھے گا. کیونکہ آج کے ہندو قانون کے مطابق ہندو پتی تو ہر طرح سے آزاد ہی نہیں اپنی عورت کا ہر طرح سے مالک ہے. وہ جو چاہے کر سکتا ہے. ہاں، تو اگر تھوڑی دیر کے لئے یہ مان ہی لیا جائے کہ ہندو عورتوں کی بہت بڑی تعداد قانون بنتے ہی طلاق کی عرضی دے بیٹھے گی تب تو یہی سمجھنا چاہئے کہ ہندو استریاں ویسا چاہتی تھیں. اور جب چاہتی تھیں تو قانون ٹھیک ہی بنا. بیٹی کے باپ کی جائداد سے حصہ پانے کے بارے میں بھی بہت کچھ لکھا جا چکا ہے. یہاں تو ہم صرف اتنا کہنا ہی کافی سمجھتے ہیں کہ مقدمے بازی کا جو ڈر دکھایا جاتا ہے وہ بھائی بھائیوں میں پہلے سے ہی موجود ہے. اب بہن بھائیوں میں بھی ہو جائے تو کچھ زیادہ نہیں ہوگا. اور جہاں ہندو قاعدے سے بیٹی اپنے باپ کی جائداد کی مالک ہوتی ہے وہاں بھی کب وہ اُس جائداد کو عدالت میں جائے بغیر پا لیتی ہے. اُس حالت میں بھی اُس کے خلاف کوئی نہ کوئی دعوےدار کھڑا ہی ہو جاتا ہے. مقدمے بازی جب ہوا میں پھیلی ہوئی ہے تب اسے روک ہی کون سکتا ہے؟ ہر رواج میں کچھ نہ کچھ برائی رہتی ہی ہے پر اُس برائی کی وجہ سے اُسکی بھلائیوں سے فائدہ نہ اُٹھایا جائے یہ کہاں کی دلیل ہے؟

ہندو کوڈ بل کی اچھائی برائی پر دلیل دیئے جانے کا وقت

हिन्दू समाज अभी तक जातों के ऐसे बुरे अलग अलग खानों में बँटा है कि नेशन के लिये जो गुन जरूरी हैं वह उसमें पनप ही नहीं पाते. इसलिये और सिर्फ़ इसलिये ही हिन्दुस्तान की ब्योहारी (सेकुलर) सरकार को हिन्दू कोड बिल का काम अपने हाथ में लेना ही चाहिये था. क्योंकि आज तक के हिन्दू रस्म और रिवाजों के बनने में हिन्दुस्तानी नेशन का कभी हाथ नहीं रहा. एक वर्ग या एक गिरोह का रहा है. इस नाते जब तक हिन्दू कोड बिल पास नहीं होता, हम यह मानने के लिये तैयार ही नहीं कि हमारे देस में ब्योहारी सरकार नाम की कोई सरकार है. यह साबित करने के लिये भी कि हिन्दुस्तान में लोकशाही है. लोकशाही की प्रतिनिधि आज की सरकार की छाप हिन्दुओं के सारे क़ानूनों पर लगनी ही चाहिये. असल में होना तो यही चाहिये था कि आज की सरकार से जो क़ानून बनते वह हिन्दुस्तान के सब आदमियों पर लागू होते. पर अगर किसी वजह से हिन्दुस्तान में वैसी हालत नहीं है या आज की सरकार अपने आप को इतना मज़बूत नहीं पाती तो कम से कम इतना तो उसे करना ही चाहिये कि वह ग़ैरहिन्दुओं के तमाम समाजी क़ानूनों पर अपनी छाप लगा कर यह साबित करदे कि सारा हिन्दुस्तान एक क़ानून से नहीं तो एक सरकार के क़ानून से ज़रूर शासित होता है.

अब रहीं आज के हिन्दू कोड बिल की दो ख़ास बातें. पहली बेटी को बाप की जायदाद से हिस्सा मिलना. दूसरे तलाक़ देना. यह दोनों रिवाज हिन्दुओं में कहीं न कहीं और किसी न किसी रूप में पहले से ही मौजूद हैं. जिस समाज में नियोग जैसा रिवाज रहा हो और नियोग जैसे रिवाज का हिन्दू समाज का एक बड़ा हिस्सा

ہندو سماج ابھی تک جاتوں کے ایسے برے الگ الگ خانوں میں بٹا ہے کہ نیشن کے لئے جو گن ضروری ہیں وہ اس میں پلپ ہی نہیں پاتے۔ اس لئے اور صرف اس لئے ہی ہندستان کی بیوھاری (سیکولر) سرکار کو ہندو کوڈ بل کا کام اپنے ہاتھ میں لینا ہی چاہئے تھا۔ کیونکہ آج تک کے ہندو رسم اور رواجوں کے بننے میں ہندستانی نیشن کا کبھی ہاتھ نہیں رہا۔ ایک ورگ یا ایک گروہ کا رہا ہے۔ اس ناتے جبتک ہندو کوڈ بل پاس نہیں ہوتا، ہم یہ ماننے کے لئے تیار ہی نہیں کہ ہمارے دیس میں بیوھاری سرکار نام کی کوئی سرکار ہے۔ یہ ثابت کرنے کے لئے بھی کہ ہندستان میں لوک شاہی ہے لوک شاہی کی پرتی ندھی آج کی سرکار کی چھاپ ہندوؤں کے سارے قانونوں پر لگنی ہی چاہئے۔ اصل میں ہونا تو یہی چاہئے تھا کہ آج کی سرکار سے جو قانون بنتے وہ ہندستان کے سب آدمیوں پر لاگو ہوتے۔ پر اگر کسی وجہ سے ہندستان میں ویسی حالت نہیں ہے یا آج کی سرکار اپنے آپکو اتنا مضبوط نہیں پاتی تو کم سے کم اتنا تو اسے کرنا ہی چاہئے کہ وہ غیر ہندوؤں کے تمام سماجی قانونوں پر اپنی چھاپ لگا کر یہ ثابت کر دے کہ سارا ہندستان ایک قانون سے نہیں تو ایک سرکار کے قانون سے ضرور شاست ہوتا ہے۔

اب رہیں آجکے ہندو کوڈ بل کی دو خاص باتیں۔ پہلی بیٹی کو باپ کی جائداد سے حصہ ملنا۔ دوسرے طلاق دینا۔ یہ دونوں رواج ہندوؤں میں کہیں نہ کہیں اور کسی نہ کسی روپ میں پہلے سے ہی موجود ہیں۔ جس سماج میں نیوگ جیسا رواج رہا ہو اور نیوگ جیسے رواج کا ہندو سماج کا ایک بڑا حصہ

और अजब नहीं एटम बम के ज़ोर पर वह कल उन मुल्कों के लिये 'एग्रेसर' होने की तजवीज़ यू. एन. ओ. के सामने रक्खे जिन मुल्कों ने आज यह कहा है कि चीन 'एग्रेसर नहीं है. अब श्री जवाहरलाल जी हिन्दुस्तान को 'एग्रेसरों. में गिनवाने के लिये तैयार रहें.

चीन, तुम 'एग्रेसर' तो नहीं हो पर 'एग्रेसरी' में कमाल रखने वाले पच्छिम के ४४ मुल्कों के गुट्ट का सरदार अमरीका तुम्हें एग्रेसरी की सनद देता है. उस सनद को आधी से ज्यादा दुनिया नहीं मानती.

१०. २. ५१.   —भगवानदीन

हिन्दू कोड बिल—

हमारे खयाल से, जनता जितनी ज्यादा ताक़त सरकार के हाथ में देती है उतनी ज्यादा कमज़ोर तो होती ही है पर साथ ही साथ वह उतनी ही अपनी आज़ादी भी खो बैठती है. और यही सिद्धान्त राज विद्या यानी पोलिटिकल साइन्स का भी है. आज के जवानों को रूसी हकूमत के तरीक़े के बारे में उड़ी हुई खबरों के बल पर जब हम यह शोर मचाते देखते हैं कि सारे रोज़गारों को 'नेशनलाइज़' कर दिया जाय यानी सरकार के हाथ में दे दिया जाय तो हम दंग रह जाते हैं. पर इस समय तो यह हवा चल पड़ी है. और जब यह हवा चल पड़ी है तो हिन्दू कोड बिल भी सरकार क्यों न तैयार करे. हिन्दू कोड बिल हाथ में लेने से पहले सरकार कई तरह से हिन्दू रस्म रिवाजों पर काफ़ी अधिकार पाए हुए है. फिर अब यह शोर तो बेकार है कि हिन्दुओं के समाजी मामलों में सरकार को दख़ल नहीं देना चाहिये.

اور عجب نہیں ایٹم بم کے زور پر وہ کل اُن ملکوں کے لئے 'ایگریسر' ہونے کی تجویز یو. این. او. کے سامنے رکھے جن ملکوں نے آج یہ کہا ہے کہ چین 'ایگریسر' نہیں ہے. اب شری جواہر لال جی ہندستان کو 'ایگریسروں' میں گنوانے کے لئے تیار رہیں.

چین، تم 'ایگریسر' تو نہیں ہو پر 'ایگریسری' میں کمال رکھنے والے پچھم کے ۴۴ ملکوں کے گٹ کا سردار امریکہ تمہیں 'ایگریسری' کی سند دیتا ہے. اُس سند کو آدھی سے زیادہ دنیا نہیں مانتی.

۵۱-۲-۱۰   —بھگوان دین

ہندو کوڈ بل—

ہمارے خیال سے، جنتا جتنی زیادہ طاقت سرکار کے ہاتھ میں دیتی ہے اُتنی زیادہ کمزور تو ہوتی ہی ہے پر ساتھ ہی ساتھ وہ اُتنی ہی اپنی آزادی بھی کھو بیٹھتی ہے. اور یہی سدھانت راج ودیا یعنی پولٹیکل سائنس کا بھی ہے. آج کے جوانوں کو روسی حکومت کے طریقے کے بارے میں اُڑی ہوئی خبروں کے بل پر جب ہم یہ شور مچاتے دیکھتے ہیں کہ سارے روزگاروں کو 'نیشنلائز' کر دیا جائے یعنی سرکار کے ہاتھ میں دے دیا جائے تو ہم دنگ رہ جاتے ہیں. پر اِس سمے تو یہ ہوا چل پڑی ہے. اور جب یہ ہوا چل پڑی ہے تو ہندو کوڈ بل بھی سرکار کیوں نہ تیار کرے. ہندو کوڈ بل ہاتھ میں لینے سے پہلے سرکار کئی طرح سے ہندو رسم رواجوں پر کافی ادھیکار پائے ہوئے ہے. پھر اب یہ شور تو بیکار ہے کہ ہندوؤں کے سماجی معاملوں میں سرکار کو دخل نہیں دینا چاہئے.

उनसे न बच कर करता. उस रिशी के मुताबिक़ जान बचाने के लिये उठाई हुई तलवार से जो हिंसा होती है वह हिंसा ही नहीं है और वह तलवार भी हिंसा का औज़ार नहीं मानी जायगी बल्कि बचाव के औज़ार की तरह पूजी जायगी. उसका यह कहना है कि अपने बचाव में आदमी किसी को मारने की नहीं सोचता. वह तो सिर्फ़ अपने बचाव की सोचता है. उसका बचाव अपने आप दूसरे की हिंसा का कारन बन जाता है. इसे वह क्या करे ? ईश्वर के यहाँ या क़ुदरत में सज़ा नियत की है न कि काम की. बस रिशी की इस कसौटी पर आप किसी हमले को कस लीजिये. आपको यह पता लग जायगा कि यह हमला 'एग्रेशन' है या नहीं और यह आदमी, मुल्क या क़ौम 'एग्रेसर' समझी जाय या नहीं. इसी कसौटी पर कस कर हम यह कहते हैं कि अमरीका जापान में रहकर, जापानियों को सता रहा है और 'एग्रेसर' है और यही हाल दूसरे एशियाई मुल्कों में जो योरपी या अमरीकी मुल्क कर रहे हैं वह भी इस नाते 'एग्रेसर' ही माने जायंगे. पर यू. एन. ओ. में 'एग्रेसरों' का एक गुट्ट बन गया है. ऐसे चोर कम ही होते हैं जो अपने को चोर कहें इसी तरह ऐसे 'एग्रेसर' बहुत कम ही होते हैं जो अपने को 'एग्रेसर' कहें. एग्रेसरों का यह सुभाव ही होता है कि वह 'एग्रेशन' करते वक़्त दूसरे पर 'एग्रेशन' का इलज़ाम लगाते ही हैं. और हमारे पढ़ने वालों में से सबने अपने अपने घरों में अपने बच्चों को रोज़ ही ऐसा करते देखा होगा.

बस अमरीका अपने 'एग्रेशन' की तरफ़ से दुनिया की नज़र दूर रखने के लिये कभी कोरिया को 'एग्रेसर' कहता है, कभी चीन को

اُن سے نہ بچکر کرتا ۔ اُس رشی کے مطابق جان بچانے کے لئے اُٹھائی ھوئی تلوار سے جو ھنسا ھوتی ھے وہ ھنسا ھی نہیں ھے اور وہ تلوار بھی ھنسا کا اوزار نہیں مانی جائیگی بلکہ بچاؤ کے اوزار کی طرح پوجی جائیگی ۔ اس کا یہ کہنا ھے کہ اپنے بچاؤ میں آدمی کسی کو مارنے کی نہیں سوچتا ۔ وہ تو صرف اپنے بچاؤ کی سوچتا ھے ۔ اُس کا بچاؤ اپنے آپ دوسرے کی ھنسا کا کارن بن جاتا ھے ۔ اسے وہ کیا کرے ؟ ایشور کے یہاں یا قدرت میں سزا نیت کی ھے نہ کہ کام کی ۔ بس رشی کی اس کسوٹی پر آپ کسی حملےکو کس لیجئے آپ کو یہ پتہ لگ جائیگا کہ یہ حملہ 'ایگریشن' ھے یا نہیں اور یہ آدمی، ملک یا قوم 'ایگریسر' سمجھی جائے یا نہیں ۔ اسی کسوٹی پر کس کر ھم یہ کہتے ھیں کہ امریکہ جاپان میں رہ کر جاپانیوں کو ستا رہا ھے اور 'ایگریسر' ھے اور یہی حال دوسرے ایشیائی ملکوں میں جو یورپی یا امریکی ملک کر رھے ھیں وہ بھی اُس ناتے 'ایگریسر' ھی مانے جائینگے. پر یو. این. او. میں 'ایگریسروں' کا ایک گُٹ بن گیا ھے ایسے چور کم ھی ھوتے ھیں جو اپنے کو چور کہیں اسی طرح ایسے 'ایگریسر' بہت کم ھی ھوتے ھیں جو اپنے کو 'ایگریسر' کہیں ۔ 'ایگریسروں' کا یہ سوبھاؤ ھی ھوتا ھے کہ وہ 'ایگریشن' کرتے وقت دوسرے پر 'ایگریشن' کا الزام لگاتے ھی ھیں ۔ اور ھمارے پڑھنے والوں میں سے سب نے اپنے اپنے گھروں میں اپنے بچوں کو روز ھی ایسا کرتے دیکھا ھوگا ۔

بس امریکہ اپنے 'ایگریشن' کی طرف سے دنیا کی نظر دور رکھنے کے لئے کبھی، کوریا کو 'ایگریسر' کہتا ھے، کبھی، چین کو

समझने में बड़े मददगार साबित होंगे. उस रिशी का कहना है कि सब जानवरों से ऊँचे दरजे का प्रानी आदमी सब शकलों में हिंसा नहीं छोड़ सकता. अगर वह ऐसा करेगा तो अपनी जान खो बैठेगा और वही रिशी यह भी कहता है कि अपनी गलती से अपनी जान खोना भी हिंसा करना है. इसलिये खुदकुशी क़त्ल है. तभी तो आज का क़ानून भी खुदकुशी की सजा खुदकुशी करने वाले को देता है. उसी रिशी ने उस हिंसा को फिर दो तरह की बताया है. यानी पहली एक इन्द्रिय प्रानियों की हिंसा और दूसरा दो या इससे ऊपर इन्द्रियों वाले प्रानियों की हिंसा. यानी एक हवा. पानी. सब्ज़ी वग़ैरा की हिंसा और दूसरी कीड़े मकोड़ों से लेकर आदमी तक की हिंसा. उस रिशी ने हवा. पानी, सब्ज़ी की हिंसा से तो आदमी को एकदम बरी कर दिया. अब रह गए चलते फिरते जानदार. इन चलते फिरते जानदार की हिंसा को भी उसने चार तरह की माना पहली वह जो जानबूझ कर या बेपरवाही से की जाय. दूसरी वह जो खाने, पीने, उठने, बैठने में हो. तीसरी वह जो रोज़ी कमाने के सिलसिले में हो. चौथी वह जो बचाव की खातिर हो. उस रिशी का यह भी कहना है कि दुनियादार इनसान सिर्फ पहली हिंसा से बच सकता है. यानी यह कि वह इतना ही कर सकता है कि जानबूझ कर या बेपरवाही से चलते फिरते जानदारों की जान न ले और उनको न सताए. उसी रिशी का यह भी कहना है कि इससे आगे की तीन तरह की हिंसाओं को छोड़ने का कोई आदमी सिर्फ ढोंग रच सकता है. उनको अमल में नहीं ला सकता. और अगर अमल में लाता है तो वह उनसे बचकर उससे भी ज्यादा हिंसा कर बैठेगा जो वह

سمجھنے میں بڑے مددگار ثابت ھونگے ۔ اُس رشی کا کہنا ھے کہ سب جانوروں سے اونچے درجے کا پرانی آدمی سب شکلوں میں ھنسا نہیں چھوڑ سکتا ۔ اگر وہ ایسا کریگا تو اپنی جان کھو بیٹھے گا ۔ اور وھی رشی یہ بھی کہتا ھے کہ اپنی غلطی سے اپنی جان کھونا بھی ھنسا کرنا ھے ۔ اِس لئے خودکشی قتل ھے ۔ تبھی تو آج کا قانون بھی خودکشی کی سزا خودکشی کرنے والے کو دیتا ھے ۔ اُسی رشی نے اُس ھنسا کو پھر دو طرح کی بتایا ھے ۔ یعنی پہلی ایک اندریہ پرانیوں کی ھنسا اور دوسری دو یا اس سے اوپر اندریوں والے پرانیوں کی ھنسا ۔ یعنی ایک ھوا ۔ پانی ۔ سبزی وغیرہ کی ھنسا اور دوسری کیڑے مکوڑوں سے لے کر آدمی تک کی ھنسا ۔ اُس رشی نے ھوا ۔ پانی ۔ سبزی کی ھنسا سے تو آدمی کو ایک دم بری کر دیا ۔ اب رہ گئے چلتے پھرتے جاندار ۔ ان چلتے پھرتے جاندار کی ھنسا کو بھی اُس نے چار طرح کی مانا ۔ پہلی وہ جو جان بوجھ کر یا بےپرواھی سے کی جائے ۔ دوسری وہ جو کھانے پینے اُٹھنے بیٹھنے میں ھو ۔ تیسری وہ جو روزی کمانے کے سلسلے میں ھو ۔ چوتھی وہ جو بچاؤ کی خاطر ھو ۔ اُس رشی کا یہ بھی کہنا ھے کہ دنیا دار انسان صرف پہلی ھنسا سے بچ سکتا ھے ۔ یعنی یہ کہ وہ اتنا ھی کر سکتا ھے کہ جان بوجھ کر یا بےپرواھی سے چلتے پھرتے جانداروں کی جان نہ لے اور اُن کو نہ ستائے ۔ اُسی رشی کا یہ بھی کہنا ھے کہ اِس سے آگے کی تین طرح کی ھنساؤں کو چھوڑنے کا کوئی آدمی صرف ڈھونگ رچ سکتا ھے ۔ اُن کو عمل میں نہیں لاسکتا ۔ اور اگر عمل میں لاتا ھے تو وہ اُن سے بچ کر اُس سے بھی زیادہ ھنسا کر بیٹھے گا جو وہ

नहीं है तो अपनी क्या दलीलें रखते हैं. उनकी यही तो दलील है कि जब चीन ने यह देखा कि अमरीका सारे कोरिया पर छाया जाता है तो उसे अपना प्रान्त मंचूरिया साफ़ खतरे में दिखाई दिया. और यह दिखाई दिया कि अब अमरीका की तलवार उसके सर पर आ पहुँची और बस अपने बचाव की खातिर उसने उत्तरी कोरिया की मदद की और इससे ज़्यादा कुछ नहीं किया. अपना बचाव करना फ़र्ज़ है और फ़र्ज़ अदा करने के नाते जो हमला किया जाय वह 'एग्रेशन' नहीं, इसलिये हमला करने वाला 'एग्रेसर' नहीं. हम श्री जवाहर लाल जी की इस बात से बिलकुल सहमत हैं हाँ. इसे इतना और बढ़ा देना चाहते हैं कि जब उत्तरी कोरिया ने यह देखा कि दक्खिनी कोरिया के सिंघमन री से सांठ गांठ करके अमरीका सारे दक्खिनी कोरिया पर छा जाने की कोशिश में है और किसी दिन भी यह हो सकता है कि उत्तरी कोरिया पर भी ज़ोर का हमला कर दिया जाय तो उसने यह समझा कि अमरीका की तलवार उसके सर पर है बस उस तलवार से बचने के लिये उसने दक्खिनी कोरिया पर नहीं दक्खिनी कोरिया पर छाए हुए अमरीकियों और उसके हाथ में खेलने वाले सिंघमन री और उसकी फ़ौजों पर हमला बोल दिया. यह हमला 'एग्रेशन' नहीं था, और हमला करने वाला 'एग्रेसर' नहीं था. श्री जवाहरलाल जी जो बात आज चीन के लिये कह रहे हैं अगर उस वक़्त उत्तरी कोरिया के लिये कह देते तो आज दुनिया की हालत ही दूसरी होती. पर 'क्या बरसे जब खेत सुखाने'.

हिंसा अहिंसा के मामले में भी हम एक रिशी के विचार दे देना चाहते हैं. यह यहाँ बेतुके नहीं होंगे. 'एग्रेशन' का मतलब

نہیں ھے تو اپنی کیا دلیلیں رکھتے ھیں. اُن کی یہی تو دلیل ھے کہ جب چین نے یہ دیکھا کہ امریکہ سارے کوریا پر چھایا جاتا ھے تو اُسے اپنا پرانت منچوریا صاف خطرے میں دکھائی دیا. اور یہ دکھائی دیا کہ اب امریکہ کی تلوار اُس کے سر پر آ پہونچی اور بس اپنے بچاؤ کی خاطر اُس نے اُتری کوریا کی مدد کی اور اس سے زیادہ کچھ نہیں کیا. اپنا بچاؤ کرنا فرض ھے اور فرض ادا کرنے کے ناتے جو حملہ کیا جائے وہ 'اگریشن' نہیں اس لئے حملہ کرنے والا 'ایگریسر' نہیں. ھم شری جواھر لال جی کی اس بات سے بالکل سہمت ھیں. ھاں اِسے اتنا اور بڑھا دینا چاھتے ھیں کہ جب اُتری کوریا نے یہ دیکھا کہ دکھنی کوریا کے سنگھمن ری سے سانٹھ گانٹھ کر کے امریکہ سارے دکھنی کوریا پر چھا جانے کی کوشش میں ھے اور کسی دن بھی یہ ھو سکتا ھے کہ اُتری کوریا پر بھی زور کا حملہ کر دیا جائے تو اُس نے یہ سمجھا کہ امریکہ کی تلوار اُس کے سر پر ھے. بس اُس تلوار سے بچنے کے لئے اُس نے دکھنی کوریا پر نہیں دکھنی کوریا پر چھائے ھوئے امریکیوں اور اُس کے ھاتھ میں کھیلنے والے سنگھمن ری اور اُس کی فوجوں پر حملہ بول دیا. یہ حملہ 'ایگریشن' نہیں تھا اور حملہ کرنے والا 'ایگریسر' نہیں تھا. شری جواھر لال جی جو بات آج چین کے لئے کہہ رہے ھیں اگر اُس وقت اُتری کوریا کے لئے کہہ دیتے تو آج دنیا کی حالت ھی دوسری ھوتی. پر 'کیا برسے جب کھیت سکھانے'.

ھنسا اھنسا کے معاملے میں بھی ھم ایک رشی کے وچار دے دینا چاھتے ھیں. یہ یہاں بے تکے نہیں ھونگے. 'ایگریشن' کا مطلب

लेकर चढ़ाई न की हो. अमरीका दक्खिनी कोरिया में जब से पड़ा हुआ है तब से 'एग्रेसर' न भी माना जाय तो उस वक़्त से तो 'एग्रेसर' ज़रूर है जब से रूस उत्तरी कोरिया को छोड़ कर चल दिया. ठीक इसी तरह से फ्रान्स हिन्द चीन में 'एग्रेसर' है. वही फ्रान्स हिन्दुस्तान के पांडेचरी में 'एग्रेसर' है. और इसी तरह से पुर्तगाल वग़ैरा भी. चीन के बन्दरगाह हाँगकाँग पर छाया हुआ बर्तानिया 'एग्रेसर' क्यों नहीं? और वही बर्तानिया मलाया में तो आज जिसके आँख न हो उसको भी 'एग्रेसर' दिखाई देगा. और यही बर्तानिया सूडान और मिस्र में 'एग्रेसर' नहीं तो क्या है? पर इस तरफ़ चीन को 'एग्रेसर' कहने वाले ४४ मुल्कों की निगाह क्यों जाने लगी. वह उस अमरीका की गुट में भी तो है जो चीन के टापू फ़ारमूसा को अपने जहाज़ी बेड़े से घेर कर अमरीका का ही टापू समझ बैठा है. इस तरह 'एग्रेसरी' दूर किये बिना यू. एन. ओ. अपने आप को दुनिया की पंचायत भले ही मानती रहे दुनिया के लोग तो उसे दुनिया की पंचायत की परछाईं भी नहीं मानेंगे. सीधे सादे 'एग्रेसर' शब्द के साथ यू. एन. ओ. में जो खिलवाड़ हो रहा है उसकी ख़बरें सुन सुन कर तो हमें हाल में किसी पत्रिका में "यह कमीने हैं" कहानी के उन सफ़ेद पोश पति पत्नी की याद आ जाती है जो ख़ुद शराब पीकर आपस में जूतम-पैज़ार करते थे और अपने को सभ्य समझते थे और वैसे ही ठर्रा पिए चमार पति पत्नी को जूतम-पैज़ार करते देख कर यह फ़िक़रा कस दिया करते थे कि "यह कमीने हैं."

आइये अब ज़रा हिन्दुस्तान के बड़े वज़ीर श्री जवाहरलाल जी की इस बात पर गौर कर लें कि वह जब यह कहते हैं कि चीन 'एग्रेसर'

لےکر چڑھائی نہ کی ہو . امریکہ دکھنی کوریا میں جب سے پڑا ہوا ہے تب سے 'ایگریسر' نہ بھی مانا جائے تو اُس وقت سے تو 'ایگریسر' ضرور ہے جب سے روس اُتری کوریا کو چھوڑ کر چل دیا . ٹھیک اِسی طرح سے فرانس ہند چین میں 'ایگریسر' ہے . وہی فرانس ہندستان کے پانڈیچری میں 'ایگریسر' ہے . اور اسی طرح سے پرتگال وغیرہ بھی . چین کے بندرگاہ ہانگ کانگ پر چھایا ہوا برطانیہ 'ایگریسر' کیوں نہیں ؟ اور وہی برطانیہ ملایا میں تو آج جس کے آنکھ نہ ہو اس کو بھی 'ایگریسر' دکھائی دے گا . اور یہی برطانیہ سوڈان اور مصر میں 'ایگریسر' نہیں تو کیا ہے ؟ پر اِس طرف چین کو 'ایگریسر' کہنے والے ۴۴ ملکوں کی نگاہ کیوں جانے لگی . وہ اُس امریکہ کی گٹ میں بھی تو ہیں جو چین کے ٹاپو فارموسا کو اپنے جہازی بیڑے سے گھیر کر امریکہ کا ہی ٹاپو سمجھ بیٹھا ہے . اس طرح 'ایگریسری' دور کئے بنا یو . این . او . اپنے آپ کو دنیا کی پنچایت بھلے ہی مانتی رہے دنیا کے لوگ تو اُسے دنیا کی پنچایت کی پرچھائیں بھی نہیں مانینگے . سیدھے سادے 'ایگریسر' شبد کے ساتھ یو . این . او . میں جو کھلواڑ ہو رہا ہے اسکی خبریں سن سن کر تو ہمیں حال میں کسی پتریکا میں "یہ کمینے ہیں" کہانی کے اُن سفید پوش پتی پتنی کی یاد آجاتی ہے جو خود شراب پی کر آپس میں جوتم پیزار کرتے تھے اور اپنے کو سبھیہ سمجھتے تھے اور ویسے ہی ٹھرا پئے چمار پتی پتنی کو جوتم پیزار کرتے دیکھکر یہ فقرہ کس دیا کرتے تھے کہ "یہ کمینے ہیں ."

آئیے اب ذرا ہندستان کے بڑے وزیر شری جواہر لال جی کی اِس بات پر غور کر لیں کہ وہ جب یہ کہتے ہیں کہ چین 'ایگریسر'

के सपुर्द कर दिया जाय या उसकी जगह सुरक्षा कौन्सिल को दे दी जाय तो वह 'एग्रेसर' शब्द का ऐसा मतलब बिठा देगी जिससे उत्तरी कोरिया और चीन 'एग्रेसर' साबित हो सकें और अगर यही काम किसी दूसरे ग्रुप के हाथ पड़ जाय तो वह 'एग्रेसर' शब्द की ऐसी व्याख्या करेगा जिससे उत्तरी कोरिया या चीन कभी 'एग्रेसर' साबित न हो सके. चाहिये यह था कि किसी मुल्क का मामला आने से पहले ही 'एग्रेसर' शब्द का मतलब साफ़ साफ़ खोल कर यू. एन. ओ. की क़ायदे की किताब में मौजूद रहना. वह नहीं है. इसे भी छोड़िये.

'एग्रेसर' शब्द को अगर भारी मान लिया जाय और यही मान लिया जाय कि बड़े बड़े पंडित ही इसकी व्याख्या कर सकते हैं तब तो व्याख्या शायद हो ही न पाए. पर 'एग्रेसर' शब्द बेहद हलका है और पाँच बरस का बच्चा भी इसके ठीक ठीक माने समझता है. हमें अपना बचपन याद है. और हम उन दिनों ख़ूब समझते थे कि 'एग्रेसर' किसे कहते हैं. हमने कई बार अपने माँ बाप के सामने अपने को 'एग्रेसर' क़बूल किया है और कई बार क़बूल करने से इनकार कर दिया. एग्रेसर' वही नहीं माना जायगा जो अपने पाँचों भाइयों को लाकर मुझे पीटने लगे बल्कि 'एग्रेसर' वह भी माना जायगा जो अकेला मुझे गाली देने लगे या मेरा खिलौना छीन कर भाग जाए. और फिर मैं अगर गाली के बदले में उसको चपत जमा दूं या खिलौना छीन ले जाने पर एक ईंट फेंक कर उसके सर से ख़ून निकाल दूं तो मैं और चाहे कुछ भी होऊँ 'एग्रेसर' नहीं हो सकता. अब 'एग्रेसर' को कौन नहीं समझता ? अब जापान में जनरल मैक-आर्थर के रहते हुए अमरीका 'एग्रेसर' है, भले ही अमरीका ने फ़ौज

کے سپرد کر دیا جائے یا اسکی جگہ سورکشا کونسل کو دے دی جائے تو وہ 'ایگریسر' شبد کا ایسا مطلب بٹھا دے کی جس سے اُتری کوریا اور چین 'ایگریسر' ثابت ہو سکیں اور اگر یہی کام کسی دوسرے گروپ کے ہاتھ پڑجائے تو وہ 'ایگریسر' شبد کی ایسی ویاکھیا کریگا جس سے اُتری کوریا یا چین کبھی 'ایگریسر' ثابت نہ ہوسکے۔ چاہئیے یہ تھا کہ کسی ملک کا معاملہ آنے سے پہلے ہی 'ایگریسر' شبد کا مطلب صاف صاف کھولکر یو۔ این۔ او۔ کی قاعدے کی کتاب میں موجود رہتا۔ وہ نہیں ہے اسے بھی چھوڑیئے۔

'ایگریسر' شبد کو اگر بھاری مان لیا جائے اور یہی مان لیا جائے کہ بڑے بڑے پنڈت ہی اِسکی ویاکھیا کرسکتے ہیں تب تو ویاکھیا شاید ہو ہی نہ پائے۔ پر 'ایگریسر' شبد بےحد ہلکا ہے اور پانچ برس کا بچہ بھی اِس کے ٹھیک ٹھیک معنے سمجھتا ہے۔ ہمیں اپنا بچپن یاد ہے۔ اور ہم اُن دنوں خوب سمجھتے تھے کہ 'ایگریسر' کسے کہتے ہیں۔ ہم نے کئی بار اپنے ماں باپ کے سامنے اپنے کو 'ایگریسر' قبول کیا ہے اور کئی بار قبول کرنے سے انکار کردیا۔ 'ایگریسر' وہی نہیں مانا جائیگا جو اپنے پانچوں بھائیوں کو لاکر مجھے پیٹنے لگے بلکہ 'ایگریسر' وہ بھی مانا جائیگا جو اکیلا مجھے گالی دینے لگے یا میرا کھلونا چھین کر بھاگ جائے۔ اور پھر میں اگر گالی کے بدلے میں اُس کو چپت جما دوں یا کھلونا چھین لے جانے پر ایک اینٹ پھینک کر اُس کے سر سے خون نکال دوں تو میں اور چاہے کچھ بھی ہوؤں 'ایگریسر' نہیں ہوسکتا۔ اب 'ایگریسر' کو کون نہیں سمجھتا؟ اب جاپان میں جنرل میک آرتھر کے رہتے ہوئے امریکہ 'ایگریسر' ہے۔ بھلے ہی امریکہ نے فوج

इन १८० करोड़ में से ५५ करोड़ आदमी तो चीन को 'एग्रेसर' कहते हैं, और ५७ करोड़ आदमी यह कहते हैं कि चीन 'एग्रेसर' नहीं है. २१ करोड़ ऐसे आदमी हैं जो इस बारे में अपनी कुछ राय ही नहीं रखते. अब आबादी के लिहाज़ से तो चीन 'एग्रेसर' रह नहीं जाता पर यू. एन. ओ. की चालबाज़ी से वह 'एग्रेसर' ज़रूर है. चालबाज़ी लफ्ज़ ज़रा कड़ा है. यू. एन. ओ. की शान में ऐसा लफ्ज़ हमें कहना नहीं चाहिये. पर जिस यू. एन. ओ. में गुटबंदियाँ हों उस यू. एन. ओ. को चालबाज़ी का लफ्ज़ सुनने के लिये मजबूर होना पड़ेगा. यू. एन. ओ. जो दुनिया भर की पचायत है उसे यह शोभा नहीं देता कि वह सिर्फ़ क़ानून के अक्षरों पर अमल करे. उसे तो क़ानून की आत्मा का ख़याल करना चाहिये. ४५ करोड़ के एक मुल्क को क़ानून के अक्षरों के बल पर ५५ करोड़ की आबादी वाले ४४ मुल्क अपने ४४ वोटों के बल पर उस वक़्त 'एग्रेसर' कह डालें जब कि ५७ करोड़ की आबादी वाले सात मुल्क यह कह रहे हैं कि कि चीन 'एग्रेसर' नहीं है. दूसरी तरह से देखा जाय तो ५५ करोड़ लोगों ने १०३ करोड़ लोगों को हरा दिया. यह काम चालबाज़ी से नहीं तो और किस तरह हो सकता है. चीन को 'एग्रेसर' न कहने वाले ७ मुल्क अगर अपने आपको ४९ मुल्कों में बाँट लें तो ४४ मुल्क अपने आप हार जायं बस यही समझना चाहिये कि यू. एन. ओ. में आए दिन अंकों की बाज़ीगरी का खेल होता रहता है. आइये इस अंकों के जाल में से निकल कर दूसरी तरफ़ चलें.

'एग्रेसर' किसे कहते हैं इसे खोल कर किसी ने समझाने की तकलीफ़ नहीं की. अगर यह काम यू. एन. ओ. की जनरल एसेम्बली

ان ۱۸۰ کروڑ میں سے ۵۵ کروڑ آدمی تو چین کو 'ایگریسر' کہتے ہیں، اور ۵۷ کروڑ آدمی یہ کہتے ہیں کہ چین 'ایگریسر' نہیں ہے۔ ۲۱ کروڑ ایسے آدمی ہیں جو اس بارے میں اپنی کچھ رائے ہی نہیں رکھتے۔ اب آبادی کے لحاظ سے تو چین 'ایگریسر' رہ نہیں جاتا پر یو۔ این۔ او۔ کی چالبازی سے وہ 'ایگریسر' ضرور ہے۔ چالبازی لفظ ذرا کڑا ہے۔ یو۔ این۔ او۔ کی شان میں ایسا لفظ ہمیں کہنا نہیں چاہئے۔ پر جس یو۔ این۔ او۔ میں گٹ بندیاں ہوں اس یو۔ این۔ او۔ کو چالبازی کا لفظ سننے کے لئے مجبور ہونا پڑیگا۔ یو۔ این۔ او۔ جو دنیا بھر کی پنچایت ہے اُسے یہ شوبھا نہیں دیتا کہ وہ صرف قانون کے اکشروں پر عمل کرے۔ اُسے تو قانون کی آتما کا خیال کرنا چاہئے۔ ۴۵ کروڑ کے ایک ملک کو قانون کے اکشروں کے بل پر ۵۵ کروڑ کی آبادی والے ۴۴ ملک اپنے ۴۴ ووٹوں کے بل پر اُس وقت 'ایگریسر' کہہ ڈالیں جبکہ ۵۷ کروڑ کی آبادی والے سات ملک یہ کہہ رہے ہیں کہ چین 'ایگریسر' نہیں ہے۔ دوسری طرح سے دیکھا جائے تو ۵۵ کروڑ لوگوں نے ۱۰۳ کروڑ لوگوں کو ہرا دیا۔ یہ کام چالبازی سے نہیں تو اور کس طرح ہوسکتا ہے۔ چین کو 'ایگریسر' نہ کہنے والے ۷ ملک اگر اپنے آپ کو ۴۹ ملکوں میں بانٹ لیں تو ۴۴ ملک اپنے آپ ہار جائیں۔ بس یہی سمجھنا چاہئے کہ یو۔ این۔ او۔ میں آئے دن انکوں کی بازیگری کا کھیل ہوتا رہتا ہے۔ آئیے اس انکوں کے جال میں سے نکل کر دوسری طرف چلیں۔

'ایگریسر' کسے کہتے ہیں اسے کھولکر کسی نے سمجھانے کی تکلیف نہیں کی۔ اگر یہ کام یو۔ این۔ او۔ کی جنرل اسمبلی

ہماری رائے

चीन और 'एग्रेसरी' की सनद —

यू. एन. ओ. साठ मुल्कों की पंचायत है उसमें ऐसे मुल्क भी हैं जिनकी आबादी ४५ करोड़ है और ऐसे ऐसे मुल्क भी शामिल हैं जिनकी आबादी ४५ लाख भी नहीं है. जिस तरह पहली लड़ाई के बाद जान बुल यानी अंगरेज़ों ने लीग आफ नेशन्स का जाल तैयार किया था वैसे ही दूसरी लड़ाई के बाद काका शाम यानी अमरीका के हाथ की एक चीज़ यह यू. एन. ओ है. इसमें कुछ छोटे छोटे मुल्क ऐसे शामिल हैं कि जिन सबकी मिलकर उतनी भी आबादी नहीं होती जितनी चीन या हिन्दुस्तान के एक सूबे की. इनमें ऐसे छोटे छोटे मुल्क ज़्यादातर या तो अमरीका के हैं या योरप के हैं इस तरह यह यू. एन. ओ. ऐसी चालबाज़ी की चीज़ बन गई है कि पूरब की बहुत बड़ी आबादी पच्छिम की थोड़ी आबादी के दबाव में आ जाती है. हाल का जो यह फ़ैसला हुआ है कि चीन 'एग्रेसर' है इस फ़ैसले में आबादी के लिहाज़ से अगर देखा जाय तो उन साठ मुल्कों की आबादी जो यू. एन ओ. में शामिल है कुल १८० करोड़ होती है.

چین اور 'ایگریسری' کی سند —

یو. این. او. ساٹھ ملکوں کی پنچایت ہے. اس میں ایسے ملک بھی ہیں جنکی آبادی ۴۵ کروڑ ہے اور ایسے ایسے ملک بھی شامل ہیں جنکی آبادی ۴۵ لاکھ بھی نہیں ہے. جس طرح پہلی لڑائی کے بعد جان بل یعنی انگریزوں نے لیگ آف نیشنس کا جال تیار کیا تھا ویسے ہی دوسری لڑائی کے بعد کاکا شام یعنی امریکہ کے ہاتھ کی ایک چیز یہ یو. این. او. ہے. اس میں کچھ چھوٹے چھوٹے ملک ایسے شامل ہیں کہ جن سبکی ملکر اتنی بھی آبادی نہیں ہوتی جتنی چین یا ہندوستان کے ایک صوبے کی. ان میں ایسے چھوٹے چھوٹے ملک زیادہ تر یا تو امریکہ کے ہیں یا یورپ کے ہیں. اس طرح یہ یو. این. او. ایسی چالبازی کی چیز بن گئی ہے کہ پورب کی بہت بڑی آبادی پچھم کی تھوڑی آبادی کے دباو میں آجاتی ہے. حال کا جو یہ فیصلہ ہوا ہے کہ چین 'ایگریسر' ہے اس فیصلے میں آبادی کے لحاظ سے اگر دیکھا جائے تو ان ساٹھ ملکوں کی آبادی جو یو. این. او. میں شامل ہیں کل ۱۸۰ کروڑ ہوتی ہے.

की झलक है. "क्लर्क" अपनी क़िसमत को कोसता रहता है. "सुन्दर नारी" में एक भिकारिन पेट के लिये आबरू बेचती दिखाई पड़ती है. "तसवीर" में सुनील ऐसे कलाकार को 'कला जीवन के लिये' का उसूल समझ में आ जाता है. "ज़ंजीर" एक आदमी और कुत्ते की क़िसमत का मुक़ाबला और समाज के अत्याचार की कहानी है "ज़िन्दगी" में ग़रीबी और ज़ुल्म के पाटों में पिसती तीन ज़िन्दगियां दिखाई गई हैं.

सिद्दीक़ा बेगम की कला की एक ख़ूबी यह भी है कि वह कहानियों में ख़ुद कुछ नहीं कहतीं बल्कि कोशिश यह करती हैं कि घटना ही पढ़ने वाले का ध्यान उस तरफ़ ले जाय जिधर वह ख़ुद ध्यान दिलाना चाहती हैं. वह इशारों से ज़्यादा काम लेती हैं. हालाँकि किसी किसी कहानी में सिर्फ़ इशारों से काम लेने के कारन उनकी बात में कुछ कमज़ोरी आगई है लेकिन ज़्यादातर उनका यह ढंग बहुत कामयाब दिखाई देता है.

सिद्दीक़ा बेगम ज़बान को ज़बरदस्ती कठिन शब्दों से बोझिल बनाने की क़ायल नहीं हैं और इसीलिये उनकी ज़बान में रवानी, लोच और मिठास की कमी नहीं है. हाँ, "गुलाबी की नज़र" में ज़बान कुछ मुशकिल है. हमें आशा है कि जनता की भलाई के लिये लिखने वाले सभी लेखक जनता तक अपनी बात पहुँचाने के लिये जनता की ज़बान के भी क़रीब आने की कोशिश करेंगे.

आख़िर में हम श्री बी० एल० भटनागर को "हिचकियाँ" जैसी अच्छी किताब इतने अच्छे ढंग से निकालने पर बधाई देने के साथ साथ अपने पढ़ने वालों से भी सिफ़ारिश करेंगे कि वह "हिचकियाँ" ज़रूर पढ़ें. "हिचकियाँ" ख़रीद कर वह असने पैसों का सही इस्तेमाल करेंगे.

किताब जिल्द बंधी है और काग़ज़ छपाई सब बहुत अच्छी है.

—मुजीब रिज़वी

کی جھلک ہے . "کلرک" اپنی قسمت کو کوستا رہتا ہے . "سندر ناری" میں ایک بھکارن پیٹ کے لئے آبرو بیچتی دکھائی پڑتی ہے . "تصویر" میں سنیل ایسے کلاکار کو 'کلا جیون کے لئے' کا اُصول سمجھ میں آجاتا ہے . "زنجیر" ایک آدمی اور کتے کی قسمت کا مقابلہ اور سماج کے اتیاچار کی کہانی ہے "زندگی" میں غریبی اور ظلم کے پاٹوں میں پستی تین زندگیاں دکھائی گئی ہیں

صدیقہ بیگم کی کلا کی ایک خوبی یہ بھی ہے کہ وہ کہانیوں میں خود کچھ نہیں کہتیں بلکہ کوشش یہ کرتی ہیں کہ گھٹنا ہی پڑھنے والے کا دھیان اُس طرف لے جائے جدھر وہ خود دھیان دلانا چاہتی ہیں . وہ اِشاروں سے زیادہ کام لیتی ہیں . حالانکہ کسی کسی کہانی میں صرف اِشاروں سے کام لینے کے کارن اُنکی بات میں کچھ کمزوری آگئی ہے لیکن زیادہ تر اُن کا یہ ڈھنگ بہت کامیاب دکھائی دیتا ہے .

صدیقہ بیگم زبان کو زبردستی کٹھن شبدوں سے بوجھل بنانے کی قائل نہیں ہیں اور اِسی لئے اُنکی زبان میں روانی، لوچ اور مٹھاس کی کمی نہیں ہے . ہاں "گلابی کی نظر" میں زبان کچھ مشکل ہے . ہمیں آشا ہے کہ جنتا کی بھلائی کے لئے لکھنے والے سبھی لیکھک جنتا تک اپنی بات پہونچانے کے لئے جنتا کی زبان کے بھی قریب آنے کی کوشش کرینگے .

آخر میں ہم شری بی . ایل . بھٹناگر کو "ھچکیاں" جیسی اچھی کتاب اِتنے اچھے ڈھنگ سے نکالنے پر بدھائی دینے کے ساتھ ساتھ اپنے پڑھنے والوں سے بھی سفارش کرینگے کہ وہ "ھچکیاں" ضرور پڑھیں . "ھچکیاں" خرید کر وہ اپنے پیسوں کا صحیح استعمال کرینگے .

کتاب جلد بندھی ہے اور کاغذ چھپائی سب بہت اچھی ہے .

—مجیب رضوی

इस दुनिया में ज़ुल्म का नाम निशान भी न रहेगा. मज़दूर और सरमायादार का सवाल न रहेगा. जो मेहनत करेगा वह ज़िन्दा रहेगा. तुम्हारी बनाई दीवारें टूट जायँगी. सब एक दूसरे के भाई होंगे.''

''हिचकियाँ'' में दस कहानियाँ हैं और ''गुलाबी की नज़र'' को छोड़ कर हर एक का विषय 'पेट' है. पेट की समस्या इस समाज की सब से कठिन समस्या है. पर सन ४३ के अकाल में बंगाल में इस समस्या ने भयानक रूप धारन कर लिया था. गोदामों में चावल भरा रहा और जनता सड़कों पर कुत्ते बिल्लों की तरह मरती रही. लाशों से इधर सड़क पटती रही और उधर मुनाफ़ाख़ोर काले बाज़ार में तिजोरियाँ भरते रहे. मौत के इस भयानक नाच को देखकर हिन्दुस्तान के सारे तरक़्क़ी पसन्द लेखक और शायर चिल्ला उठे. सिद्दीक़ा बेगम ने भी अपने तरीक़े से उस हालत की कल्पना की और ''चावल के दाने'' और ''आँधी'' कहानियाँ लिख डालीं. इन कहानियों को लिखते समय उनके सामने सिर्फ़ यह मंज़िल थी कि इस अकाल में पाव डेढ़ पाव चावल के लिये जवान लड़कियों की आबरू बेची गई. यह दोश उस समय लिखी गई ज़्यादातर कहानियों में है. सिद्दीक़ा बेगम की कहानियाँ भी इतिहास की एक घटना तो बन गई हैं लेकिन अगर उन्होंने बंगाल के अकाल को नज़दीक से देखा होता और कहानियों में सिर्फ़ कल्पना से काम न लिया गया होता तो उनकी कहानियों में कहीं ज़्यादा असर होता.

इस संग्रह की दूसरी कहानियों में ''वापसी'' बीच के तबक़े के एक लड़के की समस्या की कहानी है. ''गुलाबी की नज़र'' में शराब के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई गई है. ''लाल करता'' में मज़दूर क्रान्ति

اِس دُنیا میں ظلم کا نام نشان بھی نہ رہے گا' مزدور اور سرمایہ دار کا سوال نہ رہیگا' جو محنت کریگا وہ زندہ رہے گا' تمہاری بنائی دیواریں ٹوٹ جائینگی' سب ایک دوسرے کے بھائی ہوں گے۔''

''ھچکیاں'' میں دس کہانیاں ھیں اور ''گلابی کی نظر'' کو چھوڑ کر ھر ایک کا وشے ''پیٹ'' ھے پیٹ کی سمسیا اِس سماج کی سب سے کٹھن سمسیا ھے' پر سن ۴۳ کے اکال میں بنگال میں اِس سمسیا نے بھیانک روپ دھارن کر لیا تھا گوداموں میں چاول بھرا رھا اور جنتا سڑکوں پر کتے بلی کی طرح مرتی رہی۔ لاشوں سے اِدھر سڑک پٹتی رہی اور اُدھر منافع خور کالے بازار میں تجوریاں بھرتے رھے۔ موت کے اِس بھیانک ناچ کو دیکھکر ھندستان کے سارے ترقی پسند لیکھک اور شاعر چلا اُٹھے۔ صدیقہ بیگم نے بھی اپنے طریقے سے اُس حالت کی کلپنا کی اور ''چاول کے دانے'' اور ''آندھی'' کہانیاں لکھ ڈالیں۔ اِن کہانیوں کو لکھتے سمے اُن کے سامنے صرف یہ منزل تھی کہ اِس اکال میں پاؤ ڈیڑھ پاؤ چاول کے لئے جوان لڑکیوں کی آبرو بیچی گئی۔ یہ دوش اُس سمے لکھی گئی زیادہ تر کہانیوں میں ھے۔ صدیقہ بیگم کی کہانیاں بھی اِتہاس کی ایک گھٹنا تو بن گئی ھیں لیکن اگر اُنھوں نے بنگال کے اکال کو نزدیک سے دیکھا ہوتا اور کہانیوں میں صرف کلپنا سے کام نہ لیا گیا ہوتا تو اُن کی کہانیوں میں کہیں زیادہ اثر ہوتا

اِس سنگرہ کی دوسری کہانیوں میں ''واپسی'' بیچ کے طبقے کے ایک لڑکے کی سمسیا کی کہانی ھے۔ ''گلابی کی نظر'' میں شراب کے خلاف آواز اُٹھائی گئی ھے۔ ''لال کرتا'' میں مزدور کرانتی

हिचकियां

लिखने वाली—सिद्दीक़ा बेगम

निकालने वाले—बी. एल.भटनागर प्रभात पब्लिशर, घन्टा घर, इलाहाबाद. सफ़ा—२२४. लिखावट—उरदू. दाम दो रुपया बारह आने.

सिद्दीक़ा बेगम उरदू की मशहूर कहानीकार हैं. "हिचकियां" उनकी कहानियों के संग्रह का नाम है. इसका पहला प्रकाशन हैदराबाद से निकला था जो बरसों से ख़तम हो चुका था. प्रभात पब्लिशर ने दूसरी बार छापकर कहानियों के पाठकों पर बड़ा एहसान किया है. किताब के शुरू में डाक्टर एजाज़ हुसैन साहब ने दीबाचा लिखा है.

सिद्दीक़ा बेगम उन महिलाओं में से एक हैं जिन्होंने उरदू कहानी के मैदान में अपनी एक जगह बनाली है. दिन रात होने वाली छोटी मोटी समाजी और घरेलू घटनाओं को कहानी के नक़नीकी चौखटे में जड़ कर रख देना इनको ख़ूब आता है. उन की हर कहानी इस सड़े समाज की पोल खोलती रहती है, इसीलिये आम आदमी इन कहानियों में अपनापन पाता है. समाज के असली रोग को सिद्दीक़ा बेगम ने ठीक ठीक जान लिया है, पर यह दूसरी बात है कि अधिक तर कहानियों में इस रोग का इलाज वह नहीं बताती. कभी कभार "लाल कुरता" ऐसी कहानी में दबे ज़बान रोग के इलाज की तरफ़ किसी मज़दूर के भूत के मुँह से इशारा करवाती गुज़र जाती हैं :—"हाँ तू ज़ालिम है. हम यह मिलें छीन लेंगे और फिर

ہچکیاں

لکھنے والی—صدیقہ بیگم.

نکالنے والے—بی. ایل. بھٹناگر پربھات پبلشرز گھنٹہ گھر الہ آباد. صفحے—۲۲۴. لکھاوٹ—اردو. دام دو روپیہ بارہ آنے.

صدیقہ بیگم اردو کی مشہور کہانی کار ہیں. "ہچکیاں" انکی کہانیوں کے سنگرہ کا نام ہے. اس کا پہلا ایڈیشن حیدرآباد سے نکلا تھا جو برسوں سے ختم ہو چکا تھا. پربھات پبلشرز نے دوسری بار چھاپ کر کہانیوں کے پاٹھکوں پر بڑا احسان کیا ہے. کتاب کے شروع میں ڈاکٹر اعجاز حسین صاحب نے دیباچہ لکھا ہے.

صدیقہ بیگم اُن مہیلاؤں میں سے ایک ہیں جنھوں نے اردو کہانی کے میدان میں اپنی ایک جگہ بنالی ہے. دن رات ہونے والی چھوٹی موٹی سماجی اور گھریلو گھٹناؤں کو کہانی کے تکنیکی چوکھٹے میں جڑ کر رکھ دینا ان کو خوب آتا ہے. ان کی ہر کہانی اس سڑے سماج کی پول کھولتی رہتی ہے' اسی لئے عام آدمی ان کہانیوں میں اپنا پن پاتا ہے. سماج کے اصلی روگ کو صدیقہ بیگم نے ٹھیک ٹھیک جان لیا ہے. پر یہ دوسری بات ہے کہ ادھک تر کہانیوں میں اس روگ کا علاج وہ نہیں بتاتیں. کبھی کبھار "لال کرتا" ایسی کہانی میں دبے زبان روگ کے علاج کی طرف کسی مزدور کے بھوت کے منھ سے اشارہ کرواتی گذر جاتی ہیں :— "ہاں تو ظالم ہے. ہم یہ ملیں چھین لیں گے اور پھر

पंच तंत्र की कहानियां

इसमें संस्कृत के मशहूर ग्रन्थ 'पंच तंत्र'' के दो भागों 'मंत्र लाभ' और 'मंत्र भेद' की कुछ कहानियां जैसे 'बुद्धिमान कबूतर', 'शेर और बैल' वग़ैरा सुन्दर हिन्दी भाशा में संग्रह कर दी गई हैं. बयान करने का ढंग बहुत अनोखा और दिलचस्प है. अट्ठासी सफ़े की किताब की क़ीमत केवल एक रुपया.

भारत की आवाज़

यह श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़ की मशहूर कविता 'धरती की करवट' सैयद अलताफ़ हुसैन 'हाली' की मशहूर मुसद्दस 'ज्वार भाटा' (मद्दो जज़र) और श्री मैथिली शरन गुप्त की मशहूर रचना 'भारत भारती' तीनों का संग्रह है. हमारी भाशा के विद्यार्थी के लिये यह तीनों ऊँचे विचारों और बोलती भाशा के तीन बड़े अच्छे नमूने हैं. नव्वे सफ़े की किताब की क़ीमत एक रुपया.

भारत की सरकारी भाशा हिन्दी

इसमें पछत्तर सफ़े के अन्दर लेखक ने भारत के विधान का वह भाग जिसका भाशा से सम्बन्ध है देकर उसकी बहुत अच्छी व्याख्या की है. जो लोग भारत की सरकारी भाशा हिन्दी का कानूनी रंग रूप समझना चाहें उनके लिये यह किताब बहुत क़ीमती है.

इन सब किताबों के मिलने का पता है—

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, मुकर्रम जाही रोड, हैदराबाद दकिखन.

हिन्दी सीखने सिखाने वालों के लिये यह सब किताबें बहुत काम की हैं.

—सुन्दरलाल

پنچ تنتر کی کہانیاں

اِس میں سنسکرت کے مشہور گرنتھ "پنچ تنتر" کے دو بھاگوں "منتر لابھ" اور "منتر بھید" کی کچھ کہانیاں جیسے "بدھی مان کبوتر"، "شیر اور بیل" وغیرہ سندر ہندی بھاشا میں سنگرہ کر دی گئی ہیں ۔ بیان کرنے کا ڈھنگ بہت انوکھا اور دلچسپ ہے ۔ اٹھاسی صفحے کی کتاب کی قیمت کیول ایک روپیہ ۔

بھارت کی آواز

یہ شری رگھوپتی سہائے 'فراق' کی مشہور کویتا 'دھرتی کی کروٹ'، سید الطاف حسین 'حالی' کی مشہور مسدس 'جوار بھاٹا' (مدو جزر) اور شری میتھلی شرن گپت کی مشہور رچنا 'بھارت بھارتی' تینوں کا سنگرہ ہے ۔ ہماری بھاشا کے ودیارتھی کے لئے یہ تینوں اونچے وچاروں اور بولتی بھاشا کے تین بڑے اچھے نمونے ہیں ۔ نوے صفحے کی کتاب کی قیمت ایک روپیہ

بھارت کی سرکاری بھاشا ہندی

اس میں پچھتر صفحے کے اندر لیکھک نے بھارت کے ودھان کا وہ بھاگ جس کا بھاشا سے سمبندھ ہے دے کر اسکی بہت اچھی ویاکھیا کی ہے ۔ جو لوگ بھارت کی سرکاری بھاشا ہندی کا قانونی رنگ روپ سمجھنا چاہیں ان کے لئے یہ کتاب بہت قیمتی ہے ۔

ان سب کتابوں کے ملنے کا پتہ ہے—ہندستانی پرچار سبھا، مکرم جاہی روڈ حیدرآباد دکن ۔ ہندی سیکھنے سکھانے والوں کے لئے یہ سب کتابیں بہت کام کی ہیں ۔

—سندر لال

मिसाल के तौर पर 'पालनहार' कविता में यह लाइनें आती हैं—

अपने अपने रंग में तुझको   देख रही है दुनिया सारी
मसजिद में भी तेरे नमाज़ी   मन्दिर में भी तेरे पुजारी
इस से कौन करे इनकार   तू ही सब का पालन हार!

कुछ और नमूने की लाइनें हम नीचे देते हैं—

डग मग डग मग नैया होती   मांझी मारग पर रख ध्यान

....

जग प्यार सिखाने आया हूँ   संसार सजाने आया हूँ
हैं मौत के सौ गुर, जीने का   एक भेद बताने आया हूँ

....

अपने मन में प्रीत
बसाले अपने मन में प्रीत
मन मन्दिर में प्रीत बसा ले
प्रीत बसा ले प्रीत बसा ले
दिल की दुनिया रौशन कर ले
अपने घर में जोत जगा ले
प्रीत है तेरी रीत पुरानी
भूल गया ओ भारत वाले!
प्रीत है तेरी रीत
बसाले अपने मन में प्रीत

छेहत्तर सफ़े की किताब की क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

مثال کے طور پر 'پالن ہار' کویتا میں یہ لائنیں آتی ہیں—

اپنے اپنے رنگ میں تجھکو ، دیکھ رہی ہے دنیا ساری
مسجد میں بھی تیرے نمازی   مندر میں بھی تیرے پجاری
اس سے کون کرے انکار   تو ہی سب کا پالن ہار!

کچھ اور نمونے کی لائنیں ہم نیچے دیتے ہیں—

ڈگ مگ ڈگ مگ نیا ہوتی   مانجھی مارگ پر رکھ دھیان

....

جگ پیار سکھانے آیا ہوں   سنسار سجانے آیا ہوں
ہیں موت کے سو گر جینے کا   اک بھید بتانے آیا ہوں

....

اپنے من میں پریت
بسا لے اپنے من میں پریت
من مندر میں پریت بسا لے
پریت بسا لے پریت بسا لے
دل کی دنیا روشن کر لے
اپنے گھر میں جوت جگا لے
پریت ہے تیری ریت پرانی
بھول گیا او بھارت والے!
پریت ہے تیری ریت
بسا لے اپنے من میں پریت

چھہتر صفحے کی کتاب کی قیمت صرف بارہ آنے۔

भाशा सरल और बामहावरा है. यह संग्रह बच्चों के लिये खासकर मनोहर और शिक्षा प्रद है क़ीमत केवल छै आने.

हमारा देस

इसमें कुछ कविताएँ हैं. जैसे "हमको प्यारा अपना देस" और "मजदूरी कर मजदूरी कर" और कुछ गद्य पाठ हैं जैसे हमारा देस, हमारी भाशा, हमारे कपड़े, हमारे किसान और हमारे गाँव वग़ैरा. भाशा बहुत अच्छी, आसान और मिली जुली बोलचाल की है. नक़शे और तस्वीरें भी हैं. छपाई सुन्दर. क़ीमत केवल छै आने.

किसान की पुकार

इसमें किसान की ज़रूरत की बातें बताई गई हैं. तरह तरह की खाद की चरचा है. खास कर मरे हुए जानवरों की खाल और हड्डियों को अलग काम में लाकर उनके बाक़ी शरीर से खाद का काम लेने का विचार और ढंग नया और बहुत ही अच्छा है. क़ीमत केवल छै आने.

मीठे बोल

यह बड़ी अच्छी कविताओं का संग्रह है. जैसे 'पालन हार', 'कोई नहीं है ग़ैर', 'आओ सब मिल गाएं गीत', 'पंछी की फ़रियाद', 'डग मग डग मग नैया होती', 'कृश्न जन्म', 'सावन भादों', 'प्रेम पुजारी', 'प्रीत का राज़', और 'प्रीत बसालें' वग़ैरा. लगभग सब कविताएँ बहुत ही अच्छे विचारों की और टकसाली भाशा में हैं.

بھاشا سرل اور بامحاورہ ہے . یہ سنگرہ بچوں کے لئے خاصکر منوہر اور شکشا پرد ہے . قیمت کیول چھ آنے .

ہمارا دیس

اِس میں کچھ کویتائیں ہیں . جیسے "ہم کو پیارا اپنا دیس" اور "مزدوری کر مزدوری کر" اور کچھ گدیہ پاٹھ ہیں جیسے ہمارا دیس، ہماری بھاشا، ہمارے کپڑے، ہمارے کسان اور ہمارے گاؤں وغیرہ . بھاشا بہت اچھی آسان اور ملی جلی بول چال کی ہے . نقشے اور تصویریں بھی ہیں . چھپائی سندر . قیمت کیول چھ آنے .

کسان کی پکار

اِس میں کسان کی ضرورت کی باتیں بتائی گئی ہیں . طرح طرح کی کھاد کی چرچا ہے . خاص کر مرے ہوئے جانوروں کی کھال اور ہڈیوں کو الگ کام میں لاکر ان کے باقی شریر سے کھاد کا کام لینے کا وچار اور ڈھنگ نیا اور بہت ہی اچھا ہے . قیمت کیول چھ آنے .

میٹھے بول

یہ بڑی اچھی کویتاؤں کا سنگرہ ہے . جیسے 'پالن ہار'، 'کوئی نہیں ہے غیر'، 'آؤ سب مل گائیں گیت'، 'پنچھی کی فریاد'، 'ڈگ مگ ڈگ مگ نیا ہوتی'، 'کرشن جنم'، 'ساون بھادوں'، 'پریم پجاری'، 'پریت کا راز' اور 'پریت بسالے' وغیرہ . لگ بھگ سب کویتائیں بہت ہی اچھے وچاروں کی اور ٹکسالی بھاشا میں ہیں .

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा हैदराबाद दक्खिन ने अपनी आठ छोटी छोटी किताबें "नया हिन्द" में रिव्यू के लिये भजी हैं. यह किताबे नागरी और उरदू दोनो लिखावटों में छपी हैं और दोनों में अलग अलग मिल सकती हैं. भारत की सरकारी ज़बान का फ़ैसला होने के बाद से हिन्दुस्तानी प्रचार सभा हैदराबाद ने हिन्दी मे तीन इम्तहान लेना शुरू कर दिया है. इन तीनों के नाम हैं—विद्याभ्यास (प्रायमरी), विद्याधर (मिडिल) और विद्यावर (मैट्रिक). यह किताबें इन इम्तहानों में बैठने वालों के लिये तैयार की गई हैं. किताबें यह हैं :—

अच्छी कहानियां

यह छोटे बच्चों के लिये छोटी छोटी सुन्दर कहानियों का संग्रह है. जैसे चीता और लोमड़ी, कोयले वाला और धोबी, मच्छर और बैल, दो बरतन, बिच्छू और लड़का, बैल गाड़ी और डेंगी मुसाफ़िर वग़ैरा.

टाइप मोटा और सुन्दर है. हर कहानी के साथ तस्वीरें हैं.

ہندستانی پرچار سبھا حیدرآباد دکھن نے اپنی آٹھ چھوٹی چھوٹی کتابیں "نیا ہند" میں ریویو کے لئے بھیجی ہیں . یہ کتابیں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں چھپی ہیں اور دونوں میں الگ الگ مل سکتی ہیں . بھارت کی سرکاری زبان کا فیصلہ ہونے کے بعد سے ہندستانی پرچار سبھا حیدرآباد نے ہندی میں تین امتحان لینا شروع کر دیا ہے. ان تینوں کے نام ہیں—ودیا بھیاس (پرائمری)' ودیا دھر (مڈل) اور ودیاور (میٹرک) یہ کتابیں ان امتحانوں میں بیٹھنے والوں کے لئے تیار کی گئی ہیں . کتابیں یہ ہیں :—

اچھی کہانیاں

یہ چھوٹے بچوں کے لئے چھوٹی چھوٹی سندر کہانیوں کا سنگرہ ہے . جیسے چیتا اور لومڑی' کوئلے والا اور دھوبی' مچھر اور بیل' دو برتن' بچھو اور لڑکا' بیل گاڑی اور ڈینگی مسافر وغیرہ .

ٹائپ موٹا اور سندر ہے . ہر کہانی کے ساتھ تصویریں ہیں .

खिड़कियां और दरवाजे खुले रक्खो, ताकि साफ और ताज़ा हवा कमरे में आ सके.

सोते वक़्त मन में अच्छी बातों को जगह दो. किसी तरह की घबराहट या फ़िक्र को पास न आने दो. और न ऐसी बातों पर सोचते रहो जिससे नींद उचाट हो जाय और मन घबराने लगे. अकसर बच्चे सोते समय जिन्न, भूतों का ख़याल करते या फिर ऐसी भयानक बातें सोचते रहते हैं जिसके कारन वह सोते में भयानक सपने देखते हैं और डर कर चौंक उठते हैं. जब सोने के लिये लेटो तो मन को पाक साफ़ रक्खो और इन विचारों को क़रीब न आने दो ताकि तुम्हारे शरीर और दिमाग़ दोनों को आनन्द मिल सके. सोने के कमरे में गड़बड़ भी न होनी चाहिये. नहीं तो तुम्हें ठीक से नींद भी न आयगी और जब तुम उठोगे तो तबियत सुस्त होगी और किसी काम के करने को मन न चाहेगा.

याद रक्खो, मन सुखी है तो धरती की हर चीज़ सुन्दर है. बड़े लोग कह गए हैं—

"तन्दुरुस्ती हज़ार नेमत है."

हमें इस पते पर अपने लेख "बच्चों की दुनिया" में छपने को भेजो—प्रेम भाई, एडीटर "बच्चों की दुनिया"

کھڑکیاں اور دروازے کھلے رکھو، تاکہ صاف اور تازہ ہوا کمرے میں آسکے ۔

سوتے وقت من میں اچھی باتوں کو جگہ دو ۔ کسی طرح کی گھبراہٹ یا فکر کو پاس نہ آنے دو ۔ اور نہ ایسی باتوں پر سوچتے رہو جس سے نیند اُچاٹ ہو جائے اور من گھبرانے لگے ۔ اکثر بچے سوتے سمے جن، بھوتوں کا خیال کرتے یا پھر ایسی بھیانک باتیں سوچتے رہتے ہیں جس کے کارن وہ سوتے میں بھیانک سپنے دیکھتے ہیں اور ڈر کر چونک اُٹھتے ہیں ۔ جب سونے کے لئے لیٹو تو من کو پاک صاف رکھو اور ان وچاروں کو قریب نہ آنے دو تاکہ تمہارے شریر اور دماغ دونوں کو آنند مل سکے ۔ سونے کے کمرے میں گڑبڑ بھی نہ ہونی چاہئے. نہیں تو تمہیں ٹھیک سے نیند بھی نہ آئیگی اور جب تم اُٹھوگے تو طبیعت سست ہوگی اور کسی کام کے کرنے کو من نہ چاہے گا ۔

یاد رکھو، من سکھی ہے تو دھرتی کی ہر چیز سندر ہے ۔ بڑے لوگ کہہ گئے ہیں—

"تندرستی ہزار نعمت ہے ۔"

ہمیں اِس پتے پر اپنے لیکھ "بچوں کی دنیا" میں چھپنے کو بھیجو — پریم بھائی، اڈیٹر "بچوں کی دنیا"

काहिल और निखट्टू कहते हैं. अच्छे बच्चे कभी ऐसे नहीं होते. वह अपना काम समय पर ठीक से करते हैं.

हमारे कहने का यह मतलब है कि थकने के बाद आराम करना ऐसा ही जरूरी है जैसे पढ़ने लिखने और घर के काम काज या मेहनत मजदूरी के बाद खेल कूद और घूमने फिरने के लिये चल पड़ना. तुम लोग रोज स्कूल जाते हो. पढ़ते लिखते और अच्छी अच्छी बातें सीख आते हो. जब घर आओ तो ज़रूर खेल कूद के लिये ग्राउन्ड या खुली जगह चल पड़ो. जहां तुम्हें साफ़ हवा मिल सके खूब उछलो कूदो.

एक बात और सुनो, जब तुम कोई काम करते करते ज्यादा थक जाओ तो काम करना छोड़ दो और चुप चाप शरीर को ढीला छोड़ कर सीधे लेट जाओ. इस तरह थकन दूर हो कर फुर्ती आजायगी और तुम फिर फुर्ती से काम करने लगोगे. इसलिये जब तुम्हें एक काम खतम करने के बाद दूसरा काम करना हो तो कुछ समय के लिये चुपचाप बैठ या लेट जाओ. इस तरह करने से काम में तुम्हारा जी भी लगेगा और काम ठीक से होगा.

आदमी के बदन को सबसे ज्यादा आराम नींद से मिलता है. बच्चों को बहुत आराम की जरूरत है पर सुबह देर से उठना बहुत बुरा है. अगर अपने शरीर को अच्छा रखना चाहो तो रात में जल्दी सो जाओ और सुबह को जल्दी उठा करो. क्योंकि सुबह को दिमाग़ खूब काम करता है. सवेरे ही उठ कर लिखने पढ़ने और अपने दूसरे कामों में लग जाओ. और हां, जब तुम सो रहो तो कमरे की

کاهل اور نکھٹو کہتے ھیں . اچھے بچے کبھی ایسے نہیں ہوتے وہ اپنا کام سمے پر ٹھیک سے کرتے ھیں .

ھمارے کہنے کا یہ مطلب ھے کہ تھکنے کے بعد آرام کرنا ایسا ہی ضروری ھے جیسے پڑھنے لکھنے اور گھر کے کام کاج یا محنت مزدوری کے بعد کھیل کود اور گھومنے پھرنے کے لئے چل پڑنا . تم لوگ روز اسکول جاتے ہو ، پڑھتے لکھتے اور اچھی اچھی باتیں سیکھ آتے ہو . جب گھر آؤ تو ضرور کھیل کود کے لئے گراؤنڈ یا کھلی جگہ چل پڑو . جہاں تمہیں صاف ھوا مل سکے خوب اچھلو کودو .

ایک بات اور سنو ، جب تم کوئی کام کرتے کرتے زیادہ تھک جاؤ تو کام کرنا چھوڑ دو اور چپ چاپ شریر کو ڈھیلا چھوڑ کر سیدھے لیٹ جاؤ . اس طرح تھکن دور ھو کر پھرتی آجائے گی اور تم پھر پھرتی سے کام کرنے لگو گے . اس لئے جب تمہیں ایک کام ختم کرنے کے بعد دوسرا کام کرنا ھو تو کچھ سمے کے لئے چپ چاپ بیٹھ یا لیٹ جاؤ . اِس طرح کرنے سے کام میں تمہارا جی بھی لگے گا اور کام ٹھیک سے ھوگا .

آدمی کے بدن کو سب سے زیادہ آرام نیند سے ملتا ھے . بچوں کو بہت آرام کی ضرورت ھے پر صبح دیر سے اُٹھنا بہت برا ھے . اگر اپنے شریر کو اچھا رکھنا چاھو تو رات میں جلدی سو جاؤ اور صبح کو جلدی اُٹھا کرو . کیونکہ صبح کو دماغ خوب کام کرتا ھے . سویرے ھی اُٹھ کر لکھنے پڑھنے اور اپنے دوسرے کاموں میں لگ جاؤ . اور ھاں ، جب تم سو رھو تو کمرے کی

वहाँ कोमल कली बढ़ते बढ़ते सुन्दर फूल बनकर बागीचे को सदा बहार बना देगी. आज हम तुमको कोमल कलियाँ कहते हैं, मगर कल सब तुम को सुन्दर फूल कहेंगे.

काम करने से जब मशीन गरम हो जाती है तब उसे रोक दिया जाता है. ताकि ठंडी हो जाय और मजदूर भी आराम ले लें. यही हालत हमारे शरीर की भी है. ज्यादा काम करते करते हम थक जाते हैं और इसलिये कुछ देर के लिये सुस्ताना ठीक रहता है. फिर हमारे काम में चुस्ती और तेज़ी आ जायगी और काम अच्छी तरह हो सकेगा.

तुमने देखा होगा कि तुम्हारे पिताजी या भैयाजी सुबह के दफ़्तर गए हुए जब शाम को घर आते है तो उनकी सूरत कुम्हला जाती है. जैसे सुन्दर फूल तेज धूप में कुम्हलाते हैं और फिर शाम की ठंडी हवा खाकर यही कुम्हलाए फूल खिलने और हँस पड़ते हैं उसी तरह दफ़्तर में काम करने वाले भी जब घर आते हैं तब झट मुँह हाथ और पैर धो लेते हैं. इस से फायदा यह होता है कि बाहर की गर्द गुबार और धूल जो चेहरे पर जमी रहती है, दूर हो जाती है और ऐसा करने से मन में फुरती भी आती है. फिर वह कुछ देर लेट जाते हैं या एक जगह आराम कुर्सी पर बैठ जाते हैं, क्योंकि उनके शरीर को आराम की जरूरत होती है. अगर वह आराम न लें तो मन बेचैन हो जाता है. और कभी कभी तो लोग आराम न लेने और दिन रात काम करने के कारन रोगी भी बन जाते हैं मगर यह भी सुन लो कि इसका मतलब यह नहीं है कि काम धंदा सब छोड़ दो और आराम ही करते रहो. ऐसा करने वाले को सुस्त

وہی کومل کلی بڑھتے بڑھتے سندر پھول بنکر باغیچے کو سدا بہار بنا دے گی۔ آج ہم تمکو کومل کلیاں کہتے ہیں، مگر کل سب تمکو سندر پھول کہیں گے۔

کام کرنے سے جب مشین گرم ہوجاتی ہے تب اسے روک دیا جاتا ہے تاکہ ٹھنڈی ہوجائے اور مزدور بھی آرام لے لیں۔ یہی حالت ہمارے شریر کی بھی ہے۔ زیادہ کام کرتے کرتے ہم تھک جاتے ہیں اور اس لئے کچھ دیر کے لئے سستانا ٹھیک رہتا ہے۔ پھر ہمارے کام میں چستی اور تیزی آجائے گی اور کام اچھی طرح ہوسکے گا۔

تم نے دیکھا ہوگا کہ تمہارے پتا جی یا بھیا جی صبح کے دفتر گئے ہوئے جب شام کو گھر آتے ہیں تو انکی صورت کمہلا جاتی ہے۔ جیسے سندر پھول تیز دھوپ میں کمہلاتے ہیں اور پھر شام کی ٹھنڈی ہوا کھا کر یہی کمہلائے پھول کھلتے اور ہنس پڑتے ہیں اسی طرح دفتر میں کام کرنے والے بھی جب گھر آتے ہیں تب جھٹ منہ ہاتھ اور پیر دھو لیتے ہیں۔ اس سے فائدہ یہ ہوتا ہے کہ باہر کی گرد غبار اور دھول جو چہرے پر جمی رہتی ہے دور ہوجاتی ہے اور ایسا کرنے سے من میں پھرتی بھی آتی ہے۔ پھر وہ کچھ دیر لیٹ جاتے ہیں یا ایک جگہ آرام کرسی پر بیٹھ جاتے ہیں کیونکہ ان کے شریر کو آرام کی ضرورت ہوتی ہے۔ اگر وہ آرام نہ لیں تو من بے چین ہوجاتا ہے اور کبھی کبھی تو لوگ آرام نہ لینے اور دن رات کام کرنے کے کارن روگی بھی بن جاتے ہیں۔ مگر یہ بھی سن لو کہ اس کا مطلب یہ نہیں ہے کہ کام دھندا سب چھوڑ دو اور آرام ہی کرتے رہو۔ ایسا کرنے والے کو سست،

आराम की ज़रूरत

(भाई मुसलिम ज़ियाई)

कल छापाखाने वाले साहब कहने लगे— साहब आज आपका परचा नहीं छप सकता ."

मैंने कहा—"क्यों भाई, आखिर क्या बात है ?"

छापे वाले ने कहा —"साहब ! मशीन काम करते करते घिस कर टूट गई है. कल तक ठीक कर दी जायगी. तब छापने का काम होगा."

देखा भाइयो तुमने, लोहे की मशीन भी रोज़ रोज़ काम करने से बीमार होजाती है और उसे भी आराम और दवा दारू की ज़रूरत होती है.

जिस तरह लोहे की मशीन को आराम की ज़रूरत होती है उसी तरह हम सब को भी आराम मिलना चाहिये. सब से ज़्यादा आराम तुम बच्चों को मिलना चाहिये. इसलिये कि तुम लोग ही भारत और दुनिया के बड़े बनने वाले हो. तुम आज कोमल कलियाँ हो. मगर कल जब तुम बड़े हो जाओगे तब सुन्दर फूल बनकर अपनी सुन्दरता और ख़ुशबू से भारत और धरती को मस्त बना दोगे.

अगर हम बग़ीचे से किसी कोमल कली को, जो अभी खिली न हो, नोच लें तो उसका जीवन नाश हो जायगा. और अगर उसकी रक्षा करते रहें, समय पर पानी और खाद पहुँचाते रहें तो

آرام کی ضرورت

(بھائی مسلم ضیائی)

کل چھاپہ خانے والے صاحب کہنے لگے—"صاحب آج آپ کا پرچہ نہیں چھپ سکتا ."

میں نے کہا—"کیوں بھائی، آخر کیا بات ہے ؟"

چھاپے والے نے کہا—"صاحب ! مشین کام کرتے کرتے گھس کر ٹوٹ گئی ہے . کل تک ٹھیک کر دی جائے گی . تب چھاپنے کا کام ہوگا ."

دیکھا بھائیو تم نے، لوہے کی مشین بھی روز روز کام کرنے سے بیمار ہوجاتی ہے اور اُسے بھی آرام اور دوا دارو کی ضرورت ہوتی ہے .

جسطرح لوہے کی مشین کو آرام کی ضرورت ہوتی ہے اُسی طرح ہم سبکو بھی آرام ملنا چاہئے . سب سے زیادہ آرام تم بچوں کو ملنا چاہئے، اِس لئے کہ تم لوگ ہی بھارت اور دنیا کے بڑے بننے والے ہو . تم آج کومل کلیاں ہو . مگر کل جب تم بڑے ہوجاؤ گے تو سندر پھول بن کر اپنی سندرتا اور خوشبو سے بھارت اور دھرتی کو مست بنا دو گے .

اگر ہم باغیچے سے کسی کومل کلی کو، جو ابھی کھلی نہ ہو، نوچ لیں تو اُس کا جیون ناش ہوجائے گا . اور اگر اُسکی رکشا کرتے رہیں، سمے پر پانی اور کھاد پہونچاتے رہیں تو

पर जो आदत पड़ जाय वह जल्दी नहीं छूटती. दूसरे दिन तारा वह सुन्दर और चमकीली अँगूठी पहन कर स्कूल गई. उसके साथ पढ़ने वाली लड़कियों ने जब अँगूठी देख कर पूछा कि यह अँगूठी कहाँ से मिली तो तारा साधू को दिया हुआ अपना वचन भूल गई और बड़े घमंड से कहने लगी—"यह अँगूठी मेरे पिता जी ने मेरे जन्म दिन पर मुझे दी है. उन्होंने दो सौ रुपए में यह अंगूठी ख़रीदी है."

पर तारा ने झूट बोला था इसलिये एक दम अँगूठी की चमक मांद पड़ गई और तारा की उंगली में कसने लगी. अँगूठी के दबने से तारा को तकलीफ़ होने लगी. उसके माथे पर बल देख कर लड़कियों ने पूछा—"क्या बात है ? तुम्हारा चेहरा उतर क्यों गया ?"

तारा ने फिर बात बनाई. बोली—"कुछ नहीं, सर में दर्द हो रहा है."

तारा फिर झूट बोली थी. अँगूठी ने उसकी उंगली को और ज़ोर से दबाना शुरू किया अब तो तारा दर्द से बेचैन होगई. उसने ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू किया. मास्टर साहब ने उसे उसके घर भेज दिया. तारा पिता को देखते ही लगी ज़ोर ज़ोर से रोने और कहने कि पिता जी, अब मैं कभी झूट न बोलूँगी.

तारा के पिता ने साधू को बुलवाया और उन्होंने अँगूठी तारा की उंगली से उतार ली. उस दिन के बाद से तारा ने फिर कभी झूट न बोला और झूट बोलने की आदत छूटने ही उसकी और सब बुरी आदतें भी छूट गईं.

پر جو عادت پڑ جائے وہ جلدی نہیں چھوٹتی . دوسرے دن تارا وہ سندر اور چمکیلی انگوٹھی پہن کر اسکول گئی . اُس کے ساتھ پڑھنے والی لڑکیوں نے جب انگوٹھی دیکھکر پوچھا کہ یہ انگوٹھی کہاں سے ملی تو تارا سادھو کو دیا ہوا اپنا وچن بھول گئی اور بڑے گھمنڈ سے کہنے لگی—"یہ انگوٹھی میرے پتا جی نے میرے جنم دن پر مجھے دی ہے . اُنھوں نے دو سو روپے میں یہ انگوٹھی خریدی ہے ."

پر تارا نے جھوٹ بولا تھا اس لئے ایک دم انگوٹھی کی چمک ماند پڑ گئی اور تارا کی اُنگلی میں کسنے لگی . انگوٹھی کے دبنے سے تارا کو تکلیف ہونے لگی . اُس کے ماتھے پر بل دیکھکر لڑکیوں نے پوچھا—"کیا بات ہے ؟ تمہارا چہرہ اُتر کیوں گیا ؟"

تارا نے پھر بات بنائی . بولی—"کچھ نہیں، سر میں درد ہو رہا ہے ."

تارا پھر جھوٹ بولی تھی . انگوٹھی نے اُسکی اُنگلی کو اور زور سے دبانا شروع کیا . اب تو تارا درد سے بیچین ہوگئی . اُس نے زور زور سے رونا شروع کیا . ماسٹر صاحب نے اُسے اُس کے گھر بھیج دیا . تارا پتا کو دیکھتے ہی لگی زور زور سے رونے اور کہنے کہ پتا جی اب میں کبھی جھوٹ نہ بولونگی .

تارا کے پتا نے سادھو کو بلوایا اور اُنھوں نے انگوٹھی تارا کی اُنگلی سے اُتار لی . اُس دن کے بعد سے تارا نے پھر کبھی جھوٹ نہ بولا . اور جھوٹ بولنے کی عادت چھوٹتے ہی اُسکی اور سب بری عادتیں بھی چھوٹ گئیں .

संजोग से उन्हीं दिनों गाँव मे एक साधू आया हुआ था जिसके बारे में यह बात मशहूर थी कि वह बच्चों कि बुरी आदतें सुधार सकता है. तारा के पिता ने जब यह सुना तो झट साधू को बुला कर उससे कहा कि महाराज. मेरी बेटी तारा मां के लाड प्यार से बिगड़ गई है. मैं चाहता हूँ कि आप उसकी झूट बोलने की आदत छुड़ा दें, क्योंकि मेरी समझ में झूट बोलना सब से बुरी बात है.

साधू ने कुछ सोच कर कहा—"अच्छा बाबा आप अपनी लड़की को बुलाइये."

तारा बुलाई गई. जब वह आगई तब साधू ने अपने कमण्डल से एक बहुत सुन्दर अँगूठी निकाल कर तारा से कहा—"बेटी, यह अँगूठी लोगी ?"

तारा ने देखा. अंगूठी बड़ी सुन्दर थी. खूब चमकीली और भड़कीली. उसमें जो नग लगा था वह ऐसा चमक रहा था जैसे हीरा हो. तारा ने कहा—"हाँ, लूंगी."

साधू ने कहा—"पर इसका लेने के लिये तुम्हें एक बात माननी पड़ेगी. बोलो, मानोगी ?"

तारा ने कहा—"मानूंगी."

साधू ने कहा—"तुमको झूट बोलना छोड़ देना पड़ेगा. अगर इसे पहन कर तुम झूट बोलोगी तो इस अँगूठी की सारी चमक माँद पड़ जायगी और यह तुम्हारी उंगली को दबाने लगेगी."

तारा ने अँगूठी पहन ली और साधू से कह दिया कि अब झूट न बोलूँगी.

سنجوگ سے اُنھیں دنوں گاؤں میں ایک سادھو آیا ھوا تھا جسکے بارے میں یہ بات مشہور تھی کہ وہ بچوں کی بری عادتیں سدھار سکتا ھے . تارا کے پتا نے جب یہ سنا تو جھٹ سادھو کو بلا کر اُس سے کہا کہ مہاراج' میری بیٹی تارا ماں کے لاڈ پیار سے بگڑ گئی ھے . میں چاھتا ھوں کہ آپ اُسکی جھوٹ بولنے کی عادت چھڑا دیں ' کیونکہ میری سمجھ میں جھوٹ بولنا سب سے بری بات ھے .

سادھو نے کچھ سوچ کر کہا—"اچھا بابا آپ اپنی لڑکی کو بلایئے ."

تارا بلائی گئی . جب وہ آگئی تب سادھو نے اپنے کمنڈل سے ایک بہت سندر انگوٹھی نکال کر تارا سے کہا—" بیٹی' یہ انگوٹھی لوگی ؟"

تارا نے دیکھا ' انگوٹھی بڑی سندر تھی خوب چمکیلی اور بھڑکیلی . اُس میں جو نگ لگا تھا وہ ایسا چمک رہا تھا جیسے ھیرا ھو . تارا نے کہا—"ھاں ' لوں گی ."

سادھو نے کہا—"پر اِسکو لینے کے لئے تمھیں ایک بات ماننی پڑیگی . بولو' مانو گی ؟"

تارا نے کہا—"مانوں گی ."

سادھو نے کہا—"تم کو جھوٹ بولنا چھوڑ دینا پڑے گا . اگر اِسے پہن کر تم جھوٹ بولو گی تو اِس انگوٹھی کی ساری چمک ماند پڑ جائے گی اور یہ تمھاری اُنگلی کو دبانے لگے گی ."

تارا نے انگوٹھی پہن لی اور سادھو سے کہدیا کہ اب جھوٹ نہ بولوں گی .

अपनी बड़ी बहन से...... !

(बच्चों का शायर)

जब भी "नया हिन्द" आता है तेरा मन क्यों ललचाता है
मैं पढ़ने को माँगू जब तो करती क्यों इनकार
बाजी, दे मेरा अखबार
मैं हूँ तेरा नन्हा भाई फिर क्यों तेरी मार बढ़ाई
भाई बहन में कब सजती है आपस की तकरार
बाजी, दे मेरा अखबार
पढ़ने दे मुझको यह कविता एक था राजा महल में रहता
बांके बांके और सलोने चार थे राजकुमार
बाजी, दे मेरा अखबार
लाऊँगा सुन्दर सी गुड़िया हाँ लाऊँगा रंग की पुड़िया
वादा करता हूँ मैं तुझसे जाऊँगा बाज़ार
बाजी, दे मेरा अखबार
मान भी जा अब बाजी प्यारी कब आएगी मेरी बारी
जल्दी जल्दी इसे पढ़ूँगा करता हूँ इक़रार
बाजी, दे मेरा अखबार

اپنی بڑی بہن سے ...... !

بچوں کا شاعر

جب بھی "نیا ہندوستان" آتا ہے تیرا من کیوں للچاتا ہے
میں پڑھنے کو مانگوں جب تو کرتی کیوں انکار
باجی دے میرا اخبار
میں ہوں تیرا ننھا بھائی پھر کیوں تیری مار بڑھائی
بھائی بہن میں کب سجتی ہے آپس کی تکرار
باجی دے میرا اخبار
پڑھنے دے مجھ کو یہ کویتا ایک تھا راجہ محل میں رہتا
بانکے بانکے اور سلونے چار تھے راج کمار
باجی دے میرا اخبار
لاؤں گا سندر سی گڑیا ہاں لاؤں گا رنگ کی پڑیا
وعدہ کرتا ہوں میں تجھ سے جاؤں گا بازار
باجی دے میرا اخبار
مان بھی جا اب باجی پیاری کب آئے گی میری باری
جلدی جلدی اسے پڑھوں گا کرتا ہوں اقرار
باجی دے میرا اخبار

'सर्वोदय' से

नागरी लिखावट और उरदू

आपका खत मिला. मेरी राय में अगर उरदू लिखने वाले आसान उरदू लिखा करें तो वह हिन्दी के लिये अच्छा नमूना बन सकती है. याने हिन्दी को वह ऐसा रूप दे सकती है जो आम-फहम होगा और जिसमें हिन्दी भाषा सच्चे मानों में राष्ट्रभाषा यानी कौमी जबान बनेगी. मैं मानता हूँ कि अगर उरदू लिखावट में महदूद न रहकर नागरी लिखावट में भी उरदू लिखी जाय तो वह हिन्दुस्तान की बहुत बड़ी सेवा करेगी. उसमें मुसलमानों की तहजीब पनपेगी. उरदू अदब की अच्छी अच्छी किताबें नागरी लिपि में शाया करनी चाहिये, ताकि उस खजाने की कदर बढ़े.

अगरचे मेरी आँख ज्यादा पढ़ना बरदाश्त नहीं करती, तो भी मैं कुछ न कुछ उरदू पढ़ा करता हूँ. यह जानकर 'कारवाँ' के पढ़ने वालों को खुशी होगी. अभी यह खत लिखने के पहले [illegible] जमीअत'' देख रहा था.

मैं उरदू अदब की बहुत तरक्की चाहता हूँ.

परंधाम, पवनार. —विनोबा

१-१२-५०

* 'कारवाँ' (इलाहाबाद) के एडीटर के नाम श्री विनोबा जी का खत

'سروودے' سے

ناگری لکھاوٹ اور اُردو

آپ کا خط ملا۔ میری رائے میں اگر اردو لکھنے والے آسان اردو لکھا کریں تو وہ ہندی کے لئے اچھا نمونہ بن سکتی ہے۔ یعنی ہندی کو وہ ایسا روپ دے سکتی ہے جو عام فہم ہوگا اور جس میں ہندی بھاشا سچے معنوں میں راشٹر بھاشا یعنی قومی زبان بنے گی۔ میں مانتا ہوں کہ اگر اردو [illegible] میں محدود نہ رہ کر ناگری لکھاوٹ میں بھی اردو لکھی جائے تو وہ ہندوستان کی بہت بڑی سیوا کریگی۔ اس سے مسلمانوں کی تہذیب پنپے گی۔ اردو ادب کی اچھی اچھی کتابیں ناگری لپی میں شائع کی جانی چاہئیں تاکہ اس خزانے کی قدر بڑھے۔

اگرچہ میری آنکھ زیادہ پڑھنا برداشت نہیں کرتی تو بھی میں کچھ نہ کچھ اردو پڑھا کرتا ہوں۔ یہ جان کر 'کارواں' کے پڑھنے والوں کو خوشی ہوگی۔ ابھی یہ خط لکھنے [illegible] دیکھ رہا تھا۔

میں اردو ادب کی بہت ترقی چاہتا ہوں۔

پرندھام، پونار —ونوبا

۱-۱۲-۵۰

* 'کارواں' (الہ آباد) کے اڈیٹر کے نام شری ونوبا جی کا خط

तो उसका अच्छा असर पड़ता है वैसे ही साफ़ और सुथरे अक्षरों से ज़रूरी काम के लिये लिखी हुई अरज़ी का असर फ़ौरन होता है.

अरज़ी में और मुलाक़ात में बहुत नम्रता के शब्द और प्रार्थनाओं की कभी कभी बहुतायत होती है. यह आत्म सम्मान [illegible] की कमी दिखाते हैं. यह ठीक नहीं. सभ्यता और विनय अच्छे गुन हैं पर बहुत झुक झुक कर सलाम करना 'जी नामदार, आप साहब श्रीमान जी' वग़ैरा कहना पुरानी दरबारी और खुशामदी तहज़ीब के चिन्ह हैं. दूसरी तरफ़ से साथ में यह भी ध्यान में रखने की बात है कि जैसे आजकल के कुछ रचनात्मक कार्यकर्ता भी सरकारी अधिकारियों के साथ असभ्य और अविनयी बरताव दिखाते हैं अच्छी तालीम की कमी दिखाते हैं [illegible] अच्छी तालीम का अभाव दिखाना एक बुरा गुन है.

"अगर मक़सद जंग ही हो, हम उसी की बात और उसी का विचार करते हों और 'शान्ति' शब्द का इस्तेमाल भी उसी के लिये करते हों, तो शान्ति हमें कैसे मिल सकती है? शान्ति के लिये जलसे होते हैं. पर वहाँ गरमा गरम बहस होती है और नोक झोंक होती है. मेरी समझ में नहीं आता कि इस रास्ते पर चलकर हम शान्ति कैसे पा सकते हैं."

—जवाहर लाल नेहरू

تو اس کا اچھا اثر پڑتا ہے ویسے ہی صاف اور ستھرے اکشروں سے ضروری کام کے لئے لکھی ہوئی عرضی کا اثر فورا ہوتا ہے.

عرضی میں اور ملاقات میں بہت نمرتا کے شبد اور پرارتھناؤں کی کبھی کبھی بہتایت ہوتی ہے. یہ آتم سمان [illegible] کی کمی دکھاتے ہیں. [illegible] بہت جھک جھک کر سلام [illegible] جی [illegible] آپ [illegible] شریمان جی' وغیرہ کہنا پرانی درباری و خوشامدی تہذیب کے چنہ ہیں. دوسری طرف سے ساتھ میں [illegible] ہے کہ جیسے آج کل کے کچھ [illegible] سرکاری ادھیکاریوں کے ساتھ اسبھیہ اور [illegible] کی کمی [illegible] دکھانا ایک برا گن ہے

"اگر مقصد جنگ [illegible] وچار کرتے ہوں اور شانتی' [illegible] کرتے ہوں تو شانتی ہمیں کیسے مل سکتی ہے؟ شانتی کے [illegible] جلسے ہوتے ہیں' پر وہاں [illegible] ہوتی ہے اور [illegible] جھونک ہوتی ہے میری سمجھ میں نہیں آتا کہ اس راستے پر چلکر ہم شانتی کیسے پا سکتے ہیں."

—جواہر لال نہرو

जाता: बल्कि कभी कभी तो पढ़े बग़ैर उसको रद्दी की टोकरी में डाल दिया जाता है. इसलिये सरकार की तरफ़ से लोगों को विश्वास मिलना चाहिये कि देसी भाषा में लिखी अरज़ी पूरे ध्यान से पढ़ी जायगी. सरकारी अधिकारियों को भी यह हुकुम देना चाहिये कि देसी भाषा में लिखी अरज़ी की वह उतनी ही इज़्ज़त करें जितनी कि अंगरेज़ी में लिखी अरज़ी की करते हैं.

देसी भाषा में अरज़ी लिखने वालों को भी कुछ आवश्यक बातें जान लेनी ज़रूरी हैं. कभी कभी वह बहुत बारीक अक्षरों में लिखी होती है. एक तरफ़ भी मारजिन (हाशिया) नहीं रक्खा जाता. लाइनें बहुत ही पास लिखी होती हैं. आधे फुलस्केप काग़ज़ में कभी कभी २० से ५० तक लाइनें लिखी होती हैं. ऐसी अरज़ी पढ़ने में बड़ी दिक़्क़त होती है. सरकारी और सार्वजनिक कचहरी में जिस कारकुन को अरज़ी पढ़नी पड़ती है वह उसे पढ़ नहीं सकता. क्योंकि उसको तो ऐसी सैकड़ों अरज़ियों का रोज़ निबटारा करना पड़ता है. इस लिये अरज़ी देने वालों को चाहिये कि वह अपने निजी फ़ायदे के लिये हो सके तो टाइप करके या सियाही से साफ़, सुन्दर और बड़े अक्षरों में छपे हर्फ़ों से मिलते अक्षरों में अरज़ी लिखें. इन्हें इस बारे में बड़े बड़े अधिकारियों की नक़ल न करनी चाहिये यानी उनकी तरह पढ़ने में मुश्किल बन जाने वाले अक्षर न लिखने चाहिये. या यह न कहना चाहिये कि अधिकारी ख़ुद अच्छी लिखावट का नमूना पेश करें और फिर जनता से इसकी आशा करें. जिस तरह एक अर्ज़दार अगर साफ़ और सुघड़ कपड़े पहनकर जाता है

جاتا: بلکہ کبھی کبھی تو پڑھے بغیر اس کو ردی کی ٹوکری میں ڈالدیا جاتا ھے . اس لئے سرکار کی طرف سے لوگوں کو وشواس ملنا چاہئے کہ دیسی بھاشا میں لکھی عرضی پورے دھیان سے پڑھی جائے گی . سرکاری ادھکاریوں کو بھی یہ حکم دینا چاہئے کہ دیسی بھاشا میں لکھی عرضی کی وہ [illegible] عزت کریں جتنی انگریزی میں لکھی عرضی کی کرتے ہیں

دیسی بھاشا میں عرضی لکھنے والوں کو بھی کچھ [illegible] باتیں جان لینی ضروری ھیں . کبھی کبھی وہ بہت باریک [illegible] میں لکھی ھوتی ھے . ایک طرف بھی مارجن , حاشیہ [illegible] جاتا . لائنیں بہت ھی پاس لکھی ھوتی ھیں . آدھے فلسکیپ کاغذ میں کبھی کبھی ۲۰ سے ۵۰ تک لائنیں لکھی ھوتی ھیں . ایسی عرضی پڑھنے میں بڑی دقت ھوتی ھے [illegible] کچہری میں جس کارکن کو عرضی پڑھنی پڑتی ھے وہ [illegible] سکتا . کیونکہ اس کو تو ایسی سیکڑوں عرضیوں [illegible] پڑتا ھے . اس لئے عرضی دینے والوں کو چاہئے کہ وہ [illegible] کے لئے ھو سکے تو ٹائپ کر کے یا سیاھی سے صاف [illegible] میں چھپے حرفوں سے ملتے [illegible] میں عرضی [illegible] میں اس بارے میں بڑے بڑے ادھکاریوں کی نقل نہ کرنی چاہئے یعنی ان کی طرح پڑھنے میں مشکل بن جانے والے [illegible] نہ لکھنے چاہئیں یا یہ نہ کہنا چاہئے کہ ادھکاری خود اچھی لکھاوٹ کا نمونہ پیش کریں اور پھر جنتا سے اس کی آشا کریں . جس طرح ایک عرضدار اگر صاف اور سگھڑ کپڑے پہن کر جاتا ھے

'हरिजन सेवक' से

भाशा की कठिनाई

(भाई किशोरलाल मशरूवाला)

एक सज्जन ने अपनी सरकार को अंगरेज़ी में दी हुई अरज़ी की एक नक़ल मुझे भेजी है. वह अरज़ी पढ़ी. उसमें उनकी भाशा, वाक्य, व्याकरन, शैली वग़ैरा की बहुत भूलें देखीं. लोगों को क्यों अंगरेज़ी भाशा में ऐसी अरज़ियाँ लिखनी चाहियें, यह एक विचार करने की बात है. लोग जो बात कहने की इच्छा रखते हैं, वह अंगरेज़ी में न ठीक ठीक लिख सकते हैं न समझा सकते है. मुझे अपना तजरबा है कि सही व्याकरन के साथ अंगरेज़ी में लिखना कितना मुश्किल है. अंगरेज़ी व्याकरन जानने वाले एक भाई 'हरिजन' में जो भूलें होती हैं, उन की एक सूची बार बार भेजते रहते है. एक बार तो एक ही नम्बर में उन्होंने क़रीब ४० भूलों की फ़ेहरिस्त भेजी थी. इससे मैं ऐसी भूलों के लिये अरज़ी देने वालों को दोश नहीं देता.

हो सकता है सरकार ऐसा जवाब दे कि क़रीब क़रीब सभी सरकारों ने प्रान्ती भाशा में अरज़ी देने की छूट दे दी है. पर लोग उसका फ़ायदा न उठावें तो इसमें उनका ही क़सूर है. यह बात कुछ हद तक सच भी है लेकिन लोग अंगरेज़ी में अरज़ी देते हैं इसका एक कारन यह भी है कि उनका ऐसा तजरबा होता है कि देसी भाशा में बहुत महत्व के विशय पर अरज़ी दी जाय तब भी उस पर ध्यान नहीं दिया

'ھریجن سیوک' سے

بھاشا کی کٹھنائی

(بھائی کشور لال مشرو والا)

ایک سجن نے اپنی سرکار کو انگریزی میں دی ہوئی عرضی کی ایک نقل مجھے بھیجی ھے ۔ وہ عرضی پڑھی ۔ اُس میں اُنکی بھاشا واکیہ' ویاکرن' شیلی وغیرہ کی بہت بھولیں دیکھیں ۔ لوگوں کو کیوں انگریزی بھاشا میں ایسی عرضیاں لکھنی چاھئیں' یہ ایک وچار کرنے کی بات ھے ۔ لوگ جو بات کہنے کی اِچھا رکھتے ھیں' وہ انگریزی میں نہ ٹھیک ٹھیک لکھ سکتے ہیں نہ سمجھا سکتے ھیں ۔ مجھے اپنا تجربہ ھے کہ سہی ویاکرن کے ساتھ انگریزی میں لکھنا کتنا مشکل ھے ۔ انگریزی ویاکرن جاننے والے ایک بھائی 'ھریجن' میں جو بھولیں ھوتی ھیں' ان کی ایک سوچی بار بار بھیجتے رھتے ھیں ایک بار تو ایک ھی نمبر میں اُنھوں نے قریب ۴۰ بھولوں کی فہرست بھیجی تھی ۔ اِس سے میں ایسی بھولوں لئے عرضی دینے والوں کو دوش نہیں دیتا ۔

ھو سکتا ھے سرکار ایسا جواب دے کہ قریب قریب سبھی سرکاروں نے پرانتی بھاشا میں عرضی دینے کی چھوٹ دیدی ھے' پر لوگ اِس کا فائدہ نہ اُٹھاویں تو اُس میں اُن کا ھی قصور ھے ۔ یہ بات کچھ حد تک سچ بھی ھے ۔ لیکن لوگ انگریزی میں عرضی دیتے ھیں اس کا ایک کارن یہ بھی ھے کہ اُن کا ایسا تجربہ ھوتا ھے کہ دیسی بھاشا میں بہت مہتو کے وشے پر عرضی دی جائے تب بھی اُس پر دھیان نہیں دیا

महासागर के टापुओं पर क़ब्ज़ा करना चाहता था तो क्या बेजा था ?

अमरीकी नीत लड़ाई की नीत है. अमरीकी नेता साफ़ कह चुके हैं कि वह लड़ाई चाहते हैं. कोई लड़ाई रोकने के लिये लड़ाई करना चाहता है, कोई सीमित लडाई के बहाने लड़ाई जारी रखना चाहता है. और जो शान्ति की बातें करते हैं वह भी लड़ाई की तैयारियां करते हैं. अमरीकी राह लड़ाई की राह है. इसकी एक वजह है. जनरल मैकआरथर ने पिछले दिनों अपने बयान में कहा था कि एशियाई जातियां शक्ति की पूजा करती हैं. कहने का मतलब यह कि एशिया को डंडे के ज़ोर से क़ाबू में रक्खा जा सकता है. चीन अमरीकी भाशा को समझने से इनकार करता है. वह साम्राजवाद के ख़िलाफ़ विद्रोह करता है. उसकी आवाज़ एशिया की दबाई हुई जातियों, लेकिन उबलते हुए आत्मसम्मान की आवाज़ है. साफ़ बात है कि यह खरी खरी बातें साम्राजवादी अमरीका को पसन्द नहीं. इसीलिये चीन अमरीका का सबसे बड़ा दुशमन है.

भारत का सौभाग्य है कि नेहरू के अगुवाई में देस ने शान्ति की तरफ़ क़दम उठाया है. हमारी जनता आज़ादी पसन्द और साम्राजवाद की दुशमन रही है हमको ग़ुलामी का तजरबा है. इसलिये हम ग़ुलाम जनता के तरफ़दार हैं. चीन के जागरन में हमारी पूरी हमदर्दी है, उसके साम्राज विरोध के हम पूरे साथी हैं. लेकिन यह काफ़ी नहीं. देस को संगठित होकर एक आवाज़ से साम्राजवादियों से मांग करनी चाहिये, "साम्राजवादियो, एशिया छोड़ दो, अफ़रीक़ा से निकल जाओ."

مہا ساگر کے ٹاپوؤں پر قبضہ کرنا چاہتا تھا تو کیا بیجا تھا ؟

امریکی نیت، لڑائی کی نیت ہے ۔ امریکی نیتا صاف کہہ چکے ہیں کہ وہ لڑائی چاہتے ہیں ۔ کوئی لڑائی روکنے کے لئے لڑائی کرنا چاہتا ہے، کوئی سیمت لڑائی کے بہانے لڑائی جاری رکھنا چاہتا ہے ۔ اور جو شانتی کی باتیں کرتے ہیں وہ بھی لڑائی کی تیاریاں کرتے ہیں امریکی راہ لڑائی کی راہ ہے اسکی ایک وجہ ہے ۔ جنرل میک آرتھر نے پچھلے دنوں اپنے بیان میں کہا تھا کہ ایشیائی جاتیاں شکتی کی پوجا کرتی ہیں ۔ کہنے کا مطلب یہ کہ ایشیا کو ڈنڈے کے زور سے قابو میں رکھا جاسکتا ہے ۔ چین امریکی بھاشا کو سمجھنے سے انکار کرتا ہے ۔ وہ سامراج واد کے خلاف ودروہ کرتا ہے اُس کی آواز ایشیا کی دبائی ہوئی جاتیوں، لیکن اُبلتے ہوئے آتم سمان کی آواز ہے ۔ صاف بات ہے کہ یہ کھری کھری باتیں سامراج وادی امریکہ کو پسند نہیں ۔ اسی لئے چین امریکہ کا سب سے بڑا دشمن ہے ۔

بھارت کا سوبھاگ ہے کہ نہرو کی اگوائی میں دیس نے شانتی کی طرف قدم اُٹھایا ہے ۔ ہماری جنتا آزادی پسند اور سامراج واد کی دشمن رہی ہے ۔ ہم کو غلامی کا تجربہ ہے اِس لئے ہم غلام جنتا کے طرفدار ہیں ۔ چین کے جاگرن سے ہماری پوری ہمدردی ہے، اسکے سامراج ورودھ کے ہم پورے ساتھی ہیں ۔ لیکن یہ کافی نہیں ۔ دیس کو سنگٹھت ہوکر ایک آواز سے سامراج وادیوں سے مانگ کرنی چاہئے: "سامراج وادیو، ایشیا چھوڑ دو، افریقہ سے نکل جاؤ ۔"

नहीं जानता कि चीन पूरी तरह आज़ाद है और इतना ताक़तवर है जितना कि वह पिछले सौ साल में न था. हाँ, इस फ़ौज को अमरीका काम में लाना चाहता है. चीन को फिर से गुलाम बनाने के लिये, एशिया पर अपना क़ाबू करने के लिये.

अमरीकी राजनेता और फ़ौजी अफ़सर दो बात साफ़ तौर से कह रहे हैं. एक तो यह कि वह एशिया को आज़ाद नहीं छोड़ना चाहते. इसके लिये दस बहाने बनाते हैं. लेकिन साराश यह है कि वह कोरिया, जापान, फ़ारमूसा, फ़िलिपाइन, हिन्दचीन, स्याम वग़ैरा में अपने फ़ौजी, जहाज़ी और हवाई अड्डे रखना चाहते हैं यह बात वह बार बार दुहराते हैं. उनका पहला बहाना यह है कि वह कम्युनिज़्म से लड़ना चाहते हैं. उसके फैलाव को रोकना चाहते हैं. लेकिन अगर कम्युनिज़्म के फैलाव को ही रोकना है तो उसके लिये हथियार चलाने या लड़ाई छेड़ने और हवाई और समन्दरी अड्डे लेने की क्या ज़रूरत है? जिस तरह कम्युनिस्ट अपना प्रचार करते हैं, उसी तरह पूँजी वादी और साम्राज वादी भी अपना प्रचार कर सकते हैं.

दूसरी वजह वह यह देते हैं कि अमरीका की हिफ़ाज़त के लिये प्रशान्त महासागर और उसके पच्छिमी किनारे पर क़ाबू रखना ज़रूरी है. मतलब यह कि जापान, कोरिया, फ़ारमूसा, फ़िलिपाइन वग़ैरा पर क़ाबू रक्खे बिना अमरीका अपनी हिफ़ाज़त नहीं कर सकता. यह अनोखी दलील है. अपनी हिफ़ाज़त के लिये अमरीका को सात हज़ार मील दूर के देसों को क़ाबू में रखने की ज़रूरत पड़ती है! फिर चीन को भी अपनी हिफ़ाज़त के लिये अमरीका के हवाई टापुओं पर क़ब्ज़ा करना चाहिये. और अगर जापान, एशिया और प्रशान्त

نہیں جانتا کہ چین پوری طرح آزاد ہے اور اتنا طاقتور ہے جتنا کہ وہ پچھلے سو سال میں نہ تھا. ہاں اس فوج کو امریکہ کام میں لانا چاہتا ہے' چین کو پھر سے غلام بنانے کے لئے' ایشیا پر اپنا قابو کرنے کے لئے .

امریکی راج نیتا اور فوجی افسر دو بات صاف طور سے کہہ رہے ہیں . ایک تو یہ کہ وہ ایشیا کو آزاد نہیں چھوڑنا چاہتے اس کے لئے دس بہانے بناتے ہیں . لیکن سارانش یہ ہے کہ وہ کوریا' جاپان' فارموسا' فلپائن' ہند چین' سیام وغیرہ میں اپنے فوجی' جہازی اور ہوائی اڈے رکھنا چاہتے ہیں . یہ بات وہ بار بار دہراتے ہیں. ان کا پہلا بہانہ یہ ہے کہ وہ کمیونزم سے لڑنا چاہتے ہیں اس کے پھیلاؤ کو روکنا چاہتے ہیں . لیکن اگر کمیونزم کے پھیلاؤ کو ہی روکنا ہے تو اس کے لئے ہتھیار چلانے یا لڑائی چھیڑنے اور ہوائی اور سمندری اڈے لینے کی کیا ضرورت ہے ؟ جس طرح کمیونسٹ اپنا پرچار کرتے ہیں اسی طرح پونجی وادی اور سامراج وادی بھی اپنا پرچار کر سکتے ہیں

دوسری وجہ وہ یہ دیتے ہیں کہ امریکہ کی حفاظت کے لئے پرشانت مہا ساگر اور اس کے پچھمی کنارے پر قابو رکھنا ضروری ہے مطلب یہ کہ جاپان' کوریا' فارموسا' فلپائن وغیرہ پر قابو رکھے بنا امریکہ اپنی حفاظت نہیں کر سکتا. یہ انوکھی دلیل ہے. اپنی حفاظت کے لئے امریکہ کو سات ہزار میل دور کے دیسوں کو قابو میں رکھنے کی ضرورت ہوتی ہے ! پھر چین کو بھی اپنی حفاظت کے لئے امریکہ کے ہوائی ٹاپوؤں پر قبضہ کرنا چاہئے . اور اگر جاپان' ایشیا اور پرشانت

तैयारियों में अमरीका ने लगभग ३,००० करोड़ रुपया खर्च किया. यह रक़म हिन्दुस्तानी सरकार के दस साल के बजट के बराबर है. बहुत सा लड़ाई का सामान यों ही औने पौने में दे दिया गया. बहुत सा सामान जापान से दिलवा दिया गया. चांग की सरकार जनता से कितनी उखड़ी हुई थी और यह लड़ाई का सामान किस तरह कम्युनिस्टों के हाथ लगा, यह सब जानते हैं.

लेकिन इसी बीच सन १९४७ में अमरीका ने चीन के साथ एक ब्योपारी समझौता किया जिसके अनुसार चीन और अमरीका ने आपसी ब्योपारी रोकों को हटा दिया. इसका क्या नतीजा हुआ? अगर हिन्दुस्तान ऐसी रोकों को हटा दे तो देस का एक भी उद्योग धन्दा बाकी नहीं रह जायगा. बाज़ार विदेसी माल से पट जायंगे. यही चीन में हुआ. देस के उद्योग धन्दे ठप हो गए और बाज़ारों और आर्थिक जीवन पर अमरीका का काबू हो गया. अमरीका ने देस के हवाई, फ़ौजी और समन्दरी अड्डों पर भी काबू कर लिया. चीन का देस अमरीकी उपनिवेश बन गया.

चांग की चीनी पुलिस और फ़ौज का नियंत्रन अमरीकी हाथों में रहा है. राजकाजी बन्दियों की बेड़ियां अमरीका की बनी हुई थीं. अमरीका के पन्द्रह हज़ार सिपाही चांग की फ़ौजों को तालीम देते रहे हैं. जब चीन की जनता और वहां के राष्ट्री अन्दोलन ने चांग की सेनाओं को देस से निकाल बाहर किया तो इस समय वह अमरीकी मदद से तैवान (फ़ारमूसा) में राज कर रहा है. अमरीका ने चांग की पांच लाख सिपाहियों की फ़ौज तैयार की है. यह फ़ौज किस लिये है? क्या चीन को आज़ाद करने के लिये है? यह कौन

تیاریوں میں امریکہ نے لگ بھگ ۳۰۰۰ کروڑ روپیہ خرچ کیا ۔ یہ رقم ہندستانی سرکار کے دس سال کے بجٹ کے برابر ہے ۔ بہت سا لڑائی کا سامان یوں ہی اونے پونے میں دے دیا گیا ۔ بہت سا سامان جاپان سے دلوا دیا گیا ۔ چانگ کی سرکار جنتا سے کتنی اکھڑی ہوئی تھی اور یہ لڑائی کا سامان کس طرح کمیونسٹوں کے ہاتھ لگا، یہ سب جانتے ہیں ۔

لیکن اسی بیچ سن ۱۹۴۷ میں امریکہ نے چین کے ساتھ ایک بیوپاری سمجھوتہ کیا جس کے انوسار چین اور امریکہ نے آپسی بیوپاری روکوں کو ہٹا دیا ۔ اس کا کیا نتیجہ ہوا ؟ اگر ہندستان ایسی روکوں کو ہٹا دے تو دیس کا ایک بھی ادیوگ دھندا باقی نہیں رہ جائے گا ۔ بازار بدیسی مال سے پٹ جائیں گے ۔ یہی چین میں ہوا ۔ دیس کے ادیوگ دھندے ٹھپ ہو گئے اور بازاروں اور آرتھک جیون پر امریکہ کا قابو ہو گیا ۔ امریکہ نے دیس کے ہوائی، فوجی اور سمندری اڈوں پر بھی قابو کر لیا ۔ چین کا دیس امریکی اُپنویش بن گیا ۔

چانگ کی چینی پولیس اور فوج کا نیانترن امریکی ہاتھوں میں رہا ہے ۔ راج کاجی بندیوں کی بیڑیاں امریکہ کی بنی ہوئی تھیں ۔ امریکہ کے پندرہ ہزار سپاہی چانگ کی فوجوں کو تعلیم دیتے رہے ہیں ۔ جب چین کی جنتا اور وہاں کے راشٹری آندولن نے چانگ کی سیناؤں کو دیس سے نکال باہر کیا تو اس سمے وہ امریکی مدد سے تیوان (فارموسا) میں راج کر رہا ہے ۔ امریکہ نے چانگ کی پانچ لاکھ سپاہیوں کی فوج تیار کی ہے ۔ یہ فوج کس لئے ہے ؟ کیا چین کو آزاد کرنے کے لئے ہے ؟ یہ کون

और उसके बाद उधार सामान दिया. इधर चीन को कमज़ोर समझकर कोई मदद नहीं दी गई. अमरीकी जनता ज़रूर कुछ चंदा इकट्ठा करती रही.

दुनिया की दूसरी लड़ाई के बीच अमरीका ने ब्रिटेन से मोल भाव करना शुरू किया. बिना साम्राजी और बाज़ारू समझौते के उसने ब्रिटेन को मदद देने से इनकार किया. जब फ्रान्स की हार के बाद सन १९४० में ब्रिटेन बुरी तरह से दब गया तब उसने पूर्वी एशिया को अमरीका के सुपुर्द कर दिया. जनरल स्टिलवेल चीन में पहुंच गया. जनरल मैकार्थर ने प्रशान्त महासागर पर क़ाबू पाने के लिये आस्ट्रेलिया में डेरा डाल दिया. इस तरह दुनिया की दूसरी लड़ाई में अमरीका ने प्रशान्त महासागर पर क़ाबू पा लिया और जापान और चीन पर हावी होगया.

लड़ाई के बीच और उसके बाद अमरीका चीन की अन्दरूनी नीत में दख़ल देता रहा. वह चांगकाई शेक की तानाशाही को मज़बूत करता रहा और आज़ादी के सच्चे लड़ाकुओं और प्रजातन्त्र की ताक़तों को कुचलता रहा. और लड़ाई के ख़त्म होने पर तो उसने खुले आम चांग के दल को सहायता देकर घरेलू लड़ाई की आग को भड़काया. अमरीकी जहाज़ों और बेड़े के सिपाहियों ने चांग की सेनाओं को गुरीला स्थानों में भेजा. जापानी फ़ौजों को हुक्म दिया गया कि वह छापेमारों के सामने हथियार न डालें.

इसके बाद चांग और कम्युनिस्टों के बीच समझौते का ढोंग रचा गया. सरपंच था अमरीका. एक तरफ़ बात चल रही थी और दूसरी तरफ़ चांग की सेनाओं को तैयार किया जा रहा था. इन

اور اُسکے بعد اُدھار سامان دیا ۔ اِدھر چین کو کمزور سمجھکر کوئی مدد نہیں دی گئی ۔ امریکی جنتا ضرور کچھ چندا اکٹھا کرتی رہی ۔

دنیا کی دوسری لڑائی کے بیچ امریکہ نے برٹین سے مول بھاؤ کرنا شروع کیا ۔ بنا سامراجی اور بازارو سمجھوتے کے اُس نے برٹین کو مدد دینے سے انکار کیا ۔ جب فرانس کی ہار کے بعد سن ۱۹۴۰ میں برٹین بری طرح سے دب گیا تب اُس نے پوربی ایشیا کو امریکہ کے سپرد کر دیا ۔ جنرل اسٹل ویل چین میں پہونچ گیا ۔ جنرل میک آرتھر نے پرشانت مہا ساگر پر قابو پانے کے لئے آسٹریلیا میں ڈیرا ڈال دیا ۔ اِس طرح دنیا کی دوسری لڑائی میں امریکہ نے پرشانت مہاساگر پر قابو پالیا اور جاپان اور چین پر حاوی ہو گیا

لڑائی کے بیچ اور اُس کے بعد امریکہ چین کی اندرونی نیت میں دخل دیتا رہا ۔ وہ چانگ کائی شیک کی تاناشاہی کو مضبوط کرتا رہا اور آزادی کے سچے لڑاکوں اور پرجاتنتر کی طاقتوں کو کچلتا رہا ۔ اور لڑائی کے ختم ہونے پر تو اُس نے کھلے عام چانگ کے دل کو سہایتا دے کر گھریلو لڑائی کی آگ کو بھڑکایا ۔ امریکی جہازوں اور بیڑے کے سپاہیوں نے چانگ کی کی سینکاؤں کو گوریلا استھانوں میں بھیجا ۔ جاپانی فوجوں کو حکم دیا گیا کہ وہ چھاپے ماروں کے سامنے ہتھیار نہ ڈالیں ۔

اِس کے بعد چانگ اور کمیونسٹوں کے بیچ سمجھوتے کا ڈھونگ رچا گیا ۔ سرپنچ تھا امریکہ ۔ ایک طرف بات چل رہی تھی اور دوسری طرف چانگ کی سیناؤں کو تیار کیا جا رہا تھا ۔ اِن

सन १९२२ में वाशिंगटन कानफरेन्स हुई. कानफरेन्स का वाशिंगटन में होना ही इस बात का सबूत था कि पैसिफिक में अमरीका हावी होगया है. अमरीका के पास एक मौका था कि वह चीन की मदद करता. चीन के प्रतिनिधि इसी तरह की उम्मीद लेकर अमरीका गए थे लेकिन चीन की उम्मीदों पर पानी फिर गया. उसको बराबरी का दर्जा नहीं दिया गया. राष्ट्री अन्दोलन को भी वहां से कोई मदद नहीं मिली. चीनी राष्ट्री अन्दोलन के नेता डाक्टर सनयात सेन समझ गए कि पच्छिमी प्रजातन्त्र कौम ढोंग है, वह पिछड़े देसों की आजादी नहीं चाहता. इसलिये उन्होंने सोवियत रूस से मदद की मांग की और वह मिली.

पच्छिमी देसों और जापान ने चीनी राष्ट्री आन्दोलन का विरोध किया. सन १९१७ के बाद राष्ट्री अन्दोलन में फूट डालना और घरेलू लड़ाई में चांग काई शेक का साथ देना—यह पच्छिमी देसों की नीत थी. अगर वह घरेलू लड़ाई में कोमिन्तांग की मदद न करते तो शायद घरेलू लड़ाई न होती. या इतनी भयानक शकल न लेती.

सन १९३१ के बाद जापान ने चीन पर हमला बोल दिया. यह लड़ाई बीच में कुछ वक़्त के लिये रुकी. लेकिन बाद में सन १९३७ तक चलती रही. कहने को अमरीका ने जापानी नीत का विरोध किया लेकिन सिर्फ़ बातों से. अगर अमरीका जापान से अपना व्योपार भी बन्द कर देता तो जापान की हिम्मत न थी कि वह चीन के खिलाफ़ लड़ाई चला सकता. जापान मिट्टी का तेल, लोहा, गोला बारूद, कपास वग़ैरा अमरीका से मगाता था. जब जापान के पास देने को सोना नहीं रह गया तो अमरीका ने चांदी लेना शुरू किया

سن ۱۹۲۲ میں واشنگٹن کانفرنس ہوئی. کانفرنس کا واشنگٹن میں ہونا ہی اِس بات کا ثبوت تھا کہ پیسفک میں امریکہ حاوی ہوگیا ہے. امریکہ کے پاس ایک موقعہ تھا کہ وہ چین کی مدد کرتا. چین کے پرتی ندھی اِسی طرح کی اُمید لے کر امریکہ گئے تھے. لیکن چین کی اُمیدوں پر پانی پھر گیا. اُسکو برابری کا درجہ نہیں دیا گیا. راشٹری آندولن کو بھی وہاں سے کوئی مدد نہیں ملی. چینی راشٹری آندولن کے نیتا ڈاکٹر سن یات سین سمجھ گئے کہ پچھمی پرجاتنتر کورا ڈھونگ ہے وہ پچھڑے دیسوں کی آزادی نہیں چاہتا. اِس لئے اُنھوں نے سوویت دیس سے مدد مانگی اور وہ ملی.

پچھمی دیسوں اور جاپان نے چینی راشٹری آندولن کا وِرودھ کیا. سن ۱۹۱۷ کے بعد راشٹری آندولن میں پھوٹ ڈالنا اور گھریلو لڑائی میں چانگ کائی شیک کا ساتھ دینا—یہ پچھمی دیسوں کی نیت تھی. اگر وہ گھریلو لڑائی میں کومنتانگ کی مدد نہ کرتے تو شاید گھریلو لڑائی نہ ہوتی یا اتنی بھیانک شکل نہ لیتی.

سن ۱۹۳۱ کے بعد جاپان نے چین پر حملہ بول دیا. یہ لڑائی بیچ میں کچھ وقت کے لئے رکی. لیکن بعد میں سن ۱۹۳۷ تک چلتی رہی. کہنے کو امریکہ نے جاپانی نیت کا وِرودھ کیا. لیکن صرف باتوں سے. اگر امریکہ جاپان سے اپنا بیوپار بھی بند کر دیتا تو جاپان کی ہمت نہ تھی کہ وہ چین کے خلاف لڑائی چلا سکتا. جاپان مٹی کا تیل، لوہا، گولہ بارود، کپاس وغیرہ امریکہ سے منگاتا تھا. جب جاپان کے پاس دینے کو سونا نہیں رہ گیا تو امریکہ نے چاندی لینا شروع کیا

इसी नीति के अनुसार अमरीका ने चीनी रेलों को एक तटस्थ यानी ग़ैर तरफ़दार कम्पनी के सुपर्द करने की योजना रक्खी. उसका मतलब भी सिर्फ़ यही था कि चीन में रेल बनाने में अमरीका का भी हाथ हो और उसकी पूंजी भी काम में लाई जाए. इसके बाद जब चीन सरकार को क़र्ज़ देने के लिये विदेशी सरकारों ने एक गुट बनाया तो अमरीका ने ब्रिटेन, फ्रान्स और जर्मनी को मजबूर किया कि उस गुट में अमरीका को शामिल किया जाए. इस गुट की नीति थी चीन को मजबूर करना कि वह किसी दूसरे देस से क़र्ज़ न ले, बल्कि इस गुट से और इसकी अपनी शर्तों पर क़र्ज़ा ले.

सन १९१७ में दूसरे साम्राजवादियों की तरह अमरीका ने भी जापान की चीन सम्बन्धी मांगों को मान लिया था. इन मांगों को मानने के बाद चीन जापान का ग़ुलाम बन जाता था. इन मांगों को जापान की २१ मांगों के नाम से पुकारा जाता है. हमको ध्यान रखना चाहिये कि उस समय अमरीका के प्रेसिडेन्ट श्री विल्सन थे. इस उदार नेता ने भी जापानी साम्राजवाद का विरोध नहीं किया.

लड़ाई के बाद पेरिस में शान्ति सम्मेलन हुआ. लेकिन इस सम्मेलन से भी चीन को कुछ न मिला. चीन आज़ादी चाहता था. उसकी मांग थी कि तटकर (कस्टम ड्यूटी) लगाने की आज़ादी दी जाय. चीनी देस से विदेशी सरकारों का प्रभाव उठा लिया जाय, उनकी कचहरियां, क़ानून वग़ैरा न चालू रक्खे जाएं. शान्ति सम्मेलन के सभापति भी प्रेसिडेन्ट विलसन थे. एशियाई नागरिकों की बराबरी तक को स्वीकार नहीं किया गया. हबशियों पर अत्याचार करने वालों के देस का प्रतिनिधि यह कैसे कर सकता था.

اِسی نیتی کے انوسار امریکہ نے چینی ریلوں کو ایک تٹستھ یعنی غیر طرفدار کمپنی کے سپرد کرنے کی یوجنا رکھی. اس کا مطلب بھی صرف یہی تھا کہ چین میں ریل بنانے میں امریکہ کا بھی ہاتھ ہو اور اُسکی پونجی بھی کام میں لائی جائے. اُسکے بعد جب چین سرکار کو قرض دینے کے لئے ودیشی سرکاروں نے ایک گٹ بنایا تو امریکہ نے برٹین فرانس اور جرمنی کو مجبور کیا کہ اُس گٹ میں امریکہ کو شامل کیا جائے. اُس گٹ کی نیتی تھی چین کو مجبور کرنا کہ وہ کسی دوسرے دیس سے قرض نہ لے بلکہ اِس گٹ سے اور اِسکی اپنی شرطوں پر قرضہ لے.

سن ۱۹۱۷ میں دوسرے سامراج وادیوں کی طرح امریکہ نے بھی جاپان کی چین سمبندھی مانگوں کو مان لیا تھا. اِن مانگوں کو ماننے کے بعد چین جاپان کا غلام بن جاتا تھا. اِن مانگوں کو جاپان کی ۲۱ مانگوں کے نام سے پکارا جاتا ہے. ہم کو دھیان رکھنا چاہئے کہ اس سمے امریکہ کے پریسیڈنٹ شری ولسن تھے. اس ادار نیتا نے بھی جاپانی سامراج واد کا ورودھ نہیں کیا.

لڑائی کے بعد پیرس میں شانتی سمیلن ہوا. لیکن اِس سمیلن سے بھی چین کو کچھ نہ ملا. چین آزادی چاہتا تھا. اُسکی مانگ تھی کہ تٹ کر (کسٹم ڈیوٹی) لگانے کی آزادی دی جائے. چینی دیس سے ودیشی سرکاروں کا پربھاؤ اُٹھا لیا جائے. اُنکی کچہریاں، قانون وغیرہ نہ چالو رکھے جائیں. شانتی سمیلن کے سبھا پتی بھی پریسیڈنٹ ولسن تھے. ایشیائی ناگرکوں کی برابری تک کو سویکار نہیں کیا گیا. حبشیوں پر اتیاچار کرنے والوں کے دیس کا پرتی ندھی یہ کیسے کر سکتا تھا.

चीन के शोशन में कहीं पिछड़ न जाए इस डर से, और जापान का शोशन करने के लिये, अमरीकी सरकारी नाविकों ने जापानी सरकार को मजबूर किया कि वह विदेसी व्योपारियों के लिये देस के बन्दरगाहों को खोल दे. इसके बाद अमरीका के लिये न सिर्फ़ जापान का शोशन आसान हो गया, बल्कि चीन पहुँचने के लिये रसद, कोयला-पानी लेने के लिये बन्दरगाह मिल गए. अमरीका और दूसरे पच्छिमी देसों की चीन सम्बन्धी पालिसी में कोई खास फ़रक़ न था. अमरीका दूसरे देसों की तरह चीन से व्योपार करता था और शोशन में हाथ बटाता था.

लेकिन अमरीका का कहना है कि उसने चीन में खुले दरवाज़े की नीत बरती और चीन को स्वतन्त्र रखने की कोशिश की. यह खुले दरवाज़े की नीत क्या है?

१८९४ की चीन जापानी लड़ाई के बाद पच्छिमी देसों ने चीन को अपने स्वार्थ क्षेत्रों (Spheres of interest) में बांट डाला था. इन देसों में खास थे ब्रिटेन, रूस, फ्रान्स, जर्मनी और जापान. अमरीका इस बीच क्यूबा और फ़िलिपाइन में उलझ गया था. फिर उसको बीच और दक्खिनी अमरीका में बहुत से बाज़ार मिल गए थे. इसलिये उसको चीन में दख़ल देने की फ़ुरसत नहीं थी. लेकिन अमरीका यह न चाहता था कि यह पच्छिमी देस चीन के व्योपार और उद्योग धन्दों को क़ाबू में करलें और उसको निकलना पड़े. इसलिये अमरीका का कहना था कि चीन में व्योपारी शोशन का सबको बराबर मौक़ा मिलना चाहिये. कोई देस वहां पर अकेला अधिकार न क़ायम कर पाए.

چین کے شوشن میں کہیں پچھڑ نہ جائے اس ڈر سے اور جاپان کا شوشن کرنے کے لئے، امریکی سرکاری ناوکوں نے جاپانی سرکار کو مجبور کیا کہ وہ بدیسی بیوپاریوں کے لئے دیس کے بندرگاہوں کو کھول دے ۔ اسکے بعد امریکہ کے لئے نہ صرف جاپان کا شوشن آسان ہوگیا، بلکہ چین پہنچنے کے لئے رسد، کوئلہ پانی لینے کے لئے بندرگاہ مل گئے ۔ امریکہ اور دوسرے پچھمی دیسوں کی چین سمبندھی پالیسی میں کوئی خاص فرق نہ تھا ۔ امریکہ دوسرے دیسوں کی طرح چین سے بیوپار کرتا تھا اور شوشن میں ہاتھ بٹاتا تھا ۔

لیکن امریکہ کا کہنا ہے کہ اس نے چین میں کھلے دروازے کی نیت برتی اور چین کو سوتنتر رکھنے کی کوشش کی ۔ یہ کھلے دروازے کی نیت کیا ہے ؟

۱۸۹۴ کی چین جاپانی لڑائی کے بعد پچھمی دیسوں نے چین کو اپنے سوارتھ چھیتروں (Spheres of interest) میں بانٹ ڈالا تھا ۔ ان دیسوں میں خاص تھے برٹن، روس، فرانس، جرمنی اور جاپان ۔ امریکہ اس بیچ کیوبا اور فلپائن میں الجھ گیا تھا ۔ پھر اُسکو بیچ اور دکھنی امریکہ میں بہت سے بازار مل گئے تھے ۔ اس لئے اُسکو چین میں دخل دینے کی فرصت نہیں تھی ۔ لیکن امریکہ یہ نہ چاہتا تھا کہ یہ پچھمی دیس چین کے بیوپار اور اُدیوگ دھندوں کو قابو میں کر لیں اور اُسکو نکلنا پڑے ۔ اس لئے امریکہ کا کہنا تھا کہ چین میں بیوپاری شوشن کا سب کو برابر موقعہ ملنا چاہئے ۔ کوئی دیس وہاں پر اکیلا ادھکار نہ قائم کر پائے ۔

इसी नीत के अनुसार अमरीका ने चीनी रेलों को एक तटस्थ यानी ग़ैर तरफ़दार कम्पनी के सुपर्द करने की योजना रक्खी. उसका मतलब भी सिर्फ़ यही था कि चीन में रेल बनाने में अमरीका का भी हाथ हो और उसकी पूंजी भी काम में लाई जाए. इसके बाद जब चीन सरकार को क़र्ज़ देने के लिये बिदेसी सरकारों ने एक गुट बनाया तो अमरीका ने ब्रिटेन फ्रान्स और जर्मनी को मजबूर किया कि उस गुट में अमरीका को शामिल किया जाए. इस गुट की नीत थी चीन को मजबूर करना कि वह किसी दूसरे देस से क़र्ज़ न ले बल्कि इस गुट से और इसकी अपनी शर्तों पर क़र्ज़ा ले.

सन १९१७ में दूसरे साम्राजवादियों की तरह अमरीका ने भी जापान की चीन सम्बन्धी मांगों को मान लिया था इन मांगों को मानने के बाद चीन जापान का ग़ुलाम बन जाता था. इन मांगों को जापान की २१ मांगों के नाम से पुकारा जाता है. हमको ध्यान रखना चाहिये कि उस समय अमरीका के प्रेसिडेन्ट श्री विलसन थे. उस उदार नेता ने भी जापानी साम्राजवाद का विरोध नहीं किया.

लड़ाई के बाद पेरिस में शान्ति सम्मेलन हुआ. लेकिन इस सम्मेलन से भी चीन को कुछ न मिला. चीन आज़ादी चाहता था. उसकी मांग थी कि तटकर (कस्टम ड्यूटी) लगाने की आज़ादी दी जाय. चीनी देस से बिदेसी सरकारों का प्रभाव उठा लिया जाय, उनकी कचहरियां, क़ानून वग़ैरा न चालू रक्खे जाएं. शान्ति सम्मेलन के सभापति भी प्रेसिडेन्ट विलसन थे. एशियाई नागरिकों की बराबरी तक को स्वीकार नहीं किया गया. हबशियों पर अत्याचार करने वालों के देस का प्रतिनिधि यह कैसे कर सकता था.

اِسی نیت کے انوسار امریکہ نے چینی ریلوں کو ایک تٹستھ یعنی غیر طرفدار کمپنی کے سپرد کرنے کی یوجنا رکھی . اس کا مطلب بھی صرف یہی تھا کہ چین میں ریل بنانے میں امریکہ کا بھی ہاتھ ہو اور اُسکی پونجی بھی کام میں لائی جائے . اسکے بعد جب چین سرکار کو قرض دینے کے لئے ودیسی سرکاروں نے ایک گٹ بنایا تو امریکہ نے برٹین فرانس اور جرمنی کو مجبور کیا کہ اس گٹ میں امریکہ کو شامل کیا جائے . اس گٹ کی نیت تھی چین کو مجبور کرنا کہ وہ کسی دوسرے دیس سے قرض نہ لے بلکہ اِس گٹ سے اور اِسکی اپنی شرطوں پر قرضہ لے .

سن ۱۹۱۷ میں دوسرے سامراج وادیوں کی طرح امریکہ نے بھی جاپان کی چین سمبندھی مانگوں کو مان لیا تھا . اِن مانگوں کو ماننے کے بعد چین جاپان کا غلام بن جاتا تھا . اِن مانگوں کو جاپان کی ۲۱ مانگوں کے نام سے پکارا جاتا ہے . ہم کو دھیان رکھنا چاہئے کہ اُس سمے امریکہ کے پریسیڈنٹ شری ولسن تھے . اُس اُدار نیتا نے بھی جاپانی سامراج واد کا ورودھ نہیں کیا .

لڑائی کے بعد پیرس میں شانتی سمیلن ہوا . لیکن اِس سمیلن سے بھی چین کو کچھ نہ ملا . چین آزادی چاہتا تھا . اُسکی مانگ تھی کہ تٹ کر (کسٹم ڈیوٹی) لگانے کی آزادی دی جائے . چینی دیس سے ودیسی سرکاروں کا پربھاؤ اُٹھا لیا جائے . اُنکی کچہریاں، قانون وغیرہ نہ چالو رکھے جائیں . شانتی سمیلن کے سبھا پتی بھی پریسیڈنٹ ولسن تھے . ایشیائی ناگرکوں کی برابری تک کو سویکار نہیں کیا گیا . حبشیوں پر اتیاچار کرنے والوں کے دیس کا پرتی ندھی یہ کیسے کر سکتا تھا

चीन के शोशन में कहीं पिछड़ न जाए इस डर से, और जापान का शोशन करने के लिये, अमरीकी सरकारी नाविकों ने जापानी सरकार को मजबूर किया कि वह बिदेसी व्योपारियों के लिये देस के बन्दरगाहों को खोल दे. इसके बाद अमरीका के लिये न सिर्फ जापान का शोशन आसान हो गया, बल्कि चीन पहुंचने के लिये रसद, कोयला-पानी लेने के लिये बन्दरगाह मिल गए. अमरीका और दूसरे पच्छिमी देसों की चीन सम्बन्धी पालिसी में कोई खास फरक न था. अमरीका दूसरे देसों की तरह चीन से व्योपार करता था और शोशन में हाथ बटाता था.

लेकिन अमरीका का कहना है कि उसने चीन में खुले दरवाजे की नीत बरती और चीन को स्वतन्त्र रखने की कोशिश की. यह खुले दरवाजे की नीत क्या है?

१८९४ की चीन जापानी लड़ाई के बाद पच्छिमी देसों ने चीन को अपने स्वार्थ क्षेत्रों (Spheres of interest) में बांट डाला था. इन देसों में खास थे ब्रिटेन, रूस, फ्रान्स, जर्मनी और जापान. अमरीका इस बीच क्यूबा और फिलिपाइन में उलझ गया था. फिर उसको बीच और दक्खिनी अमरीका में बहुत से बाजार मिल गए थे. इसलिये उसको चीन में दखल देने की फुरसत नहीं थी. लेकिन अमरीका यह न चाहता था कि यह पच्छिमी देस चीन के व्योपार और उद्योग धन्दों को काबू में करलें और उसको निकलना पड़े. इसलिये अमरीका का कहना था कि चीन में व्योपारी शोशन का सबको बराबर मौका मिलना चाहिये. कोई देस वहां पर अकेला अधिकार न कायम कर पाए.

چین کے شوشن میں کہیں پچھڑ نہ جائے اِس ڈر سے اور جاپان کا شوشن کرنے کے لئے، امریکی سرکاری ناوکوں نے جاپانی سرکار کو مجبور کیا کہ وہ بدیسی ویوپاریوں کے لئے دیس کے بندرگاہوں کو کھول دے۔ اسکے بعد امریکہ کے لئے نہ صرف جاپان کا شوشن آسان ہوگیا، بلکہ چین پہنچنے کے لئے رسد، کوئلہ پانی لینے کے لئے بندرگاہ مل گئے۔ امریکہ اور دوسرے پچھمی دیسوں کی چین سمبندھی پالسی میں کوئی خاص فرق نہ تھا۔ امریکہ دوسرے دیسوں کی طرح چین سے بیوپار کرتا تھا اور شوشن میں ہاتھ بٹاتا تھا۔

لیکن امریکہ کا کہنا ہے کہ اُس نے چین میں کھلے دروازے کی نیت برتی اور چین کو سوتنتر رکھنے کی کوشش کی۔ یہ کھلے دروازے کی نیت کیا ہے؟

۱۸۹۴ کی چین جاپانی لڑائی کے بعد پچھمی دیسوں نے چین کو اپنے سوارتھ چھیتروں (Spheres of interest) میں بانٹ ڈالا تھا۔ اِن دیسوں میں خاص تھے برٹن، روس، فرانس، جرمنی اور جاپان۔ امریکہ اِس بیچ کیوبا اور فلپائن میں اُلجھ گیا تھا۔ پھر اُسکو بیچ اور دکھنی امریکہ میں بہت سے بازار مل گئے تھے۔ اِس لئے اُسکو چین میں دخل دینے کی فرصت نہیں تھی۔ لیکن امریکہ یہ نہ چاہتا تھا کہ یہ پچھمی دیس چین کے بیوپار اور اُدیوگ دھندوں کو قابو میں کر لیں اور اُسکو نکلنا پڑے۔ اِس لئے امریکہ کا کہنا تھا کہ چین میں بیوپاری شوشن کا سب کو برابر موقعہ ملنا چاہئے۔ کوئی دیس وہاں پر اکیلا ادھیکار نہ قائم کر پائے۔

चीन और अमरीका

(भाई आशाराम)

अमरीकी सरकार और उसके प्रतिनिधियों का दावा है कि अमरीकी नीत चीन के हित में रही है. उनका कहना है कि अमरीका चीनी स्वाधीनता का हामी रहा है. क्या यह ठीक है ? अमरीकी रुख को समझने के लिये चीन और अमरीका के आपसी सम्बन्धों के इतिहास पर एक नज़र डालना ज़रूरी होगा.

जिस समय अमरीका अपनी आज़ादी की लड़ाई लड़ रहा था चीन दुनिया के सभ्य और बड़े देसों में गिना जाता था. पच्छिमी बिदेसियों की लूट मार की नीत से तंग आकर उसने अपना सम्पर्क एक शहर कैन्टन तक सीमित कर दिया था.

पच्छिमी देस उद्योग धन्दों में पूरब से आगे बढ़ गए थे. उनके पास ज्यादा अच्छे हथियार. जहाज़ और शासन में बंधे हुए सिपाही थे. इस ताक़त के बल पर हिन्दुस्तान को अड्डा बना कर ब्रिटेन ने चीन पर हमले किये और उसको अपनी मंडियां खोलने और अफ़ीम ख़रीदने पर मजबूर किया चीन की इस हार से फ़ायदा उठाने और उसका शोशन करने वालों में सभी पच्छिमी देस थे. उनमें अमरीका का नम्बर ब्रिटेन के बाद दूसरा था. अमरीका दूसरे बिदेसी मुल्कों के साथ मिलकर चीन के किनारों का पहरा दिया करता था और अपने साम्राजी शोशन के हितों की रक्षा करता था.

چین اور امریکہ

(بھائی آشارام)

امریکی سرکار اور اُس کے پرتی ندھیوں کا دعویٰ ہے کہ امریکی نیت چین کے ہت میں رہی ہے ۔ اُن کا کہنا ہے کہ امریکہ چینی سوادھینتا کا حامی رہا ہے ۔ کیا یہ ٹھیک ہے ؟ امریکی رخ کو سمجھنے کے لئے چین اور امریکہ کے آپسی سمبندھوں کے اِتہاس پر ایک نظر ڈالنا ضروری ہوگا ۔

جس سمے امریکہ اپنی آزادی کی لڑائی لڑ رہا تھا چین دنیا کے سبھیہ اور بڑے دیسوں میں گنا جاتا تھا ۔ پچھمی بدیسیوں کی لوٹ مار کی نیت سے تنگ آکر اُس نے اپنا سمپرک ایک شہر کینٹن تک سیمت کر دیا تھا ۔

پچھمی دیس اُدیوگ دھندوں میں پورب سے آگے بڑھ گئے تھے ۔ اُن کے پاس زیادہ اچھے ہتھیار، جہاز اور شاسن میں بندھے ہوئے سپاہی تھے ۔ اس طاقت کے بل پر ہندستان کو اڈا بنا کر برٹین نے چین پر حملے کئے اور اسکو اپنی منڈیاں کھولنے اور افیم خریدنے پر مجبور کیا ۔ چین کی اِس ہار سے فائدہ اُٹھانے اور اُس کا شوشن کرنے والوں میں سبھی پچھمی دیس تھے ۔ اُن میں امریکہ کا نمبر برٹین کے بعد دوسرا تھا امریکہ دوسرے بدیسی ملکوں کے ساتھ ملکر چین کے کناروں کا پہرہ دیا کرتا تھا اور اپنے سامراجی شوشن کے ہتوں کی رکشا کرتا تھا ۔

समझे थे जिसे दुशमन वह दोस्त खरा निकला
है जान ही दे बैठा हम पर वह मुहब्बत से

खुद राम ही आया था दुनिया के जगाने को
हर सांस में जपता था जो राम को उलफत से

क़ातिल में भी गांधी को वह राम नज़र आया
रमता है जो हर घर में खुद राम की क़ुदरत से

हर धर्म को समझा था हर धर्म को माना था
जो कुछ है वह रहमत है जो कुछ है वह रहमत से

अपना जिसे समझे हो कुछ भी नहीं यां अपना
जो कुछ है वह रहमत है जो कुछ है वह रहमत से

दौलत है बड़ी सबसे एक होश में आ जाना
बेहोश खुदाई है चक्कर में मुसीबत से

गांधी ने जहां भर की खातिर यही मांगा था
वह मर्दे खुदा सचमुच भरपूर था हिकमत से

दुनिया में अमन होगा उस राह पे चलने से
जिस राह पे चलता था वह मर्द सदाक़त से

जीना किसे कहते हैं बतला गया वह जीकर
एक नाम का जीना है एक जीना है हिकमत से

سمجھے تھے جسے دشمن وہ دوست کھرا نکلا
ھے جان ھی دے بیٹھا ھم پر وہ محبت سے

خود رام ھی آیا تھا دنیا کے جگانے کو
ھر سانس میں جپتا تھا جو رام کو اُلفت سے

قاتل میں بھی گاندھی کو وہ رام نظر آیا
رمتا ھے جو ھر گھر میں خود رام کی قدرت سے

ھر دھرم کو سمجھا تھا ھر دھرم کو مانا تھا
جوکچھ ھے وہ رحمت ھے جوکچھ ھے وہ رحمت سے

اپنا جسے سمجھے ھو کچھ بھی نہیں یاں اپنا
جوکچھ ھے وہ رحمت ھے جوکچھ ھے وہ رحمت سے

دولت ھے بڑی سب سے ایک ھوش میں آجانا
بیہوش خدائی ھے چکر میں مصیبت سے

گاندھی نے جہاں بھر کی خاطر یہی مانگا تھا
وہ مرد خدا سچ مچ بھرپور تھا حکمت سے

دنیا میں امن ھوگا اُس راہ پہ چلنے سے
جس راہ پہ چلتا تھا وہ مرد صداقت سے

جینا کسے کہتے ھیں بتلا گیا وہ جی کر
ایک نام کا جینا ھے ایک جینا ھے حکمت سے

शब्दों के बवन्डर में खो देते हैं उम्र अपनी
बेकार ही रहते हैं हम दूर हक़ीक़त से
इस खाक के ज़र्रों से आवाज़ है वह आती
सुनने क तमन्ना थी जिसकी मुझे मुद्दत से
मैं आप ही दुशमन था दुशमन न ज़माना था
खुद घर को जला बैठा मैं अपनी ही नफ़रत से
आबाद रहे यारब गांधी का वो मैख़ाना
लबरेज़ किया जिसने हर दिल को मुहब्बत से
लाखों ही नबी आए हज़रत ने बताया था
तुम सबको कहो अपना दिल जान-ओ-मुहब्बत से
दिल रा तू बदस्त आवर है हज्ज यही अकबर
गर वस्ले खुदा ख़्वाही मिल सबसे मुहब्बत से
जो बात न समझे थे वह बात हुई ज़ाहिर
भगवान की किरपा से अल्लाह की रहमत से
नापाक है वह दौलत हम पाक जिसे समझे
यह बात हुई ज़ाहिर गांधी की शहादत से

हज़रत = मतलब मुहम्मद साहब से है. लबरेज़ = भरा हुआ. दिल रा तू बदस्त आवर है हज्ज यही अकबर = दूसरे के दिल को अपने हाथ में ले यही सबसे बड़ा हज्ज है. गर वस्ले खुदा ख़्वाही मिल सबसे मुहब्बत से = अगर खुदा से मिलना चाहता है तो सबसे मुहब्बत से मिल. रहमत = दया. शहादत = बलिदान.

شبدوں کے بونڈر میں کھو دیتے ھیں عمر اپنی
بیکار ھی رھتے ھیں ھم دور حقیقت سے
اِس خاک کے ذروں سے آواز ھے وہ آتی
سننے کی تمنا تھی جسکی مجھے مدت سے
میں آپ ھی دشمن تھا دشمن نہ زمانہ تھا
خود گھر کو جلا بیٹھا میں اپنی ھی نفرت سے
آباد رھے یارب گاندھی کا وہ میخانہ
لبریز کیا جس نے ھر دل کو محبت سے
لاکھوں ھی نبی آئے حضرت نے بتایا تھا
تم سب کو کہو اپنا دل جان و محبت سے
دل راتو بدست آور ھے حج یہی اکبر
گر وصل خدا خواھی مل سب سے محبت سے
جو بات نہ سمجھے تھے وہ بات ھوئی ظاھر
بھگوان کی کرپا سے اللہ کی رحمت سے
ناپاک ھے وہ دولت ھم پاک جسے سمجھے
یہ بات ھوئی ظاھر گاندھی کی شہادت سے

حضرت = مطلب محمد صاحب سے ھے . لبریز = بھرا ھوا . دل را تو بدست آور ھے حج یہی اکبر = دوسروں کے دل کو اپنے ھاتھ میں لے یہی سب سے بڑا حج ھے . گر وصل خدا خواھی مل سب سے محبت سے = اگر خدا سے ملنا چاھتا ھے تو سب سے محبت سے مل . رحمت = دیا . شہادت = بلیدان .

आवाज़ ये आती है एक मर्द की तुरबत से

(डाक्टर हरचरन लाल वर्मन)

है बात बहुत सीधी समझो इसे हिकमत से
आवाज़ ये आती है एक मर्द की तुरबत से

दो कौम की प्यारी को अंगरेज़ ने मरवाया
हम आप हुए रुसवा खुद अपनी हिमाक़त से

तालीम जो वहदत की मज़हब ने सिखाई थी
वह हमने भुला दी है बदकारों की सोहबत से

था प्रेम न मज़हब में उलफ़त न सदाक़त में
बस नाम से मतलब था और काम था शोहरत से

अब आंख खुली मेरी जलवे नज़र आते हैं
कुल हस्ती हुई रोशन जलवों की हक़ीक़त से

ईश्वर कहो या अल्ला कहने की हैं दो बातें
निस्बत है उसे हासिल बस एक ही वहदत से

तुरबत = कब्र. हिकमत = समझदारी. वहदत = एकता.
सदाक़त = सचाई. उलफ़त = प्रेम. शोहरत = कीर्ति.
जलवे = प्रकाश. हस्ती = सृष्टि. निस्बत = नाता.

آواز یہ آتی ہے ایک مرد کی تربت سے

(ڈاکٹر ہرچرن لال ورمن)

ہے بات بہت سیدھی سمجھو اسے حکمت سے
آواز یہ آتی ہے ایک مرد کی تربت سے

دو قوم کی ہمدمی کو انگریز نے مٹوایا
ہم آپ ہوئے رسوا خود اپنی حماقت سے

تعلیم جو وحدت کی مذہب نے سکھائی تھی
وہ ہم نے بھلا دی ہے بدکاروں کی صحبت سے

تھا پریم نہ مذہب میں الفت نہ صداقت سے
بس نام سے مطلب تھا اور کام تھا شہرت سے

اب آنکھ کھلی میری جلوے نظر آتے ہیں
کل ہستی ہوئی روشن جلووں کی حقیقت سے

ایشور کہو یا اللہ کہنے کی ہیں دو باتیں
نسبت ہے اسے حاصل بس ایک ہی وحدت سے

تربت = قبر . حکمت = سمجھداری . وحدت = ایکتا .
صداقت = سچائی الفت = پریم . شہرت = کیرتی .
جلوے = پرکاش ہستی = سرشٹی . نسبت = ناتا .

युग का अमन चैन और ख़ुशहाली देंगे या फिर. डाक्टर राधाकृष्नन के शब्दों में "बहुत से लोग ऊब कर. मजबूर होकर यह मानने लगेंगे कि कम्यूनिज्म के अलावा तरक़्क़ी का और कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं."

अगर हिन्दुस्तान अपने फ़र्ज़ को भूलता है तो एशिया मर जायगा. यह ठीक ही कहा है कि हिन्दुस्तान मिली जुली सभ्यताओं और तहज़ीबों का घर है, जहां वह साथ पनपतीं हैं हम सब ऐसे काम करें कि हिन्दुस्तान एशिया या दुनिया के किसी भी हिस्से की कुचली और शोषित जातियों की आशा बना रहे.......
इससे जब हमारी रवादारी से भरी और मिली जुली तहज़ीब अपने आप ज़ाहिर नहीं होती तो हिन्दुस्तान और उसके करोड़ों लोगों के प्यार करने वाले के नाते मेरे स्वाभिमान को चोट पहुंचती है.

× × × ×

लोगों ने 'महात्मा गांधी की जय' कहकर मेरा स्वागत किया है मगर वह नहीं जानते कि अगर हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख एक दूसरे के साथ शांति से नहीं रह सकते, तो मेरे लिये कोई जय की बात नहीं है और न मैं ज़िन्दा रहना चाहता हूँ. जिस तरह एक पेड़ जिसमें फल नहीं लगते, सूख जाता है उसी तरह मेरी सेवा का मनचाहा नतीजा न निकला तो मेरा शरीर ही बेकार हो जायगा. जिस शरीर की उपयोगिता खतम होगई वह बरबाद हो जायगा. पर आत्मा का कभी नाश नहीं होता. वह सेवा के कामों के लिये, अपनी मुक्ति हासिल करने के लिये, नए शरीर बदलती रहती है.

—महात्मा गांधी.

یگ کا امن چین اور خوش حالی دینگے یا پھر ڈاکٹر رادھا کرشنن کے شبدوں میں "بہت سے لوگ اوب کر مجبور ہوکر یہ ماننے لگیں گے کہ کمیونزم کے علاوہ ترقی کا اور کوئی دوسرا راستہ ہے ہی نہیں۔"

اگر ہندستان اپنے فرض کو بھولتا ہے تو ایشیا مر جائیگا یہ ٹھیک ہی کہا ہے کہ ہندستان ملی جلی سبھیتاؤں اور تہذیبوں کا گھر ہے جہاں وہ ساتھ پنپتی ہیں ہم سب ایسے کام کریں کہ ہندستان ایشیا یا دنیا کے کسی بھی حصے کی کچلی اور شوشت جاتیوں کی آشا بنا رہے ...... اس سے جب ہماری رواداری سے بھری اور ملی جلی تہذیب اپنے آپ ظاہر نہیں ہوتی تو ہندستان اور اسکے کروڑوں لوگوں کے پیار کرنے والے کے ناتے میرے سوابھیمان کو چوٹ پہنچتی ہے۔

× × × ×

لوگوں نے 'مہاتما گاندھی کی جے' کہکر میرا سواگت کیا ہے مگر وہ نہیں جانتے کہ اگر ہندو، مسلمان، سکھ ایک دوسرے کے ساتھ شانتی سے نہیں رہ سکتے، تو میرے لئے کوئی جے کی بات نہیں ہے اور نہ میں زندہ رہنا چاہتا ہوں۔ جس طرح ایک پیڑ جسمیں پھل نہیں لگتے، سوکھ جاتا ہے اسی طرح میری سیوا کا من چاہا نتیجہ نہ نکلا تو میرا شریر ہی بیکار ہو جائیگا۔ جس شریر کی اپیوگتا ختم ہوگئی وہ برباد ہو جائیگا۔ پر آتما کا کبھی ناش نہیں ہوتا۔ وہ سیوا کے کاموں کے لئے اپنی مکتی حاصل کرنے کے لئے نئے شریر بدلتی رہتی ہے۔

—مہاتما گاندھی

मुल्क की ऐसी राजनैतिक हालत को ध्यान में रखते हुए बिगड़ती हुई माली हालत हिन्द की नेतागिरी को एक खुली चुनौती है. खाने, कपड़े और जीवन की और जरूरी चीजों का सवाल नेहरू सरकार को उलझन मे डाले हुए है. आर्डिनेन्सों और कड़ाइयों के बावजूद चोरबाजारी अभी भी इतनी अच्छी तरह कायम है जितनी शायद पहले कभी भी न रहा हो. कॉंगरेसी सरकार राष्ट्र विरोधी ताकतों के कामों को कभी बन्द भी कर पाएगी या नहीं इसमे शुबह मालूम होता है.

मुल्क माली गड़बड़ी के दलदल में फंसा हुआ है. पूंजीवाद हड़ताल किए हुए है. मजदूर ज्यादा मजदूरी मांग रहे हैं और चीजों के दाम बढ़ते जा रहे हैं. बहुतेरे पूंजीवादी धोका देते हैं और कहते हैं कि उनके कारखाने घाटे पर चल रहे हैं. इसी तरह मजदूर धीमे काम करते हैं जिसका नतीजा यह होता है कि उत्पादन घटता जाता है. इसी तरह चक्कर चलता रहता है. बीच के तबके के लोगों की हालत बदतर है. सबसे ज्यादा नुकसान इसी तबके ने उठाया है और इसके धीरज का बाँध टूटने ही वाला है.

यही हाल यहाँ की लोकशाही (डेमोक्रेसी) का भी है. यहां की नेतागिरी और पबलिक दोनों ही का इम्तहान हो रहा है क्योंकि किसी को भी जिम्मेदारी से बरी नहीं किया जा सकता.

क्या हम उम्मीद करें कि कॉंगरेस एक बार फिर मौके को देख कर ऊपर उठेगी और आपसी झगड़ों को भूल कर मुल्क को समाजी लोकशाही (सोशल डेमोक्रेसी) की राह पर लगाएगी या समय के फेर से सोशलिस्ट ही सरकार मे आकर मुल्क को सोशलिस्ट

ملک کی ایسی راج نیتک حالت کو دھیان میں رکھتے ہوئے بگڑتی ہوئی مالی حالت ہند کی نیتاگیری کو ایک کھلی چنوتی ہے کھانے کپڑے اور جیون کی اور ضروری چیزوں کا سوال نہرو سرکار کو الجھن میں ڈالے ہوئے ہے آرڈیننسوں اور کڑائیوں کے باوجود چور بازاری ابھی بھی اتنی اچھی طرح قائم ہے جتنی شاید پہلے کبھی بھی نہ رہی ہو کانگریسی سرکار راشٹر ورودھی طاقتوں کے کاموں کو کبھی بند بھی کر پائے گی یا نہیں اس میں شبہہ معلوم ہوتا ہے

ملک مالی گڑبڑی کے دلدل میں پھنسا ہوا ہے . پونجی واد ہڑتال کئے ہوئے ہے مزدور زیادہ مزدوری مانگ رہے ہیں اور چیزوں کے دام بڑھتے جا رہے ہیں بہتیرے پونجی وادی دھوکا دیتے ہیں اور کہتے ہیں کہ اُن کے کارخانے گھاٹے پر چل رہے ہیں اسی طرح مزدور دھیمے کام کرتے ہیں جس کا نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ اتپادن گھٹتا جاتا ہے اسی طرح چکر چلتا رہتا ہے . بیچ کے طبقے کے لوگوں کی حالت بدتر ہے . سب سے زیادہ نقصان اسی طبقے نے اٹھایا ہے اور اسکے دھیرج کا باندھ ٹوٹنے ہی والا ہے

یہی حال یہاں کی لوک شاہی (ڈیموکریسی) کا بھی ہے . یہاں کی نیتاگیری اور پبلک دونوں ہی کا امتحان ہو رہا ہے کیونکہ کسی کو بھی ذمہداری سے بری نہیں کیا جا سکتا

کیا ہم امید کریں کہ کانگریس ایک بار پھر موقع کو دیکھکر اوپر اٹھے گی اور آپسی جھگڑوں کو بھول کر ملک کو سماجی لوک شاہی (سوشل ڈیموکریسی) کی راہ پر لگائے گی یا سمے کے پھیر سے سوشلسٹ ہی سرکار میں آکر ملک کو سوشلسٹ

का कांगरेसी सरकार की जगह ले लेना नामुमकिन नहीं है फिर भी इस बारे में पक्के तौर से अभी कुछ नहीं कहा जा सकता.

हिन्दू महासभा राजकाजी मैदान में अपनी बेवकूफ़ी के लिये अनूठी रही है. मुल्क की जटिल समस्याओं को हल करने के लिये इसने कुछ भी नहीं किया है, उल्टे हमेशा रोड़े ही अटकाती रही है खास कर साम्प्रदायिक भावनाओं को उकसा उकसा कर इस जमात के सालाना जलसे सिर्फ़ राजकाजी दंगल और उछल कूद ही रहे हैं जिसमें कि सोती हुई और दुखी जनता का ख़याल उनकी ओर झुके. अगर दुखी और बेज़ार जनता की बिगड़ी हुई माली हालत सुधारने के लिये कुछ नहीं किया गया तो बहुत मुमकिन है महासभा आने वाले चुनाव में काफ़ी वोट पा जाय.

कम्युनिस्ट पार्टी के मुक़ाबले में महासभा से हिन्द की एकता और आज़ादी को कहीं कम ख़तरा है. हालांकि कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर गिनती में कम हैं फिर भी पार्टी का यह दावा है कि हज़ारों ऐसे नौजवान हैं जो पार्टी के उद्देशों को पूरा करने के लिये अपना सब कुछ निछावर कर सकते हैं. लेकिन पार्टी की राष्ट्र विरोधी नीत ने इसे जनता से अलग कर दिया है सिवाय कुछ ऐसी जगहों के जहाँ खेती या कारख़ानों में कारबारी असंतोष बहुत ज़्यादा है. कम्युनिस्ट पार्टी आम लोगों की तकलीफ़ों पर अच्छी तरह पनपती है. कम्युनिस्ट पार्टी के बारे में दुख की बात यह नहीं है कि वह कम्युनिज़्म को मानती है बलिक यह है कि वह एक दूसरे राज के पाँचवें दस्ते का काम कर सकती है.

کا کانگریسی سرکار کی جگہ لے لینا ناممکن نہیں ہے پھر بھی اس بارے میں پکے طور سے ابھی کچھ نہیں کہا جا سکتا ۔

ہندو مہا سبھا راج کاجی میدان میں اپنی بے وقوفی کے لئے انوٹھی رہی ہے ۔ ملک کی ٹیڑھی سمسیاؤں کو حل کرنے کے لئے اس نے کچھ بھی نہیں کیا ہے، الٹے ہمیشہ روڑے ہی اٹکاتی رہی ہے، خاص کر سامپردائک بھاوناؤں کو اکسا اکسا کر اس جماعت کے سالانہ جلسے صرف راج کاجی دنگل اور اچھل کود ہی رہے ہیں جسمیں کہ سوئی ہوئی اور دکھی جنتا کا خیال انکی اور جھکے ۔ اگر دکھی اور بیزار جنتا کی بگڑی ہوئی مالی حالت سدھارنے کے لئے کچھ نہیں کیا گیا تو بہت ممکن ہے مہاسبھا آنے والے چناؤ میں کافی ووٹ پا جائے ۔

کمیونسٹ پارٹی کے مقابلے میں مہاسبھا سے ہند کی ایکتا اور آزادی کو کہیں کم خطرہ ہے حالانکہ کمیونسٹ پارٹی کے ممبر گنتی میں کم ہیں پھر بھی پارٹی کا یہ دعوی ہے کہ ہزاروں ایسے نوجوان ہیں جو پارٹی کے ادیشوں کو پورا کرنے کے لئے اپنا سب کچھ نچھاور کر سکتے ہیں لیکن پارٹی کی راشٹر ورودھی نیت نے اسے جنتا سے الگ کر دیا ہے سوائے کچھ ایسی جگہوں کے جہاں کھیتی یا کارخانوں میں کاروباری اسنتوش بہت زیادہ ہے ۔ کمیونسٹ پارٹی عام لوگوں کی تکلیفوں پر اچھی طرح پنپتی ہے ۔ کمیونسٹ پارٹی کے بارے میں دکھ کی بات یہ نہیں ہے کہ وہ کمیونزم کو مانتی ہے بلکہ یہ ہے کہ وہ ایک دوسرے راج کے پانچویں دستے کا کام کر سکتی ہے ۔

धीरे धीरे कांगरेस जनता से दूर होती गई और वह जनता की जमात नहीं रही. भीतर से आपसी फूट इसे कमजोर कर रही है और बाहर से उस पर माली समस्याओं की चुनौती हमला कर रही है. इसके अलावा ओहदों के लिये होने वाले आपसी लड़ाई झगड़ों से कांगरेस की बड़ी बदनामी हो रही है.

अब आइये देस की दूसरी राजकाजी पार्टियों की तरफ निगाह डालें.

सोशलिस्ट पार्टी, जो कि सोशलिस्ट विचारों के पुराने कांगरेसियों की बनी हुई है, अभी इतनी बच्चा है कि कांगरेसी सरकार की जगह नहीं ले सकती. इस पार्टी को अभी यह तय करना बाकी है कि किस ढंग से सोशलिस्ट राज क़ायम किया जाय. हालांकि इसमें आचार्य नरेन्द्र देव और श्री जय प्रकाश नारायन जैसे विचारक और ईमानदार नेता शामिल हैं फिर भी ख़ास ख़ास सवालों पर पार्टी के नेताओं के विचारों में बड़ा मतभेद है.

नेताओं की राय में मतभेद होने के अलावा, सोशलिस्टों में संगठन की कमी है. अगर सोशलिस्ट उसूल और संगठन के मामलों में ज़रा ऊपर उठें तो कांगरेसी हुकूमत की हर ग़लती उनके लिये एक सुनहरा मौक़ा है जबकि वह जनता को अपनी ओर खींच सकते हैं. फिर भी पार्टी को एक नेहरू की जरूरत है जो उसमें जान फूंक सके और जनता को अपनी ओर खींच सके. इसके अलावा रेलवे और डाक के कर्मचारियों में इसका अच्छा ख़ासा दबदबा है. कारख़ानों में इसकी ताक़त का अन्दाज़ा बम्बई की कपड़े की मिलों में होने वाली दो महीने की पिछली हड़ताल से लग सकता है. हालांकि सोशलिस्टों

دھیرے دھیرے کانگریس جنتا سے دور ہوتی گئی اور وہ جنتا کی جماعت نہیں رہی . بھیتر سے آپسی پھوٹ اسے کمزور کر رہی ہے اور باہر سے اس پر مالی سمسیاؤں کی چنوتی حملہ کر رہی ہے . اسکے علاوہ عہدوں کے لئے ہونے والے آپسی لڑائی جھگڑوں سے کانگریس کی بڑی بدنامی ہو رہی ہے .

اب آئیے دیس کی دوسری راجکاجی پارٹیوں کی طرف نگاہ ڈالیں .

سوشلسٹ پارٹی جو کہ سوشلسٹ وچاروں کے پرانے کانگریسیوں کی بنی ہوئی ہے ابھی اتنی بچہ ہے کہ کانگریسی سرکار کی جگہ نہیں لے سکتی . اس پارٹی کو ابھی یہ طے کرنا باقی ہے کہ کس ڈھنگ سے سوشلسٹ راج قائم کیا جائے . حالانکہ اسمیں آچاریہ نریندر دیو اور شری جے پرکاش نارائن جیسے وچارک اور ایماندار نیتا شامل ہیں پھر بھی خاص خاص سوالوں پر پارٹی کے نیتاؤں کے وچاروں میں بڑا مت بھید ہے .

نیتاؤں کی رائے میں مت بھید ہونے کے علاوہ سوشلسٹوں میں سنگٹھن کی کمی ہے . اگر سوشلسٹ اصول اور سنگٹھن کے معاملوں میں ذرا اوپر اٹھیں تو کانگریسی حکومت کی ہر غلطی ان کے لئے ایک سنہرا موقع ہے جبکہ وہ جنتا کو اپنی اور کھینچ سکتے ہیں . پھر بھی پارٹی کو ایک نہرو کی ضرورت ہے جو اسمیں جان پھونک سکے اور جنتا کو اپنی اور کھینچ سکے . اسکے علاوہ ریلوے اور ڈاک کے کرمچاریوں میں اسکا اچھا خاصا دبدبہ ہے . کارخانوں میں اسکی طاقت کا اندازہ بمبئی کی کپڑے کی ملوں میں ہونے والی دو مہینے کی پچھلی ہڑتال سے لگ سکتا ہے . حالانکہ سوشلسٹوں

आजादी मिलने के बाद इन्डियन नेशनल कांगरेस, जिसने आजादी की लड़ाई के जमाने में साम्राजवाद के खिलाफ़ एक मिला जुला मोर्चा क़ायम किया था. पतन की ओर बढ़ने लगी है. ओहदा मिलने पर अकसर ऐसा हुआ करता है. मुल्क की इस बड़ी और अमर रखने वाली अकेली जमात के संगठन में दरारें पड़ गई हैं. इसकी वजह बहुत साफ़ है. आजादी मिल जाने पर कांगरेस का जोर कम हो गया, तामीरी प्रोग्राम की जगह गुटबन्दी के आपसी झगड़ों ने ले ली. और भ्रश्टाचार ने उसके शरीर को छलनी कर डाला. एक कहावत है कि ताक़त से ज्यादा और कोई चीज भ्रश्ट नहीं करती और पूरी ताक़त पूरी तौर पर भ्रश्ट कर देती है. मुक़ाबले में किसी दूसरी जमात के न होने की वजह से ओहदे पर बैठी हुई कांगरेस भ्रश्टाचार और घूसखोरी का घर बन गई. जनता में कांगरेस की जो भी बची खुची इज्जत है वह इसकी पिछली क़ुरबानियों के कारन है.

महात्मा गांधी ने आजादी मिल जाने के बाद के जमाने में कांगरेस की जो दुरगति होने वाली थी उसे पहले ही भांप लिया था और ओहदों की कमजोरियों से बचे रहने के लिये आगाह कर दिया था. गांधी जी ने अपने आखिरी लेख में लिखा था कि आजादी मिल जाने पर कांगरेस को लोक सेवक संघ में बदल जाना चाहिये जो ऐसे निस्वार्थ लोगों की जमात हो जो ओहदे से दूर रह कर मुल्क की चौतरफ़ा तरक़्क़ी के लिये काम कर सकें. लेकिन कांगरेसी नेतागिरी ओहदों के मोह को न छोड़ सकी और राश्ट्र पिता की आखिरी राय को न मानने के लिये तरह तरह की दलीलें बना ली गईं. कुछ भी हो, इतना तय है कि यह फ़ैसला मुनासिब नहीं रहा.

آزادی ملنے کے بعد انڈین نیشنل کانگریس' جسنے آزادی کی لڑائی کے زمانے میں سامراج واد کے خلاف ایک ملا جلا مورچہ قائم کیا تھا' پتن کی اور بڑھنے لگی ہے. عہدہ ملنے پر اکثر ایسا ہوا کرتا ہے. ملک کی اس بڑی اور امر رکھنے والی اکیلی جماعت کے سنگٹھن میں دراریں پڑ گئی ہیں. اس کی وجہ بہت صاف ہے. آزادی مل جانے پر کانگریس کا زور کم ہو گیا' تعمیری پروگرام کی جگہ گٹ بندی کے آپسی جھگڑوں نے لے لی اور بھرشٹاچار نے اس کے شریر کو چھلنی کر ڈالا. ایک کہاوت ہے کہ طاقت سے زیادہ اور کوئی چیز بھرشٹ نہیں کرتی اور پوری طاقت پورے طور پر بھرشٹ کر دیتی ہے. مقابلے میں کسی دوسری جماعت کے نہ ہونے کی وجہ سے عہدے پر بیٹھی ہوئی کانگریس بھرشٹاچار اور گھوس خوری کا گھر بن گئی. جنتا میں کانگریس کی جو بچی کھچی عزت ہے وہ اسکی پچھلی قربانیوں کے کارن ہے.

مہاتما گاندھی نے آزادی مل جانے کے بعد کے زمانے میں کانگریس کی جو درگتی ہونے والی تھی اُسے پہلے ہی بھانپ لیا تھا اور عہدوں کی کمزوریوں سے بچے رہنے کیلئے آگاہ کر دیا تھا. گاندھی جی نے اپنے آخری لیکھ میں لکھا تھا کہ آزادی مل جانے پر کانگریس کو لوک سیوک سنگھ میں بدل جانا چاہئے جو ایسے نسوارتھ لوگوں کی جماعت ہو جو عہدے سے دور رہکر ملک کی چوطرفہ ترقی کے لئے کام کر سکیں. لیکن کانگریسی نیتا گیری عہدوں کے موہ کو نہ چھوڑ سکی اور راشٹر پتا کی آخری رائے کو نہ ماننے کے لئے طرح طرح کی دلیلیں بنا لی گئیں. کچھ بھی ہو' اتنا طے ہے کہ یہ فیصلہ مناسب نہیں رہا.

लिये ही काम करके यह दिखा सकते हैं कि लोकशाही के कारनामे तानाशाही के वायदों से अच्छे होते हैं."

कितनी समझदारी और दूरंदेशी की सलाह है ! और वह भी उसके मुंह से निकली हुई है जिसने राजदूत का काम संभालने के बाद ही से अपने को ऊँचे दरजे का राजदूत साबित कर दिया है. क्या मुल्क और नेता लोग इस सलाह को समय रहते मान कर ठोस आधार पर घर को ठीक कर लेंगे जिससे कि देस अन्तरक़ौमी मैदान में उठने वाले तेज़ तूफ़ान के धक्के को सह सके और मज़बूती से खड़ा रह सके ? वैसे ही दुनिया का एक अच्छा ख़ासा हिस्सा इसके जाल में फंस चुका है और लड़ाई के बादल हिन्द की सीमा पर मंडरा रहे हैं. हिन्द ऐसा बसा हुआ है कि पड़ोसी देसों में होने वाली गड़बड़ी के असर से वह अछूता रह ही नहीं सकता जब तक कि वह अपने को उनसे माली, उसूली और रूहानी तौर पर बिलकुल अलग न रखे.

दुनिया की कौंसिलों में किसी मुल्क की आवाज़ का महत्व ज़रूर होता है पर उसे मुल्क की भीतरी ताकत समझ बैठना ग़लती है. हमें इस भ्रम में नहीं पड़ना चाहिये कि अंतरक़ौमी दुनिया में हमारे मुल्क की रोज़ बरोज़ बढ़ती हुई इज़्ज़त और दुनिया की कौंसिलों में उसकी ऊँची जगह होने की वजह से घर की बिगड़ती हुई माली और राजकाजी हालतों की चुनौती को भूला जा सकता है. नेहरू सरकार की दुनिया की गुट बन्दी से अलग रहने की नीति की वजह से [illegible] मैदान में हिन्द ने जो ऊँची जगह पाई है, ठीक उसी के [illegible] की राजकाजी और माली [illegible] खराब है.

لئے ہی کام کرکے یہ دکھا سکتے ہیں کہ لوک شاہی کے کارنامے تانا شاہی کے وعدوں سے اچھے ہوتے ہیں ."

کتنی سمجھداری اور دور اندیشی کی صلاح ہے ! اور وہ بھی اُس کے منہ سے نکلی ہوئی ہے جس نے راج دوت کا کام سنبھالنے کے بعد ہی سے اپنے کو اونچے درجے کا راج دوت ثابت کر دیا ہے . کیا ملک اور نیتا لوگ اس صلاح کو سمے رہتے مان کر ٹھوس آدھار پر گھر کو ٹھیک کر لینگے جس سے کہ دیس انتر قومی میدان میں اُٹھنے والے تیز طوفان کے دھکے کو سہہ سکے اور مضبوطی سے کھڑا رہ سکے ؟ ویسے ہی دنیا کا ایک اچھا خاصا حصہ اِسکے جال میں پھنس چکا ہے اور لڑائی کے بادل ہند کی سیما پر منڈرا رہے ہیں . ہند ایسا بسا ہوا ہے کہ پڑوسی دیسوں میں ہونے والی گڑبڑی کے اثر سے وہ اچھوتا رہ ہی نہیں سکتا جب تک کہ وہ اپنے کو ان سے مالی، اصولی اور روحانی طور پر بالکل الگ نہ رکھے .

دنیا کی کونسلوں میں کسی ملک کی آواز کا مہتو ضرور ہوتا ہے پر اُسے ملک کی بھیتری طاقت سمجھ بیٹھنا غلطی ہے . ہمیں اِس بھرم میں نہیں پڑنا چاہئے کہ انتر قومی دنیا میں ہمارے ملک کی روز بروز بڑھتی ہوئی عزت اور دنیا کی کونسلوں میں اُس کی اونچی جگہ ہونے کی وجہ سے گھر کی بگڑتی ہوئی مالی اور راج کاجی حالتوں کی چنوتی کو بھولا جا سکتا ہے . نہرو سرکار کی دنیا کی گٹ بندی سے الگ رہنے کی نیتی کی وجہ سے انتر قومی میدان میں ہند نے جو اونچی جگہ پائی ہے ٹھیک اُسی کے اُلٹے ملک میں پھیلی ہوئی راج کاجی اور مالی حالت بہت

हिन्द की एक राजकाजी झांकी

(लेखक—बेलाग)

हिन्द के मास्को राजदूत डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्नन ने हाल में गौहाटी युनिवरसिटी के पहले कनवोकेशन के मौके पर कहा था—

"ग़रीबी की वजह से जो तरह तरह की तकलीफ़ें इनसान को होती हैं उन्हें हमें मानना ही पड़ेगा. यह दान मांगने का सवाल नहीं, इनसाफ़ का सवाल है. ग़रीबी, बीमारी, भूक और जहालत का हमें बहादुरी से सामना करना पड़ेगा नहीं तो देस में बड़ी गड़बड़ी पैदा हो जायगी."

इस विचारवान राजनेता ने अपने लेक्चर में आगे चल कर चेतावनी दी—"हमें अपने को धोके में रखना छोड़ कर खेती का फिर से इस तरह संगठन करना चाहिये कि वह हमारी तरह तरह की स्कीमों के पूरा होने में तेज़ी से मदद कर सके. अगर हमने कार-बार और जायदाद के हक़ों के क़ानून में सुधार करने में देर की तो बहुत से लोग ऊब कर मजबूर हो कर यह समझने लगेंगे कि कम्युनिज़्म के अलावा तरक़्क़ी का और कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं."

उन्होंने ज़ोर के साथ कहा कि "पिछली बातों के सहारे आने वाले समय से नहीं लड़ा जा सकता. हम सिर्फ़ समाजी लोकशाही के

* लेखक की हर बात से हम सहमत नहीं हैं—एडीटर

ھند کی ایک راج کاجی جھانکی

(لیکھک - بےلاگ)

ھند کے ماسکو راجدوت ڈاکٹر سروپلی رادھا کرشنن نے حال میں گوھاٹی یونیورسٹی کے پہلے کنووکیشن کے موقع پر کہا تھا —

''غریبی کی وجہ سے جو طرح طرح کی تکلیفیں انسان کو ہوتی ھیں اُنھیں ھمیں ماننا ھی ہوگا . یہ دان مانگنے کا سوال نہیں انصاف کا سوال ھے . غریبی، بیماری، بھوک اور جہالت کا ھمیں بہادری سے سامنا کرنا پڑے گا نہیں تو دیس میں بڑی گڑبڑی پیدا ھو جائیگی .''

اِس وچاروان راج نیتا نے اپنے لیکچر میں آگے چلکر چیتاونی دی— ''ھمیں اپنے کو دھوکے میں رکھنا چھوڑ کر کھیتی کا پھر سے اِس طرح سنگٹھن کرنا چاھئے کہ وہ ھماری طرح طرح کی اسکیموں کے پورا ھونے میں تیزی سے مدد کر سکے . اگر ھم نے کاروبار اور جائداد کے حقوں کے قانون میں سدھار کرنے میں دیر کی تو بہت سے لوگ اوب کر مجبور ھو کر یہ سمجھنے لگیں گے کہ کمیونزم کے علاوہ ترقی کا اور کوئی دوسرا راستہ ھے ھی نہیں .''

اُنھوں نے زور کے ساتھ کہا کہ ''پچھلی باتوں کے سہارے آنے والے سمے سے نہیں لڑا جا سکتا . ھم صرف سماجی لوک شاھی کے

* لیکھک کی ھر بات سے ھم سہمت نہیں ھیں . —اڈیٹر

मूँग	एक मन पक्के के दाम	एक रुपया छै आने
उड़द	,, ,,	एक रुपया सवा सात आने
मूठ	,, ,,	एक रुपया साढ़े तीन आने

मजदूरी

अच्छे से अच्छे पत्थर के कारीगर, राज या बढ़ई को साढ़े चार आने रोज मजदूरी मिलती थी. आम मजदूरों को सवा आना रोज यानी पाँच पैसे रोज मिलता था.

एक मामूली मजदूर, जो केवल पाँच पैसे रोज कमाता था, बारह दिन मजदूरी करके चार आदमियों को आठ दिन तक खिला पिला सकता था. इसी तरह एक मामूली मजदूर पाँच पैसे रोज कमाकर दो महीने की मजदूरी से चार आदमियों के आठ जोड़े कपड़े तैयार करा कर दे सकता था.

गरीब से गरीब मजदूर के घर में भी चाँदी के गहने होते थे क्या आजाद भारत में वह दिन फिर आ सकते हैं?

"मुझ पर यह इलज़ाम लगाया गया है कि मैं मुसलमानों को खुश करने की कोशिश करता हूँ मगर मैं ऐसा करूँ, तो हर्ज क्या है? मुमकिन है कुछ मुसलमान मुझे नुकसान पहुँचाना चाहें, लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं होता कि बदले में मैं भी उनका नुकसान करूँ.

फूट एक भयानक चीज़ है. मुग़लों ने और बाद में अंग्रेज़ों ने हिन्दुस्तान को जीता तो हमारे राजाओं की फूट के कारन ही. **आज की जनता में भी फूट है.** कितनी ऊँची नीची जातियाँ हैं. **यह सब दूर होना ही चाहिये."**

—महात्मा गाँधी

مونگ	ایک من پکے کے دام	ایک روپیہ چھ آنے
اُڑد	.. ..	ایک روپیہ سوا سات آنے
موٹھ	.. ..	ایک روپیہ ساڑھے تین آنے

مزدوری

اچھے سے اچھے پتھر کے کاریگر، راج یا بڑھئی کو ساڑھے چار آنے روز مزدوری ملتی تھی۔ عام مزدوروں کو سوا آنہ روز یعنی پانچ پیسے روز ملتا تھا۔

ایک معمولی مزدور جو کیول پانچ پیسے روز کماتا تھا، بارہ دن مزدوری کر کے چار آدمیوں کو آٹھ دن تک کھلا پلا سکتا تھا۔ اسی طرح ایک معمولی مزدور پانچ پیسے روز کما کر دو مہینے کی مزدوری سے چار آدمیوں کو آٹھ جوڑے کپڑے تیار کرا کر دے سکتا تھا۔

غریب سے غریب مزدور کے گھر میں بھی چاندی کے گہنے ہوتے تھے کیا آزاد بھارت میں وہ دن پھر آسکتے ہیں؟

"مجھ پر یہ الزام لگایا گیا ہے کہ میں مسلمانوں کو خوش کرنے کی کوشش کرتا ہوں۔ مگر میں ایسا کروں، تو حرج کیا ہے؟ ممکن ہے کچھ مسلمان مجھے نقصان پہنچانا چاہیں، لیکن اس کا مطلب یہ تو نہیں ہوتا کہ بدلے میں میں بھی اُن کا نقصان کروں۔

پھوٹ ایک بھیانک چیز ہے۔ مغلوں نے اور بعد میں انگریزوں نے ہندوستان کو جیتا تو ہمارے راجاؤں کی پھوٹ کے کارن ہی۔ آج کی جنتا میں بھی پھوٹ ہے۔ کتنی اونچی نیچی جاتیاں ہیں۔ یہ سب دور ہونا ہی چاہئے۔"

—مہاتما گاندھی

धान	एक मन पक्के के दाम		सवा बारह आने
चावल खुशबूदार किस्म अव्वल	,,	,,	दो रुपए
ज्वार	,,	,,	छै आने
बाजरा	,,	,,	पाँच आने
मैदा	,,	,,	बारह आने
चना	,,	,,	पाँच आने
मूँग	,,	,,	ग्यारा आने
उड़द	,,	,,	दस आने
मूठ	,,	,,	सवा छै आने
सफ़ेद चीनी उम्दा	,,	,,	तीन रुपया बारह आने
लाल शकर	,,	,,	एक रुपया चौदह आने
घी	,,	,,	तीन रुपया आठ आने
तेल	,,	,,	दो रुपया ग्यारह आने
नमक	,,	,,	छै आने
दूध	,,	,,	पन्द्रह आने
गुड़	,,	,,	एक रुपया सात आने

सन १६१२ ई० में सम्राट जहाँगीर के ज़माने मे एक अंगरेज़ यात्री मिस्टर राइट हिन्दुस्तान आया था. वह जहाँ जाता था एक आना रोज़ में बड़े आराम से अपना गुज़र कर सकता था.

सन १८५७ के भाव

गेहूँ	एक मन पक्के के दाम		डेढ़ रुपया
धान	,,	,,	एक रुपया सवा दो आने
जौ	,,	,,	एक रुपया

دھان	ایک من پکے کے دام		سوابارہ آنے
چاول خوشبودار قسم اول	,,	,,	دو روپے
جوار	,,	,,	چھ آنے
باجرا	,,	,,	پانچ آنے
میدا	,,	,,	بارہ آنے
چنا	,,	,,	پانچ آنے
مونگ	,,	,,	گیارہ آنے
اڑد	,,	,,	دس آنے
موٹھ	,,	,,	سوا چھ آنے
سفید چینی عمدہ	,,	,,	تین روپیہ بارہ آنے
لال شکر	,,	,,	ایک روپیہ چودہ آنے
گھی	,,	,,	تین روپیہ آٹھ آنے
تیل	,,	,,	دو روپیہ گیارہ آنے
نمک	,,	,,	چھ آنے
دودھ	,,	,,	پندرہ آنے
گڑ	,,	,,	ایک روپیہ سات آنے

سن ۱۶۱۲ع میں سمراٹ جہانگیر کے زمانے میں ایک انگریز یاتری مسٹر رائٹ ہندوستان آیا تھا ۔ وہ جہاں جاتا تھا ایک آنہ روز میں بڑے آرام سے اپنا گزر کر سکتا تھا ۔

سن ۱۸۵۷ع کے بھاؤ

گیہوں	ایک من پکے کے دام		ڈیڑھ روپیہ
دھان	,,	,,	ایک روپیہ سوا دو آنے
جو	,,	,,	ایک روپیہ

का मामला समझता है इसलिये बिला साफ़ किया नाज देता है और मिल (गिरनी) वाले उजरत माक़ूल लेने के बावजूद चावल को पूरे तौर से साफ़ नहीं करते. धान और कंकर मिट्टी बाक़ी रखते हैं. और राशन बन्दी के दूकानदार भी भूसा और धान, कंकर या परम यानी बारीक किनकी मिला देते हैं. अगर दूकानदार से शिकायत की जाय तो साफ़ जवाब मिलता है कि सरकार से ही आया हुआ नाज है, हम क्या करें.

राशन बन्दी के दूकानदार भी लोगों पर रहम नहीं करते और न चोरी से अनाज बेचने वाले, जिसका नतीजा यह है कि राशन बन्दी से आम लोगों को कोई आराम नहीं है. अख़बारों से भी आए दिन मेरे विचारों की तसदीक़ होती रहती है.

राशन बन्दी से आम लोगों के अलावा सरकारी मुहकमों के लोगों को भी कोई ख़ास आराम नहीं है. अख़बारों में देखा गया है कि हुकूमत सस्ता अनाज मुहैया करने के लिये हर साल दो ढाई करोड़ रुपया ख़र्च करती है. इस पर भी दस साल पहले जैसा न अच्छा साफ़ नाज मिलता है न ज़िन्दगी की ज़रूरत की कोई और चीज़. दस साल पहले के भावों से अब के भावों का मुक़ाबला करें तो चार सौ फ़ी सैकड़ा से हज़ार फ़ी सैकड़ा तक हर चीज़ महंगी है और दिनों, महीनों सालों को छोड़िये. मिनटों में महंगाई बढ़ती ही जाती है. यहाँ हम सोलहवीं से उन्नीसवीं सदी तक के नाज वग़ैरा के भाव देते हैं:—

सम्राट अकबर (१५५६ ई० से १६०५ ई०) के समय के भाव

गेहूं	एक मन पक्के के दाम	आठ आने
जौ	,, ,,	पाँच आने

کا معاملہ سمجھتا ہے اسلئے بلا صاف کیا ناج دیتا ہے اور مل (گرنی) والے اُجرت معقول لینے کے باوجود چاول کو پورے طور سے صاف نہیں کرتے' دھان اور کنکر مٹی باقی رکھتے ہیں. اور راشن بندی کے دوکاندار بھی بھوسہ اور دھان' کنکر یا دم یعنی باریک کنکی ملا دیتے ہیں. اگر دوکاندار سے شکایت کی جائے تو صاف جواب ملتا ہے کہ سرکار سے ہی آیا ہوا ناج ہے ہم کیا کریں.

راشن بندی کے دوکاندار بھی لوگوں پر رحم نہیں کرتے اور نہ چوری سے اناج بیچنے والے' جسکا نتیجہ یہ ہے کہ راشن بندی سے عام لوگوں کو کوئی آرام نہیں ہے. اخباروں سے بھی آئے دن میرے وچاروں کی تصدیق ہوتی رہتی ہے.

راشن بندی سے عام لوگوں کے علاوہ سرکاری محکموں کے لوگوں کو بھی کوئی خاص آرام نہیں ہے. اخباروں میں دیکھا گیا ہے کہ حکومت سستا اناج مہیا کرنے کے لئے ہر سال دو ڈھائی کروڑ روپیہ خرچ کرتی ہے. اس پر بھی دس سال پہلے جیسا نہ اچھا صاف ناج ملتا ہے نہ زندگی کی ضرورت کی کوئی اور چیز. دس سال پہلے کے بھاؤں سے اب کے بھاؤں کا مقابلہ کریں تو چار سو فی سیکڑا سے ہزار فی سیکڑا تک ہر چیز مہنگی ہے اور دنوں' مہینوں' سالوں کو چھوڑیئے منٹوں میں مہنگائی بڑھتی ہی جاتی ہے. یہاں ہم سولہویں سے اُنیسویں صدی تک کے ناج وغیرہ کے بھاؤ دیتے ہیں:—

سمراٹ اکبر (١٥٥٦ء سے ١٦٠٥ء) کے سمے کے بھاؤ

گیہوں	ایک من پکے کے دام	آٹھ آنے
جو	,, ,,	پانچ آنے

लोगों को देते हैं. चावल में धान और रेती मिली रहती है. अगर दूकानदार से शिकायत की जाय तो उसका साफ़ जवाब यह होता है कि सरकारी गोदाम से ऐसा ही मिलता है हम क्या कर सकते हैं. लेने वाला भूका होता है इसलिये उस को जैसा कुछ नाज मिले लाकर बाल बच्चों का पेट भरना जरूरी होता है. वह मजबूर है कि हर हाल में रातिब बन्दी की दूकान से ही नाज खरीदे. वह नाज चाहे खराब और तन्दुरुस्ती के खिलाफ़ भी हो और घर लाकर खुद साफ़ करे. घर में साफ़ करने के बाद नाज सेर का तीन पाव उतरता है. अगर न लाए तो बाल बच्चों को भूका मारे. देहात में यह भी नहीं मिलता और न सरकारी भाव से मिलता है इसकी वजह से अब आदमियों ने जानवरों के खाने की घास खाना शुरू कर दिया है. कुदरती अकालों में अगर अनाज न मिला तो लोग जंगल के कन्द मूल फल खा कर जीते थे. अब साइन्स ने उस को भी नापैद कर दिया है. इसलिये घास खाना जरूरी हो गया है नहीं तो वक़्त से पहले खुदा के यहां पहुँच जाना लाज़िमी हो जाता है.

सरमायादार, जमींदार और गाँव के साहूकार अनाज छिपाकर रखते हैं जिसमें कि आगे मन माने दाम पर बेचें इसकी रोक थाम के लिये किसानों से सीधे नाज लेने के लिये सरकार ने कारपोरेशन बनाई और कारपोरेशन के गोदामों में हज़ारों बोरे नाज जमा किया जो अकसर चोरी जाता है और चोरी से बेच भी लिया जाता है जिस से हज़ारों रुपए का खरीदा हुआ नाज चोरों की भेंट हो जाता है. किसान सरकार की तरफ़ से नाज लिये जाने को एक जबरदस्ती

لوگوں کو دیتے هیں . چاول میں دهان اور ریتی ملی رهتی هے . اگر دوکاندار سے شکایت کی جائے تو اس کا صاف جواب یہ هوتا هے کہ سرکاری گودام سے ایسا هی ملتا هے هم کیا کر سکتے هیں . لینے والا بهوکا هوتا هے اس لئے اس کو جیسا کچھ ناج ملے لاکر بال بچوں کا پیٹ بهرنا ضروری هوتا هے . وہ مجبور هے کہ هر حال میں راتب بندی کی دوکان سے هی ناج خریدے . وہ ناج چاهے خراب اور تندرستی کے خلاف بهی هو اور گهر لاکر خود صاف کرے . گهر میں صاف کرنے کے بعد ناج سیر کا تین پاؤ اترتا هے . اگر نہ لائے تو بال بچوں کو بهوکا مارے . دیہات میں یہ بهی نہیں ملتا اور نہ سرکاری بهاؤ سے ملتا هے . اس کی وجہ سے اب آدمیوں نے جانوروں کے کهانے کی گهاس کهانا شروع کر دیا هے . قدرتی اکالوں میں اگر اناج نہ ملا تو لوگ جنگل کے کند مول پهل کها کر جیتے تهے . اب سائنس نے اسکو بهی نابید کر دیا هے . اس لئے گهاس کهانا ضروری هو گیا هے نہیں تو وقت سے پہلے خدا کے یہاں پہونچ جانا لازمی هو جاتا هے .

سرمایہ دار، زمیندار اور گاؤں کے ساهوکار اناج چهپا کر رکهتے هیں جسمیں کہ آگے من مانے دام پر بیچیں . اسکی روک تهام کے لئے کسانوں سے سیدهے ناج لینے کے لئے سرکار نے کارپوریشن بنائی اور کارپوریشن کے گوداموں میں هزاروں بورے ناج جمع کیا جو اکثر چوری جاتا هے اور چوری سے بیچ بهی لیا جاتا هے جس سے هزاروں روپے کا خریدا هوا ناج چوروں کی بهینٹ هوجاتا هے . کسان سرکار کی طرف سے ناج لئے جانے کو ایک زبردستی

बीच के सब ही आदमी शामिल थे. रातिब बन्दी की दूकानों को हर सनीचर के दिन छुट्टी दी जाने लगी और उनके काम के वक़्त सुबह आठ बजे से बारह बजे तक और शाम को तीन बजे से सात बजे तक मुक़र्रर किये गए. जुमा (शुक्र) से जुमारात (ब्रिहस्पत) तक सात दिन का सप्ताह ठहरा दिया गया. जो आदमी जुमारात तक नाज न ले सका उसका एक हफ़्ते का नाज डूब गया जो दूकानदारों का माल हो गया और जो आदमी बारीक चावल ख़रीद लाने की हैसियत नहीं रखता उसने चावल ख़रीदना छोड़ दिया और जो पीली ज्वार या रागी नहीं खाता वह भी भूका मरने लगा. एक दो साल तो कहीं से बाहर के मोटे उबले हुए चावल मंगाए गए और वहीं हर आदमी को दिये जाने लगे और मुहकमा राशनिंग के क़ायदे के ख़िलाफ़ ख़र्च किये जाने लगे और जो बारीक चावल खाता था उसने मोटे और उबले हुए चावल लेना छोड़ दिया. इन सब इंतज़ामों से चोर बाज़ारी ख़ूब बढ़ी और आम लोगों को तरह तरह की तकलीफ़ें पहुँचने लगीं और नाज ख़ुद गोदामों से कूड़ा मिला हुआ बटने लगा. अख़बारों में मैंने देखा कि सरकार की तरफ़ से हुकुम दिये गए कि चावल की पालिश न की जाय क्योंकि चावल का विटामिन नष्ट हो जाता है जो आदमी की तन्दुरुस्ती के लिये ज़रूरी है. रियासत हैदराबाद में ज्वारी कभी कम नहीं हुई. रातिब बन्दी के शुरू के दिनों में छै लाख बोरे ज्वारी बम्बई भेज दी गई. अब साल भर से रियासत में ज्वारी नहीं है उसकी जगह चावल की किनकी दी जा रही है. गोदाम से अगर अच्छी किनकी भी मिले तो उसमें रातिब बन्दी के दूकानदार परम (बारीक किनकी) मिलाकर

بیچ کے سب ہی آدمی شامل تھے. راتب بندی کی دوکانوں کو ہر سنیچر کے دن چھٹی دی جانے لگی اور ان کے کام کے وقت صبح آٹھ بجے سے بارہ بجے تک اور شام کو تین بجے سے سات بجے تک مقرر کئے گئے . جمعہ (شکر) سے جمعرات (برہسپت) تک سات دن کا سپتاہ ٹھیرا دیا گیا . جو آدمی جمعرات تک ناج نہ لے سکا اُسکا ایک ہفتے کا ناج ڈوب گیا جو دوکان داروں کا مال ہو گیا اور جو آدمی باریک چاول خرید لانے کی حیثیت نہیں رکھتا اس نے چاول خریدنا چھوڑ دیا اور جو پیلی جوار یا راگی نہیں کھاتا وہ بھی بھوکا مرنے لگا . ایک دو سال تو کہیں سے باہر کے موٹے ابلے ہوئے چاول منگائے گئے اور وہیں ہر آدمی کو دئے جانے لگے اور محکمہ راشننگ کے قاعدے کے خلاف خرچ کئے جانے لگے اور جو باریک چاول کھاتا تھا اُس نے موٹے اور اُبلے ہوئے چاول لینا چھوڑ دیا . ان سب انتظاموں سے چور بازاری خوب بڑھی اور عام لوگوں کو طرح طرح کی تکلیفیں پہونچنے لگیں اور ناج خود گوداموں سے کوڑا ملا ہوا بٹنے لگا . اخباروں میں میں نے دیکھا کہ سرکار کی طرف سے حکم دئے گئے کہ چاول کی پالش نہ کی جائے کیونکہ چاول کا وٹامن نشٹ ہو جاتا ہے جو آدمی کی تندرستی کے لئے ضروری ہے. ریاست حیدرآباد میں جواری کبھی کم نہیں ہوئی . راتب بندی کے شروع کے دنوں میں چھ لاکھ بورے جواری بمبئی بھیجدی گئی . اب سال بھر سے ریاست میں جواری نہیں ہے اُس کی جگہ چاول کی کنکی دی جا رہی ہے . گودام سے اگر اچھی کنکی بھی ملے تو اُس میں راتب بندی کے دوکاندار پرم (باریک کنکی) ملا کر

हैदराबाद में रातिब बन्दी (राशनिंग)

(भाई सैयद ख़्वाजा, हैदराबाद दक्खिन)

हकूमत ने राशन इस लिये बांधा कि लोगों को वक़्त पर मस्ती चीज़ें मिलें. उसके साथ ही नाज वग़ैरा के ख़रीदने बेचने के लिये इत्तहादी (कोआपरेटिव) कारपोरेशन को कुल अधिकार दे दिये और हज़ारों रुपए माहवार तनख़ाह का रातिब बन्दी का अमला मुक़र्रर किया गया. चोर बाज़ारी की रोक थाम के लिये बाज़ाबता नौकर रक्खे गए और रातिब बन्दी की दूकानों की देख रेख के लिये कई इन्सपेक्टर मुक़र्रर किये गए. नाज जमा करने और रखने के लिये लाखों रुपए के ख़रचे से बीसों गोदाम बनाए गए जहां से नाज रातिब बन्दी की दूकानों को पहुँचाने के लिये कई लारियों और जानवरों, मुंशियों और इन्सपेक्टरों का नियोजन हुआ और हर साल हज़ारों रुपयों का नया बारदाना ख़रीद कर रातिब बन्दी के दूकानदारों को मुफ़्त दिया जाने लगा. हैदराबाद की छै सात लाख आबादी के लिये सिर्फ़ चार पांच सौ रातिब बन्दी की दूकानें क़ायम की गईं और हर दूकान पीछे दो हज़ार रातिब कार्ड देना तय पाया. इन दो हज़ार आदमियों के लिये गेहूं, चावल मोटे हों या बारीक, ज्वार पीली हो या सफ़ेद, यहां तक कि बाजरा और रागी वग़ैरा नाज पहले तो रोज़ाना हर बालिग़ आदमी के लिये सात छटांक मिला, अब छै छटांक मिलता है और बच्चों को बारह साल की उमर तक इसका आधा रातिब दिया जाने लगा. इसी में बड़े लोग छोटे लोग और

حیدرآباد میں راتب بندی (راشننگ)

(بھائی سید خواجہ، حیدرآباد دکھن)

حکومت نے راشن اس لئے باندھا کہ لوگوں کو وقت پر سستی چیزیں ملیں ۔ اُس کے ساتھ ہی ناج وغیرہ کے خریدنے بیچنے کے لئے اتحادی (کوآپریٹو) کارپوریشن کو کل ادھیکار دے دیے اور ہزاروں روپے ماہوار تنخواہ کا راتب بندی کا عملہ مقرر کیا گیا ۔ چور بازاری کی روک تھام کے لئے باضابطہ نوکر رکھے گئے اور راتب بندی کی دوکانوں کی دیکھ ریکھ کے لئے کئی انسپکٹر مقرر کئے گئے۔ ناج جمع کرنے اور رکھنے کے لئے لاکھوں روپے کے خرچے سے بیسوں گودام بنائے گئے جہاں سے ناج راتب بندی کی دوکانوں کو پہونچانے کے لئے کئی لاریوں اور جانوروں، منشیوں اور انسپکٹروں کا نیوجن ہوا اور ہر سال ہزاروں روپیوں کا نیا بار دانہ خرید کر راتب بندی کے دوکانداروں کو مفت دیا جانے لگا ۔ حیدرآباد کی چھ سات لاکھ آبادی کے لئے صرف چار پانچ سو راتب بندی کی دوکانیں قائم کی گئیں اور ہر دوکان پیچھے دو ہزار راتب کارڈ دینا طے پایا۔ ان دو ہزار آدمیوں کے لئے گیہوں، چاول موٹے ہوں یا باریک، جوار پیلی ہو یا سفید، یہاں تک کہ باجرہ اور راگی وغیرہ ناج پہلے تو روزانہ ہر بالغ آدمی کے لئے سات چھٹانک ملا، اب چھ چھٹانک ملتا ہے اور بچوں کو بارہ سال کی عمر تک اس کا آدھا

वह बात कितनी साफ़ दिखाई पड़ती है कि सारा भारत एक डोरी में और एक कलचर में बंधने के लिये कितनी कोशिश में है. यह भी साफ़ झलकता है कि यह कलचर किसी बंद तालाब की तरह सड़ने वाली कलचर नहीं है बल्कि यह कलचर बढ़ती हुई और निखरती हुई कलचर है. इसकी अनेक राग रागनियों में अलग अलग राज और अलग अलग धर्म, करनाटक और बंगाल. पंजाब और उत्तरप्रदेश, हिन्दू और ईसाई, मुसलमान और पारसी जो सुरीला संगीत पैदा करते हैं वही हिन्दुस्तानी कलचर है.

"आज हवा बिगड़ी हुई है. एक दूसरे पर इलज़ाम लगाए जाते हैं. ऐसी हालत में यह सोचना कि हम ग़लती कर ही नहीं सकते. मूर्खता होगी. हम ऐसा दावा कर सकें, वह ख़ुशक़िस्मती आज कहाँ ? अगर मेहनत करके हम झगड़े को फैलने से रोक सकें, और फिर उसे जड़ बुनियाद से उखाड़ फेंकें तो बहुत है. अगर अपने दोश देखने और सुनने के लिये. अपनी आँखें और कान खोल रहें तभी हम ऐसा कर सकेंगे. क़ुदरत ने हमें ऐसा बनाया है कि हम अपनी पीठ अपने से नहीं देख सकते. उसे तो दूसरे ही देख सकते हैं. इसलिये अक़लमन्दी यही है कि जो दूसरे देख सकते हैं उससे हम फ़ायदा उठावें"

—महात्मा गांधी

یہ بات کتنی صاف دکھائی پڑتی هے کہ سارا بھارت ایک ڈوری میں اور ایک کلچر میں بندھنے کے لئے کتنی کوشش میں هے . یہ بھی صاف جھلکتا هے کہ یہ کلچر کسی بند تالاب کی طرح سڑنے والی کلچر نہیں هے بلکہ یہ کلچر بڑھتی ہوئی اور نکھرتی ہوئی کلچر هے . اِس کی انیک راگ راگنیوں میں الگ الگ راج اور الگ الگ دھرم، کرناٹک اور بنگال، پنجاب اور اُتر پردیش، هندو اور عیسائی، مسلمان اور پارسی جو سریلا سنگیت پیدا کرتے هیں وهی هندستانی کلچر هے .

" آج هوا بگڑی ہوئی هے . ایک دوسرے پر الزام لگائے جاتے هیں . ایسی حالت میں یہ سوچنا کہ هم غلطی کر هی نہیں سکتے، مورکھتا ہوگی . هم ایسا دعویٰ کر سکیں، وہ خوش قسمتی آج کہاں ؟ اگر محنت کر کے هم جھگڑے کو پھیلنے سے روک سکیں، اور پھر اُسے جڑ بنیاد سے اُکھاڑ پھینکیں تو بہت ہے . اگر اپنے دوش دیکھنے اور سننے کے لئے، اپنی آنکھیں اور کان کھولے رهیں تبھی هم ایسا کر سکیں گے . قدرت نے همیں ایسا بنایا هے کہ هم اپنی پیٹھ اپنے سے نہیں دیکھ سکتے . اُسے تو دوسرے هی دیکھ سکتے هیں . اس لئے عقلمندی یہی هے کہ جو دوسرے دیکھ سکتے هیں اُس سے هم فائدہ اُٹھاویں . "

—مہاتما گاندھی

"इस तरह की उदारता अब हमें सिर्फ़ देस भर के लिये ही नहीं, सारी दुनिया तक ले जानी होगी. सारे मानव समाज को एक सूत्र में पिरोना होगा तभी आज की बुराइयों से हम छुटकारा पा सकेंगे. इसके लिये तंग भावनाएं भस्म करनी होंगी."

दक्खिन भारत में हिन्दी प्रचार एक बहुत बड़ी देस सेवा का काम है. उनके लिये हिन्दुस्तानी ही हिन्दी है और हिन्दी ही हिन्दुस्तानी. दक्खिन भारत हिन्दुस्तानी प्रचार सभा मद्रास ने इस मामले में तारीफ़ के क़ाबिल काम किया है. यह सभा मलयालम, तामिल, तेलगू और कन्नड़, चार भाशाओं के सूबों में हिन्दी सिखाने का काम करती है. इसके प्रधान मंत्री श्री सत्यनारायन जी पार्लियामेंट के मेम्बर भी हैं.

केरल हिन्दी विद्यार्थी रैली में बम्बई के बड़े वज़ीर श्री बी. जी. खेर ने बोलते हुए कहा:—

"हमारे विधान में जिस हिंदी की बात कही गई है वह उत्तरप्रदेश के नये पंडितों की हिन्दी नहीं होगी. वह तो हम तैयार करेंगे. जैसे गंगा का प्रवाह छोटे छोटे कई प्रवाहों का संगम है उसी तरह हमारी हिन्दी देस की सारी भाशाओं की गंगा बनेगी. चौदह भाशाएं अपने भंडार से हिन्दी को मालामाल करेंगी. तब हिन्दी का जो सरूप और शैली निखरेगी उसी में सारे देस के रहने वालों के इरादे, उनकी उम्मीदें, हर्श और प्रगति झलकेंगी."

दक्खिन भारत में हिन्दी प्रचारकों और हिन्दी विद्यार्थियों की जो गिनती बढ़ती जारही है और उनमें जो जोश पाया जाता है उससे

"اِس طرح کی اُدارتا اب ہمیں صرف دیس بھر کے لئے ہی نہیں، ساری دنیا تک لے جانی ہوگی۔ سارے مانو سماج کو ایک سوتر میں پرونا ہوگا تبھی آج کی برائیوں سے ہم چھٹکارا پاسکیں گے۔ اِسکے لئے تنگ بھاؤنائیں بھسم کرنی ہونگی۔"

دکھن بھارت میں ہندی پرچار ایک بہت بڑی دیس سیوا کا کام ہے۔ اُن کے لئے ہندستانی ہی ہندی ہے اور ہندی ہی ہندستانی۔ دکھن بھارت ہندستانی پرچار سبھا مدراس نے اِس معاملے میں تعریف کے قابل کام کیا ہے۔ یہ سبھا ملیالم، تامل، تیلگو اور کنڑ، چار بھاشاؤں کے صوبوں میں ہندی سکھانے کا کام کرتی ہے اسکے پردھان منتری شری ستیہ نارائن جی پارلیامنٹ کے ممبر بھی ہیں۔

کیرل ہندی ودیارتھی ریلی میں بمبئی کے بڑے وزیر شری بی۔ جی۔ کھیر نے بولتے ہوئے کہا:—

"ہمارے ودھان میں جس ہندی کی بات کہی گئی ہے وہ اُتر پردیش کے نئے پنڈتوں کی ہندی نہیں ہوگی۔ وہ تو ہم تیار کرینگے۔ جیسے گنگا کا پرواہ چھوٹے چھوٹے کئی پرواہوں کا سنگم ہے اُسی طرح ہماری ہندی دیس کی ساری بھاشاؤں کی گنگا بنے گی۔ چودہ بھاشائیں اپنے بھنڈار سے ہندی کو مالا مال کرینگی تب ہندی کا جو سروپ اور شیلی نکھرے گی اُسی میں سارے دیس کے رہنے والوں کے ارادے اُن کی امیدیں، ہرش اور پرگتی جھلکیں گی۔"

دکھن بھارت میں ہندی پرچارکوں اور ہندی ودیارتھیوں کی جو گنتی بڑھتی جارہی ہے اور اُن میں جو جوش پایا جاتا ہے اُس سے

जड़ प्रकृति की सुन्दरता तो देखी ही, साथ ही समाज और संस्कृति के सवालों पर इस सफ़र में जो रोशनी पड़ी वह कहीं ज़्यादा अहम है.

केरल प्रान्त के हिन्दी प्रचारकों के बीच जब पंडित सुन्दरलाल जी भाशन दे रहे थे तो ऐसा लग रहा था मानो हिन्दुस्तान की कलचरी एकता मूरतमान होकर रंग बिरंगे सुन्दर और सुगंधित अलग अलग समाज फूलों को एक डोरे में पिरोना चाहती है. उन्होंने हिन्दी प्रचारकों से कहा कि वह हिन्दी के ज़रिये हिन्दुस्तान की सबसे अच्छी सेवा तभी कर सकेंगे जब वह हिन्दी चन्दन की तरह घिसकर लगाई जायगी वरना अगर इसे दियासलाई दिखाकर दूसरे के माथे पर लगाने की कोशिश की गई तो आग बन कर जला देगी. उन्होंने बताया कि हिन्दी हिन्दुस्तान की मिली जुली कलचर की निशानी है और इसलिये भी यह ज़रूरी है कि इस हिन्दी के अन्दर सब प्रान्तों की भाशाओं के अच्छे अच्छे मुहावरे और शब्द अपना लिये जायं.

रहन सहन और रीत रिवाज पर बोलते हुए पंडित जी ने कहा :—

"इन मामलों में हमें बहुत उदार होना चाहिये. न हम में से कोई आज रामचंद्र जी की पोशाक पहनता है और न हमारी बहनें वह पोशाक पहनती हैं जो सीता माई पहनती थीं. हवा पानी और सुविधा के मुताबिक़ पोशाक और खानपान होता है. दक्खिन में हमें खुशी से आपके डोसे, इडली और रसम खाने चाहियें और आपको उत्तर के गुलाब जामुन और क़लाक़न्द खाकर खुशी होनी चाहिये.

جڑ پرکرتی کی سندرتا تو دیکھی ہی' ساتھ ہی سماج اور سنسکرتی کے سوالوں پر اس سفر میں جو روشنی پڑی وہ کہیں زیادہ اہم ہے .

کیرل پرانت کے ہندی پرچارکوں کے بیچ جب پنڈت سندرلال جی بھاشن دے رہے تھے تو ایسا لگ رہا تھا مانو ہندستان کی کلچری ایکتا مورت مان ہو کر رنگ برنگے سندر اور سگندھت الگ الگ سماج پھولوں کو ایک ڈورے میں پرونا چاہتی ہے . اُنھوں نے ہندی پرچارکوں سے کہا کہ وہ ہندی کے ذریعے ہندستان کی سب سے اچھی سیوا تبھی کر سکیں گے جب وہ ہندی چندن کی طرح گھس کر لگائی جائیگی ورنہ اگر اسے دیاسلائی دکھا کر دوسرے کے ماتھے پر لگانے کی کوشش کی گئی تو آگ بن کر جلا دیگی . اُنھوں نے بتایا کہ ہندی ہندستان کی ملی جلی کلچر کی نشانی ہے اور اِسلئے بھی یہ ضروری ہے کہ اِس ہندی کے اندر سب پرانتوں کی بھاشاؤں کے اچھے اچھے محاورے اور شبد اپنا لئے جائیں .

رہن سہن اور ریت رواج پر بولتے ہوئے پنڈت جی نے کہا :—

' اِن معاملوں میں ہمیں بہت اُدار ہونا چاہئے . نہ ہم میں سے کوئی آج رام چندر جی کی پوشاک پہنتا ہے اور نہ ہماری بہنیں وہ پوشاک پہنتی ہیں جو سیتا مائی پہنتی تھیں . ہوا پانی اور سوویدھا کے مطابق پوشاک اور کھان پان ہوتا ہے . دکھن میں ہمیں خوشی سے آپ کے ڈوسے' اِڈلی اور رسم کھانے چاہئیں اور آپ کو اُتر کے گلاب جامن اور قلاقند کھا کر خوشی ہونی چاہئے .

इजाज़त नहीं है. यह बात खटकने वाली और अन्याय ही नहीं फूट की आग भी भड़काने वाली है. जो हिन्दू अन्दर जाते हैं उन्हें भी सब कपड़े उतार कर सिर्फ धोती या लुंगी. जो बग़ैर सिली हो, पहन कर जाना पड़ता है. जिस समय हम मन्दिर से बाहर निकले तो दो अंगरेज़ महिलाओं को खड़े देखा. उन्होंने अन्दर देखने की इच्छा ज़ाहिर की और हम से पूछा कि क्या वह अन्दर जा सकती हैं. हमने उनसे कहा कि शायद उन्हें साड़ी पहन कर अन्दर जाना होगा. लेकिन इतने में ही वहीं के रहने वाले किसी आदमी ने कहा कि इस मन्दिर में सिर्फ हिन्दू ही जा सकते हैं जिन पर उन महिलाओं ने मुकाबला करते हुए कहा कि हम अपने गिरजों में किसी को जाने से नहीं रोकते. उनके चेहरों से लगा कि उन्हें यह बात अच्छी न लगी.

कन्या कुमारी पर सूरज का निकलना और डूबना दोनों ग़ज़ब के सुहावने होते हैं. समन्दर के अन्दर सूरज ज्यों का त्यों दिखाई देता है और साथ ही जो किरनें रोशनी छिटकती हैं उनका ऐसा अच्छा अक्स पानी में दिखाई देता है मानो एक दूसरी दुनिया में भी हम सूरज को निकलते देख रहे हैं. कलाकार का बुरुश या कवि की बानी ही उस सुन्दरता को पकड़ सकती है. मामूली आदमी मंत्रमुग्ध होकर रह जाता है और प्रकृति की बरबस सराहना कर उठता है. पानी की बड़ी बड़ी लहरें जब पत्थर से टकराकर फेन निकालती हैं तो दिल का भीतरी से भीतरी कोना भी हिल उठता है और मालूम होता है वहाँ भी कोई हिलोरें ले रहा है.

मन्दिर के अलावा वहां एक मंडप और नहाने की जगह भी बनी हुई है. सामने एक तैरने का हौज़ भी है.

اجازت نہیں ہے ۔ یہ بات کھٹکنے والی اور انیائے ہی نہیں پھوٹ کی آگ بھی بھڑکانے والی ہے ۔ جو ہندو اندر جاتے ہیں انہیں بھی سب کپڑے اُتار کر صرف دھوتی یا لنگی جو بغیر سلی ہو پہنکر جانا پڑتا ہے ۔ جس سمے ہم مندر سے باہر نکلے تو دو انگریز مہلاؤں کو کھڑے دیکھا ۔ اُنہوں نے اندر دیکھنے کی اچھا ظاہر کی اور ہم سے پوچھا کہ کیا وہ اندر جا سکتی ہیں ۔ ہم نے اُن سے کہا کہ شاید انہیں ساڑی پہنکر اندر جانا ہوگا ۔ لیکن اِتنے میں ہی وہیں کے رہنے والے کسی آدمی نے کہا کہ اِس مندر میں صرف ہندو ہی جاسکتے ہیں جس پر اُن مہلاؤں نے مقابلہ کرتے ہوئے کہا کہ ہم اپنے گرجوں میں کسی کو جانے سے نہیں روکتے ۔ اُن کے چہروں سے لگا کہ اُنہیں یہ بات اچھی نہ لگی ۔

کنیا کماری پر سورج کا نکلنا اور ڈوبنا دونوں غضب کے سہانے ہوتے ہیں ۔ سمندر کے اندر سورج جیوں کا تیوں دکھائی دیتا ہے اور ساتھ ہی جو کرنیں روشنی چھٹکتی ہیں ان کا ایسا اچھا عکس پانی میں دکھائی دیتا ہے مانو ایک دوسری دنیا میں بھی ہم سورج کو نکلتے دیکھ رہے ہیں ۔ کلاکار کا برش یا کوی کی بانی ہی اُس سندرتا کو پکڑ سکتی ہے ۔ معمولی آدمی منتر مگدھ ہو کر رہ جاتا ہے اور پرکرتی کی بربس سراہنا کر اُٹھتا ہے ۔ پانی کی بڑی بڑی لہریں جب پتھر سے ٹکرا کر پھین نکالتی ہیں تو دل کا بھیتری سے بھیتری کونا بھی ہل اُٹھتا ہے اور معلوم ہوتا ہے وہاں بھی کوئی ہلوریں لے رہا ہے ۔

مندر کے علاوہ وہاں ایک منڈپ اور نہانے کی جگہ بھی بنی ہوئی ہے ۔ سامنے ایک تیرنے کا حوض بھی ہے ۔

मछलीघर और समन्दर का किनारा है. समाज विद्या, जन्तु विद्या और प्रान विद्या पर खोज करने वालों के लिये इन जगहों पर अच्छा मसाला है. श्री रवि वर्मा की चित्रशाला में चित्रकला के बहुत अच्छे नमूनों का संग्रह किया गया है. इस संग्रह में अपने देस की आजकल की चित्रकारी के अलावा पुरानी चित्रकला के नमूनों में राजपूत और मुग़ल चित्रकारी के बड़े अच्छे नमूने हैं. दूसरे देसों के संग्रह में जावा, चीन, जापान और तिब्बती चित्रकारी के अच्छे नमूने हैं. यहीं पर औरंगज़ेब के हाथ का लिखा क़ुरान और फ़ैज़ी के हाथ का लिखा सुन्दर तसवीरों वाला महाभारत का फ़ारसी तरजुमा देखने को मिला.

त्रिवेन्द्रम से क़रीब साठ मील की दूरी पर कुमारी अंतरीप है जहां हिन्दुस्तान के धुर दक्खिन की ज़मीन को तीन ओर से तीन सागर छूते हैं. पूरब से बंगाल की खाड़ी, पच्छिम में अरब सागर और बीच में हिन्द महासागर भारत के चरन हमेशा धोते रहते हैं. त्रिवेन्द्रम से कन्या कुमारी तक का रास्ता बहुत सुहावना और रमनीक है. इसी रास्ते में एक क़सबा नागर कोइल पड़ता है. यहां पर हमें इस मौसम में भी बड़े मीठे, ताज़ा और रसीले आम खाने को मिले जब कि उत्तर भारत में अभी आम के पेड़ों पर बौर तक नहीं आया इस रास्ते की शोभा देखकर बग़ैर बात बढ़ाए यह कहा जा सकता है कि क़ुदरत की सुन्दर से सुन्दर छटा अपने देस में पाई जाती है.

कन्या कुमारी का एक मन्दिर है. कहा जाता है कि यह कुमारी शिवजी से विवाह करने के लिये प्रलय का इंतज़ार कर रही है. इस मन्दिर में और उसके पास रामकुमारी पर ग़ैर हिन्दुओं को जाने की

مچھلی گھر اور سمندر کا کنارا ہے ۔ سماج ودیا، جنتو ودیا اور پران ودیا پر کھوج کرنے والوں کے لئے ان جگہوں پر اچھا مسالہ ہے ۔ شری روی ورما کی چتر شالا میں چتر کلا کے بہت اچھے نمونوں کا سنگرہ کیا گیا ہے ۔ اس سنگرہ میں اپنے دیس کی آج کل کی چترکاری کے علاوہ پرانی چتر کلا کے نمونوں میں راجپوت اور مغل چترکاری کے بڑے اچھے نمونے ہیں ۔ دوسرے دیسوں کے سنگرہ میں جاوا، چین، جاپان اور تبتی چترکاری کے اچھے نمونے ہیں ۔ یہیں پر اورنگ زیب کے ہاتھ کا لکھا قرآن اور فیضی کے ہاتھ کا لکھا سندر تصویروں والا مہا بھارت کا فارسی ترجمہ دیکھنے کو ملا ۔

ترویندرم سے قریب ساٹھ میل کی دوری پر کماری انتریپ ہے جہاں ہندستان کے دھور دکھن کی زمین کو تین اور سے تین ساگر چھوتے ہیں ۔ پورب سے بنگال کی کھاڑی، پچھم سے عرب ساگر اور بیچ میں ہند مہا ساگر بھارت کے چرن ہمیشہ دھوتے رہتے ہیں ۔ ترویندرم سے کنیا کماری تک کا راستہ بہت سہاونا اور رمنیک ہے ۔ اسی راستے میں ایک قصبہ ناگر کوئل پڑتا ہے ۔ یہاں پر ہمیں اس موسم میں بھی بڑے میٹھے، تازہ اور رسیلے آم کھانے کو ملے جب کہ اتر بھارت میں ابھی آم کے پیڑوں پر بور تک نہیں آیا ۔ اس راستے کی شوبھا دیکھ کر بغیر بات بڑھائے یہ کہا جا سکتا ہے کہ قدرت کی سندر سے سندر چھٹا اپنے دیس میں پائی جاتی ہے ۔

کنیا کماری کا ایک مندر ہے ۔ کہا جاتا ہے کہ یہ کماری شیوجی سے وواہ کرنے کے لئے پرلے کا انتظار کر رہی ہے ۔ اس مندر میں اور اسکے پاس راس کماری پر غیر ہندوؤں کو جانے کی

हवा पानी के इलाक़े नक़शे में देखे थे. इस सफ़र में इलाहाबाद से गरम कपड़े पहन कर चले और दूसरे रोज़ शाम को नागपुर पार करने के बाद बिजली का पंखा खोलना पड़ा.

नागपुर से मद्रास और मद्रास से धुर दक्खिन ट्रावनकोर राज की ओर जब हम जा रहे थे तो एक अनोखा आनंद महसूस हो रहा था. मालूम हो रहा था मानो हम भारतमाता के मन्दिर की परिक्रमा को निकल पड़े हैं जिसके वरदान से इस देस की कलचरी एकता से अपने दिल और दिमाग़ को सुगन्धित कर सकेंगे.

पच्छिमी घाट के किनारे किनारे जब हमारी रेल त्रिवेन्द्रम की ओर बढ़ रही थी तो क़ुदरत के जितने सुन्दर सीन सामने आए वह शब्दों में बयान नहीं किये जा सकते. नारियल, केला, सुपारी और रबड़ के पेड़ों से लदी हुई हरी भरी पहाड़ियां और उसी में कहीं कहीं पानी के झरने एक अनोखी छटा पैदा करते थे.

ग्यारह जनवरी को हम त्रिवेन्द्रम पहुँचे. त्रिवेन्द्रम 'ट्रावनकोर-कोचीन' रियासत की राजधानी है. यहां की बोली मलयालम है और यहां का राजघराना आजतक मां के वंस पर चलता आ रहा है. बेटे की जगह गद्दी हमेशा भानजे को मिलती है. पढ़े लिखों की तादाद इस रियासत में हिन्दुस्तान के और सब हिस्सों से ज़्यादा है. यहाँ की अस्सी फ़ीसदी जनता शिक्षित बताई जाती है. इनकी भाषा में निकलने वाले दैनिक पत्रों की तादाद २८ और माहवार व हफ़्तेवारों की ४० है. आबादी में चालीस फ़ीसदी ईसाई है

त्रिवेन्द्रम में ख़ास ख़ास देखने लायक़ जगहों में अजायबघर, चिड़ियाघर, रवि वर्मा की चित्रशाला, पच्छिमी ढंग का जंतर मंतर,

ھوا پانی کے علاقے نقشے میں دیکھے تھے . اِس سفر میں الہ‌آباد سے گرم کپڑے پہن کر چلے اور دوسرے روز شام کو ناگپور پار کرنے کے بعد بجلی کا پنکھا کھولنا پڑا .

ناگپور سے مدراس اور مدراس سے دھور دکھن تراونکور راج کی اور جب ھم جا رہے تھے تو ایک انوکھا آنند محسوس ھو رھا تھا . معلوم ھو رھا تھا مانو ھم بھارت ماتا کے مندر کی پریکرما کو نکل پڑے ھیں جسکے وردان سے اس دیس کی کلچری ایکتا سے اپنے دل اور دماغ کو سگندھت کر سکیں گے .

پچھمی گھاٹ کے کنارے کنارے جب ھماری ریل تریویندرم کی اور بڑھ رھی تھی تو قدرت کے جتنے سندر سین سامنے آئے وہ شبدوں میں بیان نہیں کئے جا سکتے . نا ریل، کیلا، سپاری اور ربڑ کے پیڑوں سے لدی ھوئی ھری بھری پہاڑیاں اور اُسی میں کہیں کہیں پانی کے جھرنے ایک انوکھی چھٹا پیدا کرتے ہے .

گیارہ جنوری کو ھم تریویندرم پہنچے . تریویندرم تراونکور کوچین' ریاست کی راجدھانی ھے . یہاں کی بولی ملیالم ھے اور یہاں کا راج گھرانا آج تک ماں کے بنس پر چلتا آرھا ھے . بیٹے کی جگہ گدی ھمیشہ بھانجے کو ملتی ھے . پڑھے لکھوں کی تعداد اِس ریاست میں ھندستان کے اور سب حصوں سے زیادہ ھے . یہاں کی اسی فیصدی جنتا شکشت بتائی جاتی ھے . اِن کی بھاشا میں نکلنے والے دینک پتروں کی تعداد ۲۸ اور ماھوار و ھفتے واروں کی ۴۰ ھے . آبادی میں ۴۰ فیصدی عیسائی ھیں .

تریویندرم میں خاص خاص دیکھنے لائق جگہوں میں عجائب گھر، چڑیا گھر، روی ورما کی چتر شالا، پچھمی ڈھنگ کا جنتر منتر،

इलाहाबाद से कन्याकुमारी

(भाई ओम प्रकाश पालीवाल)

एक बार किसी गांव में श्री जवाहरलाल नेहरू भाशन देने गए. वहां के किसानों ने भारतमाता की जय के नारे लगाए. नेहरू जी ने उनसे पूछा कि आप लोग भारतमाता से क्या समझते हैं ? सभा में सन्नाटा छा गया. सीधे सादे देहाती कोई जवाब न दे सके. जवाहर लाल जी ने समझाया कि भारतमाता का असली रूप समझने के लिये हमें इस देस के फैलाव को ध्यान में लाना होगा. पर हिमालय से कन्याकुमारी तक फैले हुए इस देस की ज़मीन, पहाड़, नदी, नाले सब मिल कर भी 'भारतमाता' नहीं बनाते. अलग अलग पैदावार, हवा पानी, रहन सहन और बोलियों की अनेकता लिये हुए इस देस के रहने वालों को भी ध्यान में रखना होगा. तब हम भारतमाता का असली रूप समझ सकेंगे. इस तरह आप लोग ख़ुद भी भारतमाता के अंग हैं. और भारतमाता की जय बोलते हुए अपनी भी जय बोलते हैं.

भारतमाता के इस रूप को जो तस्वीर मैंने अपनी आंख से इस जनवरी महीने में देखी वह मेरे दिमाग़ में ज्यों की त्यों खिंच गई है. काग़ज़ के नक़्शे पर बीसियों बार हिन्दुस्तान देखा था. पर इलाहाबाद से त्रिवेन्द्रम और कन्याकुमारी तक का सफ़र करके जो समझ में आया. पहले कभी नहीं आया था. हिन्दुस्तान में एक ही समय अलग अलग

الہ آباد سے کنیا کماری

(بھائی اُوم پرکاش پالیوال)

ایک بار کسی گاؤں میں شری جواہر لال نہرو بھاشن دینے گئے . وھاں کے کسانوں نے بھارت ماتا کی جے کے نعرے لگائے . نہروجی نے اُن سے پوچھا کہ آپ لوگ بھارت ماتا سے کیا سمجھتے ھیں ؟ سبھا میں سناٹا چھا گیا . سیدھے سادے دیہاتی کوئی جواب نہ دے سکے . جواھر لال جی نے سمجھایا کہ بھارت ماتا کا اصلی روپ سمجھنے کے لئے ھمیں اس دیس کے پھیلاؤ کو دھیان میں لانا ھوگا . پر ھمالیہ سے کنیاکماری تک پھیلے ھوئے اِس دیس کی زمین٬ پہاڑ٬ ندی٬ نالے سب ملکر بھی 'بھارت ماتا' نہیں بناتے . الگ الگ پیداوار٬ ھوا پانی٬ رھن سہن اور بولیوں کی انیکتا لئے ھوئے اس دیس کے رھنے والوں کو بھی دھیان میں رکھنا ھوگا . تب ھم بھارت ماتا کا اصلی روپ سمجھ سکیں گے . اِس طرح آپ لوگ خود بھی بھارت ماتا کے انگ ھیں اور بھارت ماتا کی جے بولتے ھوئے اپنی بھی جے بولتے ھیں .

بھارت ماتا کے اِس روپ کی جو تصویر میں نے اپنی آنکھ سے اِس جنوری مہینے میں دیکھی وہ میرے دماغ میں جیوں کی تیوں کھنچ گئی ھے . کاغذ کے نقشے پر بیسیوں بار ھندستان دیکھا تھا . پر الہ آباد سے ترویندرم اور کنیا کماری تک کا سفر کر کے جو سمجھ میں آیا٬ پہلے کبھی نہ آیا تھا . ھندستان میں ایک ھی سمے الگ الگ

कर्त्तव्य है. रूसी सरकार ने लड़ाई के बाद इस मुहिम को तेज़ कर दिया. चार साल में चार हज़ार चार सौ तेहत्तर वर्ग मील रक़बे में घर बनाए गए. देहातों में भी २३ लाख नए मकान खड़े किये गए.

खाना, कपड़ा और रहने का मकान यह तीन ही जनता की सब से बड़ी ज़रूरतें हैं और इन तीनों के पूरा करने में रूस इस समय संसार के देशों में सब से बढ़ा चढ़ा है.

کرتویہ ہے۔ روسی سرکار نے لڑائی کے بعد اس مہم کو تیز کر دیا۔ چار سال میں چار ہزار چار سو تہتر ورگ میل رقبے میں گھر بنائے گئے۔ دیہاتوں میں بھی ۲۳ لاکھ نئے مکان کھڑے کئے گئے۔

کھانا، کپڑا اور رہنے کا مکان یہ تین ہی جنتا کی سب سے بڑی ضرورتیں ہیں اور ان تینوں کے پورا کرنے میں روس اس سمے سنسار کے دیسوں میں سب سے بڑھا چڑھا ہے۔

इस तरह का काम जनता के सहयोग ही से किया जा सकता है. "कलचरी सेना" में न सिर्फ़ टीचर आए बल्कि क्लर्क और दूसरे पढ़े लिखे भी कमर बांधकर देस सेवा के इस मैदान में कूद पड़े. विद्यार्थियों ने अपनी तालीम से दूसरे भाइयों को फ़ायदा पहुँचाया. नौजवान कम्यूनिस्ट लीग ने हज़ारों मेम्बरों को इस मोरचे पर लगा दिया. नतीजा यह हुआ कि रूस में अब सात साल की प्राइमरी तालीम तो ज़रूरी है ही लेकिन सरकार जल्द ही सिकेन्डरी स्कूल की तालीम को भी सब के लिये ज़रूरी और मुफ़्त करने वाली है.

कला में भी रूस ने अपनी अलग जगह बनाली है. अन्तर राष्ट्री सिनेमा सम्मेलनों में रूस को अब तक ऊँचा स्थान मिलता रहा है. रूसी साहित्य का महत्व दुनिया मान चुकी है. इमारत कला में भी रूस आगे बढ़ा है. इस मैदान में उनका सिद्धान्त है— जनता के हित की चीज़ें इस तरह बनाना जिस से जनता कला की सराहना कर के सुन्दरता की तरफ़ बढ़ सके. रूस के सामने सिर्फ़ देस को सजाने ही का प्रोग्राम नहीं है बल्कि लोगों को आराम देने वाले मकान भी मुहैया करना है. लेकिन साथ ही साथ सुन्दरता भी बढ़ानी है. रूस को ज़मीन के नीचे नीचे संगमरमर के स्टेशनों से सजाया गया है. किसी स्टेशन पर देस के बहादुर सैनिकों की मूर्तियाँ और उनके चित्र हैं और कोई स्टेशन पुराने रूसी कवियों का दर्शन कराता है. ग़रज़ हर मैदान के देस सेवकों को इस तरह अमर कर दिया गया है. वहाँ पौरानिक कथाओं से इमारतों को सजाने की जगह अब ज़िन्दा देवताओं का जीवन संगमरमर पर अंकित किया गया है. लोगों को रहने के लिये घर मुहैया करना भी सरकार का

اس طرح کا کام جنتا کے سہیوگ ہی سے کیا جا سکتا ہے۔ ''کلچری سینا'' میں نہ صرف ٹیچر آئے بلکہ کلرک اور دوسرے پڑھے لکھے بھی کمر باندھکر دیس سیوا کے اس میدان میں کود پڑے۔ ودیارتھیوں نے اپنی تعلیم سے دوسرے بھائیوں کو فائدہ پہونچایا۔ نوجوان کمیونسٹ لیگ نے ہزاروں ممبروں کو اس مورچے پر لگا دیا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ روس میں اب سات سال کی پرائمری تعلیم تو ضروری ہے ہی لیکن سرکار جلد ہی سکنڈری اسکول کی تعلیم کو بھی سب کے لئے ضروری اور مفت کرنے والی ہے۔

کلا میں بھی روس نے اپنی الگ جگہ بنالی ہے۔ انتر راشٹری سنیما سمیلنوں میں روس کو اب تک اونچا استھان ملتا رہا ہے۔ روسی ساہتیہ کا مہتو دنیا مان چکی ہے۔ عمارت کلا میں بھی روس آگے بڑھا ہے۔ اس میدان میں اُن کا سدھانت ہے—جنتا کے ہت کی چیزیں اس طرح بنانا جس سے جنتا کلا کی سراہنا کر کے سندرتا کی طرف بڑھ سکے۔ روس کے سامنے صرف دیس کو سجانے ہی کا پروگرام نہیں ہے بلکہ لوگوں کو آرام دینے والے مکان بھی مہیا کرنا ہے۔ لیکن ساتھ ہی ساتھ سندرتا بھی بڑھانی ہے۔ روس کو زمین کے نیچے نیچے سنگ مرمر کے اسٹیشنوں سے سجایا گیا ہے۔ کسی اسٹیشن پر دیس کے بہادر سینکوں کی مورتیاں اور اُن کے چتر ہیں اور کوئی اسٹیشن پرانے روسی کویوں کا درشن کراتا ہے۔ غرض ہر میدان کے دیس سیوکوں کو اسطرح امر کر دیا گیا ہے۔ وہاں پورانک کتھاؤں سے عمارتوں کو سجانے کی جگہ اب زندہ دیوتاؤں کا جیون سنگ مرمر پر انکت کیا گیا ہے۔ لوگوں کو رہنے کے لئے گھر مہیا کرنا بھی سرکار کا

हर आदमी पढ़ा लिखा है. हिन्द वालों के लिये यह जानना ज़रूरी है कि रूस अपने देस से जाहिलियत को ख़तम कैसे कर सका ? अक्तूबर १९१७ का इनक़लाब ख़तम होते ही जाहिलियत को ख़तम करने के लिये एक ख़ास कमीशन मुक़र्रर कर दिया गया और उसकी देख रेख में यह जंग लड़ी गई. "कलचरी सेना" के सिपाही तालीम का हथियार लेकर जाहिलियत से लड़ने चल दिये. इस "कलचरी सेना" की नेता लेनिन की धर्मपत्नी थीं. पढ़ाने लिखाने का मतलब सिर्फ़ दसख़त करना सिखाना वह काफ़ी नहीं समझते थे. उन्होंने अपना लक्ष्य तय किया—बालिग़ तालीम के सम्बन्ध के स्कूल पूरी प्राइमरी स्कूल की तालीम दें, पढ़ाई अपनी अपनी मां बोली में हो, विद्यार्थियों को हिसाब की तालीम दी जाय, उन्हें अख़बार का उपयोग बताया जाय, इतिहास और भूगोल की शिक्षा दी जाय और रेडियो और दूसरे साधनों का इस्तेमाल सिखाया जाय. पढ़ने वालों को यह बताना ज़रूरी समझा गया कि उन्हें अपने देस और दुनिया की समस्याओं का थोड़ा बहुत ज्ञान हो जाय. इसी लक्ष्य को सामने रख कर एक कैरिकुलम बनाया गया, इम्तहान लिये गए और विद्यार्थियों को सर्टीफ़िकट दिये गए.

अनपढ़े और अधपढ़े सभी को एक साल की तालीम दी जाना तय हुआ. इस एक साल में उन्हें प्राइमरी स्कूल का चार साल का कोर्स ख़तम करना था. शहरों में स्कूली साल दस महीने का रक्खा गया और हर महीने में ११ दिन तीन घन्टे रोज़ तालीम दी जाती थी. देहातों में स्कूली साल ७ महीने का रक्खा गया और हर महीने में ११ दिन ४ घन्टे रोज़ तालीम देना तय हुआ.

ہر آدمی پڑھا لکھا ہے . ہند والوں کے لئے یہ جاننا ضروری ہے کہ روس اپنے دیس سے جاہلیت کو ختم کیسے کرسکا ؟ اکتوبر ۱۹۱۷ کا انقلاب ختم ہوتے ہی جاہلیت کو ختم کرنے کے لئے ایک خاص کمیشن مقرر کر دیا گیا اور اُسکی دیکھ ریکھ میں یہ جنگ لڑی گئی . "کلچری سینا" کے سپاہی تعلیم کا ہتھیار لے کر جاہلیت سے لڑنے چل دیئے . اِس "کلچری سینا" کی نیتا لینن کی دھرم پتنی تھیں . پڑھانے لکھانے کا مطلب صرف دستخط کرنا سکھانا وہ کافی نہیں سمجھتے تھے . اُنھوں نے اپنا لکشیہ طے کیا—بالغ تعلیم کے سمبندھ کے اسکول پوری پرائمری اسکول کی تعلیم دیں ' پڑھائی اپنی اپنی ماں بولی میں ہو ' ودیارتھیوں کو حساب کی تعلیم دی جائے ' اُنھیں اخبار کا اُپیوگ بتایا جائے ' اتہاس اور بھوگول کی شکشا دی جائے اور ریڈیو اور دوسرے سادھنوں کا استعمال سکھایا جائے . پڑھنے والوں کو یہ بتانا ضروری سمجھا گیا کہ اُنھیں اپنے دیس اور دنیا کی سمسیاؤں کا تھوڑا بہت گیان ہوجائے . اسی لکشیہ کو سامنے رکھکر ایک کیریکولم بنایا گیا ' امتحان لئے گئے اور ودیارتھیوں کو سارٹیفکٹ دیئے گئے .

اَن پڑھے اور ادھ پڑھے سبھی کو ایک سال کی تعلیم دی جانا طے ہوا . اِس ایک سال میں اُنھیں پرائمری اسکول کا چار سال کا کورس ختم کرنا تھا . شہروں میں اسکولی سال دس مہینے کا رکھا گیا اور ہر مہینے میں ۱۱ دن تین گھنٹے روز تعلیم دی جاتی تھی . دیہاتوں میں اسکولی سال ۷ مہینے کا رکھا گیا اور ہر مہینے میں ۱۱ دن ۴ گھنٹے روز تعلیم دینا طے ہوا .

१० खरब १० अरब रोबेल की बचत करके रूस से "नोट बढ़ौती" का जनाज़ा निकाल दिया गया.

आमदनी के साथ साथ कलचर की बातों के सम्बन्ध में भी रूस का बजट बढ़ गया है. ४२ अरब रोबेल से बढ़कर यह बजट सन '४९ में एक खरब १० अरब रोबेल हो गया. यह बजट नीचे लिखे सम्बन्ध में खर्च होता है—

उद्योगी और दफ़तरी काम करताओं पर बीमे की रक़म के तौर पर खर्च. बूढ़े और पंगुल आदमियों को पेनशनें, मुफ्त तालीम और ऊँचे तकनीकी कामों के लिये मुफ्त ट्रेनिंग का इन्तज़ाम. काम करताओं को तन्दुरुस्त रखने के लिये दिल बहलाव का सामान मुहैया करना और उनको तनख़ाह समेत छुट्टी देना, बच्चों की तन्दुरुस्ती की देख भाल और बालक संस्थाओं का खर्च. जो औरतें ज़्यादा बच्चे पैदा करती हैं या दूसरों के बच्चों को पालती हैं उन्हें सालाना ग्रान्ट और विद्यार्थियों को वज़ीफ़े वग़ैरा.

सब से बड़ी बात जो माली मैदान में रूस हासिल कर सका वह यह है कि जनता के जीवन से माली संकट बिलकुल मिट गया. सोवियत रूस में अब किसी को कल की चिन्ता नहीं है. किसी को न बेकारी का खटका है और न कोई भूका मर सकता है. इस लिये वह ख़ुशहाल होकर सारे देस के आम लोगों को ऊपर उठाते हुए कलचर और कला के मैदान में भी ख़ूब तरक़्क़ी कर रहा है.

तालीम के मैदान में भी रूस ने तेज़ दौड़ लगाई है. जिस जगह तालीम की दशा हिन्दुस्तान से कहीं ज़्यादा बुरी थी वहां अब

میں ۱۰ کھرب ۱۰ ارب روبل کی بچت کر کے روس سے "نوٹ بڑھوتی" کا جنازہ نکال دیا گیا ۔

آمدنی کے ساتھ ساتھ کلچر کی باتوں کے سمبندھ میں بھی روس کا بجٹ بڑھ گیا ہے ۔ ۴۲ ارب روبل سے بڑھکر یہ بجٹ سن ۴۹ میں ایک کھرب ۱۰ ارب روبل ہو گیا ۔ یہ بجٹ نیچے لکھے سمبندھ میں خرچ ہوتا ہے —

اُدیوگی اور دفتری کام کرتاؤں پر بیمے کی رقم کے طور پر خرچ' بوڑھے اور پنگل آدمیوں کو پنشنیں' مفت تعلیم اور اونچے تکنیکی کاموں کے لئے مفت ٹریننگ کا انتظام' کام کرتاؤں کو تندرست رکھنے کے لئے دل بہلاؤ کا سامان مہیا کرنا اور اُن کو تنخواہ سمیت چھٹی دینا' بچوں کی تندرستی کی دیکھ بھال اور بالک سنستھاؤں کا خرچ' جو عورتیں زیادہ بچے پیدا کرتی ہیں یا دوسروں کے بچوں کو پالتی ہیں اُنہیں سالانہ گرانٹ اور ودیارتھیوں کو وظیفے وغیرہ ۔

سب سے بڑی بات جو مالی میدان میں روس حاصل کر سکا وہ یہ ہے کہ جنتا کے جیون سے مالی سنکٹ بالکل مٹ گیا ۔ سویت روس میں اب کسی کو کل کی چنتا نہیں ہے ۔ کسی کو نہ بیکاری کا کھٹکا ہے اور نہ کوئی بھوکا مر سکتا ہے ۔ اِس لئے وہ خوش حال ہو کر سارے دیس کے عام لوگوں کو اوپر اُٹھاتے ہوئے کلچر اور کلا کے میدان میں بھی خوب ترقی کر رہا ہے ۔

تعلیم کے میدان میں بھی روس نے تیز دوڑ لگائی ہے ۔ جس جگہ تعلیم کی دشا ہندستان سے کہیں زیادہ بری تھی وہاں اب

भाशन में लन्दन बासियों को बताया कि रूस में रहन सहन का स्तर दिन पर दिन ऊँचा होता जा रहा है. उन्होंने यह भी बताया कि अमरीकी दूतघर के एक अफ़सर ने भी उनसे कहा कि रूस में रहन सहन का स्तर सन '४७ से सन '५० तक दूना उठ गया है. इसी तरह श्री मिल्स के कथन के मुताबिक़ फ़रान्सीसी दूतघर के एक अफ़सर ने कहा है कि रूसी मज़दूरों का जीवन स्तर फ़रान्सीसी मज़दूरों से क़रीब क़रीब दुगना ऊँचा है. श्री मिल्स के बयान को ऊपर लिखे फ़ारमूला पर कसिये तो नतीजा निकलता है कि रूस ने लड़ाई ख़तम होते ही न सिर्फ़ लड़ाई से पहले की अपनी सीमा को छू लिया बल्कि वह दूसरों को पीछे छोड़ कर आगे भी बढ़ गया.

रूस दुनिया में पहला मुल्क है जहां सन '४७ में ही खाने की चीजों और सनअती सामान की राशनिंग ख़तम हो गई. वहां जंग के बाद मुल्क न केवल सन '४० के सनअती पैदावार के माप को ही पहुँच गया बल्कि हर विभाग में क़दम आगे भी बढ़ गए. ४१ फ़ीसदी बढ़ोती उद्योग धंदों में हुई और सन '४० से १०८५ लाख टन ज्यादा गल्ला सन '४९ में पैदा किया गया. ३५ फ़ीसदी ऊनी कपड़े और ४६ फ़ीसदी रेशमी कपड़े की पैदावार बढ़ी.

काग़ज़ी "नोट बढ़ौती" आज सभी मुल्कों की जनता को चूस रही है. लेकिन रूस ने तीन साल में इस जोंक से पीछा छुड़ा लिया. खाने और दूसरे जरूरी सामान के भाव जल्दी ही घटा दिये गए. सन '४८ में इस तरह ८६ अरब रोबेल की "नोट बढ़ौती" ख़तम हुई. सन '४९ में ७१ अरब रोबेल की कमी और हुई और सन '५० में

بھاشن میں لندن باسیوں کو بتایا کہ روس میں رہن سہن کا استر دن پر دن اونچا ہوتا جا رہا ہے ۔ انہوں نے یہ بھی بتایا کہ امریکی دوت گھر کے ایک افسر نے بھی اُن سے کہا کہ روس میں رہن سہن کا استر سن ۴۷ سے سن ۵۰ تک دونا اُٹھ گیا ہے ۔ اسی طرح شری ملس کے کتھن کے مطابق فرانسیسی دوت گھر کے ایک افسر نے کہا ہے کہ روسی مزدوروں کا جیون استر فرانسیسی مزدوروں سے قریب قریب دگنا اونچا ہے ۔ شری ملس کے بیان کو اوپر لکھے فارمولا پر کسئے تو نتیجہ نکلتا ہے کہ روس نے لڑائی ختم ہوتے ہی نہ صرف لڑائی سے پہلے کی اپنی سیما کو چھو لیا بلکہ وہ دوسروں کو پیچھے چھوڑ کر آگے بھی بڑھ گیا ۔

روس دنیا میں پہلا ملک ہے جہاں سن ۴۷ میں ہی کھانے کی چیزوں اور صنعتی سامان کی راشننگ ختم ہو گئی ۔ وہاں جنگ کے بعد ملک نہ کیول سن ۴۰ کے صنعتی پیداوار کے ماپ کو ہی پہونچ گیا بلکہ ہر وبھاگ میں قدم آگے بھی بڑھ گئے ۔ ۴۱ فیصدی بڑھوتی اُدیوگ دھندوں میں ہوئی اور سن ۴۰ سے ۱۰۸۵ لاکھ ٹن زیادہ غلہ سن ۴۹ میں پیدا کیا گیا ۔ ۳۵ فیصدی اونی کپڑے اور ۴۶ فیصدی ریشمی کپڑے کی پیداوار بڑھی ۔

کاغذی "نوٹ بڑھوتی" آج سبھی ملکوں کی جنتا کو چوس رہی ہے ۔ لیکن روس نے تین سال میں اس جونک سے پیچھا چھڑا لیا ۔ کھانے اور دوسرے ضروری سامان کے بھاؤ جلدی ہی گھٹا دیئے گئے ۔ سن ۴۸ میں اس طرح ۸۶ ارب روبل کی "نوٹ بڑھوتی" ختم ہوئی ۔ سن ۴۹ میں ۷۱ ارب روبل کی کمی اور ہوئی اور سن ۵۰

रूस पर एक सरसरी नज़र

(भाई मुजीब रिज़वी)

वह आंखें भी जिनसे आशा छलकती है और वह आंखें भी जिनसे डर टपकता है, आज रूस पर जमी हैं. एक को रूस एक नए सुखी समाज का अगुआ दिखाई पड़ता है. दूसरे को रूस के भेस में अपनी मौत नज़र आती है. एक के लिये जो अमृत है दूसरे को वही ज़हर दिखाई देता है. ऐसी सूरत में यह जानना ज़रूरी है कि आखिर इस आशा और डर का कारन क्या है ? इसके लिये हमें एक सरसरी नज़र रूस की तरफ़ डालना चाहिये और यह मालूम करना चाहिये कि वहां धन दौलत, तालीम और कला के मैदान में क्या कुछ अब तक हुआ है और आगे किधर को क़दम बढ़ रहे हैं.

पूँजीवादी देसों में राष्ट्र की आमदनी चाहे कितनी ही बढ़ जाय लेकिन जनता को उसका पूरा फ़ायदा नहीं होता. क्योंकि वहां धन कमाया जाता है ज़्यादातर व्यक्तिगत फ़ायदे के लिये और वह भी कमाते हैं इने गिने खानदान. रूस में इसके बिलकुल उलटा है. सोवियत राष्ट्र की आमदनी की बढ़ोती का नाप है वहां की जनता के रहन सहन के स्तर में बढ़ोती. इस तरह अगर वहां के रहन सहन को आंक लिया जाय तो पता चल जायगा कि देस को खुशहाल बनाने में वह कहां तक सफल रहा या असफल' इस बारे में श्री जान प्लेट्स मिलस को, जो ब्रिटिश लेबर पारटी के माने हुए नेता हैं, प्रमान माना जा सकता है रूस से लौट कर उन्होंने अपने एक

روس پر ایک سرسری نظر

(بھائی مجیب رضوی)

وہ آنکھیں بھی جن سے آشا جھلکتی ہے اور وہ آنکھیں بھی جن سے ڈر ٹپکتا ہے آج روس پر جمی ہیں ۔ ایک کو روس ایک نئے سکھی سماج کا اگوا دکھائی پڑتا ہے ۔ دوسرے کو روس کے بھیس میں اپنی موت نظر آتی ہے ۔ ایک کے لئے جو امرت ہے دوسرے کو وہی زہر دکھائی دیتا ہے ۔ ایسی صورت میں یہ جاننا ضروری ہے کہ آخر اس آشا اور ڈر کا کارن کیا ہے ؟ اس کے لئے ہمیں ایک سرسری نظر روس کی طرف ڈالنا چاہئے اور یہ معلوم کرنا چاہئے کہ وہاں دھن دولت، تعلیم اور کلا کے میدان میں کیا کچھ اب تک ہوا ہے اور آگے کدھر کو قدم بڑھ رہے ہیں ۔

پونجی وادی دیسوں میں راشٹر کی آمدنی چاہے کتنی ہی بڑھ جائے لیکن جنتا کو اس کا پورا فائدہ نہیں ہوتا ۔ کیونکہ وہاں دھن کمایا جاتا ہے زیادہ تر ویکتی گت فائدے کے لئے اور وہ بھی کماتے ہیں اِنے گنے خاندان ۔ روس میں اس کے بالکل الٹا ہے ۔ سوویت راشٹر کی آمدنی کی بڑھوتی کا ناپ ہے وہاں کی جنتا کے رہن سہن کے استر میں بڑھوتی ۔ اس طرح اگر وہاں کے رہن سہن کو آنک لیا جائے تو پتہ چل جائے گا کہ دیس کو خوش حال بنانے میں وہ کہاں تک سپھل رہا یا اسپھل ! اس بارے میں شری جان پلیٹس ملس کو جو برٹش لیبر پارٹی کے مانے ہوئے نیتا ہیں، پرمان مانا جا سکتا ہے ۔ روس سے لوٹ کر انھوں نے اپنے ایک

है और गाने में उन का तरह तरह की आवाजें निकालना, बार बार मुँह बनाना और दिल को बेचैन करने वाली गिटकिरी की जगह तान को देर तक खेंचना मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे कुछ "जंगली जानवर" बेतुकी आवाज़ों से अपनी संगीत की प्यास बुझा रहे हों.

पच्छिम का यह कहना बिल्कुल ठीक है कि हिन्दुस्तानी संगीत का उतार चढ़ाव उनकी समझ से बाहर है. क्यों न बाहर हो जब कि "भैंस के आगे बीन बजाना" उन पर सही उतरता है. वह क्या जानें कि हिन्दी संगीत चिड़ियों को उड़ने से रोक देता है, चौपाए अपनी कुलेलें भूल जाते हैं, यह बग़ैर मौसम के मूसलाधार पानी बरसा देता है, बिना "एटम बम" के साइन्सी जुज़ों के आग लगा देता है, यह ग़म को भुला देता है. यह खुशी बढ़ाता है, रोते हुए बच्चों को बहला देता है. यह पत्थर के दिल वाले को मोम बना देता है. यह थोड़ी देर के लिये दुनिया की मुसीबतें दूर कर देता है. जभी तो इस को आत्मा की खुराक समझा जाता है, न कि पच्छिमी नाच, जिसमें सफ़ेद टांगों की कसरत से ज़मीन हिलने लगती है और जिनके गाने से बच्चों की नींद उचाट हो जाती है, बूढ़ों के दिल दहल जाते हैं और जवान इसकी सख्ती में थकावट महसूस करने लगते हैं. खूबसूरत चेहरे बदसूरत हो जाते हैं और आवाज़ के उतार चढ़ाव से यह मालूम होता है कि हिमालय पहाड़ से पच्छिमी संगीत के साज़ लुढ़क रहे हैं और संगीत के देवता का गला घोट रहे हैं. मैं तो पच्छिमी संगीत को ऐसी वासना का नतीजा समझता हूँ जिसमें असर तो न हो लेकिन थोड़ी देर के लिये उमर भर के ठहाके खर्च हो जायं

هے اور گانے میں اُن کا طرح طرح کی آوازیں نکالنا' بار بار منه بنانا اور دل کو بے چین کرنے والی گٹکری کی جگه تان کو دیر تک کھینچنا مجھے ایسا معلوم ہوا جیسے کچھ "جنگلی جانور" بے تکی آوازوں سے اپنی سنگیت کی پیاس بجھا رہے ھوں ۔

پچھم کا یه کہنا بالکل ٹھیک ھے که ھندستانی سنگیت کا اُتار چڑھاؤ اُن کی سمجھ سے باھر ھے ۔ کیوں نه باھر ھو جب که "بھینس کے آگے بین بجانا" اُن پر صحیح اُترتا ھے ۔ وہ کیا جانیں که هندی سنگیت چڑیوں کو اُڑنے سے روک دیتا ھے' چوپائے اپنی کلیلیں بھول جاتے ھیں' یه بغیر موسم کے موسلا دھار پانی برسا دیتا ھے' بنا "ایٹم بم" کے سائنسی جزوں کے آگ لگا دیتا ھے یه غم کو بھلا دیتا ھے' یه خوشی بڑھاتا ھے' روتے ھوئے بچوں کو بہلا دیتا ھے' یه پتھر کے دل والے کو موم بنا دیتا ھے' یه تھوڑی دیر کے لئے دنیا کی مصیبتیں دور کر دیتا ھے. جبھی تو اِس کو آتما کی خوراک سمجھا جاتا ھے' نه که پچھمی ناچ' جس میں سفید ٹانگوں کی کسرت سے زمین ھلنے لگتی ھے اور جن کے گانے سے بچوں کی نیند اُچاٹ ھو جاتی ھے' بوڑھوں کے دل دھل جاتے ھیں اور جوان اِس کی سختی میں تھکاوٹ محسوس کرنے لگتے ھیں' خوبصورت چہرے بد صورت ھو جاتے ھیں اور آواز کے اُتار چڑھاؤ سے یه معلوم ھوتا ھے که ھمالیه پہاڑ سے پچھمی سنگیت کے ساز لڑھک رھے ھیں اور سنگیت کے دیوتا کا گلا گھونٹ رھے ھیں ۔ میں تو پچھمی سنگیت کو ایسی واسنا کا نتیجه سمجھتا ھوں جس میں اثر تو نه ھو لیکن تھوڑی دیر کے لئے عمر بھر کے ٹھہاکے خرچ ھو جائیں ۔

हिन्दुस्तान में संगीत "ईश्वर भक्ति" का ज़रिया रहा है और इसके राग रागनियों के बोल जब सुनने वालों में गूँजते हैं तो इनसानों को दुख सुख की लज्ज़तों से नज़दीक कर देते हैं. योरप वाले अपने संगीत को चाहे कितना सराहें, यह मानना पड़ेगा कि संगीत हो या हिसाब, दर्शन हो या कविता, यह पूरब के ऐसे इल्म व कला हैं जिनसे दुनिया की हर महफ़िल के चिराग़ रौशन हुए हैं और यह कलाएं जहाँ कहीं भी पहुँचीं पूरब ही के रास्ते पहुँचीं इस पर सोचकर मुझे ताज्जुब होता है कि योरप वाले पूरबी संगीत को सुनकर मुँह बनाते हैं और वह Intonation और "हारमनी" को संगीत का सब से बढ़िया भाग समझते हैं. लेकिन जब तक यह न मालूम हो कि इनसानी मनोविज्ञान किस मौके पर और किस क़िस्म के राग को स्वीकार करेगा, हारमनी की कल्पना ही ग़लत है, क्योंकि साज़ के दबाव और गले के उतार चढ़ाव का जब तक ठीक ज्ञान न हो संगीत की उमंगों पर कैसे तड़पा जा सकता है.

पच्छिम वालों ने हर चीज़ को हवा, मिट्टी के तल से देखा है. उनकी माटीवादी नज़र बढ़िया कलाओं के आत्मिक लुत्फ़ से परिचित नहीं है. हाँ, उन्होंने इसकी "बाहरी शकल" को तो बना संवार लिया है लेकिन इन में आत्मा का वह अंश न पैदा कर सके जो इसकी जान है और जिसके बग़ैर ख़ुशी और ग़म के तरानों में असर पैदा हो ही नहीं सकता. यही वजह है कि पूरब में पच्छिमी संगीत का शौक़ कभी सफल न हो सका.

पच्छिमी नाच मैंने भी कभी कभी देखा है और गाना भी परेशान हो हो कर सुना है. नाच में नटों की कलाबाज़ियों का मज़ा ज़रूर

ہندستان میں سنگیت "ایشور بھگتی" کا ذریعہ رہا ہے اور اِس کے راگ راگنیوں کے بول جب سننے والوں میں گونجتے ہیں تو انسانوں کو دکھ سکھ کی لذتوں سے نزدیک کر دیتے ہیں ۔ یورپ والے اپنے سنگیت کو چاہے کتنا سراہیں' یہ ماننا پڑے گا کہ سنگیت ہو یا حساب درشن ہو یا کویتا' یہ پورب کے ایسے علم وکلا ہیں جن سے دنیا کی ہر محفل کے چراغ روشن ہوئے ہیں اور یہ کلائیں جہاں کہیں بھی پہونچیں پورب ہی کے راستے پہونچیں ۔ اِس پر سوچ کر مجھے تعجب ہوتا ہے کہ یورپ والے پوربی سنگیت کو سن کر منہ بناتے ہیں اور وہ Intonation اور "ہارمنی" کو سنگیت کا سب سے بڑھیا بھاگ سمجھتے ہیں ۔ لیکن جب تک یہ نہ معلوم ہو کہ انسانی منووگیان کس موقع پر اور کس قسم کے راگ کو سویکار کریگا' ہارمنی کی کلپنا ہی غلط ہے' کیوں کہ ساز کے دباؤ اور گلے کے اُتار چڑھاؤ کا جب تک ٹھیک گیان نہ ہو سنگیت کی اُمنگوں پر کیسے تڑپا جا سکتا ہے ۔

پچھم والوں نے ہر چیز کو ہوا' مٹی کے تل سے دیکھا ہے ۔ اُن کی ماتی وادی نظر بڑھیا کلاؤں کے آتمک لطف سے پریچت نہیں ہے ۔ ہاں اُنہوں نے اِس کی "باہری شکل" کو تو بنا سنوار لیا ہے لیکن اِن میں آتما کا وہ انش نہ پیدا کر سکے جو اِس کی جان ہے اور جس کے بغیر خوشی اور غم کے ترانوں میں اثر پیدا ہو ہی نہیں سکتا ۔ یہی وجہ ہے کہ پورب میں پچھمی سنگیت کا شوق کبھی سپھل نہ ہو سکا ۔

پچھمی ناچ میں نے بھی کبھی کبھی دیکھا ہے اور گانا بھی

कोरिया की लड़ाई की तरह बेतहाशा आगे निकल गया और बेढंगे तरीक़े पर पीछे हटा तो वहीं हिज़ हाइनेस ने टोका और उसी वक़्त गले से या हाथों के इशारों से उसको भूला हुआ पाठ याद दिला दिया.

इसी वजह से तो यह साज़िन्दे और गवैये सब हिज़ हाइनेस के चेले हैं और इस पर गर्व करते हैं कि उनको हिज़ हाइनेस का ऐसा उस्ताद मिला. अजोध्या प्रसाद पखावजी हिज़ हाइनेस के कमाल को देखकर जब मस्त हो जाता था और उसकी बाछें खिल जाती थीं तो इस क़दर मगन होकर वाह वाह करता था कि मुझको उसकी बाछों में पखावज बजती सुनाई देती थी. ख़ुदा बुरी नज़र से बचाए अगर हिज़ हाइनेस से किसी ने दिल लगा कर और मेहनत से इस कला को न सीखा तो हिन्दुस्तान की यह "महादेवी कला" आधी सदी के बाद मिट जायगी और सिनेमा के चलते हुए बाज़ारी गाने महादेव जी की संगीत पूजा पर छा जायंगे और वह उमर भर अफ़सोस करेंगे जिन्होंने जन्नत मकां के गले से शाम कल्यान सुनी है, भातखंडे के ऐसे चेले को देखा है, छम्मन साहब के कमाल से मज़े उठाए हैं, ठाकुर नवाब अली के गले से खुरवा सुना है, वज़ीर ख़ां को हर रागनी की तस्वीर बनते देखा है और इस ज़माने में तो हिज़ हाइनेस ने इस कला की बारीकियों और गहरे भेदों को जैसा समझा है, उसके बेमिसाल होने में महादेव जी की गुनगुनाती आत्मा को भी कोई शक नहीं हो सकता. अगर मैं यह कहूँ तो ग़लत नहीं हो सकता, कि हिज़ हाइनेस की हस्ती संगीत कला में "अन्तिम" कही जा सकती है.

کوریا کی لڑائی کی طرح بے تحاشا آگے نکل گیا اور بے ڈھنگے طریقے پر پیچھے ہٹا تو وہیں ہز ہائنس نے ٹوکا اور اُس وقت گلے سے یا ہاتھوں کے اشاروں سے اُس کو بھولا ہوا پاٹھ یاد دلا دیا۔

اِسی وجہ سے تو یہ سازندے اور گویئے سب ہز ہائی نس کے چیلے ہیں اور اس پر گرو کرتے ہیں کہ اُن کو ہز ہائی نس کا ایسا اُستاد ملا۔ اجودھیا پرساد پکھاوجی ہز ہائی نس کے کمال کو دیکھ کر جب مست ہو جاتا تھا اور اُس کی باچھیں کھل جاتی تھیں تو اِس قدر مگن ہو کر واہ واہ کرتا تھا کہ مجھکو اُس کی باچھوں میں پکھاوج بجتی سنائی دیتی تھی۔ خدا بری نظر سے بچائے اگر ہز ہائی نس سے کسی نے دل لگا کر اور محنت سے اِس کلا کو نہ سیکھا تو ہندستان کی یہ "مہا دیوی کلا" آدھی صدی کے بعد مٹ جائے گی اور سنیما کے چلتے ہوئے بازاری گانے مہادیو جی کی سنگیت پوجا پر چھا جائیں گے اور وہ عمر بھر افسوس کریں گے جنھوں نے جنت مکاں کے گلے سے شام کلیان سنی ہے، بھات کھنڈے کے ایسے چیلے کو دیکھا ہے، چھمن صاحب کے کمال سے مزے اُٹھائے ہیں، ٹھاکر نواب علی کے گلے سے کھروا سنا ہے، وزیر خاں کو ہر راگنی کی تصویر بنتے دیکھا ہے اور اِس زمانے میں تو ہز ہائی نس نے اِس کلا کی باریکیوں اور گہرے بھیدوں کو جیسا سمجھا ہے، اُس کے بےمثال ہونے میں مہادیو جی کی گن گناتی آتما کو بھی کوئی شک نہیں ہو سکتا۔ اگر میں یہ کہوں تو غلط نہیں ہو سکتا کہ ہز ہائی نس کی ہستی سنگیت کلا میں "انتم" کہی جا سکتی ہے۔

फ़तवों पर भरोसा करने वालों से कहता रहता है कि इतिहास के सफ़ों पर ऐसे कारनामें न छोड़ो जिन पर अक़्ल की दुनिया मुस्कराए और धर्म की असली तालीम हाथ मलती रह जाय.

× × × ×

दस दिन हिज़ हाइनेस (रामपूर) के साथ जिस मज़े और चहल पहल में गुज़रे, दिन खाने पीने में और रातें संगीत के राग रंग में जिस तरह गुज़रीं उसका होश किसको था. सादिक़ अली ख़ाँ की बीन, मुशताक़ हुसैन का गाना, थिरकुआ का तबला, अजोध्या प्रसाद की पखावज, तानसेन की तेरहवीं पीढ़ी का सितार, इब्ने अली की हारमोनियम सब कुछ सुनी, मगर जब हिज़ हाइनेस की उंगलियों से खड़ताल के बोल खड़कते हुए सुने तो हैरान ही नहीं हुआ बल्कि उसके बोलों में खो गया और अगर हर हाइनेस (रामपूर) बेगम साहिबा तशरीफ़ न रखती होतीं तो मैं ख़्वाजा हसन निज़ामी की तरह अगर थिरक न सकता तो झूमने ज़रूर लगता और उस कमरे को अपने बेढंगे नाच से वंचित न रखता. हिज़ हाइनेस ने नौबत ऐसी बजाई कि मुझको अमीर ख़ुसरो की "नान कि ख़ुरदी ख़ाना बरू" की नौबत याद आगई. यह दो साज़ क्या हिज़ हाइनेस तो तमाम साज़ उस्तादी ढंग से बजा सकते हैं बड़े बड़े गवैये और माहिर साज़िन्दे कान पकड़ते हैं, पैर चूमते हैं. जहाँ किसी ने कला के ख़िलाफ़ सुर लगाया या राग अलापा या साज़ों ने आपस में लड़ाई शुरू करदी और इस संगीत युद्ध में किसी का भर पूर हमला

فتووں پر بھروسہ کرنے والوں سے کہتا رہتا ھے کہ اِتہاس کے صفحوں پر ایسے کارنامے نہ چھوڑو جن پر عقل کی دنیا مسکرائے اور دھرم کی اصلی تعلیم ھاتھ ملتی رہ جائے ۔

× × × ×

دس دن ہز ھائی نس (رامپور) کے ساتھ جس مزے اور چھل پھل میں گذرے، دن کھانے پینے میں اور راتیں سنگیت کے راگ رنگ میں جس طرح گزریں اُسکا ھوش کس کو تھا ۔ صادق علی خاں کی بین، مشتاق حسین کا گانا، تھرکوا کا طبلہ، اجودھیا پرساد کی پکھاوج، تان سین کی تیرھویں پیڑھی کا ستار، ابن علی کی ھارمونیم سب کچھ سنی، مگر جب ہز ھائی نس کی انگلیوں سے کھڑتال کے بول کھڑکتے ھوئے سنے تو حیران ھی نہیں ھوا بلکہ اُسکے بولوں میں کھو گیا اور اگر ہر ھائی نس (رامپور) بیگم صاحبہ تشریف نہ رکھتی ھوتیں تو میں خواجہ حسن نظامی کی طرح اگر تھرک نہ سکتا تو جھومنے ضرور لگتا اور اس کمرے کو اپنے بے ڈھنگے ناچ سے ونچت نہ رکھتا ۔ ہز ھائی نس نے نوبت ایسی بجائی کہ مجھکو امیر خسرو کی "نان کہ خوردی خانہ برو" کی نوبت یاد آگئی ۔ یہ دو ساز کیا ہز ھائی نس تو تمام ساز اُستادی ڈھنگ سے بجا سکتے ھیں ۔ بڑے بڑے گویئے اور ماھر سازندے کان پکڑتے ھوں پیر چومتے ھیں ۔ جہاں کسی نے کلا کے خلاف سور لگایا یا راگ الاپا یا سازوں نے آپس میں لڑائی شروع کردی اور اس سنگیت یدھ میں کسی کا بھرپور حملہ

...ान का कहीं पूरा कर रहे हैं तो उनके इस हक़
... पूछ ताछ कर सकता है और बटे हुए हिन्दी मुसलमान
मुँह से शिकायत कर सकते हैं जबकि यह पिछले बरताव की
प्रतिक्रिया है.

पूजा घर कहने को सब ईंट पत्थर के होते हैं मगर कहीं ख़ुदा की
...दत ने, कहीं अवतारों की पूजा ने और कहीं सूलों के प्रायश्चित ने
...हैं इज़्ज़त के लायक़ बना दिया. और यह इनसान की मज़हबी
...बूझ की ऐसी यादगारें हैं और इनसानी दिमाग़ की ऐसी
...ानी की हरकतें हैं कि कोई बुतों के सामने गिड़गिड़ाता है, कोई
...के साये में शान्ति पाता है, कोई हजर (काबे का एक पत्थर) के
...से डरता है, कोई सूरज की गरमी से पसीना बहाता है, कोई
...ाँ की सुन्दरता में खो जाता है, कोई दोनों हाथों को दोना बनाकर
...ूरत बिगाड़ कर दुआएं मांगता है, कोई आग के शोलों में
...का चमत्कार देखता है, कोई क्रास के सामने घुटने टेकता
...भजन की धुन में अपने गुरू की खोज करता है, कोई नाच
...ना को नचाना है और कोई मातमी शकल बना कर जन्नत
...हासिल करता है. यह ऐसी मज़हबी ईजादें हैं जिन्होंने
...ही रास्ते से भटका दिया, नहीं तो वह भगवान —

दिल के आइने में है तस्वीरे यार
जब ज़रा गरदन झुकाई देख ली

ज़िन्दगी की नस से भी नज़दीक है और वह इनसानी

२

...कोई शक नहीं हो सकता. ...
...हीं हो सकता कि हिज हाइनेस की हस्ती संगीत कला में "अन्तिम"

بعوں کا ملک مان لیا اور پاکستان ...
ملک ٹھہرا دیا۔ اس پر نظر کر کے اگر دیس والے اپنے پچھلے
مذہبی نقصان کو کہیں پورا کر رہے ہیں تو اُن کے اِس
حق سے کون پوچھ تاچھ کر سکتا ہے اور بٹے ہوئے ہندی مسلمان
کس منہ سے شکایت کر سکتے ہیں جبکہ یہ پچھلے برتاؤ کی
پرتی کریا ہے۔

پوجا گھر کہنے کو سب اینٹ پتھر کے ہوتے ہیں مگر کہیں
خدا کی عبادت نے، کہیں اوتاروں کی پوجا نے اور کہیں سولی کے
پرائشچت نے اُنہیں عزت کے لائق بنا دیا۔ اور یہ انسان کی مذہبی
سوجھ بوجھ کی ایسی یادگاریں ہیں اور انسانی دماغ کی ایسی
پریشانی کی حرکتیں ہیں کہ کوئی بتوں کے سامنے گڑگڑاتا ہے، کوئی
پیڑ کے سائے میں شانتی پاتا ہے، کوئی حجر (کعبے کا ایک
پتھر) کے رعب سے ڈرتا ہے، کوئی سورج کی گرمی سے پسینہ بہاتا ہے،
کوئی چندرماں کی سندرتا میں کھو جاتا ہے کوئی دونوں ہاتھوں
کو دونہ بنا کر اور صورت بگاڑ کر دعائیں مانگتا ہے، کوئی آگ کے
شعلوں میں یزداں کا چمتکار دیکھتا ہے، کوئی کراس کے سامنے
گھٹنے ٹیکتا ہے، کوئی بھجن کی دھن میں اپنے گرو کی کھوج کرتا
ہے، کوئی ناچ میں ماہوتا کو نچاتا ہے اور کوئی ماتمی شکل بنا کر
جنت کی کوٹھری حاصل کرتا ہے۔ یہ ایسی مذہبی ایجادیں ہیں
جنھوں نے سب کو صحیح راستے سے بھٹکا دیا، نہیں تو وہ بھگوان—

دل کے آئینے میں ہے تصویر یار
جب ذرا گردن جھکائی دیکھ لی

وہ تو زندگی کی نس سے بھی نزدیک ہے اور وہ انسانی

... ’’انتم‘‘ کہی جا

प्रेम और संगीत

(भाई होश बलग्रामी)

["शुएब" हैदराबाद में नवाब होशयारजंग बहादुर के लेखों से]

.......उड़ते हुए पाँच घंटों में "मआसिर आलमगीरी" (इतिहास की एक किताब) पढ़ता रहा, जब उसके सफ़ा ५८ और ६३ में यह नज़र पड़ा कि मथुरा और बनारस के मन्दिर औरंगज़ेब के समय में तबाह किये गए तो मुझे क़ुरान की यह आयत याद आगई--

"यह लोग अल्लाह के सिवा जिनको ख़ुदा समझ कर पूजते हैं उन्हें तुम बुरा न कहो नहीं तो यह लोग भी ख़ुदा को बेसमझे बुरा भला कह बैठेंगे."

जिस धर्म की यह तालीम हो कि मूर्तियों को बुरा कहने के लिये भी मना करे तो क्या वह मन्दिरों को ढाने की इजाज़त दे सकता है और क्या उसके अनुयाइयों को दूसरे धर्म के पूजाघरों को तोड़ना चाहिये था और इतिहास में इसलामी तालीम की अवहेलना का गुनाह छोड़ जाना चाहिये था ? जब मुसलमान बादशाहों की उदारता की यह हालत थी तो अगर किसी मसजिद को देस वाले अपना [illegible]जाघर बना लें और जिस मन्दिर को किसी ने मसजिद बनाया था [illegible] फिर मन्दिर बना दें तो इस पर मुसलमानों को आवाज़ उठाने [illegible] है ? [illegible] से फ़रियाद करने के लिये क्यों कर ज़बान [illegible] है जबकि [illegible] के [illegible] मुसलमानों ने इस मुल्क को

پریم اور سنگیت

(بھائی ہوش بلگرامی)

["شعیب" حیدرآباد میں نواب ہوشیار جنگ بہادر کے لیکھوں سے]

. . . . اُڑتے ہوئے پانچ گھنٹوں میں "مآثر عالمگیری" (اتہاس کی ایک کتاب) پڑھتا رہا' جب اُسکے صفحہ ۵۸ اور ۶۳ میں یہ نظر پڑا کہ متھرا اور بنارس کے مندر اورنگ زیب کے سمے میں تباہ کئے گئے تو مجھے قرآن کی یہ آیت یاد آگئی—

"یہ لوگ اللہ کے سوا جن کو خدا سمجھکر پوجتے ہیں اُنھیں تم برا نہ کہو نہیں تو یہ لوگ بھی خدا کو بے سمجھے برا بھلا کہہ بیٹھیں گے."

جس دھرم کی یہ تعلیم ہو کہ مورتیوں کو برا کہنے کے لئے بھی منع کرے تو کیا وہ مندروں کو ڈھانے کی اجازت دے سکتا ہے اور کیا اُسکے انویائیوں کو دوسرے دھرم کے پوجا گھروں کو توڑنا چاہئے تھا اور اتہاس میں اسلامی تعلیم کی اُوھیلنا کا گناہ چھوڑ جانا چاہئے تھا ؟ جب مسلمان بادشاہوں کی اُدارتا کی یہ حالت بھی تو اگر کسی مسجد کو دیس والے اپنا پوجا گھر بنا لیں اور جس مندر کو کسی نے مسجد بنایا تھا اُسکو پھر مندر بنا دیں تو اِس پر مسلمانوں کو آواز اُٹھانے کا کیا حق ہے ؟ سرکار سے فریاد کرنے کے لئے کیوں کر زبان کھل سکتی ہے جب کہ بٹوارہ کے بعد مسلمانوں نے اِس ملک کو

आँख तो खुल गई और मैं यह भी समझ गया कि यह सब कुछ सपना था मगर पत्रकार दोस्तो! दिल अब तक जल रहा है और मैं अब तक अपने को ट्रूमैन समझे हुए हूँ. अब अगर किसी पत्रकार के पास कोई नुसखा हो तो लिख भेजने की कृपा करे.

—भगवानदीन

آنکھ تو کھل گئی اور میں یہ بھی سمجھ گیا کہ یہ سب کچھ سپنا تھا مگر پتر کار دوستو! دل ابتک جل رہا ھے اور میں ابتک اپنے کو ٹرومین سمجھے ہوئے ہوں. اب اگر کسی پتر کار کے پاس کوئی نسخہ ہو تو لکھ بھیجنے کی کرپا کرے.

—بھگوان دین

को दुशमन मानना पड़ा था और जापानी फ़ौजों पर जो कोरिया में पड़ी हुई थीं उन पर हमला करना पड़ा था. जो स्तालिन एटम बम से इतना डरता था और जिसे आज भी डरना चाहिये वह मेरी बातों को इतनी वेपरवाही से सुने और यों ही उड़ा दे ? कहीं सचमुच कोई छोटापन तो मुझमें नहीं आगया ? आख़िर यह लोग क्यों मुझे छोटा समझते हैं. और हां. हां. यह कल की हकूमत का बच्चा प्रधान वज़ीर जवाहरलाल यह भी तो मेरे ख़िलाफ़ सुर अलाप बैठता है. इस कल के बच्चे की यह हिम्मत ! तब तो ज़रूर कोई छोटापन मुझ में आ गया है.

मैं इस तरह सोच ही रहा था कि मुझे अन्दर कुछ तकलीफ़ सी महसूस हुई. मेरा दिल बेतरह जलने लगा. मैं यही न समझ पाया कि मैं बड़ेपन में फुंका जा रहा हूं या छोटेपन में फुंका जा रहा हूं. अगर यह मेरा घमंड है जो मुझे जला रहा है तो इसमें मेरा क्या क़सूर ! यह तो भगवान की देन है. जिन भगवान से मैंने ट्रूमैन बनने का वरदान मांगा उन्हीं से यह वरदान और क्यों न मांगा जाय कि वह माओ, स्तालिन और जवाहरलाल को ऐसा बना दें कि वह मुझे बड़ा समझने लगें और मेरे क़दमों पर आ गिरें. यह सोचकर वरदान के लिये जैसे ही मैंने ऊपर मुंह उठाया तो वहां भगवान न मिले. तब मुझे याद आई कि ओ हो ! यह तो मेरा दिल ही था जो भगवान बनकर मेरे सामने आया था. अब मुझे अपने दिल पर बेहद ग़ुस्सा आया. और जैसे ही मैंने अपनी छाती पर दांत मार कर दिल को काट खाने के लिये अपनी गरदन को ज़ोर से झटका दिया तो मेरी आंख खुल गई.

کو دشمن ماننا پڑا تھا اور جاپانی فوجوں پر جو کوریا میں پڑی ہوئی تھیں اُن پر حملہ کرنا پڑا تھا ۔ جو استالن ایٹم بم سے اِتنا ڈرتا تھا اور جسے آج بھی ڈرنا چاہئیے وہ میری باتوں کو اِتنی بے پرواہی سے سنے اور یوں ہی اُڑادے ؟ کہیں سچ مچ کوئی چھوٹا پن تو مجھ میں نہیں آ گیا ؟ آخر یہ لوگ کیوں مجھے چھوٹا سمجھتے ہیں ۔ اور ہاں' ہاں' یہ کل کی حکومت کا بچہ پردھان وزیر جواہر لال یہ بھی تو میرے خلاف سر الاپ بیٹھتا ہے ۔ اِس کل کے بچے کی یہ ہمت ' تب تو ضرور کوئی چھوٹا پن مجھ میں آگیا ہے ۔

میں اِس طرح سوچ ہی رہا تھا کہ مجھے اندر کچھ تکلیف سی محسوس ہوئی ۔ میرا دل بے طرح جلنے لگا ۔ میں یہی نہ سمجھ پایا کہ میں بڑے پن میں پھنکا جا رہا ہوں یا چھوٹے پن میں پھنکا جا رہا ہوں ۔ اگر یہ میرا گھمنڈ ہے جو مجھے جلا رہا ہے تو اِس میں میرا کیا قصور ! یہ تو بھگوان کی دین ہے ۔ جن بھگوان سے میں نے ٹرومین بننے کا وردان مانگا اُنہیں سے یہ وردان کیوں نہ مانگا جائے کہ وہ ماؤ' استالن اور جواہر لال کو ایسا بنا دیں کہ وہ مجھے بڑا سمجھنے لگیں اور میرے قدموں پر آگریں ۔ یہ سوچ کر وردان کے لئے جیسے ہی میں نے اوپر منہ اُٹھایا تو وہاں بھگوان نہ ملے ۔ تب مجھے یاد آئی کہ او ہو ! یہ تو میرا دل ہی تھا جو بھگوان بن کر میرے سامنے آیا تھا ۔ اب مجھے اپنے دل پر بے حد غصہ آیا ۔ اور جیسے ہی میں نے اپنی چھاتی پر دانت مار کر دل کو کاٹ کھانے کے لئے اپنی گردن کو زور سے جھٹکا دیا تو میری آنکھ کھل گئی ۔

बनाता है जवाहरलाल को जिसकी बहन हिन्दुस्तान में भूके मरने वालों के लिये अमरीकी अनाज के दानों के लिये हमारे सामने हाथ पसारे सामने खड़ी रहती है. और कितना मूरख है यह माओ ! जो दोस्ती करता है रूस से. कहां रूस और कहां अमरीका ! रूस के पास धरा क्या है ? बरफ़ से ढके साइबेरिया के मैदान हैं, जब कि अमरीका के पास अनाज के लहराते हुए खेत हैं. और रूस के पास क्या है ? मीलों तक लम्बे लम्बे सूखे पहाड़ हैं. जब कि अमरीका में जगह जगह सोने के ढेर हैं. और फिर माओ दोस्ती करने बैठा है स्तालिन से ! उसके पास क्या धरा है ? वह डिक्टेटर भले ही हो पर मज़दूरों का डिक्टेटर भी क्या ? मज़दूरों का डिक्टेटर यानी मेट. मुझ प्रेसीडेन्ट को छोड़ कर मेट से दोस्ती ! और इन सबसे दोस्ती करने से फ़ायदा क्या ? क्या वह आज तक यू. एन. ओ. में आ पाया ? उसकी समझ में यह क्यों नहीं आता कि यह सिर्फ़ मेरा ही काम है कि मैंने चीन के न कुछ चांगकाई शेक के आदमी को यू. एन. ओ. में जगह दे रक्खी है. यह माओ क्यों नहीं इन सब को छोड़ कर मेरे पास आता. यह मुझे छोटा समझता है, कहीं मैं सचमुच तो छोटा नहीं हूँ ? नहीं, नहीं, मैं छोटा नहीं हो सकता. फिर यह स्तालिन मेरी परवाह क्यों नहीं करता ? यू. एन. ओ. में रूस का आदमी मलिक आए दिन मेरी परवाह किये बग़ैर अड़ंगे लगाए रहता है. क्या यह भी मुझको छोटा समझता है ? और उसको मुझे छोटा समझने का क्या हक़ हासिल है. क्या यह वह दिन भूल गया जब मेरी एटम बम की मार से जापान ने घुटने टेक दिये थे, और सिर्फ़ उसी के डर से इस स्तालिन को मजबूर होकर अपने दोस्त जापान

بناتا ہے جواہر لال کو جسکی بہن ہندستان میں بھوکے مرنے والوں کے لئے امریکی اناج کے دانوں کے لئے ہمارے سامنے ہاتھ پسارے کھڑی رہتی ہے . اور کتنا موُرکھ ہے یہ ماؤ ! جو دوستی کرتا ہے روس سے . کہاں روس اور کہاں امریکہ ! روس کے پاس دھرا کیا ہے ؟ برف سے ڈھکے سائبیریا کے میدان ہیں ، جبکہ امریکہ کے پاس اناج کے لہراتے ہوئے کھیت ہیں . اور روس کے پاس کیا ہے ؟ میلوں تک لمبے لمبے سوکھے پہاڑ ہیں ، جبکہ امریکہ میں جگہ جگہ سونے کے ڈھیر ہیں . اور پھر ماؤ دوستی کرنے بیٹھا ہے استالن سے ! اُسکے پاس کیا دھرا ہے ؟ وہ ڈکٹیٹر بھلے ہی ہو پر مزدوروں کا ڈکٹیٹر بھی کیا ؟ مزدوروں کا ڈکٹیٹر یعنی میٹ . مجھ پریسیڈنٹ کو چھوڑ کر میٹ سے دوستی ! اور ان سب سے دوستی کرنے سے فائدہ کیا ؟ کیا وہ آج تک یو . این . او . میں آ پایا ؟ اُسکی سمجھ میں یہ کیوں نہیں آتا کہ یہ صرف میرا ہی کام ہے کہ میں نے چین کے نہ کچھ چانگ کائی شیک کے آدمی کو یو . این . او . میں جگہ دے رکھی ہے . یہ ماؤ کیوں نہیں ان سب کو چھوڑ کر میرے پاس آتا . یہ مجھے چھوٹا سمجھتا ہے ، کہیں میں سچ مچ تو چھوٹا نہیں ہوں ؟ نہیں ، نہیں ، میں چھوٹا نہیں ہو سکتا . پھر یہ استالن میری پرواہ کیوں نہیں کرتا ؟ یو . این . او . میں روس کا آدمی ملک آئے دن میری پرواہ کئے بغیر اڑنگے لگائے رہتا ہے . کیا یہ بھی مجھ کو چھوٹا سمجھتا ہے ؟ اور اُس کو مجھے چھوٹا سمجھنے کا کیا حق حاصل ہے . کیا یہ وہ دن بھول گیا جب میری ایٹم بم کی مار سے جاپان نے گھٹنے ٹیک دیئے تھے ، اور صرف اُسی کے ڈر سے اِس استالن کو مجبور ہوکر اپنے دوست جاپان

पर दूसरे मुल्कों में भी क्या नहीं कर सकता. और मुझे ऐटम बम की धमकी को भी कहां ज़रूरत है. मैं डालर की मार से जिस मुल्क को चाहूँ, जिस राज को चाहूं, जिस डिक्टेटर को चाहूँ चारों खाने चित्त गिरा सकता हूँ. मैं सचमुच बहुत बड़ा हूँ. कोई यह न समझे कि मैं यह घमंड से कह रहा हूँ. मैं तो सिर्फ़ एक सचाई का नम्रता के साथ एलान कर रहा हूँ.

इतने में हवा में से एक आवज़ आई—"क्या ?"

मैं किसी की 'क्या' की परवाह नहीं करता. मैं 'क्या' करने वालों को पलक मारते खाक में मिला सकता हूँ. यू. एन. ओ. जिसमें ६० मुल्क शामिल हैं, मुझे बड़ा मानती है, मेरे इशारों पर चलती है. मैं जो चाहता हूं, उस यू. एन. ओ. से करा लेता हूं. और यह माओ मुझे छोटा समझता है. वह माओ जिसके देस का प्रेसीडेन्ट चांग-काई शेक मेरा अरबों का क़र्ज़दार है—जिसकी औरत आए दिन कल तक मेरे मुल्क और मेरे सामने क़र्ज़ की भीक के लिये हाथ पसारे खड़ी रहती थी यह माओ ! यह माओ जिसका मुल्क कल तक जिस जापान की धाक से थर थर कांपता था उस मुल्क पर आज मेरा एक बूढ़ा जनरल इस तरह राज कर रहा है जैसे कभी कर्ज़न ने भी हिन्दुस्तान पर नहीं किया था. या जैसे कभी ओडायर ने भी पंजाब पर नहीं किया था. यह माओ, यह माओ अपने को समझता क्या है ? यह नहीं समझता कि मुझे छोटा समझ कर यह ख़ुद बहुत छोटा हो जायगा. इस माओ की इतनी हिम्मत कि यह म्याऊँ की आवाज़ निकाले और मुझे चूहा समझने की कोशिश करे. कितना मूरख है यह माओ ! दोस्ती करने बैठा है हिन्दुस्तान से और दोस्त

پر دوسرے ملکوں میں بھی کیا نہیں کر سکتا . اور مجھے ایٹم بم کی دھمکی کی بھی کہاں ضرورت ہے . میں ڈالر کی مار سے جس ملک کو چاہوں' جس راج کو چاہوں' جس ڈکٹیٹر کو چاہوں' چاروں خانے چت گرا سکتا ہوں . میں سچ مچ بہت بڑا ہوں . کوئی یہ نہ سمجھے کہ میں یہ گھمنڈ سے کہہ رہا ہوں . میں تو صرف ایک سچائی کا نمرتا کے ساتھ اعلان کر رہا ہوں .

اِتنے میں ہوا میں سے ایک آواز آئی—"کیا ؟"

میں کسی کی 'کیا' کی پرواہ نہیں کرتا . میں 'کیا' کرنے والوں کو پلک مارتے خاک میں ملا سکتا ہوں . یو . این . او . جس میں ۶۰ ملک شامل ہیں' مجھے بڑا مانتی ہے' میرے اشاروں پر چلتی ہے . میں جو چاہتا ہوں اُس یو . این . او . سے کرا لیتا ہوں . اور یہ ماؤ مجھے چھوٹا سمجھتا ہے . وہ ماؤ جسکے دیس کا پریسیڈنٹ چانگ کائی شیک میرا اربوں کا قرضدار ہے— جسکی عورت آئے دن کل تک میرے ملک اور میرے سامنے قرض کی بھیک کے لئے ہاتھ پسارے کھڑی رہتی تھی . یہ ماؤ ! یہ ماؤ جس کا ملک کل تک جس جاپان کی دھاک سے تھر تھر کانپتا تھا اُس ملک پر آج میرا ایک بوڑھا جنرل اِس طرح راج کر رہا ہے جیسے کبھی کرزن نے بھی ہندستان پر نہیں کیا تھا یا جیسے کبھی اوڈائر نے بھی پنجاب پر نہیں کیا تھا . یہ ماؤ یہ ماؤ اپنے کو سمجھتا کیا ہے ؟ یہ نہیں سمجھتا کہ مجھے چھوٹا سمجھکر یہ خود بہت چھوٹا ہو جائیگا . اِس ماؤ کی اِتنی ہمت کہ یہ میاؤں کی آواز نکالے اور مجھے چوہا سمجھنے کی کوشش کرے . کتنا مورکھ ہے یہ ماؤ ! دوستی کرنے بیٹھا ہے ہندستان سے اور دوست

और मैं ट्रूमैन बन गया. अब या तो भगवान मेरे सामने से भाग गए या मुझे भगवान की ज़रूरत न रह गई. भगवान अब मेरे सामने न थे. अब तो मेरे सामने थीं अमरीका की ४७ रियासतें, अरबों खरबों डालर पर मेरा अधिकार. हज़ारों नागरी नौकर मेरे इशारे पर नाचने को तैयार, दसियों जनरल और लाखों सिपाही मेरे हुकुम पर बीसियों मुल्कों को आंख के इशारे पर ऐटम बम से ज़मी-दोज़ करने के लिये लैस. बस मुझे ऐसा मालूम होने लगा कि मैं दुनिया में सबसे बड़ा आदमी हूँ. हिन्दुस्तानियों ने चक्रवर्ती राजा का ख़याल खड़ा किया, कभी चक्रवर्ती राजा नहीं खड़ा कर सके. मैं चक्रवर्ती हूं. नाम से प्रसीडेन्ट हूँ तो क्या? मुझे अमरीका की फ़ौजों पर पूरा अख़्तियार हासिल है. मुझे वज़ीर मिले हुए हैं पर वह मेरे सलाहकार हैं. मेरे काम में कोई रोक नहीं खड़ी कर सकता. जनता की कांगरेस भी है. पर वह भी मुझे किसी काम से नहीं रोक सकती. इस तरह मैं आज अमरीका का एक छत्र राजा हूँ. मैं बरतानिया के राजा की तरह नाम का राजा नहीं हूँ, काम का राजा हूँ. मैं डिक्टेटर या तानाशाह नाम को पसंद नहीं करता क्योंकि इस नाम को कुछ लोगों ने अपना रक्खा है और अमरीका के लोग तानाशाह और तानाशाही को बिलकुल नहीं पसंद करते. और मैं तो तानाशाह और तानाशाही को किसी आंख भी नहीं देख सकता. और फिर प्रेसी-डेन्टी में और वह भी अमरीका की प्रेसीडेन्टी में किस तानाशाह और किस तरह की तानाशाही की कमी है. मैं प्रेसीडेन्ट होते हुए जैसे चक्रवर्ती और राजा हूं वैसे ही डिक्टेटर यानी तानाशाह भी हूं. मैं अपने मुल्क में क्या नहीं कर सकता. और ऐटम बम के बल

اور میں ٹرومین بن گیا . اب یا تو بھگوان میرے سامنے سے بھاگ گئے یا مجھے بھگوان کی ضرورت نہ رہ گئی . بھگوان اب میرے سامنے نہ تھے . اب تو میرے سامنے تھیں امریکہ کی ۴۷ ریاستیں ' اربوں کھربوں ڈالر پر میرا ادھیکار ' ہزاروں ناگری نوکر میرے اشارے پر ناچنے کو تیار ' دسیوں جنرل اور لاکھوں سپاہی میرے حکم پر بیسیوں ملکوں کو آنکھ کے اشارے پر ایٹم بم سے زمیں دوز کرنے کے لئے لیس . بس مجھے ایسا معلوم ہونے لگا کہ میں دنیا میں سب سے بڑا آدمی ہوں . ہندستانیوں نے چکرورتی راجہ کا خیال کھڑا کیا ' کبھی چکرورتی راجہ نہیں کھڑا کر سکے میں چکرورتی ہوں . نام سے پریسیڈنٹ ہوں تو کیا ؟ مجھے امریکہ کی فوجوں پر پورا اختیار حاصل ہے . مجھے وزیر ملے ہوئے ہیں پر وہ میرے صلاح کار ہیں . میرے کام میں کوئی روک نہیں کھڑی کر سکتا . جنتا کی کانگریس بھی ہے . پر وہ بھی مجھے کسی کام سے نہیں روک سکتی . اس طرح میں آج امریکہ کا ایک چھتر راجہ ہوں . میں برطانیہ کے راجہ کی طرح نام کا راجہ نہیں ہوں ' کام کا راجہ ہوں . میں ڈکٹیٹر یا تانا شاہ نام کو پسند نہیں کرتا کیونکہ اس نام کو کچھ لوگوں نے اپنا رکھا ہے اور امریکہ کے لوگ تانا شاہ اور تانا شاہی کو بالکل نہیں پسند کرتے . اور میں تو تانا شاہ اور تانا شاہی کو کسی آنکھ بھی نہیں دیکھ سکتا . اور پھر پریسیڈنٹی میں اور وہ بھی امریکہ کی پریسیڈنٹی میں کس تانا شاہ اور کس طرح کی تانا شاہی کی کمی ہے . میں پریسیڈنٹ ہوتے ہوئے جیسے چکرورتی اور راجہ ہوں ویسے ہی ڈکٹیٹر یعنی تانا شاہ بھی ہوں . میں اپنے ملک میں کیا نہیں کر سکتا . اور ایٹم بم کے بل

अहंकार

अचानक मन बोल उठा—"मैं भगवान बनना चाहता हूं. आप की इजाजत है ?"

'इजाज़त' की बात सुनकर मुझे भी घमंड हो आया. मैं बोला—"इजाज़त तो मैं तुम्हें देता हूं. पर एक शर्त पर......"

"वह क्या ?"

"वह यह कि भगवान बनकर तुमको मुझे वरदान देना पड़ेगा."

"ज़रूर."

'ज़रूर' पूरा पूरा मैंने सुना भी न था कि मेरे सामने चारहाथ वाले मुकुटधारी भगवान खड़े थे और कह रहे थे—

"मांग, क्या मांगना है ?"

मैं एकदम सिटपिटा गया, मुझे क्या पता था कि मन इतनी जल्दी भगवान बन सकता है और फिर अपना वचन निभा सकता है. मैंने अभी सोचा भी न था कि अगर भगवान सामने आ जाये तो क्या मांगना चाहिये. फिर भी मैंने जल्दी जल्दी इधर उधर नज़र डाली पर कुछ सूझ न पड़ा. अंदर नज़र डाली तो मन शायद सामने पड़ी मेज़ पर नज़र डाली तो वहां दुनिया का नक़शा पड़ा मिला और पहली नज़र अमरीका पर पड़ी और यह फ़ैसला होगया.

मैं बोला—"हे भगवान मुझे ट्रूमैन बना दो."

"ऐसा ही होगा."

اهنکار

اچانک من بول اُٹھا—'' میں بھگوان بننا چاھتا ھوں' آپ کی اجازت ھے ؟''

'اجازت' کی بات سن کر مجھے بھی گھمنڈ ھو آیا . میں بولا—

''اجازت تو میں تمہیں دیتا ھوں' پر ایک شرط پر......''

''وہ کیا ؟''

''وہ یہ کہ بھگوان بن کر تم کو مجھے وردان دینا پڑے گا .''

''ضرور .''

'ضرور' پورا پورا میں نے سنا بھی نہ تھا کہ میرے سامنے چار ھاتھ والے مکٹ دھاری بھگوان کھڑے تھے اور کہہ رھے تھے—

''مانگ' کیا مانگتا ھے ؟''

میں ایک دم سٹپٹا گیا' مجھے کیا پتہ تھا کہ من اِتنی جلدی بھگوان بن سکتا ھے اور پھر اپنا وچن نبھا سکتا ھے . میں نے ابھی سوچا بھی نہ تھا کہ اگر بھگوان سامنے آجائیں تو کیا مانگنا چاھئے . پھر بھی میں نے جلدی جلدی اِدھر اُدھر نظر ڈالی پر کچھ سوجھ نہ پڑا . اندر نظر ڈالی تو من غائب سامنے پڑی میز پر نظر ڈالی تو وھاں دنیا کا نقشہ پڑا ملا اور پہلی نظر امریکہ پر پڑی اور یہ فیصلہ ھوگیا .''

میں بولا—'' ھے بھگوان مجھے ٹرومین بنا دو .''

''ایسا ھی ھوگا .''

जिल्द १० मार्च सन् '५१ नम्बर ३

نمبر ۳ مارچ سن ۵۱ء جلد ۱۰

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नयाहिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

इनसान

(भाई शादीराम जोशी)

जब खून की नदियां बहती हों, कविता सरिता का बहना क्या !
जब इनसां इनसां ही न रहा, तो सुनना क्या और कहना क्या !!
जी ऊब गया है दुनिया से, यह दुनिया कैसी दुनिया है !
मानव के हाथों मानव का, ऐसे ऐसे दुख सहना क्या !!
पशु अच्छे हैं इनसानों से, अन्दर बाहर से एक तो हैं !
जब अन्दर से हैवान रहा, इन्सान का चोला पहना क्या !!
उठ, कवि, लेकर वीना अपनी, चल बास करें जंगल बन में !
जिस नगरी में यह पाप हुए, उस नगरी में अब रहना क्या !!

انسان

(بھائی شادی رام جوشی)

جب خون کی ندیاں بہتی ہوں، کویتا سریتا کا بہنا کیا !
جب اِنسان اِنسان ہی نہ رہا، تو سننا کیا اور کہنا کیا !!
جی اوب گیا ہے دنیا سے، یہ دنیا کیسی دنیا ہے !
مانو کے ہاتھوں مانو کا، ایسے ایسے دکھ سہنا کیا !!
پشو اچھے ہیں انسانوں سے، اندر باہر سے ایک تو ہیں !
جب اندر سے حیوان رہا، اِنسان کا چولا پہنا کیا !!
اُٹھ، کوی، لیکر وینا اپنی، چل باس کریں جنگل بن میں !
جس نگری میں یہ پاپ ہوئے، اُس نگری میں اب رہنا کیا !!

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—
ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ्फर हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

मार्च १९५१

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल एक परचा दस आने. मैनेजर

هندستانی کلچر سوسائیٹی کا پرچا

ایڈیٹر —
تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

مارچ 1951

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال
مینیجر

इस नम्बर के ख़ास लेख —

अहंकार—भगवानदीन

प्रेम और संगीत—होश बिलग्रामी

इलाहाबाद से कन्याकुमारी—ओमप्रकाश पालीवाल

चीन और अमरीका—आशाराम

हमारी राय :—

चीन और 'एग्रेसरी' की सनद—भगवानदीन

हिन्दू कोड बिल—भगवानदीन

अमानत में ख़यानत—भगवानदीन

वनस्पती पर रोक और सरकार—भगवानदीन

نمبر کے خاص لیکھ —

... بھگوان دین

پریم اور سنگیت—ہوش بلگرامی

الہ آباد سے کنیا کماری—اوم پرکاش پالی وال

چین اور امریکہ—آشا رام

ہماری رائے :—

چین اور 'ایگریسری' کی سند—بھگوان دین

ہندو کوڈ بل—بھگوان دین

امانت میں خیانت—بھگوان دین

بنسپتی پر روک اور سرکار—بھگوان دین

मार्च सन् १९५१

क़ीमत दस आना

مارچ سن 1951

قیمت دس آنہ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

ہندستانی کلچر سوسائٹی، الہ آباد

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो २६ जनवरी सन् १९५० से सारे भारत में लागू हुआ

'भारत में अंगरेजी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझ ले.

यदि आप आने वाले आम चुनाव में, जिस पर भारत का सारा भविष्य निर्भर है, समझ कर हिस्सा लेना चाहते हैं और आज़ाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो ज़रूरी है कि आप इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लें.

आसानी के लिये किताब के आख़ीर में हिन्दी से अंगरेज़ी और अंगरेज़ी से हिन्दी साठ पन्ने की शब्दमाला दे दी गई है.

भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. कीमत केवल साढ़े सात रुपए.

नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकता है.

मिलने का पता :—

मैनेजर 'नया हिन्द'
१४५, मुट्ठी गंज.
इलाहाबाद.

بھارت کا ودھان

پورا ھندی انوواد

جو ۲۶ جنوری سن ۱۹۵۰ سے سارے بھارت میں لاگو ہوا۔

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندر لال دوارا مول انگریزی سے انووادت۔

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اسے اچھی طرح سمجھ لے۔

یدی آپ آنے والے عام چناؤ میں جس پر بھارت کا سارا بھوشیہ نربھر ہے سمجھ کر حصہ لینا چاہتے ہیں اور آزاد بھارت میں اپنے ادھیکار سمجھنا چاہتے ہیں تو ضروری ہے کہ آپ اس پستک کو دھیان سے پڑھ لیں۔

آسانی کے لئے کتاب کے آخر میں ھندی سے انگریزی اور انگریزی سے ھندی ساٹھ پنّے کی شبد مالا دے دی گئی ہے۔

بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے۔

آسان بامحاورہ بھاشا۔ رایل اٹھ پیجی بڑا سائز لگ بھگ چار سو پنّے۔ کپڑے کی سندر جلد۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے

ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتا ہے۔

ملنے کا پتہ :—

منیجر 'نیا ہند'
۱۴۵ مٹھی گنج
الہ آباد۔

Purushottam Prasad, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों .

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों. अखबारों, रिसालों वग़ैरा का छापना .

(३) पढ़ाई घरों. किताब घरों. सभाओं. कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना .

—o—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा: वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़: गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख्ता, श्री बी० जी० खेर. मि० एस० के० रुद्रा, पं० विश्वम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल .

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये .

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,

१४५, मुट्ठी गंज. इलाहाबाद .

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

کرنا جس میں سب ھندستانی شامل ھوں .

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(۳) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں لکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ: وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق: گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس: سکریٹری—پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی جی . کھیر' مسٹر ایس . کے . رودرا' پنڈت بشمبھر ناتھ' مہاتما بھگوان دین' سیٹھ پونم چند رانکا' قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال .

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے —

سندر لال

سکریٹری' ھندستانی کلچر سوسائٹی'

۱۴۵' مٹھی گنج' الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی نے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ھے . "نیا ھند" کے جو گاھک ممبر بننا چاھیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ھی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ھوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ھوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کراسکینگے .

(अंगरेज़ी नागरी लिखावट में)

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ खास खास अंगरेज़ी शब्दों के लिये आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवानदीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाये हैं. भारत के विधान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास ज़रूर रखिये. क़ीमत दो रुपये.

मुस्लिम देश भक्त_लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्हों ने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

आज के शहीद_ सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी.

उन वीरों की कहानियाँ जो फ़िरक़ावाराना दंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गये.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.

सुन्दर जिल्द और चिकने काग़ज़ पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

किसान की पुकार_लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत ज़रूरी है जो खेती वाड़ी से दिल चस्पी रखते हैं, और भारत के अन्न सन्कट को दूर करने में विश्वास रखते हैं. क़ीमत पाँच आने.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठी गंज, इलाहबाद.

(انگریزی ناگری لکھاوٹ میں)

ہند کا جونیا ودھان پاس ہوا ہے اسکے لگ بھگ چودہ سو خاص خاص انگریزی شبدوں کے لئے آسان ہندستانی شبد مہاتما بھگوان دین اور دوسرے ودوانوں نے سجھائے ہیں. بھارت کے ودھان کو سمجھنے کے لئے اس شبداولی کو اپنے پاس ضرور رکھئے . قیمت دو روپئے .

مسلم دیش بھکت_ لیکھک— شری رتن لال بنسل

ان مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنہوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی . کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے . قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے .

آج کے شہید_ سمپادک - شری رتن لال بنسل

اس کتاب میں ان ویروں کی کہانیاں ہیں جنہوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں انسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہیں کی اور اسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کر دی .

ان بہادروں کی کہانیاں جو فرقہ وارانہ دنگوں میں لوگوں کو حیوانیت سے روکتے ہوئے شہید ہو گئے .

ہر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب .

سندر جلد اور چکنے کاغذ پر چھپی آٹھ تصویروں کے ساتھ اس کتاب کا دام صرف ڈھائی روپیہ .

کسان کی پکار_ لیکھک— شری آر . وینکٹ راؤ .

یہ کتاب کسانوں کے لئے ہی نہیں، ان لوگوں کے لئے بھی بہت ضروری ہے جو کھیتی باڑی سے دلچسپی رکھتے ہیں اور بھارت کے ان سنکٹ کو دور کرنے میں وشواس رکھتے ہیں . قیمت پانچ آنے .

ملنے کا پتہ— منیجر 'نیا ہند' ۱۴۵ ' مٹھی گنج ' الہ آباد .

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़—साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया .

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है— महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् १९४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गये हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़—इस छोटी सी किताब में सन १९४९-५० में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—मैनेजर 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق—

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی' مذھبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج' جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ھمارے بیچ میں نہ رھنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے— مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر ۱۹۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وھاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک ورنن . اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ھیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق— اس چھوٹی سی کتاب میں ۱۹۴۹-۵۰ میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ھے اور ایسے جھگڑوں کو ھمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ھے . قیمت صرف دو آنے .

ملنے کا پتہ—مینیجر 'نیا ھند' ۱۴۵' مٹھی گنج' الہ آباد .

हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ھوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ھوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے .

क़ीमत दस आने

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

गीता और क़ुरान

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे दे कर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

इसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत. क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़बत, आख़रत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपये.

हिन्दू मुस्लिम एकता — इस में यह चार लेक्चर जमा

گیتا اور قرآن

لیکھک—پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے ۔

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت' گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے ۔

آخر میں قرآن سے پہلے کی عرب کی حالت' قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے ۔ اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے. یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد' عاقبت' آخرت' جنت' جہنم' کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے ۔

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں اُنہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے ۔

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ ۔

पांच से ज़्यादह किताबें ख़रीदने वालों और बुकसेलरों को ३३ फ़ीसदी कमीशन दिया जायगा.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंजर अली सोख़्ता

२९ जनवरी सन् १९४८ को महात्मा गांधी ने आल इंडिया कांगरेस कमेटी के सामने एक सुझाव के रूप में 'लोक सेवक संघ का एक नया विधान तैयार किया था. इस विधान में उन्होंने सलाह दी थी कि कांगरेस का सारा संगठन तोड़ दिया जावे और कांगरेस वाले हकूमत से बाहर निकल कर एक 'लोक सेवक संघ' बनाकर काम करें.

३० जनवरी को अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा जी ने कांगरेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर वह विधान दिया कि वह गांधी जी की तरफ़ से उसे आल इंडिया कांगरेस कमेटी में पेश कर दें. यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंजर अली सोख़्ता ने की है जो गांधी वाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधी वाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. २२५ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपये.

मिलने का पता—मैनेजर, 'नया हिन्द' १४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

پانچ سے زیادہ کتابیں خریدنے والوں اور بکسیلروں کو ۳۳ فیصدی کمیشن دیا جائے گا۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمہ ہوگا۔

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

۲۹ جنوری سن ۱۹۴۸ کو مہاتما گاندھی نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے ایک سجھاؤ کے روپ میں 'لوک سیوک سنگھ' کا ایک نیا ودھان تیار کیا تھا۔ اس ودھان میں انہوں نے صلاح دی تھی کہ کانگریس کا سارا سنگٹھن توڑ دیا جاوے اور کانگریس والے حکومت سے باہر نکل کر ایک 'لوک سیوک سنگھ' بنا کر کام کریں۔

۳۰ جنوری کو اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما جی نے کانگریس کے جنرل سکریٹری کو بلا کر وہ ودھان دیا کہ وہ گاندھی جی کی طرف سے اسے آل انڈیا کانگریس کمیٹی میں پیش کردیں۔ یہ چھوٹا سا ودھان دیش کے نام گاندھی جی کی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے انے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں۔

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اسکا پڑھنا بہت ضروری ہے۔ ۲۲۵ صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے۔

ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ہند' ۱۴۵' مٹھی گنج' الہ آباد۔

उधर न गया और आज जनता के राज में व्योहारी और जन सरकार की निगाह भी कभी भूले भटके उधर चली जाती हो तो चली जाती हो. और वह हैं हमारे देस की आदम जातियाँ यानी गोंड, भील, संथाल, नागा जैसी जातियां. अनेकों राज आए और गए यह सब इसी तरह जंगल के बासी बने रहे जैसे आज हैं. गांधी जी के साथ काम करने वाले के नाते आज बड़े बड़े अखबारों ने अपने अखबारों में खास जगह देकर याद किया है. पर वह जल्दी ही उन्हें भूल जायंगे. पर हमारे देस की आदम जातियां उन्हें यों ही न भुला सकेंगी. और सचमुच ठक्कर बापा का यह काम ऐसा काम था जो आगे चल कर हिन्दुस्तानी नेशन को बड़ा मजबूत बनादे. पर वह तो अभी उस रास्ते में बहुत ही थोड़ा कर पाए थे. और अब देखते हैं कौन है जो इस नाम से भागने वाले नेता की जगह लेता है.

ठक्कर बापा जैसे आदमियों की भी देस को जरूरत होती है, बहुत बड़ी जरूरत होती है. इतना भी तो बहुत कम ही समझ पाते हैं.

ठक्कर बापा हमें छोड़कर गए तो इसलिये हैं कि वह उस लोक में सुख पायंगे पर जैसा उनका स्वभाव था हमें आशा नहीं कि वह वहाँ बैठे भी आदम जातियों के दुख से बेचैन न हों. उनको चैन में रहने देने के लिये एक ही इलाज है कि अब जवानों की टोलियाँ निकल पड़ें और आदम जातियों को अपने में ऐसा मिला लें कि यह निशान भी न रह जाए कि कभी यहाँ इतने पिछड़े हुए लोग भी थे.

ज्ञानी शूर बड़ा नहीं वह ही
ऊँचा उठ कर चमके जो
फेन लहर पर मोती तल में
फेन फेन है मोती वह

२३. १. ५१. —भगवानदीन

اُدھر نہ گیا اور آج جنتا کے راج میں بیوہاری اور جن سرکار کی نگاہ بھی کبھی بھولے بھٹکے اُدھر چلی جاتی ہو تو چلی جاتی ہو۔ اور وہ ہیں ہمارے دیس کی آدم جاتیاں یعنی گونڈ بھیل سنتھال، ناگا جیسی جاتیاں. انیکوں راج آئے اور گئے یہ سب اِسی طرح جنگل کے باسی بنے رہے جیسے آج ہیں۔ گاندھی جی کے ساتھ کام کرنے والے کے ناتے آج بڑے بڑے اخباروں نے اپنے اخباروں میں خاص جگہ دے کر یاد کیا ہے۔ پر وہ جلدی ہی اُنھیں بھول جائینگے۔ پر ہمارے دیس کی آدم جاتیاں اُنھیں یوں ہی نہ بھلا سکینگی۔ اور سچ مچ ٹھکر باپا کا یہ کام ایسا کام تھا جو آگے چل کر ہندستانی نیشن کو بڑا مظبوط بنا دے۔ پر وہ تو ابھی اُس راستے میں بہت ہی تھوڑا کر پائے تھے۔ اور اب دیکھتے ہیں کون ہے جو اس نام سے بھاگنے والے نیتا کی جگہ لیتا ہے۔

ٹھکر باپا جیسے آدمیوں کی بھی دیس کو ضرورت ہوتی ہے، بہت بڑی ضرورت ہوتی ہے، اتنا بھی تو بہت کم ہی سمجھ پاتے ہیں۔

ٹھکر باپا ہمیں چھوڑ کر گئے تو اس لئے ہیں کہ وہ اُس لوک میں سکھ پائینگے پر جیسا اُن کا سوبھاؤ تھا ہمیں آشا نہیں کہ وہ وہاں بیٹھے بھی آدم جاتیوں کے دکھ سے بے چین نہ ہوں۔ اُن کو چین میں رہنے دینے کے لئے ایک ہی علاج ہے کہ اب جوانوں کی ٹولیاں نکل پڑیں اور آدم جاتیوں کو اپنے میں ایسا ملا لیں کہ یہ نشان بھی نہ رہ جائے کہ کبھی یہاں اتنے پچھڑے ہوئے لوگ بھی تھے۔

گیانی شور بڑا نہیں وہ ہی
اونچا اُٹھ کر چمکے جو
پھین لہر پر موتی تل میں
پھین پھین ہے موتی وہ

۲۳-۱-۵۱ — بھگوان دین

…. फिर भी राजकाजी मामलों में बेफ़िक्र रहना गुनाह है. नैपाली कांगरेस को चाहिये कि वह सतर्क रहे. जनता के क्या हक़ हैं इसका ज्ञान कराती रहे.

२०. १. '५१ —भगवानदीन

ठक्कर बापा—

ठक्कर बापा की हिन्दुस्तान के बड़े आदमियों में गिनती थी. पर और बड़े आदमियों से वह कुछ और ही ढंग के बड़े आदमी थे. आम तौर से बड़े आदमी नाम के पीछे नहीं पड़ा करते. नाम ही उन के पीछे दौड़ता फिरता है. हां, यह ठीक है कि आम तौर से बड़े आदमी अपने पीछे फिरने वाले नाम को दुतकारते नहीं. यह ठीक है कि वह उसे पुचकारते भी नहीं पर उससे बचकर नहीं भागते. ठक्कर बापा ने यह जान लिया कि नाम उनके पीछे लग गया है. पर जब उन्होंने यह देखा कि नाम लग कर भी काम उतना ज्यादा नहीं हो पाता जितना भारी नाम है तो उन्होंने उस नाम को दुतकार दिया. पार्लिमेन्ट की मेम्बरी की, पर जब उन्होंने देखा कि वहाँ वह ज्यादा काम के नहीं हैं तो वहां से उठ दिये—बेमतलब जगह घेरना उन्हें पसन्द न आया. एक मरतबा और लोग उन्हें राजधानी में पकड़ लाए और उन्हें एक प्रेमपोथी भेंट दी. उसे ले ली और भूल गए. और बुढ़ापे के आख़िरी दिनों में उन्होंने सुध भी ली तो ऐसों की जिन्हें हिन्दू भुला बैठे थे, जैनों ने याद न किया, बौद्धों ने भी ख़याल न किया, दुनिया भर के भाई चारे के क़ायल मुसलमानों की नज़र भी उस तरफ़ न गई, ईसाई राज में ईसाइयों का ध्यान भी

اٹھالیجئے . پھر بھی راج کاجی معاملوں میں بے فکر رہنا گناہ ہے . نیپالی کانگریس کو چاہئے کہ وہ سترک رہے . جنتا کے کیا حق ہیں اِس کا گیان کراتی رہے .

۲۰-۱-۵۱' —بھگوان دین

ٹھکر باپا —

ٹھکر باپا کی ہندستان کے بڑے آدمیوں میں گنتی تھی . پر اور بڑے آدمیوں سے وہ کچھ اور ہی ڈھنگ کے بڑے آدمی تھے . عام طور سے بڑے آدمی نام کے پیچھے نہیں پڑا کرتے . نام ہی اُن کے پیچھے دوڑتا پھرتا ہے . ہاں، یہ ٹھیک ہے کہ عام طور سے بڑے آدمی اپنے پیچھے پھرنے والے نام کو دتکارتے نہیں . یہ ٹھیک ہے کہ وہ اُسے پچکارتے بھی نہیں پر اُس سے بچ کر نہیں بھاگتے . ٹھکر باپا نے یہ جان لیا کہ نام اُن کے پیچھے لگ گیا ہے . پر جب اُنھوں نے یہ دیکھا کہ نام لگ کر بھی کام اُتنا زیادہ نہیں ہو پاتا جتنا بھاری نام ہے تو اُنھوں نے اُس نام کو دتکار دیا . پارلیمنٹ کی ممبری کی، پر جب اُنھوں نے دیکھا کہ وہاں وہ زیادہ کام کے نہیں ہیں تو وہاں سے اُٹھ دیئے—بے مطلب جگہ گھیرنا اُنھیں پسند نہ آیا . ایک مرتبہ اور لوگ اُنھیں راجدھانی میں پکڑ لائے اور اُنھیں ایک پریم پوتھی بھینٹ دی . اُسے لے لی اور بھول گئے . اور بڑھاپے کے آخری دنوں میں اُنھوں نے سدھ بھی لی تو ایسوں کی جنھیں ہندو بھلا بیٹھے تھے، جینوں نے یاد نہ کیا، بودھوں نے بھی خیال نہ کیا، دنیا بھر کے بھائی چارے کے قائل مسلمانوں کی نظر بھی اُس طرف نہ گئی، عیسائی راج میں عیسائیوں کا دھیان بھی

बात किसी से छिपी हुई नहीं है कि यह सुधार राना ने जी से माने नहीं हैं. उसको मनवाए गए हैं और उसके सिर पर थोपे गए हैं. हो सकता है कभी भी वह फिर इनको उठा फेंकने की कोशिश करे. पर इसके लिये नैपाली कांगरेस को हमेशा तैयार रहना चाहिये. इसमें भी कोई शक नहीं कि इस सुलह में अन्याय की पचास फ़ी सदी जीत हुई है पर उसकी पचास फ़ी सदी हार उसकी जड़ काटने के लिये काफ़ी है और न्याय की पचास फ़ी सदी जीत न्याय की जड़ों को जनता के दिलों में गहरी पहुँचाने के लिये बहुत काफ़ी है. राना की हकूमत का जादू टूटा यह क्या कम है? उसको यह पता तो लगा कि कोरी ताक़त बड़ी ख़तरनाक होती है. बग़ैर सफ़ाई और ईमानदारी के वह ताक़त कभी भी चारों ख़ाने चित्त गिर सकती है. राना ने यह कह कर तो कमाल ही कर दिया कि उसने अब तक नैपाल की आज़ादी क़ायम रक्खी है और उसकी स्वाधीनता को बनाए रख कर उसकी जनता को सुखी बनाया है और नैपाल की काफ़ी तरक़्क़ी कर दी है. पता नहीं राना साहब किसे आज़ादी, किसे स्वाधीनता और किसे तरक़्क़ी कहते हैं. इस तरह की बातों को सुनकर नैपाली कांगरेस को भड़कने की ज़रूरत नहीं. और इससे भी घबराने की कोई ज़रूरत नहीं कि हकूमत की बागडोर थामने में राना ख़ानदान का बराबरी का हाथ रहेगा. यानी चौदह आदमियों में से सात उसी के ख़ानदान के होंगे और सात जनता के नुमाइन्दे. तिस पर भी मुखिया राना साहब ही रहेंगे. नैपाली कांगरेस को यह तो समझ ही लेना चाहिये कि राना का जादू टूट चुका है और अब वह अपनी ताक़त को समझ गए हैं और उस से कोई ग़लत फ़ायदा नहीं

بات کسی سے چھپی هوئی نہیں هے که یه سدهار رانا نے جی سے مانے نہیں هیں . اُس کو منوائے گئے هیں اور اُس کے سر پر تھوپے گئے هیں . هو سکتا هے کبھی بھی وه پھر اِن کو اُٹھا پھینکنے کی کوشش کرے . پر اسکے لئے نیپالی کانگریس کو همیشه تیار رهنا چاهئے . اس میں بھی کوئی شک نہیں که اس صلح میں انیائے کی پچاس فیصدی جیت هوئی هے پر اُسکی پچاس فیصدی هار اُسکی جڑ کاٹنے کے لئے کافی هے . اور نیائے کی پچاس فیصدی جیت نیائے کی جڑوں کو جنتا کے دلوں میں گہری پہونچانے کے لئے بہت کافی هے . رانا کی حکومت کا جادو ٹوٹا یه کیا کم هے؟ اُسکو یه پته تو لگا که کوری طاقت بڑی خطرناک هوتی هے . بغیر صفائی اور ایمانداری کے وه طاقت کبھی بھی چاروں خانے چت گر سکتی هے . رانا نے یه کہکر تو کمال هی کر دیا که اُس نے ابتک نیپال کی آزادی قائم رکھی هے اور اُسکی سوادهینتا کو بنائے رکھکر اُسکی جنتا کو سکھی بنایا هے اور نیپال کی کافی ترقی کر دی هے . پته نہیں رانا صاحب کسے آزادی ، کسے سوادهینتا اور کسے ترقی کہتے هیں . اسطرح کی باتوں کو سن کر نیپالی کانگریس کو بھڑکنے کی ضرورت نہیں . اور اس سے بھی گھبرانے کی کوئی ضرورت نہیں که حکومت کی باگ ڈور تھامنے میں رانا خاندان کا برابری کا هاتھ رهیگا . یعنی چوده آدمیوں میں سے سات اُسی کے خاندان کے هونگے اور سات جنتا کے نمائندے . تس پر بھی مکھیا رانا صاحب هی رهینگے . نیپالی کانگریس کو یه تو سمجھ هی لینا چاهئے که رانا کا جادو ٹوٹ چکا هے اور اب وه اپنی طاقت کو سمجھ گئے هیں اور اُس سے کوئی غلط فائده نہیں

रख कर लिक्खे गए हैं. इसलिये वह ठीक नहीं हैं. पर यही बात तो उन्होंने खुद अपने भाशन में की है. उन्होंने भी जिसे बुरा समझा उसे बुरा रँग दिया है और जिसे भला समझा है उसे भला.

जो यह समझें कि पंचानवे तोले दूध में पाँच तोले संख्या है वह इस भाशन को न पढ़ें और जो यह समझें कि पंचानवे तोले सोने में पाँच तोले खोट मिली हुई है वह खोट छोड़कर उससे फ़ायदा उठाएं. हम तो खोट निकाल कर फ़ायदा उठाएंगे ही और बन पड़ा तो उसकी अच्छी अच्छी बातें अगले अंक में अपने परचे में देने की कोशिश करेंगे.

२८. १. '५१. —भगवानदीन

नैपाल के सुधार—

हिन्द की सरकार ने नैपाल के मामले में पड़ कर जिन शर्तों पर राजा और राना में सुलह करा दी वह वक़्त के देखते हुए तो ठीक ही है और जब नैपाली कांगरेस ने राजा को अपना मुखिया मान लिया तब उनको भी उन शर्तों के मान लेने से इनकार नहीं करना चाहिये. और पहले हल्ले में इतने सुधार कुछ मंहगे भी नहीं हैं. नैपाली काँग-रेस को यह समझ लेना चाहिये कि इन सुधारों से नैपाली कांगरेस की तरह ही न हिन्दुस्तानियों की तसल्ली है, न हिन्दुस्तानी सरकार की. आज अगर हिन्दुस्तानी सरकार के सर पर काशमीर की झंझट सवार न होती और तिब्बत और दूर पूरब की फ़िकरें उसको घेरे हुए न होतीं तो सुलह की शर्तें यह न होकर कुछ और ही होतीं. यह

گئے ہیں . اس لئے وہ ٹھیک نہیں ہیں . پر یہی بات تو اُنہوں نے خود اپنے بھاشن میں کی ہے . اُنہوں نے بھی جسے برا سمجھا اُسے برا رنگ دیا ہے اور جسے بھلا سمجھا ہے اُسے بھلا .

جو یہ سمجھیں کہ پنچانوے تولے دودھ میں پانچ تولے سنکھیا ہے وہ اس بھاشن کو نہ پڑھیں اور جو یہ سمجھیں کہ پنچانوے تولے سونے میں پانچ تولے کھوٹ ملی ہوئی ہے وہ کھوٹ چھوڑ کر اس سے فائدہ اُٹھائیں . ہم تو کھوٹ نکالکر فائدہ اُٹھائینگے ہی اور بن پڑا تو اُس کی اچھی اچھی باتیں اگلے انک میں اپنے پرچے میں دینے کی کوشش کرینگے .

۲۰-۱-۵۱ء — بھگوان دین

نیپال کے سدھار —

ہند کی سرکار نے نیپال کے معاملے میں پڑ کر جن شرطوں پر راجہ اور رانا میں صلح کرا دی وہ وقت کے دیکھتے ہوئے تو ٹھیک ہی ہے اور جب نیپالی کانگریس نے راجہ کو اپنا مکھیا مان لیا تب اُن کو بھی اُن شرطوں کے مان لینے سے انکار نہیں کرنا چاہئے . اور پہلے ہلے میں اتنے سدھار کچھ مہنگے بھی نہیں ہیں . نیپالی کانگریس کو یہ سمجھ لینا چاہئے کہ اُن سدھاروں سے نیپالی کانگریس کی طرح ہی نہ ہندستانیوں کی تسلی ہے، نہ ہندستانی سرکار کی . آج اگر ہندستانی سرکار کے سر پر کاشمیر کی جھنجھٹ سوار نہ ہوتی اور تبت اور دور پورب کی فکریں اُسکو گھیرے ہوئے نہ ہوتیں تو صلح کی شرطیں یہ نہ ہوکر کچھ اور ہی ہوتیں . یہ

कोटा सम्मेलन के सभापति—

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का जलसा दिसम्बर में कोटा में हुआ. सभापति थे श्री जयचन्द्र विद्यालंकार. आप इतिहास के तो पंडित हैं ही पर आपका नाम भी इतिहासी है. उनके भाशन की 'अमृत पत्रिका' में समालोचना देख कर जी चाहा कि उनका भाशन ध्यान से पढ़ा जाय. हम पढ़ने ही को थे कि 'नया हिन्द' के लिये उसी भाशन के बारे में एक साहब की आलोचना हमारे पास आ पहुँची. और वह 'पत्रिका' की आलोचना से भी बेहद कड़ी थी. अब हमारा शौक़ और बढ़ा और हमने तीन दिन तीन तीन घंटे देकर उस भाशन को बहुत अच्छी तरह पढ़ा. हमें वह पंचानवे फ़ीसदी पसंद आया और वह हमें इतना अच्छा मालूम हुआ कि हम अपने पढ़ने वालों को यह सलाह देंगे कि उसे जरूर सहेज कर रक्खें. वह सहेजने लायक़ चीज है. कहीं कहीं इतिहास का पक्का जानकार सभापति अगर इतिहास की सीमा लाँघ कर प्रचार के मैदान में उतर आया है तो इसमें बुराई ही क्या है? वह कोई इतिहास तो लिख नहीं रहा था. वह तो सभापति की गद्दी से सम्मेलन के मंच पर से बोल रहा था. तब उस भाशन में से प्रचार की खोट निकाल कर बाक़ी बचे कंचन से क्यों न फ़ायदा उठाया जाय. लहसन के बारे में यह कहावत है कि असल में वह अमृत है, ब्रह्माजी के हाथ से मैले में गिर गया था और इसलिये बहुत बदबूदार होगया है. पर उससे क्या लोग फ़ायदा नहीं उठाते? संस्कृत में तो लहसन का नाम रसोन है जिसका मतलब है कि उसमें सब रस हैं. सिर्फ़ एक रस की कमी है. बस यही हाल सभापति के भाशन का है, उसमें अकेले मिठास की कमी है. विद्यालंकार जी को

کوٹا سمیلن کے سبھاپتی —

هندی ساهتیه سمیلن کا جلسه دسمبر میں کوٹا میں ہوا . سبھا پتی تھے شری جے چندر ودیا لنکار . آپ اِتہاس کے تو پنڈت ھیں ھی پر آپکا نام بھی اِتہاسی ھے . اُن کے بھاشن کی 'امرت پتریکا' میں سمالوچنا دیکھ کر جی چاھا کہ اُن کا بھاشن دھیان سے پڑھا جائے . هم پڑھنے ھی کو تھے کہ 'نیا هند' کے لئے اُسی بھاشن کے بارے میں ایک صاحب کی آلوچنا همارے پاس آپہونچی . اور وہ 'پتریکا' کی آلوچنا سے بھی بے حد کڑی تھی . اب همارا شوق اور بڑھا اور هم نے تین دن تین تین گھنٹے دے کر اُس بھاشن کو بہت اچھی طرح پڑھا . همیں وہ پنچانوے فیصدی پسند آیا اور وہ همیں اتنا اچھا معلوم ہوا کہ هم اپنے پڑھنے والوں کو یہ صلاح دینگے کہ اُسے ضرور سہیج کر رکھیں. وہ سہیجنے لائق چیز ھے. کہیں کہیں اِتہاس کا پکا جان کار سبھا پتی اگر اتہاس کی سیما لانگھ کر پرچار کے میدان میں اُتر آیا ھے تو اِس میں برائی ھی کیا ھے ؟ وہ کوئی اتہاس تو لکھ نہیں رہا تھا . وہ تو سبھا پتی کی گدی سے سمیلن کے منچ پر سے بول رہا تھا . تب اُس بھاشن میں سے پرچار کی کھوٹ نکال کر باقی بچے کنچن سے کیوں نہ فائدہ اُٹھایا جائے . لہسن کے بارے میں یہ کہاوت ھے کہ اصل میں وہ امرت ھے . برھماجی کے ھاتھ سے میلے میں گر گیا تھا اور اس لئے بہت بدبو دار ہو گیا ھے . پر اُس سے کیا لوگ فائدہ نہیں اُٹھاتے ؟ سنسکرت میں تو لہسن کا نام رسون ھے جس کا مطلب ھے کہ اُس میں سب رس ھیں. صرف ایک رس کی کمی ھے . بس یہی حال سبھاپتی کے بھاشن کا ھے' اُسمیں اکیلے مٹھاس کی کمی ھے . ودیالنکار جی کو

...ना है. लड़ाई रोकने के बाद सुलह का काम आमतौर से बरसों चलता रहता है और बिदेसी फ़ौजें मुल्क पर छाई रहती हैं और मुल्क को नुक़सान पहुँचाती रहती हैं. अमरीका फिर लड़ने के लिये साँस लेना चाहता है. यह बात एक या दो फ़ीसदी सही न भी हो तो भी इसमें शक नहीं कि, अमरीका दूर पूरब पर छाए रहना चाहता है. फ़ारमूसा के चारों तरफ़ जहाज़ी घेरा डाले रखने का मतलब ही क्या है ? उसे कम से कम वह बेड़ा तो फ़ौरन हटा लेना चाहिये. क्या वह बेड़ा अभी यू. एन. ओ. की इजाज़त से वहाँ रुका हुआ है ? क्या उसका कोरिया की लड़ाई से कुछ सम्बन्ध है ? अगर नहीं है तो क्यों नहीं हटता और अगर है तो चीन को कैसे एतबार हो कि अमरीका कोरिया में लड़ाई बन्द करके कोई चाल नहीं खेलना चाहता.

सन '५२ में तीसरी लड़ाई छिड़ कर रहेगी और उस लड़ाई का अड्डा कोरिया और चीन ही होगा. हाँ, अगर फ़ारमूसा से अमरीकी बेड़ा हट गया, कोरिया से बिदेसी फ़ौजें चल दीं और जापान से कोई सुलहनामा होगया तब और तब ही यह आशा की जा सकती है कि तीसरी लड़ाई का मैदान दूर पूरब नहीं होगा.

हिन्दुस्तान जी जान से शान्ति का ख़्वाहिशमंद है. देखे उसे अपने काम में कहाँ तक सफलता होती है.

२०. १. ५१ —भगवानदीन

१३

ٹھیک ہیں . لڑائی روکنے کے بعد صلح کا کام عام طور سے برسوں چلتا رہتا ہے . اور بدیسی فوجیں ملک پر چھائی رہتی ہیں اور ملک کو نقصان پہونچاتی رہتی ہیں . امریکہ پھر لڑنے کے لئے سانس لینا چاہتا ہے . یہ بات ایک یا دو فیصدی سہی نہ بھی ہو تو بھی اس میں شک نہیں کہ امریکہ دور پورب پر چھائے رہنا چاہتا ہے . فارموسا کے چاروں طرف جہازی گھیرا ڈالے رکھنے کا مطلب ہی کیا ہے ؟ اُسے کم سے کم وہ بیڑہ تو فوراً ہٹا لینا چاہئے . کیا وہ بیڑا ابھی یو . این . او . کی اجازت سے وہاں رکا ہوا ہے ؟ کیا اُس کا کوریا کی لڑائی سے کچھ سمبندھ ہے ؟ اگر نہیں ہے تو کیوں نہیں ہٹتا اور اگر ہے تو چین کو کیسے اعتبار ہو کہ امریکہ کوریا میں لڑائی بند کر کے کوئی چال نہیں کھیلنا چاہتا .

سن ۵۲ میں تیسری لڑائی چھڑ کر رہے گی اور اس لڑائی کا اڈا کوریا اور چین ہی ہوگا . ہاں اگر فارموسا سے امریکی بیڑا ہٹ گیا کوریا سے بدیسی فوجیں چل دیں اور جاپان سے کوئی صلحنامہ ہو گیا تب اور تب ہی یہ آشا کی جا سکتی ہے کہ تیسری لڑائی کا میدان دور پورب نہیں ہوگا .

ہندستان جی جان سے شانتی کا خواہشمند ہے . دیکھیں اُسے اپنے کام میں کہاں تک سپھلتا ہوتی ہے .

--بھگوان دین ۵۱-۱-۲۰

यू. एन. ओ. की सुरक्षा समिति की परवाह किये बग़ैर और चीन के खिलाफ़ लड़ाई का अल्टीमेटम दिये बिना एक कोरिया पर और एक चीन के किसी हिस्से पर एटम बम गिरा दें. और यह कोई अनोखी बात न समझी जायगी क्योंकि पिछली बड़ी लड़ाई में जापान ने भी तो अंगरेजी दो जहाजों को डबोने के बाद ही अंगरेजों के खिलाफ लड़ाई छिड़ जाने की बात कही थी. हमारे पढ़ने वाले यह तो याद ही रक्खें कि एटम बम जब भी गिरेगा अचानक ही गिरेगा. वह हथियार ही इस क़िसम का नहीं है जो कह कर गिराया जाय. और उस हथियार का नशा ही इतना ज़बरदस्त है कि वह अपने मालिक पर इतना ज़ोर का नशा लाता है कि उसकी सूझ बूझ गुम हो जाती है.

कनाडा और आस्ट्रेलिया कामनवेल्थ में शामिल तो हैं मगर अमरीका के पास होने के नाते यह आधे अमरीकी हैं इसलिये यह भी जहांतक बने अमरीका के सुर में सुर मिलाते हैं. और इसलिये इनकी दूर पूरब की नीति डावांडोल सी रहती है. हां, बर्तानिया की नीत दूर पूरब के मामले में फिर भी काफी साफ़ है. उसका हांगकांग बचा रहे तो वह सब वही चाहता है जो चीन चाहता है. दूर पूरब में शान्ति की सब से ज्यादा इच्छा है हिन्दुस्तान को, इन्दोनिशिया को और लंका को.

हाल ही में कामनवेल्थ के सारे मुल्कों ने सुलह की एक तजवीज़ यू. एन. ओ. के पास भेजी थी. वह चीन को पूरी पूरी पसंद नहीं आई. उसने 17 जनवरी को अपना जवाब भेजा है. और उसने उस जवाब में यू. एन. ओ. के बारे में जो शक दिखाए हैं उन शकों के बारे में

یو . این . او . کی سرکشا سمیتی کی پرواہ کئے بغیر اور چین کے خلاف لڑائی کا الٹیمیٹم دیئے بنا ایک کوریا پر اور ایک چین کے کسی حصے پر ایٹم بم گرا دیں. اور یہ کوئی انوکھی بات نہ سمجھی جائے گی کیونکہ پچھلی بڑی لڑائی میں جاپان نے بھی تو انگریزی دو جہازوں کو ڈبونے کے بعد ہی انگریزوں کے خلاف لڑائی چھڑ جانے کی بات کہی تھی . ہمارے پڑھنے والے یہ تو یاد ہی رکھیں کہ ایٹم بم جب بھی گریگا اچانک ہی گریگا . وہ ہتھیار ہی اس قسم کا نہیں ہے جو کہکر گرایا جائے . اور اُس ہتھیار کا نشہ ہی اتنا زبردست ہے کہ وہ اپنے مالک پر اتنا زور کا نشہ لاتا ہے کہ اس کی سوجھ بوجھ گم ہوجاتی ہے

کناڈا اور آسٹریلیا کامن ویلتھ میں شامل تو ہیں مگر امریکہ کے پاس ہونے کے ناتے یہ آدھے امریکی ہیں اس لئے یہ بھی جہاں تک بنے امریکہ کے سر میں سر ملاتے ہیں . اور اس لئے ان کی دور پورب کی نیتی ڈاواں ڈول سی رہتی ہے. ہاں، برطانیہ کی نیت دور پورب کے معاملے میں پھر بھی کافی صاف ہے . اس کا ہانگ کانگ بچا رہے تو وہ سب وہی چاہتا ہے جو چین چاہتا ہے . دور پورب میں شانتی کی سب سے زیادہ اِچھا ہے ہندستان کو، انڈونیشیا کو اور لنکا کو .

حال ہی میں کامن ویلتھ کے سارے ملکوں نے صلح کی ایک تجویز یو . این . او . کے پاس بھیجی تھی . وہ چین کو پوری پوری پسند نہیں آئی . اُس نے 17 جنوری کو اپنا جواب بھیجا ہے . اور اُس نے اس جواب میں یو . این . او . کے بارے میں جو شک دکھائے ہیں اُن شکوں کے بارے میں

[illegible] यू. एन. ओ. में शामिल कर लिया जाय. पर अमरीका चीन को यू. एन. ओ. में नहीं आने देना चाहता. यही अमरीका की धींगा धींगी है और यही यू. एन. ओ. की कमज़ोरी है और यही वह कड़ी है जिससे कोरिया का गोरखधन्दा सुलझेगा.

अभी तीन मुल्कों को यह काम सौंपा गया था कि वह कोरिया की लड़ाई को हुकुम देकर रोक देने की कोशिश करें इन तीन मुल्कों में हिन्दुस्तान भी शामिल था और वही अगुवा भी था. वह चीन से मिला. चीन ने उन तीन आदमियों की कमेटी को ही ग़ैर क़ानूनी बता दिया दलील यह दी कि यू. एन. ओ. में जो चीन शामिल है, वह चीन नहीं और जो चीन है वह शामिल नहीं. इसलिये मामला आगे न बढ़ पाया और लड़ाई अपनी चाल से दौड़ती चली जा रही है.

कोरिया के मामले को ख़तम करने की मंशा न अमरीका की है और न कई और पच्छिमी मुल्कों की है. पूरब के सब मुल्क लड़ाई बन्द करना चाहते हैं. अमरीका का नफ़ा लड़ाई को लम्बा करने में है क्योंकि वह लड़ाई के रहते रहते 'कम्यूनिज्म आया' का शोर मचा कर लड़ाई की तैयारी को उस हद तक पहुँचा देना चाहता है जब वह एक से ज्यादा मोरचे खोल सके और जो चाहे जहां खोल सके और साथ ही साथ घर का बचाव कर सके अमरीका को तीसरी लड़ाई में बर्तानिया से कम ख़तरा है. इसलिये वह बेफिकर है. और उसकी कुछ बेफिकरी उन एटम बमों पर है जिसकी उसने जुट्टियां जमा कर रक्खी हैं. अगर जनरल मैकआर्थर ट्रूमैन को यह विश्वास दिला दें कि सिर्फ अमरीका की फ़ौजें दूर पूरब के लिये काफ़ी हैं तो कल ट्रूमैन साहब

[illegible]
ہیں کہ چین یو . این . او . میں شامل کر لیا جائے . پر امریکہ چین کو یو . این او . میں نہیں آنے دینا چاہتا . یہی امریکہ کی دھینگا دھینگی ہے اور یہی یو . این . او . کی کمزوری ہے اور یہی وہ کڑی ہے جس سے کوریا کا گورکھ دھندا سلجھیگا .

ابھی تین ملکوں کو یہ کام سونپا گیا تھا کہ وہ کوریا کی لڑائی کو حکم دیکر روک دینے کی کوشش کریں . ان تین ملکوں میں ہندستان بھی شامل تھا اور وہی اگوا بھی تھا . وہ چین سے ملا . چین نے اُن تین آدمیوں کی کمیٹی کو ہی غیر قانونی بتا دیا . دلیل یہ دی کہ یو این . او . میں جو چین شامل ہے وہ چین نہیں اور جو چین ہے وہ شامل نہیں . اس لئے معاملہ آگے نہ بڑھ پایا اور لڑائی اپنی چال سے دوڑتی چلی جا رہی ہے .

کوریا کے معاملے کو ختم کرنے کی منشا نہ امریکہ کی ہے اور نہ کئی اور پچھمی ملکوں کی ہے . پورب کے سب ملک لڑائی بند کرنا چاہتے ہیں . امریکہ کا نفع لڑائی کو لمبا کرنے میں ہے کیونکہ وہ لڑائی کے رہتے رہتے 'کمیونزم آیا' کا شور مچا کر لڑائی کی تیاری کو اُس حد تک پہونچا دینا چاہتا ہے جب وہ ایک سے زیادہ مورچے کھول سکے اور جو چاہے جہاں کھول سکے اور ساتھ ہی ساتھ گھر کا بچاؤ کرسکے . امریکہ کو تیسری لڑائی میں برطانیہ سے کم خطرہ ہے . اس لئے وہ بے فکر ہے . اور اُسکی کچھ بے فکری اُن ایٹم بموں پر بھی ہے جسکی اُس نے جوٹٹیاں جمع کر رکھی ہیں . اگر جنرل میک آرتھر ترومین کو یہ وشواس دلا دیں کہ صرف امریکہ کی فوجیں دور پورب کے لئے کافی ہیں تو کل ترومین صاحب

हाँगकांग पर वह अपना अड्डा जमाए हुए है. यह राजनीत के दुटप्पेपन की अजीब पहेलियां हैं. बर्तानिया कोरिया के मामले में सुलह पसन्द है, समझौता पसन्द है और यह चाहता है कि जल्दी से जल्दी कोई निबटारा हो जाय. इसके खिलाफ़ अमरीका ज़ोर पसन्द है, ज़बरदस्ती पसन्द है, उलझन पसन्द है और ज़्यादा से ज़्यादा देर लगाना चाहता है.

कोरिया में चीनियों का ज़ोर इतना बढ़ गया है कि उसने अमरीका का पांसा पलट दिया है और अमरीका इतना चिढ़ गया है कि वह इस कोशिश में लगा हुआ है कि जल्दी से जल्दी यू. एन. ओ. चीन और चीनी सरकार को 'एग्रेसर' कह दे. और चीन अब तक एग्रेसर मान लिया गया होता अगर बर्तानिया अमरीका की राय का होता. बर्तानिया यह खूब समझता है कि चीन को एग्रेसर कहना तीसरी लड़ाई शुरू करना है और तीसरी लड़ाई शुरू करना दूर पूरब में फँस जाना है और दूर पूरब में फंसना अपने घर को खतरे के लिये खुला छोड़ना है और योरप में नए मोरचे के लिये सामान खड़ा करना है. जो आज कोरिया में हो रहा है वह कल जरमनी में होने लगा तो क्या होगा ? बर्तानिया इसी दूरंदेशी से चीन को अग्रेसर नहीं कहना चाहता. और इस ढील ढल में चीनी फ़ौजें कोरिया में न मालूम कब तक आगे बढ़ती रहेंगी.

कोरिया ने गोरखधन्दे का रूप ले लिया है. इस गोरखधन्दे की एक कड़ी है चीन का यू. एन. ओ. में शामिल न रहना. चीन यू. एन. ओ. में शामिल नहीं इसलिये यू. एन. ओ. और उसकी सुरक्षा

هانگ کانگ پر وہ اپنا اڈا جمائے ہوئے ہے ۔ یہ راج نیت کے دوٹپے پن کی عجیب پہیلیاں ہیں ۔ برطانیہ کوریا کے معاملے میں صلح پسند ہے، سمجھوتہ پسند ہے اور یہ چاہتا ہے کہ جلدی سے جلدی کوئی نبٹارا ہوجائے ۔ اسکے خلاف امریکہ زور پسند ہے، زبردستی پسند ہے، الجھن پسند ہے اور زیادہ سے زیادہ دیر لگانا چاہتا ہے ۔

کوریا میں چینیوں کا زور اتنا بڑھ گیا ہے کہ اس نے امریکہ کا پانسا پلٹ دیا ہے اور امریکہ اتنا چڑھ گیا ہے کہ وہ اس کوشش میں لگا ہوا ہے کہ جلدی سے جلدی یو ۔ این ۔ او ۔ چین اور چینی سرکار کو 'اگریسر' کہہ دے اور چین اب تک اگریسر مان لیا گیا ہوتا اگر برطانیہ امریکہ کی رائے کا ہوتا ۔ برطانیہ یہ خوب سمجھتا ہے کہ چین کو اگریسر کہنا تیسری لڑائی شروع کرنا ہے اور تیسری لڑائی شروع کرنا دور پورب میں پھنس جانا ہے اور دور پورب میں پھنسنا اپنے گھر کو خطرے کیلئے کھلا چھوڑنا ہے اور یورپ میں نئے مورچے کیلئے سامان کھڑا کرنا ہے ۔ جو آج کوریا میں ہو رہا ہے وہ کل جرمنی میں ہونے لگا تو کیا ہوگا ؟ برطانیہ اسی دوراندیشی سے چین کو اگریسر نہیں کہنا چاہتا ۔۔ اور اس ڈھیل ڈھال میں چینی فوجیں کوریا میں نہ معلوم کب تک آگے بڑھتی رہینگی ۔

کوریا نے گورکھ دھندے کا روپ لے لیا ہے ۔ اس گورکھ دھندے کی ایک کڑی ہے چین کا یو ۔ این ۔ او ۔ میں شامل نہ رہنا ۔ چین یو ۔ این ۔ او ۔ میں شامل نہیں اس لئے یو ۔ این ۔ او ۔ اور اسکی سرکشا

तरह समझता है. पर वह क्या करे ? चीनी सरकार इस समय इतने चक्कर में पड़ गई है कि उसमें से उसे निकलते नहीं बन रहा है. चीन की जनता कोरिया के मामले से ऊब उठी है और वह कभी भी अंधी बन कर चीनी सरकार की परवाह किये बग़ैर कोरिया को बचाने के लिये दौड़ पड़ सकती है. सिर्फ़ इस नाते नहीं कि वह अपने पड़ोसी कोरिया को बुरी तरह बरबाद होते हुए देख रही है बल्कि इस नाते भी कि तीसरी लड़ाई की बड़ी आग तेज़ी के साथ उसके मुल्क चीन की तरफ़ भी बढ़ती चली आ रही है.

कोरिया में यू. एन. ओ. की तरफ़ से यों तो कई मुल्क लड़ रहे हैं पर गिनाने लायक़ दो ही मुल्क हैं—बरतानिया और अमरीका. यह दोनों बड़े मुल्क हैं. इनकी फ़ौजी ताक़त का कोरिया कोई मुक़ाबला नहीं. और अगर हम यह कहें कि कोरिया वाले और चीन के कुछ वालंटियर दोनों के लिये यह दो मुल्क काफ़ी से ज्यादा हैं तो कोई पता नहीं कि कोरिया पर कब क्या आफ़त आ जाय. हां, दुनिया की तीसरी लड़ाई तब तक नहीं छिड़ती जब तक यू. एन. ओ की फ़ौजें सीधे सीधे चीन पर धावा नहीं बोलतीं. और यह धावा उस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक बर्तानिया और अमरीका कोरिया के हर मामले में या दूर पूरब के हर मामले में एक राय न हों.

यह अचरज ही समझिये कि बर्तानिया और अमरीका एक राय नहीं हैं फिर भी कंधे से कंधा मिलाकर कोरिया के मैदान में लड़ रहे हैं. और बर्तानिया उन चीनियों से लड़ रहा है जिनके देस में

اور پچھم والوں کی جیسی ... چین اس ...
طرح سمجھتا ھے ۔ پر وہ کیا کرے ؟ چینی سرکار اس سمے اِتنے چکر میں پڑ گئی ھے کہ اُس میں سے اُسے نکلتے نہیں بن رھا ھے ۔ چین کی جنتا کوریا کے معاملے سے اُوب اُٹھی ھے اور وہ کبھی بھی اندھی بن کر چینی سرکار کی پرواہ کئے بغیر کوریا کو بچانے کے لئے دوڑ پڑ سکتی ھے ۔ صرف اس ناتے نہیں کہ وہ اپنے پڑوسی کوریا کو بری طرح برباد ھوتے ھوئے دیکھ رھی ھے بلکہ اِس ناتے بھی کہ تیسری لڑائی کی بڑی آگ تیزی کے ساتھ اُسکے ملک چین کی طرف بھی بڑھتی چلی آرھی ھے ۔

کوریا میں یو ۔ این ۔ او ۔ کی طرف سے یوں تو کئی ملک لڑ رھے ھیں پر گنانے لائق دو ھی ملک ھیں—برطانیہ اور امریکہ ۔ یہ دونوں بڑے ملک ھیں ۔ انکی فوجی طاقت کا کوریا کوئی مقابلہ نہیں ۔ اور اگر ھم یہ کہیں کہ کوریا والے اور چین کے کچھ والنٹیر دونوں کے لئے یہ دو ملک کافی سے زیادہ ھیں تو کوئی پتہ نہیں کہ کوریا پر کب کیا آفت آجائے ۔ ھاں دنیا کی تیسری لڑائی تب تک نہیں چھڑتی جب تک یو ۔ این ۔ او ۔ کی فوجیں سیدھے سیدھے چین پر دھاوا نہیں بولتیں اور یہ دھاوا اُس وقت تک نہیں ھوسکتا جبتک برطانیہ اور امریکہ کوریا کے ھر معاملے میں یا دور پورب کے ھر معاملے میں ایک رائے نہ ھوں ۔

یہ اچرج ھی سمجھئے کہ برطانیہ اور امریکہ ایک رائے نہیں ھیں پھر بھی کندھے سے کندھا ملا کر کوریا کے میدان میں لڑ رھے ھیں ۔ اور برطانیہ اُن چینیوں سے لڑ رھا ھے جن کے دیس میں

कोरिया में लड़ाई लड़ कर जंग की संस्था बन गई है—शान्ति का इदारा नहीं रह गई.

अमरीका वाले आमतौर से और ट्रूमैन साहब खासतौर से यह नोट कर लें कि भड़क से भड़क पैदा होती है. भड़क से न कभी शान्ति हुई और न हो सकती है.

शान्ति के नाम पर लड़ाई की तैयारी से दुनिया यह नहीं समझ सकती कि अमरीका शान्ति चाहता है.

लड़ाई में जब भी जो जीता है वह हारा है, कमज़ोर बना है और हमेशा के लिये निकम्मा हो गया है. हारे का क्या, वह तो मर ही जाता है.

१२. १. ५१. —भगवानदीन

कोरिया का झमेला—

कोरिया का मामला लम्बा ही नहीं होता जा रहा बुरी तरह उलझता जा रहा है. अगर आज यू. एन. ओ. सच्चे मानो में दुनिया भर की पंचायत होती तो कोरिया की हालत पर कुछ तरस खाती. पर वह तो आज कल बहुत हद तक अमरीका के हाथ में खेल रही है. कोरिया हर तरह से पिस रहा है, बरबाद हो रहा है. कमज़ोर होता जा रहा है और अगर कुछ दिनों इसी तरह दो पाटों के बीच में पिसता रहा तो इतना कमज़ोर हो जायगा कि उसका उठना बरसों के लिये मुमकिन न रह जायगा. जो कोरिया आज जापान के लिये अमरीकियों को तना हुआ तमंचा दिखाई देता है फिर वह टूटा हुआ

کوریا میں لڑائی لڑ کر جنگ کی سنستھا بن گئی ہے—شانتی کا ادارہ نہیں رہ گئی .

امریکہ والے عام طور سے اور ٹرومین صاحب خاص طور سے یہ نوٹ کر لیں کہ بھڑک سے بھڑک پیدا ہوتی ہے . بھڑک سے نہ کبھی شانتی ہوئی اور نہ ہوسکتی ہے .

شانتی کے نام پر لڑائی کی تیاری سے دنیا یہ نہیں سمجھ سکتی کہ امریکہ شانتی چاہتا ہے .

لڑائی میں جب بھی جو جیتا ہے وہ ہارا ہے' کمزور بنا ہے اور ہمیشہ کے لئے نکما ہوگیا ہے . ہارے کا کیا' وہ تو مر ہی جاتا ہے .

١٢-١-٥١ —بھگوان دین

کوریا کا جھمیلا—

کوریا کا معاملہ لمبا ہی نہیں ہوتا جا رہا بری طرح اُلجھتا جا رہا ہے . اگر آج یو . این . او . سچے معنوں میں دنیا بھر کی پنچایت ہوتی تو کوریا کی حالت پر کچھ ترس کھاتی . پر وہ تو آج کل بہت حد تک امریکہ کے ہاتھ میں کھیل رہی ہے . کوریا ہر طرح سے پس رہا ہے' برباد ہو رہا ہے' کمزور ہوتا جا رہا ہے اور اگر کچھ دنوں اسی طرح دو پاٹوں کے بیچ میں پستا رہا تو اِتنا کمزور ہوجائے گا کہ اُسکا اُٹھنا برسوں کے لئے ممکن نہ رہ جائے گا . جو کوریا آج جاپان کے لئے امریکیوں کو تنا ہوا طمنچہ دکھائی دیتا ہے

जायगी और जब तक फिर यू. एन. ओ. किसी एक मुल्क के हाथ की कठपुतली न बने तब तक दुनिया भर में शान्ति छाई रहेगी.

जिन बातों, जिन कामों या जिन स्कीमों से दूसरे का, दूसरे मुल्क का, दूसरी नेशन का नुकसान होता है उन बातों, उन कामों और उन स्कीमों का विश्वास जितना ख़तरे में हो और जितनी जल्दी टूटे उतना ही अच्छा. ऐसी बातों में विश्वास अटल हुआ ही नहीं करता. विश्वास तो नेक और भले कामों में ही ऐसा हुआ करता है जिसे न कभी कोई ख़तरा होता है और न कभी वह विश्वास टल सकता है.

ट्रूमैन साहब के हवा पर बखेरे एलान पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है पर यहाँ इतना लिखना काफ़ी होगा कि यह सब शोर इसलिये मचाया जा रहा है कि दुनिया धोके में आकर अमरीका को उस बड़ी तैयारी से न रोके जो वह तीसरी लड़ाई लड़ने के लिये करना चाहता है. और एलान में लड़ाई की तैयारी का ही ज़्यादा ज़िकर किया गया है. आख़िर यह तैयारी और की ही किस तरह जा सकती थी. अमरीका के पूँजीपति ख़तरे का डर दिखाए बिना पैसा भी कैसे देते. पर कैसे हैं हम लोग जो इस सब तैयारी को यह समझ बैठे हैं कि यह शान्ति क़ायम रखने के लिये की जा रही है

अगर यू. एन. ओ. और उसकी सुरक्षा समिति उस तरह की लड़ाई की तैयारियों को न ज़ोर से रोक सकती है और न इख़लाक़ी ढंग से रोक सकती है तो वह तीसरी लड़ाई को होने से नहीं रोक सकती. पर मुशकिल यही है कि आजकल यू. एन. ओ.

جائے گی اور جبتک پھر یو . این . او. کسی ایک ملک کے ھاتھ کی کٹھ پتلی نہ بنے تبتک دنیا بھر میں شانتی چھائی رہے گی .

جن باتوں، جن کاموں یا جن اسکیموں سے دوسرے کا' دوسرے ملک کا' دوسری نیشن کا نقصان ھوتا ھے اُن باتوں' اُن کاموں اور اُن اسکیموں کا وشواس جتنا خطرے میں ھو اور جتنی جلدی ٹوٹے اُتنا ھی اچھا . ایسی باتوں میں وشواس اٹل ھوا ھی نہیں کرتا . وشواس تو نیک اور بھلے کاموں میں ھی ایسا ھوا کرتا ھے جسے نہ کبھی کوئی خطرا ھوتا ھے اور نہ کبھی وہ وشواس ٹل سکتا ھے .

ٹرومین صاحب کے ھوا پر بکھیرے اعلان پر بہت کچھ لکھا جاسکتا ھے پر یہاں اتنا لکھنا کافی ھوگا کہ یہ سب شور اسلئے مچایا جا رھا ھے کہ دنیا دھوکے میں آکر امریکہ کو اُس بڑی تیاری سے نہ روکے جو وہ تیسری لڑائی لڑنے کیلئے کرنا چاھتا ھے . اور اعلان میں لڑائی کی تیاری کا ھی زیادہ ذکر کیا گیا ھے . آخر یہ تیاری اور کی ھی کسطرح جاسکتی تھی . امریکہ کے پونجی پتی خطرے کا ڈر دکھائے بنا پیسہ بھی کیسے دیتے . پر کیسے ھیں ھم لوگ جو اِس سب تیاری کو یہ سمجھ بیٹھے ھیں کہ یہ شانتی قائم رکھنے کے لئے کی جا رھی ھے .

اگر یو . این . او . اور اُسکی سرکشا سمیتی اُسطرح کی لڑائی کی تیاریوں کو نہ زور سے روک سکتی ھے اور نہ اخلاقی ڈھنگ سے روک سکتی . ھے تو وہ تیسری لڑائی کو ھونے سے نہیں روک سکتی پر مشکل یہی ھے کہ آجکل یو . این . او .

ूसरे मुल्कों को क्या? जापान के पड़ोसियों को तो यह सुनकर खुशी ी होगी कि अमरीका की जापान पर छाए रहने की स्कीम खतरे ं है.

(४) चौथे उसको इस बात पर विश्वास हो सकता है कि वह ोरिया पर छाकर धीरे धीरे चीन को अपने असर में ले आयगा ौर फिर रूस को इतना कमज़ोर बना देगा कि वह अपना बचाव भी ा कर सके. अगर उसका यह विश्वास खतरे में है तो इससे भी किसी ुल्क को क्या ? और दूसरे मुल्क अमरीका की इस बात में क्यों दद करें?

(५) पाँचवें अमरीका को इस बात में विश्वास हो सकता है कि ारमूसा के चारों तरफ़ अमरीकी जहाज़ी बेड़े के रहते रहते वह कभी ी चांगकाई शेक को चीन पर हमले के लिये तैयार कर सकता है ौर इस तरह नया मोरचा खड़ा करके कोरिया के मोरचे को कमज़ोर ना सकता है. अगर उसका यह विश्वास खतरे में है तो इसकी ुनिया क्यों परवाह करे ? और क्यों अमरीका की साम्राजवादी ्कीम की मदद करे?

(६) छटे अमरीका को यह विश्वास हो सकता है कि यू. एन. ओ. और उसकी सुरक्षा कौन्सिल हमेशा उसके हाथ का खिलौना बनी रहेगी और वह कभी भी चीन के असली नुमाइन्दे को यू. एन. ओ. में नहीं आने देगा. अगर उसका यह विश्वास खतरे में है तो इससे तो बहुत से मुल्कों को खुशी ही होगी. क्योंकि कुछ मुल्क सच्चे जी से यह समझे हुए हैं कि जैसे ही चीन यू. एन. ओ. में शामिल

دوسرے ملکوں کو کیا ؟ جاپان کے پڑوسیوں کو تو یہ سنکر خوشی ہی ہوگی کہ امریکہ کی جاپان پر چھائے رہنے کی اسکیم خطرے میں ہے .

(۴) چوتھے اُسکو اِس بات پر وشواس ہوسکتا ہے کہ وہ کوریا پر چھا کر دھیرے دھیرے چین کو اپنے اثر میں لے آئے گا اور پھر روس کو اتنا کمزور بنا دیگا کہ وہ اپنا بچاؤ بھی نہ کر سکے . اگر اُسکا یہ وشواس خطرے میں ہے تو اس سے بھی کسی ملک کو کیا ؟ اور دوسرے ملک امریکہ کی اِس بات میں کیوں مدد کریں ؟

(۵) پانچویں امریکہ کو اُس بات میں وشواس ہوسکتا ہے کہ فارموسا کے چاروں طرف امریکی جہازی بیڑے کے رہتے رہتے وہ کبھی بھی چانگ کائی شیک کو چین پر حملے کے لئے تیار کر سکتا ہے اور اسطرح نیا مورچہ کھڑا کرکے کوریا کے مورچے کو کمزور بنا سکتا ہے اگر اُسکا یہ وشواس خطرے میں ہے تو اسکی دنیا کیوں پرواہ کرے ؟ اور کیوں امریکہ کی سامراج وادی اسکیم کی مدد کرے ؟

(۶) چھٹے امریکہ کو یہ وشواس ہوسکتا ہے کہ یو . این . او . اور اُسکی سرکشا کونسل ہمیشہ اُسکے ہاتھ کا کھلونا بنی رہیگی اور وہ کبھی بھی چین کے اصلی نمائندے کو یو . این . او . میں نہیں آنے دیگا . اگر اُسکا یہ وشواس خطرے میں ہے تو اس سے تو بہت سے ملکوں کو خوشی ہی ہوگی . کیونکہ کچھ ملک سچے جی سے یہ سمجھے ہوئے ہیں کہ جیسے ہی چین یو . این . او . میں

मतलब है यह साफ़ साफ़ नहीं खोला. हम अपने पढ़ने वालों के लिये खुद ही कुछ अंदाज़ा लगा कर लिखे देते हैं :—

(१) एक तो अमरीका को इस बात में विश्वास हो सकता है कि एटम बम का भेद सिर्फ़ वही जानता है दूसरा और कोई मुल्क नहीं. अगर यह भेद ख़तरे में तो दुनिया उसकी इस अपील को क्यों सुनेगी. क्या अमरीका यह चाहता है कि सारे मुल्क अमरीका के एटम बम के भेद को बचाए रखने के लिये अपने अपने यहां के विज्ञानियों को जेल में डाल दें या फाँसी के तख़्ते पर चढ़ा दें.

(२) दूसरा इस बात में विश्वास हो सकता है कि डालर की मार्शल मदद से वह सारे मुल्कों पर छा सकता है. जहां मुनासिब समझे वहाँ अपने हवाई और समन्दरी अड्डे बना सकता है. अगर उसकी यह स्कीम ख़तरे में है तो इसकी दुनिया क्यों परवाह करे. कोई मुल्क अगर अमरीका से डालर का क़र्ज़ा नहीं चाहता तो दूसरे मुल्क उसको क्यों मजबूर करें. या अगर कोई मुल्क उन शर्तों पर अमरीका से डालर का क़र्ज़ा लेना नहीं चाहता जिन शर्तों पर अमरीका देने के लिये तैयार है तो और मुल्कों को क्या ग़रज़ जो उस मुल्क को अमरीका की शर्तें समझाने की कोशिश करें. कोई मुल्क अमरीका का इस मार्शल मदद के काम में क्यों एजेन्ट या कनवेसर बने.

(३) तीसरे अमरीका को इस बात में विश्वास हो सकता है कि कि वह जापान पर बरसों छाया रहेगा और उसे अमरीका की चीज़ों का बाज़ार बनाए रक्खेगा. अगर यह बात ख़तरे में है तो इससे

سے اُن کا کیا مطلب ہے یہ صاف صاف نہیں کھولا . ہم اپنے پڑھنے والوں کے لئے خود ہی کچھ اندازہ لگا کر لکھے دیتے ہیں :—

(۱) ایک تو امریکہ کو اس بات میں وشواس ہوسکتا ہے کہ ایٹم بم کا بھید صرف وہی جانتا ہے دوسرا اور کوئی ملک نہیں . اگر یہ بھید خطرے میں ہے تو دنیا اُسکی اس اپیل کو کیوں سنے گی . کیا امریکہ یہ چاہتا ہے کہ سارے ملک امریکہ کے ایٹم بم کے بھید کو بچائے رکھنے کیلئے اپنے اپنے یہاں کے وگیانیوں کو جیل میں ڈال دیں یا پھانسی کے تختے پر چڑھا دیں .

(۲) دوسرا اس بات میں وشواس ہوسکتا ہے کہ ڈالر کی مارشل مدد سے وہ سارے ملکوں پر چھا سکتا ہے . جہاں مناسب سمجھے وہاں اپنے ہوائی اور سمندری اڈے بنا سکتا ہے . اگر اُسکی یہ اسکیم خطرے میں ہے تو اِسکی دنیا کیوں پرواہ کرے . کوئی ملک اگر امریکہ سے ڈالر کا قرضہ نہیں چاہتا تو دوسرے ملک اُسکو کیوں مجبور کریں. یا اگر کوئی ملک اُن شرطوں پر امریکہ سے ڈالر کا قرضہ لینا نہیں چاہتا جن شرطوں پر امریکہ دینے کیلئے تیار ہے تو اور ملکوں کو کیا غرض جو اُس ملک کو امریکہ کی شرطیں سمجھانے کی کوشش کریں. کوئی ملک امریکہ کا اس مارشل مدد کے کام میں کیوں ایجنٹ یا کنویسر بنے .

(۳) تیسرے امریکہ کو اس بات میں وشواس ہوسکتا ہے کہ وہ جاپان پر برسوں چھایا رہے گا اور اُسے امریکہ کی چیزوں کا بازار بنائے رکھے گا . اگر یہ بات خطرے میں ہے تو اِس سے

'घर ख़तरे में है' की आवाज़ उस वक़्त उठा रहा है जब कोरिया को यह आवाज़ उठानी चाहिये थी कि 'हमारा घर मिट गया, मिटरहा है, और ए दुनिया के लोगो! तुम्हारे देखते कब तक और मिटता रहेगा' हमें तो ऐसा मालूम होता है कि कोरिया के कराहने की आवाज़ को दबाने के लिये ही अमरीका ने पंचम सुर में यह आवाज़ उठाना शुरू की है कि 'हमारा घर ख़तरे है'.

ट्रूमैन साहब की दूसरी आवाज़ है. 'हमारी जनमनी यानी हमारी नेशन ख़तरे में है'. इनसान हमारी राय में उस दिन मर जाता है जिस दिन उसमें इनसानियत नहीं रह जाती. इनसानियत समेत यानी इनसानियत के रहते रहते इनसान के मरने से इनसान नहीं मरता. वह तो मरने की जगह अमर हो जाता है जैसे गांधी जी. यही हाल नेशन का होता है. जनमनीयत रहते कोई जनमनी नहीं मरती. जनमनीयत खोकर जनमनी का क्या जीना और क्या मरना. अगर अमरीका की नेशन की नेशनियत क़ायम है तो उसे कोई ख़तरा नहीं होना चाहिये. कोई नेशन बाहरी ख़तरे से नहीं मरा करती. नेशन नाश होती है अन्दर के ख़तरे से. तो क्या ट्रूमैन साहब अमरीकी नेशन में कोई गड़बड़ी देख रहे हैं? अगर नहीं तो 'हमारी नेशन ख़तरे में है' की आवाज़ कैसी? जापान जिसके सिर पर अमरीका का पांव है वह 'नेशन ख़तरे में है' की आवाज़ उठाए तो कुछ ठीक भी हो सकता है. पर वह तो आज भी अपनी जापानी नेशन को अटल समझे हुए है. कोरिया जिसको नेशन पर आए दिन बम गिरते रहते

'گھر خطرے میں ھے' کی آواز اُس وقت اُٹھا رھا ھے جب کوریا کو یہ آواز اُٹھانی چاھئے تھی کہ 'ھمارا گھر مٹ گیا' مٹ رھا ھے' اور اے دنیا کے لوگو! تمہارے دیکھتے کب تک اور مٹتا رھے گا' ھمیں تو ایسا معلوم ھوتا ھے کہ کوریا کے کراھنے کی آواز کو دبانے کیلئے ھی امریکہ نے پنچم سر میں یہ آواز اُٹھانا شروع کی ھے کہ 'ھمارا گھر خطرے میں ھے'.

ترومین صاحب کی دوسری آواز ھے 'ھماری جنمنی یعنی ھماری نیشن خطرے میں ھے'. انسان ھماری رائے میں اُس دن مر جاتا ھے جسدن اُسمیں انسانیت نہیں رہ جاتی. انسانیت سمیت یعنی انسانیت کے رھتے رھتے انسان کے مرنے سے انسان نہیں مرتا. وہ تو مرنے کی جگہ امر ھوجاتا ھے جیسے گاندھی جی. یہی حال نیشن کا ھوتا ھے. جن منیت رھتے کوئی جنمنی نہیں مرتی. جن منیت کھو کر جنمنی کا کیا جینا اور کیا مرنا. اگر امریکہ کی نیشن کی نیشنیت قائم ھے تو اُسے کوئی خطرہ نہیں ھونا چاھئے. کوئی نیشن باھری خطرے سے نہیں مرا کرتی. نیشن ناش ھوتی ھے اندر کے خطرے سے. تو کیا ترومین صاحب امریکی نیشن میں کوئی گڑبڑی دیکھ رھے ھیں؟ اگر نہیں تو 'ھماری نیشن خطرے میں ھے' کی آواز کیسی؟ جاپان جسکے سر پر امریکہ کا پاؤں ھے وہ 'نیشن خطرے میں ھے' کی آواز اُٹھائے تو کچھ ٹھیک بھی ھوسکتا ھے. پر وہ تو آج بھی اپنی جاپانی نیشن کو اٹل سمجھے ھوئے ھے. کوریا جسکی نیشن پر آئے دن بم گرتے رھتے ھیں اور ایٹم بم گرائے جانے کی دھمکی دی جاتی رھتی ھے 'نیشن خطرے میں ھے' کی آواز

तरह खिलवाड़ करने का नतीजा यह हुआ था कि उस पर लोगों ने एतबार करना छोड़ दिया था और अपने इस खिलवाड़ के नतीजे की शकल में वह बच्चा बहुत टोटे में रहा था. आज हम इसी तरह से 'कम्यूनिज्म आया, कम्यूनिज्म आया' 'दौड़ना, दौड़ना' की आवाज़ दुनिया के एक सबसे बड़े मुल्क के सबसे ज्यादा ज़िम्मेदार आदमी के मुँह से सुन रहे हैं. हिन्दुस्तान जो चीन और रूस के पड़ोस में रहता है वह अगर 'कम्यूनिज्म आया' की आवाज़ उठाता तो कानों को कुछ इतना न खटकता पर जब अमरीका इस तरह की आवाज़ उठाता है तो कानों को बेहद खटकता है और अब यह 'कम्यूनिज्म आया' की आवाज़ इतनी बुरी लगने लगी है जितना उस बच्चे का रोना जो रात को घर वालों की नींद हराम कर देता है.

ट्रूमैन साहब जैसे समझदार आदमी के मुँह से उस वक़्त यह आवाज़ निकलना जब कि वह ऐटम बम के ढेर पर बैठे हुए हैं कि 'हमारा घर, हमारी क़ौम, और हमारी वह सब बातें जिन पर हम विश्वास करते हैं ख़तरे में है' शोभा नहीं देता. दुनिया के बड़े बड़े मुल्कों की फ़ौजों के साथ अमरीका की फ़ौजें कोरिया में लड़ रही हैं और जनरल मैकआर्थर के शब्दों में लाखों चीनी फ़ौजों से घिरे अमरीकी सिपाही हिम्मत के साथ खड़े हुए हैं और ज़रूरत पड़ने पर शान के साथ वापस आरहे हैं तब अमरीका किस तरह ख़तरे में है? फिर 'हमारा घर ख़तरे में है' यह आवाज़ क्या माने रखती है. कोरिया जो अमरीकी बमों से मिसमार हो गया वह यह आवाज़ उठाता कि हमारा घर ख़तरे में है तो कुछ बात थी. अमरीका बेमतलब

اسطرح کھلواڑ کرنے کا نتیجہ یہ ہوا تھا کہ اُس پر لوگوں نے اعتبار کرنا چھوڑ دیا تھا اور اپنے اس کھلواڑ کے نتیجے کی شکل میں وہ بچہ بہت ٹوٹے میں رہا تھا. آج ہم اِسی طرح سے 'کمیونزم آیا' 'کمیونزم آیا' 'دوڑنا' دوڑنا' کی آواز دنیا کے ایک سب سے بڑے ملک کے سب سے زیادہ ذمہ دار آدمی کے منہ سے سن رہے ہیں ۔ ہندستان جو چین اور روس کے پڑوس میں رہتا ہے وہ اگر 'کمیونزم آیا' کی آواز اُٹھاتا تو کانوں کو کچھ اتنا نہ کھٹکتا پر جب امریکہ اسطرح کی آواز اُٹھاتا ہے تو کانوں کو بے حد کھٹکتا ہے اور اب یہ 'کمیونزم آیا' کی آواز اتنی بری لگنے لگی ہے جتنا اُس بچے کا رونا جو رات کو گھر والوں کی نیند حرام کر دیتا ہے ۔

ٹرومین صاحب جیسے سمجھدار آدمی کے منہ سے اُس وقت یہ آواز نکلنا جبکہ وہ ایٹم بم کے ڈھیر پر بیٹھے ہوئے ہیں کہ 'ہمارا گھر' ہماری قوم' اور ہماری وہ سب باتیں جن پر ہم وشواس کرتے ہیں خطرے میں ہیں' شوبھا نہیں دیتا ۔ دنیا کے بڑے بڑے ملکوں کی فوجوں کے ساتھ امریکہ کی فوجیں کوریا میں لڑ رہی ہیں اور جنرل میک آرتھر کے شبدوں میں لاکھوں چینی فوجوں سے گھرے امریکی سپاہی ہمت کے ساتھ کھڑے ہوئے ہیں اور ضرورت پڑنے پر شان کے ساتھ واپس آرہے ہیں تب امریکہ کسطرح خطرے میں ہے ؟ پھر 'ہمارا گھر خطرے میں ہے' یہ آواز کیا معنی رکھتی ہے. کوریا جو امریکی بموں سے مسمار ہوگیا وہ یہ آواز اُٹھاتا کہ ہمارا گھر خطرے میں ہے تو کچھ بات تھی ۔ امریکہ بے مطلب

ट्रूमैन साहब घबरा उठे—

हर लड़ाई की ललकार के पीछे घबराहट रहना जरूरी है और घबराहट की तह में ढूंढ़ने पर बुज़दिली यानी कायरता के सिवाय और क्या मिल सकता है. कायरता के नीचे जाने की अगर कोशिश की जाय तो वहां मिलेगा धन का लोभ. और अमरीका इस वक़्त इतना धनी हो गया है कि उसको आस पास चारों तरफ़ चोर, डाकू और उचक्के दिखाई देते हैं. इतना ही होता तो बुरा न था. अब तो अमरीका के प्रेसीडेन्ट ट्रूमैन को सात समन्दर के मुल्क भी उचक्के और चोर दिखाई देने लगे. जा-बेजा रूस को कोसना, कम्यूनिज़्म को गाली देना, कम्यूनिस्ट मुल्कों के दोस्तों को रिश्वत देकर दुश्मनी पर उतारू करना या उन्हें डराना धमकाना उनका आए दिन का काम हो गया है.

ट्रूमैन साहब के वाशिंगटन से १६ दिसम्बर को हवा से बखेरे भाशन में यह सब बातें साफ़ चमक रही हैं. छुटपन में 'शेर आया

ترومین صاحب گھبرا اُٹھے—

ہر لڑائی کی للکار کے پیچھے گھبراہٹ رہنا ضروری ہے اور گھبراہٹ کی تہ میں ڈھونڈھنے پر بزدلی یعنی کائرتا کے سوائے اور کیا مل سکتا ہے. کائرتا کے نیچے جانے کی اگر کوشش کی جائے تو وہاں ملیگا دھن کا لوبھ. اور امریکہ اِس وقت اتنا دھنی ہوگیا ہے کہ اُسکو آس پاس چاروں طرف چور، ڈاکو اور اُچکے دکھائی دیتے ہیں. اتنا ہی ہوتا تو بُرا نہ تھا. اب تو امریکہ کے پریسیڈنٹ ترومین کو سات سمندر کے ملک بھی اُچکے اور چور دکھائی دینے لگے. جا بیجا روس کو کوسنا کمیونزم کو گالی دینا، کمیونسٹ ملکوں کے دوستوں کو رشوت دے کر دشمنی پر اُتارو کرنا یا انہیں ڈرانا دھمکانا اُن کا آئے دن کا کام ہوگیا ہے.

ترومین صاحب کے واشنگٹن سے ۱۶ دسمبر کو ہوا سے بکھیرے بھاشن میں یہ سب باتیں صاف چمک رہی ہیں. چھٹپن میں

ज्यादा सख्त शब्द इस्तेमाल किये गए हैं.

गांधीवाद को समझने के लिये यह किताब काफ़ी मुफ़ीद साबित हो सकती है. ज़रूरत इस बात की है कि अब साहित्यकार अपने साहित्य और साथ ही साथ अपने अमल के ज़रिये गांधीवाद को जनता तक पहुँचावें क्योंकि अब गांधी जी नहीं रहे. जैनेन्द्र जी ने जो यह बीड़ा उठाया है उसका हम स्वागत करते हैं.

—भा. च. वर्मा

हमारा गांधी वापस करो

लिखने वाले — श्री ओंकार शरद.

निकालने वाले — साहित्य निकेतन. शान्ति कुटीर. लूकर गंज. इलाहाबाद.

लिखावट—नागरी, सफ़ा– 72. दाम– एक रूपया.

ओंकार शरद एक नौजवान समाजवादी लेखक हैं. उनकी यह किताब "हमारा गांधी वापस करो" गांधीजी के साथ उनकी वफ़ादारी और मुहब्बत का निशान है. इसमें पांच छोटे छोटे स्केच हैं—हमारा गांधी वापस करो, अपना अपना रास्ता, स्मृति शिला, पूरब का सूरज पूरब में ही डूब गया, गांधी जी : पहली कल्पना में.

किताब का नाम बड़ा आकरशक है. सीधी सादी और आम लोगों की बोली में लिखी गई है. लिखने की शैली दिलचस्प है. जो अपने को समाजवादी कहते हैं या समझते हैं उनको यह किताब ज़रूर पढ़नी चाहिये. उनकी तंगनज़री दूर करने में यह काफ़ी मददगार साबित हो सकती है.

— भा. च. वर्मा

سخت شبد استعمال کئے گئے ھیں .

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے یہ کتاب کافی مفید ثابت ھو سکتی ھے . ضرورت اس بات کی ھے کہ اب ساھتیہ کار اپنے ساھتیہ اور ساتھ ھی ساتھ اپنے عمل کے ذریعے گاندھی واد کو جنتا تک پہونچاویں کیونکہ اب گاندھی جی نہیں رھے. جینندر جی نے جو یہ بیڑا اُٹھایا ھے اُسکا ھم سواگت کرتے ھیں .

—بھ . چ . ورما

ھمارا گاندھی واپس کرو

لکھنے والے — شری اونکار شرد.

نکالنے والے — ساھتیہ نکیتن' شانتی کٹیر' لوکر گنج' الہ آباد.

لکھاوٹ — ناگری' صفحہ 72' دام—ایک روپیہ .

اونکار شرد ایک نوجوان سماج وادی لیکھک ھیں . اُن کی یہ کتاب "ھمارا گاندھی واپس کرو" گاندھی جی کے ساتھ اُن کی وفاداری اور محبت کا نشان ھے. اس میں پانچ چھوٹے چھوٹے اسکیچ ھیں— ھمارا گاندھی واپس کرو' اپنا اپنا راستہ' سمرتی شلا' پورب کا سورج پورب میں ھی ڈوب گیا' گاندھی جی: پہلی کلپنا میں .

کتاب کا نام بڑا آکرشک ھے . سیدھی سادی اور عام لوگوں کی بولی میں لکھی گئی ھے . لکھنے کی شیلی دلچسپ ھے . جو اپنے کو سماج وادی کہتے ھیں یا سمجھتے ھیں اُن کو یہ کتاب ضرور پڑھنی چاھئے . اُن کی تنگ نظری دور کرنے میں یہ کافی مددگار ثابت ھو سکتی ھے .

— بھ . چ . ورما

जातिशाही व्यवस्थाओं में है. जब तक वह, जो आज की व्यवस्था में धन या जाति वग़ैरा के रूप में विशेश अधिकारों. की स्थिति का सुख भोग रहे हैं, उसका त्याग नहीं कर देते, अपनी सम्पत्ति के ईमानदार ट्रस्टी नहीं बन जाते, ऊँच नीच का भेदभाव छोड़कर जनता में घुलमिल नहीं जाते, देश की ग़रीबी के अनुसार अपनी शान शौकत कम नहीं कर लेते, तब तक साम्यवाद और उसके साथ चलने वाली हिंसा आएगी ही.'' (हरिजन, 13-5-50)

जैनेन्द्र के गांधीवाद और मशरूवाला के गांधीवाद में यही फ़रक़ है कि जैनेन्द्र का गांधीवाद आदमी की सिर्फ़ रूहानी तरक़्क़ी ही चाहता है जब कि मशरूवाला का गांधीवाद आदमी की रूहानी तरक़्क़ी के ज़रिये उसकी मटियाई तरक़्क़ी भी चाहता है यानी उसका चौतरफ़ा विकास चाहता है.

अब रही किताब की भाशा की बात. वह आम लोगों की बोली में है पर कहीं कहीं मुशकिल ज़रूर हो गई है. ख़ास बात यह है कि जैनेन्द्र जी अंगरेज़ी के शब्द अपनाते हिचकते नहीं.

दूसरी बात यह कि लिखने की शैली एसी है मानो वह ख़ुद आपके साथ बैठे बहस कर रहे हों. गांधीवाद को आसान शब्दों में समझा देना भी एक तारीफ़ की बात है जो जैनेन्द्र जी ही कर सकते हैं.

इस किताब में दो एक कमियाँ भी हैं. पहली यह कि हर एक लेख किसी ख़ास मौक़े पर लिखा गया है जो पहला ही पैरा

جاتی شاهی ویوستهاؤں میں هے . جبتک وہ' جو آج کی ویوستها میں دهن یا جاتی وغیرہ کے روپ میں وشیش ادهیکاروں کی استهتی کا سکھ بهوگ رهے هیں' اُسکا تیاگ نہیں کر دیتے' اپنی سمپتی کے ایماندار ترسٹی نہیں بن جاتے' اُونچ نیچ کا بهید بهاؤ چهوڑ کر جنتا میں گهل مل نہیں جاتے' دیش کی غریبی کے انوسار اپنی شان شوکت کم نہیں کرلیتے' تبتک سامیہ واد اور اُسکے ساتھ چلنے والی هنسا آئے گی هی .'' (هریجن' 13-5-50)

جے نیندر کے گاندهی واد اور مشرو والا کے گاندهی واد میں یہی فرق هے کہ جے نیندر کا گاندهی واد آدمی کی صرف روحانی ترقی هی چاهتا هے جبکہ مشرو والا کا گاندهی واد آدمی کی روحانی ترقی کے ذریعے اُسکی مٹیائی ترقی بهی چاهتا هے یعنی اُس کا چوطرفہ وکاس چاهتا هے .

اب رهی کتاب کی بهاشا کی بات . وہ عام لوگوں کی بولی میں هے پر کہیں کہیں مشکل ضرور هوگئی هے . خاص بات یہ هے کہ جے نیندر جی انگریزی کے شبد اپناتے هچکتے نہیں .

دوسری بات یہ کہ لکهنے کی شیلی ایسی هے مانو وہ خود آپکے ساتهہ بیٹهے بحث کر رهے هوں . گاندهی واد کو آسان شبدوں میں سمجها دینا بهی ایک تعریف کی بات هے جو جے نیندر جی هی کر سکتے هیں .

اس کتاب میں دو ایک کمیاں بهی هیں . پہلی یہ کہ هر ایک لیکھ کسی خاص موقعہ پر لکها گیا هے جو پہلا هی پیرا

संगठन की एक धार्मिक-साइंसी योजना रक्खें."

माटी और रूह का मेल, धर्म और साइंस की एकता, पूरब और पच्छिम का मिलाप होने पर ही सच्चा सर्वोदय मुमकिन है.

तीसरी बात यह कि लेखक का "पूर्वोदय" आदमी के रूहानी विकास की बात तो करता है पर भूके किसान और मज़दूरों पर तरस नहीं खाता. जहाँ यह बात सच है कि रूस का साम्यवाद इतना मटियाई है कि वह रूहानी बातों को नज़रअन्दाज़ कर जाता है, वहां लेखक जैसे लोगों का गांधीवाद इतना रूहानी है कि बेचारे ग़रीब किसानों और मज़दूरों के मटियाई विकास की बात उन्हें सूझती ही नहीं. लेखक कहता है—

"पश्चिम से जो एक आक्रामक जीवन पद्धति की बाढ़ ठेलकर हमारी ओर भेजी जा रही है, जो स्वत्व और स्वामित्व की तृश्ना से अमीर ग़रीब को. इस मत को और उस वाद को सबको भरमा और उकसा रही है भविश्य उस बाढ़ के हाथ में नहीं है."

इस बारे में श्री मशरूवाला यह कहते हैं:—

"साम्यवाद ऐटम बम. हाइड्रोजन बम या स्वार्थवश दी हुई आर्थिक सहायताओं से नहीं दबाया जा सकता, और न गांधीवाद के नारे लगाकर, जेल भेज कर और गोलियां चलाकर ही.........
गांधीजी के मार्ग और मार्क्सवाद में बड़ा फ़रक़ है. लेकिन उससे भी ज़्यादा फ़रक़ गांधीवाद तथा अनियंत्रित पूँजीवादी सामन्तशाही और

بھر دیش کے دھرم اور سائنس [illegible]
سنگھٹن کی ایک دھارمک—سائنسی یوجنا رکھیں۔"

ماٹی اور روح کا میل، دھرم اور سائنس کی ایکتا، پورب اور پچھم کا ملاپ ہونے پر ہی سچا سرودے ممکن ہے ۔

تیسری بات یہ کہ لیکھک کا "پوروودے" آدمی کے روحانی وکاس کی بات تو کرتا ہے پر بھوکے کسان اور مزدوروں پر ترس نہیں کھاتا ۔ جہاں یہ بات سچ ہے کہ روس کا سامیہ واد اتنا مٹیائی ہے کہ وہ روحانی باتوں کو نظرانداز کر جاتا ہے، وہاں لیکھک جیسے لوگوں کا گاندھی واد اتنا روحانی ہے کہ بیچارے غریب کسانوں اور مزدوروں کے مٹیائی وکاس کی بات انہیں سوجھتی ہی نہیں ۔ لیکھک کہتا ہے—

" پشچم سے جو ایک آکرامک جیون پدھتی کی باڑھ ٹھیل کر ہماری اور بھیجی جا رہی ہے، جو سوتو اور سوامتو کی ترشنا سے امیر غریب کو اس مت کو اور اُس واد کو سبکو بھرما اور اُکسا رہی ہے، بھوشیہ اُس باڑھ کے ہاتھ میں نہیں ہے "

اس بارے میں شری مشرو والا یہ کہتے ہیں—

" سامیہ واد ایٹم بم، ہائڈروجن بم یا سوارتھ وش دی ہوئی آرتھک سہایتاؤں سے نہیں دبایا جا سکتا، اور نہ گاندھی واد کے نعرے لگا کر، جیل بھیجکر اور گولیاں چلا کر ہی.........گاندھی جی کے مارگ اور مارکس واد میں بڑا فرق ہے ۔ لیکن اُس سے بھی زیادہ فرق گاندھی واد تتھا انینترت پونجی وادی سامنت شاہی اور

क़ाबू पाकर पच्छिम पागल हो गया है. मई सन् 1944 में चुँगकिंग में एक भाशन देते हुए सर राधाकृशनन ने कहा था—

"इंसान इस दुनिया में ज़िन्दा रहने, प्रेम करने और ख़ुश रहने के लिये पैदा हुआ. लेकिन हम यह देखते हैं कि वह शरीर में अलकोहल भर कर, हाथ में बन्दूक़ लेकर और दिल में ग़ुस्सा लिये मुँह फुलाए आगे बढ़ रहा है."

यह है साइंस का बुरा इस्तेमाल और उसका भयानक नतीजा. लेकिन इसके यह मानी हरगिज़ नहीं होते, जैसा लेखक समझता है, कि साइंसी तरक़्क़ी और रूहानी तरक़्क़ी बेमेल हैं. साइंसी तरक़्क़ी को रूहानी तरक़्क़ी के लिये इस्तेमाल करना ही उसका सही इस्तेमाल है. 'हिन्दुस्तान की कहानी' में पंडित नेहरू ने लिखा है—

"पच्छिमी दुनिया पर साइंस छा गई है और वहां के लोग उस की सराहना करते हैं. फिर भी हम कहते हैं कि वह साइंस का असली मक़सद अब भी नहीं समझते. साइंस को अभी शरीर और आत्मा दोनों को मिलाकर एक रचनात्मक शकल देना है. दोनों में सरगम पैदा करना है."

साइंस या मशीन को गांधी जी भी इतना बुरा नहीं समझते थे जितना जैनेन्द्र जी. साइंस और धर्म को एक दूसरे के ख़िलाफ़ दिखा कर उन्होंने गांधीवाद का मज़ाक़ उड़ाया है. पूरब और पच्छिम की एकता के लिये धर्म को साइंसी और साइंस को धार्मिक बनना है. अपनी किताब "सब बड़े धर्मों की बुनियादी एकता" में डाक्टर

قابو پاکر پچھم پاگل ہوگیا ہے . مئی سن 1944 میں چنگکنگ میں ایک بھاشن دیتے ہوئے سر رادھا کرشنن نے کہا تھا—

"انسان اِس دنیا میں زندہ رہنے، پریم کرنے اور خوش رہنے کے لئے پیدا ہوا . لیکن ہم یہ دیکھتے ہیں کہ وہ شریر میں الکوحل بھر کر، ہاتھ میں بندوق لیکر اور دل میں غصہ لئے منہ پھلائے آگے بڑھ رہا ہے ."

یہ ہے سائنس کا برا استعمال اور اُس کا بھیانک نتیجہ . لیکن اس کے یہ معنی ہرگز نہیں ہوتے، جیسا لیکھک سمجھتا ہے، کہ سائنسی ترقی اور روحانی ترقی بے میل ہیں . سائنسی ترقی کو روحانی ترقی کے لئے استعمال کرنا ہی اُس کا صحیح استعمال ہے . 'ہندستان کی کہانی' میں پنڈت نہرو نے لکھا ہے —

"پچھمی دنیا پر سائنس چھا گئی ہے اور وہاں کے لوگ اُسکی سراہنا کرتے ہیں . پھر بھی ہم کہتے ہیں کہ وہ سائنس کا اصلی مقصد اب بھی نہیں سمجھتے سائنس کو ابھی شریر اور آتما دونوں کو ملا کر ایک رچنامک شکل دینا ہے . دونوں میں سرگم پیدا کرنا ہے ."

سائنس یا مشین کو گاندھی جی بھی اتنا برا نہیں سمجھتے تھے جتنا جے نیندر جی . سائنس اور دھرم کو ایک دوسرے کے خلاف دکھا کر اُنھوں نے گاندھی واد کا مذاق اُڑایا ہے . پورب اور پچھم کی ایکتا کے لئے دھرم کو سائنسی اور سائنس کو دھارمک بننا ہے . اپنی کتاب "سب بڑے دھرموں کی بنیادی ایکتا" میں ڈاکٹر

का दौरा करने ज़मीन पर उतर आए. वह एक सड़क पर चल जा रहे थे कि उन्हें एक खिड़की पर बैठा, शराब के नशे में डूबा, एक नौजवान दिखाई पड़ा. वह उसके पास गए और बोले—

"तुम शराब पी कर अपनी ज़िन्दगी क्यों बरबाद कर रहे हो ?"

नौजवान ने जवाब दिया— "ए ख़ुदावन्द करीम ! मैं कोढ़ी था. आपने मुझपर तरस खाया और मुझे ठीक कर दिया. अब बताइये मैं और क्या करूँ ?"

हज़रत ईसामसीह आगे बढ़े. उन्होंने देखा एक नौजवान आदमी एक बदचलन औरत के साथ चला जा रहा था. उन्होंने उस नौजवान को रोक कर कहा—

"तुम नेक हो और नौजवान हो. तुम अपनी आत्मा को क्यों काला कर रहे हो ?"

नौजवान ने जवाब दिया "ए पाक परवरदिगार ! मैं अंधा था. आपने मुझे आंखें दीं. अब बताइये मैं और क्या करूँ ?"

हज़रत ईसामसीह और आगे बढ़े. देखा एक बूढ़ा सड़क पर पड़ा चीख़ रहा था. उसके पास पहुँचे और पूछा—"क्यों भाई, तुम क्यों चीख़ रहे हो ?"

बूढ़े ने जवाब दिया—"भगवन ! मैं मर चुका था. आपने मुझमें फिर से जान फूँक दी. अब बताइये मैं और क्या करूँ ?"

आज पच्छिमी समाजी व्यवस्था का यही हाल है. क़ुदरत पर

کا دورہ کرنے زمین پر اُتر آئے ۔ وہ ایک سڑک پر چلے جا رہے تھے کہ اُنھیں ایک کھڑکی پر بیٹھا، شراب کے نشے میں ڈوبا، ایک نوجوان دکھائی پڑا ۔ وہ اُس کے پاس گئے اور بولے—

"تم شراب پی کر اپنی زندگی کیوں برباد کر رہے ہو ؟"

نوجوان نے جواب دیا —"اے خداوند کریم ! میں کوڑھی تھا ۔ آپ نے مجھ پر ترس کھایا اور مجھے ٹھیک کر دیا ۔ اب بتائیے میں اور کیا کروں ؟"

حضرت عیسیٰ مسیح آگے بڑھے ۔ اُنھوں نے دیکھا ایک نوجوان آدمی ایک بدچلن عورت کے ساتھ چلا جا رہا تھا ۔ اُنھوں نے اُس نوجوان کو روک کر کہا —

"تم نیک ہو اور نوجوان ہو ۔ تم اپنی آتما کو کیوں کالا کر رہے ہو ؟"

نوجوان نے جواب دیا —"اے پاک پروردگار ! میں اندھا تھا ۔ آپ نے مجھے آنکھیں دیں ۔ اب بتائیے میں اور کیا کروں ؟"

حضرت عیسیٰ مسیح اور آگے بڑھے ۔ دیکھا ایک بوڑھا سڑک پر پڑا چیخ رہا تھا ۔ اُسکے پاس پہونچے اور پوچھا —"کیوں بھائی تم کیوں چیخ رہے ہو ؟"

بوڑھے نے جواب دیا —"بھگون ! میں مر چکا تھا ۔ آپ نے مجھ میں پھر سے جان پھونک دی ۔ اب بتائیے میں اور کیا کروں ؟"

آج پچھمی سماجی ویوستھا کا یہی حال ہے ۔ قدرت پر

जैनेन्द्र जी के ख़याल में इस दुनिया में दो तरह की समाजी व्यवस्था हो सकती है. एक पच्छिमी, दूसरी पूरबी.

पच्छिमी समाजी व्यवस्था का निशान है रूस—जिसकी इमारत मटियाई बुनियाद पर खड़ी की गई है. जहाँ साइंस है, मशीन है, कल और कारख़ाने हैं, जहाँ नैतिकता नहीं, मुहब्बत नहीं, त्याग नहीं. इस व्यवस्था का दीवाला पिटता जा रहा है और वह बहुत जल्द टूटने वाली है.

इसके मुक़ाबले में लेखक ने एक ऐसी पूरबी समाजी व्यवस्था का ख़ाका खींचा है जिसमें समाज की बुनियाद रूह होगी माटी (मैटर) नहीं. साइंस, मशीन और कारख़ानों से उसका कोई वास्ता नहीं. वहां अख़लाक़ होगा, मुहब्बत होगी और स्वार्थ रहित सेवा होगी, अमीर ग़रीब की लड़ाई नहीं होगी, सब का भला होगा—सर्वोदय होगा.

इस बारे में तीन बातें कही जा सकती हैं.

पहली यह कि इस "पूर्वोदय" में सर्वोदय की आत्मा तो है पर सर्वोदय की भावना नहीं. पूरब और पच्छिम की दीवारें खड़ी करके लेखक ने "मेरी तेरी" वाली बात पैदा कर दी है. पच्छिमी समाजी व्यवस्था का जिस तरह तिरस्कार किया गया है उसमें गाँधीवादी हमदरदी नहीं, साम्यवादी कड़ुवाहट है.

दूसरी बात यह कि लेखक साइंसी तरक़्क़ी और रूहानी तरक़्क़ी को बेमेल समझता है और मशीन बल को छोड़कर सिर्फ़ जन बल और मन बल पर निरभर रहने की सलाह देता है. हम मानते हैं कि पच्छिम

جےنیندر جی کے خیال میں اس دنیا میں دو طرح کی سماجی ویوستھا ہو سکتی ہے . ایک پچھمی، دوسری پوربی .

پچھمی سماجی ویوستھا کا نشان ہے روس — جسکی عمارت متھائی بنیاد پر کھڑی کی گئی ہے، جہاں سائنس ہے، مشین ہے، کل اور کارخانے ہیں، جہاں نیتکتا نہیں، محبت نہیں، تیاگ نہیں. اس ویوستھا کا دیوالہ پٹتا جارہا ہے اور وہ بہت جلد ٹوٹنے والی ہے .

اِسکے مقابلے میں لیکھک نے ایک ایسی پوربی سماجی ویوستھا کا خاکہ کھینچا ہے جس میں سماج کی بنیاد روح ہوگی، ماٹی (میٹر) نہیں . سائنس، مشین اور کارخانوں سے اُسکا کوئی واسطہ نہیں وہاں اخلاق ہوگا، محبت ہوگی اور سوارتھ رہت سیوا ہوگی، امیر غریب کی لڑائی نہیں ہوگی، سب کا بھلا ہوگا — سرووُدے ہوگا .

اس بارے میں تین باتیں کہی جاسکتی ہیں .

پہلی یہ کہ اس "پوروودے" میں سرووُدے کی آتما تو ہے پر سرووُدے کی بھاؤنا نہیں . پورب اور پچھم کی دیواریں کھڑی کر کے لیکھک نے "میری تیری" والی بات پیدا کر دی ہے. پچھمی سماجی ویوستھا کا جس طرح ترسکار کیا گیا ہے اُس میں گاندھی وادی ہمدردی نہیں، سامیہ وادی کڑواہٹ ہے .

دوسری بات یہ کہ لیکھک سائنسی ترقی اور روحانی ترقی کو بےمیل سمجھتا ہے . اور مشین بل کو چھوڑ کر صرف جن بل اور من بل پر نربھر رہنے کی صلاح دیتا ہے ہم مانتے ہیں کہ

پورودے

لیکھک — جے نیندر کمار نکالنے والے — شری پوورودے پرکاشن' دریا گنج' دلی' صفحہ — ۲۸۰' لکھاوٹ — ناگری' دام چار روپے۔

جے نیندر جی مشہور کہانی لیکھک ہیں اور ساتھ ساتھ فلاسفر بھی۔ اور جب کہانی لیکھک فلاسفر بھی ہو تو اسکی کہانی میں فلاسفی ہوتی ہے اور فلاسفی میں کہانی۔ جے نیندر جی کے گاندھی وادی خیالات کا یہ سنگرہ "پورودے" کچھ اسی طرح کا ہے۔

اس میں کل تینتیس لیکھ ہیں۔ لگتا ہے' یہ سب کے سب پچھلے چار پانچ سال میں الگ الگ موقعوں پر لکھے گئے۔ اس لئے خیالات کی کوئی ایک کڑی نہیں ہے۔ پھر بھی ان لیکھوں میں گاندھی واد کے ہر پہلو پر کچھ نہ کچھ روشنی ڈالی گئی ہے۔ کچھ لیکھ یہ ہیں — پورودے' سرودے' اگر گاندھی جی ہوتے' اہنسا اور مکتی' روٹی کا مورچہ اور سنسکرت' اپری گرہ اور ٹرسٹی شپ' اپواس اور لوک تنتر۔

اس سنگرہ کے ہر ایک لیکھ میں کچھ نہ کچھ انوکھا پن ضرور ہے۔ اور ان سب میں "پورودے" ایک دم نرالا ہے۔ اس میں گاندھی وادی فلاسفی مارکس وادی ڈھنگ سے پیش کی گئی ہے اور گاندھی واد کو اس حد تک پہونچا دیا گیا ہے جہاں وہ گاندھی واد نہ رہ کر جے نیندر واد بن گیا ہے۔

"پورودے" معنی ایشیا کا اُدے نہیں بلکہ پوربی سماجی ویوستھا کا اُدے' پوربی جیون نیتی کا اُدے یعنی گاندھی واد کا اُدے۔

लेखक—जैनेन्द्र कुमार, निकालने वाले—श्री पूर्वोदय प्रकाशन. दरियागंज, दिल्ली, सफ़ा—२८०, लिखावट—नागरी. दाम चार रुपए

जैनेन्द्र जी मशहूर कहानी लेखक हैं और साथ साथ फ़िलासफ़र भी. और जब कहानी लेखक फ़िलासफ़र भी हो तो उसकी कहानी में फ़िलासफ़ी होती है और फ़िलासफ़ी में कहानी. जैनेन्द्र जी के गाँधीवादी ख़यालात का यह संग्रह "पूर्वोदय" कुछ इसी तरह का है

इसमें कुल तैंतीस लेख हैं. लगता है, यह सब के सब पिछले चार पाँच साल में अलग अलग मौक़ों पर लिखे गए. इसलिये ख़यालात की कोई एक कड़ी नहीं है. फिर भी इन लेखों में गाँधीवाद के हर पहलू पर कुछ न कुछ रोशनी डाली गई है. कुछ लेख यह हैं—पूर्वोदय, सर्वोदय, अगर गाँधी जी होते. अहिंसा और मुक्ति, रोटी का मोरचा और संस्कृत, अपरिग्रह और ट्रस्टीशिप, उपवास और लोकतंत्र

इस संग्रह के हर एक लेख में कुछ न कुछ अनोखापन ज़रूर है. और इन सब में "पूर्वोदय" एक दम निराला है इसमें गाँधीवादी फ़िलासफ़ी मार्क्सवादी ढंग से पेश की गई है. और गाँधीवाद को उस हद तक पहुँचा दिया गया है जहां वह गांधीवाद न रह कर जैनेन्द्रवाद बन गया है.

"पूर्वोदय" मानी एशिया का उदय नहीं बल्कि पूरबी समाजी व्यवस्था का उदय, पूरबी जीवन नीति का उदय यानी गांधीवाद का उदय.

महाजन

लिखा—श्री कृश्न लाल वर्मा ने, नागरी लिखावट में.

मिलेगा—ग्रंथ भंडार, बिरला हाउस, लेडी हार्डिंग रोड, माहिम, बम्बई १६. सफ़ा १५०. दाम एक रुपए बारा आने.

यह इतिहास की कील पर घूमने वाला एक उपन्यास है. खेमा हाड़लिया राज के आधार पर लिखा गया है. कृश्न लाल जी पुराने लिखने वाले हैं, खासा लिखा है. कहीं कहीं राजपूताने के शब्द आ गए हैं यह इस किताब की खूबी है बुराई नहीं. आज की हिन्दी में सब प्रान्तों के शब्द मिलने ही चाहियें. भाशा उपन्यास की है यानी किसी को पढ़ने समझने में दिक़्क़त नहीं होती.

इस किताब में एक बड़ी खूबी है जिसकी वजह से यह किताब हर घर में रहने लायक़ है और वह यह कि इसमें भारती संस्कृति का अच्छा पहलू मिलता है पुराने सेठ पैसा, अनाज, माल जमा तो करते थे पर देस और देस वासियों के मुसीबत के वक़्त उनको आराम पहुँचाने के लिये न कि धन इकट्ठा करने के लिये. पुराने सेठ जनता की जेब से पैसा ज़रूर निकालते थे पर उस जेब को हल्का नहीं होने देते थे. जहाँ किसी वजह से हल्का होने लगता था तो चन्द लोग उसको भरने के लिये तैयार रहते थे अकाल के वक़्त किस तरह शाह खेमा हाड़लिया राज अपना अनाज सस्ता बेचकर फ़क़ीर बन जाता है और मस्त रहता है. यही इस उपन्यास में पढ़ने को मिलेगा.

इसे गाहक खरीदें और पुराने भारत की झलक देखें.

مہاجن

لکھا— شری کرشن لال ورما نے ' ناگری لکھاوٹ میں .

ملیگا — گرنتھ بھنڈار ' برلا ھاؤس ' لیڈی ھارڈنگ روڈ ' ماھم ' بمبئی ۱۶ صفحہ ۱۵۰ . دام ایک روپئے بارہ آنے .

یہ اتیھاس کی کیل پر گھومنے والا ایک اُپنیاس ھے . کھیما ھاڑلیا راج کے آدھار پر لکھا گیا ھے . کرشن لال جی پرانے لکھنے والے ھیں ' خاصہ لکھا ھے . کہیں کہیں راجپوتانے کے شبد آگئے ھیں یہ اِس کتاب کی خوبی ھے برائی نہیں آج کی ھندی میں سب پرانتوں کے شبد ملنے ھی چاہئیں . بھاشا اُپنیاس کی ھے یعنی کسی کو پڑھنے سمجھنے میں دقت نہیں ہوتی .

اِس کتاب میں ایک بڑی خوبی ھے جسکی وجہ سے یہ کتاب ھر گھر میں رھنے لائق ھے اور وہ یہ کہ اس میں بھارتی سنسکرتی کا اچھا پہلو ملتا ھے . پرانے سیٹھ پیسہ ' اناج ' مال جمع تو کرتے تھے پر دیس اور دیس باسیوں کے مصیبت کے وقت انکو آرام پہونچانے کے لئے نہ کہ دھن اکٹھا کرنے کے لئے . پرانے سیٹھ جنتا کی جیب سے پیسہ ضرور نکالتے تھے پر اُس جیب کو ھلکا نہیں ھونے دیتے تھے . جہاں کسی وجہ سے ھلکی ھونے لگتی تھی تو چند لوگ اُسکو بھرنے کے لئے تیار رہتے تھے . اکال کے وقت کس طرح شاہ کھیما ھاڑلیا راج اپنا اناج سستا بیچ کر فقیر بن جاتا ھے اور مست رھتا ھے . یہی اس اُپنیاس میں پڑھنے کو ملیگا .

اِسے گاھک خریدیں اور پرانے بھارت کی جھلک دیکھیں .

कुछ किताबें

کچھ کتابیں

लेनिन (जीवनी)

हिन्दी रूप देने वाले श्री कृश्न लाल वर्मा. मिलने का पता—नव भारत प्रकाशन संस्था, ६ केलेवाड़ी, बम्बई ४. सफ़े ९६. दाम सवा रुपए.

किताब खासी है. बच्चों के लिये लिखी गई मालूम होती है. पर हिन्दी रूप देते वक़्त इस ओर ध्यान नहीं दिया गया कि रूसी नाम हिन्दुस्तानी बच्चों की ज़बान पर जल्दी नहीं चढ़ सकते. नामों की बजाय रिश्तों से काम लिया गया होता तो फिर बच्चों को पढ़ने और समझने में बड़ी आसानी होती. किताब के पीछे पाँच पन्नों में याद रखने की बातें देकर किताब काम की बन गई है. पर रूसी नाम वहां भी ज्यों के त्यों मौजूद हैं. फिर भी किताब पढ़ने लायक़ है. छपाई, सफ़ाई ठीक है.

—मं.

لینن [جیونی]

ھندی روپ دینے والے شری کرشن لال ورما .

ملنے کا پتہ—نو بھارت پرکاشن سنستھا' ٦ کیلے واڑی' بمبئی ۴.

صفحے ۹۶ . دام سوا روپے .

کتاب خاصی ھے . بچوں کے لئے لکھی گئی معلوم ھوتی ھے . پر ھندی روپ دیتے وقت اس اور دھیان نہیں دیا گیا کہ روسی نام ھندستانی بچوں کی زبان پر جلدی نہیں چڑھ سکتے . ناموں کی بجائے رشتوں سے کام لیا گیا ھوتا تو پھر بچوں کو پڑھنے اور سمجھنے میں بڑی آسانی ھوتی . کتاب کے پیچھے پانچ پنوں میں یاد رکھنے کی باتیں دے کر کتاب کام کی بن گئی ھے . پر روسی نام وھاں بھی جیوں کے تیوں موجود ھیں . پھر بھی کتاب پڑھنے لائق ھے . چھپائی' صفائی ٹھیک ھے .

م—

अच्छा हो

(भाई चन्द्रनाथ मालवीय 'वारीश')

अपने वतन की ख़ातिर मर जांय तो अच्छा हो,
दुनिया में नाम रौशन कर जाँय तो अच्छा हो.
इसके लिये जियें हम, इसके लिये मरें हम.
यह भाव हरेक मन में भर जाँय तो अच्छा हो.

आपस में प्रेम पैदा करके गले मिलें हम,
मुरझाए फूल फिर से खिल जाँय तो अच्छा हो.
मंदिर में अब अज़ाँ हो मस्जिद में झाँझ झमके.
हिन्दू मुसलमाँ फिर से मिल जाँय तो अच्छा हो.

आपस में लड़ झगड़ कर, घर बार खो चुके हम,
आबाद फिर घरों में हो जाँय तो अच्छा हो.
इन्सानियत की चादर ? ज़ुल्मो सितम के धब्बे ?
हैवानियत के धब्बे, धो जाँय तो अच्छा हो.

कोई न फूल तोड़े यह बाग़ बाग़बाँ का.
यह ख़याल फिर से सब में आ जाँय तो अच्छा हो.
आपस की बदगुमानी की दूर हों घटाएँ.
अब प्रेम की घटाएँ छा जाँय तो अच्छा हो.

हम भाई भाई सब हैं, सारा ख़लक़ ख़ुदा का,
ख़ुद की ख़ुदी मिटाकर मिल जाँय तो अच्छा हो.

اچھا ہو

(بھائی چندر ناتھ مالویہ 'واریش')

اپنے وطن کی خاطر مرجائیں تو اچھا ہو'
دنیا میں نام روشن کر جائیں تو اچھا ہو.
اس کے لئے جئیں ہم' اس کے لئے مریں ہم'
یہ بھاؤ ہر ایک من میں بھر جائیں تو اچھا ہو.

آپس میں پریم پیدا کرکے گلے ملیں ہم'
مرجھائے پھول پھر سے کھل جائیں تو اچھا ہو.
مندر میں اب اذاں ہو مسجد میں جھانجھ جھمکے'
ہندو مسلماں پھر سے مل جائیں تو اچھا ہو.

آپس میں لڑ جھگڑ کر' گھر بار کھو چکے ہم'
آباد پھر گھروں میں ہو جائیں تو اچھا ہو.
انسانیت کی چادر؟ ظلم و ستم کے دھبے؟
حیوانیت کے دھبے دھو جائیں تو اچھا ہو.

کوئی نہ پھول توڑے یہ باغ باغباں کا'
یہ خیال پھر سے سب میں آجائیں تو اچھا ہو.
آپس کی بد گمانی کی دور ہو گھٹائیں'
اب پریم کی گھٹائیں چھا جائیں تو اچھا ہو.

ہم بھائی بھائی سب ہیں' سارا خلق خدا کا'
خود کی خودی مٹا کر مل جائیں تو اچھا ہو.

...देर सोचता रहा और फिर बाल्टी निकालना मान लिया. आठ आने उजरत ठहरी.

किसान कुएं में उतरने लगा. वह ख़ुश भी हो रहा था कि उसे आठ आने मिलेंगे. इन आठ आनों से वह अपने शामू के लिये नई चप्पल ख़रीद लायगा. शामू चप्पल पाकर ख़ुश होगा. और वह ख़ुशी ख़ुशी स्कूल जायगा, साथियों को नई चप्पल दिखाएगा..... फिर किसान आप ही आप कहने लगा—"उफ़ ! पानी तो बहुत होगा. अगर साँप वग़ैरा काट ले तो ?.. ....'' उसके क़दम रुक गए और वह सोचने लगा.

इतने में एक मसख़रा आया और कुएं में झांकते हुए कहा—"वाह यार ! तुम तो बड़े डरपोक हो. कहीं इतने पानी से भी डरते हैं, तुम कुएं में उतरो. मैं ज़िम्मेदार हूं, फिर दोनों आधे आधे पैसे बाँट लेंगे.''

किसान ने हिम्मत बांधी और कुएं में उतर पड़ा. बड़ी मुश्किल से आख़िर बाल्टी निकाल ही लाया. और बाल्टी वाले ने किसान को आठ आने दिये. मसख़रे ने झपट कर किसान के हाथ से चार आने उचक लिये. किसान खड़ा देखने लगा और कहा—"वाह, यह भी ख़ूब रही ! कुएं में मैं उतरा. बाल्टी मैंने निकाली और तुम...... यह चार आने किस बात के ले रहे हो ?''

मसख़रा बोला—"अरे भई, तुम्हारी हिम्मत तो मैंने बंधवाई थी. तुम तो कुएं में उतरते घबरा रहे थे. मैंने हिम्मत बंधवाई और तुमने यह चार आने कमाए. जाओ ख़ुदा का शुक्र अदा करो.''

किसान उसकी बात समझने की कोशिश कर रहा था और मसख़रा जा चुका था.

جو ابھی ابھی کوئیں میں گر پڑی ہے ۔ کسان کچھ دیر ... سوچتا رہا اور پھر بالٹی نکالنا مان لیا ۔ آٹھ آنے اُجرت ٹھہری ۔

کسان کوئیں میں اُترنے لگا ۔ وہ خوش بھی ہو رہا تھا کہ اُسے آٹھ آنے ملینگے ۔ اِن آٹھ آنوں سے وہ اپنے شامو کے لئے نئی چپل خرید لائیگا ۔ شامو چپل پاکر خوش ہوگا ۔ اور وہ خوشی خوشی اِسکول جائیگا ۔ ساتھیوں کو نئی چپل دکھائیگا .... پھر کسان آپ ہی آپ کہنے لگا— " اُف ! پانی تو بہت ہوگا ۔ اگر سانپ وغیرہ کاٹ لے تو ؟ ...... " اُس کے قدم رک گئے اور وہ سوچنے لگا ۔

اتنے میں ایک مسخرا آیا اور کنوئیں میں جھانکتے ہوئے کہا— " واہ یار ! تم تو بڑے ڈرپوک ہو کہیں اتنے پانی سے بھی ڈرتے ہوں ، تم کوئیں میں اُترو ۔ میں ذمے دار ہوں پھر دونوں آدھے آدھے پیسے بانٹ لیں گے ۔ "

کسان نے ہمت باندھی اور کوئیں میں اُتر پڑا ۔ بڑی مشکل سے آخر بالٹی نکال ہی لایا ۔ اور بالٹی والے نے کسان کو آٹھ آنے دئیے ۔ مسخرے نے جھپٹ کر کسان کے ہاتھ سے چار آنے اُچک لئے ۔ کسان کھڑا دیکھنے لگا اور کہا— " واہ ! یہ بھی خوب رہی ! کوئیں میں میں اُترا ۔ بالٹی میں نے نکالی اور تم ...... یہ چار آنے کس بات کے لے رہے ہو ؟ "

مسخرا بولا— " ارے بھائی ، تمہاری ہمت تو میں نے بندھوائی تھی ۔ تم تو کوئیں میں اُترتے گھبرا رہے تھے ۔ میں نے ہمت بندھوائی اور تم نے یہ چار آنے کمائے ۔ جاؤ خدا کا شکر ادا کرو ۔ "

کسان اُس کی بات سمجھنے کی کوشش کر رہا تھا اور مسخرا جا چکا تھا ۔

मियाँ इसे तुम अपनी अम्मी को दे दो. हम अमीन साहब से यह सब बातें कह देंगे."

मैं घर वापिस आया और अम्मी को सारा क़िस्सा सुनाया. उन्होंने कहा—"अच्छा, हम इसे महफ़ूज़ रख देंगे. अगर इसका कोई मालिक आ जाए तो वापिस कर देंगे."

दूसरे दिन यह वाकया आग की तरह गाँव में फैल गया. गाँव के एक डाक्टर साहब मेरे घर आए और कहा कि यह नोट मेरा है. मगर मैं अब यह नोट इस बच्चे को देता हूँ अम्मी ने बहुत कहा कि इस को ले जाइये. लेकिन वह न माने और मजबूर होकर नोट ले लेना पड़ा. डाक्टर ने ख़ुश होकर मेरी पीठ थपकते हुए कहा—"शाबाश बेटे! तुम बड़े ही सच्चे और अच्छे बच्चे हो. भगवान तुम्हें सदा सुखी रक्खे और देस को तो ऐसे ही बच्चों की ज़रूरत है. तुम भारत के होनहार वीर बालक हो."

दूसरे दिन से डाक्टर ने मेरी पढ़ाई का भी इन्तज़ाम कर दिया और सारे गाँव वालों ने मुझे शाबाशी दी.

चालाकी

(बहन अहमदी मक़बूल रिज़वी)

میاں اِسے تم اپنی امی کو دیدو . ہم امین صاحب سے یہ سب باتیں کہدینگے ."

میں گھر واپس آیا اور امی کو سارا قصہ سنایا . انہوں نے کہا—"اچھا' ہم اِسے محفوظ رکھدینگے اگر اس کا کوئی مالک آجائے تو واپس کر دینگے" .

دوسرے دن یہ واقعہ آگ کی طرح گاؤں میں پھیل گیا . گاؤں کے ایک ڈاکٹر صاحب میرے گھر آئے اور کہا کہ یہ نوٹ میرا ہے . مگر میں اب یہ نوٹ اِس بچے کو دیتا ہوں . امی نے بہت کہا کہ اِسکو لے جایئے' لیکن وہ نہ مانے اور مجبور ہوکر نوٹ لے لینا پڑا . ڈاکٹر نے خوش ہوکر میری پیٹھ ٹھپکتے ہوئے کہا—"شاباش بیٹے ! تم بڑے ہی سچے اور اچھے بچے ہو' بھگوان تمہیں سدا سکھی رکھے اور دیس کو تو ایسے ہی بچوں کی ضرورت ہے . تم بھارت کے ہونہار ویر بالک ہو ."

دوسرے دن سے ڈاکٹر نے میری پڑھائی کا بھی انتظام کر دیا اور سارے گاؤں والوں نے مجھے شاباشی دی .

چالاکی

(بہن احمدی مقبول رضوی)

... मुहल्ले भर में फैल गई और लोग मेरे पास आने लगे. इस में मेरे एक मास्टर साहब भी थे. कहने लगे—"बाबा, हम ने सुना है कि तुम्हें पांच रुपए का नोट मिला है और तुम उसे देने के लिये अमीन साहब के पास जा रहे हो. ख़ुदा ने तुम्हें यह नोट मुसीबत दूर करने के लिये दिया है. अच्छा तो मुझे वह कापी तो लाओ, देखें किसका नाम है ? "

मैंने कापी मास्टर साहब को दे दी. उन्होंने कापी के हर पन्ने को देखा. केवल नाम कहीं भी न था. नोट को हाथ में लेते हुए कहने लगे—" मियाँ, यह पाँच रुपए का नोट नहीं". मैं मास्टर साहब की सूरत देखने लगा और यह सुनने के लिये बेताब होगया कि वह आगे क्या कहेंगे.

उन्होंने कहा—"यह तो सौ रुपए का नोट है बाबा" यह सुन कर मेरा दिल धड़कने लगा, आंखों से आंसू निकल आए जिन्हें देख कर लोगों ने कहा—"क्यों मियाँ ? यह तो ख़ुश होने की बात है, तुम रो क्यों रहे हो ?"

मैंने कहा—"मुझे डर लग रहा है. कहीं ऐसा न हो अमीन साहब मुझे चोर समझ कर जेल में बन्द कर दें." यह सुनकर सब लोग हँस हँस कर कहने लगे—"ख़ूब ! ख़ूब ! वह तुम्हें क्यों पकड़ने लगे, कापी पर तो नाम है न निशान. यह तुम्हारे सब्र का फल है. जाओ

ادھر یہ خبر ھمارے محلے بھر میں پھیل گئی اور لوگ میرے پاس آنے لگے . اس میں میرے ایک ماسٹر صاحب بھی تھے . کہنے لگے—" بابا' ہم نے سنا ھے کہ تمھیں پانچ روپے کا نوٹ ملا ھے اور تم اُسے دینے کے لئے امین صاحب کے پاس جا رہے ھو . خدا نے تمھیں یہ نوٹ مصیبت دور کرنے کے لئے دیا ھے . اچھا تو مجھے وہ کاپی تو لاؤ' دیکھیں کس کا نام ھے ؟"

میں نے کاپی ماسٹر صاحب کو دے دی . اُنھوں نے کاپی کے ھر ورقے کو دیکھا . کیول نام کہیں بھی نہ تھا . نوٹ کو ھاتھ میں لیتے ھوئے کہنے لگے—" میاں' یہ پانچ روپے کا نوٹ نہیں ." میں ماسٹر صاحب کی صورت دیکھنے لگا اور یہ سننے کے لئے بے تاب ھوگیا کہ وہ آگے کیا کہیں گے .

اُنھوں نے کہا—" یہ تو سو روپے کا نوٹ ھے بابا ." یہ سن کر میرا دل دھڑکنے لگا' آنکھوں سے آنسو نکل آئے جنھیں دیکھکر لوگوں نے کہا—" کیوں میاں ؟ یہ تو خوش ھونے کی بات ھے' تم رو کیوں رہے ھو ؟"

میں نے کہا—" مجھے ڈر لگ رھا ھے . کہیں ایسا نہ ھو امین صاحب مجھے چور سمجھکر جیل میں بند کر دیں ." یہ سن کر سب لوگ ھنس ھنس کر کہنے لگے—" خوب ! خوب ! وہ تمھیں کیوں پکڑنے لگے' کاپی پر تو نام ھے نہ نشان . یہ تمہارے صبر کا پھل ھے . جاؤ

कि सुबह की नमाज़ पढ़ कर तफ़रीह को चलना चाहिये. मैंने नमाज़ पढ़ ली, और बाहर चल पड़ा. सोचा कि अब किस तरफ़ चलना होगा ? फिर मैं संतोश और शकूर के घर गया. हम तीनों गांव से दूर निकल गए इधर उधर की बातें करते. इतने में मेरी नजर एक छोटी सी कापी पर पड़ी जो रास्ते के किनारे पड़ी हुई थी. मैंने बढ़ कर उसे उठा लिया और पन्ने उलटने लगा कि नाम देख कर मालिक को वापिस कर दूं. लेकिन नाम कहीं न निकला. पन्नों के बीच एक मुड़ा हुआ काग़ज़ रखा था जिसका रंग हलका आसमानी था. मैंने ठीक से देखा तो वह पांच रुपए का नोट मालूम हुआ. मेरा दिल धक से रह गया कि अब क्या होगा ? नई नई बातें मन में आने लगीं. कभी डर होता कि उसे उठाने से कहीं पुलिस पकड़ न ले और फिर घर का ख़याल आ जाता कि चलो इस से कुछ आटा और दाल मोल लेंगे और फिर कल के खाने का बन्दोबस्त आसानी से हो जायगा. साथ ही साथ यह बात भी मन में आई कि जिसके यह रुपए हैं वह परेशान हो रहा होगा.

मेरे मित्र ख़ुश थे और एक ने कहा—"चलो हम सब मिल कर मिठाई खाएंगे."

मैंने कहा—"नहीं, नहीं, ऐसा तो कभी नहीं होगा."

सन्तोश ने कहा—"फिर इसका क्या करोगे ?"

मैं—"यह पैसे अमीन साहब पुलिस वाले को दे दूंगा."

शकूर ने हँसते हुए कहा—"अमा यार, तुम भी बड़े नेक बन चले

کہ صبح کی نماز پڑھ کر تفریح کو چلنا چاہئے ۔ میں نے نماز پڑھ لی' اور باہر چل پڑا. سوچا کہ اب کس طرف چلنا ہوگا ؟ پھر میں سنتوش اور شکور کے گھر گیا ۔ ہم تینوں گاؤں سے دور نکل گئے اِدھر اُدھر کی باتیں کرتے ۔ اتنے میں میری نظر ایک چھوٹی سی کاپی پر پڑی جو راستے کے کنارے پڑی ہوئی تھی ۔ میں نے بڑھکر اُسے اُٹھا لیا اور پنّے اُلٹنے لگا کہ نام دیکھ کر مالک کو واپس کر دوں ۔ لیکن نام کہیں نہ نکلا ۔ پنّوں کے بیچ ایک مڑا ہوا کاغذ رکھا تھا جس کا رنگ ہلکا آسمانی تھا ۔ میں نے ٹھیک سے دیکھا تو وہ پانچ روپے کا نوٹ معلوم ہوا ۔ میرا دل دھک سے رہ گیا کہ اب کیا ہوگا ؟ نئی نئی باتیں من میں آنے لگیں ۔ کبھی ڈر ہوتا کہ اُسے اُٹھانے سے کہیں پولیس پکڑ نہ لے اور پھر گھر کا خیال آجاتا کہ چلو اِس سے کچھ آٹا اور دال مول لیں گے اور پھر کل کے کھانے کا بندوبست آسانی سے ہو جائیگا ۔ ساتھ ہی ساتھ یہ بات بھی من میں آئی کہ جس کے یہ روپے ہیں وہ پریشان ہو رہا ہوگا ۔

میرے متر خوش تھے اور ایک نے کہا—''چلو ہم سب ملکر متھائی کھائیں گے ۔''

میں نے کہا—''نہیں' نہیں' ایسا تو کبھی نہیں ہوگا ۔''

سنتوش نے کہا—''پھر اِس کا کیا کروگے ؟''

میں—''یہ پیسے امین صاحب پولیس والے کو دے دونگا ۔''

شکور نے ہنستے ہوئے کہا—''اما ، یار' تم بھی بڑے نیک بن

मेरा काम

(भाई जाहिर उलअमीन)

प्यारे भाई बहनों ! जाहिर मियां ने हमें अपना अच्छा काम लिख भेजा है. अगर तुमने भी कोई अच्छा काम किया है, या किसी की सेवा की हो तो 'बच्चों की दुनिया' के एडीटर के पते पर लिख भेजो. मैं उन्हें जरूर छापूँगा. और यह सिलसिला जारी रहेगा. फिर ऐसे लेख एक किताब बन कर तुम्हारे पास आएंगे—एडीटर

अब्बा जान के मरते समय मैं बहुत छोटा था. वह क्या मरे हम पर कठिनाइयों के पहाड़ टूट पड़े. वह नौकरी करते थे और बहुत सा रुपया पैसा लाते थे. इधर कुछ दिनों की बात है घर में खाने को कुछ नहीं था तो मैं और अम्मी भूके ही सो गए थे. अम्मी मुझ से कहतीं —"बेटा, कठिनाइयों में रहकर ही सब्र और शान्ति से काम करो और पढ़ते जाओ." और दिन गुजरते गए. अम्मी मेहनत मजदूरी करने लगीं और मेरी पढ़ाई बराबर जारी थी. मास्टर साहब ने मेरी फीस माफ़ कर दी थी और सरकार की तरफ़ से मेरी किताबों का भी बन्दोबस्त हो चुका था.

रमजान का महीना आ गया. मुझे बड़ी खुशी हुई, इसलिये कि महीना भर छुट्टियां रहती हैं. मैं सेहरी (सुबह अंधेरे खाना) कर चुकने के बाद नन्हा सा दिया रौशन किये बैठा क़ुरान शरीफ़ पढ़ रहा था और बाहर कुछ कुछ उजाला सा नजर आने लगा था. मैंने सोचा

میرا کام

(بھائی ظاہرالامین)

پیارے بھائی بہنوں ! ظاہر میاں نے ہمیں اپنا اچھا کام لکھ بھیجا ہے ۔ اگر تم نے بھی کوئی 'اچھا کام کیا ہے' یا کسی کی سیوا کی ہو تو 'بچوں کی دنیا' کے اڈیٹر کے پتے پر لکھ بھیجو. میں انہیں ضرور چھاپوں گا. اور یہ سلسلہ جاری رہے گا پھر ایسے لیکھ ایک کتاب بنکر تمہارے پاس آئیں گے—ایڈیٹر

ابا جان کے مرتے سمے میں بہت چھوٹا تھا ۔ وہ کیا مرے ہم پر کٹھنائیوں کے پہاڑ ٹوٹ پڑے. وہ نوکری کرتے تھے اور بہت سا روپیہ پیسہ لاتے تھے ۔ ادھر کچھ دنوں کی بات ہے گھر میں کھانے کو کچھ نہیں تھا تو میں اور امی بھوکے ہی سو گئے تھے ۔ امی مجھ سے کہتیں—"بیٹا' کٹھنائیوں میں رہ کر ہی صبر اور شانتی سے کام کرو اور پڑھتے جاؤ." اور دن گذرتے گئے. امی محنت مزدوری کرنے لگیں اور میری پڑھائی برابر جاری تھی ۔ ماسٹر صاحب نے میری فیس معاف کر دی تھی اور سرکار کی طرف سے میری کتابوں کا بھی بندوبست ہو چکا تھا ۔

رمضان کا مہینہ آگیا ۔ مجھے بڑی خوشی ہوئی' اس لئے کہ مہینہ بھر چھٹیاں رہتی ہیں ۔ میں سحری (صبح اندھیرے کھانا) کر چکنے کے بعد ننھا سا دیا روشن کئے بیٹھا قرآن شریف پڑھ رہا تھا اور باہر کچھ کچھ اُجالا سا نظر آنے لگا تھا. میں نے سوچا

एडीटर—प्रेम भाई

सूरज

(भाई महमूद)

वह दूर झाड़ियों के पीछे ज़रा तो देखो
अंगारा सा वह गोला सूरज है उधर देखो
अपनी चमक दिखाता
सूरज निकल रहा है !
दुनिया को जगमगाता बाग़ों को वह हँसाता
सुस्ती को दूर करता लोगों को है जगाता
अपनी दमक दिखाता
सूरज निकल रहा है !
जल्दी उठो ऐ बच्चो कुछ काम करो तुम भी
हिम्मत कभी न हारो और नाम करो तुम भी
बस यह सबक़ सुनाता
सूरज निकल रहा है !

हमें इस पते पर पत्र लिखो कि "बच्चों की दुनिया" कैसी है और इसमें और क्या क्या होना चाहिये ?

بچوں کی دنیا

ایڈیٹر—پریم بھائی

سورج

(بھائی محمود)

وہ دور جھاڑیوں کے پیچھے ذرا تو دیکھو
انگارا سا وہ گولا سورج ہے اُدھر دیکھو
اپنی چمک دکھاتا
سورج نکل رہا ہے !
دنیا کو جگمگاتا باغوں کو وہ ہنساتا
سستی کو دور کرتا لوگوں کو ہے جگاتا
اپنی دمک دکھاتا
سورج نکل رہا ہے !
جلدی اُٹھو اے بچو کچھ کام کرو تم بھی
ہمت کبھی نہ ہارو اور نام کرو تم بھی
بس یہ سبق سناتا
سورج نکل رہا ہے !

ہمیں اِس پتے پر پتر لکھو کہ " بچوں کی دنیا " کیسی ہے اور اس میں اور کیا کیا ہونا چاہئے ؟

हिन्दुस्तान को अलग हटा कर दूसरे देसों से कोई मदद ले सकते हैं. उन्होंने अपने एलान में कहा है कि किसी राष्ट्र ने शाहज़ादा ज्ञानेन्द्र को राजा नहीं माना. असल में इसका कारन हिन्दुस्तान का कड़ा रुख़ था नहीं तो लन्दन की कुछ ख़बरों से मालूम होता था कि बरतानी सरकार इस तीन साल के लड़के को राजा मान लेने की सोच रही है. इन सब बातों को एक साथ रख कर देखा जाय तो उन से एक नतीजा यह निकलता है कि नैपाल में अब शायद यह लड़ाई न हो और दूसरा नतीजा यह निकलता है कि हिन्दुस्तान की साख और उसकी आवाज़ का असर पहले से ज़्यादा हो गया है. कामनवेल्थ कान-फ़रेन्स और कोरिया के बारे में नई तजवीज़ें बनाने में हिन्दुस्तान के आगे आगे रहने से यह साख और भी बढ़ गई है.

रौशन साया

(हज़रत 'जिगर' मुरादाबादी)

कोई यह कहदे गुलशन गुलशन
लाख बलाएँ एक नशेमन

फूल खिले हैं गुलशन गुलशन
लेकिन अपना अपना दामन

कांटों का भी हक़ है कुछ आख़िर
कौन छुड़ाए अपना दामन

काम अधूरा और आज़ादी
नाम बड़े और थोड़े दर्शन

शमा है लेकिन धुँधली धुँधली
साया है लेकिन रौशन रौशन

ھندستان کو الگ ھٹاکر دوسرے دیسوں سے کوئی مدد لے سکتے ھیں . انہوں نے اپنے اعلان میں کہا ھے کہ کسی راشٹر نے شہزادہ گیانیندر کو راجہ نہیں مانا . اصل میں اسکا کارن ھندستان کا کڑا رخ تھا نہیں تو للدن کی کچھ خبروں سے معلوم ھوتا تھا کہ برطانی سرکار اس تین سال کے لڑکے کو راجہ مان لینے کی سوچ رھی ھے . ان سب باتوں کو ایک ساتھ رکھکر دیکھا جائے تو ان سے ایک نتیجہ یہ نکلتا ھے کہ نیپال میں اب شاید یہ لڑائی نہ ھو اور دوسرا نتیجہ یہ نکلتا ھے کہ ھندستان کی ساکھ اور اس کی آواز کا اثر پہلے سے زیادہ ھوگیا ھے . کامن ویلتھ کانفرنس اور کوریا کے بارے میں نئی تجویزیں بنانے میں ھندستان کے آگے آگے رھنے سے یہ ساکھ اور بھی بڑھ گئی ھے .

روشن سایہ

(حضرت 'جگر' مرادآبادی)

کوئی یہ کہدے گلشن گلشن
لاکھ بلائیں ایک نشیمن

پھول کھلے ھیں گلشن گلشن
لیکن اپنا اپنا دامن

کانٹوں کا بھی حق ھے کچھ آخر
کون چھڑائے اپنا دامن

کام ادھورا اور آزادی
نام بڑے اور تھوڑے درشن

شمع ھے لیکن دھندھلی دھندھلی
سایہ ھے لیکن روشن روشن

नैपाल में समझौता

हिन्दुस्तान के पड़ोसी मुल्क नैपाल में, जहां के राजा अपने प्रधान मंत्री के चंगुल से निकल कर देहली चले आए थे और जहां की जनता सरकार के खिलाफ़ हथियारबन्द बग़ावत पर उतर आई थी, अब हिन्दुस्तान की कोशिश से शान्ति की एक सूरत निकल आई है.

हिन्दुस्तान ने, जैसा कि पिछले लेख में लिखा जा चुका है, शाह त्रिभुवन की जगह उनके पोते को नैपाल नरेश मानने से इनकार कर दिया था और वहाँ के रानाओं पर, जो सरकार और मुल्क पर क़ब्ज़ा किये हुए हैं, इस बात के लिये ज़ोर डाल रहा था कि वह जनता के चुने हुए नुमाइन्दों की एक विधान सभा बनाएँ और बीच के ज़माने के लिये राजकाज के कामों में जनता के प्रतिनिधियों को शरीक करें. इन तजवीज़ों पर बात चीत करने के लिये नैपाल के प्रतिनिधि दो बार नई देहली आए. पहली बार उन्होंने हिन्दुस्तान को जो जवाब दिया उसमें टालमटोल करने की तरकीब झलकती थी और इसीलिये हिन्दुस्तान ने उनके जवाब को स्वीकार न किया. दूसरी बार बातचीत के बाद नैपाल के प्रतिनिधि ने एलान कर दिया है कि शाह त्रिभुवन जब चाहें चले आएं और राजकाज का काम संभाल लें. विधान सभा अगले साल तक ज़रूर बन जायगी और तब तक के लिये १४ आदमियों के मंत्रिमन्डल में से सात जनता के प्रतिनिधि होंगे.

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इन तजवीज़ों को पसन्द कर लिया है और नैपाल कांगरेस ने हिन्द सरकार के कहने से लड़ाई की कारवाइयाँ रोक दी हैं. नैपाल के प्रधान मंत्री ने भी यह देख लिया

نیپال میں سمجھوتہ

ہندستان کے پڑوسی ملک نیپال میں، جہاں کے راجہ اپنے پردھان منتری کے چنگل سے نکل کر دہلی چلے آئے تھے اور جہاں کی جنتا سرکار کے خلاف ہتھیار بند بغاوت پر اُتر آئی تھی، اب ہندستان کی کوشش سے شانتی کی ایک صورت نکل آئی ہے۔

ہندستان نے، جیسا کہ پچھلے لیکھ میں لکھا جا چکا ہے، شاہ تربھون کی جگہ انکے پوتے کو نیپال نریش ماننے سے انکار کر دیا تھا اور وہاں کے راناؤں پر، جو سرکار اور ملک پر قبضہ کئے ہوئے ہیں، اِس بات کے لئے زور ڈال رہا تھا کہ وہ جنتا کے چنے ہوئے نمائندوں کی ایک ودھان سبھا بنائیں اور بیچ کے زمانے کیلئے راج کاج کے کاموں میں جنتا کے پرتی ندھیوں کو شریک کریں۔ ان تجویزوں پر بات چیت کرنے کیلئے نیپال کے پرتی ندھی دو بار نئی دہلی آئے۔ پہلی بار اُنہوں نے ہندستان کو جو جواب دیا اسمیں ٹال مٹول کرنے کی ترکیب جھلکتی تھی اور اسی لئے ہندستان نے انکے جواب کو سویکار نہ کیا۔ دوسری بار بات چیت کے بعد نیپال کے پرتی ندھی نے اعلان کر دیا ہے کہ شاہ تربھون جب چاہیں چلے آئیں اور راج کاج کا کام سنبھال لیں۔ ودھان سبھا اگلے سال تک ضرور بن جائے گی اور تب تک کیلئے ۱۴ آدمیوں کے منتری منڈل میں سے سات جنتا کے پرتی ندھی ہوں گے۔

پنڈت جواہرلال نہرو نے ان تجویزوں کو پسند کر لیا ہے اور نیپال کانگریس نے ہند سرکار کے کہنے سے لڑائی کی کاروائیاں روک دی ہیں۔ نیپال کے پردھان منتری نے بھی یہ دیکھ لیا ہے

रुक गए और रुकते रुकते चले गए. वह रुके यह कहकर थे कि
जब तक कश्मीर का झगड़ा कानफ़रेन्स के एजन्डा पर नहीं रक्खा
जाता है उस वक़्त तक पाकिस्तान दुनिया और खासकर एशिया में
शान्ति की किसी बात चीत में शरीक नहीं होगा. और गए यह
कहकर थे कि उन को इस बात का यक़ीन दिला दिया गया है कि
कश्मीर के मसले पर कामन वेल्थ के प्रधान मंत्री मिल बैठकर बात
चीत करेंगे. जहां तक उनकी माँग का सवाल है वह पूरी नहीं हुई.
और कश्मीर के सवाल पर जो बात चीत की गई वह निजी थी.
'उसमें सब प्रधान मंत्री नहीं शरीक थे और उसका कोई नतीजा नहीं
निकल सका.

शायद लियाक़त अली खां यह बात पहले ही से जानते थे इस
लिये कि कामनवेल्थ कानफ़रेन्स में आपस के झगड़े न तो लाए
जाते हैं और न चुकाए जाते हैं. उन्होंने कश्मीर का सवाल यह सोच
कर नहीं उठाया था कि इसका दुनिया पर क्या असर पड़ रहा है
बल्कि यह समझ कर रूठे थे कि इस तरह पाकिस्तानी जनता पर
अपना असर जमा लेंगे. मगर वहां के अख़बारों से पता चलता है
कि प्रधान मंत्री का यह निशाना खता कर गया. अब उन्हें जनता
को अपने साथ रखने के लिये कोई नई बात करनी होगी और ऐसी
एक बात यह है कि वह बीच पूरब के इसलामी देसों का संगठन शुरू
कर दें. इस तरह वह अपनी जनता को बहलाने के अलावा उन देसों
में अपना नाम कर लेंगे और पच्छिमी राष्ट्रों को भी खुश कर सकेंगे
जो योरप और एशिया की तरह बीच पूरब में भी रूस के खिलाफ़
मोर्चा क़ायम करना चाहते हैं.

... سے پہلے ... وہ رہے یہ کہکر تھے کہ جب تک کشمیر کا
جھگڑا کانفرنس کے ایجنڈا پر نہیں رکھا جاتاہے اسوقت تک پاکستان
دنیا اور خاصکر ایشیا میں شانتی کی کسی بات چیت میں شریک
نہیں ہوگا ۔ اور گئے یہ کہکر تھے کہ ان کو اسبات کا یقین دلا دیا
گیا ہے کہ کشمیر کے مسئلے پر کامن ویلتھ کے پردھان منتری مل بیٹھ
کر بات چیت کرینگے ۔ جہاں تک ان کی مانگ کا سوال ہے وہ
پوری نہیں ہوئی ۔ اور کشمیر کے سوال پر جو بات چیت کی گئی
وہ نجی تھی۔ اس میں سب پردھان منتری نہیں شریک تھے اور
اسکا کوئی نتیجہ نہیں نکل سکا ۔

شاید لیاقت علی خاں یہ بات پہلے ہی سے جانتے تھے اس
لئے کہ کامن ویلتھ کانفرنس میں آپس کے جھگڑے نہ تو لائے
جاتے ہیں اور نہ چکائے جاتے ہیں ۔ انہوں نے کشمیر کا سوال یہ سوچ
کر نہیں اٹھایا تھا کہ اس کا دنیا پر کیا اثر پڑ رہا ہے بلکہ یہ سمجھ
کر روٹھے تھے کہ اسطرح پاکستانی جنتا پر اپنا اثر جمائیں گے ۔ مگر
وہاں کے اخباروں سے پتہ چلتا ہے کہ پردھان منتری کا یہ نشانہ
خطا کر گیا ۔ اب انہیں جنتا کو اپنے ساتھ رکھنے کے لئے کوئی نئی
بات کرنی ہوگی اور ایسی ایک بات یہ ہے کہ وہ بیچ پورب کے اسلامی
دیسوں کا سنگھٹن شروع کر دیں ۔ اس طرح وہ اپنی جنتا کو بہلانے
کے علاوہ ان دیسوں میں اپنا نام کر لیں گے اور پچھمی راشٹروں کو
بھی خوش کر سکینگے جو یورپ اور ایشیا کی طرح بیچ پورب
میں بھی روس کے خلاف ایک مورچہ قائم کرنا چاہتے ہیں ۔

के बारे में पत्र व्योहार के अभी तक जारी रहने का कारन या तो यह है कि अमरीका और रूस दोनों यह चाहते हैं कि इनकार की बात दूसरा कहे ताकि दुनिया में बदनामी उसी की हो. या फिर यह बात है कि अमरीका के साथी खुद भी जरमनी की हथियारबन्दी को ज्यादा पसन्द नहीं करते और रूस से समझौते के लिये बात चीत की सम्भावना हमेशा के लिये ख़तम नहीं करना चाहते. एक तो इसलिये कि अभी उन सब की ताक़त अमरीका की मदद के बाद भी रूस और उस के पूरबी योरप के साथियों की ताक़त से कम होगी. और दूसरे इसलिये कि पच्छिमी राश्ट्र पहली बड़ी लड़ाई के बाद यह देख चुके हैं कि जरमनी को हथियारबन्द करना उनके अपने लिये कितना ख़तरनाक साबित हुआ.

पच्छिमी राश्ट्रों का यह डर अमरीका के पैर में एक तरह की बेड़ी बना हुआ है. और अगर रूस ने मौक़ा ग़नीमत जान कर इन राश्ट्रों की तैयारी से पहले उन पर वार न कर दिया, जिसकी अभी कोई सम्भावना नहीं है, तो एशिया की तरह योरप की लड़ाई भी थोड़े दिनों के लिये टल जायगी, चार बड़ों की कानफ़रेन्स हो चाहे न हो. हाँ, अगर यह कानफ़रेन्स कामयाबी के साथ हो जाय तो शान्ति की मुद्दत थोड़ी और बढ़ जायगी.

कश्मीर और कामनवेल्थ

ऊपर कामनवेल्थ कानफ़रेन्स के हाल में एक बात की चरचा

کے بارے میں پتر بیوہار کے ابھی تک جاری رہنے کا کارن یا تو یہ ہے کہ امریکہ اور روس دونوں یہ چاہتے ہیں کہ انکار کی بات دوسرا کہے تاکہ دنیا میں بدنامی اسی کی ہو. یا پھر یہ بات ہے کہ امریکہ کے ساتھی خود بھی جرمنی کی ہتھیار بندی کو زیادہ پسند نہیں کرتے اور روس سے سمجھوتے کیلئے بات چیت کی سمبھاونا ہمیشہ کےلئے ختم نہیں کرنا چاہتے. ایک تو اس لئے کہ ابھی اُن سب کی طاقت امریکہ کی مدد کے بعد بھی روس اور اُس کے پوربی یورپ کے ساتھیوں کی طاقت سےکم ہوگی. اور دوسرے اس لئے کہ پچھمی راشٹر پہلی بڑی لڑائی کے بعد یہ دیکھ چکے ہیں کہ جرمنی کو ہتھیار بند کرنا اُن کے اپنے لئے کتنا خطرناک ثابت ہوا.

پچھمی راشٹروں کا یہ ڈر امریکہ کے پیر میں ایک طرح کی بیڑی بنا ہوا ہے. اور اگر روس نے موقع غنیمت جان کر ان راشٹروں کی تیاری سے پہلے ان پر وار نہ کردیا' جسکی ابھی کوئی سمبھاونا نہیں ہے' تو ایشیا کی طرح یورپ کی لڑائی بھی تھوڑے دنوں کے لئے ٹل جائے گی' چار بڑوں کی کانفرنس ہو چاہے نہ ہو. ہاں' اگر یہ کانفرنس کامیابی کے ساتھ ہو جائے تو شانتی کی مدت تھوڑی اور بڑھ جائے گی.

کشمیر اور کامن ویلتھ

اوپر کامن ویلتھ کانفرنس کے حال میں ایک بات کی چرچا

एक दूसरे के लिये काट कपट, शक और डर भरा हुआ है, फिर भी रूस
ने जरमनी के बारे में चार बड़े राष्ट्रों यानी अमरीका, बरतानिया,
फ्रान्स और रूस के बिदेस मंत्रियों की जिस कानफ़रेन्स का प्रस्ताव किया
है उससे दिलों का एक कोना साफ़ हो सकता है. अभी इस तजवीज़
पर पत्र व्योहार हो रहा है. पच्छिम के 'तीन बड़े' इस कानफ़रेन्स में
रूस के साथ अपने तमाम झगड़े पेश करना चाहते हैं जब कि रूस
सब से पहले जरमनी के सवाल पर बहस करना चाहता है ख़ास
कर पच्छिमी राष्ट्रों की उस कारवाई पर जिसके ज़रिये उन्होंने
पच्छिमी जरमनी को हथियार बन्द करने का फ़ैसला किया है. यह
फ़ैसला रूस के साथ उनके समझौतों और पिछले एलानों के ख़िलाफ़
है. मगर इन राष्ट्रों का कहना है कि रूस ने भी पूरबी जरमनी में पुलिस
के नाम से दो लाख आदमियों की एक फ़ौज बना ली है जिससे
पच्छिमी जरमनी और पच्छिमी योरप को ख़तरा है.

अमरीका के शक भरे दिल में एक ख़याल यह पैदा हो रहा है
कि रूस ने चार बड़ों की कानफ़रेन्स का प्रस्ताव जरमनी को हथियार-
बन्द बनाने के फ़ैसले से दब कर या उसको रोकने के लिये पेश
किया है. और इसीलिये अमरीका उसे और ज़्यादा दबाना
चाहता है और जरमनी पर बात चीत के बदले में दूसरे सवाल
उठाना चाहता है. इस बीच में वह कोई ख़तरा मोल नहीं लेना
चाहता और इसीलिये न तो ट्रूमैन और उनके बिदेस मंत्री के
लहजे में कोई तबदीली हुई है न अमरीका की पालिसी अपनी
[illegible] हटी है. चार बड़ों की बात चीत

ایک دوسرے کےلئے کاٹ کپٹ، شک اور ڈر بھرا ہوا ہے، پھر بھی روس نے
جرمنی کے بارے میں چار بڑے راشٹروں یعنی امریکہ، برطانیہ، فرانس
اور روس کے بدیس منتریوں کی جس کانفرنس کا پرستاؤ کیا ہے
اُس سے دلوں کا ایک کونہ صاف ہوسکتا ہے۔ ابھی اس تجویز پر پتر
بیوہار ہو رہا ہے۔ پچھم کے 'تین بڑے' اس کانفرنس میں روس کے
ساتھ اپنے تمام جھگڑے پیش کرنا چاہتے ہیں جبکہ روس سب سے
پہلے جرمنی کے سوال پر بحث کرنا چاہتا ہے خاص کر پچھمی
راشٹروں کی اُس کاروائی پر جسکے ذریعے اُنھوں نے پچھمی جرمنی
کو ہتھیار بند کرنے کا فیصلہ کیا ہے۔ یہ فیصلہ روس کے ساتھ اُن
کے سمجھوتوں اور پچھلے اعلانوں کے خلاف ہے۔ مگر ان راشٹروں
کا کہنا ہے کہ روس نے بھی پوربی جرمنی میں پولیس کے نام
سے دو لاکھ آدمیوں کی ایک فوج بنا لی ہے جس سے پچھمی جرمنی
اور پچھمی یورپ کو خطرہ ہے۔

امریکہ کے شک بھرے دل میں ایک خیال یہ پیدا ہو رہا ہے
کہ روس نے چار بڑوں کی کانفرنس کا پرستاؤ جرمنی کو ہتھیار بند
بنانے کے فیصلے سے دب کر یا اُس کو روکنے کے لئے پیش کیا ہے۔ اور
اسی لئے امریکہ اُسے اور زیادہ دبانا چاہتا ہے اور جرمنی پر بات چیت
کے بدلے میں دوسرے سوال اٹھانا چاہتا ہے۔ اس بیچ میں وہ کوئی
خطرہ مول نہیں لینا چاہتا اور اِسلئے نہ تو ٹرومین اور انکے بدیس
منتری کے لہجے میں کوئی تبدیلی ہوئی ہے نہ امریکہ کی پالیسی
اپنی پہلے والی راہ سے ذرا بھی ہٹی ہے۔ چار بڑوں کی بات چیت

तक का सब से बड़ा बजट है, पार्लियामेन्ट की मंज़ूरी चाहते हुए प्रधान ट्रूमैन ने कहा है कि कोरिया पर कम्युनिस्ट हमले से हमको यह आगाही मिल गई है कि रूस के राजकर्ता अपने मन की मुराद पाने के ज़रिये दुनिया की शान्ति के भंग हो जाने की परवाह नहीं करेंगे. और उनको इस कारवाई से रोकने के लिये अमरीका अपना फ़ौजी ख़र्च बढ़ा रहा है और अपने साथियों को हमेशा से ज़्यादा मदद दे रहा है. लेकिन लड़ाई की इन तैयारियों से. चाहे वह बचाव के लिये क्यों न हों, शान्ति की रक्षा नहीं हो सकेगी. एक तरफ़ की तैयारियों से दूसरी तरफ़ तैयारियाँ शुरू या तेज़ हो जायँगी. और दोनों तरफ़ ख़ास कर पूँजीपति देसों में लड़ाई की तैयारियाँ देस के आर्थिक जीवन का एक बुनियादी हिस्सा बन जाती हैं. उनको रोकना सरकार के बस से बाहर और उसके अपने लिये ख़तरनाक बन जाता है. इन तैयारियों को जारी रखने के लिये नित नए बहाने ढूँढे जाते हैं और एक मंज़िल ऐसी आ जाती है जब लड़ाई छेड़ने के अलावा कोई दूसरा बहाना नहीं रह जाता. कभी ऐसा भी होता है कि तैयारियों से दोनों तरफ़ तनाव बढ़ता जाता है और एक मामूली सी घटना बड़े पैमाने पर मार धाड़ का कारन बन जाती है.

चार बड़े

अमरीका ने जो राह अपनाई है वह उसके अपने ख़याल में और उसके अपने फ़ायदे के लिये चाहे जितनी अच्छी हो मगर दुनिया की शान्ति को इस से फ़ायदे की जगह नुक़सान होगा. शान्ति की रक्षा लड़ाई की तैयारियों से नहीं बल्कि दिल की सफ़ाई और आपस के

تک کا سب سے بڑا بجٹ هے' پارلیامنٹ کی منظوری چاهتے هوئے پردهان ترومین نے کہا هے کہ کوریا پر کمیونسٹ حملے سے هم کو یہ آگاهی مل گئی هے کہ روس کے راج کرتا اپنے من کی مراد پانے کے لئے دنیا کی شانتی کے بهنگ هوجانے کی پرواہ نہیں کریں گے اور ان کو اِس کاروائی سے روکنے کے لئے امریکہ اپنا فوجی خرچ بڑھا رها هے اور اپنے ساتهیوں کو همیشہ سے زیادہ مدد دے رها هے . لیکن لڑائی کی اِن تیاریوں سے' چاهے وہ بچاؤ کے لئے کیوں نہ هوں' شانتی کی رکشا نہیں هوسکے گی . ایک طرف کی تیاریوں سے دوسری طرف تیاریاں شروع یا تیز هوجائیں گی . اور دونوں طرف خاص کر پونجی پتی دیسوں میں لڑائی کی تیاریاں دیس کے آرتهک جیون کا ایک بنیادی حصہ بن جاتی هیں . ان کو روکنا سرکار کے بس سے باهر اور اسکے اپنے لئے خطرناک بن جاتا هے . ان تیاریوں کو جاری رکھنے کے لئے نت نئے بہانے ڈهونڈهے جاتے هیں اور ایک منزل ایسی آجاتی هے جب لڑائی چهیڑنے کے علاوہ کوئی دوسرا بہانہ نہیں رہ جاتا . کبهی ایسا بهی هوتا هے کہ تیاریوں سے دونوں طرف تناؤ بڑهتا جاتا هے اور ایک معمولی سی گهٹنا بڑے پیمانے پر مار دهاڑ کا کارن بن جاتی هے .

چار بڑے

امریکہ نے جو راہ اپنائی هے وہ اسکے اپنے خیال میں اور اسکے اپنے فائدے کے لئے چاهے جتنی اچهی هو مگر دنیا کی شانتی کو اس سے فائدے کی جگہ نقصان هوگا . شانتی کی رکشا لڑائی کی تیاریوں سے نہیں بلکہ دل کی صفائی اور آپس کے سمجهوتوں سے

लड़ाई की तैयारी

लंदन कानफ़रेन्स में जैसे ठोस फ़ैसले दूर पूरब के बारे में हुए
हैं वैसे बीच पूरब और योरप के बारे में नहीं हुए या अगर हुए तो
उनका एलान नहीं किया गया है. मगर स्टालिन से बात चीत की जो
बात कही गई है अगर वह पूरी होगई तो शायद योरप की गुत्थी
सुलझाने की भी कोई तरकीब निकल आए. अभी तो वहाँ एटलान्टिक
फ़ौज की तैयारी हो रही है और इस फ़ौज के अमरीकी कमांडर जनरल
आइज़न होवर पच्छिमी योरप के देसों का दौरा कर रहे हैं. इस दौरे
में उन्हें बताया गया है कि एटलांटिक समझौते वाले सब मुल्क अपनी
अपनी फ़ौज बढ़ा रहे हैं. उनके अपने मुल्क यानी अमरीका में फ़ौज का
ख़र्च नए साल के बजट में चौगुना कर दिया गया है जिसका एक नतीजा
यह होगा कि अमरीका की फ़ौज, जिस में छै महीने पहले पन्द्रह लाख
से कम औरत मर्द थे और जिसकी गिनती अब पचीस लाख तक
पहुंच चुकी है, एक साल में क़रीब क़रीब पैंतीस लाख हो जायगी.
नेशनल गार्ड और रिज़र्व के बीस लाख औरत मर्द, जिनको ज़रूरत
के वक़्त काम पर बुलाया जा सकता है, इसके अलावा है. प्रधान
ट्रूमैन ने अपनी पार्लियामेन्ट में नए साल का बजट पेश करते हुए कहा
है कि साढ़े इकतालीस अरब डालर की उस रक़म के साथ साथ
जो अमरीका अपने बचाव पर ख़र्च कर रहा है सात करोड़ डालर
से कुछ ज़्यादा की रक़म उसके साथियों को दी जायगी जिस में से
... अमरीका से भेजा जायगा.

لڑائی کی تیاری

لندن کانفرنس میں جیسے ٹھوس فیصلے دور پورب کے بارے میں
ہوئے ہیں ویسے بیچ پورب اور یورپ کے بارے میں نہیں ہوئے یا اگر
ہوئے تو ان کا اعلان نہیں کیا گیا ہے ۔ مگر استالن سے بات چیت
کی جو بات کہی گئی ہے اگر وہ پوری ہو گئی تو شاید یورپ کی
گتھی سلجھانے کی بھی کوئی ترکیب نکل آئے. ابھی تو وہاں اٹلانٹک
فوج کی تیاری ہو رہی ہے اور اس فوج کے امریکی کمانڈر جنرل
آئزن ہوور پچھمی یورپ کے دیسوں کا دورہ کر رہے ہیں ۔ اس دورے
میں انہیں بتایا گیا ہے کہ اٹلانٹک سمجھوتے والے سب ملک اپنی
اپنی فوج بڑھا رہے ہیں ۔ ان کے اپنے ملک یعنی امریکہ میں فوج
کا خرچ نئے سال کے بجٹ میں چوگنا کر دیا گیا ہے جسکا ایک
نتیجہ یہ ہوگا کہ امریکہ کی فوج، جس میں چھ مہینے پہلے پندرہ
لاکھ سے کم عورت مرد تھے اور جسکی گنتی اب پچیس لاکھ تک
پہنچ چکی ہے، ایک سال میں قریب قریب پینتیس لاکھ ہو جائے
گی ۔ نیشنل گارڈ اور ریزرو کے بیس لاکھ عورت مرد، جنکو ضرورت
کے وقت کام پر بلایا جا سکتا ہے، اس کے علاوہ ہے ۔ پردھان ٹرومین
نے اپنی پارلیامنٹ میں نئے سال کا بجٹ پیش کرتے ہوئے کہا ہے
کہ ساڑھے اکتالیس ارب ڈالر کی اس رقم کے ساتھ ساتھ جو امریکہ
اپنے بچاؤ پر خرچ کر رہا ہے سات کروڑ ڈالر سے کچھ زیادہ کی رقم اس
کے ساتھیوں کو دی جائے گی جس میں سے آدھے کا فوجی سامان
امریکہ سے بھیجا جائے گا ۔

ٹرومین کا ڈر

का चीन ने अभी तक कोई जवाब नहीं दिया है. अमरीका में कुछ लोग उनका विरोध कर रहे हैं. उनका कहना है कि ऐसी शरतों पर समझौता करने से यह अच्छा है कि अमरीका अपनी फ़ौजों को ख़ुद ही कोरिया से वापस बुला ले. यू. एन. ओ. की राजकाजी कमेटी में फ़िलिपाइन के प्रतिनिधि ने कहा है कि यह तजवीज़ें वैसी ही हैं जैसी कि बरतानिया ने म्यूनिच वाले समझौते में हिटलर को पेश की थीं. मतलब यह है कि जिस तरह म्यूनिच के समझौते से हिटलर का मुँह बन्द होने की जगह उसकी भूक बढ़ गई थी उसी तरह अगर इन तजवीज़ों की बुनियाद पर चीन से कोई समझौता होगया तो चीन चुप बैठने की जगह किसी नए मोरचे पर ठंडी या गरम लड़ाई शुरू कर देगा. कुछ ऐसा ही ख़याल उन अरब देसों का भी है जिन्होंने लड़ाई बन्दी कमेटी की पहली तजवीज़ों का समर्थन किया था. इन सब बातों को देखकर एक तरह की निराशा होती है मगर दूसरी तरफ़ कुछ ऐसी बातें भी हैं जिन से अमन की सम्भावना बढ़ती है और वह बातें यह हैं कि यू. एन. ओ. की राजकाजी कमेटी ने लड़ाई बन्दी फ़ारमूला मंज़ूर कर लिया है. कामनवेल्थ के नौ देसों ने इस फ़ारमूला का समर्थन किया है. और दूर पूरब में अगर यह देस किसी बात पर एक राय हो जायँ तो अमरीका उस राय के ख़िलाफ़ जाने की हिम्मत नहीं कर सकता. इसीलिये इस वक़्त आशा का पल्ला निराशा के पल्ले से भारी मालूम होता है और चीन के प्रधान मंत्री की यह आशा पूरी होती दिखाई देती है कि जवाहरलाल नेहरू के लन्दन जाने से पहले एशिया को और फिर सारी दुनिया को फ़ायदा होगा.

کا چین نے ابھی تک کوئی جواب نہیں دیا ہے ۔ امریکہ میں کچھ لوگ ان کا ورودھ کر رہے ہیں ۔ ان کا کہنا ہے کہ ایسی شرطوں پر سمجھوتہ کرنے سے یہ اچھا ہے کہ امریکہ اپنی فوجوں کو خود ہی کوریا سے واپس بلا لے ۔ یو ۔ این ۔ او ۔ کی راج کاجی کمیٹی میں فلپائن کے پرتی ندھی نے کہا ہے کہ یہ تجویزیں ویسی ہی ہیں جیسی کہ برطانیہ نے میونچ والے سمجھوتے میں ہٹلر کو پیش کی تھیں ۔ مطلب یہ ہے کہ جسطرح میونچ کے سمجھوتے سے ہٹلر کا منہ بند ہونے کی جگہ اُس کی بھوک بڑھ گئی تھی اسی طرح اگر اِن تجویزوں کی بنیاد پر چین سے کوئی سمجھوتہ ہوگیا تو چین چپ بیٹھنے کی جگہ کسی نئے مورچے پر ٹھنڈی یا گرم لڑائی شروع کر دے گا ۔ کچھ ایسا ہی خیال ان عرب دیسوں کا بھی ہے جنھوں نے لڑائی بندی کمیٹی کی پہلی تجویزوں کا سمرتھن کیا تھا ۔ ان سب باتوں کو دیکھکر ایک طرح کی نراشا ہوتی ہے مگر دوسری طرف کچھ ایسی باتیں بھی ہیں جن سے امن کی سمبھاونا بڑھتی ہے ۔ اور وہ باتیں یہ ہیں کہ یو ۔ این ۔ او ۔ کی راج کاجی کمیٹی نے لڑائی بندی فارمولا منظور کر لیا ہے ۔ کامن ویلتھ کے نو دیسوں نے اس فارمولا کا سمرتھن کیا ہے ۔ اور دور پورب میں اگر یہ دیس کسی بات پر ایک رائے ہوجائیں تو امریکہ اس رائے کے خلاف جانے کی ہمت نہیں کرسکتا ۔ اسی لئے اِس وقت آشا کا پلہ نراشا کے پلے سے بھاری معلوم ہوتا ہے اور چین کے پردھان منتری کی یہ آشا پوری ہوتی دکھائی دیتی ہے کہ جواہرلال نہرو کے لندن جانے سے پہلے ایشیا کو اور پھر ساری دنیا کو فائدہ ہوگا ۔

रख दी गई है. इस बात को रूस चाहे एक चैलेंज समझ ले लेकिन अमरीका इस से ख़ुश नहीं होगा. असल में लन्दन का एलान उस के लिये भी एक तरह का चैलेंज है. अगर चैलेंज देने वाला कोई एक मुल्क जैसे अकेला बरतानिया होता तो अमरीका उसे चुप करा लेता मगर अब आठ नौ देसों का मुँह बन्द करना उसके लिये मुशकिल है.

यही देखकर यू. एन. ओ. की राजकाजी कमेटी में उसके प्रतिनिधि ने लड़ाई बन्दी कमेटी का दूसरा फ़ारमूला मंज़ूर कर लिया है. हालाँकि इस फ़ारमूला में साफ़ तौर से कह दिया गया है कि लड़ाई बन्द होते ही— चाहे वह समझौते से बन्द की जाय और चाहे आप बन्द हो जाय —यू. एन. ओ. की जनरल असेम्बली एक कमेटी बना देगी जिस में बरतानिया, अमरीका, रूस और नई चीनी सरकार के नुमाइन्दे शामिल होंगे और जो अन्तरराष्ट्री समझौतों और यू. एन. ओ. के चार्टर की रोशनी में फ़ारमूसा और चीन की नुमाइन्दगी और दूर पूरब के दूसरे मसलों को तय कराने की कोशिश करेगी. इस तरह के दो समझौते, जैसा कि हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि बेंगल नरसिंह राव ने लड़ाई बन्दी फ़ारमूला के बारे में राय देते हुए कहा है, लड़ाई के ज़माने में क़ाहरा और पोटसडम में हुए थे उनकी रू से फ़ारमूसा को, जिसपर पहले जापान ने क़ब्ज़ा कर रखा था, नए चीन के राज में शामिल कर देना चाहिये. और यू. एन. ओ. के चार्टर की रू से चीन की नई सरकार को इस बिरादरी में एक बराबर वाले मेम्बर की हैसियत से ले लेना चाहिये.

رکھدی گئی ہے. اس بات کو روس چاہے ایک چیلنج سمجھ لے لیکن امریکہ اس سے خوش نہیں ہوگا. اصل میں لندن کا اعلان اس کے لئے بھی ایک طرح کا چیلنج ہے. اگر چیلنج دینے والا کوئی ایک ملک جیسے اکیلا برطانیہ ہوتا تو امریکہ اُسے چپ کرا دیتا مگر اب آٹھ نو دیسوں کا منہ بند کرنا اس کے لئے مشکل ہے.

یہی دیکھ کر یو. این. او. کی راج کاجی کمیٹی میں اس کے پرتی ندھی نے لڑائی بندی کمیٹی کا دوسرا فارمولا منظور کر لیا ہے. حالانکہ اُسی فارمولا میں صاف طور سے کہدیا گیا ہے کہ لڑائی بند ہوتے ہی — چاہے وہ سمجھوتے سے بند کی جائے اور چاہے آپ بند ہو جائے — یو. این. او. کی جنرل اسمبلی ایک کمیٹی بنا دے گی جس میں برطانیہ، امریکہ، روس اور نئی چینی سرکار کے نمائندے شامل ہوں گے اور جو انتر راشٹری سمجھوتوں اور یو. این. او. کے چارٹر کی روشنی میں فارموسا اور چین کی نمائندگی اور دور پورب کے دوسرے مسئلوں کو طے کرانے کی کوشش کرے گی. اس طرح کے دو سمجھوتے، جیسا کہ ہندستان کے پرتی ندھی بنگل نرسنگھ راؤ نے لڑائی بندی فارمولا کے بارے میں رائے دیتے ہوئے کہا ہے، لڑائی کے زمانے میں قاہرہ اور پوٹسڈم میں ہوئے تھے ان کی رو سے فارموسا کو، جس پر پہلے جاپان نے قبضہ کر رکھا تھا، نئے چین کے راج میں شامل کر دینا چاہئے. اور یو. این. او. کے چارٹر کی رو سے چین کی نئی سرکار کو اس برادری میں ایک برابر والے ممبر کی حیثیت سے لے لینا چاہئے.

एलान से पहले कनाडा, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैन्ड इस बात पर ज़ोर दे रहे थे कि कामनवेल्थ कानफ़रेन्स में ऐसी कोई बात न की जाए जिससे अमरीका की पालिसी से टक्कर हो जाए. अब न मालूम उन्होंने अपनी राय बदल दी है या अमरीका अपना रुख़ बदलने को तैयार हो गया है. वैसे उसे ख़ुश करने के लिये कामनवेल्थ कानफ़रेन्स के एलान में अमरीका के साथ काम करने की बात कही गई है और उसने यू. एन. ओ. को जो मदद दी है उसकी तारीफ़ की गई है और पालिसी में उसके साथ जहाँ तक हो सके ताल मेल रखने का वायदा किया गया है. जरमनी और जापान के साथ सुलहनामा करने पर ज़ोर दिया गया है जिसके लिये आजकल अमरीका भी जल्दी कर रहा है और कहा गया है कि जब तक हमले का ख़तरा बाक़ी है तब तक हम अपने बचाव का बन्दोबस्त करने के लिये पूरी तेज़ी और लगन के साथ काम करते रहेंगे. इस ख़तरे का चरचा सब से ज़्यादा अमरीका में सुनाई देता है और लन्दन में उसकी रोक थाम के लिये जो कुछ कहा गया है उसे वाशिंगटन में बहुत पसन्द किया जायगा.

अमरीका को चैलेंज

वाशिंगटन में ख़तरे की चीज़ कम्यूनिज़्म को समझा जाता है और बरतानिया, आस्ट्रेलिया, कनाडा और न्यूज़ीलैन्ड भी इसी ढंग से सोचते हैं जब कि हिन्दुस्तान कम्यूनिज़्म को ग़ुलामी और ग़रीबी की एक पैदावार समझता है. वह अपने बचाव की तरफ़ से ग़ाफ़िल नहीं है मगर अपने फ़ौजी बजट में जो २५ फ़ीसदी की कमी की जा रही है उस से ख़याल होता है कि कामनवेल्थ के जिस एलान पर नेहरू ने दस्तख़त किये हैं उसमें बचाव की बात सिर्फ़ रस्मी तौर पर

اعلان سے پہلے کناڈا، آسٹریلیا اور نیوزی لینڈ اِس بات پر زور دے رہے تھے کہ کامن ویلتھ کانفرنس میں ایسی کوئی بات نہ کی جائے جس سے امریکہ کی پالیسی سے ٹکر ہوجائے . اب نہ معلوم اُنہوں نے اپنی رائے بدل دی ہے یا امریکہ اپنا رخ بدلنے کو تیار ہوگیا ہے . ویسے اُسے خوش کرنے کے لئے کامن ویلتھ کانفرنس کے اعلان میں امریکہ کے ساتھ کام کرنے کی بات کہی گئی ہے اور اس نے یو . این . او . کو جو مدد دی ہے اسکی تعریف کی گئی ہے اور پالیسی میں اُس کے ساتھ جہاں تک ہو سکے تال میل رکھنے کا وعدہ کیا گیا ہے . جرمنی اور جاپان کے ساتھ صلحنامہ کرنے پر زور دیا گیا ہے جس کے لئے آج کل امریکہ بھی جلدی کر رہا ہے اور کہا گیا ہے کہ جب تک حملے کا خطرہ باقی ہے تب تک ہم اپنے بچاؤ کا بندوبست کرنے کے لئے پوری تیزی اور لگن کے ساتھ کام کرتے رہیں گے . اس خطرے کا چرچا سب سے زیادہ امریکہ میں سنائی دیتا ہے اور لندن میں اس کی روک تھام کے لئے جو کچھ کہا گیا ہے اسے واشنگٹن میں بہت پسند کیا جائیگا .

امریکہ کو چیلنج

واشنگٹن میں خطرے کی چیز کمیونزم کو سمجھا جاتا ہے اور برطانیہ، آسٹریلیا، کناڈا اور نیوزیلینڈ بھی اسی ڈھنگ سے سوچتے ہیں جبکہ ھندستان کمیونزم کو غلامی اور غریبی کی ایک پیداوار سمجھتا ہے. وہ اپنے بچاؤ کی طرف سے غافل نہیں ہے مگر اپنے فوجی بجٹ میں جو ۲۵ فیصدی کی کمی کی جا رہی ہے اُس سے خیال ہوتا ہے کہ کامن ویلتھ کے جس اعلان پر نہرو نے دستخط کئے ہیں اس میں بچاؤ کی بات صرف رسمی طور پر

प्रधान मंत्रियों की कानफ़रेन्स में वह बात मनवाली जिसको मानने से
वह पहले इनकार कर चुके थे.

कामनवेल्थ में भेदभाव

असल में यू. एन. ओ. की राजकाजी कमेटी में लड़ाई बन्दी कमेटी
ने जो फ़ारमूला पेश किया है उसकी दाग़बेल लन्दन की कामन-
वेल्थ कानफ़रेन्स ही में पड़ी थी. और अमरीका ने इस फ़ारमूला को
जो नामंज़ूर नहीं किया तो इसका एक बड़ा कारन यह है कि कामन-
वेल्थ के सब देसों ने इस फ़ारमूला की ख़ास ख़ास बातें मंज़ूर कर
ली थीं. कहा जाता है कि मंज़ूरी से पहले कानफ़रेन्स में एक तरफ़
हिन्दुस्तान और बरतानिया और दूसरी तरफ़ दूसरे देसों के बीच बहुत
सख़्त भेदभाव पैदा हो गया था. इसके लच्छन पहले ही से ज़ाहिर
थे इसलिये कि हिन्दुस्तान चीन की नई सरकार को मानने पर ज़ोर
दे रहा था और बरतानिया भी इस सरकार को मान लेने के बाद
उसको बराबर वाले की हैसियत देने और उसके साथ बातचीत करने
से इनकार नहीं कर सकता था. लेकिन आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैन्ड और
दक्खिनी अफ़रीक़ा ने इस सरकार को नहीं माना है. वह उसकी
कम्यूनिस्ट रंगत और अपनी सरकारों के कनज़रवेटिव रूप की वजह
से उसको नापसन्द करते हैं, उसके ख़िलाफ़ एक पैसफ़िक पैक्ट करना
चाहते हैं और उस को बराबर वाले की हैसियत देने के लिये तैयार
नहीं हुए थे. अब भी वह इस सरकार को मानने के लिये तैयार नहीं
हुए हैं लेकिन नेहरू और एटली के असर से कामनवेल्थ के देसों
ने यह एलान कर दिया है कि वह रूस के जोज़फ़ स्टालिन और

پردھان منتریوں کی کانفرنس میں وہ بات منوالی جس کو ماننے
سے وہ پہلے انکار کرچکے تھے ۔

کامن ویلتھ میں بھید بھاؤ

اصل میں یو ۔ این ۔ او ۔ کی راج کاجی کمیٹی میں لڑائی بندی
کمیٹی نے جو فارمولا پیش کیا ہے اسکی داغ بیل لندن کی
کامن ویلتھ کانفرنس ہی میں پڑی تھی ۔ اور امریکہ نے اس فارمولا
کو جو نا منظور نہیں کیا تو اس کا ایک بڑا کارن یہ ہے کہ کامن ویلتھ
کے سب دیسوں نے اس فارمولا کی خاص خاص باتیں منظور کرلی
تھیں ۔ کہا جاتا ہے کہ منظوری سے پہلے کانفرنس میں ایک طرف
ہندستان اور برطانیہ اور دوسری طرف دوسرے دیسوں کے بیچ بہت
سخت بھید بھاؤ پیدا ہوگیا تھا ۔ اس کے لچھن پہلے ہی سے ظاہر
تھے اس لئے کہ ہندستان چین کی نئی سرکار کو ماننے پر
زور دے رہا تھا ۔ اور برطانیہ بھی اس سرکار کو مان لینے کے بعد
اس کو برابر والے کی حیثیت دینے اور اس کے ساتھ بات چیت
کرنے سے انکار نہیں کر سکتا تھا ۔ لیکن آسٹریلیا، نیوزی لینڈ اور
دکھنی افریقہ نے اس سرکار کو نہیں مانا ہے ۔ وہ اس کی کمیونسٹ
رنگت اور اپنی سرکاروں کے کنزرویٹیو روپ کی وجہ سے اسکو ناپسند
کرتے ہیں، اس کے خلاف ایک پیسفک پیکٹ کرنا چاہتے ہیں اور
اس کو برابر والے کی حیثیت دینے کے لئے تیار نہیں ہوئے تھے ۔
اب بھی وہ اس سرکار کو ماننے کے لئے تیار نہیں ہوئے ہیں لیکن
نہرو اور ایٹلی کے اثر سے کامن ویلتھ کے دیسوں نے یہ اعلان کر دیا ہے
کہ وہ روس کے جوزف اسٹالن اور چین کے ماؤزے تنگ سے سیدھی
سیدھی بات چیت کو پسند کرینگے ۔

کی منہ بھرائی سمجھتا تھا اور ایسا ہی سخت رویہ اُس کا فارموسا کے بارے میں بھی تھا جہاں چانگ کائی شیک نے چینی سرکار کا ڈھونگ رچا رکھا ہے اور امریکہ کے جہاز پہرہ دے رہے ہیں لڑائی بندی کمیٹی نے اپنے پہلے فارمولا میں ان دونوں باتوں کی کوئی چرچا نہیں کی تھی اور چین نے اس فارمولا کو ایک جال کہا تھا . وہ سمجھتا تھا کہ اس فارمولا کے ذریعے امریکہ کوریا میں اُس کی جیتی ہوئی بازی کو برابر پر اُٹھوا دینا چاہتا ہے جس میں وہ اپنے پٹے ہوئے مہروں کی مرمت کر کے یا نئے مہرے لاکر ایک نئی بازی شروع کر سکے . ایسی حالت میں چین کی جگہ جو دیس بھی ہوتا وہ لڑائی بندی کی بات نہ مانتا .

ہندستان کی چھاپ

دوسرے فارمولا میں جو سجھاؤ رکھے گئے ہیں ان پر ہندستان کی بدیسی پالیسی کی چھاپ موجود ہے . اس لئے کہ پنڈت جواہرلال نہرو شروع ہی سے یہ کہہ رہے تھے کہ چین کی نئی سرکار کو چاہے کوئی اچھا نہ سمجھے لیکن اس کے ہونے سے کوئی بھی انکار نہیں کر سکتا اور نہ اس کے بغیر دور پورب کے مسئلے طے ہو سکتے ہیں . اگر اس بات کو شروع میں مان لیا جاتا تو شاید کوریا کا جھگڑا پہلے ہی طے ہو گیا ہوتا . مگر یو . این . او . کی فوجوں کو جیتتا دیکھ کر نہ صرف امریکہ نے بلکہ برطانیہ نے بھی پنڈت نہرو کی یہ بات نہیں مانی . اور جب ان کی فوجیں پیچھے ہٹنے لگیں تو امریکہ ایٹم بم کی دھمکی پر اتر آیا جس نے چین سے زیادہ برطانیہ کو ڈرا دیا . یہی ڈر پردھان منتری ایٹلی کو نومبر میں واشنگٹن لے گیا تھا اور اسی نے اُن سے کامن ویلتھ کے

की मुँह भराई समझता था और ऐसा ही सख़्त रवैया उसका फ़ारमूसा के बारे में भी था जहाँ चाँगकाई शेक ने चीनी सरकार का ढोंग रचा रक्खा है और अमरीका के जहाज़ पहरा दे रहे हैं. लड़ाई बन्दी कमेटी ने अपने पहले फ़ारमूला में इन दोनों बातों की कोई चर्चा नहीं की थी और चीन ने इस फ़ारमूला को एक जाल कहा था. वह समझता था कि इस फ़ारमूला के ज़रिये अमरीका कोरिया में उसकी जीती हुई बाज़ी को बराबर पर उठवा देना चाहता है जिसमें वह अपने पिटे हुए मुहरों की मरम्मत करके या नए मुहरे लाकर एक नई बाज़ी शुरू कर सके. ऐसी हालत में चीन की जगह जो देस भी होता वह लड़ाई बन्दी की बात न मानता.

हिन्दुस्तान की छाप

दूसरे फ़ारमूला में जो सुझाव रक्खे गए हैं उन पर हिन्दुस्तान की विदेसी पालिसी की छाप मौजूद है. इसलिये कि पंडित जवाहर लाल नेहरू शुरू ही से यह कह रहे थे कि चीन की नई सरकार को चाहे कोई अच्छा न समझे लेकिन उसके होने से कोई भी इन्कार नहीं कर सकता और न उसके बग़ैर दूर पूरब के मसले तय हो सकते हैं. अगर इस बात को शुरू में मान लिया जाता तो शायद कोरिया का झगड़ा पहले ही तय हो गया होता. मगर यू. एन. ओ. की फ़ौजों को जीतता देखकर न सिर्फ़ अमरीका ने बल्कि बरतानिया ने भी पंडित नेहरू की यह बात नहीं मानी. और जब उनकी फ़ौजें पीछे हटने लगीं तो अमरीका ऐटम बम की धमकी पर उतर आया जिसने चीन से ज़्यादा बरतानिया को डरा दिया. यही डर प्रधान मंत्री एटली को नवम्बर में वाशिंगटन ले गया था और इसी ने उनसे कामनवेल्थ के

दुनिया का हाल

(भाई इशरत अली सिद्दीक़ी)

लड़ाई बन्दी फ़ारमूला

यह मज़मून लिखते वक़्त तक कोरिया की लड़ाई जारी है लेकिन यू. एन. ओ. की लड़ाई बन्दी कमेटी ने इसे रोकने के लिये एक नया फ़ारमूला पेश कर दिया है जो उसके पहले फ़ारमूला से ज़्यादा बड़ा और अच्छा है. इस दूसरे फ़ारमूला को चीन और रूस ने अगर अभी तक मंज़ूर नहीं किया तो नामंज़ूर भी नहीं किया है. बल्कि यू. एन. ओ. में रूस के प्रतिनिधि ने उसके उसूल का समर्थन कर दिया है और उस की वजह यह है कि इस फ़ारमूला में कोरिया के मामले पर रूस और चीन की नई सरकार से बात चीत करने का सुझाव रक्खा गया है और कोरिया के अलावा दूर पूरब के दूसरे मसलों पर सोच विचार करने की गुँजाइश रक्खी गई है.

अभी तक पच्छिमी राष्ट्रों ने यह बात नहीं मानी थी. अमरीका

دنیا کا حال

(بھائی عشرت علی صدیقی)

لڑائی بندی فارمولا

یہ مضمون لکھتے وقت تک کوریا کی لڑائی جاری ہے لیکن یو . این . او . کی لڑائی بندی کمیٹی نے اسے روکنے کے لئے ایک نیا فارمولا پیش کر دیا ہے جو اس کے پہلے فارمولا سے زیادہ بڑا اور اچھا ہے . اس دوسرے فارمولا کو چین اور روس نے اگر ابھی تک منظور نہیں کیا تو نامنظور بھی نہیں کیا ہے . بلکہ یو . این . او . میں روس کے پرتی ندھی نے اُس کے اُصول کا سمرتھن کر دیا ہے اور اُس کی وجہ یہ ہے کہ اس فارمولا میں کوریا کے معاملے پر روس اور چین کی نئی سرکار سے بات چیت کرنے کا سجھاؤ رکھا گیا ہے اور کوریا کے علاوہ دور پورب کے دوسرے مسئلوں پر سوچ وچار کرنے کی گنجائش رکھی گئی ہے .

ابھی تک پچھمی راشٹروں نے یہ بات نہیں مانی تھی . امریکہ اُنکا اگوا تھا اور وہ چین

की. धर्म निभाने में हद कर दी. यह है पक्का वैश्नव.इसी के माथे पर टीका सफल है. अरे, रोज़ पूजा भी तो करता है.

एक जैन—है तो वैश्नव, पर काम तो उसने जैनों जैसा किया.

दूसरा—जो भला काम करे वही जैन, वही वैश्नव.

व्योपारी अपने मन में क्या कह रहा था यह कोई न सुन पाया. वह कह रहा था—

"तुम सब मूरख हो. क्या देश भक्ति, क्या धर्म भावना और क्या सभ्यता सब स्वार्थ की पैदा की हुई हैं और उसी की अनोखी देन हैं."

کی . دھرم نبھانے میں حد کر دی . یہ ہے پکا ویشنو . اسی کے ماتھے پر ٹیکہ سپھل ہے . ارے' روز پوجا بھی تو کرتا ہے .

ایک جین — ہے تو ویشنو پر کام تو اس نے جینوں جیسا کیا .

دوسرا — جو بھلا کام کرے وہی جین' وہی ویشنو .

بیوپاری اپنے من میں کیا کہہ رہا تھا یہ کوئی نہ سن پایا . وہ کہہ رہا تھا —

"تم سب مورکھ ہو . کیا دیش بھکتی' کیا دھرم بھاونا اور کیا سبھیتا سب سوارتھ کی پیدا کی ہوئی ہیں . اور اسی کی انوکھی دین ہیں ."

"क्या लोग समझते हैं कि वह यह कहने से छोड़ दिये जायंगे कि 'हम ईमान लाए हैं' और उनके कामों की जांच पड़ताल नहीं की जायगी?.........क्या जो लोग बुरे काम करते हैं वह समझते हैं वह खुदा से बच जायंगे? वह गलत सोचते हैं!........जो लोग बात मानेंगे और नेक काम करेंगे, सचमुच हम उन्हीं को नेक लोगों में शामिल करेंगे." (क़ुरान. २६-२, ४, ६)

"सचमुच जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों को नहीं मानते, और जो अल्लाह और उसके रसूलों में फ़र्क़ करना चाहते हैं, और कहते हैं कि हम कुछ रसूलों को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते, और इनके बीच से अपना एक अलग ही रास्ता बना लेना चाहते हैं, सचमुच यह लोग सच्चे 'काफ़िर' (नाशुकरे, काफ़रूने हक़क़) हैं और अल्लाह ने इन काफ़िरों के लिये ज़िल्लत की सज़ा तय कर रखी है." (क़ुरान, ४-१५०, १५१)

"کیا لوگ سمجھتے ہیں کہ وہ یہ کہنے سے چھوڑ دئے جائینگے کہ 'ہم ایمان لائے ہیں' اور ان کے کاموں کی جانچ پڑتال نہیں کی جائیگی ؟........ کیا جو لوگ برے کام کرتے ہیں وہ سمجھتے ہیں وہ خدا سے بچ جائینگے ؟ وہ غلط سوچتے ہیں !.........جو لوگ بات مانینگے اور نیک کام کرینگے' سچ مچ ہم انہیں کو نیک لوگوں میں شامل کرینگے ." (قرآن ' ۲۹-۲ ' ۴ ' ۹)

"سچ مچ جو لوگ اللہ اور اس کے رسولوں کو نہیں مانتے اور جو اللہ اور اسکے رسولوں میں فرق کرنا چاہتے ہیں' اور کہتے ہیں کہ ہم کچھ رسولوں کو مانتے ہیں اور کچھ کو نہیں مانتے اور ان کے بیچ سے اپنا ایک الگ ہی راستہ بنا لینا چاہتے ہیں' سچ مچ یہ لوگ سچے 'کافر' (ناشکرے' کافرونے حقہ) ہیں اور اللہ نے ان کافروں کے لئے ذلت کی سزا طے کر رکھی ہے ." (قرآن' ۴-۱۵۰' ۱۵۱)

चलेगा और फिर पसा, मकान, कपड़ा, खाना कहाँ से आयगा? बच्चे, औरत और तुम कहां जाओगे?''

अब व्योपारी चुप था. उसके दिमाग़ में हल चल पैदा हो गई थी और अब उसके सामने घूमने लगा कल का डरावना नज़्ज़ारा जब न गाहक होंगे और न बिकरी होगी. अब वह नीची गरदन किये कुछ अपने से और कुछ देश प्रेमी से यूं गुनगुनाने लगा—

"गाहकों पर असर हो गया तो नीरा बदनाम हो जायगी...... और लोग पीना बन्द कर देंगे......और फिर बच्चे. औरत किसके वहां जायगे......''

परेशानी अन्दर ही अन्दर उसके मस्तक में घुमड़ने लगी. और थोड़ी ही देर में उसके मुँह से एक चीख़ निकली और हवा में मिल गई.

× × × ×

सवेरा हो चुका था. दुकान पर गाहकों की भीड़ आती थी और लौट जाती थी. दुकानदार बैठा था. सामने फूटा मटका था. नीरा बिखरी हुई थी और उसी नीरा में मरी छिपकली तैर रही थी.

लोगों में बातें चल पड़ीं.

एक—कितना देश भक्त है, छिपकली मर गई तो लोगों की ख़ातिर अपना चालीस पचास रुपये का नुक़सान कर लिया.

दूसरा—नागर हो तो ऐसा हो. लोगों की ख़ातिर नुकसान उठाते ज़रा नहीं हिचका.

एक पंडित—मालूम होता है रोज़ गीता का पाठ करता है. तभी तो इतना दिल वाला है कि लोगों की ख़ातिर अपनी ज़रा परवाह न

کیسے چلیگی اور پھر پیسہ، مکان، کپڑا، کھانا کہاں سے آئیگا؟ بچے، عورت اور تم کہاں جاؤ گے؟"

اب بیوپاری چپ تھا. اُس کے دماغ میں ہلچل پیدا ہوگئی تھی اور اب اُس کے سامنے گھومنے لگا کل کا ڈراؤنا نظارہ جب نہ گاھک ھونگے اور نہ بکری ھوگی. اب وہ نیچی گردن کئے کچھ اپنے سے اور کچھ دیش پریمی سے یوں گنگنانے لگا —

"گاھکوں پر اثر ھو گیا تو نیرا بدنام ھو جائیگی.........اور لوگ پینا بند کردینگے.........اور پھر بچے، عورت کس کے یہاں جائینگے........."

پریشانی اندر ھی اندر اُس کے مستک میں گھمڑنے لگی. اور تھوڑی ھی دیر میں اُس کے منہ سے ایک چیخ نکلی اور ھوا میں مل گئی.

× × × ×

سبیرا ھو چکا تھا. دوکان پر گاھکوں کی بھیڑ آتی تھی اور لوٹ جاتی تھی. دوکاندار بیٹھا تھا. سامنے پھوٹا مٹکا تھا. نیرا بکھری ھوئی تھی اور اُسی نیرا میں مری چھپکلی تیر رھی تھی.

لوگوں میں باتیں چل پڑیں.

ایک — کتنا دیش بھکت ھے، چھپکلی مر گئی تو لوگوں کی خاطر اپنا چالیس پچاس روپئے کا نقصان کر لیا.

دوسرا — ناگر ھو تو ایسا ھو. لوگوں کی خاطر نقصان اُٹھاتے ذرا نہیں ھچکا.

ایک پنڈت — معلوم ھوتا ھے روز گیتا کا پاٹھ کرتا ھے. تبھی تو اتنا دل والا ھے کہ لوگوں کی خاطر اپنی ذرا پرواہ نہ

यह रोज़गार ही बन्द कर देना पड़ता क्योंकि नीरा के मटके में तो कीड़े रोज़ ही मरते हैं"

ब्योपारी अब झुँझला उठा था. फिर भी देश प्रेमी घबराया नहीं. और बड़े प्यार से बोला—"वैसे तो तुम धर्म की बड़ी दुहाई दिया करते हो. बात बात में धर्म का नाम लेते रहते हो. तिलक लगाते हो, कथा सुनते हो, कथा करवाते हो, क्या अब उन में से किसी की याद नहीं आती? सत्य नारायन की कथा क्या सिर्फ़ पूनम को ही याद आती है? बस अपनी स्वार्थ ही सब कुछ है? औरों का उपकार कुछ भी नहीं? क्या तुम्हारे ब्योपार का यही सिद्धान्त है?"

"हाँ यही है, यही है. सारे ब्योपार इसी तरह चलते हैं. लोगों की भलाई का जिसे ज़्यादा शौक़ हो वह फिर ब्योपार न करे. सतजुग में भी उपकार का ब्योपार कभी न होता होगा. मैं और ब्योपारियों से कोई अलग ब्योपारी हूँ? सभी तो ऐसा करते हैं."

यह बात कहकर ब्योपारी ने यह समझा कि अब इसका जवाब देश प्रेमी के पास कुछ भी न रहा होगा. और अब पौ फट चुकी थी. सुबह की लाली सफ़ेदी का रूप लेती जा रही थी. ब्योपारी एक के बाद दूसरा मटका छानता जारहा था और धीरे धीरे मरी छिपकली से सम्बन्ध दूर होता जा रहा था. पर देश प्रेमी के मन को चैन कहाँ. और वह बोल उठा—

"अगर जो गाहकों पर इस नीरा का कोई बुरा असर हुआ और फिर नीरा बदनाम हुई तो तुम ही सोचो बिकरी का क्या हाल

یہ روزگار ہی بند کر دینا پڑتا کیونکہ نیرا کے مٹکے میں تو کیڑے روز ہی مرتے ہیں."

بیوپاری اب جھنجھلا اُٹھا تھا. پھر بھی دیس پریمی گھبرایا نہیں. اور بڑے پیار سے بولا—"ویسے تو تم دھرم کی بڑی دہائی دیا کرتے ہو. بات بات میں دھرم کا نام لیتے رہتے ہو' تلک لگاتے ہو' کتھا سنتے ہو' کتھا کراتے ہو. کیا اب اُن میں سے کسی کی یاد نہیں آتی؟ ستیہ نرائن کی کتھا کیا صرف پونم کو ہی یاد آتی ہے؟ بس اپنا سوارتھ ہی سب کچھ ہے؟ اوروں کا اُپکار کچھ بھی نہیں؟ کیا تمہارے بیوپار کا یہی سدھانت ہے؟"

"ہاں یہی ہے' یہی ہے. سارے بیوپار اسطرح چلتے ہیں. لوگوں کی بھلائی کا جسے زیادہ شوق ہو وہ پھر بیوپار نہ کرے ست جگ میں بھی اُپکار کا بیوپار کبھی نہ ہوتا ہوگا. میں اور بیوپاریوں سے کوئی الگ بیوپاری ہوں؟ سبھی تو ایسا کرتے ہیں."

یہ بات کہکر بیوپاری نے یہ سمجھا کہ اب اس کا جواب دیش پریمی کے پاس کچھ بھی نہ رہا ہوگا. اور اب دوپہٹ چکی تھی. صبح کی لالی سفیدی کا روپ لیتی جارہی تھی. بیوپاری ایک کے بعد دوسرا مٹکا چھانتا جا رہا تھا اور دھیرے دھیرے مری چھپکلی سے سمبندھ دور ہوتا جارہا تھا پر دیش پریمی کے من کو چین کہاں. اور وہ بول اُٹھا—

"اگر جو گاہکوں پر اس نیرا کا کوئی برا اثر ہوا اور پھر نیرا بدنام ہوئی تو تم ہی سوچو بکری کا کیا حال ہوگا؟

मटके में डालूंगा. एक बूंद नहीं पीने दूंगा."

व्योपारी की आवाज़ अब सख्त से सख्त होती जा रही थी. पर देश प्रेमी ने फिर हिम्मत की और बोला—

'लेकिन तुम्हारे अपने रिश्तेदार भी तो यह नीरा पीने आ सकते हैं. उनका ही खयाल करके इस नीरा को फेंक दो."

"हटो हटो. वह एक दिन नहीं पियेंगे तो क्या मर जायेंगे? आज तो यही नीरा बिकेगी. अपने रिश्तेदारों को नहीं पीने दूंगा."

'तुम तो वैश्नव हो. [illegible] इस तरह का व्योहार तो न करो. तुम्हारा व्योहार [illegible] पर असर करता है यह भी तो सोचो. यह नीरा पिलाना तो लोगों की जान लेना है. क्या इतने बड़े पाप की भी परवाह न करोगे?"

"मैं वैश्नव धर्मी हूँ या जैन धर्मी या कोई और धर्मी. मेरे व्योपार से और धर्म से क्या नाता? व्योपार से दुनिया में ज़िन्दगी बनी रहती है और धर्म से उस दूसरी दुनिया का काम होता है जिसे लोग परलोक कहते हैं. उस दुनिया को इस दुनिया से क्या लेना? दोनों लोक अलग अलग हैं. 'भूक भजन न होय गोपाला'. धर्म की बात तो पेट भरने के बाद याद आती है. खाना कपड़ा न हो तो किसी को धर्म नहीं सूझता. मैं धर्मी हूं. पर ऐसा मूरख धर्मी नहीं हूं कि तुम्हारी बातों में आकर भीक माँगता फिरूँ. आज छिपकली गिरी है, कल बिच्छू गिरेगा, अगले कल कनखजूरा गिरेगा, उस से अगले कल साँप गिरेगा, तो बताओ कब तक मैं नीरा फेंकता रहूँगा. मैं वैश्नव हूं, जैनी होता तो

اُس دن باپو کی آتما کو دکھ ہوگا ہے ۔ نہیں ہوگا ۔ وہ میں اسی مٹکے میں چھانوں گا ۔ ایک بوند نہیں پینے دوں گا ۔"

بیوپاری کی آواز اب سخت سے سخت ہوتی جا رہی تھی ۔ پر دیش پریمی نے پھر ہمت کی اور بولا —

"لیکن تمہارے اپنے رشتے دار بھی تو یہ نیرا پینے آسکتے ہیں ۔ اُن کا ہی خیال کر کے اس نیرا کو پھینک دو ۔"

"ہٹو ہٹو ۔ وہ ایک دن نہیں پئیں گے تو کیا مر جائیں گے ؟ آج تو یہی نیرا بکے گی ۔ اپنے رشتے داروں کو نہیں پینے دونگا ۔"

"تم تو ویشنو ہو ۔ ویشنو دھرم کے [illegible] اس طرح کا بیوہار نہ کرو ۔ تمہارا بیوہار کس پر اثر کرتا ہے یہ بھی تو سوچو ۔ یہ نیرا پلانا تو لوگوں کی جان لینا ہے ۔ کیا اتنے بڑے پاپ کی بھی پرواہ نہ کروگے ؟"

"میں ویشنو دھرمی ہوں یا جین دھرمی یا کوئی اور دھرمی ۔ میرے بیوپار سے اور دھرم سے کیا ناتا ؟ بیوپار سے دنیا میں زندگی بنی رہتی ہے اور دھرم سے اُس دوسری دنیا کا کام ہوتا ہے جسے لوگ پرلوک کہتے ہیں ۔ اُس دنیا کو اِس دنیا سے کیا لینا ؟ دونوں لوک الگ الگ ہیں ۔ 'بھوکے بھجن نہ ہوئے گوپالا' ۔ دھرم کی بات تو پیٹ بھرنے کے بعد یاد آتی ہے ۔ کھانا کپڑا نہ ہو تو کسی کو دھرم نہیں سوجھتا ۔ میں دھرمی ہوں پر ایسا مورکھ دھرمی نہیں ہوں کہ تمہاری باتوں میں آکر بھیک مانگتا پھروں ۔ آج چھپکلی گری ہے ' کل بچھو گریگا ' اگلے کل کن کھجورا گریگا ' اُس سے اگلے کل سانپ گریگا ' تو بتاؤ کب تک میں نیرا پھینکتا رہونگا ۔ میں ویشنو ہوں ' جینی ہوتا تو

एक अठन्नी रोज रिक्शा पर खर्च हो जाती है. यह सब दाम कहां से आयेंगे, और फिर सारे कुटुम्ब के खाने कपड़े का काम इसी के सहारे तो चलता है? कौन देश भक्त मुझे दे जायगा? मैं भूकों मर जाऊं तो कोई पूछने वाला भी नहीं. मैं किसी के लिये क्यों फ़िक्र करूं?"

"पर यह तो सोचो, पीने वालों की तन्दुरुस्ती पर कितना खराब असर पड़ सकता है. ऐसा भी रुपया कमाना किस काम का!"

"किस काम का? बच्चों के पेट भरने के काम का. इसी काम के लिये तो मैंने नीरा का काम हाथ में लिया है. इसी से अपने घर का काम चलाता हूँ. पहले घर की फ़िक्र होनी चाहिये. देश, धर्म और लोगों की फ़िक्र पीछे की चीज़ें हैं."

व्योपारी ने उसकी एक न सुनी और उसी में वह और नीरा छानता रहा. इतने में देश प्रेमी को एक नई दलील सूझी और बोला—

"पर नीरा के प्रान रूप बापू की आत्मा को इस बात से कितना दुख होगा इसका भी तो कुछ खयाल करो. उन ही के प्रताप से तो यह नीरा का रोजगार निकला. इसका भी तो कुछ विचार करो."

"हटो हटो तंग न करो. मैं बापू की आत्मा को खुश रखने के लिये थोड़े ही इस काम में पड़ा हूँ. मुझे चाहियें पैसे, पैसे. क्या आज के पैसे बापू की आत्मा मुझे दे जायगी? कहो दे जायगी, तो लाओ मैं अभी फेंक दूं. और यही क्या जिस दिन अच्छी नीरा होती है उस दिन मेरे फ़ायदे के लिये कौन पीने आता है? फिर मैं क्यों उनके

ایک اٹھنی روز رکشا پر خرچ ہوجاتی ہے ۔ یہ سب دام کہاں سے آئینگے، اور پھر سارے کٹمب کے کھانے کپڑے کا کام اسی کے سہارے تو چلتا ہے ؟ کون دیش بھگت مجھے دے جائیگا ؟ میں بھوکوں مرجاؤں تو کوئی پوچھنے والا بھی نہیں ۔ میں کسی کے لئے کیوں فکر کروں ؟"

"پر یہ تو سوچو، پینے والوں کی تندرستی پر کتنا خراب اثر ہوسکتا ہے ۔ ایسا بھی روپیہ کمانا کس کام کا !"

"کس کام کا ؟ بچوں کے پیٹ بھرنے کے کام کا ۔ اسی کام کے لئے تو میں نے نیرا کا کام ہاتھ میں لیا ہے ۔ اسی سے اپنے گھر کا کام چلاتا ہوں ۔ پہلے گھر کی فکر ہونی چاہئے ۔ دیس، دھرم اور لوگوں کی فکر پیچھے کی چیزیں ہیں ۔"

بیوپاری نے اُسکی ایک نہ سنی اور اُسی میں وہ اور نیرا چھانتا رہا ۔ اتنے میں دیش پریمی کو ایک نئی دلیل سوجھی اور بولا —

"پر نیرا کے پران روپ باپو کی آتما کو اس بات سے کتنا دکھ ہوگا اسکا بھی تو کچھ خیال کرو ۔ اُن ہی کے پرتاپ سے تو یہ نیرا کا روزگار نکلا ۔ اس کا بھی تو کچھ وچار کرو ۔"

"ہٹو ہٹو تنگ نہ کرو ۔ میں باپو کی آتما کو خوش رکھنے کے لئے تھوڑے ہی اس کام میں پڑا ہوں ۔ مجھے چاہئیں پیسے، پیسے ۔ کیا آج کے پیسے باپو کی آتما مجھے دے جائیگی ؟ کہو دے جائیگی تو لاؤ میں ابھی پھینکدوں ۔ اور یہی کیا جس دن اچھی نیرا ہوتی ہے اُس دن میرے فائدے کے لئے کون پینے آتا ہے ؟ پھر میں کیوں اُن

स्वार्थ की अनोखी देन

(भाई श्री नाथ)

"अरे, यह क्या ! यहं मरी छिपकली कैसी ! ओह ! मटके में ही मर गई मालूम होती है." सुबह के अन्धेरे में नीरा छानते हुए आपो आप ब्योपारी के मुँह से यह शब्द निकल पड़े.

"फेंको फेंको इस नीरा को."

"क्यों ?"

"इसमें छिपकली का जहर जो मिल गया."

"तो ?"

"इसको जो पियेगा वह बीमार पड़ेगा या मरेगा."

"मरा करो, मुझे क्या !"

"देने वाले तुमको पाप जो होगा."

"पाप होगा ? अच्छे आए चलकर तुम देश प्रेमी, तो क्या मैंने लोगों के लिये नीरा बेचना शुरू किया है ? मैंने तो अपने और बच्चों के फ़ायदे के लिये यह ब्योपार शुरू किया है? भरा मटका फेंक दूं तो औरत व बच्चों को किसके घर रख आऊँ ?"

"अरे, अब और नीरा तो इसमें न छानों. कम से कम अब तक जितनी नीरा छन चुकी है उसे तो फेंक दो."

"चुप भी रहो, ऐसे उपदेश सुना करूं तो चल चुकी दुकान. सत्तर रुपए 'बनकर' के नाम पर देता हूँ, पच्चीस नक़द नौकरों को देता हूँ,

سوارتھ کی انوکھی دین

(بھائی شری ناتھ)

'' ارے، یہ کیا ! یہ مری چھپکلی کیسی ! اوہ ! مٹکے میں ہی مر گئی معلوم ہوتی ہے .'' صبح کے اندھیرے میں نیرا چھانتے ہوئے آپو آپ بیوپاری کے منھ سے یہ شبد نکل پڑے .

''پھینکو پھینکو اس نیرا کو''.

''کیوں ؟''

''اس میں چھپکلی کا زہر جو مل گیا .''

''تو ؟''

''اسکو جو پیئگا وہ بیمار پڑیگا یا مریگا'' .

''مرا کرو، مجھے کیا !''

''دینے والے تم کو پاپ جو ہوگا .''

''پاپ ہوگا، اچھے آئے چلکر تم دیش پریمی، تو کیا میں نے لوگوں کے لئے نیرا بیچنا شروع کیا ہے ؟ میں نے تو اپنے اور اپنے بچوں کے فائدے کے لئے یہ بیوپار شروع کیا ہے . بھرا مٹکا پھینک دوں تو عورت، بچوں کو کس کے گھر رکھ آؤں ؟ ''

''ارے، اب اور نیرا تو اس میں نہ چھانو . کم سے کم اب تک جتنی نیرا چھن چکی ہے اُسے تو پھینک دو .''

''چپ بھی رہو، ایسے اُپدیش سنا کروں تو چل چکی دوکان . ستر روپے 'بنکر' کے نام پر دیتا ہوں، پچیس نقد نوکروں کو دیتا ہوں،

है, कुछ फ़िरक़ापरस्तों की इच्छाएं पूरी हो जाती हैं, और बहुत से आदमियों के लिये छुट्टी, त्योहार और तमाशे का आनन्द मिलता है. पर यह हमें कब तक शोभा देगा ?

सारांश यह कि एक धर्म निर्पेक्ष राज के नागरिक की हैसियत से, एक ग़रीब देस के ग़रीब आदमियों के प्रतिनिधि की हैसियत से, नागरिक अधिकारों के प्रेमी की हैसियत से और हानिकर रूढ़ियों का अन्त देखने के अभिलाशी की हैसियत से मेरा यह विनम्र पर ज़ोरदार निवेदन है कि हमारा लोकराज इस तरह के जलूसों का काम अपने हाथ में लेने से पहले एक बार नहीं, दस बार सोचे ऐसा न हो कि उसी रास्ते छोटे चलने लगें जिस पर बड़े चलते हैं. और यह छूत की बीमारी की तरह दिल्ली से सूबे सूबे में बढ़ती चली जाय. भगवान हमारे लोकशाही जनराज की रक्षा करे.

ہے، کچھ فرقہ پرستوں کی اچھائیں پوری ہوجاتی ہیں اور بہت سے آدمیوں کے لئے چھٹی، تیوہار اور تماشے کا آنند ملتا ہے، پر یہ ہمیں کب تک شوبھا دیگا ؟

سارانش یہ کہ ایک دھرم نرپیکش راج کے ناگرک کی حیثیت سے، ایک غریب دیس کے غریب آدمیوں کے پرتی ندھی کی حیثیت سے، ناگرک ادھیکاروں کے پریمی کی حیثیت سے اور ہانی کر روڑھیوں کا انت دیکھنے کے ابھیلاشی کی حیثیت سے میرا یہ ونمر پر زور دار نویدن ہے کہ ہمارا لوک راج اس طرح کے جلوسوں کا کام اپنے ہاتھ میں لینے سے پہلے ایک بار نہیں دس بار سوچے. ایسا نہ ہو کہ اسی راستے چھوٹے چلنے لگیں جس پر بڑے چلتے ہیں. اور یہ چھوت کی بیماری کی طرح دلی سے صوبے صوبے میں بڑھتی چلی جائے. بھگوان ہمارے لوک شاہی جن راج کی رکشا کریں.

...और वज़ीर वग़ैरा आते हैं तो पुलिस और ख़ुफ़िया पुलिस की मौजूदगी हमारी ख़ुद्दारी को कुचलने वाली होती है. कुछ साल पहले जब वायसराय और गवरनरों की सवारी निकला करती थी तो हमें पुलिस राज और साम्राजवादी हकूमत का तजरबा हुआ करता था. उस समय हमें नफ़रत होती थी उन शासकों से जो अपनी हिफ़ाज़त के लिये हम पर विश्वास नहीं करते थे, और अपनी हिफ़ाज़त पुलिस से कराते थे. पर वह गुलामी की लानत थी. अब आज़ादी आगई. पर मालूम होता है पुरानी परम्परा की आत्मा ज्यों की त्यों बनी है. अगर आज के राष्ट्रपति, गवरनरों और वज़ीरों को जनता पर विश्वास करने की हिम्मत नहीं है, तो एक स्वाभिमानी नागरिक की हैसियत से मैं सोचने लगता हूं कि वह अपने ओहदों के क़ाबिल नहीं. वह अपने देस में, अपने भाइयों के बीच में इतने बंधनों में क्यों रहते हैं, या अपनी ख़ातिर हज़ारों नागरिकों पर तरह तरह की रोकथाम क्यों लगवाते हैं? पर हां, शायद मुझे यह बात न कहकर यह कहना चाहिये कि इन जलूसों को जो यह रूप दिया जाता है, वह इस लिये नहीं कि हमारे आज के शासक जनता पर शक करते हैं, बल्कि इसलिये कि वह जिन पुराने विदेसी शासकों के वारिस हैं, उन की परम्परायें वह अभी तक नहीं छोड़ पाए. वह बिना सोचे ऐसी बातें कर रहे हैं जो नई हवा में ग़ैरज़रूरी ही नहीं. हानिकर भी हैं. मैं जानना चाहता हूं कि यह कब तक चलेगा? ज़रूर ही इस ढंग से कुछ लोगों को निजी आमदनी बढ़ाने का मौक़ा मिलता है, कुछ पदाधिकारियों को सफ़र का भत्ता वग़ैरा के रूप में काफ़ी आमदनी हो जाती

...سب سے اہمک چنتا اور دکھ کی بات یہ ہے ... جب راشٹرپتی یا گورنر اور وزیر وغیرہ آتے ہیں تو پولیس اور خفیہ پولیس کی موجودگی ہماری خود داری کو کچلنے والی ہوتی ہے ۔ کچھ سال پہلے جب وائسرائے اور گورنروں کی سواری نکلا کرتی تھی تو ہمیں پولیس راج اور سامراج وادی حکومت کا تجربہ ہوا کرتا تھا ۔ اس سمے ہمیں نفرت ہوتی تھی ان شاسکوں سے جو اپنی حفاظت کے لئے ہم پر وشواس نہیں کرتے تھے اور اپنی حفاظت پولیس سے کراتے تھے پر وہ غلامی کی لعنت تھی۔ اب آزادی آگئی ۔ پر معلوم ہوتا ہے پرانی پرمپرا کی آتما جیوں کی تیوں بنی ہے ۔ اگر آج کے راشٹرپتی گورنروں اور وزیروں کو جنتا پر وشواس کرنے کی ہمت نہیں ہے تو ایک سوابھیمانی ناگرک کی حیثیت سے میں سوچنے لگتا ہوں کہ وہ اپنے عہدوں کے قابل نہیں ۔ وہ اپنے دیس میں اپنے بھائیوں کے بیچ میں اتنے بندھنوں میں کیوں رہتے ہیں یا اپنی خاطر ہزاروں ناگرکوں پر طرح طرح کی روک تھام کیوں لگواتے ہیں؟ پر ہاں شاید مجھے یہ بات نہ کہکر یہ کہنا چاہئے کہ ان جلوسوں کو جو یہ روپ دیا جاتا ہے وہ اس لئے نہیں کہ ہمارے آج کے شاسک جنتا پر شک کرتے ہیں۔ بلکہ اس لئے کہ وہ جن پرانے بدیسی شاسکوں کے وارث ہیں ان کی پرمپرائیں وہ ابھی تک نہیں چھوڑ پائے ۔ وہ بنا سوچے ایسی باتیں کر رہے ہیں جو نئی ہوا میں غیر ضروری ہی نہیں ہانی کر بھی ہیں۔ میں جاننا چاہتا ہوں کہ یہ کب تک چلیگا؟ ضرور ہی اس ڈھنگ سے کچھ لوگوں کو نجی آمدنی بڑھانے کا موقعہ ملتا ہے' کچھ پداادھیکاریوں کو سفر کا بھتہ وغیرہ کے روپ میں کافی آمدنی ہوجاتی

इस पहलू को छोड़कर आर्थिक निगाह से विचार करें. सरकार के हर काम का बजट बनता है. ख़र्च का अन्दाज़ किया जाता है, और उसके अनुसार ही काम किया जाता है. किसी भी पदाधिकारी की मौत तो अचानक हो जाती है. उसके अन्तिम संस्कार के लिये ख़र्च अचानकी मद से ही हो सकता है. पर इसका कुछ अन्दाज़ तो होना चाहिये. पता नहीं इस बारे के आंकड़े कभी साफ़ और अलग अलग शाया होंगे या नहीं. पर मोटे तौर पर यह तो कहा ही जा सकता है कि एक आदमी पीछे लाखों रुपए ख़र्च हो जाते हैं. क्या 'लोक हितकारी सरकार' के पास लोक हित के कामों की कमी है, और क्या देस की आम जनता ऐसी माली हालत में है कि इतने ख़र्च की कुछ परवा न की जाय ? क्या इस रक़म से—जो ग़रीब से ग़रीब आदमी के दिये हुए टैक्सों से वसूल होती है—मरने वाले के नाम पर कोई ऐसी यादगार नहीं बनाई जा सकती जिससे कुछ रचनात्मक काम हो और कुछ लोगों को रोटी कपड़ा मिले ?

एक और पहलू से भी बात सोचनी है. भारत के नए विधान में नागरिक अधिकारों को महत्व दिया गया है. सरकार जब किसी आदमी का अन्तिम संस्कार करती है तो कितने आदमियों का चलना फिरना रुक जाता है. अनेक आदमियों को अपनी रोज़ी के कामों में बाधा पहुंचती है. थोड़ी बहुत देर नहीं, कई कई घन्टे, और एक दो दिन नहीं दो दो. तीन तीन दिन, क्योंकि सरकार का काम बड़े पैमाने पर होता है, और उससे पहले उसकी नक़ल (रिहर्सल) करके देखा जाता है. कितने आदमियों का कितना समय और शक्ति

اس پہلو کو چھوڑ کر آرتھک نگاہ سے وچار کریں. سرکار کے ہر کام کا بجٹ بنتا ھے . خرچ کا انداز کیا جاتا ھے' اور اُس کے انوسار ھی کام کیا جاتا ھے. کسی بھی پدادھیکاری کی موت تو اچانک ھو جاتی ھے. اُس کے انتم سنسکار کے لئے خرچ اچانکی مد سے ھی ھو سکتا ھے . پر اِس کا کچھ انداز تو ھونا چاھئے . پتہ نہیں اس بارے کے آنکڑے کبھی صاف اور الگ الگ شائع ھوں گے یا نہیں . پر موٹے طور پر یہ تو کہا ھی جا سکتا ھے کہ ایک آدمی پیچھے لاکھوں روپے خرچ ھو جاتے ھیں . کیا 'لوک ھتکاری سرکار' کے پاس لوک ھت کے کاموں کی کمی ھے اور کیا دیش کی عام جنتا ایسی مالی حالت میں ھے کہ اتنے خرچ کی کچھ پروا نہ کی جائے ؟ کیا اس رقم سے — جو غریب سے غریب آدمی کے دئے ھوئے ٹیکسوں سے وصول ھوتی ھے — مرنے والے کے نام پر کوئی ایسی یادگار نہیں بنائی جا سکتی جس سے کچھ رچناتمک کام ھو اور کچھ لوگوں کو روٹی کپڑا ملے ؟

ایک اور پہلو سے بھی بات سوچنی ھے . بھارت کے نئے ودھان میں ناگرک ادھیکاروں کو مہتو دیا گیا ھے . سرکار جب کسی آدمی کا انتم سنسکار کرتی ھے تو کتنے آدمیوں کا چلنا پھرنا رک جاتا ھے . انیک آدمیوں کو اپنی روزی کے کاموں میں بادھا پہونچتی ھے . تھوڑی بہت دیر نہیں ' کئی کئی گھنٹے ' اور ایک دو دن نہیں' دو دو ' تین تین دن . کیونکہ سرکار کا کام بڑے پیمانے پر ھوتا ھے . اور اُس سے پہلے اُسکی نقل (ریہرسل) کر کے دیکھا جاتا ھے . کتنے آدمیوں کا کتنا سمے اور سکتی خرچ ھوجاتی ھے !

इनके अन्तिम सरकार का महकमा खोले तो इन सभी धर्मों का लिहाज़ रखना होगा.

जब कि भारत में सरकार धर्म निर्पेक्ष होने का दावा करती है तो उसके सामने दो ही रास्ते हैं. पहला यह कि वह इस काम को अपने हाथ में न ले. इसकी ज़िम्मेदारी मरने वाले के घर वालों, मित्रों और रिश्तेदारों पर रहे. सरकार केवल उनके काम में ज़रूरी सुविधाएं करदे. वह लोग अपनी अपनी हालत या हैसियत के अनुसार मोटर या स्पेशल ट्रेन से आवें, या हवाई जहाज़ वग़ैरा से. हाँ, अगर कोई आदमी ऐसी जगह मर जाता है जहाँ उसके घर वाले या रिश्तेदार जल्दी नही पहुँच सकते, या जिसके घर वाले या रिश्तेदार हों ही नहीं तो उसके अन्तिम संस्कार के लिये सरकार एक बँधी हुई रक़म से मदद देकर, वहाँ के मुक़ामी आदमियों से यह काम करा दे.

दूसरी हालत यह है कि सरकार इस काम को ख़ुद अपने हाथ में ले. इस सूरत में काम का रूप कितना बढ़ जायगा यह विचार कर लिया जाय. धर्म निर्पेक्ष सरकार को अगर हिन्दू की भस्म गंगा जी पहुँचानी है, तो शिया मुसलमान की लाश शायद करबला पहुँचाने का इन्तज़ाम करना पड़े और ईसाई के लिये समशान घर में कोई स्तूप वग़ैरा बनवाने का प्रबन्ध करना पड़े. यह सब काम जुदा जुदा धर्मों के आचार्यों, पंडितों, मौलवियों और पादरियों वग़ैरा के आदेश अनुसार करना होगा. इससे साफ़ है कि आख़िर में ऐसा मालूम होगा कि किसी धर्म निर्पेक्ष सरकार का ऐसे काम में न पड़ना ही ठीक है.

ھی دھرم والے نہ ھونو بھوڑے بہت سبھی [illegible]
اگر سرکار ان کے انتم سنسکار کا محکمہ کھولے تو ان سبھی دھرموں کا لحاظ رکھنا ھوگا .

جب کہ بھارت میں سرکار دھرم نرپیکش ھونے کا دعوی کرتی ھے تو اسکے سامنے دو ھی راستے ھیں . پہلا یہ کہ وہ اس کام کو اپنے ھاتھ میں نہ لے . اس کی ذمے داری مرنے والے کے گھر والوں ، متروں اور رشتےداروں پر رھے . سرکار کیول اُن کے کام میں ضروری سودھاؤں کر دے . وہ لوگ اپنی اپنی حالت یا حیثیت کے انوسار موٹر یا اسپیشل ٹرین سے آویں یا ھوائی جہاز وغیرہ سے . ھاں ، اگر کوئی آدمی ایسی جگہ مر جاتا ھے جہاں اُسکے گھر والے یا رشتےدار جلدی نہیں پہونچ سکتے ، یا جسکے گھر والے یا رشتےدار ھوں ھی نہیں تو اُس کے انتم سنسکار کے لئے سرکار ایک بندھی ھوئی رقم سے مدد دے کر ، وہاں کے مقامی آدمیوں سے یہ کام کرا دے .

دوسری حالت یہ ھے کہ سرکار اِس کام کو خود اپنے ھاتھ میں لے . اس صورت میں کام کا روپ کتنا بڑھ جائیگا یہ وچار کر لیا جائے . دھرم نرپیکش سرکار کو اگر ھندو کی بھسم گنگا جی پہونچانی ھے ، تو شیعہ مسلمان کی لاش شاید کربلا پہونچانے کا انتظام کرنا پڑے اور عیسائی کے لئے شمسان گھر میں کوئی اسٹوپ وغیرہ بنوانے کا پربندھ کرنا پڑے . یہ سب کام جدا جدا دھرموں کے آچاریوں ، پنڈتوں ، مولویوں اور پادریوں وغیرہ کے آدیش انوسار کرنا ھوگا . اس سے صاف ھے کہ آخر میں ایسا معلوم ھوگا کہ کسی دھرم نرپیکش سرکار کا ایسے کام میں نہ پڑنا ھی ٹھیک ھے .

मरने पर सरकार उनके अन्तिम संस्कार से कहाँ तक सम्बन्ध रक्खे. ज़्यादातर सरकारी आदमी छोटे छोटे पदों पर होते हैं. जिनके बारे में सरकार के कुछ सोचने की ज़रूरत नहीं समझी जाती. सवाल सिर्फ़ उन लोगों का रह जाता है जो बहुत ऊंचे पदों पर हों—जैसे जंगी लाट, थल सेना, जल सेना और हवाई सेना के सेनापति, राष्ट्र पति, प्रधान मन्त्री और दूसरे वज़ीर. और महकमों के सबसे बड़े अफ़सर, सुप्रीम कोर्ट के चीफ़ जस्टिस और दूसरे जज. इसी तरह हर सूबे (राज) में वहाँ के गवरनर, बड़े वज़ीर, दूसरे वज़ीर, हाई-कोर्ट के जज. यहां मिसाल के तौर से थोड़े से ही पदों के नाम लिये गए हैं. इनकी सूची और गिनती बहुत बड़ी हो सकती है.

मेरा तो विचार है कि अगर सरकार का मतलब रोब दाब जमाने वाली और ताक़त के सहारे हुकूमत करने वाली संस्था न होकर सेवा या ख़िदमत करने वाली संस्था हो तो उसके लिये ऊंचे दरजे के साइन्सी खोज करने वाले, कलाकार और ऊंचे दरजे के साहित्यकार, वैद्य, हकीम या डाक्टर भी वैसे ही इज़्ज़तदार होने चाहियें जैसे गवरनर या वज़ीर. क्योंकि जनता के लिये इनका काम किसी तरह कम महत्व का नहीं होता. पर अगर इन सबके अन्तिम संस्कार का काम सरकार करने लगे तो उसे इसके लिये एक अलग महकमा ही बनाना पड़े और उसके लिये भी दिल्ली में एक वज़ीर हो, और हर सूबे (राज) में एक एक वज़ीर हो. इन वज़ीरों या मंत्रियों का काम कितना जटिल होगा, इसका विचार करते समय यह ध्यान में रखा जाय कि देस में किसी एक ही धर्म के आदमी नहीं हैं, हिन्दू

مرنے پر سرکار اُن کے انتم سنسکار سے کہاں تک سمبندھ رکھے . زیادہ تر سرکاری آدمی چھوٹے چھوٹے پدوں پر ہوتے ہیں ' جن کے بارے میں سرکار کے کچھ سوچنے کی ضرورت نہیں سمجھی جاتی . سوال صرف اُن لوگوں کا رہ جاتا ہے جو بہت اُونچے پدوں پر ہوں— جیسے جنگی لاٹ' تھل سینا' جل سینا اور ہوائی سینا کے سینا پتی' راشٹر پتی' پردھان منتری اور دوسرے وزیر اور محکموں کے سب سے بڑے افسر' سپریم کورٹ کے چیف جسٹس اور دوسرے جج . اِسی طرح ہر صوبے (راج) میں وہاں کے گورنر ' بڑے وزیر ' دوسرے وزیر' ہائی کورٹ کے جج . یہاں مثال کے طور سے تھوڑے سے ہی پدوں کے نام لئے گئے ہیں . ان کی سوچی اور گنتی بہت بڑی ہو سکتی ہے .

میرا تو وچار ہے کہ اگر سرکار کا مطلب رعب داب جمانے والی اور طاقت کے سہارے حکومت کرنے والی سنستھا نہ ہو کر سیوا یا خدمت کرنے والی سنستھا ہو تو اُس کے لئے اونچے درجے کے سائنسی کھوج کرنے والے' کلا کار اور اُونچے درجے کے ساہتیہ کار' وید' حکیم یا ڈاکٹر بھی ویسے ہی عزت دار ہونے چاہئیں. جیسے گورنر یا وزیر . کیونکہ جنتا کے لئے اُن کا کام کسی طرح کم مہتو کا نہیں ہوتا . پر اگر ان سب کے انتم سنسکار کا کام سرکار کرنے لگے تو اُسے اسکے لئے ایک الگ محکمہ ہی بنانا پڑے اور اُسکے لئے بھی دلی میں ایک وزیر ہو اور ہر صوبے (راج) میں ایک ایک وزیر ہو . اِن وزیروں یا منتریوں کا کام کتنا جٹل ہوگا' اس کا وچار کرتے سمے یہ دھیان میں رکھا جائے کہ دیس میں کسی ایک ہی دھرم کے آدمی نہیں ہیں' ہندو ہیں'

[illegible] कर दिया. और अभी कितना ही
काम बाक़ी भी है, उसके लिये कैसे योग्य अधिकारी की ज़रूरत होगी, जो कठोर भी हो और कोमल भी, जो चतुर भी हो और मेहनती भी, और मक़सद पूरा करने के लिये जी जान से जुटने वाला हो. सरदार पटेल की ठीक ठीक जगह भरना कुछ सहज बात नहीं, पर हमें अपने देस के उजले भविश्य का यक़ीन है. जैसी समस्याएं सामने आवेंगी, उन्हें हल करने वाला नेता भी हमें मिल ही जायगा. हम आशावादी रहें और जो कुछ काम हमारे करने का हो, उसमें कमी न करें.

इन बातों को सोचते सोचते ही सरदार पटेल के फूल बहाए जाने की बात मन में आई. हिन्दुओं में यह परम्परा है कि जहां तक बस चले मुरदे को गंगा जमना के किनारे जलाया जाए, और यदि यह न हो सके तो उसकी हड्डियाँ तो इन नदियों में अवश्य ही बहाई जायं. ऐसा करने से हम मृतआत्मा को शान्ति मिलने का विश्वास करते हैं. यह कहा जा सकता है कि नेक काम करने वाले को ख़ुद ही शान्ति मिल जायगी, फिर भी घर वालों की जैसी भावना होती है, उसी दिशा में वह अपना फ़र्ज़ पूरा करने का प्रयत्न करते हैं और जहां तक उनके इस काम से दूसरों को कोई हानि या तकलीफ़ न हो, हर आदमी को अपने अपने विश्वासों के मुताबिक़ काम करने की आज़ादी है.

पर सवाल यह पैदा होता है कि सरकार ख़ुद इस काम में कहां तक हिस्सा ले. ख़ासकर जो आदमी सरकारी ओहदों पर हैं, उनके

سردار پٹیل نے کیسا چمتکار سا کر دیا . اور ابھی کتنا ہی کام باقی بھی ہے' اُس کے لئے کیسے یوگیہ ادھیکاری کی ضرورت ہوگی' جو کٹھور بھی ہو اور کومل بھی' جو چتر بھی ہو اور محنتی بھی' اور مقصد پورا کرنے کے لئے جی جان سے جٹنے والا ہو . سردار پٹیل کی ٹھیک ٹھیک جگہ بھرنا کچھ سہج بات نہیں' پر ہمیں اپنے دیس کے اُجلے بھوشیہ کا یقین ہے . جیسی سمسیائیں سامنے آئینگی' اُنہیں حل کرنے والا نیتا بھی ہمیں مل ہی جائیگا . ہم آشا وادی رہیں اور جو کچھ کام ہمارے کرنے کا ہو' اُس میں کمی نہ کریں .

ان باتوں کو سوچتے سوچتے ہی سردار پٹیل کے پھول بہائے جانے کی بات من میں آئی . ہندوؤں میں یہ پرم پرا ہے کہ جہاں تک بس چلے مردے کو گنگا جمنا کے کنارے جلایا جائے' اور یدی یہ نہ ہو سکے تو اُس کی ہڈیاں تو اِن ندیوں میں اوشیہ ہی بہائی جائیں . ایسا کرنے سے ہم مرت آتما کو شانتی ملنے کا وشواس کرتے ہیں . یہ کہا جا سکتا ہے کہ نیک کام کرنے والے کو خود ہی شانتی مل جائیگی' پھر بھی گھر والوں کی جیسی بھاونا ہوتی ہے' اُسی دشا میں وہ اپنا فرض پورا کرنے کا پریتن کرتے ہیں اور جہاں تک اُن کے اس کام سے دوسروں کو کوئی ہانی یا تکلیف نہ ہو' ہر آدمی کو اپنے اپنے وشواسوں کے مطابق کام کرنے کی آزادی ہے .

پر سوال یہ پیدا ہوتا ہے کہ سرکار خود اس کام میں کہاں تک حصہ لے . خاص کر جو آدمی سرکاری عہدوں پر ہیں' ان کے

सरकार के सोचने की बात

(भाई भगवान दास केला)

जो सरकारें तानाशाही नहीं होतीं, जो लोकशाही, लोक प्रिय, ज़िम्मेदार या जवाबदेह और धर्म-निर्पेक्ष (ब्योहारी. सेकुलर) होती हैं, उन्हें बहुत सोच समझ कर चलना होता है. उनकी हर बात पर लोग यह विचार करते हैं कि वह इस कसौटी पर कहां तक ठीक उतरती हैं, जिसका उन्हें दावा है. हमारी आज़ाद भारत की नई सरकार अपने लिये इन गुनों का दावा करती है. इसलिये उसके वास्ते बहुत ज़रूरी है कि वह कोई ऐसा काम न करे जिससे देस-प्रेमियों के मन में उसकी तरफ़ से कोई शिकायत हो. यह विचार मेरे मन में सरदार पटेल की अस्थि विसर्जन या भस्म को गंगा में बहाने की घटना से आरहे हैं.

सरदार पटेल के अनेक गुनों की देस बिदेसों में चरचा है. मेरे मन में उनके लिये खिंचाव होने का एक खास कारन भी था. संन १९४८ में मैंने "देसी राजों की जन जागृति" पुस्तक लिखी थी. पिछली बार जब सरदार पटेल पिलानी (जयपुर) गए तो मैंने उनकी सेवा में वह पुस्तक भेंट की और मुझे इतनी ख़ुशी हुई जितनी किसी बड़े से बड़े नेता को बहुत ही क़ीमती भेंट करके होती. जब मैंने सरदार पटेल के देहान्त का समाचार सुना तो मन पर मामूली से ज़्यादा असर हुआ. तरह तरह के विचार मन में

سرکار کے سوچنے کی بات

(بھائی بھگوان داس کیلا)

جو سرکاریں تانا شاہی نہیں ہوتیں' جو لوک شاہی' لوک پریہ' ذمےدار یا جوابدہ اور دھرمنرپیکش (بیوھاری' سیکولر) ہوتی ھیں' اُنھیں بہت سوچ سمجھکر چلنا ہوتا ھے . اُن کی ھر بات پر لوگ یہ وچار کرتے ھیں کہ وہ اس کسوتی پر کہاںتک ٹھیک اترتی ھیں' جس کا اُنھیں دعوی ھے . ھماری آزاد بھارت کی نئی سرکار اپنے لئے اُن گنوں کا دعوی کرتی ھے . اس لئے اُس کے واسطے بہت ضروری ھے کہ وہ کوئی ایسا کام نہ کرے جس سے دیس پریمیوں کے من میں اُس کی طرف سے کوئی شکایت ھو . یہ وچار میرے من میں سردار پٹیل کی استھی وسرجن یا بھسم کو گنگا میں بہانے کی گھٹنا سے آرھے ھیں .

سردار پٹیل کے انیک گنوں کی دیس بدیسوں میں چرچا ھے . میرے من میں اُن کے لئے کھنچاؤ ھونے کا ایک خاص کارن بھی تھا سن ۱۹۴۸ میں میں نے "دیسی راجوں کی جن جاگرتی" پستک لکھی تھی . پچھلی بار جب سردار پٹیل پلانی (جے پور) گئے تو میں نے اُن کی سیوا میں وہ پستک بھینٹ کی اور مجھے اتنی خوشی ھوئی جتنی کسی بڑے سے بڑے نیتا کو بہت ھی قیمتی بھینٹ کرکے ھوتی . جب میں نے سردار پٹیل کے دیہانت کا سماچار سنا تو من پر معمولی سے زیادہ اثر ھوا . طرح طرح کے وچار من میں

अपनी तरफ़ से कुछ सच्ची देन दे सकेगा.

मालिक से बिनती है कि इस प्रयोग के करने वालों को वह ताक़त दे जिससे वह उसे चोटि की उंचाई तक ले जा सकें और क्या हिन्दुस्तान क्या बाहर के लोगों को सुमती दे कि वह इस दुनिया को गोला-बारूद का अखाड़ा न बनाकर प्रेम की बस्ती बनाएँ.

میں اپنی طرف سے کچھ سچی دین دے سکیگا .

مالک سے بنتی ھے کہ اس پریوگ کے کرنے والوں کو وہ طاقت دے جس سے وہ اُسے چوٹی کی اُونچائی تک لے جا سکیں' اور کیا ھندستان کیا باھر کے لوگوں کو سمتی دے کہ وہ اِس دنیا کو گولا بارود کا اکھاڑا نہ بنا کر پریم کی بستی بنائیں .

अपनी तरफ़ मिला लेना चाहते हैं, क्योंकि इन देशों के पास आदमियों की तादाद बहुत ज़्यादा है. दुनिया दुख में तड़प रही है—ऊपर से यह लड़ाई का हौआ दुनिया को और परेशान कर रहा है.

इस सारे तूफ़ान में सिर्फ़ एक जगह ऐसी मिलती है जहां एक दूसरे तरीक़े का ही तजरबा करने की कोशिश हो रही है. दुनिया में पैसे का बोल बाला है और पैसे वाले ख़ुद मेहनत न करके मेहनत करने वालों को चूसा करते हैं. यह तजरबा मानो समाज की काया ही पलट देने वाला है जहाँ मेहनत को उसके ऊँचे दरजे पर बिठा कर सभी से उसकी पूजा कराई जाती है और छोटे बड़े का कोई भेद नहीं है. यह तजरबा वर्धा से चार मील दूर पर धाम नदी के किनारे परंधाम नाम के अपने आश्रम में पूज्य श्री विनोबा जी कर रहे हैं जिन्हें गांधी जी ने १९३९ वाले महायुद्ध के छिड़ने पर हिन्दुस्तान का पहला सत्याग्रही चुना था, जो हर तरह की लड़ाई के विरोधी हैं, और जिन्होंने डंके की चोट पर कहा था कि इस लड़ाई में हिन्दुस्तान का पैसे या आदमी से मदद करना हराम है. वह सत्याग्रही विनोबा आज पैसे का छेद बन्द करना चाहते हैं. स्वावलम्बन के इस यज्ञ पर सारे हिन्दुस्तान की निगाह है.

यही असली चीज़ है. अगर हमें अपना सर ऊँचा करना है, अगर अपने लाखों करोड़ों ग़रीबों को पेट भर अनाज देना है तो उसमें अमरीका या रूस से मदद नहीं मिलने वाली है. उसके लिये कोशिश चाहिये, अपनी मेहनत चाहिये, समाज का मौजूदा ढांचा —— चाहिये अगर ऐसा नहीं होता तो कोई ताक़त कम्युनिज़्म

اپنی طرف ملا لینا چاہتے ہیں، کیونکہ اِن دیسوں کے پاس آدمیوں کی تعداد بہت زیادہ ہے . دنیا دکھ میں تڑپ رہی ہے—اوپر سے یہ لڑائی کا ہوا دنیا کو اور پریشان کر رہا ہے .

اس سارے طوفان میں صرف ایک جگہ ایسی ملتی ہے جہاں ایک دوسرے طریقے کا ہی تجربہ کرنے کی کوشش ہو رہی ہے . دنیا میں پیسے کا بول بالا ہے اور پیسے والے خود محنت نہ کر کے محنت کرنے والوں کو چوسا کرتے ہیں . یہ تجربہ مانو سماج کی کایا ہی پلٹ دینے والا ہے جہاں محنت کو اُسکے اونچے درجے پر بٹھا کر سبھی سے اُسکی پوجا کرائی جاتی ہے اور چھوٹے بڑے کا کوئی بھید نہیں ہے . یہ تجربہ وردھا سے چار میل دور پر دھام ندی کے کنارے پرندھام نام کے اپنے آشرم میں پوجیہ شری ونوبا جی کر رہے ہیں جنھیں گاندھی جی نے ۱۹۳۹ والے مہا یدھ کے چھڑنے پر ہندستان کا پہلا ستیہ‌گرہی چنا تھا، جو ہر طرح کی لڑائی کے وردھی ہیں، اور جنھوں نے ڈنکے کی چوٹ پر کہا تھا کہ اس لڑائی میں ہندستان کا پیسے یا آدمی سے مدد کرنا حرام ہے . وہ ستیہ‌گرہی ونوبا آج پیسہ کا چھید بند کرنا چاہتے ہیں . سواولمبن کے اس یگیہ پر سارے ہندستان کی نگاہ ہے .

یہی اصلی چیز ہے . اگر ہمیں اپنا سر اُونچا کرنا ہے، اگر اپنے لاکھوں کروڑوں غریبوں کو پیٹ بھر اناج دینا ہے تو اُس میں امریکہ یا روس سے مدد نہیں ملنے والی ہے . اُس کے لئے کوشش چاہئے، اپنی محنت چاہئے، سماج کا موجودہ ڈھانچا بدلنا چاہئے . اگر ایسا نہیں ہوتا تو کوئی طاقت کمیونزم کو آنے سے

की कोशिश की है.

दक्खिनी अमरीका तिजारती पहलू से उत्तरी अमरीका का मोहताज रहता है. लेकिन इस बार ब्राज़ील में जो चुनाव हुए तो राश्ट्रपति पद पर डाक्टर वर्गास चुने गए जो ३१ जनवरी १९५१ से काम संभालेंगे. अब अमरीका (यू. एस. ए.) को अन्देशा है कि कहीं उसको कुछ अड़चन न पड़े.

सन १९५० में चुनाव बहुत मारके के रहे. तुर्की में राश्ट्रपति इस्मत अनोनो की पार्टी बुरी तरह हारी. कई मिनिस्टर तक चुनाव में हार गए. ब्रिटेन में लेबर पार्टी जीती, मगर बहुत ही थोड़े वोटों से जीती. ६२५ में केवल ७ का बहुमत है. वोट लेते वक़्त अकसर तो अस्पतालों से मेम्बर बुलाए जाते हैं. लेकिन जिस बहादुरी और ख़ूबी के साथ ब्रिटेन की लेबर सरकार अपने देस की नाव खे रही है वह तारीफ़ के लायक़ बात है. ब्रिटेन के अर्थ मन्त्री सर स्टैफ़ोर्ड क्रिप्स ने बीमारी के कारन इस्तीफ़ा दे दिया है.

अमरीका में भी चुनाव हुए. वहाँ की काँगरेस में डिमोक्रेट और रिपब्लिक दो दलों का मुक़ाबला रहता है. अब तक डिमोक्रेट काफ़ी बहुमत में थे. लेकिन इस बार के चुनाव में उनकी ताक़त बहुत कुछ कम हो गई है, हालाँकि बहुमत अब भी है. इस चुनाव का असर १९५२ के राश्ट्रपति के चुनाव पर गहरा पड़ेगा.

१९५० के ख़तम होते होते सारी दुनिया में लड़ाई का डर है, लड़ाई का चरचा है. पच्छिमी देस अपनी ताक़त बढ़ा रहे हैं और पैसे के बल पर हिन्दुस्तान, पाकिस्तान वग़ैरा पूरब के देसों को

کی کوشش کی ہے۔

دکھنی امریکہ تجارتی پہلو سے اتری امریکہ کا محتاج رہتا ہے۔ لیکن اِس بار برازیل میں جو چناؤ ہوئے تو راشٹر پتی پد پر ڈاکٹر ورگاس چنے گئے جو ۳۱ جنوری ۱۹۵۱ سے کام سنبھالیں گے۔ اب امریکہ (یو. ایس. اے.) کو اندیشہ ہے کہ کہیں اُس کو کچھ اڑچن نہ پڑے۔

سن ۱۹۵۰ میں چناؤ بہت معرکے کے رہے۔ ترکی میں راشٹر پتی عصمت انونو کی پارٹی بری طرح ہاری۔ کئی منسٹر تک چناؤ میں ہار گئے۔ برٹین میں لیبر پارٹی جیتی، مگر بہت ہی تھوڑے ووٹوں سے جیتی۔ ۶۲۵ میں کیول سات کا بہومت ہے۔ ووٹ لیتے وقت اکثر تو اسپتالوں سے ممبر بلائے جاتے ہیں۔ لیکن جس بہادری اور خوبی کے ساتھ برٹین کی لیبر سرکار اپنے دیس کی ناؤ کھے رہی ہے وہ تعریف کے لائق بات ہے۔ برٹین کے ارتھ منتری سر اسٹیفورڈ کرپس نے بیماری کے کارن استعفیٰ دے دیا ہے۔

امریکہ میں بھی چناؤ ہوئے۔ وہاں کی کانگریس میں ڈیموکریٹ اور ریپبلک دو دلوں کا مقابلہ رہتا ہے۔ اب تک ڈیموکریٹ کافی بہومت میں تھے۔ لیکن اس بار کے چناؤ میں اُنکی طاقت بہت کچھ کم ہو گئی ہے، حالانکہ بہومت اب بھی ہے۔ اس چناؤ کا اثر ۱۹۵۲ کے راشٹر پتی کے چناؤ پر گہرا پڑے گا۔

۱۹۵۰ کے ختم ہوتے ہوتے ساری دنیا میں لڑائی کا ڈر ہے، لڑائی کا چرچا ہے۔ پچھمی دیس اپنی طاقت بڑھا رہے ہیں اور پیسے کے بل پر ہندستان، پاکستان وغیرہ پورب کے دیسوں کو

की चीज़ बन गई है. अभी मलाया के गवर्नर सलाह मशवरे के लिये लंदन गए भी थे.

दुनिया की छत नाम का देस—तिब्बत भी इस साल लोगों के ध्यान में आया क्योंकि कहा यह गया कि वहाँ नए चीन की सरकार ने हमला कर दिया है. मगर तिब्बत तो चीन का हिस्सा है ही. अब वहाँ शान्ति है और तिब्बत नए चीनी प्रजातन्त्र का बाज़ाब्ता एक हिस्सा बन गया है.

तिब्बत के दक्खिन में ही नैपाल नाम की रियासत है जो अंगरेज़ों को गोरखे नाम के सिपाही दिया करती है. वहां पर राजा नाम का है, राज प्रधान मन्त्री राना का है. इस राना राज के ख़िलाफ़ वहां भी विद्रोह उठा, राजा भागकर नई दिल्ली आगए और राना ने उनके तीन साल के पोते को राजा बना दिया. यह विद्रोह राना ने काफ़ी दबा लिया है पर जनता का यह विद्रोह पूरी तरह दबाना तो नामुमकिन ही है. राना के कुछ प्रतिनिधि हिन्दुस्तान की सरकार से बात करने आए थे. बात चीत अभी जारी है. यह तो साफ़ है कि राना की अन्धेरशाही के दिन लद गए.

दुनिया के दक्खिनी हिस्से की ख़बरें आम तौर पर कम आती हैं. आस्ट्रेलिया तो खुले आम ब्रिटेन व अमरीका का पक्श ले रहा है. दक्खिनी अफ़रीका में चुनाव के बाद जो सरकार बनी उसके प्रधान मंत्री डाक्टर मलान हैं. यह सरकार रंग के फ़रक़ को इतना मानती है कि हिन्दुस्तानियों का वहाँ पर रहना मुहाल है. यू.

کی چیز بن گئی ھے . ابھی ملایا کے گورنر صلاح مشورے کے لئے لندن گئے بھی تھے .

دنیا کی چھت نام کا دیس — تبت بھی اس سال لوگوں کے دھیان میں آیا کیونکہ کہا یہ گیا کہ وھاں نئے چین کی سرکار نے حملہ کر دیا ھے . مگر تبت تو چین کا حصہ ھے ھی . اب وھاں شانتی ھے اور تبت نئے چینی پرجا تنتر کا باضابطہ ایک حصہ بن گیا ھے .

تبت کے دکھن میں ھی نیپال نام کی ریاست ھے جو انگریزوں کو گورکھے نام کے سپاھی دیا کرتی ھے . وھاں پر راجہ نام کا ھے' راج پردھان منتری رانا کا ھے . اِس رانا راج کے خلاف وھاں بھی ودروہ اُٹھا' راجہ بھاگ کر نئی دلی آگئے اور رانا نے اُن کے تین سال کے پوتے کو راجہ بنا دیا . یہ ودروہ رانا نے کافی دبا لیا ھے پر جنتا کا یہ ودروہ پوری طرح دبانا تو ناممکن ھی ھے . رانا کے کچھ پرتی ندھی ھندستان کی سرکار سے بات کرنے آئے تھے . بات چیت ابھی جاری ھے . یہ تو صاف ھے کہ رانا کی اندھیر شاھی کے دن لد گئے .

دنیا کے دکھنی حصے کی خبریں عام طور پر کم آتی ھیں . آسٹریلیا تو کھلے عام برٹین و امریکہ کا پکش لے رھا ھے . دکھن افریقہ میں چناؤ کے بعد جو سرکار بنی اُسکے پردھان منتری ڈاکٹر ملان ھیں . یہ سرکار رنگ کے فرق کو اِتنا مانتی ھے کہ ھندستانیوں کا وھاں پر رھنا محال ھے . یو . این . او . کے کہنے پر بھی ڈاکٹر ملان . . .

... इसराइल ने अपनी
सरकार का ऐलान कर दिया. हिन्दुस्तान ने उसको मान्यता दे दी है.

पख़्तूनिस्तान का सवाल इस साल नुमायां तौर पर सामने रहा. मगर उधर की ख़बरें कम आती हैं. दूसरे सारे नेता जैसे सरहदी गांधी और उनके भाई डाक्टर ख़ां साहब वग़ैरा क़ैदख़ाने में बन्द हैं जिसकी वजह यह आन्दोलन ज्यादा बड़ा रूप नहीं ले सका.

चीन तो मानो नया जन्म ले रहा हो. नए सिरे से वहां की सभी चीज़ों की तामीर हो रही है क्योंकि पिछले निज़ाम में हालत बहुत ही बुरी तरह बिगड़ गई थी. इस साल चीन व रूस के बीच एक सुलहनामा भी हुआ जिसके कारन पच्छिम की ताक़तें चीन को रूस का पिट्ठू समझने लगी हैं. इस साल चीन में भारतीय राजदूत वास बाक़ायदा क़ायम हो गया.

इन्डोचीन में लड़ाई जारी है. हाल की ख़बर यह है कि चीनी सिपाही भी कुछ पहुँच रहे हैं, मगर यह ख़बर पक्की नहीं हुई. फ़रान्स अपना पूरा ज़ोर वहां के जन आन्दोलन को दबाने में लगा रहा है. इसी तरह इन्डोनेशिया का एक पूरबी टापू पच्छिमी न्यूगिनी हालैन्ड वाले नहीं छोड़ रहे हैं और इस चीज़ में आस्ट्रेलिया वाले डचों के साथ हैं. समय की पुकार तो यही है कि योरप पूरी तरह एशिया के इस कोने को ख़ाली कर दे लेकिन यह पुकार सुनी नहीं जा रही है. जून के महीने में पंडित नेहरू इन्डोनेशिया गए थे.

मलाया की हालत बहुत संगीन है. वहाँ पर कम्यूनिस्टों की बढ़ती हुई ताक़त का सामना करना अंगरेज़ी शासकों के लिये आफ़त

الگ سوارتھوں کے کارن دل سے ایک نہیں ہو پاتے ۔ اسرائیل نے اپنی سرکار کا اعلان کر دیا ۔ ھندستان نے اُس کو مانتا دے دی ھے ۔

پختونستان کا سوال اِس سال نمایاں طور پر سامنے رھا ۔ مگر اُدھر کی خبریں کم آتی ھیں ۔ دوسرے سارے نیتا جیسے سرحدی گاندھی اور اُن کے بھائی داکٹر خاں صاحب وغیرہ قید خانے میں بند ھیں جس کی وجہ سے یہ آندولن زیادہ بڑا روپ نہیں لے سکا۔

چین تو مانو نیا جنم لے رھا ھو ۔ نئے سرے سے وھاں کی سبھی چیزوں کی تعمیر ھو رھی ھے کیونکہ پچھلے نظام میں حالت بہت ھی بری طرح بگڑ گئی تھی ۔ اِس سال چین و روس کے بیچ ایک صلح نامہ بھی ھوا جس کے کارن پچھم کی طاقتیں چین کو روس کا پٹھو سمجھنے لگی ھیں ۔ اس سال چین میں بھارتی راج دوت واس باقاعدہ قائم ھو گیا ۔

اندوچین میں لڑائی جاری ھے ۔ حال کی خبر یہ ھے کہ چینی سپاھی بھی کچھ پہونچ رھے ھیں، مگر یہ خبر پکی نہیں ھوئی ۔ فرانس اپنا پورا زور وھاں کے جن آندولن کو دبانے میں لگا رھا ھے ۔ اِسی طرح اندونیشیا کا ایک پوربی ٹاپو پچھمی نیو گنی ھالینڈ والے نہیں چھوڑ رھے ھیں اور اس چیز میں آسٹریلیا والے ڈچوں کے ساتھ ھیں ۔ سمے کی پکار تو یہی ھے کہ یورپ پوری طرح ایشیا کے اس کونے کو خالی کردے لیکن یہ پکار سنی نہیں جا رھی ھے ۔ جون کے مہینے میں پنڈت نہرو اندونیشیا گئے تھے ۔

ملایا کی حالت بہت سنگین ھے ۔ وھاں پر کمیونسٹوں کی بڑھتی ھوئی طاقت کا سامنا کرنا انگریزی شاسکوں کے لئے آفت

कोरिया में हार के कारन ट्रूमैन ने अपनी कांगरेस से सोला लाख करोड़ डालर की मांग की है ताकि फ़ौजी तैयारी की जाय. उधर ब्रिटेन के जनरल मान्टगुमरी ने यह बताया है कि पच्छिमी देसों को लाजमी भरती चालू कर देना चाहिये. अभी दिसम्बर के दूसरे हफ़्ते में ब्रूसेल्स में पच्छिमी देसों के मंत्रियों की सभा में तै पाया कि जनरल आइज़न हावर को प्रधान सेनापति बनाया जाय. साथ ही साथ पच्छिमी जरमनी वालों की भी फ़ौज खड़ी करने का बिचार है. ऐसी सूरत में पूरबी रूस और जरमनी वग़ैरा देस कैसे चुप रह सकेंगे. आज दुनिया लड़ाई की तैयारी कर रही है हालांकि सब ही अमन के उपासक बनते हैं.

इस साल की ख़ास बातों में शूमन पलान भी है. इसके अन्दर पच्छिमी योरप की मिल जुलकर ख़ास तौर पर जरमनी और फ़्रान्स की औद्योगिक तरक़्क़ी करने की कल्पना है. योरप के पच्छिम दक्खिन कोने में स्पेन नाम के देस की अच्छी चर्चा चली. अमरीका ने उसे एक बहुत बड़ी रक़म दी है. ब्रिटेन ने स्पेन में अपना राज-दूत वास क़ायम किया है—मगर शायद ब्रिटेन को लेने के देने पड़ें क्योंकि स्पेन कहता है कि जिब्राल्टर हमारा है, हमें वापस मिलना चाहिये.

भूमध्य सागर के दक्खिन के प्रधान देस मिस्र में भी काफ़ी सरगर्मी इस साल रही. वहां के सम्राट का कहना है कि सूडान हमें दिया जाय और नहर स्वेज़ से ब्रिटिश फ़ौजें हटाई जायें. इस वक़्त

کوریا میں ہار کے کارن ٹرومین نے اپنی کانگریس سے سولہ لاکھ کروڑ ڈالر کی مانگ کی ہے تاکہ فوجی تیاری کی جائے۔ اُدھر برٹین کے جنرل مانٹگمری نے یہ بتایا ہے کہ پچھمی دیسوں کو لازمی بھرتی چالو کر دینا چاہئے۔ ابھی دسمبر کے دوسرے ہفتے میں بروسیلس میں پچھمی دیسوں کے منتریوں کی سبھا میں طے پایا کہ جنرل آئزن ہاور کو پردھان سینا پتی بنایا جائے۔ ساتھ ہی ساتھ پچھمی جرمنی والوں کی بھی فوج کھڑی کرنے کا وچار ہے۔ ایسی صورت میں پوربی روس اور جرمنی وغیرہ دیس کیسے چپ رہ سکینگے۔ آج دنیا لڑائی کی تیاری کر رہی ہے حالانکہ سب ہی امن کے اُپاسک بنتے ہیں۔

اس سال کی خاص باتوں میں شومن پلان بھی ہے۔ اسکے اندر پچھمی یورپ کی مل جلکر خاص طور پر جرمنی اور فرانس کی اُدیوگک ترقی کرنے کی کلپنا ہے۔ یورپ کے پچھم دکھن کونے میں اسپین نام کے دیس کی اچھی چرچا چلی۔ امریکہ نے اسے ایک بہت بڑی رقم دی ہے۔ برٹین نے اسپین میں اپنا راج دوت واس قائم کیا ہے—مگر شاید برٹین کو لینے کے دینے پڑیں کیونکہ اسپین کہتا ہے کہ جبرالٹر ہمارا ہے، ہمیں واپس ملنا چاہئے۔

بھو مدھیہ ساگر کے دکھن کے پردھان دیس مصر میں بھی کافی سرگرمی اس سال رہی۔ وہاں کے سمراٹ کا کہنا ہے کہ سوڈان ہمیں دیا جائے اور نہر سویز سے برٹش فوجیں ہٹائی جائیں۔ اس وقت تو برٹین کی طرف سے دونوں سوالوں کے جواب میں ...

नौबत यहाँ तक पहुंच गई कि चीनी फ़ौजों के आगे कुछ न चलती देखकर अमरीका ने ऐटम बम इस्तेमाल करने की सोची. इस बात को सुन कर सारी दुनिया बेताब हो गई और ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री ऐटली अमरीकन राष्ट्रपति ट्रूमैन से जाकर वाशिंगटन में मिले और उन्हें जनमत किधर जा रहा है यह सुझाया. इसके पहले—फ़ौजी तैयारी देखने—ट्रूमैन एक टापू पर जाकर मैकआर्थर से भी मिले थे, जिसके बाद वह हमला जनरल मैक आर्थर ने किया जिसका फल अब तक भुगत रहे हैं.

रूस ने जो यू. एन. ओ. की सुरक्षा समिति का स्थायी मेम्बर है, समिति का बाईकाट छै सात महीने तक किया क्योंकि पुराने चीन के प्रतिनिधि का बैठना उसे क़ुबूल नहीं था. मगर अगस्त के महीने से जब प्रधान का पद संभालने की बारी रूस की थी तब से वह शरीक होने लगा है. रूस के व्योहार से परेशान होकर अमरीका ने यह भी सोचा कि अपने पक्ष के देसों को लेकर यू. एन. ओ. के विधान में ऐसी तरमीमें कर ली जाएँ ताकि रूस के वीटो वोट के कारन उसके काम में कोई अड़चन नहीं पड़े. पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इस तजवीज़ के बारे में कहा था कि इसका मतलब तो यू. एन. ओ. को उत्तर एटलान्टिक डिफ़ैन्स कौन्सिल बना देना है जिस को सुन कर पच्छिमी सरकारों के अफ़सर ग़ुस्से से लाल हो गए थे और बोले कि जवाहरलाल ने तो हद करदी कि जो बात रूस तक ने नहीं कही वह उन्होंने कह डाली. लेकिन जवाहरलाल नेउनके दिल का चोर खोल कर रख दिया यह वह खूब समझते हैं.

نوبت یہاں تک پہونچ گئی کہ چینی فوجوں کے آگے کچھ نہ چلتی دیکھکر امریکہ نے ایٹم بم استعمال کرنے کی سوچی . اس بات کو سن کر ساری دنیا بیتاب ہوگئی اور برٹین کے پردھان منتری ایٹلی امریکن راشٹرپتی ترومین سے جاکر واشنگٹن میں ملے اور اُنہیں جن مت کدھر جا رہا ہے یہ سجھایا . اس کے پہلے. فوجی تیاری دیکھنے—ترومین ایک ٹاپو پر جاکر میک آرتھر سے بھی ملے تھے' جسکے بعد وہ حملہ جنرل میک آرتھر نے کیا جس کا پھل اب تک بھگت رہے ہیں .

روس نے جو یو . این . او . کی سرکشا سمیتی کا استھائی ممبر ہے' سمیتی کا بائی کاٹ چھ سات مہینے تک کیا کیونکہ پرانے چین کے پرتی ندھی کا بیٹھنا اُسے قبول نہیں تھا . مگر اگست کے مہینے سے جب پردھان کا پد سنبھالنے کی باری روس کی تھی تب سے وہ شریک ہونے لگا ہے . روس کے بیوہار سے پریشان ہو کر امریکہ نے یہ بھی سوچا کہ اپنے پکش کے دیسوں کو لیکر یو . این . او . کے ودھان میں ایسی ترمیمیں کر لی جائیں تاکہ روس کے ویٹو ووٹ کے کارن اُس کے کام میں کوئی اڑچن نہیں پڑے . پنڈت جواہر لال نہرو نے اس تجویز کے بارے میں کہا تھا کہ اِس کا مطلب تو یو . این . او . کو اُتر اٹلانٹک ڈفینس کونسل بنا دینا ہے جسکو سنکر پچھمی سرکاروں کے افسر غصے سے لال ہوگئے تھے اور بولے کہ جواہر لال نے تو حد کر دی کہ جو بات روس تک نے نہیں کہی وہ اُنہوں نے کہ ڈالی. لیکن جواہر لال نے اُن کے دل کا چور کھول کر رکھدیا یہ وہ خوب سمجھتے ہیں .

और जिसकी पूरी ज़िम्मेदारी जापान के फ़ौजी बादशाह—अमरीकन जनरल मैकआर्थर—को सौंपी गई.

इस लड़ाई में कई उतार चढ़ाव आए. अमरीकन फ़ौजों की शुरू में सफलता—फिर हार कर कोने में भाग आना—फिर "बड़ा दिन घर पर" मनाने वाला हमला और ३८ पड़ी रेखा के ऊपर तक बढ़ते जाना—इस मौक़े पर चीनी फ़ौज का उत्तर कोरिया वालों का साथ देना और उनके आने से अमरीका की फ़ौज के लिये जान बचाकर भागना ही एक सूरत ज़िन्दा रहने की बची, और यह पीछे को हटना, लगातार इस्कीम के अनुसार हटना, अभी चल रहा है. चीन की फ़ौजों ने ३८ पड़ी रेखा पार कर ली है और दक्खिन की तरफ़ बढ़ रही हैं.

कोरिया का मामला छिड़ जाने के बाद हमारे प्रधान मन्त्री ने स्टालिन और एचेसन को पत्र लिखे कि इस चीज़ को ज़्यादा न बढ़ाया जाय और दुनिया में शान्ति क़ायम रखने की कोशिश की जाय. लेकिन मामला वैसा का वैसा ही रहा. इसके बाद हिन्दुस्तान ने इस मामले में दो बातें कहीं—

(१) नये चीन को यू. एन. ओ. में शामिल किया जाय.

(२) यू. एन. ओ. की फ़ौजें ३८ पड़ी रेखा के उत्तर में न जाएँ.

अमरीका ने ख़ासकर दोनों ही बातों को नामंज़ूर कर दिया जिस की वजह से यू. एन. ओ. भी उन्हें नहीं मान सकी और आज जब लेक-सकसैस की बैठकों में चीन की जगह पर पुराने हारे चीन की सरकार का प्रतिनिधि बैठा दीखता है तो मज़ाक़ मालूम होता है.

اور جسکی پوری ذمے داری جاپان کے فوجی بادشاہ — امریکن جنرل میک آرتھر—کو سونپی گئی .

اس لڑائی میں کئی اُتار چڑھاؤ آئے . امریکن فوجوں کی شروع میں سپھلتا—پھر ہار کر کونے میں بھاگ آنا—پھر "بڑا دن گھر پر" منانے والا حملہ اور ۳۸ پڑی ریکھا کے اُوپر تک بڑھتے جانا— اس موقعے پر چینی فوج کا اُتر کوریا والوں کا ساتھ دینا اور اُن کے آنے سے امریکہ کی فوج کے لئے جان بچا کر بھاگنا ہی ایک صورت زندہ رہنے کی بچی' اور یہ پیچھے کو ہٹنا' لگاتار اسکیم کے انوسار ہٹنا' ابھی چل رہا ہے . چین کی فوجوں نے ۳۸ پڑی ریکھا پار کر لی ہے اور دکھن کی طرف بڑھ رہی ہیں .

کوریا کا معاملہ چھڑ جانے کے بعد ہمارے پردھان منتری نے اسٹالن اور ایچیسن کو پتر لکھے کہ اس چیز کو زیادہ نہ بڑھایا جائے اور دنیا میں شانتی قائم رکھنے کی کوشش کی جائے . لیکن معاملہ ویسا کا ویسا ہی رہا . اسکے بعد ہندستان نے اس معاملے میں دو باتیں کہیں—

(۱) نئے چین کو یو . این . او . میں شامل کیا جائے .

(۲) یو . این . او . کی فوجیں ۳۸ پڑی ریکھا کے اُتر میں نہ جائیں .

امریکہ نے خاص کر دونوں ہی باتوں کو نا منظور کر دیا جس کی وجہ سے یو . این . او . بھی اُنھیں نہیں مان سکی اور آج جب لیک سکسیس کی بیٹھکوں میں چین کی جگہ پر پرانے ہارے چین کی سرکار کا پرتی ندھی بیٹھا دیکھتا ہے تو مذاق معلوم ہوتا ہے . لیکن اب چین کی فوج کے کوریا میں آنے پر—

. . . .

टीका की गईं तो अमरीका के अख़बार आग बबूला हो गए और भारत वालों को भली बुरी सुनाने लगे.

एक दूसरी बड़ी कानफ़रेन्स दिल्ली में हुई--करमी. पत्रकार कानफ़रेन्स (Working Journalists Conference) जिसकी सदारत मशहूर, अख़बार 'नेशनल हेरल्ड' के सम्पादक श्री चलापति राव ने की. अपने ढंग की यह पहली सभा थी जिसमें सही तरीक़े पर अख़बारी काम करने वालों ने अपनी माँग मुल्क के सामने पेश की और अपनी दिक़्क़तें भी बताईं.

कोरिया

कोरिया एक छोटा सा टापू चीन के उत्तर पूरब में है जो मंचूरिया से सटा हुआ है. उसके दो हिस्से हैं--उत्तर, दक्खिन और बीच में ३८ पड़ी रेखा है. उत्तर में एक हुकूमत थी जिसकी हमदर्दी रूस से है, दक्खिन में दूसरी हुकूमत थी जिसकी हमदर्दी अमरीका से है--अमरीका की फ़ौजें भी वहां थीं. कोरिया पर इस साल इतने बम गिरे कि हज़ारों लाखों जानें चली गईं, शहर के शहर नेस्त व नाबूद हो गए और एक से एक ज़्यादा हैवानी ज़्यादतियाँ की गई हैं. यू.एन.ओ. ने यह फ़ैसला किया कि उत्तर वालों ने दक्खिन पर हमला किया और वह इसीलिये दोशी ठहराए गए. इसलिये उनका मुक़ाबला करने के लिये यू.एन.ओ. की तरफ़ से एक फ़ौज भेजी गई जिसका बहुत बड़ा हिस्सा अमरीकन सिपाहियों का था

اُس کے دوران میں جو امریکہ کی نوتی پر هندستان پاکستان دی صرف سے تیکا کی گئی تو امریکہ کے اخبار آگ ببولہ هوگئے اور بهارت والوں کو بهلی بری سنانے لگے ۔

ایک دوسری بڑی کانفرنس دلی میں هوئی--کرمی پترکار کانفرنس (Working Journalists Conference) جس کی صدارت مشهور اخبار 'نیشنل هیرالڈ' کے سمپادک شری چلاپتی راؤ نے کی ۔ اپنے ڈھنگ کی یہ پہلی سبها تھی جسمیں صحیح طریقے پر اخباری کام کرنے والوں نے اپنی مانگ ملک کے سامنے پیش کی اور اپنی دقتیں بھی بتائیں ۔

کوریا

کوریا ایک چھوٹا سا ٹاپو چین کے اُتر پورب میں ہے جو منچوریا سے سٹا ہوا ہے ۔ اُس کے دو حصے ہیں--'اُتر' دکھن اور بیچ میں ۳۸ پڑی ریکھا ہے ۔ اُتر میں ایک حکومت تھی جسکی ہمدردی روس سے ہے' دکھن میں دوسری حکومت تھی جسکی ہمدردی امریکہ سے ہے--امریکہ کی فوج بھی وہاں تھی ۔ کوریا پر اس سال اتنے بم گرے کہ ہزاروں لاکھوں جانیں چلی گئیں' شہر کے شہر نیست و نابود ہوگئے اور ایک سے ایک زیادہ حیوانی زیادتیاں کی گئی ہیں ۔ یو ۔ این ۔ او ۔ نے یہ فیصلہ کیا کہ اُتر والوں نے دکھن پر حملہ کیا اور وہ اسی لئے دوشی ٹھہرائے گئے ۔ اس لئے اُن کا مقابلہ کرنے کے لئے یو ۔ این ۔ او ۔ کی طرف سے ایک فوج بھیجی گئی جسکا بہت بڑا حصہ امریکن سپاہیوں کا تھا

उनका संगठन अच्छा बताया जाता है जिसे, सरकार का कहना है, उसने दबा दिया है.

सोशलिस्ट पार्टी का दरजा काँगरेस के बाद दूसरे नम्बर का माना जाता है. उसका संगठन हर सूबे में मौजूद है और उसके चोटी के नेता देस के पुराने तपे हुए सिपाही हैं. मगर श्री साने गुरुजी और श्री युसुफ़ मेहर अली के उठ जाने से उसे ज़बरदस्त चोट पहुंची है.

सोशलिस्टों का कहना है कि काँगरेस गद्दी छोड़ दे, हम देस की बागडोर संभाल लेगें. जगह जगह चुनाव में सोशलिस्टों ने हिस्सा लिया है. बम्बई और ट्रावनकोर में इनकी तगड़ी जीत हुई है.

हिन्दू महासभा अनोखा राग अलापने लगी है. अभी पूना में उसका सालाना इजलास हुआ है जिसमें उसने पुराने अखंड भारत की मांग की है.

सिक्ख समाज में मास्टर तारा सिंह की गिरफ्तारी से काफ़ी हलचल थी. लेकिन उनमें आपस में मतभेद अब भी बना है.

अज़ादी के बाद से हिन्दुस्तान के अन्दर मुसलिम लीग तो बिल्कुल ठंडी पड़ गई है. अब वह अपनी जरूरत फ़ालतू समझ कर दूसरी पार्टियों में मिलने की कोशिश कर रही है.

कुछ कानफ़रेन्सें

आजकल कानफ़रेन्सों का तो जोर है. अगर देस की सब सभाओं वग़ैरा की सूची बनाने बैठें तो हैरान होकर काम छोड़ देना पड़ेगा. लेकिन एक आध कानफ़रेन्स की चर्चा कर देना जरूरी है. अक्तूबर के

اُن کا سنگھٹن اچھا بتایا جاتا ہے جسے، سرکار کا کہنا ہے، اُس نے دبا دیا ہے۔

سوشلسٹ پارٹی کا درجہ کانگریس کے بعد دوسرے نمبر کا مانا جاتا ہے۔ اُس کا سنگٹھن ہر صوبے میں موجود ہے اور اُسکے چوٹی کے نیتا دیس کے پرانے تپے ہوئے سپاہی ہوں۔ مگر شری سانے گرو جی اور شری یوسف مہر علی کے اُٹھ جانے سے اُسے زبردست چوٹ پہونچی ہے۔

سوشلسٹوں کا کہنا ہے کہ کانگریس گدی چھوڑ دے، ہم دیس کی باگ ڈور سنبھال لینگے۔ جگہ جگہ چناؤ میں سوشلسٹوں نے حصہ لیا ہے۔ بمبئی اور ترانکور میں اُن کی تگڑی جیت ہوئی ہے۔

ہندو مہا سبھا انوکھا راگ الاپنے لگی ہے۔ ابھی پونا میں اُس کا سالانہ اجلاس ہوا ہے جس میں اُس نے پرانے اکھنڈ بھارت کی مانگ کی ہے۔

سکھ سماج میں ماسٹر تارا سنگھ کی گرفتاری سے کافی ہلچل تھی۔ لیکن اُن میں آپس میں مت بھید اب بھی بنا ہے۔

آزادی کے بعد سے ہندوستان کے اندر مسلم لیگ تو بالکل ٹھنڈی پڑ گئی ہے۔ اب وہ اپنی ضرورت فالتو سمجھکر دوسری پارٹیوں میں ملنے کی کوشش کر رہی ہے۔

کچھ کانفرینسیں

آج کل کانفرنسوں کا تو زور ہے۔ اگر دیس کی سب سبھاؤں وغیرہ کی سوچی بنانے بیٹھیں تو حیران ہو کر کام چھوڑ دینا پڑیگا۔ لیکن ایک آدھ کانفرنس کی چرچا کر دینا ضروری ہے۔ اکتوبر کے مہینے

... मंजूर है. पाकिस्तान के मामले में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कांगरेस को आगाह किया कि अगर आपको मेरा रास्ता क़बूल नहीं है तो आप ख़ुशी से किसी दूसरे से अपनी तरह राय ले सकते हैं. कांगरेस की नई वर्किंग कमेटी का एलान नासिक के जलसे के २०-२५ रोज़ बाद हुआ. ख़ुशी है कि उसमें पंडित जवाहर लाल नेहरू शामिल हैं. आचार्य कृपालानी ने 'डिमाक्रेटिक फ्रन्ट' नाम से एक अलग दल कांगरेस के अन्दर बनाया है, बंगाल में डाक्टर प्रफुल्ल चन्द्र घोश वग़ैरा एक अलग दल बनाकर काँगरेस से अलग हो गए हैं. मद्रास के अन्दर श्री टी. प्रकाशम मिनिस्ट्रों के खिलाफ़ इलज़ाम लगा रहे हैं. जगह जगह कांगरेस में फूट है और सत्ता पाने की चाह है.

दूसरी पार्टियाँ

हमारे देस में आज एक आम रिवाज हो गया है कि रेल दुर्घटना हो या कहीं कुछ और उपद्रव हो तो वह कम्युनिस्टों के मत्थे मढ़ दिया जाता है. लेकिन यह जानते हुए भी हम यह नहीं कहते कि कम्युनिस्टों को जो प्रोत्साहन मिल रहा है उसका कारन देस की बदइन्तज़ामी और उसकी गिरती हुई हालत है.

ख़बर है कि हैदराबाद रियासत के उत्तर पूरबी हिस्से तिलन्गाना में कम्यूनिस्टों का काफ़ी ज़ोर है और सरकार भी उनकी वजह से अधिक परेशान रहती है. इधर उत्तर प्रदेश के पूरबी हिस्से में भी

دلایا گیا کہ دیس کا انتظام وہ جس طرح چاہتے ہیں ... منظور ہے . پاکستان کے معاملے میں پنڈت جواہرلال نہرو نے کانگریس کو آگاہ کیا کہ اگر آپکو میرا راستہ قبول نہیں ہے تو آپ خوشی سے کسی دوسرے سے اپنی طرح رائے لے سکتے ہیں . کانگریس کی نئی ورکنگ کمیٹی کا اعلان ناسک کے جلسے کے ۲۰—۲۵ روز بعد ہوا . خوشی ہے کہ اس میں پنڈت جواہر لال نہرو شامل ہیں . آچاریہ کرپالانی نے 'ڈیماکریٹک فرنٹ' نام سے ایک الگ دل کانگریس کے اندر بنایا ہے ' بنگال میں ڈاکٹر پرپھل چندر گھوش وغیرہ ایک الگ دل بنا کر کانگریس سے الگ ہوگئے ہیں . مدراس کے اندر شری ٹی . پرکاشم منسٹروں کے خلاف الزام لگا رہے ہیں . جگہ جگہ کانگریس میں پھوٹ ہے اور ستا پانے کی چاہ ہے .

دوسری پارٹیاں

ہمارے دیس میں آج ایک عام رواج ہوگیا ہے کہ ریل درگھٹنا ہو یا کہیں کچھ اور اپدرو ہو تو وہ کمیونسٹوں کے متھے مڑھ دیا جاتا ہے . لیکن یہ جانتے ہوئے بھی ہم یہ نہیں کہتے کہ کمیونسٹوں کو جو پروتساہن مل رہا ہے اس کا کارن دیس کی بدانتظامی اور اسکی گرتی ہوئی حالت ہے .

خبر ہے کہ حیدرآباد ریاست کے اتر پوربی حصے تلنگانہ میں کمیونسٹوں کا کافی زور ہے اور سرکار بھی ان کی وجہ سے ادھک پریشان رہتی ہے . ادھر اتر پردیش کے پوربی حصے میں بھی

भूकम्प आया कि उसकी सूरत ही नहीं पहचान में आती. हज़ारों की तादाद में जानें गई हैं, जानवर तो लाखों ख़तम हो गए होंगे और सम्पत्ति का नुक़सान हुआ सो अलग.

नासिक कांगरेस

जनता की बेचैनी के कारन उसकी बुद्धि पर असर पड़ता है. और उसका रंग उसकी सामाजिक और राजनीतिक हालत पर चढ़ता है. पैसे की कमी हो या ख़ूराक की—आज भारत में चरित्र का स्तर ही गिर गया मालूम होता है. इसका नमूना हमारी स्वराज संस्थाएं हैं. म्यूनिसिपल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, यूनिवर्सिटी कौंसिल, कांगरेस पार्टी—कोई भी क्यों न हो सब में विचित्र दल बन्दी चल रही है जिसका आधार जात पात, ऊँच नीच, स्वार्थ और परदमन है, सिद्धान्त नहीं. इन सबकी प्रतीक मानो हमारी कांगरेस नाम की संस्था बन गई है जो आज सब तरह के रोगों की शिकार है. दूसरे प्रान्तों में मिनिस्टरों का बनना हटना या मिनिस्ट्रियों का बदलना इसका सबूत है.

१९४८ के दिसम्बर में जयपुर कांगरेस के बाद से इस साल सितम्बर में कांगरेस का ५६ वां अधिवेशन नासिक में हुआ. कांगरेस प्रधान के चुनाव के लिये तीन उम्मीदवार थे—आचार्य कृपालानी, श्री शंकर राव देव और राज रिशी पुरशोत्तम दास टंडन. बहुत ज़ोरदार मुक़ाबला रहा जिसमें श्री टंडन जी की जीत हुई. इस चुनाव के बारे में तरह तरह की शिकायतें हैं जिनकी सचाई का फ़ैसला तो

بھونکمپ آیا کہ اُسکی صورت ہی نہیں پہچان میں آتی . ہزاروں کی تعداد میں جانیں گئی ہیں، جانور تو لاکھوں ختم ہوگئے ہونگے اور سمپتّی کا نقصان ہوا سو الگ .

ناسک کانگریس

جنتا کی بےچینی کے کارن اُسکی بدھی پر اثر پڑتا ہے. اور اُس کا رنگ اُسکی ساماجک اور راج نیتک حالت پر چڑھتا ہے . پیسے کی کمی ہو یا خوراک کی—آج بھارت میں چرتر کا استر ہی گر گیا معلوم ہوتا ہے . اِس کا نمونہ ہماری سوراج سنستھائیں ہیں . میونسپل بورڈ، ڈسٹرکٹ بورڈ، یونیورسٹی کونسل، کانگریس پارٹی—کوئی بھی کیوں نہ ہوں سب میں وچتر دل بندی چل رہی ہے جس کا آدھار جات پات، اُونچ نیچ، سوارتھ اور پردمن ہے، سدھانت نہیں . ان سب کی پرتیک مانو ہماری کانگریس نام کی سنستھا بن گئی ہے جو آج سب طرح کے روگوں کی شکار ہے . دوسرے پرانتوں میں منسٹروں کا بننا ہٹنا یا منسٹریوں کا بدلنا اِس کا ثبوت ہے .

۱۹۴۸ کے دسمبر میں جے پور کانگریس کے بعد سے اِس سال ستمبر میں کانگریس کا ۵٦ واں ادھیویشن ناسک میں ہوا . کانگریس پردھان کے چناؤ کے لئے تین اُمیدوار تھے—آچاریہ کرپالانی، شری شنکر راؤ دیو اور راج رشی پرشوتم داس ٹنڈن . بہت زور دار مقابلہ رہا جس میں شری ٹنڈن جی کی جیت ہوئی اس چناؤ کے بارے میں طرح طرح کی شکائتیں ہیں جنکی سچائی کا فیصلہ

फ़ैसला दे.

दुर्घटनायें

अंगरेज़ी की मशहूर मसल है कि मुसीबत अकेले नहीं आती. तो जहां सरकार की परेशानियों से जनता बेहाल रही है वहाँ दूसरी दुर्घटनाओं ने भी जनता को काफ़ी हैरान किया. अव्वल तो हम रेल की दुर्घटनाओं को लें. सैकड़ों आदमी इस साल मरे हैं. बड़ी बड़ी, ख़ास ख़ास रेलों पर दुर्घटनायें हुई हैं लेकिन क़ायदे से जांच एक की भी नहीं कराई गई. मुग़लसराय के पास एक इतनी बड़ी दुर्घटना हुई थी जिसके सामने बिहार की मशहूर दुर्घटना फीकी पड़ जाती है. इस मामले में जले पर नमक छिड़कने का काम हमारे रेलवे मिनिस्टर साहब ने यह कह कर किया कि हिन्दुस्तान में दुर्घटनायें ब्रिटेन व अमरीका के मुक़ाबले में कम ही होती हैं.

हवाई जहाज़ों की भी कई दुर्घटनायें हुईं जिनमें काफ़ी मौतें हुईं और दो रतन तो हम ने ऐसे खोए कि रह रह कर उनकी याद आ जाती है--डाक्टर शिवशंकरन पिल्ले--मशहूर गनित जानने वाले और श्री द्वारका नाथ कचरू, एक पत्रकार और राजकाजी युवक.

क़ुदरत ने भी अपनी तरफ़ से कोई कसर उठा नहीं रक्खी. बाढ़ों की एक तरफ़ ज़्यादती, दूसरी तरफ़ पानी का न बरसना आम चलन रहा. इसके अलावा १५ अगस्त को आसाम में तो ऐसे ज़ोर का

فیصلہ دے .

درگھٹنائیں

انگریزی کی مشہور مثل ہے کہ مصیبت اکیلے نہیں آتی. تو جہاں سرکار کی پریشانیوں سے جنتا بے حال رہی ہے وہاں دوسری درگھٹناؤں نے بھی جنتا کو کافی حیران کیا . اول تو ہم ریل کی درگھٹناؤں کو لیں . سیکڑوں آدمی اس سال مرے ہیں . بڑی بڑی، خاص خاص ریلوں پر درگھٹنائیں ہوئی ہیں لیکن قاعدے سے جانچ ایک کی بھی نہیں کرائی گئی مغل سرائے کے پاس ایک اتنی بڑی درگھٹنا ہوئی تھی جسکے سامنے بہار کی مشہور درگھٹنا پھیکی پڑجاتی ہے . اس معاملے میں جلے پر نمک چھڑکنے کا کام ہمارے ریلوے منسٹر صاحب نے یہ کہکر کیا کہ ہندستان میں درگھٹنائیں برٹین و امریکہ کے مقابلے میں کم ہی ہوتی ہیں .

ہوائی جہازوں کی بھی کئی درگھٹنائیں ہوئیں جن میں کافی موتیں ہوئیں اور دو رتن تو ہم نے ایسے کھوئے کہ رہ رہ کر اُنکی یاد آجاتی ہے— ڈاکٹر شیو شنکرن پلے—مشہور گنت جاننے والے اور شری دوارکا ناتھ کچرو، ایک پترکار اور راج کاجی یووک .

قدرت نے بھی اپنی طرف سے کوئی کسر اُٹھا نہیں رکھی . باڑھوں کی ایک طرف زیادتی، دوسری طرف پانی کا نہ برسنا عام چلن رہا . اسکے علاوہ ۱۵ اگست کو آسام میں تو ایسے زور کا

बर्दाश्त करना पड़ा. शक्कर के सिलसिले में श्री शिब्बन लाल सक्सेना का उपवास क़ाबिल ज़िक्र है.

सौ बातों की एक बात यह है कि आर्थिक हालत सन १९५० में बहुत ज़्यादा बिगड़ी हुई रही. इंगलैन्ड में जो हमारी धरोहर लड़ाई के ज़माने में जमा हो गई थी उसको भी हमने काफ़ी ख़र्च कर डाला.

बुनयादी हक़ों की छीछालेदर

शरनार्थी लोगों में असन्तोश हद से ज़्यादा है. मगर इस मामले में इस सच से इन्कार नहीं किया जायगा कि शरनार्थी सरकार का ज़रूरत से ज़्यादा भरोसा करते हैं. उनका एक बड़ा हिस्सा ख़ुद मेहनत करने से इनकार करता है लेकिन मांग पूरी करता है. मगर दूसरी तरफ़ सरकार ख़ुद अपने वायदे नहीं निभा सकी जिसके कारन पिछले शरनार्थी मन्त्री ने इस्तेफ़ा दे डाला और उनकी जगह एक दूसरे मुक़र्रर किये गए.

सरकार की परेशानी का सच्चा रूप तो ऐसी घटनाओं से मिलता है जो ब्रिटिश ज़माने में होती थीं तो हम अपना गला फाड़ फाड़ कर हर तरह से वावैला मचा डाला करते थे. जैसे सेलम की जेल में क़ैदियों पर गोली चलना, ग्वालियार में विद्यार्थियों के जलूस पर पुलिस का फ़ैर करना और लाठी चलाना, सिक्ख नेता मास्टर तारासिंह की गिरफ़तारी, बम्बई में कपड़े मिलों के मज़दूरों की हड़ताल में सरकार की चुप्पी. इनमें से बहुत से मामलों में

برداشت کرنا پڑا . شکر کے سلسلے میں شری شبن لال سکسینہ کا اُپواس قابل ذکر ہے .

سو باتوں کی ایک بات یہ ہے کہ آرتھک حالت سن ۱۹۵۰ میں بہت زیادہ بگڑی ہوئی رہی . انگلینڈ میں جو ہماری دھروھر لڑائی کے زمانے میں جمع ہو گئی تھی اُس کو بھی ہم نے کافی خرچ کر ڈالا .

بنیادی حقوں کی چھیچھا لیدر

شرنارتھی لوگوں میں اسنتوش حد سے زیادہ ہے . مگر اس معاملے میں اس سچ سے انکار نہیں کیا جائیگا کہ شرنارتھی سرکار کا ضرورت سے زیادہ بھروسہ کرتے ہیں . انکا ایک بڑا حصہ خود محنت کرنے سے انکار کرتا ہے لیکن مانگ پوری کرتا ہے . مگر دوسری طرف سرکار خود اپنے وعدے نہیں نبھا سکی جس کے کارن پچھلے شرنارتھی منتری نے استعفیٰ دے ڈالا اور اُن کی جگہ ایک دوسرے مقرر کئے گئے .

سرکار کی پریشانی کا سچا روپ تو ایسی گھٹناؤں سے ملتا ہے جو برٹش زمانے میں ہوتی تھیں تو ہم اپنا گلا پھاڑ پھاڑ کر ہر طرح سے واویلا مچا ڈالا کرتے تھے . جیسے سیلم کی جیل میں قیدیوں پر گولی چلنا، گوالیار میں ودیارتھیوں کے جلوس پر پولیس کا فیر کرنا اور لاٹھی چلانا، سکھ نیتا ماسٹر تارا سنگھ کی گرفتاری، بمبئی میں کپڑے ملوں کے مزدوروں کی ہڑتال میں سرکار کی چپی . ان میں سے بہت سے معاملوں میں باقاعدہ جانچ ہونی چاہئے تھی .

… से अनाज की जगह दूसरी फ़सलें उगानी पड़ें, (३) अगर पानी हवा वग़ैरा ऐसी तबाही लाएँ कि फ़सल पैदा ही न हो—जिनके कारन बाहर से मंगाया भी जा सकता है. हमें यक़ीन है कि यह इतनी बड़ी दरारें हैं कि फिर अनाज स्वावलम्बन की बात करना मज़ाक़ उड़ाना है.

अनाज के अलावा और चीज़ों की हालत भी बेहतर नहीं है. असली घी तो सूँघने तक को नहीं मिलता. बनस्पति का सब जगह बोलबाला है. अभी पार्लियामेन्ट में बनस्पति को रोकने का बिल पेश किया जाने वाला था मगर सरकार के यह इतमिनान दिलाने पर कि एक कमेटी बिठाकर इस मामले की जांच करा ली जायगी, वह बिल वापस ले लिया गया. कब कमेटी बैठेगी, कब और क्या फ़ैसला होगा, कब उस फ़ैसले पर अमल होगा—हो सकता है १९५१ इसी में निकल जाय.

अब ज़रा गुड़ को लीजिये. इसका भाव भी बढ़ा चढ़ा है. मगर एक कमाल की बात इस साल यह हुई कि सरकार ने ईख पेरने के कोल्हू चलाने की आज़ादी ही ख़तम कर दी. पहले लैसंस लो, फिर ईख पेर कर गुड़ बनाओ. शायद शक्कर मिल वालों के रोब में आ कर सरकार ने यह क़दम उठाया. मगर ख़ुशी की बात है कि जल्दी ही इसे वापस ले लिया वरना सारे देस में तूफ़ान ही मच जाता. सरकार ने शक्कर बाहर से मंगाने की सोची पर वक़्त पर चूक कर बाद में मंहगी शक्कर ख़रीदी जिसके कारन सरकार को काफ़ी घाटा

… عہد میں تین شرطیں جوڑ دی … رکھنے کی ضرورت پڑے ' (۲) اگر بیوپار کے وچار سے اناج کی جگہ دوسری فصلیں اگانی پڑیں ' (۳) اگر پانی ہوا وغیرہ ایسی تباہی لادیں کہ فصل پیدا ہی نہ ہو—جنکے کارن باہر سے منگایا بھی جا سکتا ہے . ہمیں یقین ہے کہ یہ اتنی بڑی درازیں ہیں کہ پھر اناج سواولمبن کی بات کرنا مذاق اُڑانا ہے .

اناج کے علاوہ اور چیزوں کی حالت بھی بہتر نہیں ہے . اصلی گھی تو سونگھنے تک کو نہیں ملتا . بنسپتی کا سب جگہ بول بالا ہے . ابھی پارلیامنٹ میں بنسپتی کو روکنے کا بل پیش کیا جانے والا تھا مگر سرکار کے یہ اطمینان دلانے پر کہ ایک کمیٹی بٹھا کر اس معاملے کی جانچ کرا لی جائیگی ' وہ بل واپس لے لیا گیا . کب کمیٹی بیٹھیگی ' کب اور کیا فیصلہ ہوگا ' کب اُس فیصلے پر عمل ہوگا — ہو سکتا ہے ۱۹۵۱ اسی میں نکل جائے .

اب ذرا گڑ کو لیجئے . اس کا بھاؤ بھی بڑھا چڑھا ہے . مگر ایک کمال کی بات اس سال یہ ہوئی کہ سرکار نے ایکھ پیرنے کے کولہو چلانے کی آزادی ہی ختم کر دی . پہلے لیسنس لو' پھر ایکھ پیر کر گڑ بناؤ . شاید شکر مل والوں کے رعب میں آکر سرکار نے یہ قدم اُٹھایا . مگر خوشی کی بات ہے کہ جلدی ہی اِسے واپس لے لیا ورنہ سارے دیس میں طوفان ہی مچ جاتا . سرکار نے شکر باہر سے منگانے کی سوچی پر وقت پر چوک کر بعد میں مہنگی شکر خریدی جس کے کارن سرکار کو کافی گھاٹا

साल के अन्दर निकालना चाहती है, बाक़ी बाहर से लेने की सोच रही है. मगर कौन माई का लाल ऐसा है जो हिन्दुस्तान की खेती, बिजली और सड़कों वग़ैरा की तरक़्क़ी के लिये अपनी जेब ख़ाली करेगा. सरकार ने सारी उम्मीदें अमरीका से लगा रखी हैं. सच तो यह है कि यह योजना असल में आस्ट्रेलिया और इंगलैन्ड ने हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, लंका, मलाया, बोर्नियो के हित की ख़ातिर बनाई है ताकि एक पंथ दो काज हों—ख़ुद अपने माल के एवज़ में अमरीका का डालर मिले और हिन्दुस्तान वग़ैरा पर एहसान रहे कि वहां की जनता को फ़ायदा पहुँचाया. अगर ऐसी योजनाओं से भारत का कुछ लाभ हो सकता होता तो फिर अमरीका तो प्रशान्त महा-सागर का पानी सुखाकर टोकियो (जनरल मैकआर्थर का सदर मुक़ाम) तक सड़क ही बना लेता.

ख़ुराक का सवाल

जब पैसा पास न हो, या अगर हो और चीज़ें मँहगी हों तो जनता को चैन कैसे मिल सकता है. हिन्दुस्तान के बाज़ारों में आज गेहूँ का ढाई मन का बोरा सौ रुपए में बिक रहा है. इसी आफ़त के कारन बिहार और मदरास में तो लोगों की हालत लबे दम हो गई और अकाल पड़ जाने की ख़बरें भी आने लगीं. और तो और, मध्य प्रदेस जैसे ग़ल्ले के धनी प्रदेस में भी अनाज की कमी पड़ गई है.

सरकार बहुत ज़ोरों से आन्दोलन चलाती है कि "ख़ूब अनाज पैदा करो" मगर अनाज बराबर बाहर से मंगाना पड़ रहा है. अगले

سال کے اندر نکالنا چاہتی ہے، باقی باہر سے لینے کی سوچ رہی ہے . مگر کون مائی کا لال ایسا ہے جو ہندستان کی کھیتی، بجلی اور سڑکوں وغیرہ کی ترقی کے لئے اپنی جیب خالی کریگا . سرکار نے ساری اُمیدیں امریکہ سے لگا رکھی ہیں . سچ تو یہ ہے کہ یہ یوجنا اصل میں آسٹریلیا اور انگلینڈ نے ہندستان، پاکستان، لنکا، ملایا، بورنیو کے ہت کی خاطر بنائی ہے تاکہ ایک پنتھ دو کاج ہوں — خود اپنے مال کے عوض میں امریکہ کا ڈالر ملے اور ہندستان وغیرہ پر احسان رہے کہ وہاں کی جنتا کو فائدہ پہونچایا . اگر ایسی یوجناؤں سے بھارت کا کچھ لابھ ہو سکتا ہوتا تو پھر امریکہ تو پرشانت مہا ساگر کا پانی سکھا کر ٹوکیو (جنرل میک آرتھر کا صدر مقام) تک سڑک ہی بنا لیتا .

خوراک کا سوال

جب پیسہ پاس نہ ہو، یا اگر ہو اور چیزیں مہنگی ہوں تو جنتا کو چین کیسے مل سکتا ہے . ہندستان کے بازاروں میں آج گیہوں کا ڈھائی من کا بورا سو روپے میں بک رہا ہے . اسی آفت کے کارن بہار اور مدراس میں تو لوگوں کی حالت لب دم ہوگئی اور کال پڑجانے کی خبریں بھی آنے لگیں . اور تو اور، مدھیہ پردیس جیسے غلے کے دھنی پردیس میں بھی اناج کی کمی پڑ گئی ہے .

سرکار بہت زوروں سے آندولن چلاتی ہے کہ "خوب اناج پیدا کرو" مگر اناج برابر باہر سے منگانا پڑ رہا ہے . اگلے

हिन्दुस्तान पर निगाह डाल तो इस बात से कोई भी इन्कार नहीं करेगा कि यह साल बहुत मुसीबत का गुज़रा. अनाज की कमी दिन दिन ज्यादा डरावना रूप लेती जाती है, दूसरी तरफ़ चीज़ों की क़ीमतें चढ़ती जा रही हैं. सन् १९३९ का एक रुपया आजके साढ़े चार रुपए के बराबर ख़रीद कर सकता था. भाव को बढ़ने से रोकने की सरकार ने काफ़ी कोशिश की, चोर बाज़ार ख़तम करने की भी कोशिश की, लेकिन सरकार की सारी कोशिशों का असर मुल्क पर कुछ नहीं होता.

माली हालत को सुधारने के लिये नेशनल प्लानिंग कमीशन इस साल बनाया गया जिसके बनने के बारे में अलग राय रखने के कारन उस वक़्त जो नई दिल्ली में ख़ज़ाना मन्त्री थे उन्होंने इस्तेफ़ा दे दिया. सरकारी मुहकमों के ख़र्चे घटने की जगह बढ़ रहे हैं, लोगों और डेलीगेशनों के बिदेस जाने का, सभाओं और जलसों का बाज़ार गरम है.

सूबों की सरकारें भी आर्थिक सवाल को मनमाने तरीक़े से हल करने की कोशिश कर रही हैं. स्कीमों के ढेर लग गए हैं. लाखों रुपया ऐसी स्कीमों में बहा दिया गया जो कुछ अर्से के बाद ख़तम कर दी गईं और हज़ारों रुपया तो इन स्कीमों की स्कीमिंग में ही डूब गया.

हाल ही में एक नई योजना—कोलम्बो योजना—पार्लियामेन्ट के अन्दर नए अर्थ मन्त्री ने पेश की है जिसमें १८४० करोड़ रुपए का ख़र्च है. इसमें से १००० करोड़ रुपए सरकार देस के अंदर से छै

ہندستان پر نگاہ ڈالیں تو اس بات سے کوئی بھی انکار نہیں کریگا کہ یہ سال بہت مصیبت کا گذرا ۔ اناج کی کمی دن دن زیادہ ڈراؤنا روپ لیتی جاتی ہے ۔ دوسری طرف چیزوں کی قیمتیں چڑھتی جا رہی ہیں ۔ سن ۱۹۳۹ کا ایک روپیہ آج کے ساڑھے چار روپے کے برابر خرید کر سکتا تھا ۔ بھاؤ کو بڑھنے سے روکنے کی سرکار نے کافی کوشش کی ' چور بازار ختم کرنے کی بھی کوشش کی ' لیکن سرکار کی ساری کوششوں کا اثر ملک پر کچھ نہیں ہوتا ۔

مالی حالت کو سدھارنے کے لئے نیشنل پلاننگ کمیشن اس سال بنایا گیا جس کے بننے کے بارے میں الگ رائے رکھنے کے کارن اس وقت جو نئی دلی میں خزانہ منتری تھے اُنہوں نے استعفیٰ دے دیا ۔ سرکاری محکموں کے خرچے گھٹنے کی جگہ بڑھ رہے ہیں ' لوگوں اور ڈیلیگیشنوں کے بدیس جانے کا ' سبھاؤں اور جلسوں کا بازار گرم ہے ۔

صوبوں کی سرکاریں بھی آرتھک سوال کو من مانے طریقے سے حل کرنے کی کوشش کر رہی ہیں ۔ اسکیموں کے ڈھیر لگ گئے ہیں لاکھوں روپیہ ایسی اسکیموں میں بہا دیا گیا جو کچھ عرصے کے بعد ختم کردی گئیں اور ہزاروں روپیہ تو اِن اسکیموں کی اسکیمنگ میں ہی ڈوب گیا ۔

حال ہی میں ایک نئی یوجنا — کولمبو یوجنا — پارلیامنٹ کے اندر نئے ارتھ منتری نے پیش کی ہے جسمیں ۱۸۴۰ کروڑ روپے کا خرچ ہے ۔ اسمیں سے ۱۰۰۰ کروڑ روپے سرکار دیس کے اندر سے چھہ

यू. एन. ओ. की तरफ़ से आस्ट्रेलिया के एक बुज़ुर्ग जज सर ओवेन डिक्सन आए और दो ढाई महीने तक दिल्ली, श्रीनगर और कराची की दौड़ भाग की मगर नतीजा कुछ नहीं निकला. लेकिन उन्होंने जो रिपोर्ट यू. एन. ओ. को दी है उससे यह साफ़ हो जाता है कि इस मामले में पहला क़सूर पाकिस्तान का है. कश्मीर का सवाल अब यों ही पड़ा है. यू. एन. ओ. में इस पर बहस होने वाली थी पर न हो सकी. शायद अगले साल हो.

कश्मीर का मसला तै न हो सकने की वजह से दोनों मुल्कों के व्योपारी सम्बन्ध भी बहुत कुछ बिगड़ गए. यहां से पाकिस्तान को कोयला नहीं दिया गया, वहां से यहां पटसन नहीं भेजी गई. इसके अलावा उनके रुपए की क़ीमत हमारे रुपए से अलग है जिसकी वजह से बहुत ही ज्यादा दुश्वारी जनता को होती है. यह सवाल इन्टर नेशनल मानीटरी फ़ंड की बैठक में तै होने वाला था मगर यूं ही पड़ा रह गया. इसी तरह से दूसरे सवाल—नहरों के पानी का सवाल और हिन्दुस्तान में आए हिन्दुओं की सम्पत्ति का सवाल भी लटके रह गए.

इस सिलसिले में एक ख़ास बात यह भी है कि जनवरी के महीने में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने नवाबज़ादा लियाक़त अली ख़ां को "आपस में नहीं लड़ेंगे" समझौता करने को कहा. इसकी बाबत चिट्ठी पत्री साल भर चलती रही लेकिन पाकिस्तान ऐसे समझौने की कोई

یو . این . او . کی طرف سے آسٹریلیا کے ایک بزرگ جج سر اوون ڈکسن آئے اور دو ڈھائی مہینے تک دلی، شری نگر اور کراچی کی دوڑ بھاگ کی مگر نتیجہ کچھ نہیں نکلا . لیکن اُنہوں نے جو رپورٹ یو . این . او . کو دی ہے اُس سے یہ صاف ہوجاتا ہے کہ اِس معاملے میں پہلا قصور پاکستان کا ہے . کشمیر کا سوال اب یوں ہی پڑا ہے . یو . این . او . میں اس پر بحث ہونے والی تھی پر نہ ہوسکی . شاید اگلے سال ہو .

کشمیر کا مسئلہ طے نہ ہو سکنے کی وجہ سے دونوں ملکوں کے بیوپاری سمبندھ بھی بہت کچھ بگڑ گئے . یہاں سے پاکستان کو کوئلہ نہیں دیا گیا، وہاں سے یہاں پٹسن نہیں بھیجی گئی . اِس کے علاوہ اُن کے روپے کی قیمت ہمارے روپے سے الگ ہے جس کی وجہ سے بہت ہی زیادہ دشواری جنتا کو ہوتی ہے . یہ سوال انٹرنیشنل مانیٹری فنڈ کی بیٹھک میں طے ہونے والا تھا مگر یوں ہی پڑا رہ گیا . اسی طرح سے دوسرے سوال—نہروں کے پانی کا سوال اور ہندستان میں آئے ہندوؤں کی سمپتی کا سوال بھی لٹکے رہ گئے .

اِس سلسلے میں ایک خاص بات یہ بھی ہے کہ جنوری کے مہینے میں پنڈت جواہر لال نہرو نے نواب زادہ لیاقت علی خاں کو "آپس میں نہیں لڑینگے" سمجھوتہ کرنے کو کہا . اِسکی بابت چٹھی پتری سال بھر چلتی رہی لیکن پاکستان ایسے سمجھوتے کی کوئی قدر نہیں سمجھتا . دلی سمجھوتے کے بعد بھی نواب

... हम होशियार कर गए थे.

पाकिस्तान से ताल्लुक़

प्रजातन्त्र को क़ायम हुए कुछ हफ़्ते भी नहीं बीते थे कि पूरबी पाकिस्तान से फिर बुरी ख़बरें आने लगीं जैसी कि १९४६ में आई थीं. सन १९५० की फ़रवरी और मार्च में पूरबी बंगाल से हिन्दू हज़ारों की तादाद में आने लगे. इसका असर हिन्दुस्तान के कुछ हिस्सों पर भी पड़ा. हालत संगीन थी, वक़्त नाज़ुक था. मगर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने मानो जादू कर दिया. पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री नवाबज़ादा लियाक़त अली ख़ाँ को बुलाया, देहली में दोनों की बात चीत हुई और ८ अप्रैल को दिल्ली समझौते पर दोनों प्रधान मन्त्रियों ने अपनी सही करके एक शान्ति की लहर दोनों देसों में दौड़ा दी. हमारी केन्द्री सरकार के दो बंगाली मिनिस्टरों को इससे सन्तोश नहीं था और दोनों ने इस्तीफ़े दे दिये. इस समझौते के बाद से हालत में बहुत फ़रक़ पड़ गया है और काफ़ी हिन्दू पूरबी पाकिस्तान वापस गए हैं. लेकिन यह मानना पड़ेगा कि पाकिस्तान में अभी सूरत वैसी नहीं है जैसी कि होनी चाहिये. इस समझौते की बिना पर हिन्दुस्तान में पाकिस्तान के अख़बार नवीस भी आए थे और दोनों देसों के सम्बंध काफ़ी बढ़े.

लेकिन हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच असली झगड़ा और बेलुत्फ़ी तो कश्मीर के मामले पर है. इसको सुलझाने के लिये

بیٹا — وہ اپنا فرض ادا کر کے ہمیں ہوشیار کر گئے تھے ۔

پاکستان سے تعلق

پرجا تنتر کو قائم ہوئے کچھ ہفتے بھی نہیں بیتے تھے کہ پوربی پاکستان سے پھر بری خبریں آنے لگیں جیسی کہ ۱۹۴۶ میں آئی تھیں ۔ سن ۱۹۵۰ کی فروری اور مارچ میں پوربی بنگال سے ہندو ہزاروں کی تعداد میں آنے لگے ۔ اس کا اثر ہندستان کے کچھ حصوں پر بھی پڑا ۔ حالت سنگین تھی، وقت نازک تھا ۔ مگر پنڈت جواہر لال نہرو نے مانو جادو کر دیا، پاکستان کے پردھان منتری نواب زادہ لیاقت علی خاں کو بلایا دہلی میں دونوں کی بات چیت ہوئی اور ۸ اپریل کو دلی سمجھوتے پر دونوں پردھان منتریوں نے اپنی سہی کرکے ایک شانتی کی لہر دونوں دیسوں میں دوڑا دی ۔ ہماری کیندری سرکار کے دو بنگالی منسٹروں کو اس سے سنتوش نہیں تھا اور دونوں نے استعفے دے دیئے ۔ اس سمجھوتے کے بعد سے حالت میں بہت فرق پڑ گیا ہے اور کافی ہندو پوربی پاکستان واپس گئے ہیں ۔ لیکن یہ ماننا پڑیگا کہ پاکستان میں ابھی صورت ویسی نہیں ہے جیسی کہ ہونی چاہئے ۔ اس سمجھوتے کی بنا پر ہندستان میں پاکستان کے اخبار نویس بھی آئے تھے اور دونوں دیسوں کے سمبندھ کافی بڑھے ۔

لیکن ہندستان اور پاکستان کے بیچ اصلی جھگڑا اور بے لطفی تو کشمیر کے معاملے پر ہے ۔ اسکو سلجھانے کے لئے

लिया जाय. मिस्र मांग करता था सूडान की और स्वेज़ नहर से अंगरेज़ी फ़ौजें हटने की. अफ़्रीक़ा के दक्खिन में गोरी सरकार काले हिन्दियों के पीछे हाथ धो कर पड़ी थी और एक के बाद एक ऐसे क़ानून बन रहे थे कि हिन्दी बिचारा कहीं का न रहे. योरप की हालत कुछ पनपी हुई दीखती थी. लड़ाई के ज़माने में जो वीरानी और तबाही वहां आई थी तब की चढ़ी हुई बेहाली अब अमरीकी पैसे की बदौलत कुछ कम हुई थी और चीज़ें अपने असली रंग पकड़ रही थीं. इंगलैन्ड के चेहरे पर भी ख़ुशी झलकने लगी थी और वह मारशल एड से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठा लेने की ताक़त लगा रहा था. अमरीका की तो कुछ पूछिये मत, पांचों उंगलियां घी में थीं. उन्हीं के एक फ़ौजी जनरल—मैकआर्थर साहब जापान पर हुकूमत कर रहे थे. रूस की ख़बरें कम आती हैं लेकिन वहाँ लोगों में अमन था और वह ज़ोरों के साथ अपने मक़सद की तैयारी में जुटे थे. हमारे प्रधान मन्त्री पंडित जवाहर लाल नेहरू उस साल नवम्बर में ही अमरीका से होकर लौटे थे जहाँ उनकी ख़ूब ख़ातिर की गई थी.

साल के शुरू में ही २६ जनवरी १९५० को वह घटना हुई जो दुनिया के इतिहास में हमेशा याद रहेगी—हिन्दुस्तान के आज़ाद और ख़ुदमुख़्तार प्रजातंत्र ने अपना जन्म लिया और इंडिया यानी भारत नाम का एक देस, एक राज, एक शक्ति दुनिया के सामने आई. इस मौक़े पर राष्ट्रपति के पद पर देस ने अपने रत्न बाबू राजेन्द्र प्रसाद को बिठाया. सारी दुनिया ने एक ठंडी साँस ली कि चलो अब

لیا جائے. مصر مانگ کرتا تھا سوڈان کی اور سوئز نہر سے انگریزی فوجوں ہٹنے کی. افریقہ کے دکھن میں گوری سرکار کالے هندیوں کے پیچھے هاتھ دھو کر پڑی تھی اور ایک کے بعد ایک ایسے قانون بن رہے تھے کہ هندی بچارا کہیں کا نہ رہے. یورپ کی حالت کچھ پنپی هوئی دیکھتی تھی. لڑائی کے زمانے میں جو ویرانی اور تباهی وهاں آئی تھی تب کی چڑھی هوئی بےحالی اب امریکی پیسے کی بدولت کچھ کم هوئی تھی اور چیزیں اپنے اصلی رنگ پکڑ رهی تھیں. انگلینڈ کے چہرے پر بھی خوشی جھلکنے لگی تھی اور وہ مارشل ایڈ سے زیادہ سے زیادہ فائدہ اُٹھا لینے کی طاقت لگا رہا تھا. امیریکہ کی تو کچھ پوچھئے مت، پانچوں اُنگلیاں گھی میں تھیں. اُنھی کے ایک فوجی جنرل—میک آرتھر صاحب جاپان پر حکومت کر رہے تھے. روس کی خبریں کم آتی هیں لیکن وهاں لوگوں میں امن تھا اور وہ زوروں کے ساتھ اپنے مقصد کی تیاری میں جٹے تھے. همارے پردهان منتری پنڈت جواهر لال نہرو اُس سال نومبر میں هی امریکہ سے هوکر لوٹے تھے جہاں اُن کی خوب خاطر کی گئی تھی.

سال کے شروع میں هی ۲۶ جنوری ۱۹۵۰ کو وہ گھٹنا هوئی جو دنیا کے اتہاس میں همیشہ یاد رهیگی—هندستان کے آزاد اور خود مختار پرجا تنتر نے اپنا جنم لیا اور انڈیا یعنی بھارت نام کا ایک دیس، ایک راج، ایک شکتی دنیا کے سامنے آئی. اس موقع پر راشٹرپتی کے پد پر دیس نے اپنے رتن بابو راجندر

सन १६५० पर नज़र डालने के पहले ज़रा १६४६ के ख़तम होते होते क्या सूरत थी यह भी सरसरी तौर से देख लें. हमारा देस जो अगस्त १६४७ में आज़ाद हो चुका था वहां अभी पुराने विधान व क़ानून के मुताबिक़ ही कारबार चलता था. अपना विधान बनगया था मगर लागू होना बाक़ी था. हिन्दुस्तान के पूरब में इन्डोनेशिया नाम का देस डच लोगों की हुकूमत से मुक्त हो चुका था और इन्डोनेशिया प्रजातन्त्र बन चुका था. इन्डोचीन में हो ची मँह (कम्युनिस्ट) और बाओदाई (राजशाही) के बीच छुट पुट जंग चल रही थी और फ़्रांस की सरकार का अमलदरामद था. आगे ऊपर चीन का विशाल मुल्क कई साल की लड़ाई के बाद अब कुछ चैन पा सका था और माउत्से तुंग की सरकार—लालचीनी सरकार—पूरी तरह चीन की मालिक हो गई थी. हिन्दुस्तान के पच्छिम में चलें—पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच कश्मीर के मामले में दिलशिकनी जो डेढ़ साल से चल रही थी जारी थी. इस सवाल पर यू. एन. ओ. ने जो एक कमीशन बिठलाया, वह अपनी रिपोर्ट यू. एन. ओ. को दे ही चुका था और मैकनाटन प्रस्ताव भी सामने आ चुके थे अफ़ग़ानिस्तान और आसपास एक अलग अफ़ग़ान प्रदेस—पख़्तूनिस्तान की मांग चल रही थी, और बादशाह ख़ाँ पाकिस्तानी सरकार के नज़रबन्द क़ैदी थे. अरब लीग की हालत हमेशा के जैसी—ऊपर से ढोल अन्दर से पोल—थी, इसराईल ज़ोर मार रहा था कि उसके वजूद को मान

ثابت ہوں ۔

سن ۱۹۵۰ پر نظر ڈالنے کے پہلے ذرا ۱۹۴۹ کے ختم ہوتے ہوتے کیا صورت تھی یہ بھی سرسری طور سے دیکھ لیں ۔ ہمارا دیس جو اگست ۱۹۴۷ میں آزاد ہو چکا تھا وہاں ابھی پرانے ودھان و قانون کے مطابق ہی کاربار چلتا تھا ۔ اپنا ودھان بن گیا تھا مگر لاگو ہونا باقی تھا ۔ ہندستان کے پورب میں انڈونیشیا نام کا دیس ڈچ لوگوں کی حکومت سے مکت ہو چکا تھا اور انڈونیشیا پرجا تنتر بن چکا تھا. انڈو چین میں ہوچی منہ (کمیونسٹ) اور باؤدائی (راج شاہی) کے بیچ چھٹ پٹ جنگ چل رہی تھی اور فرانس کی سرکار کا عمل در آمد تھا ۔ آگے اوپر چین کا وشال ملک کئی سال کی لڑائی کے بعد اب کچھ چین پا سکا تھا اور ماؤتسے تنگ کی سرکار — لال چینی سرکار—پوری طرح چین کی مالک ہو گئی تھی ۔ ہندستان کے پچھم میں چلیں—پاکستان اور ہندستان کے بیچ کشمیر کے معاملے میں دل شکنی جو ڈیڑھ سال سے چل رہی تھی جاری تھی ۔ اس سوال پر یو ۔ این ۔ او ۔ نے جو ایک کمیشن بٹھلایا تھا وہ اپنی رپورٹ یو ۔ این ۔ او ۔ کو دے ہی چکا تھا اور میکناٹن پرستاؤ بھی سامنے آچکے تھے ۔ افغانستان اور آس پاس ایک الگ افغان پردیس—پختونستان کی مانگ چل رہی تھی اور بادشاہ خاں پاکستانی سرکار کے نظر بند قیدی تھے ۔ عرب لیگ کی حالت ہمیشہ کے جیسی— اوپر سے ڈھول اندر سے پول— تھی، اسرائیل زور مار رہا تھا کہ اس کے وجود کو مان

सन् १९५०—एक नज़र

(भाई सुरेश राम भाई)

बीसवीं सदी अपनी ज़िन्दगी की मंज़िल की अधभर तक पहुँच गई. सन् १९५० के पहले वह पचास बरस काट चुकी थी और इस साल मानो करवट बदल कर दूसरे दौर की तैयारी में थी. शायद इसी बदलाव में धरती पर काफ़ी ज़ोर पड़ा और कम से कम हिन्दुस्तान के तो जितने अनमोल रतन इस साल दब गए उतने कभी नहीं गए थे. जीवन के हर मैदान से ही एक अव्वल दरजे का और बुलन्द पाए का सिपहसालार उठ गया—अख़बार नवीसों और लेखकों में डाक्टर सच्चिदानन्द सिन्हा, बैरिस्टरों और नेताओं में श्री सरत चन्द्र बोस, साहित्य और जन उभार के नायक श्री साने गुरूजी, नौजवानी और समाजवाद के नमूने श्री यूसुफ़ मेहर अली, किसानों के प्रान बाबा राम चन्द्र और स्वामी सहजानन्द, अपने सूबे के काम में मस्त श्री गोपीनाथ बार्दोलोई, राष्ट्र निर्माताओं में सरदार पटेल, संगीत कला में उस्ताद फ़ैयाज़ ख़ां, योगियों में श्री अरविन्द और महर्शियों में श्री रमन. हिन्दुस्तान के बाहर भी कई बड़ी बड़ी हस्तियां कूच कर गईं—जैसे प्रोफ़ेसर हैरल्ड लास्की, जनरल स्मट्स, मकैन्ज़ी किंग, लार्ड वेवेल. और इसी साल बीसवीं सदी ने मानो अपने जीते जागते अन्तक्करन—श्री बर्नार्डशा, को भी अपनी गोद में छिपा लिया. इन

سن ۱۹۵۰ — ایک نظر

(بھائی سریش رام بھائی)

بیسویں صدی اپنی زندگی کی منزل کی ادھ بھر تک پہونچ گئی . سن ۱۹۵۰ کے پہلے وہ پچاس برس کاٹ چکی تھی اور اِس سال مانو کروٹ بدل کر دوسرے دور کی تیاری میں تھی . شاید اِسی بدلاؤ میں دھرتی پر کافی زور پڑا اور کم سے کم هندستان کے تو جتنے انمول رتن اس سال دب گئے اُتنے کبھی نہیں گئے تھے. جیون کے ہر میدان سے ہی ایک اول درجے کا اور بلند پائے کا سپہ سالار اُٹھ گیا — اخبار نویسوں اور لیکھکوں میں ڈاکٹر سچدانند سنہا ' بیرسٹروں اور نیتاؤں میں شری سرت چندر بوس' ساھتیہ اور جن اُبھار کے نائک شری سانے گرو جی' نوجوانی اور سماج واد کے نمونے شری یوسف مہر علی' کسانوں کے پران بابا رام چندر اور سوامی سہجانند' اپنے صوبے کے کام میں مست شری گوپی ناتھ باردو لوئی' راشٹر نرماتاؤں میں سردار پٹیل' سنگیت کلا میں اُستاد فیاض خاں ' یوگیوں میں شری اروند اور مہرشیوں میں شری رمن . هندستان کے باہر بھی کئی بڑی بڑی ہستیاں کوچ کر گئیں — جیسے پروفیسر ھیرلڈ لاسکی' جنرل اسمٹس' میکنزی کنگ' لارڈ ویول . اور اسی سال بیسویں صدی نے مانو اپنے جیتے جاتے انتک کرن — شری برنارڈ شا کو بھی اپنی گود میں چھپا لیا . اِن

कार सारी दुनिया को सामने रख कर सोचना शुरू कर दें. उनकी यह झिझक बेकार है कि वह बहुत थोड़े हैं. हां, वह इस मंडप में बहुत थोड़े हैं पर न दिल्ली में बहुत थोड़े हैं और फिर हिन्दुस्तान में तो थोड़े हैं ही नहीं. उन्हें यह समझ ही लेना चाहिये कि दुनिया में उन जैसों की गिनती इतनी ज़्यादा है कि साल भर की मेहनत में सच्चे जी से लगातार काम करने पर दुनिया के ऐसे साहित्यकारों की गिनती करना मुशकिल हो जायगा जो सच्चे जी से यह चाहते हैं कि दुनिया एक है, दुनिया प्रेम से रहना चाहती है और इस दुनिया पर अहिंसा के हथियार से मानव हिंसा को जल्दी ही बहुत कम किया जा सकता है. तब साहित्यकार बहुत जल्दी इस दुनिया में इतनी चमक पैदा कर देंगे कि हिंसा का अंधेरा दूर होगा और दुनिया को आगे राह साफ़ दीखने लगेगी.

साहित्यकार भलाईकार हैं और उन्हें भलाई के लिये उठना ही चाहिये.

२४. १२. '५०. —भगवानदीन

(खुलासा तक़रीर सभापति, साहित्यकार परिशद, दिल्ली.)

کو سامنے رکھ کر سوچنا شروع کر دیں ۔ اُنکی یہ جھجھک بیکار ہے کہ وہ بہت تھوڑے ھیں ۔ ھاں، وہ اس منڈپ میں بہت تھوڑے ھیں پر نہ دلی میں بہت تھوڑے ھیں اور پھر ھندستان میں تو تھوڑے ھیں ھی نہیں ۔ اُنہیں یہ سمجھ ھی لینا چاھئے کہ دنیا میں اُن جیسوں کی گنتی اتنی زیادہ ھے کہ سال بھر کی محنت میں سچے جی سے لگاتار کام کرنے پر دنیا کے ایسے ساھتیہ کاروں کی گنتی کرنا مشکل ھو جائیگا جو سچے جی سے یہ چاھتے ھیں کہ دنیا ایک ھے، دنیا پریم سے رھنا چاھتی ھے اور اس دنیا پر اھنسا کے ھتھیار سے مانو ھنسا کو جلدی ھی بہت کم کیا جا سکتا ھے ۔ تب ساھتیہ کار بہت جلدی اس دنیا میں اتنی چمک پیدا کر دیں گے کہ ھنسا کا اندھیرا دور ھوگا اور دنیا کو آگے راہ صاف دیکھنے لگے گی ۔

ساھتیہ کار بھلائی کار ھیں اور اُنہیں بھلائی کے لئے اُٹھنا ھی چاھئے ۔

۲۴-۱۲-۵۰ —بھگوان دین

(خلاصہ تقریر سبھا پتی، ساھتیہ کار پریشد، دلی)

सुबह का भूला शाम तक घर लौट आए तो भूला नहीं माना जाता. अब तक का भूला हुआ मानव समाज आज अगर फिर अहिंसा की राह पर आजाए तो भूला हुआ नहीं माना जायगा. और इसे भी मानव समाज की ख़ुश क़िस्मती ही मानना चाहिये कि हिन्दुस्तान ऐसे समय में राष्ट्रीय पैमाने पर अहिंसा के प्रयोग से आज़ाद हुआ, जबकि इत्तफ़ाक़ से सारी दुनिया एक मोहल्ला और गाँव नहीं तो एक बड़ा क़स्बा बन चुकी है. आकाश और समय आज जितने पहले कभी नहीं सिकुड़े थे. पर मानव समाज की यह बदक़िस्मती ही समझना चाहिये कि आज जितनी स्वार्थचेतना और राष्ट्रचेतना भी अबसे पहले मानव में कभी नहीं जागी. वंश चेतना पहले वंशों को लड़ाती थी. राष्ट्र चेतना ने वंशों की लड़ाई कम की तो राष्ट्रों की लड़ाई छेड़ दी. और यों फिर बेहद वंशों को उजाड़ना शुरू कर दिया. राष्ट्र चेतना से मानव संहार बढ़ा, घटा नहीं, यानी आज राष्ट्रीयता के मद में मस्त कुछ राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को ख़तम करने में ज़रा भी आगा पीछा नहीं देखते. स्वार्थी साहित्यकार इस तरफ़ से ऐसी आँख फेरता है कि उधर का नुक़सान उसे कभी दिखाई नहीं देता. मानव चेतना से ही मानव संहार कम होगा.

साहित्यकारों की यह परिशद छोटी है अगर साहित्यकारों के दिल छोटे हैं. इसकी कारवाई कपूर बन कर उड़ सकती है अगर इस परिशद के सदस्यों के दिल में आत्मविश्वास न हो. यही परिशद बहुत बड़ी है अगर इसमें जमा हुए साहित्यकारों के दिल बड़े हैं और

صبح کا بھولا شام تک گھر لوٹ آئے تو بھولا نہیں مانا جاتا . اب تک کا بھولا ہوا مانو سماج آج اگر پھر اہنسا کی راہ پر آجائے تو بھولا ہوا نہیں مانا جائیگا . اور اِسے بھی مانو سماج کی خوش قسمتی ہی ماننا چاہئے کہ ہندستان ایسے سمے میں راشٹریہ پیمانے پر اہنسا کے پریوگ سے آزاد ہوا' جبکہ اتفاق سے ساری دنیا ایک محلہ اور گاؤں نہیں تو ایک بڑا قصبہ بن چکی ہے . آکاش اور سمے آج جتنے پہلے کبھی نہیں سکڑے تھے . پر مانو سماج کی یہ بد قسمتی ہی سمجھنا چاہئے کہ آج جتنی سوارتھ چیتنا اور راشٹر چیتنا بھی اب سے پہلے مانو میں کبھی نہیں جاگی . ونش چیتنا پہلے ونشوں کو لڑاتی تھی . راشٹر چیتنا نے ونشوں کی لڑائی کم کی تو راشٹروں کی لڑائی چھیڑ دی . اور یوں پھر بے حد ونشوں کو اُجاڑنا شروع کر دیا . راشٹر چیتنا سے مانو سنہار بڑھا' گھٹا نہیں' یعنی آج راشٹریتا کے مد میں مست کچھ راشٹر دوسرے راشٹر کو ختم کرنے میں ذرا بھی آگا پیچھا نہیں دیکھتے . سوارتھی ساہتیہ کار اس طرف سے ایسی آنکھ پھیرتا ہے کہ اُدھر کا نقصان اُسے کبھی دکھائی نہیں دیتا . مانو چیتنا سے ہی مانو سنہار کم ہوگا .

ساہتیہ کاروں کی یہ پریشد چھوٹی ہے اگر ساہتیہ کاروں کے دل چھوٹے ہیں. اس کی کاروائی کپور بن کر اُڑ سکتی ہے اگر اس پریشد کے سدسیوں کے دل میں آتم وشواس نہ ہو . یہی پریشد بہت بڑی ہے اگر اس میں جمع ہوئے ساہتیہ کاروں کے دل بڑے ہیں اور اُن

हुआ होता तो साहित्यकारों की इकट्ठी आवाज ने सदा-शान्ति की पक्की नीव जरूर डाल दी होती, और अगले दूसरे आन्दोलन से उस पर इमारत बननी शुरू हो जाती.

आज लड़ाई की जड़ में, हथियारों के कारखाने इतने नहीं काम कर रहे जितनी वह भड़काने वाली कविताएं जो कमजोर और कायर सिपाही को तोप के मुँह में सिर डालने को तैयार कर देती हैं. जितना वीर रस तीर, तलवार, तमंचे पर उंडेला गया अगर उसका हजारवां हिस्सा भी प्रेम प्यार से भरे सत्याग्रह पर छिड़का गया होता तो आज लड़ाई मुल्कों के बीच की नहीं, प्रान्तों के बीच की भी उठ गई होती. वह भी तो साहित्यकार ही थे जिन्होंने अरब के जंगली बद्दुओं को मक्का की यात्रा के महीनों में इतने ऊंचे दरजे का अहिंसक बना दिया था जितने ऊंचे दर्जे के अहिंसक महावीर और बुद्ध भी पैदा नहीं कर पाए. ऐसा क्यों नहीं हो पाया? महावीर और बुद्ध के भक्त साहित्यकारों ने चक्रवर्ती राजाओं का इतना गुनगान किया जितना महावीर और बुद्ध का नहीं. यह कह कर वह अपनी सफाई पूरी पूरी नहीं दे सकते कि उन्होंने चक्रवर्ती राजाओं के गुन गाकर उन्हें मरने से पहले पूरा अकिंचन और अहिंसावादी बना दिया था. मरने से पहले सन्यास लेने की बात कह कर जवानी के भोग विलास में कमी की आशा करना जैसे बेकार है वैसे ही चक्रवर्ती को आखिरी उमर में साधु बना दिखाकर जनता से यह आशा करना, कि वह जवानी में हिंसा से दूर भागेगी, बेकार है. साहित्यकारों की अब तक की ऐसी भूलें ही कारन हैं कि अहिंसा का प्रयोग राष्ट्रीय पैमाने पर न हो पाया, अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने की बात तो एक ओर.

نہیں ہوا . اگر یہ پرچار نہ ہوا ہوتا تو ساہتیہ‌کاروں کی اکٹھی آواز نے سدا شانتی کی پکی نیو ضرور ڈال دی ہوتی' اور اگلے دوسرے آندولن سے اُس پر عمارت بننی شروع ہوجاتی .

آج لڑائی کی جڑ میں' ہتھیاروں کے کارخانے اِتنے نہیں کام کر رہے جتنی وہ بھڑکانے والی کویتائیں جو کمزور اور کایر سپاہی کو توپ کے منہ میں سر ڈالنے کو تیار کر دیتی ہیں . جتنا ویر رس تیر' تلوار' طمنچے پر اُنڈیلا گیا اگر اُس کا ہزارواں حصہ بھی پریم پیار سے بھرے ستیاگرہ پر چھڑکا گیا ہوتا تو آج لڑائی ملکوں کے بیچ کی نہیں' پرانتوں کے بیچ کی بھی اُٹھ گئی ہوتی. وہ بھی تو ساہتیہ‌کار ہی تھے جنھوں نے عرب کے جنگلی بدوؤں کو مکہ کی یاترا کے مہینوں میں اتنے اونچے درجے کا اہنسک بنا دیا تھا جتنے اونچے درجے کے اہنسک مہاویر اور بدھ بھی پیدا نہیں کر پائے . ایسا کیوں نہیں ہوپایا ؟ مہاویر اور بدھ کے بھکت ساہتیہ‌کاروں نے چکرورتی راجاؤں کا اتنا گن گان کیا جتنا مہاویر اور بدھ کا نہیں . یہ کہکر وہ اپنی صفائی پوری پوری نہیں دے سکتے کہ اُنھوں نے چکرورتی راجاؤں کے گن گاکر اُنھیں مرنے سے پہلے پورا اکنچن اور اہنسا وادی بنا دیا تھا . مرنے سے پہلے سنیاس لینے کی بات کہکر جوانی کے بھوگ ولاس میں کمی کی آشا کرنا جیسے بیکار ہے ویسے ہی چکرورتی کو آخری عمر میں سادھو بنا دکھا کر جنتا سے یہ آشا کرنا' کہ وہ جوانی میں ہنسا سے دور بھاگیگی' بیکار ہے . ساہتیہ‌کاروں کی اب تک کی ایسی بھولیں ہی کارن ہیں کہ اہنسا کا پریوگ راشٹریہ پیمانے پر

सकता है, फिर लड़ाई छिड़ जाने पर दीपचंद की याद आ जाय, पर लड़ाई बन्द होने पर फिर वह भूल के गड्हे में पटक दिया जायगा. और कबीर ? वह तो आज हिन्दुस्तान में ही नहीं, हिन्दुस्तान से बाहर पहुँच गया है, और बड़े साहित्यकारों से टक्कर ले रहा है. और कबीर पढ़ा लिखा क्या था. उसी के शब्दों में 'मसि कागद छुओ नहीं' यानी उसने काग़ज़ और सियाही को हाथ नहीं लगाया था. इस पर भी अगर साहित्यकार अपने अन्दर की शक्ति को न समझ पाए तो इसमें सिरजनहार का क्या दोश ?

अमरीका के प्रसिडेन्ट ट्रूमैन ने ऐटम बम फेंकने की बात कह कर साहित्यकारों को चुनौती दी, और उन्होंने उस चुनौती को स्वीकार किया. सौ फ़ीसदी नहीं, पचहत्तर फ़ीसदी नहीं, पचास फ़ीसदी नहीं मुश्किल से दस फ़ीसदी साहित्यकारों ने ऐटम बम के इस्तेमाल के खिलाफ़ आवाज़ उठाई और नतीजा आंखों के सामने है. ऐटम बम को हिंसा द्वेश और अनीति से बना हुआ हाइड्रोजन बम या कास्मिक किरनें नहीं दबा सकतीं, पर अहिंसा, सार्व प्रेम और नीति से रचा साहित्य इस ऐटम बम का दम घोंट सकता है.

<u>शांति की आवाज़</u>

दूसरी ओर स्टाकहाम से उठी शांति की आवाज़ साहित्यकारों की दूसरी चीज़ है. यह भी काफ़ी सफल हो रही है. प्रचार यह भी हुआ है कि शांति आन्दोलन स्टालिन का उठाया हुआ है, उस स्टालिन का, जिसे कुछ लोग जंगजू, पक्के रूसभक्त और दुनिया भर का तानाशाह बनने का लोभी कहते हैं. इस प्रचार का असर कम

ہے ؛ ہوسکتا ہے` پھر لڑائی چھڑنے پر دیپ چند کی یاد آجائے' پر لڑائی بند ہونے پر پھر وہ بھول کے گڈھے میں پٹک دیا جائیگا . اور کبیر ؟ وہ تو آج ھندستان میں ہی نہیں' ھندستان سے باھر پہونچ گیا ہے' اور بڑے ساھتیہ‌کاروں سے ٹکر لے رہا ہے . اور کبیر پڑھا لکھا کیا تھا . اُسی کے شبدوں میں ' مسی کاگد چھوو نہیں ' یعنی اُس نے کاغذ اور سیاہی کو ھاتھ نہیں لگایا تھا . اس پر بھی اگر ساھتیہ‌کار اپنے اندر کی شکتی کو نہ سمجھ پائے تو اُس میں سرجن ہار کا کیا دوش ؟

امریکہ کے پریسیڈنٹ ٹرومین نے ایٹم بم پھینکنے کی بات کہکر ساھتیہ‌کاروں کو چنوتی دی' اور اُنہوں نے اُس چنوتی کو سویکار کیا . سو فیصدی نہیں' پچھتر فیصدی نہیں' پچاس فی‌صدی نہیں مشکل سے دس فی صدی ساھتیہ‌کاروں نے ایٹم بم کے استعمال کے خلاف آواز اُٹھائی اور نتیجہ آنکھوں کے سامنے ہے . ایٹم بم کو ھنسا دویش اور انیتی سے بنا ہوا ھائیڈروجن بم یا کاسمک کرنیں نہیں دبا سکتیں' پر اھنسا' سارو پریم اور نیتی سے رچا ساھتیہ اس ایٹم بم کا دم گھونٹ سکتا ہے .

<u>شانتی کی آواز</u>

دوسری اور اسٹاک ھام سے اُٹھی شانتی کی آواز ساھتیہ‌کاروں کی دوسری چیز ہے . یہ بھی کافی سپھل ہو رہی ہے . پرچار یہ بھی ہوا ہے کہ شانتی آندولن اسٹالن کا اُٹھایا ہوا ہے' اُس اسٹالن کا' جسے کچھ لوگ جنگجو' پکے روس بھکت اور دنیا بھر کا تانا شاہ بننے کا لوبھی کہتے ہیں . اس پرچار کا اثر کم

चित्र का ले लीजिय जिनमें यह दर्शाया गया था कि किस तरह भूके नंगे गांव के लोग सिपाही बन कर माल मलाई खा सकते और बढ़िया कपड़े पहन सकते हैं. इस चित्र नामधारी साहित्य ने हिन्दुस्तानियों की नजर उस ओर जाने ही नहीं दी कि उनको भूका और नंगा बनाया किसने? और वह क्यों मजबूर हो कर सिपाही के काम में लगे. यह किसको नहीं मालूम कि दुनिया के दूसरे महायुद्ध में हिन्दुस्तान के जिले लायलपुर ने कम सिपाही दिये. यानी इतने कम कि उनकी तादाद शायद तीन अंकों तक भी नहीं पहुँच पाई. यह क्यों? क्योंकि लायलपुर में लड़ने वाली जातियों के पास जमीनों के काफी मुरब्बे थे और उनको खाने पीने की कमी न थी. हां, हिसार जिले से सिपाही मिले. वहां की लड़ने वाली जातियां नंगी और भूकी थीं. वह पहली लड़ाई में शामिल नहीं हुई थीं, क्योंकि उस वक्त उनके पास खाने पीने की कमी न थी. हाँ तो, साहित्यकार की यह धोकेबाजी बड़े काम आ जाती है. तब क्या उनको साहित्यकार ही कहा जाय? जब वह हितकार ही नहीं तो साहित्यकार कैसा? वह हत्याकार है इसपे असाहित्यकार है. भाशा के लिहाज से कबीर की यह पंक्तियां—

झीनी झीनी बीनी चदरिया.
नौ दस मास साईं को लागे,
ठोक ठोक के बीनी चदरिया.

और दीपचंद की यह पंक्तियाँ —

बेटा हो जाना रंगरूट.
यहाँ नहीं मिलती फटी पनहियाँ,
वहाँ मिलेंगे बूट.

تو بےحد برے معلوم ہوں. مثال کےلئے لڑائی کے زمانے کے ان چتروں کو لے لیجئے جنمیں یہ درشا یا گیا تھا کہ کسطرح بھوکے ننگے گاؤں کے لوگ سپاہی بنکر مال ملائی کھا سکتے اور بڑھیا کپڑے پہن سکتے ہیں. اس چتر نام دھاری ساھتیہ نے ہندستانیوں کی نظر اُس اور جانے ہی نہیں دی کہ اُن کو بھوکا اور ننگا بنایا کس نے؟ اور وہ کیوں مجبور ہوکر سپاہی کے کام میں لگے. یہ کسکو نہیں معلوم کہ دنیا کے دوسرے مہا یدھ میں ہندستان کے ضلع لائل پور نے کم سپاہی دیئے. یعنی اتنے کم کہ اُن کی تعداد شاید تین انکوں تک بھی نہیں پہونچ پائی. یہ کیوں؟ کیونکہ لائل پور میں لڑنے والی جاتیوں کے پاس زمینوں کے کافی مربعے تھے اور اُن کو کھانے پینے کی کمی نہ تھی. ہاں، حصار ضلع سے سپاہی ملے. وہاں کی لڑنے والی جاتیاں ننگی اور بھوکی تھیں. وہ پہلی لڑائی میں شامل نہیں ہوئی تھیں، کیونکہ اُس وقت اُن کے پاس کھانے پینے کی کمی نہ تھی. ہاں تو، ساہتیہ‌کار کی یہ دھوکے بازی بڑے کام آجاتی ہے. تب کیا اُنکو ساھتیہ‌کار ہی کہا جائے؟ جب وہ ہتکار ہی نہیں تو ساھتیہ‌کار کیسا؟ وہ ہتیاکار ہے اس سے اساھتیہ‌کار ہے. بھاشا کے لحاظ سے کبیر کی یہ پنکتیاں—

جھیلی جھیلی بینی چدریا.
نو دس ماس سائیں کو لاگے،
ٹھوک ٹھوک کے بینی چدریا.

اور دیپ چند کی یہ پنکتیاں:—

بیٹا ہوجانا رنگ روٹ.
یہاں نہیں ملتی پھٹی پنہیاں،

के सब साहित्यकार मिल कर कल यह आवाज उठा दें कि लड़ाई
से बढ़कर कोई गुनाह नहीं तो लड़ाई रुक सकती है, बन्द हो सकती
है और अगर उस आवाज को साहित्यकार गांव गांव और घर-
घर पहुंचा दें तो मुल्कों की बड़ी लड़ाई हमेशा के लिये धरती से उठ
जा सकती है. साहित्यकार ऐसा क्यों नहीं करते ? इसका एक
कारन तो यह है कि वह अपने अपने मुल्क के स्वार्थ में इतने भीगे
हुए हैं कि दूसरे मुल्क के लिये उनके दिल में कोई जगह ही नहीं रह
गई. दूसरा कारन यह है कि वह अपने अन्दर उस बड़ी शक्ति का
विश्वास ही नहीं कर पाते जो यह चमत्कार दिखा सकती है.

साहित्यकार यह अच्छी तरह समझता है कि लड़ाई ख़ाली
हथियारों से नहीं जीती जाती. अगर ऐसा होता तो जरमनी की जीत
दूसरी लड़ाई के शुरू होने के छै महीने बाद ही हो गई होती. वह
तो दो बरस सारे योरप पर और कुछ अफ्रीका पर अपनी जीत का
डंका बजा कर ऐसा पिटा कि आज पांव तले पड़ा सिसक रहा है.
और यही हाल जापान का हुआ. ग़लत या सही बरतानिया, अमरीका
और कुछ हिन्दुस्तान के साहित्यकारों ने मिल कर यह साबित कर
दिया था कि हिटलर और नाज़ी पार्टी न न्याय पर हैं और न उतनी
इंसानियत से काम ले रहे हैं जितनी एक सिपाही में होनी चाहिये.
और यही जापान के साथ किया गया. तब क्या यह समझ में नहीं
आ सकता कि लड़ाई में जीत ज़ुल्म और लूट मार की नहीं हुई,
जीत हुई दया और प्रेम की या दूसरे लफ्ज़ों में अहिंसा की.

स्वार्थी साहित्यकार मौक़े का फ़ायदा उठाकर ऐसे काम कर जाता

کے سب ساہتیہ کار ملکر کل یہ آواز اُٹھا دیں کہ لڑائی سے بڑھکر
کوئی گناہ نہیں تو لڑائی رک سکتی ہے' بند ہو سکتی ہے
اور اگر اُس آواز کو ساہتیہ کار گاؤں گاؤں اور گھر گھر پہونچا دیں
تو ملکوں کی بڑی لڑائی ہمیشہ کے لئے دھرتی سے اُٹھ جاسکتی
ہے . ساہتیہ کار ایسا کیوں نہیں کرتے ؟ اس کا ایک کارن تو یہ ہے
کہ وہ اپنے اپنے ملک کے سوارتھ میں اتنے بھیگے ہوئے ہیں کہ دوسرے
ملک کے لئے اُنکے دل میں کوئی جگہ ہی نہیں رہ گئی . دوسرا
کارن یہ ہے کہ وہ اپنے اندر اُس بڑی شکتی کا وشواس ہی نہیں کر
پاتے جو یہ چمتکار دکھا سکتی ہے .

ساہتیہ کار یہ اچھی طرح سمجھتا ہے کہ لڑائی خالی ہتھیاروں
سے نہیں جیتی جاتی . اگر ایسا ہوتا تو جرمنی کی جیت دوسری
لڑائی کے شروع ہونے کے چھ مہینے بعد ہی ہوگئی ہوتی . وہ تو دو
برس سارے یورپ پر اور کچھ افریقہ پر اپنی جیت کا ڈنکا بجا کر
ایسا پٹا کہ آج پاؤں تلے پڑا سسک رہا ہے . اور یہی حال جاپان
کا ہوا . غلط یا صحیح برطانیہ امریکہ اور کچھ ہندستان کے ساہتیہ
کاروں نے مل کر یہ ثابت کر دیا تھا کہ ہٹلر اور نازی پارٹی نہ
نیائے پر ہیں اور نہ اُتنی انسانیت سے کام لے رہے ہیں جتنی ایک
سپاہی میں ہونی چاہئے . اور یہی جاپان کے ساتھ کیا گیا . تب
کیا یہ سمجھ میں نہیں آسکتا کہ لڑائی میں جیت ظلم اور
لوٹ مار کی نہیں ہوئی' جیت ہوئی دیا اور پریم کی یا دوسرے
لفظوں میں اہنسا کی .

سوارتھی ساہتیہ کار موقعے کا فائدہ اُٹھا کر ایسے کام کر جاتا ہے

तरह भले नहीं माने जा सकते. साहित्यकार अपने पथ के मोह में इतना फंसता है कि उसे यह याद ही नहीं रहता कि वह किससे क्या काम करवा रहा है. पंथों और गिरोहों के जाल में फंसे साहित्यकार कभी तो ऐसी ऐसी बेतुकी बात कह जाते हैं जिसके लिये पंथ के समझदार आदमियों को बहुत शर्मिन्दा होना पड़ता है और फिर रामायन और महाभारत जैसे पवित्र ग्रंथों पर कभी कभी किसी को ऐसी कड़ी आलोचना करनी पड़ती है जिसकी वजह से समाज के कोरे भक्तों में बेमतलब की भड़क पैदा हो जाती है.

साहित्यकार की ज़िम्मेदारियाँ

साहित्यकार को यह जानना चाहिये कि उसकी ज़िम्मेदारियां बहुत हैं और यह बहुत ज़िम्मेदारियां समाज ने उसके सिर यों ही नहीं थोप दीं. समाज साहित्यकार की ताक़त से ख़ूब वाक़िफ़ है. वह दिन को रात और रात को दिन कहने के लिये जनता को मजबूर कर सकता है. अब यह उनके हाथ का काम है कि वह दिन को दिन कहलवाएँ या दिन को रात. अगर साहित्यकारों ने दुनिया की पहली और दूसरी लड़ाई शुरू होने से पहले अपनी क़लम को रोका होता, अपनी इंद्रियों को क़ाबू में रखकर और अपने मन के घोड़े को लगाम लगाकर लिखा होता तो सिर्फ़ इतना ही न होता कि पहली और दूसरी लड़ाई अमल में ही न आतीं बल्कि यह भी होता कि बहुत से फ़ौजी हथियारों पर यह पाबन्दी लग जाती कि उनका इस्तेमाल आदमियों के मारने के काम में न किया जाय, सिर्फ़ जानवरों तक ही महदूद रखा जाय. जब नोबेल इनामों में शान्ति का इनाम मौजूद है तब साहित्यकारों को वह विश्वास हो ही जाना चाहिये कि अगर दुनिया

طرح بھلے نہیں مانے جا سکتے۔ ساھتیہ کار اپنے پنتھ کے موہ میں اتنا پھنستا ھے کہ اُسے یہ یاد ھی نہیں رھتا کہ وہ کس سے کیا کام کروا رھا ھے۔ پنتھوں اور گروھوں کے جال میں پھنسے ساھتیہ کار کبھی تو ایسی ایسی بے تکی بات کہہ جاتے ھیں جسکے لئے پنتھ کے سمجھدار آدمیوں کو بہت شرمندہ ھونا پڑتا ھے اور پھر رامائن اور مہا بھارت جیسے پوتر گرنتھوں پر کبھی کبھی کسی کو ایسی کڑی آلوچنا کرنی پڑتی ھے جسکی وجہ سے سماج کے کورے بھگتوں میں بے مطلب کی بھوک پیدا ھوجاتی ھے۔

ساھتیہ کار کی ذمے داریاں

ساھتیہ کار کو یہ جاننا چاھئے کہ اُس کی ذمے داریاں بہت ھیں اور یہ بہت ذمے داریاں سماج نے اُس کے سر یوں ھی نہیں تھوپ دیں۔ سماج ساھتیہ کار کی طاقت سے خوب واقف ھے۔ وہ دن کو رات اور رات کو دن کہنے کے لئے جنتا کو مجبور کر سکتا ھے۔ اب یہ اُن کے ھاتھ کا کام ھے کہ وہ دن کو دن کہلوائیں یا دن کو رات۔ اگر ساھتیہ کاروں نے دنیا کی پہلی اور دوسری لڑائی شروع ھونے سے پہلے اپنی قلم کو روکا ھوتا، اپنی اِندریوں کو قابو میں رکھ کر اور اپنے من کے گھوڑے کو لگام لگا کر لکھا ھوتا تو صرف اتنا ھی نہ ھوتا کہ پہلی اور دوسری لڑائی عمل میں ھی نہ آتیں بلکہ یہ بھی ھوتا کہ بہت سے فوجی ھتھیاروں پر یہ پابندی لگ جاتی کہ اُن کا استعمال آدمیوں کے مارنے کے کام میں نہ کیا جائے، صرف جانوروں تک ھی محدود رکھا جائے۔ جب نوبل انعاموں میں شانتی کا انعام موجود ھے تب ساھتیہ کاروں کو یہ وشواس ھو ھی جانا چاھئے کہ اگر دنیا

साहित्यकार का भीतरी रोग बढ़ता जाता है वैसे वैसे बाहरी द्वेष
की आग ज्यादा ज्यादा बढ़ती चली जाती है, इसलिये वह साहित्य-
कार जो हित करने के लिये खड़ा हुआ था दुनिया का अहित ज्यादा
कर देता है. साहित्यकार ऐसा खोटा रास्ता फिर क्यों अपनाता है ?

यह मैं नहीं मानता कि साहित्यकार यह नहीं जानता कि आदमी
के अन्दर की बुराइयां द्वेष (नफ़रत) की चिनगारी से बारूद की तरह
भड़कने के लिये तैयार रहती हैं, और अगर वह इतना नहीं जानता
तो साहित्यकार होने का अधिकारी नहीं. मानना यही पड़ेगा कि
साहित्यकार जान बूझ कर उन बुराइयों को भड़काता है. ऐसा वह
इसलिये करता है कि उसे अपनी मेहनत के पेड़ में तुरत फल फलते
दिखाई देता है. ठीक या नाठीक हमें यह बताया गया है कि शिवा-
बावनी के बावन कवित्त सुनकर शिवाजी लड़ने के लिये तैयार हो
गए थे. साहित्यकार के लिये यह बात कितनी ललचाने वाली है. हो
सकता है शिवा बावनी वाली बात सच्ची न हो पर यह बात सच है
कि वीररस की कविता इतनी असरदार हो सकती है कि वह बहुत
जल्दी कमज़ोर और कायर दोनों को, सिर्फ़ लड़ाई के लिये नहीं, मर
मिटने के लिये तैयार कर दे. जिसने सन् ४६-४७ के दंगों के दिनों
कट्टर हिन्दू व मुस्लिम पत्रों को सिलसिलेवार पढ़ा है और उनमें
निकले हुए कारटूनों को देखा है वह इस बात का अन्दाज़ा लगा
सकता है. सचमुच आदमी के अन्दर रहने वाला गुस्सा, घमंड,
मक्कारी और लालच आसानी से भड़काए जा सकते हैं. इतना ही
... पुरानी किताबों में भी जहां जहां ऋद्धि सिद्धि का ज़िक्र आया है

ساہتیہ کار کا بھیتری روگ بڑھتا جاتا ہے ویسے ویسے باہری دویش
کی آگ زیادہ زیادہ بڑھتی چلی جاتی ہے، اس لئے وہ ساہتیہ کار جو
ہت کرنے کے لئے کھڑا ہوا تھا دنیا کا اہت زیادہ کردیتا ہے ۔ ساہتیہ کار
ایسا کھوٹا راستہ پھر کیوں اپناتا ہے ؟

یہ میں نہیں مانتا کہ ساہتیہ کار یہ نہیں جانتا کہ آدمی کے اندر
کی برائیاں دویش (نفرت) کی چنگاری سے بارود کی طرح بھڑکنے کے لئے تیار
رہتی ہیں، اور اگر وہ اتنا نہیں جانتا تو ساہتیہ کار ہونے کا ادھیکاری
نہیں۔ ماننا یہی پڑیگا کہ ساہتیہ کار جان بوجھ کر اُن برائیوں کو بھڑ
کاتا ہے ۔ ایسا وہ اس لئے کرتا ہے کہ اُسے اپنی محنت کے پیڑ میں
ترت پھل پھلتے دکھائی دیتا ہے ۔ ٹھیک یا ناٹھیک ہمیں یہ بتایا
گیا ہے کہ شیوا باونی کے باون کوِت سن کر شیواجی لڑنے کے لئے
تیار ہوگئے تھے ۔ ساہتیہ کار کے لئے یہ بات کتنی للچانے والی ہے ۔
ہوسکتا ہے شیوا باونی والی بات سچی نہ ہو پر یہ بات سچ ہے کہ
ویر رس کی کویتا اتنی اثردار ہوسکتی ہے کہ وہ بہت جلدی کمزور
اور کایر دونوں کو، صرف لڑائی کے لئے نہیں، مرمٹنے کے لئے تیار
کردے ۔ جس نے سن ۴۶-۴۷ کے دنگوں کے دنوں کٹر ہندو و مسلم
پتروں کو سلسلے وار پڑھا ہے اور اُن میں نکلے ہوئے کارٹونوں کو دیکھا
ہے وہ اس بات کا اندازہ لگا سکتا ہے ۔ سچ مچ آدمی کے اندر رہنے
والا غصہ، گھمنڈ، مکاری اور لالچ آسانی سے بھڑکائے جاسکتے ہیں ۔
اتنا ہی نہیں، پرانی کتابوں میں بھی جہاں جہاں ردھی سدھی کا ذکر

समाज के बन जावें तो न केवल तीसरी लड़ाई रुक जावेगी बल्कि 'दुनिया की लड़ाई' का ख़याल ही इस धरती से उठ जायगा.

साहित्यकार यह क्यों नहीं सोचता कि वह छोटे गिरोह का बन कर इतना बड़ा नहीं हो सकता जितना बड़े गिरोह का बनकर हो सकता है, यह उसकी निरी झिझक है कि वह आगे बढ़ने में घबराता है. छोटे और बड़े गिरोह में छोटे बड़े होने के सिवा कोई और अन्तर नहीं होता. सारी दुनिया को भाई मानकर लिखने में दो चार दिन ही क़लम अटकेगी उसके बाद वह इस तेज़ी से दौड़ेगी कि साहित्यकार को अपने ऊपर ही अचरज होने लगेगा. 'सब से प्रीत' की लीला ही ऐसी है.

स्वार्थ, प्रकाश की ओट

साहित्यकार इस बात को अच्छी तरह समझता है कि स्वार्थ आत्मविश्वास के प्रकाश के चारों तरफ़ एक ऐसी ओट है जो विश्वास की चाल को रोक देती है, इसलिये जिस साहित्यकार के स्वार्थ का घेरा जितना छोटा होता है उसका साहित्य भी उतना ही कम असरदार होता है. फिर न जाने क्यों साहित्यकार यह सब जानते हुए न अपना घेरा बढ़ाता है, न उस ओट को ढाने की सोचता है. ओट कोई बुरी चीज़ नहीं अगर वह सिर्फ़ सीमा बताने वाली हो. किसी साहित्यकार की पहुँच अगर दूर तक नहीं है तो यह बुरी बात नहीं. फिर इस परिधि, सीमा और ओट की बुराई क्यों ? असल में परिधि, सीमा और ओट वाले साहित्यकार सौ पीछे सौ ऐसे ही मिलते हैं जो सीमा के भीतर की चीज़ों को एक निगाह से देखते हैं और सीमा से बाहर की चीज़ों को दूसरी निगाह से. इतना ही नहीं, जैसे जैसे ऐसे

سماج کے بن جاویں تو نہ کیول تیسری لڑائی رک جاویگی بلکہ 'دنیا کی لڑائی' کا خیال ہی اِس دھرتی سے اُٹھ جائیگا .

ساہتیہ‌کار یہ کیوں نہیں سوچتا کہ وہ چھوٹے گروہ کا بن کر اِتنا بڑا نہیں ہو سکتا جتنا بڑے گروہ کا بنکر ہوسکتا ہے' یہ اس کی نری جھجھک ہے کہ وہ آگے بڑھنے میں گھبراتا ہے . چھوٹے اور بڑے گروہ میں چھوٹے بڑے ہونے کے سوا کوئی اَور انتر نہیں ہوتا . ساری دنیا کو بھائی مان کر لکھنے میں دو چار دن ہی قلم اٹکیگی اُس کے بعد وہ اِس تیزی سے دوڑیگی کہ ساہتیہ کار کو اپنے اوپر ہی اچرج ہونے لگیگا . 'سب سے پریت کی لیلا ہی ایسی ہے .

سوارتھ پرکاش کی اوٹ

ساہتیہ کار اس بات کو اچھی طرح سمجھتا ہے کہ سوارتھ آتم وشواس کے پرکاش کے چاروں طرف ایک ایسی اوٹ ہے جو وشواس کی چال کو روک دیتی ہے' اس لئے جس ساہتیہ کار کے سوارتھ کا گھیرا جتنا چھوٹا ہوتا ہے اُس کا ساہتیہ بھی اُتنا ہی کم اثردار ہوتا ہے . پھر نہ جانے کیوں ساہتیہ‌کار یہ سب جانتے ہوئے نہ اپنا گھیرا بڑھاتا ہے' نہ اُس اوٹ کوڈھانے کی سوچتا ہے . اوٹ کوئی بری چیز نہیں اگر وہ صرف سیما بتانے والی ہو . کسی ساہتیہ کار کی پہونچ اگر دور تک نہیں ہے تو یہ بری بات نہیں . پھر اِس پریدھی' سیما اور اوٹ کی برائی کیوں؟ اصل میں پریدھی' سیما اور اوٹ والے ساہتیہ کار سو پیچھے سو ایسے ہی ملتے ہیں جو سیما کے بھیتر کی چیزوں کو ایک نگاہ سے دیکھتے ہیں اور سیما سے باہر کی چیزوں کو دوسری نگاہ سے . اتنا ہی نہیں' جیسے جیسے ایسے

अपने बच्चे से होता है. बन्दर अपने मरे बच्चे को छाती से लगाये फिरता है. साहित्यकार अपने मुल्क, धर्म और समाज की भलाई सोच सकता है सही पर यह मानकर कि उसका मुल्क, समाज, धर्म और गिरोह मानव समाज का अंग है. कौन साहित्यकार है जो यह नहीं जानता कि आज कोई मुल्क अपने आप में इतना पूरा नहीं है कि दूसरे मुल्कों की मदद के बिना सुखी और जीता रह सके. हो सकता है आज अमरीका का कोई साहित्यकार यह कह बैठे कि उस का मुल्क अमरीका ऐसा है जिसे किसी बात के लिये दूसरे मुल्कों की तरफ़ ताकना नहीं पड़ेगा. और अगर हम उसकी बात को बिलकुल सच मान लें तब भी अमरीका के साहित्यकार के पास इस सवाल का क्या जवाब है कि अमरीका क्यों अपनी बनी हुई चीज़ों के लिये दुनिया भर में बाज़ार ढूँढने भागता फिरता है और जगह जगह अपने हवाई अड्डे बनाने की फ़िक्र रखता है? और कुछ न भी सही, कम से कम, अमरीका अपने मुल्क के बचाव की ख़ातिर दूसरे मुल्कों की मदद की जरूरत रखता है. जब अमरीका जैसे मुल्क का यह हाल है और अमरीका में रहने वाले साहित्यकार की यह हालत है तब और मुल्कों का तो कहना ही क्या! इसलिये जब जब साहित्यकार अपने आपको किसी एक मुल्क से जोड़ बैठता है तब तब इतना ही नहीं होता कि उसके साहित्य में साहित्य की जान नहीं रह जाती बल्कि उसके साहित्य में कुसाहित्य की सारी बुराइयाँ आ जाती हैं. आज जो कुछ हो रहा है वह साहित्यकारों के इस बानर मोह का ही

اپنے بچے سے ہوتا ہے . بندر اپنے مرے بچے کو چھاتی سے لگائے پھرتا ہے . ساھتیہ کار اپنے ملک، دھرم اور سماج کی بھلائی سوچ سکتا ہے سہی پر یہ مان کر کہ اُسکا ملک، سماج، دھرم اور گروہ مانو سماج کا انگ ہے . کون ساھتیہ کار ہے جو یہ نہیں جانتا کہ آج کوئی ملک اپنے آپ میں اتنا پورا نہیں ہے کہ دوسرے ملکوں کی مدد کے بنا سکھی اور جیتا رہ سکے . ہو سکتا ہے آج امریکہ کا کوئی ساھتیہ کار یہ کہہ بیٹھے کہ اُسکا ملک امریکہ ایسا ہے جسے کسی بات کے لئے دوسرے ملکوں کی طرف تاکنا نہیں پڑیگا . اور اگر ہم اُسکی بات کو بلکل سچ مان لیں تب بھی امریکہ کے ساھتیہ کار کے پاس اس سوال کا کیا جواب ہے کہ امریکہ کیوں اپنی بنی ہوئی چیزوں کے لئے دنیا بھر میں بازار ڈھونڈھنے بھاگتا پھرتا ہے اور جگہ جگہ اپنے ہوائی اڈے بنانے کی فکر رکھتا ہے ؟ اور کچھ نہ بھی سہی، کم سے کم، امریکہ اپنے ملک کے بچاؤ کی خاطر دوسرے ملکوں کی مدد کی ضرورت رکھتا ہے . جب امریکہ جیسے ملک کا یہ حال ہے اور امریکہ میں رہنے والے ساھتیہ کار کی یہ حالت ہے تب اور ملکوں کا تو کہنا ہی کیا ! اس لئے جب جب ساھتیہ کار اپنے آپ کو کسی ایک ملک سے جوڑ بیٹھتا ہے تب تب اتنا ہی نہیں ہوتا کہ اُسکے ساھتیہ میں ساھتیہ کی جان نہیں رہ جاتی بلکہ اُسکے ساھتیہ میں کساھتیہ کی ساری برائیاں آجاتی ہیں . آج جو کچھ ہو رہا ہے وہ ساھتیہ کاروں کے اس باندر موہ کا ہی پھل ہے . اگر آج دنیا کے سارے ساھتیہ کار اپنے ملک،

के सिर न मढ़ें तो किसके सिर मढ़ें ? अगर साहित्यकार इस बुराई को अपने सिर नहीं लेना चाहते तब वह खुले खुले उन लेखकों को, जो दुनिया में इस तरह का बैरभाव फैलाने का काम कर रहे हैं, साहित्य के समाज से खारिज कर दें और अगर वह ऐसा नहीं कर सकते तो इस भूकंप की बुराई को अपने सिर लें. सफ़ेद काग़ज़ पर हर काले हरफ़ को अगर साहित्य का नाम दे दिया जायगा तो भलाई की जगह बुराई ही फले फूलेगी. भलाई को फलने फूलने के लिये तो भली बातों को ही साहित्य मानना पड़ेगा और भले कामों के बखान से भरी हुई किताबें ही साहित्य की पुस्तकों का नाम पा सकेंगी. अगर साहित्य दुनियादारों का दुख दूर नहीं कर सकता तो न वह साहित्य कहलाने योग्य है और न जीते रहने योग्य.

दुनिया में शान्ति की आवाज़

यह साहित्यकार ही तो हैं जो घूम घूम कर दुनिया में 'शान्ति रहे' की आवाज़ उठा रहे हैं. वह पत्रकार साहित्य नहीं तैयार कर रहे जो संसार को लड़ने के लिये भड़का रहे हैं. वह विज्ञानी विज्ञान-साहित्य की बढ़वारी नहीं कर रहे जो ऐसे हथियारों और ऐसे साधनों के बनाने में सीधे ना सीधे योग दे रहे हैं जो एक दिन समाज की बरबादी का कारन होंगे. हाँ, वह पत्रकार और विज्ञानी सच्चा साहित्य छोड़ जा रहे हैं जो आज इस कोशिश में लगे हुए हैं कि उन की सारी दिमाग़ी मेहनत और सारी सूझ बूझ इस काम आवे कि आने वाली तीसरी लड़ाई शान्ति सम्मेलन का रूप ले ले. साहित्यकार अपने धर्म पर पूरा नहीं उतर सकता अगर उसे अपने मुल्क, अपने समाज, अपने धर्म या अपने गिरोह से ऐसा मोह है जैसा बन्दर को

کے سر نہ مڑھیں تو کس کے سر مڑھیں؟ اگر ساھتیہ‌کار اس برائی کو اپنے سر نہیں لینا چاھتے تب وہ کھلے کھلے اُن لیکھکوں کو' جو دنیا میں اسطرح کا بیر بھاؤ پھیلانے کا کام کر رہے ھیں' ساھتیہ کے سماج سے خارج کر دیں اور اگر وہ ایسا نہیں کر سکتے تو اس بھوکمپ کی برائی کو اپنے سر لیں . سفید کاغذ پر ہر کالے حرف کو اگر ساھتیہ کا نام دے دیا جائیگا تو بھلائی کی جگہ برائی ھی پھلے پھولیگی . بھلائی کو پھلنے پھولنے کے لئے تو بھلی باتوں کو ھی ساھتیہ ماننا پڑیگا اور بھلے کاموں کے بکھان سے بھری ھوئی کتابیں ھی ساھتیہ کی پستکوں کا نام پاسکینگی . اگر ساھتیہ دنیا داروں کا دکھ دور نہیں کر سکتا تو نہ وہ ساھتیہ کہلانے یوگیہ ھے اور نہ جیتے رھنے یوگیہ .

دنیا میں شانتی کی آواز

یہ ساھتیہ‌کار ھی تو ھیں جو گھوم گھوم کر دنیا میں 'شانتی رھے' کی آواز اٹھا رھے ھیں . وہ پترکار ساھتیہ نہیں تیار کر رھے جو سنسار کو لڑنے کے لئے بھڑکا رھے ھیں . وہ وگیانی وگیان ساھتیہ کی بڑھواری نہیں کر رھے جو ایسے ھتھیاروں اور ایسے سادھنوں کے بنانے میں سیدھے نا سیدھے یوگ دے رھے ھیں جو ایک دن سماج کی بربادی کا کارن ھونگے . ھاں' وہ پترکار اور وگیانی سچا ساھتیہ چھوڑ جا رھے ھیں جو آج اس کوشش میں لگے ھوئے ھیں کہ اُنکی ساری دماغی محنت اور ساری سوجھ بوجھ اِس کام آوے کہ آنے والی تیسری لڑائی شانتی سمیلن کا روپ لے لے . ساھتیہ‌کار اپنے دھرم پر پورا نہیں اتر سکتا اگر اُسے اپنے ملک ' اپنے سماج' اپنے دھرم یا اپنے گروہ سے ایسا موہ ھے جیسا بندر کو

कला का नतीजा है, और तीसरी बड़ी लड़ाई के शुरू करने में भी उन ही का हाथ रहेगा, पर ऐसा कहते हुए वह यह नहीं सोचते कि इस तरह की डींग में घमंड ज़्यादा है, सचाई बहुत कम. माना, दियासलाई से आग भड़काई जा सकती है और वह जल्दी इतना ज़ोर पकड़ सकती है कि उसको ठंडा करने के लिये दमकल की ज़रूरत पड़े. पर यह याद रहे कि समाज आग लगाने वाले को फाँसी के तख़्ते पर चढ़ाता है और आग बुझाने वाले पर फूल बरसाता है.

साहित्यकार, जो आग भड़काने का काम करता है, अपने धर्म से दूर पड़ जाता है. और साहित्यकार, जो आग लगने में से भी भलाई निकाल कर आग लगाने वाले के लिये समाज के दिल से नफ़रत दूर करता है, अपने धर्म की शान बढ़ाता है, और ऐसा ही साहित्यकार उस प्रेम तार की रचना करता है, जो अगर काफ़ी बड़ा साबित हुआ, तो एक दिन सारा मानव समाज उसमें पिरोया जा सके.

साहित्यकार (अदीब) मानव समाज को बहुत ऊँचा उठा लाया है, पर उस ऊँचे उठे समाज की इस समय ऐसी हालत है जो उसकी मेहनत को कुछ ही दिनों में बेकार साबित कर सकती है. उसकी सारी मेहनत का एक नए ढंग का फल हुआ है. वह यह कि मानव समाज भलाई के लिहाज से या तो मुल्कों में बँट गया है या फिर जातियों में. नतीजा यह हुआ है कि कभी भी कोई मुल्क या कोई ... समाज व्यवस्था के संतोल को बिगाड़

کلا کا نتیجہ ھے' اور تیسری بڑی لڑائی کے شروع کرنے میں بھی اُن ھی کا ھاتھ رھیگا' پر ایسا کہتے ھوئے وہ یہ نہیں سوچتے کہ اسطرح کی ڈینگ میں گھمنڈ زیادہ ھے' سچائی بہت کم. مانا' دیا سلائی سے آگ بھڑکائی جا سکتی ھے اور وہ جلدی اتنا زور پکڑ سکتی ھے کہ اُسکو ٹھنڈا کرنے کے لئے دم کل کی ضرورت پڑے. پر یہ یاد رھے کہ سماج آگ لگانے والے کو پھانسی کے تختے پر چڑھاتا ھے اور آگ بجھانے والے پر پھول برساتا ھے.

ساھتیہ کار' جو آگ بھڑکانے کا کام کرتا ھے' اپنے دھرم سے دور پڑ جاتا ھے. اور ساھتیہ کار' جو آگ لگنے میں سے بھی بھلائی نکال کر آگ لگانے والے کے لئے سماج کے دل سے نفرت دور کرتا ھے' اپنے دھرم کی شان بڑھاتا ھے' اور ایسا ھی ساھتیہ کار اُس پریم تار کی رچنا کرتا ھے' جو اگر کافی بڑا ثابت ھوا' تو ایک دن سارا مانو سماج اُسمیں پرویا جا سکے.

ساھتیہ کار (ادیب) مانو سماج کو بہت اُونچا اُٹھا لایا ھے' پر اُس اُونچے اُٹھے سماج کی اِس سمے ایسی حالت ھے جو اُسکی محنت کو کچھ ھی دنوں میں بیکار ثابت کر سکتی ھے. اُس کی ساری محنت کا ایک نئے ڈھنگ کا پھل ھوا ھے. وہ یہ کہ مانو سماج بھلائی کے لحاظ سے یا تو ملکوں میں بٹ گیا ھے یا پھر جاتیوں میں. نتیجہ یہ ھوا ھے کہ کبھی بھی کوئی ملک یا کوئی جات اپنی بڑھتی کے زعم میں سماج ویوستھا کے سنتول کو بگاڑ کر اُس زور کا بھونچال لا سکتا ھے ...

के सिर न मढ़ें तो किसके सिर मढ़ें ? अगर साहित्यकार इस बुराई को अपने सिर नहीं लेना चाहते तब वह खुले खुले उन लेखकों को, जो दुनिया में इस तरह का बैरभाव फैलाने का काम कर रहे हैं, साहित्य के समाज से खारिज कर दें और अगर वह ऐसा नहीं कर सकते तो इस भूकंप की बुराई को अपने सिर लें. सफ़ेद काग़ज पर हर काले हरफ़ को अगर साहित्य का नाम दे दिया जायगा तो भलाई की जगह बुराई ही फले फूलेगी. भलाई को फलने फूलने के लिये तो भली बातों को ही साहित्य मानना पड़ेगा और भले कामों के बखान से भरी हुई किताबें ही साहित्य की पुस्तकों का नाम पा सकेंगी. अगर साहित्य दुनियादारों का दुख दूर नहीं कर सकता तो न वह साहित्य कहलाने योग्य है और न जीते रहने योग्य.

दुनिया में शान्ति की आवाज़

यह साहित्यकार ही तो हैं जो घूम घूम कर दुनिया में 'शान्ति रहे' की आवाज़ उठा रहे हैं. वह पत्रकार साहित्य नहीं तैयार कर रहे जो संसार को लड़ने के लिये भड़का रहे हैं. वह विज्ञानी विज्ञान-साहित्य की बढ़वारी नहीं कर रहे जो ऐसे हथियारों और ऐसे साधनों के बनाने में सीधे ना सीधे योग दे रहे हैं जो एक दिन समाज की बरबादी का कारन होंगे. हाँ, वह पत्रकार और विज्ञानी सच्चा साहित्य छोड़ जा रहे हैं जो आज इस कोशिश में लगे हुए हैं कि उन की सारी दिमाग़ी मेहनत और सारी सूझ बूझ इस काम आवे कि आने वाली तीसरी लड़ाई शान्ति सम्मेलन का रूप ले ले. साहित्यकार अपने धर्म पर पूरा नहीं उतर सकता अगर उसे अपने मुल्क, अपने समाज, अपने धर्म या अपने गिरोह से ऐसा मोह है जैसा बन्दर को

کے سر نہ مڑھیں تو کس کے سر مڑھیں؟ اگر ساہتیہ‌کار اس برائی کو اپنے سر نہیں لینا چاہتے تب وہ کھلے کھلے اُن لیکھکوں کو، جو دنیا میں اسطرح کا بیر بھاؤ پھیلانے کا کام کر رہے ہیں، ساہتیہ کے سماج سے خارج کر دیں اور اگر وہ ایسا نہیں کر سکتے تو اس بھوکمپ کی برائی کو اپنے سر لیں ۔ سفید کاغذ پر ہر کالے حرف کو اگر ساہتیہ کا نام دے دیا جائیگا تو بھلائی کی جگہ برائی ہی پھلے پھولیگی ۔ بھلائی کو پھلنے پھولنے کے لئے تو بھلی باتوں کو ہی ساہتیہ ماننا پڑیگا اور بھلے کاموں کے بکھان سے بھری ہوئی کتابوں ہی ساہتیہ کی پستکوں کا نام پا سکیںگی ۔ اگر ساہتیہ دنیا داروں کا دکھ دور نہیں کر سکتا تو نہ وہ ساہتیہ کہلانے یوگیہ ہے اور نہ جیتے رہنے یوگیہ ۔

دنیا میں شانتی کی آواز

یہ ساہتیہ‌کار ہی تو ہیں جو گھوم گھوم کر دنیا میں 'شانتی رہے' کی آواز اٹھا رہے ہیں ۔ وہ پترکار ساہتیہ نہیں تیار کر رہے جو سنسار کو لڑنے کے لئے بھڑکا رہے ہیں ۔ وہ وگیانی وگیان ساہتیہ کی بڑھواری نہیں کر رہے جو ایسے ہتھیاروں اور ایسے سادھنوں کے بنانے میں سیدھے نا سیدھے یوگ دے رہے ہیں جو ایک دن سماج کی بربادی کا کارن ہونگے ۔ ہاں، وہ پترکار اور وگیانی سچا ساہتیہ چھوڑ جا رہے ہیں جو آج اس کوشش میں لگے ہوئے ہیں کہ اُنکی ساری دماغی محنت اور ساری سوجھ بوجھ اِس کام آوے کہ آنے والی تیسری لڑائی شانتی سمیلن کا روپ لے لے ۔ ساہتیہ‌کار اپنے دھرم پر پورا نہیں اتر سکتا اگر اُسے اپنے ملک، اپنے سماج، اپنے دھرم یا اپنے گروہ سے ایسا موہ ہے جیسا بندر کو

कला का नतीजा है, और तीसरी बड़ी लड़ाई के शुरू करने में भी उन ही का हाथ रहेगा, पर ऐसा कहते हुए वह यह नहीं सोचते कि इस तरह की डींग में घमंड ज़्यादा है, सचाई बहुत कम. माना, दियासलाई से आग भड़काई जा सकती है और वह जल्दी इतना ज़ोर पकड़ सकती है कि उसको ठंडा करने के लिये दमकल की ज़रूरत पड़े. पर यह याद रहे कि समाज आग लगाने वाले को फाँसी के तख़्ते पर चढ़ाता है और आग बुझाने वाले पर फूल बरसाता है.

साहित्यकार, जो आग भड़काने का काम करता है, अपने धर्म से दूर पड़ जाता है. और साहित्यकार, जो आग लगने में से भी भलाई निकाल कर आग लगाने वाले के लिये समाज के दिल से नफ़रत दूर करता है, अपने धर्म की शान बढ़ाता है, और ऐसा ही साहित्यकार उस प्रेम तार की रचना करता है, जो अगर काफ़ी बड़ा साबित हुआ, तो एक दिन सारा मानव समाज उसमें पिरोया जा सके.

साहित्यकार (अदीब) मानव समाज को बहुत ऊँचा उठा लाया है, पर उस ऊँचे उठे समाज की इस समय ऐसी हालत है जो उसकी मेहनत को कुछ ही दिनों में बेकार साबित कर सकती है. उसकी सारी मेहनत का एक नए ढंग का फल हुआ है. वह यह कि मानव समाज भलाई के लिहाज़ से या तो मुल्कों में बँट गया है या फिर जातियों में. नतीजा यह हुआ है कि कभी भी कोई मुल्क या कोई जात अपनी बढ़ती के जोम में समाज व्यवस्था के संतोल को बिगाड़

کلا کا نتیجہ ہے' اور تیسری بڑی لڑائی کے شروع کرنے میں بھی اُن ہی کا ہاتھ رہیگا' پر ایسا کہتے ہوئے وہ یہ نہیں سوچتے کہ اسطرح کی ڈینگ میں گھمنڈ زیادہ ہے' سچائی بہت کم ۔ مانا' دیا سلائی سے آگ بھڑکائی جا سکتی ہے اور وہ جلدی اتنا زور پکڑ سکتی ہے کہ اُسکو ٹھنڈا کرنے کے لئے دم کل کی ضرورت پڑے ۔ پر یہ یاد رہے کہ سماج آگ لگانے والے کو پھانسی کے تختے پر چڑھاتا ہے اور آگ بجھانے والے پر پھول برساتا ہے ۔

ساهتیہ کار' جو آگ بھڑکانے کا کام کرتا ہے' اپنے دھرم سے دور پڑ جاتا ہے ۔ اور ساهتیہ کار' جو آگ لگنے میں سے بھی بھلائی نکال کر آگ لگانے والے کے لئے سماج کے دل سے نفرت دور کرتا ہے' اپنے دھرم کی شان بڑھاتا ہے' اور ایسا ہی ساهتیہ کار اُس پریم تار کی رچنا کرتا ہے' جو اگر کافی بڑا ثابت ہوا' تو ایک دن سارا مانو سماج اُسمیں پرویا جا سکے ۔

ساهتیہ کار (ادیب) مانو سماج کو بہت اُونچا اُٹھا لایا ہے' پر اُس اُونچے اُٹھے سماج کی اِس سمے ایسی حالت ہے جو اُسکی محنت کو کچھ ہی دنوں میں بیکار ثابت کر سکتی ہے ۔ اُس کی ساری محنت کا ایک نئے ڈھنگ کا پھل ہوا ہے ۔ وہ یہ کہ مانو سماج بھلائی کے لحاظ سے یا تو ملکوں میں بٹ گیا ہے یا پھر جاتیوں میں ۔ نتیجہ یہ ہوا ہے کہ کبھی بھی کوئی ملک یا کوئی جات اپنی بڑھتی کے زعم میں سماج ویوستھا کے سنتول کو بگاڑ کر اُس زور کا بھونچال لاسکتی ہے جو آدھی دنیا سے زیادہ کو برباد

कोई साहित्यकार न इस आदर्श की बात को कहना चाहता है और न कहने की जरूरत समझता है. आदर्श बखानने वाला साहित्य आज आदर्श साहित्य नहीं हो सकता. आज के लिये काम का साहित्य वह है जो हमारी आज की उलझनों को सुलझाए और इस तरह सुलझाए कि हमारा अगला हर क़दम जाने-अनजाने अपने आप आदर्श की ओर उठता चला जाय.

उलझनें पैदा कीं साहित्यकार ने

आज की समाजी और राजकाजी उलझनें साहित्यकार की पैदा की हुई हैं. आर्थिक और धार्मिक उलझनों में भी साहित्यकार का हाथ है, यह बात हम यह मानकर कह रहे हैं कि जो कुछ लिख गया वह साहित्य है, या जिसने जो कह डाला और कर डाला वह साहित्य है. जिसका नाम साहित्य है वह साहित्य नहीं. हम पहले बता आए हैं साहित्य वही है जिससे मानव समाज का भला हो, और इस ख़याल से जब हम यह कहते हैं कि आज की उलझनें साहित्यकार की पैदा की हुई हैं तब हम एक तरह से यही कहते हैं कि आज की उलझनें उस साहित्यकार की पैदा की हुई हैं जो नाम से साहित्यकार है पर काम और ईमान से नहीं. यह कहकर हम साहित्यकार के सिर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारियों की पगड़ी बाँध रहे हैं, पर उसके सिवा हम यह पगड़ी बाँधें भी किसके सिर ? क्योंकि हम तो हर भलाई करने वाले को साहित्यकार मानते हैं. हमारी राय में साधु और साहित्यकार आर्य और सज्जन एक ही अर्थ वाले शब्द हैं.

साहित्यकार चाहें तो आगा पीछा सोचे बिना यह कह सकते हैं कि दुनिया की पहली बड़ी लड़ाई और दूसरी बड़ी लड़ाई उन ही की

کوئی ساہتیہ کار نہ اس آدرش کی بات کو کہنا چاہتا ہے اور نہ کہنے کی ضرورت سمجھتا ہے ۔ آدرش بکھاننے والا ساہتیہ آج آدرش ساہتیہ نہیں ہوسکتا ۔ آج کے لئے کام کا ساہتیہ وہ ہے جو ہماری آج کی اُلجھنوں کو سلجھائے اور اس طرح سلجھائے کہ ہمارا اگلا ہرقدم جانے انجانے اپنے آپ آدرش کی اور اُٹھتا چلا جائے ۔

اُلجھنیں پیدا کیں ساہتیہ کار نے

آج کی سماجی اور راج کاجی اُلجھنیں ساہتیہ کار کی پیدا کی ہوئی ہیں ۔ آرتھک اور دھارمک اُلجھنوں میں بھی ساہتیہ کار کا ہاتھ ہے، یہ بات ہم یہ مان کر کہہ رہے ہیں کہ جو کچھ لکھ گیا وہ ساہتیہ ہے، یا جس نے جو کہہ ڈالا اور کر ڈالا وہ ساہتیہ ہے ۔ جسکا نام ساہتیہ ہے وہ ساہتیہ نہیں ۔ ہم پہلے بتا آئے ہیں ساہتیہ وہی ہے جس سے مانو سماج کا بھلا ہو، اور اس خیال سے جب ہم یہ کہتے ہیں کہ آج کی اُلجھنیں ساہتیہ کار کی پیدا کی ہوئی ہیں تب ہم ایک طرح سے یہی کہتے ہیں کہ آج کی اُلجھنوں اُس ساہتیہ کار کی پیدا کی ہوئی ہیں جو نام سے ساہتیہ کار ہے پر کام اور ایمان سے نہیں ۔ یہ کہکر ہم ساہتیہ کار کے سر بہت بڑی ذمے داریوں کی پگڑی باندھ رہے ہیں، پر اُسکے سوا ہم یہ پگڑی باندھیں بھی کس کے سر ؟ کیونکہ ہم تو ہر بھلائی کرنے والے کو ساہتیہ کار مانتے ہیں ۔ ہماری رائے میں سادھو اور ساہتیہ کار آریہ اور سجن ایک ہی ارتھ والے شبد ہیں ۔

ساہتیہ کار چاہیں تو آگا پیچھا سوچے بنا یہ کہہ سکتے ہیں کہ دنیا کی پہلی بڑی لڑائی اور دوسری بڑی لڑائی اُن ہی کی

मानव समाज, सारे का सारा नहीं, तो उसका बहुत बड़ा हिस्सा
देवता पुरुश बन गया होता.

देव पुरुश क्या है ?

देवपुरुश और देवसमाज से हमारा मतलब क्या है ? मतलब
यही है कि जो आदमी जितना धन की तरफ़ कम भागता है, जितनी
बल की कम इच्छा करता है, जितना नामवरी से बचता है, जितनी
धाक जमाने की कम फ़िक्र करता है, उतना ही वह उस मंजिल की
तरफ़ जा रहा है जहां पहुँचकर वह देवपुरुश कहलाने लगेगा. फिर
उसको सारे मानवसमाज से ऐसा ही प्रेम हो जायगा मानो हर तरह
वह अपने सगे हैं. इस मंजिल तक पहुंचने से पहले उसे किसी को
किसी तरह भी सताने में तकलीफ़ होने लगेगी. और जब तकलीफ़
होने लगेगी तो वह तकलीफ़ में पड़ने का काम क्यों करेगा ? उसकी
यह हालत हो जायगी कि वह दुख पाने वाले और दुख देने वाले को
एक प्यार की नजर से देखेगा. और फिर उसमें ऐसी शक्ति आ
जायगी कि वह आसानी से दुख देने वाले और दुख पाने वाले दोनों
में एक आपसी मोहब्बत पैदा कर सकेगा. यहाँ यह न समझना
चाहिये कि दुख देने और सताने की बुराई आदमी में से बिलकुल
निकल जायगी. ऐसा होने से पहले तो मानवसमाज का मतलब ही
पूरा हो चुका होगा, क्योंकि हम पहले कह चुके हैं कि भलाई बुराई
के बग़ैर जिंदा नहीं रह सकती. बस तो यह दुख देने और सताने
का काम या तो अपने लिये रह गया होगा या मानव समाज के
... के लिये. यह हुई

مانو سماج، سارے کا سارا نہیں، تو اس کا بہت بڑا حصہ دیوتا
پرش بن گیا ہوتا ۔

دیو پرش کیا ہے ؟

دیو پرش اور دیو سماج سے ہمارا مطلب کیا ہے؟ مطلب یہی ہے
کہ جو آدمی جتنا دھن کی طرف کم بھاگتا ہے، جتنی بل کی کم
اِچھا کرتا ہے، جتنا ناموری سے بچتا ہے، جتنی دھاک جمانے کی کم
فکر کرتا ہے، اتنا ہی وہ اس منزل کی طرف جا رہا ہے جہاں پہونچ
کر وہ دیو پرش کہلانے لگیگا ۔ پھر اس کو سارے مانو سماج سے ایسا
ہی پریم ہو جائیگا مانو ہر طرح وہ اپنے سگے ہیں ۔ اس منزل تک
پہونچنے سے پہلے اسے کسی کو کسی طرح بھی ستانے میں تکلیف
ہونے لگے گی ۔ اور جب تکلیف ہونے لگیگی تو وہ تکلیف میں پڑنے
کا کام کیوں کریگا ؟ اسکی یہ حالت ہو جائیگی کہ وہ دکھ پانے والے
اور دکھ دینے والے کو ایک پیار کی نظر سے دیکھیگا اور پھر اسمیں
ایسی شکتی آجائیگی کہ وہ آسانی سے دکھ دینے والے اور دکھ پانے والے
دونوں میں ایک آپسی محبت پیدا کر سکیگا ۔ یہاں یہ نہ سمجھنا
چاہئے کہ دکھ دینے اور ستانے کی برائی آدمی میں سے بالکل نکل
جائیگی ۔ ایسا ہونے سے پہلے تو مانو سماج کا مطلب ہی پورا
ہو چکا ہوگا، کیونکہ ہم پہلے کہہ چکے ہیں کہ بھلائی برائی کے
بغیر زندہ نہیں رہ سکتی ۔ بس تو یہ دکھ دینے اور ستانے کا کام
یا تو اپنے لئے رہ گیا ہوگا یا مانو سماج کے دشمن — سردی
گرمی، پشو پکچھی، کیڑے مکوڑے وغیرہ کے لئے ۔ یہ ہوئی

बुराई को अपनी जगह देख उसमें अटकता नहीं और भले आदमी की भलाई से फ़ायदा उठाने लगता है. यह क्या जादूगरी नहीं है ?

साहित्यकार (अदीब) यह अच्छी तरह समझता है कि भलाई बुराई के मेल का नाम दुनिया है. बड़ी से बड़ी भलाई में बड़ी से बड़ी बुराई ढूँढी जा सकती और बड़ी से बड़ी बुराई में बड़ी से बड़ी भलाई छिपी मिल सकती है. यहां यह शक हो सकता है कि जब हर भलाई में बुराई और हर बुराई में भलाई रहती है तो किसी को बुरा और भला कहने का मतलब क्या ? इस शक का जवाब है कि जब कोई आदमी एक बात की भलाई का इस्तेमाल जनता के लिये करता है और उसकी बुराई का इस्तेमाल अपनों के लिये या जनता के दुश्मनों के लिये करता है तो वह बात भली समझी जाती है और वह आदमी भला. ठीक इसी तरह जो आदमी एक बात की बुराई का इस्तेमाल जनता के लिये करता है और उसकी भलाई का इस्तेमाल अपनों के लिये या जनता के दुश्मनों के लिये करता है तो वह बात बुरी हो जाती है और उसका करने वाला बुरा आदमी मान लिया जाता है साहित्यकार इस बेढंगे पन को एक ढंग दे देता है और वह बुराई और भलाइयों का ऐसा ज्ञान करा देता है कि फिर भले आदमी की बुराइयां दूसरों को नहीं खटकतीं और बुरे आदमी की भलाइयां न बेकार पड़ी रहती हैं न छोटे दायरे में रहती हैं. बल्कि सबके काम की हो जाती हैं. साहित्यकार की इसी कोशिश का एक दिन यह नतीजा होकर रहेगा कि आदमी देवतापुरुश कहलाने लगेगा. देवता शब्द उस साहित्यकार की देन है जो देव नहीं है. मानव समाज अभी देवसमाज का रूप नहीं ले पाया. अगर देवता शब्द देव साहित्यकार की देन होता तो

برائی کو اپنی جگہ دیکھ اُس میں اٹکتا نہیں اور بھلے آدمی کی بھلائی سے فائدہ اُٹھانے لگتا ہے ۔ یہ کیا جادوگری نہیں ہے ؟

ساہتیہ کار (ادیب) یہ اچھی طرح سمجھتا ہے کہ بھلائی برائی کے میل کا نام دنیا ہے ۔ بڑی سے بڑی بھلائی میں بڑی سے بڑی برائی ڈھونڈی جاسکتی اور بڑی سے بڑی برائی میں بڑی سے بڑی بھلائی چھپی مل سکتی ہے ۔ یہاں یہ شک ہوسکتا ہے کہ جب ہر بھلائی میں برائی اور ہر برائی میں بھلائی رہتی ہے تو کسی کو برا اور بھلا کہنے کا مطلب کیا ؟ اس شک کا جواب ہے کہ جب کوئی آدمی ایک بات کی بھلائی کا استعمال جنتا کے لئے کرتا ہے اور اُس کی برائی کا استعمال اپنوں کے لئے یا جنتا کے دشمنوں کے لئے کرتا ہے تو وہ بات بھلی سمجھی جاتی ہے اور وہ آدمی بھلا ۔ ٹھیک اِسی طرح جو آدمی ایک بات کی برائی کا استعمال جنتا کے لئے کرتا ہے اور اُسکی بھلائی کا استعمال اپنوں کیلئے یا جنتا کے دشمنوں کیلئے کرتا ہے تو وہ بات بری ہوجاتی ہے اور اُسکا کرنے والا برا آدمی مان لیا جاتا ہے ۔ ساہتیہ کار اس بے ڈھنگے پن کو ایک ڈھنگ دے دیتا ہے اور وہ برائی اور بھلائیوں کا ایسا گیان کرا دیتا ہے کہ پھر بھلے آدمی کی برائیاں دوسروں کو نہیں کھٹکتیں اور برے آدمی کی بھلائیاں نہ بیکار پڑی رہتی ہیں نہ چھوٹے دائرے میں رہتی ہیں بلکہ سبکے کام کی ہوجاتی ہیں ۔ ساہتیہ کار کی اِسی کوشش کا ایک دن یہ نتیجہ ہوکر رہیگا کہ آدمی دیوتا پرش کہلانے لگیگا ۔ دیوتا شبد اُس ساہتیہ کار کی دین ہے جو دیو نہیں ہے ۔ مانو سماج ابھی دیو سماج کا روپ نہیں لے پایا ۔ اگر دیوتا شبد دیو ساہتیہ کار کی دین ہوتا تو

आदमी को मजबूर कर देता है कि वह अपने को भला आदमी
मानने जानने लगे और भलाई में लग जाय.

बुराई में भलाई

साहित्यकार बुरे आदमी की भलाई को सामने लाकर बुरे के
साथ जनता की हमदर्दी का मेल करा देता है. वह बुराई की जान-
कारी को जनता के दिल में कुछ इस तरह बिठाता है कि जनता न
तो उस बुराई को अपनाती है और न बुरे में उस बुराई को बुरा
समझती है. बुराइयों को जनता ऐसे देखती है जैसे किसान खाद को
और यही साहित्यकार का वह चमत्कार है जिसकी वजह से वह
समाज में आदर पूजा की जगह बना लेता है. वह आदर पूजा क्यों
न पाए, जब समाज उसकी मेहनत से अपने को ऊंचा उठा पाए.

साहित्यकार भले आदमी की बुराइयों को कुछ इस ढंग से जनता
के सामने रखता है कि भले आदमी की शान में रत्तीभर फ़रक़ नहीं
पड़ता. यह कुछ बढ़ कर कहना नहीं है कि साहित्यकार भले आदमी की
बुराइयों को रोशनी में लाकर भी कुछ दरजे तक भले आदमी की
शान को बढ़ा ही देता है. यह इसलिये होता है कि भले आदमी के
तारीफ़ करने वालों की निगाह तो उसकी बुराइयों पर पड़ती नहीं,
और ऐब निकालने वालों की नज़र सिर्फ़ बुराइयों पर पड़ती है, इस
लिये ऐब निकालने वाला भले आदमी से बचता है और उसकी
बुराई पर उतारू हो जाता है. साहित्यकार भले आदमी की बुराइयों
को ढंग से रखने के कारन ऐब निकालने वालों में भी भले आदमी

آدمی کو مجبور کردیتا ھے کہ وہ اپنے کو بھلا آدمی مانلے جانلے لگے
اور بھلائی میں لگ جائے .

برائی میں بھلائی

ساھتیہ کار برے آدمی کی بھلائی کو سامنے لاکر برے کے ساتھ
جنتا کی ھمدردی کا میل کرا دیتا ھے . وہ برائی کی جانکاری
کو جنتا کے دل میں کچھ اس طرح بٹھاتا ھے کہ جنتا نہ تو اس
برائی کو اپناتی ھے اور نہ برے میں اس برائی کو برا سمجھتی ھے .
برائیوں کو جنتا ایسے دیکھتی ھے جیسے کسان کھاد کو اور یہی ساھتیہ
کار کا وہ چمتکار ھے جسکی وجہ سے وہ سماج میں آدر پوجا کی جگہ
بنا لیتا ھے . وہ آدر پوجا کیوں نہ پائے، جب سماج اُسکی محنت
سے اپنے کو اُونچا اُٹھا پائے .

ساھتیہ کار بھلے آدمی کی برائیوں کو کچھ اس ڈھنگ سے جنتا
کے سامنے رکھتا ھے کہ بھلے آدمی کی شان میں رتی بھر فرق نہیں
پڑتا . یہ کچھ بڑھکر کہنا نہیں ھے کہ ساھتیہ کار بھلے آدمی کی
برائیوں کو روشنی میں لاکر بھی کچھ درجے تک بھلے آدمی
کی شان کو بڑھا ھی دیتا ھے یہ اسلئے ھوتا ھے کہ بھلے آدمی
کے تعریف کرنے والوں کی نگاہ تو اُسکی برائیوں پر پڑتی نہیں،
اور عیب نکالنے والوں کی نظر صرف برائیوں پر پڑتی ھے، اس
لئے عیب نکالنے والا بھلے آدمی سے بچتا ھے اور اُسکی برائی
پر اُتارو ھوجاتا ھے . ساھتیہ کار بھلے آدمی کی برائیوں کو
ڈھنگ سے رکھنے کے کارن عیب نکالنے والوں میں بھی بھلے
آدمی کے لئے جگہ بنا دیتا ھے اور یہ عیب نکالنے ...

रिझाने का काम उस वक़्त से जारी है जिस दिन से आदमी जानवरों से अलग हुआ. इसी बात को यूं भी कहा जा सकता है कि उस गाने ने, जिसमें समझदारी के साथ अपने साथियों की भलाई गूँथी गई थी, आदमी को जानवर से ऊंचा उठाया, या दूसरे शब्दों में साहित्य (अदब) ने आदमी को उस पशुपन से दूर किया जो उसे आगे बढ़ने से रोके हुए था.

साहित्य का नाप

साहित्य को व्यापक मानों में लें तो वह किताबों से नहीं नापा जाता, अगर गाना साहित्य का हिस्सा है तो साहित्य गीतों से नहीं नापा जाता, अगर बजाना साहित्य है तो साहित्य बाजे के यंत्रों से नहीं नापा जाता, अगर चित्रकारी साहित्य है तो चित्रों की गिनती से साहित्य की तरक़्क़ी की परताल नहीं हो सकती, अगर मूर्ति बनाना साहित्य है तो मूर्तियों की बहुत बड़ी तादाद इस बात का सबूत नहीं है कि साहित्य बहुत आगे बढ़ चुका है. अगर विज्ञान साहित्य है तो ऐटम बम और हाइड्रोजन बम इस बात के सबूत नहीं कि साहित्य अब घुटनों के बल न चल कर हिरन की तरह छलांगें मार रहा है. साहित्य की नाप कुछ दूसरी ही चीज़ें हैं.

सच्चा और तीखा साहित्यकार वही है जो बड़ी से बड़ी बुराई में बड़ी भलाई देख पाता है और उस भलाई का ही आदर करता है उसी के गीत गाता है और उसी को लेकर वह बुरे आदमी की समाज से जान पहचान कराता है. यों वह बुरे को भला आदमी बना कर दुनिया के सामने लाता है और अपने बर्ताव से उस बुरे

رجھانے کا کام اُس وقت سے جاری ہے جس دن سے آدمی جانوروں سے الگ ہوا . اسی بات کو یوں بھی کہا جا سکتا ہے کہ اُس گانے نے، جس میں سمجھداری کے ساتھ اپنے ساتھیوں کی بھلائی گونتھی گئی تھی، آدمی کو جانور سے اُونچا اُٹھایا، یا دوسرے شبدوں میں ساہتیہ (ادب) نے آدمی کو اُس پشو پن سے دور کیا جو اُسے آگے بڑھنے سے روکے ہوئے تھا .

ساہتیہ کا ناپ

ساہتیہ کو ویاپک معنوں میں لیں تو وہ کتابوں سے نہیں ناپا جاتا اگر گانا ساہتیہ کا حصہ ہے تو ساہتیہ گیتوں سے نہیں ناپا جاتا، اگر بجانا ساہتیہ ہے تو ساہتیہ باجے کے یںتروں سے نہیں ناپا جاتا، اگر چترکاری ساہتیہ ہے تو چتروں کی گنتی سے ساہتیہ کی ترقی کی پرتال نہیں ہوسکتی، اگر مورتی بنانا ساہتیہ ہے تو مورتیوں کی بہت بڑی تعداد اِس بات کا ثبوت نہیں ہے کہ ساہتیہ بہت آگے بڑھ چکا ہے، اگر وگیان ساہتیہ ہے تو ایٹم بم اور ہائیڈروجن بم اس بات کے ثبوت نہیں کہ ساہتیہ اب گھٹنوں کے بل نہ چل کر ہرن کی طرح چھلانگیں مار رہا ہے . ساہتیہ کی ناپ کچھ دوسری ہی چیزیں ہیں .

سچا اور تیکھا ساہتیہ کار وہی ہے جو بڑی سے بڑی برائی میں بڑی بھلائی دیکھ پاتا ہے اور اُس بھلائی کا ہی آدر کرتا ہے . اُسی کے وہ گیت گاتا ہے اور اُسی کو لیکر وہ برے آدمی کی سماج سے جان پہچان کراتا ہے . یوں وہ برے کو بھلا آدمی بنا کر دنیا کے سامنے لاتا ہے اور اپنے برتاؤ سے اُس برے

आदमी को जितने भीतर तक पहुँचाते हैं और मन को साफ़ कर के अपने भीतर बैठे परमात्मा को झांकने के लिये तैयार करते हैं उतने बड़े बड़े विद्वान कलाविदों की रचनाएं नहीं. साहित्यकार साहित्यकार नहीं रह जाता जब वह टीका और समालोचना के काम में लगता है, क्योंकि टीका में नवीन सिरजन नहीं रहता और समालोचना में भलाई का अंश पूरा नहीं रहता.

इच्छा और प्रेम

साहित्यकार बनने से पहले आदमी में किसी से प्रेम होना ज़रूरी है, फिर चाहे वह अपनों से हो, अपने समाज से हो, अपने देस से हो, अपने राम से या अपने राम की रचना से हो. राम की रचना में पेड़ पौधे पशु पक्षी सभी आ जाते हैं. साहित्यकार के लिये दूसरी ज़रूरी चीज़ है उन सबके दुख दूर करने की इच्छा. बस यह इच्छा और प्रेम दोनों मिलकर उसके अन्दर सोई हुई भलाइयों को जगाते हैं और जगी हुई बुराइयों को सुलाते हैं. एक की बुराइयों को छोड़कर उसकी भलाई को प्रकाश में लाने की सब क्रियाएं साहित्य नाम पाती हैं. यों दूसरों का हित ही साहित्य है. दूसरों के हित में अपना हित है. दूसरों का हित सोच कर जो कुछ भी किया जाता है उसी का नाम श्रेष्ट आचार है. वही अदब कहलाता है. इसलिये साहित्य को लोग अदब कहकर भी बोलते हैं. अब साहित्यकारों की गिन्ती बेहद बढ़ जाती है और पशु पक्षियों को सामने रखकर तो सभी आदमी ... और गीतों

آدمی کو جتنے بھیتر تک پہونچاتے ہیں اور من کو صاف کر کے اپنے بھیتر بیٹھے پرماتما کو جھانکنے کے لئے تیار کرتے ہیں اُتنے بڑے بڑے ودوان کلاودوں کی رچنائیں نہیں. ساہتیہ کار ساہتیہ کار نہیں رہ جاتا جب وہ ٹیکا اور سما لوچنا کے کام میں لگتا ہے، کیونکہ ٹیکا میں نوین سرجن نہیں رہتا اور سما لوچنا میں بھلائی کا انش پورا نہیں رہتا.

اچھا اور پریم

ساہتیہ کار بننے سے پہلے آدمی میں کسی سے پریم ہونا ضروری ہے، پھر چاہے وہ اپنوں سے ہو، اپنے سماج سے ہو، اپنے دیس سے ہو، اپنے رام سے یا اپنے رام کی رچنا سے ہو. رام کی رچنا میں پیڑ پودھے، پشو پکچھی سبھی آجاتے ہیں. ساہتیہ کار کے لئے دوسری ضروری چیز ہے اُن سبکے دکھ دور کرنے کی اِچھا. بس یہ اِچھا اور پریم دونوں ملکر اُسکے اندر سوئی ہوئی بھلائیوں کو جگاتے ہیں اور جگی ہوئی برائیوں کو سلاتے ہیں. ایک کی برائیوں کو چھوڑ کر اُسکی بھلائی کو پرکاش میں لانے کی سب کریائیں ساہتیہ نام پاتی ہیں. یوں دوسروں کا ہت ہی ساہتیہ ہے. دوسروں کے ہت میں اپنا ہت ہے. دوسروں کا ہت سوچ کر جو کچھ بھی کیا جاتا ہے اُسی کا نام شریشٹ آچار ہے. وہی ادب کہلاتا ہے. اس لئے ساہتیہ کو لوگ ادب کہکر بھی بولتے ہیں. اب ساہتیہ کاروں کی گنتی بےحد بڑھ جاتی ہے اور پشو پکچھیوں کو سامنے رکھکر تو سبھی آدمی ساہتیہ کار کی کوٹی میں آجاتے ہیں. گانے کے کام کو ...

भलाई में लगते हैं. पढ़ना लिखना उनसे अलग भी रह सकता है. ऐसे साहित्यकार ही दुनिया के लिये कोई अमर चीज़ छोड़ जाते हैं, और उन साहित्यकारों में आप मुहम्मद साहब, नानक साहब, कबीर साहब, रैदास, मीरा को गिन सकते हैं. और भी इसी तरह के सन्तों की गिनती सच्चे साहित्यकारों में हो सकती है.

साहित्य क्या है?

वह सब साहित्य है जिससे दुनिया की कुछ भलाई हुई. जिससे आदमी जानवरों से ऊंचा उठा, जिसके ज़रिये आदमी ने अपनी इन्द्रियों पर क़ाबू पाना सीखा, अपने मन के घोड़े को लगाम लगाना आना और अपने मन के सागर में उठती हुई तरंगों से काम लेने की कला निकाली.

अब साहित्यकार सिर्फ़ वह रह जाता है जो अपने साहित्य के ज़रिये मानव समाज को ऊंचा उठाए और उसी साहित्य की टेक बनाकर उसे फिर नीचे गिरने से रोके. उस साहित्यकार का समाज में ऊंचा मान होगा ही. ऊंचे स्थान पर पहुँचने से उसकी ज़िम्मेदारियां बेहद बढ़ जाती हैं और ज़िम्मेदारियां घमंड से फूलने नहीं देतीं. अगर ऐसा साहित्यकार घमंडी है तब यही समझना चाहिये कि उसने अपनी ज़िम्मेदारियों को ठीक ठीक नहीं पहचाना. उसके साहित्य से दुनिया की इतनी भी भलाई नहीं हो सकती जितनी उसके लिखने में मेहनत लगी है.

जो साहित्यकार अपने पर क़ाबू रखकर, अपने को पहचानकर साहित्य रचता है वह असरदार होता है, तभी तो मीरा के भजन

بھلائي ميں لگتے هيں . پڑھنا لکھنا اُن سے الگ بھی رہ سکتا ھے . ايسے ساھتيہ کار هی دنيا کے لئے کوئی امر چيز چھوڑ جاتے هيں اور اُن ساھتيہ کاروں ميں آپ محمد صاحب' نانک صاحب' کبير صاحب' ريداس' ميرا کو گن سکتے هيں . اور بھی اسی طرح کے سنتوں کی گنتی سچے ساھتيہ کاروں ميں هوسکتي هے .

ساھتيہ کيا ھے ؟

وہ سب ساھتيہ ھے جس سے دنيا کی کچھ بھلائی هوئی' جس سے آدمی جانوروں سے اونچا اُٹھا' جسکے ذريعے آدمي نے اپنی اندريوں پر قابو پانا سيکھا' اپنے من کے گھوڑے کو لگام لگانا جانا اور اپنے من کے ساگر ميں اُٹھتی هوئي ترنگوں سے کام لينے کی کلا نکالی .

اب ساھتيہ کار صرف وہ رہ جاتا ھے جو اپنے ساھتيہ کے ذريعے مانوسماج کو اونچا اُٹھائے اور اُسی ساھتيہ کی ٹيک بنا کر اُسے پھر نيچے گرنے سے روکے . اُس ساھتيہ کار کا سماج ميں اونچا مان هوگا هی . اونچے استھان پر پهونچنے سے اُسکی ذمے داریاں بے حد بڑھ جاتي هيں اور ذمے داریاں گھمنڈ سے پھولنے نهيں ديتيں . اگر ايسا ساھتيہ کار گھمنڈی ھے تب يهی سمجھنا چاهئے کہ اُس نے اپنی ذمے داريوں کو ٹھيک ٹھيک نهيں پہچانا . اسکے ساھتيہ سے دنيا کی اتنی بھی بھلائی نهيں هو سکتی جتنی اُسکے لکھنے ميں محنت لگی ھے .

جو ساھتيہ کار اپنے پر قابو رکھکر' اپنے کو پہچان کر ساھتيہ رچتا ھے وہ اثر دار هوتا ھے' تبھی تو ميرا کے بھجن

साहित्यकार (अदीब) का फ़र्ज़

साहित्य (अदब) आदमी के ही हिस्से में आया, उस की ही देन है, और यह भी आदमी का कहना है कि साहित्य के बिना आदमी साफ़ बे पूंछ सींग का जानवर है. साहित्यकार (अदीब) ने ऐसी ऊँची बात कह तो डाली पर सींग पूंछ वाले जानवर को सामने रखकर, मेरी राय में, कोई आदमी ऐसा नहीं मिल सकता जो साहित्यकार न हो. जिस तरह पहाड़ की चोटी के पत्थरों में और तलहटी के पत्थरों में कोई अन्तर तो नहीं होता, पर राहगीर के लिये जितने चोटी के पत्थर काम देते हैं उतने तलहटी के नहीं. इसलिये चोटी के पत्थरों का मोल बढ़ जाता है और उनका अपना एक अलग वर्ग बन जाता है, ठीक इस तरह लिखे पढ़े साहित्यकारों (अदीबों) का एक अलग वर्ग बन गया है और उनको दुनिया में एक ख़ास जगह मिल गई है क्योंकि वह राहगीर की राह में औरों के मुक़ाबले में ज़्यादा मददगार साबित होते हैं.

साहित्यकार और लेखक दो अलग हैं. जिस लेखक को मैं साहित्यकार से अलग कर रहा हूं वह लेखक वह नहीं है जिसे दुनिया क्लर्क या कातिब नाम से पुकारती है. लेखक से मेरा मतलब है ऐसे ग्रन्थकार जो दुनिया के लिये बड़ी बड़ी किताबें लिखकर छोड़ जाते हैं. मैं उनको लेखक नाम से सिर्फ़ इसलिये पुकारता हूं कि

ساهتیه کار (ادیب) کا فرض

ساهتیه (ادب) آدمی کے هی حصے میں آیا، اُسکی هي دین هے، اور یہ بھی آدمی کا کهنا هے که ساهتیه کے بنا آدمی صاف بے پونچھ سینگ کا جانور هے . ساهتیهکار (ادیب) نے ایسي اونچي بات کہہ تو ڈالي پر سینگ پونچھ والے جانور کو سامنے رکھکر، میري رائے میں، کوئی آدمی ایسا نہیں مل سکتا جو ساهتیه کار نہ هو . جس طرح پہاڑ کی چوٹی کے پتھروں میں اور تلهٹی کے پتھروں میں کوئی انتر تو نہیں هوتا، پر راہ گیر کے لئے جتنے چوٹی کے پتھر کام دیتے هیں اُتنے تلهٹی کے نہیں، اس لئے چوٹي کے پتھروں کا مول بڑھ جاتا هے اور اُن کا اپنا ایک الگ ورگ بن جاتا هے، ٹھیک اس طرح لکھے پڑھے ساهتیه کاروں (ادیبوں) کا ایک الگ ورگ بن گیا هے اور اُن کو دنیا میں ایک خاص جگہ مل گئی هے کیونکہ وہ راہ گیر کی راہ میں اوروں کے مقابلے میں زیادہ مددگار ثابت هوتے هیں .

ساهتیه کار اور لیکھک دو الگ هیں . جس لیکھک کو میں ساهتیه کار سے الگ کر رها هوں وہ لیکھک وہ نہیں هے جسے دنیا کلرک یا کاتب نام سے پکارتی هے . لیکھک سے میرا مطلب هے ایسے گرنتھ کار جو دنیا کے لئے بڑی بڑي کتابیں لکھکر چھوڑ جاتے هیں . میں اُن کو لیکھک نام سے صرف اس لئے پکارتا هوں که جس سے میں اُنهیں سچے ساهتیه کار سے الگ کر سکوں . سچے ساهتیه [illegible]

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द १० फ़रवरी सन् '५१ नम्बर २

جلد ۱۰ فروری سن ۵۱' نمبر ۲

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नयाहिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی .

गीत

(डाक्टर मसऊद हुसैन ख़ाँ)

जीवन पथ पर
चल चल कर जब थक थक जाते
तुम याद आते

चाहत इसकी, चाहत उसकी
हर हर पल एक नई ख़ुशी सी
हँस हँस कर जब कुछ नहीं पाते
तुम याद आते

इसको पालूँ, उसको पालूँ
तारे छूलूँ, चाँदको जा लूँ
गिर गिर कर जब उठ नहीं पाते
तुम याद आते

इससे खेलूँ, उससे खेलूँ
उसको लेकर इसको लेलूँ
पाकर भी जब कुछ नहीं पाते
तुम याद आते

گیت

(ڈاکٹر مسعود حسین خاں)

جیون پتھ پر
چل چل کر جب تھک تھک جاتے
تم یاد آتے

چاہت اِس کی' چاہت اُس کی
ہر ہر پل اک نئی خوشی سی
ہنس ہنس کر جب کچھ نہیں پاتے
تم یاد آتے

اِس کو پالوں' اُس کو پالوں
تارے چھولوں' چاند کو جا لوں
گر گر کر جب اُٹھ نہیں پاتے
تم یاد آتے

اِس سے کھیلوں' اُس سے کھیلوں
اُس کو لے کر' اِس کو لے لوں
پاکر بھی جب کچھ نہیں پاتے
تم یاد آتے

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हुसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

मई १९५० से १९५१

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छे रुपया साल, बाहर दस रुपया साल

मैनेजर

" نیا ھند "

ھندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر —

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

فروری ۱۹۵۱

قیمت—ھندستان میں چھ روپیہ سال، باھر دس روپیہ سال ایک پرچہ دس آنے۔

مینیجر

इस नम्बर के ख़ास लेख —

साहित्यकार (अदीब) का फ़र्ज़—भगवानदीन

सरकार के सोचने की बात—भाई भगवान दास केला

सन १९५० - एक नज़र—भाई सुरेश राम भाई

हमारी राय :—

ट्रूमैन साहब घबरा उठे—भगवानदीन

कोटा सम्मेलन के सभापति—भगवानदीन

ठक्कर बापा—भगवानदीन

اس نمبر کے خاص لیکھ —

ساہتیہ‌کار (ادیب) کا فرض—بھگوان دین

سرکار کے سوچنے کی بات—بھائی بھگوان داس کیلا

سن ۱۹۵۰ - ایک نظر—بھائی سریش رام بھائی

ہماری رائے :—

ٹرومین صاحب گھبرا اٹھے—بھگوان دین

کوٹہ سمیلن کے سبھا پتی—بھگوان دین

ٹھکر باپا—بھگوان دین

फ़रवरी सन् १९५१

क़ीमत दस आना

فروری سن 1951

قیمت دس آنہ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

ہندستانی کلچر سوسائٹی · الہ‌آباد

Registered No. A—210.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो २६ जनवरी सन् १९५० से सारे भारत में लागू हुआ

'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेजी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फर्ज है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझ ले.

यदि आप आने वाले आम चुनाव में, जिस पर भारत का सारा भविष्य निर्भर है, समझ कर हिस्सा लेना चाहते हैं और आजाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो जरूरी है कि आप इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लें.

आसानी के लिये किताब के आखीर में हिन्दी से अंगरेजी और अंगरेजी से हिन्दी साठ पन्ने की शब्दमाला दे दी गई है.

भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना जरूरी है.

आसान बामुहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकता है.

मिलने का पता :— मैनेजर 'नया हिन्द'
१४५, मुट्ठी गंज,
इलाहाबाद.

بھارت کا ودھان

پورا هندی انوواد

جو ۲۶ جنوری سن ۱۹۵۰ سے سارے بھارت میں لاگو ہوا .

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندر لال دوارا مول انگریزی سے انووادت .

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اِس سمے چل رہا ہے اُسے اچھی طرح سمجھ لے .

یدی آپ آنے والے عام چناؤ میں، جس پر بھارت کا سارا بھوشیہ نربھر ہے، سمجھ کر حصہ لینا چاہتے ہیں اور آزاد بھارت میں اپنے ادھیکار سمجھنا چاہتے ہیں تو ضروری ہے کہ آپ اس پستک کو دھیان سے پڑھ لیں .

آسانی کے لئے کتاب کے آخر میں ہندی سے انگریزی اور انگریزی سے ہندی ساٹھ پنّے کی شبد مالا دے دی گئی ہے .

بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے .

آسان بامحاورہ بھاشا . رایل اٹھ پیجی بڑا سائز لگ بھگ چار سو پنّے . کپڑے کی سندر جلد . قیمت کیول ساڑھے سات روپئے

ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتا ہے

ملنے کا پتہ :— منیجر 'نیا ہند'
۱۴۵ مٹھی گنج
الہ آباد

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर को बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों .

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वग़ैरा का छापना .

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना .

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विश्वम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल .

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये .

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,

१४५, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद .

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

(۱) ایک ایسی ہندستانی کلچر کو بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں .

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق؛ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری—پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی . جی . کھیر، مسٹر ایس . کے . رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال .

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے ۔

سندر لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،

۱۴۵، مٹھی گنج، الہآباد .

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے ،

हिन्द के विधान की अंगरेज़ी हिन्दी शब्दावली

(अंगरेज़ी नागरी लिखावट में)

हिन्द का जो नया विधान पास हुआ है उसके लगभग चौदह सौ ख़ास ख़ास अंगरेज़ी शब्दों के लिये आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवानदीन और दूसरे विद्वानों ने सुझाये हैं. भारत के विधान को समझने के लिये इस शब्दावली को अपने पास ज़रूर रखिये. क़ीमत दो रुपये.

मुस्लिम देश भक्त—लेखक—श्री रतन लाल बंसल

इन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्हों ने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की जंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

आज के शहीद—सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

इस किताब में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी.

उन वीरों की कहानियाँ जो फ़िरक़ावाराना दंगों में लोगों को हैवानियत से रोकते हुए शहीद हो गये.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब.

सुन्दर जिल्द और चिकने काग़ज़ पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

किसान की पुकार—लेखक—श्री आर. वेन्कट राव.

यह किताब किसानों के लिये ही नहीं, उन लोगों के लिये भी बहुत ज़रूरी है जो खेती बाड़ी से दिलचस्पी रखते हैं, और भारत [illegible] रखते हैं. क़ीमत पाँच आने.

ہند کے ودھان کی انگریزی ہندی شبداولی

(انگریزی ناگری لکھاوٹ میں)

ہند کا جونیا ودھان پاس ہوا ہے اُسکے لگ بھگ چودہ سو خاص خاص انگریزی شبدوں کے لئے آسان ہندستانی شبد مہاتما بھگوان دین اور دوسرے ودوانوں نے سجھائے ہیں. بھارت کے ودھان کو سمجھنے کے لئے اِس شبداولی کو اپنے پاس ضرور رکھئے . قیمت دو روپئے .

مسلم دیش بھکت— لیکھک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنہوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی . کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے .

قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے .

آج کے شہید— سمپادک - شری رتن لال بنسل

اِس کتاب میں ان ویروں کی کہانیاں ہیں جنہوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہیں کی اور اُسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کر دی .

اُن بہادروں کی کہانیاں جو فرقہ وارانہ دنگوں میں لوگوں کو حیوانیت سے روکتے ہوئے شہید ہو گئے .

ہر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب .

سندر جلد اور چکنے کاغذ پر چھپی آٹھ تصویروں کے ساتھ اس کتاب کا دام صرف ڈھائی روپیہ .

کسان کی پکار— لیکھک—شری آر . وینکٹ راو .

یہ کتاب کسانوں کے لئے ہی نہیں' اُن لوگوں کے لئے بھی بہت ضروری ہے جو کھیتی باڑی سے دلچسپی رکھتے ہیں اور بھارت کے ان سنکٹ کو دور کرنے میں وشواس رکھتے ہیں قیمت پانچ آنے .

अलग अलग मिल सकता है .

पाँच से ज्यादह किताबें ख़रीदने वालों और बुकसेलरों को ३३ फ़ीसदी कमीशन दिया जायगा.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा .

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

२९ जनवरी सन् १९४८ को महात्मा गांधी ने आल इंडिया कांगरेस कमेटी के सामने एक सुझाव के रूप में 'लोक सेवक संघ का एक नया विघान तैयार किया था. इस विधान में उन्होंने सलाह दी थी कि कांगरेस का सारा संगठन तोड़ दिया जावे और कांगरेस वाले हकूमत से बाहर निकल कर एक 'लोक सेवक संघ' बनाकर काम करें.

३० जनवरी को अपने देहान्त से कुछघन्टे पहले महात्मा जी ने कांगरेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर वह विधान दिया कि वह गांधी जी की तरफ़ से उसे आल इंडिया कांगरेस कमेटी में पेश कर दें. यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख़्ता ने की है जो गांधी वाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधी वाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. २२५ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपये.

मिलने का पता—मैनेजर, 'नया हिन्द' १४५,मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

الگ الگ مل سکتی ھیں .

پانچ سے زیادہ کتابیں خریدنے والوں اور بکسیلروں کو ۳۳ فیصدی کمیشن دیا جائے گا .

ڈاک یا ریل خرچ ھر حالت میں گاھک کے ذمے ھوگا .

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

۲۹ جنوری سن ۱۹۴۸ کو مہاتما گاندھی نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے ایک سجھاؤ کے روپ میں 'لوک سیوک سنگھ' کا ایک نیا ودھان تیار کیا تھا . اِس ودھان میں اُنھوں نے صلاح دی تھی کہ کانگریس کا سارا سنگٹھن توڑ دیا جاوے اور کانگریس والے حکومت سے باھر نکل کر ایک 'لوک سیوک سنگھ' بنا کر کام کریں .

۳۰ جنوری کو اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما جی نے کانگریس کے جنرل سکریٹری کو بلا کر وہ ودھان دیا کہ وہ گاندھی جی کی طرف سے اُسے آل انڈیا کانگریس کمیٹی میں پیش کردیں. یہ چھوٹا سا ودھان دیش کے نام گاندھی جی کی آخری وصیت ھے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ھے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ھیں .

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ھے . ۲۲۵ صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے.

ملنے کا پتہ—منیجر 'نیا ھند' ۱۴۵ مٹھی گنج' الہ آباد.

हमें लोगों के विश्वास पर हमला करने का कोई हक़ हासिल नहीं.

मरने वाले के बेटी बेटे और रिश्तेदार पूरे आज़ाद होने चाहिएं, हैं और रहेंगे कि वह अपने बुज़ुर्गों के फूल हरिद्वार सिराएं, त्रिबेनी में बहाएं या मानसरोवर पहुँचाएं और उसपर जितना चाहें ख़र्च करें. जितनी चाहें स्पेशल ट्रेनें छोड़ें. हां, सरकार का रेल मुहकमा उन से पैसा ले कर हर तरह का सुभीता कर दे. पर एक सरकार जो ब्योहारी सरकार होने का दावा करती है अगर वह इस तरह के कामों में हाथ बटाने लगे तो उंगली उठाने वालों को रोकने की हिम्मत किसकी हो सकती है.

रेल में, धर्मशाला में, स्कूलों में, घरों में हमने जा जा कर लोगों के ताने सुने. और हम किस मुँह से क्या जवाब देते. हम उनकी परवाह न करते अगर कम से कम इलाहाबाद के उन हिन्दुओं को तसल्ली हो गई होती जो इस रसम पर सच्चे जी से विश्वास करते हैं. उनके ताने तो सुनकर हम ऐंठ कर रह गए. उनका कहना था कि जब धर्म की रसम ही अदा करनी थी तो निरा दिखावा क्यों किया देखने जाने वालों को आम तौर से और सिराने वालों को ख़ास तौर से गंगा स्नान भी तो करना था. इस स्नान के बग़ैर वह हिन्दू जो सच्चे जी से हिन्दू हैं कैसे मान लें कि यह अस्थियों के फूल सिराने की रसम के पीछे सिराने वालों के दिल में धर्म की सच्ची भावना भी थी.

हम क्या जवाब देते. मन में यही कह कर रह गए कि सरकार इतना पैसा ख़र्च करके भी न इधर की रही न उधर की.

भगवान हमें समझ दें

—भगवानदीन

३१ १२ '५०

ہمیں لوگوں کے وشواس پر حملہ کرنے کا کوئی حق حاصل نہیں ۔

مرنے والے کے بیٹی بیٹے اور رشتے دار پورے آزاد ہونے چاہئیں، ہیں اور رہینگے کہ وہ اپنے بزرگوں کے پھول ہردوار سرائیں، تربینی میں بہائیں یا مان سرور پہونچائیں اور اس پر جتنا چاہیں خرچ کریں ۔ جتنی چاہیں اسپشل ٹرینیں چھوڑیں ۔ ہاں، سرکار کا ریل محکمہ اُن سے پیسہ لے کر ہر طرح کا سبھیتا کر دے ۔ پر ایک سرکار جو بیوہاری سرکار ہونے کا دعویٰ کرتی ہے اگر وہ اس طرح کے کاموں میں ہاتھ بٹانے لگے تو انگلی اُٹھانے والوں کو روکنے کی ہمت کس کی ہوسکتی ہے ۔

ریل میں، دھرم شالا میں، اسکولوں میں، گھروں میں ہم نے جا جا کر لوگوں کے طعنے سنے ۔ اور ہم کس منہ سے کیا جواب دیتے ۔ ہم اُن کی پرواہ نہ کرتے اگر کم سے کم الہ آباد کے اُن ہندوؤں کی تسلی ہوگئی ہوتی جو اس رسم پر سچے جی سے وشواس کرتے ہیں ۔ اُن کے طعنے تو سن کر ہم اینٹھ کر رہ گئے ۔ اُن کا کہنا تھا کہ جب دھرم کی رسم ہی ادا کرنی تھی تو نرا دکھاوا کیوں کیا ۔ دیکھنے جانے والوں کو عام طور سے اور سرانے والوں کو خاص طور سے گنگا اسنان بھی تو کرنا تھا ۔ اس اسنان کے بغیر وہ ہندو جو سچے جی سے ہندو ہیں کیسے مان لیں کہ یہ استھیوں کے پھول سرانے کی رسم کے پیچھے سرانے والوں کے دل میں دھرم کی سچی بھاونا بھی تھی ۔

ہم کیا جواب دیتے ۔ من میں یہی کہکر رہ گئے کہ سرکار اتنا پیسہ خرچ کرکے بھی نہ ادھر کی رہی نہ ادھر کی ۔

بھگوان ہمیں سمجھ دیں ۔

۳۱-۱۲-'۵۰

—بھگوان دین

यह कोरा रिवाज नहीं है. इस के पीछे बड़े बड़े पंडितों के लिखे हुए ग्रन्थों ने एक गहरी धर्म भावना भर दी है और ग़लत या सही फूल सिराने वाले यह समझ लेते हैं कि फूल सिराने से जिस आदमी के फूल सिराए गए हैं उसकी आत्मा तर जाएगी या स्वर्ग में जगह पाएगी. यह बात हम हिन्दुस्तानियों में इतनी गहरी चली गई है कि हम इसके ख़िलाफ़ सोच ही नहीं सकते आज के सुधारक पंडित कितना ही ज़ोर लगाएँ और समझाएँ कि यह बेकार की रसम है, लोग मानने और समझने को तैयार नहीं हैं. इस तरह से यह एक दीन धर्म की रूढ़ि है.

किसी आदमी के बेटी बेटे या रिश्तेदार यह हिम्मत नहीं कर सकते कि इस रसम की तरफ़ से लापरवाही कर जाएं. हो सकता है कि कोई सुधारक इतना पक्का निकल आए कि वह इसकी परवा न करे. पर यह वह भी नहीं कर सकता कि उन फूलों को यूं ही छितरा दे क्योंकि ऐसा करने से समाज अगर उसकी गर्दन नापने को तैयार नहीं होगा तो कहा सुनी में कोई कोर कसर न छोड़ रक्खेगा. यह नासमझी से भरी हुई रसम सिर्फ़ ऐसे बड़े आदमी ही रोक सकते हैं जो मरने से पहले अपने बेटी बेटों या रिश्तेदारों के नाम ऐसी लिखत छोड़ जाएँ कि उनकी अस्थियों के फूल इस तरह गंगा या किसी नदी में न सिराए जाएं और जहां उनका दाह हुआ हो वहीं ज़मीन के साथ एक मेक होने के लिये छोड़ दिये जाएं. कांगरेसी लीडरों से, जिन्होंने दीनी सरकार की जगह व्योहारी सरकार की नीव डाली, हमें ऐसी उम्मीद थी कि उन में से कोई तो ऐसी लिखत छोड़ेगा. और जिन लीडरों पर हमारी निगाह थी या है उन में से एक हमारे प्यारे सरदार पटेल भी थे. पर वह क्या करते. और मरने वालों की तरह उन्हें यह कब विश्वास था कि उन का आख़िरी वक़्त आगया है. पर इससे पहले इस तरह की कोई मिसाल भी तो उनके सामने नहीं थी.

یہ کورا رواج نہیں ہے. اس کے پیچھے بڑے بڑے پنڈتوں کے لکھے ہوئے گرنتھوں نے ایک گہری دھرم بھاونا بھر دی ہے اور غلط یا صحیح پھول سرانے والے یہ سمجھ لیتے ہیں کہ پھول سرانے سے جس آدمی کے پھول سرائے گئے ہیں اُسکی آتما تر جائے گی یا سورگ میں جگہ پائیگی . یہ بات ہم ھندستانیوں میں اتنی گہری چلی گئی ہے کہ ہم اِسکے خلاف سوچ ہی نہیں سکتے . آج کے سدھارک پنڈت کتنا ہی زور لگائیں اور سمجھائیں کہ یہ بیکار کی رسم ہے لوگ ماننے اور سمجھنے کو تیار نہیں ہیں . اس طرح سے یہ ایک دین دھرم کی روڑھی ہے .

کسی آدمی کے بیٹی بیٹے یا رشتہ دار یہ ہمت نہیں کرسکتے کہ اس رسم کی طرف سے لاپرواہی کر جائیں. ہوسکتا ہے کہ کوئی سدھارک اِتنا پکا نکل آئے کہ وہ اِسکی پروا نہ کرے . پر یہ وہ بھی نہیں کر سکتا کہ اُن پھولوں کو یوں ہی چھترا دے کیونکہ ایسا کرنے سے سماج اگر اُسکی گردن ناپنے کو تیار نہیں ہوگا تو کہا سنی میں کوئی کور کسر نہ چھوڑ رکھیگا . یہ ناسمجھی سے بھری ہوئی رسم صرف ایسے بڑے آدمی ہی روک سکتے ہیں جو مرنے سے پہلے اپنے بیٹی بیٹوں یا رشتے داروں کے نام ایسی لکھت چھوڑ جائیں کہ اُن کی استھیوں کے پھول اس طرح گنگا یا کسی ندی میں نہ سرائے جائیں اور جہاں اُنکا داہ ہوا ہو وہیں زمین کے ساتھ ایک میک ہونے کے لئے چھوڑ دیئے جائیں . کانگریسی لیڈروں سے، جنھوں نے دینی سرکار کی جگہ بیوہاری سرکار کی نیو ڈالی، ہمیں ایسی اُمید تھی کہ اُن میں سے کوئی تو ایسی لکھت چھوڑے گا . اور جن لیڈروں پر ہماری نگاہ تھی یا ہے اُن میں سے ایک ہمارے پیارے سردار پٹیل بھی تھے . پر وہ کیا کرتے . اور مرنے والوں کی طرح اُنھیں یہ کب وشواس تھا کہ اُن کا آخری وقت آگیا ہے . پر اِس سے پہلے اِس طرح کی کوئی مثال بھی تو اُن کے سامنے نہیں تھی .

मुल्क बना दिये जाएं कि वह यू. एन. ओ. में शामिल हो सकें. तभी तीसरी लड़ाई कुछ दिनों के लिये रुक सकती है.

गैस का इस्तेमाल सारी दुनिया ग़ैर कानूनी बनाकर जब दूसरी लड़ाई को न रोक सकी तब ऐटम बम को ग़ैर क़ानूनी बनाकर तीसरी लड़ाई को कैसे रोक सकेगी. तीसरी लड़ाई को हमेशा के लिये रोकने की ख़ातिर सब मुल्कों को बड़े त्याग की जरूरत पड़ेगी और उन सब को अपनी अपनी नेशन यानी राष्ट्र का मोह छोड़ना पड़ेगा.

हमारी '३८ पड़ी रेखा मिटाइये' का यही मतलब है कि राश्ट्रीयता छोड़िये, अंतर राश्ट्रीयता अपनाइये और विश्व भाईचारे में बंधिये. तब और तभी तीसरी लड़ाई आप के पास आने की कभी न सोचेगी.

—भगवानदीन

१८. १२. '५०

सरकार और सरदार के फूल—

गंगा के किनारे देह दाह का रिवाज बहुत पुराना है. जो धर्म बहुत सी बातों में हिन्दुओं से मेल खाते हैं पर गंगा के किनारे देह दाह में विश्वास नहीं करते वह भी इस रिवाज से इतने दब गए हैं कि उनको भी अपने बड़े बूढ़ों की अस्थियां गंगा के किनारे ही जलाने के लिये ले जानी पड़ती हैं. हां, जो लोग गंगा से बहुत दूर रहते हैं वह कम से कम हड्डियों के फूल ही जाकर गंगा में सिरा आते हैं.

अमी लोग देस के किसी कोने में क्यों न हों अपने प्यारों की अस्थियां हरिद्वार या त्रिवेनी ज़रूर पहुँचा देते हैं. बीच के दरजे के ... आने जाने के हाथ भिजवा देते हैं. गंगा से दूर रहने

ملک بنا دیئے جائیں کہ وہ یو. این. او. میں شامل ہو سکیں. تبھی تیسری لڑائی کچھ دنوں کے لئے رک سکتی ہے.

گیس کا استعمال ساری دنیا غیر قانونی بنا کر جب دوسری لڑائی کو نہ روک سکی تب ایٹم بم کو غیر قانونی بنا کر تیسری لڑائی کو کیسے روک سکے گی. تیسری لڑائی کو ہمیشہ کے لئے روکنے کی خاطر سب ملکوں کو بڑے تیاگ کی ضرورت پڑیگی اور اُن سب کو اپنی اپنی نیشن یعنی راشٹر کا موہ چھوڑنا پڑیگا.

ہماری '٣٨ پڑی ریکھا مٹائیے' کا یہی مطلب ہے کہ راشٹریتا چھوڑئیے، انتر راشٹریتا اپنائیے اور وشو بھائی چارے میں بندھئے. تب اور تبھی تیسری لڑائی آپکے پاس آنے کی کبھی نہ سوچیگی.

۱۸-۱۲-'٥٠

—بھگوان دین

سرکار اور سردار کے پھول—

گنگا کے کنارے دیہہ داہ کا رواج بہت پرانا ہے. جو دھرم بہت سی باتوں میں ہندؤوں سے میل کھاتے ہیں پر گنگا کے کنارے دیہہ داہ میں وشواس نہیں کرتے وہ بھی اس رواج سے اتنے دب گئے ہیں کہ اُنکو بھی اپنے بڑے بوڑھوں کی استھیاں گنگا کے کنارے ہی جلانے کے لئے لے جانی پڑتی ہیں. ہاں، جو لوگ گنگا سے بہت دور رہتے ہیں وہ کم سے کم ہڈیوں کے پھول ہی جا کر گنگا میں سرا آتے ہیں.

ابھی لوگ دیس کے کسی کونے میں کیوں نہ ہوں اپنے پیاروں کی استھیاں ہردوار یا تربینی ضرور پہونچا دیتے ہیں. بیچ کے درجے کے آدمی کسی آتے جاتے کے ہاتھ بھجوا دیتے ہیں. گنگا سے دور

तय नहीं हो पाई कि चीनी फ़ौजें जो कोरिया में लड़ रही हैं वह वहाँ अपनी सूझ पर अपने आप गई हैं या लाल चीन के आँख चुराते पर गई हैं या लाल चीन के इशारे पर गई हैं, या लाल चीन के हुकुम से गई हैं.) क्योंकि उन्हें साफ़ यह दिखाई दे रहा। था कि मंचूरिया की आजादी ख़तरे में है.

चौथा वक़्त लड़ाई रोकने का वह भी हो सकता था जब चीनी फ़ौजों के साथ उत्तरी कोरिया ने यू. एन. ओ. की फ़ौजों को ढकेलना शुरू कर दिया था. अगर उस वक़्त ३८ पड़ी रेखा पर रुकने की बात जो चीनी और कोरियाई फ़ौजों से कही जा रही है यू. एन. ओ. ने ३८ पड़ी रेखा पर लौट आनेकी बात अपनी फ़ौजों से कही होती तो यू. एन. ओ. ने अपना नैतिक पल्ला बहुत भारी कर लिया होता. यू एन. ओ. सारी दुनिया की पंचायत है. उसकी किसी बात पर हार नहीं हो सकती और उसकी कभी भी हार नहीं हो सकती. पर यू. एन. ओ जब एक गुट्ट की बन जाती है तब उस गुट्ट का मुखिया अपनी हार को यू. एन. ओ. की हार मानने लगता है. बस इसी वजह से यू. एन. ओ. ठीक वक़्त पर ठीक काम नहीं कर पाती.

३८ पड़ी रेखा भुला दी जाती है जब जनरल मैकआर्थर उसके उत्तर में होते हैं और यू. एन. ओ. को ३८ पड़ी रेखा की याद आ जाती है जब जनरल मैकआर्थर ३८ पड़ी रेखा के दक्खिन में होते हैं या ३८ पड़ी रेखा उनके दक्खिन में होते हुए भी उनकी आँखों के सामने होती है न कि पीठ के पीछे.

यू. एन. ओ. और उसकी सुरक्षा समिति अगर बड़े बड़े चार पाँच मुल्कों को हथियार बनाने और लड़ाई के लिये तैयारी करने से नहीं रोक सकती तब कोरिया में लड़ाई रोकने की बात कह कर या सचमुच लड़ाई को रोक कर भी तीसरी लड़ाई को आने से नहीं रोक सकती.

अब वह वक़्त आ गया है जब ३८ पड़ी रेखा रूस और अमरीकी दिमाग़ से निकलवा दी जाए. साथ ही साथ जापान और जरमनी ऐसे

طے نہیں ہوپائی کہ چینی فوجیں جو کوریا میں لڑ رہی ہیں وہ وہاں اپنی سوجھ پر اپنے آپ گئی ہیں یا لال چین کے آنکھ چرانے پر گئی ہیں یا لال چین کے اشارے پر گئی ہیں، یا لال چین کے حکم سے گئی ہیں ۔) کیونکہ انہیں صاف یہ دکھائی دے رہا تھا کہ منچوریا کی آزادی خطرے میں ہے

چوتھا وقت لڑائی روکنے کا وہ بھی ہو سکتا تھا جب چینی فوجوں کے ساتھ اُتری کوریا نے یو . این . او . کی فوجوں کو ڈھکیلنا شروع کر دیا تھا . اگر اُسوقت ۳۸ پڑی ریکھا پر رکنے کی بات جو چینی اور کوریائی فوجوں سے کہی جا رہی ہے . یو . این . او . نے ۳۸ پڑی ریکھا پر لوٹ آنے کی بات اپنی فوجوں سے کہی ہوتی تو یو . این . او . نے اپنا نیتک پلا بہت بھاری کر لیا ہوتا . یو . این . او . ساری دنیا کی پنچایت ہے . اُسکی کسی بات پر ہار نہیں ہو سکتی . اور اسکی کبھی بھی ہار نہیں ہو سکتی . پر یو . این . او . جب ایک گٹ کی بن جاتی ہے تب اُس گٹ کا مکھیا اپنی ہار کو یو . این . او . کی ہار ماننے لگتا ہے . بس اِسی وجہ سے یو . این . او . ٹھیک وقت پر ٹھیک کام نہیں کر پاتی .

۳۸ پڑی ریکھا بھلادی جاتی ہے جب جنرل میک آرتھر اُسکے اُتر میں ہوتےہیں اور یو . این . او . کو ۳۸ پڑی ریکھا کی یاد آجاتی ہے جب جنرل میک آرتھر ۳۸ پڑی ریکھا کے دکھن میں ہوتےہیں یا ۳۸ پڑی ریکھا اُن کے دکھن میں ہوتے ہوئے بھی اُنکی آنکھوں کے سامنے ہوتی ہے نہ کہ پیٹھ کے پیچھے .

یو . این . او . اور اُسکی سرکشا سمیتی اگر بڑے بڑے چار پانچ ملکوں کو ہتھیار بنانے اور لڑائی کے لئے تیاری کرنے سے نہیں روک سکتی تب کوریا میں لڑائی روکنے کی بات کہکر یا سچ مچ لڑائی کو روک کر بھی تیسری لڑائی کو آنے سے نہیں روک سکتی .

اب وہ وقت آگیا ہے جب ۳۸ پڑی ریکھا روس اور امریکی دماغ سے نکلوا دی جائے . ساتھ ہی ساتھ جاپان اور جرمنی ایسے

रखकर घूँट ले लिया था. यह लड़ाई रोको का प्रस्ताव या तो उस
वक़्त होना चाहिये था जब अमरीकी फ़ौजें यू. एन. ओ. का झंडा
लिये ३८ पड़ी रेखा के पास पहुँचने वाली थीं और जिस वक़्त
हिन्दुस्तान के प्रधान वज़ीर ने यू. एन. ओ. को यह सलाह दी थी.
पर उस वक़्त जोम में आए मैकआर्थर के भरोसे पर यू.एन. ओ. ने
अपनी फ़ौजों को ३८ पड़ी रेखा पार करने दी और इससे भी पहले
दक्खिनी कोरिया की फ़ौजें ३८ पड़ी रेखा पार कर चुकी थीं. यह बिना
हुकुम के ३८ पड़ी रेखा पार करने वाली फ़ौजें किस के मातहत थीं
यह न कभी यू. एन. ओ. ने पूछा न सुरक्षा कौंसिल ने अगर यू.
एन. ओ. ने उस वक़्त लड़ाई रोको का प्रस्ताव पास किया होता और
दक्खिनी कोरिया की फ़ौजों को ३८ पड़ी रेखा के दक्खिन में बुला
लिया होता तो सिर्फ़ कोरिया ही नहीं कई मुल्कों का जन संहार बच
गया होता. और यू. एन. ओ. के साथ साथ अमरीका की इज़्ज़त
भी लोगों की निगाह में बहुत कुछ बढ़ गई होती और तीसरी लड़ाई
छिड़ जाने का ख़तरा एक दम कम हो गया होता.

लड़ाई रोकने का दूसरा वक़्त उस वक़्त भी कुछ अच्छा ही
रहता जब उत्तरी कोरिया की फ़ौजें मंचूरिया की हद से जा लगी थीं.
पर उस वक़्त जीत के घमंड से भरे हुए जनरल मैकआर्थर कब
सुरक्षा समिति को यह सलाह दे सकते थे कि लड़ाई रोक दी जाय.

رکھکر گھونٹ لے لیا تھا . یہ لڑائی روکو کا پرستاؤ یا تو اُس وقت
ہونا چاہئے تھا جب امریکی فوجیں یو . این . او . کا جھنڈا لئے
۳۸ پڑی ریکھا کے پاس پہنچنے والی تھیں اور جس وقت ہندستان
کے پردھان وزیر نے یو . این او . کو یہ صلاح دی تھی . پر اُس وقت
زعم میں آئے میک آرتھر کے بھروسے پر یو . این . او . نے اپنی فوجوں
کو ۳۸ پڑی ریکھا پار کرنے دی اور اس سے بھی پہلے دکھنی کوریا
کی فوجیں ۳۸ پڑی ریکھا پار کر چکی تھیں . یہ بنا حکم کے
۳۸ پڑی ریکھا پار کرنے والی فوجیں کس کے ماتحت تھیں یہ
نہ کبھی یو . این . او . نے پوچھا نہ سرکشا کونسل نے . اگر یو . این .
او . نے اُس وقت لڑائی روکو کا پرستاؤ پاس کیا ہوتا اور دکھنی
کوریا کی فوجوں کو ۳۸ پڑی ریکھا کے دکھن میں بلا لیا ہوتا تو
صرف کوریا ہی نہیں کئی ملکوں کا جن سنگھار بچ گیا ہوتا . اور
یو . این . او . کے ساتھ ساتھ امریکہ کی عزت بھی لوگوں کی نگاہ
میں بہت کچھ بڑھ گئی ہوتی اور تیسری لڑائی چھڑ جانے کا خطرہ
ایک دم کم ہوگیا ہوتا .

لڑائی روکنے کا دوسرا وقت اُس وقت بھی کچھ اچھا ہی رہتا
جب اُتری کوریا کی فوجیں منچوریا کی حد سے جا لگی تھیں .
پر اُس وقت جیت کے گھمنڈ سے بھرے ہوئے جنرل میک آرتھر کب
سورکشا سمیتی کو یہ صلاح دے سکتے تھے کہ لڑائی روک دی جائے .
تیسرا موقع لڑائی روک دینے کا وہ تھا جب

में शामिल नहीं हैं. जापान, जरमनी और कोरिया तो यों शामिल नहीं हैं कि वह अभी आज़ाद नहीं हैं और लालचीन यों शामिल नहीं है कि यू. एन. ओ. में बनी हुई एक गुट्ट उसे यू. एन. ओ. में शामिल नहीं होने देना चाहती. जो मुल्क यू. एन. ओ. में शामिल हैं वह अगर यू. एन. ओ. की सुरक्षा समिति के हुकुम को न मानें तो उन्हें यू. एन. ओ. से ख़ारिज कर देने की धमकी दी जा सकती है. पर जो मुल्क उसमें शामिल ही नहीं हैं उन पर धमकी कोई असर नहीं कर सकती. और इत्तफ़ाक़ से इस वक़्त जो मुल्क ३८ पड़ी रेखा पार कर रहे हैं वह यू. एन. ओ. के मेम्बर नहीं हैं. इसलिये तीसरी बड़ी लड़ाई ३८ पड़ी रेखा पर कभी भी जन्म ले सकती है. और जब यू. एन. ओ. ऐसे मुल्कों में दख़ल दे रहा है जो उसके मेम्बर भी नहीं हैं तब तो तीसरी लड़ाई के जन्म लेने में और भी जल्दी हो सकती है वह क्यों रुकी हुई है और कब तक रुकी रहेगी इसका जवाब यहां नहीं दिया जा सकता. यहां हमें इस वक़्त दूसरी ही बात कहनी है.

इस वक़्त उत्तरी कोरिया को और चीनी फ़ौजों को तेरह मुल्कों के प्रस्ताव पर और बावन मुल्कों के हां करने पर यह हुकुम दिया गया है कि लड़ाई फ़ौरन रोक दी जाय जिसके यह माने हैं कि कोरियाई और चीनी फ़ौजें ३८ पड़ी रेखा से आगे न बढ़ने पावें. इसमें कोई शक नहीं कि यह प्रस्ताव यू. एन. ओ. ने अच्छी नियत से पास किया. पर उस नियत पर अगर कोई उँगली उठाए तो उसे भी बुरी नियत वाला नहीं समझा जा सकता. दूध का जला अगर छाछ को फूँक कर पिये तो उसमें छाछ फूँकने वाले का क़सूर नहीं. उसका क़सूर है जिसने गरम दूध उसके मुँह लगाया था और उसने उसपर एतबार

میں شامل نہیں ہیں ۔ جاپان، جرمنی اور کوریا تو یوں شامل نہیں ہیں کہ وہ ابھی آزاد نہیں ہیں اور لال چین یوں شامل نہیں ہے کہ یو۔ این۔ او۔ میں بنی ہوئی ایک گٹ اُسے یو۔ این۔ او۔ میں شامل نہیں ہونے دینا چاہتی ۔ جو ملک یو۔ این۔ او۔ میں شامل ہیں وہ اگر یو۔ این۔ او۔ کی سرکشا سمیتی کے حکم کو نہ مانیں تو اُنہیں یو۔ این۔ او۔ سے خارج کر دینے کی دھمکی دی جاسکتی ہے۔ پر جو ملک اُس میں شامل ہی نہیں ہیں اُن پر دھمکی کوئی اثر نہیں کر سکتی۔ اور اتفاق سے اس وقت جو ملک ۳۸ پڑی ریکھا پار کر رہے ہیں وہ یو۔ این۔ او۔ کے ممبر نہیں ہیں۔ اسلئے تیسری بڑی لڑائی ۳۸ پڑی ریکھا پر کبھی بھی جنم لے سکتی ہے۔ اور جب یو۔ این۔ او۔ ایسے ملکوں میں دخل دے رہا ہے جو اُسکے ممبر بھی نہیں ہیں تب تو تیسری لڑائی کے جنم لینے میں اور بھی جلدی ہو سکتی ہے۔ وہ کیوں رکی ہوئی ہے اور کب تک رکی رہے گی اسکا جواب یہاں نہیں دیا جا سکتا۔ یہاں ہمیں اس وقت دوسری ہی بات کہنی ہے۔

اس وقت اُتری کوریا کو اور چینی فوجوں کو تیرہ ملکوں کے پرستاؤ پر اور باون ملکوں کے ہاں کرنے پر یہ حکم دیا گیا ہے کہ لڑائی فوراً روک دی جائے جسکے یہ معنے ہیں کہ کوریائی اور چینی فوجیں ۳۸ پڑی ریکھا سے آگے نہ بڑھنے پاویں۔ اس میں کوئی شک نہیں کہ یہ پرستاؤ یو۔ این۔ او۔ نے اچھی نیت سے پاس کیا۔ پر اُس نیت پر اگر کوئی انگلی اُٹھائے تو اُسے بھی بری نیت والا نہیں سمجھا جا سکتا۔ دودھ کا جلا اگر چھاچھ کو پھونک کر پئے تو اُس میں چھاچھ پھونکنے والے کا قصور نہیں۔ اُس کا قصور ہے جس نے گرم دودھ اُسکے منہ لگایا تھا اور اُس نے اُس پر اعتبار

उत्तरी दक्खिनी कोरिया राज़ी से, धमकी घुड़की से या लड़ भिड़ कर कुछ ही दिनों में एक होजाएंगे. और फिर उस जापान से भी अमरीकियों को जल्दी भागना पड़ेगा जहाँ वह नवाबों की ज़िन्दगी बिता रहे हैं. उत्तरी दक्खिनी कोरिया का एक होना एक तरह से जापान में ग़ुलामी की ज़ंजीर को तोड़ने के आन्दोलन के लिये पहला क़दम ही समझना चाहिये. अमरीका के दक्खिनी कोरिया में छाए रहने की यह सबसे पहली और ज़रूरी वजह है. और भी वजह हो सकती है. पर इस अकेली वजह ही ने ३८ पड़ी रेखा को बहुत बड़ा मान दे दिया है.

अगर सुरक्षा समिति की कचहरी में उत्तरी दक्खिनी कोरिया को बुलाकर तहक़ीक़ात शुरू हुई होती तो यह ज़रूर पता चल जाता कि उत्तरी कोरिया से रूस के हटने के दूसरे दिन से ही ३८ पड़ी रेखा छुट पुट हमलों के लिये बराबर पार होती रही. किसने पहले पार की और किसने कितनी बार पार की, इसकी ठीक ठीक तहक़ीक़ात अब बेहद मुश्किल है. मगर जब बड़ी फ़ौजों को साथ लेकर उत्तरी कोरिया ने ३८ पड़ी रेखा को पार किया तभी ३८ पड़ी रेखा को पार करने की बात अख़बारों में आई और जब अमरीका उत्तरी कोरिया की फ़ौजों के मुक़ाबले में आया तब यह ख़बर क़स्बों तक पहुंची और यू. एन. ओ. की सुरक्षा समिति के हुकुम निकालने के बाद से यह ख़बर गाँव गाँव में पहुंच गई.

यू. एन. ओ. कोरिया की घरेलू लड़ाई शुरू होने के समय ५९

اُتری دکھنی کوریا راضی سے، دھمکی گھڑکی سے یا لڑ بھڑ کر کچھ ہی دنوں میں ایک ہوجائیںگے . اور پھر اُس جاپان سے بھی امریکیوں کو جلدی بھاگنا پڑیگا جہاں وہ نوابوں کی زندگی بتا رہے ہیں . اُتری دکھنی کوریا کا ایک ہونا ایک طرح سے جاپان میں غلامی کی زنجیر کو توڑنے کے آندولن کیلئے پہلا قدم ہی سمجھنا چاہئے . امریکہ کے دکھنی کوریا میں چھائے رہنے کی یہ سب سے پہلی اور ضروری وجہ ہے . اور بھی وجہ ہوسکتی ہے . پر اس اکیلی وجہ ہی نے ۳۸ پڑی ریکھا کو بہت بڑا مان دے دیا ہے .

اگر سرکشا سمیتی کی کچہری میں اُتری دکھنی کوریا کو بلا کر تحقیقات شروع ہوئی ہوتی تو یہ ضرور پتہ چل جاتا کہ اُتری کوریا سے روس کے ہٹنے کے دوسرے دن سے ہی ۳۸ پڑی ریکھا چھٹ پٹ حملوں کے لئے برابر پار ہوتی رہی . کس نے پہلے پار کی اور کس نے کتنی بار پار کی، اسکی ٹھیک ٹھیک تحقیقات اب بےحد مشکل ہے . مگر جب بڑی فوجوں کو ساتھ لے کر اُتری کوریا نے ۳۸ پڑی ریکھا کو پار کیا تبھی ۳۸ پڑی ریکھا کو پار کرنے کی بات اخباروں میں آئی اور جب امریکہ اُتری کوریا کی فوجوں کے مقابلے میں آیا تب یہ خبر قصبوں تک پہونچی اور یو. این. او. کی سرکشا سمیتی کے حکم نکالنے کے بعد سے یہ خبر گاؤں گاؤں میں پہونچ گئی .

یو . این . او . کوریا کی گھریلو لڑائی شروع ہونے کے سمے ۵۹

को दो हिस्सों में बाँट देगा. यू. एन. ओ. की सुरक्षा समिति के कुछ मेम्बर ही ऐसे चमत्कारी साबित हुए कि उन्होंने कोरिया में ३८ पड़ी रेखा पर कोरिया के दो हिस्से कर दिये. उत्तरी कोरिया के हमले से ३८ पड़ी रेखा को कुछ समझदार ही जान पाए थे पर यू. एन. ओ. की सुरक्षा समिति के बीच में पड़ने से ३८ पड़ी रेखा को अब गाँव वाले भी समझ गए हैं.

जिस तरह ख़रबूज़े पर बनी हुई लकीरें यह नहीं बतातीं कि ख़रबूज़े के अन्दर सन्तरे जैसी फाँकें हैं वैसे ही किसी देस के नक़्शे पर खींची हुई खड़ी पड़ी लकीरें यह नहीं बतातीं कि वह देस इतने मुरब्बों में बंटा हुआ है. यू. एन. ओ. के कुछ मेम्बरों ने बँटवारे का यह अजब ढंग निकाल कर कोरिया में हमेशा के लिये लड़ाई का बीज बो दिया. और फिर ३८ पड़ी रेखा पर कोरिया, कोरिया के रहने वालों के बीच नहीं बाँटा गया वह तो बांटा गया अमरीका और रूस के बीच, जो उस वक़्त मजबूरी के दोस्त थे. उन दोनों की नैतिक ज़िन्दगी में ज़मीन आसमान का फ़रक़ है. उन दोनों में एक दूसरे के बीच सात समन्दर रहते हुए भी जब दोस्ती नहीं पाई जाती तो ३८ पड़ी रेखा के उत्तर दक्खिन बैठ कर उनमें दोस्ती की उम्मीद कैसे की जा सकती है. रूस कोरिया को कोरिया बासियों पर छोड़ कर ३८ पड़ी रेखा के उत्तर से हट भी गया और अपनी फ़ौजों को रूस ले भी गया तो इससे ३८ पड़ी रेखा के दक्खिन में छावनी डाले पड़ी अमरीकी फ़ौजें रूस को अपना दोस्त कैसे समझ सकती थीं क्योंकि रूस की हद तो अब भी कहीं न कहीं कोरिया से मिली हुई है. अमरीकी यह ख़ूब समझते थे कि उनके कोरिया से हटते ही

کو دو حصوں میں بانٹ دیگا ۔ یو ۔ این ۔ او ۔ کی سرکشا سمیتی کے کچھ ممبر ھی ایسے چمتکاری ثابت ہوئے کہ اُنھوں نے کوریا میں ۳۸ پڑی ریکھا پر کوریا کے دو حصے کر دیئے ۔ اُتری کوریا کے حملے سے ۳۸ پڑی ریکھا کو کچھ سمجھدار ھی جان پائے تھے پر یو ۔ این ۔ او ۔ کی سرکشا سمیتی کے بیچ میں پڑنے سے ۳۸ پڑی ریکھا کو اب گاؤں والے بھی سمجھ گئے ھیں ۔

جس طرح خربوزے پر بنی ہوئی لکیریں یہ نہیں بتاتیں کہ خربوزے کے اندر سنترے جیسی پھانکیں ھیں ویسے ھی کسی دیس کے نقشے پر کھینچی ہوئی کھڑی پڑی لکیریں یہ نہیں بتاتیں کہ وہ دیس اِتنے مربعوں میں بٹا ہوا ھے ۔ یو ۔ این او ۔ کے کچھ ممبروں نے بٹوارے کا یہ عجب ڈھنگ نکال کر کوریا میں ہمیشہ کیلئے لڑائی کا بیج بو دیا ۔ اور پھر ۳۸ پڑی ریکھا پر کوریا، کوریا کے رہنے والوں کے بیچ نہیں بانٹا گیا وہ تو بانٹا گیا امریکہ اور روس کے بیچ، جو اُسوقت مجبوری کے دوست تھے ۔ اُن دونوں کی نیتک زندگی میں زمین آسمان کا فرق ھے ۔ اُن دونوں میں ایک دوسرے کے بیچ سات سمندر رہتے ہوئے بھی جب دوستی نہیں پائی جاتی تو ۳۸ پڑی ریکھا کے اُتر دکھن بیٹھکر اُن میں دوستی کی اُمید کیسے کی جاسکتی ھے ۔ روس کوریا کو کوریا باسیوں پر چھوڑ کر ۳۸ پڑی ریکھا کے اُتر سے ہٹ بھی گیا اور اپنی فوجوں کو روس لے بھی گیا تو اس سے ۳۸ پڑی ریکھا کے دکھن میں چھاؤنی ڈالے پڑی امریکی فوجیں روس کو اپنا دوست کیسے سمجھ سکتی تھیں کیونکہ روس کی حد تو اب بھی کہیں نہ کہیں کوریا سے ملی ہوئی ھے ۔ امریکی یہ خوب سمجھتے تھے کہ اُنکے کوریا سے ہٹتے ھی

अंगरेज जो छोटे मोटे ऐसे पटाखे छोड़ गए थे जो अंगरेजों के चले जाने के बाद कभी भी फट सकते थे उनका फलीता निकाल कर उनकी बारूद से काम ले लेने का काम सरदार जैसे आदमी के हाथ ही हो सकता था. अगर हम सरदार को गुजरात की तीसरी बड़ी देन कहें तो ठीक ही होगा. एक स्वामी दयानन्द, दूसरे महात्मा गांधी और तीसरे सरदार खुद. भारत में जनता राज क़ायम होने में तीनों का ही हाथ है. और सरदार ने तो साँप मरा न लाठी टूटी का जादू दिखाकर एक बार तो भारत के जनराज को ऐसी नींव पर खड़ा कर दिया है जहाँ से डिगाना ज़रा मुशकिल काम है.

अब सरदार को याद करके किस की आँख से न आँसू ढुल पड़े होंगे ?

आइये भेद भाव मिटाकर सरदार की दी हुई इस व्योहारी सरकार को सच्चे मानों में व्योहारी बनाते हुए और हर तरह से एक नेशन के गुन अपनाते हुए सरदार की आत्मा को स्वर्ग में सुख शान्ति से रहने का अवसर दें सरदार के लिये यही सच्ची श्रद्धाँजलि होगी.

१८-१२-'५० —भगवानदीन

अड़तीस पड़ी रेखा मिटाइये——

—— के —— ने जब अपने नक़्शे के काम के लिये खड़ी

انگریز جو چھوٹے موٹے ایسے پٹاخے چھوڑ گئے تھے جو انگریزوں کے چلے جانے کے بعد کبھی بھی پھٹ سکتے تھے اُن کا فلیتا نکال کر اُنکی بارود سے کام لے لینے کا کام سردار جیسے آدمی کے ھاتھ ھی ھو سکتا تھا . اگر ھم سردار کو گجرات کی تیسری بڑی دین کہیں تو ٹھیک ھی ھوگا . ایک سوامی دیانند' دوسرے مہاتما گاندھی اور تیسرے سردار خود . بھارت میں جنتا راج قائم ھونے میں تینوں کا ھی ھاتھ ھے . اور سردار نے تو سانپ مرا نہ لاٹھی ٹوٹی کا جادو دکھا کر ایک بار تو بھارت کے جن راج کو ایسی نیو پر کھڑا کر دیا ھے جہاں سے ڈگانا ذرا مشکل کام ھے .

اب سردار کو یاد کر کے کسکی آنکھ سے آنسو نہ ڈھل پڑے ھوں گے ؟

آئیے بھید بھاؤ مٹا کر سردار کی دی ھوئی اس بیوھاری سرکار کو سچے معنوں میں بیوھاری بناتے ھوئے اور ھر طرح سے ایک نیشن کے گن اپناتے ھوئے سردار کی آتما کو سورگ میں سکھ شانتی سے رھنے کا اوسر دیں . سردار کے لئے یہی سچی شردھا نجلی ھوگی .

۱۸-۱۲-۵۰ ——بھگوان دین

اڑتیس پڑی ریکھا مٹائیے——

بھوگول کے جان کاروں نے جب اپنے نقشے کے کام کے لئے کھڑی

लेना चाहिये कि राजकारन के मैदान में अपने साथियों से इतने एकमेक रहना चाहिये जैसे दूध और पानी. वह कहने के लिये ही अलग हैं पर मौक़े पर दूध और पानी एक दूसरे पर जान देने के लिये तैयार रहते हैं.

सरदार ने गांधीजी को ख़ूब समझ लिया था. तभी तो वह गांधी जी की कम से कम दुहाई पीटते थे. उन्होंने गांधी जी को बहुत पास से देखा था और यरवदा जेल में उनके पास रहकर उन की उन अच्छाइयों को जो सरदारी के लिये ज़रूरी थीं इस तरह पिया था कि वह सरदार की रग रग में समा गई थीं. उनको 'सरदार' जनता ने बनाया था और जनता किसी को सरदार यों ही नहीं कहने लगती. सरदार की पहली सिफ़त है कि वह सब को एक आँख से देखे. और यह सिफ़त उनमें बहुत काफ़ी थी. अगर इसकी ज़रा भी कमी होती तो पाकिस्तान बन जाने के बाद भारत में कभी व्योहारी सरकार (सेकुलर गवरमेन्ट) क़ायम न हो सकती और जो सरकार व्योहारी न हो वह धरती में गड़ी पेड़ से कटी शाख़ से ज़्यादा दिन हरी नहीं रह सकती. यह बात सरदार ख़ूब अच्छी तरह समझते थे.

देस की आज़ादी की ख़ातिर पैसा त्यागना आसान है पर आदतें जिसको समझदारों ने दूसरी प्रकृति का नाम दिया है छोड़ना मुशकिल है. और जो यह छोड़ सकता है वह क्या नहीं कर सकता. सरदार में यह ताक़त थी और उन्होंने उससे काम लिया. नहीं तो बैरिस्टरी के नाते अंगरेज़ों की डाली हुई आदतें उन्हें चैन लेने देतीं? यह दूसरा पाठ है जो जवान उनकी जीवनी से ले सकते हैं.

لینا چاهئے کہ راج کارن کے میدان میں اپنے ساتھیوں سے اتنے ایک میک رهنا چاهئے جیسے دودھ اور پانی . وہ کهنے کے لئے هی الگ هیں پر موقع پر دودھ اور پانی ایک دوسرے پر جان دینے کے لئے تیار رهتے هیں .

سردار نے گاندھی جی کو خوب سمجھ لیا تھا . تبھی تو وہ گاندھی جی کی کم سے کم دهائی پیٹتے تھے . اُنھوں نے گاندھی جی کو بہت پاس سے دیکھا تھا اور یروڈا جیل میں اُن کے پاس رہ کر اُنکی اُن اچھائیوں کو جو سرداری کے لئے ضروری تھیں اس طرح پیا تھا کہ وہ سردار کی رگ رگ میں سما گئی تھیں . اُنکو 'سردار' جنتا نے بنایا تھا اور جنتا کسی کو سردار یوں هی نہیں کهنے لگتی . سردار کی پہلی صفت هے کہ وہ سب کو ایک آنکھ سے دیکھے . اور یہ صفت اُن میں بہت کافی تھی . اگر اِسکی ذرا بھی کمی ہوتی تو پاکستان بن جانے کے بعد بھارت میں کبھی بیوهاری سرکار (سیکولر گورمینٹ) قائم نہ هو سکتی اور جو سرکار بیوهاری نہ هو وہ دهرتی میں گڑی پیڑ سے کٹی شاخ سے زیادہ دن هری نہیں رہ سکتی . یہ بات سردار خوب اچھی طرح سمجھتے تھے .

دیس کی آزادی کی خاطر پیسہ تیاگنا آسان هے پر عادتیں جسکو سمجھداروں نے دوسری پرکرتی کا نام دیا هے چھوڑنا مشکل هے . اور جو یہ چھوڑ سکتا هے وہ کیا نہیں کر سکتا . سردار میں یہ طاقت تھی اور اُنھوں نے اُس سے کام لیا . نہیں تو بیرسٹری کے ناتے انگریزوں کی ڈالی هوئی عادتیں اُنھیں چین لینے دیتیں ؟ یہ دوسرا پاٹھ هے جو جوان اُنکی جیونی سے لے سکتے هیں .

जादू नहीं है. कोई खिलाफ़ क़ुदरत चीज नहीं है. यह भी जरूरी नहीं कि जो महापुरुश योग का बड़ा जानकार हो वह राजकाज या दूसरे हर मैदान में भी उतना ही माहिर हो. कामिल या पूर्ण होना सिवाय भगवान के दूसरे किसी के लिये नहीं है. अलग अलग महापुरुशों के पैरो अगर अपने अपने बुज़ुर्गों को कामिल या निर्भ्रान्त मानने की जगह उन्हें इन्सान, करोड़ों इंसानों से बढ़कर इन्सान, मगर इन्सान मानने लगें तो हम सब सचाई के भी अधिक निकट हो जावें और दुनिया भर के महापुरुश हम सब के एक बराबर पूज्य और हम सब की थाथी बन जावें. मानव समाज को एक करने में भी इससे बहुत बड़ी मदद मिल सकती है.

इसी भावना के साथ हम श्रीअरविंद को दुनिया के महान से महान पुरुशों में गिनते हैं और चाहते हैं कि सारी दुनिया उनके जीवन, उनके उपदेशों और उनके बताए रास्ते से फ़ायदा उठावे.

—सुन्दरलाल

सरदार हमें छोड़ चल दिये—

हमें छोड़ने से कुछ ही दिन पहले हमारे प्यारे सरदार ने उन आदमियों का भ्रम मिटा दिया था जो सरदार और नेहरू को दो देह और दो जान मानते थे. सरदार ने नेहरू को अपना सरदार कह कर अपनी सरदारी को चार चाँद लगा दिये थे. और रेडियो पर श्री नेहरू को बोलते सुनकर सब शक करने वालों और न शक करने

جادو نہیں ہے . کوئی خلاف قدرت چیز نہیں ہے . یہ بھی ضروری نہیں کہ جو مہاپرش یوگ کا بڑا جانکار ہو وہ راج کاج یا دوسرے ہر میدان میں بھی اُتنا ہی ماہر ہو . کامل یا پورن ہونا سوائے بھگوان کے دوسرے کسی کے لئے نہیں ہے . الگ الگ مہاپرشوں کے پیرو اگر اپنے اپنے بزرگوں کو کامل یا نربھرانت ماننے کی جگہ اُنہیں انسان، کروڑوں انسانوں سے بڑھکر انسان، مگر انسان ماننے لگیں تو ہم سب سچائی کے بھی ادھک نکٹ ہوجاویں اور دنیا بھر کے مہاپرش ہم سبکے ایک برابر پوجیہ اور ہم سبکی تھاتی بن جاویں. مانو سماج کو ایک کرنے میں بھی اس سے بہت بڑی مدد مل سکتی ہے .

اسی بھاونا کے ساتھ ہم شری اروند کو دنیا کے مہان سے مہان پرشوں میں گنتے ہیں اور چاہتے ہیں کہ ساری دنیا اُن کے جیون، اُنکے اُپدیشوں اور اُنکے بتائے راستے سے فائدہ اُٹھاوے .

— سندر لال

سردار ہمیں چھوڑ چل دئے —

ہمیں چھوڑنے سے کچھ ہی دن پہلے ہمارے پیارے سردار نے اُن آدمیوں کا بھرم مٹا دیا تھا جو سردار اور نہرو کو دو دیہ اور دو جان مانتے تھے . سردار نے نہرو کو اپنا سردار کہکر اپنی سرداری کو چار چاند لگا دئے تھے . اور ریڈیو پر شری نہرو کو بولتے سن کر سب شک کرنے والوں اور نہ شک کرنے

आदमी की उमर बढ़ाने के लिये भी अभी तक और कोई चीज़ इतनी मददगार नहीं समझी जाती जितनी योग. रहन सहन, खान पान वगैरा में भी जो सुविधाएँ श्री अरविन्द को मिली हुई थीं वह दुनिया में शायद ही किसी दूसरे आदमी को हासिल हों. हमें ख़ुद यह आशा थी कि श्री अरविन्द अभी बरसों और इस दुनिया में बने रहेंगे. इसलिये भी 78 वर्ष की आयु में अचानक उनका गुरदे के रोग से उठ जाना हमारे लिये और हमारे जैसे बहुत सों के लिये एक ज़बरदस्त धक्का था.

हम कह चुके हैं कि श्री अरविन्द दुनिया के बड़े से बड़े आदमियों में से थे. इस देस के वह एक चमकते हुए तारे थे. उनके चले जाने का हमें और दुनिया के लाखों आदमियों को दुख है. वह एक आदमी ही नहीं एक संस्था थे, एक बहुत बड़ी और उपयोगी संस्था. साथ ही आजतक दुनियाका कोई भी महापुरुश, कोई भी पीर, पैग़म्बर या अवतार न निर्भ्रान्त यानी ग़लती से ख़ाली हुआ न हो सकता है. मुहम्मद साहब बार बार कहा करते थे और कई बार अपनी ग़लतियां दिखाकर कहा करते थे कि मैं तुम लोगों की ही तरह एक इन्सान हूं. क़ुरान तक में मुहम्मद साहब के लिये "तुम्हारी ही तरह एक इन्सान" यह शब्द बार बार आते हैं. मुहम्मद साहब ईश्वर से अपनी प्रार्थनाओं में अपनी ग़लतियों के लिये माफ़ी मांगा करते थे. गांधी जी अपनी किसी किसी ग़लती को हिमालय जैसी बड़ी ग़लती कहा करते थे. हिन्दू अवतारों तक की भूलें ग्रंथों में भरी पड़ी हैं. योग बहुत बड़ी चीज़ है. दुनिया के लिये वह एक

آدمی کی عمر بڑھانے کے لئے ابھی تک اور کوئی چیز اتنی مددگار نہیں سمجھی جاتی جتنی یوگ . رہن سہن' کھان پان وغیرہ میں بھی جو سو ودھائیں شری اروند کو ملی ہوئی تھیں وہ دنیا میں شائد ہی کسی دوسرے آدمی کو حاصل ہوں . ہمیں خود یہ آشا تھی کہ شری اروند ابھی برسوں اور اس دنیا میں بنے رہیں گے . اسلئے بھی 78 ورش کی آیو میں اچانک اُن کا گردے کے روگ سے اُٹھ جانا ہمارے لئے اور ہمارے جیسے بہت سوں کے لئے ایک زبردست دھکا تھا .

ہم کہہ چکے ہیں کہ شری اروند دنیا کے بڑے سے بڑے آدمیوں میں سے تھے . اس دیس کے وہ ایک چمکتے ہوئے تارے تھے . اُنکے چلے جانے کا ہمیں اور دنیا کے لاکھوں آدمیوں کو دکھ ہے . وہ ایک آدمی ہی نہیں ایک سنستھا تھے ' ایک بہت بڑی اور اُپیوگی سنستھا . ساتھ ہی آج تک دنیا کا کوئی بھی مہاپرش' کوئی بھی پیر' پیغمبر یا اوتار نہ نربھرانت یعنی غلطی سے خالی ہوا نہ ہوسکتا ہے . محمد صاحب بار بار کہا کرتے تھے اور کئی بار اپنی غلطیاں دکھا کر کہا کرتے تھے کہ میں تم لوگوں کی ہی طرح ایک انسان ہوں . قرآن تک میں محمد صاحب کیلئے '' تمہاری ہی طرح ایک انسان '' یہ شبد بار بار آتے ہیں . محمد صاحب ایشور سے اپنی پراتھناؤں میں اپنی غلطیوں کے لئے معافی مانگا کرتے تھے . گاندھی جی اپنی کسی کسی غلطی کو ہمالیہ جیسی بڑی غلطی کہا کرتے تھے . ہندو اوتاروں تک کی بھولیں گرنتھوں میں بھری پڑی ہیں . یوگ بہت بڑی چیز ہے . دنیا کے لئے وہ

पिछले महायुद्ध में जब कि गांधी जी देस को यह सलाह दे रहे थे कि अंगरेज़ों को लड़ाई में कोई मदद नहीं देनी चाहिये, श्री अरविन्द ने अपने आश्रम से पहले पांच हज़ार रुपया चंदा मदरास के गवरनर को जंग के लिये भेजा और दूसरी बार दस हज़ार रुपया इसी काम के लिये वाइसराय के फंड में भेजा. इत्तफ़ाक़ से इन पंक्तियों का लेखक सेवाग्राम आश्रम में भी उस दिन शाम को मौजूद था जिस दिन श्री अरविन्द के आश्रम से दो सज्जन गांधी जी के पास श्री अरविन्द का यह सन्देसा लेकर आए थे कि चूंकि श्री अरविन्द को यह पता है कि इस महायुद्ध में देवता लोग अंगरेज़ों और उनके साथियों की तरफ़ हैं और दानव (राक्षस या शैतान) अंगरेज़ों के दुश्मनों की तरफ़ इसलिये आप को इस युद्ध में अंगरेज़ों ही की पूरी मदद करनी चाहिये और यही देस को सलाह देनी चाहिये. बातचीत के समय हम मौजूद थे. हमारे सामने गांधी जी ने श्री अरविन्द के पास से आये दोनों सज्जनों से कहा कि अगर श्री अरविन्द का यह ख़याल है तो उन्हें खुले तौर पर देस के सामने आकर देस को उधर चलने का उपदेश देना चाहिये. पर गांधी जी की राय से श्री अरविन्द की राय न मिल सकी.

अहिंसा पर भी असूली निगाह से गांधी जी के और श्री अरविंद के विचारों में फ़रक़ रहा. हाल में रूस और कम्यूनिज़्म से भी श्री अरविन्द को दुनिया के लिये वैसा ही ख़तरा दिखाई देता था जैसा इंगलैंड फ्रांस और अमरीका को.

پچھلے مہا یدھ میں جب کہ گاندھی جی دیس کو یہ صلاح دے رہے تھے کہ انگریزوں کو لڑائی میں کوئی مدد نہیں دینی چاہئے، شری اروند نے اپنے آشرم سے پہلے پانچ ہزار روپیہ چندہ مدراس کے گورنر کو جنگ کے لئے بھیجا اور دوسری بار دس ہزار روپیہ اسی کام کے لئے وائسرائے کے فنڈ میں بھیجا. اتفاق سے ان پنکتیوں کا لیکھک سیوا گرام آشرم میں بھی اس دن شام کو موجود تھا جس دن شری اروند کے آشرم سے دو سجن گاندھی جی کے پاس شری اروند کا یہ سندیسہ لے کر آئے تھے کہ چونکہ شری اروند کو یہ پتہ ہے کہ اس مہایدھ میں دیوتا لوگ انگریزوں اور اُن کے ساتھیوں کی طرف ہیں اور دانو (راکشس یا شیطان) انگریزوں کے دشمنوں کی طرف اس لئے آپکو اس یدھ میں انگریزوں ہی کی پوری مدد کرنی چاہئے اور یہی دیس کو صلاح دینی چاہئے. بات چیت کے سمے ہم موجود تھے. ہمارے سامنے گاندھی جی نے شری اروند کے پاس سے آئے دونوں سجنوں سے کہا کہ اگر شری اروند کا یہ خیال ہے تو اُنھیں کھلے طور پر دیس کے سامنے آکر دیس کو اُدھر چلنے کا اُپدیش دینا چاہئے. پر گاندھی جی کی رائے سے شری اروند کی رائے نہ مل سکی.

اہنسا پر بھی اصولی نگاہ سے گاندھی جی کے اور شری اروند کے وچاروں میں فرق رہا. حال میں روس اور کمیونزم سے بھی شری اروند کو دنیا کے لئے ویسا ہی خطرہ دکھائی دیتا تھا جیسا انگلینڈ، فرانس، اور امریکہ کو.

जो आया उसने उसे अपने मतलब के लिये आसानी से दुह लिया. न केवल तरह तरह की एक दूसरे के ख़िलाफ़ फ़िलासफ़ियां ही गीता में से निकलती रही हैं, बल्कि उसी गीता से लोकमान्य ने कर्मयोग का उपदेश निकाल कर झूटे त्याग और वैराग्य के प्रपंचों को काटा, वही गीता अरविन्द बाबू ने बम फेंकने वाले नौजवानों के हाथों में दी और उसी गीता से महात्मा गांधी ने अपना अनासक्तियोग निकाल कर दिखलाया.

हम मानते हैं कि इसमें नीयत सबकी शुद्ध थी और गीता ने समय के अनुसार सबकी इच्छाओं को पूरा किया. सन् 1919 में महात्मा गांधी के मैदान में आने के समय एक बार बापू ने कलकत्ते में पिछले समय के बहुत से क्रान्तिकारियों को जमा करके उनसे अपना रास्ता बदल कर नये अहिंसा के मार्ग पर चलने की अपील की. बात बहुत सों के दिलों को ठीक लगी. श्री अरविन्द तक भी ख़बर पहुँचाई गई.और कम से कम उस समय एक बार उन्होंने अपने पिछले समय के साथियों को महात्मा गांधी के रास्ते को अपनाने और आज़माने के लिये हिम्मत दिलाई.

श्री अरविन्द योग विद्या के बहुत बड़े जानकार थे. पिछले तीस बरस के अन्दर उनकी यह जानकारी और उनका अभ्यास कहा जाता है बेहद बढ़ गया था. हज़ारों आदमी उनके दर्शनों के लिये बेचैन रहते थे. योगी की हैसियत से उनका नाम देस बिदेसों में उजागर था. अपने आश्रम में एकान्त सेवन करते हुए उन्होंने राज-काज में नहीं के बराबर हिस्सा लिया. लेकिन जब कभी लिया तो उनका झुकाव अकसर महात्मा गांधी की राय के ख़िलाफ़ रहा.

جو آیا اُسنے اُسے اپنے مطلب کے لئے آسانی سے دوہ لیا . نہ کیول طرح طرح کی ایک دوسرے کے خلاف فلاسفیاں ہی گیتا میں سے نکلتی رہی ہیں' بلکہ اُسی گیتا سے لوکمانیہ نے کرم یوگ کا اُپدیش نکال کر جھوٹے تیاگ اور ویراگ کے پرپنچوں کو کاٹا' وہی گیتا اروند بابو نے بم پھینکنے والے نوجوانوں کے ہاتھوں میں دی اور اُسی گیتا سے مہاتما گاندھی نے اپنا انا سکتی یوگ نکالکر دکھلایا .

ہم مانتے ہیں کہ اِس میں نیت سب کی شدھ تھی اور گیتا نے سمے کے انوسار سب کی اِچھاؤں کو پورا کیا . سن 1919 میں مہاتما گاندھی کے میدان میں آنے کے سمے ایک بار باپو نے کلکتے میں پچھلے سمے کے بہت سے کرانتکاریوں کو جمع کرکے اُن سے اپنا راستہ بدل کر نئے اہنسا کے مارگ پر چلنے کی اپیل کی . بات بہت سوں کے دلوں کو ٹھیک لگی . شری اروند تک بھی خبر پہنچائی گئی . اور کم سے کم اُس سمے ایک بار اُنھوں نے اپنے پچھلے سمے کے ساتھیوں کو مہاتما گاندھی کے راستے کو اپنانے اور آزمانے کے لئے ہمت دلائی .

شری اروند یوگ ودیا کے بہت بڑے جانکار تھے . پچھلے تیس برس کے اندر اُن کی یہ جانکاری اور اُن کا ابھیاس کہا جاتا ہے بے حد بڑھ گیا تھا . ہزاروں آدمی اُن کے درشنوں کے لئے بیچین رہتے تھے . یوگی کی حیثیت سے اُن کا نام دیس بدیسوں میں اُجاگر تھا . اپنے آشرم میں ایکانت سیون کرتے ہوئے اُنھوں نے راج کاج میں نہیں کے برابر حصہ لیا لیکن جب کبھی لیا تو اُن کا جھکاو اکثر مہاتما گاندھی کی رائے کے خلاف رہا .

सन् 1907 में देस ने एक नई करवट ली थी. चारों तरफ़ एक नए जोश और नई बेदारी के आसार दिखाई देते थे. देस भर में जिन समाचार पत्रों ने इस बेदारी को पैदा करने में सबसे अधिक हिस्सा लिया उनमें पहिला नाम कलकत्ते के अंगरेज़ी दैनिक 'बन्देमातरम' का था. 'बन्देमातरम' देस के कोने कोने में पहुँचता था. उसके अग्रलेख रोज़ाना बड़े चाव और उत्साह के साथ पढ़े जाते थे. इनके ख़ास लेखक अरविन्द बाबू थे. यह कहना बात बढ़ाकर कहना नहीं है कि सबसे अधिक अरविन्द बाबू और उनके बाद श्याम बाबू के लेखों ने उन दिनों हज़ारों नौजवानों के दिलों में देशभक्ति और बलिदान की वह आग सुलगाई जो अपना काम किये बिना नहीं बुझी और जो कहीं कहीं किसी कोने खुतरे में आज तक सुलगती हुई देखी जा सकती है.

सन् 1910 का वह दिन (अगर हम भूलते नहीं तो वह साल 1910 ही था) हमें अभी तक याद है जिस दिन अरविन्द बाबू ने हमेशा के लिये कलकत्ता छोड़ा. हमें उस दिन कई घन्टे उनके साथ रहने का मौक़ा मिला था, राजकाज के मैदान में अरविन्द बाबू अपना काम कर चुके थे.

दर्शनशास्त्र (फ़िलासफ़ी) और योग का श्री अरविन्द को शुरू से ही शौक़ था. हिन्दू धर्म और हिन्दूशास्त्र के वह ऊंचे दर्जे के विद्वान थे. 'बन्देमातरम' और उसके बाद 'कर्मयोगिन' में उनके कोई कोई लेख ख़ासे फ़िलासफ़ी भरे होते थे और दिलों पर गहरा असर डालते थे. अपने आन्दोलन के लिये गीता का उन्होंने जी भर कर

سن 1907 میں دیس نے ایک نئی کروٹ لی تھی. چاروں طرف ایک نئے جوش اور نئی بیداری کے آثار دکھائی دیتے تھے . دیس بھر میں جن سماچار پتروں نے اس بیداری کو پیدا کرنے میں سب سے ادھک حصہ لیا اُن میں پہلا نام کلکتے کے انگریزی دینک 'بندے ماترم' کا تھا . 'بندے ماترم' دیس کے کونے کونے میں پہونچتا تھا . اُسکے اگر لیکھ روزانہ بڑے چاؤ اور اُتساہ کے ساتھ پڑھے جاتے تھے . اِن کے خاص لیکھک اروند بابو تھے . یہ کہنا بات بڑھا کر کہنا نہیں ہے کہ سب سے ادھک اروند بابو اور اُن کے بعد شیام بابو کے لیکھوں نے اُن دنوں ہزاروں نوجوانوں کے دلوں میں دیش بھکتی اور بلیدان کی وہ آگ سلگائی جو اپنا کام کئے بنا نہیں بجھی اور جو کہیں کہیں کسی کونے کھترے میں آج تک سلگتی ہوئی دیکھی جاسکتی ہے .

سن 1910 کا وہ دن (اگر هم بھولتے نہیں تو وہ سال 1910 ہی تھا) ہمیں ابھی تک یاد ہے جس دن اروند بابو نے ہمیشہ کے لئے کلکتہ چھوڑا . ہمیں اُس دن کئی گھنٹے اُن کے ساتھ رہنے کا موقعہ ملا تھا . راج کاج کے میدان میں اروند بابو اپنا کام کرچکے تھے .

درشن شاستر (فلاسفی) اور یوگ کا شری اروند کو شروع سے ہی شوق تھا . هندو دھرم اور هندو شاستر کے وہ اونچے درجے کے ودوان تھے . 'بندے ماترم' اور اُسکے بعد 'کرم یوگن' میں اُن کے کوئی کوئی لیکھ خاصے فلاسفی بھرے ہوتے تھے اور دلوں پر گہرا اثر ڈالتے تھے . اپنے آندولن کے لئے گیتا کا اُنہوں نے جی بھر کے اُپیوگ

दूसरा घटना राजपूताने ही के एक छोटे से नरेश की है. उनका भी अरविन्द बाबू से सम्बन्ध था उस राजपूत नरेश ने राजपूताने के जैपुर, जोधपुर जैसे कई बड़े बड़े नरेशों को, जिनके साथ उनकी रिश्तेदारियाँ थीं, अंगरेज़ों के खिलाफ़ हथियार बन्द लड़ाई के लिये तैयार करने की कोशिश की. ज़ाहिर है वह सपना केवल सपना ही था और सपना ही रहने वाला था. अंगरेज़ सरकार को पता चल गया. उस नरेश को उसके अपने अजमेर के क़िले में नज़रबन्द कर दिया गया. नज़रबन्दी की हालत में लेखक को उसी क़िले के अन्दर उनसे मिलने और रात भर साथ रहने का अवसर आया. उन्हें उस समय केवल एक ही धुन थी और वह थी किसी तरह नज़रबन्दी से निकल कर दो सौ राजपूतों को साथ लेकर दिल्ली पर चढ़ाई करने की. ज्यूं त्यूं उन्हें समझाकर इस बेमतलब की कोशिश से रोका गया. हमने यह घटनाएँ केवल यह दिखाने के लिये दी हैं कि उस समय का वह आन्दोलन जिसके नेता अरविन्द बाबू थे सचमुच राष्ट्रीय आन्दोलन था. हमें इस रास्ते आज़ादी मिलने वाली न थी पर इसमें सन्देह नहीं कि जिन लोगों ने उस आन्दोलन में हिस्सा लिया उनमें से बहुत से सच्चे त्यागी और निःस्वार्थ ऊँचे से ऊँचे देशभक्त थे. इसमें भी सन्देह नहीं कि उनकी इन छोटी छोटी कोशिशों और क़ुरबानियों ने देस के बुझे हुए दिलों के अन्दर एक बार साहस और आशा की झलक पैदा कर दी. हमें इस सचाई को कभी नहीं भूलना चाहिये कि किसी भी महान कार्य में असफल लोगों की लाशें ही वह ज़ीना बनाती हैं जिनपर पैर रखते हुए बाद में आने वाले सफल योद्धा अपने लक्ष्य तक पहुँचते हैं.

دوسری گھٹنا راجپوتانے ھی کے ایک چھوتے سے نریش کی ھے . اُن کا بھی اروند بابو سے سمبندھ تھا . اُس راجپوت نریش نے راجپوتانے کے جے پور، جودھپور جیسے کئی بڑے بڑے نریشوں کو جن کے ساتھ اُنکی رشتے داریاں تھیں انگریزوں کے خلاف ھتھیار بند لڑائی کے لئے تیار کرنے کی کوشش کی . ظاہر ہے وہ سپنا کیول سپنا ھی تھا اور سپنا ھی رھنے والا تھا . انگریز سرکار کو پتہ چل گیا . اُس نریش کو اُسکے اپنے اجمیر کے قلعے میں نظر بند کر دیا گیا . نظر بندی کی حالت میں لیکھک کو اُسی قلعے کے اندر اُن سے ملنے اور رات بھر ساتھ رھنے کا اوسر آیا . اُنھیں اُس سمے کیول ایک ھی دھن تھی اور وہ تھی کسی طرح نظر بندی سے نکلکر دو سو راجپوتوں کو ساتھ لیکر دلی پر چڑھائی کرنے کی . جیوں تیوں اُنھیں سمجھا کر اس بے مطلب کی کوشش سے روکا گیا . ھم نے یہ گھٹنائیں کیول یہ دکھانے کے لئے دی ھیں کہ اُس سمے کا وہ آندولن جسکے نیتا اروند بابو تھے سچ مچ راشٹری آندولن تھا . ھمیں اُس راستے آزادی ملنے والی نہ تھی پر اس میں سندیہ نہیں کہ جن لوگوں نے اُس آندولن میں حصہ لیا اُن میں سے بہت سے سچے تیاگی اور نسوارتھ اونچے سے اونچے دیش بھکت تھے . اس میں بھی سندیہ نہیں کہ اُن کی ان چھوٹی چھوٹی کوششوں اور قربانیوں نے دیس کے بجھے ھوئے دلوں کے اندر ایک بار ساھس اور آشا کی جھلک پیدا کر دی . ھمیں اس سچائی کو کبھی نہیں بھولنا چاھئے کہ کسی بھی مہان کاریہ میں اسپھل لوگوں کی لاشیں ھی وہ زینہ بناتی ھیں جن پر پیر رکھتے ھوئے بعد میں آنے والے سپھل یودھا اپنے لکش تک پہنچتے ھیں .

छोड़कर कालेज स्क्वायर के पास एक छोटे से मकान में रहते थे. चटाई पर सोते थे. उनका जीवन उस समय हद दर्जे का सादा था. उनसे बातें करने पर मालूम हुआ कि आजादी के लिये उस तरह का आन्दोलन, जिसे आम तौर पर क्रान्तिकारी आन्दोलन कहा जाता था और जिसका ख़ास काम था बिदेसी हाकिमों की गुप्त हत्याएं, इस देस में जन्म ले चुका था. अरविंद बाबू उसके सबसे बड़े नेता थे.

उस समय का वह आन्दोलन तुच्छ चीज़ नहीं था. पढ़े लिखे लोगों, धनवानों और देसी नरेशों तक में बहुत से थे जो देस को आज़ाद करनेके लिये बेचैन थे और जिन्हें कोई दूसरा रास्ता नहीं सूझ रहा था. दो छोटी छोटी घटनाएं बयान करना यहाँ बेमौक़ा न होगा.

राजपूताने की एक बहुत बड़ी मिल के मालिक एक नौजवान मारवाड़ी थे. उनके दिल में देस की आज़ादी की लगन जागी. उन्होंने इन पंक्तियों के लेखक से इच्छा प्रगट की कि मुझे अरविंद बाबू के दर्शन करा दीजिये. लेखक ने उन्हें जवाब दिया. दर्शन मुफ्त में ही नहीं होते. इतने बड़े आन्दोलन के लिये धन की भी ज़रूरत है. उन मारवाड़ी सज्जन ने वादा किया कि मैं अपनी मिल का एक साल का पूरा मुनाफ़ा इस काम के लिये अरविन्द बाबू की भेंट कर दूंगा. ऐसा ही हुआ उस साल उनका मुनाफ़ा लगभग पौने दो लाख था. लेखक उन्हें लेकर कलकत्ते पहुँचा. दोनों अलग अलग गए. अलग अलग ठहरे और किसी तरह एक दिन शाम को एक साथ अरविंद बाबू के यहाँ पहुंचे. उन्होंने साल के मुनाफ़े की पूरी रक़म नक़द अरविंद बाबू के चरणों पर रख दी और कुछ मिनट बात करके हम

چھوڑ کر کالج اسکوائر کے پاس ایک چھوٹے سے مکان میں رهتے تھے ۔ چٹائی پر سوتے تھے ۔ اُن کا جیون اُس سمے حد درجے کا سادہ تھا ۔ اُن سے باتیں کرنے پر معلوم هوا کہ آزادی کے لئے اُس طرح کا آندولن' جسے عام طور پر کرانتکاری آندولن کہا جاتا تھا اور جسکا خاص کام تھا بدیسی حاکموں کی گپت هتیائیں' اِس دیس میں جنم لے چکا تھا ۔ اروند بابو اُس کے سب سے بڑے نیتا تھے ۔

اُس سمے کا وہ آندولن تچھ چیز نہیں تھا ۔ پڑھے لکھے لوگوں' دھنوانوں اور دیسی نریشوں تک میں بہت سے تھے جو دیس کو آزاد کرنے کے لئے بیچین تھے اور جنہیں کوئی دوسرا راستہ نہیں سوجھ رها تھا ۔ دو چھوٹی چھوٹی گھٹنائیں بیان کرنا یہاں بے موقع نہ هوگا ۔

راجپوتانے کی ایک بہت بڑی مل کے مالک ایک نوجوان مارواڑی تھے ۔ اُن کے دل میں دیس کی آزادی کی لگن جاگی ۔ انہوں نے ان پنکتیوں کے لیکھک سے اچھا پرگٹ کی کہ مجھے اروند بابو کے درشن کرا دیجئے ۔ لیکھک نے اُنہیں جواب دیا ۔ درشن مفت میں هی نہیں هوتے ۔ اتنے بڑے آندولن کے لئے دھن کی بھی ضرورت ھے ۔ ان مارواڑی سجن نے وعدہ کیا کہ میں اپنی مل کا ایک سال کا پورا منافع اس کام کے لئے اروند بابو کی بھینٹ کر دوں گا ۔ ایسا هی هوا ۔ اُس سال اُن کا منافع لگ بھگ پونے دو لاکھ تھا ۔ لیکھک اُنہیں لے کر کلکتے پہنچا ۔ دونوں الگ الگ گئے ۔ الگ الگ ٹھہرے اور کسی طرح ایک دن شام کو ایک ساتھ اروند بابو کے یہاں پہنچے ۔ اُنھوں نے سال کے منافع کی پوری رقم نقد اروند بابو کے

श्री अरविन्द—

श्री अरविन्द इस जमाने के बड़े से बड़े आदमियों में से थे. देस में और बिदेस में लाखों ही उन्हें भक्ति और श्रद्धा की निगाह से देखते थे. उनके प्रेमियों में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और बौद्ध सब धर्मों के लोग शामिल थे. हिन्दुस्तान को उनपर खास गर्व था. पांच दिसम्बर को सबेरे उनकी अचानक मृत्यु के समाचार से लाखों को बड़ा धक्का लगा.

इस देस की आजादी के संग्राम में श्री अरविंद का स्थान बहुत ऊंचा था. उस संग्राम के सच्चे इतिहास में उनका नाम अमर रहेगा. सन 1905 में बंगाल के टुकड़े हो जाने के बाद इस देस में नई राष्ट्रीयता ने जन्म लिया. लोकमान्य तिलक उस आन्दोलन के प्रमुख नेता थे. सन 1907 के शुरू में लोकमान्य तिलक ने इन पंक्तियों के लेखक को सलाह दी कि वह कलकत्ते जाकर श्री अरविंद घोश से मिले. लेखक कलकत्ते पहुँचा. अरविंद बाबू उस समय बड़ौदा की ऐश की नौकरी

شری اروند—

شری اروند اِس زمانے کے بڑے سے بڑے آدمیوں میں سے تھے۔ دیس میں اور بدیس میں لاکھوں ہی اُنھیں بھکتی اور شردھا کی نگاہ سے دیکھتے تھے۔ اُن کے پریمیوں میں ہندو، مسلمان، عیسائی اور بودھ سب دھرموں کے لوگ شامل تھے۔ ہندستان کو اُن پر خاص گرو تھا۔ پانچ دسمبر کو سویرے اُن کی اچانک مرتیو کے سماچار سے لاکھوں کو بڑا دھکا لگا۔

اِس دیس کی آزادی کے سنگرام میں شری اروند کا استھان بہت اُونچا تھا۔ اُس سنگرام کے سچے اتہاس میں اُن کا نام امر رہے گا۔ سن 1905 میں بنگال کے ٹکڑے ہو جانے کے بعد اس دیس میں نئی راشٹریتا نے جنم لیا۔ لوکمانیہ تلک اُس آندولن کے پرمکھ نیتا تھے۔ سن 1907 کے شروع میں لوکمانیہ تلک نے ان پنکتیوں کے لیکھک کو صلاح دی کہ وہ کلکتے جاکر شری اروند گھوش سے ملے۔ لیکھک کلکتے پہنچا۔ اروند بابو اُس سمے بڑودہ کی عیش کی نوکری

कर रहा होगा. शीनू बार बार 'हाँ' कहता रहा और बराबर खाता रहा. आखिर शामू ने शीनू से पूछा—"भाई, पिछले साल तुम्हारी माता जी भी मरीं न, उनकी मृत्यु कैसे हुई ?"

शीनू ने मुँह का कौर बिना चबाए निगला और पत्तल से एक और कौर लेकर मुँह में डाला और उसे चबाते चबाते कहा—"मेरी माँ ?....मेरी माँ सुबह आठ बजे बीमार हुई और कोई एक घन्टे में उनकी मौत होगई."

शामू को ताज्जुब हुआ कि शीनू की माँ इतनी जल्दी कैसे मरीं ! कुछ सोचकर उसने पत्तल की तरफ़ हाथ बढ़ाया. मगर, शीनू की उँगलियाँ पत्तल का बचा हुआ खाना बटोर रही थीं और पत्तल इतना साफ़ हो गया था मानो किसी ने पानी डालकर उसे कभी का धो रखा है.

('हिन्दुस्तानी प्रचार' से)

चुटकुले

पुलिस—(एक आदमी से) तुम यह दुकान के ताले के साथ क्या कर रहे हो ?

आदमी—साहब, मुझे यह कुन्जी पड़ी हुई मिली है अब मैं इसे तमाम दुकानों के तालों पर लगा कर देख रहा हूँ ताकि जिसकी कुन्जी हो उसे दे दी जाए ?

× × × ×

मुसाफ़िर—ओ लड़के तेरी उमर क्या है ?

लड़का—जनाब, मेरी उमर घर में पाँच साल, स्कूल में चार साल और रेल में तीन साल होती है.

کر رہا ہوگا ۔ شینو بار بار 'ہاں' کہتا رہا اور برابر کھاتا رہا ۔ آخر شامو نے شینو سے پوچھا—"بھائی' پچھلے سال تمہاری ماتا جی بھی مریں نہ' انکی مرتیو کیسے ہوئی ؟"

شینو نے منہ کا کور بنا چبائے نگلا اور پتل سے ایک اور کور لیکر منہ میں ڈالا اور اُسے چباتے چباتے کہا—"میری ماں ؟.......... میری ماں صبح آٹھ بجے بیمار ہوئیں اور کوئی ایک گھنٹے میں انکی موت ہوگئی ۔"

شامو کو تعجب ہوا کہ شینو کی ماں اتنی جلدی کیسے مریں ! کچھ سوچ کر اُس نے پتل کی طرف ہاتھ بڑھایا ۔ مگر' شینو کی انگلیاں پتل کا بچا ہوا کھانا بٹور رہی تھیں اور پتل اتنا صاف ہو گیا تھا' مانو کسی نے پانی ڈال کر اُسے کبھی کا دھو رکھا ہے ۔

('هندستانی پرچار' سے)

چٹکلے

پولیس—(ایک آدمی سے) تم یہ دکان کے تالے کے ساتھ کیا کر رہے ہو؟

آدمی—صاحب' مجھے یہ کنجی پڑی ہوئی ملی ہے اب میں اسے تمام دکانوں کے تالوں پر لگا کر دیکھ رہا ہوں تاکہ جسکی کنجی ہو اُسے دے دی جائے ۔

× × × ×

مسافر—او لڑکے تیری عمر کیا ہے ؟

لڑکا—جناب' میری عمر گھر میں پانچ سال' اسکول میں چار سال اور ریل میں تین سال ہوتی ہے ۔

... शीनू ने शामू से कहा—"दोस्त, सचमुच तुम्हारी अम्माँ की मृत्यु की बात सुनकर मैं बहुत दुखी हुआ. आखिर वह भयंकर रोग कैसे लगा ?"

शामू बातूनी था. कहने लगा—"कुछ न पूछो दोस्त,......" कोई बहुत लम्बी कहानी कहना शुरू करने वाला जैसे शुरू करने के पहले तैयारी करता है, उसी तरह तैयारी करके—यानी, मुँह का कौर जल्दी जल्दी खाकर और हाथ का कौर पत्तल में ही डालकर वह अपनी अम्माँ की मृत्यु की दर्द भरी कहानी कहने लगा—"हाँ. रोग बड़ा भयंकर ही था भाई, और लगा भी इस तरह से कि किसी को पता तक न लगा कि वह बीमारी का शिकार हो रही हैं. एक दिन मैं किसी काम से बाहर गया हुआ था और दोपहर को जब घर आया तो देखता क्या हूं............" गहरी साँस लेकर वह कहता गया—" कि अम्माँ को बुखार चढ़ा हुआ है."

शीनू पत्तल का खाना मज़े से खाता जाता और बीच बीच में दोस्त के मुँह की तरफ़ देखकर 'हाँ' कहता जाता. शामू खाने की बात बिलकुल ही भूल गया था. उसने बीमारी का रूप बदलने, वैद्यों को बुलाने, आखिर बड़े वैद्य को बुलाने शहर की तरफ़ जाने, उस वक़्त रास्ते में हुई तकलीफ़ों के झेलने वग़ैरा, माँ की आठ महीने की बीमारी, चिकित्सा और आखिरकार उनकी मौत, सब बातें कोई एक घंटे में कह डालीं. इतनी लम्बी कहानी कहकर शामू बहुत थक गया था. मगर उसे यह तसल्ली हो रही थी कि उसका दोस्त माँ के लिये की हुई सेवाओं की बात सुनकर मन ही मन उसकी तारीफ़

کھانا شروع کرتے کرتے شیلو نے شامو سے کہا۔''دوست' سچ مچ تمہاري اماں کی مرتیو کی بات سنکر میں بہت دکھی ہوا . آخر وہ بھیانکر روگ کیسے لگا ؟''

شامو باتونی تھا . کہنے لگا۔''کچھ نہ پوچھو دوست'......'' کوئی بہت لمبی کہانی کہنا شروع کرنے والا جیسے شروع کرنے کے پہلے تیاری کرتا ھے' اُسی طرح تیاری کر کے۔یعني' منھ کا کور جلدی جلدی کھاکر اور ھاتھ کا کور پتل میں ھی ڈال کر وہ اپنی اماں کي مرتیو کی درد بھری کہانی کہنے لگا۔''ھاں' روگ بڑا بھیانکر ھي تھا بھائی' اور لگا بھي اس طرح سے کہ کسی کو پتہ تک نہ لگا کہ وہ بیماری کا شکار ھو رھی ھیں . ایک دن میں کسی کام سے باھر گیا ھوا تھا اور دو پہر کو جب گھر آیا تو دیکھتا کیا ھوں . . ..'' گہری سانس لیکر وہ کہتا گیا۔''کہ اماں کو بخار چڑھا ھوا ھے .''

شیلو پتل کا کھانا مزے سے کھاتا جاتا اور بیچ بیچ میں دوست کے منھ کی طرف دیکھکر 'ھاں' کہتا جاتا . شامو کھانے کی بات بالکل ھی بھول گیا تھا . اُس نے بیماري کا روپ بدلنے' ویدوں کو بلانے' آخر بڑے وید کو بلانے شہر کی طرف جانے' اُس وقت راستے میں ھوئی تکلیفوں کے جھیلنے وغیرہ' ماں کی آٹھ مہینے کی بیماري' چکتسا اور آخرکار اُنکی موت' سب باتیں کوئي ایک گھنٹے میں کہ ڈالیں . اتنی لمبی کہانی کہکر شامو بہت تھک گیا تھا . مگر اُسے یہ تسلی ھو رھی تھي کہ اُس کا دوست ماں کے لئے کی ھوئی سیواؤں کی بات سنکر من ھی من اُسکي تعریف

दोनों जब बड़े हुए, कमाई और घर गृहस्थी में लग गये, तो रोज़ रोज़ मिलने का उन्हें मौक़ा नहीं मिलता था. कभी सप्ताह में एक दिन, कभी महीने में दो दिन, इसी तरह वह मिला करते थे. मगर, जब मिलते, उसी पुराने ढंग से मिलते और उसी ढंग से बातें करते.

बड़े होने पर शामू बड़ा बातूनी निकला. और जितना शामू बातूनी निकला, उतना ही शीनू दब्बू बन गया.| शामू के सामने किसी छोटी सी बात की चर्चा कोई करे, वह उस सिलसिले में घंटों बोलता. मगर, शीनू ऐसा था कि कोई घंटों बोले. वह दो या तीन शब्द बदले में बोलता. इस बातूनी स्वभाव के कारन शामू को कई बार अपने मतलब से हाथ धोना पड़ा. और शीनू हालांकि कम बोलता था, फिर भी अपने हित का उसे हरदम ख़याल रहता था.

एक दिन कुछ समय बाद दोनों दोस्त मिले. बहुत देर तक बातें हुईं. जब विदा होने लगे तो शीनू ने कहा—"दोस्त, कोई अच्छी चीज़ खाने की इच्छा हो रही है कई दिनों से. तुम नहीं मिले, इसी लिये कुछ इन्तज़ाम नहीं किया."

शामू बोला—"अच्छा, तब हो जाय आज तुम्हारी इच्छा-पूर्ति. कहो तो शाम को फिर किसी जगह मिलें?"

शाम को दोनों मिले. दोनों ने एक एक रुपया लिया और बाज़ार से कई चीज़ें मंगाईं अलग अलग पत्तों पर खाना तो वह जानते ही

دونوں جب بڑے ہوئے' کمائی اور گھر گرہستی میں لگ گئے' تو روز روز ملنے کا اُنھیں موقع نہیں ملتا تھا . کبھی سپتاہ میں ایکدن' کبھی مھینے میں دو دن' اسیطرح وہ ملا کرتے تھے . مگر' جب ملتے' اُسی پرانے ڈھنگ سے ملتے اور اُسی ڈھنگ سے باتیں کرتے .

بڑے ہونے پر شامو بڑا باتونی نکلا . اور جتنا شامو باتونی نکلا' اُتنا ھی شینو دبو بن گیا . شامو کے سامنے کسی چھوٹی سی بات کی چرچا کوئی کرے' وہ اُس سلسلے میں گھنٹوں بولتا . مگر' شینو ایسا تھا کہ کوئی گھنٹوں بولے' وہ دو یا تین شبد بدلے میں بولتا . اس باتونی سوبھاؤ کے کارن شامو کو کئی بار اپنے مطلب سے ھاتھ دھونا پڑا . اور شینو حالانکہ کم بولتا تھا' پھر بھی اپنے ہت کا اُسے ھردم خیال رھتا تھا .

ایک دن کچھ سمے بعد دونوں دوست ملے . بہت دیر تک باتیں ہوئیں . جب ودا ہونے لگے تو شینو نے کہا—"دوست' کوئی اچھی چیز کھانے کی اِچھا ہو رھی ھے کئی دنوں سے . تم نہیں ملے' اسی لئے کچھ انتظام نہیں کیا ."

شامو بولا—"اچھا' تب ہو جائے آج تمہاری اِچھا پورتی . کہو تو شام کو پھر کسی جگہ ملیں ؟"

شام کو دونوں ملے . دونوں نے ایک ایک روپیہ لیا اور بازار سے کئی چیزیں منگائیں . الگ الگ پتوں پر کھانا تو وہ جانتے ھی نہ تھے .

जाऊँगा.”   ... शायद. अब मैं कभी घर से रूठकर नहीं

फिर कई दिन बाद जब मैंने माता जी को अपना सपना सुनाया तो उन्होंने कहा—“ इस सपने से तुमने कुछ सबक़ भी सीखा?”

मैंने कहा—“हाँ माता जी. मैं तो अपने दोस्तों को भी यही कहता हूं कि घर से रूठ कर अगर कहीं भाग गए तो फिर घूम फिर कर जेलख़ाने में ही जगह मिलेगी.”

फिर मैंने माता जी से पूछा—“ मैं सपने का मतलब ठीक समझा हूँ न माता जी ?”

“ हाँ बेटा. बिलकुल ठीक. जो लड़के अपने घर में अच्छे नहीं रह सकते वह बाहर कैसे अच्छे बन सकते हैं.”

एक घंटे में मौत

(भाई सी. आर. नानप्पा)

शामू और शीनू दोस्त थे. दोनों के घर अड़ोस-पड़ोस में थे. बचपन में दोनों एक साथ खेलते, एक साथ पढ़ते और एक ही साथ खाते. खेलते खाते उन्होंने कभी झगड़ा किया, इसका कभी किसी को सबूत नहीं मिला. यहाँ तक कि खाना एक ही थाली में दोनों खाएँ, यही उन्हें पसन्द था. लोग उनकी इस दोस्ती को देखकर कहा करते थे कि इसी को असल में चोली दामन का साथ कहते हैं.

”ماتا جی مجھے معاف کر دیجئے . اب میں کبھی گھر سے روٹھکر نہیں جاؤں گا .“

پھر کئی دن بعد جب میں نے ماتا جی کو اپنا سپنا سنایا تو اُنہوں نے کہا—”اس سپنے سے تم نے کچھ سبق بھی سیکھا ؟“

میں نے کہا —”ہاں ماتا جی . میں تو اپنے دوستوں کو بھی یہی کہتا ہوں کہ گھر سے روٹھکر اگر کہیں بھاگ گئے تو پھر گھوم پھر کر جیل خانے میں ہی جگہ ملے گی .“

پھر میں نے ماتا جی سے پوچھا—”میں سپنے کا مطلب ٹھیک سمجھا ہوں نہ ماتا جی ؟“

”ہاں بیٹا . بالکل ٹھیک . جو لڑکے اپنے گھر میں اچھے نہیں رہ سکتے وہ باہر کیسے اچھے بن سکتے ہیں .“

ایک گھنٹے میں موت

(بھائی سی . آر . ناپپا .)

شامو اور شینو دوست تھے . دونوں کے گھر اڑوس پڑوس میں تھے . بچپن میں دونوں ایک ساتھ کھیلتے' ایک ساتھ پڑھتے اور ایک ہی ساتھ کھاتے . کھیلتے کھاتے اُنہوں نے کبھی جھگڑا کیا' اِسکا کبھی کسی کو ثبوت نہیں ملا . یہاں تک کہ کھانا ایک ہی تھالی میں دونوں کھائیں' یہی اُنہیں پسند تھا . لوگ اُنکی اِس دوستی کو دیکھکر کہا کرتے تھے کہ اِسی کو اصل میں چولی دامن کا ساتھ کہتے ہیں .

महमूद ने कहना शुरू किया—"एक दिन मैं स्कूल के बहाने से सिनेमा चला गया. यह बात पिताजी तक पहुंची तो उन्होंने मुझे खूब पीटा और मैं गुस्से में आकर घर से निकल गया. फिर मारा मारा फिरता बम्बई आ पहुँचा. कुछ दिन तो मैंने भीक माँग कर गुज़ारे, फिर यह ठीक न लगा तो मैंने चोरी करना सीख लिया.

"एक दिन स्टेशन की तरफ़ चल पड़ा. देखा एक बूढ़ा शरनारथी पड़ा सो रहा है. मैंने आव देखा न ताव उसकी जेब पर क़ैंची चला दी. भाग ही रहा था कि बूढ़ा जाग पड़ा और चिल्लाने लगा—'चोर, चोर !' बस पुलिस वालों ने मुझे पकड़ लिया." वह अभी पूरी बात कहने न पाया था कि मेरी आँख खुल गई और मैं पागलों की तरह "कहाँ है चोर, पकड़ो पकड़ो चोर को." चिल्लाने लगा. मेरी बात सुनकर महमूद और रशीद ने हंसना शुरू किया. फिर मैंने कहा—"तुम सब इस जंगल में कैसे पहुँचे ?" इस पर महमूद हंसने लगा, ज़ोर ज़ोर से खिल खिल खिल, और इधर मुझे गुस्सा आ रहा था. जी चाह रहा था कि एक धौल मार दूं. इतने में रशीद ने कहा—"बात यह है कि जब हम तुम्हारे घर रेडियो पर "बाल सभा" का प्रोग्राम सुनने गए तो तुम्हारी माता जी ने रोते हुए कहा था कि 'सुरेश घर से रूठकर कहीं चला गया है.' बस हम सब तुम्हारी खोज में चले आए."

यह बात सुनते ही मैं घबराकर उठ खड़ा हुआ और साथियों के साथ घर की ओर चल पड़ा. देखा माता जी दरवाज़े में खड़ी मेरा

محمود نے کہنا شروع کیا— "ایک دن میں اسکول کے بہانے سے سنیما چلا گیا . یہ بات پتا جی تک پہنچی تو انہوں نے مجھے خوب پیٹا اور میں غصہ میں آکر گھر سے نکل گیا . پھر مارا مارا پھرتا بمبئی آپہنچا . کچھ دن تو میں نے بھیک مانگ کر گزارے لیکن نہ لگا تو میں نے چوری کرنا سیکھ لیا .

''ایک دن اسٹیشن کی طرف چل پڑا . دیکھا ایک بوڑھا شرنارتھی پڑا سو رہا ہے . میں نے آؤ دیکھا نہ تاؤ اس کی جیب پر قینچی چلا دی . بھاگ ہی رہا تھا کہ بوڑھا جاگ پڑا اور چلانے لگا —'چور' چور !' بس پولیس والوں نے مجھے پکڑ لیا .'' وہ ابھی پوری بات کہنے نہ پایا تھا کہ میری آنکھ کھل گئی اور میں پاگلوں کی طرح ''کہاں ہے چور' پکڑو پکڑو چور کو.'' چلانے لگا . میری بات سنکر محمود اور رشید نے ہنسنا شروع کیا پھر میں نے کہا— ''تم سب اس جنگل میں کیسے پہنچے ؟'' اس پر محمود ہنسنے لگا' زور زور سے کھل کھل کھل' اور ادھر مجھے غصہ آرہا تھا . جی چاہ رہا تھا کہ ایک دھول مار دوں . اتنے میں رشید نے کہا— ''بات یہ ہے کہ جب ہم تمہارے گھر ریڈیو پر ''بال سبھا'' کا پروگرام سننے گئے تو تمہاری ماتا جی نے روتے ہوئے کہا تھا کہ 'سریش گھر سے روٹھکر کہیں چلا گیا ہے .' بس ہم سب تمہاری کھوج میں چلے آئے .''

یہ بات سنتے ہی میں گھبرا کر اٹھ کھڑا ہوا اور ساتھیوں کے ساتھ گھر کی اور چل پڑا . دیکھا ماتا جی دروازے میں کھڑی میرا

बिताने कशमीर की ओर चल पड़ा हूँ. स्टेशन पर भाई साहब ने बम्बई का टिकट ख़रीद लिया और देखते देखते धुआँ उड़ाती गाड़ी आ पहुँची. मैं और भाई साहिब गाड़ी में बैठ गए. रेल छक छक करती चली जा रही थी. बम्बई आ गया. हम उतर पड़े और एक होटल में ठहर गए.

शाम का सुन्दर समाँ था. भाई साहब किसी काम से बाहर गए हुए थे. मैं अकेला होटल की तीसरी माला में अपने कमरे में बैठा "नया हिन्द" के लिये कविता लिख रहा था. नीचे जो नज़र पड़ी तो क्या देखता हूँ कि एक लड़के को दो पुलिस वाले पकड़े जेल की तरफ़ लिये जा रहे हैं. मैंने लिखना बन्द कर दिया और भागा भागा नीचे आया, फिर पास जा कर उस लड़के को देखने लगा.

"अरे! यह तो मेरा पुराना साथी महमूद है." महमूद को इस हालत में देख कर मैं परेशान हो गया. लोगों से पूछा तो मालूम हुआ कि उसे चोरी करने पर पकड़ा गया है और ज़मानत पर छूट सकता है. मुझ से यह हालत देखी न गई कि मेरा साथी जेल में रहे और मैं बम्बई के होटल में मज़े उड़ाऊँ. भागा भागा कमरे में गया. इतने में भाई साहब भी आ पहुँचे थे. मैंने उन्हें सारी कथा सुनाई और उन्होंने महमूद की ज़मानत की पूरी रक़म अदा कर दी, जिसकी वजह से मेरा साथी जेल से छोड़ दिया गया. जेल से सीधा वह मेरे पास आया और मैंने उसे गले लगा लिया. उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे. कुछ देर बाद मैंने पूछा—"बताओ तो महमूद! तुम्हारी यह हालत कैसे हुई?"

بتانے کشمیر کی اُور چل پڑا ہوں . اسٹیشن پر بھائی صاحب نے بمبئی کا ٹکٹ خرید لیا اور دیکھتے دیکھتے دھواں اُڑاتی گاڑی آپہنچی . میں اور بھائی صاحب گاڑی میں بیٹھ گئے . ریل چھک چھک کرتی چلی جا رہی تھی . بمبئی آگیا . ہم اُتر پڑے اور ایک ہوٹل میں ٹھہر گئے .

شام کا سندر سماں تھا . بھائی صاحب کسی کام سے باہر گئے ہوئے تھے . میں اکیلا ہوٹل کی تیسری مالا میں اپنے کمرے میں بیٹھا "نیا ہند" کے لئے کویتا لکھ رہا تھا نیچے جو نظر پڑی تو کیا دیکھتا ہوں کہ ایک لڑکے کو دو پولیس والے پکڑے جیل کی طرف لئے جا رہے ہیں . میں نے لکھنا بند کر دیا اور بھاگا بھاگا نیچے آیا پھر پاس جاکر اس لڑکے کو دیکھنے لگا .

"ارے! یہ تو میرا پرانا ساتھی محمود ہے ." محمود کو اس حالت میں دیکھکر میں پریشان ہوگیا . لوگوں سے پوچھا تو معلوم ہوا کہ اِسے چوری کرنے پر پکڑا گیا ہے اور ضمانت پر چھوٹ سکتا ہے . مجھ سے یہ حالت دیکھی نہ گئی کہ میرا ساتھی جیل میں رہے اور میں بمبئی کے ہوٹل میں مزے اُڑاوں . بھاگا بھاگا کمرے میں گیا . اتنے میں بھائی صاحب بھی آپہنچے تھے . میں نے انہیں ساری کتھا سنائی اور انہوں نے محمود کی ضمانت کی پوری رقم ادا کر دی ' جس کی وجہ سے میرا ساتھی جیل سے چھوڑ دیا گیا . جیل سے سیدھا وہ میرے پاس آیا اور میں نے اُسے گلے لگا لیا . اس کی آنکھوں سے آنسو بہہ رہے تھے . کچھ دیر بعد میں نے پوچھا— "بتاؤ تو محمود! تمہاری یہ حالت کیسے ہوئی؟"

सपनों की दुनिया

(भाई नागराज प्रसाद)

गर्मी के दिन थे, धरती खूब तप रही थी. हमारे स्कूल सुबह के थे. कोई डेढ़ बजे स्कूल से घर आया, थका थकाया, देखा, अकेला राजू बैठा फटे कपड़ों को ठीक कर रहा है. मैंने पूछा-" राजू! माता जी कहाँ गई हैं ?" वह कहने लगा—" बीबी अपनी बड़ी दीदी के हाँ मेहमान गई हैं." फिर राजू ने मेरे सामने ठन्डी रोटी और बासी सालन रख दिया. मैंने राजू को गुस्से की नज़र से देख कर कहा—" राजू, यह घर है या नरक, मैं स्कूल से अब घर आया हूँ, देखो तो धूप की क्या हालत है. यह सोच कर आया था कि घर पहुँच कर मज़े का खाना खाऊँगा लेकिन यहाँ तो चौपट नगरी है."

मैं अपनी बात पूरी भी न करने पाया था कि राजू ने बात काटते हुए कहा—" भैया जी, आपकी माता जी के जल्दी जाने से कोई ठीक इन्तज़ाम न हो सका. शान्ति से काम लीजिये. कल से सब मामला ठीक हो जाएगा."

मगर मैं चुपचाप बाहर निकल खड़ा हुआ. राजू मुझे जाते देख कर भागा भागा आया और जाने से रोकने लगा. लेकिन मैंने बूढ़े राजू को एक तरफ़ ढकेल दिया और जंगल की तरफ़ निकल गया. कुछ दूर जाने के बाद मैं बहुत थक गया और अपनी थकन दूर करने के लिये एक पेड़ के नीचे बैठ गया. ठन्डी हवा चल रही थी, मुझे नींद आने लगी. आँखें भारी होने लगीं और मैं सो गया. फिर मैंने

سپنوں کی دنیا

(بھائی ناگراج پرساد)

گرمی کے دن تھے، دھرتی خوب تپ رہی تھی. ہمارے اسکول صبح کے تھے. کوئی ڈیڑھ بجے اِسکول سے گھر آیا، تھکا تھکایا، دیکھا، اکیلا راجو بیٹھا پھٹے کپڑوں کو ٹھیک کر رہا ہے. میں نے پوچھا—"راجو! ماتاجی کہاں گئی ہیں؟" وہ کہنے لگا—"بی بی اپنی بڑی دیدی کے ہاں مہمان گئی ہیں." پھر راجو نے میرے سامنے ٹھنڈی روٹی اور باسی سالن رکھدیا. میں نے راجو کو غصے کی نظر سے دیکھکر کہا—" راجو، یہ گھر ہے یا نرک، میں اسکول سے اب گھر آیا ہوں، دیکھو تو دھوپ کی کیا حالت ہے. یہ سوچ کر آیا تھا کہ گھر پہنچ کر مزے کا کھانا کھاؤں گا لیکن یہاں تو چوپٹ نگری ہے."

میں اپنی بات پوری بھی نہ کرنے پایا تھا کہ راجو نے بات کاٹتے ہوئے کہا—"بھیا جی، آپ کی ماتا جی کے جلدی جانے سے کوئی ٹھیک انتظام نہ ہوسکا شانتی سے کام لیجئیے. کل سے سب معاملہ ٹھیک ہوجائے گا."

مگر میں چپ چاپ باہر نکل کھڑا ہوا. راجو مجھے جاتے دیکھکر بھاگا بھاگا آیا اور جانے سے روکنے لگا. لیکن میں نے بوڑھے راجو کو ایک طرف ڈھکیل دیا اور جنگل کی طرف نکل گیا. کچھ دور جانے کے بعد میں بہت تھک گیا اور اپنی تھکن دور کرنے کے لئے ایک پیڑ کے نیچے بیٹھ گیا. ٹھنڈی ہوا چل رہی تھی، مجھے نیند آنے لگی، آنکھیں بھاری ہونے لگیں اور میں سوگیا. پھر میں نے ایک

एडीटर—प्रेम भाई

ایڈیٹر—پریم بھائی

रेल का खेल

(बहन सुरैया बानो, पटना)

आओ आओ खेलें खेल
चाँदनी कैसी दूध सी बिखरी बाग़ की पत्ती पत्ती निखरी
फ़ीरोज़ा तू इंजन बनजा
हम सब मिल बन जाएँ रेल
आओ आओ खेलें खेल
बन कर लैन निकलना सीखें सीधा रस्ता चलना सीखें
ऊँच नीच का फ़र्क़ मिटाकर
हम तुम वह सब कर लें मेल
आओ आओ खेलें खेल
चलती गाड़ी छक छक छक छक बोलता इंजन फक फक फक फक
अपनी रेल है क्या अलबेली
आग न पानी और न तेल
आओ आओ खेलें खेल

'बच्चों की दुनिया' में छपने के लिये इस पते पर अपने लेख, कविताएँ और कथाएँ भिजवाइये—

प्रेम भाई, एडीटर 'बच्चों की दुनिया.' (नया हिन्द) 235, मुग़ल पुरा हैदराबाद दक्खिन.

ریل کا کھیل

(بہن ثریا بانو' پٹنہ)

آؤ آؤ کھولیں کھیل
چاندنی کیسی دودھ سی بکھری باغ کی پتی پتی نکھری
فیروزہ تو انجن بن جا
ہم سب مل بن جائیں ریل
آؤ آؤ کھیلیں کھیل
بن کر لین نکلنا سیکھیں سیدھا رستہ چلنا سیکھیں
اونچ نیچ کا فرق مٹاکر
ہم تم وہ سب کر لیں میل
آؤ آؤ کھیلیں کھیل
چلتی گاڑی چھک چھک چھک چھک بولتا انجن پھک پھک پھک پھک
اپنی ریل ہے کیا البیلی
آگ نہ پانی اور نہ تیل
آؤ آؤ کھیلیں کھیل

'بچوں کی دنیا' میں چھپنے کے لئے اس پتے پر اپنے لیکھ' کویتائیں اور کتھائیں بھجوائیے—

پریم بھائی' اڈیٹر 'بچوں کی دنیا' (نیا ہند) '235 مغل پورہ' حیدرآباد دکھن ۔

विश्वभारती चीनभवन ने हिन्दी में डाक्टर सन यात सेन की इस किताब को निकाल कर वक़्त की एक भारी मांग पूरी की है. चीनी इतिहास, कलचर, सभ्यता और साहित्य पर भी ऐसी किताबों की सख़्त ज़रूरत है. चीन भारती और उसके डाइरेक्टर प्रोफ़ेसर तान युन शान पिछले पचीस साल से चीन और भारत के बीच कलचरी संबंध बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं. उनकी कोशिशों का नतीजा अब हमारे सामने आ रहा है. अगर चीन भारती चीन को भारत की जनता तक पहुँचा सके तो उसका मिशन पूरा हुआ वरना नहीं.

इस किताब को पढ़ने से पता चलता है कि हिन्दुस्तान और चीन की समस्याएं, कलचर, सभ्यता, रहन सहन और सोचने के तरीक़े बेहद मिलते जुलते हैं. और हम दोनों का नफ़ा नुक़सान एक दूसरे के साथ बंधा हुआ है. इसलिये इस किताब को ज़्यादा से ज़्यादा लोग पढ़ें यह हमारी इच्छा है.

भानुचन्द्र वर्मा

आई हुई किताबें :—

राज भाषा—दो भाग (हिन्दी)

आदर्श जीवनियाँ (हिन्दी)

परछाइं (उर्दू)

मुशातरका ज़बान (उर्दू)

وشو بھارتی چین بھون نے ہندی میں ڈاکٹر سن یات سین کی اس کتاب کو نکالکر وقت کی ایک بھاری مانگ پوری کی ہے. چینی اتہاس، کلچر، سبھیتا اور ساہتیہ پر بھی ایسی کتابوں کی سخت ضرورت ہے. چین بھارتی اور اسکے ڈائرکٹر پروفیسر تان یون شان پچھلے پچیس سال سے چین اور بھارت کے بیچ کلچری سمبندھ بڑھانے کی کوشش کر رہے ہیں. انکی کوششوں کا نتیجہ اب ہمارے سامنے آرہا ہے. اگر چین بھارتی چین کو بھارت کی جنتا تک پہونچا سکے تو اسکا مشن پورا ہوا ورنہ نہیں.

اس کتاب کو پڑھنے سے پتہ چلتا ہے کہ ہندستان اور چین کی سمسیائیں، کلچر، سبھیتا، رہن سہن اور سوچنے کے طریقے بےحد ملتے جلتے ہیں. اور ہم دونوں کا نفع نقصان ایک دوسرے کے ساتھ بندھا ہوا ہے. اسلئے اس کتاب کو زیادہ سے زیادہ لوگ پڑھیں یہ ہماری اچھا ہے.

—بھانو چندر ورما

آئی ہوئی کتابیں :—

راج بھاشا—دو بھاگ (ہندی)

آدرش جیونیاں (ہندی)

پرچھائیں (اُردو)

مشترکہ زبان (اُردو)

ہمارا گاندھی واپس کرو (ہندی)

किया था. इस उसूल को समझाते हुए उन्होंने एक दूर पूरब संघ बनाने की भी इच्छा प्रगट की जिसमें वह चीन, बरमा, हिन्दुस्तान, ईरान और अफ़ग़ानिस्तान को शामिल करना चाहते थे.

तीसरा सिद्धान्त है 'जीविका का सिद्धान्त.' यह साम्यवाद के दर्शन और उसके तरीक़ों को ग़लत मानता है, लेकिन साम्यवाद के मक़सद से सहमत है.

सन यात सेन की इस किताब का अनुवाद किया है श्री कृश्न किंकर सिंह ने. यह विश्वभारती चीन-भवन, शान्तिनिकेतन में हिन्दी के प्रोफ़ेसर हैं. अनुवाद अच्छा है. चीनी कहावतों और मुहावरों को हिन्दी का जामा पहनाने का काम बड़ी होशियारी से किया गया है. पर कुछ वाक्य बेतुके हैं, जैसे :—

"चीन एक शताब्दी से पश्चिमी देशों के प्रभुत्व के नीचे है." "चीन ने अपनी प्राचीन प्रतिष्ठा को केवल एक रास्ते से प्राप्त नहीं किया था." वग़ैरा. इस तरह के वाक्य जगह जगह आए हैं.

अनुवाद की भाशा बहुत बोझिल और मुशकिल है. इसे आसान बनाया जा सकता था. बेमौक़े बड़े बड़े संस्कृत के शब्द रख कर अनुवादक ने इस किताब को जनता के मतलब का नहीं रखा.

हिन्दुस्तान चीन का पड़ोसी है. पर हिन्दुस्तान की जनता चीन के बारे में बहुत कम जानती है क्योंकि जनता की भाशा में चीन के बारे में किताबें नहीं मिलतीं. आज भारत और चीन दोनों ने एक नई ज़िन्दगी में क़दम रखा है. भारत के लोग चीन को समझना चाहते हैं और चीन के लोग भारत को.

کیا بھی ۔ اس اُصول کو سمجھاتے ہوئے اُنھوں نے ایک دور پورب سنگھ بنانے کی بھی اِچھا پرگٹ کی جس میں وہ چین' برما' ہندستان' ایران اور افغانستان کو شامل کرنا چاہتے تھے ۔

تیسرا سدھانت ہے 'جیویکا کا سدھانت.' یہ سامیہ واد کے درشن اور اُسکے طریقوں کو غلط مانتا ہے ' لیکن سامیہ واد کے مقصد سے سہمت ہے ۔

سن یات سین کی اس کتاب کا انوواد کیا ہے شری کرشن کنکر سنگھ نے ۔ یہ وشو بھارتی چین بھون' شانتی نکیتن میں ہندی کے پروفیسر ہیں ۔ انوواد اچھا ہے ۔ چینی کہاوتوں اور محاوروں کو ہندی کا جامہ پہنانے کا کام بڑی ہوشیاری سے کیا گیا ہے ۔ پر کچھ واکیہ بے تکے ہیں' جیسے :—

'' چین ایک شتابدی سے پشچمی دیشوں کے پربھتو کے نیچے ہے ۔'' ''چین نے اپنی پراچین پرتشٹھا کو کیول ایک راستے سے پراپت نہیں کیا تھا ۔'' وغیرہ ۔ اس طرح کے واکیہ جگہ جگہ آئے ہیں ۔

انوواد کی بھاشا بہت بوجھل اور مشکل ہے ۔ اِسے آسان بنایا جا سکتا تھا. بےموقع بڑے بڑے سنسکرت کے شبد رکھکر انووادک نے اس کتاب کو جنتا کے مطلب کا نہیں رکھا ۔

ہندستان چین کا پڑوسی ہے ۔ پر ہندستان کی جنتا چین کے بارے میں بہت کم جانتی ہے کیونکہ جنتا کی بھاشا میں چین کے بارے میں کتابیں نہیں ملتیں ۔ آج بھارت اور چین دونوں نے ایک نئی زندگی میں قدم رکھا ہے ۔ بھارت کے لوگ چین کو سمجھنا چاہتے ہیں اور چین کے لوگ بھارت کو ۔

करना, या बिदेसी तैयार माल व्योहार में लाने से इंकार करना,
देसी चीज़ों को तरक़्क़ी देना, बिदेसी बैंक नोट न लेना, केवल चीन
सरकार द्वारा चालू किया गया सिक्का व्योहार करना........

"अगर भारत की नाईं हमारे लोग भी असहयोग करने लगें और
अगर कुल के आधार पर हम राष्ट्रीय एकता क़ायम कर सकें तो
कोई बात नहीं, चाहे बिदेसी लोग किसी तरह का फ़ौजी, माली या
आबादी सम्बन्धी दबाव क्यों न डालें, हम निडर रहेंगे."

इस सवाल का जवाब देते हुए कि अगर चीन एक ताक़तवर
और संगठित क़ौम हो जाए तो उसका दूसरे देसों की तरफ़ क्या
फ़र्ज़ होगा, सन यात सेन ने कहा :—

"सिर्फ़ अगर हम कमज़ोरों को उबारें और गिरे हुओं को ऊँचा
उठावें तो हम अपने राष्ट्र के दैवी कर्तव्य का पालन करेंगे. आज
हम चीन को आगे ले जाने से पहले इस बात की प्रतिज्ञा कर लें
कि हम गिरे हुओं को उठाएंगे और कमज़ोरों की सहायता करेंगे
और जब हम मज़बूत हो जाएंगे और शक्तिशालियों के राजनीतिक
और आर्थिक प्रभुत्व की आप बीती मुसीबतों पर ग़ौर करेंगे और
दूसरे निर्बल और कमगिनत लोगों को उसी तरह तकलीफ़ में पड़े हुए
देखेंगे तो हम उठ खड़े होंगे और साम्राजवाद को ख़तम कर देंगे."

आज चीन एशिया का सबसे ज़्यादा ताक़तवर और संगठित
मुल्क है. उसकी फ़ौजें कोरिया से अमरीकी साम्राजवादियों को
खदेड़ने में लगी हैं.

... ... सिद्धान्त था "लोकशाही का

کرنا' یا بدیسی تیار مال بیوہار میں لانے سے انکار کرنا' دیسی چیزوں
کو ترقی دینا' بدیسی بینک نوٹ نہ لینا' کیول چین سرکار دوارا
چالو کیا گیا سکہ بیوہار کرنا................

" اگر بھارت کی نائیں ہمارے لوگ بھی اسہیوگ کرنے لگیں
اور اگر کل کے آدھار پر ہم راشٹری ایکتا قائم کر سکیں تو کوئی بات
نہیں' چاہے بدیسی لوگ کسی طرح کا فوجی' مالی یا آبادی
سمبندھی دباؤ کیوں نہ ڈالیں' ہم نڈر رہینگے."

اس سوال کا جواب دیتے ہوئے کہ اگر چین ایک طاقتور
اور سنگٹھت قوم ہو جائے تو اُس کا دوسرے دیسوں کی طرف کیا
فرض ہوگا' سن یات سین نے کہا :—

"صرف اگر ہم کمزوروں کو اُباریں اور گرے ہوؤں کو اُونچا اُٹھاویں
تو ہم اپنے راشٹر کے دیوی کرتویہ کا پالن کرینگے. آج ہم چین کو
آگے لے جانے سے پہلے اس بات کی پرتگیا کر لیں کہ ہم گرے ہوؤں کو
اُٹھائینگے اور کمزوروں کی سہائتا کرینگے اور جب ہم مضبوط ہو
جائینگے اور شکتی شالیوں کے راج نیتک اور آرتھک پربھتو کی
آپ بیتی مصیبتوں پر غور کرینگے اور دوسرے نربل اور کم گنت
لوگوں کو اُسی طرح تکلیف میں پڑے ہوئے دیکھینگے تو ہم اُٹھ
کھڑے ہونگے اور سامراج واد کو ختم کر دینگے."

آج چین ایشیا کا سب سے زیادہ طاقتور اور سنگٹھت ملک
ہے. اُسکی فوجیں کوریا سے امریکی سامراج وادیوں کو کھدیڑنے
میں لگی ہیں.

ڈاکٹر سن یات سین کا دوسرا سدھانت تھا "لوک شاہی کا
سدھانت ...

पानाशाही के विरोध करने का कोइ उपाय नहीं है, लेकिन गांधी जी के असहयोग की नीति द्वारा वह माली नियंत्रन का मुक़ाबला कर रहे हैं.

"यह असहयोग क्या है ? भारतीय जनता बिदेसियों को उनकी जरूरत की चीजें उन्हें नहीं देगी और ब्रिटिश लोग भारतियों को जो चीज देना चाहेंगे उन्हें वह नहीं लेंगे. उदाहरन के लिये लीजिये :— अंगरेज मजदूर चाहते हैं तो भारत के लोग उनके लिये काम नहीं करेंगे; अंगरेज भारतियों को तरह तरह की चीजें देते हैं लेकिन भारतीय लोग बिदेसी माल व्योहार में नहीं लाएंगे, बल्कि अपने देस की बनी चीज का ही व्योहार करेंगे. जब गांधी जी की योजना पहले पहल निकली तो अंगरेजों ने उसे बेमतलब चीज समझ कर गांधी की ओर ध्यान नहीं दिया. लेकिन काफ़ी दिनों के बाद जब सारे भारत में असहयोग कमेटियां बनने लगीं तब ब्रिटेन के कारबार पर गहरा धक्का लगा. इसलिये ब्रिटेन ने गांधी को जेल में बन्द कर दिया.

"अगर हम भारत की नीति के सफल होने का कारन ढूंढें तो हमें पता चलेगा कि सभी देस बासियों की जोगता थी कि वह इस योजना को अमली रूप दे सके. अगर ग़ुलाम देस भारत असहयोग की नीति को काम में ला सकता है तो जरूर ही चीन में, जो अब तक खत्म नहीं हुआ है, यहां की जनता गोकि वह दूसरे कामों को आसानी से नहीं कर सकी, यह बातें तो कर ही सकती है, जैसे— बिदेसियों के लिये काम न करना, बिदेसियों की ग़ुलामी स्वीकार न

طور سے برٹش سرمایہ ... ہی ... تانا شاہی کے وِرودھ کرنے کا کوئی اُپائے نہیں ہے' لیکن گاندھی جی کے اسہیوگ کی نیتی دوارا وہ مالی نینترن کا مقابلہ کر رہے ہیں ۔

''یہ اسہیوگ کیا ہے ؟ بھارتی جنتا بدیسیوں کو اُن کی ضرورت کی چیزیں اُنہیں نہیں دے گی اور برٹش لوگ بھارتیوں کو جو چیز دینا چاہینگے اُنہیں وہ نہیں لیں گے ۔ اُداھرن کے لئے لیجئے :— انگریز مزدور چاہتے ہیں تو بھارت کے لوگ اُن کے لئے کام نہیں کرینگے ؛ انگریز بھارتیوں کو طرح طرح کی چیزیں دیتے ہیں لیکن بھارتی لوگ بدیسی مال بیوہار میں نہیں لائینگے' بلکہ اپنے دیس کی بنی چیز کا ہی بیوہار کریں گے ۔ جب گاندھی جی کی یوجنا پہلے پہل نکلی تو انگریزوں نے اُسے بے مطلب چیز سمجھکر گاندھی کی اور دھیان نہیں دیا ۔ لیکن کافی دنوں کے بعد جب سارے بھارت میں اسہیوگ کمیٹیاں بننے لگیں تب برٹین کے کار بار پر گہرا دھکا لگا ۔ اسلئے برٹین نے گاندھی کو جیل میں بند کر دیا ۔

''اگر ہم بھارت کی نیتی کے سپھل ہونے کا کارن ڈھونڈھیں تو ہمیں پتہ چلیگا کہ سبھی دیس باسیوں کی جوگتا تھی کہ وہ اِس یوجنا کو عملی روپ دے سکے ۔ اگر غلام دیس بھارت اسہیوگ کی نیتی کو کام میں لاسکتا ہے تو ضرور ہی چین میں' جو اب تک ختم نہیں ہوا ہے' یہاں کی جنتا گوکہ وہ دوسرے کاموں کو آسانی سے نہیں کر سکی' یہ باتیں تو کر ہی سکتی ہے ' جیسے— بدیسیوں کے لئے کام نہ کرنا' بدیسیوں کی غلامی سویکار نہ

था. जनता के भी यही तीन नारे थे. चीन का पहला लोकशाही विधान "जनता के तीन सिद्धान्त वाला विधान" कहा जाता है.

क्रान्ति से पहले चीन के लोग अपने देस की उतनी परवाह नहीं करते थे जितनी अपने परिवार की. उनमें क़ौमी जज़बात की बेहद कमी थी और क़ौमी एकता जैसी कोई चीज़ थी ही नहीं. इस लिये वह बिदेसी साम्राजशाही से लोहा नहीं ले सकते थे. डाक्टर सन यात सेन ने चीन की जनता को राष्ट्रीयता का सिद्धान्त सिखा कर उनको अपने पैरों पर खड़ा किया.

चीन से बिदेसी असर को निकालने के लिये उन्होंने दो रास्ते सुझाए. पहला, चीन के लोगों में क़ौमी भावना पैदा करना, दूसरा बिदेसियों के साथ असहयोग करना.

गांधी जी के असहयोग आन्दोलन का डाक्टर सन यात सेन पर काफ़ी असर पड़ा. इस बारे में सन यात सेन लिखते हैं :—

"अगर हम सभी लोग जान जाएं कि हम शोशित हैं और इस हद तक आ पहुंचे हैं कि हमारा उबार होना नामुमकिन है और अगर हम संगठित होना चाहते हैं तो हमें पहले हर तरह के कुलों को कुल समुदाय में और तब इन कुल समुदायों को एक बड़े क़ौमी संघ में ज़रूर संगठित करना है. तभी हमारे पास कुछ कारगर तरीक़े हो सकते हैं जिनके ज़रिये हम बिदेसियों से मुक़ाबला कर सकते हैं. जिस हालत में हम अभी हैं, हम बिदेसियों से नहीं लड़ सकते क्योंकि हमारे पास संगठित समुदाय नहीं है. और संगठित समुदाय हो जाए तो विरोध करना आसान हो जाएगा. उदाहरन के लिये देखिये :—

تھا . جنتا کے بھی یہی تین نعرے تھے . چین کا پہلا لوک شاہی ودھان " جنتا کے تین سدھانت والا ودھان " کہا جاتا ہے .

کرانتی سے پہلے چین کے لوگ اپنے دیس کی اُتنی پرواہ نہیں کرتے تھے جتنی اپنے پریوار کی . اُن میں قومی جذبات کی بے حد کمی تھی اور قومی ایکتا جیسی کوئی چیز تھی ہی نہیں . اسلئے وہ بدیسی سامراج شاہی سے لوہا نہیں لے سکتے تھے . ڈاکٹر سن یات سین نے چین کی جنتا کو راشٹریتا کا سدھانت سکھا کر اُن کو اپنے پیروں پر کھڑا کیا .

چین سے بدیسی اثر کو نکالنے کے لئے اُنہوں نے دو راستے سجھائے . پہلا ' چین کے لوگوں میں قومی بھاونا پیدا کرنا ' دوسرا بدیسیوں کے ساتھ اسہیوگ کرنا .

گاندھی جی کے اسہیوگ آندولن کا ڈاکٹر سن یات سین پر کافی اثر پڑا . اس بارے میں سن یات سین لکھتے ہیں :—

" اگر ہم سبھی لوگ جان جائیں کہ ہم شوشت ہیں اور اس حد تک آپہونچے ہیں کہ ہمارا اُبار ہونا ناممکن ہے اور اگر ہم سنگٹھت ہونا چاہتے ہیں تو ہمیں پہلے ہر طرح کے کلوں کو کل سمودائے میں اور تب ان کل سمودایوں کو ایک بڑے قومی سنگھ میں ضرور سنگٹھت کرنا ہے . تبھی ہمارے پاس کچھ کارگر طریقے ہوسکتے ہیں جنکے ذریعے ہم بدیسیوں سے مقابلہ کرسکتے ہیں . جس حالت میں ہم ابھی ہیں ' ہم بدیسیوں سے نہیں لڑسکتے کیونکہ ہمارے پاس سنگٹھت سمودائے نہیں ہے . اور سنگٹھت سمودائے ہوجائے تو وورودھ کرنا آسان ہوجائے گا . اُداھرن کے لئے دیکھئے :—

करके 'हुनर' साहब ने हिन्दी साहित्य की सच्ची सेवा की है. हिन्दी प्रेमियों को चाहिये कि वह इस संग्रह को अपनावें और इससे पूरा पूरा लाभ उठावें.

भानुचन्द्र वर्मा

'ھنر' صاحب نے ھندی ساھتیہ کی سچی سیوا کی ھے ۔ ھندی پریمیوں کو چاھئے کہ وہ اس سنگرہ کو اپنا ویں اور اِس سے پورا پورا لابھ اُٹھا ویں ۔

—بھانو چندر ورما

---

(५९)

जनता के तीन सिद्धान्त

लेखक—डाक्टर सन यातसेन. अनुवादक—कृश्न किंकर सिंह, निकालने वाले—चीन-भारती, शान्तिनिकेतन, मिलने का पता—ग्रन्थवितान, भागलपूर (बिहार). लिखावट—नागरी, सफ़ा—354, दाम साढ़े छै रुपए.

डाक्टर सनयात सेन चीन के 'बापू' थे. चीन में बादशाही ख़तम करके लोकशाही क़ायम करने का काम सन यात सेन ने किया. सन 1911 की चीनी क्रान्ति के वही नेता थे.

यह किताब सन यात सेन के लेक्चरों का संग्रह है. इसमें उन्हों ने जनता के उन तीन सिद्धान्तों को समझाया है जिन्हें वह "चीन की आज़ादी के सिद्धान्त" समझते थे. वह तीन सिद्धान्त हैं — राष्ट्रीयता का सिद्धान्त, लोकशाही का सिद्धान्त और जीविका का सिद्धान्त. इन्हीं तीन बुनियादी उसूलों पर सन यात सेन ने चीन की सब से पहली इनक़लाबी पारटी, कुओमिनटान्ग, का संगठन किया

(۵۹)

جنتا کے تین سدھانت

لیکھک—ڈاکٹر سن یات سین ۔ انوادک—کرشن ککر سنگھ' نکالنے والے—چین بھارتی' شانتی نکیتن' ملنے کا پتہ—گرنتھ وتان' بھاگلپور (بہار). لکھاوٹ—ناگری' صفحہ—354' دام ساڑھے چھہ روپیہ ۔

ڈاکٹر سن یات سین چین کے 'باپو' تھے ۔ چین میں باد شاہی ختم کرکے لوک شاہی قائم کرنے کا کام سن یات سین نے کیا ۔ سن 1911 کی چینی کرانتی کے وہی نیتا تھے ۔

یہ کتاب سن یات سین کے لکچروں کا سنگرہ ھے ۔ اس میں اُنھوں نے جنتا کے اُن تین سدھانتوں کو سمجھایا ھے جنھیں وہ " چین کی آزادی کے سدھانت ' سمجھتے تھے ۔ وہ تین سدھانت ھیں—راشٹریتا کا سدھانت' لوک شاھی کا سدھانت اور جیوکا کا سدھانت ۔ انھیں تین بنیادی اُصولوں پر سن یات سین نے چین کی سب سے پہلی انقلابی پارٹی' کوؤمنٹانگ' کا سنگھٹن کیا

अपनी बीवी से प्रेम हो गया है ! कहानी अच्छी है. बिलकुल नई
चीज़ है. हँसते हँसते पेट फूलने लगता है.

इस संग्रह को पढ़ जाने पर ऐसा लगता है कि हिन्दी और उर्दू
नाम की दो अलग अलग भाषाओं का वजूद सिर्फ़ दिमाग़ी फ़ितूर है.
इस संग्रह की कहानियां न संस्कृतमयी हैं न फ़ारसीभरी—वह हैं
हमारी रोज़ की बोलचाल की भाषा में जिसे बच्चे भी आसानी से
समझ लें. जिन लोगों की यह ग़लत धारना है कि हिन्दी हिन्दू
कलचर का प्रतीक है और उर्दू मुसलिम कलचर का, वह इन कहा-
नियों को ज़रूर पढ़ डालें. दिलों को नज़दीक लाने में यह कहानियां
कारगर साबित हो सकती हैं.

इस संग्रह में दो एक कमियां भी हैं. पहली यह कि सम्पादक
ने अपने कलाकारों की ज़िन्दगी का एक छोटा मोटा स्केच भी न देकर
पढ़ने वालों के साथ ज़्यादती की है. ख़्वाजा साहब कब पैदा हुए,
कहां पैदा हुए, कब लिखना शुरू किया, क्या क्या लिखा, पढ़ने वाला
इन बातों को जानना चाहेगा.

दूसरे, कहीं कहीं ऐसा मालूम होने लगता है कि सम्पादक ने
लेखक की असली भाषा को कुछ बदला है. अगर ऐसा किया गया
है तो सम्पादक को यह कह देना चाहिये था.

तीसरे, सम्पादक ने पुस्तक के शुरू में इस संग्रह के छै लेखकों
को "उर्दू साहित्य के प्रतिनिधि लेखक" कहा है इस निगाह से इस
संग्रह में कृशन चन्दर, राजेन्द्रसिंह बेदी, इसमतशाहिद लतीफ़ और
... [illegible] को शामिल न करना, पुस्तक की एक बड़ी

اپنی بیوی سے پریم ہو گیا ہے ! کہانی اچھی ہے . بالکل نئی چیز
ہے . ہنسکے ہنسکے پیٹ پھولنے لگتا ہے .

اس سنگرہ کو پڑھ جانے پر ایسا لگتا ہے کہ ہندی اور اُردو نام
کی دو الگ الگ بھاشاؤں کا وجود صرف دماغی فتور ہے . اس
سنگرہ کی کہانیاں نہ سنسکرت مئی ہیں نہ فارسی بھری—وہ
ہیں ہماری روز کی بول چال کی بھاشا میں جسے بچے بھی آسانی
سے سمجھ لیں . جن لوگوں کی یہ غلط دھارنا ہے کہ ہندی ہندو
کلچر کا پرتیک ہے اور اُردو مسلم کلچر کا' وہ ان کہانیوں کو ضرور
پڑھ ڈالیں . دلوں کو نزدیک لانے میں یہ کہانیاں کارگر ثابت ہو
سکتی ہیں .

اس سنگرہ میں دو ایک کمیاں بھی ہیں . پہلی یہ کہ
سمپادک نے اپنے کلا کاروں کی زندگی کا ایک چھوٹا موٹا اسکیچ
بھی نہ دے کر پڑھنے والوں کے ساتھ زیادتی کی ہے . خواجہ صاحب
کب پیدا ہوئے' کہاں پیدا ہوئے' کب لکھنا شروع کیا' کیا کیا لکھا'
پڑھنے والا ان باتوں کو جاننا چاہیگا .

دوسرے' کہیں کہیں ایسا معلوم ہونے لگتا ہے کہ سمپادک نے
لیکھک کی اصلی بھاشا کو کچھ بدلا ہے . اگر ایسا کیا گیا ہے تو
سمپادک کو یہ کہہ دینا چاہئے تھا .

تیسرے' سمپادک نے پستک کے شروع میں اس سنگرہ کے چھہ
لیکھکوں کو "اُردو ساہتیہ کے پرتی ندھی لیکھک" کہا ہے . اس نگاہ
سے اس سنگرہ میں کرشن چاندر' راجیندر سنگھ بیدی' عصمت
شاہد لطیف اور 'اشک' جیسے کہانی کاروں کو شامل نہ کرنا پستک
کی ایک بڑی کمی ہے .

... रहता है. सब का अपना अपना दिल-चस्प कहानी है.

यह है 'मेरी दुनिया' यानी उन सब लोगों की दुनिया जो बीच के तबक़े के कहे जाते हैं, जहां न हंसी है न ख़ुशी, न ज़िन्दगी न मौत. सिर्फ़ एक समस्या है—पेट की समस्या. सिर्फ़ एक खोज है—रोटी की खोज. इस कहानी को पढ़ने के बाद यह जी चाहने लगता है कि इस पूँजीवादी व्यवस्था को इतनी ज़ोर का धक्का दे दिया जाए कि वह चकनाचूर हो जाए और फिर एक ऐसी नई दुनिया क़ायम की जाए जो सब की दुनिया हो, जहां न मैं किसी का लहू चूसूं न कोई मेरा लहू चूसे.

चौथी कहानी है शफ़ीक़ुर्रहमान साहब की. नाम है 'भूत' इस में कुछ अनोखापन ज़रूर है पर चीज़ चमकी नहीं. डर वहम की एक अच्छी मिसाल पेश की गई है.

पांचवी कहानी है 'पंजाब का अलबेला' लेखक बलवन्त सिंह. अगर आप पंजाब के गांवों में आधी रात के वक़्त एक निहायत रंगीले मिज़ाज आदमी के साथ सफ़र करना चाहते हैं और पंजाब की ज़मीन और वहां के अलबेलों को समझना चाहते हैं तो इस कहानी को पढ़िये.

आख़िरी कहानी है 'टेढ़ी लकीर.' लिखने वाले हैं सआदत हसन मन्टो. कहानी का नायक ज़िन्दगी को एक टेढ़ी लकीर समझता है. वह अपनी बीबी को उसके घर से भगा ले जाता है क्योंकि उसे

لڑکیاں اور ایک کتا بھی رہتا ہے . سب کی اپنی اپنی دلچسپ کہانی ہے .

یہ ہے 'میری دنیا' یعنی اُن سب لوگوں کی دنیا جو بیچ کے طبقے کے کہے جاتے ہیں' جہاں نہ ہنسی ہے نہ خوشی' نہ زندگی نہ موت. صرف ایک سمسیا ہے — پیٹ کی سمسیا. صرف ایک کھوج ہے — روٹی کی کھوج . اس کہانی کو پڑھنے کے بعد یہ جی چاہنے لگتا ہے کہ اس پونجی وادی ویوستھا کو اتنی زور کا دھکا دے دیا جائے کہ وہ چکنا چور ہو جائے اور پھر ایک ایسی نئی دنیا قائم کی جائے جو سب کی دنیا ہو' جہاں نہ میں کسی کا لہو چوسوں نہ کوئی میرا لہو چوسے .

چوتھی کہانی ہے شفیق الرحمان صاحب کی . نام ہے ' بھوت ' اس میں کچھ انوکھا پن ضرور ہے پر چیز چمکی نہیں . ڈر وہم کی ایک اچھی مثال پیش کی گئی ہے .

پانچویں کہانی ہے 'پنجاب کا البیلا ' لیکھک بلونت سنگھ . اگر آپ پنجاب کے گاؤں میں آدھی رات کے وقت ایک نہایت رنگیلے مزاج آدمی کے ساتھ سفر کرنا چاہتے ہیں اور پنجاب کی زمین اور وہاں کے البیلوں کو سمجھنا چاہتے ہیں تو اس کہانی کو پڑھئے .

آخری کہانی ہے 'ٹیڑھی لکیر ' لکھنے والے ہیں سعادت حسن منٹو . کہانی کا نائک زندگی کو ایک ٹیڑھی لکیر سمجھتا ہے . وہ اپنی بیوی کو اُسکے گھر سے بھگا لے جاتا ہے کیونکہ اُسے

मांग और मुझ पर लानत भेज, मुझे जी भर धिक्कार कि मैं ने क़रज़ा उतारने के लालच में अपने इकलौते बेटे को भट्टी में झोंक दिया."

हीरोशिमा पर ऐटम बम गिरता है. लड़ाई ख़त्म होती है पर दिलेर के वापस लौटने से पहले उसकी बीवी घर से भाग जाती है. बच्चे को अनाथालय में छोड़ जाती है. हरा भरा चमन उजड़ जाता है पर शमशेर का क़र्ज़ बना रहता है.

इस कहानी में क़ासिमी साहब ने जिस दुनिया की तसवीर खींची है उसे इतनी सच्ची उतारी है कि जैसे उस दुनिया के बीच वह ख़ुद गुज़र चुके हों.

अगर आप ग़रीबों की लाचारी, एक बाप की आह, एक नौजवान बीवी की तड़प से हमदरदी रखते हैं तो इसे पढ़िये. और अगर आप इस दुनिया की बड़ी बड़ी समस्याओं को सुलझाने बैठे हैं तो कहानी के फ़िलासफ़र पटवारी की राय लेना न भूलिये.

तीसरी कहानी है 'मेरी दुनिया' लिखी है महेन्द्रनाथ ने. यह है आशियाना बिलडिंग में रहने वाले कुछ बाबुओं की कहानी—उन सब के जीवन की एक एक झलक. सब के सब बड़ी बड़ी उमंगें लेकर बम्बई में रहते हैं. किसी के सिर पर ऐक्टर बनने का जुनून सवार है, तो कोई फ़िल्म प्रोड्यूसर और डाइरेक्टर बनना चाहता है. एक साहब बड़ी रंगीली तबियत के कवि हैं और एक साहब हैं क्लर्क जो सिर्फ़ तरक़्क़ी पाने के लिये कोट और पैन्ट पहनते हैं और एक नीली नेकटाई लगाते हैं जो उनके सुपरिनटेन्डेन्ट को बहुत

... نے

قرضہ اُتارنے کے لالچ میں اپنے اکلوتے بیٹے کو بھٹی میں جھونک دیا."

ھیرو شیما پر ایٹم بم گرتا ھے. لڑائی ختم ھوتی ھے پر دلیر کے واپس لوٹنے سے پہلے اُسکی بیوی گھر سے بھاگ جاتی ھے. بچے کو اناتھالیہ میں چھوڑ جاتی ھے. ہرا بھرا چمن اُجڑ جاتا ھے پر شمشیر کا قرض بنا رہتا ھے.

اس کہانی میں قاسمی صاحب نے جس دنیا کی تصویر کھینچی ھے اُسے اتنی سچی اُتاری ھے کہ جیسے اس دنیا کے بیچ وہ خود گذر چکے ھوں.

اگر آپ غریبوں کی لاچاری، ایک باپ کی آہ، ایک نوجوان بیوی کی تڑپ سے ہمدردی رکھتے ھیں تو اِسے پڑھئے. اور اگر آپ اس دنیا کی بڑی بڑی سمسیاؤں کو سلجھانے بیٹھے ھیں تو کہانی کے فلاسفر پٹواری کی رائے لینا نہ بھولئے.

تیسری کہانی ھے 'میری دنیا' لکھی ھے مہیندر ناتھ نے. یہ ھے آشیانہ بلڈنگ میں رہنے والے کچھ بابوؤں کی کہانی— اُن سب کے جیون کی ایک ایک جھلک. سبکے سب بڑی بڑی اُمنگیں لے کر بمبئی میں رہتے ھیں. کسی کے سر پر ایکٹر بننے کا جنون سوار ھے، تو کوئی فلم پروڈیوسر اور ڈائرکٹر بننا چاھتا ھے. ایک صاحب بڑی رنگیلی طبیعت کے کوی ھیں اور ایک صاحب ھیں کلرک جو صرف ترقی پانے کیلئے کوٹ اور پینٹ پہنتے ھیں اور ایک نیلی نکٹائی لگاتے ھیں جو اُنکے سپرنٹنڈنٹ کو بہت

... वह अपनी बन्दूक और पिसताल तोड़ कर फेंक देते हैं. फिर—

'अब मैं और गोपाल और बुन्दू और जैनब और सकीना और सीता सब तौबा करते हैं और कान पकड़ते हैं कि फिर आपस में न लड़ेंगे. अब हमें माफ़ कर दीजिये और लौट आइये. आप लौट आएँगे न बापू ?'

यह कहानी उन्हीं बच्चों में से एक की ज़बानी है, भोलेपन से भरी. पढ़ने में प्यारी. अपने बचपन की ज़बान याद आ जाती है. सन '47 के दर्दनाक दिन और भयानक रातें. हमारे दिल और दिमाग और हमारी परेशानियों और मुसीबतों का अच्छा अक्स उतारा गया है.

दूसरी कहानी है 'हीरोशिमा से पहले, हीरोशिमा के बाद'. लेखक हैं अहमद नदीम क़ासिमी. पढ़ते पढ़ते आँख में आँसू आ जाते हैं. शमशेर अपना क़र्ज़ चुकाने के लिये अपने इकलौते बेटे दिलेर को फ़ौज में भरती करा देता है. हीरोशिमा पर ऐटम बम गिराने से पहले अंग्रेज़ी और अमरीकी फ़ौजें बराबर हार रही थीं. और ज्यों-ज्यों उनकी हार की ख़बरें शमशेर के कानों में पड़ती हैं वह तड़प उठता है और दिलेर की बीवी से कहता है :—

"न जाने अब तक क्या कुछ हो चुका होगा. दुआ कर बेटी, दुआओं का तांता बांध दे ! इतनी दुआएं मांग कि अल्लाह मियाँ के दरबार में शोर मच जाय. रोकर, बिलख कर, सिसक कर दुआएं

اُن کے دل بدلتے ھیں۔ وہ اپنی بندوقیں اور پستولیں توڑ کر سمندر میں پھینک دیتے ھیں۔ پھر—

'' اب میں اور گوپال اور بندو اور زینب اور سکینہ اور سیتا سب توبہ کرتے ھیں اور کان پکڑتے ھیں کہ پھر آپس میں نہ لڑینگے۔ اب ھمیں معاف کر دیجئے اور لوٹ آئیے۔ آپ لوٹ آئینگے نہ بابو ؟ ''

یہ کہانی اُنھیں بچوں میں سے ایک کی زبانی ھے‘ بھولے پن سے بھری۔ پڑھنے میں پیاری۔ اپنے بچپن کی زبان یاد آجاتی ھے۔ سن '47 کے درد ناک دن اور بھیانک راتوں' ھمارے دل اور دماغ اور ھماری پریشانیوں اور مصیبتوں کا اچھا عکس اُتارا گیا ھے۔

دوسری کہانی ھے ' ھیرو شیما سے پہلے‘ ھیرو شیما کے بعد.' لیکھک ھیں احمد ندیم قاسمی۔ پڑھتے پڑھتے آنکھ میں آنسو آجاتے ھیں۔ شمشیر اپنا قرض چکانے کیلئے اپنے اکلوتے بیٹے دلیر کو فوج میں بھرتی کرا دیتا ھے۔ ھیرو شیما پر ایٹم بم گرانے سے پہلے انگریزی اور امریکی فوجیں برابر ھار رھی تھیں۔ اور جیوں جیوں اُنکی ھار کی خبریں شمشیر کے کانوں میں پڑتی ھیں وہ تڑپ اُٹھتا ھے اور دلیر کی بیوی سے کہتا ھے :—

'' نہ جانے ابتک کیا کچھ ھوچکا ھوگا۔ دعا کر بیٹی' دعاؤں کا تانتا باندھ دے ! اتنی دعائیں مانگ کہ اللہ میاں کے دربار میں شور مچ جائے۔ رو کر' بلکھکر' سسک کر دعائیں

कुछ किताबें

کچھ کتابیں

मेरी दुनिया

सम्पादक—श्री महमूद अहमद 'हुनर'

मिलने का पता—एसोशियेटेड पबलिशर्स, शान्तिकुटीर, लूकरगंज, इलाहाबाद.

लिखावट नागरी, सफ़ा—173, दाम सवा दो रुपए.

पुस्तक कहानियों का एक संग्रह है जिनके लेखक हैं उर्दू के नामी कलाकार—ख्वाजा अहमद अब्बास. अहमद नदीम क़ासमी, महेन्द्र नाथ, बलवन्त सिंह, शफ़ीक़ुर्रहमान, सआदत हसन मन्टो. चुनाव अच्छा है. हर तरह की कहानियाँ हैं, रहस्य भी है, रोमान्स भी है, प्रेम भी है, हास्य भी है और हमारी रोज़मर्रा की समस्याएँ भी हैं.

ख़्वाजा अहमद अब्बास की कहानी "एक बच्चे का ख़त

میری دنیا

سمپادک—شری محمود احمد 'ھنر'

ملنے کا پتہ—ایسوشئیٹیڈ پبلشرس' شانتی کٹیر' لوکر گنج' الہ آباد ۔

لکھاوٹ—ناگری' صفحہ—173· دام—سوا دو روپے ۔

پستک کہانیوں کا ایک سنگرہ ہے جنکے لیکھک ھیں اُردو کے نامی کلا کار—خواجہ احمد عباس' احمد ندیم قاسمی' مہیندر ناتھ' بلونت سنگھ' شفیق الرحمان' سعادت حسن منٹو. چناؤ اچھا ہے هر طرح کی کہانیاں ھیں ۔ رھسیہ بھی ھے' رومانس بھی ھے' پریم بھی ھے' ھاسیہ بھی ھے اور ھماری روزمرہ کی سمسیائیں بھی ھیں ۔

خواجہ احمد عباس کی کہانی " ایک بچے کا خط مہاتما گاندھی

हिन्द सरकार के साथ नैपाल सरकार के प्रतिनिधियों की बातचीत के बे नतीजा रहने से पैदा हो गई है. और इस सिलसिले में पंडित नेहरू की यह बात याद रखने के लायक़ है कि हिन्द नैपाल में एक बीच का रास्ता चाहता था जिसमें पुराने बन्दोबस्त को तुरन्त ही जड़ से खतम न किया जाता. लेकिन अगर यह रास्ता जल्द ही तलाश न कर लिया गया तो फिर इसकी खोज करना और इस पर चलना बहुत मुशकिल हो जायगा. मतलब यह कि अगर नैपाल के राना (प्रधान मन्त्री) खानदान ने अपनी तानाशाही न छोड़ी तो उन्हें वह सारे अधिकार और रिआयतें छोड़ना पड़ेंगी जो उन्होंने लगभग सौ बरस से अपने आपस में बाँट रक्खी हैं.

पंडित नेहरू ने यह भी कहा है कि हम न तो तीन साल के उस लड़के को राजा मानेंगे जिसे रानाओं ने गद्दी पर बिठा दिया है और न बाहर के किसी आदमी या राष्ट्र को नैपाल में क़दम रखने और वहाँ के मामलों में गड़ बड़ करने देंगे इस आगाही के तीन रुख़ हैं. एक तो रानाओं की तरफ़, दूसरा बरतानिया और अमरीका की तरफ़ जिनके आदमी गोरखे सिपाही भरती करने और "अजीब ग़रीब चिड़ियाँ तलाश करने के लिये" नैपाल जाते रहते हैं और तीसरे चीनी कम्युनिस्टों की तरफ़ जिन्होंने तिब्बत पर हमला किया है जिसकी सरहद नैपाल से मिली हुई है.

पर तिब्बत में चीनियों के आगे बढ़ने की पिछले कई हफ़्ते से कोई ख़बर नहीं आई है. इसका एक बड़ा कारन तो वहाँ की सर्दी और बर्फ़ पड़ना है लेकिन एक दूसरा कारन यह भी हो सकता है कि चीन अपने बारे में हिन्द का रुख देख कर तिब्बत के बारे में उसकी सलाह को थोड़ा बहुत मानने के लिये तैयार हो गया हो.

کانگریس کے دھاوے نے جو زور پکڑا ہے اسکا ایک کارن وہ نراشا ہے جو ہند سرکار کے ساتھ نیپال سرکار کے پرتی ندھیوں کی بات چیت کے بے نتیجہ رہنے سے پیدا ہوئی ہے ۔ اور اس سلسلے میں پنڈت نہرو کی یہ بات یاد رکھنے کے لائق ہے کہ ہند نیپال میں ایک بیچ کا راستہ چاہتا تھا جس میں پرانے بندوبست کو ترنت ہی جڑ بنیاد سے ختم نہ کیا جاتا ۔ لیکن اگر یہ راستہ جلدی تلاش نہ کر لیا گیا تو پھر اس کی کھوج کرنا اور اس پر چلنا بہت مشکل ہوجائیگا ۔ مطلب یہ ہے کہ نیپال کے رانا (پردھان منتری) خاندان نے اپنی تانا شاہی نہ چھوڑی تو انہیں وہ سارے ادھیکار اور رعایتیں چھوڑنا پڑیں گی جو انہوں نے لگ بھگ سو برس سے اپنے آپس میں بانٹ رکھی ہیں ۔

پنڈت نہرو نے یہ بھی کہا ہے کہ ہم نہ تو تین سال کے اس لڑکے کو راجا مانیں گے جسے راناؤں نے گدی پر بٹھا دیا ہے اور نہ باہر کے کسی آدمی یا راشٹر کو نیپال میں قدم رکھنے اور وہاں کے معاملوں میں گڑبڑ کرنے دینگے ۔ اس آگاہی کے تین رخ ہیں ایک راناؤں کی طرف، دوسرا برطانیہ اور امریکہ کی طرف جنکے آدمی گورکھے سپاہی بھرتی کرنے اور " عجیب و غریب چڑیاں تلاش کرنے کیلئے " نیپال جاتے رہتے ہیں اور تیسرے چینی کمیونسٹوں کی طرف جنھوں نے تبت پر حملہ کیا ہے جسکی سرحد نیپال سے ملی ہوئی ہے ۔

پر تبت میں چینیوں کے آگے بڑھنے کی پچھلے کئی ہفتے سے کوئی خبر نہیں آئی ہے ۔ اسکا ایک بڑا کارن تو وہاں کی سردی اور برف پڑنا ہے لیکن ایک دوسرا کارن یہ بھی ہوسکتا ہے کہ چین اپنے بارے میں ہند کا رخ دیکھکر تبت کے بارے میں اسکی صلاح کو تھوڑا بہت ماننے کیلئے تیار ہوگیا ہو ۔

ज्यादा है. और इस फ़रक़ को ट्रूमैन और चर्चिल ऐटम बम की धमकी से पूरा करना चाहते हैं.

स्पेन के डिक्टेटर फ़्रान्को से नातेदारी क़ायम कर के उस फ़रक़ को पूरा करने की एक और कोशिश हो रही है. मगर फ़्रान्को ने बरतानिया से जिब्राटलर की जो मांग की है उससे पता चलता है कि यह सौदा ख़ासा महँगा पड़ेगा. इसी तरह का एक सौदा पच्छिमी जरमनी के अधिकारियों से किया जा रहा है जिनको एटलान्टिक सेना में जरमन सैनिक भेजने की दावत दी गई है. फ़रान्स यह दावत देते हिचकिचा रहा था इसलिये कि जरमनी पहली और दूसरी बड़ी लड़ाइयों में उसे बरबाद कर चुका है. पर अमरीका ने कुछ तो फ़रान्स को मदद और बचाव का यक़ीन दिला कर और कुछ जरमन पलटनों की गिनती मुक़र्रर कर के उसे चुप कर दिया.

नैपाल की गुत्थी

नैपाल के महाराजा के दिल्ली चले आने से उनकी गद्दी पर उनके तीन साल के पोते के बिठा दिये जाने और उनके राज में कांगरेस के बग़ावत शुरू कर देने से जो गुत्थी पड़ गई थी वह अभी तक सुलझ नहीं सकी है. कांगरेसी फ़ौजों को सरकारी फ़ौजियों ने कई जगह हरा दिया मगर कई जगह वह जीत भी गईं. बीच में समझौते की एक उम्मीद पैदा हो गई थी जब नैपाल के प्रधान मंत्री ने अपने दोनों प्रतिनिधियों को हिन्द सरकार से बातचीत करने के लिये नई दिल्ली भेजा था. मगर यह बातचीत बेनतीजा रही. हिन्दुस्तान नैपाल की आज़ादी और मज़बूती के लिये वहाँ के राज काज में जैसा सुधार कराना और ... को जितने हक़ दिलाना चाहता है नैपाल के प्रधान मंत्री उसके

زیادہ ھے . اور اس فرق کو ترومین اور چرچل ایٹم بم کی دھمکی سے پورا کرنا چاھتے ھیں .

اسپین کے ڈکٹیٹر فرانکو سے ناتے داری قائم کر کے اس فرق کو پورا کرنے کی ایک اور کوشش ھو رھی ھے . مگر فرانکو نے برطانیہ سے جبرا لٹرکی جو مانگ کی ھے اس سے پتہ چلتا ھے کہ یہ سودا خاصا مھنگا پڑے گا . اسی طرح کا ایک سودا پچھمی جرمنی کے ادھیکاریوں سے کیا جا رھا ھے جنکو اٹلانٹک سینا میں جرمن سینک بھیجنے کی دعوت دی گئی ھے . فرانس یہ دعوت دیتے ھچکچا رھا تھا اس لئے کہ جرمنی پہلی اور دوسری بڑی لڑائیوں میں اسے برباد کرچکا ھے . پر امریکہ نے کچھ تو فرانس کو مدد اور بچاؤ کا یقین دلا کر اور کچھ جرمن پلٹنوں کی گنتی مقرر کرکے اسے چپ کر دیا .

نیپال کی گتھی

نیپال کے مھا راجہ کے دلی چلے آنے سے انکی گدی پر ان کے تین سال کے پوتے کے بٹھا دئے جانے اور انکے راج میں کانگریس کے بغاوت شروع کر دینے سے جو گتھی پڑ گئی تھی وہ ابھی تک سلجھ نھیں سکی ھے . کانگریسی فوجوں کو سرکاری فوجوں نے کئی جگہ ھرا دیا مگر کئی جگہ وہ جیت بھی گئیں . بیچ میں سمجھوتے کی ایک اُمید پیدا ھوگئی تھی جب نیپال کے پردھان منتری نے اپنے دو پرتی ندھیوں کو ھند سرکار سے بات چیت کرنے کیلئے نئی دلی بھیجا تھا . مگر یہ بات چیت بے نتیجہ رھی . ھندستان نیپال کی آزادی اور مضبوطی کے لئے وھاں کے راج کاج میں جیسا سدھار کرانا اور جنتا کو ...

... का बड़ा दफ़्तर है, इसी तरह का एक ख़बर आई है.

पहले योरप

अमरीका और चीन के रुख़ में कब तक और कहाँ तक तबदीली होगी, यह अभी नहीं कहा जा सकता. लेकिन ऐटली ट्रूमैन बातचीत में अमरीका ने शायद बरतानिया की यह बात मान ली है कि जंगी तैयारियों में सब से पहले योरप पर ध्यान दिया जाए. इसलिये ऐंगलो अमरीकी प्रोपैगन्डे में चीन से ज़्यादा रूस पर छींटे कसे जाते हैं और इसीलिये ऐटली ट्रूमैन मुलाक़ात के बाद एटलान्टिक वाले मुल्कों में लड़ाई के सामान के लिये कच्चा माल जमा करने और बाँटने पर विचार किया जा रहा है और एटलान्टिक की एक फ़ौज बनाने और उसका कमान्डर मुक़र्रर करने की बात सोची जा रही है. जब तक यह तैयारियाँ पूरी नहीं होतीं उस वक़्त तक अमरीका और उस से ज़्यादा बरतानिया चीन के साथ लड़ाई में उलझने से बचाव करेगा और मुमकिन है कि यह दोनों उसकी कोई न कोई बात मानने के लिये तैयार हो जाएँ. लेकिन बरतानिया और अमरीका योरप में जो तैयारियाँ कर रहे हैं अगर उनसे रूस को कोई बड़ा डर पैदा हो गया तो वह उनका ध्यान बाँटने के लिये चीन को यह सलाह देगा कि उन्हें कोरिया में उलझाए रक्खा जाए. और अगर रूस ने सोच लिया कि इन राश्ट्रों से उसे देर या सवेर लड़ना है तो मुमकिन है कि वह उन्हें अपनी तैयारियाँ पूरी करने का वक़्त न दे. इन राश्ट्रों के हिसाब से योरप में रूस की शक्ति उन से कई गुना

عرب لیگ کونسل کا بڑا دفتر ہے، اسی طرح کی ایک خبر آئی ہے۔

پہلے یورپ

امریکہ اور چین کے رخ میں کبتک اور کہاں تک تبدیلی ہوگی یہ ابھی نہیں کہا جا سکتا۔ لیکن ایٹلی ٹرومین بات چیت میں امریکہ نے شاید برطانیہ کی یہ بات مان لی ہے کہ جنگی تیاریوں میں سب سے پہلے یورپ پر دھیان دیا جائے۔ اس لئے اینگلو امریکی پروپگنڈے میں چین سے زیادہ روس پر چھینٹے کسے جاتے ہیں۔ اور اسی لئے ایٹلی ٹرومین ملاقات کے بعد اٹلانٹک والے ملکوں میں لڑائی کے سامان کے لئے کچا مال جمع کرنے اور بانٹنے پر وچار کیا جا رہا ہے اور اٹلانٹک کی ایک فوج بنانے اور اس کا کمانڈر مقرر کرنے کی بات سوچی جارہی ہے جبتک یہ تیاریاں پوری نہیں ہوتیں اس وقت تک امریکہ اور اس سے زیادہ برطانیہ چین کے ساتھ لڑائی میں الجھنے سے بچاؤ کریگا اور ممکن ہے کہ یہ دونوں اس کی کوئی نہ کوئی بات ماننے کے لئے تیار ہو جائیں۔ لیکن برطانیہ اور امریکہ یورپ میں جو تیاریاں کر رہے ہیں اگر ان سے روس کو کوئی بڑا ڈر پیدا ہو گیا تو وہ ان کا دھیان بانٹنے کے لئے چین کو یہ صلاح دے گا کہ انہیں کوریا میں الجھائے رکھا جائے۔ اور اگر روس نے سوچ لیا کہ ان راشٹروں سے اسے دیر یا سویر لڑنا ہے تو ممکن ہے کہ وہ انہیں اپنی تیاریاں پوری کرنے کا وقت نہ دے۔ ان راشٹروں کے حساب سے یورپ میں روس کی شکتی ان سے کئی گنا

छींटें चीन पर भी फेंकी हैं और उनके ताजा बयानों और पिछली
हरकतों की बुनियाद पर लेकसक्सेस में चीन के प्रतिनिधि ने कहा है
कि लड़ाईबन्दी की तजवीज़ एक जाल है जिसके जरिये अमरीका
कोरिया में उत्तरी फ़ौजों और चीनी "वालंटियरों" के हाथ बाँध कर
ख़ुद कोरिया और फ़ारमूसा को अपनी ज़ंजीर में जकड़ना और
चीन को नुक़सान पहुँचाना चाहता है.

चीन की यह बात बिलकुल बेबुनियाद नहीं कही जा सकती
और अभी उस पर यह दोश भी नहीं लगाया जा सकता कि वह
बिला वजह लड़ाई को बढ़ाना चाहता है. इसलिये कि उसके प्रति-
निधि ने कहा है कि चीन की सरकार चीनी वालंटियरों को कोरिया
से वापस बुला लेने को तैयार है अगर अमरीका फ़ारमूसा को छोड़
दे, कोरिया में बाहर के देस दख़ल न दें और चीन के साथ बराबर
वाले की तरह बातचीत की जाए.

यह आख़िरी बात सब से ज़्यादा ज़रूरी है. अगर चीन की
यह माँग पूरी हो जाए तो फ़ारमूसा में अमरीका ने जो हैसियत तीन
साल पहले चांगकाई शेक को दी थी वही चीन की नई सरकार को
दी जा सकेगी और कोरियाके झगड़े का रूप बदल जाएगा इसलिये कि
वहाँ अगर यू. एन. ओ. की फ़ौज कुछ दिनों के लिये टिकी भी रही तो
उस फ़ौज के कन्ट्रोल में चीन भी शरीक रहेगा. इस तरह अमरीका
अगर यू. एन. ओ. में चीन को शामिल कर ले तो दुनिया की लड़ाई
टलने की एक सूरत निकल सकती है. दूसरी तरफ़ चीन अगर अपने
सैनिकों को जिन्हें वह वालंटियर कहता है, दक्खिनी कोरिया में न

چھینٹیں چین پر بھی پھینکی ہیں اور ان کے تازہ بیانوں اور
پچھلی حرکتوں کی بنیاد پر لیک سکسس میں چین کے پرتِنِدھی
نے کہا ہے کہ لڑائی بندی کی تجویز ایک جال ہے جسکے
ذریعے امریکہ کوریا میں اُتری فوجوں اور چینی "والنٹیروں" کے
ہاتھ باندھ کر خود کوریا اور فارموسا کو اپنی زنجیر میں جکڑنا
اور چین کو نقصان پہنچانا چاہتا ہے۔

چین کی یہ بات بالکل بے بنیاد نہیں کہی جاسکتی اور ابھی
اُس پر یہ دوش بھی نہیں لگایا جا سکتا کہ وہ بلا وجہ لڑائی کو بڑھانا
چاہتا ہے۔ اس لئے کہ اس کے پرتی ندھی نے کہا ہے کہ چین کی
سرکار چینی والنٹیروں کو کوریا سے واپس بلالینے کو تیار ہے اگر امریکہ
فارموسا کو چھوڑ دے، کوریا میں باہر کے دیس دخل نہ دیں اور
چین کے ساتھ برابر والے کی طرح بات چیت کی جائے۔

یہ آخری بات سب سے زیادہ ضروری ہے۔ اگر چین کی یہ مانگ
پوری ہو جائے تو فارموسا میں امریکہ نے جو حیثیت تین سال
پہلے چانگ کائی شیک کو دی تھی وہی چین کی نئی سرکار کو
دی جا سکے گی اور کوریا کے جھگڑے کا روپ بدل جائیگا اس لئے
کہ وہاں اگر یو۔ این۔ او۔ کی فوج کچھ دنوں کے لئے ٹکی بھی رہی
تو اس فوج کے کنٹرول میں چین بھی شریک رہے گا۔ اس طرح
امریکہ اگر یو۔ این۔ او۔ میں چین کو شامل کرلے تو دنیا کی
لڑائی ٹلنے کی ایک صورت نکل سکتی ہے۔ دوسری طرف چین اگر اپنے
سینکوں کو، جنہیں وہ والنٹیر کہتا ہے، دکھنی کوریا میں نہ بھیجے

कोरिया की गुत्थी [illegible] लिया जाए जिस में इसी लिये हिन्दुस्तान [illegible] बात चीत की जा सके. दक्खिनी कोरिया के पार न भेजे नहीं तो डर है कि वह अपनी सेना कोरिया की तरफ़ से लड़ाई में आ जाएगा. नेहरू सरकार की यह राय पूरी तरह सच्ची साबित हो चुकी है और नेहरू की यह बात भी इतनी ही सच्ची मालूम होती है कि लड़ाई के अलावा दूसरी सूरत यह है कि समझौते के लिये बातचीत की जाए आपस में एक दूसरे को बुरा भला न कहा जाए और ऐटम बम इस्तेमाल करने की बात हमेशा के लिये ख़तम कर दी जाए.

चीन का भड़कना

बातचीत का ज़िकर ट्रूमेन के एलान में भी मौजूद था मगर इस एलान में यह भी कहा गया था कि हमला करने वाले को कोई मुँह भराई न दी जाए. अमरीका चीन की नई सरकार को मानने या उसे यू. एन. ओ. में शामिल करने को एक मुँह भराई समझता है. इसलिये अभी तक बात चीत के लिये मैदान नहीं तैयार हो सका है. बल्कि इस बीच में चीन के भड़कने और बातचीत से भागने का नया सामान हो गया है. ट्रूमैन ने अमरीका में क़ौमी ख़तरे का एलान करके जंग की तैयारियाँ पहले से ज़्यादा ज़ोर के साथ शुरू कर दी हैं. और ऐटली ने भी रेडियो पर अपनी क़ौम से कहा है कि कम्युनिज़्म के ख़तरे का हर तरह से मुक़ाबला करना चाहिये. इन दोनों के हमले का ख़ास रुख़ रूस की तरफ़ है मगर उन्होंने कुछ

ہندستان شروع ہی سے اس بات پر زور دے رہا ہے کہ چین کی سرکار کو یو . این . او . میں شامل کر لیا جائے' جس میں کوریا کی گتھی سلجھانے کے لئے اس سے بات چیت کی جا سکے . اسی لئے ہندستان نے یو . این . او . سے کہا تھا کہ وہ اپنی سینا دکھنی کوریا کے پار نہ بھیجے نہیں تو ڈر ہے کہ چین اُتری کوریا کی طرف سے لڑائی میں آجائیگا . نہرو سرکار کی یہ رائے پوری طرح سچی ثابت ہو چکی ہے اور نہرو کی یہ بات بھی اتنی ہی سچی معلوم ہوتی ہے کہ لڑائی کے علاوہ دوسری صورت یہ ہے کہ سمجھوتے کے لئے بات چیت کی جائے' آپس میں ایک دوسرے کو برا بھلا نہ کہا جائے اور ایٹم بم استعمال کرنے کی بات ہمیشہ کے لئے ختم کر دی جائے .

چین کا بھڑکنا

بات چیت کا ذکر اٹیلی ترومین اعلان میں بھی موجود تھا مگر اس اعلان میں یہ بھی کہا گیا تھا کہ حملہ کرنے والے کو کوئی منھ بھرائی نہ دی جائے . امریکہ چین کی نئی سرکار کو ماننے یا اُسے یو . این . او . میں شامل کرنے کو ایک منھ بھرائی سمجھتا ہے . اس لئے ابھی تک بات چیت کے لئے میدان نہیں تیار ہو سکا ہے . بلکہ اس بیچ میں چین کے بھڑکنے اور بات چیت سے بھاگنے کا نیا سامان ہو گیا ہے . ترومین نے امریکہ میں قومی خطرے کا اعلان کر کے جنگ کی تیاریاں پہلے سے زیادہ زور کے ساتھ شروع کر دی ہیں . اور ایٹلی نے بھی ریڈیو پر اپنی قوم سے کہا ہے کہ کمیونزم کے خطرے کا ہر طرح سے مقابلہ کرنا چاہئے . ان دونوں کے حملے کا خاص رخ روس کی طرف ہے مگر اُنہوں نے کچھ

है कि यह कारवाई तीसरी बड़ी लड़ाई का एलान समझ ली जाती अमरीका चाहे इतनी दूर तक जाने के लिये तैयार हो जाता मगर बरतानिया इस से घबरा रहा था. इसलिये जनरल एसेम्बली ने अभी तक ऐसा कोई फ़ैसला नहीं किया है और हिन्दुस्तान ने लड़ाई बन्दी का प्रस्ताव पेश कर के यू. एन. ओ. में बहस का रुख़ दूसरी तरफ़ फेर दिया है.

हिन्दुस्तान की नीति

हिन्दुस्तान लड़ाई को कुछ दिनों के लिये टालना ही नहीं बल्कि झगड़े को अच्छी तरह चुकाना भी चाहता है. इसी वजह से उसने कोरिया की लड़ाई के शुरू में कहा था कि चीन को यू. एन. ओ. में शरीक कर लिया जाए जिसमें रूस और चीन के प्रतिनिधि पच्छिमी और दूसरे राष्ट्रों के प्रतिनिधियों के साथ बैठ कर समझौते की सूरतें सोच सकें. इसी बात पर पिछले दिनों हिन्द पार्लियामेन्ट में प्रधान मंत्री नेहरू ने भी ज़ोर दिया है.

हिन्द पार्लियामेन्ट में विदेसी मामलों की बहस में प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा है कि दूर पूरब के मामले चीन को अलग रख कर शान्ति के साथ तय नहीं किये जा सकते और अगर उनको तय करने के लिये लड़ाई का रास्ता अपना लिया जाए तो भी यह मामले तय नहीं हो सकते जब तक उनको तय करने में चीन जैसे बड़े राष्ट्र को संगत नहीं होगी. चीन एक बड़ा राष्ट्र होने के अलावा कोरिया का पड़ोसी भी है और जिस तरह हिन्दुस्तान नैपाल और तिब्बत के मामलों में दिलचस्पी लेता है उसी तरह चीन कोरिया में [illegible]

ھے کہ یہ کاروائی تیسری بڑی لڑائی کا اعلان سمجھ لی جاتی اور امریکہ چاھے اتنی دور تک جانے کے لئے تیار ھوجاتا مگر برطانیہ اس سے گھبرا رھا تھا . اس لئے جنرل اسمبلی نے ابھی تک ایسا کوئی فیصلہ نہیں کیا ھے اور ھندستان نے لڑائی بندی کا پرستاؤ پیش کرکے یو . این . او . میں بحث کا رخ دوسری طرف پھیر دیا ھے .

ھندستان کی نیتی

ھندستان لڑائی کوکچھ دنوں کے لئے ٹالناھی نہیں بلکہ جھگڑے کو اچھی طرح چکانا بھی چاھتا ھے . اسی وجہ سے اس نے کوریا کی لڑائی کے شروع میں کہا تھا کہ چین کو یو . این . او . میں شریک کرلیا جائے جس میں روس اور چین کے پرتی ندھی پچھمی اور دوسرے راشٹروں کے پرتی ندھیوں کے ساتھ بیٹھکر سمجھوتے کی صورتیں سوچ سکیں . اسی بات پر پچھلے دنوں ھند پارلیامنٹ میں پردھان منتری نہرو نے بھی زور دیا ھے .

ھند پارلیامنٹ میں بدیسی معاملوں کی بحث میں پردھان منتری جواھر لال نہرو نے کہا ھے کہ دور پورب کے معاملے چین کو الگ رکھکر شانتی کے ساتھ طے نہیں کئے جا سکتے اور اگر ان کو طے کرنے کے لئے لڑائی کا راستہ اپنا لیا جائے تو بھی یہ معاملے طے نہیں ھو سکتے جبتک ان کو طے کرنے میں چین جیسے بڑے راشٹر کی سنگت نہیں ھوگی . چین ایک بڑا راشٹر ھونے کے علاوہ کوریا کا پڑوسی بھی ھے اور جس طرح ھندستان نیپال اور تبت کے معاملوں سے دلچسپی لیتا ھے اسی طرح چین کوریا میں جو کچھ ھو رہا ھے [illegible]

... अपने खिलाफ़

एक तरह का हमला समझता है और अपने बारे में अमरीका के इरादों पर शक करता है. इसी तरह का शक उसे कोरिया में यू. एन. ओ. की उस कारवाई पर भी है जो अमरीका के कहने से और एक अमरीकी जनरल की कमान में हो रही है. इसलिये कि कोरिया और चीन की सरहद मिली हुई है. यह शक अमरीका की उन चालों से और पक्के पड़ गये हैं जिनके ज़रिये वह चीन के कम्युनिस्ट राज को यू. एन.ओ. में आने से रोक रहा है. और इन तीनों बातों से चीन का यह नतीजा निकालना बहुत कुछ ठीक है कि कोरिया में अमरीका का हमला अकेले कोरिया वालों का मामला नहीं है.

बहस का नया रुख़

चीनी प्रतिनिधि के शब्दों में "चीनी जनता यह देख कर कि फ़ारमूसा हमले का शिकार हो गया है और कोरिया की लड़ाई की लपटें उसकी तरफ़ लपक रही हैं" वालंटियरों की हैसियत से कोरिया वालों की मदद को जा रही है. और,चीनी सरकार के पास कोई वजह नहीं है जिसकी बुनियाद पर वह इन लोगों को कोरिया जाने से रोके. सच तो यह है कि उनको रोकने की शक्ति अमरीका और यू. एन. ओ. के पास भी नहीं है. अगर होती तो जब चीन ने सुरक्षा समिति की उस माँग को कि चीनी फ़ौजें कोरिया से हटाई जाएँ पूरा करने से मना कर दिया था तो यह मामला चौबीस घन्टे का नोटिस देकर जनरल एसेम्बली में पेश कर दिया जाता और एसेम्बली चीन के खिलाफ़ कोई कारवाई शुरू कर देती. इतना ज़रूर

سے روکنے اور وہاں اپنا سمندری اڈا بنا لینے کو چین اپنے خلاف ایک طرح کا حملہ سمجھتا ہے اور اپنے بارے میں امریکہ کے ارادوں پر شک کرتا ہے ۔ اسی طرح کا شک اسے کوریا میں یو ۔ این ۔ او ۔ کی اس کاروائی پر بھی ہے جو امریکہ کے کہنے سے اور ایک امریکی جنرل کی کمان میں ہو رہی ہے ۔ اس لئے کہ کوریا اور چین کی سرحد ملی ہوئی ہے یہ شک امریکہ کی ان چالوں سے پکے پڑگئے ہیں جن کے ذریعے وہ چین کے کمیونسٹ راج کو یو ۔ این ۔ او ۔ میں آنے سے روک رہا ہے ۔ اور ان تینوں باتوں سے چین کا یہ نتیجہ نکالنا بہت کچھ ٹھیک ہے کہ کوریا میں امریکہ کا حملہ اکیلے کوریا والوں کا معاملہ نہیں ہے ۔

بحث کا نیا رخ

چینی پرتی ندھی کے شبدوں میں "چینی جنتا یہ دیکھکر کہ فارموسا حملے کا شکار ہوگیا ہے اور کوریا کی لڑائی کی لپٹیں اس کی طرف لپک رہی ہیں" والنٹیروں کی حثیت سے کوریا والوں کی مدد کو جا رہی ہے ۔ اور چینی سرکار کے پاس کوئی وجہ نہیں ہے جسکی بنیاد پر وہ ان لوگوں کو کوریا جانے سے روکے ۔ سچ تو یہ ہے کہ انکو روکنے کی شکتی امریکہ اور یو ۔ این ۔ او ۔ کے پاس بھی نہیں ہے ۔ اگر ہوتی تو جب چین نے سورکشا سمیتی کی اس مانگ کو کہ چینی فوجیں کوریا سے ہٹائی جائیں پورا کرنے سے منع کر دیا تھا تو یہ معاملہ چوبیس گھنٹے کا نوٹس دےکر جنرل اسمبلی میں پیش کر دیا جاتا اور اسمبلی چین کے خلاف کوئی کاروائی شروع کر دیتی ۔ اتنا ضرور

चीन की शर्तें

प्रस्ताव तो मन्जूर हो गया है मगर कमेटी की रिपोर्ट इस लेख के लिखते वक़्त तक तैयार नहीं हुई है. रूस ने इस प्रस्ताव का विरोध किया था और चीन के रेडियो ने कहा है कि शान्त सागर में शान्ति उसी वक़्त क़ायम हो सकती है जब अमरीका की हमला करने वाली फ़ौजें कोरिया और फ़ारमूसा से हटाली जाएँ, चीन के चारों ओर घेरा डालने की तरकीबें रोक दी जाएँ और लड़ाई की तैयारियाँ बन्द कर दी जाएँ. इन बातों से कुछ लोगों ने यह नतीजा निकाला है कि यू. एन. ओ. की कमेटी, जिसमें ईरान, हिन्दुस्तान और कनाडा के प्रतिनिधि शामिल हैं. कोरिया में समझौते की राह नहीं निकाल सकेगी. मगर इसमें कमेटी के मेम्बरों का कोई दोश नहीं है और न अकेले रूस और चीन का दोश है. चीन की नई सरकार के प्रतिनिधि ने, जिसको सिर्फ़ फ़ारमूसा पर बहस में हिस्सा लेने के लिये सुरक्षा समिति में बुलाया गया है, अपने राष्ट्र की सफ़ाई बड़ी लियाक़त के साथ पेश की है.

उसकी यह बात बिलकुल ठीक है कि २७ जून से पहले जब कि अमरीका कोरिया की लड़ाई में शरीक हुआ और फ़ारमूसा के समन्दर में अपना बेड़ा भेजा, किसी को इस बात में ज़रा सा भी शक नहीं था कि फ़ारमूसा का टापू चीन का एक हिस्सा है. और इससे बहुत पहले लड़ाई के ज़माने में क़ाहिरा और मास्को के समझौतों में भी यह तय हो गया था कि फ़ारमूसा को जापान से लेकर चीन को वापस दिला दिया जाएगा. अमरीका के इस फ़ैसले

چین کی شرطیں

پرستاؤ تو منظور ہوگیا ہے مگر کمیٹی کی رپورٹ اس لیکھ کے لکھتے وقت تک تیار نہیں ہوئی ہے. روس نے اس پرستاؤ کا وِرودھ کیا تھا اور چین کے ریڈیو نے کہا ہے کہ شانت ساگر میں شانتی اُسی وقت قائم ہوسکتی ہے جب امریکہ کی حملہ کرنے والی فوجیں کوریا اور فارموسا سے ہٹا لی جائیں' چین کے چاروں اور گھیرا ڈالنے کی ترکیبیں روک دی جائیں اور لڑائی کی تیاریاں بند کر دی جائیں ۔ ان باتوں سے کچھ لوگوں نے یہ نتیجہ نکالا ہے کہ یو ۔ این ۔ او ۔ کی کمیٹی' جس میں ایران' ہندستان اور کناڈا کے پرتی ندھی شامل ہیں' کوریا میں سمجھوتے کی راہ نہیں نکال سکے گی ۔ مگر اس میں کمیٹی کے ممبروں کا کوئی دوش نہیں ہے اور نہ اکیلے روس اور چین کا دوش ہے ۔ چین کی نئی سرکار کے پرتی ندھی نے' جس کو صرف فارموسا پر بحث میں حصہ لینے کے لئے سورکشا سمیتی میں بلایا گیا ہے' اپنے راشٹر کی صفائی بڑی لیاقت کے ساتھ پیش کی ہے ۔

اُس کی یہ بات بالکل ٹھیک ہے کہ ٢٧ جون سے پہلے جبکہ امریکہ کوریا کی لڑائی میں شریک ہوا اور فارموسا کے سمندر میں اپنا بیڑا بھیجا کسی کو اس بات میں ذرا سا بھی شک نہیں تھا کہ فارموسا کا ٹاپو چین کا ایک حصہ ہے ۔ اور اس سے بہت پہلے لڑائی کے زمانے میں قاہرہ اور ماسکو کے سمجھوتوں میں بھی یہ طے ہوگیا تھا کہ فارموسا کو جاپان سے لے کر چین کو واپس دلا دیا جائے گا. امریکہ کے

... कोशिश हो रहा है और हिन्दुस्तान इस कोशिश में सब से आगे आगे है. हमारे प्रतिनिधि बैंगल नरसिंह राव ने लेकसक्सेस में चीन की नई सरकार के एलची से कई बार बात चीत की और जिन दिनों ट्रूमैन और ऐटली की कानफ़रेन्सें हो रही थीं उन्हीं दिनों में श्री राव के मकान पर एशिया के तेरह देसों के प्रतिनिधियों ने जमा हो कर एक साथ चीन से अपील की कि वह इस बात का एलान कर दे कि उसकी सेना उत्तरी कोरिया की सरहद पार कर दक्खिनी कोरिया में नहीं जाएगी. अपील में कहा गया था कि ऐसा एलान हो जाने से एशियाई देसों को दूर पूरब का झगड़ा चुकाने की तरकीबें तलाश करने में आसानी हो जाएगी.

इस अपील का चीनी सरकार ने अभी तक कोई जवाब नहीं दिया है और रूस के प्रतिनिधि ने यू. एन. ओ. में अपील करने वालों का मज़ाक़ उड़ाया है इसलिये कि उनमें से अधिक तर लोग उस वक़्त ख़ामोश थे जब जनरल मैकआर्थर ने दक्खिनी कोरिया से उत्तरी कोरिया पर चढ़ाई की थी. फिर भी बैंगल नरसिंह राव ने कहा है कि चीन के प्रतिनिधि से उन्हें मालूम हुआ है कि चीनी सरकार इस अपील पर ग़ौर कर रही है और चाहती है कि कोरिया की लड़ाई जल्दी से जल्दी ख़तम हो जाए. शायद इसी बुनियाद पर हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि ने यू. एन. ओ. में यह प्रस्ताव रक्खा कि तीन आदमियों की एक कमेटी उन बातों की खोज करे जिनकी बुनियाद पर कोरिया में लड़ाई बन्दी का समझौता हो सके.

یو . این . او . میں اس کے لئے کوشش ہو رہی ہے اور ہندستان اس کوشش میں سب سے آگے آگے ہے . ہمارے پرتی ندھی بنگل نرسنگھ راؤ نے لیک سکسس میں چین کی نئی سرکار کے ایلچی سے کئی بار بات چیت کی اور جن دنوں ٹرومین اور ایٹلی کی کانفرنسیں ہو رہی تھیں اُنھیں دنوں میں شری راؤ کے مکان پر ایشیا کے تیرہ دیسوں کے پرتی ندھیوں نے جمع ہوکر ایک ساتھ چین سے اپیل کی کہ وہ اس بات کا اعلان کر دے کہ اُس کی سینا اُتری کوریا کی سرحد پار کر دکھنی کوریا میں نہیں جائےگی. اپیل میں کہا گیا تھا کہ ایسا اعلان ہوجانے سے ایشیائی دیسوں کو دور پورب کا جھگڑا چکانے کی ترکیبیں تلاش کرنے میں آسانی ہوجائے گی .

اس اپیل کا چینی سرکار نے ابھی تک کوئی جواب نہیں دیا ہے اور روس کے پرتی ندھی نے یو . این . او . میں اپیل کرنے والوں کا مذاق اُڑایا ہے اس لئے کہ اُن میں سے ادھک تر لوگ اس وقت خاموش تھے جب جنرل میک آرتھر نے دکھنی کوریا سے اُتری کوریا پر چڑھائی کی تھی . پھر بھی بنگل نرسنگھ راؤ نے کہا ہے کہ چین کے پرتی ندھی سے اُنھیں معلوم ہوا ہے کہ چینی سرکار اس اپیل پر غور کر رہی ہے اور چاہتی ہے کہ کوریا کی لڑائی جلدی سے جلدی ختم ہوجائے . شاید اِسی بنیاد پر ہندستان کے پرتی ندھی نے یو . این . او . میں یہ پرستاؤ رکھا کہ تین آدمیوں کی ایک کمیٹی اُن باتوں کی کھوج کرے جنکی بنیاد پر کوریا میں لڑائی بندی کا سمجھوتہ ہو سکے .

यू. एन. ओ. और उत्तरी कोरिया का नहीं है बल्कि इस में एक तरफ़ अमरीका है और दूसरी तरफ़ चीन. जब तक अमरीका चीन की नई सरकार को अपने बराबर मानने और बिठाने के लिये तैयार नहीं होता उस वक़्त तक चीन किसी बातचीत के लिये तैयार नहीं होगा.

अमरीका अभी तक चीन के बारे में अपनी हट पर जमा हुआ है. ट्रूमैन ऐटली बात चीत के बाद उस के बिदेस मंत्री डीन एचेसन ने अपनी पर्लियामेंन्ट में कहा है कि उनकी सरकार अपने जतन भर यू. एन. ओ. में चीन को नहीं आने देगी. हाँ अगर यू. एन. ओ. के मेम्बर बहुमत से चीन को शरीक करने का समर्थन करें तो अमरीका अपना ख़ास वोट 'विटो' इस्तेमाल नहीं करेगा. लेकिन यू. एन. ओ. के मेम्बर अपनी राजनैतिक और आर्थिक मजबूरियों की वजह से अमरीका की मरज़ी के ख़िलाफ़ नहीं जा सकते. छोटे राष्ट्रों का तो कहना ही क्या ख़ुद बरतानिया भी अमरीका को नाराज़ नहीं कर सकता और प्रधान मंत्री ऐटली ने वाशिंगटन से वापस आकर कोरिया में यू. एन. ओ. की सेना के अमरीकी कमान्डर जनरल मैकआर्थर की कारवाइयों की तारीफ़ और समर्थन का जिन शब्दों में ज़िकर किया है वह बचाव मंत्री के उस बयान के बिलकुल उलटे हैं जिस में उन्होंने जनरल मैकआर्थर की टीका की थी.

समझौते की कोशिश

इस तरह बरतानिया कोरिया की लड़ाई को समझौते के ज़रिये

یو . این . او . اور اُتری کوریا کا نہیں ہے بلکہ اس میں ایک طرف امریکہ ہے اور دوسری طرف چین . جب تک امریکہ چین کی نئی سرکار کو اپنے برابر ماننے اور بٹھانے کےلئے تیار نہیں ہوتا اس وقت تک چین کسی بات چیت کے لئے تیار نہیں ہوگا .

امریکہ ابھی تک چین کے بارے میں اپنی ہٹ پر جما ہوا ہے . ٹرومین ایٹلی بات چیت کے بعد اس کے بدیس منتری ڈین ایچیسن نے اپنی پارلیامنٹ میں کہا ہے کہ ان کی سرکار اپنے جتن بھر یو . این . او . میں چین کو نہیں آنے دے گی . ہاں اگر یو . این . او . کے ممبر بہومت سے چین کو شریک کرنے کا سمرتھن کریں تو امریکہ اپنا خاص ووٹ 'ویٹو' استعمال نہیں کرے گا . لیکن یو . این . او . کے ممبر اپنی راج نیتک اور آرتھک مجبوریوں کی وجہ سے امریکہ کی مرضی کے خلاف نہیں جاسکتے . چھوٹے راشٹروں کا تو کہنا ہی کیا خود برطانیہ بھی امریکہ کو ناراض نہیں کرسکتا اور پردھان منتری ایٹلی نے واشنگٹن سے واپس آکر کوریا میں یو . این . او . کی سینا کے امریکی کمانڈر جنرل میک آرتھر کی کاروائیوں کی تعریف اور سمرتھن کا جن شبدوں میں ذکر کیا ہے وہ بچاؤ منتری کے اس بیان کے بالکل اُلٹے ہیں جس میں اُنھوں نے جنرل میک آرتھر کی ٹیکا کی تھی .

سمجھوتے کی کوشش

اسطرح برطانیہ کوریا کی لڑائی کو سمجھوتے کے ذریعے ختم

और बरतानिया में इस मामले पर अच्छा खासा भेद भाव है. और यह कि अमरीका कोरिया की लड़ाई को जिस ढंग से चलाना चाहता है, बरतानिया उसके ख़िलाफ़ है. ख़ुद प्रधान मंत्री ऐटली ने अमरीका जाने से पहले पर्लियामेन्ट में कहा था कि उनकी सरकार चाहती है कि कोरिया की लड़ाई खतम हो जाए और कोरिया के बारे में कोई समझौता हो जाए. उन्हों ने चीन के साथ बरतानिया और दूसरे राश्ट्रों की दोस्ती को भी इस सिलसिले की एक कड़ी बताया था और दुनिया के इस हिस्से में एक पायदार समझौते की आशा ज़ाहिर की थी.

वाशिंगटन की बात चीत

अपने इन विचारों को उन्हों ने ट्रूमैन के सामने किस ढंग से पेश किया और उनको कहाँ तक क़ायल किया या ख़ुद अपने विचारों में कितनी तबदीली की इसका ठीक ठीक हाल उस बयान से नहीं मालूम होता जो वाशिंगटन की बातचीत खतम होने के बाद जारी किया गया है. उस बयान में एक तरफ़ यह कहा गया है कि हमला करने वाले को कोई मुँह भराई नहीं दी जाएगी तो दूसरी तरफ़ यह भी बताया गया है कि बात चीत के ज़रिये लड़ाई खतम की जा सकती है. लेकिन उस बयान में यह मान लिया गया है कि चीन की नई सरकार को अधिकारी मानने और उसे यू. एन. ओ. में शरीक करने के मामले में अमरीका और बरतानिया एक राय नहीं हो सके. ऐसी सूरत में कोरिया का झगड़ा बात चीत के ज़रिये तय होना बहुत मुश्किल है. इसलिये कि यह झगड़ा अब उत्तरी और दक्खिनी कोरिया का या

اور برطانیہ میں اس معاملے پر اچھا خاصا بھید بھاؤ ہے . اور یہ کہ امریکہ کوریا کی لڑائی کو جس ڈھنگ سے چلانا چاہتا ہے برطانیہ اُس کے خلاف ہے . خود پردھان منتری ایٹلی نے امریکہ جانے سے پہلے پارلیامنٹ میں کہا تھا کہ اُن کی سرکار چاہتی ہے کہ کوریا کی لڑائی ختم ہو جائے اور کوریا کے بارے میں کوئی سمجھوتہ ہو جائے . اُنھوں نے چین کے ساتھ برطانیہ اور دوسرے راشٹروں کی دوستی کو بھی اس سلسلے کی ایک کڑی بتایا تھا اور دنیا کے اس حصے میں ایک پائدار سمجھوتے کی آشا ظاہر کی تھی .

واشنگٹن کی بات چیت

اپنے ان وچاروں کو اُنھوں نے ٹرومین کے سامنے کس ڈھنگ سے پیش کیا اور ان کو کہاں تک قائل کیا یا خود اپنے وچاروں میں کتنی تبدیلی کی اس کا ٹھیک ٹھیک حال اُس بیان سے نہیں معلوم ہوتا جو واشنگٹن کی بات چیت ختم ہونے کے بعد جاری کیا گیا ہے . اُس بیان میں ایک طرف یہ کہا گیا ہے کہ حملہ کرنے والے کو کوئی منہ بھرائی نہیں دی جائے گی تو دوسری طرف یہ بھی بتایا گیا ہے کہ بات چیت کے ذریعے لڑائی ختم کی جاسکتی ہے . لیکن اُس بیان میں یہ مان لیا گیا ہے کہ چین کی نئی سرکار کو ادھیکاری ماننے اور اُسے یو . این . او . میں شریک کرنے کے معاملے میں امریکہ اور برطانیہ ایک رائے نہیں ہوسکے . ایسی صورت میں کوریا کا جھگڑا بات چیت کے ذریعے طے ہونا بہت مشکل ہے . اس لئے کہ یہ جھگڑا اب اُتری اور دکھنی کوریا کا یا

बात का डर है कि अगर चीन की नई सरकार से कोई समझौता नहीं हो सका तो कोरिया की लड़ाई दूर दूर तक फैल जाएगी.

ऐटली का डर

दर असल यही डर था जो ट्रूमैन की ऐटमी धमकी के बाद ऐटली को लन्दन से वाशिंगटन ले गया. और बरतानिया के इस डर में अचंभे की कोई बात नहीं है. एक तो इस लिये कि अगर कोरिया में ऐटम बम गिराया गया तो पूरब के तमाम देसों की जनता पच्छिमी राष्ट्रों के खिलाफ़ हो जाएगी. और दूसरे इसलिये कि अगर कोरिया की लड़ाई इतनी बढ़ी कि अमरीका को ऐटम बम इस्तेमाल करने की नौबत आगई तो रूस भी चुप नहीं रहेगा वह कोरिया में चीन को खुल्लम खुल्ला मदद देने के अलावा पच्छिमी राष्ट्रों का ध्यान हटाने और उनको परेशान करने के लिये योरप में भी छेड़ छाड़ शुरू कर देगा. वहाँ इन राष्ट्रों की शक्ति रूस से बहुत कम है. और इसीलिये बरतानिया के पिछले प्रधान मन्त्री विन्स्टन चर्चिल ने ऐटली के अमरीका जाते वक़्त यह आगाही दी थी कि कम्युनिस्ट राष्ट्र पच्छिमी राष्ट्रों को एशिया में उलझाकर योरप में धावा करना चाहते हैं. इसलिये जहाँ तक हो सके कोरिया के मसले पर चीन से कोई बड़ी लड़ाई मोल न ली जाए.

यह ख़याल अकेले चर्चिल का या उनकी टोरी पारटी का नहीं

بات کا ڈر ھے کہ اگر چین کی نئی سرکار سے کوئی سمجھوتہ نہیں ھو سکا تو کوریا کی لڑائی دور دور تک پھیل جائیگی۔

ایٹلی کا ڈر

در اصل یہی ڈر تھا جو ٹرومین کی ایٹمی دھمکی کے بعد ایٹلی کو لندن سے واشنگٹن لے گیا۔ اور برطانیہ کے اس ڈر میں اچنبھے کی کوئی بات نہیں ھے۔ ایک تو اس لئے کہ کوریا میں ایٹم بم گرایا گیا تو پورب کے تمام دیسوں کی جنتا پچھمی راشٹروں کے خلاف ھو جائے گی۔ اور دوسرے اس لئے کہ اگر کوریا کی لڑائی اتنی بڑھی کہ امریکہ کو ایٹم بم استعمال کرنے کی نوبت آگئی تو روس بھی چپ نہیں رھے گا وہ کوریا میں چین کو کھلم کھلا مدد دینے کے علاوہ پچھمی راشٹروں کا دھیان ھٹانے اور ان کو پریشان کرنے کے لئے یورپ میں بھی چھیڑ چھاڑ شروع کر دے گا۔ وھاں ان راشٹروں کی شکتی روس سے بہت کم ھے۔ اور اسی لئے برطانیہ کے پچھلے پردھان منتری ونسٹن چرچل نے ایٹلی کے امریکہ جاتے وقت یہ آگاھی دی تھی کہ کمیونسٹ راشٹر پچھمی راشٹروں کو ایشیا میں الجھا کر یورپ میں دھاوا کرنا چاھتے ھیں۔ اس لئے جہاں تک ھو سکے کوریا کے مسئلے پر چین سے کوئی بڑی لڑائی مول نہ لی جائے۔

یہ خیال اکیلے چرچل کا یا ان کی ٹوری پارٹی کا نہیں تھا بلکہ لیبر سرکار کے [illegible]

दुनिया का हाल

(भाई इशरत अली सिद्दीक़ी)

ट्रूमैन की धमकी

कोरिया की लड़ाई का पाँसा पलटते देख कर अमरीका के प्रधान ट्रूमैन साहब ने ३० नवम्बर को यह धमकी दी थी कि वहाँ अगर ज़रूरत समझी गई तो ऐटम बम गिरा दिया जायगा. इस धमकी का रुख़ चीन और रूस की तरफ़ था मगर इन दोनों पर उस का कोई असर नहीं हुआ. यू. एन. ओ. में रूस अपने पुराने तेवर के साथ अमरीका पर यह इलज़ाम लगा रहा है कि वह कोरिया के बारे में साम्राजी इरादे रखता है और यह माँग कर रहा है कि कोरिया से यू. एन. ओ. की फ़ौजें हटा ली जाएँ. यही माँग चीन की भी है और उसकी फ़ौजें यू. एन. ओ की फ़ौजों को उत्तरी कोरिया से निकालने के बाद अब दक्खिनी कोरिया में दाख़िल हो रही हैं. बरतानिया के प्रधान मन्त्री ने अपनी पार्लियामेन्ट में कहा है कि जनरल मैकआर्थर कोरिया में चीन के धावे को रोक देंगे और यू. एन. ओ. की फ़ौजें वहाँ जमी रहेंगी. मगर इसके साथ ही उनको इस

دنیا کا حال

(بھائی عشرت علی صدیقی)

ترومین کی دھمکی

کوریا کی لڑائی کا پاسہ پلٹتے دیکھکر امریکہ کے پردھان ترومین صاحب نے ۳۰ نومبر کو یہ دھمکی دی تھی کہ وہاں اگر ضرورت سمجھی گئی تو ایٹم بم گرا دیا جائیگا . اس دھمکی کا رخ چین اور روس کی طرف تھا مگر ان دونوں پر اُس کا کوئی اثر نہیں ہوا. یو . این . او . میں روس اپنے پرانے تیور کے ساتھ امریکہ پر یہ الزام لگا رہا ہے کہ وہ کوریا کے بارے میں سامراجی ارادے رکھتا ہے اور یہ مانگ کر رہا ہے کہ کوریا سے یو . این . او . کی فوجیں ہٹالی جائیں . یہی مانگ چین کی بھی ہے اور اس کی فوجیں یو . این . او . کی فوجوں کو اُتری کوریا سے نکالنے کے بعد اب دکھنی کوریا میں داخل ہو رہی ہیں . برطانیہ کے پردھان منتری نے اپنی پارلیامنٹ میں کہا ہے کہ جنرل میک آرتھر کوریا میں چین کے دھاوے کو روک دینگے اور یو . این . او . کی فوجیں وہاں جمی رہینگی . مگر اس کے ساتھ ہی انکو اس

शील तब तक वहाँ खड़ी रहीं जब तक जुलूस के साथ की मिट्टी के तेल की मशालें दिखाई पड़ती रहीं. जुलूस, जब आँखों से ओझल हो गया तब भी उसके नारे सुनाई देते रहे. सब से पहले हबीब की आवाज़ आती थी उसके बाद दूसरे लोगों की जिनमें रहमान का कर्कश स्वर सब पर छाया रहता था.

× × × ×

दूसरे दिन शील जब रशीदा के घर पहुँची तो रशीदा के पिता किसी काम से बाहर चले गए और थोड़ी देर बाद जब हबीब ने दरवाज़े पर दस्तक दी और बाहर से कहा कि मैं आ सकता हूं तो शील ने बाहर आकर हँसते हुए कहा—"रशीदा कह रही है कि वह आप से परदा करती है."

हबीब भी हंस पड़ा. बोला—"मैं तो उनका हाल पूछने आया था. मैं अब हरनामपूर जा रहा हूं. वहाँ अमन सभा का जलसा होने वाला है."

जीवन एक सवारी है जिसे सुस्त चलने वाला तेज़ चलाना चाहे तो अलग हो जाती है और तेज़ चलने वाला धीरे धीरे चलाना चाहे तो उस से भी अलग होजाती है .

—ख़लील जिब्रान

شیل تب تک وہاں کھڑی رہیں جب تک جلوس کے ساتھ کی مٹی کے تیل کی مشعلیں دکھائی پڑتی رہیں . جلوس جب آنکھوں سے اوجھل ہوگیا تب بھی اُس کے نعرے سنائی دیتے رہے . سب سے پہلے حبیب کی آواز آتی تھی اُس کے بعد دوسرے لوگوں کی جن میں رحمان کا کرکش سور سب پر چھایا رہتا تھا .

× × × ×

دوسرے دن شیل جب رشیدہ کے گھر پہنچی تو رشیدہ کے پتا کسی کام سے باہر چلے گئے اور تھوڑی دیر بعد جب حبیب نے دروازے پر دستک دی اور باہر سے کہا کہ میں آسکتا ہوں تو شیل نے باہر آکر ہنستے ہوئے کہا—"رشیدہ کہہ رہی ہے کہ وہ آپ سے پردہ کرتی ہے."

حبیب بھی ہنس پڑا . بولا—"میں تو اُن کا حال پوچھنے آیا تھا . میں اب ہرنام پور جا رہا ہوں . وہاں امن سبھا کا جلسہ ہونے والا ہے."

جیون ایک سواری ہے جسے سست چلنے والا تیز چلانا چاہے تو الگ ہوجاتی ہے اور تیز چلنے والا دھیرے دھیرے چلانا چاہے تو اُس سے بھی الگ ہوجاتی ہے .

—خلیل جبران

हम दंगा नहीं होने देंगे."

"हिन्दू मुस्लिम एक हों."

"हिन्दू मुस्लिम एक हों ."

"फ़िरक़ा परस्ती का नाश हो."

"फ़िरक़ा परस्ती का नाश हो."

"गाँव की एकता ज़िन्दाबाद !"

"गाँव की एकता ज़िन्दाबाद !"

ज़ोर से चिल्लाने में रशीदा के माथे का ख़ून फिर तेज़ी से बहने लगा. हबीब ने यह देख कर सब को चुप कराते हुए रशीदा से कहा—"अच्छा अब तुम आराम करो. मैं यहाँ से जुलूस बनाकर दूसरे गाँव में जा रहा हूं. तुम्हारा काम ख़तम हुआ. अब हम अपना काम करेंगे. आज रात में कई गाँवों को बचाना है."

श्याम बाबू यह सुनकर बोले—"नहीं, अभी एक काम और बाक़ी है. आप लोग एक बार और नारा लगाइये. देवी रशीदा ज़िन्दाबाद !"

सब लोगों ने पूरे जोश से नारा लगाया—"देवी रशीदा ज़िन्दाबाद !"

और फिर यह हमलाआवरों की भीड़ एक राज काजी सभा की तरह वहाँ से जुलूस का रूप लेकर रात के अंधेरे में दूसरे गाँव को चली गई और रशीदा, उसके पिता, श्याम बाबू, श्याम बाबू की पत्नी और

''ہم دنگا نہیں ہونے دینگے .''

''ہندو مسلم ایک ہوں .''

''ہندو مسلم ایک ہوں .''

''فرقہ پرستوں کا ناش ہو .''

''فرقہ پرستوں کا ناش ہو .''

''گاؤں کی ایکتا زندہباد ! .''

''گاؤں کی ایکتا زندہباد ! .''

زور سے چلانے میں رشیدہ کے ماتھے کا خون پھر تیزی سے بہنے لگا. حبیب نے یہ دیکھ سب کو چپ کراتے ہوئے رشیدہ سے کہا—''اچھا اب تم آرام کرو . میں یہاں سے جلوس بنا کر دوسرے گاؤں میں جا رہا ہوں . تمہارا کام ختم ہوا . اب ہم اپنا کام کرینگے . آج رات میں کئی گاؤں کو بچانا ہے .''

شیام بابو یہ سن کر بولے—''نہیں، ابھی ایک کام اور باقی ہے . آپ لوگ ایک بار اور نعرہ لگائیے . دیوی رشیدہ زندہباد ! .''

سب لوگوں نے پورے جوش سے نعرہ لگایا—''دیوی رشیدہ زندہباد !''

اور پھر یہ حملہ آوروں کی بھیڑ ایک راج کاجی سبھا کی طرح وہاں سے جلوس کا روپ لیکر رات کے اندھیرے میں دوسرے گاؤں کو چلی گئی اور رشیدہ، اس کے پتا، شیام بابو، شیام بابو کی پتنی اور

यह सोचना चाहिये कि गाँव में ऐसी बात उठी कैसे. और क्या फिर
अगर किसी ने हमें बहकाया तो हम बहक जाएँगे. क्या फिर अगर
किसी ने आकर यह कह दिया कि भारत में किसी जगह दंगा हो
रहा है तो हम फिर इसी तरह इन्सानियत से दूर हो कर हैवान बन
जाएँगे. यह समझ रखिये कि किसी बेगुनाह को नुक़सान पहुँचाना
इस्लाम में सब से बड़ा गुनाह है. अगर अपने यहाँ बसने वाले कम
गिनती वाले हिन्दुओं को हम से ज़रा भी कष्ट पहुँचा तो हम अपने
देस का कोई भला नहीं करेंगे बल्कि उसके नाम पर कलंक लगाएंगे
और अपने मज़हब को भी बदनाम करेंगे. हमें दुनिया भर से कोई
मतलब नहीं. भारत में अगर मुसलमानों पर कोई ज़ुल्म होता है तो
उसे भारत सरकार रोकेगी. वहाँ के मुसलमानों का बदला यहाँ के
हिन्दुओं से ले कर हम वहाँ के मुसलमानों का कोई भला नहीं कर
सकते बल्कि उनका नुक़सान ही करेंगे. यहाँ की ख़बरें सुनकर वहाँ
के हिन्दुओं को भारत के फ़िरक़ा परस्त और अधिक भड़काएँगे.
यह शैतानी चक्कर कभी ख़तम न होगा. अगर हमें अपने मज़हब से
मुहब्बत है तो हम अपने यहाँ के ग़ैर मुस्लिमों को ज़्यादा से ज़्यादा
सुखी रख कर ही मज़हब का नाम ऊँचा कर सकते हैं. ऐसा करने
से ही हमारे देस का नाम भी ऊंचा होगा. अब आप लोग बताइये
कि आप ने क्या फ़ैसला किया. क्या गाँव में दंगा होना अच्छा है?''

"नहीं!" सब लोगों ने कहा.

"क्या आप अपने देस में हिन्दुओं को नुक़सान पहुँचाना पसन्द

یہ سوچنا چاہئیے کہ گاؤں میں ایسی بات اُٹھی کیسے ۔ اور کیا پھر اگر
کسی نے ہمیں بہکایا تو ہم بہک جائیں گے ۔ کیا پھر اگر کسی نے آکر
یہ کہہ دیا کہ بھارت میں کسی جگہ دنگا ہو رہا ہے تو ہم پھر اِسی
طرح اِنسانیت سے دور ہو کر حیوان بن جائینگے ۔ یہ سمجھ رکھئیے کہ
کسی بے گناہ کو نقصان پہنچانا اسلام میں سب سے بڑا گناہ ہے ۔ اگر
اپنے یہاں بسنے والے کم گنتی والے ہندؤوں کو ہم سے ذرا بھی کشٹ
پہنچا تو ہم اپنے دیس کا کوئی بھلا نہیں کرینگے بلکہ اُس کے نام
پر کلنک لگائینگے اور اپنے مذہب کو بھی بدنام کرینگے ۔ ہمیں دنیا
بھر سے کوئی مطلب نہیں ۔ بھارت میں اگر مسلمانوں پر کوئی ظلم
ہوتا ہے تو اُسے بھارت سرکار روکے گی ۔ وہاں کے مسلمانوں کا بدلہ
یہاں کے ہندؤوں سے لیکر ہم وہاں کے مسلمانوں کا کوئی بھلا نہیں
کر سکتے بلکہ اُن کا نقصان ہی کرینگے ۔ یہاں کی خبریں سنکر وہاں
کے ہندؤوں کو بھارت کے فرقہ پرست اور ادھک بھڑ کائیں گے ۔ یہ
شیطانی چکر کبھی ختم نہ ہوگا ۔ اگر ہمیں اپنے مذہب سے محبت
ہے تو ہم اپنے یہاں کے غیر مسلموں کو زیادہ سے زیادہ سکھی رکھکر ہی
مذہب کا نام اونچا کر سکتے ہیں ۔ ایسا کرنے سے ہی ہمارے دیس
کا نام بھی اونچا ہو گا ۔ اب آپ لوگ بتائیے کہ آپ نے کیا فیصلہ
کیا ۔ کیا گاؤں میں دنگا ہونا اچھا ہے ؟''

''نہیں !'' سب لوگوں نے کہا ۔

''کیا آپ اپنے دیس میں ہندؤوں کو نقصان پہنچانا پسند
کرینگے ؟''

माताजी को और उसके साथ ही उसकी नज़र जब रहमान और हबीब पर पड़ी तब वह चौंक कर उठ बैठी. शील उसे संभालती ही रही पर वह एकदम उठ कर खड़ी हो गई.

उसे देख कर उसके पिता के चेहरे पर ख़ुशी दौड़ गई और श्याम बाबू उसके पास पहुँच कर बोले—"बेटा, तुम आराम करो. तुम्हें बहुत चोट आ गई है."

हबीब ने भी कहा—"तुम लेट जाओ रशीदा. अब तुम्हारे खड़े रहने की ज़रूरत नहीं."

रशीदा की समझ में कुछ न आया. उसने कहा—"श्याम चाचा को बचाओ."

हबीब ने कहा—"हम लोगों ने तय कर लिया है कि गाँव में दंगा न होने देंगे. मैंने श्याम चाचा से माफ़ी माँग ली है."

रशीदा ने भीड़ पर निगाह डाली तो सब लोग फिर चिल्लाए—"हम गाँव में दंगा न होने देंगे."

यह सुनकर रशीदा के चेहरे पर पहले संतोश की एक लहर दौड़ती दिखाई दी फिर उसके होटों पर मुस्कराहट आई लेकिन तुरन्त ही वह गंभीर हो कर बोली—"अगर आपने किसी वक़्ती (क्षनिक) जोश में आकर यह फ़ैसला किया है कि आप गाँव में दंगे की आग भड़कने न देंगे तो मैं इसे काफ़ी नहीं समझती." फिर वह ज़रा रुकी और शील के कन्धों का सहारा लेकर बोली—"हमें ठंडे दिल से

کی آنکھ کھل گئی . اُسنے ایک بار شیل کو دیکھا پھر سیں کی ماتا جی کو اور اُسکے ساتھ ھی اُسکی نظر جب رحمان اور حبیب پر پڑی تب وہ چونک کر اُٹھ بیٹھی . شیل اُسے سنبھالتی ھی رھی پر وہ ایک دم اُٹھکر کھڑی ھو گئی .

اُسے دیکھکر اُسکے پتا کے چہرے پر خوشی دوڑ گئی اور شیام بابو اُسکے پاس پہانچ کر بولے—"بیٹا، تم آرام کرو . تمھیں بہت چوٹ آگئی ھے ."

حبیب نے بھی کہا—"تم لیٹ جاؤ رشیدہ . اب تمہارے کھڑے رھنے کی ضرورت نہیں ."

رشیدہ کی سمجھ میں کچھ نہ آیا . اُسنے کہا—"شیام چاچا کو بچاؤ ."

حبیب نے کہا—"ہم لوگوں نے طے کر لیا ھے کہ گاؤں میں دنگا نہ ھونے دینگے . میں نے شیام چاچا سے معافی مانگ لی ھے ."

رشیدہ نے بھیڑ پر نگاہ ڈالی تو سب لوگ پھر چلائے—"ھم گاؤں میں دنگا نہ ھونے دینگے ."

یہ سنکر رشیدہ کے چہرے پر پہلے سنتوش کی ایک لہر دوڑتی دکھائی دی پھر اُسکے ھونٹوں پر مسکراھٹ آئی لیکن ترنت ھی وہ گمبھیر ھو کر بولی—"اگر آپ نے کسی وقتی (چھنک) جوش میں آکر یہ فیصلہ کیا ھے کہ آپ گاؤں میں دنگے کی آگ بھڑکنے نہ دینگے تو میں اِسے کافی نہیں سمجھتی ." پھر وہ ذرا رکی اور شیل کے کندھوں کا سہارا لیکر بولی—"ھمیں ٹھنڈے دل سے

पर शरमिन्दगी के भाव देख कर बड़ा अचरज हुआ और जब वह श्याम बाबू की तरफ़ बढ़ा तब तो सब को और भी हैरानी हुई. उसके चेहरे का भाव बता रहा था कि वह रशीदा को घायल करने पर लज्जित है पर उसके हाथ का छुरा और उसकी चाल की अकड़ देख कर यह साफ़ प्रकट हो रहा था कि वह श्याम बाबू और उनके कुटुम्ब का जीवन दीप बुझाने जा रहा है. सब लोग बड़ी बेचैनी से यह दृश्य देख रहे थे. जब वह छुरा हाथ में लिये हुए श्याम बाबू के पास पहुँचा तो हबीब ने उसे रोक कर कहा—" क्या करते हो रहमान ! तुम श्याम चाचा को नहीं मार सकते."

पर रहमान ने हबीब को झटका देकर अलग कर दिया. फिर वह श्याम बाबू के पास पहुँचा, रशीदा को ध्यान से देखा और फिर अपना छुरा जमीन में फेंक कर बोला— "चाचा, मुझे माफ़ कर दो." रहमान की आवाज भर्रा गई थी और उसकी आँखों में आँसू भर आए थे.

हबीब ने यह देख कर बढ़ कर रहमान को छाती से लगा लिया और भीड़ की ओर देख कर बोला—" जब रहमान भी श्याम चाचा से माफ़ी माँग रहा है तब मेरे विचार में आप में से कोई भी यह न चाहता होगा कि श्याम चाचा को हमारी ओर से कोई कश्ट पहुँचे आप लोग क्या कहते हैं ?"

सब लोगों ने एक स्वर में कहा—"हम चाहते हैं कि श्याम बाबू हमारे साथ रहें और उन्हें कोई कश्ट न हो."

پر شرمندگی کے بهاؤ دیکهکر بڑا اچرج هوا اور جب وہ شیام بابو کی طرف بڑها تب تو سب کو اور بهی حیرانی هوئی . اُسکے چهرے کا بهاؤ بتا رها تها کہ وہ رشیدہ کو گهائل کرنے پر لجت هے پر اُسکے هاته کا چهرا اور اُسکی چال کی اکڑ دیکهکر یہ صاف پرکٹ هو رها تها کہ وہ شیام بابو اور اُنکے کٹمب کا جیون دیپ بجهانے جا رها هے . سب لوگ بڑی بیچینی سے یہ درشیہ دیکه رهے تهے . جب وہ چهرا هاته میں لئے هوئے شیام بابو کے پاس پہنچا تو حبیب نے اُسے روک کر کہا—"کیا کرتے هو رحمان ! تم شیام چاچا کو نہیں مار سکتے ."

پر رحمان نے حبیب کو جهٹکا دیکر الگ کر دیا . پهر وہ شیام بابو کے پاس پہنچا' رشیدہ کو دهیان سے دیکها اور پهر اپنا چهرا زمین میں پهینک کر بولا—"چاچا' مجهے معاف کردو." رحمان کی آواز بهرا گئی تهی اور اُس کی آنکهوں میں آنسو بهر آئے تهے .

حبیب نے یہ دیکهکر بڑهکر رحمان کو چهاتی سے لگا لیا اور بهیڑ کی اور دیکهکر بولا—"جب رحمان بهی شیام چاچا سے معافی مانگ رها هے تب میرے وچار میں آپ میں سے کوئی بهی یہ نہ چاهتا هوگا کہ شیام چاچا کو هماری اور سے کوئی کشٹ پہنچے . آپ لوگ کیا کہتے هیں ؟"

سب لوگوں نے ایک سور میں کہا—"هم چاهتے هیں کہ شیام بابو همارے ساته رهیں اور اُنهیں کوئی کشٹ نہ هو."

आत्मा को अधिक शान्ति मिलेगी.''

लोगों ने बड़े अचरज के साथ देखा कि श्याम बाबू अपनी पत्नी और लड़की के साथ उनके सामने खड़े हैं. उनके चेहरे पर ज़रा भी डर या घबराहट की झलक नहीं है. उनकी बूढ़ी पत्नी और शीला ने झुक कर रशीदा को संभाल लिया. हबीब उठ कर खड़ा हो गया और बोला—" चाचा, मुझ से भूल हुई. मैं अन्धा हो गया था. मुझे माफ़ कर दीजिये."

श्याम बाबू बोले—"नहीं बेटा, मैं यह नहीं चाहता कि हमारे कारन तुम पर कोई संकट आए या गाँव की एकता भंग हो. अभी कल तक मैं भी अपने को इस गाँव का वासी समझता था. पाकिस्तान को अपना देस मान लिया था और हिन्दू सभा वालों के कहने पर भी मैंने अपनी जन्म भूमि को छोड़ना मंज़ूर नहीं किया. पर आज मालूम हुआ कि यह मेरी भूल थी. अगर दो चार दिन में सदियों का संबंध टूट सकता है तो मैं ख़ुद ऐसी दुनिया में रहना पसन्द नहीं करता. अगर तुम नहीं मार सकते तो मैं अपने गाँव के सब से बहादुर मुसलमान को बुलाता हूं जिसने अपनी समझ में रशीदा की जान ही ले ली थी. आओ बेटा रहमान, मैं खड़ा हूँ. तुम मुझे मार सकते हो. कल तक तुम जिसको अपनी चाची कहते थे उसकी हत्या कर सकते हो और अपनी बहन के ख़ून में भी हाथ रंग सकते हो. आओ! भाइयो, रास्ता छोड़दो और रहमान को आने दो."

सब की निगाह एक दम रहमान की तरफ़ उठ गई पर रहमान की निगाह ज़मीन पर गड़ गई थी. लोगों को रहमान के कठोर चेहरे

ہماری آتما کو ادھک شانتی ملے گی."

لوگوں نے بڑے اچرج کے ساتھ دیکھا کہ شیام بابو اپنی پتنی اور لڑکی کے ساتھ اُن کے سامنے کھڑے ہیں. اُنکے چہرے پر ذرا بھی ڈر یا گھبراہٹ کی جھلک نہیں ہے. اُنکی بوڑھی پتنی اور شیلا نے جھک کر رشیدہ کو سنبھال لیا. حبیب اُٹھکر کھڑا ہو گیا اور بولا —"چاچا مجھ سے بھول ہوئی. میں اندھا ہو گیا تھا. مجھے معاف کر دیجئے."

شیام بابو بولے—"نہیں بیٹا' میں یہ نہیں چاہتا کہ ہمارے کارن تمپر کوئی سنکٹ آئے یا گاؤں کی ایکتا بھنگ ہو. ابھی کل تک میں بھی اپنے کو اس گاؤں کا باسی سمجھتا تھا' پاکستان کو اپنا دیس مان لیا تھا اور ہندو سبھا والوں کے کہنے پر بھی میں نے اپنی جنم بھومی کو چھوڑنا منظور نہیں کیا. پر آج معلوم ہوا کہ یہ میری بھول تھی. اگر دو چار دن میں صدیوں کا سمبندھ ٹوٹ سکتا ہے تو میں خود ایسی دنیا میں رہنا پسند نہیں کرتا. اگر تم نہیں مار سکتے تو میں اپنے گاؤں کے سب سے بہادر مسلمان کو بلاتا ہوں جس نے اپنی سمجھ میں رشیدہ کی جان ہی لے لی تھی. آؤ بیٹا رحمان' میں کھڑا ہوں. تم مجھے مار سکتے ہو. کل تک تم جسکو اپنی چاچی کہتے تھے اُسکی ہتیا کر سکتے ہو اور اپنی بہن کے خون میں بھی ہاتھ رنگ سکتے ہو. آؤ! بھائیو' راستہ چھوڑ دو اور رحمان کو آنے دو."

سبکی نگاہ ایک دم رحمان کی طرف اُٹھ گئی پر رحمان کی نگاہ زمین پر گڑ گئی تھی. لوگوں کو رحمان کے کٹھور چہرے

रशीदा को गिरते देख कर उसके पिता तुरन्त उसे संभालने को झपटे पर उनसे भी पहले हबीब पहुँच गया और रशीदा के सर को अपने हाथों पर रख कर बैठ गया. रशीदा के माथे से खून बह रहा था. हबीब का सारा ग़ुस्सा उसके ताज़े खून के साथ जैसे बह गया. जो काम रशीदा की बातें न कर सकी थीं वह उसकी बेहोशी और ख़ामोशी ने किया. हबीब की आँखों में आँसू भर आए. उसने एक निगाह रशीदा के सुन्दर मुखड़े पर डाली और फिर भीड़ की तरफ़ देखते हुए बोला—"यह ठीक कह रही थी. हम सब ग़लती पर थे."

"तुम अब ग़लती पर हो." भीड़ में से रहमान बड़बड़ाया—"तुम से उसकी सगाई हो चुकी है इसलिये तुम उसका साथ दे रहे हो. भाइयो, क्या देखते हो. लगा दो घर में आग."

पर रहमान की बात पर किसी भाई ने ध्यान न दिया. सब वैसे ही चुप चाप खड़े रशीदा के गिरे हुए बेहोश शरीर को देखते रहे.

रहमान फिर चिल्लाया—"तुम सब को क्या हो गया है. क्या देख रहे हो. लेलो कलकत्ते का बदला. लगा दो घर में आग."

"आग लगाने की ज़रूरत नहीं भाइयो मैं हाज़िर हूं, मेरी पत्नी और मेरी लड़की भी हाज़िर है. तुम अगर हमें मार कर अपना जी ठंडा करना चाहते हो तो उठाओ अपनी तलवारें. मुझे नहीं पता था कि तुम हमारे ऐसे दुशमन बन जाओगे कि अपने ही धर्म की एक अबला पर हाथ उठाने में भी लाज न आएगी. मुझे दुख है कि हमारे

رشیدہ کو گرتے دیکھکر اُسکے پتا ترنت اُسے سنبھالنے کو جھپٹے پر اُن سے بھی پہلے حبیب پہنچ گیا اور رشیدہ کے سر کو اپنے ہاتھوں پر رکھکر بیٹھ گیا۔ رشیدہ کے ماتھے سے خون بہ رہا تھا۔ حبیب کا سارا غصہ اُسکے تازے خون کے ساتھ جیسے بہ گیا۔ جو کام رشیدہ کی باتیں نہ کر سکی تھیں وہ اُس کی بیہوشی اور خاموشی نے کیا۔ حبیب کی آنکھوں میں آنسو بھر آئے۔ اُس نے ایک نگاہ رشیدہ کے سندر مکھڑے پر ڈالی اور پھر بھیڑ کی طرف دیکھتے ہوئے بولا—" یہ ٹھیک کہ رہی تھی۔ ہم سب غلطی پر تھے۔"

" تم اب غلطی پر ہو۔" بھیڑ میں سے رحمان بڑبڑایا—" تم سے اُسکی سگائی ہوچکی ہے اِسلئے تم اُس کا ساتھ دے رہے ہو۔ بھائیو، کیا دیکھتے ہو لگا دو گھر میں آگ۔"

پر رحمان کی بات پر کسی بھائی نے دھیان نہ دیا۔ سب ویسے ہی چپ چاپ کھڑے رشیدہ کے گرے ہوئے بیہوش شریر کو دیکھتے رہے۔

رحمان پھر چلایا—" تم سبکو کیا ہوگیا ہے۔ کیا دیکھ رہے ہو۔ لے لو کلکتے کا بدلہ۔ لگا دو گھر میں آگ۔"

"آگ لگانے کی ضرورت نہیں بھائیو۔ میں حاضر ہوں، میری پتنی اور میری لڑکی بھی حاضر ہے۔ تم اگر ہمیں مار کر اپنا جی ٹھنڈا کرنا چاہتے ہو تو اُٹھاؤ اپنی تلواریں۔ مجھے نہیں پتہ تھا کہ تم ہمارے ایسے دشمن بن جاؤ گے کہ اپنے ہی دھرم کی ایک ابلا پر ہاتھ اُٹھانے میں بھی لاج نہ آئیگی۔ مجھے دکھ ہے کہ ہمارے کارن ہماری بیٹی رشیدہ کو چوٹ آگئی۔ بھیا حبیب، تم ا

बेटी की बातें सुनकर उनका हृदय गद गद हो उठा था. हबीब भी अपनी होने वाली जीवन संगिनी की बातें सुनकर अपने मन में खुश हो रहा था मगर एक झूटा घमंड उसे उसकी बातें मानने के खिलाफ़ उकसा रहा था. वह पुरुश था और इसलिये औरत के सामने हार मान लना वह अपनी मर्दानगी का अपमान समझता था. भीड़ के लोगों में सीधे सादे मुसलमान भी थे और कुछ ऐसे लोग भी थे जो इस मौक़े से लाभ उठाकर लूट मार करके अपना घर भर लेना चाहते थे. पहली तरह के मुसलमानों पर रशीदा की सीधी सच्ची बातों का पूरा असर हुआ. उनमें से बहुतों को श्याम बाबू के वह एहसान याद आए जो उन्होंने गाढ़े वक़्त पर किये थे. उन्होंने यह भी सोचा कि इस्लाम की तालीम पाते वक़्त उन्होंने कभी यह नहीं पढ़ा कि अपने पड़ोसियों को मारना चाहिये. उनके दिमाग़ ठन्डे पड़ने लगे, उनके दिल का जोश सर्द पड़ने लगा मगर वह लोग जो श्याम बाबू का घर लूटने के लालच में भीड़ के साथ हो गए थे उनके दिल और दिमाग़ पर रशीदा की बातों का कोई असर नहीं हुआ. ऐसे ही लोगों में गाँव का मशहूर बदमाश रहमान भी था. यह देखकर कि रशीदा ने अपनी बात जारी रक्खी तो दंगे की आग बुझ जाएगी और हो सकता है कि यहां कि शान्ति बढ़कर सारे गाँव और ज़िले में फैल जाए, उसने एक बड़ा सा पत्थर उठाकर रशीदा पर फेंका. निशाना सही लगा और पत्थर रशीदा के सिर पर पड़ा. बहुत कोशिश करने पर भी रशीदा न सँभल सकी. उसका सर चकरा गया, बन्दूक़ हाथ से छूट गई और वह ज़मीन पर गिर पड़ी.

رهی هے ۔ اسکے پتا پہلے تو سنکر ...

بیٹی کی باتیں سنکر اُن کا هردے گد گد هو اُٹھا تھا حبیب بھی اپنی هونے والی جیون سنگنی کی باتیں سنکر اپنے من میں خوش هو رها تھا مگر ایک جھوٹا گھمنڈ اُسے اُسکی باتیں ماننے کے خلاف اُکسا رها تھا ۔ وہ پرش تھا اور اِس لئے عورت کے سامنے هار مان لینا وہ اپنی مردانگی کا اپمان سمجھتا تھا ۔ بھیڑ کے لوگوں میں سیدھے سادے مسلمان بھی تھے اور کچھ ایسے لوگ بھی تھے جو اِس موقع سے لابھ اُٹھا کر لوٹ مار کرکے اپنا گھر بھر لینا چاہتے تھے ۔ پہلی طرح کے مسلمانوں پر رشیدہ کی سیدھی سچی باتوں کا پورا اثر هوا ۔ اُن میں سے بہتوں کو شیام بابو کے وہ احسان یاد آئے جو اُنھوں نے گاڑھے وقت پر کئے تھے ۔ اُنھوں نے یہ بھی سوچا کہ اسلام کی تعلیم پاتے وقت اُنھوں نے کبھی یہ نہیں پڑھا کہ 'اپنے پڑوسیوں کو مارنا چاهئے ۔ اُن کے دماغ ٹھنڈے پڑنے لگے' اُن کے دل کا جوش سرد پڑنے لگا مگر وہ لوگ جو شیام بابو کا گھر لوٹنے کے لالچ میں بھیڑ کے ساتھ هوگئے تھے اُنکے دل اور دماغ پر رشیدہ کی باتوں کا کوئی اثر نہیں هوا ۔ ایسے هی لوگوں میں گاؤں کا مشہور بدمعاش رحمان بھی تھا ۔ یہ دیکھکر کہ رشیدہ نے اپنی بات جاری رکھی تو دنگے کی آگ بجھ جائیگی اور هوسکتا هے کہ یہاں کی شانتی بڑھکر سارے گاؤں اور ضلع میں پھیل جائے' اُس نے ایک بڑا سا پتھر اُٹھا کر رشیدہ پر پھینکا ۔ نشانہ صحیح لگا اور پتھر رشیدہ کے سر پر پڑا ۔ بہت کوشش کرنے پر بھی رشیدہ نہ سنبھل سکی ۔ اُسکا سر چکرا گیا' بندوق هاتھ سے چھوٹ گئی اور وہ زمین

साथ रिआयत न करूँगी चाहे वह कोई हो. कोई यह न समझे कि मैं किसी रिशते नाते का ख़याल करूँगी. मैं साफ़ कहती हूं कि अगर किसी को हिन्दुओं पर इसलिये ग़ुस्सा है कि वह भारत में मुसलमानों को सता रहे हैं तो वह भारत जाकर उनसे लड़े. यह कहना झूट है कि भारत में मुसलमानों के लिये ज़मीन तंग हो चुकी है. आप लोगों को भूलना नहीं चाहिये कि मुसलमानों की जान बचाने के लिये ही भारत के सब से बड़े नेता महात्मा गांधी ने अपनी जान की भेंट देदी. आज भी वहाँ पंडित नेहरू और सरदार पटेल बार बार कह रहे हैं कि भारत हिन्दू राज नहीं बन सकता. और फिर अगर वहाँ के हिन्दू कोई बुराई करते हैं तो इसके माने यह कब हुए कि हम भी वही ग़लती करें. क्या हमारे पैग़म्बर ने अपने प्यार से दुशमनों को दोस्त नहीं बनाया ? आख़िर आप क्यों अपने मज़हब के नाम पर कलंक लगाने को यों तैयार हैं ? क्यों आप क़ुरान और हदीस की तालीम को कुछ बहकाने वालों के फंदे में फँसकर पैरों तले रौंदना चाहते हैं ? बोलिये, जवाब दीजिये. आप मुझे दलील से क़ायल कर दीजिये, मैं क़ायल हो गई तो आप से पहले श्याम चाचा के ख़ून में हाथ रंग लूँगी. बताइये अल्लाह या उसके रसूल ने अपने पड़ोसी की जान लेने का कहाँ हुक्म दिया है ?”

रशीदा परदे में रहने वाली लड़की थी, उसने बहुत ज़्यादा शिक्षा भी न पाई थी और ग़ैर मर्दों के सामने तो कभी खुल कर बात भी न की थी. पर उस समय उसकी बातें सुनकर सभी दंग

ساتھ رعایت نہ کرونگی چاہے وہ کوئی ہو. کوئی یہ نہ سمجھے کہ میں کسی رشتے ناتے کا خیال کرونگی. میں صاف کہتی ہوں کہ اگر کسیکو ہندوؤں پر اس لئے غصہ ہے کہ وہ بھارت میں مسلمانوں کو ستا رہے ہیں تو وہ بھارت جا کر اُن سے لڑے . یہ کہنا جھوٹ ہے کہ بھارت میں مسلمانوں کے لئے زمین تنگ ہوچکی ہے . آپ لوگوں کو بھولنا نہیں چاہئے کہ مسلمانوں کی جان بچانے کے لئے ہی بھارت کے سب سے بڑے نیتا مہاتما گاندھی نے اپنی جان کی بھینٹ دیدی . آج بھی وہاں پنڈت نہرو اور سردار پٹیل بار بار کہہ رہے ہیں کہ بھارت ہندو راج نہیں بن سکتا . اور پھر اگر وہاں کے ہندو کوئی برائی کرتے ہیں تو اِس کے معنی یہ کب ہوئے کہ ہم بھی وہی غلطی کریں . کیا ہمارے پیغمبر نے اپنے پیار سے دشمنوں کو دوست نہیں بنایا ؟ آخر آپ کیوں اپنے مذہب کے نام پر کلنک لگانے کو یوں تیار ہیں ؟ کیوں آپ قرآن اور حدیث کی تعلیم کو کچھ بہکانے والوں کے پھندے میں پھنس کر پیروں تلے روندنا چاہتے ہیں ؟ بولئے، جواب دیجئے . آپ مجھے دلیل سے قائل کر دیجئے. میں قائل ہوگئی تو آپ سے پہلے شیام چاچا کے خون میں ہاتھ رنگ لونگی . بتایئے اللہ یا اس کے رسول نے اپنے پڑوسی کی جان لینے کا کہاں حکم دیا ہے ؟“

رشیدہ پردے میں رہنے والی لڑکی تھی، اُس نے بہت زیادہ شکشا بھی نہ پائی تھی اور غیر مردوں کے سامنے تو کبھی کھل کر بات بھی نہ کی تھی. پر اُس سمے اُسکی باتیں سنکر سبھی دنگ تھے کہ یہ اتنے سلجھے ہوئے ڈھنگ سے نیتاؤں کی طرح بھاشن کیسے د...

... मुस्करा कर उस से कहा कि मैं तुम्हें ही याद कर रहा था भाई, तुम अपनी तलवार भूल गए थे, वह वहीं रक्खी है जहाँ तुमने रक्खी थी. यह है वह मिसाल जो मेरे सामने है. आप उन्हीं हज़रत को अपना रसूल मानते हैं और उनके क़दमों पर चलने से कतराते हैं. आप ठंडे दिल से सोचिये कि श्याम चाचा, उनकी बूढ़ी घर वाली और उनकी मासूम लड़की ने आप का क्या बिगाड़ा है. क्या कभी उन्होंने गाँव के ख़िलाफ़ कोई काम किया है ? क्या गाँव का स्कूल श्याम चाचा की ही कोशिशों का फल नहीं है ? क्या उन्होंने वह स्कूल सिर्फ़ हिन्दुओं के लिये खुलवाया था ? क्या बाड़ी के हर मुसलमान पर उनका कोई न कोई एहसान नहीं है ? क्या......?"

"बन्द करो अपना लेक्चर ! हम कुछ सुनना नहीं चाहते, तुम्हें क्या पता कि कलकत्ते में किस तरह मुसलमान मारे जा रहे हैं, भारत की ज़मीन मुसलमानों पर तंग हो चुकी है. उन्हें मारते वक़्त कोई हिन्दू यह नहीं देखता कि यह बूढ़ा है या जवान, मर्द है या औरत या बच्चा. तुम रास्ता छोड़ दो. नहीं तो मुझे ज़बरदस्ती तुम्हें हटाना पड़ेगा." हबीब पूरे जोश से चिल्ला कर बोला.

रशीदा की बातों से भीड़ का जोश जितना ठंडा पड़ा था, हबीब की बात से उतना ही बढ़ गया. भीड़ ने कहा—"रास्ता छोड़ दो, नहीं हम आग लगादेंगे."

रशीदा ने बन्दूक़ को और मज़बूती से पकड़ लिया और कड़क कर बोली—"ख़बरदार जो किसी ने आगे क़दम बढ़ाया. मैं किसी के

چہرہ پر کوئی نفرت تھی نہ کڑواهٹ بلکہ انھوں نے مسکرا کر اس سے کہا کہ میں تمھیں ھی یاد کر رھا تھا بھائی' تم اپنی تلوار بھول گئے تھے' وہ وھیں رکھی ھے جہاں تم نے رکھی تھی . یہ ھے وہ مثال جو میرے سامنے ھے . آپ اُنھیں حضرت کو اپنا رسول مانتے ھیں اور اُنکے قدموں پر چلنے سے کتراتے ھیں . آپ ٹھنڈے دل سے سوچئے کہ شیام چاچا' اُنکی بوڑھی گھر والی اور اُن کی معصوم لڑکی نے آپ کا کیا بگاڑا ھے . کیا کبھی اُنھوں نے گاؤں کے خلاف کوئی کام کیا ھے ؟ کیا گاؤں کا اسکول شیام چاچا کی ھی کوششوں کا پھل نہیں ھے ؟ کیا اُنھوں نے وہ اسکول صرف ھندؤوں کے لئے کھلوایا تھا ؟ کیا باڑی کے ھر مسلمان پر اُنکا کوئی نہ کوئی احسان نہیں ھے ؟ کیا............؟"

"بند کرو اپنا لیکچر ! ھم کچھ سننا نہیں چاھتے' تمہیں کیا پتہ کہ کلکتے میں کس طرح مسلمان مارے جارھے ھیں' بھارت کی زمین مسلمانوں پر تنگ ھوچکی ھے . اُنھیں مارتے وقت کوئی ھندو یہ نہیں دیکھتا کہ یہ بوڑھا ھے یا جوان' مرد ھے یا عورت یا بچہ . تم راستہ چھوڑ دو . نہیں تو مجھے زبردستی تمہیں ھٹانا پڑیگا ." حبیب پورے جوش سے چلا کر بولا .

رشیدہ کی باتوں سے بھیڑ کا جوش جتنا ٹھنڈا پڑا تھا' حبیب کی بات سے اُتنا ھی بڑھ گیا . بھیڑ نے کہا—" راستہ چھوڑ دو' نہیں ھم آگ لگا دینگے ."

رشیدہ نے بندوق کو اور مضبوطی سے پکڑ لیا اور کڑک کر بولی — " خبردار جو کسی نے آگے قدم بڑھایا . میں کسی کے

सामने आ गया और कड़क कर बोला—"आप अपनी बेटी को मना कीजिये, नहीं तो हम आप के घर में आग लगा देंगे."

इसके पहले कि रशीदा के बाप कुछ जवाब देते, रशीदा ने खुद ही कड़क कर कहा—"यह कहते हुए आप को शर्म तो नहीं आती होगी. दर असल आप ही जैसे बहादुर इसलाम और पाकिस्तान के नाम को रोशन करने वाले हैं. वाह क्या शानदार कारनामा होगा आप का और आप के इन साथियों का कि आप एक मुसलमान के घर में सिर्फ़ इसलिये आग लगाएँगे कि उसमें तीन ऐसे इन्सानों ने पनाह ले रक्खी है जिन के पूजा करने का ढंग आप से जुदा है, जो अल्लाह को ईश्वर कहते हैं. बताइये तो इसके सिवा उनका क्या क़सूर है? आप आग लगाना चाहते हैं, शौक़ से लगाइये, आप अपने पड़ोसियों की जान लेना इसलाम की सेवा समझते हैं और मैं पैग़म्बरे इसलाम की उस सीख पर चलना चाहती हूँ कि अगर घर में शरन लेने वाला मेरे साथ दुशमनी भी करे तब भी मैं अपना फ़र्ज़ न भूलूँगी. आप को याद नहीं कि एक बार हज़रत (मुहम्मद साहब) के पास एक यहूदी आया और कहा कि मैं रात को ठहरना चाहता हूं. हज़रत ने यह जानते हुए भी कि यहूदी उनकी जान के दुशमन हैं, उसे अपने यहाँ जगह दी. यहूदी का पेट ख़राब था. रात को उसने हज़रत का बिस्तर भी गन्दा कर दिया और यह सोच कर कि सुबह हज़रत उस पर नाराज़ न हों, वह सुबह होने से पहले ही वहाँ से भाग गया. जल्दी में उसकी तलवार छूट गई थी. दिन चढ़े वह अपनी तलवार लेने के लिये जब आया तो उसने देखा कि हज़रत उसके गन्दे किये हुए बिछौने को अपने हाथों से धो रहे हैं

سامنے آگیا اور کڑک کر بولا—"آپ اپنی بیٹی کو منع کیجئے نہیں تو ہم آپ کے گھر میں آگ لگا دینگے."

اس کے پہلے کہ رشیدہ کے باپ کچھ جواب دیتے، رشیدہ نے خود ہی کڑک کر کہا—"یہ کہتے ہوئے آپ کو شرم تو نہیں آتی ہوگی. در اصل آپ ہی جیسے بہادر اسلام اور پاکستان کے نام کو روشن کرنے والے ہیں. واہ کیا شاندار کارنامہ ہوگا آپ کا اور آپ کے ان ساتھیوں کا کہ آپ ایک مسلمان کے گھر میں صرف اسلئے آگ لگائینگے کہ اس میں تین ایسے انسانوں نے پناہ لے رکھی ہے جن کے پوجا کرنے کا ڈھنگ آپسے جدا ہے، جو اللہ کو ایشور کہتے ہیں. بتائیے تو اسکے سوا ان کا کیا قصور ہے؟ آپ آگ لگانا چاہتے ہیں، شوق سے لگائیے، آپ اپنے پڑوسیوں کی جان لینا اسلام کی سیوا سمجھتے ہیں اور میں پیغمبر اسلام کی اُس سیکھ پر چلنا چاہتی ہوں کہ اگر گھر میں شرن لینے والا میرے ساتھ دشمنی بھی کرے تب بھی میں اپنا فرض نہ بھولونگی. آپکو یاد نہیں کہ ایک بار حضرت (محمد صاحب) کے پاس ایک یہودی آیا اور کہا کہ میں رات کو ٹھہرنا چاہتا ہوں. حضرت نے یہ جانتے ہوئے بھی کہ یہودی اُن کی جان کے دشمن ہیں، اُسے اپنے یہاں جگہ دی. یہودی کا پیٹ خراب تھا. رات کو اُس نے حضرت کا بستر بھی گندا کر دیا اور یہ سوچ کر کہ صبح حضرت اُس پر ناراض نہ ہوں، وہ صبح ہونے سے پہلے ہی وہاں سے بھاگ گیا. جلدی میں اُسکی تلوار چھوٹ گئی تھی. دن چڑھے وہ اپنی تلوار لینے کے لئے جب آیا تو اُسنے دیکھا کہ حضرت اُسکے گندے کئے ہوئے بچھونے کو اپنے ہاتھوں سے دھو رہے ہیں

दरवाज़ का लोग धक्का देने लगे. टीन की दीवार में टीन का दरवाज़ा कितनी देर ठहरता. आख़िर दरवाज़ा निकल गया. मगर टीन के उस दरवाज़े के बाद एक और दरवाज़ा था. यह दरवाज़ा उतना कमज़ोर न था कि कुछ लोगों के धक्के देने से टूट सकता. यह दरवाज़ा जानदार था. रशीदा के बाप और मज़हबी दीवानों ने देखा कि रशीदा हाथ में बन्दूक़ लिये खड़ी है. कुछ देर तो लोग एक दम भौंचक्के होकर रशीदा को देखते रहे जो बन्दूक़ ताने बिल-कुल सिपाही सी दिखाई दे रही थी. आख़िर रशीदा के बाप ने कहा--"यह क्या बचपना है बेटी, बताओ श्याम और उसके घर वाले कहाँ हैं ?"

रशीदा ने कहा—"मैं नहीं जानती."

एकाएक भीड़ में से हबीब सामने आ गया और बोला--"झूट क्यों बोलती हो, यह क्यों नहीं कहतीं कि उन्हें घर में छिपा रक्खा है."

फिर कई आदमी चिल्लाए—"हम जवाब चाहते हैं"

रशीदा का चेहरा ग़ुस्से से लाल हो गया. उसने बन्दूक़ की नाल भीड़ की तरफ़ तान कर कहा--"जवाब मैं दूंगी, मगर आप लोग पीछे हट जाइये."

"हम नहीं हटेंगे." भीड़ चीख़ी. इस बार हबीब की आवाज़ भी उसमें मिली थी. फिर हबीब आगे बढ़ कर रशीदा के बाप के

لوگ دھکا دینے لگے . ٹین کی دیوار میں ٹین کا دروازہ کتنی دیر ٹھہرتا . آخر دروازہ نکل گیا . مگر ٹین کے اُس دروازے کے بعد ایک اور دروازہ تھا . یہ دروازہ اُتنا کمزور نہ تھا کہ کچھ لوگوں کے دھکے دینے سے ٹوٹ سکتا . یہ دروازہ جاندار تھا . رشیدہ کے باپ اور مذہبی دیوانوں نے دیکھا کہ رشیدہ ہاتھ میں بندوق لئے کھڑی ہے . کچھ دیر تو لوگ ایک دم بھونچکے ہو کر رشیدہ کو دیکھتے رہے جو بندوق تانے بالکل سپاہی سی دکھائی دے رہی تھی . آخر رشیدہ کے باپ نے کہا—''یہ کیا بچپنا ہے بیٹی' بتاؤ شیام اور اُس کے گھر والے کہاں ہیں ؟''

رشیدہ نے کہا—''میں نہیں جانتی .''

یکایک بھیڑ میں سے حبیب سامنے آگیا اور بولا—''جھوٹ کیوں بولتی ہو' یہ کیوں نہیں کہتیں کہ اُنہیں گھر میں چھپا رکھا ہے .''

پھر کئی آدمی چلائے—''ہم جواب چاہتے ہیں .''

رشیدہ کا چہرہ غصے سے لال ہو گیا . اس نے بندوق کی نال بھیڑ کی طرف تان کر کہا—''جواب میں دونگی' مگر آپ لوگ پیچھے ہٹ جائیے .''

''ہم نہیں ہٹیں گے .' بھیڑ چیخی . اس بار حبیب کی آواز بھی اُس میں ملی تھی . پھر حبیب آگے بڑھ کر رشیدہ کے باپ کے

जाओ. नहीं तो मुझ से बुरा कोई न होगा !" और यह कह कर रशीदा लम्बे क़दम नापती अपने घर आ गई. शील के परिवार को पिछले दरवाज़े से अपने कमरे में बुला कर दरवाज़ा बन्द करदिया और खुद पिता के कमरे से बन्दूक़ उठा, उसमें गोली भर कर एक सैनिक की तरह द्वार पर आ डटी. वह भीड़ का इन्तज़ार कर रही थी कि आवज़ आई—"काफ़िर भाग गए."

आवाज़ तेज़ होती गई. शोर बढ़ता गया और धीरे धीरे रशीदा के घर के निकट भी आ गया. रशीदा सचेत हुई. उसने बन्दूक उठा ली और दरवाज़े की ओर कान लगा कर खड़ी हो रही.

"आप अपनी बेटी को मना लें. नहीं तो आप भी काफ़िर क़रार दिये जाएंगे." एकाएक आवाज़ आई.

यह आवाज़ हबीब की थी. लेकिन रशीदा डरी नहीं वह निर्भिकता से अपने पिता के आने का इन्तज़ार करने लगी.

अचानक उसके पिता ने दालान के दरवाज़े के पास आ कर पुकारा—"रशीदा ! रशीदा ! दरवाज़ा खोलो."

"रशीदा दरवाज़ा नहीं खोल सकती अब्बा ! आप जो कुछ कहना चाहते हों, वहीं से कहिये. मैं सब सुन रही हूँ."

"अरे तमाम लोग खड़े हैं. अगर दरवाज़ा न खोलेगी तो मेरी जान आफ़त में पड़ जायगी."

"अब्बा ! आप मेरे अब्बा हैं ! और इन लोगों में भी जाने कितने अब्बा और भाई हैं, लेकिन इन्सानियत पर ख़ंजर उठाने वालों [illegible]

جاؤ . نهیں تو مجھ سے برا کوئی نه هوگا ! " اور یه کهکر رشیده لمبے قدم ناپتی اپنے گھر آ گئی . شیل کے پریوار کو پچھلے دروازے سے اپنے کمرے میں بلا کر دروازہ بند کر دیا اور خود پتا کے کمرے سے بندوق اُٹھا' اسمیں گولی بھر کر ایک سینک کی طرح دوار پر اُڈتی . وہ بھیڑ کا انتظار کر رهی تھی که آواز آئی—"کافر بھاگ گئے ."

آواز تیز هوتی گئی' شور بڑھتا گیا اور دھیرے دھیرے رشیده کے گھر کے نکٹ بھی آگیا . رشیده سچیت هوئی . اسنے بندوق اُٹھالی اور دروازے کی اور کان لگا کر کھڑی هو رهی .

" آپ اپنی بیٹی کو منا لیں . نهیں تو آپ بھی کافر قرار دیئے جائینگے . " یکایک آواز آئی .

یه آواز حبیب کی تھی . لیکن رشیده ڈری نهیں وہ نربھیکتا سے اپنے پتا کے آنے کا انتظار کرنے لگی .

اچانک اسکے پتانے دالان کے دروازے کے پاس آکر پکارا—"رشیدہ ! رشیدہ ! دروازہ کھولو ."

"رشیدہ دروازہ نہیں کھول سکتی ابا ! آپ جوکچھ کہنا چاهتے هوں' وهیں سے کہئے . میں سب سن رهی هوں ."

"ارے تمام لوگ کھڑے هیں . اگر دروازہ نه کھولے گی تو میری جان آفت میں پڑجائیگی ."

"ابا ! آپ میرے ابا هیں ! اور ان لوگوں میں بھی جانے کتنے ابا اور بھائی هیں' لیکن انسانیت پر خنجر اُٹھانے والوں سے

बेटा ! हमने किसी का क्या बिगाड़ा है.

"बस यही तो मैं सुनना नहीं चाहती चाचा. इस समय कुछ न सुनूँगी. आप मेरे घर चलिये. वहाँ मैं सब ठीक कर लूँगी."

"तू औरत है. क्या करेगी ?"

"ऐसा न सोचो चाचा ! औरत सब कुछ कर सकती है. अपनी जान रहते तो आप लोगों पर आँच न आने दूँगी, आप चलिये तो."

शील के भी कहने पर श्याम बाबू अपने परिवार के साथ घर से बाहर निकल पड़े. बाहर आ कर रशीदा ने खुद मकान में ताला बन्द किया और जल्दी जल्दी सब को साथ लेकर अपने घर की ओर बढ़ी. अभी दस क़दम ही जा पाई थी कि किसी ने कठोर आवाज़ में पूछा—"कौन है ! ठहर जा नहीं तो गोली मार दूंगा !"

रशीदा के दिल पर साँप लोट गया. उसके मन में एक अजीब सी हलचल उठ रही थी कि उस आदमी ने सामने आ कर अपनी टार्च की रोशनी रशीदा के चेहरे पर फेंकते हुए पूछा—"तुम रशीदा ?" फिर श्याम बाबू की ओर देख कर कहा—"इन काफ़िरों के साथ तुम कहाँ....रशीदा ?"

रशीदा ने पहचान लिया. यह हबीब था. उसके साथ रशीदा की सगाई हो चुकी थी. रशीदा कुछ शरमा सी गई. मगर फिर फ़ौरन ही उसे अपने फ़र्ज़ का ख़याल आया. अपने भरोसे पर घर से निकले हुए तीन इन्सानों का ख़याल आया और वह कुछ रुक कर बोली—"यह काफ़िर सही लेकिन इन्सान हैं, पड़ोसी हैं. तुम मेरे सामने से हट

"بس یہی تو میں سننا نہیں چاہتی چاچا . اس سمے کچھ نہ سنونگی . آپ میرے گھر چلئے . وہاں میں سب ٹھیک کر لونگی ."

"تو عورت ہے . کیا کریگی ؟"

"ایسا نہ سوچو چاچا ! عورت سب کچھ کر سکتی ہے . اپنی جان رہتے تو آپ لوگوں پر آنچ نہ آنے دونگی' آپ چلئے تو ."

شیل کے بھی کہنے پر شیام بابو اپنے پریوار کے ساتھ گھر سے باہر نکل پڑے . باہر آکر رشیدہ نے خود مکان میں تالا بند کیا اور جلدی جلدی سب کو ساتھ لیکر اپنے گھر کی اُور بڑھی . ابھی دس قدم ھی جا پائی تھی کہ کسی نے کٹھور آواز میں پوچھا—"کون ہے ! ٹھہر جا نہیں تو گولی مار دونگا !"

رشیدہ کے دل پر سانپ لوٹ گیا . اُسکے من میں ایک عجیب سی ھلچل اُٹھ رھی تھی کہ اُس آدمی نے سامنے آکر اپنی ٹارچ کی روشنی رشیدہ کے چہرے پر پھینکتے ہوئے پوچھا—"تم رشیدہ ؟" پھر شیام بابو کی اور دیکھکر کہا—" اِن کافروں کے ساتھ تم کہاں . . . رشیدہ ؟"

رشیدہ نے پہچان لیا . یہ حبیب تھا . اسکے ساتھ رشیدہ کی سگائی ہوچکی تھی . رشیدہ کچھ شرما سی گئی . مگر پھر فوراً ھی اُسے اپنے فرض کا خیال آیا . اپنے بھروسہ پر گھر سے نکلے ہوئے تین انسانوں کا خیال آیا اور وہ کچھ رک کر بولی—" یہ کافر سہی لیکن انسان ھیں' پڑوسی ھیں . تم میرے سامنے سے ھٹ

"ज्यादा बात करने का वक़्त नहीं. जल्दी से श्याम चाचा और अम्मा को साथ लेकर चल."

"क्यों, आखिर बात भी तो कुछ हो! कोई कारन?"

"कारन पूछ रही है. अरे जल्दी नहीं करोगी तो हार जाओगी! मैं तुम्हारी सहेली नहीं, बल्कि इस समय एक सगी बहिन के नाते सहायता करने के लिये आई हूँ."

"सहायता?"

"पागल! सारे गाँव में ज़ालिमों ने तहलका मचा रक्खा है और अब थोड़ी देर में तेरे घर का नम्बर आ जायगा. बात करने का समय नहीं है. जल्दी कर."

"लेकिन तुम्हारे घर अब्बा..." शील ने दबी ज़बान से कहा.

"अब्बा तो ख़ुद उस गिरोह में शामिल हैं. तू उनकी या किसी और की फ़िकर न कर. तेरी रशीदा तुझे ज़रूर बचाएगी."

"नहीं रशीदा! अपनी जान के लिये मैं तुझे मुसीबत में नहीं डालना चाहती. फिर तू अकेली कर भी क्या सकती है?"

"पागल मत बन. मुझे अन्दर आने दे." और यह कहती हुई रशीदा घर में घुस गई.

शील भी उसके पीछे पीछे अपराधी की तरह चल पड़ी. भीतर आकर रशीदा ने देखा कि शील की माँ और उसके पिता अपने भगवान के सामने बैठे अपने जीवन की रक्षा के लिये प्रार्थना कर रहे हैं. रशीदा ने उनसे भी कहा—"अरे चाची, जल्दी मेरे घर चलो, तुम्हारे घर पर हमला होने वाला है."

"زیادہ بات کرنے کا وقت نہیں ۔ جلدی سے شیام چاچا اور اماں کو ساتھ لیکر چل ۔"

"کیوں ؟ آخر بات بھی تو کچھ ہو ! کوئی کارن ؟"

"کارن پوچھ رہی ہے ۔ ارے جلدی نہیں کروگی تو ہار جاؤ گی ! میں تمہاری سہیلی نہیں' بلکہ اِس سمے ایک سگی بہن کے ناتے سہایتا کرنے کے لئے آئی ہوں ۔"

"سہایتا ؟"

"پاگل ! سارے گاؤں میں ظالموں نے تہلکہ مچا رکھا ہے اور اب تھوڑی دیر میں تیرے گھر کا نمبر آجائیگا ۔ بات کرنے کا سمے نہیں ہے ۔ جلدی کر ۔"

"لیکن تمہارے گھر ابا............" شیل نے دبی زبان سے کہا ۔

"ابا تو خود اُس گروہ میں شامل ہیں ۔ تو اُنکی یا کسی اور کی فکر نہ کر ۔ تیری رشیدہ تجھے ضرور بچائیگی ۔"

"نہیں رشیدہ ! اپنی جان کے لئے میں تجھے مصیبت میں نہیں ڈالنا چاہتی ۔ پھر تو اکیلی کر بھی کیا سکتی ہے ؟"

"پاگل مت بن' مجھے اندر آنے دے ۔" اور یہ کہتی ہوئی رشیدہ گھر میں گھس گئی ۔

شیل بھی اُسکے پیچھے پیچھے اپرادھی کی طرح چل پڑی ۔ بھیتر آکر رشیدہ نے دیکھا کہ شیل کی ماں اور اُسکے پتا اپنے بھگوان کے سامنے بیٹھے اپنے جیون کی رکشا کے لئے پرارتھنا کر رہے ہیں ۔ رشیدہ نے اُن سے بھی کہا—"ارے چاچی' جلدی میرے گھر چلو ۔ تمہارے گھر پر حملہ ہونے والا ہے ۔"

के नाम पर कलंक न लगने देगी. वह उस घनी रात की चौड़ी छाती को रौंदती शील के दरवाज़े पर जब पहुँची तो चारों ओर सन्नाटा ही सन्नाटा था. दरवाज़े पर शील की गाय खड़ी जमाही ले रही थी. उसने दरवाज़े पर थाप दी—खट खट..........

खट खट की आवाज़ शील के कानों में जाकर अटक रही. वह अब तक जाग रही थी. दरवाज़े पर आवाज़ सुनते ही शील के प्रान सूख गये. उस ने सहमी हुई दृश्टि से माँ की ओर देखा और घबरा कर बोली—" माँ ! बदमाश आ गये ! "

यह आवाज़ दरवाज़े की दरार से होकर रशीदा के कानों में पड़ी तो उसने ज़ोर से चीख़ते हुए कहा—"अरी शील ! दरवाज़ा तो खोल. जल्दी कर नहीं तो जान पर आ बनेगी. "

" रशीदा ! " माँ ने डर कर और चौंक कर पूछा.

" हाँ रशीदा है. वह हम लोगों को...... "

" नहीं...नहीं बेटी ! वह ऐसा नहीं कर सकती. वह तो तेरी सहेली है. देख किसी पर अविश्वास करना ही आपस के प्रेम को खोना है. ऐसा नहीं सोचते बेटा ! जा दरवाज़ा खोल दे. लेकिन तुरन्त बन्द भी कर ले. "

शील भी दरअसल यही कहने जा रही थी. वह माँ के भोले पन पर उस समय भी हँसे बिना न रह सकी और अपनी माँ के पास से उठ कर दरवाज़े पर आगई. किवाड़ खोल दिया और पूछा—
"इतनी रात गए तुम कैसे.....रशीदा ? "

اچھی طرح سمجھتی تھی . ...
اسلام کے نام پر کلنک نہ لگنے دیگی . وہ اُس گھنی رات کی چوڑی چھاتی کو روندتی شیل کے دروازے پر جب پہونچی تو چاروں اور سناٹا ہی سناٹا تھا . دروازے پر شیل کی گائے کھڑی جمہائی لے رہی تھی . اُس نے دروازے پر تھاپ دی—کھٹ کھٹ.........

کھٹ کھٹ کی آواز شیل کے کانوں میں جاکر اٹک رہی وہ ابتک جاگ رہی تھی . دروازے پر آواز سنتے ہی شیل کے پران سوکھ گئے . اُس نے سہمی ہوئی درشٹی سے ماں کی اور دیکھا اور گھبرا کر بولی—''ماں ! بدمعاش آگئے !''

یہ آواز دروازے کی دراز سے ہو کر رشیدہ کے کانوں میں پڑی تو اُس نے زور سے چیختے ہوئے کہا—''اری شیل ' دروازہ تو کھول . جلدی کر نہیں تو جان پر آبنے گی .''

''رشیدہ !'' ماں نے ڈر کر اور چونک کر پوچھا .

''ہاں رشیدہ ہے وہ ہم لوگوں کو ....''

''نہیں........ نہیں بیٹی ! وہ ایسا نہیں کر سکتی . وہ تو تیری سہیلی ہے . دیکھ کسی پر اوشواس کرنا ہی آپس کے پریم کو کھونا ہے . ایسا نہیں سوچتے بیٹا ! جا دروازہ کھول دے . لیکن ترنت بند بھی کر لے .''

شیل بھی در اصل یہی کہنے جا رہی تھی وہ ماں کے بھولے پن پر اُس سمے بھی ھنسے بنا نہ رہ سکی اور اپنی ماں کے پاس سے اٹھکر دروازے پر آگئی . کواڑ کھولدیا اور پوچھا—''اتنی رات گئے تم کیسے..............رشیدہ ؟''

" तो आओ मेरे साथ चलो. पहले हम लोगों ने मछुआ बाड़ी पर हमला करने की तैयारी की है. उसके बाद अपने गाँव के काफ़िरों को समझेंगे. "

"चलो ! लेकिन घर में कह तो दूँ. "

" अरे इसकी क्या जरूरत है ? "

" अच्छी बात है. " कहकर रशीदा के पिता रसूल के साथ चल पड़े.

रशीदा उन दोनों मजहबी दीवानों की समझ पर मन ही मन झुँझलाकर अपने कमरे में लौट आई. रशीदा को ऐसा लगा जैसे आज का इंसान इतना आगे बढ़ कर भी बहुत पीछे है. और दूसरे छन जब उसकी नज़र अपने पड़ोसी श्याम बाबू के मकान की ओर घूमी तो उसने सोचा, इस सीधे सादे स्वभाव वाले श्याम चाचा की हिफ़ाजत कैसे होगी. मेरी सहेली शील की लाज कैसे बचेगी. अब देर करना ठीक नहीं. वह लोग मछुवा बाड़ी गए हैं. मछुआ बाड़ी यहाँ से दूर नहीं है. इस गाँव से लगभग दो चार फ़र्लांग की दूरी है. रशीदा उठ बैठी. जल्दी से कमरे के बाहर निकल कर बैठक में आई. एक बार चारों ओर देख. आहट लेकर घर मे निकल पड़ी और लम्बे क़दम बढ़ाती शील के मकान के दरवाज़े पर पहुंच गई

मोहना गाँव बंगाल देस के एक कोने में बसा था. इस गाँव में लगभग पन्चानवे फ़ीसदी मुसलमान थे और बाक़ी हिन्दू. सदियों से दोनों मेल जोल से रहते आए थे. लेकिन कुछ गुमराह करने वाले आद-

"تو آؤ میرے ساتھ چلو . پہلے ہم لوگوں نے مچھوا باڑی پر حملہ کرنے کی تیاری کی ہے . اُس کے بعد اپنے گاؤں کے کافروں کو سمجھینگے ."

"چلو ! لیکن گھر میں کہہ تو دوں ."

"ارے اسکی کیا ضرورت ہے ؟"

"اچھی بات ہے ." کہکر رشیدہ کے پتا رسول کے ساتھ چل پڑے .

رشیدہ اُن دونوں مذھبی دیوانوں کی سمجھ پر من ہی من جھلجھلا کر اپنے کمرے میں لوٹ آئی . رشیدہ کو ایسا لگا جیسے آج کا انسان اتنا آگے بڑھ کر بھی بہت پیچھے ہے . اور دوسرے چھن جب اُسکی نظر اپنے پڑوسی شیام بابو کے مکان کی اور گھومی تو اسنے سوچا اس سیدھے سادے سوبھاو والے شیام چاچا کی حفاظت کیسے ہوگی . میری سہیلی شیل کی لاج کیسے بچے گی . اب دیر کرنا ٹھیک نہیں . وہ لوگ مچھوا باڑی گئے ہیں . مچھوا باڑی یہاں سے دور نہیں ہے . اس گاؤں سے لگ بھگ دو چار فرلانگ کی دوری ہے . رشیدہ اُٹھ بیٹھی . جلدی سے کمرے کے باہر نکل کر بیٹھک میں آئی . ایک بار چاروں اور دیکھ آہٹ لیکر گھر سے نکل پڑی اور لمبے قدم بڑھاتی شیل کے مکان کے دروازے پر پہنچ گئی .

موہنا گاؤں بنگال دیس کے ایک کونے میں بسا تھا . اس گاؤں میں لگ بھگ پنچانوے فیصدی مسلمان تھے اور باقی ھندو . صدیوں سے دونوں میل جول سے رہتے آئے تھے . لیکن کچھ گمراہ کرنے

जल्दी से किवाड़ खोल कर दालान के बाहर देखा. रसूल चाचा खड़े थे और उनके पास ही उसके अब्बा. दोनों आपस में धीरे धीरे कुछ बातें कर रहे थे. अब्बा और रसूल चाचा की बातें सुनने के लिये उसने कान लगा दिये. उसके अब्बा ने अपने साथीकी तरफ़ अपना छुरा तान कर कहा—"मैं सच कहता हूँ उसकी जान ले लूँगा."

"हाँ, मुल्ला जी ने यह भी कहा है कि जो आदमी जिस काफ़िर को मारेगा वह उसके माल असबाब का मालिक होगा. तुम्हारे हिस्से में यह पड़ोस का मकान है."

"पड़ोस का मकान ?" रशीदा के पिता ने चौंक कर पूछा.

"हाँ ! यही जो पड़ोस में श्याम रहता है न, उसको मारने के बाद तुम्हें उसकी सारी जायदाद दे दी जायगी. और उसकी बेटी शील के साथ तुम जिससे कहोगे उसके साथ निकाह कर दिया जायगा."

"लेकिन...शील तो रशीदा की सहेली है."

"जिसे तुम सहेली और साथी समझते हो वह सब तुम्हारे दुश्मन हैं. जानते हो मुल्ला साहब की बात न मानने वाला भी काफ़िर समझा जायगा. इसलिये देर न करो. भीड़ तैयार है. तुम किसी बहाने श्याम का दरवाज़ा खोलकर उसे मार डालो."

"लेकिन........."

"लेकिन वेकिन कुछ नहीं. यह तुम्हारी कमज़ोरी है. मैं जा रहा हूँ." यह कहकर रसूल जब लौटने लगा तो रशीदा के पिता ने दौड़ कर कहा—"नहीं नहीं रसूल. मैं उसे क़त्ल करूँगा. अपने मज़हब और मुल्ला साहब की बेइज़्ज़ती नहीं कर सकता."

نے جلدی سے کواڑ کھول کر دالان کے باہر دیکھا . رسول چاچا کھڑے تھے اور اُنکے پاس‌ہی اُسکے ابا. دونوں آپس میں‌دھیرے دھیرے کچھ باتیں کر رہے تھے . ابا اور رسول چاچا کی باتیں سننے کے لئے اُس نے کان لگا دیئے . اُس کے ابا نے اپنے ساتھی کی طرف اپنا چھرا تان کر کہا—''میں سچ کہتا ہوں اُسکی جان لے لونگا .''

''ہاں' ملا جی نے یہ بھی کہا ہے کہ جو آدمی جس کافر کو مارےگا وہ اُسکے مال اسباب کا مالک ہوگا . تمہارے حصے میں یہ پڑوس کا مکان ہے .''

''پڑوس کا مکان ؟'' رشیدہ کے پتا نے چونک کر پوچھا .

''ہاں ! یہی جو پڑوس میں شیام رہتا ہے نہ ' اسکو مارنے کے بعد تمہیں اُسکی ساری جائداد دے دی جائیگی. اور اُسکی بیٹی شیل کے ساتھ تم جس سے کہوگے اُس کے ساتھ نکاح کر دیا جائیگا.''

''لیکن...........شیل تو رشیدہ کی سہیلی ہے .''

''جسے تم سہیلی اور ساتھی سمجھتے ہو وہ سب تمہارے دشمن ہیں . جانتے ہو ملا صاحب کی بات نہ ماننے والا بھی کافر سمجھا جائیگا. اسلئے دیر نہ کرو . بھیڑ تیار ہے. تم کسی بہانے شیام کا دروازہ کھول کر اُسے مار ڈالو .''

''لیکن.................''

''لیکن ویکن کچھ نہیں . یہ تمہاری کمزوری ہے . میں جا رہا ہوں .'' یہ کہکر رسول جب لوٹنے لگا تو رشیدہ کے پتا نے دوڑ کر کہا—''نہیں نہیں' رسول . میں اُسے قتل کرونگا . اپنے مذہب اور ملا صاحب کی بےعزتی نہیں کر سکتا .''

पड़ोसी

(भाई 'सागर' बालूपुरी)

घर का काम काज खतम करने के बाद रशीदा अपने कमरे में आकर पड़ रही. नींद के लिये उसने बार बार करवटें भी लीं, पर नींद जैसे उससे कोसों दूर थी. रशीदा अपने कमरे की खिड़की से बाहर देख रही थी कि एकाएक उसके अब्बा ने पुकारा —"अरी रशीदा बेटी ! सो गई क्या ?"

"नहीं अब्बा ! अभी नींद कहाँ ?" कहती हुई रशीदा अपने बिस्तर से उठ बैठी और कमरे का दरवाज़ा खोल कर बाहर आ गई. बाहर आकर उसने देखा कि उसके पिता अजीब से रूप में खड़े थे. उन्हें देखते ही वह घबराकर बोली –"यह सब क्या है अब्बा ?"

"अरे ! यह सब तू नहीं जानती ? आज गाँव से सारे काफ़िरों को निकाल देने का इरादा किया गया है." फिर दालान की ओर मुँह करके बोले–"तू जाकर लेट रह. मैं खाना खाने के बाद करीम के यहाँ जा रहा हूँ. देख होशियारी के साथ सोना." यह कहते हुए रशीदा के पिता चले गए.

रशीदा अपने अब्बा की अक़्ल पर खीजकर भीतर चली आई और फिर चारपाई पर पड़ रही. वह कुछ सोचना चाहती थी कि

پڑوسی

(بھائی 'ساگر' بالوپوری)

گھر کا کام کاج ختم کرنے کے بعد رشیدہ اپنے کمرے میں آکر پڑ رہی. نیند کے لئے اُس نے بار بار کروٹیں بھی لیں' پر نیند جیسے اُس سے کوسوں دور تھی . رشیدہ اپنے کمرے کی کھڑکی سے باہر دیکھ رہی تھی کہ ایکایک اُسکے ابا نے پکارا—"اری رشیدہ بیٹی ! سو گئی کیا ؟"

"نہیں ابا ! ابھی نیند کہاں ؟" کہتی ہوئی رشیدہ اپنے بستر سے اُٹھ بیٹھی اور کمرے کا دروازہ کھول کر باہر آگئی . باہر آکر اُس نے دیکھا کہ اُسکے پتا عجیب سے روپ میں کھڑے تھے . اُنہیں دیکھتے ہی وہ گھبرا کر بولی—"یہ سب کیا ہے ابا ؟"

"ارے ! یہ سب تو نہیں جانتی ؟ آج گاؤں سے سارے کافروں کو نکال دینے کا ارادہ کیا گیا ہے." پھر دالان کی اور منھ کرکے بولے— "تو جاکر لیٹ رہ . میں کھانا کھانے کے بعد کریم کے یہاں جا رہا ہوں . دیکھ ہوشیاری کے ساتھ سونا ." یہ کہتے ہوئے رشیدہ کے پتا چلے گئے .

رشیدہ اپنے ابا کی عقل پر کھیج کر بھیتر چلی آئی اور پھر چارپائی پر پڑ رہی . وہ کچھ سوچنا چاہتی

... पूंजीपतियों के पेट में गया. लेकिन चूंकि पूंजी पैदा करने वाले मज़दूर थे, इसलिये उसके हक़दार भी मज़दूर ही होते थे. राबर्ट ओवेन अब कम्यूनिज़्म की ओर बढ़ा. इसपर अधिकारी हलक़ों में उसकी नामवरी को बड़ा धक्का लगा. फिर भी उसने किसी की परवाह नहीं की और डंके की चोट पर एलान किया कि समाज की सबसे बड़ी बुराइयाँ ज़ाती सम्पत्ति, मज़हब और शादी की आज कल की प्रथा है. वह इंगलैंड के मज़दूर आन्दोलन का रहनुमा हो गया और उस ज़माने के हर समाजी आन्दोलन के साथ राबर्ट ओवेन का नाम आता है.

× × × ×

इन ख़याली समाजवादियों की ख़ास कमज़ोरी क्या थी? वह हमेशा एक सी क़ायम रहने वाली सचाई, में जो, वक़्त और मुक़ाम की हदों से परे थी और जिसमें आदमी को तरक़्क़ी पसन्द बनाने वाले उसूल की कमी थी, यक़ीन करते थे. इसपर यह ताज्जुब की बात नहीं थी कि इस तरह के हर समाजवाद के बानी की आख़िरी सचाई, तर्क और इंसाफ़ दूसरे बानी की आख़िरी सचाई, तर्क और इंसाफ़ से अलग थे और वह सिर्फ़ इस बात पर मुनहसर था कि कौन बानी कितना सुलझा हुआ है, जो चार हज़ार साल पहिले भी पैदा होता तो अपने दिमाग़ से असली सचाई जान सकता था.

(बाक़ी फिर)

سوچ لیا کہ یہ سب پونجی پتیوں کے پیٹ میں گیا . لیکن چونکہ پونجی پیدا کرنے والے مزدور تھے اس لئے اسکے حقدار بھی مزدور ہی ہوتے تھے . رابرٹ اوون اب کمیونزم کی اور بڑھا . اس پر دھیکاری حلقوں میں اُسکی نامورں کو بڑا دھکا لگا . پھر بھی اُس نے کسی کی پرواہ نہیں کی اور ڈنکے کی چوٹ پر اعلان کیا کہ سماج کی سب سے بڑی برائیاں ذاتی سمپتی، مذہب اور شادی کی آجکل کی پرتھا ہے . وہ انگلینڈ کے مزدور آندولن کا رہنما ہوگیا اور اُس زمانے کے ہر سماجی آندولن کے ساتھ رابرٹ اوون کا نام آتا ہے .

× × × ×

اِن خیالی سماج وادیوں کی خاص کمزوری کیا تھی ؟ وہ ہمیشہ ایک سی قائم رہنے والی سچائی میں جو وقت اور مقام کی حدوں سے پرے تھی اور جس میں آدمی کو ترقی پسند بنانے والے اُصول کی کمی تھی، یقین کرتے تھے . اس پر یہ تعجب کی بات نہیں تھی کہ اس طرح کے ہر سماج واد کے بانی کی آخری سچائی، ترک اور انصاف دوسرے بانی کی آخری سچائی، ترک اور انصاف سے الگ تھے اور وہ صرف اس بات پر منحصر تھا کہ کون بانی کتنا سلجھا ہوا ہے، جو چار ہزار سال پہلے بھی پیدا ہوتا تو اپنے دماغ سے اصلی سچائی جان سکتا تھا .

(باقی پھر)

में बढ़कर जटिल, पेचीदा और मक्कारी से भरी हुई और बनावटी हो गई. इतना ही नहीं उन्हों ने समाज में प्रगतिवादी उसूल को जगह दी.

फ़रान्स की तरह ही इंगलैन्ड में भी ख़याली समाजवाद का जन्म हुआ. यहाँ भाप से मशीनों के चलाने और मशीनों से नई मशीनों के बनाने की ईजाद ने पैदावार को बहुत तरक़्क़ी दे दी थी और पुरानी कारीगरी और कला का दरजा नये साइंसी उद्योग ने ले लिया था. इसी समय एक २६ साल का पैदायशी नेता राबर्ट ओवेन सामने आया. सन् १८०० से १८२६ तक वह स्काटलैन्ड के न्यूलैनार्क शहर में एक सूती कारख़ाने का साझीदार डाइरेक्टर रहा, जिसमें उसने दूसरे कारख़ानों की निस्बत ज़यादह आसानियाँ दीं. २५०० आदमियों की उसकी आदर्श नई आबादी में शराबख़ोरी, पुलिस, मजिस्ट्रेट, मुक़द्दमेबाज़ी, दान दक्षिना का नाम भी नहीं था. उसने बच्चों का स्कूल खोला, जिसमें २ बरस की उम्र से बच्चे भरती किये जाते थे जहाँ दूसरे कारख़ानों में १३-१४ घन्टे काम लिया जाता था, वहाँ राबर्ट-ओवेन के कारख़ाने में साढ़े दस घन्टे ही काम लिया जाता था. एक बार कपास की कमी से कारख़ाना चार महीने बन्द रहा. तब भी उसके कारख़ाने के मज़दूरों को तनख़ाह मिलती रही. इन सब बातों के होते हुए भी कारख़ाने के मालिकों का बड़ा फ़ायदा हुआ. फिर भी उस अपने मज़दूरों की ज़िंदगी से संतोश नहीं था. उसने हिसाब करके देखा कि उसके २५०० मज़दूर उस वक़्त तक उतना पैदा कर रहे थे, जो पचास साल पहले ६००००० आदमी पैदा करते थे.

میں بڑھکر جٹل' پیچیدہ اور مکاری سے بھری ہوئی اور بناوٹی ہو گئی . اتنا ہی نہیں اُنہوں نے سماج میں پرگتی وادی اصول کو جگہ دی .

فرانس کی طرح ہی انگلینڈ میں بھی خیالی سماج واد کا جنم ہوا . یہاں بھاپ سے مشینوں کے چلانے اور مشینوں سے نئی مشینوں کے بنانے کی ایجاد نے پیداوار کو بہت ترقی دیدی تھی اور پرانی کاریگری اور کلا کا درجہ نئے سائنسی اُدیوگ نے لے لیا تھا . اسی سمے ایک ۲۹ سال کا پیدائشی نیتا رابرٹ اوون سامنے آیا . سن ۱۸۰۰ سے ۱۸۲۹ تک وہ اسکاٹ لینڈ کے نیولنارک شہر میں ایک سوتی کارخانے کا ساجھی دار ڈائرکٹر رہا' جس میں اُس نے دوسرے کارخانوں کی نسبت زیادہ آسانیاں دیں. ۲۵۰۰ آدمیوں کی اُسکی آدرش نئی آبادی میں شراب خوری' پولیس' مجسٹریٹ' مقدمہ بازی' دان دکشنا کا نام بھی نہیں تھا . اُس نے بچوں کا اسکول کھولا' جس میں دو برس کی عمر سے بچے بھرتی کئے جاتے تھے . جہاں دوسرے کارخانوں میں ۱۳-۱۴ گھنٹے کام لیا جاتا تھا' وہاں رابرٹ اوون کے کارخانے میں ساڑھے دس گھنٹے ہی کام لیا جاتا تھا . ایک بار کپاس کی کمی سے کارخانہ چار مہینے بند رہا. تب بھی اُسکے کارخانے کے مزدوروں کو تنخواہ ملتی رہی . ان سب باتوں کے ہوتے ہوئے بھی کارخانے کے مالکوں کو بڑا فائدہ ہوا. پھر بھی اُسے اپنے مزدوروں کی زندگی سے سنتوش نہیں تھا . اس نے حساب کرکے دیکھا کہ اُس کے ۲۵۰۰ مزدور اُس وقت تک اُتنا پیدا کر رہے تھے' جو ۵۰ سال پہلے ۶۰۰۰۰۰ آدمی پیدا

गई था. इसी तरह उस ज़माने के ...

की हुकूमत (रेन आफ़ टेरर) कहा जाता है, से यह भी साबित हो गया था कि मज़दूर भी इन्क़लाब की रहनुमाई करने की योग्यता नहीं रखता. फिर नेता कहाँ से आते. सेन्ट साइमन का मत था कि साइन्स और उद्योग का एक ऐसा धार्मिक गंठ बन्धन हो, जो 'नई ईसाइयत' के ख़याल से प्रभावित हो. ज़ाहिर है कि यह एकता व्योपारियों और पढ़े लिखे लोगों की एकता ही हो सकती थी और फ़ारन्सीसी इंक़लाब की रहनुमाई भी इन्हीं के ज़रिये हुई थी. फिर भी सेन्ट साइमन इस नतीजे पर पहुँच चुके थे कि सबसे बड़ी समस्या मेहनत कश लोगों की है. उन्हो ने यहाँ तक (सन् १८०२ में) माना कि 'आतंकवादियों का शासन' दरअसल ग़ैर-सरमायादारों (Non Possessing Classes) का शासन था १८१६ तक वह इस हद तक पहुँच गये कि राजनीत को पैदावार का इल्म बतलाया. यह राजनीत से अर्थ नीत को बड़ा मानना था. जिसमें राज को ख़तम कर देने का भाव भी छिपा था.

फ़ूरियर ने फ़रान्सीसी इंक़लाब के बिचले तबक़े के नेताओं के विचारों का गहरा भंडा फोड़ किया, औरतों की आज़ादी को आम आज़ादी का मापदण्ड (मेयार) माना, इतिहास को ऐसे अलग अलग ज़मानों में बाँटा जिसमें एक ज़माने में जंगली ढंग से राज होता था और राज का मालिक बाप के बाद बेटा ही होता था, और दूसरे ज़माने को सभ्य माना और कहा कि वहशी ज़माने में समाज की जो बुराई बिलकुल सादी शकल में थी, वह सभ्य ज़माने

رین آف ٹیرر) کہا جاتا ہے' سے یہ بھی ثابت ہوگیا تھا کہ مزدور بھی قلاب کی رہنمائی کرنے کی یوگتا نہیں رکھتا۔ پھر نیتا کہاں سے تے۔ سینٹ سائمن کا مت تھا کہ سائنس اور ادیوگ کا ایک ایسا ھارمک گٹھ بندھن ہو' جو 'نئی عیسائیت' کے خیال سے بھاوت ہو۔ ظاہر ہے کہ یہ ایکتا بیوپاریوں اور پڑھے لکھے لوگوں ی ایکتا ہی ہو سکتی تھی اور فرانسیسی انقلاب کی رہنمائی بھی ہیں کے ذریعے ہوئی تھی۔ پھر بھی سینٹ سائمن اس نتیجے پہونچ چکے تھے کہ سب سے بڑی سمسیا محنت کش لوگوں کی ۔ اُنہوں نے یہاں تک (سن ۱۸۰۲ میں) مانا کہ 'آتنک وادیوں شاسن' دراصل غیر سرمایہ داروں (Non Possessing Classes) کا شاسن تھا۔ ۱۹۱۶ تک وہ اس حد تک پہونچ گئے راج نیت کو پیداوار کا علم بتلایا۔ یہ راج نیت سے ارتھ نیت بڑا ماننا تھا' جس میں راج کو ختم کر دینے کا بھاؤ بھی چھپا تھا۔

فوریر نے فرانسیسی انقلاب کے بچلے طبقے کے نیتاؤں وچاروں کا گہرا بھنڈا پھوڑ کیا۔ عورتوں کی آزادی کو عام ادی کا ماپ دنڈ (معیار) مانا' اتہاس کو ایسے الگ الگ مانوں میں بانٹا جسمیں ایک زمانے میں جنگلی ڈھنگ راج ہوتا تھا اور راج کا مالک باپ کے بعد بیٹا ہی ہوتا تھا' دوسرے زمانے کو سبھیہ مانا اور کہا کہ وحشی زمانے میں ساج کی جو برائی بالکل سادی شکل میں تھی' وہ سبھیہ زمانے

को नया रूप देकर, ग़ुलामी को नेस्त नाबूद करने वाली हालत पैदा करने के बाद भी ग़ुलामी को क़ायम रक्खा. समाज के एक छोर पर चन्द उद्योगी यानी सनअती सरमायादार, जिनके हाथ में देस बिदेस की सम्पत्ति इकट्ठा होने लगी थी, और दूसरे छोर पर अनगिनत मज़दूर, जिनकी ज़िन्दगी ग़रीबी, मुसीबत, कठिनाई और पीड़ितों की ज़िन्दगी थी, नज़र आए. और अभी यह पूँजीवाद की शुरुआत की ज़िन्दगी थी. क्रान्ति के सिलसिले में इस नये तबक़े का मज़दूरों से संघर्ष भी हुआ और फ़रान्सीसी और अंगरेज़ों के इन्क़लाब के आख़िरी सबसे बड़े क्रान्तिकारी नेताओं रोबेस्पियर और क्रामवेल को इन्हीं अधकच्चे मज़दूरों से बल मिला, मगर अभी वक़्त नहीं आया था, जब या तो इनकी निजात की लड़ाई कामयाब होती या इस निजात का ठीक ठीक रास्ता ही सोचा जा सकता. अभी पूँजीवाद की असली, शकल और उसकी बुनियाद पर चलने वाली तबक़ावाराना जंग और भी साफ़ साफ़ सामने आने को थी. इसीलिये ख़याली समाजवादियों को अविकसित हालतों के मुताबिक़ ही कच्चे समाजवादी ख़यालों की शरन लेनी पड़ी—दिमाग़ी माथा पच्ची से बहुत कुछ रास्ता निकाला. फिर भी उसकी सीमाएँ साफ़ थीं.

पूँजीवाद ने दो तबक़े पैदा किये थे—पूँजीवादी और मज़दूर. सेन्ट साइमन ने इन दोनों तबक़ों को ठीक ठीक समझने में भूल की. उनके 'मज़दूरों' में व्योपारी और बैंक के मालिक भी शामिल थे. उनके 'आलसियों' में सिर्फ़ पूँजीवादी ही नहीं बल्कि पढ़े लिखे लोगों का

کو نیا روپ دے کر، غلامی کو نیست نابود کرنے والی حالت پیدا کرنے کے بعد بھی غلامی کو قائم رکھا. سماج کے ایک چھور پر چند اُدیوگی یعنی صنعتی سرمایہ دار، جن کے ہاتھ میں دیس بدیس کی سمپتی اکٹھا ہونے لگی تھی، اور دوسرے چھور پر انگنت مزدور، جنکی زندگی غریبی، مصیبت، کٹھنائی اور پیڑتوں کی زندگی تھی، نظر آئے. اور ابھی یہ پونجی واد کی شروعات کی زندگی تھی. کرانتی کے سلسلے میں اِس نئے طبقے کا مزدوروں سے سنگھرش بھی ہوا اور فرانسیسی اور انگریزوں کے انقلاب کے آخری سب سے بڑے کرانتکاری نیتاؤں روبیسپیر اور کرامویل کو ان ہی ادھ کچے مزدوروں سے بل ملا، مگر ابھی وقت نہیں آیا تھا، جب یا تو ان کی نجات کی لڑائی کامیاب ہوتی یا اس نجات کا ٹھیک ٹھیک راستہ ہی سوچا جا سکتا. ابھی پونجی واد کی اصلی شکل اور اُسکی بنیاد پر چلنے والی طبقہ وارانہ جنگ اور بھی صاف صاف سامنے آنے کو تھی. اسی لئے خیالی سماج وادیوں کو اوکست حالتوں کے مطابق ہی کچے سماج وادی خیالوں کی شرن لینی پڑی—دماغی ماتھا پچی سے بہت کچھ راستہ نکالا؛ پھر بھی اُس کی سیمائیں صاف تھیں.

پونجی واد نے دو طبقے پیدا کئے تھے—پونجی وادی اور مزدور. سینٹ سائمن نے ان دونوں طبقوں کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے میں بھول کی. اُن کے 'مزدوروں' میں بیوپاری اور بینک کے مالک بھی شامل تھے. اُن کے 'آلسیوں' میں صرف پونجی وادی ہی نہیں بلکہ پڑھے لکھے لوگوں کا ورگ

आख़िर में सेन्ट साइमन, फ़ूरियर, राबर्ट ओवेन जैसे ख़याली (यूटो-पियन) समाजवादियों का नाम आता है. शुरू के ख़याली विचारक साधुओं की तरह ज़िन्दगी बिता देने के क़ायल थे. मगर मोरले और मैब्ली के उसूल दरअसल साम्यवादी थे. सेन्ट साइमन अभी तक दरमियानी तबक़े की ज़रूरत मानता था. फ़ूरियर और राबर्ट ओवेन उनसे आगे गये. फिर भी यह तीनों ही आख़िरी ख़याली समाजवादी अपने को सारे इन्सानों का नुमाइन्दा मानते थे. किसी के सामने सिर्फ़ मज़दूरों की ही आज़ादी का सवाल नहीं था. फ़रान्स के बीच के तबक़े की क्रान्ति के नेताओं की तरह यह भी तर्क और स्थायी यानी दायमी इन्साफ़ को मानते थे. हाँ उनमें और इनमें ज़मीन आसमान का फ़रक़ यह ज़रूर था कि जहाँ बीच के तबक़े के फ़रान्सीसी नेताओं ने सरमायादारी दुनिया को तर्क भरा, न्याय भरा उसकी तरक़्क़ी का रास्ता बताया था, वहाँ इन लोगों ने उसे इन्साफ़ से बिलकुल परे मानकर उसका पूरी तरह भंडा फोड़ किया. सरमायादारी इन्क़लाब के नेताओं ने दुनिया को तीन बड़े नारे (उसूल) दिये—आज़ादी, बराबरी और भाईचारे का रिश्ता. क्रान्ति के बाद यह देखा गया कि अगरचे फ़रान्सीसी समाज सामन्तवादी समाज (ज़मींदारी प्रथा का रूप) से अगली सीढ़ी पर चढ़ गया था, फिर भी जहाँ तक सच्ची आज़ादी, बराबरी और भाईचारे के रिश्ते का ताल्लुक़ था, वह अब भी कोसों दूर थी.

नई पूँजीवादी दुनिया में एक नए तरह की अशान्ति, लूट,

سینٹ سائمن، فوریر، رابرٹ اوون جیسے خیالی (یوٹوپین) سماج وادیوں کا نام آتا ہے ۔ شروع کے خیالی وچارک سادھوؤں کی طرح زندگی بتادینے کے قائل تھے ۔ مگر مورلے اور میبلی کے اُصول در اصل سامیہ وادی تھے ۔ سینٹ سائمن ابھی تک درمیانی طبقے کی ضرورت مانتا تھا ۔ فوریر اور رابرٹ اوون اُن سے آگے گئے ۔ پھر بھی یہ تینوں ہی آخری خیالی سماج وادی اپنے کو سارے انسانوں کا نمائندہ مانتے تھے ۔ کسی کے سامنے صرف مزدوروں کی ہی آزادی کا سوال نہیں تھا ۔ فرانس کے بیچ کے طبقے کی کرانتی کے نیتاؤں کی طرح یہ بھی ترک اور ستھائی یعنی دائمی انصاف کو مانتے تھے ہاں اُن میں اور اِن میں زمین آسمان کا فرق یہ ضرور تھا کہ جہاں بیچ کے طبقے کے فرانسیسی نیتاؤں نے سرمایہ داری دنیا کو ترک بھرا، نیائے بھرا اُس کی ترقی کا راستہ بتایا تھا، وہاں اِن لوگوں نے اُسے انصاف سے بالکل پرے مان کر اُس کا پوری طرح بھنڈا پھوڑ کیا ۔ سرمایہ داری انقلاب کے نیتاؤں نے دنیا کو تین بڑے نعرے (اُصول) دئے—آزادی، برابری اور بھائی چارے کا رشتہ ۔ کرانتی کے بعد یہ دیکھا گیا کہ اگرچہ فرانسیسی سماج سامنت وادی سماج (زمینداری پرتھا کا روپ) سے اگلی سیڑھی پر چڑھ گیا تھا، پھر بھی جہاں تک سچی آزادی، برابری اور بھائی چارے کے رشتہ کا تعلق تھا، وہ اب بھی کوسوں دور تھی ۔

نئی پونجی وادی دنیا میں ایک نئے طرح کی اَشانتی، لوٹ،

अराजकतावाद के अलावा दूसरे स्कूल व्यक्तिगत सम्पत्ति को पूरी तरह खतम कर देने के हक़ में नहीं हैं. यहाँ यह कह देना भी जरूरी है कि यह दोनों स्कूल भी व्यक्तिगत सम्पत्ति को इस हद तक उठाने के हक़ में नहीं हैं कि किसी के ड्राइंग रूम की कुर्सियों को जो चाहे उठा ले जाए. दर असल यह उनके अनुदार दुशमनों का झूठा प्रचार है. और प्रचार इससे भी गन्दा किया जाता है.

दूसरी बात है समाजवाद क़ायम करने के साधन के बारे में मतभेद. इसमें भी कम्यूनिस्टों और अराजकतावादियों के अलावा सभी समाजवादी मोटे तौर से सुधारवादी हैं. सुधारवाद अमली तजरबे और पार्लियामेन्टों में क़ानून के जरिये व्यक्तिगत सम्पत्ति नश्ट करने और समाजवाद क़ायम करने को कहते हैं.

इतिहास पर एक नजर—ख़याली समाजवाद

यूरप में कम से कम यूनान के मशहूर फ़िलासफ़र अफ़लातून के वक़्त से समाजवाद का नाम सुना जा रहा है. अफ़लातून का समाजवाद भलों का समाजवाद (Aristocratic Communism) था. उनका ख़याल था कि फ़िलासफ़रों को सारी मिलकियत पर मिल जुल कर अधिकार करना चाहिये. यह व्यक्तिगत सम्पत्ति का उदय काल था. इसलिये अफ़लातून के यूनानी शहरी राज (सिटी स्टेट) का आधार ग़ुलामी का रिवाज था. जिसमें बराबरी का दरजा देने का सवाल ही नहीं उठना था. अफ़लातून ने फ़िलासफ़रों के लिये मिले जुले ढंग से शादी (कम्यूनिटी आफ़ वाइव्ज़) की भी सलाह दी थी.

आज के जमाने के समाजवाद की शुरुआत इतिहास के बिचले

اراجکتا واد کے علاوہ دوسرے اسکول ویکتی گت سمپتی کو پوری طرح ختم کر دینے کے حق میں نہیں ہیں ۔ یہاں یہ کہ دینا بھی ضروری ہے کہ یہ دونوں اسکول بھی ویکتی گت سمپتی کو اس حد تک اُٹھانے کے حق میں نہیں ہیں کہ کسی کے ڈرائنگ روم کی کرسیوں کو جو چاہے اُٹھا لے جائے۔ در اصل یہ اُن کے انودار دشمنوں کا جھوٹا پرچار ہے ۔ اور پرچار اس سے بھی گندہ کیا جاتا ہے ۔

دوسری بات ہے سماج واد قائم کرنے کے سادھن کے بارے میں مت بھید ۔ اس میں بھی کمیونسٹوں اور اراجکتا وادیوں کے علاوہ سبھی سماج وادی موٹے طور سے سدھار وادی ہیں۔ سدھار واد عملی تجربے اور پارلیامینٹوں میں قانون کے ذریعے ویکتی گت سمپتی نشٹ کرنے اور سماج واد قائم کرنے کو کہتے ہیں ۔

اِتہاس پر ایک نظر — خیالی سماج واد

یورپ میں کم سے کم یونان کے مشہور فلاسفر افلاطون کے وقت سے سماج واد کا نام سنا جا رہا ہے ۔ افلاطون کا سماج واد بھلوں کا سماج واد (Aristocratic Communism) تھا ۔ اُنکا خیال تھا کہ فلاسفروں کو ساری ملکیت پر مل جل کر ادھیکار کرنا چاہئے ۔ یہ ویکتی گت سمپتی کا اُدے کال تھا ۔ اس لئے افلاطون کے یونانی شہری راج (سٹی اسٹیٹ) کا آدھار غلامی کا رواج تھا، جسمیں برابری کا درجہ دینے کا سوال ہی نہیں اُٹھتا تھا ۔ افلاطون نے فلاسفروں کے لئے ملے جلے ڈھنگ سے شادی (کمیونٹی آف وائیوز) کی بھی صلاح دی تھی ۔

آج کے زمانے کے سماج واد کی شروعات اتہاس کے بیچلے کال کے

ालेर न सेन्ट साइमन, फ्लरियर, रावर्ट ओवेन जैसे खयाली (यूटो-
यन) समाजवादियों का नाम आता है. शुरू के खयाली विचारक
ाधुओं की तरह ज़िन्दगी बिता देने के क़ायल थे. मगर मोरले और
ली के उसूल दरअसल साम्यवादी थे. सेन्ट साइमन अभी त क
ियानी तबक़े की जरूरत मानता था. फ़्लूरियर और राबर्ट ओवेन
से आगे गये. फिर भी यह तीनों ही आखिरी खयाली समाजवादी
पने को सारे इन्सानों का नुमाइन्दा मानते थे. किसी के सामने
र्फ़ मज़दूरों की ही आज़ादी का सवाल नहीं था. फ़रान्स के बीच के
क़े की क्रान्ति के नेताओं की तरह यह भी तर्क और स्थायी यानी
यमी इन्साफ़ को मानते थे. हाँ उनमें और इनमें ज़मीन आसमान
फ़रक़ यह ज़रूर था कि जहाँ बीच के तबक़े के फ़रान्सीसी नेताओं
सरमायादारी दुनिया को तर्क भरा, न्याय भरा उसकी तरक़्क़ी का
स्ता बताया था, वहाँ इन लोगों ने उसे इन्साफ़ से बिलकुल परे
ानकर उसका पूरी तरह भंडा फोड़ किया. सरमायादारी इन्क़लाब
नेताओं ने दुनिया को तीन बड़े नारे (उसूल) दिये—आज़ादी,
ाबरी और भाईचारे का रिश्ता. क्रान्ति के बाद यह देखा गया कि
गरचे फ़रान्सीसी समाज सामन्तवादी समाज (ज़मींदारी प्रथा का
प) से अगली सीढ़ी पर चढ़ गया था, फिर भी जहाँ तक सच्ची
ाज़ादी, बराबरी और भाईचारे के रिश्ते का ताल्लुक़ था, वह
ब भी कोसों दूर थी.

नई पूँजीवादी दुनिया में एक नए तरह की अशान्ति, लूट,
ना झपटी, होड़ और संघर्ष नज़र आया, जिसने पुरानी ग़ुलामी

سینٹ سائمن فوریر رابرٹ اوون جیسے خیالی (یوٹوپین) سماج
وادیوں کا نام آتا ھے ۔ شروع کے خیالی وچارک سادھوؤں کی طرح
زندگی بتادینے کے قائل تھے ۔ مگر مورلے اور مبلی کے اُصول در اصل
سامیہ وادی تھے ۔ سینٹ سائمن ابھی تک درمیانی طبقے کی
ضرورت مانتا تھا ۔ فروریر اور رابرٹ اوون اُن سے آگے گئے ۔ پھر بھی
یہ تینوں ھی آخری خیالی سماج وادی اپنے کو سارے انسانوں کا
نمائندہ مانتے تھے ۔ کسی کے سامنے صرف مزدوروں کی ھی آزادی کا
سوال نہیں تھا ۔ فرانس کے بیچ کے طبقے کی کرانتی کے نیتاؤں کی
طرح یہ بھی ترک اور ستھائی یعنی دائمی انصاف کو مانتے تھے ھاں
اُن میں اور اِن میں زمین آسمان کا فرق یہ ضرور تھا کہ جہاں بیچ کے طبقے
کے فرانسیسی نیتاؤں نے سرمایہ داری دنیا کو ترک بھرا' نیائے بھرا
اُس کی ترقی کا راستہ بتایا تھا' وھاں اِن لوگوں نے اُسے انصاف سے
بالکل پرے مان کر اُس کا پوری طرح بھنڈا پھوڑ کیا ۔ سرمایہ داری
انقلاب کے نیتاؤں نے دنیا کو تین بڑے نعرے (اُصول) دئے—آزادی'
برابری اور بھائی چارے کا رشتہ ۔ کرانتی کے بعد یہ دیکھا گیا کہ اگرچہ
فرانسیسی سماج سامنت وادی سماج (زمینداری پرتھا کا روپ)
سے اگلی سیڑھی پر چڑھ گیا تھا' پھر بھی جہاں تک سچی آزادی'
برابری اور بھائی چارے کے رشتہ کا تعلق تھا' وہ اب بھی کوسوں
دور تھی ۔

نئی پونجی وادی دنیا میں ایک نئے طرح کی اشانتی' لوٹ'
چھینا جھپٹی' ھوڑ اور سنگھرش نظر آیا' جس نے پرانی غلامی

अराजकतावाद के अलावा दूसरे स्कूल व्यक्तिगत सम्पत्ति को पूरी तरह खतम कर देने के हक़ में नहीं हैं. यहाँ यह कह देना भी जरूरी है कि यह दोनों स्कूल भी व्यक्तिगत सम्पत्ति को इस हद तक उठाने के हक़ में नहीं हैं कि किसी के ड्राइंग रूम की कुर्सियों को जो चाहे उठा ले जाए. दर असल यह उनके अनुसार दुशमनों का झूटा प्रचार है. और प्रचार इससे भी गन्दा किया जाता है.

दूसरी बात है समाजवाद क़ायम करने के साधन के बारे में मतभेद. इसमें भी कम्यूनिस्टों और अराजकतावादियों के अलावा सभी समाजवादी मोटे तौर से सुधारवादी हैं. सुधारवाद अमली तजरबे और पार्लियामेन्टों में क़ानून के ज़रिये व्यक्तिगत सम्पत्ति नष्ट करने और समाजवाद क़ायम करने को कहते हैं.

इतिहास पर एक नजर—खयाली समाजवाद

यूरप में कम से कम यूनान के मशहूर फ़िलासफ़र अफ़लातून के वक़्त से समाजवाद का नाम सुना जा रहा है. अफ़लातून का समाज वाद भलों का समाजवाद (Aristocratic Communism) था. उनका ख्याल था कि फ़िलासफ़रों को सारी मिलकियत पर मिल जुल कर अधिकार करना चाहिये. यह व्यक्तिगत सम्पत्ति का उदय काल था. इसलिये अफ़लातून के यूनानी शहरी राज (सिटी स्टेट) का आधार ग़ुलामी का रिवाज था. जिसमें बराबरी का दरजा देने का सवाल ही नहीं उठता था. अफ़लातून ने फ़िलासफ़रों के लिये मिले जुले ढंग से शादी (कम्यूनिटी आफ़ वाइव्ज़) की भी सलाह दी थी.

आज के जमाने के समाजवाद की शुरुआत इतिहास के बिचले

اراجکتا واد کے علاوہ دوسرے اسکول ویکتی گت سمپتی کو پوری طرح ختم کر دینے کے حق میں نہیں ہیں . یہاں یہ کہ دینا بھی ضروری ہے کہ یہ دونوں اسکول بھی ویکتی گت سمپتی کو اس حد تک اُٹھانے کے حق میں نہیں ہیں کہ کسی کے ڈرائنگ روم کی کرسیوں کو جو چاہے اُٹھا لے جائے. در اصل یہ اُن کے انودار دشمنوں کا جھوٹا پرچار ہے . اور پرچار اس سے بھی گندہ کیا جاتا ہے .

دوسری بات ہے سماج واد قائم کرنے کے سادھن کے بارے میں مت بھید . اس میں بھی کمیونسٹوں اور اراجکتا وادیوں کے علاوہ سبھی سماج وادی موٹے طور سے سدھار وادی ہیں. سدھار واد عملی تجربے اور پارلیامینٹوں میں قانون کے ذریعے ویکتی گت سمپتی نشٹ کرنے اور سماج واد قائم کرنے کو کہتے ہیں .

اِتہاس پر ایک نظر—خیالی سماج واد

یورپ میں کم سے کم یونان کے مشہور فلاسفر افلاطون کے وقت سے سماج واد کا نام سنا جا رہا ہے . افلاطون کا سماج واد بھلوں کا سماج واد (Aristocratic Communism) تھا . اُنکا خیال تھا کہ فلاسفروں کو ساری ملکیت پر مل جل کر ادھیکار کرنا چاہئے . یہ ویکتی گت سمپتی کا اُدے کال تھا . اس لئے افلاطون کے یونانی شہری راج (سٹی اسٹیٹ) کا آدھار غلامی کا رواج تھا جسمیں برابری کا درجہ دینے کا سوال ہی نہیں اُٹھتا تھا . افلاطون نے فلاسفروں کے لئے ملے جلے ڈھنگ سے شادی (کمیونٹی آف وایوز) کی بھی صلاح دی تھی .

آج کے زمانے کے سماج واد کی شروعات اِتہاس کے بچلے کال کے

इन बहसों में यह ज़रूरी नहीं रहा है कि कोई भी फ़रीक़ चाहे अपनी, चाहे दूसरे फ़रीक़ की बात की पूरी अहमियत समझता रहा हो. मिसाल के लिये समाजवाद का वह स्कूल कोई वज़नदार बात नहीं कहता जिसके मुताबिक़ समाजवादी समाज में व्यक्ति का कोई दरजा नहीं रह जाता या व्यक्ति को अपनी शख़्सियत पूरी तरह ख़तम कर देनी होती है. इसी तरह वह व्यक्तिवादी जो समाजवाद की मुख़ालफ़त सिर्फ़ इस लिये करता रहा है कि उसमें व्यक्तित्व को बिलकुल ही कुचल दिया जाता है वह समाजवाद को नहीं समझ सका.

जो हो, उसूली ख़याल से समाजवाद की यही आधारशिला (बुनियादी पत्थर) है—यानी समाज सभी व्यक्तियों के लिये है, दो चार व्यक्तियों के लिये नहीं. इसलिये समाज में ऐसे निज़ाम की ज़रूरत है, जिसमें हर एक को अपने उगने बढ़ने, तालीम लेने, सुखी ज़िन्दगी बिताने का बराबर का मौक़ा मिले. और समाजवाद की वह आख़िरी दरजे तक जाने वाली क़िस्म, जिसे कम्यूनिज़्म कहते हैं, इस बात में सभी समाजवादों से सहमत है.

कई तरह के समाजवादियों के विचारों में दो ख़ास फ़रक़ हैं. एक यह कि कौन सा ऐसा समाज हो सकता है, जिसमें ऊपर कहा गया निज़ाम क़ायम किया जा सकता है. दूसरा यह कि ऐसा समाज कैसे क़ायम किया जा सकता है. सब ही समाजवादी व्यक्तिगत सम्पत्ति के ख़िलाफ़ रहे हैं. मगर समाजवाद के दो स्कूल कम्यूनिज़्म और

हیں ۔ ان بحثوں میں یہ ضروری نہیں رہا ہے کہ کوئی بھی فریق چاہے اپنی، چاہے دوسرے فریق کی بات کی پوری اہمیت سمجھتا رہا ہو ۔ مثال کے لئے سماج واد کا وہ اسکول کوئی وزن دار بات نہیں کہتا جس کے مطابق سماج وادی سماج میں ویکتی کا کوئی درجہ نہیں رہ جاتا یا ویکتی کو اپنی شخصیت پوری طرح ختم کر دینی ہوتی ہے ۔ اسی طرح وہ ویکتی وادی جو سماج واد کی مخالفت صرف اس لئے کرتا رہا ہے کہ اس میں ویکتتو کو بالکل ہی کچل دیا جاتا ہے وہ سماج واد کو نہیں سمجھ سکا ۔

جو ہو، اُصولی خیال سے سماج واد کی یہی آدھار شلا (بنیادی پتھر) ہے—یعنی سماج سبھی ویکتیوں کے لئے ہے، دو چار ویکتیوں کے لئے نہیں ۔ اس لئے سماج میں ایسے نظام کی ضرورت ہے، جس میں ہر ایک کو اپنے اُگنے بڑھنے، تعلیم لینے، سکھی زندگی بتانے کا برابر کا موقع ملے ۔ اور سماج واد کی وہ آخری درجے تک جانیوالی قسم، جسے کمیونزم کہتے ہیں، اس بات میں سبھی سماج وادوں سے سہمت ہے ۔

کئی طرح کے سماج وادیوں کے وچاروں میں دو خاص فرق ہیں ۔ ایک یہ کہ کون سا ایسا سماج ہوسکتا ہے، جسمیں اوپر کہا گیا نظام قائم کیا جا سکتا ہے ۔ دوسرا یہ کہ ایسا سماج کیسے قائم کیا جا سکتا ہے ۔ سب ہی سماج وادی ویکتی گت سمپتی کے خلاف رہے ہیں ۔ مگر سماج واد کے دو اسکول کمیونزم اور

سماج واد—سوشلزم

(بھائی اونکار ناتھ شاستری)

اس سرخی پر وچار کرتے وقت سب سے پہلے یہ وچار اٹھتا ہے کہ سماج واد کیا ہے؟ یہ سوال اس لئے مشکل ہو جاتا ہے کہ سماج واد ایک قسم کا نہیں ہے۔ مشہور انگریز لیکھک لیڈلر نے اپنی 'ہسٹری آف سوشلسٹ تھاٹس' نام کی کتاب میں ۵۰۰ سے زیادہ قسم کے سماج واد کے وجود میں آنے کی بات لکھی ہے۔ اور یہ کسی کے لئے تعجب کی بات نہیں ہے۔ پھر اتنے قسم کے سماج واد کی تعریف ایک یا دو جملوں میں کرنا کیسے آسان ہوسکتا ہے۔

پھر بھی ان سبھی قسموں میں کوئی بات ملتی جلتی موجود نہیں ہے، ایسا نہیں کہا جاسکتا۔ اور سب سے بڑی بات جو ان میں اکثر پائی جاتی ہے وہ ہے ویکتی واد کے خلاف اس اصول کا وجود، جو سماج میں ویکتی یعنی فرد کو سماج سے چھوٹا درجہ دیتا ہے۔ سماج واد میں، خاص کر نئے قسموں کے سماج واد میں، سماج کو ویکتیوں سے اونچا درجہ دیتے ہوئے بتایا گیا ہے کہ سماج کے عام فائدے کے لئے کچھ انسانوں کے حقوں اور سوارتھوں کی قربانی کی جاسکتی ہے۔

پچھلی کئی صدیوں سے یورپ میں اس پر بڑی بحثیں ہوئی ہیں
کہ سماج ...

समाजवाद—सोशलिज़्म

(भाई ओंकारनाथ शास्त्री)

इस सुरखी पर विचार करते वक़्त सबसे पहिले यह विचार
ता है कि समाजवाद क्या है ? यह सवाल इसलिए मुश्किल हो
ता है कि समाजवाद एक क़िस्म का नहीं है. मशहूर अंग्रेज़ लेखक
डलर ने अपनी 'हिस्ट्री आफ़ सोशलिस्ट थाटस' नाम की किताब
५०० से ज़्यादा क़िस्म के समाजवाद के वजूद में आने की बात
खी है. और यह किसी के लिये ताज्जुब की बात नहीं है. फिर
ने क़िस्म के समाजवाद की तारीफ़ एक या दो जुमलों में करना
से आसान हो सकता है.

फिर भी इन सभी क़िस्मों में कोई बात मिलती जुलती मौजूद नहीं
, ऐसा नहीं कहा जा सकता. और सब से बड़ी बात जो इनमें
कसर पाई जाती है वह है व्यक्तिवाद के ख़िलाफ़ उस उसूल
ा वजूद, जो समाज में व्यक्ति यानी फ़र्द को समाज से छोटा दर्जा
ता है. समाजवाद में, ख़ासकर नये क़िस्मों के समाजवाद में समाज
ो व्यक्तियों से ऊँचा दर्जा देते हुए बताया गया है कि समाज के
ाम फ़ायदे के लिए कुछ इंसानों के हक़ों और स्वार्थों की क़ुरबानी
ी जा सकती है.

... से यूरप में इस पर बड़ी बहसें हुई हैं कि

सभा बुलाइ गइ थी तो उसमें शरीक होने के लिये धरती के कोने कोने से प्रेमी पहुँचे. पर अमरीकी और बरतानी सरकार ने उनको जाने की इजाज़त न दी.

आजकल अमन प्रस्ताव का काम और तेज़ हो चला है. आइये अब हम अपने देस पर भी नज़र डालें. हमारे इस भारत में भी अमन के प्रेमियों की गिनती बहुत बढ़ी चढ़ी है.

आज बापू का देस, सत्य के पुजारी की जन्म भूमि अमन चाहती है. यही वजह है कि लेखक, फ़नकार, क्लर्क, मज़दूर, किसान और विद्यार्थी पूरी उमंग और लगन के साथ इस बात का विश्वास करते हुए दस्तख़त कर रहे हैं कि "मैं अपनी जन्म भूमि को, गांधी व गौतम की ज़मीन को, अशोक व अकबर की ज़मीन को ख़ून से दाग़दार न बनाऊँगा और न ही भारत को दूसरा हिरोशिमा और नागासाकी बनने दूंगा. मैं अमन चाहता हूं, भारत का हर बासी अमन चाहता है. बापू भी तो अमन चाहते थे. तभी तो उन्हें दुनिया अहिंसा के देवता और अमन के हामी के नाम से याद करती है." हमें अपने वतन से प्यार है, वतन की गलियों से प्रेम है, हम नहीं चाहते कि भारत में भी कोरिया के से भयानक रूप पैदा हों. हम अमन चाहते हैं और धरती के हर भाई को हमारा यही एक संदेश है कि "हम अमन चाहते हैं."

बापू के प्रेमी और स्वतंत्र भारत के बासी अमन चाहते हैं.

"अमन प्रस्ताव की जय"

سبھا بلائی گئی تھی تو اُس میں شریک ہونے کے لئے دھرتی کے کونے کونے سے پریمی پہنچے . پر امریکی اور برطانی سرکار نے اُن کو جانے کی اجازت نہ دی .

آج کل امن پرستاو کا کام اور تیز ہو چلا ہے . آئیے اب ہم اپنے دیس پر بھی نظر ڈالیں . ہمارے اس بھارت میں بھی امن کے پریمیوں کی گنتی بہت بڑھی چڑھی ہے .

آج باپو کا دیس، ستیہ کے پجاری کی جنم بھومی امن چاہتی ہے . یہی وجہ ہے کہ لیکھک، فنکار، کلرک، مزدور، کسان اور ودیارتھی پوری اُمنگ اور لگن کے ساتھ اِس بات کا وشواس کرتے ہوئے دستخط کر رہے ہیں کہ "میں اپنی جنم بھومی کو، گاندھی و گوتم کی زمین کو، اشوک و اکبر کی زمین کو خون سے داغ دار نہ بناؤں گا اور نہ ہی بھارت کو دوسرا ہیروشیما اور ناگا ساکی بننے دونگا . میں امن چاہتا ہوں، بھارت کا ہر واسی امن چاہتا ہے . باپو بھی تو امن چاہتے تھے . تبھی تو اُنہیں دنیا اہنسا کے دیوتا اور امن کے حامی کے نام سے یاد کرتی ہے ." ہمیں اپنے وطن سے پیار ہے، وطن کی گلیوں سے پریم ہے، ہم نہیں چاہتے کہ بھارت میں بھی کوریا کے سے بھیانک روپ پیدا ہوں . ہم امن چاہتے ہیں اور دھرتی کے ہر بھائی کو ہمارا یہی ایک سندیش ہے کہ "ہم امن چاہتے ہیں ."

باپو کے پریمی اور سوتنتر بھارت کے باسی امن چاہتے ہیں .

"امن پرستاو کی جے"

मनवा कर के रहेंगे, हमें कितनी ही कठिनाइयों का मुक़ाबला करना पड़े, डट जाएँगे. मिस्टर विलियम ने इस बात को ज़ोर देकर कहा कि एक सिपाही भी, एक हवाई जहाज़ भी और एक डालर भी एशिया न भेजा जाए, और एशिया के देसों के ख़िलाफ़ डालरी हतकंडों को रोका जाए जो उन देसों की आज़ादी को जोंक की तरह चिमटे रह कर ख़तम करना चाहते हैं.

अमरीकी काँगरेस में कोरियन जनता पर ऐटम बम डालने का प्रस्ताव आया तो उसे पास करने की बहुत कोशिश की गई पर कोई पाँच लाख मज़दूरों के लीडर ने जब अपना बयान कौंसिल में दिया तो सब ठन्डे पड़ गये, जिसमें उसने कोरियन जनता के ख़िलाफ़ ऐटम बम के इस्तेमाल को पास करने पर अपने ग़म और ग़ुस्से का इज़्हार किया और जंग के भूतों की जी खोलकर बुराई की और अमन पर अपना भाशन दिया.

अमरीकी सरकार ने जनता को डराया, धमकाया और अब भी यह धमकियाँ जारी हैं कि अगर वह "अमन प्रस्ताव" पर दस्तख़त करेंगे तो उन्हें देस से निकाल बाहर किया जाएगा और गिरफ़्तार कर के मुक़द्मा चलाया जाएगा. आख़िर जुलाई में फ़िला डेलफ़िया के नौ लोगों को इसलिये गिरफ़्तार किया गया कि वह स्टाकहाम प्रस्ताव पर जनता के दस्तख़त ले रहे थे ऐसी ही सख़्तियां जारी हैं. न्युयार्क में पुलिस ने उस आम जलसे के न करने का हुक्म दिया जो लेबर कानफ़्रेन्स अमन सोसायटी न्युयार्क की तरफ़ से २ अगस्त

منوا کر کے رھیں گے' ھمیں کتنی ھی کٹھنائیوں کا مقابلہ کرنا پڑے' ڈٹ جائیں گے . مسٹر ولیم نے اِس بات کو زور دے کر کہا کہ ایک سپاھی بھی' ایک ھوائی جہاز بھی اور ایک ڈالر بھی ایشیا نہ بھیجا جائے . اور ایشیا کے دیسوں کے خلاف ڈالری ھتکنڈوں کو روکا جائے' جو اُن دیسوں کی آزادی کو جونک کی طرح چمٹے رہ کر ختم کرنا چاھتے ھیں .

امریکی کانگریس میں کورین جنتا پر ایٹم بم ڈالنے کا پرستاو آیا تو اُسے پاس کرنے کی بہت کوشش کی گئی پر کوئی پانچ لاکھ مزدوروں کے لیڈر نے جب اپنا بیان کونسل میں دیا تو سب ٹھنڈے پڑ گئے' جس میں اُس نے کورین جنتا کے خلاف ایٹم بم کے استعمال کو پاس کرنے پر اپنے غم اور غصہ کا اظہار کیا اور جنگ کے بھوتوں کی جی کھول کر برائی کی اور امن پر اپنا بھاشن دیا .

امریکی سرکار نے جنتا کو ڈرایا' دھمکیا اور اب بھی یہ دھمکیاں جاری ھیں کہ اگر وہ "امن پرستاو" پر دستخط کریں گے تو اُنھیں دیس سے نکال باھر کیا جائیگا اور گرفتار کرکے مقدمہ چلایا جائیگا . آخر جولائی میں فلاڈلفیا کے نو لوگوں کو اِس لئے گرفتار کیا گیا کہ وہ اسٹاک ھام پرستاو پر جنتا کے دستخط لے رھے تھے ایسی ھی سختیاں جاری ھیں . نیویارک میں پولیس نے اُس عام جلسہ کے نہ کرنے کا حکم دیا جو لیبر کانفرنس امن سوسائٹی نیویارک کی طرف سے ۲ اگست کو ھونے والا تھا . آخر اُس دن کوئی پندرہ ھزار

कारखानों के नुमाइन्दे शरीक हैं.

इब्राहम लिंकन ब्रिगेड के सूरमाओं ने, जिन्होंने स्पेन की आज़ादी के प्रस्ताव में बड़ी निडरता से हिस्सा लिया था, कोरिया में अमरीकी साम्राजशाही की जंगी पालिसी को बुरा कहा है और ट्रूमैन के इस दख़ल देने को स्पेन में हर हिटलर के दख़ल देने से मिलाया है.

शिकागो के नौजवानों की एक सभा ने स्टाकहाम अपील पर अट्ठाईस हज़ार दस्तख़त जमा किये हैं.

न्यूयॉर्क के सेन्ट्रल पार्क में जगह जगह यह नारे मोटे मोटे अक्षरों में लिखे पाए गये—"कोरिया छोड़ दो."

अमरीकी कम्युनिस्ट पारटी की नैशनल कमेटी ने एक बयान में सरकार से इस बात की माँग की है कि "कोरिया की भयानक जंग बन्द कर दी जाय और सिक्योरटी कौंसिल में आज़ाद चीन के नुमाइन्दे को जगह दी जाय. फिर कोरिया का मसला शान्ति के साथ निपटा लिया जाए."

अमरीका की मज़दूर कान-फरेन्स ने भी, जो आजकल अमन प्रस्ताव का काम कर रही है, ट्रूमैन के फ़ैसले को अच्छा नहीं समझा और कोरिया छोड़ दो का नारा लगाया.

मिस्टर विलियम फ़ास्टर, प्रधान अमरीकी कम्युनिस्ट पारटी ने अपने एक बयान में कहा है कि "कोरिया छोड़ दो" प्रस्ताव को हम

 بڑے بڑے کارخانوں کے نمائندے شریک ہیں ۔

ابراھم لنکن بریگیڈ کے سورماؤں نے' جنھوں نے اسپین کی آزادی کے پرستاؤ میں بڑی نڈرتا سے حصہ لیا تھا' کوریا میں امریکی سامراج شاھی کی جنگی پالیسی کو برا کہا ھے اور ترومین کے اِس دخل دینے کو اسپین میں ہر ھٹلر کے دخل دینے سے ملایا ھے ۔

شکاگو کے نوجوانوں کی ایک سبھا نے اسٹاک ہام اپیل پر اٹھائیس ہزار دستخط جمع کئے ھیں ۔

نیویارک کے سنٹرل پارک میں جگہ جگہ یہ نعرے موٹے موٹے اکشروں میں لکھے پائے گئے—"کوریا چھوڑ دو"

امریکی کمیونسٹ پارٹی کی نیشنل کمیٹی نے ایک بیان میں سرکار سے اِس بات کی مانگ کی ھے کہ " کوریا کی بھیانک جنگ بند کر دی جائے اور سکیورٹی کونسل میں آزاد چین کے نمائندے کو جگہ دی جائے ۔ پھر کوریا کا مسئلہ شانتی کے ساتھ نپٹا لیا جائے"۔

امریکہ کی مزدور کانفرنس نے بھی' جو آج کل امن پرستاؤ کا کام کر رھی ھے' ترومین کے فیصلے کو اچھا نہیں سمجھا اور کوریا چھوڑ دو کا نعرہ لگایا ۔

مسٹر ولیم فاسٹر' پردھان امریکی کمیونسٹ پارٹی نے اپنے ایک بیان میں کہا ھے کہ " کوریا چھوڑ دو" پرستاؤ کو ھم

अमन प्रस्ताव डालर देसों में

(भाई विक़ार ख़लील, हैदराबाद दक्खिन)

जब से कोरिया में युद्ध शुरू हुआ है तब से धरती के कोने कोने में युद्ध के ख़िलाफ़ अमन का प्रस्ताव पास हो रहा है. अब तक चालीस देसों में दस लाख से ऊपर लोगों ने स्टाकहाम के अमन प्रस्ताव पर दस्तख़त किये हैं. इनमें से लगभग पांच लाख दस्तख़त कोरिया में अमरीकी चढ़ाई के बाद हुए हैं. अमरीकी जनता भी अपनी शक्ति भर और निडरता से अमन प्रस्ताव के काम को सफल बनाने में लगी है. कठिनाइयाँ भयानक मुँह खोले उन्हें डरा रही हैं. पर वह बराबर अपना काम किये जा रहे हैं. डालर देस अमरीका में अमन प्रस्ताव से प्रेम रखने वाली करोड़ों जनता ने कोरिया में अमरीकी फ़ौजों के रहने के ख़िलाफ़ ठहराव पास किये और 'हारलियम'' में जलसा हुआ और ''कोरिया छोड़ दो' के नारे लगाये गये. ''हारलियम'' न्यूयार्क सिटी का एक प्रोलतारी मोहल्ला है जहाँ बहुत करके काले नीगारो (हब्शी) रहते हैं. इस जलसे में बहुत से डेलीगेट अफ़रीक़न जनता सभा, हारलियम लेबर कौंसिल और दूसरी सभाओं के मौजूद थे.

कामरेड पाल राबसन ने भाशन दिया और कहा कि ''कोरिया से अमरीकी फ़ौजें हटा ली जाएँ, और कोरियन जनता को आप

امن پرستاؤ ڈالر دیسوں میں

(بھائی وقار خلیل' حیدرآباد دکھن)

جب سے کوریا میں یدھ شروع ہوا ھے تب سے دھرتی کے کونے کونے میں یدھ کے خلاف امن کا پرستاؤ پاس ہو رہا ھے . اب تک چالیس دیسوں میں دس لاکھ سے اوپر لوگوں نے اِستاک ہام کے امن پرستاؤ پر دستخط کئے ھیں . اِن میں سے لگ بھگ پانچ لاکھ دستخط کوریا میں امریکی چڑھائی کے بعد ہوئے ھیں . امریکی جنتا بھی اپنی شکتی بھر اور نڈرتا سے امن پرستاؤ کے کام کو سپھل بنانے میں لگی ھے . کٹھنائیاں بھیانک منہ کھولے اُنھیں ڈرا رھی ھیں . پر وہ برابر اپنا کام کئے جا رھے ھیں . ڈالر دیس امریکہ میں امن پرستاؤ سے پریم رکھنے والی کروڑوں جنتا نے کوریا میں امریکی فوجوں کے رھنے کے خلاف ٹھہراؤ پاس کئے اور ''ھارلیم'' میں جلسہ ہوا اور ''کوریا چھوڑ دو'' کے نعرے لگائے گئے . ''ھارلیم'' نیویارک سٹی کا ایک پرولتاری محلہ ھے جہاں بہت کرکے کالے نیگرو (حبشی) رھتے ھیں . اِس جلسے میں بہت سے ڈیلی گیٹ افریقن جنتا سبھا' ھارلیم لیبر کونسل' اور دوسری سبھاؤں کے موجود تھے .

کامریڈ پال رابسن نے بھاشن دیا اور کہا کہ '' کوریا سے امریکی فوجیں ھٹالی جائیں' اور کورین جنتا کو آپ اپنا سدھار کرنے کے لئے چھوڑ دیا جائے'' . امریکہ کے ھر حصہ میں ...

ले तो यह मिलें बन्द हो जाएँगी और पूँजीवादी की पूँजी उसके लिये मिट्टी सी हो जायगी. आज की राजनीत पुरानी राजनीत नहीं रह गई है. आज का साम्राजवाद असल में पूँजीवाद का आगे बढ़ा हुआ क़दम है. गांधीजी चर्खे से अगर पूँजीवाद की ही जड़ पर हमला कर सकते थे तो निश्चय ही साम्राजवाद भी कैसे टिकता. यह चर्खा तो एक प्रतीक (मज़्हर) था. गांधीजी ग्राम उद्योगों के ज़रिये सभी पूँजीवादी मशीनों के ख़िलाफ़ थे. उन्होंने चर्खे को इसलिये अपनाया कि भोजन, कपड़ा और मकान में कपड़ा ही एक ऐसी चीज़ है जिस पर मशीनों का सबसे ज़्यादा असर पड़ा है. गांधीजी की सादगी आदमी की दूसरी ज़रूरतों का हल थी.

हिन्दुस्तानी

भाशा के बारे में भी गांधीजी अपनी 'पीर पराई जाने रे' वाली अहिंसा को काम में लाने से न चूके. हिन्दुस्तानी ज़बान की कल्पना इसकी सब से बड़ी मिसाल थी हिन्दुस्तान में हिन्दी ही एक ऐसी ज़बान थी जो राश्ट्रभाशा हो सकती थी. हिन्दी में संस्कृत के शब्दों को लाकर लोगों ने उसकी शकल जिस तरह बदलने की कोशिश शुरू कर दी थी, गांधीजी उसके विरोधी थे. गांधीजी का ख़याल था कि राश्ट्रभाशा आम फ़हम ज़बान होनी चाहिये न कि कुछ पंडितों की. उनका कहना था कि हिन्दी और उर्दू के मेल से क्यों न कोई ऐसी भाशा ढूँढ निकाली जाय जिसमें न संस्कृत के कड़े शब्द हों और न फ़ारसी या अरबी के. वैसे फ़ारसी और अरबी के बहुत से शब्द हिन्दी ने पचा ही रखे हैं. थोड़े से और ले लेने से

ہو جائیںگی اور پونجی وادی کی پونجی اس کے لئے مٹی سی ہو جائیگی ۔ آج کی راج نیت پرانی راج نیت نہیں رہ گئی ہے ۔ آج کا سامراج واد اصل میں پونجی واد کا آگے بڑھا ہوا قدم ہے ۔ گاندھی جی چرخے سے اگر پونجی واد کی ہی جڑ پر حملہ کر سکتے تھے تو نشچے ہی سامراجواد بھی کیسے ٹکتا ۔ یہ چرخہ تو ایک پرتیک (مظہر) تھا ۔ گاندھی جی گرام اُدیوگوں کے ذریعے سبھی پونجی وادی مشینوں کے خلاف تھے ۔ انہوں نے چرخے کو اس لئے اپنایا کہ بھوجن' کپڑا اور مکان میں کپڑا ہی ایک ایسی چیز ہے جس پر مشینوں کا سب سے زیادہ اثر پڑا ہے ۔ گاندھی جی کی سادگی آدمی کی دوسری ضرورتوں کا حل تھی ۔

ہندستانی

بھاشا کے بارے میں بھی گاندھی جی اپنی 'پیر پرائی جانے رے' والی اہنسا کو کام میں لانے سے نہ چوکے ۔ ہندستانی زبان کی کلپنا اس کی سب سے بڑی مثال تھی ۔ ہندستان میں ہندی ہی ایک ایسی زبان تھی جو راشٹر بھاشا ہو سکتی تھی ۔ ہندی میں سنسکرت کے شبدوں کو لاکر لوگوں نے اُسکی شکل جس طرح بدلنے کی کوشش شروع کر دی تھی' گاندھی جی اُس کے وِرودھی تھے ۔ گاندھی جی کا خیال تھا کہ راشٹر بھاشا عام فہم زبان ہونی چاہئے نہ کہ کچھ پنڈتوں کی ۔ اُن کا کہنا تھا کہ ہندی اور اُردو کے میل سے کیوں نہ کوئی ایسی بھاشا ڈھونڈھ نکالی جائے جس میں نہ سنسکرت کے کڑے شبد ہوں اور نہ فارسی یا عربی کے ۔ ویسے فارسی اور عربی کے بہت سے شبد ہندی نے پچا ہی رکھے ہیں ۔ تھوڑے سے اور لے لینے سے

... پر تیار ہو گئے . وہ آتم بل کے آگے دنیاوی
طاقتوں کو اوچھی سمجھتے تھے . بات بھی در اصل ٹھیک ہی ہے .
کسی ڈرپوک آدمی کے ہاتھ میں تلوار اُسکی کچھ مدد نہیں کر سکتی ،
وہ اس سے آگے کی بات سوچتے تھے اور اُنکا خیال تھا کہ وہ آدمی اُس
سے زیادہ مضبوط ہے جو خالی ہاتھ کسی تلوار والے آدمی کے سامنے
جاکر کھڑے ہونے کی ہمت کر سکے . یہی آتم بل تھا جس سے
ہیروشیما میں ایٹم بم گرنے کے بعد گاندھی جی نے کہا تھا کہ میں ایٹم
بم کے سامنے اکیلے کھڑا ہو سکتا ہوں . یہ تو ہوئی گاندھی جی کی
اہنسا کی ایک جھلک . لیکن ہمیں تو اِس پہلو پر غور کرنا ہے
کہ گاندھی جی کے جیون کے اور سبھی پہلوؤں میں اہنسا کا کیا
استھان ہے .

چرخہ

گاندھی جی چرخے کو اہنسا کا انگ مانتے تھے . جب سے اُنہوں
نے ملک کی آزادی کی آواز اُٹھائی ' اُنہوں نے چرخے کی بھی بات
اُٹھائی . وہ کہا کرتے تھے کہ چرخہ ہمیں ایک سال کے اندر سوراج
دلا سکتا ہے . ہم نے اُنکی یہ بات نہ مانی یا جتنی مانی بھی وہ
اپنی خود غرضی کی شکل میں مانی نہیں تو آج کے پونجی واد
کا در اصل اہنساتمک حل چرخہ ہی ہے . ملوں کے کھل جانے کے
بعد جسطرح دھن کچھ لوگوں کے پاس جمع ہونے لگا اور جس کے
نتیجے میں عام لوگوں کا خون چوسا جانے لگا اُس کا مارکس وادی
علاج تو تھی کرانتی . مارکس وادیوں کا خیال ہے کہ بنا خون بہائے
پونجی واد سے جان چھوٹ ہی نہیں سکتی . لیکن گاندھی جی
تو اہنسا کے [illegible] ہے . وہ اس بات کے [illegible]

। सादा चेक देने पर तैयार हो गये. वह आत्मबल के आगे दुनि-
यावी ताक़तों को ओछी समझते थे. बात भी दर असल ठीक ही है.
किसी डरपोक आदमी के हाथ में तलवार उसकी कुछ मदद नहीं कर
सकती. वह इससे आगे की बात सोचते थे और उनका ख़याल था कि
वह आदमी उससे ज़्यादा मज़बूत है जो ख़ाली हाथ किसी तलवार वाले
आदमी के सामने जा कर खड़े होने की हिम्मत कर सके. यही
आत्मबल था जिससे हिरोशिमा में ऐटम बम गिरने के बाद गांधी
जी ने कहा था कि मैं ऐटम बम के सामने अकेले खड़ा हो सकता हूं.
यह तो हुई गांधी जी की अहिंसा की एक झलक. लेकिन हमें तो इस
पहलू पर ग़ौर करना है कि गांधी जी के जीवन के और सभी पह-
लुओं में अहिंसा का क्या स्थान है.

चरखा

गांधी जी चरखे को अहिंसा का अंग मानते थे. जब से
उन्होंने मुल्क की आज़ादी की आवाज़ उठाई, उन्होंने चरखे की भी
बात उठाई. वह कहा करते थे कि चरखा हमें एक साल के अंदर
स्वराज दिला सकता है. हमने उनकी यह बात न मानी या जितनी
मानी भी वह अपनी ख़ुदग़र्ज़ी की शकल में मानी नहीं तो आज के
पूँजीवाद का दरअसल अहिंसात्मक हल चरखा ही है. मिलों के
खुल जाने के बाद जिस तरह धन कुछ लोगों के पास जमा होने लगा
और जिसके नतीजे में आम लोगों का ख़ून चूसा जाने लगा उसका
मार्क्सवादी इलाज तो थी क्रान्ति. मार्क्सवादियों का ख़याल है कि बिना
ख़ून बहाये पूँजीवाद से जान छूट ही नहीं सकती लेकिन गांधीजी

गांधी जी और अहिंसा के प्रयोग

(भाई ज्ञान चन्द)

महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी और हज़रत ईसा के बाद हज़ारों बरस का अंतर देकर महात्मा गांधी ही पहले आदमी हुए जिन्होंने अपने जीवन के हर मैदान में अहिंसा से काम लिया. महात्मा गांधी की अहिंसा महात्मा बुद्ध, महावीर या ईसा की अहिंसा से कुछ अलग थी और व्यापक (जामे) थी. यह भी कहा जा सकता है कि इसी व्यापकता का यह फल था कि वह अपने इतने तजरबों में सफल हो पाए. लेकिन मूल रूप में महात्मा गांधी की अहिंसा भी महात्मा बुद्ध, महावीर और ईसा की अहिंसा ही थी और उन्होंने किसी तरह उसका रूप बिगाड़ा नहीं. सभी की तरह गांधी जी की अहिंसा के तजरबे का साधन आत्मबल था. इसी लिये गांधी जी ने कमज़ोरों के हथियार उठाने को भी अहिंसा ही माना. गांधी जी पूरे वैश्नव थे और उनके विश्नु और उनका धर्म असल में बड़ा व्यापक था. इसीलिये उनकी नज़र में सम्प्रादायगत यानी फ़िरक़ेवाराना कोई भेद भाव नहीं था. उनका प्यारा भजन था "वैश्नव जन तो तेने कहिये, जे पीर पराई जाने रे." इस 'पीर पराई' को वह इतनी अहम्मियत देते थे कि बड़ी लड़ाई में जब क्रान्तकारियों ने अंगरेज़ी सरकार को धक्का देने की बात सोची तब उन्होंने उसकी मुख़ालफ़त की. मुसलमान हिन्दुस्तान में कम थे. यह उनकी पीर पराई की ही भावना थी कि वह मुसलमानों को गोलमेज़ कानफ़रेन्स

گاندھی جی اور اھنسا کے پریوگ

(بھائی گیان چند)

مہاتما بودھ، مہاویر سوامی اور حضرت عیسیٰ کے بعد ہزاروں برس کا انتر دیکر مہاتما گاندھی ہی پہلے آدمی ہوئے جنھوں نے اپنے جیون کے ہر میدان میں اھنسا سے کام لیا . مہاتما گاندھی کی اھنسا مہاتما بودھ، مہاویر یا عیسیٰ کی اھنسا سے کچھ الگ تھی اور ویاپک (جامع) تھی . یہ بھی کہا جا سکتا ہے کہ اُسی ویاپکتا کا یہ پھل تھا کہ وہ اپنے اتنے تجربوں میں سپھل ہو پائے . لیکن مول روپ میں مہاتما گاندھی کی اھنسا بھی مہاتما بودھ، مہاویر اور عیسیٰ کی اھنسا ہی تھی اور اُنھوں نے کسی طرح اُس کا روپ بگاڑا نہیں . سبھی کی طرح گاندھی جی کی اھنسا کے تجربے کا سادھن آتم بل تھا . اِسی لئے گاندھی جی نے کمزوروں کے ھتھیار اُٹھانے کو بھی اھنسا ہی مانا . گاندھی جی پورے ویشنو تھے اور اُنکے وشنو اور اُنکا دھرم اصل میں بڑا ویاپک تھا . اسی لئے اُنکی نظر میں سمپردائیگت یعنی فرقہ‌وارانہ کوئی بھید بھاو نہیں تھا . اُنکا پیارا بھجن تھا— " ویشنو جن تو تینے کہئے' جے پیر پرائی جانے رے ." اس 'پیر پرائی' کو وہ اتنی اھمیت دیتے تھے کہ بڑی لڑائی میں جب کرانتکاریوں نے انگریزی سرکار کو دھکا دینے کی بات سوچی تب اُنھوں نے اُسکی مخالفت کی . مسلمان ھندستان میں کم تھے . یہ اُنکی پیر پرائی کی ہی بھاونا تھی کہ وہ مسلمانوں کو گول میز کانفرنس

यह घाट है जिसको आजादी के महान लीडर, नेकी और एकता के नेता ने पार करके "परलोक" का सफ़र किया. और सब के सब उस घाट से अपने लीडर और सलाहकार, अपने हमदर्द और ग़मगुसार का दामन छोड़ कर और आग में उसको झोंक कर अपने अपने घरों को वापस लौटे.

हाथ मलते और आँसू टपकाते,
उदास उदास, निढाल निढाल
ग़मगीन ग़मगीन, ख़ामोश ख़ामोश
जैसे कोई चीज़ खोकर या जैसे लुट लुटा कर,

बेशक वह एक मोती था. अनमोल मोती—भारत भंडार का, जिसको खो दिया.

और बड़ा धन था आज़ाद शासन का—मगर अफ़सोस वह हाथ से जाता रहा—अब हाथ मलने के सिवा चारा क्या ?

३० जनवरी बेटे के हाथ से बाप के क़त्ल का दिन है और भारत के यतीम होने का,

इसी दुर्घटना और बड़ी दुर्घटना के लिहाज़ से

३० जनवरी, आज़ाद भारत के इतिहास का तारीख़ी दिवस है और आज़ादी की किताब का एक ख़ूनी वरक़,

३१ जनवरी को जब वह महात्मा राजघाट पर आग में जल रहा था और हर तरफ़ संदल ही संदल बस रहा था, उसी धुआँधार और ख़ुशबू दार फ़िज़ा में हमने देखा :

एकता का झंडा गिर रहा था.
प्रेम का सूरज डूब रहा था.

जिसका मतलब यह कि महात्मा जी के जीवन के साथ साथ जनवरी ने भी अपना जीवन ख़तम कर दिया.

وہ گھاٹ ہے جسکو آزادی کے مہان لیڈر، نیکی اور ایکتا کے نیتا نے پار کر کے ''پرلوک'' کا سفر کیا . اور سب کے سب اُس گھاٹ سے اپنے لیڈر اور صلاح کار، اپنے ھمدرد اور غم گسار کا دامن چھوڑ کر اور آگ میں اُس کو جھونک کر اپنے اپنے گھروں کو واپس لوٹے .

ھاتھ ملتے اور آنسو ٹپکاتے،
اُداس اُداس، نڈھال نڈھال
غمگین غمگین، خاموش خاموش
جیسے کوئی چیز کھو کر یا جیسے لٹ لٹا کر،

بے شک وہ ایک موتی تھا . انمول موتی—بھارت بھنڈار کا، جسکو کھو دیا .

اور بڑا دھن تھا آزاد شاسن کا—مگر افسوس وہ ھاتھ سے جاتا رہا—اب ھاتھ ملنے کے سوا چارہ کیا ؟

۳۰ جنوری بیٹے کے ھاتھ سے باپ کے قتل کا دن ہے اور بھارت کے یتیم ہونے کا،

اِسی دُر گھٹنا اور بڑی دُر گھٹنا کے لحاظ سے

۳۰ جنوری، آزاد بھارت کے اتہاس کا تاریخی دیوس ہے اور آزادی کی کتاب کا ایک خونی ورق،

۳۱ جنوری کو جب وہ مہاتما راج گھاٹ پر آگ میں جل رہا تھا اور ہر طرف صندل ہی صندل بس رہا تھا . اُسی دھواں دھار اور خوشبو دار فضا میں ہم نے دیکھا :

ایکتا کا جھنڈا گر رہا تھا .
پریم کا سورج ڈوب رہا تھا .

جس کا مطلب یہ کہ مہاتما جی کے جیون کے ساتھ ساتھ جنوری نے بھی اپنا جیون ختم کر دیا .

पात का भेद भाव न हो.

जिसमें प्रेम की प्यास हो. जिसमें एकता की चाह हो और समता की आवाज़ हो.

वह है सही इंसानियत का मेयार और शुद्ध जीवन का विकास !

इसी के अन्दर आत्म विकास है और सत्य का प्रकाश !

महात्मा गांधी की ज़िंदगी बड़ी सीधी सादी थी. यह कहना ठीक कि उनकी ज़िंदगी सादगी में बिलकुल खादी थी. वह जिधर चाहते बड़ी ख़ामोशी से गुज़र जाते थे. वह अपने साथ टीम टाम न रखते थे न शान शौकत के बेकार और बनावटी सामान—मगर महात्मा की भस्म का जुलूस शानदार था--सारी सरकार, सारा दरबार, सारी फ़ौज और सारी क़ौम अपने अपने रंगों से उसको रौनक़ दिये हुए थी. उसकी शान बढ़ाए हुए थी. मीलों तक मख़लूक़ की रेल पेल थी. और बाढ़ ऐसी लगी थी जैसे इंसानों का समन्दर ठाटें मार रहा हो. पानी की बाढ़ में जैसे मौज के ऊपर मौज चढ़ती है वैसे ही इंसानों की इस बाढ़ में आदमी के ऊपर आदमी चढ़ रहा था. क्योंकि बाढ़ का जोश लमहे लमहे बढ़ रहा था.

वह भी एक अजीब समाँ था.

और अजीब कैफ़ियत का आलम !

३१ जनवरी जमना नदी के लिये बड़ा ही शानदार और यादगार दिन था. उस दिन मिले जुले जुलूसों और क़ौमी ग्रूपों के साथ उसके राजघाट पर क़ौम के बाप की सवारी बड़े ठाठ बाठ से पहुँची—वही

میں جات پات کا بھید بھاؤ نہو ۔

جس میں پریم کی پیاس ہو ۔ جس میں ایکتا کی چاہ ہو اور سمتا کی آواز ہو ۔

یہ ہے صحیح انسانیت کا معیار اور شدھ جیون کا وکاس !

اِسی کے اندر آتم وکاس ہے اور ستیہ کا پرکاش !

مہاتما گاندھی کی زندگی بڑی سیدھی سادی تھی ۔ یہ کہنا ٹھیک کہ ان کی زندگی سادگی میں بالکل کھادی تھی ۔ وہ جدھر چاہتے بڑی خاموشی سے گذر جاتے تھے ۔ وہ اپنے ساتھ ٹوم ٹام نہ رکھتے تھے نہ شان شوکت کے بےکار اور بناوٹی سامان—مگر مہاتما کی بھسم کا جلوس شاندار تھا—ساری سرکار، سارا دربار، ساری فوج اور ساری قوم اپنے اپنے رنگوں سے اُس کو رونق دئے ہوئے تھی ۔ اُس کی شان بڑھائے ہوئے تھی ۔ میلوں تک مخلوق کی ریل پیل تھی ۔ اور باڑھ ایسی لگی تھی جیسے انسانوں کا سمندر ٹھاٹیں مار رہا ہو ۔ پانی کی باڑھ میں جیسے موج کے اوپر موج چڑھتی ہے ویسے ہی انسانوں کی اس باڑھ میں آدمی کے اوپر آدمی چڑھ رہا تھا ۔ کیونکہ باڑھ کا جوش لمحے لمحے بڑھ رہا تھا ۔

وہ بھی ایک عجیب سماں تھا ۔

اور عجیب کیفیت کا عالم !

۳۱ جنوری جمنا ندی کے لئے بڑا ہی شاندار اور یادگار دن تھا ۔ اُس دن ملے جلے جلوسوں اور قومی گروپوں کے ساتھ اُس کے راج گھاٹ پر قوم کے باپ کی سواری بڑے ٹھاٹھ باٹھ سے پہونچی—یہی

वह दो दिवस अहिंसा के लिये हिन्द की तारीख़ में हिंसा दिवस हैं.

राष्ट्र पिता अब हमारे बीच में नहीं, माता की गोदी में भी नहीं. न उसके शरीर का कोई भी भाग आज क़ौम के पास है मगर उसके अनमोल शब्द और सुनहरे संदेश मौजूद हैं. क़ौम की रहबरी के लिये और रोशनी दिखाने के लिये—क्योंकि वह सच्चे हैं और सच्चाई अमर है सो वह बाक़ी रहने वाले हैं और अपनी रोशनी क़ायम रखने वाले—इसलिये आवश्यकता है अच्छा उनका उपयोग करने की. जिसने जितना अच्छा उनका उपयोग किया उतना ही अच्छा उसने अपनी जिम्मेदारी को समझा और अपने कर्त्तव्य को पहचाना. इसीमें उसका भला है और इसी में उसका आदर्श है वरना केवल वह गन्दी मिट्टी का एक पुतला है—नापाक और नाकारा !

इंसान ख़तम हो जाता है और उसका शरीर भी. उसकी बोटी बोटी भी और हड्डी हड्डी भी—कुछ भी बाक़ी नहीं रहता. इसलिये कि इंसान और उसके शरीर का हर तत्व भौतिक है और फ़ानी यानी नाशवान—बाक़ी रहने वाली कोई चीज़ है तो वह नेकी है. नेकी अमर है और नेकी ही पाक ज़िन्दगी का पवित्र जौहर है.

यह जौहर क्या है ?

शुद्ध जीवन और सत्य के प्रकाश का सार

یہ دو دیوس اهنسا کے لئے هند کی تاریخ میں هنسا دیوس هیں۔

راشٹر پتا اب همارے بیچ میں نہیں، ماتا کی گودی میں بھی نہیں۔ نہ اُس کے شریر کا کوئی بھی بھاگ آج قوم کے پاس ہے مگر اُس کے انمول شبد اور سنہرے سندیش موجود هیں۔ قوم کی رهبری کے لئے اور روشنی دکھانے کے لئے—کیونکہ وہ سچے هیں اور سچائی امر ہے سو وہ باقی رهنے والے هیں اور اپنی روشنی قائم رکھنے والے—اِس لئے آوشیکتا ہے اچھا اُن کا اپیوگ کرنے کی۔ جس نے جتنا اچھا اُن کا اُپیوگ کیا اُتنا هی اچھا اُس نے اپنی ذمےداری کو سمجھا اور اپنے کرتویہ کو پہچانا۔ اِسی میں اُس کا بھلا ہے اور اِسی میں اُس کا آدرش ہے ورنہ کیول وہ گندی مٹی کا ایک پتلا ہے—ناپاک اور ناکارہ !

اِنسان ختم هوجاتا ہے اور اُس کا شریر بھی۔ اُس کی بوٹی بوٹی بھی اور هڈی هڈی بھی—کچھ بھی باقی نہیں رهتا۔ اِس لئے کہ اِنسان اور اُس کے شریر کا هر تتو بھوتک ہے اور فانی یعنی ناش وان—باقی رهنے والی کوئی چیز ہے تو وہ نیکی ہے۔ نیکی امر ہے اور نیکی هی پاک زندگی کا پوتر جوهر ہے۔

یہ جوهر کیا ہے ؟

شدھ جیون اور ستیہ کے پرکاش کا سار

اِسی کے اندر زندہ آتما کی پکار ہے۔

पर उजाला फैलाए हुए था.

३० जनवरी महात्मा जी की ज़िन्दगी का वह यादगार दिन है कि जिस दिन उन्होंने " हे राम " कह कर इस फ़िरक़ेदारी दुनिया से अपने जीवन का नाता तोड़ा.

रेडियो ने दिल्ली से बुरी तरह रोना पीटना शुरू किया. अपनी बेक़रारी की हालत में, बेताबाना चीख़ पुकार से सारे संसार में मातम की लहरें दौड़ा कर ग़म की गूँज मचा दी. भूगोल मातमी लहरों में घिर गया.

३० जनवरी को इस दुर्घटना से देस देस ग़म के बादल छाये और आकाश आकाश ग़म की आहें चढ़ीं.

३० जनवरी को एकता के प्रचारक ने वीरता के साथ "बिरला हाउस" के अन्दर "यमराज" का स्वागत किया.

इसी तारीख़ उस ने मौत की गोली खाई और गोली खाने के दस मिनट बाद "शहादत का जाम" पिया.

३० जनवरी को अहिंसा के उपदेशक ने उपदेश स्थान के "लान" पर ख़ूनी स्नान किया—और

३१ जनवरी को राजघाट के मैदान में अग्नि स्नान लिया.

३० जनवरी अहिंसा के प्रचारक के लिये ख़ून का दिन था—और

३१ जनवरी आग का दिन !

پر أجالا پھیلائے ہوئے تھا .

۳۰ جنوری مہاتما جی کی زندگی کا وہ یادگار دن ہے کہ جس دن اُنھوں نے " ہے رام " کہکر اس فرقے داری دنیا سے اپنے جیون کا ناتا توڑا .

ریڈیو نے دلی سے بری طرح رونا پیٹنا شروع کیا . اپنی بے قراری کی حالت میں' بےتابانہ چیخ پکار سے سارے سنسار میں ماتم کی لہریں دوڑا کر غم کی گونج مچا دی . بھوگول ماتمی لہروں میں گھر گیا .

۳۰ جنوری کو اِس درگھٹنا سے دیس دیس غم کے بادل چھائے اور آکاش آکاش غم کی آہیں چڑھیں .

۳۰ جنوری کو ایکتا کے پرچارک نے ویرتا کے ساتھ "برلا هاؤس" کے اندر " یمراج " کا سواگت کیا .

اُسی تاریخ اُس نے موت کی گولی کھائی اور گولی کھانے کے دس منٹ بعد " شہادت کا جام " پیا .

۳۰ جنوری کو اهنسا کے اُپدیشک نے اُپدیش استھان کے "لان" پر خونی اسنان کیا—اور

۳۱ جنوری کو راج گھاٹ کے میدان میں اگنی اسنان لیا .

۳۰ جنوری اهنسا کے پرچارک کے لئے خون کا دن تھا—اور

۳۱ جنوری آگ کا دن !

३० और ३१ जनवरी

(भाई अब्दुल हलीम अंसारी)

३० जनवरी सारी दुनिया के लिये मातम का दिन था इसलिये कि इसी दिन दुनिया की एक महान हस्ती अपनी महान अभिलाशा के साथ दुनिया से उठी.

अपने ख़ून के निशान इस हिंसक दुनिया में छोड़ कर

इस बदकार व फिरक़ेदार दुनिया की बदकारियों और उसके अत्याचारियों से मुंह मोड़ कर.

हिन्दुस्तान उसका जन्म स्थान था. इसलिये हिन्दुस्तान के लिये ख़ास तौर पर उसका सोग और मातम, उसका शोक और ग़म अधिक !

ठीक इसी तीस की शाम को दुशमन ने महात्मा गांधी का काम तमाम किया और महात्मा जी ने बलिदान का पद पाकर शहीदों में नाम किया.

३० जनवरी को एकता और इंसानियत के दुशमन ने "एकता" पर "शूट" किया और "इंसानियत" का ख़ून किया—गोया बदी के शैतान ने नेकी पर वार किया और वह सफल हुआ.

۳۰ اور ۳۱ جنوری

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

۳۰ جنوری ساری دنیا کے لئے ماتم کا دن تھا اِس لئے کہ اسی دن دنیا کی ایک مہان ہستی اپنی مہان ابھیلاشا کے ساتھ دنیا سے اُٹھی ۔

اپنے خون کے نشان اِس ہنسک دنیا میں چھوڑ کر

اِس بدکار و فرقے دار دنیا کی بدکاریوں اور اُس کے اتیاچاریوں سے منہ موڑ کر

ہندستان اُس کا جنم استھان تھا ۔ اِس لئے ہندستان کے لئے خاص طور پر اُس کا سوگ اور ماتم، اُس کا شوک اور غم ادھک !

ٹھیک اِسی تیس کی شام کو دشمن نے مہاتما گاندھی کا کام تمام کیا اور مہاتما جی نے بلیدان کا پد پاکر شہیدوں میں نام کیا ۔

۳۰ جنوری کو ایکتا اور انسانیت کے دشمن نے " ایکتا " پر " شوٹ " کیا اور " انسانیت " کا خون کیا—گویا بدی کے شیطان نے نیکی پر وار کیا اور وہ سپھل ہوا ۔

لیکن شیطان پر دنیا نے

पर इतने से काम न चलेगा. आप को अपने अनन्त बल से इन का मन भी फेरना पड़ेगा और इन्हें ऐसा बना देना पड़ेगा कि वह आप की पूजा करते करते हम से इतना प्यार करने लगें कि हमारे दुनिया से जाने के बाद आप के पैरों में यह हमें भी कहीं जगह देकर ऐसे ही हमारे गीत गाते रहें जैसे आज हम आप के गा रहे हैं.

बापू, हम निर्दोश हैं. हमारा दिल साफ़ है और उसी साफ़ दिली के साथ हम बोलते हैं :

महात्मा गांधी की जय !

३०-११-'५०. —भगवानदीन

मेरी राय में हिन्दुस्तान की और सारे संसार की आर्थिक व्यवस्था ऐसी होनी चाहिये कि उसमें कोई बिना खाने और कपड़े के न रहने पावे. दूसरे शब्दों में हर एक को अपनी गुज़र बसर के लिये काफ़ी मिलना ही चाहिये. यह आदर्श तभी पूरा होगा जब ज़िन्दगी की बुनियादी ज़रूरतें पूरी करने के साधनों पर जनता का अधिकार रहेगा.

यह साधन सबको बेरोक टोक के मिलने चाहियें. उन्हें दूसरों को लूटने के लिये लेन देन की चीज़ें हरगिज़ नहीं बनने देना चाहिये.

—महात्मा गांधी

پر اتنے سے کم نہ چلیگا. اپکو اپنے اننت بل سے اِن کا من بھی پھیرنا پریگا اور اِنھیں ایسا بنا دینا پریگا کہ یہ آپکی پوجا کرتے کرتے ہم سے اتنا پیار کرنے لگیں کہ ہمارے دنیا سے جانے کے بعد آپکے پیروں میں یہ ہمیں بھی کہیں جگہ دے کر ایسے ہی ہمارے گیت گاتے رہیں جیسے آج ہم آپ کے گا رہے ہیں .

باپو، ہم نردوش ہیں . ہمارا دل صاف ہے اور اُسی صاف دلی کے ساتھ ہم بولتے ہیں :

مہاتما گاندھی کی جے !

۳۰-۱۱-۵۰ —بھگوان دین

میری رائے میں ہندستان کی اور سارے سنسار کی آرتھک ویوستھا ایسی ہونی چاہئیے کہ اُس میں کوئی بنا کھانے اور کپڑے کے نہ رہنے پاوے . دوسرے شبدوں میں ہر ایک کو اپنی گزر بسر کے لئے کافی کام ملنا چاہئیے . یہ آدرش تبھی پورا ہوگا جب زندگی کی بنیادی ضرورتیں پوری کرنے کے سادھنوں پر جنتا کا ادھیکار رہے گا .

یہ سادھن سب کو بے روک ٹوک کے ملنے چاہئیں . اُنہیں دوسروں کو لوٹنے کے لئے لین دین کی چیزیں ہرگز نہیں بننے دینا چاہئیے .

—مہاتما گاندھی

हर घर में माँएँ अपने बेटे बेटियों को चुपके से आलमारी खोल कर बिस्कुट चुराते देख कर मचाती हैं. असल में इस तरह के शोर और ग़ुस्से के पीछे बेहद मुहब्बत छिपी रहती है. यह बात बच्चे भी समझते हैं और आप तो जानते ही हैं. भारत की आज की सरकार कोई अंगरेज़ी सरकार की तरह झूटी माई बाप बनी हुई नहीं है. वह तो सच्चे मानों में माई बाप है. उसकी हर धमकी के पीछे बेहद मुहब्बत छिपी रहती है. तब ही तो हम निडर होकर अपने उस खेल कूद में लगे रहते हैं जिसे आप चोर बाज़ारी कहते हैं.

बापू, हम आपके अनुयाई हैं यानी आपके पीछे पीछे रहने वाले. आप अपने जीते जी जो काम कर गये उन की नकल कर के अगर हम बहुत से वैसे ही काम कर डालें तो यह आप से आगे बढ़ जाना होगा और ऐसी बेअदबी हम कैसे कर सकते हैं. और आप भी शायद इस बेअदबी को गवारा न करेंगे. लोग हम से वर्ने भेद कर शादी करने को कहते हैं. यह तो आप से आगे बढ़ना होगा. जो आप कर गये यानी जो आप के सामने हो गया वह ठीक, हमें मंजूर. पर हम पीछे चलने वाले होकर यानी आप के अनुयाई होकर आगे कैसे बढ़ सकते हैं. न जाने इस छोटी सी बात को भारत वासी क्यों नहीं समझ पाते और आये दिन हमको बे मतलब सताते रहते हैं.

बापू, आप हमें सुखमय छोड़ गये हैं और सुख छोड़ कर अब

هر گھر میں مائیں اپنے بیٹے بیٹیوں کو چپکے سے الماری کھول کر بسکٹ چراتے دیکھکر مچاتی ہیں. اصل میں اس طرح کے شور اور غصے کے پیچھے بے حد محبت چھپی رہتی ہے. یہ بات بچے بھی سمجھتے ہیں اور آپ تو جانتے ہی ہیں. بھارت کی آج کی سرکار کوئی انگریزی سرکار کی طرح جھوٹی مائی باپ بنی ہوئی نہیں ہے. وہ تو سچے معنوں میں مائی باپ ہے. اُس کی ہر دھمکی کے پیچھے بے حد محبت چھپی رہتی ہے؛ تب ہی تو ہم نڈر ہو کر اپنے اُس کھیل کود میں لگے رہتے ہیں جسے آپ چور بازاری کہتے ہیں.

باپو، ہم آپ کے انویائی ہیں یعنی آپ کے پیچھے پیچھے رہنے والے. آپ اپنے جیتے جی جو کام کر گئے اُن کی نقل کرکے اگر ہم بہت سے ویسے ہی کام کر ڈالیں تو یہ آپ سے آگے بڑھ جانا ہوگا اور ایسی بے ادبی ہم کیسے کر سکتے ہیں. اور آپ بھی شاید اس بے ادبی کو گوارا نہ کرینگے. لوگ ہم سے ورن بھید کر شادی کرنے کو کہتے ہیں. یہ تو آپ سے آگے بڑھنا ہوگا. جو آپ کر گئے یعنی جو آپ کے سامنے ہوگیا وہ ٹھیک، ہمیں منظور. پر ہم پیچھے چلنے والے ہوکر یعنی آپ کے انویائی ہوکر آگے کیسے بڑھ سکتے ہیں. نہ جانے اِس چھوٹی سی بات کو بھارت واسی کیوں نہیں سمجھ پاتے اور آئے دن ہم کو بے مطلب ستاتے رہتے ہیں.

باپو، آپ ہمیں سکھ سے چھوڑ گئے ہیں اور سکھ چھوڑ کر اب ہم دکھ میں پڑیں اور آپ کو دکھی بنائیں یہ ہم سے نہیں،

बेटी से एक गुड़िया मोल ले लेती है और भाई पांच रुपये दे कर अपनी छोटी बहन से उस की बनाई हुई मिट्टी की पूरी मोल ले लेता है. बस इसी तरह का आनन्द आज आप के बनाये भारत-घर में हो रहा है. कुछ पागल इस को चोर बाजार और काला बाजार कह कर पुकारते हैं मानो वह हिसाब पी गये हों.

बापू, घर में झूट बोलना कोई झूट बोलना है ? झूटी कहानियाँ सुना कर हम खुश होते हैं और सुनने वाले बच्चे हंसते हैं और कभी कभी तो उस से बड़ी सीख लेते हैं. यह झूट बोलना झूट बोलना नहीं है. यह तो सच से भी बढ़ कर काम की चीज़ है इसलिये सच ही है. घर की चोरी को कब किसने चोरी माना है. माखन चोर भगवान के देस में आपसी चोरी को चोरी कहना नास्तिकता नहीं तो क्या ? बस बापू यह हम पर उंगली उठाने वाले या तो पक्के नास्तिक हैं नहीं तो फिर सिर फिरे हैं.

बापू, रही यह बात कि कभी कभी हमारे बड़े नेता यानी आपके आस पास रहे नेता, चोर बाजारी का शोर मचा देते हैं और साथ साथ वह भी कहते हैं कि हम क़ानून बना कर इस चोर बाजारी का जल्द खातमा कर देंगे. इस से कहीं आप यह न समझ बैठना कि भारत में सचमुच ऐसी चोर बाजारी चल रही है जो बुरा है और जिसे दूर करना ही चाहिये. बापू हमारे नेताओं के इस शोर को बस आप इतना ही महत्व दें जितना यशोदा के उस शोर को जो वह कृष्ण जी को दही चुराते देख कर मचाया करती थीं या जिस तरह आज भी

سے ایک گڑیا مول لے لیتی ہے اور بھائی پانچ روپیہ دے کر اپنی چھوٹی بہن سے اُس کی بنائی ہوئی مٹی کی پوری مول لے لیتا ہے . بس اسی طرح کا آنند آج آپ کے بنائے بھارت . گھر میں ہورہا ہے . کچھ پاگل اسکو چور بازار اور کالا بازار کہہ کر پکارتے ہیں مانو وہ حساب پی گئے ہوں .

باپو' گھر میں جھوٹ بولنا کوئی جھوٹ بولنا ہے؟ جھوٹی کہانیاں سنا کر ہم خوش ہوتے ہیں اور سننے والے بچے ہنستے ہیں اور کبھی کبھی تو اُس سے بڑی سیکھ لیتے ہیں. یہ جھوٹ بولنا جھوٹ بولنا نہیں ہے . یہ تو سچ سے بھی بڑھکر کام کی چیز ہے اس لئے سچ ہی ہے . گھر کی چوری کو کب کس نے چوری مانا ہے . ماکھن چور بھگوان کے دیس میں آپسی چوری کو چوری کہنا ناستکتا نہیں تو کیا ہے ؟ بس باپو یہ ہم پر اُنگلی اٹھانے والے یا تو پکے ناستک ہیں نہیں تو پھر سر پھرے ہیں .

باپو' رہی یہ بات کہ کبھی کبھی ہمارے بڑے نیتا یعنی آپ کے آس پاس رہے نیتا' چور بازاری کا شور مچا دیتے ہیں اور ساتھ ساتھ یہ بھی کہتے ہیں کہ ہم قانون بنا کر اس چور بازاری کا جلد خاتمہ کر دینگے . اِس سے کہیں آپ یہ نہ سمجھ بیٹھنا کہ بھارت میں سچ مچ ایسی چور بازاری چل رہی ہے جو بری ہے اور جسے دور کرنا ہی چاہئے . باپو ہمارے نیتاؤں کے اس شور کو بس آپ اتنا ہی مہتو دیں جتنا یشودا کے اُس شور کو جو وہ کرشن جی کو دہی چراتے دیکھکر مچایا کرتی تھیں یا جس طرح آج بھی

मचाये तो यह झूट बात होगी या नहीं ? ठीक इसी तरह से इस भरे
पूरे देस में आलसी ही भूक से मर जाने का शोर मचाते हैं न
कि मेहनती. ठीक इसी तरह से इस अनेकों कपड़ा मिल वाले देस
में नंगे रहने का क्या काम ? अगर कोई नंगा है तो इस में उसी का
कुछ क़सूर होगा. हाँ, एक बात हम और कह देना चाहते हैं कि
जब हमारा देस अन्न से भरपूर है तब हम बाहर से क्यों अनाज
मंगाते हैं ? इस के असली भेद का आप को तो पता है ही, पर यहाँ
तो हम उंगली उठाने वालों के लिये यह बता देना चाहते हैं कि हम
बाहर से अनाज या तो उन मुलकों पर दया कर के मंगाते हैं जिन
मुलकों में वह अनाज न खप कर यों ही बरबाद हो जाता या इस
ग़रज़ से मंगाते हैं कि कल अगर तीसरी लड़ाई छिड़ गई तो यह
अनाज हमारे बड़ा काम आयेगा. यह उंगली उठाने वाले न सोचते
समझते हैं, न राज के हथकन्डों से वाक़िफ़ हैं, सिर्फ़ शोर मचाना
और उंगली उठाना जानते हैं.

बापू, जिस घर में हर एक को यह आज़ादी हो कि वह जो जी
में आये उठाये खाये वह घर कितना सुखी होना चाहिये. बापू, आप
तो जेल में रहे हैं, आप को यह मालूम ही है कि वहाँ बीड़ी का एक
बंडल एक दरी के बदले में मिलता है और इसी तरह कितनी ही चीज़ों
के मेल में अनाप शनाप दाम होते हैं. और क्या इससे कोई क़ैदी दुख
मानता है. वह तो दो दरी दे कर भी बीड़ी का एक बन्डल ख़रीदने
[partially cut line] ... भारत एक घर बन गया है. सब के

مچائے تو یہ جھوٹ بات ہوگی یا نہیں ؟ ٹھیک اِسی طرح سے اِس
بھرے پورے دیس میں آلسی ہی بھوک سے مر جانے کا شور مچاتے ہیں
نہ کہ محنتی. ٹھیک اسی طرح سے اِس انیکوں کپڑا مل والے دیس
میں ننگے رہنے کا کیا کام ؟ اگر کوئی ننگا ہے تو اس میں اُسی کا
کچھ قصور ہوگا. ہاں، ایک بات ہم اور کہہ دینا چاہتے ہیں کہ جب
ہمارا دیس اَن سے بھرپور ہے تب ہم باہر سے کیوں اناج منگاتے ہیں؟
اس کے اصلی بھید کا آپ کو تو پتہ ہے ہی، پر یہاں تو ہم انگلی
اُٹھانے والوں کے لئے یہ بتا دینا چاہتے ہیں کہ ہم باہر سے اناج یا
تو اُن ملکوں پر دیا کرکے منگاتے ہیں جن ملکوں میں وہ اناج نہ
کھپ کر یوں ہی برباد ہو جاتا یا اس غرض سے منگاتے ہیں کہ کل
اگر تیسری لڑائی چھڑ گئی تو یہ اناج ہمارے بڑا کام آئیگا . یہ انگلی
اُٹھانے والے نہ سوچتے سمجھتے ہیں، نہ راج کے ہتھکنڈوں سے واقف
ہیں، صرف شور مچانا اور اُنگلی اُٹھانا جانتے ہیں .

باپو، جس گھر میں ہر ایک کو یہ آزادی ہو کہ وہ جو جی
میں آئے اُٹھائے کھائے وہ گھر کتنا سکھی ہونا چاہئے . باپو، آپ تو
جیل میں رہے ہیں، آپ کو یہ معلوم ہی ہے کہ وہاں بیڑی کا ایک
بنڈل ایک دری کے بدلے میں ملتا ہے اور اِسی طرح کتنی ہی
چیزوں کے میل میں اناپ شناپ دام ہوتے ہیں. اور کیا اِس سے کوئی
قیدی دکھ مانتا ہے . وہ تو دو دری دے کر بھی بیڑی کا ایک بنڈل
خریدنے کے لئے تیار رہتا ہے . آج بھارت ایک گھر بن گیا ہے . سب

आय दिन हम पर फ़िक़रे कसते रहते हैं.

आज अगर हम फटे कपड़े पहन कर टूटी फूटी झोंपड़ी में रहने लगें तो क्या यही उंगली उठाने वाले यह कह कर हमें बदनाम न करेंगे कि देखो इन का बाप इन के लिये इतना छोड़ गया तिस पर भी यह इस बुरे हाल में रहते हैं. ऐसे उदार बाप के ऐसे कंजूस लड़के! इतना ही नहीं यही उंगली उठाने वाले हमारे फटे कपड़े और टूटी झोंपड़ी देख कर यह इलज़ाम भी लगा सकते थे कि देखो ऐसे भले बाप के इतने बुरे लड़के पैदा हुए कि बाप की आँख बन्द होते ही सारा धन जुए में खो बैठे या और किसी तरह उसे उड़ा बैठे. बापू, आप तो यह जानते ही हैं कि यह दुनिया हमें किसी तरह चैन न लेने देती इस लिये क्या हमने यह ठीक नहीं किया कि हम इनकी लानत मलामत की ओर कान ही नहीं देते.

बापू, आप ही सोचिये इस अरबों की सम्पती वाले, लखोखा मिलों वाले, लहलहाते खेतों वाले और दूध घी की—घी की न सही, बनावटी घी की—नदियों वाले देस में लोगों के भूकों मर जाने का शोर मचाना हमें बदनाम करना नहीं तो क्या है? आप इन सिर-फिरों की ओर ज़रा भी ध्यान न दीजिये. आप ही सोचिये हम ने दसियों अरब के नोट सारे हिन्दुस्तान में फैला रक्खे हैं. अब अगर इन्हें कोई उठाने की तकलीफ़ भी न करे और भूकों मरे तो इस में हमारा क्या दोश. बापू, आप ही सोचिये कि अगर हम किसी को नहाने के लिये समन्दर में फेंक दें और वह अपने पेट में पानी भर जाने की वजह से मरने लगे और फिर वह डूब कर मरने का शोर

آے دن ہم پر فقرے کستے رہتے ہیں ۔

آج اگر ہم پھٹے کپڑے پہن کر ٹوٹی پھوٹی جھونپڑی میں رہنے لگیں تو کیا یہی اُنگلی اُٹھانے والے یہ کہ کر ہمیں بدنام نہ کرینگے کہ دیکھو اِنکا باپ اِنکے لئے اِتنا چھوڑ گیا تس پر بھی یہ اِس برے حال میں رہتے ہیں ۔ ایسے اُدار باپ کے ایسے کنجوس لڑکے ! اتنا ہی نہیں یہی اُنگلی اُٹھانے والے ہمارے پھٹے کپڑے اور ٹوٹی جھونپڑی دیکھ کر یہ الزام بھی لگا سکتے تھے کہ دیکھو ایسے بھلے باپ کے اِتنے برے لڑکے پیدا ہوئے کہ باپ کی آنکھ بند ہوتے ہی سارا دھن جوئے میں کھو بیٹھے یا اور کسی طرح اُسے اُڑا بیٹھے ۔ باپو' آپ تو یہ جانتے ہی ہیں کہ یہ دنیا ہمیں کسی طرح چین نہ لینے دیتی اس لئے کیا ہم نے یہ ٹھیک نہیں کیا کہ ہم اِنکی لعنت ملامت کی اور کان ہی نہیں دیتے ۔

باپو' آپ ہی سوچئے اِس اربوں کی سمپتی والے' لکھوکھا ملوں والے' لہلہاتے کھیتوں والے اور دودھ گھی کی—گھی کی نہ سہی' بناوٹی گھی کی—ندیوں والے دیس میں لوگوں کے بھوکوں مر جانے کا شور مچانا ہمیں بدنام کرنا نہیں تو کیا ہے ؟ آپ ان سر پھروں کی اور ذرا بھی دھیان نہ دیجئے ۔ آپ ہی سوچئے ہم نے دسیوں ارب کے نوٹ سارے ہندستان میں پھیلا رکھے ہیں ۔ اب اگر اِنھیں کوئی اُٹھانے کی تکلیف بھی نہ کرے اور بھوکوں مرے تو اس میں ہمارا کیا دوش ۔ باپو' آپ ہی سوچئے کہ اگر ہم کسی کو نہانے کے لئے سمندر میں پھینک دیں اور وہ اپنے پیٹ میں پانی بھر جانے کی وجہ سے مرنے لگے اور پھر وہ ڈوب کر مرنے کا شور

[है कि लोग हम पर कितनी ही उंगली उठायें हम उन की ओर
रा भी ध्यान नहीं देते इसलिये आप यह न समझें कि हम चिकने
ड़े हैं और हमारे ऊपर बूँद नहीं रुकती. हम तो जिस काम में लगे
ए हैं सच्चे जी से लगे हुए हैं और हमारे सामने हमेशा यही
। बातें रहती हैं कि किस तरह हम अपने देस को दुनिया की नज़रों
। ऊँचा उठायें, और किस तरह राष्ट्रपिता आप को दुनिया में
ूजा की चीज़ बनादें. यह दो काम कुछ कम काम नहीं हैं. इन में
लगे रहने से अगर हम सत्य और अहिंसा को बिलकुल भूल जायें
तो क्या बुरा करते हैं. सत्य और अहिंसा से भी तो यही होना
कि देस मशहूर होता और आप का नाम जग में रोशन होना पर
जब वह दोनों काम सत्य और अहिंसा के बिना हो रहे हैं तब यह
उनकी भूल है जो हमारी ओर उंगली उठाते हैं या हमारी भूल है
जो हम उन उंगली उठाने वालों की परवाह नहीं करते. बापू, अब
आप ही समझ लीजिये कि हम चिकने घड़े हैं या कोरे घड़े.

बापू, आप हमको एक बहुत बड़े देस का राज दे गये. एक बड़ी
मज़बूत सरकार को निकाल बाहर करने का यश दे गये, सत्रह
अरब की लेनदारी की साहूकारी हमारे हाथ में छोड़ गये और
हमें आज़ाद ही नहीं बना गये बलकि हमारे पाओं में दुखने वाले
काँटों को भी अपने जीते जी निकाल बाहर कर गये. यह दूसरी बात
है कि उन कांटों को खतम न कर के मकान के एक कोने में पटख
... फिर आप ही कहिये कि ऐसी हालत में हम सिवाय इस के

یہ ہے کہ لوگ ہم پر کتنی ہی اُنگلی اُٹھائیں ہم اُن کی اور ذرا بھی
دھیان نہیں دیتے اسلئے آپ یہ نہ سمجھیں کہ ہم چکنے گھڑے ہیں اور
ہمارے اُوپر بوند نہیں رکتی ۔ ہم تو جس کام میں لگے ہوئے ہیں
سچے جی سے لگے ہوئے ہیں اور ہمارے سامنے ہمیشہ یہی دو باتیں
رہتی ہیں کہ کس طرح ہم اپنے دیس کو دنیا کی نظروں میں
اُونچا اُٹھائیں، اور کس طرح راشٹر پتا آپ کو دنیا میں پوجا کی
چیز بنا دیں یہ دو کام کچھ کم کام نہیں ہیں ۔ ان میں لگے رہنے
سے اگر ہم ستیہ اور اہنسا کو بالکل بھول جائیں تو کیا برا کرتے
ہیں ۔ ستیہ اور اہنسا سے بھی تو یہی ہوتا کہ دیس مشہور
ہوتا اور آپکا نام جگ میں روشن ہوتا پر جب وہ دونوں کام ستیہ
اور اہنسا کے بنا ہو رہے ہیں تب یہ اُن کی بھول ہے جو ہماری اور
اُنگلی اُٹھاتے ہیں یا ہماری بھول ہے جو ہم اُن اُنگلی اُٹھانے والوں
کی پرواہ نہیں کرتے ۔ باپو، اب آپ ہی سمجھ لیجئے کہ ہم چکنے
گھڑے ہیں یا کورے گھڑے ۔

باپو، آپ ہم کو ایک بہت بڑے دیس کا راج دے گئے، ایک
بڑی مضبوط سرکار کو نکال باہر کرنے کا یش دے گئے، سترہ ارب کی
لین داری کی ساہوکاری ہمارے ہاتھ میں چھوڑ گئے اور ہمیں آزاد
ہی نہیں بنا گئے بلکہ ہمارے پاؤں میں دکھنے والے کانٹوں کو بھی
اپنے جیتے جی نکال باہر کر گئے ۔ یہ دوسری بات ہے کہ اُن
کانٹوں کو ختم نہ کرکے مکان کے ایک کونے میں پٹخ گئے ۔ پھر
آپ ہی کہئے کہ ایسی حالت میں ہم سوائے اِس کے اور کس
کام میں لگ سکتے ...

बापू से

बापू, अगर आप हमको कमजोर, ग़रीब, अज्ञानी और दास छोड़ जाते तो हम कम से कम उस दिन तक जब तक हम बलवान, अमीर, ज्ञानी और आज़ाद न हो जाते जरूर आप की अहिंसा अपनाये रहते और शक्ति भर सच्चाई पर भी डटे रहते. आपस में मिल जुल कर रहते और उन सैकड़ों बुराइयों से दूर रहते जो हम में से बहुतों में आज जड़ पकड़ गई हैं, और जो दो चार दस बच रहे हैं उन में भी वह बुराइयाँ जड़ जमाने की सोच रही हैं. आप के रहते, इस में शक नहीं, हमने बेहद मेहनत की, तकलीफ़ें उठाईं, पर यह पता नहीं कि उन तकलीफ़ों के उठाने की तह में आप का डर था या समाज का डर था या दूसरे मुल्कों की लानत मलामत का ख़याल था. अगर हमने दिल की उमंग से इस तरह की मेहनत की होती, जिसे आज हमारे देसबासी तपस्या कह कर पुकारते हैं तो आज हम इस गिरी हुई हालत में न होते, और न अपनों को अपने पर ऊकने का मौक़ा देते. अपनी मेहनत से कमाई हुई चीज़ों के साथ बरताव कुछ और होता है और दान में मिली या तरके में पाई चीज़ों के साथ और. बाप से पाये दुशाले से, अपनी कमाई से ख़रीदे जूते को पोंछने की बात किस को नहीं मालूम.

हम लोग भी आज आप के तप त्याग के बल से मिले राज के साथ जो व्योहार कर रहे हैं उसे देख कर दूसरे लोग अगर हम पर उंगली उठायें तो शायद आप भी उसे बेजा न कहेंगे.पर बापू सच बात

باپو سے

باپو، اگر آپ ہمکو کمزور، غریب، اگیانی اور داس چھوڑ جاتے تو ہم کم سے کم اُس دن تک جب تک ہم بلوان، امیر، گیانی اور آزاد نہ ہوجاتے ضرور آپکی اہنسا اپنائے رہتے اور شکتی بھر سچائی پر بھی ڈٹے رہتے . آپس میں مل جل کر رہتے اور اُن سیکڑوں برائیوں سے دور رہتے جو ہم میں سے بہتوں میں آج جڑ پکڑ گئی ہیں، اور جو دو چار دس بچ رہے ہیں اُن میں بھی وہ برائیاں جڑ جمانے کی سوچ رہی ہیں . آپ کے رہتے، اس میں شک نہیں، ہم نے بے حد محنت کی، تکلیفیں اُٹھائیں، پر یہ پتہ نہیں کہ اُن تکلیفوں کے اُٹھانے کی تہہ میں آپ کا ڈر تھا یا سماج کا ڈر تھا یا دوسرے ملکوں کی لعنت ملامت کا خیال تھا . اگر ہم نے دل کی اُمنگ سے اِس طرح کی محنت کی ہوتی، جسے آج ہمارے دیس باسی تپسیا کہہ کر پکارتے ہیں تو آج ہم اس گری ہوئی حالت میں نہ ہوتے، اور نہ اپنوں کو اپنے پر اوکنے کا موقع دیتے. اپنی محنت سے کمائی ہوئی چیزوں کے ساتھ برتاؤ کچھ اور ہوتا ہے اور دان میں ملی یا ترکے میں پائی چیزوں کے ساتھ اور . باپ سے پائے دوشالے سے، اپنی کمائی سے خریدے جوتے کو پونچھنے کی بات کس کو نہیں معلوم .

ہم لوگ بھی آج آپ کے تپ تیاگ کے بل سے ملے راج کے ساتھ جو بیوہار کر رہے ہیں اُسے دیکھ کر دوسرے لوگ اگر ہم پر اُنگلی اُٹھائیں تو شاید آپ بھی اُسے بیجا نہ کہیںگے . پر باپو سچ بات

जो अपने ऊपर रखे गये एतबार को सच साबित करता है, जो अपने वचन का पालन करता है, वह सच्चा मुसलमान है.

जो ख़ुदा के जीवों पर रहम करता है, ख़ुदा उस पर रहम करता है.

जिसके हाथ या ज़बान से इंसानों को ज़रा भी चोट नहीं पहुंचती, वह सच्चा मुसलमान है.

बुरा आलिम या विद्वान इंसानों में सब से बुरा और भला आलिम इंसानों में सब से अच्छा इंसान है.

जब इन्सान व्यभिचार या ज़िना करता है तो ईमान उसे छोड़ देता है.

जो व्यभिचार या चोरी करता है, जो शराब पीता है, या लूट पाट करता है, या ग़बन करता है वह मोमिन नहीं है. इसलिये ए इंसान सावधान रह ! सावधान रह !!

अपने आप पर क़ाबू पाने का जिहाद सब से उम्दा जिहाद है.

मुसलमान या ग़ैर मुसलमान जिस किसी पर भी ज़ुल्म हो उसकी मदद के लिये दौड़ जाओ.

उपवास और संयम (ज़ब्त) से मेरे अनुयाई ब्रह्मचारी बनेंगे.

औरत मर्द का आधा अंग है.

जो अपने ज्ञान या इल्म पर अमल करते हैं वह ही सच्चे आलिम हैं.

पाक (सती) औरत दुनिया की सबसे क़ीमती चीज़ है.

अपनी औरत को नेक सलाह दो. अगर वह भली होगी तो तुम्हारी सलाह मानेगी. बुरे विचारों से बचो. अपनी शरीफ़ औरत को ग़ुलाम की तरह मत मारो.

جو اپنے اوپر رکھے گئے اعتبار کو سچ ثابت کرتا ہے' جو اپنے وچن کا پالن کرتا ہے' وہ سچا مسلمان ہے .

جو خدا کے جیووں پر رحم کرتا ہے' خدا اُس پر رحم کرتا ہے .

جس کے ہاتھ یا زبان سے انسانوں کو ذرا بھی چوٹ نہیں پہنچتی' وہ سچا مسلمان ہے .

برا عالم یا ودوان انسانوں میں سب سے برا اور بھلا عالم انسانوں میں سب سے اچھا انسان ہے .

جب انسان ویبھچار یا زنا کرتا ہے تو ایمان اُسے چھوڑ دیتا ہے .

جو ویبھچار یا چوری کرتا ہے' جو شراب پیتا ہے' یا لوٹ پاٹ کرتا ہے' یا غبن کرتا ہے وہ مومن نہیں ہے . اس لئے اے انسان ساودھان رہ ! ساودھان رہ ! !

اپنے آپ پر قابو پانے کا جہاد سب سے عمدہ جہاد ہے .

مسلمان یا غیر مسلمان جس کسی پر بھی ظلم ہو اُس کی مدد کے لئے دوڑ جاؤ .

اپواس اور سنیم (ضبط) سے میرے انویائی برہمچاری بنیں گے .

عورت مرد کا آدھا انگ ہے .

جو اپنے گیان یا علم پر عمل کرتے ہیں وہ ہی سچے عالم ہیں .

پاک (ستی) عورت دنیا کی سب سے قیمتی چیز ہے .

اپنی عورت کو نیک صلاح دو . اگر وہ بھلی ہوگی تو تمہاری صلاح مانے گی . برے وچاروں سے بچو . اپنی شریف عورت کو غلام کی طرح مت مارو .

(۱۹ جنوری سن ۱۹۴۷ء)

नया हिन्द — نیا هند

जिल्द १० | जनवरी सन् '५१ | नम्बर १

نمبر ١ | جنوری سن ٥١' | جلد ١٠

जात आदमी, प्रेम धर्म है. हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمي' پریم دھرم ھے' ھندستانی بولی'
' نیا ھند ' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کي جھولی .

बापू की बानी

अपने लिये जो चीज़ चाहता है, वही चीज़ जब तक अपने भाई के लिये भी नहीं चाहता, तब तक कोई सच्चा मुसलमान नहीं कहा जा सकता.

जो अपने लिये या दूसरों के लिये काम नहीं करता, उसे ख़ुदा की तरफ़ से कोई इनाम नहीं मिलता.

जो झूट बोलता है, जो वचन देकर उसे तोड़ता है और जो अपने पर भरोसा करने वाले के साथ दग़ा करता है वह मेरा नहीं बल्कि मुझ से ग़द्दारी करने वाला है.

باپو کی بانی

اپنے لئے جو چیز چاہتا ھے' وھی چیز جبتک اپنے بھائی کے لئے بھی نہیں چاھتا' تب تک کوئی سچا مسلمان نہیں کہا جا سکتا .

جو اپنے لئے یا دوسروں کے لئے کام نہیں کرتا' اُسے خدا کی طرف سے کوئی انعام نہیں ملتا ,

جو جھوٹ بولتا ھے' جو وچن دیکر اُسے توڑتا ھے اُور جو اپنے پر بھروسہ کرنے والے کے ساتھ دغا کرتا ھے وہ میرا نہیں بلکہ مجھ سے غداری کرنے والا ھے .

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

जनवरी १९५१

क्या किस से | सफ़ा

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر —

تارا چند' بھگوان دین' مظفر حسن' بشمبھر ناتھ' سندر لال

جنوری 1951

کیا کس سے | صفحہ

قیمت — ہندستان میں چھ روپیہ سال' باہر دس روپیہ سال

इस नम्बर के ख़ास लेख —

बापू से — भगवानदीन

समाजवाद - सोशलिज़्म — ओंकार नाथ शास्त्री

पड़ोसी (कहानी)— 'सागर' बालूपुरी

हमारी राय :—

श्री अरविन्द — सुन्दरलाल

सरदार हमें छोड़ चल दिये — भगवानदीन

सरकार और सरदार के फूल — भगवानदीन

क़ीमत दस आना

س نمبر کے خاص لیکھ —

باپو سے — بھگوان دین

سماج واد - سوشلزم — اونکار ناتھ شاستری

پڑوسی (کہانی) — 'ساگر' بالو پوری

ہماری رائے :—

شری اروند — سندر لال

سردار ہمیں چھوڑ چل دیئے — بھگوان دین

سرکار اور سردار کے پھول — بھگوان دین

آنہ

فدلوی کرکے ،

گ

م

ن

و

ھ

”نیا ھند“

جلد ۱۰

(جنوری سن ۱۹۵۱ سے جون سن ۱۹۵۱)

لیکھک اور اُنکے مضمون

सफ़ा

श

स

ह

भ

म

व

"नया हिन्द"

जिल्द १०

(जनवरी सन १९५१ से जून सन १९५१)

लेखक और उनके मज़मून

सफ़ा

अ

आ

ओ

क